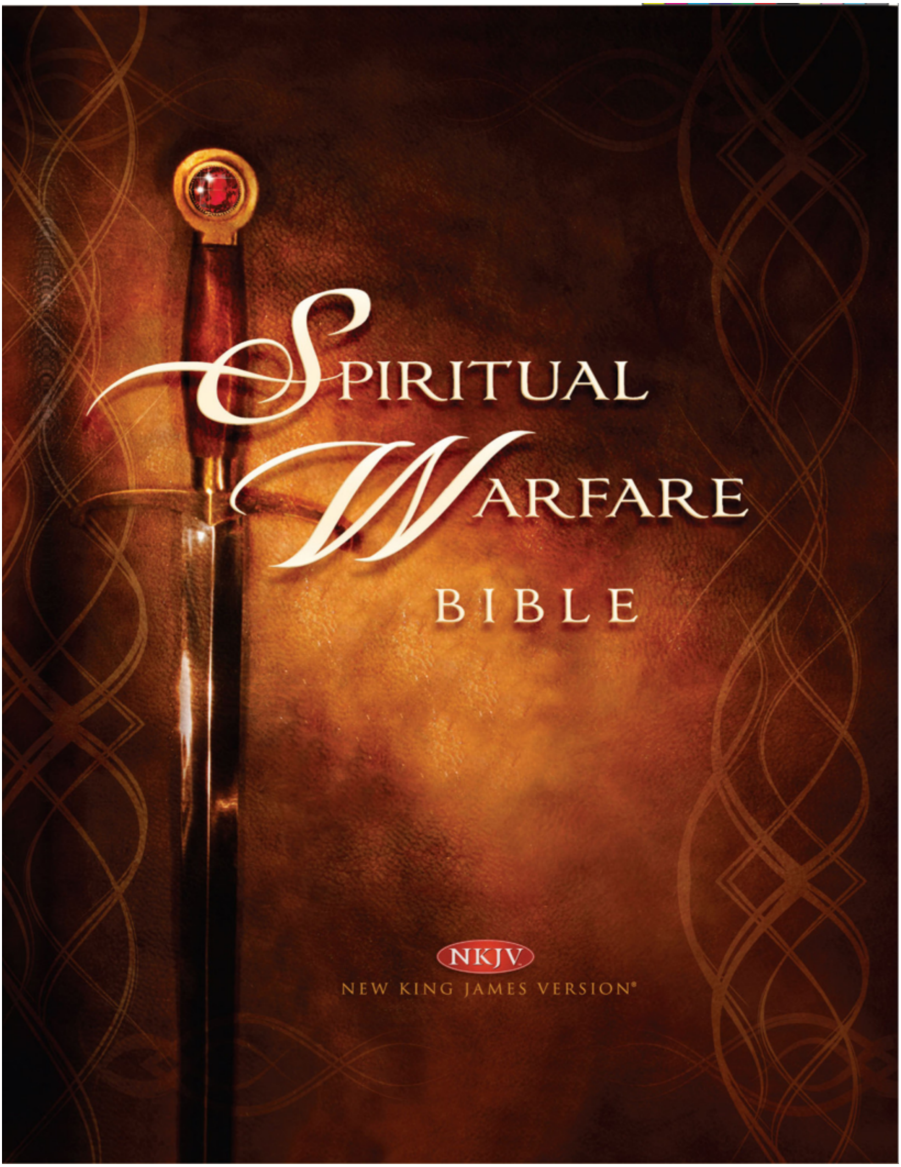

SPIRITUAL WARFARE BIBLE

NKJV

NEW KING JAMES VERSION®

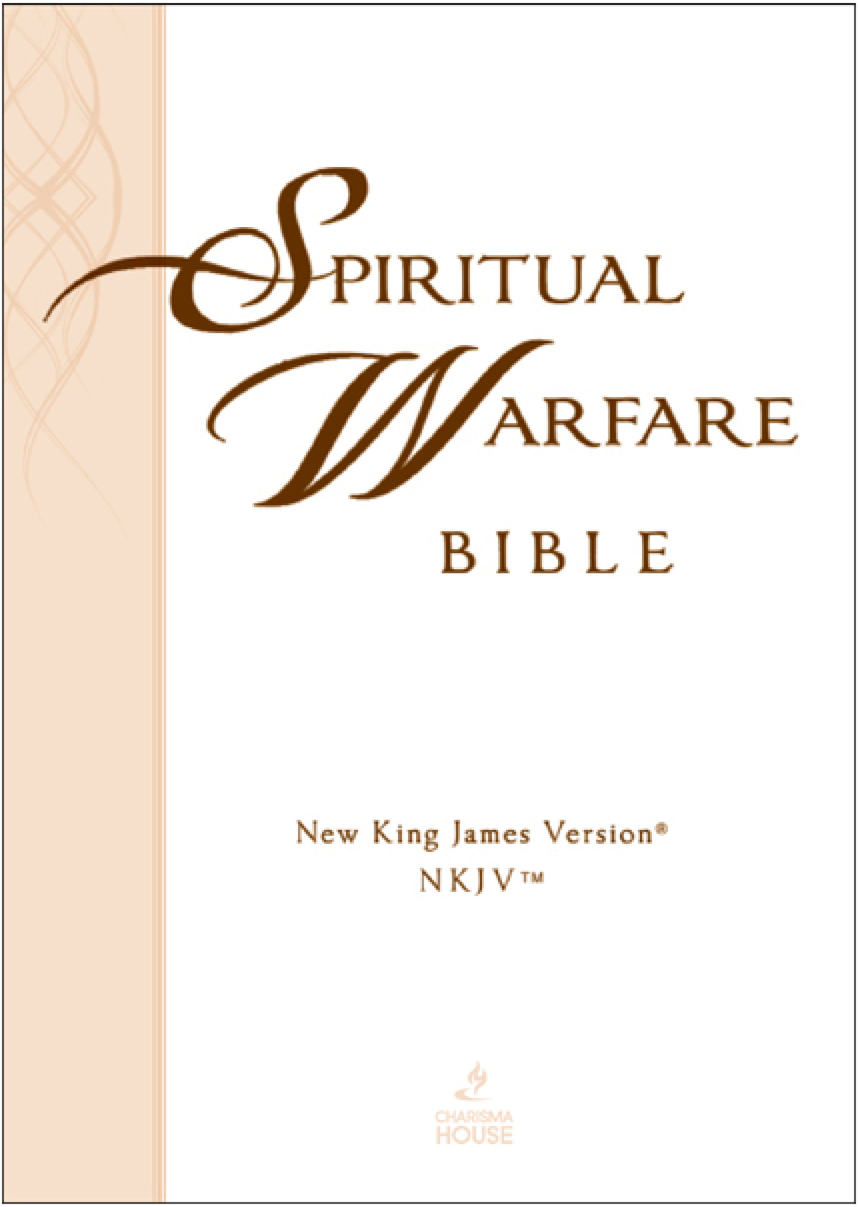

SPIRITUAL WARFARE
BIBLE

New King James Version®
NKJV™

CHARISMA
HOUSE

Most CHARISMA HOUSE BOOK GROUP products are available at special quantity discounts for bulk purchase for sales promotions, premiums, fund-raising, and educational needs. For details, write Charisma House Book Group, 600 Rinehart Road, Lake Mary, Florida

32746, or telephone (407) 333–0600.
SPIRITUAL WARFARE BIBLE
Published by Charisma House
Charisma Media/Charisma House Book Group
600 Rinehart Road
Lake Mary, Florida 32746
www.charismahouse.com

Spiritual Warfare Bible, articles, notes, additional information, copyright © 2012 by Charisma House.

The Holy Bible, New King James Version®
Copyright © 1982 by Thomas Nelson, Inc. All rights reserved.

The text of the New King James Version (NKJV) may be quoted or reprinted without prior written permission with the following qualifications:

> (1) up to and including 1,000 verses may be quoted in printed form as long as the verses quoted amount to less than 50% of a complete book of the Bible and make up less than 50% of the total work in which they are quoted;
>
> (2) all NKJV quotations must conform accurately to the NKJV text.

Any use of the NKJV text must include a proper acknowledgment as follows:

> Scripture taken from the New King James Version. Copyright © 1982 by Thomas Nelson, Inc. Used by permission. All rights reserved.

However, when quotations from the NKJV text are used in church bulletins, orders of service, Sunday school lessons, church newsletters, and similar works in the course of religious instruction or services at a place of worship or other religious assembly, the following notice may be used at the end of each quotation: “NKJV.”

For quotation requests not covered by the above guidelines, write to Thomas Nelson Publishers, ATTN: Bible Rights and Permissions, P. O. Box 141000, Nashville, TN 37214–1000.

Library of Congress Control Number: 2011942153
International Standard Book Numbers

Hardbound: 978-1-61638-822-5

Leather: 978-1-61638-823-2

E-book: 978-1-62136-247-0

CONTENTS
FRONT MATTER

Preface to the New King James Version

Christian Leaders and Authors Who Have Contributed to the *Spiritual Warfare Bible*

How to Study the Bible

How to Use the *Spiritual Warfare Bible*

Putting Spiritual Discernment Back Into Spiritual Warfare

THE BOOKS OF THE OLD TESTAMENT
BETWEEN THE TESTAMENTS

What Happened Between Malachi and Matthew?

THE BOOKS of the NEW TESTAMENT
MATERIAL AT THE END of the BIBLE
APPENDIXES

Appendix A: Spiritual Warfare in the Bible

Appendix B: End-Time Misconceptions About Spiritual Warfare

Appendix C: Spiritual Warfare Distinctives

Appendix D: Freedom Principles for Daily Use

Appendix E: Combat Scriptures to Defeat Our Enemy

Appendix F: Living in Triumphant Hope

CONCORDANCE
MAPS

OLD TESTAMENT

Genesis
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50

Exodus
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40

Leviticus

Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27

Numbers
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36

Deuteronomy
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34

Joshua
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24

Judges
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21

Ruth
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

1 Samuel
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31

2 Samuel
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24

1 Kings
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22

2 Kings
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25

1 Chronicles
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29

2 Chronicles
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36

Ezra
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10

Nehemiah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13

Esther
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10

Job
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42

Psalms
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 |
45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 |
60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 |
75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 |
90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 |
104 | 105 | 106 | 107 | 108 | 109 | 110 | 111 | 112 | 113 | 114 | 115 |
116 | 117 | 118 | 119 | 120 | 121 | 122 | 123 | 124 | 125 | 126 | 127 |
128 | 129 | 130 | 131 | 132 | 133 | 134 | 135 | 136 | 137 | 138 | 139 |
140 | 141 | 142 | 143 | 144 | 145 | 146 | 147 | 148 | 149 | 150

Proverbs
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
30 | 31

Ecclesiastes
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12

Song of Solomon
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8

Isaiah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 |
45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 |
60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66

Jeremiah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 |

45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52

Lamentations
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5

Ezekiel
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48

Daniel
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12

Hosea
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14

Joel
Introduction | 1 | 2 | 3

Amos
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9

Obadiah
Introduction | 1

Jonah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

Micah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7

Nahum
Introduction | 1 | 2 | 3

Habakkuk
Introduction | 1 | 2 | 3

Zephaniah
Introduction | 1 | 2 | 3

Haggai
Introduction | 1 | 2

Zechariah
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14

Malachi
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

NEW TESTAMENT

Matthew
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28

Mark
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16

Luke
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |

15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24

John
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21

Acts
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28

Romans
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16

1 Corinthians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16

2 Corinthians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13

Galatians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6

Ephesians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6

Philippians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

Colossians

Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

---

1 Thessalonians
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5

---

2 Thessalonians
Introduction | 1 | 2 | 3

---

1 Timothy
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6

---

2 Timothy
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4

Titus
Introduction | 1 | 2 | 3

Philemon
Introduction | 1

Hebrews
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13

James
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5

---

1 Peter
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5

---

2 Peter

Introduction | 1 | 2 | 3

---

1 John
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5

---

2 John
Introduction | 1

---

3 John
Introduction | 1

Jude
Introduction | 1

Revelation
Introduction | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22

PREFACE TO THE NEW KING JAMES VERSION

PURPOSE

In the preface to the 1611 edition, the translators of the Authorized Version, known popularly as the King James Bible, state that it was not their purpose "to make a new translation…but to make a good one better." Indebted to the earlier work of William Tyndale and others, they saw their best contribution to consist in revising and enhancing the excellence of the English versions which had sprung from the Reformation of the sixteenth century. In harmony with the purpose of the King James scholars, the translators and editors of the present work have not pursued a goal of innovation. They have perceived the Holy Bible, New King James Version, as a continuation of the labors of the earlier translators, thus unlocking for today's readers the spiritual treasures found especially in the Authorized Version of the Holy Scriptures.

A LIVING LEGACY

For nearly four hundred years, and throughout several revisions of its English form, the King James Bible has been deeply revered among the English-speaking peoples of the world. The precision of translation for which it is historically renowned, and its majesty of style, have enabled that monumental version of the Word of God to become the mainspring of the religion, language, and legal foundations of our civilization.

Although the Elizabethan period and our own era share in zeal for technical advance, the former period was more aggressively devoted to classical learning. Along with this awakened concern for the classics came a flourishing companion interest in the Scriptures, an interest that was enlivened by the conviction that the manusc1ripts were providentially handed down and were a trustworthy record of the inspired Word of God. The King James translators were committed to producing an English Bible that would be a precise translation, and by no means a paraphrase or a broadly approximate rendering. On the one hand, the scholars were almost as familiar with the original languages of the Bible as with their native English. On the other hand, their reverence for the divine Author and His Word assured a translation of the Scriptures in which only a principle of utmost accuracy could be accepted.

In 1786 Catholic scholar Alexander Geddes said of the King James Bible, “If accuracy and strictest attention to the letter of the text be supposed to constitute an excellent version, this is of all versions the most excellent.” George Bernard Shaw became a literary legend in our century because of his severe and often humorous criticisms of our most cherished values. Surprisingly, however, Shaw pays the following tribute to the scholars commissioned by King James: “The translation was extraordinarily well done because to the translators what they were translating was not merely a curious collection of ancient books written by different authors in different stages of culture, but the Word of God divinely revealed through His chosen and expressly inspired scribes. In this conviction they carried out their work with boundless reverence and care and achieved a beautifully artistic result.” History agrees with these estimates. Therefore, while seeking to unveil the excellent *form* of the traditional English Bible, special care has also been taken in the present edition to preserve the work of *precision* which is the legacy of the 1611 translators.

COMPLETE EQUIVALENCE IN TRANSLATION

Where new translation has been necessary in the New King James

Version, the most complete representation of the original has been rendered by considering the history of usage and etymology of words in their contexts. This principle of complete equivalence seeks to preserve *all* of the information in the text, while presenting it in good literary form. Dynamic equivalence, a recent procedure in Bible translation, commonly results in paraphrasing where a more literal rendering is needed to reflect a specific and vital sense. For example, complete equivalence truly renders the original text in expressions such as “lifted her voice and wept” (Gen. 21:16); “I gave you cleanness of teeth” (Amos 4:6); “Jesus met them, saying, ‘Rejoice!’” (Matt. 28:9); and “Woman, what does your concern have to do with Me?” (John 2:4). Complete equivalence translates fully, in order to provide an English text that is both accurate and readable.

In keeping with the principle of complete equivalence, it is the policy to translate interjections which are commonly omitted in modern language renderings of the Bible. As an example, the interjection *behold*, in the older King James editions, continues to have a place in English usage, especially in dramatically calling attention to a spectacular scene, or an event of profound importance such as the Immanuel prophecy of Isaiah 7:14. Consequently, *behold* is retained for these occasions in the present edition. However, the Hebrew and Greek originals for this word can be translated variously, depending on the circumstances in the passage. Therefore, in addition to *behold*, words such as *indeed, lo1ok, see*, and *surely* are also rendered to convey the appropriate sense suggested by the context in each case.

In faithfulness to God and to our readers, it was deemed appropriate that all participating scholars sign a statement affirming their belief in the verbal and plenary inspiration of Scripture, and in the inerrancy of the original autographs.

DEVOTIONAL QUALITY

The King James scholars readily appreciated the intrinsic beauty of divine revelation. They accordingly disciplined their talents to render well-chosen English words of their time, as well as a graceful, often musical arrangement of language, which has stirred the hearts of Bible readers through the years. The translators, the committees, and the editors of the present edition, while sensitive to the late-twentieth-century English idiom, and while adhering faithfully to the Hebrew, Aramaic, and Greek texts, have sought to maintain those lyrical and devotional qualities that are so highly regarded in the Authorized Version. This devotional quality is especially apparent in the poetic and prophetic books, although even the relatively plain style of the Gospels and Epistles cannot strictly be likened, as sometimes suggested, to modern newspaper style. The Koine Greek of the New Testament is influenced by the Hebrew background of the writers, for whom even the Gospel narratives were not merely flat utterance, but often sung in various degrees of rhythm.

THE STYLE

Students of the Bible applaud the timeless devotional character of our historic Bible. Yet it is also universally understood that our language, like all living languages, has undergone profound change since 1611. Subsequent revisions of the King James Bible have sought to keep abreast of changes in English speech. The present work is a further step toward this objective. Where obsolescence and other reading difficulties exist, present-day vocabulary, punctuation, and grammar have been carefully integrated. Words representing ancient objects, such as *chariot* and *phylactery*, have no modern substitutes and are therefore retained.

A special feature of the New King James Version is its conformity to the thought flow of the 1611 Bible. The reader discovers that the sequence and selection of words, phrases, and clauses of the new edition, while much clearer, are so close to the traditional that there is remarkable ease in listening to the reading of either edition while following with the other.

In the discipline of translating biblical and other ancient languages, a standard method of transliteration, that is, the English spelling of untranslated words, such as names of persons and places, has never been commonly adopted. In keeping with the design of the present work, the King James spelling of untranslated words is retained, although made uniform throughout. For example, instead of the spellings *Isaiah* and *Elijah* in the Old Testament, and *Esaias* and *Elias* in the New Testament, *Isaiah* and *Elijah* now appear in both Testaments.

King James doctrinal and theological terms, for example, *propitiation*, *justification*, and *sanctification*, are generally familiar to English-speaking peoples. Such terms have been retained except where the original language indicates need for a more precise translation.

Readers of the Authorized Version will immediately be struck by the absence of several pronouns: *thee*, *thou*, and *ye* are replaced by the simple *you*, while *your* and *yours* are substituted for *thy* and *thine* as applicable. *Thee*, *thou*, *thy*, and *thine* were once forms of address to express a special relationship to human as well as divine persons. These pronouns are no longer part of our language. However, reverence for God in the present work is preserved by capitalizing pronouns, including *You, Your,* and *Yours,* which refer to Him. Additionally, capitalization of these pronouns benefits the reader by clearly distinguishing divine and human persons referred to in a passage. Without such capitalization the distinction is often obscure, because the antecedent of a pronoun is not always clear in the English translation.

In addition to the pronoun usages of the seventeenth century, the *-eth* and *-est* verb endings, so familiar in the earlier King James editions, are now obsolete. Unless a speaker is schooled in these verb endings, there is common difficulty in selecting the correct form to be used with a given subject of the verb in vocal prayer. That is, should we use *love, loveth,* or *lovest*? *do, doeth, doest,* or *dost*? *have, hath,* or *hast*? Because these forms are obsolete, contemporary English usage has been substituted for the previous verb endings.

In older editions of the King James Version, the frequency of the connective *and* far exceeded the limits of present English usage. Also, biblical linguists agree that the Hebrew and Greek original words for this conjunction may commonly be translated otherwise, depending on the immediate context. Therefore, instead of *and,* alternatives such as *also, but, however, now, so, then,* and *thus* are accordingly rendered in the present edition, when the original language permits.

The real character of the Authorized Version does not reside in its archaic pronouns or verbs or other grammatical forms of the seventeenth century, but rather in the care taken by its scholars to impart the letter and spirit of the original text in a majestic and reverent style.

THE FORMAT

The format of the New King James Version is designed to enhance the vividness and devotional quality of the Holy Scriptures:

- Subject headings assist the reader to identify topics and transitions in the biblical content.

- Words or phrases in *italics* indicate expressions in the original language which require clarification by additional English words, as also done throughout the history of the King James Bible.

- Oblique type in the New Testament indicates a quotation from the Old Testament.

- Prose is divided into paragraphs to indicate the structure of thought.

- Poetry is structured as contemporary verse to reflect the poetic form and beauty of the passage in the original language.

- The coven1ant name of God was usually translated from the Hebrew as “LORD” or “GOD” (using capital letters as shown) in the King James Old Testament. This tradition is maintained. In the present edition the name is so capitalized whenever the covenant name is quoted in the New Testament from a passage in the Old Testament.

THE OLD TESTAMENT TEXT

The Hebrew Bible has come down to us through the scrupulous care of ancient scribes who copied the original text in successive generations. By the sixth century A.D. the scribes were succeeded by a group known as the Masoretes, who continued to preserve the sacred Scriptures for another five hundred years in a form known as the Masoretic Text. Babylonia, Palestine, and Tiberias were the main centers of Masoretic activity; but by the tenth century A.D. the Masoretes of Tiberias, led by the family of ben Asher, gained the ascendancy. Through subsequent editions, the ben Asher text became in the twelfth century the only recognized form of the Hebrew Scriptures.

Daniel Bomberg printed the first Rabbinic Bible in 1516–17; that work was followed in 1524–25 by a second edition prepared by Jacob ben Chayyim and also published by Bomberg. The text of ben Chayyim was adopted in most subsequent Hebrew Bibles, including those used by the King James translators. The ben Chayyim text was also used for the first two editions of Rudolph Kittel's *Biblia Hebraica* of 1906 and 1912. In 1937 Paul Kahle published a third edition of *Biblia Hebraica*. This edition was based on the oldest dated manuscript of the ben Asher text, the Leningrad Manuscript B19a (A.D. 1008), which Kahle regarded as superior to that used by ben Chayyim.

For the New King James Version the text used was the 1967/1977 Stuttgart edition of the *Biblia Hebraica*, with frequent comparisons being made with the Bomberg edition of 1524–25. The Septuagint (Greek) Version of the Old Testament and the Latin Vulgate also were consulted. In addition to referring to a variety of ancient versions of the Hebrew Scriptures, the New King James Version draws on the resources of relevant manuscripts from the Dead Sea caves. In the few places where the Hebrew was so obscure that the 1611 King James was compelled to follow one of the versions, but where information is now available to resolve the problems, the New King James Version follows the Hebrew text.

THE NEW TESTAMENT TEXT

There is more manuscript support for the New Testament than for any other body of ancient literature. Over five thousand Greek, eight thousand Latin, and many more manuscripts in other languages attest the integrity of the New Testament. There is only one basic New Testament used by Protestants, Roman Catholics, and Orthodox, by conservatives and liberals. Minor variations in hand copying have appeared through the centuries, before mechanical printing began about A.D. 1450.

Some variations exist in the spelling of Greek words, in word order, and in similar details. These ordinarily do not show up in translation and do not affect the sense of the text in any way.

Other manuscript differences such as omission or inclusion of a word or a clause, and two paragraphs in the Gospels, should not overshadow the overwhelming degree of agreement which exists among the ancient records. Bible readers may be assured that the most important differences in English New Testaments of today are due, not to manuscript divergence, but to the way in which translators view the task of translation: How literally should the text be rendered? How does the translator view the matter of biblical inspiration? Does the translator adopt a paraphrase when a literal rendering would be quite clear and more to the point? The New King James Version follows the historic precedent of the Authorized Version in maintaining a literal approach to translation, except where the idiom of the original language cannot be translated directly into our tongue.

The King James New Testament was based on the traditional text of the Greek-speaking churches, first published in 1516, and later called the Textus Receptus or Received Text. Although based on the relatively few available manuscripts, these were representative of many more which existed at the time but only became known later. In the late nineteenth century, B. Westcott and F. Hort taught that this text had been officially edited by the fourth-century church, but a total lack of historical evidence for this event has forced a revision of the theory. It is now widely held that the Byzantine Text that largely supports the Textus Receptus has as much right as the Alexandrian or any other tradition to be weighed in determining the text of the New Testament. Those readings in the Textus Receptus which have weak support are indicated in the footnotes as being opposed by both Critical and Majority Texts.

Since the 1880s most contemporary translations of the New Testament have relied upon a relatively few manuscripts discovered chiefly in the late nineteenth and early twentieth centuries. Such translations depend primarily on two manuscripts, Codex Vaticanus and Codex Sinaiticus, because of their greater age. The Greek text obtained by using these sources and the related papyri (our most ancient manuscripts) is known as the Alexandrian Text. However, some scholars have grounds for doubting the faithfulness of Vaticanus and Sinaiticus, since they often disagree with one another, and Sinaiticus exhibits excessive omission.

A third viewpoint of New Testament scholarship holds that the best text is based on the consensus of the majority of existing Greek manuscripts. This text is called the Majority Text. Most of these manuscripts are in substantial agreement. Even though many are late, and none is earlier than the fifth century, usually their readings are verified by papyri, ancient versions, quotations from the early church fathers, or a combination of these. The Majority Text is similar to the Textus Receptus, but it corrects those readings which have little or no support in the Greek manuscript tradition.

Today, scholars agree that the science of New Testament textual criticism is in a state of flux. Very few scholars still favor the Textus Receptus as such, and then often for its historical prestige as the text of Luther, Calvin, Tyndale, and the King James Version. For about a century most have followed a Critical Text (so called because it is edited according to specific principles of textual criticism) which depends heavily upon the Alexandrian type of text. More recently many have abandoned this Critical Text (which is quite similar to the one edited by Westcott and Hort) for one that is more eclectic. Finally, a small but growing number of scholars prefer the Majority Text, which is close to the traditional text except in the Revelation.

In light of these facts, and also because the New King James Version is the fifth revision of a historic document translated from specific Greek texts, the editors decided to retain the traditional text in the body of the New Testament and to indicate major Critical and Majority Text variant readings. Although these variations are duly indicated in the present edition, it is most important to emphasize that fully eighty-five percent of the New Testament text is the same in the Textus Receptus, the Alexandrian Text, and the Majority Text.

NEW KING JAMES TRANSLATORS' NOTES

Significant explanatory notes, alternate translations, and cross-references, as well as New Testament citations of Old Testament passages, are supplied.

Important textual variants in the Old Testament are identified in a standard form.

The textual notes in the present edition of the New Testament make no evaluation of readings, but do clearly indicate the manuscript sources of readings. They objectively present facts without such tendentious remarks as "the best manuscripts omit" or "the most reliable manuscripts read." Such notes are value judgments that differ according to varying viewpoints on the text. By giving a clearly defined set of variants the New King James Version benefits readers of all textual persuasions.

Where significant variations occur in the New Testament Greek manuscripts, textual notes are classified as follows:

1. NU-Text

   These variations from the traditional text generally represent the Alexandrian or

Egyptian type of text described previously in “The New Testament Text.” They are found in the Critical Text published in the twenty-seventh edition of the Nestle-Aland Greek New Testament (N) and in the United Bible Societies’ fourth edition (U), hence the acronym, “NU-Text.”

2. M-Text

This symbol indicates points of variation in the Majority Text from the traditional text, as also previously discussed in “The New Testament Text.” It should be noted that M stands for whatever reading is printed in the published *Greek New Testament According to the Majority Text*, whether supported by overwhelming, strong, or only a divided majority textual tradition.

The textual notes reflect the scholarship of the past 150 years and will assist the reader to observe the variations between the different manuscript traditions of the New Testament. Such information is generally not available in English translations of the New Testament.

CHRISTIAN LEADERS AND AUTHORS WHO HAVE CONTRIBUTED TO THE SPIRITUAL WARFARE BIBLE

The following Christian authors and leaders have contributed to the *Spiritual Warfare Bible* with excerpts from their books, which were published previously by Charisma House. Each excerpt is identified with a footnote at the place in this Bible where it was used. The list below shows the names of these contributors and the books from which text has been excerpted or adapted.

We greatly appreciate their contributions and would encourage readers to purchase the individual books for each of these authors. If desired, you may order these books from the Charisma House website at www.charismahouse.com.

John Bevere / *The Bait of Satan* (Lake Mary, FL: Charisma House, 1994, 1997, 2004)

John Bevere, founder of John Bevere Ministries, is a best-selling author and popular conference speaker.

Kimberly Daniels / *Clean House, Strong House* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2003)

Give It Back! (Lake Mary, FL:

Charisma House, 2007)

Prayers That Bring Change (Lake Mary, FL: Charisma House, 2009)

Spiritual Boot Camp (Lake Mary, FL: Charisma House, 2012)

Apostle Kimberly Daniels, pastor of Spoken Word Ministries in Jacksonville and Fort Lauderdale, Florida, and a Jacksonville councilwoman, is a sought-after conference speaker, preacher, and powerful prayer warrior.

Iris Delgado / *Satan, You Can't Have My Children* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2011)

Satan, You Can't Have My Marriage

(Lake Mary, FL: Charisma House, 2012)

Iris Delgado is the founder and president of Crowned With Purpose Ministries. With a doctoral degree in theology and counseling, she has traveled the globe ministering with her husband, Dr. John Delgado.

Don Dickerman / *Keep the Pigs Out* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

When Pigs Move In (Lake Mary, FL:

Charisma House, 2009)

Don Dickerman, a Spirit-filled, anointed Southern Baptist minister, has directed an evangelistic ministry to prisons since 1974, preaching in more than 800 prison facilities and seeing more than 100,000 inmates respond to the altar call.

John Eckhardt / *Prayers That Rout Demons* (Lake

Mary, FL: Charisma House, 2008)

Prayers That Break Curses (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

Prayers That Bring Healing (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

Prayers That Release Heaven on Earth (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

God Still Speaks (Lake Mary, FL: Charisma House, 2009)

Ordinary People, Extraordinary Power (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

Apostle John Eckhardt is overseer of Crusaders Ministries, Chicago; ministers in more than eighty nations; is a sought-after international conference speaker; and

has
authored
more
than
twenty
books.

Steve Foss / *Satan's Dirty Little Secret* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2012)

Steve
Foss
has
traveled
the
nations
for
more
than
twenty
years
ministering
to
millions
of
people
and
training
tens
of
thousands
of
pastors
and
leaders.

Francis Frangipane / *The Shelter of the Most High* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2008)

Francis
Frangipane

is the founder of River of Life Ministries in Cedar Rapids, Iowa, director of In Christ's Image Training school, and a best-selling author.

Jentezen Franklin / *Fasting* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2008)

Fasting Journal (Lake Mary, FL: Charisma House, 2008)

Jentezen Franklin is the pastor of Free Chapel in Gainesville, Georgia, and Orange County, California, and a *New York Times* best-selling author.

Joe Hurston / *Run to the Roar* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2006)

Joe Hurston is a long-time missionary pilot who has flown more than 2,500 missions since forming Air Mobile Ministries and has received wide media attention for developing the Vortex portable water purifier, which he has delivered to many global disaster sites.

Judy Jacobs / *Take It by Force!* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2005)

Judy Jacobs, founder of His Song Ministries, is a recordi1ng artist, sought-after conference speaker, and best-selling author.

She and her husband, Jamie Tuttle, pastor Dwelling Place Church International.

Larry Keefauver / *The Holy Spirit Encounter Bible* (Lake Mary, FL: Charisma House, 1997)

Larry Keefauver, MDiv, DMin, executive director of Your Ministry Counseling Services, is the general editor of the *Holy Spirit Encounter Bible* and a best-selling author. He and his wife, Judi, lead international family and ministry seminars on marriage, parenting, leadership, and prayer.

Jennifer LeClaire / News editor, *Charisma*

Jennifer LeClaire is news editor at *Charisma*. She is also the author of several books, including *The Heart of* *the Prophetic*.

Ron Phillips / *Everyone's Guide to Demons and Spiritual Warfare* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

Our Invisible Allies (Lake Mary, FL: Charisma House, 2009)

Ron Phillips is senior pastor of Abba's House in Chattanooga, Tennessee, and has a weekly television and daily radio program that broadcasts worldwide and on the Internet. He is a sought-after speaker

and
a
best-
selling
author.

Fuchsia Pickett / *How to Search the Scriptures* (Lake Mary, FL: Charisma House, 1999)

Possess Your Promised Land (Lake Mary, FL: Charisma House, 2003)

Presenting the Holy Spirit (Lake Mary, FL: Charisma House, 1997)

Dr. Fuchsia Pickett was a best-selling author and international conference speaker and teacher. Her books and speaking presentations were filled with fresh revelation and deep spiritual truths.

Chuck D. Pierce / *Redeeming the Time* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2009)

Time to Defeat the Devil (Lake Mary, FL: Charisma House, 2011)

Dr. Charles D. “Chuck” Pierce has been used by God to intercede and mobilize prayer throughout the world. An ordained minister, he is president of Glory of Zion International Ministries in Denton, Texas, and of Global Sphere, Inc. He is also a best-selling author.

Jim Raley / *Hell’s Spells* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2012)

Jim Raley pastors and oversees the multi-campus ministry of Calvary Christian Center, located in the greater Daytona Beach, Florida, area. He hosts *Jim*

Raley T1V and radio programs, and he travels extensively offering a voice of hope and restoration.

John Rea / *Charisma’s Bible Handbook on the Holy Spirit* (Lake Mary, FL: Charisma House, 1998)

John Rea, ThD, professor emeritus of Old Testament at Regent University, has theological degrees from Wheaton College, Grace Theological Seminary, and Princeton University. He has been an important author and/or contributing editor for many important books, including the *Holy Spirit Encounter Bible*.

John and Paula Sandford / *The Elijah Task* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2006)

John Sandford pastored churches for many years and founded Elijah House Ministries. He is considered a pioneer in the prophetic and healing movements and is a best-selling author of many books. Paula Sandford joined her husband in the team ministry of Elijah House from its beginning and was ordained in 1995.

John Sandford and R. Loren Sandford / *Life Transformed* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2009)

John Sandford pastored churches for many years and founded Elijah House Ministries. He is considered a pioneer in the prophetic and healing movements and is a best-selling author of many books. R. Loren Sandford is the founding pastor of New Song

Fellowship
in
Denver,
Colorado.

Cindy Trimm / *The Art of War for Spiritual Battle* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2010)

Commanding Your Morning (Lake Mary, FL: Charisma House, 2007)

The Rules of Engagement (Lake Mary, FL: Charisma House, 2008)

The Prayer Warrior's Way (Lake Mary, FL: Charisma House, 2011)

Cindy
Trimm
is a
best-
selling
author,
former
senator
(Bermuda),
and
sought-
after
empowerment
specialist
and
transformational
leader.

Bill Wiese / *23 Minutes in Hell* (Lake Mary, FL: Charisma House, 2006)

Bill
Wiese
is

the *New York Times* best-selling author of *23 Minutes in Hell* and an accomplished speaker with a global speaking ministry.

HOW TO STUDY THE BIBLE

The Bible deserves our devoted syst1ematic study.

PRELIMINARY CONSIDERATIONS

Preview: Regular and systematic reading of the Bible is essential for Christian growth. Spiritual success for both an individual and a church can come only through Bible study and meditation. A greater use and deeper understanding of the Word of God by believers is essential to a living dynamic church. D. L. Moody said, “I never saw a useful Christian who was not a student of the Bible. If a man neglects his Bible, he may pray and ask God to use him in His work, but God cannot make much use of him, for there is not much for the Holy Spirit to work upon. We must have the Word itself, which is sharper than any two-edged sword.”

The Bible is God’s Book, given to us to tell us about God. We know there is a God because we see His creation—the sun, the moon, the stars, the mountains, the plains, the rivers, lakes, and oceans. All these and a thousand more are indications of the presence of a powerful Creator.

But we know little about God until we study the Bible. There we learn who God is, what He is, what He has done, what He is doing, and what He shall yet do. Man comes to the end of his search for truth when he see the manifestation of God in the Person of the Lord Jesus Christ as revealed in God's written Word. From the Bible we learn that God is holy and that He hates our sins. But the Bible shows that God loves us so much that He gave His Son to save us from our sins.

The Bible tells us that we have sinned. It tells us that Jesus came into the world to save sinners, that He took our place at Calvary, that He arose from the dead, and that He is seated at the right hand of the Father, from whence He shall come to receive His own unto Himself.

These are the glorious truths related in fascinating detail in the Bible. Pray with the psalmist: "Open my eyes, that I may see wondrous things from Your law" (Ps. 119:18). Prayerful study of the Bible will help us gain a full-length picture of God's provision and plan for us.

Many Christians do not get much joy and satisfaction—that extra something—from their Bible study. They have failed to learn how to make studying the Word a feeding process that results in spiritual nourishment and growth. Most Christians read a portion of Scripture each day as a devotional exercise. This is good; it is necessary and profitable. But too many believers follow the practice of merely reading Bible portions; they never read the Bible in any other way.

The Bible should be studied systematically. A knowledge of the Bible, or of any one book of the Bible, comes by a definite plan of reading and studying. Reading Bible portions will feed the soul, but a Christian needs to grasp and understand the great truths and doctrines the Bible teaches.

Bible study must not be an end in itself. God has given us the Bible; it is to do something *in* us and *through* us.

A PLAN OF ACTION

- Study daily.
- Study prayerfully.
- Study1 systematically.
- Study with enjoyment.

PREPARATION FOR STUDY

My son, if you receive my words,

And treasure my commands within you,

So that you incline your ear to wisdom,

And apply your heart to understanding;

Yes, if you cry out for discernment,

And lift up your voice for understanding,

If you seek her as silver,

And search for her as for hidden treasures;

Then you will understand the fear of the LORD,

And find the knowledge of God.

—Proverbs 2:1–5

Personal Bible study is a battle. One does not find too many people today who seek a quiet place with a book; the number is even fewer when it comes to Bible study. Distractions are manifold, and time runs short.

Christians need to evaluate how they spend their time. Unwise use of time is one of the greatest deterrents to Christian growth.

Bible study is the most effective tool of the Holy Spirit to bring the Christian into conformity to Christ. Understandably, Satan uses every device possible to keep us from the Word of God.

RULES TO FOLLOW

1. The Bible is God’s Word.

“My son, if you receive my words…” We must come to the Bible with the conviction that it is the Word of God through which God will surely speak to us. We do not need to prove the Bible first and then accept it; we accept it and then let it prove itself. If we doubt the authority of the Word, we cannot expect to receive anything from the Lord (James 1:6–7). We need to be like the Thessalonians and receive the Word of God as truth (1 Thess. 2:13). Many receive no benefit because they do not receive the Word with faith (Heb. 4:2).

2. Obedience is required.

"And treasure my commands within you." The soul must be exercised by the Word. The Word must school us and change our lives. If we fail to translate the Word into daily practice, we will be spiritually anemic. Bible study brings renewed devotion to God. Even more, it produces discipline and determination resulting in the transformation of human nature. There is no better way to blind ourselves to Bible truth than to refuse to heed and obey it. 1The prophet Hosea said, "My people are destroyed for lack of knowledge. Because you have rejected knowledge, I also will reject you" (Hos. 4:6). We do not truly study the Word, or really know it, until we put it into practice in our lives. "Be doers of the word" (James 1:22).

3. Listening is demanded.

"Incline your ear to wisdom." The word *incline* means, "to listen, to take heed." Luke 8:18 says: "Therefore take heed how you hear." We need to incline our ears to the voice of the Holy Spirit. A first principle in Bible study is to learn to read intelligently. But more than that, we need the illumination of the Holy Spirit, for the Bible is a revelation of spiritual truth and its understanding is dependent upon spiritual sensitivity. Consider every phrase, every word of Scripture. Let the Holy Spirit make it real to the listening ear.

4. The heart must be yielded.

"Apply your heart to understanding." Heart-searching should precede Bible study. The Word has been likened in Scripture to seed. We must prepare the soil of our hearts to receive the Word so it will bear fruit. The psalmist prayed: "Search me, O God, and know my heart; try me, and know my anxieties; and see if there is any wicked way in me, and lead me in the way everlasting" (Ps. 139:23–24).

Unless the heart is prepared, we will miss the truths of the Word. We must have a regenerated heart (John 3:3), a humble heart (Matt. 11:25), a willing heart (John 7:17), and a devoted heart (Ps. 119:67). We need to open our hearts to God and let Him prepare them to receive the truth of His Word.

5. Prayer is necessary.

"Yes, if you cry out for discernment, and lift up your voice for understanding." We cannot, by our own wisdom, understand the Bible. In all our study we must carefully seek the help of the Holy Spirit. He alone can remove the veil from our minds. It is impossible to know the Bible without prayer. We need to join the psalmist in his prayer, "Open my eyes, that I may see wondrous things from Your law" (Ps. 119:18). When we breathe this prayer in faith, we can expect the Lord to open our understanding as He did for two men on the Emmaus road after His resurrection: "Their eyes were opened and they knew Him….And they said…'Did not our heart burn within us…while He opened the Scriptures to us?'" (Luke 24:31–32). And also for Lydia, the seller of purple: "Now a certain woman named Lydia…the Lord opened her heart" (Acts 16:14).

6. Seek as for silver.

"If you seek her as silver…" Silver is a standard of money. Men will do almost anything for money because money gives them so many of the things they want. The Bible states, "Money answers everything" (Eccl. 10:19). Men work for the paycheck. But there is something of far greater worth than the silver of this world. David said, "The words of the LORD are pure words, like silver tried in a furnace of earth, purified seven times" (Ps. 12:6). As a man disciplines himself to hard toil to get a share of this world's goods, the Christian must prepare for the discipline of businesslike Bible1 study, coupled with businesslike prayer. It takes earnestness of purpose, concentration of effort, and determination of mind and heart.

7. Search as for hidden treasure.

"And search for her as for hidden treasures." The word *search* is equivalent to dig. One translation (the Vulgate) reads: "to dig out." The treasures of God's Word are to be found by the one who will give himself to diligently dig for them. We need to use the same untiring energy with which men dig for hidden treasure in our search for the riches of the Word. The perseverance of the seeker after material wealth often puts to shame the seeker after spiritual wealth. This matter of searching is important. Jesus said, “Search the Scriptures” (John 5:39).

RESULTS TO EXPECT

The serious seeker after spiritual wealth can expect the following results from study:

- Understanding

“Then you shall understand the fear of the LORD…” (Prov. 2:5). Our hearts will be filled with wonder and praise, and we will receive “the things of the Spirit of God” (1 Cor. 2:14).

- Knowledge

“…and find the knowledge of God” (Prov. 2:5). Purposeful study will do more than merely give us the facts of the Bible; we will learn to know God. The divine Personality, infinite and unfathomable, will reveal Himself. We know the Living Word as we understand His revelation given to us in the written Word.

PROVISION FOR STUDY

> But the Helper, the Holy Spirit, whom the Father will send in My name, He will teach you all things, and bring to your remembrance all things that I said to you.
>
> —John 14:26

> However, when He, the Spirit of truth, has come, He will guide you into all truth; for He will not speak on His own authority, but whatever He hears He will speak; and He will tell you things to come. He will glorify Me, for He will take of what is Mine and declare it to you. All things

> that the Father has are Mine.
> Therefore I said that He will take of
> Mine and declare it to you.
>
> —John 16:13–15

THE BIBLE IS GOD'S MESSAGE TO US.

Every word has value and importance in the total revelation. The general theme of the Bible is redemption through the Lord Jesus1 Christ. Every part of the Bible is perfect because it is the Word of God. But the Old Testament by itself is incomplete, for it is anticipatory. It looks forward to the coming of the promised Redeemer. From beginning to end it is a book of promise, looking forward to something not yet fulfilled.

On the other hand, the New Testament speaks of the fulfillment of that expectation. The mighty sweep of God's purpose is given to us in Matthew 16:13–27. Here we have:

- The revelation of His person: "You are the Christ, the Son of the living God" (16:16).

- The revelation of His purpose: "On this rock I will build My church" (16:18).

- The revelation of His program: "He must go to Jerusalem, and suffer many things from the elders and chief priests and scribes, and be killed, and be raised the third day" (16:21). In the Gospel of Luke, God's purpose for this age is given in three steps: "It was necessary for the Christ [a] to suffer and [b] to rise from the dead the third day, and [c] that repentance and remission of sins should be preached in His name to all nations, beginning at Jerusalem" (Luke 24:46–47).

- The revelation of the opposition to His program: “Far be it from You, Lord; this shall not happen to You!” (Matt. 16:22).

- The revelation of the cost to be His follower: “If anyone desires to come after Me, let him deny himself, and take up his cross, and follow Me” (16:24).

- The revelation of the culmination of His purpose: “For the Son of Man will come in the glory of His Father with His angels, and then He will reward each according to his works” (16:27).

THE BIBLE IS CLEAR IN ITS CENTRAL MESSAGE.

There are depths of meaning that challenge the greatest minds and elude the grasp of the greatest thinkers, but generally the truths of the Scriptures are plain and clear. Satan wants to make us think that it is very difficult for the ordinary person to understand the Bible. Anyone who stands upon the Word need not be troubled with the fear of not being able to understand it, for understanding and enlightenment do not rest with us.

THE BIBLE DEALS WITH MATTERS THAT ARE DIVINE, INFINITE, AND ETERNAL.

The Bible transcends man’s understanding. But divine enablement comes to us through the Holy Spirit (John 14:26; 16:13–15; 1 Cor. 2:13–14). A yielded Christi1an, even though he may have a limited intellectual capacity and may lack formal education, can nevertheless make great progress in his understanding of the Bible, because he knows the Teacher and has daily fellowship with Him.

God has made provision for us to understand His Word by giving us the Holy Spirit. The Spirit who authored the Word is the divine Teacher who explains it. We must allow Him to guide us. Then it will be amazing how He will open our spiritual eyes.

The Word of God will not degenerate into a mere textbook of history or a manual on religion if we come to it always expecting an encounter with the Lord. Study, illumined by the Holy Spirit, will bring us to worship. Meditation will bring us to praise, and praise will bring us to adoration. No better illustration can be found than the warmth of worship expressed by the psalmist as he dwelt on the wonders of the Word in Psalms 1, 19, and 119.

PRINCIPLES OF STUDY

> All Scripture is given by inspiration
> of God, and is profitable for doctrine,
> for reproof, for correction, for
> instruction in righteousness.
>
> —2 Timothy 3:16

God wants us to study the Bible. He has provided the Book and the Teacher. Through His servants we have an abundance of help in the form of Bible study books and study methods. If we have a desire to know the Word, a willingness to give time for that purpose, and a resolve to keep on despite obstacles, we will find the joy of learning and living in the Word. Come hungry to the Word, for the hungry are never disappointed (Matt. 5:6).

Bible study must be personal, perpetual, and presented to others.

1. Personal Bible study

“Oh, how I love Your law! It is my meditation all the day” (Ps. 119:97). Note the personal pronouns *I* and *my*. Bible study will be tedious until it becomes personal. Then it can be delightful, intensely interesting, thrilling, and profitable. In Bible study we must be participators rather than spectators.

2. Practical Bible study

Bible study requires a systematic approach. Do not stay only with those portions that have brought blessing or seem more inviting. If a less interesting passage falls into the plan, resist the inclination to turn aside. All Scripture is inspired. *All* is God’s Word. “Man shall not live by bread alone, but by every word that proceeds from the mouth of God” (Matt. 4:4). Aim to cover all the Bible. Approach the uninviting passage with a real spirit of study. Pray over it…meditate upon it…compare it with parallel passages…read what others have written about it. Watch it become real!

Actual study should involve reading the passage or the book over again and again. Read available translations. Make notes for later study. Keep a record of your observations just as they occur to you, whether they seem significant or not. Writing down your thoughts will serve to stimulate thinking and concentrat1ion. We discover how little we know when we try to write it down. Use a study Bible that can be marked. Marking your Bible will help to make your reading more concrete. Try underlining passages that are especially meaningful. Jot in the margins thoughts that the Spirit makes real.

Effective Bible study involves asking the following sequential questions:

- *Observation*—What does the passage say (content)?
- *Interpretation*—What does it mean?
- *Application*—How does it apply to me?

As you seek to apply God's Word to your life, continue by asking: What does it say to me (personal application)? What does it say to me today (relevant personal application)? What am I going to do about it today (immediate personal action on the Word)?

It is necessary to *observe* carefully what the passage actually says before *interpreting* it, and then to *apply* the truths personally.

A simple, practical approach to study is suggested in 2 Timothy 3:16. Just as John 3:16 gives us the central verse of the Bible on how to become a Christian, 2 Timothy 3:16 gives us an important verse on how to grow as a Christian.

Any passage in the Bible—a verse, a chapter, a book—is God's Word and is profitable in four ways. Note them:

- *Doctrine*—The Bible presents a system of truth containing all the knowledge of God, man, and the universe essential to spiritual growth. Find the teaching of the passage.
- *Reproof*—Biblical reproof makes us feel keenly to what extent we have

strayed from the divine standard.

- *Correction*—The Scripture is the plumb line by which we test the correctness of our thinking and the uprightness of our conduct. Some read the Bible to criticize and attempt to correct it. Blessing comes to those who read it for the purpose of allowing it to criticize and correct them.

- *Instruction in righteousness*—Biblical instruction applies the lessons learned in the passage to your personal life. As we compare our character and conduct with the precepts of the Scriptures, we are being practical about Bible study. Instruction is effective only to the extent that it is applied.

3. Perpetual Bible study

> These [the Bereans] were more fair-minded than those in Thessalonica, in that they received the word with all readiness, and searched the Scriptures daily.
>
> —Acts 17:11

The Bereans were marked as noble people for two reasons: they welcomed the Word of God, and they searched the Scriptures daily.

Bible study has been compared to eating. If we expect to stay alive spiritually, we must keep feeding ourselves. We do not eat a week's supply of food for the natural body i1n a day; there must be a daily assimilation of food. Neither can we absorb enough Bible study in a day to last for a lengthy period of time. If spiritual strength is to be maintained, there must be constant feeding on the Word of God.

4. Presented to others

> And the things that you have heard from me among many witnesses, commit these to faithful men who will be able to teach others also.
>
> —2 Timothy 2:2

What we learn in Bible study must be passed on to others. If not, our study can become dull and uninteresting. The constant outflow of water from a body of water keeps it fresh and free from the stagnant odors and scum of a dead body of water. We use what we have learned by sharing it with others. Sharing is an excellent way to make a truth real to us.

ILLUSTRATIVE AND PRACTICAL

> Other books we may read and criticize. To the Scriptures we must bow the entire soul, with all its faculties.
>
> —E. N. Kirk

> The Scriptures were written, not to make us astronomers, but to make us saints.
>
> —Matthew Henry

> The Bible is the most thought-suggesting book in the world. No other deals with such grand themes.
>
> —Herrick Johnson

> When you are reading a book in a dark room, and come to a difficult part, you take it to a window to get more light. So take your Bible to Christ.

—Robert McCheyne

I am convinced that the Bible becomes even more beautiful the more one understands it; that is, the more one gets insight to see that every word, which we take generally and make special applications of it to our own wants, has had, in connection with certain circumstances, with certain relations of time and place, a particular, directly individual reference of its own.

—Goethe

Make it the first morning business of your life to understand some part of the Bible clearly, and make it your daily business to obey it in all that you do understand.

—John Ruskin

Nobody ever outgrows Scripture; the Book widens and deepens with the years.

—Charles H. Spurgeon

There is no book that will so repay time spent on its pages as will the Word of God.

—F. B. Meyer

BENEFITS OF COMMITTING THE SCRIPTURES TO MEMORY

The benefits of memorizing scripture are many. Unquestionably the presence of the Word of God in the inner mind does tend, by God's grace, to sweeten and sanctify. And then in solitary moments, whether on the job, in private meditation, or lying awake at night, how beautiful it is to be able to listen to the voice of God talking out of one's memory by His Word unto the mind and heart. What a power to guide, to warn, and to cheer us. Many a moment that would be invaded by sin or darkened by sorrow is turned into purity and hope by a portion of Scripture—a verse, a passage, a psalm—said from memory. "Your word I have hidden in my heart, that I might not sin against You!" (Ps. 119:11).[*]

HOW TO USE THE SPIRITUAL WARFARE BIBLE

The purpose of the *Spiritual Warfare Bible* is to provide the reader with opportunities to study the principles and teachings contained in either the New King James text of this Bible or the various additional teaching elements added by the publishers to become prepared and equipped to utilize the power and strength of the Holy Spirit to engage our enemy, Satan, and his demonic influences in spiritual warfare and to be victorious over them.

The additional teaching elements added are written in the present tense so that their impact will address the reader's life at the moment of studying the Word and teachings. The Scripture texts used in the additional teachings use, for the most part, the *New King James Version* of the Bible.

While the inclusive pronoun *us* is often used to involve the reader, the pronoun *you* is used whenever possible so as to confront and engage the reader with the impact of the teaching.

The introductions to each book serve to highlight and give an overview of how the Holy Spirit teaches the believer the principles necessary to be equipped and prepared to engage in spiritual warfare. It is not the purpose of the introductions to give a comprehensive outline or overview of the content of that book. When a particular book has no specific texts referring to the work of spiritual warfare, a more general introduction is given to identify ho1w God's Spirit was moving through the life of that author or during that time in history.

Spiritual warfare teachings may be found throughout this Bible to give further insight, inspiration, and depth from the perspectives of outstanding Christian pastors and authors.

---

[*] Dr. Fuchsia Pickett, *How to Search the Scriptures*, 33–48.

ADDITIONAL STUDY ELEMENTS

There are six different tools in the *Spiritual Warfare Bible* for your personal study and devotions. Here is a list of the tools and how to use them.

SPIRITUAL WARFARE DECLARATIONS

There are more than two hundred fifty Spiritual Warfare Declarations to be found within the text of this Bible. These are presented as one-sentence, Scripture-based prayers or declarations that affirm the reader's determination to confront the enemy in spiritual warfare with the assurance of the Holy Spirit's preparation and help. These declarations include a Scripture reference showing the Bible verse that is the basis for that declaration. You may:

- Choose a declaration as your declaration for each day.

- Read progressively from Genesis through Revelation, reading the declarations as you read the Bible text in your daily time of study and devotions. As you read, pause to reflect on the truth of each declaration.

- Choose to commit one declaration to memory each day.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

There are nearly 220 Spiritual Warfare Basics, and several will be included with each book of the Bible. They are usually one-half to one column in length. These are short, succinct tips for doing spiritual warfare. They are topically chosen for the Scripture verse or verses near where they are positioned within the text. They cover many of the very basic things you will need to know as you prepare to engage in spiritual warfare.

Some ways to use these Spiritual Warfare Basics include:

1. Read a Spiritual Warfare Basic each day for a daily devotional time.

2. Read progressively from Genesis through Revelation, completing one Spiritual Warfare Basic each day, and then apply the revelation to your daily life.

3. Keep a journal of your insights and responses to these and the other study elements in this Bible. The journal can serve as your personal training manual for spiritual warfare.

LESSONS1b > FROM GOD'S WARRIORS PROFILES

There are twenty-one character profiles of Old and New Testament persons who were equipped and anointed by the Spirit for engaging the enemy in spiritual warfare. Each profile shows how the Spirit enabled that person for a specific endeavor in warfare. The profiles could easily be adapted for a three-week small group study about spiritual warfare or as part of a specific devotional plan for three weeks. Be sure to journal your responses as you read about each character, and include your specific prayer requests for God to equip and prepare you in a similar way for engaging and defeating Satan. The profiles included are:

1. Enoch—*Learn to Walk With God and to Please Him*

2. Leah—*Learn That Pleasing God Brings Our Highest Fulfillment*

3. Joseph—*Trust God to Make You Fruitful in the Area of Your Greatest Affliction*

4. Joshua—*Learn to Believe in Your*

Mind That You Can Do It

5. Ruth—*Learn That Submission Is the Key to Redemption*

6. Elijah—*Learn to Offer the Lord Your Very Best*

7. Elisha—*Learn to Recognize That the Battle Is the Lord's*

8. Jehoshaphat—*Learn the Incomparable Value of Praise*

9. Isaiah—*Learn to See What God Sees*

10. Daniel—*Learn to Live by Prayer*

11. Jonah—*Remember That You Cannot Flee From God's Presence*

12. Peter—*Press In for Deeper Understanding and Revelation*

13. Three Biblical Gentiles—*Learn to*

Hunger for More of God

14. Mary—*Overcome the Urgency of the Natural to Seek the Priority of the Spiritual*

15. The Good Samaritan—*Make a Heart Connection With God's Heart*

16. Jesus and the Woman at the Well of Samaria—*Keys to Becoming a Prophetess of God*

17. Cornelius—*Learn to Diligently Seek God*

18. Paul and Silas—*Praise God IN the Problem, Not Just When You Get Out of It*

19. Paul—*Establish Safeguards Against Legalism*

20. Women of the New Testament—*Learn That Your Faithfulness Will Make a Significant Impact for God*

21. Noah—*Faithfully Do What God Asks You to Do*

SPIRITUAL WARFARE PRAYERS

Scattered throughout the Bible are various prayers that focus on a specific spiritual warfare challenge. These may be prayed when you are facing a similar spiritual battle or used as material for a small group discussion on prayer and intercession for spiritual warfare. You may choose to use the specific words that are included, or you can make the prayers your own by expressing your own thoughts and desires around that particular spiritual challenge. The prayers included are:

1. Prayer Against the Spirit of Cain

2. The Passover Prayer for Deliverance

3. Trench Prayer (When Under Major Attack)

4. Moses' Prayer for the Israelites

5. Prayer to Release Angels

6. Hannah's Prayer

7. Prayer Against Ungodliness

8. Hezekiah’s Prayer

9. Prayer to Break Witchcraft

10. Posterity Prayer

11. Rebuke Satanic Alliances

12. Prayer for Our Nation

13. Job’s Prayer of Repentance

14. Prayer Against Evil

15. Prayer for Divine Alignment

16. Solomon’s Prayer

17. The Commander of the Morning Prayer

18. Prayer Against Terminal Illness

19. Daniel’s Prayer

20. Prayer for Your Children’s Spiritual Growth

21. Jonah’s Prayer

22. Habakkuk’s Prayer

23. A Prayer for Your Seed

24. Prayer Against the Spirit of Fear

25. Christ’s Intercessory Prayer

26. Prayer for Righteousness

27. Prayer for the Sanctity of Marriage

28. Battering Ram Confession of Sexual Sin Prayer

29. Prayer for Spiritual Discernment

30. Prayer for Knowing God’s Will

31. Prayer to Come Out of Homosexuality/Lesbianism

32. Covenant Confession of the Word

33. Prayer of Faith for Your Children

34. Prayer to Break Prayerlessness and Spiritual Slackness

35. Prayer of Faith for Our Nation

36. Prayer of Praise

SHARPENING YOUR SWORD INTERACTIVE STUDY ELEMENTS

Interspersed throughout the Bible are opportunities for you to spend some time in deeper reflection and study and to use various study methods to internalize what the Word of God says specifically about important spiritual warfare challenges. Use these opportunities to make specific preparations for spiritual warfare. These elements would make excellent small group study starters and could be used as a part of a deeper devotional focus at various times throughout your times of reading God's Word.

The subjects included in these "Sharpening Your Sword" study elements, with their focus Scripture reference, include:

1. Why Do We Pay Our Tithes?—Leviticus 27:30
2. Anointed by God's Spirit—Judges 3:10
3. The Victory Is Already Ours—Ruth 2
4. A Double Share of His Spirit—1 Kings 19
5. Be Spiritually Hungry for More of God—Nehemiah 2
6. Sharpened to

Discern—Proverbs 8

7. A Sharpened Sword for Battle—Isaiah 59

8. Sharpened Through Worship in His Glory—Ezekiel 43

9. Lessons From Hosea—Hosea 4–5

10. Sharpened to Prophesy—Joel 2:28

11. Five Foolish Boasts of Satan—Micah 2

12. A Sharp Sword Is a Powerful Sword—Zechariah 4:6

13. Sharpened to Intercede in the Spirit—Matthew 3

14. Manifesting Signs and Wonders—

Mark 16

15. Dreams and Visions—Acts 3

16. Sharpened by the Spirit's Gifts—1 Corinthians 12

17. The Spirit's Sword—Ephesians 6:16–18

18. Faith Principles to Enable You—1 Thessalonians 1

19. Set Apart and Made Holy by the Spirit—2 Thessalonians 2:13–17

20. Do Not Stifle the Holy Spirit—Titus 3:1–8

21. Sharpen Your Sword to Pray for Healing—James 5

22. Testing Spiritual Voices—1 John 4:1–6

23. Listen to the Spirit—Revelation 1–3

PREPARING FOR SPIRITUAL WARFARE ARTICLES

There is a one- to two-page focus article included with each book of the Bible. These articles give a deeper, more complete teaching about a specific element of spiritual warfare. They are positioned near the Scripture reference from which the teaching is taken and are excellent resources for deeper study as you become stronger in your faith and better prepared and equipped to engage in spiritual warfare. The specific topical articles included are:

1. Induction Into the Army of God—Before Genesis

2. The Anointing of the Twilight—Genesis

3. Plugging Into the Power Source—Exodus

4. Don’t Neglect Your Spiritual Altar—Leviticus

5. Experiencing Deliverance and Release—Numbers

6. Preparing to

Engage the Enemy—Deuteronomy

7. Taking Back Ground—Joshua

8. Getting Past Gaza—Judges

9. He Will Never Leave You—Ruth

10. The Dangerous Roots of Insecurity and Inferiority—1 Samuel

11. Where Every Prayer Is Answered—2 Samuel

12. Can Demons Torment People on Earth?—1 Kings

13. Confronting the Enemy's Tactics—2 Kings

14. Why Do We Fast?—1 Chronicles

15. Keep an Eye on Your Character—2 Chronicles

16. The Effect of Godly Fasting—Ezra

17. The Difference Between Watchmen and Gatekeepers—Nehemiah

18. The Weapon of Fasting—Esther

19. How Satan Oppresses—Job

20. Six Essentials for the Warrior—Psalms

21. Seven Winning Responses to Satan's

Challenge—Psalms

22. Identifying the Cause of a Curse—Proverbs

23. The Deceptive Trap—Ecclesiastes

24. The Banner Over Us—Solomon1

25. Don’t Let Satan Crowd Jesus Out of Your Life—Isaiah

26. The Importance of Understanding and Knowledge—Jeremiah

27. Prayer Watches—Lamentations

28. Building Hedges of Spiritual Protection—Ezekiel

29. Empower Your Children—Daniel

30. God’s Purpose for Marriage—Hosea

31. “Loose Thyself”—Joel

32. Lion’s Roar—or Voice of God?—Amos

33. Demons Use Deception—Obadiah

34. The Presence of the Lord—Jonah

35. The Gift of Forgiveness and Restoration—Micah

36. Cursed With Lawlessness and Rebellion—Nahum

37. The Timing of God—Habakkuk

38. Fear of Life—Zephaniah

39. Consider Your Ways—Haggai

40. God’s Covenant With His People—Zechariah

41. Satan Will Test You With Mammon—Malachi

42. A War Between Two Kingdoms—Matthew

43. Symptoms of Demonic Oppression—Mark

44. Practice Spiritual

Warfare for Your Marriage—Luke

45. Know Your Foe—John

46. The Foundation of the Fullness and Power of the Holy Spirit—Acts

47. Your Fiercest Foe—Romans

48. The Greatest Gift—Love—1 Corinthians

49. Twelve Root Strongholds—2 Corinthians

50. Master Self-Control—Galatians

51. The Army of Hell—Ephesians

52. Maintaining Spiritual Freedom From Demons—Philippians

53. The Cross Disarmed Satan—Colossians

54. Sanctifying Yourself Through Fasting—1 Thessalonians

55. Faith and Patience—2 Thessalonians

56. The Curse of a Seared Conscience—1 Timothy

57. Stir Up the Gift of God—2 Timothy

58. A Father's Influence—Titus

59. Declare a Holy Fast for Your Children—Philemon

60. The New Covenant—Hebrews

61. Effectual Fervent Prayer—James

62. The Reality of Your Enemy—1 Peter

63. The Scope of Satanic Activities—2 Peter

64. Destroying the Enemy’s Forces—1 John

65. Antichrist Deceivers—2 John

66. We Overcome by the Word of Our

Testimony—3 John

67. Taking Action—Jude

68. The Curse From the Seduction of Jezebel—Revelation

ADDITIONAL FRONT MATTER BEFORE GENESIS

We have included helpful articles to get you focused as you begin to study this *Spiritual Warfare Bible*. They include:

- How to Study the Bible
- How to Use the *Spiritual Warfare Bible*
- Putting Spiritual Discernment Back Into Spiritual Warfare
- Induction Into the Army of God

APPENDIXES AT THE BACK OF THE BIBLE

We have included some appendices that we felt were important additional materials related to the preparation and equipping of the believer for spiritual warfare. We encourage you to read these appendices and to use them as tools as you step forward into spiritual warfare. The appendices included are:

Appendix A—Spiritual Warfare in the Bible

Appendix B—End-Time Misconceptions About Spiritual Warfare

Appendix C—Spiritual Warfare Distinctives

- Thirty-Seven Biblical Curses
- Grouping of Various Evil Spirits
- Demonic Spirits Identified in Scripture
- Sixty Symptoms of Demonic Attack

Biblical Proof That a Believer Should Enlist in Spiritual Warfare

Appendix D—Freedom Principles for Daily Use

Appendix E—Combat Scriptures to Defeat Our Enemy

Appendix F—Living in Triumphant Hope

SMALL GROUP OR CLASS STUDY

The *Spiritual Warfare Bible* is an excellent resource for small group or class Bible study focused on the subject of spiritual warfare. This Bible may be used for:

- Small group studies
- Home groups

- Cell groups
- Sunday school classes
- Midweek classes
- Group seminars or retreats
- Women’s and men’s groups
- Accountability groups
- Youth groups, campus groups, or college and career groups

It is our prayer that this *Spiritual Warfare Bible* will become an invaluable tool for you to use continually as you become prepared and equipped to engage in spiritual warfare. Remember that the Holy Spirit is your partner in warfare and that the battle is not yours—it is the Lord’s.

—BARBARA DYCUS
Executive Editor

PUTTING SPIRITUAL DISCERNMENT BACK INTO SPIRITUAL WARFARE

Now that you are prepared to begin incorporating the material in this *Spiritual Warfare Bible* into your daily spiritual development and understand more thoroughly how important it is to be prepared to stand strong against the enemy’s aggressive attacks against the people of God, it will be important for you to remember that spiritual warfare is just one element of living the Christian life. You must recognize the need to remain balanced in your faith, always growing in your intimate spiritual relationship with the Lord, demonstrating the power of the Holy Spirit in your life through the fruit of the Spirit in full expression in your daily walk, growing in your expression of the spiritual gifting that God has for His children, and still being prepared to enter spiritual warfare against your aggressive enemy, Satan. The following important article will help you to remember the need for balan1ce in spiritual warfare as you study this

Bible.

I was raised in spiritual warfare. By that I mean, soon after I got saved I plugged into an apostolic church that vowed to run to the battle lines to wrestle spirits of Jezebel, witchcraft, religion—and whatever else was opposing the purposes of God.

My church home was akin to a spiritual war zone. We were always on red alert through prophetic warnings, dreams, and visions about the next attack. Indeed, spiritual warfare was a consistent thread in most of the praise, worship, equipping classes, Sunday morning sermons, and leadership lessons.

I was in a spiritual warfare ditch where the enemy and his plans were ultimately exalted over God and His plans. Don't get me wrong. I believe wholeheartedly in spiritual warfare. But if we take any spiritual principle to the extreme, we can get into a spiritual ditch. So we have to guard ourselves from deception by adding balance and soberness of mind to our vigilance. Our enemy is roaming around like a lion seeking someone to seize upon and devour—and getting out of balance opens a door wide enough for him to freely enter (1 Pet. 5:8).

Another prophetic key is exercising the gift of discernment. Why not step back and pray about the root of the matter? When you do, you'll be more successful in battling what's battling you because you open the door wide enough for Holy Ghost wisdom to freely enter. It may be that you need to repent for something you are doing that's allowing the devil to manifest in your midst. Or it could be that an enemy you've never fought before is attacking you—and you need true spiritual discernment to identify the attacker.

Then again it could be possible that you are in a completely different ditch. Maybe you aren't going on the offense against the devil at all. The problem is that God won't do our part for us. He's given us authority in this earth realm. Jesus gave us His authority, as well as keys to the kingdom. Whatever we bind on earth is bound in heaven. And whatever we loose on earth is loosed in heaven (Matt. 16:19). In other words, we can't blame God when the devil gets in. We're the ones who allow it.

Again, I started out in an extreme spiritual warfare ditch, where even worship music was an exercise in combat. Yet having escaped a church where strife ruled and reigned—and in which Jezebel was typically blamed for most of the rumblings in the congregation—I entered into a prophetic church that took an opposite approach. And I entered another spiritual warfare ditch.

During my extended season at this prophetic church I never heard them bind Jezebel once. I never heard anyone come against witchcraft or rebuke the spirit of religion. All they did was praise and worship the Lord for hours on end and roll around on the floor and laugh. This was unusual for me, perhaps especially so after exiting the extreme apostolic. I enjoyed it—until I realized I was in another ditch.

Yes, our praise and worship in the midst of the battle confuses the enemy and shows our faith in God's deliverance. But God is not going to do our part. Although I agree that the battle is the Lord's and we can praise Him knowing He's fighting on our behalf, we still have to be prepared to exercise our God-given authority. David was a worshiper, but he was also a warrior. He knew when to draw a sword, and he knew when to draw praise from his lips unto God.

After living in both extremes, I have learned a lesson: we must all become skilled warriors and intimate worshipers. In doing so, we avoid either ditch of extremism and walk1 in the discernment of the Holy Ghost, knowing when to run to the battle line and when to worship.

When you go to war, go with the right strategy. Sometimes that means prophetic worship. Other times it is spiritual warfare. Many times it's a combination of both. Ultimately, Jesus must be the center of our focus. "The LORD is a man of war; the LORD is His name" (Ex. 15:3). And He is worthy to be praised.*

---

* Adapted from Jennifer LeClaire, "Putting Spiritual

Discernment Back Into Spiritual Warfare," Prophetic Insight from *Charisma* magazine, February 14, 2012. Used by permission.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

Induction Into the Army of God

To *be inducted* means to be formally installed or put into a position or office. As you read this Bible and study the materials about spiritual warfare that accompany it, I pray that if you have not been inducted into the army of the Lord, you will make the decision to do so.

The materials are not deep. They are basic training tools for those who desire to understand the foundational principles of warfare. Many in the body of Christ want to be promoted in the area of spiritual warfare, but they have not taken the time to prepare themselves. They have not met the specifications of the prerequisites. God is calling a muster alert for those in the household of faith to take a radical position against the wiles of the devil. In the military, when a muster alert is called, no one except the highest-ranking officials know if the alert is for training or real war. The motto of the natural army is to be "combat ready." In other words, every time a training exercise or alert is called, soldiers must be ready to respond as if it is a real war.

God is calling His church to a "real war" mentality. Many Christians haphazardly quote, "The weapons of our warfare are not carnal," but fail to walk in the reality of “real war.” As a result, people who love God become weary in well doing and acquire a “rolling with the punches” mentality. They are not prepared to deal with the obstacles of life because they have taken everything as it came. They have no basic or advance training in the things of God to teach them how to confront their enemies in victory. My prayer is that this Bible will give you a foundation to be prepared for twenty-first-century warfare.

In their warfare today, the natural army is not using catapults and bows and arrows as weapons. This was all right for warfare in centuries past. But today the army uses nuclear weapons. I agree that there is nothing new under the sun, but new truths are being released to the church for today’s warfare. These things have been around all the time, but they are new to us. Do not be afraid of what is new to you. Allow the revelations here to put a demand on your spirit to go to the next level. You cannot continue to use weapons of times past against twenty-first-century darkness.

Some of the information in this Bible may seem too radical to you if you are in1 a comfort zone. If this is the case, I prophesy you out of your comfort zone by the Spirit of the Most High God. I challenge you to plunge into the deeper things of God. I realize that not everyone is called to be a frontline soldier, but I dare you to do the basics that are required of all born-again believers. Mark 16:17–18 is our basic training guideline for every believer. The scripture reads:

And
these
signs
will
follow
those
who
believe:
In
My
name
they
will
cast
out
demons;
they
will
speak
with
new
tongues;
they
will
take
up
serpents;
and
if
they
drink
anything
deadly,
it
will
by
no
means
hurt
them;

they
will
lay
hands
on
the
sick,
and
they
will
recover.

Always remember that Mark 16:17–18 gives basic foundational instruction for *the everyday believer*!

This passage says that believers must recover. In the Greek, the word *recover* in this passage of Scripture is *ana nephoh*, which means, “to become sober again, to regain one’s senses, to recover self.” How many people of God have taken arrows from the enemy and have never recovered? David received his marching orders from the Lord and recovered all!

Timothy asked, “How can a bishop take care of the church if he does not have rule in his own home?” (See 1 Timothy 3:5.) This brings one question to my mind. How can we, as the church, win the world if we have no rule in the house of God? I believe this Bible contains keys to releasing the power of God in our own homes and in the church. The key to praying for our churches, communities, and cities is allowing the untapped power of God to flow fluently through us as everyday believers.

The revelations in this Bible are not limited to those called to the office of the intercessor. If you have been blood bought and are tired of the devil having his way in your affairs, God wants to sign you up for His special forces! When we accept Jesus into our lives, we are automatically signed up for the army of the Lord. Many do not realize it, but they are in the army of the Lord whether they accept it or not. We are not just members in the church, but we are soldiers for the Lord. Every born-again believer is called to do warfare.

God is taking us past “the right hand of fellowship” (Gal. 2:9), and He is teaching our hands to do war! I want to touch your spirit and agree with you that God would flood your heart with revelation through the contents of this Bible. By this flood you will have a better understanding of the hope of your calling. Remember, though we walk in the flesh, our warfare is not after the flesh.

After I signed up with the military, there was a grace period before I actually began active duty. Many people make commitments to God but never show up for active duty. The benefits that are afforded to a soldier cannot be received until he or she receives active duty military status. What is your status as God's soldier? Have you sworn in but failed to become active in the things of God? Allow the content of this Bible to activate you, so that in the end you will not stand before the Chief Commander of Creation with your work left undone.

Pray this prayer of agreement with me:

> *Father God, in the name of Jesus, I bind every whispering*

spirit
and
strange
voice
that
is set
against
my
spiritual
warfare
training.
I
t1ake
authority
over
the
spirits
of
imagery
and
magnification,
and I
declare
that
the
eyes
of
my
understanding
are
opened.
Mind
binders
and
blinders
are
blocked
and
forever
bound.

I also
bind
the
spirits
of
slothfulness,
slumber,
and
demonic
inertia
from
causing
me to
be
sleepy
when
I am
reading
this
Bible.
Every
distraction
is
under
my
feet,
and
all
spirits
of
doubt
have
no
open
place.
It is
my
purpose
to
tap

into
the
unadulterated
truth
of
God's
Word.
I am
open
to
new
levels
of
spiritual
warfare
in my
life.
Spirits
that
would
prompt
"the
fear
of
the
unknown"
are
locked
out
of
my
mind.
I am
not
afraid!
New
boldness
is my
portion!
My

spirit
is
open
to
agree
with
the
revelations
in
this
book
that
bear
witness
with
the
Holy
Spirit.
I
renounce
all
religious
and
familiar
spirits
that
may
have
influence
on
the
way I
receive.

Holy
Spirit,
I give
You
permission
to

deprogram my thinking about anything that has limited the greater works of Jesus Christ in my life. I commit to walk in the anointing of the end-time believer. All lies and strongholds that have built walls against the truth in my life are

pulled
down,
in
Jesus'
name.
The
scales
and
veils
are
removed
from
my
eyes
so
that
my
understanding
will
not
be
hindered.

Lord,
I
thank
You
that
the
words
here
will
sharpen
my
sword
and
give
weight
to
my

realm
of
influence
in the
Spirit.
This
spiritual
influence
will
affect
every
area
of
my
life
and
leave
an
imprint
on
everything
that I
put
my
hands
to the
plow
to
do.
This
spiritual
influence
will
also
anoint
my
steps
whereby
my
footprints

will
release
a
centrifugal
force
in the
earth
that
will
confirm
the
dominion
of
Christ
in my
life. I
commit
to the
truth
and
believe
that
in
every
area
of
my
life I
will
be
made
free.
This
liberty
will
permeate
my
loins
and
reproduce

*freedom in the lives of others. I sign up to be activated for the army of the Lord!**

---

* Kimberly Daniels, *Give It Back!*, 1–5.

THE OLD TESTAMENT

The Holy Spirit's Work in

GENESIS

Introduction

The Holy Spirit Prepares and

Empowers Us for Spiritual Warfare

It is the Holy Spirit who empowers, prepares, and equips us for spiritual warfare. In the Book of Genesis we read about the cosmic activity of God’s Spirit in the creation of the universe as well as of humankind. The first mention of the Spirit of God in the Bible is in the second verse of chapter 1. Verse 12 describes the earliest condition of the earth as shapeless and uninhabited, before God spoke His series of creative commands (1:3–31). At that initial stage “the Spirit of God was hovering over the face of the waters.” By analogy in Genesis 1:2 we see God as the divine energizer extending Himself in His creating power to bring order and design to shapeless substance. He is beginning to perfect “a nonfunctioning universe” into “one that could operate and display the glory of God,” as Leon Wood stated it so well.[*]

God’s work of creation concludes with the creation of humanity. God the potter molded the first human of clay, and He breathed into his nostrils the breath of life, and the human became a living being. In each successive generation after Adam the wickedness of humanity accelerated. The more people alienated themselves from God, the more they opened themselves to demonic activity.[†]

From rebellion in Eden, through a cataclysmic flood, and into the struggles of the patriarchs, God’s Spirit moves, bringing His divine presence, purpose, protection, and provision into human existence. In Genesis the beginning way is prepared for the coming Messiah who would save those who trust in Him (3:15).

The Spirit of God breathes life into man and creates humanity in His image.[‡] Because we are made in His image, we can stand up to the enemy's attacks and overcome his evil power.

---

[*] Leon J. Wood, *The Holy Spirit in the Old Testament* (Grand Rapids, MI: Zondervan, 1976), 34.

[†]

Adapted from John Rea, *Charisma's Bible Handbook on the Holy Spirit*, 23–32.

‡ *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Genesis, 1.

Genesis 1

The History of Creation

1 In the [a]beginning [b]God created the heavens and the earth. 2 The earth was [a]without form, and void; and darkness [*]*was* on the face of the deep. [b]And the Spirit of God was[1] hovering over the face of the waters.

3 [a]Then God said, [b]"Let there be [c]light"; and there was light. 4 And God saw the light, that *it was* good; and God divided the light from the

darkness. 5God called the light Day, and the [a]darkness He called Night. [*]So the evening and the morning were the first day.

6Then God said, [a]“Let there be a [*]firmament in the midst of the waters, and let it divide the waters from the waters.” 7Thus God made the firmament, [a]and divided the waters which *were* under the firmament from the waters which *were* [b]above the firmament; and it was so. 8And God called the firmament Heaven. So the evening and the morning were the second day.

9Then God said, [a]“Let the waters under the heavens be gathered together into one place, and [b]let the dry *land* appear”; and it was so. 10And God called the dry *land* Earth, and the gathering together of the waters He called Seas. And God saw that *it was* good.

11Then God said, “Let the earth [a]bring forth grass, the herb *that* yields seed, *and* the [b]fruit tree *that* yields fruit according to its kind, whose seed *is* in itself, on the earth”; and it was so. 12And the earth brought forth grass, the herb *that* yields seed according to its kind, and the tree *that* yields fruit, whose seed *is* in itself according to its kind. And God saw that *it was* good. 13So the evening and the morning were the third day.

14Then God said, “Let there be [a]lights in the firmament of the heavens to divide the day from the night; and let them be for signs and [b]seasons, and for days and years;

15and let them be for lights in the firmament of the heavens to give light on the earth”; and it was so. 16Then God made two great [*]lights: the [a]greater light to rule the day, and the [b]lesser light to rule the night. *He made* [c]the stars also. 17God set them in the firmament of the [a]heavens to give light on the earth, 18and to [a]rule over the day and over the night, and to divide the light from the darkness. And God saw that *it was* good. 19So the evening and the morning were the fourth day.

20Then God said, “Let the waters abound with an abundance of living [*]creatures, and let birds fly above the earth across the face of the [*]firmament of the heavens.” 21So [a]God created great sea creatures and every living thing that moves, with which the waters abounded, according to their kind, and every winged bird according to its kind. And God saw that *it was* good. 22And God blessed them, saying, [a]“Be fruitful and multiply, and fill the waters in the seas, and let birds multiply on the earth.” 23So the evening and the morning were the fifth day.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Your Words and Thoughts

Everything in the universe begins with and revolves around two things: *words* and *thoughts*. These two elements form the creative substance that molds and shapes the destiny of humanity. Each of us becomes the person we are, chooses the direction we take, and accomplishes everything we do based on these two primary elements. Our thoughts, intentions, motivations, and aspirations—whether they be secretly pondered in the heart, openly declared as desires, or formally written as goals—mold and shape our personal universe into something that is either grand and beautiful or base and hideous.*

24Then God said, “Let the earth bring forth the living creature according to its kind: cattle and creeping thing and beast of the earth, *each* according to its kind”; and it was so. 25And God made the beast of the earth according to its kind, cattle according to its kind, and everything that creeps on the earth according to its kind. And God saw that *it was* good.

26Then God said, [a]“Let Us make

---

* Cindy Trimm, *Commanding Your Morning,* 2.

man in Our image, according to Our likeness; [b]let them have dominion over the fish of the sea, over the birds of the air, and over the cattle, over [*]all the earth and over every creeping thing that creeps on the earth.” [27]So God created man [a]in His *own* image; in the image of God He created him; [b]male and female He created them. [28]Then God blessed them, and God said to them, [a]“Be fruitful and multiply; fill the earth and [b]subdue it; have dominion over the fish of the sea, over the birds of the air, and over every living thing that [*]moves on the earth.”

[29]And God said, “See, I have given you every herb *that* yields seed which *is* on the face of all the earth, and every tree whose fruit yields seed; [a]to you it shall be for food. [30]Also, to [a]every beast of the earth, to every [b]bird of the air, and to everything that creeps on the earth, in which *there is* [*]life, *I have given* every green herb for food”; and it was so. [31]Then [a]God saw everything that He had made, and indeed *it was* very good. So the evening and the morning were the sixth day.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

THE ANOINTING OF THE TWILIGHT

Twilight means to be

in a place of transition or neutrality. It also means to be in a place where things are not clearly defined. The prefix *twi* means “two,” so we are safe in saying that *twilight* means to be between two lights.

Genesis 1:14–16 tells us that God created two great lights—“the greater light to rule the day, and the lesser light to rule the night” (v. 16). When these lights cha1nge shifts—either from daytime to sunset or from nighttime to sunrise—it is called *twilight*. The key word is *shift*. During twilight, time literally changes from one shift to the other. Many significant things occurred during this time of day. First Samuel 30:17 says that David smote the Philistines during the twilight. Second Kings 7:5 tells the story of the lepers who got up at twilight during the famine in Samaria. They left the gate of Samaria at twilight to go to the enemy camp of the Syrians. They discovered that their enemies were simultaneously fleeing (at twilight) out of the Syrian camp because they heard the "noise of a great army" (v. 6). In their haste to flee, the Syrians left their spoils for the lepers to enjoy when they got there. The lepers obeyed God even though things were not clear to them. The twilight hour is a time of obedience. It is when you stand between the challenge and the breakthrough.

In Hebrew, the word *twilight* is *nehsef*, and one meaning is "moving toward light." The lepers knew they could not stay where they were. They had no choice but to move toward the promise (light). Even in a place of obscurity, we must purpose to move toward the promise. The promise is represented by the light. This is why evil men do not know the way of the light. They have no hope or promise in God.

The first step in moving toward a thing is getting up. The lepers had to first get up before they could move forward. Do not be discouraged if you have been knocked down in battle. Proverbs 24:16 states that a righteous man will fall down seven times and rise up again, but the wicked shall fall into mischief. The lepers rose again! In their risen state God prompted them to not forget where they had come from. He demanded that they share the spoils with their city. The same light that blessed them would be a curse to them if they did not do right.

The twilight demands obedience. When we are obedient to God, we get in place to have victory over the wicked. The devil can counterfeit everything except obedience to God![*]

---

[*] Kimberly Daniels, *Give It Back!*, 111–113.

Genesis 2

1Thus the heavens and the earth, and [a]all the host of them, were finished. 2[a]And on the seventh day God ended His work which He had done, and He rested on the seventh day from all His work which He had done. 3Then God [a]blessed the seventh day and sanctified it, because in it He rested from all His work which God had created and made.

4[a]This *is* the [*]history of the heavens and the earth when they were created, in the day that the LORD

God made the earth and the heavens,
5before any [a]plant of the field was in
the earth and before any herb of the
field had grown. For the LORD God
had not [b]caused it to rain on the
earth, and *there was* no man [c]to till
the ground; 6but a mist went up from
the earth and watered the whole face
of the ground.

7And the LORD God formed man *of*
the [a]dust of the ground, and [b]breathed
into his [c]nostrils the breath of life;
and [d]man became a living being.

Life in God's Garden

8The LORD God planted [a]a garden
[b]eastward in [c]Eden, and there He put
the man whom He had formed. 9And
out of the ground the LORD God
made [a]every tree grow that is
pleasant to the sight and good for
food. [b]The tree of life *was* also in the
midst of the garden, and the tree of
the knowledge of good and [c]evil.

10Now a river went out of Eden to
water the garden, and from there it
parted and became four riverheads.
11The name of the first *is* Pishon; it *is*
the one which skirts [a]the whole land
of Havilah, where *there is* gold. 12And
the gold of that land *is* good.
[a]Bdellium and the onyx stone *are*
there. 13The name of the second river
is Gihon; it *is* the one which goes
around the whole land of Cush. 14The
name of the third river *is* [a]Hiddekel;[*]
it *is* the one which goes toward the
east of [*]Assyria. The fourth river *is*
the E1uphrates.

15Then the LORD God took the
[*]man and put him in the garden of

Eden to [*]tend and keep it. 16And the LORD God commanded the man, saying, "Of every tree of the garden you may freely eat; 17but of the tree of the knowledge of good and evil [a]you shall not eat, for in the day that you eat of it [b]you[*] shall surely [c]die."

18And the LORD God said, "*It is* not good that man should be alone; [a]I will make him a helper comparable to him." 19[a]Out of the ground the LORD God formed every beast of the field and every bird of the air, and [b]brought *them* to [*]Adam to see what he would call them. And whatever Adam called each living creature, that *was* its name. 20So Adam gave names to all cattle, to the birds of the air, and to every beast of the field. But for Adam there was not found a helper comparable to him.

21And the LORD God caused a [a]deep sleep to fall on Adam, and he slept; and He took one of his ribs, and closed up the flesh in its place. 22Then the rib which the LORD God had taken from man He [*]made into a woman, [a]and He [b]brought her to the man.

23And Adam said:

"This
is
now
[a]bone
of
my
bones

And

flesh
of
my
flesh;

She
shall
be
called
*Woman,

Because
she
was
[b]taken
out
of
*Man.”

24[a]Therefore a man shall leave his father and mother and [b]be* joined to his wife, and they shall become one flesh.

25[a]And they were both naked, the man and his wife, and were not [b]ashamed.

Genesis 3

The Temptation and Fall of Man

1Now [a]the serpent was [b]more cunning than any beast of the field which the LORD God had made. And he said to the woman, “Has God indeed said, ‘You shall not eat of every tree of the garden’?”

2And the woman said to the serpent, “We may eat the [a]fruit of the trees of the garden; 3but of the fruit of the tree which *is* in the midst of the garden, God has said, ‘You shall not

eat it, nor shall you [a]touch it, lest you
die.’ ”

4[a]Then the serpent said to the
woman, “You will not surely die. 5For
God knows that in the day you eat of
it your eyes will be opened, and you
will be like God, knowing good and
evil.”

6So when the woman [a]saw that the
tree *was* good for food, that it *was*
[*]pleasant to the eyes, and a tree
desirable to make *one* wise, she took
of its fruit [b]and ate. She also gave to
her husband with her, and he ate.
7Then the eyes of both of them were
opened, [a]and they knew that they
were naked; and they sewed fig leaves
together and made themselves
[*]coverings.

8And they heard [a]the [*]sound of the
LORD God walking in the garden in
the [*]cool of the day, and Adam and
his wife [b]hid themselves from the
presence of the LORD God among the
trees of the garden.

9Then the LORD God called to
Adam and said to him, “Where *are*
you?”

10So he said, “I heard Your voice in
the garden, [a]and I was afraid because
I was naked; and I hid myself.”

11And He said, “Who told you that
you *were* naked? Have you eaten
from the tree of which I commanded
you that you should not eat?”

12Then the man said, [a]“The woman
whom You gave *to be* with me, she
gave me of the tree, and I ate.”

13And the LORD God said to the
woman, “What *is* this you have

done?”

The woman said, [a]“The serpent deceived me, and I ate.”

14So the LORD God said to the serpent:

“Because
you
have
done
this,

You
are
cursed
more
than
all
cattle,

And
more
than
every
beast
of
the
field;

On
your
belly
you
shall
go,

And
[a]you
shall
eat
dust

All the days of your life.

15And I will put enmity

Between you and the woman,

And between [a]your seed and [b]her Seed;

[c]He shall bruise your head,

And you shall bruise His heel.”

16To the woman He said:

“I will greatly multiply your sorrow and your conception;

[a]In pain you shall bring forth children;

[b]Your desire *shall be* [*]for your husband,

And he shall [c]rule over you.”

17Then to Adam He said, [a]“Because you have heeded the voice of your wife, and have eaten from the tree [b]of which I commanded you, saying, ‘You shall not eat of it’:

[c]“Cursed *is* the

ground for your sake;

[d]In toil you shall eat *of* it

All the days of your life.

[18]Both thorns and thistles it shall [*]bring forth for you,

And [a]you shall eat the herb of the field.

[19][a]In

the
sweat
of
your
face
you
shall
eat
bread

Till
you
return
to
the
ground,

For
out
of it
you
were
taken;

[b]For
dust
you
are,

And
[c]to
dust
you
shall
return.”

20And Adam called his wife’s name [a]Eve,* because she was the mother of all living.

21Also for Adam and his wife the LORD God made tunics of skin, and clothed them.

22Then the LORD God said, “Behold, the man has become like one of Us, to know good and evil. And now, lest he put out his hand and take also of the tree of life, and eat, and live forever”—23therefore the LORD God sent him out of the garden of Eden [a]to till the ground from which he was taken. 24So [a]He drove out the man; and He placed [b]cherubim [c]at the east of the garden of Eden, and a flaming sword which turned every way, to guard the way to the tree of [d]life.

Genesis 4

Cain Murders Abel

1Now Adam knew Eve his wife, and she conceived and bore [*]Cain, and said, “I have acquired a man from the LORD.” 2Then she bore again, this time his brother [*]Abel. Now [a]Abel was a keeper of sheep, but Cain was a tiller of the ground. 3And [*]in the process of time it came to pass that Cain brought an offering of the fruit [a]of the ground to the LORD. 4Abel also brought of [a]the firstborn of his flock and of [b]their fat. And the LORD respected [c]Abel and his offering, 5but He did not respect Cain and his offering. And Cain was very angry, and his countenance fell.

6So the LORD said to Cain, “Why are you angry? And why has your countenance fallen? 7If you do well, will you not be accepted? And if you do not do well, sin lies at the door. And its desire *is* [*]for you, but you should rule over it."

8Now Cain [*]talked with Abel his [*]brother; and it came to pass, when they were in the field, that Cain rose up against Abel his brother and [a]killed him.

9Then the LORD said to Cain, "Where *is* Abel your brother?"

He said, [a]"I do not know. *Am* I [b]my brother's keeper?"

10And He said, "What have you done? The voice of your brother's blood [a]cries out to Me from the ground. 11So now [a]you *are* cursed from the earth, which has opened its mouth to receive your brother's blood from your hand. 12When you till the ground, it shall no longer yield its strength to you. A fugitive and a vagabond you shall be on the earth."

13And Cain said to the LORD, "My [*]punishment *is* greater than I can bear! 14Surely You have driven me out this day from the face of the ground; [a]I shall be [b]hidden from Your face; I shall be a fugitive and a vagabond on the earth, and it will happen *that* [c]anyone who finds me will kill me."

15And the LORD said to him, [*]"Therefore, whoever kills Cain, vengeance shall be taken on him [a]sevenfold." And the LORD set a [b]mark on Cain, lest anyone finding him should kill him.

The Family of Cain

16Then Cain [a]went out from the [b]presence of [*]the LORD and dwelt in the land of Nod on the east of Eden. 17And Cain knew his wife, and she conceived and bore Enoch. And he built a city, [a]and called the name of the city after the name of his son—Enoch. 18To Enoch was born Irad; and Irad begot Mehujael, and Mehujael begot Methushael, and Methushael begot Lamech.

19Then Lamech took for himself [a]two wives: the name of one *was* Adah, and the name of the second *was* Zillah. 20And Adah bore Jabal. He was the father of those who dwell in tents and have livestock. 21His brother's name *was* Jubal. He was the father of all those who play the harp and *flute. 22And as for Zillah, she also bore Tubal-Cain, an instr1uctor of every craftsman in bronze and iron. And the sister of Tubal-Cain *was* Naamah.

23Then Lamech said to his wives:

“Adah
and
Zillah,
hear
my
voice;

Wives
of
Lamech,
listen
to
my
speech!

For I
have
*killed

a
man
for
wounding
me,

Even
a
young
man
*for
hurting
me.

24[a]If
Cain
shall
be
avenged
sevenfold,

Then
Lamech
seventy-
sevenfold.”

A New Son

25And Adam knew his wife again, and she bore a son and [a]named him *Seth, “For God has appointed another seed for me instead of Abel, whom Cain killed.” 26And as for Seth, [a]to him also a son was born; and he named him *Enosh. Then *men* began [b]to call on the name of the LORD.

Genesis 5

The Family of Adam

1This is the book of the [a]genealogy of Adam. In the day that God created man, He made him in [b]the likeness of

God. 2He created them [a]male and female, and [b]blessed them and called them Mankind in the day they were created. 3And Adam lived one hundred and thirty years, and begot *a son* [a]in his own likeness, after his image, and named him [b]Seth. 4After he begot Seth, [a]the days of Adam were eight hundred years; [b]and he had sons and daughters. 5So all the days that Adam lived were nine hundred and thirty years; [a]and he died.

6Seth lived one hundred and five years, and begot Enosh. 7After he begot [a]Enosh, Seth lived eight hundred and seven years, and had sons and daughters. 8So all the days of Seth were nine hundred and twelve years; and he died.

9Enosh lived ninety years, and begot [*]Cainan. 10After he begot Cainan, Enosh lived eight hundred and fifteen years, and had sons and daughters. 11So all the days of Enosh were nine hundred and five years; and he died.

12Cainan lived seventy years, and begot Mahalalel. 13After he begot Mahalalel, Cainan lived eight hundred and forty years, and had sons and daughters. 14So all the days of Cainan were nine hundred and ten years; and he died.

15Mahalalel lived sixty-five years, and begot Jared. 16After he begot Jared, Mahalalel lived eight hundred and thirty years, and had sons and daughters. 17So all the days of Mahalalel were eight hundred and ninety-five years; and he died.

[18]Jared lived one hundred and sixty-two years, and begot [a]Enoch. [19]After he begot Enoch, Jared lived eight hundred years, and had sons and daughters. [20]So all the days of Jared were nine hundred and sixty-two years; and he died.

[21]Enoch lived sixty-five years, and begot Methuselah. [22]After he begot Methuselah, Enoch [a]walked with God three hundred years, and had sons and daughters. [23]So all the days of Enoch were three hundred and sixty-five years. [24]And [a]Enoch walked with God; and he *was* not, for God [b]took him.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Prayer Against the Spirit of Cain

Lord, forgive me for demonstrating the spirit of Cain, the spirit *of murder, in my life. I admit that I have been wrong in my attitude toward others, and I repent of all the negative words I have spoken about them.*

I commit to You today that with Your help

I
will
change
the
words
I
speak
from
words
of
cursing
to
words
of
blessing.
Thank
You
for
giving
me
the
gift
of
speech
that
allows
me
to
bless
those
in
my
life.

Lord,
with
Your
help
I
will

strive to be a blessing to my family, my church, those in authority over me, and all the others You have placed in my life. Amen.[*]

---

[*] Ron Phillips, *Everyone's Guide to Demons and Spiritual Warfare*, 163.

25Methuselah lived one hundred and eighty-seven years, and begot Lamech. 26After he begot Lamech, Methuselah lived seven hundred and eighty-two years, and had sons and daughters. 27So all the days of Methuselah were nine hundred and sixty-nine years; and he died.

28Lamech lived one hundred and eighty-two years, and had a son. 29And he called his name [a]Noah,[*] saying, “This *one* will comfort us concerning our work and the toil of our hands, because of the ground [b]which the LORD has cursed.” 30After he begot Noah, Lamech lived five hundred and ninety-five years, and had sons and daughters. 31So all the days of Lamech were seven hundred and seventy-seven years; and he died.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Divine Tools

Whatever you harbor in the innermost corridors of your thought life will, sooner or later, reveal itself in the outer arena through your words or actions. Whatever is hidden will eventually be brought to light. As a spiritual being created in the image of God (Gen. 1:26), your spiritual genes

hold
the
creative
power
to
frame
your
personal
world
by
the
thoughts
and
words
you
think
and
speak,
which
are
divine
tools
given
for
your
creative
use.
All
you
are,
experience,
and
ultimately
achieve
can
be
traced
back
to
how

you have made use of these two simple, yet vastly powerful, tools—your words and thoughts.*

---

* Cindy Trimm, *Commanding Your Morning,* 2–4.

[32]And Noah was five hundred years old, and Noah begot [a]Shem, Ham, [b]and Japheth.

Genesis 6

The Wickedness and Judgment of Man

[1]Now it came to pass, [a]when men began to multiply on the face of the earth, and daughters were born to

them, 2that the sons of God saw the daughters of men, that they *were* beautiful; and they [a]took wives for themselves of all whom they chose.

3And the LORD said, [a]“My Spirit shall not [b]strive[*] with man forever, [c]for he *is* indeed flesh; yet his days shall be one hundred and twenty years.” 4There were [*]giants on the earth in those [a]days, and also afterward, when the sons of God came in to the daughters of men and they bore *children* to them. Those *were* the mighty men who *were* of old, men of renown.

5Then [*]the LORD saw that the wickedness of man *was* great in the earth, and *that* every [a]intent[*] of the thoughts of his heart *was* only evil [*]continually. 6And [a]the LORD was sorry that He had made man on the earth, and [b]He was grieved in His [c]heart. 7So the LORD said, “I will [a]destroy man whom I have created from the face of the earth, both man and beast, creeping thing and birds of the air, for I am sorry that I have ma1de them.” 8But Noah [a]found grace in the eyes of the LORD.

Noah Pleases God

9This is the genealogy of Noah. [a]Noah was a just man, [*]perfect in his generations. Noah [b]walked with God. 10And Noah begot three sons: [a]Shem, Ham, and Japheth.

11The earth also was corrupt [a]before God, and the earth was [b]filled with violence. 12So God [a]looked upon the earth, and indeed it was corrupt; for [b]all flesh had corrupted their way on the earth.

The Ark Prepared

13And God said to Noah, [a]“The end of all flesh has come before Me, for the earth is filled with violence through them; [b]and behold, [c]I will destroy them with the earth. 14Make yourself an ark of gopherwood; make [*]rooms in the ark, and cover it inside and outside with pitch. 15And this is how you shall make it: The length of the ark *shall be* three hundred [*]cubits, its width fifty cubits, and its height thirty cubits. 16You shall make a window for the ark, and you shall finish it to a cubit from above; and set the door of the ark in its side. You shall make it *with* lower, second, and third *decks*. 17[a]And behold, I Myself am bringing [b]floodwaters on the earth, to destroy from under heaven all flesh in which *is* the breath of life; everything that *is* on the earth shall [c]die. 18But I will establish My [a]covenant with you; and [b]you shall go into the ark—you, your sons, your wife, and your sons’ wives with you. 19And of every living thing of all flesh you shall bring [a]two of every *sort* into the ark, to keep *them* alive with you; they shall be male and female. 20Of the birds after their kind, of animals after their kind, and of every creeping thing of the earth after its kind, two of every *kind* [a]will come to you to keep *them* alive. 21And you shall take for yourself of all food that is eaten, and you shall gather *it* to yourself; and it shall be food for you and for them.”

22[a]Thus Noah did; [b]according to all
that [c]God commanded him, so he did.

Genesis 7

The Great Flood

1Then the [a]LORD said to Noah,
[b]“Come into the ark, you and all your
household, because I have seen *that*
[c]you *are* righteous before Me in this
generation. 2You shall take with you
seven each of every [a]clean animal, a
male and his female; [b]two each of
animals that *are* unclean, a male and
his female; 3also seven each of birds
of the air, male and female, to keep
*the species alive on the face of all
the earth. 4For after [a]seven more days
I will cause it to rain on the earth
[b]forty days and forty nights, and I
will *destroy from the face of the
earth all living things that I have
made.” 5[a]And Noah did according to
all that the LORD commanded him.
6Noah *was* [a]six hundred years old
when the floodwaters were on the
earth.

7[a]So Noah, with his sons, his wife,
and his sons’ wives, went into the ark
because of the waters of the flood.
18Of clean animals, of animals that
are unclean, of birds, and of
everything that creeps on the earth,
9two by two they went into the ark to
Noah, male and female, as God had
commanded Noah. 10And it came to
pass after seven days that the waters
of the flood were on the earth. 11In
the six hundredth year of Noah’s life,
in the second month, the seventeenth
day of the month, on [a]that day all [b]the

fountains of the great deep were broken up, and the [c]windows of heaven were opened. 12[a]And the rain was on the earth forty days and forty nights.

13On the very same day Noah and Noah’s sons, Shem, Ham, and Japheth, and Noah’s wife and the three wives of his sons with them, entered the ark—14[a]they and every beast after its kind, all cattle after their kind, every creeping thing that creeps on the earth after its kind, and every bird after its kind, every bird of every [b]sort. 15And they [a]went into the ark to Noah, two by two, of all flesh in which *is* the breath of life. 16So those that entered, male and female of all flesh, went in [a]as God had commanded him; and the LORD shut him in.

17[a]Now the flood was on the earth forty days. The waters increased and lifted up the ark, and it rose high above the earth. 18The waters prevailed and greatly increased on the earth, [a]and the ark moved about on the surface of the waters. 19And the waters prevailed exceedingly on the earth, and all the high hills under the whole heaven were covered. 20The waters prevailed fifteen cubits upward, and the mountains were covered. 21[a]And all flesh died that moved on [*]the earth: birds and cattle and beasts and every creeping thing that creeps on the earth, and every man. 22All in [a]whose nostrils *was* the breath [*]of the spirit of life, all that *was* on the dry *[1]land,* died. 23So He destroyed all living things which were on the face of the ground: both man and cattle, creeping thing and bird of the air. They were destroyed from the earth. Only [a]Noah and those who *were* with him in the ark remained *alive.* 24[a]And the waters prevailed on the earth one hundred and fifty days.

Genesis 8

Noah's Deliverance

1Then God [a]remembered Noah, and every living thing, and all the animals that *were* with him in the ark. [b]And God made a wind to pass over the earth, and the waters subsided. 2[a]The fountains of the deep and the windows of heaven were also [b]stopped, and [c]the rain from heaven was restrained. 3And the waters receded continually from the earth. At the end [a]of the hundred and fifty days the waters decreased. 4Then the ark rested in the seventh month, the seventeenth day of the month, on the mountains of Ararat. 5And the waters decreased continually until the tenth month. In the tenth *month,* on the first *day* of the month, the tops of the mountains were seen.

6So it came to pass, at the end of forty days, that Noah [a]opened the window of the ark which he had made. 7Then he sent out a raven, which kept going to and fro until the waters had dried up from the earth. 8He also sent out from himself a dove, to see if the waters had receded from the face of the ground. 9But the dove found no resting place for the sole of her foot, and she returned into the ark to him, for the waters *were* on the face of the whole earth. So he put out his hand and took her, and drew her into the ark to himself. 10And he waited yet another seven days, and again he sent the dove out from the ark. 11Then the dove came to him in the evening, and behold, a freshly plucked olive leaf *was* in her mouth; and Noah knew that the waters had receded from the earth. 12So he waited yet another seven days and sent out the dove, which did not return again to him anymore.

13And it came to pass in [1]the six hundred and first year, in the first *month,* the first *day* of the month, that the waters were dried up from the earth; and Noah removed the covering of the ark and looked, and indeed the surface of the ground was dry. 14And in the second month, on the twenty-seventh day of the month, the earth was dried.

15Then God spoke to Noah, saying, 16"Go out of the ark, [a]you and your wife, and your sons and your sons' wives with you. 17Bring out with you every living thing of all flesh that *is* with you: birds and cattle and every creeping thing that creeps on the earth, so that they may abound on the earth, and [a]be fruitful and multiply on the earth." 18So Noah went out, and his sons and his wife and his sons' wives with him. 19Every animal, every creeping thing, every bird, *and* whatever creeps on the earth, according to their families, went out of the ark.

God's Covenant with Creation

20Then Noah built an [a]altar to the LORD, and took of [b]every clean animal and of every clean bird, and offered [c]burnt offerings on the altar. 21And the LORD smelled [a]a soothing aroma. Then the LORD said in His heart, "I will never again [b]curse the ground for man's sake, although the [c]imagination* of man's heart *is* evil from his youth; [d]nor will I again destroy every living thing as I have done.

22"While
the
earth
[a]remains,

Seedtime
and
harvest,

Cold
and
heat,

Winter
and
summer,

And
[b]day
and
night

Shall
not
cease."

Genesis 9

God’s Promise to Noah

1So God blessed Noah and his sons, and said to them: [a]“Be fruitful and multiply, and fill the earth. 2[a]And the fear of you and the dread of you shall be on every beast of the earth, on every bird of the air, on all that move *on* the earth, and on all the fish of the sea. They are given into your hand. 3[a]Every moving thing that lives shall be food for you. I have given you [b]all things, even as the [c]green herbs. 4[a]But you shall not eat flesh with its life, *that is,* its blood. 5Surely for your lifeblood I will demand *a reckoning;* [a]from the hand of every beast I will require it, and [b]from the hand of man. From the hand of every [c]man’s brother I will require the life of man.

6“Whoever [a]sheds man’s blood,

By man his blood shall be shed;

[b]For in the image of

God

He
made
man.

7And
as
for
you,
[a]be
fruitful
and
multiply;

Bring
forth
abundantly
in
the
earth

And
multiply
in
it.”

8Then God spoke to Noah and to his sons with him, saying: 9“And as for Me, [a]behold, I establish [b]My covenant with you and with your *descendants after you, 10[a]and with every living creature that *is* with you: the birds, the cattle, and every beast of the earth with you, of all that go out of the ark, every beast of the earth. 11Thus [a]I establish My covenant with you: Never again shall all flesh be cut off by the waters of the flood; never again shall there be a flood to destroy the earth.”

12And God said: [a]“This *is* the sign of the covenant which I make between Me and you, and every living creature that *is* with you, for perpetual generations: 13I set [a]My rainbow in the cloud, and it shall be for the sign of the covenant between Me and the earth. 14It shall be, when I bring a cloud over the earth, that the rainbow shall be seen in the cloud; 15and [a]I will remember My covenant which *is* between Me and you and every living creature of all flesh; the waters shall never again become a flood to destroy all flesh. 16The rainbow shall be in the cloud, and I will look on it to remember [a]the everlasting covenant between God and every living creature of all flesh that *is* on the earth." 17And God said to Noah, "This *is* the sign of the covenant which I have established between Me and all flesh that *is* on the earth."

Noah and His Sons

18Now the sons of Noah who went out of the ark were Shem, Ham, and Japheth. [a]And Ham *was* the father of Canaan. 19[a]These three *were* the sons of Noah, [b]and from these the whole earth was populated.

20And Noah began *to be* [a]a farmer, and he planted a vineyard. 21Then he drank of the wine [a]and was drunk, and became uncovered in his tent. 22And Ham, the father of Canaan, saw the nakedness of his father, and told his two brothers outside. 23[a]But Shem and Japheth took a garment, laid *it* on both their shoulders, and went backward and covered the nakedness of their father. Their faces *were* [*]turned away, and they did not see their father’s nakedness.

24So Noah awoke from his wine, and knew what his younger son had done to him. 25Then he said:

[a]“Cursed
be
Canaan;

A
[b]servant
of
servants

He
shall
be to
his
brethren.”

26And he said:

[a]“Blessed
be
the
LORD,

The
God
of
Shem,

And
may
Canaan
be
his
servant.

27May God [a]enlarge Japheth,

[b]And may he dwell in the tents of Shem;

And may Canaan be his servant.”

28And Noah lived after the flood three hundred and fifty years. 29So all the days of Noah were nine hundred and fifty years; and he died.

Genesis 10

Nations Descended from Noah

1Now this *is* the genealogy of the sons of Noah: Shem, Ham, and Japheth. [a]And sons were born to them after the flood.

2[a]The sons of Japheth *were* Gomer, Magog, Madai, Javan, Tubal, Meshech, and Tiras. 3The sons of Gomer *were* Ashkenaz, *Riphath, and Togarmah. 4The sons of Javan *were* Elishah, Tarshish, Kittim, and *Dodanim. 5From these [a]the coastland *peoples* of the Gentiles were separated into their lands, everyone according to his language, according to their families, into their nations.

6[a]The sons of Ham *were* Cush, Mizraim, [*]Put, and Canaan. 7The sons of Cush *were* Seba, Havilah, Sabtah, Raamah, and 1Sabtechah; and the sons of Raamah *were* Sheba and Dedan.

8Cush begot [a]Nimrod; he began to be a mighty one on the earth. 9He was a mighty [a]hunter before the LORD; therefore it is said, “Like Nimrod the mighty hunter [b]before the LORD.” 10[a]And the beginning of his kingdom was [b]Babel, Erech, Accad, and Calneh, in the land of Shinar. 11From that land he went to [a]Assyria and built Nineveh, Rehoboth Ir, Calah, 12and Resen between Nineveh and Calah (that *is* the principal city).

13Mizraim begot Ludim, Anamim, Lehabim, Naphtuhim, 14Pathrusim, and Casluhim [a](from whom came the Philistines and Caphtorim).

15Canaan begot Sidon his firstborn, and [a]Heth; 16[a]the Jebusite, the Amorite, and the Girgashite; 17the Hivite, the Arkite, and the Sinite; 18the Arvadite, the Zemarite, and the Hamathite. Afterward the families of the Canaanites were dispersed. 19[a]And the border of the Canaanites was from Sidon as you go toward Gerar, as far as Gaza; then as you go toward Sodom, Gomorrah, Admah, and Zeboiim, as far as Lasha. 20These *were* the sons of Ham, according to their families, according to their languages, in their lands *and* in their nations.

21And *children* were born also to Shem, the father of all the children of Eber, *the brother of Japheth the elder. 22The [a]sons of Shem *were* Elam, Asshur, [b]Arphaxad, Lud, and Aram. 23The sons of Aram *were* Uz, Hul, Gether, and *Mash. 24*Arphaxad begot [a]Salah, and Salah begot Eber. 25[a]To Eber were born two sons: the name of one *was* *Peleg, for in his days the earth was divided; and his brother's name *was* Joktan. 26Joktan begot Almodad, Sheleph, Hazarmaveth, Jerah, 27Hadoram, Uzal, Diklah, 28*Obal, Abimael, Sheba, 29Ophir, Havilah, and Jobab. All these *were* the sons of Joktan. 30And their dwelling place was from Mesha as you go toward Sephar, the mountain of the east. 31These *were* the sons of Shem, according to their families, according to their languages, in their lands, according to their nations.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Man Is a Tripartite Person

When God created man

as a tripartite person, with a body, a soul, and a spirit, He intended man to live in fellowship with Himself. God created man's body, perfectly adapted to Earth's environment, to be a home for man's soul and spirit. Man's soul, his personality, allowed him to respond to all of life in God's beautiful earth. Man's spirit allowed him to commune with God, who is Spirit.[*]

---

[*] Fuchsia Pickett, *Presenting the Holy Spirit,* 3–4.

32[a]These *were* the families of the sons of Noah, according to their generations, in their nations; [b]and from these the nations were divided on the earth after the flood.

Genesis 11

The Tower of Babel

1Now the whole earth had one language and one *speech. 2And it came to pass, as they journeyed from the east, that they found a plain in the land [a]of Shinar, and they dwelt there. 3Then they said to one another, “Come, let us make bricks and *bake *them* thoroughly.” They had brick for stone, and they had asphalt for mortar. 4And they said, “Come, let us build ourselves a city, and a tower [a]whose top *is* in the heavens; let us make a [b]name for ourselves, lest we [c]be scattered abroad over the face of the whole earth.”

5[a]But the LORD came down to see the city and the tower which the sons of men had built. 6And the LORD said, “Indeed [a]the people *are* one and they all have [b]one language, and this is what they begin to do; now nothing that they [c]propose to do will be withheld from them. 7Come, [a]let Us go down and there [b]confuse their language, that they may not understand one another’s speech.” 8So [a]the LORD scattered them abroad from there [b]over the face of all the earth, and they ceased building the city. 9Therefore its name is called *Babel, [a]because there the LORD confused the language of all the earth; and from there the LORD scattered them abroad over the face of all the earth.

Shem’s Descendants

10[a]This *is* the genealogy of Shem: Shem *was* one hundred years old, and begot Arphaxad two years after the flood. 11After he begot Arphaxad, Shem lived five hundred years, and begot sons and daughters.

12Arphaxad lived thirty-five years, [a]and begot Salah. 13After he begot Salah, Arphaxad lived four hundred and three years, and begot sons and daughters.

14Salah lived thirty years, and begot Eber. 15After he begot Eber, Salah lived four hundred and three y1ears, and begot sons and daughters.

16[a]Eber lived thirty-four years, and begot [b]Peleg. 17After he begot Peleg, Eber lived four hundred and thirty years, and begot sons and daughters.

18Peleg lived thirty years, and begot Reu. 19After he begot Reu, Peleg lived two hundred and nine years, and begot sons and daughters.

20Reu lived thirty-two years, and begot [a]Serug. 21After he begot Serug, Reu lived two hundred and seven years, and begot sons and daughters.

22Serug lived thirty years, and begot Nahor. 23After he begot Nahor, Serug lived two hundred years, and begot sons and daughters.

24Nahor lived twenty-nine years, and begot [a]Terah. 25After he begot Terah, Nahor lived one hundred and nineteen years, and begot sons and daughters.

26Now Terah lived seventy years, and [a]begot [*]Abram, Nahor, and Haran.

Terah's Descendants

27This *is* the genealogy of Terah: Terah begot [a]Abram, Nahor, and Haran. Haran begot Lot. 28And Haran died before his father Terah in his native land, in Ur of the Chaldeans. 29Then Abram and Nahor took wives: the name of Abram's wife *was* [a]Sarai,[*] and the name of Nahor's wife, [b]Milcah, the daughter of Haran the father of Milcah and the father of Iscah. 30But [a] Sarai was barren; she had no child.

31And Terah [a]took his son Abram and his grandson Lot, the son of Haran, and his daughter-in-law Sarai, his son Abram's wife, and they went out with them from [b]Ur of the Chaldeans to go to [c]the land of Canaan; and they came to H1aran and dwelt there. 32So the days of Terah were two hundred and five years, and Terah died in Haran.

Genesis 12

Promises to Abram

1Now the [a]LORD had said to Abram:

"Get
[b]out
of
your
country,

From
your

family

And
from
your
father’s
house,

To a
land
that
I will
show
you.

2[a]I
will
make
you
a
great
nation;

[b]I
will
bless
you

And
make
your
name
great;

[c]And
you
shall
be a
blessing.

3[a]I

will
bless
those
who
bless
you,

And
I will
curse
him
who
curses
you;

And
in
[b]you
all
the
families
of
the
earth
shall
be
[c]blessed.”

Gen.
12:3

Through
Jesus
my
family
is
blessed.

4 So Abram departed as the LORD had spoken to him, and Lot went

with him. And Abram *was* seventy-five years old when he departed from Haran. 5Then Abram took Sarai his wife and Lot his brother's son, and all their possessions that they had gathered, and [a]the [*]people whom they had acquired in [b]Haran, and they [c]departed to go to the land of Canaan. So they came to the land of Canaan. 6Abram [1][a]passed through the land to the place of Shechem, [b]as far as [*]the terebinth tree of Moreh. [c]And the Canaanites *were* then in the land.

7[a]Then the LORD appeared to Abram and said, [b]"To your [*]descendants I will give this land." And there he built an [c]altar to the LORD, who had appeared to him. 8And he moved from there to the mountain east of Bethel, and he pitched his tent *with* Bethel on the west and Ai on the east; there he built an altar to the LORD and [a]called on the name of the LORD. 9So Abram journeyed, [a]going on still toward the [*]South.

Abram in Egypt

10Now there was [a]a famine in the land, and Abram [b]went down to Egypt to dwell there, for the famine *was* [c]severe in the land. 11And it came to pass, when he was close to entering Egypt, that he said to Sarai his wife, "Indeed I know that you *are* [a]a woman of beautiful countenance. 12Therefore it will happen, when the Egyptians see you, that they will say, 'This *is* his wife'; and they [a]will kill me, but they will let you live. 13[a]Please say you *are* my [b]sister, that it may be well with me for your sake, and that [*]I may live because of you.”

14So it was, when Abram came into Egypt, that the Egyptians saw the woman, that she *was* very beautiful. 15The princes of Pharaoh also saw her and commended her to Pharaoh. And the woman was taken to Pharaoh’s house. 16He [a]treated Abram well for her sake. He [b]had sheep, oxen, male donkeys, male and female servants, female donkeys, and camels.

17But the LORD [a]plagued Pharaoh and his house with great plagues because of Sarai, Abram’s wife. 18And Pharaoh called Abram and said, [a]“What *is* this you have done to me? Why did you not tell me that she *was* your wife? 19Why did you say, ‘She *is* my sister’? I might have taken her as my wife. Now therefore, here is your wife; take *her* and go your way.” 20[a]So Pharaoh commanded *his* men concerning him; and they sent him away, with his wife and all that he had.

Genesis 13

Abram Inherits Canaan

1Then Abram went up from Egypt, he and his wife and all that he had, and [a]Lot with him, [b]to the [*]South. 2[a]Abram *was* very rich in livestock, in silver, and in gold. 3And he went on his journey [a]from the South as far as Bethel, to the place where his tent had been at the beginning, between Bethel and Ai, 4to the [a]place of the altar which he had made there at first. And there Abram [b]called on the name of the LORD.

5Lot also, who went with Abram, had flocks and herds and tents. 6Now [a]the land was not able to [*]support them, that they might dwell together, for their possessions were so great that they could not dwell together. 7And there was [a]strife between the herdsmen of Abram's livestock and the herdsmen of Lot's livestock. [b]The Canaanites and the Perizzites then dwelt in the land.

8So Abram said to Lot, [a]"Please let there be no strife between you1 and me, and between my herdsmen and your herdsmen; for we *are* brethren. 9[a]*Is* not the whole land before you? Please [b]separate from me. [c]If *you take* the left, then I will go to the right; or, if *you go* to the right, then I will go to the left."

10And Lot lifted his eyes and saw all [a]the plain of Jordan, that it *was* well watered everywhere (before the LORD [b]destroyed Sodom and Gomorrah) [c]like the garden of the LORD, like the land of Egypt as you go toward [d]Zoar. 11Then Lot chose for himself all the plain of Jordan, and Lot journeyed east. And they separated from each other. 12Abram dwelt in the land of Canaan, and Lot [a]dwelt in the cities of the plain and [b]pitched *his* tent even as far as Sodom. 13But the men of Sodom [a]*were* exceedingly wicked and [b]sinful against the LORD.

14And the LORD said to Abram, after Lot [a]had separated from him: "Lift your eyes now and look from the place where you are—[b]northward, southward, eastward, and westward; 15for all the land which you see [a]I give to you and [b]your [*]descendants forever. 16And [a]I will make your descendants as the dust of the earth; so that if a man could number the dust of the earth, *then* your descendants also could be numbered. 17Arise, walk in the land through its length and its width, for I give it to you."

18[a]Then Abram moved *his* tent, and went and [b]dwelt by [*]the terebinth trees of Mamre, [c]which *are* in Hebron, and1 built an [d]altar there to the LORD.

Genesis 14

Lot's Captivity and Rescue

1And it came to pass in the days of Amraphel king [a]of Shinar, Arioch king of Ellasar, Chedorlaomer king of [b]Elam, and Tidal king of [*]nations, 2*that* they made war with Bera king of Sodom, Birsha king of Gomorrah, Shinab king of [a]Admah, Shemeber king of Zeboiim, and the king of Bela (that is, [b]Zoar). 3All these joined together in the Valley of Siddim [a](that is, the Salt Sea). 4Twelve years [a]they served Chedorlaomer, and in the thirteenth year they rebelled.

5In the fourteenth year Chedorlaomer and the kings that *were* with him came and attacked [a]the Rephaim in Ashteroth Karnaim, [b]the Zuzim in Ham, [c]the Emim in Shaveh Kiriathaim, 6[a]and the Horites in their mountain of Seir, as far as El Paran, which *is* by the wilderness. 7Then they turned back and came to En Mishpat (that *is,* Kadesh), and attacked all the country of the Amalekites, and also the Amorites who dwelt [a]in Hazezon Tamar.

8And the king of Sodom, the king of Gomorrah, the king of [*]Admah, the king of Zeboiim, and the king of Bela (that *is,* Zoar) went out and joined together in battle in the Valley of Siddim 9against Chedorlaomer king of Elam, Tidal king of nations, Amraphel king of Shinar, and Arioch king of Ellasar—four kings against five. 10Now the Valley of Siddim *was full of* [a]asphalt pits; and the kings of Sodom and Gomorrah fled; *some* fell there, and the remainder fled [b]to the mountains. 11Then they took [a]all the go1ods of Sodom and Gomorrah, and all their provisions, and went their way. 12They also took Lot, Abram's [a]brother's son [b]who dwelt in Sodom, and his goods, and departed.

13Then one who had escaped came and told Abram the [a]Hebrew, for [b]he dwelt by [*]the terebinth trees of Mamre the Amorite, brother of Eshcol and brother of Aner; [c]and they *were* allies with Abram. 14Now [a]when Abram heard that [b]his brother was taken captive, he armed his three hundred and eighteen trained *servants* who were [c]born in his own house, and went in pursuit [d]as far as Dan. 15He divided his forces against them by night, and he and his servants [a]attacked them and pursued them as far as Hobah, which *is* [*]north of

Damascus. 16So he [a]brought back all the goods, and also brought back his brother Lot and his goods, as well as the women and the people.

17And the king of Sodom [a]went out to meet him at the Valley of Shaveh (that *is,* [b]the King's Valley), [c]after his return from the [*]defeat of Chedorlaomer and the kings who *were* with him.

Abram and Melchizedek

18Then [a]Melchizedek king of Salem brought out [b]bread and wine; he *was* [c]the priest of [d]God Most High. 19And he blessed him and said:

[a]"Blessed be Abram of God Most High,

[b]Possessor of heaven and earth;

20And [a]blessed be God Most High,

Who has delivered your enemies into your hand."

And he [b]gave him [*]a tithe of all.

21Now the king of Sodom said to Abram, "Give me the [*]persons, and take the goods for yourself."

22But Abram [a]said to the king of Sodom, “I [b]have raised my hand to the LORD, God Most High, [c]the Possessor of heaven and earth, 23that [a]I *will take* nothing, from a thread to a sandal strap, and that I will not take anything that *is* yours, lest you should say, ‘I have made Abram rich’—24except only what the young men have eaten, and the portion of the men who went with me: Aner, Eshcol, and Mamre; let them take their portion.”

Genesis 15

God’s Covenant with Abram

1After these things the word of the LORD came to Abram [a]in a vision, saying, [b]“Do not be afraid, Abram. I *am* your [c]shield, [*]your exceedingly [d]great reward.”

2[a]But Abram said, “Lord GOD, what will You give me, [b]seeing I [*]go childless, and the heir of my house *is* Eliezer of Damascus?” 3Then Abram said, “Look, You have given me no offspring; indeed [a]one[*] born in my house is my heir!”

4And behold, the word of the LORD *came* to him, saying, “This one shall not be your heir, but one who1 [a]will come from your own body shall be your heir.” 5Then He brought him outside and said, “Look now toward heaven, and [a]count the [b]stars if you are able to number them.” And He said to him, [c]“So shall your [d]descendants be.”

6And he [a]believed in the LORD, and He [b]accounted it to him for righteousness.

7Then He said to him, “I *am* the LORD, who [a]brought you out of [b]Ur of the Chaldeans, [c]to give you this land to inherit it.”

8And he said, “Lord GOD, [a]how shall I know that I will inherit it?”

9So He said to him, “Bring Me a three-year-old heifer, a three-year-old female goat, a three-year-old ram, a turtledove, and a young pigeon.” 10Then he brought all these to Him and [a]cut them in two, down the middle, and placed each piece opposite the other; but he did not cut [b]the birds in two. 11And when the vultures came down on the carcasses, Abram drove them away.

12Now when the sun was going down, [a]a deep sleep fell upon Abram; and behold, horror *and* great darkness fell upon him. 13Then He said to Abram: “Know certainly [a]that your descendants will be strangers in a land *that is* not theirs, and will serve them, and [b]they will afflict them four hundred years. 14And also the nation whom they serve [a]I will judge; afterward [b]they shall come out with great possessions. 15Now as for you, [a]you shall [*]go [b]1sup> to your fathers in peace; [c]you shall be buried at a good old age. 16But [a]in the fourth generation they shall return here, for the iniquity [b]of the Amorites [c]*is* not yet complete.”

17And it came to pass, when the sun went down and it was dark, that behold, there appeared a smoking oven and a burning torch that [a]passed between those pieces. 18On the same day the LORD [a]made a covenant with Abram, saying:

[b]“To your descendants I have given this land, from the river of Egypt to the great river, the River Euphrates—19the Kenites, the Kenezzites, the Kadmonites, 20the Hittites, the Perizzites, the Rephaim, 21the Amorites, the Canaanites, the Girgashites, and the Jebusites.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Angel Allies

The will of God consumes and possesses

angels, and they passionately pursue His salvation for us. They minister to us in ways that are wholly unique from any guidance we can receive on Earth. They comfort us, speak to us, monitor the spiritual climate around us, teach us, and help us. But above all else, angels work for the Master of the universe and share in our desire to worship Him and accomplish His will. They are our allies.[*]

---

[*] Ron Phillips, *Our Invisible Allies*, 11.

Genesis 16

Hagar and Ishmael

1Now Sarai, Abram’s wife, [a]had borne him no *children.* And she had [b]an Egyptian maidservant whose name was [c]Hagar. 2[a]So Sarai said to Abram, “See now, the LORD [b]has restrained me from bearing *children.* Please, [c]go in to my maid; perhaps I shall [*]obtain children by her.” And Abram [d]heeded the voice of Sarai. 3Then Sarai, Abram’s wife, took Hagar her maid, the Egyptian, and gave her to her husband Abram to be his wife, after Abram [a]had dwelt ten years in the land of Canaan. 4So he went in to Hagar, and she conceived. And when she saw that she had conceived, her mistress became [a]despised in her [*]eyes.

5Then Sarai said to Abram, [*]“My wrong *be* upon you! I gave my maid into your embrace; and when she saw that she had conceived, I became despised in her eyes. [a]The LORD judge between you and me.”

6[a]So Abram said to Sarai, “Indeed your maid *is* in your hand; do to her as you please.” And when Sarai dealt harshly with her, [b]she fled from her presence.

7Now the [a]Angel of the LORD found her by a spring of water in the wilderness, [b]by the spring on the way to [c]Shur. 8And He said, “Hagar, Sarai’s maid, where have you come from, and where are you going?”

She said, “I am fleeing from the presence of my mistress Sarai.”

9The Angel of the LORD said to her, “Return to your mistress, and [a]submit yourself under her hand.” 10Then the Angel of the LORD said to her, [a]“I will multiply your descendants exceedingly, so that they shall not be counted for multitude.” 11And the Angel of the LORD said to her:

“Behold, you *are*
with child,

[a]And you shall bear a
son.

You shall call his
name [*]Ishmael,

Because the LORD
has heard your
affliction.

12[a]He shall be a wild
man;

His hand *shall be*
against every man,

And every man's
hand against him.

[b]And he shall dwell
in the presence of all
his brethren."

13Then she called the name of the LORD who spoke to her, You-Are-[*]the-God-Who-Sees; for she said, "Have I also here [*]seen Him [a]who sees me?" 14Therefore the well was called [a]Beer Lahai Roi;[*] observe, *it is* [b]between Kadesh and Bered.

15So [a]Hagar bore Abram a son; and Abram named his son, whom Hagar bore, Ishmael. 16Abram *was* eighty-six years old when Hagar bore Ishmael to Abram.

Genesis 17

The Sign of the Covenant

1When Abram was ninety-nine years old, the LORD [a]appeared to Abram and said to him, [b]"I *am* [*]Almighty God; [c]walk before Me and be [d]blameless. 2And I will make My [a]covenant between Me and you, and [b]will multiply you exceedingly." 3Then Abram fell on his face, and God talked with him, saying: 4"As for Me, behold, My covenant is with you, and you shall be a [a]father[1] of [*]many nations. 5No longer shall [a]your name be called [*]Abram, but your name shall be [*]Abraham; [b]for I have made you a father of [*]many nations. 6I will make you exceedingly fruitful; and I will make nations [a]of you, and [b]kings shall come from you. 7And I will [a]establish My covenant between Me and you and your descendants after you in their generations, for an everlasting covenant, [b]to be God to you and [c]your descendants after you. 8Also [a]I give to you and your descendants after you the land [b]in[*] which you are a stranger, all the land of Canaan, as an everlasting possession; and [c]I will be their God."

9And God said to Abraham: "As for you, [a]you shall keep My covenant, you and your descendants after you throughout their generations. 10This *is* My covenant which you shall keep, between Me and you and your descendants after you: [a]Every male child among you shall be circumcised; 11and you shall be circumcised in the flesh of your foreskins, and it shall be [a]a sign of the covenant between Me and you. 12He who is eight days old among you [a]shall be circumcised, every male child in your generations, he who is born in your house or bought with money from any foreigner who is not your descendant. 13He who is born in your house and he who is bought with your money must be circumcised, and My covenant shall be in your flesh for an everlasting covenant. 14And the uncircumcised male child, who is not circumcised in the flesh of his foreskin, that person [a]shall be cut off from his people; he has broken My covenant."

15Then God said to Abraham, "As for Sarai y[1]our wife, you shall not call her name Sarai, but [*]Sarah *shall be* her name. 16And I will bless her and also give you a son by her; then I will bless her, [a]and she shall be *a mother* [b]*of* nations; [c]kings of peoples shall be from her."

17Then Abraham fell on his face [a]and laughed, and said in his heart, "Shall *a child* be born to a man who is one hundred years old? And shall Sarah, who is ninety years old, bear *a child?*” 18And Abraham [a]said to God, “Oh, that Ishmael might live before You!”

19Then God said: “No, [a]Sarah your wife shall bear you a son, and you shall call his name Isaac; I will establish My [b]covenant with him for an everlasting covenant, *and* with his descendants after him. 20And as for Ishmael, I have heard you. Behold, I have blessed him, and will make him fruitful, and [a]will multiply him exceedingly. He shall beget [b]twelve princes, [c]and I will make him a great nation. 21But My [a]covenant I will establish with Isaac, [b]whom Sarah shall bear to you at this [c]set time next year.” 22Then He finished talking with him, and God went up from Abraham.

23So Abraham took Ishmael his son, all who were born in his house and all who were bought with his money, every male among the men of Abraham’s house, and circumcised the flesh of their foreskins that very same day, as God had said to him. 24Abraham *was* ninety-nine years old when he was circumcised in the flesh of his foreskin. 25And Ishmael his son *was* thirteen years old when he was circumcised in the flesh of his foreskin. 26That very same day Abraham was circumcised, and his son Ishmael; 27and [a]all the men of his house, born in the house or bought with money from a foreigner, were circumcised with him.

Genesis 18

The Son of Promise

1Then the LORD appeared to him by [*]the [a]terebinth trees of Mamre, as he was sitting in the tent door in the heat of the day. 2[a]So he lifted his eyes and looked, and behold, three men were standing by him; [b]and when he saw *them,* he ran from the tent door to meet them, and bowed himself to the ground, 3and said, “My Lord, if I have now found favor in Your sight, do not pass on by Your servant. 4Please let [a]a little water be brought, and wash your feet, and rest yourselves

under the tree. 5And [a]I will bring a morsel of bread,
that [b]you may refresh your hearts. After that you may
pass by, [c]inasmuch as you have come to your
servant.”

They said, “Do as you have said.”

6So Abraham hurried into the tent to Sarah and
said, “Quickly, make ready three measures of fine
meal; knead *it* and make cakes.” 7And Abraham ran to
the herd, took a tender and good calf, gave *it* to a
young man, and he hastened to prepare it. 8So [a]he
took butter and milk and the calf which he had
prepared, and set *it* before them; and he stood by
them under the tree as they ate.

9Then they said to him, “Where *is* Sarah your
wife?”

So he said, “Here, [a]in the tent.”

10And He said, “I will certainly return to you
[a]according to the time of life, and behold, [b]Sarah your
wife shall have a son.”

(Sarah was listening in the tent door which *was*
behind him.) 11Now [a]Abraham and [*]Sarah were old,
well advanced in age; *and* Sarah [b]had passed the age
of childbearing. 12Therefore Sarah [a]laughed within
herself, saying, [b]“After I have grown old, shall I have
pleasure, my [c]lord being old also?”

13And the LORD said to Abraham, “Why did Sarah
laugh, saying, ‘Shall I surely bear *a child,* since I am
old?’ 14[a]Is anything too hard for the LORD? [b]At the
appointed time I will return to you, according to the
time of life, and Sarah shall have a son.”

15But Sarah denied *it,* saying, “I did not laugh,” for
she was afraid.

And He said, “No, but you did laugh!”

Abraham Intercedes for Sodom

16Then the men rose from there and looked toward
Sodom, and Abraham went with them [a]to send them
on the way. 17And the LORD said, [a]“Shall I hide from
Abraham what I am doing, 18since Abraham shall
surely become a great and mighty nation, and all the
nations of the earth shall be [a]blessed in him? 19For I

have known him, in order [a]that he may command his children and his household after him, that they keep the way of the LORD, to do righteousness and justice, that the LORD may bring to Abraham what He has spoken to him.” 20And the LORD said, “Because [a]the outcry against Sodom and Gomorrah is great, and because their [b]sin is very grave, 21[a]I will go down now and see whether they have done altogether according to the outcry against it that has come to Me; and if not, [b]I will know.”

22Then the men turned away from there [a]and went toward Sodom, but Abraham still stood before the LORD. 23And Abraham [a]came near and said, [b]“Would You also [c]destroy the [d]righteous with the wicked? 24Suppose there were fifty righteous within the city; would You also destroy the place and not spare *it* for the fifty righteous that were in it? 25Far be it from You to do such a thing as this, to slay the righteous with the wicked, so that [a]the righteous should be as the wicked; far be it from You! [b]Shall not the Judge of all the earth do right?”

26So the LORD said, [a]“If I find in Sodom fifty righteous within the city, then I will spare all the place for their sakes.”

27Then Abraham answered and said, “Indeed now, I who *am* [a]*but* dust and ashes have taken it upon myself to speak to the Lord: 28Suppose there were five less than the fifty righteous; would You destroy all of the city for *lack of* five?”

So He said, “If I find there forty-five, I will not destroy *it*.”

29And he spoke to Him yet again and said, “Suppose there should be forty found there?”

So He said, “I will not do *it* for the sake of forty.”

30Then he said, [a]“Let not the Lord be angry, and I will speak: Suppose thirty should be found there?”

So He said, “I will not do *it* if I find thirty there.”

31And he said, “Indeed now, I have taken it upon myself to speak to the Lord: Suppose twenty should be found there?”

So He said, “I will not destroy *it* for the sake of twenty.”

32Then he said, “Let not the Lord be angry, and I will speak but once more: Suppose ten should be found there?”

[a]And He said, “I will not destroy *it* for the sake of ten.” 33So the LORD went His way as soon as He had finished speaking with Abraham; and Abraham returned to his place.

Genesis 19

Sodom’s Depravity

1Now [a]the two angels came to Sodom in the evening, and [b]Lot was sitting in the gate of Sodom. When Lot saw *them,* he [1]rose to meet them, and he bowed himself with his face toward the ground. 2And he said, “Here now, my lords, please [a]turn in to your servant’s house and spend the night, and [b]wash your feet; then you may rise early and go on your way.”

And they said, [c]“No, but we will spend the night in the open square.”

3But he insisted strongly; so they turned in to him and entered his house. [a]Then he made them a feast, and baked [b]unleavened bread, and they ate.

4Now before they lay down, the men of the city, the men of Sodom, both old and young, all the people from every quarter, surrounded the house. 5[a]And they called to Lot and said to him, “Where are the men who came to you tonight? [b]Bring them out to us that we [c]may know them *carnally.*”

6So [a]Lot went out to them through the doorway, shut the door behind him, 7and said, “Please, my brethren, do not do so wickedly! 8[a]See now, I have two daughters who have not known a man; please, let me bring them out to you, and you may do to them as you wish; only do nothing to these men, [b]since this is the reason they have come under the shadow of my roof.”

9And they said, “Stand back!” Then they said, “This one [a]came in to *stay *here,* [b]and he keeps acting as a judge; now we will deal worse with you than with them.” So they pressed hard against the man Lot, and came near to break down the door. 10But the men reached out their hands and pulled Lot into the house with them, and shut the door. 11And they [a]struck the men who *were* at the doorway of the house with blindness, both small and great, so that they became weary *trying* to find the door.

Sodom and Gomorrah Destroyed

12Then the men said to Lot, “Have you anyone else here? Son-in-law, yo1ur sons, your daughters, and whomever you have in the city—[a]take *them* out of this place! 13For we will destroy this place, because the [a]outcry against them has grown great before the face of the LORD, and [b]the LORD has sent us to destroy it.”

14So Lot went out and spoke to his sons-in-law, [a]who had married his daughters, and said, [b]“Get up, get out of this place; for the LORD will destroy this city!” [c]But to his sons-in-law he seemed to be joking.

15When the morning dawned, the angels urged Lot to hurry, saying, [a]“Arise, take your wife and your two daughters who are here, lest you be consumed in the punishment of the city.” 16And while he lingered, the men [a]took hold of his hand, his wife’s hand, and the hands of his two daughters, the [b]LORD being merciful to him, [c]and they brought him out and set him outside the city. 17So it came to pass, when they had brought them outside, that [*]he said, [a]“Escape for your life! [b]Do not look behind you nor stay anywhere in the plain. Escape [c]to the mountains, lest you be [*]destroyed.”

18Then Lot said to them, “Please, [a]no, my lords! 19Indeed now, your servant has found favor in your sight, and you have increased your mercy which you have shown me by saving my life; but I cannot escape to the mountains, lest some evil overtake me and I die. 20See now, this city *is* near *enough* to flee to, and it *is* a little one; please let me escape there (*is* it not a little one?) and my soul shall live.”

21And he said to him, “See, [a]I have favored you concerning this thing also, in that I will not overthrow this city for which you have spoken. 22Hurry, escape there. For [a]I cannot do anything until you arrive there.”

Therefore [b]the name of the city was called [*]Zoar.

23The sun had risen upon the earth when Lot entered Zoar. 24Then the LORD rained [a]brimstone and [b]fire on Sodom and Gomorrah, from the LORD out of the heavens. 25So He [*]overthrew those cities, all the plain, all the inhabitants of the cities, and [a]what grew on the ground.

Gen. 19:24

The spirits of lust and perversion are destroyed with Your fire.

26But his wife looked back behind him, and she became [a]a pillar of salt.

27And Abraham went early in the morning to the place where [a]he had stood before the LORD. 28Then he looked toward Sodom and Gomorrah, and toward all the land of the plain; and he saw, and behold, [a]the smoke of the land which went up like the smoke of a furnace. 29And it came to pass, when God destroyed the cities of the plain, that God [a]remembered Abraham, and sent Lot out of the midst of the overthrow, when He overthrew the cities in which Lot had dwelt.

The Descendants of Lot

30Then Lot went up out of Zoar and [a]dwelt in the

mountains, and his two daughters were with him; for
he was afraid to dwell in Zoar. And he and his two
daughters dwelt in a cave. 31Now the firstborn said to
the younger, “Our father *is* old, and *there is* no man on
the earth [a]to come in to us as is the custom of all the
earth. 32Come, let us make our father drink wine, and
we will lie with him, that we [a]may preserve the
[*]lineage of our father.” 33So they made their father
drink wine that night. And the firstborn went in and
lay with her father, and he did not know when she lay
down or when she arose.

34It happened on the next day that the firstborn said
to the younger, “Indeed I lay with my father last
night; let us make him drink wine tonight also, and
you go in *and* lie with him, that we may preserve the
[*]lineage of our father.” 35Then they made their father
drink wine that night also. And the younger arose and
lay with him, and he did not know when she lay
down or when she arose.

36Thus both the daughters of Lot were with child by
their father. 37The firstborn bore a son and called his
name Moab; [a]he *is* the father of the Moabites to this
day. 38And the younger, she also bore a son and called
his name Ben-Ammi; [a]he *is* the father of the people of
Ammon to this day.

Genesis 20

Abraham and Abimelech

1And Abraham journeyed from [a]there to the South,
and dwelt between [b]Kadesh and Shur, and [c]stayed in
Gerar. 2Now Abraham said of Sarah his wife, [a]“She *is*
my sister.” And Abimelech king of Gerar sent and
[b]took Sarah.

3But [a]God came to Abimelech [b]in a dream by night,
and said to him, [c]“Indeed you *are* a dead man because
of the woman whom you have taken, for she *is* [*]a
man’s wife.”

4But Abimelech had not come near her; and he said,
“Lord, [a]will You slay a righteous nation also? 5Did he
not say to me, ‘She *is* my sister’? And she, even she

herself said, ‘He *is* my brother.’ [a]In the [*]integrity of my heart and innocence of my hands I have done this.”

6And God said to him in a dream, “Yes, I know that you did this in the integrity of your heart. For [a]I also withheld you from sinning [b]against Me; therefore I did not let you touch her. 7Now therefore, restore the man’s wife; [a]for he *is* a prophet, and he will pray for you and you shall live. But if you do not restore *her,* [b]know that you shall surely die, you [c]and all who *are* yours.”

8So Abimelech rose early in the morning, called all his servants, and told all these things in their hearing; and the men were very much afraid. 9And Abimelech called Abraham and said to him, “What have you done to us? How have I [*]offended you, [a]that you have brought on me and on my kingdom a great sin? You have done deeds to me [b]that ought not to be done.” 10Then Abimelech said to Abraham, “What did you have in view, that you have done this thing?”

11And Abraham said, “Because I thought, surely [a]the fear of God *is* not in this place; and [b]they will kill me on account of my wife. 12But indeed [a]*she is* truly my sister. She *is* the daughter of my father, but not the daughter of my mother; and she became my wife. 13And it came to pass, when [a]God caused me to wander from my father’s house, that I said to her, ‘This *is* your kindness that you should do for me: in every place, wherever we go, [b]say of me, “He *is* my brother.” ’ ”

14Then Abimelech [a]took sheep, oxen, and male and female servants, and gave *them* to Abraham; and he restored Sarah his wife to him. 15And Abimelech said, “See, [a]my land *is* before you; dwell where it pleases you.” 16Then to Sarah he said, “Behold, I have given your brother a thousand *pieces* of silver; [a]indeed this [*]vindicates you [b]before all who *are* with you and before everybody.” Thus she was [*]rebuked.

SPIRITUAL WARFARE

BASICS

Walking by Faith — Abraham

When God asked Abraham to leave his home and go to a strange land, he obeyed. Though he became a sojourner, he did not live in uncertainty. God let him see a city “whose builder and maker is God” (Heb. 11:10). When God has spoken, only then can faith be activated. The only way to exercise faith is to place it in God’s spoken word. Abraham’s decision to obey God was not based upon anything he could perceive in his human understanding; it was based solely upon believing what God had spoken to him. Even though Abraham did not have the details, he was able to say, “OK, it’s roam today, but *it’s home tomorrow!*”*

[*] Don Dickerman, *Keep the Pigs Out,* 165.

17So Abraham prayed [a]to God; and God [b]healed Abimelech, his wife, and his female servants. Then they bore *children;* 18for the LORD [a]had closed up all the wombs of the house of Abimelech because of Sarah, Abraham's wife.

Genesis 21

Isaac Is Born

1And the LORD [a]visited Sarah as He had said, and the LORD did for Sarah [b]as He had spoken. 2For Sarah [a]conceived and bore Abraham a son in his old age, [b]at the set time of which God had spoken to him. 3And Abraham called the name of his son who was born to him—whom Sarah bore to him—[a]Isaac.[*]4Then Abraham [a]circumcised his son1 Isaac when he was eight days old, [b]as God had commanded him. 5Now [a]Abraham was one hundred years old when his son Isaac was born to him. 6And Sarah said, [a]"God has [*]made me laugh, *and* all who hear [b]will laugh with me." 7She also said, "Who would have said to Abraham that Sarah would nurse children? [a]For I have borne *him* a son in his old age."

Hagar and Ishmael Depart

8So the child grew and was weaned. And Abraham made a great feast on the same day that Isaac was weaned.

9And Sarah saw the son of Hagar [a]the Egyptian, whom she had borne to Abraham,

[b]scoffing.[*]10Therefore she said to Abraham, [a]“Cast out this bondwoman and her son; for the son of this bondwoman shall not be heir with my son, *namely* with Isaac.” 11And the matter was very [*]displeasing in Abraham’s sight [a]because of his son.

12But God said to Abraham, “Do not let it be displeasing in your sight because of the lad or because of your bondwoman. Whatever Sarah has said to you, listen to her voice; for [a]in Isaac your seed shall be called. 13Yet I will also make [a]a nation of the son of the bondwoman, because he *is* your [*]seed.”

14So Abraham rose early in the morning, and took bread and [*]a skin of water; and putting *it* on her shoulder, he gave *it* and the boy to Hagar, and [a]sent her away. Then she departed and wandered in the Wilderness of Beersheba. 15And the water in the skin was used up, and she placed the boy under one of the shrubs. 16Then she went and sat down across from *him* at a distance of about a bowshot; for she said to herse1lf, âœet me not see the death of the boy.âSo she sat opposite *him,* and lifted her voice and wept.

17And [a]God heard the voice of the lad. Then the [b]angel of God called to Hagar out of heaven, and said to her, âœhat ails you, Hagar? Fear not, for God has heard the voice of the lad where he *is.* 18Arise, lift up the lad and hold him with your hand, for [a]I will make him a great nation.â/p>

19Then [a]God opened her eyes, and she saw a well of water. And she went and filled the skin with water, and gave the lad a drink. 20So God [a]was with the lad; and he grew and dwelt in the wilderness, [b]and became an archer. 21He dwelt in the Wilderness of Paran; and his mother [a]took a wife for him from the land of Egypt.

A Covenant with Abimelech

22And it came to pass at that time that [a]Abimelech and Phichol, the commander of his army, spoke to Abraham, saying, [b]âœod *is* with you in all that you do. 23Now therefore, [a]swear[*] to me by God that you will not deal falsely with me, with my offspring, or with

my posterity; but that according to the kindness that I
have done to you, you will do to me and to the land
in which you have dwelt.â/p>

24And Abraham said, âœ will swear.â/p>

25Then Abraham rebuked Abimelech because of a
well of water which Abimelechâ™ servants [a]had
seized. 26And Abimelech said, âœ do not know who
has done this thing; you did not tell me, nor had I
heard *of it* until today.â27So Abraham took sheep and
oxen and gave them to Abimelech, and the two of
them [a]made a [*]covenant. 28And Abraham set seven
ewe lambs of the flock by themselves.

29Then Abimelech asked Abraham, [a]âœhat *is the
meaning of* these seven ewe lambs which you have set
by themselves?â/p>

30And he said, âœou will take *these* seven ewe
lambs from my hand, that [a]they may be my witness
that I have dug this well.â31Therefore he [a]called that
place [*]Beersheba, because the two of them swore an
oath there.

32Thus they made a covenant at Beersheba. So
Abimelech rose with Phichol, the commander of his
army, and they returned to the land of the Philistines.
33Then *Abraham* planted a tamarisk tree in Beersheba,
and [a]there called on the name of the LORD, [b]the
Everlasting God. 34And Abraham stayed in the land of
the Philistines many days.

Genesis 22

Abrahamâ™ Faith Confirmed

1Now it came to pass after these things that [a]God
tested Abraham, and said to him, âœbraham!â/p>

And he said, âœere I am.â/p>

2Then He said, âœake now your son, [a]your only *son*
Isaac, whom you [b]love, and go [c]to the land of Moriah,
and offer him there as a [d]burnt offering on one of the
mountains of which I shall tell you.â/p>

3So Abraham rose early in the morning and saddled
his donkey, and took two of his young men with him,
and Isaac his son; and he split the wood for the burnt

offering, and arose and went to the place of which God had told him. 4Then on the third day Abraham lifted his eyes and saw the place afar off. 5And Abraham said to his young men, âœtay here with the donkey; the [*]lad and I will go yonder and worship, and we will [a]come back to you.â/p>

6So Abraham took the wood of the burnt offering and [a]laid *it* on Isaac his son; and he took the fire in his hand, and a knife, and the two of them went together. 7But Isaac spoke to Abraham his father and said, “My father!”

And he said, “Here I am, my son.”

Then he said, “Look, the fire and the wood, but where *is* the [*]lamb for a burnt offering?”

8And Abraham said, “My son, God will provide for Himself the [a]lamb for a [b]burnt offering.” So the two of them went together.

9Then they came to the place of which God had told him. And Abraham built an altar there and placed the wood in order; and he bound Isaac his son and [a]laid him on the altar, upon the wood. 10And Abraham stretched out his hand and took the knife to slay his son.

11But the [a]Angel of the LORD called to him from heaven and said, “Abraham, Abraham!”

So he said, “Here I am.”

12And He said, [a]“Do not lay your hand on the lad, or do anything to him; for [b]now I know that you fear God, since you have not [c]withheld your son, your only *son,* from Me.”

13Then Abraham lifted his eyes and looked, and there behind *him was* a ram caught in a thicket by its horns. So Abraham went and took the ram, and offered it up for a burnt offering instead of his son. 14And Abraham called the name of the place, [*]The-LORD-Will-Provide; as it is said *to* this day, “In the Mount of the LORD it shall be provided.”

You are Jehovah-Jireh, my provider.

15Then the Angel of the LORD called to Abraham a second time out of heaven, 16and said: [a]“By Myself I have sworn, says the LORD, because you have done this thing, and have not withheld your son, your only *son*—17blessing I will [a]bless you, and multiplying I will multiply [1]your descendants [b]as the stars of the heaven [c]and as the sand which *is* on the seashore; and [d]your descendants shall possess the gate of their enemies. 18[a]In your seed all the nations of the earth shall be blessed, [b]because you have obeyed My voice.” 19So Abraham returned to his young men, and they rose and went together to [a]Beersheba; and Abraham dwelt at Beersheba.

Gen. 22:17

Through Jesus let me possess the gate of the enemy.

The Family of Nahor

20Now it came to pass after these things that it was told Abraham, saying, “Indeed [a]Milcah also has borne children to your brother Nahor: 21[a]Huz his firstborn, Buz his brother, Kemuel the father [b]of Aram, 22Chesed, Hazo, Pildash, Jidlaph, and Bethuel." 23And [a]Bethuel begot [*]Rebekah. These eight Milcah bore to Nahor, Abraham's brother. 24His concubine, whose name was Reumah, also bore Tebah, Gaham, Thahash, and Maachah.

Genesis 23

Sarah's Death and Burial

1Sarah lived one hundred and twenty-seven years; *these were* the years of the life of Sarah. 2So Sarah died in [a]Kirjath Arba (that *is,* [b]Hebron) in the land of Canaan, and Abraham came to mourn for Sarah and to weep for her.

3Then Abraham stood up from before his dead, and spoke to the sons of [a]Heth, saying, 4[a]"I *am* a foreigner and a visitor among you. [b]Give me property for a burial place among you, that I may bury my dead out of my sight."

5And the sons of Heth answered Abraham, saying to him, 6"Hear us, my lord: You *are* [a]a [*]mighty prince among us; bury your dead in the choicest of our burial places. None of us will withhold from you his burial place, that you may bury your dead."

7Then Abraham stood up and bowed himself to the people of the land, the sons of Heth. 8And he spoke with them, saying, "If it is your wish that I bury my dead out of my sight, hear me, and [*]meet with Ephron the son of Zohar for me, 9that he may give me the cave of [a]Machpelah which he has, which *is* at the end of his field. Let him give it to me at the full price, as property for a burial place among you."

10Now Ephron dwelt among the sons of Heth; and Ephron the Hittite answered Abraham in the presence of the sons of Heth, all who [a]entered at the gate of his city, saying, 11[a]"No, my lord, hear me: I give you the field and the cave that *is* in it; I give it to you in the presence of the sons of my people. I give it to you. Bury your dead!"

12Then Abraham bowed himself down before the people of the land; 13and he spoke to Ephron in the hearing of the people of the land, saying, “If you *will give it,* please hear me. I will give you money for the field; take *it* from me and I will bury my dead there.”

14And Ephron answered Abraham, saying to him, 15“My lord, listen to me; the land *is worth* four hundred [a]shekels of silver. What *is* that between you and me? So bury your dead.” 16And Abraham listened to Ephron; and Abraham [a]weighed out the silver for Ephron which he had named in the hearing of the sons of Heth, four hundred shekels of silver, currency of the merchants.

17So [a]the field of Ephron which *was* in Machpelah, which *was* before Mamre, the field and the cave which *was* in it, and all the trees that *were* in the field, which *were* within all the surrounding borders, were deeded 18to Abraham as a possession in the presence of the sons of Heth, before all who1 went in at the gate of his city.

19And after this, Abraham buried Sarah his wife in the cave of the field of Machpelah, before Mamre (that *is,* Hebron) in the land of Canaan. 20So the field and the cave that *is* in it [a]were deeded to Abraham by the sons of Heth as property for a burial place.

Genesis 24

A Bride for Isaac

1Now Abraham [a]was old, well advanced in age; and the LORD [b]had blessed Abraham in all things. 2So Abraham said [a]to the oldest servant of his house, who [b]ruled over all that he had, “Please, [c]put your hand under my thigh, 3and I will make you [a]swear[*] by the LORD, the God of heaven and the God of the earth, that [b]you will not take a wife for my son from the daughters of the Canaanites, among whom I dwell; 4[a]but you shall go [b]to my country and to my family, and take a wife for my son Isaac.”

5And the servant said to him, “Perhaps the woman will not be willing to follow me to this land. Must I take your son back to the land from which you came?”

6But Abraham said to him, “Beware that you do not
take my son back there. 7The LORD God of heaven,
who [a]took me from my father’s house and from the
land of my family, and who spoke to me and swore to
me, saying, [b]‘To your [*]descendants I give this land,’
[c]He will send His angel before you, and you shall take
a wife for my son from there. 8And if the woman is
not willing to follow you, then [a]you will be released
from this oath; only do not take my son back there.”
9So the servant put his hand u1nder the thigh of
Abraham his master, and swore to him concerning
this matter.

10Then the servant took ten of his master’s camels
and departed, [a]for all his master’s goods *were in* his
hand. And he arose and went to Mesopotamia, to [b]the
city of Nahor. 11And he made his camels kneel down
outside the city by a well of water at evening time,
the time [a]when women go out to draw *water*. 12Then
he [a]said, “O LORD God of my master Abraham, please
[b]give me success this day, and show kindness to my
master Abraham. 13Behold, *here* [a]I stand by the well of
water, and [b]the daughters of the men of the city are
coming out to draw water. 14Now let it be that the
young woman to whom I say, ‘Please let down your
pitcher that I may drink,’ and she says, ‘Drink, and I
will also give your camels a drink’—*let* her *be the one*
You have appointed for Your servant Isaac. And [a]by
this I will know that You have shown kindness to my
master.”

15And it happened, [a]before he had finished
speaking, that behold, [b]Rebekah,[*] who was born to
Bethuel, son of [c]Milcah, the wife of Nahor, Abraham’s
brother, came out with her pitcher on her shoulder.
16Now the young woman [a]*was* very beautiful to
behold, a virgin; no man had known her. And she
went down to the well, filled her pitcher, and came
up. 17And the servant ran to meet her and said,
“Please let me drink a little water from your pitcher.”

18[a]So she said, “Drink, my lord.” Then she quickly let her pitcher down to her hand, and gave him a drink. 19And when she had finished giving him a drink, she said, “I will draw *water* for your camels also, until they have finished drinking.” 20Then she quickly emptied her pitcher into the trough, ran back to the well to draw *water,* and drew for all his camels. 21And the man, wondering at her, remained silent so as to know whether [a]the LORD had made his journey prosperous or not.

22So it was, when the camels had finished drinking, that the man took a golden [a]nose ring weighing half a shekel, and two bracelets for her wrists weighing ten *shekels* of gold, 23and said, “Whose daughter *are* you? Tell me, please, is there room *in* your father’s house for us [*]to lodge?”

24So she said to him, [a]“I *am* the daughter of Bethuel, Milcah’s son, whom she bore to Nahor.” 25Moreover she said to him, “We have both straw and feed enough, and room to lodge.”

26Then the man [a]bowed down his head and worshiped the LORD. 27And he said, [a]“Blessed *be* the LORD God of my master Abraham, who has not forsaken [b]His mercy and His truth toward my master. As for me, being on the way, the LORD [c]led me to the house of my master’s brethren.” 28So the young woman ran and told her mother’s household these things.

29Now Rebekah had a brother whose name *was* [a]Laban, and Laban ran out to the man by the well. 30So it came to pass, when he saw the nose ring, and the bracelets on his sister’s wrists, and when he heard the words of his sister Rebekah, saying, “Thus the man spoke to me,” that he went to the man. And there he stood by the camels at the well. 31And he said, “Come in, [a]O blessed of the LORD! Why do you stand outside? For I have prepared the house, and a place for the camels.”

32Then the man came to the house. And he unloaded the camels, and [a]provided straw and feed for the camels, and water to [b]wash his feet and the feet of the men who *were* with him. 33*Food* was set before him to eat, but he said, [a]"I will not eat until I have told about my errand."

And he said, "Speak on."

34So he said, "I *am1* Abraham's servant. 35The LORD [a]has blessed my master greatly, and he has become great; and He has given him flocks and herds, silver and gold, male and female servants, and camels and donkeys. 36And Sarah my master's wife [a]bore a son to my master when she was old; and [b]to him he has given all that he has. 37Now my master [a]made me swear, saying, 'You shall not take a wife for my son from the daughters of the Canaanites, in whose land I dwell; 38[a]but you shall go to my father's house and to my family, and take a wife for my son.' 39[a]And I said to my master, 'Perhaps the woman will not follow me.' 40[a]But he said to me, 'The LORD, [b]before whom I walk, will send His angel with you and [*]prosper your way; and you shall take a wife for my son from my family and from my father's house. 41[a]You will be clear from this oath when you arrive among my family; for if they will not give *her* to you, then you will be released from my oath.'

42"And this day I came to the well and said, [a]'O LORD God of my master Abraham, if You will now prosper the way in which I go, 43[a]behold, I stand by the well of water; and it shall come to pass that when the virgin comes out to draw *water,* and I say to her, "Please give me a little water from your pitcher to drink," 44and she says to me, "Drink, and I will draw for your camels also,"—*let* her *be* the woman whom the LORD has appointed for my master's son.'

45[a]"But before I had finished [b]speaking in my heart, there was Rebekah, coming out with her pitcher on her shoulder; and she went down to the well and drew *water.* And I said to her, 'Please let me drink.' 46And she made haste and let her pitcher down from her *shoulder,* and said, 'Drink, and I will give your camels a drink also.' So I drank, and she gave the camels a drink also. 47Then I asked her, and said, ‘Whose daughter *are* you?’ And she said, ‘The daughter of Bethuel, Nahor’s son, whom Milcah bore to him.’ So I put the nose ring on her nose and the bracelets on her wrists. 48[a]And I bowed my head and worshiped the LORD, and blessed the LORD God of my master Abraham, who had led me in the way of truth to [b]take the daughter of my master’s brother for his son. 49Now if you will [a]deal kindly and truly with my master, tell me. And if not, tell me, that I may turn to the right hand or to the left.”

50Then Laban and Bethuel answered and said, [a]“The thing comes from the LORD; we cannot [b]speak to you either bad or good. 51[a]Here *is* Rebekah before you; take *her* and go, and let her be your master’s son’s wife, as the LORD has spoken.”

52And it came to pass, when Abraham’s servant heard their words, that [a]he worshiped the LORD, *bowing himself* to the earth. 53Then the servant brought out [a]jewelry of silver, jewelry of gold, and clothing, and gave *them* to Rebekah. He also gave [b]precious things to her brother and to her mother.

54And he and the men who *were* with him ate and drank and stayed all night. Then they arose in the morning, and he said, [a]“Send me away to my master.”

55But her brother and her mother said, “Let the young woman stay with us *a few* days, at least ten; after that she may go.”

56And he said to them, “Do not [*]hinder me, since the LORD has prospered my way; send me away so that I may go to my master.”

57So they said, “We will call the young woman and ask her personally.” 58Then they called Rebekah and said to her, “Will you go with this man?”

And she said, “I will go.”

59So they sent away Rebekah their sister [a]and her nurse, and Abraham’s servant and his men. 60And they blessed Rebekah and said to her:

“Our sister, *may* you
become

[a]*The mother of*
thousands of ten
thousands;

[b] And may your
descendants possess

The gates of those
who hate them.”

61Then Rebekah and her maids arose, and they rode on the camels and followed the man. So the servant took Rebekah and departed.

62Now Isaac came from the way of [a]Beer Lahai Roi, for he dwelt in the South. 63And Isaac went out [a]to meditate in the field in the evening; and he lifted his eyes and looked, and there, the camels *were* coming. 64Then Rebekah lifted her eyes, and when [a]she saw Isaac she dismounted from her camel; 65for she had said to the servant, “Who *is* this man walking in the field to meet us?”

The servant said, “It *is* my master.” So she took a veil and covered herself.

66And the servant told Isaac all the things that he had done. 67Then Isaac brought her into his mother Sarah’s tent; and he [a]took Rebekah and she became his wife, and he loved her. So Isaac [b]was comforted after his mother’s *death.*

Genesis 25

Abraham and Keturah

1Abraham again took a wife, and her name *was* [a]Keturah. 2And [a]she bore him Zimran, Jokshan, Medan, Midian, Ishbak, and Shuah. 3Jokshan begot Sheba and Dedan. And the sons of Dedan were Asshurim, Letushim, and Leummim. 4And the sons of Midian *were* Ephah, Epher, Hanoch, Abidah, and Eldaah. All these *were* the children of Keturah.

5And [a]Abraham gave all that he had to Isaac. 6But Abraham gave gifts to the sons of the concubines which Abraham had; and while he was still living he [a]sent them eastward, away from Isaac his son, to [b]the country of the east.

Abraham’s Death and Burial

7This *is* the sum of the years of Abraham’s life which he lived: one hundred and seventy-five years. 8Then Abraham breathed his last and [a]died in a good old age, an old man and full *of years,* and [b]was gathered to his people. 9And [a]his sons Isaac and Ishmael buried him in the cave of [b]Machpelah, which *is* before Mamre, in the field of Ephron the son of Zohar the Hittite, 10[a]the field which Abraham purchased from the sons of Heth. [b]There Abraham was buried, and Sarah his wife. 11And it came to pass, after the death of Abraham, that God blessed his son Isaac. And Isaac dwelt at [a]Beer Lahai Roi.

The Families of Ishmael and Isaac

12Now this *is* the [a]genealogy of Ishmael, Abraham’s son, whom Hagar the Egyptian, Sarah’s maidservant, bore to Abraham. 13And [a]these *were* the names of the sons of Ishmael, by their names, according to their generations: The firstborn of Ishmael, Nebajoth; then Kedar, Adbeel, Mibsam, 14Mishma, Dumah, Massa, 15[*]Hadar, Tema, Jetur, Naphish, and Kedemah. 16These *were* the sons of Ishmael and these *were* their names, by their towns and their [*]settlements, [a]twelve princes according to their nations. 17These *were* the years of the life of Ishmael: one hundred and thirty-seven years; and [a]he breathed his last and died, and was gathered to his people. 18[a](They dwelt from Havilah as far as Shur, which *is* east of Egypt as you go toward Assyria.) He [*]died [b]in the presence of all his brethren.

19This *is* the [a]genealogy of Isaac, Abraham’s son. [b]Abraham begot Isaac. 20Isaac was forty years old when he took Rebekah as wife, [a]the daughter of Bethuel the Syrian of Padan Aram, [b]the sister of Laban the Syrian. 21Now Isaac pleaded with the LORD for his wife, because she *was* barren; [a]and the LORD granted his plea, [b]and Rebekah his wife conceived. 22But the children struggled together within her; and she said, “If *all is* well, why *am I like* this?” [a]So she went to inquire of the LORD.

23And the LORD said to her:

[a]“Two nations *are* in
your womb,

Two peoples shall be
separated from your
body;

One people shall be
stronger than [b]the
other,

[c]And the older shall
serve the younger.”

24So when her days were fulfilled *for her* to give birth, indeed *there were* twins in her womb. 25And the first came out red. *He was* [a]like a hairy garment all over; so they called his name [*]Esau. 26Afterward his brother came out, and [a]his hand took hold of Esau’s heel; so [b]his name was called [*]Jacob. Isaac *was* sixty years old when she bore them.

27So the boys grew. And Esau was [a]a skillful hunter, a man of the field; but Jacob was [b]a [*]mild man, [c]dwelling in tents. 28And Isaac loved Esau because he [a]ate *of his* game, [b]but Rebekah loved Jacob.

Esau Sells His Birthright

29Now Jacob cooked a stew; and Esau came in from the field, and he *was* weary. 30And Esau said to Jacob, “Please feed me with that same red *stew,* for I *am* weary.” Therefore his name was called [*]Edom.

31But Jacob said, “Sell me your birthright as of this day.”

32And Esau said, “Look, I *am* about to die; so [a]what *is* this birthright to me?”

SPIRITUAL

WARFARE BASICS

Walking by Faith — Joseph

The story of Joseph didn’t take place in a few days or a few weeks. Surely some frustrations must have built up when he survived the pit only to end up in the prison. But God had put something in his heart that allowed him to keep on walking. He was able to say, “Uh huh, it’s the pit today, but *it’s the palace tomorrow!*”

Many times the journey from the pit

to
the
palace
is by
way
of a
prison.
Faith
is a
commitment
to
God
that
is
not
based
on
good
conditions
—it
is
regardless
of
circumstances.
Only
God
can
put
something
in
your
heart
that
allows
you
to
see
that
what
He

has spoken will come to pass.[*]

---

[*] Don Dickerman, *Keep the Pigs Out*, 165.

33Then Jacob said, [*]"Swear to me as of this day."
So he swore to him, and [a]sold his birthright to
Jacob. 34And Jacob gave Esau bread and stew of
lentils; then [a]he ate and drank, arose, and went his
way. Thus Esau [b]despised *his* birthright.

Genesis 26

Isaac and Abimelech

1There was a famine in the land, besides [a]the first
famine that was in the days of Abraham. And Isaac
went to [b]Abimelech king of the Philistines, in Gerar.

2Then the LORD appeared to him and said: [a]"Do not
go down to Egypt; live in [b]the land of which I shall
tell you. 3[a]Dwell in this land, and [b]I will be with you
and [c]bless you; for to you and your descendants [d]I give
all these lands, and I will perform [e]the oath which I
swore to Abraham your father. 4And [a]I will make your
descendants multiply as the stars of heaven; I will
give to your descendants all these lands; [b]and in your
seed all the nations of the earth shall be blessed;
5[a]because Abraham obeyed My voice and kept My

charge, My commandments, My statutes, and My laws."

6So Isaac dwelt in Gerar. 7And the men of the place asked about his wife. And [a]he said, "She *is* my sister"; for [b]he was afraid to say, "*She is* my wife," *because he thought,* "lest the men of the place kill me for Rebekah, because she *is* [c]beautiful to behold." 8Now it came to pass, when he had been there a long time, that Abimelech king of the Philistines looked through a window, and saw, and there was Isaac, [*]showing endearment to Rebekah his wife. 9Then Abimelech called Isaac and said, "Quite obviously she *is* your wife; so how could you say, 'She *is* my sister'?"

Isaac said to him, "Because I said, 'Lest I die on account of her.' "

10And Abimelech said, "What *is* this you have done to us? One of the people might soon have lain with your wife, and [a]you would have brought guilt on us." 11So Abimelech charged all *his* people, saying, "He who [a]touches this man or his wife shall surely be put to death."

12Then Isaac sowed in that land, and reaped in the same year [a]a hundredfold; and the LORD [b]blessed him. 13The man [a]began to prosper, and continued prospering until he became very prosperous; 14for he had possessions of flocks and possessions of herds and a great number of servants. So the Philistines [a]envied him. 15Now the Philistines had stopped up all the wells [a]which his father's servants had dug in the days of Abraham his father, and they had filled them with earth. 16And Abimelech said to Isaac, "Go away from us, for [a]you are much mightier than we."

17Then Isaac departed from there and [*]pitched his tent in the Valley of Gerar, and dwelt there. 18And Isaac dug again the wells of water which they had dug in the days of Abraham his father, for the Philistines had stopped them up after the death of Abraham. [a]He called them by the names which his father had called them.

19Also Isaac's servants dug in the valley, and found a well of running water there. [20]But the herdsmen of Gerar [a]quarreled with Isaac’s herdsmen, saying, “The water *is* ours.” So he called the name of the well [*]Esek, because they quarreled with him. [21]Then they dug another well, and they quarreled over that *one* also. So he called its name [*]Sitnah. [22]And he moved from there and dug another well, and they did not quarrel over it. So he called its name [*]Rehoboth, because he said, “For now the LORD has made room for us, and we shall [a]be fruitful in the land.”

[23]Then he went up from there to Beersheba. [24]And the LORD [a]appeared to him the same night and said, [b]“I *am* the God of your father Abraham; [c]do not fear, for [d]I *am* with you. I will bless you and multiply your descendants for My servant Abraham’s sake.” [25]So he [a]built an altar there and [b]called on the name of the LORD, and he pitched his tent there; and there Isaac’s servants dug a well.

[26]Then Abimelech came to him from Gerar with Ahuzzath, one of his friends, [a]and Phichol the commander of his army. [27]And Isaac said to them, “Why have you come to me, [a]since you hate me and have [b]sent me away from you?”

[28]But they said, “We have certainly seen that the LORD [a]is with you. So we said, ‘Let there now be an oath between us, between you and us; and let us make a [*]covenant with you, [29]that you will do us no harm, since we have not touched you, and since we have done nothing to you but good and have sent you away in peace. [a]You *are* now the blessed of the LORD.’ ”

[30][a]So he made them a feast, and they ate and drank. [31]Then they arose early in the morning and [a]swore an oath with one another; and Isaac sent them away, and they departed from him in peace.

[32]It came to pass the same day that Isaac’s servants came and told him about the well which they had dug, and said to him, “We have found water.” [33]So he called it [*]Shebah. [a]Therefore the name of the city *is* [*]Beersheba to this day.

34[a]When Esau was forty years old, he took as wives Judith the daughter of Beeri the Hittite, and Basemath the daughter of Elon the Hittite. 35And [a]they were a grief of mind to Isaac and Rebekah.

Genesis 27

Isaac Blesses Jacob

1Now it came to pass, when Isaac was [a]old and [b]his eyes were so dim that he could not see, that he called Esau his older son and said to him, “My son.”

And he answered him, “Here I am.”

2Then he said, “Behold now, I am old. I [a]do not know the day of my death. 3[a]Now therefore, please take your weapons, your quiver and your bow, and go out to the field and hunt game for me. 4And make me [*]savory food, such as I love, and bring *it* to me that I may eat, that my soul [a]may bless you before I die.”

5Now Rebekah was listening when Isaac spoke to Esau his son. And Esau went to the field to hunt game and to bring *it.* 6So Rebekah spoke to Jacob her son, saying, “Indeed I heard your father speak to Esau your brother, saying, 7‘Bring me game and make [*]savory food for me, that I may eat it and bless you in the presence of the LORD before my death.’ 8Now therefore, my son, [a]obey my voice according to what I command you. 9Go now to the flock and bring me from there two choice kids of the goats, and I will make [a]savory food from them for your father, such as he loves. 10Then you shall take *it* to your father, that he may eat *it,* and that he [a]may bless you before his death.”

11And Jacob said to Rebekah his mother, “Look, [a]Esau my brother *is* a hairy man, and I *am* a smooth-*skinned* man. 12Perhaps my father will [a]feel me, and I shall seem to be a deceiver to him; and I shall bring [b]a curse on myself and not a blessing.”

13But his mother said to him, [a]“*Let* your curse *be* on me, my son; only obey my voice, and go, get *them* for me.” 14And he went and got *them* and brought *them* to his mother, and his mother [a]made [*]savory food, such as his father loved. 15Then Rebekah took the [a]choice clothes of her elder son Esau, which *were* with her in the house, and put them on Jacob her younger son. 16And she put the skins of the kids of the goats on his hands and on the smooth part of his neck. 17Then she gave the savory food and the bread, which she had prepared, into the hand of her son Jacob.

18So he went to his father and said, “My father.”

And he said, “Here I am. Who *are* you, my son?”

19Jacob said to his father, “I *am* Esau your firstborn; I have done just as you told me; please arise, sit and eat of my game, [a]that your soul may bless me.”

20But Isaac said to his son, “How *is it* that you have found *it* so quickly, my son?”

And he said, “Because the LORD your God brought *it* to me.”

21Isaac said to Jacob, “Please come near, that I [a]may feel you, my son, whether you *are* really my son Esau or not.” 22So Jacob went near to Isaac his father, and he felt him and said, “The voice *is* Jacob’s voice, but the hands *are* the hands of Esau.” 23And he did not recognize him, because [a]his hands were hairy like his brother Esau’s hands; so he blessed him.

24Then he said, “*Are* you really my son Esau?”

He said, “I *am.*”

25He said, “Bring *it* near to me, and I will eat of my son’s game, so [a]that my soul may bless you.” So he brought *it* near 1to him, and he ate; and he brought him wine, and he drank. 26Then his father Isaac said to him, “Come near now and kiss me, my son.” 27And he came near and [a]kissed him; and he smelled the smell of his clothing, and blessed him and said:

“Surely, [b]the smell of
my son

Is like the smell of a
field

Which the LORD has

blessed.

28Therefore may [a]God give you

Of [b]the dew of heaven,

Of [c]the fatness of the earth,

And [d]plenty of grain and wine.

29[a]Let peoples serve you,

And nations bow down to you.

Be master over your brethren,

And [b]let your mother's sons bow down to you.

[c]Cursed *be* everyone who curses you,

And blessed *be* those who bless you!"

Esau's Lost Hope

30Now it happened, as soon as Isaac had finished blessing Jacob, and Jacob had scarcely gone out from the presence of Isaac his father, that Esau his brother came in from his hunting. 31He also had made [*]savory food, and brought it to his father, and said to his father, "Let my father arise and [a]eat of his son's game, that your soul may bless me."

32And his father Isaac said to him, "Who *are* you?"

So he said, “I *am* your son, your firstborn, Esau.”

[33]Then Isaac trem1bled exceedingly, and said, “Who? Where *is* the one who hunted game and brought *it* to me? I ate all *of it* before you came, and I have blessed him—[a]*and* indeed he shall be blessed.”

[34]When Esau heard the words of his father, [a]he cried with an exceedingly great and bitter cry, and said to his father, “Bless me—me also, O my father!”

[35]But he said, “Your brother came with deceit and has taken away your blessing.”

[36]And *Esau* said, [a]“Is he not rightly named [*]Jacob? For he has supplanted me these two times. He took away my birthright, and now look, he has taken away my blessing!” And he said, “Have you not reserved a blessing for me?”

[37]Then Isaac answered and said to Esau, [a]“Indeed I have made him your master, and all his brethren I have given to him as servants; with [b]grain and wine I have [*]sustained him. What shall I do now for you, my son?”

[38]And Esau said to his father, “Have you only one blessing, my father? Bless me—me also, O my father!” And Esau lifted up his voice [a]and wept.

[39]Then Isaac his father answered and said to him:

“Behold, [a]your
dwelling shall be of
the [*]fatness of the
earth,

And of the dew of
heaven from above.

[40]By your sword you
shall live,

And [a]you shall serve
your brother;

And [b]it shall come to
pass, when you

become restless,

That you shall break
his yoke from your
neck.”

Jacob Escapes from Esau

41So Esau [a]hated Jacob because of the blessing with which his father blessed him, and Esau said in his heart, [b]“The days of mourning for my father [*]are at hand; [c]then I will kill my brother Jacob.”

42And the words of Esau her older son were told to Rebekah. So she sent and called Jacob her younger son, and said to him, “Surely your brother Esau [a]comforts himself concerning you *by intending* to kill you. 43Now therefore, my son, obey my voice: arise, flee to my brother Laban [a]in Haran. 44And stay with him a [a]few days, until your brother’s fury turns away, 45until your brother’s anger turns away from you, and he forgets what you have done to him; then I will send and bring you from there. Why should I be bereaved also of you both in one day?”

46And Rebekah said to Isaac, [a]“I am weary of my life because of the daughters of Heth; [b]if Jacob takes a wife of the daughters of Heth, like these *who are* the daughters of the land, what good will my life be to me?”

Genesis 28

1Then Isaac called Jacob and [a]blessed him, and [*]charged him, and said to him: [b]“You shall not take a wife from the daughters of Canaan. 2[a]Arise, go to [b]Padan Aram, to the house of [c]Bethuel your mother’s father; and take yourself a wife from there of the daughters of [d]Laban your mother’s brother.

3“May [a]God Almighty
bless you,

And make you
[b]fruitful and multiply

you,

That you may be an
assembly of peoples;

4And give you [a]the
blessing of Abraham,

To you and your
descendants with
you,

That you may inherit
the land

[b]In[*] which you are a
stranger,

Which God gave to
Abraham.”

5So Isaac sent Jacob away, and he went to Padan Aram, to Laban the son of Bethuel the Syrian, the brother of Rebekah, the mother of Jacob and Esau.

Esau Marries Mahalath

6Esau saw that Isaac had blessed Jacob and sent him away to Padan Aram to take himself a wife from there, *and that* as he blessed him he gave him a charge, saying, “You shall not take a wife from the daughters of Canaan,” 7and that Jacob had obeyed his father and his mother and had gone to Padan Aram. 8Also Esau saw [a]that the daughters of Canaan did not please his father Isaac. 9So Esau went to Ishmael and [a]took [b]Mahalath the daughter of Ishmael, Abraham’s son, [c]the sister of Nebajoth, to be his wife in addition to the wives he had.

Jacob’s Vow at Bethel

10Now Jacob [a]went out from Beersheba and went toward [b]Haran. 11So he came to a certain place and stayed there all night, because the sun had set. And he took one of the stones of that place and put it at his head, and he lay down in that place to sleep. 12Then he [a]dreamed, and behold, a ladder *was* set up on the earth, and its top reached to heaven; and there [b]the angels of God were ascending and descending on it.

13[a]And behold, the LORD stood above it and said: [b]“I *am* the LORD God of Abraham your father and the God of Isaac; [c]the land on which you lie I will give to you and your [d]descendants. 14Also your descendants shall be as the dus1t of the earth; you shall spread abroad [a]to the west and the east, to the north and the south; and [b]in you and in your seed all the families of the earth shall be blessed. 15Behold, [a]I *am* with you and will [b]keep[*] you wherever you go, and will [c]bring you back to this land; for [d]I will not leave you [e]until I have done what I have spoken to you.”

16Then Jacob awoke from his sleep and said, “Surely the LORD is in [a]this place, and I did not know *it.*” 17And he was afraid and said, “How awesome *is* this place! This *is* none other than the house of God, and this *is* the gate of heaven!”

18Then Jacob rose early in the morning, and took the stone that he had put at his head, [a]set it up as a pillar, [b]and poured oil on top of it. 19And he called the name of [a]that place [*]Bethel; but the name of that city had been Luz previously. 20[a]Then Jacob made a vow, saying, “If [b]God will be with me, and keep me in this way that I am going, and give me [c]bread to eat and clothing to put on, 21so that [a]I come back to my father’s house in peace, [b]then the LORD shall be my God. 22And this stone which I have set as a pillar [a]shall be God’s house, [b]and of all that You give me I will surely give a [*]tenth to You.”

Genesis 29

Jacob Meets Rachel

1So Jacob went on his journey1 [a]and came to the land of the people of the East. 2And he looked, and saw a [a]well in the field; and behold, there *were* three flocks of sheep lying by it; for out of that well they watered the flocks. A large stone *was* on the well’s mouth. 3Now all the flocks would be gathered there; and they would roll the stone from the well’s mouth, water the sheep, and put the stone back in its place on the well’s mouth.

4And Jacob said to them, “My brethren, where *are* you from?”

And they said, “We *are* from [a]Haran.”

5Then he said to them, “Do you know [a]Laban the son of Nahor?”

And they said, “We know him.”

6So he said to them, [a]“Is he well?”

And they said, “*He is* well. And look, his daughter Rachel [b]is coming with the sheep.”

7Then he said, “Look, *it is* still [*]high day; *it is* not time for the cattle to be gathered together. Water the sheep, and go and feed *them.*”

8But they said, “We cannot until all the flocks are gathered together, and they have rolled the stone from the well’s mouth; then we water the sheep.”

9Now while he was still speaking with them, [a]Rachel came with her father’s sheep, for she was a shepherdess. 10And it came to pass, when Jacob saw Rachel the daughter of Laban his mother’s brother, and the sheep of Laban his mother’s brother, that Jacob went near and [a]rolled the stone from the well’s mouth, and watered the flock of Laban his mother’s brother. 11Then Jacob [a]kissed Rachel, and lifted up his voice and wept. 12And Jacob told Rachel that he *was* [a]her father’s relative and that he *was* Rebekah’s son. [b]So she ran and told her father.

13Then it came to pass, when Laban heard the report about Jacob his sister’s son1, that [a]he ran to meet him, and embraced him and kissed him, and brought him to his house. So he told Laban all these things. 14And Laban said to him, [a]“Surely you *are* my bone and my flesh.” And he stayed with him for a month.

Jacob Marries Leah and Rachel

15Then Laban said to Jacob, “Because you *are* my relative, should you therefore serve me for nothing?

Tell me, [a]what *should* your wages *be?*” 16Now Laban had two daughters: the name of the elder *was* Leah, and the name of the younger *was* Rachel. 17Leah’s eyes *were* [*]delicate, but Rachel was [a]beautiful of form and appearance.

18Now Jacob loved Rachel; so he said, [a]“I will serve you seven years for Rachel your younger daughter.”

19And Laban said, “*It is* better that I give her to you than that I should give her to another man. Stay with me.” 20So Jacob [a]served seven years for Rachel, and they seemed *only* a few days to him because of the love he had for her.

21Then Jacob said to Laban, “Give *me* my wife, for my days are fulfilled, that I may [a]go in to her.” 22And Laban gathered together all the men of the place and [a]made a feast. 23Now it came to pass in the evening, that he took Leah his daughter and brought her to Jacob; and he went in to her. 24And Laban gave his maid [a]Zilpah to his daughter Leah *as* a maid. 25So it came to pass in the morning, that behold, it *was* Leah. And he said to Laban, “What is this you have done to me? Was it not for Rachel that I served you? Why then have you [a]deceived me?”

26And Laban said, “It must not be done so in our [*]country, to give the younger before the firstborn. 27[a]Fulfill [1]her week, and we will give you this one also for the service which you will serve with me still another seven years.”

28Then Jacob did so and fulfilled her week. So he gave him his daughter Rachel as wife also. 29And Laban gave his maid [a]Bilhah to his daughter Rachel as a maid. 30Then *Jacob* also went in to Rachel, and he also [a]loved Rachel more than Leah. And he served with Laban [b]still another seven years.

The Children of Jacob

31When the LORD [a]saw that Leah *was* [*]unloved, He [b]opened her womb; but Rachel *was* barren. 32So Leah conceived and bore a son, and she called his name [*]Reuben; for she said, “The LORD has surely [a]looked on my affliction. Now therefore, my husband will love

me.” [33]Then she conceived again and bore a son, and
said, “Because the LORD has heard that I *am* [*]unloved,
He has therefore given me this *son* also.” And she
called his name [*]Simeon. [34]She conceived again and
bore a son, and said, “Now this time my husband will
become attached to me, because I have borne him
three sons.” Therefore his name was called [*]Levi.
[35]And she conceived again and bore a son, and said,
“Now I will praise the LORD.” Therefore she called
his name [a]Judah.[*] Then she stopped bearing.

Genesis 30

[1]Now when Rachel saw that [a]she bore Jacob no
children, Rachel [b]envied her sister, and said to Jacob,
“Give me children, [c]or else I die!”

[2]And Jacob’s anger was aroused against Rachel, and
he said, [a]“*Am* I in the place of God, who has withheld from you
the fruit of the womb?”

[3]So she said, “Here is [a]my maid Bilhah; go in to her,
[b]and she will bear *a child* on my knees, [c]that I also
may [*]have children by her.” [4]Then she gave him
Bilhah her maid [a]as wife, and Jacob went in to her.
[5]And Bilhah conceived and bore Jacob a son. [6]Then
Rachel said, “God has [a]judged my case; and He has
also heard my voice and given me a son.” Therefore
she called his name [*]Dan. [7]And Rachel’s maid Bilhah
conceived again and bore Jacob a second son. [8]Then
Rachel said, “With [*]great wrestlings I have wrestled
with my sister, *and* indeed I have prevailed.” So she
called his name [*]Naphtali.

[9]When Leah saw that she had stopped bearing, she
took Zilpah her maid and [a]gave her to Jacob as wife.
[10]And Leah’s maid Zilpah bore Jacob a son. [11]Then
Leah said, [*]“A troop comes!” So she called his name
[*]Gad. [12]And Leah’s maid Zilpah bore Jacob a second
son. [13]Then Leah said, “I am happy, for the daughters
[a]will call me blessed.” So she called his name [*]Asher.

[14]Now Reuben went in the days of wheat harvest
and found mandrakes in the field, and brought them
to his mother Leah. Then Rachel said to Leah, [a]“Please

give me *some* of your son's mandrakes."

15But she said to her, [a]"*Is it* a small matter that you
have taken away my husband? Would you take away
my son's mandrakes also?"

And Rachel said, "Therefore he will lie with you
tonight for your son's mandrakes."

16When Jacob came out of the field in the evening,
Leah went out to meet him and said, "You must come
in to me, for I have surely hired you with my son's
mandrakes." And he lay with her that night.

17And God listened to Leah, and she conceived and
bore Jacob a fifth son. 18Leah said, "God has given me
my wages, because I have given my maid to my
husband." So she called his name *Issachar. 19Then
Leah conceived again and bore Jacob a sixth son.
20And Leah said, "God has endowed me *with* a good
endowment; now my husband will dwell with me,
because I have borne him six sons." So she called his
name *Zebulun. 21Afterward she bore a [a]daughter, and
called her name *Dinah.

22Then God [a]remembered Rachel, and God listened
to her and [b]opened her womb. 23And she conceived
and bore a son, and said, "God has taken away [a]my
reproach." 24So she called his name *Joseph, and said,
[a]"The LORD shall add to me another son."

Jacob's Agreement with Laban

25And it came to pass, when Rachel had borne
Joseph, that Jacob said to Laban, [a]"Send me away,
that I may go to [b]my own place and to my country.
26Give *me* my wives and my children [a]for whom I
have served you, and let me go; for you know my
service which [b]I have done for you."

27And Laban said to him, "Please *stay,* if I have
found favor in your eyes, *for* I have learned by
experience that the LORD has blessed me for your
sake." 28Then he said, [a]"Name me your wages, and I
will give *it.*"

29So *Jacob* said to him, [a]"You know how I have
served you and how your livestock has been with me.
30For what you had before I *came was* little, and it has

increased to a great amount; the LORD has blessed you [*]since my coming. And now, when shall I also [a]provide for my own house?"

31So he said, "What shall I give you?"

And Jacob said, "You shall not give me anything. If you will do this thing for me, I will again feed and keep your flocks: 32Let me pass through all your flock today, removing from there all the speckled and spotted sheep, and all the brown ones among the lambs, and the spotted and speckled among the goats; and [a]*these* shall be my wages. 33So my [a]righteousness will answer for me in time to come, when the subject of my wages comes before you: every one that *is* not speckled and spotted among the goats, and brown among the lambs, will be considered stolen, if *it is* with me."

34And Laban said, "Oh, that it were according to your word!" 35So he removed that day the male goats that were [a]speckled and spotted, all the female goats that were speckled and spotted, every one that had *some* white in it, and all the brown ones among the lambs, and gave *them* into the hand of his sons. 36Then he put three days' journey between himself and Jacob, and Jacob fed the rest of Laban's flocks.

37Now [a]Jacob took for himself rods of green poplar and of the almond and chestnut trees, peeled white strips in them, and exposed the white which *was* in the rods. 38And the rods which he had peeled, he set before the flocks in the gutters, in the watering troughs where the flocks came to drink, so that they should conceive when they came to drink. 39So the flocks conceived before the rods, and the flocks brought forth streaked, speckled, and spotted. 40Then Jacob separated the lambs, and made the flocks face toward the streaked and all the brown in the flock of Laban; but he put his own flocks by themselves and did not put them with Laban's flock.

SPIRITUAL WARFARE

BASICS

Walking by Faith — Moses

Moses had a faith that allowed him to choose to suffer affliction, forsake Egypt, and not fear the consequences. Something in his heart was saying, “Yes, we’re making bri1cks today, but we're making tracks tomorrow!" He had a commitment to God that did not waver.

Faith does not consider the desires of the flesh in fulfilling a commitment to God. Moses must have thought he was doing something wrong when

Pharaoh continually refused to *let his people go*. However, he had God’s promise, and God had placed something in his heart that allowed him to discount the flesh. Bricks today; tracks tomorrow. Faith is believing God’s Word. Faith can only be placed in what God has said.[*]

---

[*] Don Dickerman, *Keep the Pigs Out*, 166.

[41]And it came to pass, whenever the stronger livestock conceived, that Jacob placed the rods before the eyes of the livestock in the gutters, that they might conceive among the rods. [42]But when the flocks were feeble, he did not put *them* in; so the feebler were Laban’s and the stronger Jacob’s. [43]Thus the man [a]became exceedingly prosperous, and [b]had large flocks, female and male servants, and camels and donkeys.

Gen. 30:43

Let me increase exceedingly.

Genesis 31

Jacob Flees from Laban

1Now *Jacob* heard the words of Laban's sons, saying, "Jacob has taken away all that was our father's, and from what was our father's he has acquired all this [a]wealth." 2And Jacob saw the [a]countenance of Laban, and indeed it *was* not [b]*favorable* toward him as before. 3Then the LORD said to Jacob, [a]"Return to the land of your fathers and to your family, and I will [b]be with you."

4So Jacob sent and called Rachel and Leah to the field, to his flock, 5and said to them, [a]"I see your father's [*]countenance, that it *is* not *favorable* toward me as before; but the God of my father [b]has been with me. 6And [a]you know that with all my might I have served your father. 7Yet your father has deceived me and [a]changed my wages [b]ten times, but God [c]did not allow him to hurt me. 8If he said thus: 'The speckled shall be your wages,' then all the flocks bore speckled. And if he said thus: [a]'The streaked shall be your wages,' then all the flocks bore streaked. 9So God has [a]taken away the livestock of your father and given *them* to me.

10"And it happened, at the time when the flocks conceived, that I lifted my eyes and saw in a dream, and behold, the rams which leaped upon the flocks *were* streaked, speckled, and gray-spotted. 11Then [a]the Angel of God spoke to me in a dream, saying, 'Jacob.' And I said, 'Here I am.' 12And He said, 'Lift your eyes now and see, all the rams which leap on the flocks *are* streaked, speckled, and gray-spotted; for [a]I have seen all that Laban is doing to you. 13I *am* the God of Bethel, [a]where you anointed the pillar *and* where you made a vow to Me. Now [b]arise, get out of this land, and return to the land of your family.' "

14Then Rachel and Leah answered and said to him, [a]"Is there still any portion or inheritance for us in our father's house? 15Are we not considered strangers by him? For [a]he has sold us, and also completely consumed our money. 16For all these riches which God has taken from our father are *really* ours and our children's; now then, whatever God has said to you, do it.”

17Then Jacob rose and set his sons and his wives on camels. 18And he carried away all his livestock and all his possessions which he had gained, his acquired livestock which he had gained in Padan Aram, to go to his father Isaac in the land of [a]Canaan. 19Now Laban had gone to shear his sheep, and Rachel had stolen the [a]household* idols that were her father’s. 20And Jacob stole away, unknown to Laban the Syrian, in that he did not tell him that he intended to flee. 21So he fled with all that he had. He arose and crossed the river, and [a]headed* toward the mountains of Gilead.

Laban Pursues Jacob

22And Laban was told on the third day that Jacob had fled. 23Then he took [a]his brethren with him and pursued him for seven days’ journey, and he overtook him in the mountains of Gilead. 24But God [a]had come to Laban the Syrian in a dream by night, and said to him, “Be careful that you [b]speak to Jacob neither good nor bad.”

25So Laban overtook Jacob. Now Jacob had pitched his tent in the mountains, and Laban with his brethren pitched in the mountains of Gilead.

26And Laban said to Jacob: “What have you done, that you have stolen away unknown to me, and [a]carried away my daughters like captives *taken* with the sword? 27Why did you flee away secretly, and steal away from me, and not tell me; for I might have sent you away with joy and songs, with timbrel and harp? 28And you did not allow me [a]to kiss my sons and my daughters. Now [b]you have done foolishly in *so* doing. 29It is in my power to do you harm, but the [a]God of your father spoke to me [b]last night, saying, ‘Be careful that you speak to Jacob neither good nor bad.’ 30And now you have surely gone because you greatly long for your father’s house, *but* why did you [a]steal my gods?”

31Then Jacob answered and said to Laban, “Because I was [a]afraid, for I said, ‘Perhaps you would take your daughters from me by force.’ 32With whomever you find your gods, [a]do not let him live. In the presence of our brethren, identify what I have of yours and take *it* with you.” For Jacob did not know that Rachel had stolen them.

33And Laban went into Jacob’s tent, into Leah’s tent, and into the two maids’ tents, but he did not find *them.* Then he went out of Leah’s tent and entered Rachel’s tent. 34Now Rachel had taken the [*]household idols, put them in the camel’s saddle, and sat on them. And Laban [*]searched all about the tent but did not find *them.* 35And she said to her father, “Let it not displease my lord that I cannot [a]rise before you, for the manner of women *is* with me.” And he searched but did not find the [*]household idols.

36Then Jacob was angry and rebuked Laban, and Jacob answered and said to Laban: “What *is* my [*]trespass? What *is* my sin, that you have so hotly pursued me? 37Although you have searched all my things, what part of your household things have you found? Set *it* here before my brethren and your brethren, that they may judge between us both! 38These twenty years I *have been* with you; your ewes and your female goats have not miscarried their young, and I have not eaten the rams of your flock. 39[a]That which was torn *by beasts* I did not bring to you; I bore the loss of it. [b]You required it from my hand, *whether* stolen by day or stolen by night. 40*There* I was! In the day the drought consumed me, and the frost by night, and my sleep departed from my eyes. 41Thus I have been in your house twenty years; I [a]served you fourteen years for your two daughters, and six years for your flock, and [b]you have changed my wages ten times. 42[a]Unless the God of my father, the God of Abraham and [b]the Fear of Isaac, had been with me, surely now you would have sent me away empty-handed. [c]God has seen my affliction and the labor of my hands, and [d]rebuked *you* last night.”

Laban’s Covenant with Jacob

43And Laban answered and said to Jacob, “*These* daughters *are* my daughters, and *these* children *are* my children, and *this* flock *is* my flock; all that you see *is* mine. But what can I do this day to these my daughters or to their children whom they have borne? 44Now therefore, come, [a]let us make a [*]covenant, [b]you and I, and let it be a witness between you and me.”

45So Jacob [a]took a stone and set it up *as* a pillar. 46Then Jacob said to his brethren, “Gather stones.” And they took stones and made a heap, and they ate there on the heap. 47Laban called it [*]Jegar Sahadutha, but Jacob called it [*]Galeed. 48And Laban said, [a]“This heap *is* a witness between you and me this day.” Therefore its name was called Galeed, 49also [a]Mizpah,[*] because he said, “May the LORD watch between you and me when we are absent one from another. 50If you afflict my daughters, or if you take *other* wives besides my daughters, *although* no man *is* with us—see, God *is* witness between you and me!”

51Then Laban said to Jacob, “Here is this heap and here is *this* pillar, which I have placed between you and me. 52This heap *is* a witness, and *this* pillar *is* a witness, that I will not pass beyond this heap to you, and you will not pass beyond this heap and this pillar to me, for harm. 53The God of Abraham, the God of Nahor, and the God of their father [a]judge between us.” And Jacob [b]swore by [c][*]the Fear of his father Isaac. 54Then Jacob offered a sacrifice on the mountain, and called his brethren to eat bread. And they ate bread and stayed all night on the mountain. 55And early in the morning Laban arose, and [a]kissed his sons and daughters and [b]blessed them. Then Laban departed and [c]returned to his place.

Genesis 32

Esau Comes to Meet Jacob

1So Jacob went on his way, and [a]the angels of God met him. 2When Jacob saw them, he said, “This *is* God’s [a]camp.” And he called the name of that place [*]Mahanaim.

3Then Jacob sent messengers before him to Esau his brother [a]in the land of Seir, [b]the [*]country of Edom. 4And he commanded them, saying, [a]“Speak thus to my lord Esau, ‘Thus your servant Jacob says: “I have dwelt with Laban and stayed there until now. 5[a]I have oxen, donkeys, flocks, and male and female servants; and I have sent to tell my lord, that [b]I may find favor in your sight.” ’ ”

6Then the messengers returned to Jacob, saying, “We came to your brother Esau, and [a]he also is coming to meet you, and four hundred men *are* with him.” 7So Jacob was greatly afraid and [a]distressed; and he divided the people that *were* with him, and the flocks and herds and camels, into two companies. 8And he said, “If Esau comes to the one company and [*]attacks it, then the other company which is left will escape.”

9[a]Then Jacob said, [b]“O God of my father Abraham and God of my father Isaac, the LORD [c]who said to me, ‘Return to your country and to your family, and I will deal well with you’: 10I am not worthy of the least of all the [a]mercies and of all the truth which You have shown Your servant; for I crossed over this Jordan with [b]my staff, and now I have become two companies. 11[a]Deliver me, I pray, from the hand of my brother, from the hand of Esau; for I fear him, lest he come and [*]attack me *and* [b]the mother with the children. 12For [a]You said, ‘I will surely treat you well, and make your descendants as the [b]sand of the sea, which cannot be numbered for multitude.’ ”

13So he lodged there that same night, and took what [*]came to his hand as [a]a present for Esau his brother: 14two hundred female goats and twenty male goats, two hundred ewes and twenty rams, 15thirty milk camels with their colts, forty cows and ten bulls, twenty female donkeys and ten foals. 16Then he delivered *them* to the hand of his servants, every drove by itself, and said to his servants, “Pass over before me, and put some distance between successive droves.” 17And he commanded the first one, saying, “When Esau my brother meets you and asks you, saying, 'To whom do you belong, and where are you going? Whose *are* these in front of you?' 18then you shall say, 'They *are* your servant Jacob's. It *is* a present sent to my lord Esau; and behold, he also *is* behind us.' " 19So he commanded the second, the third, and all who followed the droves, saying, "In this manner you shall speak to Esau when you find him; 20and also say, 'Behold, your servant Jacob *is* behind us.' " For he said, "I will [a]appease him with the present that goes before me, and afterward I will see his face; perhaps he will accept me." 21So the present went on over before him, but he himself lodged that night in the camp.

Wrestling with God

22And he arose that night and took his two wives, his two female servants, and his eleven sons, [a]and crossed over the ford of Jabbok. 23He took them, sent them [*]over the brook, and sent over what he had. 24Then Jacob was left alone; and [a]a Man wrestled with him until the [*]breaking of day. 25Now when He saw that He[1] did not prevail against him, He [*]touched the socket of his hip; and [a]the socket of Jacob's hip was out of joint as He wrestled with him. 26And [a]He said, "Let Me go, for the day breaks."

But he said, [b]"I will not let You go unless You bless me!"

27So He said to him, "What *is* your name?"

He said, "Jacob."

28And He said, [a]"Your name shall no longer be called Jacob, but [*]Israel; for you have [b]struggled with God and [c]with men, and have prevailed."

29Then Jacob asked, saying, "Tell *me* Your name, I pray."

And He said, [a]"Why *is* it *that* you ask about My name?" And He [b]blessed him there.

30So Jacob called the name of the place [*]Peniel: "For [a]I have seen God face to face, and my life is preserved." 31Just as he crossed over [*]Penuel the sun rose on him, and he limped on his hip. 32Therefore to this day the children of Israel do not eat the muscle that shrank, which *is* on the hip socket, because He [*]touched the socket of Jacob's hip in the muscle that shrank.

Genesis 33

Jacob and Esau Meet

1Now Jacob lifted his eyes and looked, and there, [a]Esau was coming, and with him were four hundred men. So he divided the children among Leah, Rachel, and the two maidservants. 2And he put the maidservants and their children in front, Leah and her children behind, and Rachel and Joseph last. 3Then he crossed over before them and [a]bowed himself to the ground seven times, until he came near to his brother.

4[a]But Esau ran to meet him, and embraced him, [b]and fell on his neck and kissed him, and they wept. 5And he lifted his eyes and saw the women and children, and said, "Who *are* these with you?"

So he said, "The children [a]whom God has graciously given your servant." 6Then the maidservants came near, they and their children, and bowed down. 7And Leah also came near with her children, and they bowed down. Afterward Joseph and Rachel came near, and they bowed down.

8Then Esau said, "What *do* you *mean by* [a]all this company which I met?"

And he said, "*These are* [b]to find favor in the sight of my lord."

9But Esau said, "I have enough, my brother; keep what you have for yourself."

10And Jacob said, "No, please, if I [a]have now found favor in your sight, then receive my present from my hand, inasmuch as I have seen your face as though I had seen the face of God, and you were pleased with me. 11Please, take [a]my blessing that is brought to you, because God has dealt [b]graciously with me, and because I have [*]enough." [c]So he urged him, and he took *it*.

12Then Esau said, "Let us take our journey; let us go, and I will go before you."

13But Jacob said to him, “My lord knows that the children *are* weak, and the flocks and herds which are nursing *are* with me. And if the men should drive them hard one day, all the flock will die. 14Please let my lord go on ahead before his servant. I will lead on slowly at a pace which the livestock that go before me, and the children, [*]are able to endure, until I come to my lord [a]in Seir.”

15And Esau said, “Now let me leave with you *some* of the people who *are* with me.”

But he said, “What need is there? [a]Let me find favor in the sight of my lord.” 16So Esau returned that day on his way to Seir. 17And Jacob journeyed to [a]Succoth, built himself a house, and made [*]booths for his livestock. Therefore the name of the place is called [*]Succoth.

Jacob Comes to Canaan

18Then Jacob came [*]safely to [a]the city of [b]Shechem, which *is* in the land of Canaan, when he came from Padan Aram; and he pitched his tent before the city. 19And [a]he bought the parcel of [*]land, where he had pitched his tent, from the children of Hamor, Shechem’s father, for one hundred pieces of money. 20Then he erected an altar there and called it [a]El[*] Elohe Israel.

Genesis 34

The Dinah Incident

1Now [a]Dinah the daughter of Leah, whom she had borne to Jacob, went out to see the daughters of the land. 2And when Shechem the son of Hamor the Hivite, prince of the country, saw her, he [a]took her and lay with her, and violated her. 3His soul [*]was strongly attracted to Dinah the daughter of Jacob, and he loved the young woman and spoke [*]kindly to the young woman. 4So Shechem [a]spoke to his father Hamor, saying, “Get me this young woman as a wife.”

5And Jacob heard that he had defiled Dinah his daughter. Now his sons were with his livestock in the field; so Jacob [a]held[*] his peace until they came. 6Then

Hamor the father of Shechem went out to Jacob to speak with him. 7And the sons of Jacob came in from the field when they heard *it;* and the men were gr1ieved and very angry, because he [a]had done a disgraceful thing in Israel by lying with Jacob’s daughter, [b]a thing which ought not to be done. 8But Hamor spoke with them, saying, “The soul of my son Shechem longs for your daughter. Please give her to him as a wife. 9And make marriages with us; give your daughters to us, and take our daughters to yourselves. 10So you shall dwell with us, and the land shall be before you. Dwell and trade in it, and acquire possessions for yourselves in it.”

11Then Shechem said to her father and her brothers, “Let me find favor in your eyes, and whatever you say to me I will give. 12Ask me ever so much [a]dowry[*] and gift, and I will give according to what you say to me; but give me the young woman as a wife.”

13But the sons of Jacob answered Shechem and Hamor his father, and spoke [a]deceitfully, because he had defiled Dinah their sister. 14And they said to them, “We cannot do this thing, to give our sister to one who is [a]uncircumcised, for [b]that *would be* a reproach to us. 15But on this *condition* we will consent to you: If you will become as we *are,* if every male of you is circumcised, 16then we will give our daughters to you, and we will take your daughters to us; and we will dwell with you, and we will become one people. 17But if you will not heed us and be circumcised, then we will take our daughter and be gone.”

18And their words pleased Hamor and Shechem, Hamor’s son. 19So the young man did not delay to do the thing, because he delighted in Jacob’s daughter. He *was* [a]more honorable than all the household of his father.

20And Hamor and Shechem his son came to the [a]gate of their city, and spoke with the men of their city, saying: 21“These men *are* at peace with us. Therefore let them dwell in the land and trade in it. For indeed the land *is* large enough for them. Let us take their daughters to us as wives, and let us give them our daughters. 22Only on this *condition* will the men consent to dwell with us, to be one people: if every male among us is circumcised as they *are* circumcised. 23*Will* not their [1]livestock, their property, and every animal of theirs *be* ours? Only let us consent to them, and they will dwell with us." 24And all who [a]went out of the gate of his city heeded Hamor and Shechem his son; every male was circumcised, all who went out of the gate of his city.

25Now it came to pass on the third day, when they were in pain, that two of the sons of Jacob, [a]Simeon and Levi, Dinah's brothers, each took his sword and came boldly upon the city and killed all the males. 26And they [a]killed Hamor and Shechem his son with the edge of the sword, and took Dinah from Shechem's house, and went out. 27The sons of Jacob came upon the slain, and plundered the city, because their sister had been defiled. 28They took their sheep, their oxen, and their donkeys, what *was* in the city and what *was* in the field, 29and all their wealth. All their little ones and their wives they took captive; and they plundered even all that *was* in the houses.

30Then Jacob said to Simeon and Levi, [a]"You have [b]troubled me [c]by making me obnoxious among the inhabitants of the land, among the Canaanites and the Perizzites; [d]and since I *am* few in number, they will gather themselves together against me and kill me. I shall be destroyed, my household and I."

31But they said, "Should he treat our sister like a harlot?"

Genesis 35

Jacob's Return to Bethel

1Then God said to Jacob, "Arise, go up to [a]Bethel and dwell there; and make an altar there to God, [b]who appeared to you [c]when you fled from the face of Esau your brother."

2And Jacob said to his [a]household and to all who *were* with him, "Put away [b]the foreign gods that *are*

among you, [c]purify yourselves, and change your
garments. 3Then let us arise and go up to Bethel; and I
will make an altar there t1o God, [a]who answered me
in the day of my distress [b]and has been with me in the
way which I have gone.” 4So they gave Jacob all the
foreign [*]gods which *were* in their hands, and the
[a]earrings which *were* in their ears; and Jacob hid them
under [b]the terebinth tree which *was* by Shechem.

5And they journeyed, and [a]the terror of God was
upon the cities that *were* all around them, and they
did not pursue the sons of Jacob. 6So Jacob came to
[a]Luz (that *is,* Bethel), which *is* in the land of Canaan,
he and all the people who *were* with him. 7And he
[a]built an altar there and called the place [*]El Bethel,
because [b]there God appeared to him when he fled
from the face of his brother.

8Now [a]Deborah, Rebekah’s nurse, died, and she was
buried below Bethel under the terebinth tree. So the
name of it was called [*]Allon Bachuth.

9Then [a]God appeared to Jacob again, when he came
from Padan Aram, and [b]blessed him. 10And God said
to him, “Your name *is* Jacob; [a]your name shall not be
called Jacob anymore, [b]but Israel shall be your name.”
So He called his name Israel. 11Also God said to him:
[a]“I *am* God Almighty. [b]Be fruitful and multiply; [c]a
nation and a company of nations shall proceed from
you, and kings shall come from your body. 12The [a]land
which I gave Abraham and Isaac I give to you; and to
your descendants after you I give this land.” 13Then
God [a]went[*] up from him in the place wh1ere He
talked with him. 14So Jacob [a]set up a pillar in the
place where He talked with him, a pillar of stone; and
he poured a drink offering on it, and he poured oil on
it. 15And Jacob called the name of the place where
God spoke with him, [a]Bethel.

Death of Rachel

16Then they journeyed from Bethel. And when there
was but a little distance to go to Ephrath, Rachel
labored *in childbirth,* and she had hard labor. 17Now it
came to pass, when she was in hard labor, that the

midwife said to her, “Do not fear; [a]you will have this son also.” 18And so it was, as her soul was departing (for she died), that she called his name [*]Ben-Oni; but his father called him [*]Benjamin. 19So [a]Rachel died and was buried on the way to [b]Ephrath (that *is,* Bethlehem). 20And Jacob set a pillar on her grave, which *is* the pillar of Rachel’s grave [a]to this day.

21Then Israel journeyed and pitched his tent beyond [a]the tower of Eder. 22And it happened, when Israel dwelt in that land, that Reuben went and [a]lay with Bilhah his father’s concubine; and Israel heard *about it.*

Jacob’s Twelve Sons

Now the sons of Jacob were twelve: 23the sons of Leah *were* [a]Reuben, Jacob’s firstborn, and Simeon, Levi, Judah, Issachar, and Zebulun; 24the sons of Rachel *were* Joseph and Benjamin; 25the sons of Bilhah, Rachel’s maidservant, *were* Dan and Naphtali; 26and the sons of Zilpah, Leah’s maidservant, *were* Gad and Asher. These *were* the sons of Jacob who were born to him in Padan Aram.

Death of Isaac

27Then Jacob came to his father Isaac at [a]Mamre, or [b]Kirjath Arba[*] (that *is,* Hebron), where Abraham and Isaac had dwelt. 28Now the days of Isaac were one hundred and eighty years. 29So Isaac breathed his last and died, and [a]was [*]gathered to his people, *being* old and full of days. And [b]his sons Esau and Jacob buried him.

LESSONS FROM GOD’S WARRIORS

PROFILE

ENOCH

Learn to Walk With God and to Please Him

Included in the eleventh chapter of

the Book of Hebrews, which is often referred to as “the hall of faith,” is Enoch. His life went a step beyond merely calling on the name of the Lord”*Enoch walked with God*. Thousands of years after his departure from this earth, the writer of the Book of Hebrews said of him:

> By faith Enoch was taken away so that he did not see death, “and was not found, because God had taken him”; for before he was taken he had this testimony,

that
he
pleased
God.

—
Hebrews
11:5

What was it about Enoch that was different from those before him? What about his life was so pleasing to God? The answer is found in Hebrews: “But without faith it is impossible to please Him, for he who comes to God must believe that He is, and that He is a rewarder of those who diligently seek Him” (Heb. 11:6).

Enoch knew God. Not only that, but he also “walked with God” for three hundred years (Gen. 5:22)! Enoch did not try to please people. In fact, Jude records that Enoch prophesied in a manner that would have made him very unpopular with the party crowd: “Now Enoch, the seventh from Adam, prophesied about these men also, saying, “‘Behold, the Lord comes with ten thousands of His saints, to execute judgment on all, to convict all who are ungodly among them of all their ungodly deeds which they have committed in an ungodly way, and of all the harsh things which ungodly sinners have spoken against Him’” (Jude 14–15).

Enoch’s primary concern was walking in faith. It is reasonable to say that

Enoch came to God, believed God, diligently sought God, and was rewarded.

If you want to please God, *believe* God. Take Him at His Word. Paul taught the Corinthians, “We walk by faith, not by sight” (2 Cor. 5:7). Shadrach, Meshach, and Abed-nego walked by faith and not by sight. The three of them joined Daniel in his initial fast from the king’s delicacies. Think about what they saw on their way into that furnace. It had been heated seven times hotter than normal. The heat was so intense that it killed the guards standing by the doors. If they had walked by sight, they would have said, “Today we shall surely be ashes.” Instead, by faith, they walked on saying, “Our God whom we serve is able to deliver us from the burning fiery furnace, and He will deliver us from your hand, O king” (Dan. 3:17). Faith is the evidence of things unseen.*

Learn to walk with God and please Him in everything you do and say.

---

* Jentezen Franklin, *Fasting Journal*, 82–83.

Genesis 36

The Family of Esau

1Now this *is* the genealogy of Esau, [a]who is Edom. 2[a]Esau took his wives from the daughters of Canaan: Adah the daughter of Elon the [b]Hittite; [c]Aholibamah[*] the daughter of Anah, the daughter of Zibeon the Hivite; 3and [a]Basemath, Ishmael’s daughter, sister of Nebajoth. 4Now [a]Adah bore Eliphaz to Esau, and Basemath bore Reuel. 5And [*]Aholibamah bore Jeush, Jaalam, and Korah. These *were* the sons of Esau who were born to him in the land of Canaan.

6Then Esau took his wives, his sons, his daughters, and all the persons of his household, his cattle and all his animals, and all his goods which he had gained in the land of Canaan, and went to a country away from the presence of his brother Jacob. 7[a]For their possessions were too great for them to dwell together, and [b]the land where they were strangers could not support them because of their livestock. 1 8So Esau dwelt in [a]Mount Seir. [b]Esau *is* Edom.

9And this *is* the genealogy of Esau the father of the Edomites in Mount Seir. 10These *were* the names of Esau’s sons: [a]Eliphaz the son of Adah the wife of Esau, and Reuel the son of Basemath the wife of Esau. 11And the sons of Eliphaz were Teman, Omar, [*]Zepho, Gatam, and Kenaz.

12Now Timna was the concubine of Eliphaz, Esau’s son, and she bore [a]Amalek to Eliphaz. These *were* the sons of Adah, Esau’s wife.

13These *were* the sons of Reuel: Nahath, Zerah, Shammah, and Mizzah. These were the sons of Basemath, Esau’s wife.

14These were the sons of [*]Aholibamah, Esau’s wife, the daughter of Anah, the daughter of Zibeon. And she bore to Esau: Jeush, Jaalam, and Korah.

The Chiefs of Edom

15These *were* the chiefs of the sons of Esau. The sons of Eliphaz, the firstborn *son* of Esau, were Chief Teman, Chief Omar, Chief Zepho, Chief Kenaz, 16*Chief Korah, Chief Gatam, *and* Chief Amalek. These *were* the chiefs of Eliphaz in the land of Edom. They *were* the sons of Adah.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Tree of Life

The tree of life appears throughout the Scriptures, as does the symbolism of trees. The symbol of the tree can be compared with the “tree” of character within every person. In the Garden of Eden the tree of life is our Lord Jesus Christ. The story of God and man culminates in the vision of the great tree of life in Revelation 22:1–2. We see unmistakably that the tree of life is our Lord Jesus Christ, His character, and the fruits of His nature. We have become His “leaves… for the healing of the nations.” His character shall become our character, and He will heal others through us.

Before sin prevented him, Adam could eat freely of any tree in the garden—including the tree of life—*except* the tree of the knowledge of good and evil. When Eve was tempted by the serpent, she said the tree whose fruit they were commanded not to eat was “the tree which is in the midst of the garden” (Gen. 3:3). But Genesis 2:9 says that the tree of life *and* the tree of the knowledge

of
good
and
evil
were
both
“in
the
midst
of
the
garden.”
Eve
so
confused
the
command
that
she
didn’t
know
which
tree
was
actually
the
forbidden
one.
She
had
not
been
feeding
where
she
should
—on
the
tree
of

life
—
and
thus
was
not
being
nurtured
by
the
source
of
life
—
Jesus
Christ;
her
spirit
had
become
weak
and
vulnerable
to
delusion.
Don’t
make
the
same
mistake
—
make
certain
you
are
feeding
daily
on
the
character

and life that can be found in our relationship with our Savior, Jesus Christ.*

---

* John Sandford and R. Loren Sandford, *Life Transformed*, 80–81, 86–87.

17These *were* the sons of Reuel, Esau’s son: Chief Nahath, Chief Zerah, Chief Shammah, and Chief Mizzah. These *were* the chiefs of Reuel in the land of Edom. These *were* the sons of Basemath, Esau’s wife.

18And these *were* the sons of *Aholibamah, Esau’s wife: Chief Jeush, Chief Jaalam, and Chief Korah. These *were* the chiefs *who descended* from Aholibamah, Esau’s wife, the daughter of Anah.

19These *were* the sons of Esau, who is Edom, and these *were* their chiefs.

The Sons of Seir

20[a]These *were* the sons of Seir [b]the Horite who inhabited the land: Lotan, Shobal, Zibeon, Anah, 21Dishon, Ezer, and Dishan. These *were* the chiefs of the Horites, the sons of Seir, in the land of Edom.

22And the sons of Lotan were Hori and [*]Hemam. Lotan's sister *was* Timna.

23These *were* the sons of Shobal: [*]Alvan, Manahath, Ebal, [*]Shepho, and Onam.

24These *were* the sons of Zibeon: both Ajah and Anah. This *was the* Anah who found the [*]water in the wilderness as he pastured [a]the donkeys of his father Zibeon. 25These *were* the children of Anah: Dishon and [*]Aholibamah the daughter of Anah.

26These *were* the sons of [*]Dishon:[*]Hemdan, Eshban, Ithran, and Cheran. 27These *were* the sons of Ezer: Bilhan, Zaavan, and [*]Akan. 28These *were* the sons of Dishan: [a]Uz and Aran.

29These *were* the chiefs of the Horites: Chief Lotan, Chief Shobal, Chief Zibeon, Chief Anah, 30Chief Dishon, Chief Ezer, and Chief Dishan. These *were* the chiefs of the Horites, according to their chiefs in the land of Seir.

The Kings of Edom

31[a]Now these *were* the kings who reigned in the land of Edom before any king reigned over the children of Israel: 32Bela the son of Beor reigned in Edom, and the name of his city *was* Dinhabah. 33And when Bela died, Jobab the son of Zerah of Bozrah reigned in his place. 34When Jobab died, Husham of the land of the Temanites reigned in his place. 35And when Husham died, Hadad the son of Bedad, who attacked Midian in the field of Moab, reigned in his place. And the name of his city *was* Avith. 36When Hadad died, Samlah of Masrekah reigned in his place. 37And when Samlah died, Saul of [a]Rehoboth-*by*-the-River reigned in his place. 38When Saul died, Baal-Hanan the son of Achbor reigned in his place. 39And when Baal-Hanan the son of Achbor died, [*]Hadar reigned in his place; and the name of his city *was* [*]Pau. His wife's name *was* Mehetabel, the daughter of Matred, the daughter of Mezahab.

The Chiefs of Esau

40And these *were* the names of the chiefs of Esau, according to their families and their places, by their names: Chief Timnah, Chief [*]Alvah, Chief Jetheth, 41Chief [*]Aholibamah, Chief Elah, Chief Pinon, 42Chief Kenaz, Chief Teman, Chief Mibzar, 43Chief Magdiel, and Chief Iram. These *were* the chiefs of Edom, a1ccording to their dwelling places in the land of their possession. Esau *was* the father of [*]the Edomites.

Genesis 37

Joseph Dreams of Greatness

1Now Jacob dwelt in the land [a]where his father was a [*]stranger, in the land of Canaan. 2This *is* the history of Jacob.

Joseph, *being* seventeen years old, was feeding the flock with his brothers. And the lad *was* with the sons of Bilhah and the sons of Zilpah, his father's wives; and Joseph brought a [a]bad report of them to his father.

3Now Israel loved Joseph more than all his children, because he *was* [a]the son of his old age. Also he [b]made him a tunic of *many* colors. 4But when his brothers saw that their father loved him more than all his brothers, they [a]hated him and could not speak peaceably to him.

5Now Joseph had a dream, and he told *it* to his brothers; and they hated him even more. 6So he said to them, "Please hear this dream which I have dreamed: 7[a]There we were, binding sheaves in the field. Then behold, my sheaf arose and also stood upright; and indeed your sheaves stood all around and bowed down to my sheaf."

8And his brothers said to him, "Shall you indeed reign over us? Or shall you indeed have dominion over us?" So they hated him even more for his dreams and for his words.

9Then he dreamed still another dream and told it to his brothers, and said, “Look, I have dreamed another dream. And this time, [a]the sun, the moon, and the eleven stars bowed down to me.”

10So he told *it* to his father and his brothers; and his father rebuked him and said to him, “What *is* this dream that you have dreamed? Shall your mother and I and [a]your brothers indeed come to bow down to the earth before you?” 11And [a]his brothers envied him, but his father [b]kept the matter *in mind.*

Joseph Sold by His Brothers

12Then his brothers went to feed their father’s flock in Shechem. 13And Israel said to Joseph, “Are not your brothers feeding *the flock* in [a]Shechem? Come, I will send you to them.”

So he said to him, “Here I am.”

14Then he said to him, “Please go and see if it is well with your brothers and well with the flocks, and bring back word to me.” So he sent him out of the Valley of [a]Hebron, and he went to Shechem.

15Now a certain man found him, and there he was, wandering in the field. And the man asked him, saying, “What are you seeking?”

16So he said, “I am seeking my brothers. [a]Please tell me where they are feeding *their flocks.*”

17And the man said, “They have departed from here, for I heard them say, ‘Let us go to Dothan.’ ” So Joseph went after his brothers and found them in [a]Dothan.

18Now when they saw him afar off, even before he came near them, [a]they conspired against him to kill him. 19Then they said to one another, “Look, this [*]dreamer is coming! 20[a]Come therefore, let us now kill him and cast him into some pit; and we shall say, ‘Some wild beast has devoured him.’ We shall see what will become of his dreams!”

21But [a]Reuben heard *it,* and he delivered him out of their hands, and said, “Let us not kill him.” 22And Reuben said to them, “Shed no blood, *but* cast him into this pit which *is* in the wilderness, and do not lay a hand on him”—that he might deliver him out of their hands, and bring him back to his father.

23So it came to pass, when Joseph had come to his brothers, that they [a]stripped Joseph *of* his tunic, the tunic of *many* colors that *was* on him. 24Then they took him and cast him into a pit. And the pit *was* empty; *there was* no water in it.

25[a]And they sat down to eat a meal. Then they lifted their eyes and looked, and there was a company of [b]Ishmaelites, coming from Gilead with their camels, bearing spices, [c]balm, and myrrh, on their way to carry *them* down to Egypt. 26So Judah said to his brothers, “What profit *is there* if we kill our brother and [a]conceal his blood? 27Come and let us sell him to the Ishmaelites, and [a]let not our hand be upon him, for he *is* [b]our brother *and* [c]our flesh.” And his brothers listened. 28Then [a]Midianite traders passed by; so *the brothers* pulled Joseph up and lifted him out of the pit, [b]and sold him to the Ishmaelites for [c]twenty *shekels* of silver. And they took Joseph to Egypt.

29Then Reuben returned to the pit, and indeed Joseph *was* not in the pit; and he [a]tore his clothes. 30And he returned to his brothers and said, “The lad [a]*is* no *more;* and I, where shall I go?”

31So they took [a]Joseph’s tunic, killed a kid of the goats, and dipped the tunic in the blood. 32Then they sent the tunic of *many* colors, and they brought *it* to their father and said, “We have found this. Do you know whether it *is* your son’s tunic or not?”

33And he recognized it and said, “*It is* my son’s tunic. A [a]wild beast has devoured him. Without doubt Joseph is torn to pieces.” 34Then Jacob [a]tore his clothes, put sackcloth on his waist, and [b]mourned for his son many days. 35And all his sons and all his daughters [a]arose to comfort him; but he refused to be comforted, and he said, “For [b]I shall go down into the grave to my son in mourning.” Thus his father wept for him.

36Now [a]the [*]Midianites had sold him in Egypt to
Potiphar, an officer of Pharaoh *and* captain of the
guard.

Genesis 38

Judah and Tamar

1It came to pass at that time that Judah departed
from his brothers, and [a]visited a certain Adullamite
whose name *was* Hirah. 2And Judah [a]saw there a
daughter of a certain Canaanite whose name *was*
[b]Shua, and he married her and went in to her. 3So she
conceived and bore a son, and he called his name [a]Er.
4She conceived again and bore a son, and she called
his name [a]Onan. 5And she conceived yet again and
bore a son, and called his name [a]Shelah. He was at
Chezib when she bore him.

6Then Judah [a]took a wife for Er his firstborn, and
her name *was* [b]Tamar. 7But [a]Er, Judah's firstborn, was
wicked in the sight of the LORD, [b]and the LORD killed
him. 8And Judah said to Onan, "Go in to [a]your
brother's wife and marry her, and raise up an heir to
your brother." 9But Onan knew that the heir would
not be [a]his; and it came to pass, when he went in to
his brother's wife, that he emitted on the ground, lest
he should give an heir to his brother. 10And the thing
which he did [*]displeased the LORD; therefore He
killed [a]him also.

11Then Judah said to Tamar his daughter-in-law,
[a]"Remain a widow in your father's house till my son
Shelah is grown." For1 he said, "Lest he also die like
his brothers." And Tamar went and dwelt [b]in her
father's house.

12Now in the process of time the daughter of Shua,
Judah's wife, died; and Judah [a]was comforted, and
went up to his sheepshearers at Timnah, he and his
friend Hirah the Adullamite. 13And it was told Tamar,
saying, "Look, your father-in-law is going up [a]to
Timnah to shear his sheep." 14So she took off her
widow's garments, covered *herself* with a veil and
wrapped herself, and [a]sat in an open place which *was*

on the way to Timnah; for she saw [b]that Shelah was grown, and she was not given to him as a wife. 15When Judah saw her, he thought she *was* a harlot, because she had covered her face. 16Then he turned to her by the way, and said, “Please let me come in to you”; for he did not know that she *was* his daughter-in-law.

So she said, “What will you give me, that you may come in to me?”

17And he said, [a]“I will send a young goat from the flock.”

So she said, [b]“Will you give *me* a pledge till you send *it?*”

18Then he said, “What pledge shall I give you?”

So she said, [a]“Your signet and cord, and your staff that *is* in your hand.” Then he gave *them* to her, and went in to her, and she conceived by him. 19So she arose and went away, and [a]laid aside her veil and put on the garments of her widowhood.

20And Judah sent the young goat by the hand of his friend the Adullamite, to receive *his* pledge from the woman’s hand, but he did not find her. 21Then he asked the men of that place, saying, “Where is the harlot who *was* [*]openly by the roadside?”

And they said, “There was no harlot in this *place.*”

22So he returned to Judah and said, “I cannot find her. Also, the men of the place said there was no harlot in this *place.*”

23Then Judah said, “Let her take *them* for herself, lest we be shamed; for I sent this young goat and you have not found her.”

24And it came to pass, about three months after, that Judah was told, saying, “Tamar your daughter-in-law has [a]played the harlot; furthermore she *is* [*]with child by harlotry.”

So Judah said, “Bring her out [b]and let her be burned!”

25When she *was* brought out, she sent to her father-in-law, saying, “By the man to whom these belong, I *am* with child.” And she said, [a]“Please determine whose these *are*—the signet and cord, and staff.”

26So Judah [a]acknowledged *them* and said, [b]“She has been more righteous than I, because [c]I did not give her to Shelah my son.” And he [d]never knew her again.

27Now it came to pass, at the time for giving birth, that behold, twins *were* in her womb. 28And so it was, when she was giving birth, that *the one* put out *his* hand; and the midwife took a scarlet *thread* and bound it on his hand, saying, “This one came out first.” 29Then it happened, as he drew back his hand, that his brother came out unexpectedly; and she said, “How did you break through? *This* breach *be* upon you!” Therefore his name was called [a]Perez.[*]30Afterward his brother came out who had the scarlet *thread* on his hand. And his name was called [a]Zerah.

Genesis 39

Joseph a Slave in Egypt

1Now Joseph had been taken [a]down to Egypt. And [b]Potiphar, an officer of Pharaoh, captain of the guard, an Egyptian, [c]bought him from the Ishmaelites who had taken him down there. 2[a]The LORD was with Joseph, and he was a successful man; and he was in the house of his master the Egyptian. 3And his master saw that the LORD *was* with him and that t1he LORD [a]made all he did [*]to prosper in his hand. 4So Joseph [a]found favor in his sight, and served him. Then he made him [b]overseer of his house, and all *that* he had he put [*]under his authority. 5So it was, from the time *that* he had made him overseer of his house and all that he had, that [a]the LORD blessed the Egyptian’s house for Joseph’s sake; and the blessing of the LORD was on all that he had in the house and in the field. 6Thus he left all that he had in Joseph’s [*]hand, and he did not know what he had except for the [*]bread which he ate.

Now Joseph [a]was handsome in form and appearance.

7And it came to pass after these things that his master’s wife [*]cast longing eyes on Joseph, and she said, [a]“Lie with me.”

[8]But he refused and said to his master’s wife, “Look, my master does not know what *is* with me in the house, and he has committed all that he has to my hand. [9]*There is* no one greater in this house than I, nor has he kept back anything from me but you, because you *are* his wife. [a]How then can I do this great wickedness, and [b]sin against God?”

[10]So it was, as she spoke to Joseph day by day, that he [a]did not heed her, to lie with her *or* to be with her.

[11]But it happened about this time, when Joseph went into the house to do his work, and none of the men of the house *was* inside, [12]that she [a]caught him by his garment, saying, “Lie with me.” But he left his garment in her hand, and fled and ran outside. [13]And so it was, when she saw that he had left his garment in her hand and fled outside, [14]that she called to the men of her house and spoke to them, saying, “See, he has brought in to us a [a]Hebrew to [1][*]mock us. He came in to me to lie with me, and I cried out with a loud voice. [15]And it happened, when he heard that I lifted my voice and cried out, that he left his garment with me, and fled and went outside.”

[16]So she kept his garment with her until his master came home. [17]Then she [a]spoke to him with words like these, saying, “The Hebrew servant whom you brought to us came in to me to mock me; [18]so it happened, as I lifted my voice and cried out, that he left his garment with me and fled outside.”

[19]So it was, when his master heard the words which his wife spoke to him, saying, “Your servant did to me after this manner,” that his [a]anger was aroused. [20]Then Joseph’s master took him and [a]put him into the [b]prison, a place where the king’s prisoners *were* confined. And he was there in the prison. [21]But the LORD was with Joseph and showed him mercy, and He [a]gave[*] him favor in the sight of the keeper of the prison. [22]And the keeper of the prison [a]committed to Joseph’s hand all the prisoners who *were* in the

prison; whatever they did there, it was his doing. 23The keeper of the prison did not look into anything *that was* under [*]*Joseph’s* authority, because the [a]LORD was with him; and whatever he did, the LORD made *it* prosper.

Genesis 40

The Prisoners’ Dreams

1It came to pass after these things *that* the [a]butler and the baker of the king of Egypt offended their lord, the king of Egypt. 2And Pharaoh was [a]angry with his two officers, the chief butler and the chief baker. 3[a]So he put them in custody in the house of the captain of the guard, in the prison, the place where Joseph *was* confined. 4An1d the captain of the guard charged Joseph with them, and he served them; so they were in custody for a while.

5Then the butler and the baker of the king of Egypt, who *were* confined in the prison, [a]had a dream, both of them, each man’s dream in one night *and* each man’s dream with its *own* interpretation. 6And Joseph came in to them in the morning and looked at them, and saw that they *were* [*]sad. 7So he asked Pharaoh’s officers who *were* with him in the custody of his lord’s house, saying, [a]“Why do you look *so* sad today?”

8And they said to him, [a]“We each have had a dream, and *there is* no interpreter of it.”

So Joseph said to them, [b]“Do not interpretations belong to God? Tell *them* to me, please.”

9Then the chief butler told his dream to Joseph, and said to him, “Behold, in my dream a vine *was* before me, 10and in the vine *were* three branches; it *was* as though it budded, its blossoms shot forth, and its clusters brought forth ripe grapes. 11Then Pharaoh’s cup *was* in my hand; and I took the grapes and pressed them into Pharaoh’s cup, and placed the cup in Pharaoh’s hand.”

12And Joseph said to him, [a]“This *is* the interpretation of it: The three branches [b]*are* three days. 13Now within three days Pharaoh will [a]lift up your head and restore you to your [*]place, and you will put Pharaoh's cup in his hand according to the former manner, when you were his butler. 14But [a]remember me when it is well with you, and [b]please show kindness to me; make mention of me to Pharaoh, and get me out of this house. 15For indeed I was [a]stolen away from the land of the Hebrews; [b]and also I have done nothing here that they should put me into the dungeon."

16When the chief baker saw that the interpretation was good, he said to Joseph, "I also *was* in my dream, and there *were*1 three [*]white baskets on my head. 17In the uppermost basket *were* all kinds of baked goods for Pharaoh, and the birds ate them out of the basket on my head."

18So Joseph answered and said, [a]"This *is* the interpretation of it: The three baskets *are* three days. 19[a]Within three days Pharaoh will lift [*]off your head from you and [b]hang you on a tree; and the birds will eat your flesh from you."

20Now it came to pass on the third day, *which was* Pharaoh's [a]birthday, that he [b]made a feast for all his servants; and he [c]lifted up the head of the chief butler and of the chief baker among his servants. 21Then he [a]restored the chief butler to his butlership again, and [b]he placed the cup in Pharaoh's hand. 22But he [a]hanged the chief baker, as Joseph had interpreted to them. 23Yet the chief butler did not remember Joseph, but [a]forgot him.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

How Do We Feed on

Jesus, Our Tree of Life?

Eve fell into sin and error because she had not been feeding on the tree of life. From that error we inherit our root tendency to feed everywhere else other than on Jesus! Who

has
not
battled
to
keep
his
mind
on
track
during
morning
devotions?
Who
has
not
struggled
to
stay
awake
while
reading
the
Bible?
Who
has
not
found
his
mind
wandering
while
listening
to
good
sermons?
Where
did
that
troublesome
rut

come
from?
In
Eve’s
(and
Adam’s)
wandering
to
everything
other
than
the
tree
of
life,
of
course.
That
mistake
set
the
mold
for
our
minds
to
follow
from
then
on.
How
can
we
get
free
from
it?
Prayer.

Lord,

crucify
my
habit
of
wandering
everywhere
else
but
to
You.
Teach
my
heart
anew
to
center
in
You.
Fasten
my
mind
to
feed
on
the
tree
of
life,
my
Lord
Jesus
Christ.

We
may
have
to
say
that
prayer

dozens of times before our minds take hold of it in earnest. But it is the secret to staying free of Satan’s 1snares.[*]

---

[*] John Sandford and R. Loren Sandford, *Life Transformed*, 87.

Genesis 41

Pharaoh’s Dreams

1Then it came to pass, at the end of two full years, that [a]Pharaoh had a dream; and behold, he stood by the river. 2Suddenly there came up out of the river seven cows, fine looking and fat; and they fed in the meadow. 3Then behold, seven other cows came up after them out of the river, ugly and gaunt, and stood by the *other* cows on the bank of the river. 4And the ugly and gaunt cows ate up the seven fine looking and fat cows. So Pharaoh awoke. 5He slept and dreamed a second time; and suddenly seven heads of grain came up on one stalk, plump and good. 6Then behold, seven thin heads, blighted by the [a]east wind, sprang up after them. 7And the seven thin heads devoured the seven plump and full heads. So Pharaoh awoke, and indeed, *it was* a dream. 8Now it came to pass in the morning [a]that his spirit was troubled, and he sent and called for all [b]the magicians of Egypt and all its [c]wise men. And Pharaoh told them his dreams, but *there was* no one who could interpret them for Pharaoh.

9Then the [a]chief butler spoke to Pharaoh, saying: "I remember my faults this day. 10When Pharaoh was [a]angry with his servants, [b]and put me in custody in the house of the captain of the guard, *both* me and the chief baker, 11[a]we each had a dream in one night, he and I. Each of us dreamed according to the interpretation of his *own* dream. 12Now there *was* a young [a]Hebrew man with us there, a [b]servant of the captain of the guar1d. And we told him, and he [c]interpreted our dreams for us; to each man he interpreted according to his *own* dream. 13And it came to pass, just [a]as he interpreted for us, so it happened. He restored me to my office, and he hanged him."

14[a]Then Pharaoh sent and called Joseph, and they [b]brought him quickly [c]out of the dungeon; and he shaved, [d]changed his clothing, and came to Pharaoh. 15And Pharaoh said to Joseph, "I have had a dream, and *there is* no one who can interpret it. [a]But I have heard it said of you *that* you can understand a dream, to interpret it."

16So Joseph answered Pharaoh, saying, [a]"*It is* not in me; [b]God will give Pharaoh an answer of peace."

17Then Pharaoh said to Joseph: “Behold, [a]in my dream I stood on the bank of the river. 18Suddenly seven cows came up out of the river, fine looking and fat; and they fed in the meadow. 19Then behold, seven other cows came up after them, poor and very ugly and gaunt, such ugliness as I have never seen in all the land of Egypt. 20And the gaunt and ugly cows ate up the first seven, the fat cows. 21When they had eaten them up, no one would have known that they had eaten them, for they *were* just as ugly as at the beginning. So I awoke. 22Also I saw in my dream, and suddenly seven *heads came up on one stalk, full and good. 23Then behold, seven heads, withered, thin, *and* blighted by the east wind, sprang up after them. 24And the thin heads devoured the seven good heads. So [a]I told *this* to the magicians, but *there was* no one who could explain *it* to me.”

25Then Joseph said to Pharaoh, “The dreams of Pharaoh *are* one; [a]God has shown Pharaoh what He *is* about to do: 26The seven good cows *are* seven years, and the seven good *heads *are* seven years; the dreams *are one. 27And the seven thin and ugly cows which came up after them are seven years, and the seven empty heads blighted by the east wind are [a]seven years of famine. 28[a]This is the thing which I have spoken to Pharaoh. God has shown Pharaoh what He is about to do. 29Indeed [a]seven years of great plenty will come throughout all the land of Egypt; 30but after them seven years of famine will [a]arise, and all the plenty will be forgotten in the land of Egypt; and the famine [b]will deplete the land. 31So the plenty will not be known in the land because of the famine following, for it will be very severe. 32And the dream was repeated to Pharaoh twice because the [a]thing is established by God, and God will shortly bring it to pass.*

33“Now therefore, let Pharaoh select a discerning and wise man, and set him over the land of Egypt. 34Let Pharaoh do *this,* and let him appoint *officers over the land, [a]to collect one-fifth *of the produce* of the land of Egypt in the seven plentiful years. 35And [a]let them gather all the food of those good years that are coming, and store up grain under the [*]authority of Pharaoh, and let them keep food in the cities. 36Then that food shall be as a [*]reserve for the land for the seven years of famine which shall be in the land of Egypt, that the land [a]may not [*]perish during the famine.”

Joseph’s Rise to Power

37So [a]the advice was good in the eyes of Pharaoh and in the eyes of all his servants. 38And Pharaoh said to his servants, “Can we find *such a one* as this, a man [a]in whom *is* the Spirit of God?”

39Then Pharaoh said to Joseph, “Inasmuch as God has shown you all this, *there is* no one as discerning and1 wise as you. 40[a]You shall be [*]over my house, and all my people shall be ruled according to your word; only in regard to the throne will I be greater than you.” 41And Pharaoh said to Joseph, “See, I have [a]set you over all the land of Egypt.”

42Then Pharaoh [a]took his signet ring off his hand and put it on Joseph’s hand; and he [b]clothed him in garments of fine linen [c]and put a gold chain around his neck. 43And he had him ride in the second [a]chariot which he had; [b]and they cried out before him, “Bow the knee!” So he set him [c]over all the land of Egypt. 44Pharaoh also said to Joseph, “I *am* Pharaoh, and without your consent no man may lift his hand or foot in all the land of Egypt.” 45And Pharaoh called Joseph’s name [*]Zaphnath-Paaneah. And he gave him as a wife [a]Asenath, the daughter of Poti-Pherah priest of On. So Joseph went out over *all* the land of Egypt.

46Joseph was thirty years old when he [a]stood before Pharaoh king of Egypt. And Joseph went out from the presence of Pharaoh, and went throughout all the land of Egypt. 47Now in the seven plentiful years the ground brought forth [*]abundantly. 48So he gathered up all the food of the seven years which were in the land of Egypt, and laid up the food in the cities; he laid up in every city the food of the fields which surrounded them. 49Joseph gathered very much grain,

[a]as the sand of the sea, until he stopped counting, for *it was* immeasurable.

50[a]And to Joseph were born two sons before the years of famine came, whom Asenath, the daughter of Poti-Pherah priest of On, bore to him. 51Joseph called the name of the firstborn *Manasseh: “For God has made me forget all my toil and all my [a]father’s house.” 52And the name of the second he called *Ephraim: “For God has caused me to be [a]fruitful in the land of my affliction.”

53Then the seven years of plenty which were in the land of Egypt ended, 54[a]and the seven years of famine began to come, [b]as Joseph had said. The famine was in all lands, but in all the land of Egypt there was bread. 55So when all the land of Egypt was famished, the people cried to Pharaoh for bread. Then Pharaoh said to all the Egyptians, “Go to Joseph; [a]whatever he says to you, do.” 56The famine was over all the face of the earth, and Joseph opened *all the storehouses and [a]sold to the Egyptians. And the famine became severe in the land of Egypt. 57[a]So all countries came to Joseph in Egypt to [b]buy *grain,* because the famine was severe in all lands.

Genesis 42

Joseph’s Brothers Go to Egypt

1When [a]Jacob saw that there was grain in Egypt, Jacob said to his sons, “Why do you look at one another?” 2And he said, “Indeed I have heard that there is grain in Egypt; go down to that place and buy for us there, that we may [a]live and not die.”

3So Joseph’s ten brothers went down to buy grain in Egypt. 4But Jacob did not send Joseph’s brother Benjamin with his brothers, for he said, [a]“Lest some calamity befall him.” 5And the sons of Israel went to buy *grain* among those who journeyed, for the famine was [a]in the land of Canaan.

6Now Joseph *was* governor [a]over the land; and it was he who sold to all the people of the land. And Joseph’s brothers came and [b]bowed down before him with *their* faces to the earth. 7Joseph saw his brothers and recognized them, but he acted as [a]a stranger to them and spoke [*]roughly to them. Then he said to them, “Where do you come from?”

And they said, “From the land of Canaan to buy food.”

8So Joseph recognized his brothers, but they did not recognize him. 9Then Joseph [a]remembered the dreams which he had dreamed about them, and said to them, “You *are* spies! You have come to see the [*]nakedness of the land!”

10And they said to him, “No, my lord, but your servants have come to buy food. 11We *are* all one man’s sons; we *are* honest *men;* your servants are not spies.”

12But he said to them, “No, but you have come to see the nakedness of the land.”

13And they said, “Your servants *are* twelve brothers, the sons of one man in the land of Canaan; and in fact, the youngest *is* with our father today, and one [a]*is* no more.”

14But Joseph said to them, “It *is* as I spoke to you, saying, ‘You *are* spies!’ 15In this *manner* you shall be tested: [a]By the life of Pharaoh, you shall not leave this place unless your youngest brother comes here. 16Send one of you, and let him bring your brother; and you shall be [*]kept in prison, that your words may be tested to see whether *there is* any truth in you; or else, by the life of Pharaoh, surely you *are* spies!” 17So he [*]put them all together in prison [a]three days.

18Then Joseph said to them the third day, “Do this and live, [a]*for* I fear God: 19If you *are* honest *men,* let one of your brothers be confined to your prison house; but you, go and carry grain for the famine of your houses. 20And bring your young[a]est brother to me; so your words will be verified, and you shall not die.”

And they did so. 21Then they said to one another, [a]“We *are* truly guilty concerning our brother, for we saw the anguish of his soul when he pleaded with us, and we would not hear; [b]therefore this distress has come upon us.”

22And Reuben answered them, saying, [a]“Did I not speak to you, saying, ‘Do not sin against the boy’; and you would not listen? Therefore behold, his blood is now [b]required of us.” 23But they did not know that Joseph understood *them,* for he spoke to them through an interpreter. 24And he turned himself away from them and [a]wept. Then he returned to them again, and talked with them. And he took [b]Simeon from them and bound him before their eyes.

The Brothers Return to Canaan

25Then Joseph [a]gave a command to fill their sacks with grain, to [b]restore every man’s money to his sack, and to give them provisions for the journey. [c]Thus he did for them. 26So they loaded their donkeys with the grain and departed from there. 27But as [a]one *of them* opened his sack to give his donkey feed at the encampment, he saw his money; and there it was, in the mouth of his sack. 28So he said to his brothers, “My money has been restored, and there it is, in my sack!” Then their hearts [*]failed *them* and they were afraid, saying to one another, “What *is* this *that* God has done to us?”

29Then they went to Jacob their father in the land of Canaan and told him all that had happened to them, saying: 30“The man *who is* lord of the land [a]spoke [*]roughly to us, and took us for spies of the country. 31But we said to him, ‘We *are* honest *men;* we are not spies. 32We *are* twelve brothers, sons of our father; one *is* no *more,* and the youngest *is* with our father this day in the land of Canaan.’ 33Then the man, the lord of the country, said to us, [a]â˜y this I will know that you *are* honest *men:* Leave one of your brothers *here* with me, take *food for* the famine of your households, and be gone. 34And bring your [a]youngest brother to me; so I shall know that you *are* not spies, but *that* you *are* honest *men.* I will grant your brother to you, and you may [b]trade in the land.â™â/p>

35Then it happened as they emptied their sacks, that surprisingly [a]each manâ™ bundle of money *was* in his sack; and when they and their father saw the bundles of money, they were afraid. 36And Jacob their father said to them, âœou have [a]bereaved me: Joseph is no *more,* Simeon is no *more,* and you want to take [b]Benjamin. All these things are against me.â/p>

37Then Reuben spoke to his father, saying, âœill my two sons if I do not bring him *back* to you; put him in my hands, and I will bring him back to you.â/p>

38But he said, âœey son shall not go down with you, for [a]his brother is dead, and he is left alone. [b]If any calamity should befall him along the way in which you go, then you would [c]bring down my gray hair with sorrow to the grave.â/p>

Genesis 43

Josephâ™ Brothers Return with Benjamin

1Now the famine *was* [a]severe in the land. 2And it came to pass, when they had eaten up the grain which they had brought from Egypt, that their father said to them, âœo [a]back, buy us a little food.â/p>

3But Judah spoke to him, saying, âœhe man solemnly warned us, saying, â˜ou shall not see my face unless your [a]brother *is* with you.â™4If you send our brother with us, we will go down and buy you food. 5But if you will not send *him,* we will not go down; for the man said to us, â˜ou shall not see my face unless your brother *is* with you.â™â/p>

6And Israel said, âœhy did you deal *so* [*]wrongfully with me *as* to tell the man whether you had still *another* brother?â/p>

7But they said, âœhe man asked us pointedly about ourselves and our family, saying, â˜i>Is your father still alive? Have you *another* brother?â™And we told him according to these words. Could we possibly have known that he would say, â˜ring your brother downâ™â/p>

8Then Judah said to Israel his father, âœend the lad with me, and we will arise and go, that we may [a]live and not die, both we and you *and* also our little ones.

9I myself will be surety for him; from my hand you shall require him. [a]If I do not bring him *back* to you and set him before you, then let me bear the blame forever. 10For if we had not lingered, surely by now we would have returned this second time.â/p>

11And their father Israel said to them, âœf *it must be* so, then do this: Take some of the best fruits of the land in your vessels and [a]carry down a present for the manâ” little [b]balm and a little honey, spices and myrrh, pistachio nuts and almonds. 12Take double money in your hand, and take back in your hand the money [a]that was returned in the mouth of your sacks; perhaps it was an oversight. 13Take your brother also, and arise, go back to the man. 14And may God [a]Almighty [b]give you mercy before the man, that he may release your other brother and Benjamin. [c]If I am bereaved, I am bereaved!â/p>

15So the men took that present and Benjamin, and they took double money in their hand, and arose and went [a]down to Egypt; and they stood before Joseph. 16When Joseph saw Benjamin with them, he said to the [a]steward of his house, âœake *these* men to my home, and slaughter [*]an animal and make ready; for *these* men will dine with me at noon.â17Then the man did as Joseph ordered, and the man brought the men into Josephâ™ house.

18Now the men were [a]afraid because they were brought into Josephâ™ house; and they said, âœi>It is because of the money, which was returned in our sacks the first time, that we are brought in, so that he may [*]make a case against us and seize us, to take us as slaves with our donkeys.”

19When they drew near to the steward of Joseph’s house, they talked with him at the door of the house, 20and said, “O sir, [a]we indeed came down the first time to buy food; 21but [a]it happened, when we came to the encampment, that we opened our sacks, and there, *each* man’s money *was* in the mouth of his sack, our money in full weight; so we have brought it back in our hand. 22And we have brought down other money in our hands to buy food. We do not know who put our money in our sacks.”

23But he said, “Peace *be* with you, do not be afraid. Your God and the God of your father has given you treasure in your sacks; I had your money.” Then he brought [a]Simeon out to them.

24So the man brought the men into Joseph’s house and [a]gave *them* water, and they washed their feet; and he gave their donkeys feed. 25Then they made the present ready for Joseph’s coming at noon, for they heard that they would eat bread there.

26And when Joseph came home, they brought him the present which *was* in their hand into the house, and [a]bowed down before him to the earth. 27Then he asked them about *their* well-being, and said, “*Is* your father well, the old man [a]of whom you spoke? *Is* he still alive?”

28And they answered, “Your servant our father *is* in good health; he *is* still alive.” [a]And they bowed their heads down and prostrated themselves.

29Then he lifted his eyes and saw his brother Benjamin, [a]his mother’s son, and said, “*Is* this your younger brother [b]of whom you spoke to me?” And he said, “God be gracious to you, my son.” 30Now [a]his heart yearned for his brother; so Joseph made haste and sought *somewhere* to weep. And he went into *his* chamber and [b]wept t1here. 31Then he washed his face and came out; and he restrained himself, and said, “Serve the [a]bread.”

32So they set him a place by himself, and them by themselves, and the Egyptians who ate with him by themselves; because the Egyptians could not eat food with the [a]Hebrews, for that *is* [b]an abomination to the Egyptians. 33And they sat before him, the firstborn according to his [a]birthright and the youngest according to his youth; and the men looked in astonishment at one another. 34Then he took servings to them from before him, but Benjamin’s serving was [a]five times as much as any of theirs. So they drank and were merry with him.

Genesis 44

Joseph's Cup

1And he commanded [*]the [a]steward of his house, saying, [b]"Fill the men's sacks with food, as much as they can carry, and put each man's money in the mouth of his sack. 2Also put my cup, the silver cup, in the mouth of the sack of the youngest, and his grain money." So he did according to the word that Joseph had spoken. 3As soon as the morning dawned, the men were sent away, they and their donkeys. 4When they had gone out of the city, *and* were not *yet* far off, Joseph said to his steward, "Get up, follow the men; and when you overtake them, say to them, 'Why have you [a]repaid evil for good? 5*Is* not this *the one* from which my lord drinks, and with which he indeed practices divination? You have done evil in so doing.' "

6So he overtook them, and he spoke to them these same words. 7And they said to him, "Why does my lord say these words? Far be it from us that your servants should do such a thing. 8Look, we brought back to you from the land of Canaan [a]the money which we found in the mouth of our sacks. How then could we steal silver or gold from your lord's house? 9With whomever of your servants it is found, [a]let him die, and we also will be my lord's slaves."

10And he said, "Now also *let* it *be* according to your words; he with whom it is found shall be my slave, and you shall be blameless." 11Then each man speedily let down his sack to the ground, and each opened his sack. 12So he searched. He began with the oldest and [*]left off with the youngest; and the cup was found in Benjamin's sack. 13Then they [a]tore their clothes, and each man loaded his donkey and returned to the city.

14So Judah and his brothers came to Joseph's house, and he *was* still there; and they [a]fell before him on the ground. 15And Joseph said to them, "What deed *is* this you have done? Did you not know that such a man as I can certainly practice divination?”

16Then Judah said, “What shall we say to my lord? What shall we speak? Or how shall we clear ourselves? God has [a]found out the iniquity of your servants; here [b]we are, my lord’s slaves, both we and *he* also with whom the cup was found.”

17But he said, [a]“Far be it from me that I should do so; the man in whose hand the cup was found, he shall be my slave. And as for you, go up in peace to your father.”

Judah Intercedes for Benjamin

18Then Judah came near to him and said: “O my lord, please let your servant speak a word in my lord’s hearing, and [a]do not let your anger burn against your servant; for you *are* even like Pharaoh. 19My lord asked his servants, saying, ‘Have you a father or a brother?’ 20And we said to my lord, ‘We have a father, an old man, and [a]a child of *his* old age, *who is* young; his brother is [b]dead, and he [c]alone is left of his mother’s children, and his [d]father loves him.’ 21Then you said to your servants, [a]‘Bring him down to me, that I may set my eyes on him.’ 22And we said to my lord, [a]‘The lad cannot leave his father, for *if* he should leave his father, *his father* would[1] die.’ 23But you said to your servants, ‘Unless your youngest brother comes down with you, you shall see my face no more.’

24“So it was, when we went up to your servant my father, that we told him the words of my lord. 25And [a]our father said, ‘Go back *and* buy us a little food.’ 26But we said, ‘We cannot go down; if our youngest brother is with us, then we will go down; for we may not see the man’s face unless our youngest brother *is* with us.’ 27Then your servant my father said to us, ‘You know that [a]my wife bore me two sons; 28and the one went out from me, and I said, [a]“Surely he is torn to pieces”; and I have not seen him since. 29But if you [a]take this one also from me, and calamity befalls him, you shall bring down my gray hair with sorrow to the grave.’

30“Now therefore, when I come to your servant my father, and the lad *is* not with us, since [a]his life is bound up in the lad's life, [31]it will happen, when he sees that the lad *is* not *with us,* that he will die. So your servants will bring down the gray hair of your servant our father with sorrow to the grave. [32]For your servant became surety for the lad to my father, saying, [a]'If I do not bring him *back* to you, then I shall bear the blame before my father forever.' [33]Now therefore, please [a]let your servant remain instead of the lad as a slave to my lord, and let the lad go up with his brothers. [34]For how shall I go up to my father if the lad *is* not with me, lest perhaps I see the evil that would [*]come upon my father?"

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Steadiness and Faithfulness

Steadiness and faithfulness are absolute prerequisites for anyone who would mature in Christ. Ambivalence, what the Bible calls double-mindedness, is one of the strongest, most firmly founded conditions in our carnal flesh. We must win the war for the renewal of our minds on this battleground—or forget about vital and victorious faith. The answer could not be simpler. Simply pray:

> *Lord, let Your perfect love cast out my fear, for You did not give me a spirit of timidity again to fear but "of power and of love and of a sound mind" (2 Tim.*

1:7)! Lord, bring confusion and ambivalence to death on Your cross, for You are not the author of my ambivalence and confusion (1 Cor. 14:33).

That prayer may have to be reinforced many times, because we don’t want to let the prayer have full effect in us. But when prayer has settled the issue, our mind is kept in peace and rest by the Lord Himself.[*]

---

[*] John Sandford and R. Loren Sandford, *Life Transformed*, 93.

Genesis 45

Joseph Revealed to His Brothers

1Then Joseph could not restrain himself before all those who stood by him, and he cried out, “Make everyone go out from me!” So no one stood with him [a]while Joseph made himself known to his brothers. 2And he [a]wept aloud, and the Egyptians and the house of Pharaoh heard *it*.

3Then Joseph said to his brothers, [a]“I *am* Joseph; does my father still live?” But his brothers could not answer him, for they were dismayed in his presence. 4And Joseph said to his brothers, “Please come near to me.” So they came near. Then he said: “I *am* Joseph your brother, [a]whom you sold into Egypt. 5But now, do not therefore be grieved or angry with yourselves because you sold me here; [a]for God sent me before you to preserve life. 6For these two years the [a]famine *has been* in the land, and *there are* still five years in which *there will be* neither plowing nor harvesting. 7And God [a]sent me before you to preserve a [*]posterity for you in the earth, and to save your lives by a great deliverance. 8So now *it was* not you *who sent me here, but* [a]*God; and He has made me* [b]*a father to Pharaoh, and lord of all his house, and a* [c]*ruler throughout all the land of Egypt.*

9“Hurry and go up to my father, and say to him, ‘Thus says your son Joseph: “God has made me lord of all Egypt; come down to me, do not [*]tarry. 10[a]You shall dwell in the land of Goshen, and you shall be near to me, you and your children, your children’s children, your flocks and your herds, and all that you have. 11There I will [a]provide for you, lest you and your household, and all that you have, come to poverty; for *there are* still five years of famine.” ’

12“And behold, your eyes and the eyes of my brother Benjamin see that *it is* [a]my mouth that speaks to you. 13So you shall tell my father of all my glory in Egypt, and of all that you have seen; and you shall hurry and [a]bring my father down here.”

14Then he fell on his brother Benjamin's neck and wept, and Benjamin wept on his neck. 15Moreover he [a]kissed all his brothers and wept over them, and after that his brothers talked with him.

16Now the report of it was heard in Pharaoh's house, saying, "Joseph's brothers have come." So it pleased Pharaoh and his servants well. 17And Pharaoh said to Joseph, "Say to your brothers, 'Do this: Load your animals and depart; go to the land of Canaan. 18Bring your father and your households and come to me; I will give you the best of the land of Egypt, and you will eat [a]the [*]fat of the land. 19Now you are commanded—do this: Take carts out of the land of Egypt for your little ones and your wives; bring your father and come. 20Also do not be concerned about your goods, for the best of all the land of Egypt *is* yours.' "

21Then the sons of Israel did so; and Joseph gave them [a]carts, [*]according to the command of Pharaoh, and he gave them provisions for the journey. 22He gave to all of them, to each man, [a]changes of garments; but to Benjamin he gave three hundred *pieces* of silver and [b]five changes of garments. 23And he sent to his father these *things:* ten donkeys loaded with the good things of Egypt, and ten female donkeys loaded with grain, bread, and food for his father for the journey. 24So he sent his brothers away, and they departed; and he said to them, "See that you do not become troubled along the way."

25Then they went up out of Egypt, and came to the land of Canaan to Jacob their father. 26And they told him, saying, "Joseph *is* still alive, and he *is* governor over all the land of Egypt." [a]And Jacob's heart stood still, because he did not believe them. 27But when they told him all the words which Joseph had said to them, and when he saw the carts which Joseph had sent to carry him, the spirit [a]of Jacob their father revived. 28Then Israel said, "*It is* enough. Joseph my son *is* still alive. I will go and see him before I die."

Genesis 46

Jacob's Journey to Egypt

[1]So Israel took his journey with all that he had, and came to [a]Beersheba, and offered sacrifices [b]to the God of his father Isaac. [2]Then God spoke to Israel [a]in the visions of the night, and said, "Jacob, Jacob!"

And he said, "Here I am."

[3]So He said, "I *am* God, [a]the God of your father; do not fear to go down to Egypt, for I will [b]make of you a great nation there. [4][a]I will go down with you to Egypt, and I will also surely [b]bring you up *again;* and [c]Joseph [*]will put his hand on your eyes."

[5]Then [a]Jacob arose from Beersheba; and the sons of Israel c1arried their father Jacob, their little ones, and their wives, in the [*]carts [b]which Pharaoh had sent to carry him. [6]So they took their livestock and their goods, which they had acquired in the land of Canaan, and went to Egypt, [a]Jacob and all his descendants with him. [7]His sons and his sons' sons, his daughters and his sons' daughters, and all his descendants he brought with him to Egypt.

[8]Now [a]these *were* the names of the children of Israel, Jacob and his sons, who went to Egypt: [b]Reuben *was* Jacob's firstborn. [9]The [a]sons of Reuben *were* Hanoch, Pallu, Hezron, and Carmi. [10][a]The sons of Simeon *were* [*]Jemuel, Jamin, Ohad, [*]Jachin, [*]Zohar, and Shaul, the son of a Canaanite woman. [11]The sons of [a]Levi *were* Gershon, Kohath, and Merari. [12]The sons of [a]Judah *were* [b]Er, Onan, Shelah, Perez, and Zerah (but Er and Onan died in the land of Canaan). [c]The sons of Perez were Hezron and Hamul. [13]The sons of Issachar *were* Tola, [*]Puvah, [*]Job, and Shimron. [14]The [a]sons of Zebulun *were* Sered, Elon, and Jahleel. [15]These *were* the [a]sons of Leah, whom she bore to Jacob in Padan Aram, with his daughter Dinah. All the persons, his sons and his daughters, *were* thirty-three.

[16]The sons of Gad *were* [*]Ziphion, Haggi, Shuni, [*]Ezbon, Eri, [*]Arodi, and Areli. [17][a]The sons of Asher *were Jimnah, Ishuah, Isui, Beriah, and Serah, their sister.*

And the sons of Beriah were Heber and Malchiel. 18[a]*These were the sons of Zilpah,* [b]*whom Laban gave to Leah his daughter; and these she bore to Jacob: sixteen persons.*

19The [a]sons of Rachel, [b]Jacob's wife, *were* Joseph and Benjamin. 20[a]And to Joseph in the land of Egypt were born Manasseh and Ephraim, whom Asenath, the daughter of Poti-Pherah priest of On, bore to him. 21[a]The sons of Benjamin *were* Belah, Becher, Ashbel, Gera, Naaman, [b]Ehi, Rosh, [c]Muppim, [*]Huppim, and Ard. 22These *were* the sons of Rachel, who were born to Jacob: fourteen persons in all.

23The son of Dan *was* [*]Hushim. 24[a]The sons of Naphtali *were* [*]Jahzeel, Guni, Jezer, and [*]Shillem. 25[a]These *were* the sons of Bilhah, [b]whom Laban gave to Rachel his daughter, and she bore these to Jacob: seven persons in all.

26[a]All the persons who went with Jacob to Egypt, who came from his body, [b]besides Jacob's sons' wives, *were* sixty-six persons in all. 27And the sons of Joseph who were born to him in Egypt *were* two persons. [a]All the persons of the house of Jacob who went to Egypt were seventy.

Jacob Settles in Goshen

28Then he sent Judah before him to Joseph, [a]to point out before him *the way* to Goshen. And they came [b]to the land of Goshen. 29So Joseph made ready his [a]chariot and went up to Goshen to meet his father Israel; and he presented himself to him, and [b]fell on his neck and wept on his neck a good while.

30And Israel said to Joseph, [a]"Now let me die, since I have seen your face, because you *are* still alive."

31Then Joseph said to his brothers and to his father's household, [a]"I will go up and tell Pharaoh, and say to him, 'My brothers and those of my father's house, who *were* in the land of Canaan, have come to me. 32And the men *are* [a]shepherds, for their occupation has been to feed livestock; and they have brought their flocks, their herds, and all that they have.' 33So it shall be, when Pharaoh calls you and says, [a]'What is your [b]occupation?' 34that you shall say, ‘Your servants’ occupation has been with livestock [a]from our youth even till now, both we *and* also our fathers,’ that you may dwell in the land of Goshen; for every shepherd *is* [b]an[*] abomination to the Egyptians.”

Genesis 47

[1]Then Joseph [a]went and told Pharaoh, and said, “My father and my brothers, their flocks and their herds and all that they possess, have come from the land of Canaan; and indeed they *are* in [b]the land of Goshen.” [2]And he took five men from among his brothers and [a]presented them to Pharaoh. [3]Then Pharaoh said to his brothers, [a]“What *is* your occupation?”

And they said to Pharaoh, [b]“Your servants *are* shepherds, both we *and* also our fathers.” [4]And they said to Pharaoh, [a]“We have come to dwell in the land, because your servants have no pasture for their flocks, [b]for the famine *is* severe in the land of Canaan. Now therefore1, please let your servants [c]dwell in the land of Goshen.”

[5]Then Pharaoh spoke to Joseph, saying, “Your father and your brothers have come to you. [6][a]The land of Egypt *is* before you. Have your father and brothers dwell in the best of the land; let them dwell [b]in the land of Goshen. And if you know *any* competent men among them, then make them chief herdsmen over my livestock.”

[7]Then Joseph brought in his father Jacob and set him before Pharaoh; and Jacob [a]blessed Pharaoh. [8]Pharaoh said to Jacob, “How old *are* you?”

[9]And Jacob said to Pharaoh, [a]“The days of the years of my [*]pilgrimage *are* [b]one hundred and thirty years; [c]few and evil have been the days of the years of my life, and [d]they have not attained to the days of the years of the life of my fathers in the days of their pilgrimage.” [10]So Jacob [a]blessed Pharaoh, and went out from before Pharaoh.

[11]And Joseph situated his father and his brothers, and gave them a possession in the land of Egypt, in

the best of the land, in the land of [a]Rameses, [b]as Pharaoh had commanded. 12Then Joseph provided his father, his brothers, and all [a]his father's household with bread, according to the number in *their* families.

Joseph Deals with the Famine

13Now *there was* no bread in all the land; for the famine *was* very severe, [a]so that the land of Egypt and the land of Canaan languished because of the famine. 14[a]And Joseph gathered up all the money that was found in the land of Egypt and in the land of Canaan, for the grain which they bought; and Joseph brought the money into Pharaoh's house.

15So when the money failed in the land of Egypt and in the land of Canaan, all the Egyptians came to Joseph and said, "Give us1 bread, for [a]why should we die in your presence? For the money has failed."

16Then Joseph said, "Give your livestock, and I will give you *bread* for your livestock, if the money is gone." 17So they brought their livestock to Joseph, and Joseph gave them bread *in exchange* for the horses, the flocks, the cattle of the herds, and for the donkeys. Thus he [*]fed them with bread *in exchange* for all their livestock that year.

18When that year had ended, they came to him the next year and said to him, "We will not hide from my lord that our money is gone; my lord also has our herds of livestock. There is nothing left in the sight of my lord but our bodies and our lands. 19Why should we die before your eyes, both we and our land? Buy us and our land for bread, and we and our land will be servants of Pharaoh; give *us* seed, that we may [a]live and not die, that the land may not be desolate."

20Then Joseph [a]bought all the land of Egypt for Pharaoh; for every man of the Egyptians sold his field, because the famine was severe upon them. So the land became Pharaoh's. 21And as for the people, he [*]moved them into the cities, from *one* end of the borders of Egypt to the *other* end. 22[a]Only the land of the [b]priests he did not buy; for the priests had rations *allotted to them* by Pharaoh, and they ate their rations which Pharaoh gave them; therefore they did not sell their lands.

23Then Joseph said to the people, “Indeed I have bought you and your land this day for Pharaoh. Look, *here is* seed for you, and you shall sow the land. 24And it shall come to pass in the harvest that you shall give one-fifth to Pharaoh. Four-fifths shall be your own, as seed for the field and for your food, for those of your households and as food for your little ones.”

25So they said, “You have saved [a]our lives; let us find favor in the sight of my lord, and we will be Pharaoh’s servants.” 26And Joseph made it a law over the land of Egypt to this day, *that* Pharaoh should have one-fifth, [a]except for the land of the priests only, *which* did not become Pharaoh’s.

Joseph’s Vow to Jacob

27So Israel [a]dwelt in the land of Egypt, in the country of Goshen; and they had possessions there and [b]grew and multiplied exceedingly. 28And Jacob lived in the land of Egypt seventeen years. So the length of Jacob’s life was one hundred and forty-seven years. 29When the time [a]drew near that Israel must die, he called his son Joseph and said to him, “Now if I have found favor in your sight, please [b]put your hand under my thigh, and [c]deal kindly and truly with me. [d]Please do not bury me in Egypt, 30but [a]let me lie with my fathers; you shall carry me out of Egypt and [b]bury me in their burial place.”

And he said, “I will do as you have said.”

31Then he said, “Swear to me.” And he swore to him. So [a]Israel bowed himself on the head of the bed.

Genesis 48

Jacob Blesses Joseph’s Sons

1Now it came to pass after these things that Joseph was told, “Indeed your father *is* sick”; and he took with him his two sons, [a]Manasseh and Ephraim. 2And Jacob was told, “Look, your son Joseph is coming to you”; and Israel [*]strengthened himself and sat up on the bed. 3Then Jacob said to Joseph: “God [a]Almighty appeared to me at [b]Luz in the land of Canaan and blessed me, 4and said to me, ‘Behold, I will [a]make you fruitful and multiply you, and I will make of you a multitude of people, and [b]give this land to your descendants after you [c]*as* an everlasting possession.’ 5And now your [a]two sons, Ephraim and Manasseh, who were born to you in the land of Egypt before I came to you in Egypt, *are* mine; as Reuben and Simeon, they shall be mine. 6Your [*]offspring [*]whom you beget after them shall be yours; they will be called by the name of their brothers in their inheritance. 7But as for me, when I came from Padan, [a]Rachel died beside me in the land of Canaan on the way, when *there was* but a little distance to go to Ephrath; and I buried her there on the way to Ephrath (that is, Bethlehem).”

8Then Israel saw Joseph’s sons, and said, “Who *are* these?”

9And Joseph said to his father, “They *are* my sons, whom God has given me in this *place.*”

And he said, “Please bring them to me, and [a]I will bless them.” 10Now [a]the eyes of Israel were dim with age, *so that* he could not see. Then Joseph brought them near him, and he [b]kissed them and embraced them. 11And Israel said to Joseph, [a]“I had not thought to see your face; but in fact, God has also shown me your offspring!”

12So Joseph brought them from beside his knees, and he bowed down with his face to the earth. 13And Joseph took them both, Ephraim with his right hand toward Israel’s left hand, and Manasseh with his left hand toward Israel’s right hand, and brought *them* near him. 14Then Israel stretched out his right hand and [a]laid *it* on Ephraim’s head, who *was* the younger, and his left hand on Manasseh’s head, [b]guiding his hands knowingly, for Manasseh *was* the [c]firstborn. 15And [a]he blessed Joseph, and said:

“God, [b]before whom
my fathers Abraham

and Isaac walked,

The God who has fed
me all my life long to
this day,

16The Angel [a]who has
redeemed me from
all evil,

Bless the lads;

Let [b]my name be
named upon them,

And the name of my
fathers Abraham and
Isaac;

And let them [c]grow
into a multitude in
the midst of the
earth."

17Now when Joseph saw that his father [a]laid his right hand on the head of Ephraim, it displeased him; so he took hold of his father's hand to remove it from Ephraim's head to Manasseh's head. 18And Joseph said to his father, "Not so, my father, for this *one is* the firstborn; put your right hand on his head."

19But his father refused and said, [a]"I know, my son, I know. He also shall become a people, and he also shall be great; but truly [b]his younger brother shall be greater than he, and his descendants shall become a multitude of nations."

20So he blessed them that day, saying, [a]"By you Israel will bless, saying, 'May God make you as Ephraim and as Manasseh!' " And thus he set Ephraim before Manasseh.

21Then Israel said to Joseph, "Behold, I am dying, but [a]God will be with you and bring you back to the land of your fathers. 22Moreover [a]I have given to you one [*]portion above your brothers, which I took from the hand [b]of the Amorite with my sword and my bow.”

Genesis 49

Jacob’s Last Words to His Sons

1And Jacob called his sons and said, “Gather together, that I may [a]tell you what shall befall you [b]in the last days:

2“Gather together
and hear, you sons of
Jacob,

And listen to Israel
your father.

3“Reuben, you are
[a]my firstborn,

My might and the
beginning of my
strength,

The excellency of
dignity and the
excellency of power.

4Unstable as water,
you shall not excel,

Because you [a]went up
to your father’s bed;

Then you defiled *it*—

He went up to my
couch.

5“Simeon and Levi
are brothers;

Instruments of
[*]cruelty *are in* their
dwelling place.

6[a]Let not my soul
enter their council;

Let not my honor be
united [b]to their
assembly;

[c]For in their anger
they slew a man,

And in their self-will
they [*]hamstrung an
ox.

7Cursed *be* their
anger, for *it is* fierce;

And their wrath, for
it is cruel!

[a]I will divide them in
Jacob

And scatter them in
Israel.

8“Judah, [a] you *are he*
whom your brothers
shall praise;

[b]Your hand *shall be*
on the neck of your
enemies;

[c]Your father’s
children shall bow
down before you.

9Judah *is* [a]a lion's
whelp;

From the prey, my
son, you have gone
up.

[b]He *bows down, he
lies down as a lion;

And as a lion, who
shall rouse him?

Gen. 49:9

In Jesus' name I rebuke every lion that would stoop and crouch down to attack me.

10[a]The *scepter shall
not depart from
Judah,

Nor [b]a lawgiver from
between his feet,

[c]Until Shiloh comes;

[d]And to Him *shall be* the obedience of the people.

11Binding his donkey to the vine,

And his donkey’s colt to the choice vine,

He washed his garments in wine,

And his clothes in the blood of grapes.

12His eyes *are* darker than wine,

And his teeth whiter than milk.

13“Zebulun [a] shall dwell by the haven of the sea;

He *shall become* a haven for ships,

And his border shall [b]adjoin Sidon.

14“Issachar [a] is a strong donkey,

Lying down between two burdens;

15He saw that rest *was* good,

And that the land
was pleasant;

He bowed [a]his
shoulder to bear *a
burden,*

1

And became a band
of slaves.

16“Dan [a] shall judge
his people

As one of the tribes
of Israel.

17[a]Dan shall be a
serpent by the way,

A viper by the path,

That bites the horse’s
heels

So that its rider shall
fall backward.

18[a]I have waited for
your salvation, O
LORD!

19“Gad, [a*] a troop
shall [*]tramp upon
him,

But he shall triumph
at last.

20“Bread from [a]Asher
shall be rich,

And he shall yield
royal dainties.

21“Naphtali [a]*is* a deer
let loose;

He uses beautiful
words.

22“Joseph *is* a fruitful
bough,

A fruitful bough by a
well;

His branches run
over the wall.

Gen.
49:22

My
branches
run
over
every
wall
erected
by
the
enemy.

23The archers have
[a]bitterly grieved him,

Shot *at him* and
hated him.

24But his [a]bow
remained in strength,

And the arms of his hands were [*]made strong

By the hands of [b]the Mighty *God* of Jacob

[c](From there [d]*is* the Shepherd, [e]the Stone of Israel),

25[a]By the God of your father who will help you,

[b]And by the Almighty [c]who will bless you

With blessings of heaven above,

Blessings of the deep that lies beneath,

Blessings of the breasts and of the womb.

26The blessings of your father

Have excelled the blessings of my ancestors,

[a]Up to the utmost bound of the everlasting hills.

[b]They shall be on the head of Joseph,

And on the crown of
the head of him who
was separate from
his brothers.

[27]“Benjamin is a
[a]ravenous wolf;

In the morning he
shall devour the
prey,

[b]And at night he
shall divide the
spoil.”

[28]All these *are* the twelve tribes of Israel, and this *is* what their father spoke to them. And he blessed them; he blessed each one according to his own blessing.

Jacob’s Death and Burial

[29]Then he charged them and said to them: “I [a]am to be gathered to my people; [b]bury me with my fathers [c]in the cave that *is* in the field of Ephron the Hittite, [30]in the cave that *is* in the field of Machpelah, which *is* before Mamre in the land of Canaan, [a]which Abraham bought with the field of Ephron the Hittite as a possession for a burial place. [31][a]There they buried Abraham and Sarah his wife, [b]there they buried Isaac and Rebekah his wife, and there I buried Leah. [32]The field and the cave that *is* there *were* purchased from the sons of Heth.” [33]And when Jacob had finished commanding his sons, he drew his feet up into the bed and breathed his last, and was gathered to his people.

LESSONS FROM GOD’S WARRIORS

PROFILE

LEAH

Learn THAT Pleasing God BRINGS Our Highest Fulfillment

It is our own desires and the degree of their fulfillments that produce either joy or sorrow in our lives. But personal fulfillment can become an idol; it can develop into such an obsession that we are living for happiness more than living for God. Thus, part of our salvation includes having our desires prioritized by Christ. God wants to, and will, satisfy us beyond our dreams, but not before He is first in our hearts.

A wonderful example of this can be seen in the life of Leah, Jacob's first wife. Leah was unattractive, unwanted, and unloved by her husband. Jacob had served Laban, Leah's father, seven years for Rachel, who was Leah's younger sister. On their wedding night, however, Laban put Leah in the nuptial tent instead of Rachel. Although Jacob actually did marry Rachel a week later, he had to work another seven years for her. So Jacob had two wives who were sisters.

The Scriptures tell us that Rachel was loved by Jacob but Leah was hated: "And when the LORD saw that Leah was unloved [hated]…" (Gen. 29:31).

We must understand this about the nature of God: the Lord is drawn to those who hurt. "The LORD saw… Leah." What wonderful words! The Lord saw that Leah was unloved. He saw her pain, loneliness, and heartache. Leah, though unloved by Jacob, was deeply loved by the Lord, and He gave her a son. Leah's reaction was predictable. She said, "No1w…my husband will love me" (v. 32). But the time was not yet; Jacob still did not love her.

Twice more Leah gave birth to sons, and each time her desire was for her husband. Yet Jacob's heart did not desire her.

For Leah, as well as for us, there is a lesson here: you cannot make another person love you. In fact, the more pressure you place on others to accept you, the more likely they are to reject you instead. Leah's concept of fulfillment was based on attaining Jacob's love, and now her problem was worsening. For not only was she unattractive to Jacob, but her jealousies were also adding to her lack of loveliness.

As Leah became pregnant a fourth time, a miracle of grace occurred within her. She gradually became aware that, while she had not been the focus of her husband's love, she was loved by God. And as this fourth pregnancy drew near to completion, she drew nearer and nearer to God. She became a worshiper of the Almighty.

Now as she gave birth to another son, she said, "Now I will praise the LORD" (v. 35). She named that child

Judah, which means “praise.” It was from the tribe of Judah that Christ was born.

Leah had been seeking self-fulfillment and found only heartache and pain. But as she became a worshiper of God, she entered life’s highest fulfillment: she began to please God. As she found fulfillment in God, He began to remove from her the jealousies, insecurities, and heartaches that life had conveyed to her. A true inner beauty started growing in Leah; she became a woman at rest.

It is not counsel or classes on success or self-esteem that we need; we simply need to discover God’s love for us.[*]

---

[*] Francis Frangipane, *The Shelter of the Most High*, 108–111.

Genesis 50

1Then Joseph [a]fell on his father’s face, and [b]wept over him, and kissed him. 2And Joseph commanded his servants the physicians to [a]embalm his father. So the physicians embalmed Israel. 3Forty days were required for him, for such are the days required for those who are embalmed; and the Egyptians [a]mourned[*] for him seventy days.

4Now when the days of his mourning were past, Joseph spoke to [a]the household of Pharaoh, sa1ying, "If now I have found favor in your eyes, please speak in the hearing of Pharaoh, saying, 5[a]'My father made me swear, saying, "Behold, I am dying; in my grave [b]which I dug for myself in the land of Canaan, there you shall bury me." Now therefore, please let me go up and bury my father, and I will come back.' "

6And Pharaoh said, "Go up and bury your father, as he made you swear."

7So Joseph went up to bury his father; and with him went up all the servants of Pharaoh, the elders of his house, and all the elders of the land of Egypt, 8as well as all the house of Joseph, his brothers, and his father's house. Only their little ones, their flocks, and their herds they left in the land of Goshen. 9And there went up with him both chariots and horsemen, and it was a very great gathering.

10Then they came to the threshing floor of Atad, which *is* beyond the Jordan, and they [a]mourned there with a great and very solemn lamentation. [b]He observed seven days of mourning for his father. 11And when the inhabitants of the land, the Canaanites, saw the mourning at the threshing floor of Atad, they said, "This *is* a deep mourning of the Egyptians." Therefore its name was called [*]Abel Mizraim, which *is* beyond the Jordan.

12So his sons did for him just as he had commanded them. 13For [a]his sons carried him to the land of Canaan, and buried him in the cave of the field of Machpelah, before Mamre, which Abraham [b]bought with the field from Ephron the Hittite as property for a burial place. 14And after he had buried his father, Joseph returned to Egypt, he and his brothers and all who went up with him to bury his father.

Joseph Reassures His Brothers

15When Joseph’s brothers saw that their father was dead, [a]they said, “Perhaps Joseph will hate us, and may [*]actually repay us for all the evil which we did to him.” 16So they sent *messengers* to Joseph, saying, “Before your father died he commanded, saying, 17‘Thus you shall say to Joseph: “I beg you, please forgive the trespass of your brothers and their sin; [a]for they did evil to you.” 1’ Now, please, forgive the trespass of the servants of [b]the God of your father.” And Joseph wept when they spoke to him.

18Then his brothers also went and [a]fell down before his face, and they said, “Behold, we *are* your servants.”

19Joseph said to them, [a]“Do not be afraid, [b]for *am* I in the place of God? 20[a]But as for you, you meant evil against me; *but* [b]God meant it for good, in order to bring it about as *it is* this day, to save many people alive. 21Now therefore, do not be afraid; [a]I will provide for you and your little ones.” And he comforted them and spoke [*]kindly to them.

Death of Joseph

22So Joseph dwelt in Egypt, he and his father’s household. And Joseph lived one hundred and ten years. 23Joseph saw Ephraim’s children [a]to the third *generation.* [b]The children of Machir, the son of Manasseh, [c]were also brought up on Joseph’s knees.

24And Joseph said to his brethren, “I am dying; but [a]God will surely visit you, and bring you out of this land to the land [b]of which He swore to Abraham, to Isaac, and to Jacob.” 25Then [a]Joseph took an oath from the children of Israel, saying, “God will surely [*]visit you, and [b]you shall carry up my [c]bones from here.” 26So Joseph died, *being* one hundred and ten years old; and they embalmed him, and he was put in a coffin in Egypt.

Genesis 1

[1:1] a. Ps. 102:25; Is. 40:21; (John 1:1–3; Heb. 1:10)

[1:1] b. Gen. 2:4; (Ps. 8:3; 89:11; 90:2); Is. 44:24; Acts 17:24; Rom. 1:20; (Heb. 1:2; 11:3); Rev. 4:11

[1:2] a. Jer. 4:23

[1:2] b. (Gen. 6:3); Job 26:13; Ps. 33:6; 104:30; Is. 40:13, 14

[1:2] * Words in italic type have been added for clarity. They are not found in the original Hebrew or Aramaic.

[1:3] a. Ps. 33:6, 9

[1:3] b. 2 Cor. 4:6

[1:3] c. (Heb. 11:3)

[1:5] a. Job 37:18; Ps. 19:2; 33:6; 74:16; 104:20; 136:5; Jer. 10:12

[1:5] * Lit. *And evening was, and morning was, a day, one.*

[1:6] a. Job 37:18; Jer. 10:12; 2 Pet. 3:5

[1:6] * *expanse*

[1:7] a. Job 38:8–11; Prov. 8:27–29

[1:7] b. Ps. 148:4

[1:9] a. Job 26:10; Ps. 104:6–9; Prov. 8:29; Jer. 5:22; 2 Pet. 3:5

[1:9] b. Ps. 24:1, 2; 33:7; 95:5

[1:11] a. Ps. 65:9–13; 104:14; Heb. 6:7

[1:11] b. 2 Sam. 16:1; Luke 6:44

[1:14] a. Deut. 4:19; Ps. 74:16; 136:5–9

[1:14] b. Ps. 104:19

[1:16] a. Ps. 136:8

[1:16] b. Deut. 17:3; Ps. 8:3

[1:16] c. Deut. 4:19; Job 38:7; Is. 40:26

[1:16] * *luminaries*

[1:17] a. Gen. 15:5; Jer. 33:20, 25

[1:18] a. Jer. 31:35

[1:20] * *souls*

[1:20] * *expanse*

[1:21] a. Ps. 104:25–28

[1:22] a. Gen. 8:17

[1:26] a. Gen. 9:6; Ps. 100:3; Eccl. 7:29; (Eph. 4:24); James 3:9

[1:26] b. Gen. 9:2; Ps. 8:6–8

[1:26] * Syr. *all the wild animals of*

[1:27] a. Gen. 5:2; 1 Cor. 11:7

[1:27] b. Matt. 19:4; (Mark 10:6–8)

[1:28] a. Gen. 9:1, 7; Lev. 26:9

[1:28] b. 1 Cor. 9:27

[1:28] * *moves about on*

[1:29] a. Gen. 9:3; Ps. 104:14, 15

[1:30] a. Ps. 145:15

[1:30] b. Job 38:41

[1:30] * *a living soul*

[1:31] a. (Ps. 104:24; 1 Tim. 4:4)

Genesis 2

[2:1] a. Ps. 33:6

[2:2] a. Ex. 20:9–11; 31:17; Heb. 4:4, 10

[2:3] a. (Is. 58:13)

[2:4] a. Gen. 1:1; Ps. 90:1, 2

[2:4] * Heb. *toledoth,* lit. *generations*

[2:5] a. Gen. 1:11, 12

[2:5] b. Gen. 7:4; Job 5:10; 38:26–28

[2:5] c. Gen. 3:23

[2:7] a. Gen. 3:19, 23; Ps. 103:14

[2:7] b. Job 33:4

[2:7] c. Gen. 7:22

[2:7] d. 1 Cor. 15:45

[2:8] a. Is. 51:3

[2:8] b. Gen. 3:23, 24

[2:8] c. Gen. 14:16

[2:9] a. Ezek. 31:8

[2:9] b. (Gen. 3:22; Rev. 2:7; 22:2, 14)

[2:9] c. (Deut. 1:39)

[2:11] a. Gen. 25:18

[2:12] a. Num. 11:7

[2:14] a. Dan. 10:4

[2:14] * Or *Tigris*

[2:14] * Heb. *Ashshur*

[2:15] * Or *Adam*

[2:15] * *cultivate*

[2:17] a. Gen. 3:1, 3, 11, 17

[2:17] b. Gen. 3:3, 19; (Rom. 6:23)

[2:17] c. Rom. 5:12; 1 Cor. 15:21, 22

[2:17] * Lit. *dying you shall die*

[2:18] a. 1 Cor. 11:8, 9; 1 Tim. 2:13

[2:19] a. Gen. 1:20, 24

[2:19] b. Ps. 8:6

[2:19] * Or *the man*

[2:21] a. Gen. 15:12; 1 Sam. 26:12

[2:22] a. Gen. 3:20; 1 Tim. 2:13

[2:22] b. Heb. 13:4

[2:22] * Lit. *built*

[2:23] a. Gen. 29:14; Eph. 5:28–30

[2:23] b. 1 Cor. 11:8, 9

[2:23] * Heb. *Ishshah*

[2:23] * Heb. *Ish*

[2:24] a. Matt. 19:5; Eph. 5:31

[2:24] b. Mark 10:6–8; 1 Cor. 6:16

[2:24] * Lit. *cling*

[2:25] a. Gen. 3:7, 10

[2:25] b. Is. 47:3

Genesis 3

[3:1] a. 1 Chr. 21:1; (Rev. 12:9; 20:2, 10)

[3:1] b. 2 Cor. 11:3

[3:2] a. Gen. 2:16, 17

[3:3] a. Ex. 19:12, 13; Rev. 22:14

[3:4] a. John 8:44; (2 Cor. 11:3; 1 Tim. 2:14)

[3:6] a. 1 John 2:16

[3:6] b. 1 Tim. 2:14

[3:6] * Lit. *a desirable thing*

[3:7] a. Gen. 2:25

[3:7] * *girding coverings*

[3:8] a. Job 38:1

[3:8] b. Job 31:33; Jer. 23:24

[3:8] * Or *voice*

[3:8] * Or *wind, breeze*

[3:10] a. Gen. 2:25; Ex. 3:6; Deut. 9:19; 1 John 3:20

[3:12] a. (Prov. 28:13)

[3:13] a. Gen. 3:4; 2 Cor. 11:3; 1 Tim. 2:14

[3:14] a. Deut. 28:15–20; Is. 65:25; Mic. 7:17

[3:15] a. John 8:44; Acts 13:10; 1 John 3:8

[3:15] b. Is. 7:14; Luke 1:31, 34, 35; Gal. 4:4

[3:15] c. Rom. 16:20; (Rev. 12:7, 17)

[3:16] a. Is. 13:8; John 16:21

[3:16] b. Gen. 4:7

[3:16] c. 1 Cor. 11:3; Eph. 5:22; 1 Tim. 2:12, 15

[3:16] * Lit. *toward*

[3:17] a. 1 Sam. 15:23

[3:17] b. Gen. 2:17

[3:17] c. Gen. 5:29; Rom. 8:20–22; Heb. 6:8

[3:17] d. Job 5:7; 14:1; Eccl. 2:23

[3:18] a. Ps. 104:14

[3:18] * *cause to grow*

[3:119] a. 2 Thess. 3:10

[3:19] b. Gen. 2:7; 5:5

[3:19] c. Job 21:26; Eccl. 3:20

[3:20] a. 2 Cor. 11:3; 1 Tim. 2:13

[3:20] * Lit. *Life* or *Living*

[3:23] a. Gen. 4:2; 9:20

[3:24] a. Ezek. 31:3, 11

[3:24] b. Ex. 25:18–22; Ps. 104:4; Ezek. 10:1–20; Heb. 1:7

[3:24] c. Gen. 2:8

[3:24] d. Gen. 2:9; (Rev. 22:2)

Genesis 4

[4:1] * Lit. *Acquire*

[4:2] a. Luke 11:50, 51

[4:2] * Lit. *Breath* or *Nothing*

[4:3] a. Num. 18:12

[4:3] * Lit. *at the end of days*

[4:4] a. Num. 18:17

[4:4] b. Lev. 3:16

[4:4] c. Heb. 11:4

[4:7] * Lit. *toward*

[4:8] a. Matt. 23:35; Luke 11:51; (1 John 3:12–15); Jude 11

[4:8] * Lit. *said to*

[4:8] * Sam., LXX, Syr., Vg. add *"Let us go out to the field."*

[4:9] a. John 8:44

[4:9] b. 1 Cor. 8:11–13

[4:10] a. Num. 35:33; Deut. 21:1–9;

Heb. 12:24; Rev. 6:9, 10

[4:11] a. Gen. 3:14; Deut. 11:28; 28:15–20; Gal. 3:10

[4:13] * *iniquity*

[4:14] a. Ps. 51:11

[4:14] b. Deut. 31:18; Is. 1:15

[4:14] c. Gen. 9:6; Num. 35:19, 21, 27

[4:15] a. Gen. 4:24; Ps. 79:12

[4:15] b. Gen. 9:6; Ezek. 9:4, 6

[4:15] * So with MT, Tg.; LXX, Syr., Vg. *Not so;*

[4:16] a. 2 Kin. 13:23; 24:20; Jer. 23:39; 52:3

[4:16] b. Jon. 1:3

[4:16] * Lit. *Wandering*

[4:17] a. Ps. 49:11

[4:19] a. Gen. 2:24; 16:3; 1 Tim. 3:2

[4:21] * *pipe*

[4:23] * *slain a man for my wound*

[4:23] * *for my hurt*

[4:24] a. Gen. 4:15

[4:25] a. Gen. 5:3

[4:25] * Lit. *Appointed*

[4:26] a. Gen. 5:6

[4:26] b. Gen. 12:8; 26:25; 1 Kin. 18:24; Ps. 116:17; Joel 2:32; Zeph. 3:9; 1 Cor. 1:2

[4:26] * Gr. *Enos,* Luke 3:38

Genesis 5

[5:1] a. Gen. 2:4; 6:9; 1 Chr. 1:1; Matt. 1:1

[5:1] b. Gen. 1:26; 9:6; (Eph. 4:24; Col. 3:10)

[5:2] a. Gen. 1:27; Deut. 4:32; Matt. 19:4; Mark 10:6

[5:2] b. Gen. 1:28; 9:1

[5:3] a. 1 Cor. 15:48, 49

[5:3] b. Gen. 4:25

[5:4] a. 1 Chr. 1:1–4; Luke 3:36–38

[5:4] b. Gen. 1:28; 4:25

[5:5] a. Gen. 2:17; 3:19; 6:17; (Heb. 9:27)

[5:7] a. Gen. 4:26

[5:9] * Heb. *Qenan*

[5:18] a. Jude 14, 15

[5:22] a. Gen. 6:9; 17:1; 24:40; 48:15; 2 Kin.1 20:3; Ps. 16:8; (Mic. 6:8); Mal. 2:6; 1 Thess. 2:12; (Heb. 11:39)

[5:24] a. 2 Kin. 2:11; Jude 14

[5:24] b. 2 Kin. 2:10; Ps. 49:15; 73:24; Heb. 11:5

[5:29] a. Luke 3:36; Heb. 11:7; 1 Pet. 3:20

[5:29] b. Gen. 3:17–19; 4:11

[5:29] * Lit. *Rest*

[5:32] a. Gen. 6:10; 7:13

[5:32] b. Gen. 10:21

Genesis 6

[6:1] a. Gen. 1:28

[6:2] a. Deut. 7:3, 4

[6:3] a. Gen. 41:38; (Gal. 5:16, 17); 1 Pet. 3:19, 20

[6:3] b. 2 Thess. 2:7

[6:3] c. Ps. 78:39

[6:3] * LXX, Syr., Tg., Vg. *abide*

[6:4] a. Num. 13:32, 33; Luke 17:27

[6:4] * Heb. *nephilim, fallen* or *mighty* *ones*

[6:5] a. Gen. 8:21; Ps. 14:1–3; Prov. 6:18; Matt. 15:19; Rom. 1:28–32

[6:5] * So with MT, Tg.; Vg. *God;* LXX *LORD God*

[6:5] * *thought*

[6:5] * *all the day*

[6:6] a. Gen. 6:7; 1 Sam. 15:11, 29; 2 Sam. 24:16; Jer. 18:7–10; Zech. 8:14

[6:6] b. Ps. 78:40; Is. 63:10; Eph. 4:30

[6:6] c. Mark 3:5

[6:7] a. Gen. 7:4, 23; Deut. 28:63; 29:20; Ps. 7:11

[6:8] a. Gen. 19:19; Ex. 33:12, 17; Luke 1:30; Acts 7:46

[6:9] a. Gen. 7:1; Ezek. 14:14, 20; Heb. 11:7; 2 Pet. 2:5

[6:9] b. Gen. 5:22, 24; 2 Kin. 23:3

[6:9] * *blameless* or *having integrity*

[6:10] a. Gen. 5:32; 7:13

[6:11] a. Deut. 31:29; Judg. 2:19; Rom. 2:13

[6:11] b. Ezek. 8:17

[6:12] a. Ps. 14:2; 53:2, 3

[6:12] b. Ps. 14:1–3; Is. 28:8

[6:13] a. Is. 34:1–4; Jer. 51:13; Ezek. 7:2, 3; Amos 8:2; 1 Pet. 4:7

[6:13] b. Gen. 6:17

[6:13] c. 2 Pet. 2:4–10

[6:14] * Lit. *compartments* or *nests*

[6:15] * A cubit is about 18 inches.

[6:17] a. Gen. 7:4, 21–23; 2 Pet. 2:5

[6:17] b. 2 Pet. 3:6

[6:17] c. Luke 16:22

[6:18] a. Gen. 8:20—9:17; 17:7

[6:18] b. Gen. 7:1, 7, 13; 1 Pet. 3:20; 2 Pet. 2:5

[6:19] a. Gen. 7:2, 8, 9, 14–16

[6:20] a. Gen. 7:9, 15

[6:22] a. Gen. 7:5; 12:4, 5; Heb. 11:7

[6:22] b. Gen. 7:5, 9, 16

[6:22] c. (1 John 5:3)

Genesis 7

[7:1] a. Matt. 11:28

[7:1] b. Matt. 24:38; Luke 17:26; Heb. 11:7; 1 Pet. 3:20; 2 Pet. 2:5

[7:1] c. Gen. 6:9; Ps. 33:18; Prov. 10:9; 2 Pet. 2:9

[7:2] a. Lev. 11; Deut. 14:3–20

[7:2] b. Lev. 10:10; Ezek. 44:23

[7:3] * Lit. *seed*

[7:4] a. Gen. 7:10; Ex. 7:25

[7:4] b. Gen. 7:12, 17

[7:4] * Lit. *blot out*

[7:5] a. Gen. 6:22

[7:6] a. Gen. 5:4, 32

[7:7] a. Gen. 6:18; 7:1, 13; Matt. 24:38; Luke 17:27

[7:11] a. Matt. 24:39; Luke 17:27; 2 Pet. 2:5; 3:6

[7:11] b. Gen. 8:2; Prov. 8:28; Is. 51:10; Ezek. 26:19

[7:11] c. Gen. 8:2; Ps. 78:23

[7:12] a. Gen. 7:4, 17; 1 Sam. 12:18

[7:14] a. Gen. 6:19

[7:14] b. Gen. 1:21

[7:15] a. Gen. 6:19, 20; 7:9

[7:16] a. Gen. 7:2, 3

[7:17] a. Gen. 7:4, 12; 8:6

[7:18] a. Ps. 104:26

[7:21] a. Gen. 6:7, 13, 17; 7:4

[7:21] * *the land*

[7:22] a. Gen. 2:7

[7:22] * LXX, Vg. omit *of the spirit*

[7:23] a. Matt. 24:38, 39; Luke 17:26, 27; Heb. 11:7; 1 Pet. 3:20; 2 Pet. 2:5

[7:24] a. Gen. 8:3, 4

Genesis 8

[8:1] a. Gen. 19:29; Ex. 2:24; 1 Sam. 1:19; Ps. 105:42; 106:4

[8:1] b. Ex. 14:21; 15:10; Job 12:15; Ps. 29:10; Is. 44:27; Nah. 1:4

[8:2] a. Gen. 7:11

[8:2] b. Deut. 11:17

[8:2] c. Gen. 7:4, 12; Job 38:37

[8:3] a. Gen. 7:24

[8:6] a. Gen. 6:16

[8:16] a. Gen. 7:13

[8:17] a. Gen. 1:22, 28; 9:1, 7

[8:20] a. Gen. 12:7; Ex. 29:18, 25

[8:20] b. Gen. 7:2; Lev. 11

[8:20] c. Gen. 22:2; Ex. 10:25

[8:21] a. Ex. 29:18, 25; Lev. 1:9; Ezek. 20:41; 2 Cor. 2:15; Eph. 5:2

[8:21] b. Gen. 3:17; 6:7, 13, 17; Is. 54:9

[8:21] c. Gen. 6:5; 11:6; Job 14:4; Ps. 51:5; Jer. 17:9; Rom. 1:21; 3:23; Eph. 2:1–3

[8:21] d. Gen. 9:11, 15

[8:21] * *intent* or *thought*

[8:22] a. Is. 54:9

[8:22] b. Ps. 74:16; Jer. 33:20, 25

Genesis 9

[9:1] a. Gen. 1:28, 29; 8:17; 9:7, 19; 10:32

[9:2] a. Gen. 1:26, 28; Ps. 8:6

[9:3] a. Deut. 12:15; 14:3, 9, 11; Acts 10:12, 13

[9:3] b. Rom. 14:14, 20; 1 Cor. 10:23, 26; Col. 2:16; (1 Tim. 4:3, 4)

[9:3] c. Gen. 1:29

[9:4] a. Lev. 7:26; 17:10–16; 19:26; Deut. 12:16, 23; 15:23; 1 Sam. 14:33, 34; Acts 15:20, 29

[9:5] a. Ex. 21:28

[9:5] b. Gen. 4:9, 10; Ps. 9:12

[9:5] c. Acts 17:26

[9:6] a. Ex. 21:12–14; Lev. 24:17; Num. 35:33; Matt. 26:52

[9:6] b. Gen. 1:26, 27

[9:7] a. Gen. 9:1, 19

[9:9] a. Gen. 6:18

[9:9] b. Is. 54:9

[9:9] * Lit. *seed*

[9:10] a. Ps. 145:9

[9:11] a. Gen. 8:21; Is. 54:9

[9:12] a. Gen. 9:13, 17; 17:11

[9:13] a. Ezek. 1:28; Rev. 4:3

[9:15] a. Lev. 26:42, 45; Deut. 7:9; Ezek. 16:60

[9:16] a. Gen. 17:13, 19; 2 Sam. 23:5; Is. 55:3; Jer. 32:40; Heb. 13:20

[9:18] a. Gen. 9:25–27; 10:6

[9:19] a. Gen. 5:32

[9:19] b. Gen. 9:1, 7; 10:32; 1 Chr. 1:4

[9:20] a. Gen. 3:19, 23; 4:2; Prov. 12:11; Jer. 31:24

[9:21] a. Prov. 20:1; Eph. 5:18

[9:23] a. Ex. 20:12; Gal. 6:1

[9:23] * Lit. *backwards*

[9:25] a. Deut. 27:16; Josh. 9:23, 27

[9:25] b. Josh. 9:23; 1 Kin. 9:20, 21

[9:26] a. Gen. 14:20; 24:27; Ps. 144:15; Heb. 11:16

[9:27] a. Gen. 10:2–5; 39:3; Is. 66:19

[9:27] b. Luke 3:36; John 1:14; Eph. 2:13, 14; 3:6

Genesis 10

[10:1] a. Gen. 9:1, 7, 19

[10:2] a. 1 Chr. 1:5–7

[10:3] * *Diphath,* 1 Chr. 1:6

[10:4] * Sam. *Rodanim* and 1 Chr. 1:7

[10:5] a. Gen. 11:8; Ps. 72:10; Jer. 2:10; 25:22

[10:6] a. 1 Chr. 1:8–16

[10:6] * Or *Phut*

[10:8] a. Mic. 5:6

[10:9] a. Jer. 16:16; Mic. 7:2

[10:9] b. Gen. 21:20

[10:10] a. Mic. 5:6

[10:10] b. Gen. 11:9

[10:11] a. Gen. 25:18; 2 Kin. 19:36; Mic. 5:6

[10:14] a. 1 Chr. 1:12

[10:15] a. Gen. 23:3

[10:16] a. Gen. 14:7; 15:19–21; Deut. 7:1; Neh. 9:8

[10:19] a. Gen. 13:12, 14, 15, 17; 15:18–21; Num. 34:2–12

[10:21] * Or *the older brother of Japheth*

[10:22] a. Gen. 11:10–26; 1 Chr. 1:17–28

[10:22] b. Gen. 10:24; 11:10; Luke 3:36

[10:23] * LXX *Meshech* and 1 Chr. 1:17

[10:24] a. Gen. 11:12; Luke 3:35

[10:24] * So with MT, Vg., Tg.; LXX *Arphaxad begot Cainan, and Cainan begot Salah* (cf. Luke 3:35, 36)

[10:25] a. 1 Chr. 1:19

[10:25] * Lit. *Division*

[10:28] * *Ebal,* 1 Chr. 1:22

[10:32] a. Gen. 10:1

[10:32] b. Gen. 9:19; 11:8

Genesis 11

[11:1] * Lit. *lip*

[11:2] a. Gen. 10:10; 14:1; Dan. 1:2

[11:3] * Lit. *burn*

[11:4] a. Deut. 1:28; 9:1; Ps. 107:26

[11:4] b. Gen. 6:4; 2 Sam. 8:13

[11:4] c. Deut. 4:27

[11:5] a. Gen. 18:21; Ex. 3:8; 19:11, 18, 20

[11:6] a. Gen. 9:19; Acts 17:26

[11:6] b. Gen. 11:1

[11:6] c. Deut. 31:21; Ps. 2:1

[11:7] a. Gen. 1:26

[11:7] b. Gen. 42:23; Ex. 4:11; Deut. 28:49; Is. 33:19; Jer. 5:15

[11:8] a. Gen. 11:4; Deut. 32:8; Ps. 92:9; (Luke 1:51)

[11:8] b. Gen. 10:25, 32

[11:9] a. 1 Cor. 14:23

[11:9] * Lit. *Confusion,* Babylon

[11:10] a. Gen. 10:22–25; 1 Chr. 1:17

[11:12] a. Luke 3:35

[11:16] a. 1 Chr. 1:19

[11:16] b. Luke 3:35

[11:20] a. Luke 3:35

[11:24] a. Gen. 11:31; Josh. 24:2; Luke 3:34

[11:26] a. Josh. 24:2; 1 Chr. 1:26

[11:26] * *Abraham,* Gen. 17:5

[11:27] a. Gen. 11:31; 17:5

[11:29] a. Gen. 17:15; 20:12

[11:29] b. Gen. 22:20, 23; 24:15

[11:29] * *Sarah,* Gen. 17:15

[11:30] a. Gen. 16:1, 2; Luke 1:36

[11:31] a. Gen. 12:1

[11:31] b. Gen. 15:7; Neh. 9:7; Acts 7:4

[11:31] c. Gen. 10:19

Genesis 12

[12:1] a. Gen. 15:7; Acts 7:2, 3; (Heb. 11:8)

[12:1] b. Gen. 13:9

[12:2] a. (Gen. 17:4–6); 18:18; 46:3; Deut. 26:5; 1 Kin. 3:8

[12:2] b. Gen. 22:17; 24:35

[12:2] c. Gen. 28:4; Zech. 8:13; Gal. 3:14

[12:3] a. Gen. 24:35; 27:29; Ex. 23:22; Num. 24:9

[12:3] b. Gen. 18:18; 22:18; 26:4; 28:14; Ps. 72:17; Matt. 1:1; Luke 3:34; Acts 3:25; (Gal. 3:8)

[12:3] c. Is. 41:27

[12:5] a. Gen. 14:14

[12:5] b. Gen. 11:31

[12:5] c. Gen. 13:18

[12:5] * Lit. *souls*

[12:6] a. Heb. 11:9

[12:6] b. Deut. 11:30; Judg. 7:1

[12:6] c. Gen. 10:18, 19

[12:6] * Heb. *Alon Moreh*

[12:7] a. Gen. 17:1; 18:1

[12:7] b. Gen. 13:15; 15:18; 17:8; Deut. 34:4; Ps. 105:9–12; Acts 7:5; Gal. 3:16

[12:7] c. Gen. 13:4, 18; 22:9

[12:7] * Lit. *seed*

[12:8] a. Gen. 4:26; 13:4; 21:33

[12:9] a. Gen. 13:1, 3; 20:1; 24:62

[12:9] * Heb. *Negev*

[12:10] a. Gen. 26:1

[12:10] b. Ps. 105:13

[12:10] c. Gen. 43:1

[12:11] a. Gen. 12:14; 26:7; 29:17

[12:12] a. Gen. 20:11; 26:7

[12:13] a. Gen. 20:1–18; 26:6–11

[12:13] b. Gen. 20:12

[12:13] * Lit. *my soul*

[12:16] a. Gen. 20:14

[12:16] b. Gen. 13:2

[12:17] a. Gen. 20:18; 1 Chr. 16:21; (Ps. 105:14)

[12:18] a. Gen. 20:9, 10; 26:10

[12:20] a. (Prov. 21:1)

Genesis 13

[13:1] a. Gen. 12:4; 14:12, 16

[13:1] b. Gen. 12:9

[13:1] * Heb. *Negev*

[13:2] a. Gen. 24:35; 26:14; Ps. 112:3; Prov. 10:22

[13:3] a. Gen. 12:8, 9

[13:4] a. Gen. 12:7, 8; 21:33

[13:4] b. Ps. 116:17

[13:6] a. Gen. 36:7

[13:6] * Lit. *bear*

[13:7] a. Gen. 26:20

[13:7] b. Gen. 12:6; 15:20, 21

[13:8] a. 1 Cor. 6:7; (Phil. 2:14, 15)

[13:9] a. Gen. 20:15; 34:10

[13:9] b. Gen. 13:11, 14

[13:9] c. (Rom. 12:18)

[13:10] a. Gen. 19:17–29; Deut. 34:3

[13:10] b. Gen. 19:24

[13:10] c. Gen. 2:8, 10; Is. 51:3

[13:10] d. Gen. 14:2, 8; 19:22; Deut. 34:3

[13:12] a. Gen. 19:24, 25, 29

[13:12] b. Gen. 14:12; 19:1

[13:13] a. Gen. 18:20, 21; Ezek. 16:49; 2 Pet. 2:7, 8

[13:13] b. Gen. 6:11; 39:9; Num. 32:23

[13:14] a. Gen. 13:11

[13:14] b. Gen. 28:14

[13:15] 1a. Gen. 12:7; 13:17; 15:7, 18; 17:8; Deut. 34:4; Acts 7:5

[13:15] b. 2 Chr. 20:7; Ps. 37:22

[13:15] * Lit. *seed*

[13:16] a. Gen. 22:17; Ex. 32:13; Num. 23:10

[13:18] a. Gen. 26:17

[13:18] b. Gen. 14:13

[13:18] c. Gen. 23:2; 35:27

[13:18] d. Gen. 8:20; 22:8, 9

[13:18] * Heb. *Alon Mamre*

Genesis 14

[14:1] a. Gen. 10:10; 11:2

[14:1] b. Is. 11:11; 21:2; Dan. 8:2

[14:1] * Heb. *goyim*

[14:2] a. Gen. 10:19; Deut. 29:23

[14:2] b. Gen. 13:10; 19:22

[14:3] a. Num. 34:12; Deut. 3:17; Josh. 3:16

[14:4] a. Gen. 9:26

[14:5] a. Gen. 15:20

[14:5] b. Deut. 2:20

[14:5] c. Num. 32:37; Deut. 2:10

[14:6] a. Gen. 36:20; Deut. 2:12, 22

[14:7] a. 2 Chr. 20:2

[14:8] * Heb. *goyim*

[14:10] a. Gen. 11:3

[14:10] b. Gen. 19:17, 30

[14:11] a. Gen. 14:16, 21

[14:12] a. Gen. 11:27; 12:5

[14:12] b. Gen. 13:12

[14:13] a. Gen. 39:14; 40:15

[14:13] b. Gen. 13:18

[14:13] c. Gen. 14:24; 21:27, 32

[14:13] * Heb. *Alon Mamre*

[14:14] a. Gen. 19:29

[14:14] b. Gen. 13:8; 14:12

[14:14] c. Gen. 12:5; 15:3; 17:27; Eccl. 2:7

[14:14] d. Deut. 34:1; Judg. 18:29; 1 Kin. 15:20

[14:15] a. Is. 41:2, 3

[14:15] * Lit. *on the left hand of*

[14:16] a. Gen. 31:18; 1 Sam. 30:8, 18, 19

[14:17] a. 1 Sam. 18:6

[14:17] b. 2 Sam. 18:18

[14:17] c. Heb. 7:1

[14:17] * Lit. *striking*

[14:18] a. Ps. 110:4; Heb. 7:1–10

[14:18] b. Gen. 18:5; Ex. 29:40; Ps. 104:15

[14:18] c. Ps. 110:4; Heb. 5:6

[14:18] d. Acts 16:17

[14:19] a. Ruth 3:10

[14:19] b. Gen. 14:22; Matt. 11:25

[14:20] a. Gen. 24:27

[14:20] b. Gen. 28:22; Heb. 7:4

[14:20] * *one-tenth*

[14:21] * Lit. *souls*

[14:22] a. Gen. 14:2, 8, 10

[14:22] b. Dan. 12:7

[14:22] c. Gen. 14:19

[14:23] a. 2 Kin. 5:16; Esth. 9:15, 16

Genesis 15

[15:1] a. Gen. 15:4; 46:2; 1 Sam. 15:10; Dan. 10:1

[15:1] b. Gen. 21:17; 26:24; Is. 41:10; Dan. 10:12

[15:1] c. Deut. 33:29; Ps. 3:3; 84:11; 91:4

[15:1] d. Num. 18:20; Ps. 58:11; Prov. 11:18

[15:1] * Or *your reward shall be very great*

[15:2] a. Gen. 17:18

[15:2] b. Acts 7:5

[15:2] * *am childless*

[15:3] a. Gen. 14:14

[15:3] * *a servant*

[15:4] a. 2 Sam. 7:12; Gal. 4:28

[15:5] a. Gen. 22:17; 26:4; Deut. 1:10; Ps. 147:4

[15:5] b. Jer. 33:22

[15:5] c. Ex. 32:13; Rom. 4:18; Heb. 11:12

[15:5] d. Gen. 17:19

[15:6] a. Gen. 21:1; Rom. 4:3, 9, 22; Gal. 3:6; James 2:23

[15:6] b. Ps. 32:2; 106:31

[15:7] a. Gen. 12:1

[15:7] b. Gen. 11:28, 31

[15:7] c. Gen. 13:15, 17; Ps. 105:42, 44

[15:8] a. Gen. 24:13, 14; Judg. 6:36–40; 1 Sam. 14:9, 10; Luke 1:18

[15:10] a. Gen. 15:17; Jer. 34:18

[15:10] b. Lev. 1:17

[15:12] a. Gen. 2:21; 28:11; Job 33:15

[15:13] a. Ex. 1:11; Acts 7:6

[15:13] b. Ex. 12:40

[15:14] a. Ex. 6:6

[15:14] b. Ex. 12:36

[15:15] a. Job 5:26

[15:15] b. Gen. 25:8; 47:30

[15:15] c. Gen. 25:8

[15:15] * Die and join your ancestors

[15:16] a. Gen. 15:13; Ex. 12:41

[15:16] b. Gen. 48:22; Lev. 18:24–28; 1 Kin. 21:26

[15:16] c. 1 Kin. 11:12; Matt. 23:32

[15:17] a. Jer. 34:18, 19

[15:18] a. Gen. 24:7

[15:18] b. Gen. 12:7; 17:8; Ex. 23:31; Num. 34:3; Deut. 11:24; Josh. 1:4; 21:43; Acts 7:5

Genesis 16

[16:1] a. Gen. 11:30; 15:2, 3

1[16:1] b. Gen. 12:16; 21:9

[16:1] c. Gal. 4:24

[16:2] a. Gen. 30:3

[16:2] b. Gen. 20:18

[16:2] c. Gen. 30:3, 9

[16:2] d. Gen. 3:17

[16:2] * Lit. *be built up from*

[16:3] a. Gen. 12:4, 5

[16:4] a. 1 Sam. 1:6, 7; (Prov. 30:21, 23)

[16:4] * *sight*

[16:5] a. Gen. 31:53; Ex. 5:21

[16:5] * *The wrong done to me be*

[16:6] a. 1 Pet. 3:7

[16:6] b. Gen. 16:9; Ex. 2:15

[16:7] a. Gen. 21:17, 18; 22:11, 15; 31:11

[16:7] b. Gen. 20:1; 25:18

[16:7] c. Ex. 15:22

[16:9] a. (Titus 2:9)

[16:10] a. Gen. 17:20

[16:11] a. Luke 1:13, 31

[16:11] * Lit. *God Hears*

[16:12] a. Gen. 21:20; Job 24:5; 39:5–8

[16:12] b. Gen. 25:18

[16:13] a. Gen. 31:42

[16:13] * Heb. *El Roi*

[16:13] * Seen the back of

[16:14] a. Gen. 24:62

[16:14] b. Gen. 14:7; Num. 13:26

[16:14] * Lit. *Well of the One Who Lives and Sees Me*

[16:15] a. Gal. 4:22

Genesis 17

[17:1] a. Gen. 12:7; 18:1

[17:1] b. Gen. 28:3; 35:11; Ex. 6:3; Job 42:2

[17:1] c. 2 Kin. 20:3

[17:1] d. Gen. 6:9; Deut. 18:13

[17:1] * Heb. *El Shaddai*

[17:2] a. Gen. 15:18; Ex. 6:4; (Gal. 3:19)

[17:2] b. Gen. 12:2; 13:16; 15:5; 18:18

[17:4] a. (Rom. 4:11, 12, 16)

[17:4] * Lit. *a multitude of nations*

[17:5] a. Neh. 9:7

[17:5] b. Rom. 4:17

[17:5] * Lit. *Exalted Father*

[17:5] * Lit. *Father of a Multitude*

[17:5] * *a multitude of*

[17:6] a. Gen. 17:16; 35:11

[17:6] b. Matt. 1:6

[17:7] a. (Gal. 3:17)

[17:7] b. Gen. 26:24; 28:13; Lev.

11:45; 26:12, 45; Heb. 11:16

[17:7] c. Rom. 9:8; Gal. 3:16

[17:8] a. Gen. 12:7; 13:15, 17; Acts 7:5

[17:8] b. Gen. 23:4; 28:4

[17:8] c. Ex. 6:7; 29:45; Lev. 26:12; Deut. 29:13; Rev. 21:7

[17:8] * Lit. *of your sojournings*

[17:9] a. Ex. 19:5

[17:10] a. John 7:22; Acts 7:8

[17:11] a. Ex. 12:13, 48; (Rom. 4:11)

[17:12] a. Lev. 12:3

[17:14] a. Ex. 4:24–26

[17:15] * Lit. *Princess*

[17:16] a. Gen. 18:10

[17:16] b. Gen. 35:11; Gal. 4:31; 1 Pet. 3:6

[17:16] c. Gen. 17:6; 36:31; 1 Sam. 8:22

[17:17] a. Gen. 17:3; 18:12; 121:6

[17:18] a. Gen. 18:23

[17:19] a. Gen. 18:10; 21:2; (Gal. 4:28)

[17:19] b. Gen. 22:16; Matt. 1:2; Luke 3:34

[17:20] a. Gen. 16:10

[17:20] b. Gen. 25:12–16

[17:20] c. Gen. 21:13, 18

[17:21] a. Gen. 26:2–5

[17:21] b. Gen. 21:2

[17:21] c. Gen. 18:14

[17:27] a. Gen. 18:19

Genesis 18

[18:1] a. Gen. 13:18; 14:13

[18:1] * Heb. *Alon Mamre*

[18:2] a. Gen. 18:16, 22; 32:24; Josh. 5:13; Judg. 13:6–11; Heb. 13:2

[18:2] b. Gen. 19:1; 1 Pet. 4:9

[18:4] a. Gen. 19:2; 24:32; 43:24

[18:5] a. Judg. 6:18, 19; 13:15, 16

[18:5] b. Judg. 19:5; Ps. 104:15

[18:5] c. Gen. 19:8; 33:10

[18:8] a. Gen. 19:3

[18:9] a. Gen. 24:67

[18:10] a. 2 Kin. 4:16

[18:10] b. Gen. 17:19, 21; 21:2; Rom. 9:9

[18:11] a. Gen. 17:17; Luke 1:18; Rom. 4:19; Heb. 11:11, 12, 19

[18:11] b. Gen. 31:35

[18:11] * Lit. *the manner of women had ceased to be with Sarah*

[18:12] a. Gen. 17:17

[18:12] b. Luke 1:18

[18:12] c. 1 Pet. 3:6

[18:14] a. Num. 11:23; Jer. 32:17; Zech. 8:6; Matt. 3:9; 19:26; Luke 1:37; Rom. 4:21

[18:14] b. Gen. 17:21; 18:10; 2 Kin. 4:16

[18:16] a. Acts 15:3; Rom. 15:24

[18:17] a. Gen. 18:22, 26, 33; Ps. 25:14; Amos 3:7; (John 15:15)

[18:18] a. (Gen. 12:3; 22:18); Matt. 1:1; Luke 3:34; (Acts 3:25, 26; Gal. 3:8)

[18:19] a. (Deut. 4:9, 10; 6:6, 7)

[18:20] a. Gen. 4:10; 19:13; Ezek.

16:49, 50

[18:20] b. Gen. 13:13

[18:21] a. Gen. 11:5; Ex. 3:8; Ps. 14:2

[18:21] b. Deut. 8:2; 13:3; Josh. 22:22; Luke 16:15; 2 Cor. 11:11

[18:22] a. Gen. 18:16; 19:1

[18:23] a. (Heb. 10:22)

[18:23] b. Ex. 23:7; Num. 16:22; 2 Sam. 24:17; Ps. 11:4–7

[18:23] c. Job 9:22

[18:23] d. Gen. 20:4

[18:25] a. Job 8:20; Is. 3:10, 11

[18:25] b. Deut. 1:16, 17; 32:4; Job

8:3, 20; 34:17; Ps. 58:11; 94:2; Is. 3:10, 11; Rom. 3:5, 6

[18:26] a. Jer. 5:1; Ezek. 22:30

[18:27] a. (Gen. 3:19); Job 4:19; 30:19; 42:6; (1 Cor. 15:47, 48)

[18:30] a. Judg. 6:39

[18:32] a. James 5:16

Genesis 19

[19:1] a. Gen. 18:2, 16, 22

[19:1] b. Gen. 18:1–5

[19:2] a. Gen. 24:31; (Heb. 13:2)

[19:2] b. Gen. 18:4;

24:32

[19:2] c. Luke 24:28

[19:3] a. Gen. 18:6–8; Ex. 23:15; Num. 9:11; 28:17

[19:3] b. Ex. 12:8

[19:5] a. Is. 3:9

[19:5] b. Judg. 19:22

[19:5] c. Gen. 4:1; Rom. 1:24, 27; Jude 7

[19:6] a. Judg. 19:23

[19:8] a. Judg. 19:24

[19:8] b. Gen. 18:5

[19:9] a. 2 Pet. 2:7, 8

[19:9] b. Ex. 2:14

[19:9] * As a resident alien

[19:11] a. Gen. 20:17, 18

[19:12] a. Gen. 7:1; 2 Pet. 2:7, 9

[19:13] a. Gen. 18:20

[19:13] b. Lev. 26:30–33; Deut. 4:26; 28:45; 1 Chr. 21:15

[19:14] a. Matt. 1:18

[19:14] b. Num. 16:21, 24, 26, 45; Rev. 18:4

[19:14] c. Ex. 9:21; Jer. 43:1, 2; Luke 17:28; 24:11

[19:15] a. Ps. 37:2; Rev. 18:4

[19:16] a. Deut. 5:15; 6:21; 7:8; 2 Pet. 2:7

[19:16] b. Ex. 34:7; Ps. 32:10; 33:18, 19; Luke 18:13

[19:16] c. Ps. 34:22

[19:17] a. 1 Kin. 19:3; Jer. 48:6

[19:17] b. Gen. 19:26; Matt. 24:16–18; Luke 9:62; Phil. 3:13, 14

[19:17] c. Gen. 14:10

[19:17] * LXX, Syr., Vg. *they*

[19:17] * Lit. *swept away*

[19:18] a. Acts 10:14

[19:21] a. Job 42:8, 9; Ps. 145:19

[19:22] a. Ex. 32:10; Deut. 9:14

[19:22] b. Gen. 13:10; 14:2

[19:22] * Lit. *Little* or *Insignificant*

[19:24] a. Deut. 29:23; Ps. 11:6; Is. 13:19; Jer. 20:16; 23:14; 49:18; 50:40; Ezek. 16:49, 50; Hos. 11:8; Amos 4:11; Zeph. 2:9; Matt. 10:15; Mark 6:11;

Luke 17:29; Rom. 9:29; 2 Pet. 2:6; Jude 7; Rev. 11:8

[19:24] b. Lev. 10:2

[19:25] a. Ps. 107:34

[19:25] * *devastated*

[19:26] a. Gen. 19:17; Luke 17:32

[19:27] a. Gen. 18:22

[19:28] a. Rev. 9:2; 18:9

[19:29] a. Gen. 8:1; 18:23; Deut. 7:8; 9:5, 27

[19:30] a. Gen. 19:17, 19

[19:31] a. Gen. 16:2, 4; 38:8, 9; Deut. 25:5

[19:32] a. (Mark 12:19)

[19:32] * Lit. *seed*

[19:34] * Lit. *seed*

[19:37] a. Num. 25:1; Deut. 2:9

[19:38] a. Num. 21:24; Deut. 2:19

Genesis 20

[20:1] a. Gen. 18:1

[20:1] b. Gen. 12:9; 16:7, 14

[20:1] c. Gen. 26:1, 6

[20:2] a. Gen. 12:11–

13; 26:7

[20:2] b. Gen. 12:15

[20:3] a. Ps. 105:14

[20:3] b. Job 33:15

[20:3] c. Gen. 20:7

[20:3] * Lit. *married to a husband*

[20:4] a. Gen. 18:23–25; Num. 16:22

[20:5] a. 1 Kin. 9:4; 2 Kin. 20:3; Ps. 7:8; 26:6

[20:5] * *innocence*

[20:6] a. Gen. 31:7; 35:5; Ex. 34:24; 1 Sam. 25:26, 34

[20:6] b. Gen. 39:9;
2 Sam. 12:13

[20:7] a. 1 Sam. 7:5;
2 Kin. 5:11; Job 42:8;
James 5:14, 15

[20:7] b. Gen. 2:17

[20:7] c. Num.
16:32, 33

[20:9] a. Gen. 26:10;
39:9; Ex. 32:21; Josh.
7:25

[20:9] b. Gen. 34:7

[20:9] * *sinned
against*

[20:11] a. Gen.
42:18; Neh. 5:15; Ps.
36:1; Prov. 16:6

[20:11] b. Gen. 12:12; 26:7

[20:12] a. Gen. 11:29

[20:13] a. Gen. 12:1–9, 11; (Heb. 11:8)

[20:13] b. Gen. 12:13; 20:5

[20:14] a. Gen. 12:16

[20:15] a. Gen. 13:9; 34:10; 47:6

[20:16] a. 1Gen. 26:11

[20:16] b. Mal. 2:9

[20:16] * Lit. *is a covering of the eyes for you to all*

[20:16] * Or *justified*

[20:17] a. Num. 12:13; 21:7; Job 42:9; (James 5:16)

[20:17] b. Gen. 21:2

[20:18] a. Gen. 12:17

Genesis 21

[21:1] a. 1 Sam. 2:21

[21:1] b. Gen. 17:16, 19, 21; 18:10, 14; (Gal. 4:23, 28)

[21:2] a. Acts 7:8; Gal. 4:22; Heb. 11:11, 12

[21:2] b. Gen. 17:21; 18:10, 14; Gal. 4:4

[21:3] a. Gen. 17:19, 21

[21:3] * Lit. *Laughter*

[21:4] a. Acts 7:8

[21:4] b. Gen. 17:10, 12; Lev. 12:3

[21:5] a. Gen. 17:1, 17

[21:6] a. Gen. 18:13; Ps. 126:2; Is. 54:1

[21:6] b. Luke 1:58

[21:6] * Lit. *made laughter for me*

[21:7] a. Gen. 18:11, 12

[21:9] a. Gen. 16:1, 4, 15

[21:9] b. (Gal. 4:29)

[21:9] * Lit. *laughing*

[21:10] a. Gen. 25:6; 36:6, 7; Gal. 3:18; 4:30

[21:11] a. Gen. 17:18

[21:11] * *distressing*

[21:12] a. Matt. 1:2; Luke 3:34; (Rom. 9:7, 8); Heb. 11:18

[21:13] a. Gen. 16:10; 17:20; 21:18; 25:12–18

[21:13] * *descendant*

[21:14] a. John 8:35

[21:14] * A water

bottle made of skins

[21:17] a. Ex. 3:7; Deut. 26:7; Ps. 6:8

[21:17] b. Gen. 22:11

[21:18] a. Gen. 16:10; 21:13; 25:12–16

[21:19] a. Gen. 3:7; Num. 22:31; 2 Kin. 6:17; Luke 24:31

[21:20] a. Gen. 28:15; 39:2, 3, 21

[21:20] b. Gen. 16:12

[21:21] a. Gen. 24:4

[21:22] a. Gen. 20:2, 14; 26:26

[21:22] b. Gen. 26:28; Is. 8:10

[21:23] a. Josh. 2:12; 1 Sam. 24:21

[21:23] * *take an oath*

[21:25] a. Gen. 26:15, 18, 20–22

[21:27] a. Gen. 26:31; 31:44; 1 Sam. 18:3

[21:27] * *treaty*

[21:29] a. Gen. 33:8

[21:30] a. Gen. 31:48, 521blockquote>

> [21:31] a. Gen. 21:14;

26:33

[21:31] * Lit. *Well of the Oath* or *Well of the Seven*

[21:33] a. Gen. 4:26; 12:8; 13:4; 26:25

[21:33] b. Gen. 35:11; Ex. 15:18; Deut. 32:40; 33:27; Ps. 90:2; 93:2; Is.

40:28; Jer. 10:10; Hab. 1:12; Heb. 13:8

Genesis 22

[22:1] a. Deut. 8:2, 16; 1 Cor. 10:13; Heb. 11:17; (James 1:12–14; 1 Pet. 1:7)

[22:2] a. Gen. 22:12, 16; John 3:16; Heb. 11:17; 1 John 4:9

[22:2]
b.
John
5:20

[22:2]
c. 2
Chr.
3:1

[22:2]
d.
Gen.
8:20;
31:54

[22:5]
a.
(Heb.
11:19)

[22:5]
* Or
*young
man*

[22:6]
a.
John
19:17

[22:7] * Or *goat*

[22:8] a. John 1:29, 36

[22:8] b. Ex. 12:3–6

[22:9] a. (Heb. 11:17–19; James 2:21)

[22:11] a. Gen. 16:7–11; 21:17, 18;

31:11

[22:12]
a. 1
Sam.
15:22

[22:12]
b.
Gen.
26:5;
James
2:21,
22

[22:12]
c.
Gen.
22:2,
16;
John
3:16

[22:14]
*
Heb.
YHWH
Yireh

[22:16]
a. Ps.
105:9;

Luke 1:73; (Heb. 6:13, 14)

[22:17] a. Gen. 17:16; 26:3, 24

[22:17] b. Gen. 15:5; 26:4; Deut. 1:10; Jer. 33:22; Heb. 11:12

[22:17] c. Gen. 13:16; 32:12; 1 Kin. 4:20

[22:17]
d.
Gen.
24:60

[22:18]
a.
Gen.
12:3;
18:18;
26:4;
Matt.
1:1;
Luke
3:34;
(Acts
3:25,
26);
Gal.
3:8,
9,
16,
18

[22:18]
b.
Gen.
18:19;
22:3,
10;
26:5

[22:19]
a.
Gen.

21:31

[22:20] a. Gen. 11:29; 24:15

[22:21] a. Job 1:1

[22:21] b. Job 32:2

[22:23] a. Gen. 24:15

[22:23] * *Rebecca,* Rom. 9:10

Genesis 23

[23:2] a. Gen. 35:27; Josh. 14:15; 15:13; 21:11

[23:2] b. Gen. 13:18; 23:19

[23:3] a. Gen. 10:15; 15:20; 2 Kin. 7:6

[23:4] a. (Gen. 17:8); Lev. 25:23; 1 Chr. 29:15; Ps. 39:12;

105:12; 119:19; (Heb. 11:9, 13)

[23:4] b. Acts 7:5, 16

[23:6] a. Gen. 13:2; 14:14; 24:35

[23:6] * Lit. *prince of God*

[23:8] * *entreat*

[23:9] a. Gen.

25:9

[23:10]
a.
Gen.
23:18;
34:20,
24;
Ruth
4:1,
4, 11

[23:11]
a. 2
Sam.
24:21–
24

[23:15]
a.
Ex.
30:13;
Ezek.
45:12

[23:16]
a. 2
Sam.
14:26;
Jer.
32:9,
10;
Zech.

11:12

[23:17]
a.
Gen.
25:9;
49:29–
32;
50:13;
Acts
7:16

[23:20]
a.
Jer.
32:10,
11

Genesis 24

[24:1]
a.
Gen.
18:11;
21:5

[24:1]
b.
Gen.
12:2;
13:2;
24:35;
Ps.
112:3;

Prov. 10:22; (Gal. 3:9)

[24:2] a. Gen. 15:2

[24:2] b. Gen. 24:10; 39:4–6

[24:2] c. Gen. 47:29; 1 Chr. 29:24

[24:3] a. Gen. 14:19, 22

[24:3]

b. Gen. 26:35; 28:2; Ex. 34:16; Deut. 7:3; 2 Cor. 6:14–17

[24:3] * *take an oath*

[24:4] a. Gen. 28:2

[24:4] b. Gen. 12:1; Heb. 11:15

[24:7] a.

Gen.
12:1;
24:3

[24:7]
b.
Gen.
12:7;
13:15;
15:18;
17:8;
Ex.
32:13;
Deut.
1:8;
34:4;
Acts
7:5

[24:7]
c.
Gen.
16:7;
21:17;
22:11;
Ex.
23:20,
23;
33:2;
Heb.
1:4,
14

[24:7]
* Lit.

seed

[24:8] a. Josh. 2:17–20

[24:10] a. Gen. 24:2, 22

[24:10] b. Gen. 11:31, 32; 22:20; 27:43; 29:5

[24:11] a. Ex. 2:16; 1 Sam. 9:11

[24:12]

a. Gen. 24:27, 42, 48; 26:24; 32:9; Ex. 3:6, 15

[24:12] b. Gen. 27:20; Neh. 1:11; Ps. 37:5

[24:13] a. Gen. 24:43

[24:13] b. Ex. 2:16

[24:14] a. Judg.

6:17, 37; 1 Sam. 14:10; 16:7; 20:7; 2 Kin. 20:9; Prov. 16:33; Acts 1:26

[24:15] a. Is. 65:24

[24:15] b. Gen. 24:45; 25:20

[24:15] c. Gen. 22:20, 23

[24:15] * *Rebecca,* Rom. 9:10

[24:16] a. Gen. 12:11; 26:7; 29:17

[24:18] a. Gen. 24:14, 46; (1 Pet. 3:8, 9)

[24:21] a. Gen. 24:12–14, 27, 52

[24:22] a. Gen. 24:47; Ex. 32:2, 3; Is. 3:19–

21

[24:23] * *to spend the night*

[24:24] a. Gen. 22:23; 24:15

[24:26] a. Gen. 24:48, 52; Ex. 4:31

[24:27] a. Gen. 24:12, 42, 48; Ex. 18:10; Ruth 4:14; 1

Sam. 25:32, 39; 2 Sam. 18:28; Luke 1:68

[24:27] b. Gen. 32:10; Ps. 98:3

[24:27] c. Gen. 24:21, 48

[24:29] a. Gen. 29:5, 13

[24:31] a. Gen. 26:29; Judg. 17:2;

Ruth 3:10; Ps. 115:15

[24:32] a. Gen. 43:24; Judg. 19:21

[24:32] b. Gen. 19:2; John 13:5, 13–15

[24:33] a. Job 23:12; John 4:34; Eph. 6:5–7

[24:35] a.

Gen. 13:2; 24:1

[24:36] a. Gen. 21:1–7

[24:36] b. Gen. 21:10; 25:5

[24:37] a. Gen. 24:2–4

[24:38] a. Gen. 24:4

[24:39] a. Gen. 24:5

[24:40] a. Gen. 24:7

[24:40] b. Gen. 5:22, 24; 17:1; 1 Kin. 8:23

[24:40] * *make your way successful*

[24:41] a. Gen. 24:8

[24:42] a. Gen. 24:12

[24:43]
a.
Gen.
24:13

[24:45]
a.
Gen.
24:15

[24:45]
b. 1
Sam.
1:13

[24:48]
a.
Gen.
24:26,
52

[24:48]
b.
Gen.
22:23;
24:27;
Ps.
32:8;
48:14;
Is.
48:17

[24:49] a. Gen. 47:29; Josh. 2:14

[24:50] a. Ps. 118:23; Matt. 21:42; Mark 12:11

[24:50] b. Gen. 31:24, 29

[24:51] a. Gen. 20:15

[24:52] a. Gen. 24:26, 48

[24:53] a. Gen. 24:10, 22; Ex. 3:22; 11:2; 12:35

[24:53] b. 2 Chr. 21:3; Ezra 1:6

[24:54] a. Gen. 24:56, 59; 30:25

[24:56] * *delay*

[24:59] a. Gen.

35:8

[24:60] a. Gen. 17:16

[24:60] b. Gen. 22:17; 28:14

[24:62] a. Gen. 16:14; 25:11

[24:63] a. Josh. 1:8; Ps. 1:2; 77:12; 119:15, 27, 48; 143:5; 145:5

[24:64] a. Josh. 15:18

[24:67] a. Gen. 25:20; 29:20; Prov. 18:22

[24:67] b. Gen. 23:1, 2; 38:12

Genesis 25

[25:1] a. 1 Chr. 1:32, 33

[25:2] a. 1 Chr. 1:32, 33

[25:5]
a.
Gen.
24:35,
36

[25:6]
a.
Gen.
21:14

[25:6]
b.
Judg.
6:3

[25:8]
a.
Gen.
15:15;
47:8,
9

[25:8]
b.
Gen.
25:17;
35:29;
49:29,
33

[25:9]
a.
Gen.
35:29;
50:13

[25:9]
b.
Gen.
23:9,
17;
49:30

[25:10]
a.
Gen.
23:3–
16

[25:10]
b.
Gen.
49:31

[25:11]
a.
Gen.
16:14

[25:12]
a.
Gen.

11:10,
27;
16:15

[25:13]
a. 1
Chr.
1:29–
31

[25:15]
* MT
Hadad

[25:16]
a.
Gen.
17:20

[25:16]
*
camps

[25:17]
a.
Gen.
25:8;
49:33

[25:18]

a. Gen. 20:1; 1 Sam. 15:7

[25:18] b. Gen. 16:12

[25:18] * *fell*

[25:19] a. Gen. 36:1, 9

[25:19] b. Matt. 1:2

[25:20] a. Gen. 22:23; 24:15, 29,

[25:20] b. Gen. 24:29

[25:21] a. 1 Sam. 1:17; 1 Chr. 5:20; 2 Chr. 33:13; Ezra 8:23; Ps. 127:3

[25:21] b. Rom. 9:10–13

[25:22] a. 1 Sam. 1:15; 9:9; 10:22

[25:23] a. Gen. 17:4–6, 16; 24:60; Num. 20:14; Deut. 2:4–8

[25:23] b. 2 Sam. 8:14

[25:23] c. Gen. 27:29, 40; Mal. 1:2, 3; Rom. 9:12

[25:25] a. Gen.

27:11, 16, 23

[25:25] * Lit. *Hairy*

[25:26] a. Hos. 12:3

[25:26] b. Gen. 27:36

[25:26] * *Supplanter* or *Deceitful,* lit. *One Who Takes the Heel*

[25:27] a. Gen. 27:3, 5

[25:27] b. Job 1:1, 8

[25:27] c. Heb. 11:9

[25:27] * Lit. *complete*

[25:28] a. Gen. 27:4, 19, 25, 31

[25:28] b. Gen. 27:6–10

[25:30] * Lit. *Red*

[25:32] a. Matt. 16:26; Mark 8:36, 37

[25:33] a. Heb. 12:16

[25:33] * *Take an oath*

[25:34] a. Eccl. 8:15; Is. 22:13; 1 Cor. 15:32

[25:34] b. Heb. 12:16, 17

Genesis 26

[26:1] a. Gen. 12:10

[26:1] b. Gen. 20:1,

2

[26:2] a. Gen. 12:7; 17:1; 18:1; 35:9

[26:2] b. Gen. 12:1

[26:3] a. Gen. 20:1; Ps. 39:12; Heb. 11:9

[26:3] b. Gen. 28:13, 15

[26:3] c. Gen. 12:2

[26:3] d. Gen. 12:7; 13:15; 15:18

[26:3] e. Gen. 22:16; Ps. 105:9

[26:4] a. Gen. 15:5; 22:17; Ex. 32:13

[26:4] b. Gen. 12:3;

22:18; Gal. 3:8

[26:5] a. Gen. 22:16, 18

[26:7] a. Gen. 12:13; 20:2, 12, 13

[26:7] b. Prov. 29:25

[26:7] c. Gen. 12:11; 24:16; 29:17

[26:8] * *caressing*

[26:10] a. Gen. 20:9

[26:11] a. Ps. 105:15

[26:12] a. Matt. 13:8, 23; Mark 4:8

[26:12] b. Gen. 24:1; 25:8, 11; 26:3; Job 42:12; Prov. 10:22

[26:13] a. Gen. 24:35; (Prov. 10:22)

[26:14] a. Gen. 37:11; Eccl. 4:4

[26:15] a. Gen. 21:25, 30

[26:16] a. Ex. 1:9

[26:17] * *camped*

[26:18] a. Gen. 21:31

[26:20] a. Gen. 21:25

[26:20] * Lit. *Quarrel*

[26:21] * Lit. *Enmity*

[26:22] a. Gen. 17:6; 28:3; 41:52; Ex. 1:7

[26:22] * Lit. *Spaciousness*

[26:24] a. Gen. 26:2

[26:24] b. Gen. 17:7, 8; 24:12; Ex. 3:6; Acts 7:32

[26:24] c. Gen. 15:1

[26:24] d. Gen. 26:3, 4

[26:25] a. Gen. 12:7, 8; 13:4, 18; 22:9; 33:20

[26:25] b. Gen. 21:33; Ps. 116:17

[26:26] a. Gen. 21:22

[26:27] a. Judg. 11:7

[26:27] b. Gen. 26:16

[26:28] a. Gen. 21:22, 23

[26:28] * *treaty*

[26:29] a. Gen. 24:31; Ps. 115:15

[26:30] a. Gen. 19:3

[26:31] a. Gen. 21:31

[26:33] a. Gen. 21:31; 28:10

[26:33] * Lit. *Oath* or *Seven*

[26:33] * Lit. *Well of the Oath* or *Well of the Seven*

[26:34] a. Gen. 28:8; 36:2

[26:35] a. Gen. 27:46; 28:1, 8

Genesis 27

[27:1] a. Gen. 35:28

[27:1] b. Gen. 48:10; 1 Sam. 3:2

[27:2] a. (Prov. 27:1; James 4:14)

[27:3] a. Gen. 25:27, 28

[27:4] a. Gen. 27:19, 25, 27, 31; 48:9, 15, 16; 49:28; Deut. 33:1; Heb. 11:20

[27:4] * *tasty*

[27:7] * *tasty*

[27:8] a. Gen. 27:13, 43

[27:9] a. Gen. 27:4

[27:10] a. Gen. 27:4; 48:16

[27:11] a. Gen. 25:25

[27:12] a. Gen. 27:21, 22

[27:12] b. Gen. 9:25; Deut. 27:18

[27:13] a. Gen. 43:9; 1 Sam. 25:24; 2 Sam. 14:9; Matt. 27:25

[27:14] a. Prov. 23:3; Luke 21:34

[27:14] * *tasty*

[27:15] a. Gen. 27:27

[27:19] a. Gen. 27:4

[27:21] a. Gen. 27:12

[27:23] a. Gen. 27:16

[27:25] a. Gen. 27:4, 10, 19, 31

[27:27] a. Gen. 29:13

[27:27] b. Song 4:11; Hos. 14:6

[27:28] a. Heb. 11:20

[27:28] b. Gen. 27:39; Deut. 33:13, 28; 2 Sam. 1:21; Ps. 133:3; Prov. 3:20;

Mic. 5:7; Zech. 8:12

[27:28] c. Gen. 45:18; Num. 18:12

[27:28] d. Deut. 7:13; 33:28

[27:29] a. Gen. 9:25; 25:23; Is. 45:14; 49:7; 60:12, 14

[27:29] b. Gen. 37:7, 10; 49:8

[27:29] c. Gen. 12:2, 3; Zeph. 2:8, 9

[27:31] a. Gen. 27:4

[27:31] * *tasty*

[27:33] a. Gen. 25:23; 28:3, 4; Num. 23:20; Rom. 11:29

[27:34] a. (Heb. 12:17)

[27:36] a. Gen. 25:26, 32–34

[27:36] * *Supplanter* or *Deceitful,* lit. *One Who Takes the Heel*

[27:37] a. 2 Sam. 8:14

[27:37] b. Gen. 27:28, 29

[27:37] * *provided support for*

[27:38] a. Heb. 12:17

[27:39] a. Gen. 27:28; Heb. 11:20

[27:39] * *fertility*

[27:40] a. Gen. 25:23; 27:29; 2 Sam. 8:14; (Obad. 18–20)

[27:40] b. 2 Kin. 8:20–22

[27:41] a. Gen. 26:27; 32:3–11; 37:4, 5, 8

[27:41] b. Gen. 50:2–4, 10

[27:41] c. Obad. 10

[27:41] * *are soon here*

[27:42] a. Ps. 64:5

[27:43] a. Gen. 11:31; 25:20; 28:2, 5

[27:44] a. Gen. 31:41

[27:46] a. Gen. 26:34, 35; 28:8

[27:46] b. Gen. 24:3

Genesis 28

[28:1] a. Gen. 27:33

[28:1] b. Gen. 24:3

[28:1] * *commanded*

[28:2] a. Hos. 12:12

[28:2] b. Gen. 25:20

[28:2] c. Gen. 22:23

[28:2] d. Gen. 24:29; 27:43; 29:5

[28:3] a. Gen. 17:16; 35:11; 48:3

[28:3] b. Gen. 26:4, 24

[28:4] a. Gen. 12:2, 3; 22:17; Gal. 3:8

[28:4] b. Gen. 17:8; 23:4; 36:7; 1 Chr. 29:15; Ps. 39:12

[28:4] * Lit. *Of your sojournings*

[28:8] a. Gen. 24:3; 26:34, 35; 27:46

[28:9] a. Gen. 26:34, 35

[28:9] b. Gen. 36:2, 3

[28:9] c. Gen. 25:13

[28:10] a. Gen.

26:23; 46:1; Hos. 12:12

[28:10] b. Gen. 12:4, 5; 27:43; 29:4; 2 Kin. 19:12; Acts 7:2

[28:12] a. Gen. 31:10; 41:1; Num. 12:6

[28:12] b. John 1:51; Heb. 1:4, 14

[28:13] a. Gen. 35:1; 48:3; Amos 7:7

[28:13] b. Gen. 26:24

[28:13] c. Gen. 13:15, 17; 26:3; 35:12

[28:13] d. Gen. 13:16; 22:17

[28:14] a. Gen. 13:14, 15; Deut. 12:20

[28:14] b. Gen. 12:3; 18:18; 22:18; 26:4; Matt. 1:2; Luke 3:34; Gal. 3:8

[28:15] a. Gen. 26:3, 24; 31:3

[28:15] b. Gen. 48:16; Num. 6:24; Ps. 121:5, 7, 8

[28:15] c. Gen. 35:6; 48:21; Deut. 30:3

[28:15] d. Lev. 26:44; Deut. 7:9; 31:6, 8; Josh. 1:5; 1 Kin. 8:57; Heb. 13:5

[28:15] e. Num. 23:19

[28:15] * *protect*

[28:16] a. Ex. 3:5; Josh. 5:15; Ps. 139:7–12

[28:18] a. Gen. 31:13, 45

[28:18] b. Lev. 8:10–12

[28:19] a. Judg. 1:23, 26

[28:19] * Lit. *House of God*

[28:20] a. Gen. 31:13; Judg. 11:30; 2 Sam. 15:8

[28:20] b. Gen. 28:15

[28:20] c. 1 Tim. 6:8

[28:21] a. Judg. 11:31; 2 Sam. 19:24, 30

[28:21] b. Deut. 26:17; 2 Sam. 15:8

[28:22] a. Gen. 35:7, 14

[28:22] b. Gen. 14:20; (Lev. 27:30); Deut. 14:22

[28:22] * *tithe*

Genesis 29

[29:1] a. Gen. 25:6; Num. 23:7; Judg. 6:3, 33; Hos. 12:12

[29:2] a. Gen. 24:10, 11; Ex. 2:15, 16

[29:4] a. Gen. 11:31; 28:10

[29:5] a. Gen. 24:24, 29; 28:2

[29:6] a. Gen. 43:27

[29:6] b. Gen. 24:11; Ex. 2:16, 17

[29:7] * *early in the day*

[29:9] a. Ex. 2:16

[29:10] a. Ex. 2:17

[29:11] a. Gen. 33:4; 45:14, 15

[29:12] a. Gen. 13:8; 14:14, 16; 28:5

[29:12] b. Gen. 24:28

[29:13] a. Gen.

24:29–31; Luke 15:20

[29:14] a. Gen. 2:23; 37:27; Judg. 9:2; 2 Sam. 5:1; 19:12, 13

[29:15] a. Gen. 30:28; 31:41

[29:17] a. Gen. 12:11, 14; 26:7

[29:17] * Or *weak*

[29:18] a. Gen. 31:41; 2 Sam. 3:14; Hos. 12:12

[29:20] a. Gen. 30:26; Hos. 12:12

[29:21] a. Judg. 15:1

[29:22] a. 1Judg. 14:10; John 2:1, 2

[29:24] a. Gen. 30:9, 10

[29:25] a. Gen. 27:35; 31:7; 1 Sam. 28:12

[29:26] * Lit. *place*

[29:27] a. Gen. 31:41; Judg. 14:2

[29:29] a. Gen. 30:3–5

[29:30] a. Gen. 29:17–20; Deut. 21:15–17

[29:30] b. Gen. 30:26; 31:41; Hos. 12:12

[29:31] a. Ps. 127:3

[29:31] b. Gen. 30:1

[29:31] * Lit. *hated*

[29:32] a. Gen. 16:11; 31:42; Ex. 3:7; 4:31; Deut. 26:7; Ps. 25:18

[29:32] * Lit. *See, a Son*

[29:33] * Lit. *hated*

[29:33] * Lit. *Heard*

[29:34] * Lit. *Attached*

[29:35] a. Gen. 49:8; Matt. 1:2

[29:35] * Lit. *Praise*

Genesis 30

[30:1] a. Gen. 16:1, 2; 29:31

[30:1] b. Gen. 37:11

[30:1] c. 1 Sam. 1:5, 6; (Job 5:2)

[30:2] a. Gen. 16:2; 1 Sam. 1:5

[30:3] a. Gen. 16:2

[30:3] b. Gen. 50:23; Job 3:12

[30:3] c. Gen. 16:2, 3

[30:3] * Lit. *be built up by her*

[30:4] a. Gen. 16:3, 4

[30:6] a. Gen. 18:25; Ps. 35:24; 43:1; Lam.

3:59

[30:6] * Lit. *Judge*

[30:8] * Lit. *wrestlings of God*

[30:8] * Lit. *My Wrestling*

[30:9] a. Gen. 30:4

[30:11] * So with Qr., Syr., Tg.; Kt., LXX, Vg. *in fortune*

[30:11] * Lit. *Troop* or *Fortune*

[30:13] a. Prov. 31:28; Luke 1:48

[30:13] * Lit. *Happy*

[30:14] a. Gen. 25:30

[30:15] a. (Num. 16:9, 13)

[30:18] * Lit. *Wages*

[30:20] * Lit. *Dwelling*

[30:21] a. Gen. 34:1

[30:21] * Lit. *Judgment*

[30:22] a. Gen. 19:29; 1 Sam. 1:19, 20

[30:22] b. Gen. 29:31

[30:23] a. 1 Sam. 1:6; Is. 4:1; Luke 1:25

[30:24] a. Gen.

35:16–18

[30:24] * Lit. *He Will Add*

[30:25] a. Gen. 24:54, 56

[30:25] b. Gen. 18:33

[30:26] a. Gen. 29:18–20, 27, 30; Hos. 12:12

[30:26] b. Gen. 26:24; 39:3; Is. 61:9

[30:28] a. Gen. 29:15; 31:17, 41

[30:29] a. Gen. 31:6, 38–40; Matt. 24:45; Titus 2:10

[30:30] a. (1 Tim. 5:8)

[30:30] * Lit. *at my foot*

[30:32] a. Gen. 31:8

[30:33] a. Ps. 37:6

[30:35] a. Gen. 31:9–12

[30:37] a. Gen. 31:9–12

[30:43] a. Gen. 12:16; 30:30

[30:43] b. Gen. 13:2; 24:35; 26:13, 14

Genesis 31

[31:1] a. Ps. 49:16

[31:2] a. Gen. 4:5

[31:2] b. Deut. 28:54

[31:3] a. Gen. 28:15, 20, 21; 32:9

[31:3] b. Gen. 46:4

[31:5] a. Gen. 31:2, 3

[31:5] b. Gen. 21:22; 28:13, 15; 31:29, 42, 53; Is. 41:10; Heb. 13:5

[31:5] * Lit. *face*

[31:6] a. Gen. 30:29; 31:38–41

[31:7] a. Gen. 29:25; 31:41

[31:7] b. Num. 14:22; Neh. 4:12; Job 19:3; Zech. 8:23

[31:7] c. Gen. 15:1; 20:6; 31:29; Job 1:10; Ps. 37:28; 105:14

[31:8] a. Gen. 30:32

[31:9] a. Gen. 31:1, 16

[31:11] a. Gen. 16:7–11; 22:11, 15; 31:13; 48:16

[31:12] a. Gen. 31:42; Ex. 3:7; Ps. 139:3; Eccl. 5:8

[31:13] a. Gen. 28:16–22; 35:1, 6, 15

[31:13] b. Gen. 31:3; 32:9

[31:14] a. Gen. 2:24

[31:15] a. Gen.

29:15, 20, 23, 27; Neh. 5:8

[31:18] a. Gen. 17:8; 33:18; 35:27

[31:19] a. Gen. 31:30, 34; 35:2; Judg. 17:5; 1 Sam. 19:13; Hos. 3:4

[31:19] * Heb. *teraphim*

[31:21] a. Gen. 46:28; 2 Kin. 12:17; Luke 9:51, 53

[31:21] * Lit. *set his face toward*

[31:23] a. Gen. 13:8

[31:24] a. Gen. 20:3; 31:29; 46:2–4; Job 33:15; Matt. 1:20

[31:24] b. Gen. 24:50; 31:7, 29

[31:26] a. 1 Sam. 30:2

[31:28] a. Gen. 31:55; Ruth 1:9, 14; 1 Kin. 19:20; Acts 20:37

[31:28] b. 1 Sam. 13:13

[31:29] a. Gen. 28:13; 31:5, 24, 42, 53

[31:29] b. Gen. 31:24

[31:30] a. Gen. 31:19; Josh. 24:2; Judg. 17:5; 18:24

[31:31] a. Gen. 26:7; 32:7, 11

[31:32] a. Gen. 44:9

[31:34] * Heb. *teraphim*

[31:34] * Lit. *felt*

[31:35] a. Ex. 20:12; Lev. 19:32

[31:35] * Heb. *teraphim*

[31:36] * *transgression*

[31:39] a. Ex. 22:10

[31:39] b. Ex. 22:10–13

[31:41] a. Gen. 29:20, 27–30

[31:41] b. Gen. 31:7

[31:42] a. Gen. 31:5, 29, 53; Ps. 124:1, 2

[31:42] b. Gen. 31:53; Is. 8:13

[31:42] c. Gen. 29:32; Ex. 3:7

[31:42] d. Gen. 31:24, 29; 1 Chr. 12:17

[31:44] a. Gen. 21:27, 32; 26:28

[31:44] b. Josh. 24:27

[31:44] * *treaty*

[31:45] a. Gen. 28:18; 35:14; Josh. 24:26, 27

[31:47] * Lit., in Aram., *Heap of Witness*

[31:47] * Lit., in Heb., *Heap of Witness*

[31:48] a. Josh. 24:27

[31:49] a. Judg. 10:17; 11:29; 1 Sam. 7:5, 6

[31:49] * Lit. *Watch*

[31:53] a. Gen. 16:5

[31:53] b. Gen. 21:23

[31:53] c. Gen. 31:42

[31:53] * A reference to God

[31:55] a. Gen. 29:11, 13; 31:28, 43

[31:55] b. Gen. 28:1

[31:55] c. Gen. 18:33; 30:25; Num. 24:25

Genesis 32

[32:1] a. Num. 22:31; 2 Kin. 6:16, 17; (Ps. 34:7; 91:1; Heb. 1:14)

[32:2] a. Josh. 5:14; Ps. 103:21; 148:2; Luke 2:13

[32:2] * Lit. *Double Camp*

[32:3] a. Gen. 14:6; 33:14, 16

[32:3] b. Gen. 25:30;

36:6–9; Deut. 2:5;
Josh. 24:4

[32:3] * Lit. *field*

[32:4] a. Prov. 15:1

[32:5] a. Gen. 30:43

[32:5] b. Gen. 33:8,
15

[32:6] a. Gen. 33:1

[32:7] a. Gen. 32:11;
35:3

[32:8] * Lit. *strikes*

[32:9] a. (Ps. 50:15)

[32:9] b. Gen. 28:13;
31:42

[32:9] c. Gen. 31:3, 13

[32:10] a. Gen. 24:27

[32:10] b. Job 8:7

[32:11] a. Ps. 59:1, 2

[32:11] b. Hos. 10:14

[32:11] * Lit. *strike*

[32:12] a. Gen. 28:13–15

[32:12] b. Gen. 22:17

[32:13] a. Gen. 43:11

[32:13] * *he had received*

[32:20] a. (Prov. 21:14)

[32:22] a. Num. 21:24; Deut. 3:16; Josh. 12:2

[32:23] * *across*

[32:24] a. Josh. 5:13–15; Hos. 12:2–4

[32:24] * *dawn*

[32:25] a. Matt. 26:41; 2 Cor. 12:7

[32:25] * *struck*

[32:26] a. Luke 24:28

[32:26] b. Hos. 12:4

[32:28] a. Gen.

35:10; 1 Kin. 18:31; 2 Kin. 17:34

[32:28] b. Hos. 12:3, 4

[32:28] c. Gen. 25:31; 27:33

[32:28] * Lit. *Prince with God*

[32:29] a. Judg. 13:17, 18

[32:29] b. Gen. 35:9

[32:30] a. Gen. 16:13; Ex. 24:10, 11; 33:20; Num. 12:8; Deut. 5:24; Judg. 6:22; Is. 6:5; (Matt. 5:8; 1 Cor. 13:12)

[32:30] * Lit. *Face of God*

[32:31] * Lit. *Face of God;* same as *Peniel,* v. 30

[32:32] * *struck*

Genesis 33

[33:1] a. Gen. 32:6

[33:3] a. Gen. 18:2; 42:6

[33:4] a. Gen. 32:28

[33:4] b. Gen. 45:14, 15

[33:5] a. Gen. 48:9; (Ps. 127:3); Is. 8:18

[33:8] a. Gen. 32:13–16

[33:8] b. Gen. 32:5

[33:10] a. Gen. 43:3; 2 Sam. 3:13; 14:24, 28, 32

[33:11] a. Judg. 1:15; 1 Sam. 25:27; 30:26

[33:11] b. Gen. 30:43; Ex. 33:19

[33:111] c. 2 Kin. 5:23

[33:11] * Lit. *all*

[33:14] a. Gen. 32:3; 36:8

[33:14] * *can stand*

[33:15] a. Gen. 34:11; 47:25; Ruth 2:13

[33:17] a. Josh. 13:27; Judg. 8:5; Ps.

60:6

[33:17] * *shelters*

[33:17] * Lit. *Booths*

[33:18] a. John 3:23

[33:18] b. Gen. 12:6; 35:4; Josh. 24:1; Judg. 9:1; Ps. 60:6

[33:18] * Or *to Shalem, a city of*

[33:19] a. Josh. 24:32; John 4:5

[33:19] * Lit. *the field*

[33:20] a. Gen. 35:7

[33:20] * Lit. *God, the God of Israel*

Genesis 34

[34:1] a. Gen. 30:21

[34:2] a. Gen. 20:2

[34:3] * Lit. *clung to*

[34:3] * *tenderly*

[34:4] a. Judg. 14:2

[34:5] a. 2 Sam. 13:22

[34:5] * *kept silent*

[34:7] a. Deut. 22:20–30; Josh. 7:15; Judg. 20:6

[34:7] b. Deut. 23:17; 2 Sam. 13:12

[34:12] a. Ex. 22:16, 17; Deut. 22:29

[34:12] * *bride-price*

[34:13] a. Gen. 31:7; Ex. 8:29

[34:14] a. Ex. 12:48

[34:14] b. Josh. 5:2–9

[34:19] a. 1 Chr. 4:9

[34:20] a. Gen. 19:1; 23:10; Ruth 4:1, 11; 2 Sam. 15:2

[34:24] a. Gen. 23:10, 18

[34:25] a. Gen. 29:33, 34; 42:24; 49:5–7

[34:26] a. Gen. 49:5, 6

[34:30] a. Gen. 49:6

[34:30] b. Josh. 7:25

[34:30] c. Ex. 5:21; 1 Sam. 13:4; 2 Sam. 10:6

[34:30] d. Gen. 46:26, 27; Deut. 4:27; 1 Chr. 16:19; Ps. 105:12

Gen1esis 35

[35:1] a. Gen. 28:19; 31:13

[35:1] b. Gen. 28:13

[35:1] c. Gen. 27:43

[35:2] a. Gen. 18:19; Josh. 24:15

[35:2] b. Gen. 31:19, 30, 34; Josh. 24:2, 14, 23

[35:2] c. Ex. 19:10, 14; Lev. 13:6

[35:3] a. Gen. 32:7, 24; Ps. 107:6

[35:3] b. Gen. 28:15, 20; 31:3, 42

[35:4] a. Hos. 2:13

[35:4] b. Josh. 24:26; Judg. 9:6

[35:4] * *idols*

[35:5] a. Ex. 15:16; 23:27; (Deut. 2:25; 11:25); Josh. 2:9; 1 Sam. 14:15

[35:6] a. Gen. 28:19, 22; 48:3

[35:7] a. Gen. 33:20; 35:3; Eccl. 5:4

[35:7] b. Gen. 28:13

[35:7] * Lit. *God of the House of God*

[35:8] a. Gen. 24:59

[35:8] * Lit. *Terebinth of Weeping*

[35:9] a. Josh. 5:13; Dan. 10:5

[35:9] b. Gen. 32:29; Hos. 12:4

[35:10] a. Gen. 17:5

[35:10] b. Gen.

32:28

[35:11] a. Gen. 17:1; 28:3; 48:3, 4; Ex. 6:3

[35:11] b. Gen. 9:1, 7

[35:11] c. Gen. 17:5, 6, 16; 28:3; 48:4

[35:12] a. Gen. 12:7; 13:15; 26:3, 4; 28:13; 48:4; Ex. 32:13

[35:13] a. Gen. 17:22; 18:33

[35:13] * *departed*

[35:14] a. Gen. 28:18, 19; 31:45

[35:15] a. Gen. 28:19

[35:17] a. Gen. 30:24; 1 Sam. 4:20

[35:18] * Lit. *Son of My Sorrow*

[35:18] * Lit. *Son of the Right Hand*

[35:19] a. Gen. 48:7

[35:19] b. Ruth 1:2; 4:11; Mic. 5:2; Matt. 2:6

[35:20] a. 1 Sam. 10:2

[35:21] a. Mic. 4:8

[35:22] a. Gen. 49:4; 1 Chr. 5:1

[35:23] a. Gen. 29:31–35; 30:18–20; 46:8; Ex. 1:1–4

[35:27] a. Gen. 13:18; 18:1; 23:19

[35:27] b. Josh. 14:15

[35:27] * Lit. *Town* or *City of Arba*

[35:29] a. Gen. 15:15; 25:8; 49:33

[35:29] b. Gen. 25:9; 49:31

[35:29] * Joined his ancestors

Genesis 36

[36:1] a. Gen. 25:30

[36:2] a. Gen. 26:34; 28:9

[36:2] b. 2 Kin. 7:6

[36:2] c. Gen. 36:25

[36:2] * Or *Oholibamah*

[36:3] a. Gen. 28:9

[36:4] a. 1 Chr. 1:35

[36:5] * Or *Oholibamah*

[36:7] a. Gen. 13:6, 11

[36:7] b. Gen. 17:8; 28:4; Heb. 11:9

[36:8] a. Gen. 32:3; Deut. 2:5; Josh. 24:4

[36:8] b. Gen. 36:1, 19

[36:10] a. 1 Chr. 1:35

[36:11] * *Zephi,* 1 Chr. 1:36

[36:12] a. Ex. 17:8–16; Num. 24:20; Deut. 25:17–19; 1 Sam. 15:2, 3

[36:14] * Or *Oholibamah*

[36:16] * Sam. omits *Chief Korah*

[36:18] * Or *Oholibamah*

[36:20] a. 1 Chr. 1:38–42

[36:20] b. Gen. 14:6; Deut. 2:12, 22

[36:22] * *Homam,* 1 Chr. 1:39

[36:23] * *Alian,* 1 Chr. 1:40

[36:23] * *Shephi,* Chr. 1:40

[36:24] a. Lev. 19:19

[36:24] * So with MT, Vg. (*hot springs*); LXX *Jamin;* Tg. *mighty men;* Talmud *mules*

[36:25] * Or *Oholibamah*

[36:26] * Heb. *Dishan*

[36:26] * *Hamran,* 1 Chr. 1:41

[36:27] * *Jaakan,* 1 Chr. 1:42

[36:28] a. Job 1:1

[36:31] a. Gen. 17:6, 16; 35:11; 1 Chr. 1:43

[36:37] a. Gen. 10:11

[36:39] * Sam., Syr. *Hadad* and 1 Chr. 1:50

[36:39] * *Pai,* 1 Chr. 1:50

[36:40] * *Aliah,* 1 Chr. 1:51

[36:41] * Or *Oholibamah*

[36:43] * Heb. *Edom*

Genesis 37

[37:1] a. Gen. 17:8; 23:4; 28:4; 36:7; Heb. 11:9

[37:1] * *sojourner,* temporary resident

[37:2] a. Gen. 35:25, 26; 1 Sam. 2:22–24

[37:3] a. Gen. 44:20

[37:3] b. Gen. 37:23, 32; Judg. 5:30; 1 Sam. 2:19

[37:4] a. Gen. 27:41; 49:23; 1 Sam. 17:28; John 15:18–20

[37:7] a. Gen. 42:6, 9; 43:26; 44:14

[37:9] a. Gen. 46:29; 47:25

[37:10] a. Gen. 27:29

[37:11] a. Matt. 27:17, 18; Acts 7:9

[37:11] b. Dan. 7:28; Luke 2:19, 51

[37:13] a. Gen. 33:18–20

[37:14] a. Gen. 13:18; 23:2, 19; 35:27; Josh. 14:14, 15; Judg. 1:10

[37:16] a. Song 1:7

[37:17] a. 2 Kin. 6:13

[37:18] a. 1 Sam. 19:1; Ps. 31:13; 37:12, 32; Matt. 21:38; 26:3, 4; 27:1; Mark 14:1; John 11:53; Acts 23:12

[37:19] * Lit. *master of dreams*

[37:20] a. Gen. 37:22; Prov. 1:11

[37:21] a. Gen. 42:22

[37:23] a. Matt. 27:28

[37:25] a. Prov. 30:20

[37:25] b. Gen. 16:11, 12; 37:28, 36; 39:1

[37:25] c. Jer. 8:22

[37:26] a. Gen. 37:20

[37:27] a. 1 Sam. 18:17

[37:27] b. Gen. 42:21

[37:27] c. Gen. 29:14

[37:28] a. Gen. 37:25; Judg. 6:1–3; 8:22, 24

[37:28] b. Gen. 45:4, 5; Ps. 105:17; Acts 7:9

[37:28] c. Matt. 27:9

[37:29] a. Gen. 37:34; 44:13; Job 1:20

[37:30] a. Gen. 42:13, 36

[37:31] a. Gen. 37:3, 23

[37:33] a. Gen. 37:20

[37:34] a. Gen. 37:29; 2 Sam. 3:31

[37:34] b. Gen. 50:10

[37:35] a. 2 Sam. 12:17

[37:35] b. Gen. 25:8; 35:29; 42:38; 44:29, 31

[37:36] a. Gen. 39:1

[37:36] * MT *Medanites*

[38:1] a. 2 Kin. 4:8

[38:2] a. Gen. 34:2

[38:2] b. 1 Chr. 2:3

[38:3] a. Gen. 46:12; Num. 26:19

[38:4] a. Gen. 46:12; Num. 26:19

[38:5] a. Num. 26:20

[38:6] a. Gen. 21:21

[38:6] b. Ruth 4:12

[38:7] a. Gen. 46:12; Num. 26:19

[38:7] b. 1 Chr. 2:3

[38:8] a. Deut. 25:5, 6; Matt. 22:24

[38:9] a. Deut. 25:6

[38:10] a. Gen. 46:12; Num. 26:19

[38:10] * Lit. *was evil in the eyes of*

[38:11] a. Ruth 1:12, 13

[38:11] b. Lev. 22:13

[38:12] a. 2 Sam. 13:39

[38:13] a. Josh. 15:10, 57; Judg. 14:1

[38:14] a. Prov. 7:12

[38:14] b. Gen. 38:11, 26

[38:17] a. Judg. 15:1; Ezek. 16:33

[38:17] b. Gen. 38:20

[38:18] a. Gen. 38:25; 41:42

[38:19] a. Gen. 38:14

[38:21] * *in full view*

[38:24] a. Judg. 19:2

[38:24] b. Lev. 20:14; 21:9; Deut. 22:21

[38:24] * *pregnant*

[38:25] a. Gen. 37:32; 38:18

[38:26] a. Gen. 37:33

[38:26] b. 1 Sam. 24:17

[38:26] c. Gen. 38:14

[38:26] d. Job 34:31, 32

[38:29] a. Gen. 46:12; Num. 26:20; Ruth 4:12; 1 Chr. 2:4; Matt. 1:3

[38:29] * Lit. *Breach* or *Breakthrough*

[38:30] a. Gen. 46:12; 1 Chr. 2:4; Matt. 1:3

Genesis 39

[39:1] a. Gen. 12:10; 43:15

[39:1] b. Gen. 37:36; Ps. 105:17

[39:1] c. Gen. 37:28; 45:4

[39:2] a. Gen. 26:24, 28; 28:15; 35:3; 39:3, 21, 23; 1 Sam. 16:18; 18:14, 28; Acts 7:9

[39:3] a. Ps. 1:3

[39:3] * *to be a success*

[39:4] a. Gen. 18:3; 19:19; 39:21

[39:4] b. Gen. 24:2, 10; 39:8, 22; 41:40

[39:4] * Lit. *in his hand*

[39:5] a. Gen. 18:26; 30:27; 2 Sam. 6:11

[39:6] a. Gen. 29:17; 1 Sam. 16:12

[39:6] * Care

[39:6] * Food

[39:7] a. 2 Sam. 13:11

[39:7] * Lit. *lifted up her eyes toward*

[39:9] a. Lev. 20:10; Prov. 6:29, 32

[39:9] b. Gen. 20:6; 42:18; 2 Sam. 12:13; Ps. 51:4

[39:10] a. Prov. 1:10

[39:12] a. Prov. 7:13

[39:14] a. Gen. 14:13; 41:12

[39:14] * *laugh at*

[39:17] a. Ex. 23:1; Ps. 120:3; Prov. 26:28

[39:19] a. Prov. 6:34, 35

[39:20] a. Ps. 105:18; (1 Pet. 2:19)

[39:20] b. Gen. 40:3, 15; 41:14

[39:21] a. Gen. 39:2; Ex. 3:21; Ps. 105:19; (Prov. 16:7); Dan. 1:9; Acts 7:9, 10

[39:21] * Caused him to be viewed with favor by

[39:22] a. Gen. 39:4; 40:3, 4

[39:23] a. Gen. 39:2, 3

[39:23] * Lit. *his hand*

Genesis 40

[40:1] a. Gen. 40:11, 13; Neh. 1:11

[40:2] a. Prov. 16:14

[40:3] a. Gen. 39:1, 20, 23; 41:10

[40:5] a. Gen. 37:5; 41:1

[40:6] * *dejected*

[40:7] a. Neh. 2:2

[40:8] a. Gen. 41:15

[40:8] b. (Gen. 41:16; Dan. 2:11, 20–22, 27, 28, 47)

[40:12] a. Gen. 40:18; 41:12, 25; Judg. 7:14; Dan. 2:36; 4:18, 19

[40:12] b. Gen. 40:18; 42:17

[40:13] a. 2 Kin. 25:27; Ps. 3:3; Jer. 52:31

[40:13] * *position*

[40:14] a. 1 Sam. 25:31; Luke 23:42

[40:14] b. Gen. 24:49; 47:29; Josh. 2:12; 1 Sam. 20:14, 15; 2 Sam. 9:1; 1 Kin. 2:7

[40:15] a. Gen. 37:26–28

[40:15] b. Gen. 39:20

[40:16] * Or *baskets of white bread*

[40:18] a. Gen. 40:12

[40:19] a. Gen. 40:13

[40:19] b. Deut. 21:22

[40:19] * Lit. *up*

[40:20] a. Matt. 14:6–10

[40:20] b. Mark 6:21

[40:20] c. Gen. 40:13, 19; 2 Kin. 25:27; Jer. 52:31; Matt. 25:19

[40:21] a. Gen. 40:13

[40:21] b. Neh. 2:1

[40:22] a. Gen. 40:19; Deut. 21:23; Esth. 7:10

[40:23] a. Job 19:14; Ps. 31:12; Eccl. 9:15, 16; Is. 49:15; Amos 6:6

Genesis 41

[41:1] a. Gen. 40:5; Judg. 7:13

[41:6] a. Ex. 10:13; Ezek. 17:10

[41:8] a. Dan. 2:1, 3; 4:5, 19

[41:8] b. Ex. 7:11, 22; Is. 29:14; Dan. 1:20; 2:2; 4:7

[41:8] c. Matt. 2:1

[41:9] a. Gen. 40:1, 14, 23

[41:10] a. Gen. 40:2, 3

[41:10] b. Gen. 39:20

[41:11] a. Gen. 40:5; Judg. 7:15

[41:12] a. Gen. 39:14; 43:32

[41:12] b. Gen. 37:36

[41:12] c. Gen. 40:12

[41:13] a. Gen. 40:21, 22

[41:14] a. Ps. 105:20

[41:14] b. Dan. 2:25

[41:14] c. (1 Sam. 2:8)

[41:14] d. 2 Kin. 25:27–29

[41:15] a. Gen. 41:8, 12; Dan. 5:16

[41:16] a. Dan. 2:30; Acts 3:12; (2 Cor. 3:5)

[41:16] b. Gen. 40:8; 41:25, 28, 32; Deut. 29:29; Dan. 2:22, 28, 47

[41:17] a. Gen. 41:1

[41:22] * Heads of grain

[41:24] a. Gen. 41:8; Ex. 7:11; Is. 8:19; Dan. 4:7

[41:25] a. Gen. 41:28, 32; Dan. 2:28, 29, 45; Rev. 4:1

[41:26] * Heads of grain

[41:27] a. 2 Kin. 8:1

[41:28] a. (Gen. 41:25, 32; Dan. 2:28)

[41:29] a. Gen. 41:47

[41:30] a. Gen. 41:54, 56

[41:30] b. Gen. 47:13; Ps. 105:16

[41:32] a. Gen. 41:25, 28; Num. 23:19; Is. 46:10, 11

[41:34] a. (Prov. 6:6–8)

[41:34] * *overseers*

[41:35] a. Gen. 41:48

[41:35] * Lit. *hand*

[41:36] a. Gen. 47:15, 19

[41:36] * Lit. *supply*

[41:36] * *be cut off*

[41:37] a. Ps. 105:19; Acts 7:10

[41:38] a. Num. 27:18; (Job 32:8; Prov. 2:6); Dan. 4:8, 9, 18; 5:11, 14;

6:3

[41:40] a. Ps. 105:21; Acts 7:10

[41:40] * In charge of

[41:41] a. Gen. 42:6; Ps. 105:21; Dan. 6:3; Acts 7:10

[41:42] a. Esth. 3:10

[41:42] b. Esth. 8:2, 15

[41:42] c. Dan. 5:7, 16, 29

[41:43] a. Gen. 46:29

[41:43] b. Esth. 6:9

[41:43] c. Gen. 42:6

[41:45] a. Gen. 46:20

[41:45] * Probably Egyptian for *God Speaks and He Lives*

[41:46] a. 1 Sam. 16:21; 1 Kin. 12:6, 8; Dan. 1:19

[41:47] * Lit. *by handfuls*

[41:49] a. Gen. 22:17; Judg. 7:12; 1 Sam. 13:5

[41:50] a. Gen. 46:20; 48:5

[41:51] a. Ps. 45:10

[41:51] * Lit. *Making Forgetful*

[41:52] a. Gen. 17:6; 28:3; 49:22

[41:52] * Lit. *Fruitfulness*

[41:54] a. Ps. 105:16; Acts 7:11

[41:54] b. Gen. 41:30

[41:55] a. John 2:5

[41:56] a. Gen. 42:6

[41:56] * Lit. *all that was in them*

[41:57] a. Ezek. 29:12

[41:57] b. Gen. 27:28, 37; 42:3

Genesis 42

[42:1] a. Acts 7:12

[42:2] a. Gen. 43:8; Ps. 33:18, 19; Is. 38:1

[42:4] a. Gen. 42:38

[42:5] a. Gen. 12:10; 26:1; 41:57; Acts 7:11

[42:6] a. Gen. 41:41, 55

[42:6] b. Gen. 37:7–10; 41:43; Is. 60:14

[42:7] a. Gen. 45:1, 2

[42:7] * *harshly*

[42:9] a. Gen. 37:5–9

[42:9] * Exposed parts

[42:13] a. Gen. 37:30; 42:32; 44:20; Lam. 5:7

[42:15] a. 1 Sam. 1:26; 17:55

[42:16] * Lit. *bound*

[42:17] a. Gen. 40:4, 7, 12

[42:17] * Lit. *gathered*

[42:18] a. Gen. 22:12; 39:9; Ex. 1:17; Lev. 25:43; Neh. 5:15; Prov. 1:7; 9:10

[42:20] a. Gen. 42:34; 43:5; 44:23

[42:21] a. Gen. 37:26–28; 44:16; 45:3; Job 36:8, 9; Hos. 5:15

[42:21] b. Prov. 21:13; Matt. 7:2

[42:22] a. Gen. 37:21, 221a>, 29

[42:22] b. Gen. 9:5, 6; 1 Kin. 2:32; 2 Chr. 24:22; Ps. 9:12; Luke 11:50, 51

[42:24] a. Gen. 43:30; 45:14, 15

[42:24] b. Gen. 34:25, 30; 43:14, 23

[42:25] a. Gen. 44:1

[42:25] b. Gen. 43:12

[42:25] c. (Matt. 5:44; Rom. 12:17, 20, 21; 1 Pet. 3:9)

[42:27] a. Gen. 43:21, 22

[42:28] * *sank*

[42:30] a. Gen. 42:7

[42:30] * *harshly*

[42:33] a. Gen. 42:15, 19, 20

[42:34] a. Gen. 42:20; 43:3, 5

[42:34] b. Gen. 34:10

[42:35] a. Gen. 43:12, 15, 21

[42:36] a. Gen. 43:14

[42:36] b. Gen. 35:18; (Rom. 8:28, 31)

[42:38] a. Gen. 37:22; 42:13; 44:20, 28

[42:38] b. Gen. 42:4; 44:29

[42:38] c. Gen. 37:35; 44:31

Genesis 43

[43:1] a. Gen. 41:54, 57; 42:5; 45:6, 11

[43:2] a. Gen. 42:2; 44:25

[43:3] a. Gen. 42:20; 43:5; 44:23

[43:6] * Lit. *wickedly*

[43:8] a. Gen. 42:2; 47:19

[43:9] a. Gen. 42:37; 44:32; Philem. 18, 19

[43:11] a. Gen. 32:20; 33:10; 43:25, 26; (Prov. 18:16)

[43:11] b. Gen. 37:25; Jer. 8:22; Ezek. 27:17

[43:12] a. Gen. 42:25, 35; 43:21, 22

[43:14] a. Gen. 17:1; 28:3; 35:11; 48:3

[43:14] b. Gen. 39:21; Ps. 106:46

[43:14] c. Gen. 42:36; Esth. 4:16

[43:15] a. Gen. 39:1; 46:3, 6

[43:16] a. Gen. 24:2; 39:4; 44:1

[43:16] * Lit. *a slaughter*

[43:18] a. Gen. 42:28

[43:18] * Lit. *roll himself upon us*

[43:20] a. Gen. 42:3, 10

[43:21] a. Gen. 42:27, 35

[43:23] a. Gen. 42:24

[43:24] a. Gen. 18:4; 19:2; 24:32

[43:26] a. Gen. 37:7, 10; 42:6; 44:14

[43:27] a. Gen. 29:6; 42:11, 13; 43:7; 45:3; 2 Kin. 4:26

[43:28] a. Gen. 37:7, 10

[43:29] a. Gen. 35:17, 18

[43:29] b. Gen. 42:13

[43:30] a. 1 Kin. 3:26

[43:30] b. Gen. 42:24; 45:2, 14, 15; 46:29

[43:31] a. Gen. 43:25

[43:32] a. Gen. 41:12; Ex. 1:15

[43:32] b. Gen. 46:34; Ex. 8:26

[43:33] a. Gen. 27:36; 42:7; Deut. 21:16, 17

[43:34] a. Gen. 35:24; 45:22

Genesis 44

[44:1] a. Gen. 43:16

[44:1] b. Gen. 42:25

[44:1] * Lit. *the one over*

[44:4] a. 1 Sam. 25:21

[44:8] a. Gen. 43:21

[44:9] a. Gen. 31:32

[44:12] * *finished with*

[44:13] a. Gen. 37:29, 34; Num. 14:6; 2 Sam. 1:11

[44:14] a. Gen. 37:7, 10

[44:16] a. (Num. 32:23)

[44:16] b. Gen. 44:9

[44:17] a. Prov. 17:15

[44:18] a. Gen. 18:30, 32; Ex. 32:22

[44:20] a. Gen. 37:3; 43:8; 44:30

[44:20] b. Gen. 42:38

[44:20] c. Gen. 46:19

[44:20] d. Gen. 42:4

[44:21] a. Gen. 42:15, 20

[44:22] a. Gen. 43:3, 5

[44:25] a. Gen. 43:2

[44:27] a. Gen. 30:22–24; 35:16–18; 46:19

[44:28] a. Gen. 37:31–35

[44:29] a. Gen. 42:36, 38; 44:31

[44:30] a. (1 Sam. 18:1; 25:29)

[44:32] a. Gen. 43:9

[44:33] a. Ex. 32:32

[44:34] * Lit. *find*

Genesis 45

[45:1] a. Acts 7:13

[45:2] a. Gen. 43:30; 46:29

[45:3] a. Gen. 43:27; Acts 7:13

[45:4] a. Gen. 37:28; 39:1; Ps. 105:17

[45:5] a. Gen. 45:7, 8; 50:20; Ps. 105:16, 17

[45:6] a. Gen. 43:1; 47:4, 13

[45:7] a. Gen. 45:5; 50:20

[45:7] * *remnant*

[45:8] a. (Rom. 8:28)

[45:8] b. Judg. 17:10; Is. 22:21

[45:8] c. Gen. 41:43; 42:6

[45:9] * *delay*

[45:10] a. Gen. 46:28, 34; 47:1, 6; Ex. 9:26

[45:11] a. Gen. 47:12

[45:12] a. Gen. 42:23

[45:13] a. Gen. 46:6–28; Acts 7:14

[45:15] a. Gen. 48:10

[45:18] a. Gen. 27:28; 47:6; Deut. 32:9–14

[45:18] * The choicest produce

[45:21] a. Gen. 45:19; 46:5

[45:21] * *wagons*

[45:22] a. 2 Kin. 5:5

[45:22] b. Gen. 43:34

[45:26] a. Job 29:24; Ps. 126:1; Luke 24:11, 41

[451:27] a. Judg. 15:19; Is. 40:29

Genesis 46

[46:1] a. Gen. 21:31, 33; 26:32, 33; 28:10

[46:1] b. Gen. 26:24, 25; 28:13; 31:42; 32:9

[46:2] a. Gen. 15:1; 22:11; 31:11; Num. 12:6; Job 33:14, 15

[46:3] a. Gen. 17:1; 28:13

[46:3] b. Gen. 12:2; Ex. 1:9; 12:37; Deut. 26:5

[46:4] a. Gen. 28:15; 31:3; 48:21; Ex. 3:12

[46:4] b. Gen. 15:16; 50:12, 24, 25; Ex. 3:8

[46:4] c. Gen. 50:1

[46:4] * Will close your eyes when you die

[46:5] a. Gen. 47:9; Acts 7:15

[46:5] b. Gen. 45:19–21

[46:5] * *wagons*

[46:6] a. Deut. 26:5; Josh. 24:4; Ps. 105:23; Is. 52:4; Acts 7:15

[46:8] a. Ex. 1:1–4

[46:8] b. Num. 26:4, 5; 1 Chr. 2:1

[46:9] a. Ex. 6:14

[46:10] a. Ex. 6:15; Num. 26:12

[46:10] * *Nemuel,* 1 Chr. 4:24

[46:10] * *Jarib,* 1 Chr. 4:24

[46:10] * *Zerah,* 1 Chr. 4:24

[46:11] a. Ex. 6:16, 17; 1 Chr. 6:1, 16

[46:12] a. Num. 26:19, 20; 1 Chr. 2:3; 4:21

[46:12] b. Gen. 38:3, 7, 10

[46:12] c. Gen. 38:29

[46:13] * *Puah,* Num. 26:23; 1 Chr. 7:1

[46:13] * *Jashub,* Num. 26:24; 1 Chr. 7:1

[46:14] a. Num. 26:26

[46:15] a. Gen. 35:23; 49:31

[46:16] * Sam., LXX *Zephon* and Num. 26:15

[46:16] * *Ozni,* Num. 26:16

[46:16] * *Arod,* Num. 26:17

[46:17] a. Num. 26:44–47; 1 Chr. 7:30

[46:18] a. Gen. 30:10; 37:2

[46:18] b. Gen. 29:24

[46:19] a. Gen. 35:24

[46:19] b. Gen. 44:27

[46:20] a. Gen. 41:45, 50–52; 48:1

[46:21] a. 1 Chr. 7:6; 8:1

[46:21] b. Num. 26:38

[46:21] c. Num. 26:39; 1 Chr. 7:12

[46:21] * *Hupham,* Num. 26:39

[46:23] * *Shuham,* Num. 26:42

[46:24] a. Num. 26:48

[46:24] * *Jahziel,* 1 Chr. 7:13

[46:24] * *Shallum,* 1 Chr. 7:13

[46:25] a. Gen. 30:5, 7

[46:25] b. Gen. 29:29

[46:26] a. Ex. 1:5

[46:26] b. Gen. 35:11

[46:27] a. Ex. 1:5; Deut. 10:22; Acts

7:14

[46:28] a. Gen. 31:21

[46:28] b. Gen. 47:1

[46:29] a. Gen. 41:43

[46:29] b. Gen. 45:14, 15

[46:30] a. Luke 2:29, 30

[46:31] a. Gen. 47:1

[46:32] a. Gen. 47:3

[46:33] a. Gen. 47:2, 3

[46:33] b. Gen. 47:3

[46:34] a. Gen. 30:35; 34:5; 37:17

[46:34] b. Gen. 43:32; Ex. 8:26

[46:34] * *loathsome*

Genesis 47

[47:1] a. Gen. 46:31

[47:1] b. Gen. 45:10; 46:28; 50:8

[47:2] a. Acts 7:13

[47:3] a. Gen. 46:33; Jon. 1:8

[47:3] b. Gen. 46:32, 34; Ex. 2:17, 19

[47:4] a. Gen. 15:13; Deut. 26:5; Ps. 105:23

[47:4] b. Gen. 43:1; Acts 7:11

[47:4] c. Gen. 46:34

[47:6] a. Gen. 20:15; 45:10, 18; 47:11

[47:6] b. Gen. 47:4

[47:7] a. Gen. 47:10; 48:15, 20; 2 Sam. 14:22; 1 Kin. 8:66; Heb. 7:7

[47:9] a. Ps. 39:12; (Heb. 11:9, 13)

[47:9] b. Gen. 47:28

[47:9] c. (Job 14:1)

[47:9] d. Gen. 5:5; 11:10, 11; 25:7, 8; 35:28

[47:9] * Lit. *sojourning*

[47:10] a. Gen. 47:7

[47:11] a. Ex. 1:11; 12:37

[47:11] b. Gen. 47:6, 27

[47:12] a. Gen. 45:11; 50:21

[47:13] a. Gen. 41:30; Acts 7:11

[47:14] a. Gen. 41:56; 42:6

[47:15] a. Gen. 47:19

[47:17] * *supplied*

[47:19] a. Gen. 43:8

[47:20] a. Jer. 32:43

[47:21] * So with MT, Tg.; Sam., LXX, Vg. *made the people virtual slaves*

[47:22] a. Lev. 25:34; Ezra 7:24

[47:22] b. Gen. 41:45

[47:25] a. Gen. 33:15

[47:26] a. Gen. 47:22

[47:27] a. Gen. 47:11

[47:27] b. Gen. 17:6; 26:4; 35:11; 46:3; Ex. 1:7; Deut. 26:5; Acts 7:17

[47:29] a. Deut.

31:14; 1 Kin. 2:1

[47:29] b. Gen. 24:2–4

[47:29] c. Gen. 24:49; Josh. 2:14

[47:29] d. Gen. 50:25

[47:30] a. 2 Sam. 19:37

[47:30] b. Gen. 49:29; 50:5–13; Heb. 11:21

[47:31] a. Gen. 48:2; 1 Kin. 1:47; Heb. 11:21

Genesis 48

[48:1] a. Gen. 41:51, 56; 46:20; 50:23; Josh. 14:4

[48:2] * Collected his strength

[48:3] a. Gen1. 43:14; 49:25

[48:3] b. Gen. 28:13, 19; 35:6, 9

[48:4] a. Gen. 46:3

[48:4] b. Gen. 35:12; Ex. 6:8

[48:4] c. Gen. 17:8

[48:5] a. Gen. 41:50; 46:20; 48:8; Josh. 13:7; 14:4

[48:6] * *children*

[48:6] * Who are born to you

[48:7] a. Gen. 35:9, 16, 19, 20

[48:9] a. Gen. 27:4; 47:15

[48:10] a. Gen. 27:1; 1 Sam. 3:2

[48:10] b. Gen. 27:27; 45:15; 50:1

[48:11] a. Gen. 45:26

[48:14] a. Matt. 19:15; Mark 10:16

[48:14] b. Gen. 48:19

[48:14] c. Gen. 41:51, 52; Josh. 17:1

[48:15] a. Gen. 47:7, 10; 49:24; (Heb. 11:21)

[48:15] b. Gen. 17:1; 24:40; 2 Kin. 20:3

[48:16] a. Gen. 22:11, 15–18; 28:13–15; 31:11; (Ps. 34:22; 121:7)

[48:16] b. Amos 9:12; Acts 15:17

[48:16] c. Num. 26:34, 37

[48:17] a. Gen. 48:14

[48:19] a. Gen. 48:14

[48:19] b. Num. 1:33, 35; Deut. 33:17

[48:20] a. Ruth 4:11, 12

[48:21] a. Gen.

28:15; 46:4; 50:24

[48:22] a. Gen. 14:7; Josh. 24:32; John 4:5

[48:22] b. Gen. 34:28

[48:22] * Lit. *shoulder*

Genesis 49

[49:1] a. Deut. 33:1, 6–25; (Amos 3:7)

[49:1] b. Num. 24:14; (Deut. 4:30); Is. 2:2; 39:6; Jer. 23:20; Heb. 1:2

[49:3] a. Gen. 29:32

[49:4] a. Gen. 35:22; Deut. 27:20; 1 Chr. 5:1

[49:5] * *violence*

[49:6] a. Ps. 64:2; Prov. 1:15, 16

[49:6] b. Ps. 26:9; Eph. 5:11

[49:6] c. Gen. 34:26

[49:6] * *lamed*

[49:7] a. Num. 18:24; Josh. 19:1, 9; 21:1–42; 1 Chr. 4:24–27

[49:8] a. Deut. 33:7; Rev. 5:5

[49:8] b. Ps. 18:40

[49:8] c. Gen. 27:29; 1 Chr. 5:2

[49:9] a. Deut. 33:22; Ezek. 19:5–7;

Mic. 5:8; (Rev. 5:5)

[49:9] b. Num. 23:24; 24:9

[49:9] * *couches*

[49:10] a. Num. 24:17; Jer. 30:21; Matt. 1:3; 2:6; Luke 3:33; Rev. 5:5

[49:10] b. Ps. 60:7

[49:10] c. Is. 11:1; (Matt. 21:9)

[49:10] d. Deut. 18:15; Ps. 2:6–9; 72:8–11; Is. 42:1, 4; 49:6; 60:1–5; (Luke 2:30–32)

[49:10] * A symbol of kingship

[49:13] a. Deut.

33:18, 19; Josh. 19:10, 11

[49:13] b. Gen. 10:19; Josh. 11:8

[49:14] a. 1 Chr. 12:32

[49:15] a. 1 Sam. 10:9

[49:16] a. Gen. 30:61; Deut. 33:22; Judg. 18:26, 27

[49:17] a. Judg. 18:27

[49:18] a. Ex. 15:2; Ps. 25:5; 40:1–3; 119:166, 174; Is. 25:9; Mic. 7:7

[49:19] a. Gen. 30:11; Deut. 33:20; 1 Chr. 5:18

[49:19] * Lit. *Troop*

[49:19] * Lit. *raid*

[49:20] a. Deut. 33:24; Josh. 19:24–31

[49:21] a. Deut. 33:23

[49:23] a. Gen. 37:4, 24; Ps. 118:13

[49:24] a. Job 29:20; Ps. 37:15

[49:24] b. Ps. 132:2, 5; Is. 1:24; 49:26

[49:24] c. Gen. 45:11; 47:12

[49:24] d. (Ps. 23:1; 80:1)

[49:24] e. (Ps. 118:22); Is. 28:16; (1 Pet. 2:6–8)

[49:24] * Or *supple*

[49:25] a. Gen. 28:13; 32:9; 35:3; 43:23; 50:17

[49:25] b. Gen. 17:1; 35:11

[49:25] c. Deut. 33:13

[49:26] a. Deut. 33:15; Hab. 3:6

[49:26] b. Deut. 33:16

[49:27] a. Judg. 20:21, 25

[49:27] b. Num. 23:24; Esth. 8:11; Ezek. 39:10; Zech. 14:1

[49:29] a. Gen. 15:15; 25:8; 35:29

[49:29] b. Gen. 47:30; 2 Sam. 19:37

[49:29] c. Gen. 23:16–20; 50:13

[49:30] a. Gen. 23:3–20

[49:31] a. Gen. 23:19, 20; 25:9

[49:31] b. Gen. 35:29; 50:13

Genesis 50

[50:1] a. Gen. 46:4, 29

[50:1] b. 2 Kin. 13:14

[50:2] a. Gen. 50:26; 2 Chr. 16:14; Matt. 26:12; Mark 16:1; Luke 24:1; John 19:39, 40

[50:3] a. Gen. 37:34; Num. 20:29; Deut. 34:8

[1font>50:3] * Lit. *wept*

[50:4] a. Esth. 4:2

[50:5] a. Gen. 47:29–31

[50:5] b. 2 Chr. 16:14; Is. 22:16; Matt. 27:60

[50:10] a. Acts 8:2

[50:10] b. 1 Sam. 31:13; Job 2:13

[50:11] * Lit. *Mourning of Egypt*

[50:13] a. Gen. 49:29–31; Acts 7:16

[50:13] b. Gen. 23:16–20

[50:15] a. (Job 15:21)

[50:15] * *fully*

[50:17] a. (Prov. 28:13)

[50:17] b. Gen. 49:25

[50:18] a. Gen. 37:7–10; 41:43; 44:14

[50:19] a. Gen. 45:5

[50:19] b. Gen. 30:2; 2 Kin. 5:7

[50:20] a. Gen. 45:5, 7; Ps. 56:5

[50:20] b. (Acts 3:13–15)

[50:21] a. (Matt. 5:44)

[50:21] * Lit. *to their hearts*

[50:23] a. Gen. 48:1; Job 42:16

[50:23] b. Num. 26:29; 32:39

[50:23] c. Gen. 30:3

[50:24] a. Gen. 15:14; 46:4; 48:21; Ex. 3:16, 17; Josh. 3:17; Heb. 11:22

[50:24] b. Gen. 26:3; 35:12; 46:4; Ex. 6:8

[50:25] a. Gen. 47:29, 30; Ex. 13:19; Josh. 24:32; Acts 7:15, 16; Heb. 11:22

[50:25] b. Gen. 17:8; 28:13; 35:12; Deut. 1:8; 30:1–8

[50:25] c. Ex. 13:19

[50:25] * *give attention to*

The Holy Spirit's Work in

EXODUS

Introduction

The Holy Spirit

Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

God answers the cries of His people in Egyptian bondage. Moses is set afloat in a basket down the river by his mother. Pharaoh’s daughter discovers baby Moses and raises him as a prince in the Egyptian court. Prepared by God’s Spirit, Moses becomes literate and knowledgeable in Egyptian ways. After killing an Egyptian, Moses flees into the Sinai wilderness and remains exiled there for forty years (Ex. 1–2).

From a burning bush (Ex. 3), the fiery Spirit of God commands Moses to lead His people out of their slavery in Egypt. Empowered with boldness, signs, and wonders, Moses and his brother, Aaron, confront Pharaoh with God’s Word, “Let my people go!" (Ex. 5:1). Pharaoh resists the Spirit of God, hardening his heart and submitting himself and his people to the Spirit's judgment. Culminating with the death of all Egyptian firstborn children, ten plagues ravage Egypt until Pharaoh finally relents and lets the Hebrews go.

The mighty wind of God's Spirit separates the Red Sea; the cloud of God's glorious and fiery presence (*shekinah*) leads Israel through the wilderness. At Sinai, God's Spirit reveals the Law to Moses, gives the plans for building the ark and tabernacle, and imparts glory to the face of Moses (Ex. 33:12–23). In the Tent of Meeting, Moses, with Joshua at his side, speaks face-to-face with God. Moses and Joshua enter into the presence o1f God's Spirit and are instructed and equipped to lead His people (Ex. 33).

Even today, God’s Spirit delivers His people from slavery into freedom.[*] He equips them with His power and anointing to confront the enemy in spiritual warfare—and enables them to be victorious.

---

[*] *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Exodus, 51.

Exodus 1

Israel’s Suffering in Egypt

[1]Now [a]these *are* the names of the children of Israel who came to Egypt; each man and his household came with Jacob: [2]Reuben, Simeon, Levi, and Judah; [3]Issachar, Zebulun, and Benjamin; [4]Dan, Naphtali, Gad, and Asher. [5]All those [*]who were descendants of Jacob were [a]seventy[*] persons (for Joseph was in Egypt

already). 6And [a]Joseph died, all his brothers, and all that generation. 7[a]But the children of Israel were fruitful and increased abundantly, multiplied and [*]grew exceedingly mighty; and the land was filled with them.

8Now there arose a new king over Egypt, [a]who did not know Joseph. 9And he said to his people, "Look, the people of the children of Israel *are* more and [a]mightier than we; 10[a]come, let us [b]deal shrewdly with them, lest they multiply, and it happen, in the event of war, that they also join our enemies and fight against us, and *so* go up out of the land." 11Therefore they set taskmasters over them [a]to afflict them with their [b]burdens. And they built for Pharaoh [c]supply cities, Pithom [d]and Raamses. 12But the more they afflicted them, the more they multiplied and grew. And they were in dread of the children of Israel. 13So the Egyptians made the children of Israel [a]serve with [*]rigor. 14And they [a]made their lives bitter with hard bondage—[b]in mortar, in brick, and in all manner of service in the field. All their service in which they made them serve *was* with rigor.

15Then the king of Egypt spoke to the [a]Hebrew midwives, of whom the name of one *was* Shiphrah and the name of the other Puah; 16and he said, "When you do the duties of a midwife for the Hebrew women, and see *them* on the birthstools, if it *is* a [a]son, then you shall kill him; but if it *is* a daughter, then she shall live."

17But the midwives [a]feared God, and did not do [b]as the king of Egypt commanded them, but saved the male children alive. 18So the king of Egypt called for the midwives and said to them, “Why have you done this thing, and saved the male children alive?”

19And [a]the midwives said to Pharaoh, “Because the Hebrew women *are* not like the Egyptian women; for they [*]*are* lively and give birth before the midwives come to them.”

20[a]Therefore God dealt well with the midwives, and the people multiplied and [*]grew very mighty. 21And so it was, because the midwives feared God, [a]that He [*]provided households for them.

22So Pharaoh commanded all his people, saying, [a]“Every son who is [*]born you shall cast into the river, and every daughter you shall save alive.”

Exodus 2

Moses Is Born

1And [a]a man of the house of Levi went and took *as wife* a daughter of Levi. 2So the woman conceived and bore a son. And [a]when she saw that he *was* a beautiful *child,* she hid him three months. 3But when she could no longer hide him, she took an ark of [a]bulrushes for him, daubed it with [b]asphalt and [c]pitch, put the child in it, and laid *it* in the reeds [d]by the river’s bank. 4[a]And his sister stood afar off, to know what would be done to him.

5Then the [a]daughter of Pharaoh

came down to bathe at the river. And her maidens walked along the riverside; and when she saw the ark among the reeds, she sent her maid to get it. 6And when she opened *it,* she saw the child, and behold, the baby wept. So she had compassion on him, and said, “This is one of the Hebrews’ children.”

7Then his sister said to Pharaoh’s daughter, “Shall I go and call a nurse for you from the Hebrew women, that she may nurse the child for you?”

8And Pharaoh’s daughter said to her, “Go.” So the maiden went and called the child’s mother. 9Then Pharaoh’s daughter said to her, “Take this child away and nurse him for me, and I will give *you* your wages.” So the woman took the child and nursed him. 10And the child grew, and she brought him to Pharaoh’s daughter, and he became [a]her son. So she called his name [*]Moses, saying, “Because I drew him out of the water.”

Moses Flees to Midian

11Now it came to pass in those days, [a]when Moses was grown, that he went out to his brethren and looked at their burdens. And he saw an Egyptian beating a Hebrew, one of his brethren. 12So he looked this way and that way, and when he saw no one, he [a]killed the Egyptian and hid him in the sand. 13And [a]when he went out the second day, behold, two Hebrew men [b]were fighting, and he said to the one who did the wrong, “Why are you striking your companion?”

14Then he said, [a]“Who made you a prince and a judge over us? Do you intend to kill me as you killed the Egyptian?”

So Moses [b]feared and said, “Surely this thing is known!” 15When Pharaoh heard of this matter, he sought to kill Moses. But [a]Moses fled from [*]the face of Pharaoh and dwelt in the land of [b]Midian; and he sat down by [c]a well.

16[a]Now the priest of Midian had seven daughters. [b]And they came and drew water, and they filled the [c]troughs to water their father’s flock. 17Then the [a]shepherds came and [b]drove them away; but Moses stood up and helped them, and [c]watered their flock.

18When they came to [a]Reuel [*]their father, [b]he said, “How *is it that* you have come so soon today?”

19And they said, “An Egyptian delivered us from the hand of the shepherds, and he also drew enough water for us and watered the flock.”

20So he said to his daughters, “And where *is* he? Why *is* it *that* you have left the man? Call him, that he may [a]eat bread.”

21Then Moses was content to live with the man, and he gave [a]Zipporah his daughter to Moses. 22And she bore *him* a son. He called his name [a]Gershom,[*] for he said, “I have been [b]a [*]stranger in a foreign land.”

23Now it happened [a]in the process of time that the king of Egypt died. Then the children of Israel [b]groaned because of the bondage, and they cried out; and [c]their cry came up to

God because of the bondage. 24So God [a]heard their groaning, and God [b]remembered His [c]covenant with Abraham, with Isaac, and with Jacob. 25And God [a]looked upon the children of Israel, and God [b]acknowledged *them.*

Exodus 3

Moses at the Burning Bush

1Now Moses was tending the flock of [a]Jethro his father-in-law, [b]the priest of Midian. And he led the flock to the back of the desert, and came to [c]Horeb, [d]the mountain of God. 2And [a]the Angel of the LORD appeared to him in a flame of fire from the midst of a bush. So he looked, and behold, the bush was burning with fire, but the bush *was* not consumed. 3Then Moses said, “I will now turn aside and see this [a]great sight, why the bush does not burn.”

4So when the LORD saw that he turned aside to look, God called [a]to him from the midst of the bush and said, “Moses, Moses!”

And he said, “Here I am.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

From Hearing to Seeing

We are

shifting from hearing to seeing. In the past we have heard a word from behind us telling us which way to go, but now He will manifest in a way that we have to notice Him, turn, look, and then hear Him telling us which way to go. You can see a great example of the time to shift and the pattern for the season a1head in Exodus 3:1–4.

The heavens had changed because the cry of the enslaved Israelites had reached God’s throne room. He responded and remembered His covenant He had made four hundred years earlier. His response came in the form of a new manifestation. Moses recognized the new manifestation, which caused him to stop his normal daily activities. He did not just see the manifestation; he stopped to look. He turned from his past and present to see his future. When Moses saw, he heard his calling to advance. When we see, then turn (or *change*), we will hear the transition and be repositioned out of last season's captivities and into next season's freedom. Be willing to see and then say, "Here I am."[*]

---

[*] Chuck D. Pierce, *Time to Defeat the*

Devil,
237–
238.

[5]Then He said, “Do not draw near this place. [a]Take your sandals off your feet, for the place where you stand *is* holy ground.” [6]Moreover He said, [a]“I *am* the God of your father—the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob.” And Moses hid his face, for [b]he was afraid to look upon God.

[7]And the LORD said: [a]“I have surely seen the oppression of My people who *are* in Egypt, and have heard their cry [b]because of their taskmasters, [c]for I know their [*]sorrows. [8]So [a]I have come down to [b]deliver them out of the hand of the Egyptians, and to bring them up from that land to [c]a good and large land, to a land [d]flowing with milk and honey, to the place of [e]the Canaanites and the Hittites and the Amorites and the Perizzites and the Hivites and the Jebusites. [9]Now therefore, behold, [a]the cry of the children of Israel has come to Me, and I have also seen the [b]oppression with which the Egyptians oppress them. [10][1][a]Come now, therefore, and I will send you to Pharaoh that you may bring My people, the children of Israel, out of Egypt.”

Ex. 3:8

Lead
me
into
the
land
flowing
with
milk
and
honey.

11But Moses said to God, [a]“Who *am* I that I should go to Pharaoh, and that I should bring the children of Israel out of Egypt?”

12So He said, [a]“I will certainly be with you. And this *shall be* a [b]sign to you that I have sent you: When you have brought the people out of Egypt, you shall serve God on this mountain.”

13Then Moses said to God, “Indeed, *when* I come to the children of Israel and say to them, ‘The God of your fathers has sent me to you,’ and they say to me, ‘What *is* His name?’ what shall I say to them?”

14And God said to Moses, “I AM WHO I AM.” And He said, “Thus you shall say to the children of Israel, [a]‘I AM has sent me to you.’ ” 15Moreover God said to Moses, “Thus you shall say to the children of Israel: ‘The LORD God of your fathers, the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob, has sent me to you. This *is* [a]My name forever, and this *is* My memorial to all generations.’ 16Go and [a]gather the elders of Israel together, and say to them, ‘The LORD

God of your fathers, the God of
Abraham, of Isaac, and of Jacob,
appeared to me, saying, [b]“I have
surely visited you and *seen* what is
done to you in Egypt; [17]and I have
said [a]I will bring you up out of the
affliction of Egypt to the land of the
Canaanites and the Hittites and the
Amorites and the Perizzites and the
Hivites and the Jebusites, to a land
flowing with milk and honey.” ’
[18]Then [a]they will heed your voice;
and [b]you shall come, you and the
elders of Israel, to the king of Egypt;
and you shall say to him, ‘The LORD
God of the Hebrews has [c]met with us;
and now, please, let us go three days’
journey into the wilderness, that we
may sacrifice to the LORD our God.’
[19]1But I am sure that the king of
Egypt [a]will not let you go, no, not
even by a mighty hand. [20]So I will
[a]stretch out My hand and strike Egypt
with [b]all My wonders which I will do
in its midst; and [c]after that he will let
you go. [21]And [a]I will give this people
favor in the sight of the Egyptians;
and it shall be, when you go, that you
shall not go empty-handed. [22][a]But
every woman shall ask of her
neighbor, namely, of her who dwells
near her house, [b]articles of silver,
articles of gold, and clothing; and you
shall put *them* on your sons and on
your daughters. So [c]you shall plunder
the Egyptians.”

Exodus 4

Miraculous Signs for Pharaoh

[1]Then Moses answered and said,

“But suppose they will not believe me or listen to my voice; suppose they say, ‘The LORD has not appeared to you.’ ”

2So the LORD said to him, “What *is* that in your hand?”

He said, “A rod.”

3And He said, “Cast it on the ground.” So he cast it on the ground, and it became a serpent; and Moses fled from it. 4Then the LORD said to Moses, “Reach out your hand and take *it* by the tail” (and he reached out his hand and caught it, and it became a rod in his hand), 5“that they may [a]believe that the [b]LORD God of their fathers, the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob, has appeared to you.”

6Furthermore the LORD said to him, “Now put your hand in your bosom.” And he put his hand in his bosom, and when he took it out, behold, his hand *was* leprous, [a]like snow. 7And He said, “Put your hand in your bosom again.” So he put his hand in his bosom again, and drew it out of his bosom, and behold, [a]it was restored like his *other* flesh. 8“Then it will be, i1f they do not believe you, nor heed the message of the [a]first sign, that they may believe the message of the latter sign. 9And it shall be, if they do not believe even these two signs, or listen to your voice, that you shall take water from [*]the river and pour *it* on the dry *land.* [a]The water which you take from the river will become blood on the dry *land.*”

10Then Moses said to the LORD, "O my Lord, I *am* not eloquent, neither before nor since You have spoken to Your servant; but [a]I *am* slow of speech and [*]slow of tongue."

11So the LORD said to him, [a]"Who has made man's mouth? Or who makes the mute, the deaf, the seeing, or the blind? *Have* not I, the LORD? 12Now therefore, go, and I will be [a]with your mouth and teach you what you shall say."

13But he said, "O my Lord, [a]please send by the hand of whomever *else* You may send."

14So [a]the anger of the LORD was kindled against Moses, and He said: "Is not Aaron the Levite your [b]brother? I know that he can speak well. And look, [c]he is also coming out to meet you. When he sees you, he will be glad in his heart. 15Now [a]you shall speak to him and [b]put the words in his mouth. And [c]I will be with your mouth and with his mouth, and I will teach you what you shall do. 16So he shall be your spokesman to the people. And he himself shall be as a mouth for you, and [a]you shall be to him as God. 17And you shall take this rod in your hand, with which you shall do the signs."

Moses Goes to Egypt

18So Moses went and returned to [a]Jethro his father-in-law, and said to him, "Please let me go and return to my brethren who *are* in Egypt1, and see whether they are still alive."

And Jethro said to Moses, [b]"Go in peace."

19Now the LORD said to Moses in [a]Midian, “Go, return to [b]Egypt; for all the men who [c]sought your life are dead.” 20Then Moses [a]took his wife and his sons and set them on a donkey, and he returned to the land of Egypt. And Moses took [b]the rod of God in his hand.

21And the LORD said to Moses, “When you go back to Egypt, see that you do all those [a]wonders before Pharaoh which I have put in your hand. But [b]I will harden his heart, so that he will not let the people go. 22Then you shall [a]say to Pharaoh, ‘Thus says the LORD: [b]“Israel *is* My son, [c]My firstborn. 23So I say to you, let My son go that he may serve Me. But if you refuse to let him go, indeed [a]I will kill your son, your firstborn.” ’ ”

24And it came to pass on the way, at the [a]encampment, that the LORD [b]met him and sought to [c]kill him. 25Then [a]Zipporah took [b]a sharp stone and cut off the foreskin of her son and [*]cast *it* at [*]*Moses’* feet, and said, “Surely you *are* a [*]husband of blood to me!” 26So He let him go. Then she said, “*You are* a husband of blood!”—because of the circumcision.

27And the LORD said to Aaron, “Go into the wilderness [a]to meet Moses.” So he went and met him [b]on the mountain of God, and kissed him. 28So Moses [a]told Aaron all the words of the LORD who had sent him, and all the [b]signs which He had commanded him. 29Then Moses and Aaron [a]went and gathered together all the elders of the children of Israel. 30[a]And Aaron spoke all the words which the LORD had spoken to Moses. Then he did the signs in the sight of the people. 31So the people [a]believed; and when they heard that the LORD had [b]visited the children of Israel and that He [c]had looked on their affliction, then [d]they bowed their heads and worshiped.

Exodus 5

First Encounter with Pharaoh

1Afterward Moses and Aaron went in and told Pharaoh, “Thus says the LORD God of Israel: ‘Let My people go, that they may [*]hold [a]a feast to Me in the wilderness.’ ”

2And Pharaoh said, [a]“Who *is* the LORD, that I should obey His voice to let Israel go? I do not know the LORD, [b]nor will I let Israel go.”

3So they said, [a]“The God of the Hebrews has [b]met with us. Please, let us go three days’ journey into the desert and sacrifice to the LORD our God, lest He fall upon us with [c]pestilence or with the sword.”

4Then the king of Egypt said to them, “Moses and Aaron, why do you take the people from their work? Get *back* to your [a]labor.” 5And Pharaoh said, “Look, the people of the land *are* [a]many now, and you make them rest from their labor!”

6So the same1 day Pharaoh commanded the [a]taskmasters of the people and their officers, saying, 7“You shall no longer give the people straw to make [a]brick as before. Let them go and gather straw for themselves. 8And you shall lay on them the quota of bricks which they made before. You shall not reduce it. For they are idle; therefore they cry out, saying, ‘Let us go *and* sacrifice to our God.’ 9Let more work be laid on the men, that they may labor in it, and let them not regard false words.”

10And the taskmasters of the people and their officers went out and spoke to the people, saying, “Thus says Pharaoh: ‘I will not give you straw. 11Go, get yourselves straw where you can find it; yet none of your work will be reduced.’ ” 12So the people were scattered abroad throughout all the land of Egypt to gather stubble instead of straw. 13And the taskmasters forced *them* to hurry, saying, “Fulfill your work, *your* daily quota, as when there was straw.” 14Also the [a]officers of the children of Israel, whom Pharaoh’s taskmasters had set over them, were [b]beaten *and* were asked, “Why have you not fulfilled your task in making brick both yesterday and today, as before?”

15Then the officers of the children of Israel came and cried out to Pharaoh, saying, “Why are you dealing thus with your servants? 16There is no straw given to your servants, and they say to us, ‘Make brick!’ And indeed your servants *are* beaten, but the fault *is* in your *own* people.”

17But he said, “You *are* idle! Idle! Therefore you say, ‘Let us go *and* sacrifice to the LORD.’ 18Therefore go now *and* work; for no straw shall be given you, yet you shall deliver the quota of bricks.” 19And the officers of the children of Israel saw *that* they *were* in trouble after it was said, “You shall not reduce *any* bricks from your daily quota.”

20Then, as they came out from Pharaoh, they met Moses and Aaron who stood there to meet them. 21[a]And they said to them, “Let the LORD look on you and judge, because you have made [*]us abhorrent in the sight of Pharaoh and in the sight of his servants, to put a sword in their hand to kill us.”

Israel’s Deliverance Assured

22So Moses returned to the LORD and said, “Lord, why have You brought trouble on this people? Why *is* it You have sent me? 23For since I came to Pharaoh to speak in Your name, he has done evil to this people; neither have You delivered Your people at all.”

Exodus 6

1Then the LORD said to Moses, “Now you shall see what I will do to Pharaoh. For [a]with a strong hand he will let them go, and with a strong hand [b]he will drive them out of his land.”

2And God spoke to Moses and said to him: “I *am* [*]the LORD. 3[a]I appeared to Abraham, to Isaac, and to Jacob, as [b]God Almighty, but *by* My name [c]LORD[*] I was not known to them. 4[a]I have also [*]established My covenant with them, [b]to give them the land of

Canaan, the land of their [*]pilgrimage, [c]in which they were [*]strangers. 5And [a]I have also heard the groaning of the children of Israel whom the Egyptians keep in bondage, and I have remembered My covenant. 6Therefore say to the children of Israel: [a]‘I *am* the LORD; [b]I will bring you out from under the burdens of the Egyptians, I will [c]rescue you from their bondage, and I will redeem you with [*]an outstretched arm and with great judgments. 7I will [a]take you as My people, and [b]I will be your God. Then you shall know that I *am* the LORD your God who brings you out [c]from under the burdens of the Egyptians. 8And I will bring you into the land which I [a]swore[*] to give to Abraham, Isaac, and Jacob; and I will give it to you *as* a heritage: I *am* the LORD.’ ” 9So Moses spoke thus to the children of Israel; [a]but they did not heed Moses, because of [b]anguish[*] of spirit and cruel bondage.

Ex. 6:6

Stretch out Your arm and deliver me, and rid me

out
of
all
bondage.

10And the LORD spoke to Moses, saying, 11“Go in, tell Pharaoh king of Egypt to let the children of Israel go out of his land.”

12And Moses spoke before the LORD, saying, “The children of Israel have not heeded me. How then shall Pharaoh heed me, for [a]I *am* of *uncircumcised lips?”

13Then the LORD spoke to Moses and Aaron, and gave them a [a]command* for the children of Israel and for Pharaoh king of Egypt, to bring the children of Israel out of the land of Egypt.

The Family of Moses and Aaron

14These *are* the heads of their fathers’ houses: [a]The sons of Reuben, the firstborn of Israel, *were* Hanoch, Pallu, Hezron, and Carmi. These are the families of Reuben. 15[a]And the sons of Simeon *were* *Jemuel, Jamin, Ohad, Jachin, Zohar, and Shaul the son of a Canaanite woman. These *are* the families of Simeon. 16These *are* the names of [a]the sons of Levi according to their generations: Gershon, Kohath, and Merari. And the years of the life of Levi *were* one hundred and thirty-seven. 17[a]The sons of Gershon *were* Libni and Shimi according to their families. 18And [a]the sons of Kohath *were* Amram, Izhar, Hebron, and Uzziel. And the years of the life of Kohath *were* one hundred and thirty-three. 19[a]The sons of Merari *were* Mahli and Mushi. These *are* the families of Levi according to their generations.

20Now [a]Amram took for himself [b]Jochebed, his father's sister, as wife; and she bore him [c]Aaron and Moses. And the years of the life of Amram *were* one hundred and thirty-seven. 21[a]The sons of Izhar *were* Korah, Nepheg, and Zichri. 22And [a]the sons of Uzziel *were* Mishael, Elzaphan, and Zithri. 23Aaron took to himself Elisheba, daughter of [a]Amminadab, sister of Nahshon, as wife; and she bore him [b]Nadab, Abihu, [c]Eleazar, and Ithamar. 24And [a]the sons of Korah *were* Assir, Elkanah, and Abiasaph. These are the families of the Korahites. 25Eleazar, Aaron's son, took for himself one of the daughters of Putiel as wife; and [a]she bore him Phinehas. These *are* the heads of the fathers' houses of the Levites according to their families.

26These *are the same* Aaron and Moses to whom the LORD said, "Bring out the children of Israel from the land of Egypt according to their [a]armies."[*]27These *are* the ones who spoke to Pharaoh king of Egypt, [a]to bring out the children of Israel from Egypt. These *are the same* Moses and Aaron.

Aaron Is Moses's Spokesman

28And it came to pass, on the day the LORD spoke to Moses in the land of Egypt, 29that the LORD spoke to Moses, saying, "I *am* the LORD. [a]Speak to Pharaoh king of Egypt all

that I say to you.”
30But Moses said before the LORD,
“Behold, [a]I *am* [*]of uncircumcised lips,
and how shall Pharaoh heed me?”

Exodus 7

1So the LORD said to Moses: “See, I
have made you [a]*as* God to Pharaoh,
and Aaron your brother shall be [b]your
prophet. 2You [a]shall speak all that I
command you. And Aaron your
brother shall tell Pharaoh to send the
children of Israel out of his land. 3And
[a]I will harden Pharaoh’s heart, and
[b]multiply My [c]signs and My wonders
in the land of Egypt. 4But [a]Pharaoh
will not heed you, so [b]that I may lay
My hand on Egypt and bring My
[*]armies *and* My people, the children
of Israel, out of the land of Egypt [c]by
great judgments. 5And the Egyptians
[a]shall know that I *am* the LORD,
when I [b]stretch out My hand on Egypt
and [c]bring out the children of Israel
from among them.”

6Then Moses and Aaron [a]did *so;* just
as the LORD commanded them, so
they did. 7And Moses *was* [a]eighty
years old and [b]Aaron eighty-three
years old when they spoke to
Pharaoh.

Aaron’s Miraculous Rod

8Then the LORD spoke to Moses
and Aaron, saying, 9“When Pharaoh
speaks to you, saying, [a]‘Show a
miracle for yourselves,’ then you shall
say to Aaron, [b]‘Take your rod and cast
it before Pharaoh, *and* let it become a
serpent.’ ” [1]10So Moses and Aaron
went in to Pharaoh, and they did so,

just [a]as the LORD commanded. And
Aaron cast down his rod before
Pharaoh and before his servants, and
it [b]became a serpent.

11But Pharaoh also [a]called the wise
men and [b]the [*]sorcerers; so the
magicians of Egypt, they also [c]did in
like manner with their
[*]enchantments. 12For every man
threw down his rod, and they became
serpents. But Aaron's rod swallowed
up their rods. 13And Pharaoh's heart
grew hard, and he did not heed them,
as the LORD had said.

The First Plague: Waters Become Blood

14So the LORD said to Moses:
[a]"Pharaoh's heart *is* hard; he refuses
to let the people go. 15Go to Pharaoh
in the morning, when he goes out to
the [a]water, and you shall stand by the
river's bank to meet him; and [b]the rod
which was turned to a serpent you
shall take in your hand. 16And you
shall say to him, [a]'The LORD God of
the Hebrews has sent me to you,
saying, "Let My people go, [b]that they
may [*]serve Me in the wilderness"; but
indeed, until now you would not
hear! 17Thus says the LORD: "By this
[a]you shall know that I *am* the LORD.
Behold, I will strike the waters which
are in the river with the rod that *is* in
my hand, and [b]they shall be turned
[c]to blood. 18And the fish that *are* in
the river shall die, the river shall
stink, and the Egyptians will [a]loathe[*]
to drink the water of the river." ' "

19Then the LORD spoke to Moses,
"Say to Aaron, 'Take your rod and

[a]stretch out your hand over the waters of Egypt, over their streams, over their rivers, over their ponds, and over all their pools of water, that they may become blood. And there shall be blood throughout all the land of Egypt, both in *buckets of* wood and *pitchers of* stone.' " 20And Moses and Aaron did so, just as the LORD commanded. So he [a]lifted up the rod and struck the waters that *were* in the river, in the sight of Pharaoh and in the sight of his servants. And all the [b]waters that *were* in the river were turned to blood. 21The fish that *were* in the river died, the river stank, and the Egyptians [a]could not drink the water of the river. So there was blood throughout all the land of Egypt.

22[a]Then the magicians of Egypt did [b]so with their [*]enchantments; and Pharaoh's heart grew hard, and he did not heed them, [c]as the LORD had said. 23And Pharaoh turned and went into his house. Neither was his heart moved by this. 24So all the Egyptians dug all around the river for water to drink, because they could not drink the water of the river. 25And seven days passed after the LORD had struck the river.

Exodus 8

The Second Plague: Frogs

1And the LORD spoke to Moses, "Go to Pharaoh and say to him, 'Thus says the LORD: "Let My people go, [a]that they may serve Me. 2But if you [a]refuse to let *them* go, behold, I will smite all your territory with [b]frogs.

3So the river shall bring forth frogs
abundantly, which shall go up and
come into your house, into your
[a]bedroom, on your bed, into the
houses of your servants, on your
people, into your ovens, and into
your kneading bowls. 4And the frogs
shall come up on you, on your
people, and on all your servants.” ’ ”

5Then the LORD spoke to Moses,
“Say to Aaron, [a]‘Stre1tch out your
hand with your rod over the streams,
over the rivers, and over the ponds,
and cause frogs to come up on the
land of Egypt.’ ” 6So Aaron stretched
out his hand over the waters of
Egypt, and [a]the frogs came up and
covered the land of Egypt. 7[a]And the
magicians did so with their
[*]enchantments, and brought up frogs
on the land of Egypt.

8Then Pharaoh called for Moses
and Aaron, and said, [a]“Entreat[*] the
LORD that He may take away the
frogs from me and from my people;
and I will let the people [b]go, that they
may sacrifice to the LORD.”

9And Moses said to Pharaoh,
“Accept the honor of saying when I
shall intercede for you, for your
servants, and for your people, to
destroy the frogs from you and your
houses, *that* they may remain in the
river only.”

10So he said, “Tomorrow.” And he
said, “*Let it be* according to your
word, that you may know that [a]*there
is* no one like the LORD our God.
11And the frogs shall depart from you,
from your houses, from your

servants, and from your people. They shall remain in the river only.”

12Then Moses and Aaron went out from Pharaoh. And Moses [a]cried out to the LORD concerning the frogs which He had brought against Pharaoh. 13So the LORD did according to the word of Moses. And the frogs died out of the houses, out of the courtyards, and out of the fields. 14They gathered them together in heaps, and the land stank. 15But when Pharaoh saw that there was [a]relief, [b]he hardened his heart and did not heed them, as the LORD had said.

The Third Plague: Lice

16So the LORD said to Moses, “Say to Aaron, ‘Stretch out your rod, and strike the dust of the land, so that it may become [*]lice throughout all the land of Egypt.’ ” 17And they did so. For Aaron stretched out his hand with his rod and struck the dust of the earth, and [a]it became lice on ma1n and beast. All the dust of the land became lice throughout all the land of Egypt.

18Now [a]the magicians so worked with their [*]enchantments to bring forth lice, but they [b]could not. So there were lice on man and beast. 19Then the magicians said to Pharaoh, “This *is* [a]the[*] finger of God.” But Pharaoh’s [b]heart grew hard, and he did not heed them, just as the LORD had said.

The Fourth Plague: Flies

20And the LORD said to Moses, [a]“Rise early in the morning and stand before Pharaoh as he comes out to

the water. Then say to him, ‘Thus says the LORD: [b]“Let My people go, that they may serve Me. 21Or else, if you will not let My people go, behold, I will send swarms *of flies* on you and your servants, on your people and into your houses. The houses of the Egyptians shall be full of swarms *of flies,* and also the ground on which they *stand.* 22And in that day [a]I will set apart the land of [b]Goshen, in which My people dwell, that no swarms *of flies* shall be there, in order that you may [c]know that I *am* the LORD in the midst of the [d]land. 23I will [*]make a difference between My people and your people. Tomorrow this [a]sign shall be.” ’ ”
24And the LORD did so. [a]Thick swarms *of flies* came into the house of Pharaoh, *into* his servants’ houses, and into all the land of Egypt. The land was corrupted because of the swarms *of flies.*

25Then Pharaoh called for Moses and Aaron, and said, “Go, sacrifice to your God in the land.”

26And Moses said, “It is not right to do so, for we would be sacrificing [a]the abomination of the Egyptians to the LORD our God. If we sacrifice the abomination of the Egyptians before their eyes, then will they not [*]stone us? 27We will go [a]three days’ journey into the wilderness and sacrifice to the LORD our God as [b]He will command us.”

28So Pharaoh said, “I will let you go, that you may sacrifice to the LORD your God in the wilderness;

only you shall not go very far away. [a]Intercede for me."

29Then Moses said, "Indeed I am going out from you, and I will entreat the LORD, that the swarms *of flies* may depart tomorrow from Pharaoh, from his servants, and from his people. But let Pharaoh not [a]deal deceitfully anymore in not letting the people go to sacrifice to the LORD."

30So Moses went out from Pharaoh and [a]entreated the LORD. 31And the LORD did according to the word of Moses; He removed the swarms *of flies* from Pharaoh, from his servants, and from his people. Not one remained. 32But Pharaoh [a]hardened his heart at this time also; neither would he let the people go.

Exodus 9

The Fifth Plague: Livestock Diseased

1Then the LORD said to Moses, [a]"Go in to Pharaoh and tell him, 'Thus says the LORD God of the Hebrews: "Let My people go, that they may [b]serve Me. 2For if you [a]refuse to let *them* go, and still hold them, 3behold, the [a]hand of the LORD will be on your cattle in the field, on the horses, on the donkeys, on the camels, on the oxen, and on the sheep—a very severe pestilence. 4And [a]the LORD will make a difference between the livestock of Israel and the livestock of Egypt. So nothing shall die of all *that* belongs to the children of Israel." ' " 5Then the LORD appointed a set time, saying, "Tomorrow the LORD will do this thing in the land."

6So the LORD did this thing on the next day, and [a]all the livestock of Egypt died; but of the livestock of the children of Israel, not one died. 7Then Pharaoh sent, and indeed, not even one of the livestock of the Israelites was dead. But the [a]heart of Pharaoh became hard, and he did not let the people go.

The Sixth Plague: Boils

8So the LORD said to Moses and Aaron, "Take for yourselves handfuls of ashes from a furnace, and let Moses scatter it toward the heavens in the sight of Pharaoh. 9And it will become fine dust in all the land of Egypt, and it will cause [a]boils that break out in sores on man and beast throughout all the land of Egypt." 10Then they took ashes from the furnace and stood before Pharaoh, and Moses scattered *them* toward heaven. And *they* caused [a]boils that break out in sores on man and beast. 11And the [a]magicians could not stand before Moses because of the [b]boils, for the boils were on the magicians and on all the Egyptians. 12But the LORD hardened the heart of Pharaoh; and he [a]did not heed them, just [b]as the LORD had spoken to Moses.

The Seventh Plague: Hail

13Then the LORD said to Moses, [a]"Rise early in the morning and stand before Pharaoh, and say to him, 'Thus says the LORD God of the Hebrews: "Let My people go, that they may [b]serve Me, 14for at this time I will send all My plagues to your very heart, and on your servants and on your people, [a]that you may know that *there is* none like Me in all the earth. 15Now if I had [a]stretched out My hand and struck you and your people with [b]pestilence, then you would have been cut off from the earth. 16But indeed for [a]this *purpose* I have raised you up, that I may [b]show My power *in* you, and that My [c]name may be declared in all the earth. 17As yet you exalt yourself against My people in that you will not let them go. 18Behold, tomorrow about this time I will cause very heavy hail to rain down, such as has not been in Egypt since its founding until now. 19Therefore send now *and* gather your livestock and all that you have in the field, for the hail shall come down on every man and every animal which is found in the field and is not brought home; and they shall die.” ’ ”

20He who [a]feared the word of the LORD among the [b]servants of Pharaoh made his servants and his livestock flee to the houses. 21But he who did not regard the word of the LORD left his servants and his livestock in the field.

22Then the LORD said to Moses, “Stretch out your hand toward heaven, that there may be [a]hail in all the land of Egypt—on man, on beast, and on every herb of the field, throughout the land of Egypt.” 23And Moses stretched out his rod toward heaven; and [a]the LORD sent thunder and hail, and fire darted to the ground. And the LORD rained hail on the land of Egypt. 24So there was hail, and fire mingled with the hail, so very heavy that there was none like it in all the land of Egypt since it became a nation. 25And the [a]hail struck throughout the whole land of Egypt, all that *was* in the field, both man and beast; and the hail struck every herb of the field and broke every tree of the field. 26[a]Only in the land of Goshen, where the children of Israel *were,* there was no hail.

27And Pharaoh sent and [a]called for Moses and Aaron, and said to them, [b]"I have sinned this time. [c]The LORD *is* righteous, and my people and I *are* wicked. 28[a]Entreat[*] the LORD, that there may be no *more* [*]mighty thundering and hail, for *it is enough. I will let you* [b]*go, and you shall stay no longer."*

29So Moses said to him, "As soon as I have gone out of the city, I will [a]spread out my hands to the LORD; the thunder will cease, and there will be no more hail, that you may know that the [b]earth *is* the LORD's. 30But as for you and your servants, [a]I know that you will not yet fear the LORD God."

31Now the flax and the barley were struck, [a]for the barley *was* in the head and the flax *was* in bud. 32But the wheat and the spelt were not struck, for they *are* [*]late crops.

33So Moses went out of the city from Pharaoh and [a]spread out his hands to the LORD; then the thunder and the hail ceased, and the rain was not poured on the earth. 34And when

Pharaoh saw that the rain, the hail, and the thunder had ceased, he sinned yet more; and he hardened his heart, he and his servants. 35So [a]the heart of Pharaoh was hard; neither would he let the children of Israel go, as the LORD had spoken by Moses.

Exodus 10

The Eighth Plague: Locusts

1Now the LORD said to Moses, “Go in to Pharaoh; [a]for I have hardened his heart and the hearts of his servants, [b]that I may show these signs of Mine before him, 2and that [a]you may tell in the hearing of your son and your son’s son the mighty things I have done in Egypt, and My signs which I have done among them, that you may [b]know that I *am* the LORD.”

3So Moses and Aaron came in to Pharaoh and said to him, “Thus says the LORD God of the Hebrews: ‘How long will you refuse to [a]humble yourself before Me? Let My people go, that they may [b]serve Me. 4Or else, if you refuse to let My people go, behold, tomorrow I will bring [a]locusts into your territory. 5And they shall cover the face of the earth, so that no one will be able to see the earth; and [a]they shall eat the residue of what is left, which remains to you from the hail, and they shall eat every tree which grows up for you out of the field. 6They shall [a]fill your houses, the houses of all your servants, and the houses of all the Egyptians—which neither your fathers nor your fathers’ fathers have seen, since the day that they were on the earth to this day.' " And he turned and went out from Pharaoh.

7Then Pharaoh's [a]servants said to him, "How long shall this man be [b]a snare to us? Let the men go, that they may serve the LORD their God. Do you not yet know that Egypt is destroyed?"

8So Moses and Aaron were brought again to Pharaoh, and he said to them, "Go, serve the LORD your God. Who *are* the ones that are going?"

9And Moses said, "We will go with our young and our old; with our sons and our daughters, with our flocks and our herds we will go, for [a]we must hold a feast to the LORD."

10Then he said to them, "The LORD had better be with you when I let you and your little ones go! Beware, for evil is ahead of you. 11Not so! Go now, you *who are* men, and serve the LORD, for that is what you desired." And they were driven [a]out from Pharaoh's presence.

12Then the LORD said to Moses, [a]"Stretch out your hand over the land of Egypt for the locusts, that they may come upon the land of Egypt, and [b]eat every herb of the land—all that the hail has left." 13So Moses stretched out his rod over the land of Egypt, and the LORD brought an east wind on the land all that day and all *that* night. When it was morning, the east wind brought the locusts. 14And [a]the locusts went up over all the land of Egypt and rested on all the territory of Egypt. *They were* very severe; [b]previously there had been no such locusts as they, nor shall there be such after them. 15For they [a]covered the face of the whole earth, so that the land was darkened; and they [b]ate every herb of the land and all the fruit of the trees which the hail had left. So there remained nothing green on the trees or on the plants of the field throughout all the land of Egypt.

16Then Pharaoh called [a]for Moses and Aaron in haste, and said, [b]"I have sinned against the LORD your God and against you. 17Now therefore, please forgive my sin only this once, and [a]entreat[*] the LORD your God, that He may take away from me this death only." 18So he [a]went out from Pharaoh and entreated the LORD. 19And the LORD turned a very strong west wind, which took the locusts away and blew them [a]into the Red Sea. There remained not one locust in all the territory of Egypt. 20But the LORD [a]hardened Pharaoh's heart, and he did not let the children of Israel go.

The Ninth Plague: Darkness

21Then the LORD said to Moses, [a]"Stretch out your hand toward heaven, that there may be darkness over the land of Egypt, [*]darkness *which* may even be felt." 22So Moses stretched out his hand toward heaven, and there was [a]thick darkness in all the land of Egypt [b]three days. 23They did not see one another; nor did anyone rise from his place for three days. [a]But all the children of

Israel had light in their dwellings.

24Then Pharaoh called to Moses and [a]said, “Go, serve the LORD; only let your flocks and your herds be kept back. Let your [b]little ones also go with you.”

25But Moses said, “You must also give [*]us sacrifices and burnt offerings, that we may sacrifice to the LORD our God. 26Our [a]livestock also shall go with us; not a hoof shall be left behind. For we must take some of them to serve the LORD our God, and even we do not know with what we must serve the LORD until we arrive there.”

27But the LORD [a]hardened Pharaoh’s heart, and he would not let them go. 28Then Pharaoh said to him, [a]“Get away from me! Take heed to yourself and see my face no more! For in the day you see my face you shall die!”

29So Moses said, “You have spoken well. [a]I will never see your face again.”

Exodus 11

Death of the Firstborn Announced

1And the LORD said to Moses, “I will bring one more plague on Pharaoh and on Egypt. [a]Afterward he will let you go from here. [b]When he lets *you* go, he will surely drive you out of here altogether. 2Speak now in the hearing of the people, and let every man ask from his neighbor and every woman from her neighbor, articles of silver and [a]articles of gold.” 3[a]And the LORD gave the people favor in the sight of the Egyptians. Moreover the man [b]Moses *was* very great in the land of Egypt, in the sight of Pharaoh's servants and in the sight of the people.

4Then Moses said, "Thus says the LORD: [a]'About midnight I will go out into the midst of Egypt; 5and [a]all the firstborn in the land of Egypt shall die, from the firstborn of Pharaoh who sits on his throne, even to the firstborn of the female servant who *is* behind the handmill, and all the firstborn of the animals. 6[a]Then there shall be a great cry throughout all the land of Egypt, [b]such as was not like it *before,* nor shall be like it again. 7[a]But against none of the children of Israel [b]shall a dog [*]move its tongue, against man or beast, that you may know that the LORD does make a difference between the Egyptians and Israel.' 8And [a]all these your servants shall come down to me and bow down to me, saying, 'Get out, and all the people who follow you!' After that I will go out." [b]Then he went out from Pharaoh in great anger.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Basic Training for Spiritual Warfare

The

only way to become a skilled warrior is to be trained and placed in the midst of a battle. It is only when you are placed in the furnace of affliction that you can truly be trained in the art of strategic prayer and spiritual warfare. As you delve into this *Spiritual Warfare Bible*, there are tools you will need at all times. It's time to get yourself armed. The Spiritual Warfare Basics in Exodus contain several instructions you must hold on to as you engage in spiritual warfare.

Make certain you have the right tools. You will need this *Spiritual Warfare Bible*—*your sword.* You will also find that in times of revelation you will need a *prayer journal* to quickly document the *rhema* word God may give you concerning a certain issue or person. In addition, you may find good use for a *notebook, pen,* and *highlighter.* Get ready — you've now entered basic training!

*

[*] Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 1–3.

[9]But the LORD said to Moses, [a]“Pharaoh will not heed you, so that [b]My wonders may be multiplied in the land of Egypt.” [10]So Moses and Aaron did all these wonders before Pharaoh; [a]and the LORD hardened Pharaoh’s heart, and he did not let the children of Israel go out of his land.

Exodus 12

The Passover Instituted

[1]Now the LORD spoke to Moses and Aaron in the land of Egypt, saying, [2][a]“This month *shall be* your beginning of months; it *shall be* the first month of the year to you. [3]Speak to all the congregation of Israel, saying: ‘On the [a]tenth of this month every man shall take for himself a lamb, according to the house of *his* father, a lamb for a household. [4]And if the household is too small for the lamb, let him and his neighbor next to his house take *it* according to the number of the persons; according to each man’s need you shall make your

count for the lamb. [5]Your lamb shall be [a]without* blemish, a male *of the first year. You may take *it* from the sheep or from the goats. [6]Now you shall keep it until the [a]fourteenth day of the same month. Then the whole assembly of the congregation of Israel shall kill it at twilight. [7]And they shall take *some* of the blood and put *it* on the two doorposts and on the lintel of the houses where they eat it. [8]Then they shall eat the flesh on that [a]night; [b]roasted in fire, with [c]unleavened bread *and* with bitter *herbs* they shall eat it. [9]Do not eat it raw, nor boiled at all with water, but [a]roasted in fire—its head with its legs and its entrails. [10][a]You shall let none of it remain until morning, and what remains of it until morning you shall burn with fire. [11]And thus you shall eat it: **with* a belt on your waist, your sandals on your feet, and your staff in your hand. So you shall eat it in haste. [a]It *is* the LORD’s Passover.

[12]‘For I [a]will pass through the land of Egypt on that night, and will strike all the firstborn in the land of Egypt, both man and beast; and [b]against all the gods of Egypt I [1]will execute judgment: [c]I *am* the LORD. [13]Now the blood shall be a sign for you on the houses where you *are.* And when I see the blood, I will pass over you; and the plague shall not be on you to destroy *you* when I strike the land of Egypt.

[14]‘So this day shall be to you [a]a memorial; and you shall keep it as a feast to the LORD throughout your

generations. You shall keep it as a [b]feast [c]by an everlasting ordinance. 15[a]Seven days you shall eat unleavened bread. On the first day you shall remove leaven from your houses. For whoever eats leavened bread from the first day until the seventh day, [b]that [*]person shall be [*]cut off from Israel. 16On the first day *there shall be* [a]a holy convocation, and on the seventh day there shall be a holy convocation for you. No manner of work shall be done on them; but *that* which everyone must eat—that only may be prepared by you. 17So you shall observe *the Feast of* Unleavened Bread, for [a]on this same day I will have brought your [*]armies [b]out of the land of Egypt. Therefore you shall observe this day throughout your generations as an everlasting ordinance. 18[a]In the first *month,* on the fourteenth day of the month at evening, you shall eat unleavened bread, until the twenty-first day of the month at evening. 19For [a]seven days no leaven shall be found in your houses, since whoever eats what is leavened, that same person shall be cut off from the congregation of Israel, whether *he is* a stranger or a native of the land. 20You shall eat nothing leavened; in all your dwellings you shall eat unleavened bread.' "

21Then [a]Moses called for all the [b]elders of Israel and said to them, [c]"Pick out and take lambs for yourselves according to your families, and kill the Passover *lamb.* 22[a1]And you shall take a bunch of hyssop, dip *it* in the blood that *is* in the basin, and [b]strike the lintel and the two doorposts with the blood that *is* in the basin. And none of you shall go out of the door of his house until morning. [23][a]For the LORD will pass through to strike the Egyptians; and when He sees the [b]blood on the [*]lintel and on the two doorposts, the LORD will pass over the door and [c]not allow [d]the destroyer to come into your houses to strike *you.* [24]And you shall [a]observe this thing as an ordinance for you and your sons forever. [25]It will come to pass when you come to the land which the LORD will give you, [a]just as He promised, that you shall keep this service. [26][a]And it shall be, when your children say to you, 'What do you mean by this service?' [27]that you shall say, [a]'It *is* the Passover sacrifice of the LORD, who passed over the houses of the children of Israel in Egypt when He struck the Egyptians and delivered our households.' " So the people [b]bowed their heads and worshiped. [28]Then the children of Israel went away and [a]did *so;* just as the LORD had commanded Moses and Aaron, so they did.

Ex. 12:23

In the name

of Jesus the destroyer cannot come into my life or family.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

The Passover Prayer for Deliverance

Father God, in the name of Jesus, I thank You for the anointing of Passover deliverance. I

decree
and
declare
that
the
last
plague
is
released
against
the
taskmaster
assigned
to
my
family,
and
he
will
let
us
go!
The
blood
of
Jesus,
which
covers
all
the
entrances
of
my
dwelling,
looses
every
relative
of
my
house.

Everywhere my family, my children, my spouse, and relatives reside, the blood of Jesus covers every entrance, and no harm shall come nigh our dwelling.[1]

A thousand shall fall to one side and ten thousand to the other, but

no
harm
shall
come
nigh
our
dwelling.
Father
God,
I
draw
from
the
anointing
of
the
Passover
season.
Because
I
am
a
believer,
this
is
my
heritage
and
the
heritage
of
my
seed.
Evil,
death,
calamity,
and
harm
will
pass

over
me
and
mine.
I
commit
never
to
forget
how
You
brought
me
out,
and
I
declare
that
You
will
bring
my
family
out
with
me.
I
will
remind
my
sons
and
daughters
of
the
Passover
anointing
and
what
it

means
to
our
family.

I
thank
You
that
You
have
given
me
authority
to
lord
over
every
taskmaster
assigned
against
my
family
and
me.
When
I
speak
against
the
darkness
that
has
come
to
take
us
out,
I
speak

on behalf of God Himself! I decree and declare that in every situation where the devil has hardened his heart on my behalf, signs and miracles will result because God is at the root of all. Pharaoh, it is midnight

in
the
Spirit,
and
you
must
let
my
family
go!
You
have
no
choice.
Rise
up
in
the
night
and
give
me
my
possession,
that
my
family
and
I
may
worship
the
Lord.
I
command
the
transfer
of
the
wealth

of the wicked to accompany my deliverance. Let every Egyptian who has what belongs to me be stripped, in Jesus’s name! Passover was a night of watching, and my family shall be watchers on the wall of the night watches *in commemoration forever. Amen.*[*]

---

[*] Kimberly Daniels, *Prayers That Bring Change*, 105–107.

The Tenth Plague: Death of the Firstborn

29[a]And it came to pass at midnight that [b]the LORD struck all the firstborn in the land of Egypt, from the firstborn of Pharaoh who sat on his throne to the firstborn of the captive who *was* [*]in the dungeon, and all the firstborn of [c]livestock. 30So Pharaoh rose in the night, he, all his servants, and all the Egyptians; and there was a great cry in Egypt, for *there was* not a house where *there was* not one dead.

The Exodus

31Then he [a]called for Moses and Aaron by night, and said, “Rise, go out from among my people, [b]both you and the children of Israel. And go, serve the LORD as you have [c]said. 32[a]Also take your flocks and your herds, as you have sai1d, and be gone; and bless me also.”

33[a]And the Egyptians [b]urged the people, that they might send them out of the land in haste. For they said, “We *shall* all *be* dead.” 34So the people took their dough before it was leavened, having their kneading bowls bound up in their clothes on their shoulders. 35Now the children of Israel had done according to the word of Moses, and they had asked from the Egyptians [a]articles of silver, articles of gold, and clothing. 36[a]And the LORD had given the people favor in the sight of the Egyptians, so that they granted them *what they requested.* Thus [b]they plundered the Egyptians.

37Then [a]the children of Israel journeyed from [b]Rameses to Succoth, about [c]six hundred thousand men on foot, besides children. 38A [a]mixed multitude went up with them also, and flocks and herds—a great deal of [b]livestock. 39And they baked unleavened cakes of the dough which they had brought out of Egypt; for it was not leavened, because [a]they were driven out of Egypt and could not wait, nor had they prepared provisions for themselves.

40Now the [*]sojourn of the children of Israel who lived in [*]Egypt *was* [a]four hundred and thirty years. 41And it came to pass at the end of the four hundred and thirty years—on that very same day—it came to pass that [a]all the armies of the LORD went out from the land of Egypt. 42It *is* [a]a [*]night of solemn observance to the LORD for bringing them out of the land of

Egypt. This *is* that night of the LORD, a solemn observance for all the children of Israel throughout their generations.

Passover Regulations

[1]43And the LORD said to Moses and Aaron, “This *is* [a]the ordinance of the Passover: No foreigner shall eat it. 44But every man’s servant who is bought for money, when you have [a]circumcised him, then he may eat it. 45[a]A sojourner and a hired servant shall not eat it. 46In one house it shall be eaten; you shall not carry any of the flesh outside the house, [a]nor shall you break one of its bones. 47[a]All the congregation of Israel shall keep it. 48And [a]when a stranger [*]dwells with you *and wants* to keep the Passover to the LORD, let all his males be circumcised, and then let him come near and keep it; and he shall be as a native of the land. For no uncircumcised person shall eat it. 49[a]One law shall be for the native-born and for the stranger who dwells among you.”

50Thus all the children of Israel did; as the LORD commanded Moses and Aaron, so they did. 51[a]And it came to pass, on that very same day, that the LORD brought the children of Israel out of the land of Egypt [b]according to their armies.

Exodus 13

The Firstborn Consecrated

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2[a]“Consecrate[*] to Me all the firstborn, whatever opens the womb among the children of Israel, *both* of man and beast; it is Mine.”

The Feast of Unleavened Bread

[3]And Moses said to the people: [a]“Remember this day in which you went out of Egypt, out of the house of [*]bondage; for [b]by strength of ha1nd the LORD brought you out of this *place.* [c]No leavened bread shall be eaten. [4][a]On this day you are going out, in the month Abib. [5]And it shall be, when the LORD [a]brings you into the [b]land of the Canaanites and the Hittites and the Amorites and the Hivites and the Jebusites, which He [c]swore to your fathers to give you, a land flowing with milk and honey, [d]that you shall keep this service in this month. [6][a]Seven days you shall eat unleavened bread, and on the seventh day *there shall be* a feast to the LORD. [7]Unleavened bread shall be eaten seven days. And [a]no leavened bread shall be seen among you, nor shall leaven be seen among you in all your quarters. [8]And you shall [a]tell your son in that day, saying, ‘*This is done* because of what the LORD did for me when I came up from Egypt.’ [9]It shall be as [a]a sign to you on your hand and as a memorial between your eyes, that the LORD’s law may be in your mouth; for with a strong hand the LORD has brought you out of Egypt. [10][a]You shall therefore keep this [*]ordinance in its season from year to year.

The Law of the Firstborn

[11]“And it shall be, when the LORD [a]brings you into the land of the

[b]Canaanites, as He swore to you and your fathers, and gives it to you, 12[a]that you shall [*]set apart to the LORD all that open the womb, that is, every firstborn that comes from an animal which you have; the males *shall be* the LORD's. 13But [a]every firstborn of a donkey you shall redeem with a lamb; and if you will not redeem *it,* then you shall break its neck. And all the firstborn of man among your sons [b]you shall redeem. 14[a]So it shall be, when your son asks you in time to come, saying, 'What *is* this?' that you shall say to him, [b]'By strength of hand the LORD brought us out of Egypt, out of the house of bondage. 15And it came to pass, when Pharaoh was stubborn about letting us go, that [a]the LORD killed all the firstborn in the land of Egypt, both the firstborn of man and the firstborn of beast. Therefore I sacrifice to the LORD all males that open the womb, but all the firstborn of my sons I redeem.' 16It shall be as [a]a sign on your hand and as frontlets between your eyes, for by strength of hand the LORD brought us out of Egypt."

The Wilderness Way

17Then it came to pass, when Pharaoh had let the people go, that God did not lead them *by* way of the land of the Philistines, although that *was* near; for God said, "Lest perhaps the people [a]change their minds when they see war, and [b]return to Egypt." 18So God [a]led the people around *by* way of the wilderness of the Red Sea. And the children of Israel went up in orderly ranks out of the land of Egypt.

19And Moses took the [a]bones of [b]Joseph with him, for he had placed the children of Israel under solemn oath, saying, [c]“God will surely [*]visit you, and you shall carry up my bones from here with you.”

20So [a]they took their journey from [b]Succoth and camped in Etham at the edge of the wilderness. 21And [a]the LORD went before them by day in a pillar of cloud to lead the way, and by night in a pillar of fire to give them light, so as to go by day and night. 22He did not take away the pillar of cloud by day or the pillar of fire by night *from* before the people.

Exodus 14

The Red Sea Crossing

1Now the LORD spoke to Moses, saying: 2“Speak to the children of Israel, [a]that they turn and camp before [b]Pi Hahiroth, between [c]Migdol and the sea, opposite Baal Zephon; you shall camp before it by the sea. 3For Pharaoh will say of the children of Israel, [a]‘They *are* bewildered by the land; the wilderness has closed them in.’ 4Then [a]I will harden Pharaoh’s heart, so that he will pursue them; and I [b]will gain honor over Pharaoh and over all his army, [c]that the Egyptians may know that I *am* the LORD.” And they did so.

5Now it was told the king of Egypt that the people had fled, and [a]the heart of Pharaoh and his servants was turned against the people; and they

said, “Why have we done this, that
we have let Israel go from serving
us?” 6So he [*]made ready his chariot
and took his people with him. 7Also,
he took [a]six hundred choice chariots,
and all the chariots of Egypt with
captains over every one of them. 8And
the LORD [a]hardened the heart of
Pharaoh king of Egypt, and he
pursued the children of Israel; and
[b]the children of Israel went out with
boldness. 9So the [a]Egyptians pursued
them, all the horses *and* chariots of
Pharaoh, his horsemen and his army,
and overtook them camping by the
sea beside Pi Hahiroth, before Baal
Zephon.

10And when Pharaoh drew near,
the children of Israel lifted their eyes,
and behold, the Egyptians marched
after them. So they were very afraid,
and the children of Israel [a]cried out to
the LORD. 11[a]Then they said to Moses,
“Because *there were* no graves in
Egypt, have you taken us away to die
in the wilderness? Why have you so
dealt with us, to bring us up out of
Egypt? 12[a]*Is* this not the word that we
told you in Egypt, saying, ‘Let us
alone that we may serve the
Egyptians’? For *it would have been*
better for us to serve the Egyptians
than that we should die in the
wilderness.”

13And Moses said to the people,
[a]“Do not be afraid. [b]Stand still, and
see the [c]salvation[*] of the LORD,
which He will accomplish for you
today. For the Egyptians whom you
see today, you shall [d]see again no

more forever. 14[a]The LORD will fight
for you, and you shall [b]hold[*] your
peace.”

15And the LORD said to Moses,
“Why do you cry to Me? Tell the
children of Israel to go forward. 16But
[a]lift up your rod, and stretch out your
hand over the sea and divide it. And
the children of Israel shall go on dry
ground through the midst of the sea.
17And I indeed will [a]harden the hearts
of the Egyptians, and they shall
follow them. So I will [b]gain honor
over Pharaoh and over all his army,
his chariots, and his horsemen.
18Then the Egyptians shall know that
I *am* the LORD, when I have gained
honor for Myself over Pharaoh, his
chariots, and his horsemen.”

19And the Angel of God, [a]who went
before the camp of Israel, moved and
went behind them; and the pillar of
cloud went from before them and
stood behind them. 20So it came
between the camp of the Egyptians
and the camp of Israel. Thus it was a
cloud and darkness *to the one,* and it
gave light by night *to the other,* so
that the one did not come near the
other all that night.

21Then Moses stretched out his
hand over the sea; and the LORD
caused the sea to go *back* by a strong
east wind all that night, and [a]made
the sea into dry *land,* and the waters
were [b]divided. 22So [a]the children of
Israel went into the midst of the sea
on the dry *ground, and the waters were*
[b]*a wall to them on their right hand and*
on their left. 23*And the Egyptians*

pursued and went after them into the midst of the sea, all Pharaoh’s horses, his chariots, and his horsemen.

24Now it came to pass, in the morning [a]watch, that [b]the LORD looked down upon the army of the Egyptians through the pillar of fire and cloud, and He *troubled the army of the Egyptians. 25And He *took off their chariot wheels, so that they drove them with difficulty; and the Egyptians said, “Let us flee from the face of Israel, for the LORD [a]fights for them against the Egyptians.”

Ex. 14:24

Let Your fire protect me and cover me.

26Then the LORD said to Moses, “Stretch out your hand over the sea, that the waters may come back upon the Egyptians, on their chariots, and on their horsemen.” 27And Moses stretched out his hand over the sea; and when the morning appeared, the sea [a]returned to its full depth, while the Egyptians were fleeing into it. So the LORD [b]overthrew *the Egyptians in the midst of the sea. 28Then [a]the waters returned and covered the chariots, the horsemen, *and* all the army of Pharaoh that came into the sea after them. Not so much as one of them remained. 29But [a]the children of Israel had walked on dry *land* in the midst of the sea, and the waters *were* a wall to them on their right hand and on their left.

30So the LORD [a]saved[*] Israel that day out of the hand of the Egyptians, and Israel [b]saw the Egyptians dead on the seashore. 31Thus Israel saw the great [*]work which the LORD had done in Egypt; so the people feared the LORD, and [a]believed the LORD and His servant Moses.

Exodus 15

The Song of Moses

1Then [a]Moses and the children of Israel sang this song to the LORD, and spoke, saying:

“I
will
[b]sing
to
the
LORD,

For
He
has
triumphed
gloriously!

The
horse
and
its
rider

He
has
thrown
into
the
sea!

[2]The
LORD
is my
strength
and
[a]song,

And
He
has
become
my
salvation;

He *is*
my
God,
and
[b]I
will
praise
Him;

My
[c]father’s
God,
and I
[d]will
exalt
Him.

[3]The
LORD
is a

man
of
[a]war;

The
LORD
is
His
[b]name.

4[a]Pharaoh's
chariots
and
his
army
He
has
cast
into
the
sea;

[b]His
chosen
captains
also
are
drowned
in
the
Red
Sea.

*Ex.
15:4*

**Let
every
pharaoh
that**

would
pursue
my
life
be
drowned
in
the
sea.

[5]The
depths
have
covered
them;

[a]They
sank
to
the
bottom
like
a
stone.

[6]“Your
[a]right
hand,
O
LORD,
has
become
glorious
in
power;

Your
right
hand,
O
LORD,

has dashed the enemy in pieces.

[7]And in the greatness of Your [a]excellence

You have overthrown those who rose against You;

You sent forth [b]Your wrath;

It [c]consumed them [d]like stubble.

[8]And [a]with the blast of

Your nostrils

The waters were gathered together;

[b]The floods stood upright like a heap;

The depths [*]congealed in the heart of the sea.

9 [a]The enemy said, ‘I will pursue,

I will overtake,

I will [b]divide the spoil;

My
desire
shall
be
satisfied
on
them.

I will
draw
my
sword,

My
hand
shall
destroy
them.’

[10]You
blew
with
Your
wind,

The
sea
covered
them;

They
sank
like
lead
in
the
mighty
waters.

[11]“Who
[a]*is*

like
You,
O
LORD,
among
the
[*]gods?

Who
is
like
You,
[b]glorio1us
in
holiness,

Fearful
in
[c]praises,
[d]doing
wonders?

[12]You
stretched
out
Your
right
hand;

The
earth
swallowed
them.

[13]You
in
Your
mercy
have
[a]led
forth

The people whom You have redeemed;

You have guided *them* in Your strength

To [b]Your holy habitation.

14“The [a]people will hear *and* be afraid;

[b]Sorrow[*] will take hold of the inhabitants of Philistia.

15[a]Then [b]the chiefs

of Edom will be dismayed;

[c]The mighty men of Moab,

Trembling will take hold of them;

[d]All the inhabitants of Canaan will [e]melt away.

16[a]Fear and dread will fall on them;

By the greatness of Your

arm

They
will
be
[b]*as*
still
as a
stone,

Till
Your
people
pass
over,
O
LORD,

Till
the
people
pass
over

[c]Whom
You
have
purchased.

[17]You
will
bring
them
in
and
[a]plant
them

In
the
[b]mountain

of
Your
inheritance,

In
the
place,
O
LORD,
which
You
have
made

For
Your
own
dwelling,

The
[c]sanctuary,
O
Lord,
which
Your
hands
have
established.

18“The
[a]
LORD
shall
reign
forever
and
ever.”

19For the [a]horses of Pharaoh went with his chariots and his horsemen into the sea, and [b]the LORD brought back the waters of the sea upon them. But the children of Israel went on dry *land* in the midst of the sea.

The Song of Miriam

20Then Miriam [a]the prophetess, [b]the sister of Aaron, [c]took the timbrel in her hand; and all the women went out after her [d]with timbrels and with dances. 21And Miriam [a]answered them:

[b]“Sing
to
the
LORD,

For
He
has
triumphed
gloriously!

The
horse
and
its
rider

He
has
thrown
into
the
sea!”

Bitter Waters Made Sweet

22So Moses brought Israel from the Red Sea; then they went out into the Wilderness of [a]Shur. And they went three days in the wilderness and found no [b]water. 23Now when they came to [a]Marah, they could not drink the waters of Marah, for they *were* bitter. Therefore the name of it was called [*]1Marah. 24And the people [a]complained against Moses, saying, “What shall we drink?” 25So he cried out to the LORD, and the LORD showed him a tree. [a]When he cast *it* into the waters, the waters were made sweet.

There He [b]made a statute and an [*]ordinance for them, and there [c]He tested them, 26and said, [a]“If you diligently heed the voice of the LORD your God and do what is right in His sight, give ear to His commandments and keep all His statutes, I will put none of the [b]diseases on you which I have brought on the Egyptians. For I *am* the LORD [c]who heals you.”

27[a]Then they came to Elim, where there *were* twelve wells of water and seventy palm trees; so they camped there by the waters.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

PLUGGING INTO THE POWER SOURCE

One source of power is the Holy Spirit and the Word of God. We build ourselves up in faith when we confess the Word of

God. We experience greater confidence when we understand the Word and walk in revelation. Prayer plugs us into the power source. Prayer connects us to God and allows His power to flow to us in any situation. Salvation is the basis for warfare. The new birth is a necessity. A believer also needs the infilling of the Holy Spirit. Are you born again? Do you know beyond a doubt that you are saved?

Believers must live holy lives that are submitted to the Holy Spirit. We are commanded to walk in the Spirit. This will assure us of continual victory and breakthroughs for others. We can avenge disobedience when our obedience is fulfilled. Jesus cast out devils through the power of the Holy Spirit (Matt. 12:28). The Holy Spirit was the source of His power and wisdom.

We are told to be strong in the Lord and in the power of His might (Eph. 6:10). We walk and war in His strength. This requires humility and total dependence upon God. We are not confident in our own strength. We cannot allow pride to open the door for destruction.

The Lord is a man of war (Ex. 15:3). He will fight our battles. We depend upon His power and direction. We depend upon His Word and His Spirit. I cannot overemphasize the need for humility. God gives grace to the humble. The Lord is the strength of my life. This gives me the ability to over1come all fear. I will put my trust in Him. This was the key to David’s victories. David was a king who knew how to depend upon the Lord. David won many battles and overcame all of his enemies.

The Lord taught David how to war (Ps. 144:1). He will also teach you how to war. You must depend on Him. Prayers and strategies are learned from years of warring and trusting in God. God taught us how to war using His Word. The Holy Spirit opened our eyes to great truths, and we are still learning.

God was David's power source. He confessed that the Lord was his strength. David was a man of prayer and worship. He enjoyed the Lord's presence. The Lord's presence was David's source of joy and strength. His songs were powerful prophetic weapons against the enemy. There is no substitute for a life of praise and worship. Every believer needs to belong to a church that is strong in praise and worship.

There are many great warriors being trained in the school of the Holy Spirit. They are humble people who had to depend upon God for breakthrough. They had to connect with the Lord, who is the greatest warrior. They learned through experience and sometimes through failure. Like these great warriors for God, if we call upon the Lord, He will show us great and mighty things.

The Word of God is the sword of the Spirit. A sword is used in war. The Lord will teach you how to use this sword. You will use it against the spiritual enemies of your soul. You will see great victories as you use it correctly. The Word of God is our source of wisdom. We operate in God's wisdom to defeat the powers of hell.

Confessing the Word of God is an important part of every believer's spiritual life. Christianity is called the great confession. Salvation comes from confessing with the mouth. The mouth is connected to the heart. The Word of God released from your mouth will be planted in your heart. Faith is released from the mouth. The mouth can only release what is in the heart. Faith in the heart that is released through the mouth can move mountains.

God is the source of all our victories and breakthrough. He is the source of our wisdom and strategies. His Word is the source for our understanding of the warfare in which we are involved. Our warfare originates in the heavens. We bind what is already bound in the heavens. We loose what is already loosed in the heavens.

The Word of God is a treasure chest of wisdom and knowledge. It contains an abundance of revelation for every believer. Every believer who desires to enjoy liberty and victory must take time to study the Word of God and ask for revelation. Revelation is the key to authority. Peter received the keys of the kingdom after he received the revelation that Jesus was Christ (Matt. 16:16).

God has promised to make us joyful in the house of prayer (Is. 56:7). God's house is called a house of prayer for all nations. I believe we should not only pray but also enjoy prayer. The joy of the Lord is our strength. Prayer should yield an abundance of miracles and rewards. Those who enjoy the results of prayer will enjoy an exciting life.[*]

---

[*] John Eckhardt, *Prayers That Rout Demons*, 1–4.

Exodus 16

Bread from Heaven

1And they [a]journeyed from Elim, and all the congregation of the children of Israel came to the Wilderness of Sin, which is between Elim and [b]Sinai, on the fifteenth day of the second month after they departed from the land of Egypt. 2Then the whole congregation of the children of Israel [a]complained against Moses and Aaron in the wilderness. 3And the children of Israel said to them, [a]“Oh, that we had died by the hand of the LORD in the land of Egypt, [b]when we sat by the pots of meat *and* when we ate bread to the full! For you have brought us out into this wilderness to kill this whole assembly with hunger."

4Then the LORD said to Moses, "Behold, I will rain [a]bread from heaven for you. And the people shall go out and gather [*]a certain quota every day, that I may [b]test them, whether they will [c]walk in My law or not. 5And it shall be on the sixth day that they shall prepare what they bring in, and [a]it shall be twice as much as they gather daily."

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Important First Actions

Engage in the proper preparation. First Corinthians 14:4, 14 and Jude 20 instruct us to pray in the Spirit because it will edify us and charge us up in the Holy Spirit (give us power to pray more effectively). This time in the Spirit can also be done by singing as you spend time in worship, praise, and thanksgiving. This will help you to break through spiritual barriers and to move beyond the veil into the secret place.

Rid yourself of encumbrances. According to Hebrews 12:1, a few other actions are needed as you prepare for spiritual warfare. You need to make sure you confess your sins (Ps. 24:3–4), examine yourself to determine if you need to repent of something or release (f1orgive) someone, and cast your cares and burdens upon the Lord (1 Pet.

5:7). Remember, you do not fight spiritual battles in your own strength; you fight them in the strength of the Lord.*

---

* Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 3.

6Then Moses and Aaron said to all the children of Israel, [a]“At evening you shall know that the LORD has brought you out of the land of Egypt. 7And in the morning you shall see [a]the glory of the LORD; for He [b]hears your complaints against the LORD.

But [c]what *are* we, that you complain against us?” 8Also Moses said, “*This shall be seen* when the LORD gives you meat to eat in the evening, and in the morning bread to the full; for the LORD hears your complaints which you make against Him. And what *are* we? Your complaints *are* not against us but [a]against the LORD.”

9Then Moses spoke to Aaron, “Say to all the congregation of the children of Israel, [a]‘Come near before the LORD, for He has heard your complaints.’ ” 10Now it came to pass, as Aaron spoke to the whole congregation of the children of Israel, that they looked toward the wilderness, and behold, the glory of the LORD [a]appeared in the cloud.

11And the LORD spoke to Moses, saying, 12[a]“I have heard the complaints of the children of Israel. Speak to them, saying, [b]‘At twilight you shall eat meat, and [c]in the morning you shall be filled with bread. And you shall know that I *am* the LORD your God.’ ”

13So it was that [a]quails came up at evening and covered the camp, and in the morning [b]the dew lay all around the camp. 14And when the layer of dew lifted, there, on the surface of the wilderness, was [a]a small round [b]substance, *as* fine as frost on the ground. 15So when the children of Israel saw *it,* they said to one another, “What is it?” For they did not know what it *was.*

And Moses said to them, [a]“This *is* the bread which the LORD has given you to eat. 16This is the thing which the LORD has commanded: ‘Let every man gather it [a]according to each one’s need, one [b]omer for each person, *according to the* number of persons; let every man take for *those* who *are* in his tent.’ ”

17Then the children of Israel did so and gathered, some more, some less. 18So when they measured *it* by omers, [a]he who gathered much had nothing left over, and he who gathered little had no lack. Every man had gathered according to each one’s need. 19And Moses said, “Let no one [a]leave any of it till morning.” 20Notwithstanding they did not [*]heed Moses. But some of them left part of it until morning, and it bred worms and stank. And Moses was angry with them. 21So they gathered it every morning, every man according to his need. And when the sun became hot, it melted.

22And so it was, on the sixth day, *that* they gathered twice as much bread, two omers for each one. And all the rulers of the congregation came and told Moses. 23Then he said to them, “This *is what* the LORD has said: ‘Tomorrow *is* [a]a Sabbath rest, a holy Sabbath to the LORD. Bake what you will bake *today,* and boil what you will boil; and lay up for yourselves all that remains, to be kept until morning.’ ” 24So they laid it up till morning, as Moses commanded; and it did not [a]stink, nor were there any worms in it. 25Then Moses said, “Eat that today, for today *is* a Sabbath to the LORD; today you will

not find it in the field. 26[a]Six days you
shall gather it, but on the seventh
day, the Sabbath, there will be none.”

271Now it happened *that some* of
the people went out on the seventh
day to gather, but they found none.
28And the LORD said to Moses, “How
long [a]do you refuse to keep My
commandments and My laws? 29See!
For the LORD has given you the
Sabbath; therefore He gives you on
the sixth day bread for two days. Let
every man remain in his place; let no
man go out of his place on the
seventh day.” 30So the people rested
on the seventh day.

31And the house of Israel called its
name [*]Manna. And [a]it *was* like white
coriander seed, and the taste of it *was*
like wafers *made* with honey.

32Then Moses said, “This *is* the
thing which the LORD has
commanded: ‘Fill an omer with it, to
be kept for your generations, that
they may see the bread with which I
fed you in the wilderness, when I
brought you out of the land of Egypt.’
” 33And Moses said to Aaron, [a]“Take a
pot and put an omer of manna in it,
and lay it up before the LORD, to be
kept for your generations.” 34As the
LORD commanded Moses, so Aaron
laid it up [a]before the Testimony, to be
kept. 35And the children of Israel [a]ate
manna [b]forty years, [c]until they came
to an inhabited land; they ate manna
until they came to the border of the
land of Canaan. 36Now an omer *is*
one-tenth of an ephah.

Exodus 17

Water from the Rock

1 Then [a]all the congregation of the children of Israel set out on their journey from the Wilderness of [b]Sin, according to the commandment of the LORD, and camped in Rephidim; but *there was* no water for the people to [c]drink. 2 [a]Therefore the people contended with Moses, and said, “Give us water, that we may drink.”

So Moses said to them, “Why do you contend with me? Why do you [b]tempt the LORD?”

3 And the people thirsted there for water, and the people [a]complained against Moses, and said, “Why *is* it you have brought us up out of Egypt, to kill us and our children and our [b]livestock with thirst?”

4 So Moses [a]cried out to the LORD, saying, “What shall I do with this people? They are almost ready to [b]stone* me!”

5 And the LORD said to Moses, [a]“Go on before the people, and take with you some of the elders of Israel. Also take in your hand your rod with which [b]you struck the river, and go. 6 [a]Behold, I will stand before you there on the rock in Horeb; and you shall strike the rock, and water will come out of it, that the people may drink.”

And Moses did so in the sight of the elders of Israel. 7 So he called the name of the place [a]Massah* and *Meribah, because of the contention of the children of Israel, and because they *tempted the LORD, saying, “Is the LORD among us or not?”

Victory over the Amalekites

8[a]Now Amalek came and fought with Israel in Rephidim. 9And Moses said to Joshua, “Choose us some men and go out, fight with Amalek. Tomorrow I will stand on the top of the hill with [a]the rod of God in my hand.” 10So Joshua did as Moses said to him, and fought with Amalek. And Moses, Aaron, and Hur went up to the top of the hill. 11And so it was, when Moses [a]held up his hand, that Israel prevailed; and when he let down his hand, Amalek prevailed. 12But Moses’ hands *became* [*]heavy; so they took a stone and put *it* under him, and he sat on it. And Aaron and Hur support1ed his hands, one on one side, and the other on the other side; and his hands were steady until the going down of the sun. 13So Joshua defeated Amalek and his people with the edge of the sword.

14Then the LORD said to Moses, [a]“Write this *for* a memorial in the book and recount *it* in the hearing of Joshua, that [b]I will utterly blot out the remembrance of Amalek from under heaven.” 15And Moses built an altar and called its name, [*]The-LORD-Is-My-Banner; 16for he said, “Because [*]the LORD has [a]sworn: the LORD *will have* war with Amalek from generation to generation.”

Exodus 18

Jethro’s Advice

1And [a]Jethro, the priest of Midian, Moses’ father-in-law, heard of all that

[b]God had done for Moses and for Israel His people—that the LORD had brought Israel out of Egypt. 2Then Jethro, Moses’ father-in-law, took [a]Zipporah, Moses’ wife, after he had sent her back, 3with her [a]two sons, of whom the name of one *was* [*]Gershom (for he said, [b]“I have been a [*]stranger in a foreign land”) 4and the name of the other *was* [*]Eliezer (for *he said,* “The God of my father *was* my [a]help, and delivered me from the sword of Pharaoh”); 5and Jethro, Moses’ father-in-law, came with his sons and his wife to Moses in the wilderness, where he was encamped at [a]the mountain of God. 6Now he had said to Moses, “I, your father-in-law Jethro, am coming to you with your wife and her two sons with her.”

7So Moses [a]went out to meet his father-in-law, bowed down,[1] and [b]kissed him. And they asked each other about *their* well-being, and they went into the tent. 8And Moses told his father-in-law all that the LORD had done to Pharaoh and to the Egyptians for Israel’s sake, all the hardship that had come upon them on the way, and *how* the LORD had [a]delivered them. 9Then Jethro rejoiced for all the [a]good which the LORD had done for Israel, whom He had delivered out of the hand of the Egyptians. 10And Jethro said, [a]“Blessed *be* the LORD, who has delivered you out of the hand of the Egyptians and out of the hand of Pharaoh, *and* who has delivered the people from under the hand of the

Egyptians. 11Now I know that the LORD *is* [a]greater than all the gods; [b]for in the very thing in which they [*]behaved [c]proudly, *He was* above them.” 12Then Jethro, Moses’ father-in-law, [*]took a burnt [a]offering and *other* sacrifices *to offer* to God. And Aaron came with all the elders of Israel [b]to eat bread with Moses’ father-in-law before God.

13And so it was, on the next day, that Moses [a]sat to judge the people; and the people stood before Moses from morning until evening. 14So when Moses’ father-in-law saw all that he did for the people, he said, “What *is* this thing that you are doing for the people? Why do you alone [*]sit, and all the people stand before you from morning until evening?”

15And Moses said to his father-in-law, “Because [a]the people come to me to inquire of God. 16When they have [a]a [*]difficulty, they come to me, and I judge between one and another; and I make known the statutes of God and His laws.”

17So Moses’ father-in-law said to him, “The thing that you do *is* not good. 18Bo1th you and these people who *are* with you will surely wear yourselves out. For this thing *is* too much for you; [a]you are not able to perform it by yourself. 19Listen now to my voice; I will give you [*]counsel, and God will be with you: Stand [a]before God for the people, so that you may [b]bring the difficulties to God. 20And you shall [a]teach them the statutes and the laws, and show them the way in which they must walk and [b]the work they must do. 21Moreover you shall select from all the people [a]able men, such as [b]fear God, [c]men of truth, [d]hating covetousness; and place *such* over them *to be* rulers of thousands, rulers of hundreds, rulers of fifties, and rulers of tens. 22And let them judge the people at all times. [a]Then it will be *that* every great matter they shall bring to you, but every small matter they themselves shall judge. So it will be easier for you, for [b]they will bear *the burden* with you. 23If you do this thing, and God *so* commands you, then you will be able to endure, and all this people will also go to their [a]place in peace."

24So Moses heeded the voice of his father-in-law and did all that he had said. 25And [a]Moses chose able men out of all Israel, and made them heads over the people: rulers of thousands, rulers of hundreds, rulers of fifties, and rulers of tens. 26So they judged the people at all times; the [a]hard[*] cases they brought to Moses, but they judged every small case themselves.

27Then Moses let his father-in-law depart, and [a]he went his way to his own land.

Exodus 19

Israel at Mount Sinai

1In the third month after the children of Israel had gone out of the land of Egypt, on the same day, [a]they came *to* the Wilderness of Sinai. 2For they had departed from [a]Rephidim, had come *to* the Wilderness of Sinai, and camped in the wilderness. So Israel camped there before [b]the mountain.

3And [a]Moses went up to God, and the LORD [b]called to him from the mountain, saying, “Thus you shall say to the house of Jacob, and tell the children of Israel: 4[a]‘You have seen what I did to the Egyptians, and *how* [b]I [*]bore you on eagles’ wings and brought you to Myself. 5Now [a]therefore, if you will indeed obey My voice and [b]keep My covenant, then [c]you shall be a special treasure to Me above all people; for all the earth *is* [d]Mine. 6And you shall be to Me a [a]kingdom of priests and a [b]holy nation.’ These *are* the words which you shall speak to the children of Israel.”

7So Moses came and called for the [a]elders of the people, and [*]laid before them all these words which the LORD commanded him. 8Then [a]all the people answered together and said, “All that the LORD has spoken we will do.” So Moses brought back the words of the people to the LORD. 9And the LORD said to Moses, “Behold, I come to you [a]in the thick cloud, [b]that the people may hear when I speak with you, and believe you forever.”

So Moses told the words of the people to the LORD.

10Then the LORD said to Moses, “Go to the people and [a]consecrate them today [1]and tomorrow, and let them wash their clothes. 11And let them be ready for the third day. For on the third day the LORD will come down upon Mount Sinai in the sight of all the people. 12You shall set bounds for the people all around, saying, 'Take heed to yourselves *that* you do *not* go up to the mountain or touch its base. [a]Whoever touches the mountain shall surely be put to death. 13Not a hand shall touch him, but he shall surely be stoned or shot *with an arrow;* whether man or beast, he shall not live.' When the trumpet sounds long, they shall come near the mountain."

14So Moses went down from the mountain to the people and sanctified the people, and they washed their clothes. 15And he said to the people, "Be ready for the third day; [a]do not come near *your* wives."

16Then it came to pass on the third day, in the morning, that there were [a]thunderings and lightnings, and a thick cloud on the mountain; and the sound of the trumpet was very loud, so that all the people who *were* in the camp [b]trembled. 17And Moses brought th [a]e people out of the camp to meet with God, and they stood at the foot of the mountain. 18Now [a]Mount Sinai *was* completely in smoke, because the LORD descended upon [b]it in fire. [c]Its smoke ascended like the smoke of a furnace, and [*]the [d]whole mountain quaked greatly. 19And when the blast of the trumpet sounded long and became louder and louder, [a]Moses spoke, and [b]God answered him by voice. 20Then the LORD came down upon Mount Sinai, on the top of the mountain. And the LORD called Moses to the top of the mountain, and Moses went up.

21And the LORD said to Moses, “Go down and warn the people, lest they break through [a]to gaze at the LORD, and many of them perish. 22Also let the [a]1sup>priests who come near the LORD [b]consecrate themselves, lest the LORD [c]break out against them.”

23But Moses said to the LORD, “The people cannot come up to Mount Sinai; for You warned us, saying, [a]‘Set bounds around the mountain and consecrate it.’ ”

24Then the LORD said to him, “Away! Get down and then come up, you and Aaron with you. But do not let the priests and the people break through to come up to the LORD, lest He break out against them.” 25So Moses went down to the people and spoke to them.

Exodus 20

The Ten Commandments

1And God spoke [a]all these words, saying:

2[a]“I
am
the
LORD
your
God,
who
brought
you
out

of the land of Egypt, [b]out of the house of [*]bondage.

3[a]“You shall have no other gods before Me.

Ex. 20:3

I will put no other gods before You, Lord.

4[a]“You shall not make for yourself

a carved image—any likeness *of anything* that *is* in heaven above, or that *is* in the earth beneath, or that *is* in the water under the earth; [5][a]you shall not bow down to them nor [*]serve them. [b]For

I, the LORD your God, *am* a jealous God, [c]visiting[*] the iniquity of the fathers upon the children to the third and fourth *generations* of those who hate Me, [6]but1 [a]showing mercy to thousands, to those who love Me and keep My commandments.

7[a]“You shall not take the name of the LORD your God in vain, for the LORD [b]will not hold *him* guiltless who takes His name in vain.

8[a]“Remember the Sabbath day, to keep

it holy. 9[a]Six days you shall labor and do all your work, 10but the [a]seventh day *is* the Sabbath of the LORD your God. *In it* you shall do no work: you, nor your son, nor your daughter, nor your male servant, nor your female servant, nor your cattle, [b]nor your stranger who *is* within your gates. 11For [a]*in* six days the LORD made the heavens and the earth, the sea, and all that *is* in them, and rested the seventh day. Therefore the LORD blessed the Sabbath day and hallowed it.

12[a]“Honor your father and your mother, that your days may be [b]long upon the land which the LORD your God is giving you.

13[a]“You

shall not murder.

[14][a]“You shall not commit [b]adultery.

[15][a]“You shall not steal.

[16][a]“You shall not bear false witness against your neighbor.

[17][a]“You shall not covet your neighbor’s house; [b]you shall not covet your neighbor’s wife, nor his

male
servant,
nor
his
female
servant,
nor
his
ox,
nor
his
donkey,
nor
anything
that
is
your
neighbor's."

The People Afraid of God's Presence

18Now [a]all the people [b]witnessed the thunderings, the lightning flashes, the sound of the trumpet, and the mountain [c]smoking; and when the people saw *it,* they trembled and stood afar off. 19Then they said to Moses, [a]"You speak with us, and we will hear; but [b]let not God speak with us, lest we die."

20And Moses said to the people, [a]"Do not fear; [b]for God has come to test you, and [c]that His fear may be before you, so that you may not sin." 21So the people stood afar off, but Moses drew near [a]the thick darkness where God *was.*

The Law of the Altar

22Then the LORD said to Moses, "Thus you shall say to the children of Israel: 'You have seen that I have talked with you [a]from heaven. 23You shall not make *anything to be* [a]with Me—gods of silver or gods of gold you shall not make for yourselves. 24An altar of [a]earth you shall make for Me, and you shall sacrifice on it your burnt offerings and your peace offerings, [b]your sheep and your oxen. In every [c]place where I [*]record My name I will come to you, and I will [d]bless you. 25And [a]if you make Me an altar of stone, you shall not build it of hewn stone; for if you [b]use your tool on it, you have profaned it. 26Nor shall you go [1]up by steps to My altar, that your [a]nakedness may not be exposed on it.’

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Watch Your Perspective and Be Properly Adorned

Maintain the proper perspective, posture, and position. When you observe a soldier, you immediately notice his stance and his position. Therefore as you are fighting in the army of the Lord, you will want to keep the right perspective. Keep a heavenly, panoramic view, far above principalities and powers (Eph.

6:11). To maintain this position, pray *throne-room prayers*—prayers that are prayed from the realm of faith. You are praying offensively, having received power over all the power of the enemy (Eph. 1:20–23).

Make certain you

are properly adorned. Put on the Lord Jesus Christ, and make no provisions for the flesh—lust, strife, bitterness, fornication, hatred, and so on (Rom. 13:14; Gal. 5:19–21). Ensure you are fully clad in the whole armor of

God, according to Ephesians 6:13–17.*

---

* Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 3–4.

Exodus 21

The Law Concerning Servants

1“Now these *are* the *judgments which you shall [a]set before them: 2[a]If you buy a Hebrew servant, he shall serve six years; and in the seventh he shall go out free and pay nothing. 3If he comes in by himself, he shall go out by himself; if he *comes in* married, then his wife shall go out with him. 4If his master has given him a wife, and she has borne him sons or daughters, the wife and her children shall be her master’s, and he shall go out by himself. 5[a]But if the servant plainly says, ‘I love my master, my wife, and my children; I will not go out free,’ 6then his master shall bring him to the [a]judges. He shall also bring him to the d1oor, or to the doorpost, and his master shall pierce his ear with an awl; and he shall serve him forever.

7“And if a man [a]sells his daughter to be a female slave, she shall not go out as the male slaves do. 8If she [*]does not please her master, who has betrothed her to himself, then he shall let her be redeemed. He shall have no right to sell her to a foreign people, since he has dealt deceitfully with her. 9And if he has betrothed her to his son, he shall deal with her according to the custom of daughters. 10If he takes another *wife,* he shall not diminish her food, her clothing, [a]and her marriage rights. 11And if he does not do these three for her, then she shall go out free, without *paying* money.

The Law Concerning Violence

12[a]“He who strikes a man so that he dies shall surely be put to death. 13However, [a]if he did not lie in wait, but God [b]delivered *him* into his hand, then [c]I will appoint for you a place where he may flee.

14“But if a man acts with [a]premeditation against his neighbor, to kill him by treachery, [b]you shall take him from My altar, that he may die.

15“And he who strikes his father or his mother shall surely be put to death.

16[a]“He who kidnaps a man and [b]sells him, or if he is [c]found in his hand, shall surely be put to death.

17“And [a]he who curses his father or his mother shall surely be put to death.

18“If men contend with each other, and one strikes the other with a stone or with *his* fist, and he does not die but is confined to *his* bed, 19if he rises again and walks about outside [a]with his staff, then he who struck *him* shall be [*]acquitted. He shall only pay *for* the loss of his time, and shall provide *for him* to be thoroughly healed.

20“And if a man beats his male or female servant with a rod, so that he dies under his hand, he shall surely be punished. 21Notwithstanding, if he remains alive a day or two, he shall not be punished; for he *is* his [a]property.

22“If men [*]fight, and hurt a woman with child, so that [*]she gives birth prematurely, yet no harm follows, he shall surely be punished accordingly as the woman’s husband imposes on him; and he shall [a]pay as the judges *determine.* 23But if *any* harm follows, then you shall give life for life, 24[a]eye for eye, tooth for tooth, hand for hand, foot for foot, 25burn for burn, wound for wound, stripe for stripe.

26“If a man strikes the eye of his male or female servant, and destroys it, he shall let him go free for the sake of his eye. 27And if he knocks out the tooth of his male or female servant, he shall let him go free for the sake of his tooth.

Animal Control Laws

28“If an ox gores a man or a woman to death, then [a]the ox shall surely be stoned, and its flesh shall not be eaten; but the owner of the ox *shall be*

[*]acquitted. 29But if the ox [*]tended to thrust with its horn in times past, and it has been made known to his owner, and he has not kept it confined, so that it has killed a man or a woman, the ox shall be stoned and its owner also shall be put to death. 30If there is imposed on him a sum of money, then he shall pay [a]to redeem his life, whatever is imposed on him. 31Whether it has gored a son or gored a daughter, according to this judgment it shall be done to him. 32If the ox gores a male or female servant, he shall give to their master [a]thirty shekels of silver, and the [b]ox shall be stoned.

33“And if a man opens a pit, or if a man digs a pit and does not cover it, and an ox or a donkey falls in it, 341the owner of the pit shall make *it* good; he shall give money to their owner, but the dead *animal* shall be his.

35“If one man’s ox hurts another’s, so that it dies, then they shall sell the live ox and divide the money from it; and the dead *ox* they shall also divide. 36Or if it was known that the ox tended to thrust in time past, and its owner has not kept it confined, he shall surely pay ox for ox, and the dead animal shall be his own.

Exodus 22

Responsibility for Property

1“If a man steals an ox or a sheep, and slaughters it or sells it, he shall [a]restore five oxen for an ox and four sheep for a sheep. 2If the thief is found [a]breaking in, and he is struck so that he dies, *there shall be* [b]no guilt for his bloodshed. 3If the sun has risen on him, *there shall be* guilt for his bloodshed. He should make full restitution; if he has nothing, then he shall be [a]sold[*] for his theft. 4If the theft is certainly [a] found alive in his hand, whether it is an ox or donkey or sheep, he shall [b]restore double.

5“If a man causes a field or vineyard to be grazed, and lets loose his animal, and it feeds in another man’s field, he shall make restitution from the best of his own field and the best of his own vineyard.

6“If fire breaks out and catches in thorns, so that stacked grain, standing grain, or the field is consumed, he who kindled the fire shall surely make restitution.

7“If a man [a]delivers to his neighbor money or articles to keep, and it is stolen out of the man’s house, [b]if the thief is found, he shall pay double. 8If the thief is not found, then the master of the house shall be brought to the [a]judges *to see* whether he has put his hand into his neighbor’s goods.

9“For any kind of trespass, *whether it concerns* an ox, a donkey, a sheep, or clothing, *or* for any kind of lost thing which *another* claims to be his, the [a]cause o1f both parties shall come before the judges; *and* whomever the judges condemn shall pay double to his neighbor. 10If a man delivers to his neighbor a donkey, an ox, a sheep, or any animal to keep, and it dies, is hurt, or driven away, no one seeing *it,* 11*then* an [a]oath of the LORD shall be between them both, that he has not put his hand into his neighbor's goods; and the owner of it shall accept *that,* and he shall not make *it* good. 12But [a]if, in fact, it is stolen from him, he shall make restitution to the owner of it. 13If it is [a]torn to pieces *by a beast, then* he shall bring it as evidence, *and* he shall not make good what was torn.

14"And if a man borrows *anything* from his neighbor, and it becomes injured or dies, the owner of it not *being* with it, he shall surely make *it* good. 15If its owner *was* with it, he shall not make *it* good; if it *was* hired, it came for its hire.

Moral and Ceremonial Principles

16[a]"If a man entices a virgin who is not betrothed, and lies with her, he shall surely pay the bride-price for her *to be* his wife. 17If her father utterly refuses to give her to him, he shall pay money according to the [a]bride-price of virgins.

18[a]"You shall not permit a sorceress to live.

19[a]"Whoever lies with an animal shall surely be put to death.

20[a]"He who sacrifices to *any* god, except to the LORD only, he shall be utterly destroyed.

21[a]"You shall neither mistreat a [*]stranger nor oppress him, for you were strangers in the land of Egypt.

22[a]"You shall not afflict any widow or fatherless child. 23If you afflict them in any way, *and* they [a]cry at all to Me, I will surely [b]hear their cry;

24and My [a]wrath will become hot, and I will kill you with the sword; [b]your wives shall be widows, and your children fatherless.

25[a]“If you lend money to *any of* My people *who are* poor among you, you shall not be like a moneylender to him; you shall not charge him [b]interest. 26[a]If you ever take your neighbor’s garment as a pledge, you shall return it to him before the sun goes down. 27For that *is* his only covering, it *is* his garment for his skin. What will he sleep in? And it will be that when he cries to Me, I will hear, for I *am* [a]gracious.

28[a]“You shall not revile God, nor curse a [b]ruler of your people.

29“You shall not delay *to offer* [a]the first of your ripe produce and your juices. [b]The firstborn of your sons you shall give to Me. 30[a]Likewise you shall do with your oxen *and* your sheep. It shall be with its mother [b]seven days; on the eighth day you shall give it to Me.

31“And you shall be [a]holy men to Me: [b]you shall not eat meat torn *by beasts* in the field; you shall throw it to the dogs.

Exodus 23

Justice for All

1“You [a]shall not circulate a false report. Do not put your hand with the wicked to be an [b]unrighteous witness. 2[a]You shall not follow a crowd to do evil; [b][1]nor shall you testify in a dispute so as to turn aside after many to pervert *justice.* 3You shall not show partiality to a [a]poor man in his dispute.

4[a]“If you meet your enemy’s ox or his donkey going astray, you shall surely bring it back to him again. 5[a]If you see the donkey of one who hates you lying under its burden, and you would refrain from helping it, you shall surely help him with it.

6[a]“You shall not pervert the judgment of your poor in his dispute. 7[a]Keep yourself far from a false matter; [b]do not kill the innocent and righteous. For [c]I will not justify the wicked. 8And [a]you [b]shall take no bribe, for a bribe blinds the discerning and perverts the words of the righteous.

9“Also you shall not oppress a [*]stranger, for you know the heart of a stranger, because you were strangers in the land of Egypt.

The Law of Sabbaths

10[a]“Six years you shall sow your land and gather in its produce, 11but the seventh *year* you shall let it rest and lie fallow, that the poor of your people may eat; and what they leave, the beasts of the field may eat. In like manner you shall do with your vineyard *and* your [*]olive grove. 12[a]Six days you shall do your work, and on the seventh day you shall rest, that your ox and your donkey may rest, and the son of your female servant and the stranger may be refreshed.

13“And in all that I have said to you, [a]be circumspect and [b]make no mention of the name of other gods, nor let it be heard from your mouth.

Three Annual Feasts

14[a]“Three times you shall keep a feast to Me in the year: 15[a]You shall keep the Feast of Unleavened Bread (you shall eat unleavened bread seven days, as I commanded you, at the time appointed in the month of Abib, for in it you came out of Egypt; [b]none shall appear before Me empty); 16[a]and [b]the Feast of Harvest, the firstfruits of your labors which you have sown in the field; and the Feast of Ingathering at the end of the year, when you have gathered in *the fruit of* your labors from the field.

17[a]“Three times in the year all your males shall appear before the Lord [*]GOD.

18[a]“You shall not offer the blood of My sacrifice with [b]leavened bread; nor shall the fat of My [*]sacrifice remain until morning. 19[a]The first of the firstfruits of your land you shall bring into the house of the LORD your God. [b]You shall not boil a young goat in its mother’s milk.

The Angel and the Promises

20[a]“Behold, I send an Angel before you to keep you in the way and to bring you into the place which I have prepared. 21Beware of Him and obey His voice; [a]do not provoke Him, for He will [b]not pardon your transgressions; for [c]My name *is* in Him. 22But if you indeed obey His voice and do all that I speak, then [a]I will be an enemy to your enemies and an adversary to your adversaries. 23[a]For My Angel will go before you and [b]bring you in to the Amorites and the Hittites and the Perizzites and the Canaanites and the Hivites and the Jebusites; and I will [*]cut them off. 24 1You shall not [a]bow down to their gods, nor serve them, [b]nor do according to their works; [c]but you shall utterly overthrow them and completely break down their *sacred* pillars.

25“So you shall [a]serve the LORD your God, and [b]He will bless your bread and your water. And [c]I will take sickness away from the midst of you. 26[a]No one shall suffer miscarriage or be barren in your land; I will [b]fulfill the number of your days.

27“I will send [a]My fear before you, I will [b]cause confusion among all the people to whom you come, and will make all your enemies turn *their* backs to you. 28And [a]I will send hornets before you, which shall drive out the Hivite, the Canaanite, and the Hittite from before you. 29[a]I will not drive them out from before you in one year, lest the land become desolate and the beasts of the field become too numerous for you. 30Little by little I will drive them out from before you, until you have increased, and you inherit the land. 31And [a]I will set your [*]bounds from the Red Sea to the sea, Philistia, and from the desert to the [*]River. For I will [b]deliver the inhabitants of the land into your hand, and you shall drive them out before you. 32[a]You shall make no [*]covenant with them, nor with their gods. 33They shall not dwell in your land, lest they make you sin against

Me. For *if* you serve their gods, [a]it will surely be a snare to you."

Exodus 24

Israel Affirms the Covenant

1Now He said to Moses, "Come up to the LORD, you and Aaron, [a]Nadab and Abihu, [b]and seventy of the elders of Israel, and worship from afar. 2And Moses alone shall come near the LORD, but they shall not come near; nor shall the people go up with him."

3So Moses came and told the people all the words of the LORD and all the [*]judgments. And all the people answered with one voice and said, [a]"All the words which the LORD has said we will do." 4And Moses [a]wrote all the words of the LORD. And he rose early in the morning, and built an altar at the foot of the mountain, and twelve [b]pillars according to the twelve tribes of Israel. 5Then he sent young men of the children of Israel, who offered [a]burnt offerings and sacrificed peace offerings of oxen to the LORD. 6And Moses [a]took half the blood and put *it* in basins, and half the blood he sprinkled on the altar. 7Then he [a]took the Book of the Covenant and read in the hearing of the people. And they said, "All that the LORD has said we will do, and be obedient." 8And Moses took the blood, sprinkled *it* on the people, and said, "This is [a]the blood of the covenant which the LORD has made with you according to all these words."

On the Mountain with God

9Then Moses went up, also Aaron, Nadab, and Abihu, and seventy of the elders of Israel, 10and they [a]saw the God of Israel. And *there was* under His feet as it were a paved work of [b]sapphire stone, and it was like the [c]very[*] heavens in *its* clarity. 11But on the nobles of the children of Israel He [a]did not [*]lay His hand. So [b]they s1aw God, and they [c]ate and drank.

12Then the LORD said to Moses, [a]"Come up to Me on the mountain and be there; and I will give you [b]tablets of stone, and the law and commandments which I have written, that you may teach them."

13So Moses arose with [a]his assistant Joshua, and Moses went up to the mountain of God. 14And he said to the elders, "Wait here for us until we come back to you. Indeed, Aaron and [a]Hur *are* with you. If any man has a difficulty, let him go to them." 15Then Moses went up into the mountain, and [a]a cloud covered the mountain.

16Now [a]the glory of the LORD rested on Mount Sinai, and the cloud covered it six days. And on the seventh day He called to Moses out of the midst of the cloud. 17The sight of the glory of the LORD *was* like [a]a consuming fire on the top of the mountain in the eyes of the children of Israel. 18So Moses went into the midst of the cloud and went up into the mountain. And [a]Moses was on the mountain forty days and forty nights.

Exodus 25

Offerings for the Sanctuary

1Then the LORD spoke to Moses, saying: 2“Speak to the children of Israel, that they bring Me an [*]offering. [a]From everyone who gives it willingly with his heart you shall take My offering. 3And this *is* the offering which you shall take from them: gold, silver, and bronze; 4blue, purple, and scarlet *thread,* fine linen, and goats’ *hair;* 5ram skins dyed red, [*]badger skins, and acacia wood; 6[a]oil for the light, and [b]spices for the anointing oil and for the sweet incense; 7onyx stones, and stones to be set in the [a]ephod and in the breastplate. 8And let them make Me a [a]sanctuary,[*] that [b]I may dwell among them. 9According to all that I show you, *that is,* the pattern of the tabernacle and the pattern of all its furnishings, just so you shall make *it.*

The Ark of the Testimony

10[a]“And they shall make an ark of acacia wood; two and a half cubits *shall be* its length, a cubit and a half its width, and a cubit and a half its height. 11And you shall overlay it with pure gold, inside and out you shall overlay it, and shall make on it a molding of [a]gold all around. 12You shall cast four rings of gold for it, and put *them* in its four corners; two rings *shall be* on one side, and two rings on the other side. 13And you shall make poles *of* acacia wood, and overlay them with gold. 14You shall put the poles into the rings on the sides of the ark, that the ark may be carried by them. 15[a]The poles shall be in the rings of the ark; they shall not be taken from it. 16And you shall put into the ark [a]the Testimony which I will give you.

17[a]"You shall make a mercy seat of pure gold; two and a half cubits *shall be* its length and a cubit and a half its width. 18And you shall make two cherubim of gold; of hammered work you shall make them at the two ends of the mercy seat. 19Make one cherub at one end, and the other cherub at the other end; you shall make the cherubim at the two ends of it *of one piece* with the mercy seat. 20And [a]the cherubim shall stretch out *their* wings above, covering the mercy seat with their wings, and they shall face one another; the faces of the cherubim *shall be* toward the mercy seat. 21[a]You shall put the mercy seat on top of the ark, and [b]in the ark you shall put the Testimony that I will give you. 22And [a]there I will meet with you, and I will speak with you from above the mercy seat, from [b]between the two cherubim which *are* on the ark of the Testimony, about everything which I will give you in commandment to the children of Israel.

The Table for the Showbread

23[a]"You shall also make a table of acacia wood; two cubits *shall be* its length, a cubit its width, and a cubit and a half its height. 24And you shall overlay it with pure gold, and make a molding of gold all around. 25You shall make for it a frame of a handbreadth all around, and you shall make a gold molding for the frame all around. 26And you shall make for it four rings of gold, and put the rings on the four corners that *are* at its four legs. 27The rings shall be close to the frame, as holders for the poles to bear the table. 28And you shall make the poles of acacia wood, and overlay them with gold, that the table may be carried with them. 29You shall make [a]its dishes, its pans, its pitchers, and its bowls for pouring. You shall make them of pure gold. 30And you shall set the [a]showbread on the table before Me always.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Effectively Use Your Authority

Effectively use your authority. The blood of Jesus Christ gives you the right to enter the holiest of places and to petition God for the deliverance that you or someone else may need (Heb. 10:19–23). You can boldly enter, knowing you are clean and your requests will be honored. Because you are fighting on God’s side, you have a right to claim His Son’s name and authority. When you say the name of Jesus, everything must submit (Phil. 2:9–11). You also come armed with the authority of the Word—the sword of the Spirit

(Eph. 6:16–18).

Remember, God has placed Satan and his cohorts under your feet, so do not just sit and wait for something to happen. Stand, put your foot down, make no covenant, show no mercy, and take the victory in Jesus's name (Deut. 7:1–2; Luke 10:19; Eph. 6:11–18).*

---

* Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 4–5.

The Gold Lampstand

31[a]"You shall also make a lampstand of pure gold; the lampstand shall be of hammered work. Its shaft, its branches, its bowls, its *ornamental* knobs, and flowers shall be *of one piece*. 32And six branches shall come out of its sides: three branches of the lampstand out of one side, and three branches of the lampstand out of the other side. 33[a]Three bowls *shall be* made like almond *blossoms* on one branch, *with* an *ornamental* knob and a flower, and three bowls made like almond *blossoms* on the other branch, *with* an *ornamental* knob and a flower—and so for the six branches that come out of the lampstand. 34[a]On the lampstand itself four bowls *shall be* made like almond *blossoms, each with* its *ornamental* knob and flower. 35And *there shall be* a knob under the *first* two branches of the same, a knob under the *second* two branches of the same, and a knob under the *third* two branches of the same, according to the six branches that extend from the lampstand. 36Their knobs and their branches *shall be of one piece;* all of it *shall be* one hammered piece of pure gold. 37You shall make seven lamps for it, and [a]they shall arrange its lamps so that they [b]give light in front of it. 38And its wick-trimmers and their trays *shall be* of pure gold. 39It shall be made of a talent of pure gold, with all these utensils. 40And [a]see to it that you make *them* according to the pattern which was shown you on the mountain.

Exodus 26

The Tabernacle

1“Moreover [a]you shall make the tabernacle *with* ten curtains *of* fine woven linen and blue, purple, and scarlet *thread;* with artistic designs of cherubim you shall weave them. 2The length of each curtain *shall be* twenty-eight cubits, and the width of each cur1tain four cubits. And every one of the curtains shall have [*]the same measurements. 3Five curtains shall be coupled to one another, and *the other* five curtains *shall be* coupled to one another. 4And you shall make loops of blue *yarn* on the edge of the curtain on the selvedge of *one* set, and likewise you shall do on the outer edge of *the other* curtain of the second set. 5Fifty loops you shall make in the one curtain, and fifty loops you shall make on the edge of the curtain that *is* on the end of the second set, that the loops may be clasped to one another. 6And you shall make fifty clasps of gold, and couple the curtains together with the clasps, so that it may be one tabernacle.

7[a]“You shall also make curtains of goats’ *hair,* to be a tent over the tabernacle. You shall make eleven curtains. 8The length of each curtain *shall be* thirty cubits, and the width of each curtain four cubits; and the eleven curtains shall all have the same measurements. 9And you shall couple five curtains by themselves and six curtains by themselves, and you shall double over the sixth curtain at the forefront of the tent. 10You shall make fifty loops on the edge of the curtain that is outermost in *one* set, and fifty loops on the edge of the curtain of the second set. 11And you shall make fifty bronze clasps, put the clasps into the loops, and couple the tent together, that it may be one. 12The remnant that remains of the curtains of the tent, the half curtain that remains, shall hang over the back of the tabernacle. 13And a cubit on one side and a cubit on the other side, of what remains of the length of the curtains of the tent, shall hang over the sides of the tabernacle, on this side and on that side, to cover it.

14[a]“You shall also make a covering of ram skins dyed red for the tent, and a covering of badger skins above that.

15“And for the tabernacle you shall [a]make the boards of acacia wood, standing upright. 16Ten cubits *shall be* the length of a board, and a cubit and a half *shall be* the width of each board. 17Two *tenons *shall be* in each board for binding one to another. Thus you shall make for all the boards of the tabernacle. 18And you shall make the boards for the tabernacle, twenty boards for the south side. 19You shall make forty sockets of silver under the twenty boards: two sockets under each of the boards for its two tenons. 20And for the second side of the tabernacle, the north side, *there shall be* twenty boards 21and their forty sockets of silver: two sockets under each of the boards. 22For the far side of the tabernacle, westward, you shall make six boards. 23And you shall also make two boards for the two back corners of the tabernacle. 24They shall be *coupled together at the bottom and they shall be coupled together at the top by one ring. Thus it shall be for both of them. They shall be for the two corners. 25So there shall be eight boards with their sockets of silver—sixteen sockets—two sockets under each of the boards.

[26]“And you shall make bars of acacia wood: five for the boards on one side of the tabernacle, [27]five bars for the boards on the other side of the tabernacle, and five bars for the boards of the side of the tabernacle, for the far side westward. [28]The [a]middle bar shall pass through the midst of the boards from end to end. [29]You shall overlay the boards with gold, make their rings of gold *as* holders for the bars, and overlay the bars with gold. [30]And you shall raise up the tabernacle [a]according to its pattern which you were shown on the mountain.

[31][a]“You shall make a veil woven of blue, purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen. It shall be woven with an artistic design of cherubim. [32]You shall hang it upon the four pillars of acacia *wood* overlaid with gold. Their hooks *shall be* gold, upon four sockets of silver. [33]And you shall hang the veil from the clasps. Then you shall bring [a]the ark of the Testimony in there, behind the veil. The veil shall be a divider for you between [b]the holy *place* and the Most Holy. [34][a]You shall put the mercy seat upon the ark of the Testimony in the Most Holy. [35][a]You shall set the table outside the veil, and [b]the lampstand across from the table on the side of the tabernacle toward the south; and you shall put the table on the north side.

[36][a]“You shall make a s1creen for the door of the tabernacle, *woven of* blue, purple, and scarlet *thread,* and

fine woven linen, made by a weaver. 37And you shall make for the screen [a]five pillars of acacia *wood,* and overlay them with gold; their hooks *shall be* gold, and you shall cast five sockets of bronze for them.

Exodus 27

The Altar of Burnt Offering

1“You shall make [a]an altar of acacia wood, five cubits long and five cubits wide—the altar shall be square—and its height *shall be* three cubits. 2You shall make its horns on its four corners; its horns shall be of one piece with it. And you shall overlay it with bronze. 3Also you shall make its pans to receive its ashes, and its shovels and its basins and its forks and its firepans; you shall make all its utensils of bronze. 4You shall make a grate for it, a network of bronze; and on the network you shall make four bronze rings at its four corners. 5You shall put it under the rim of the altar beneath, that the network may be midway up the altar. 6And you shall make poles for the altar, poles of acacia wood, and overlay them with bronze. 7The poles shall be put in the rings, and the poles shall be on the two sides of the altar to bear it. 8You shall make it hollow with boards; [a]as it was shown you on the mountain, so shall they make *it.*

The Court of the Tabernacle

9[a]“You shall also make the court of the tabernacle. For the south side *there shall be* hangings for the court *made of* fine woven linen, one hundred cubits long for one side. 10And its twenty pillars and their twenty sockets *shall be* bronze. The hooks of the pillars and their bands *shall be* silver. 11Likewise along the length of the north side *there shall be* hangings one hundred *cubits* long, with its twenty pillars and their twenty sockets of bronze, and the hooks of the pillars and their bands of silver.

12“And along the width of the court on the west side *shall be* hangings of fifty cubits, with their ten pillars and their ten sockets. 13The width of the court on the east side *shall be* fifty cubits. 14The hangings on *one* side *of the gate shall be* fifteen cubits, *with* their three pillars and their three sockets. 15And on the other side *shall be* hangings of fifteen *cubits, with* their three pillars and their three sockets.

16“For the gate of the court *there shall be* a screen twenty cubits long, *woven of* blue, purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen, made by a weaver. It *shall have* four pillars and four sockets. 17All the pillars around the court shall have bands of silver; their [a]hooks *shall be* of silver and their sockets of bronze. 18The length of the court *shall be* one hundred cubits, the width fifty throughout, and the height five cubits, *made of* fine woven linen, and its sockets of bronze. 19All the utensils of the tabernacle for all its service, all its pegs, and all the pegs of the court, *shall be* of bronze.

The Care of the Lampstand

20“And [a]you shall command the children of Israel that they bring you pure oil of pressed olives for the light, to cause the lamp to [*]burn continually. 21In the tabernacle of meeting, [a]outside the veil which *is* before the Testimony, [b]Aaron and his sons shall tend it from evening until morning before the LORD. [c]*It shall be* a statute forever to their generations on behalf of the children of Israel.

Exodus 28

Garments for the Priesthood

1“Now take [a]Aaron your brother, and his sons with him, from among the children of Israel, that he may minister to Me as [b]priest, Aaron *and* Aaron’s sons: [c]Nadab, Abihu, [d]Eleazar, and Ithamar. 2And [a]you shall make [*]holy garments for Aaron your brother, for glory and for beauty. 3So [a]you shall speak to all *who are* gifted artisans, [b]whom I have filled with the spirit of wisdom, that they may make Aaron’s garments, to consecrate him, that he may minister t1o Me as priest. 4And these *are* the garments which they shall make: [a]a breastplate, [b]an [*]ephod, [c]a robe, [d]a skillfully woven tunic, a turban, and [e]a sash. So they shall make holy garments for Aaron your brother and his sons, that he may minister to Me as priest.

Ex. 28:3

I have been filled with the spirit of wisdom.

The Ephod

5“They shall take the gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and the fine linen, 6[a]and they shall make the ephod of gold, blue, purple, *and* scarlet *thread,* and fine woven linen, artistically worked. 7It shall have two shoulder straps joined at its two edges, and *so* it shall be joined together. 8And the [*]intricately woven band of the ephod, which *is* on it, shall be of the same workmanship, *made of* gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen.

9“Then you shall take two onyx [a]stones and engrave on them the names of the sons of Israel: 10six of their names on one stone and six names on the other stone, in order of their [a]birth. 11With the work of an [a]engraver in stone, *like* the engravings of a signet, you shall engrave the two stones with the names of the sons of Israel. You shall set them in settings of gold. 12And you shall put the two stones on the shoulders of the ephod *as* memorial stones for the sons of Israel. So [a]Aaron shall bear their names before the LORD on his two shoulders [b]as a memorial. 13You shall also make settings of gold, 14and you shall make two chains of pure gold like braided cords, and fasten the braided chains to the settings.

The Breastplate

15[a]"You shall make the breastplate of judgment. Artistically woven according to the workmanship of the ephod you shall make it: of gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen, you shall make it. 16It shall be doubled into a square: a span *shall be* its length, and a span *shall be* its width. 17[a]And you shall put settings of stones in it, four rows of stones: *The first* row *shall be* a *sardius, a topaz, and an emerald; *this shall be* the first row; 18the second row *shall be* a turquoise, a sapphire, and a diamond; 19the third row, a *jacinth, an agate, and an amethyst; 20and the fourth row, a *beryl, an *onyx, and a jasper. They shall be set in gold settings. 21And the stones shall have the names of the sons of Israel, twelve according to their names, *like* the engravings of a signet, each one with its own name; they shall be according to the twelve tribes.

22"You shall make chains for the breastplate at the end, like braided cords of pure gold. 23And you shall make two rings of gold for the breastplate, and put the two rings on the two ends of the breastplate. 24Then you shall put the two braided *chains* of gold in the two rings which are on the ends of the breastplate; 25and the *other* two ends of the two braided *chains* you shall fasten to the two settings, and put them on the shoulder straps of the ephod in the front.

26“You shall make two rings of gold, and put them on the two ends of the breastplate, on the edge of it, which is on the inner side of the ephod. 27And two *other* rings of gold you shall make, and put them on the two shoulder straps, underneath the ephod toward its front, right at the seam above the *intricately woven band of the ephod. 28They shall bind the breastplate by means of its rings to the rings of the ephod, using a blue cord, so that it is above the intricately woven band of the ephod, and so that the breastplate does not come loose from the ephod.

29“So Aaron shall [a]bear the names of the sons of Israel on the breastplate of judgment over his heart, when he goes into the holy *place,* as a memorial before the LORD continually. 30And [a]you shall put in the breastplate of judgment the *Urim and the Thummim, and they shall be over Aaron’s heart when he goes in before the LORD. So Aaron shall bear the judgment of the children of Israel over his heart before the LORD continually.

Other Priestly Garments

31[a]“You shall make the robe of the ephod all of blue. 32There shall be an opening for his head in the middle of it; it shall have a woven binding all around its opening, like the opening in a coat of mail, so that it does not tear. 33And upon its hem you shall make pomegranates of blue, purple, and scarlet, all around its hem, and bells of gold between them all around: 34a golden bell and a pomegranate, a golden bell and a pomegranate, upon the hem of the robe all around. 35And it shall be upon Aaron when he ministers, and its sound will be heard when he goes into the holy *place* before the LORD and when he comes out, that he may not die.

36[a]“You shall also make a plate of pure gold and engrave on it, *like* the engraving of a signet:

HOLINESS TO THE LORD.

37And you shall put it on a blue cord, that it may be on the turban; it shall be on the front of the turban. 38So it shall be on Aaron’s forehead, that Aaron may [a]bear the iniquity of the holy things which the children of Israel hallow in all their [*]holy gifts; and it shall always be on his forehead, that they may be [b]accepted before the LORD.

39“You shall [a]skillfully weave the tunic of fine linen *thread,* you shall make the turban of fine linen, and you shall make the sash of woven work.

40[a]“For Aaron’s sons you shall make tunics, and you shall make sashes for them. And you shall make [*]hats for them, for glory and [b]beauty. 41So you shall put them on Aaron your brother and on his sons with him. You shall [a]anoint them, [b]consecrate them, and [*]sanctify them, that they may minister to Me as priests. 42And you shall make [a]for them linen trousers to cover their *nakedness; they shall *reach from the waist to the thighs. 43They shall be on Aaron and on his sons when they come into the tabernacle of meeting, or when they come near [a]the altar to minister in the holy *place,* that they [b]do not incur *iniquity and die. [c]*It shall be* a statute forever to him and his descendants after him.

Exodus 29

Aaron and His Sons Consecrated

1“And this is what you shall do to them to hallow them for ministering to Me as priests: [a]Take one young bull and two rams without blemish, 2and [a]unleavened bread, unleavened cakes mixed with oil, and unleavened wafers anointed with oil (you shall make them of wheat flour). 3You shall put them in one basket and bring them in the basket, with the bull and the two rams.

4“And Aaron and his sons you shall bring to the door of the tabernacle of meeting, [a]and you shall wash them with water. 5[a]Then you shall take the garments, put the tunic on Aaron, and the robe of the ephod, the ephod, and the breastplate, and gird him with the [b]intricately woven band of the ephod. 6[a]You shall put the turban on his head, and put the holy crown on the turban. 7And you shall take the anointing [a]oil, pour *it* on his head, and anoint him. 8Then [a]you shall bring his sons and put tunics on them. 9And you shall gird them with sashes, Aaron and his sons, and put the hats on them. [a]The priesthood shall be theirs for a perpetual statute. So you shall [b]consecrate Aaron and his sons.

10“You shall also have the bull brought before the tabernacle of meeting, and [a]Aaron and his sons shall put their hands on the head of the bull. 11Then you shall kill the bull before the LORD, *by* the door of the tabernacle of meeting. 12You shall take *some* of the blood of the bull and put *it* on [a]the horns of the altar with your finger, and [b]pour all the blood beside the base of the altar. 13And [a]you shall take all the fat that covers the entrails, the fatty lobe *attached* to the liver, and the two kidneys and the fat that *is* on them, and burn *them* on the altar. 14But [a]the flesh of the bull, with its skin and its offal, you shall burn with fire outside the camp. It *is* a sin offering.

15[a]“You shall also take one ram, and Aaron and his sons shall [b]put their hands on the head of the ram; 16and you shall kill the ram, and you shall take its blood and [a]sprinkle *it* all around on the altar. 17Then you shall cut the ram in pieces, wash its entrails and its legs, and put *them* with its pieces and with its head. 18And you shall burn the whole ram on the altar. It *is* a [a]burnt offering to the LORD; it *is* a sweet aroma, an offering made by fire to the LORD.

19[a]“You shall also take the other ram, and Aaron and his sons shall put their hands on the head of the ram.

20Then you shall kill the ram, and take some of its blood and put *it* on the tip of the right ear of Aaron and on the tip of the right ear of his sons, on the thumb of their right hand and on the big toe of their right foot, and sprinkle the blood all around on the altar. 21And you shall take some of the blood that is on the altar, and some of [a]the anointing oil, and sprinkle *it* on Aaron and on his garments, on his sons and on the garments of his sons with him; and [b]he and his garments shall be hallowed, and his sons and his sons' garments with him.

22"Also you shall take the fat of the ram, the fat tail, the fa1t that covers the entrails, the fatty lobe *attached to* the liver, the two kidneys and the fat on them, the right thigh (for it *is* a ram of consecration), 23[a]one loaf of bread, one cake *made with* oil, and one wafer from the basket of the unleavened bread that *is* before the LORD; 24and you shall put all these in the hands of Aaron and in the hands of his sons, and you shall [a]wave them *as* a wave offering before the LORD. 25[a]You shall receive them back from their hands and burn *them* on the altar as a burnt offering, as a sweet aroma before the LORD. It *is* an offering made by fire to the LORD.

26"Then you shall take [a]the breast of the ram of Aaron's consecration and wave it *as* a wave offering before the LORD; and it shall be your portion. 27And from the ram of the consecration you shall consecrate [a]the breast of the wave offering which is waved, and the thigh of the heave offering which is raised, of *that* which *is* for Aaron and of *that* which is for his sons. 28It shall be from the children of Israel *for* Aaron and his sons [a]by a statute forever. For it is a heave offering; [b]it shall be a heave offering from the children of Israel from the sacrifices of their peace offerings, *that is,* their heave offering to the LORD.

29"And the [a]holy garments of Aaron [b]shall be his sons' after him, [c]to be anointed in them and to be consecrated in them. 30[a]That son who becomes priest in his place shall put them on for [b]seven days, when he enters the tabernacle of meeting to minister in the [*]holy *place.*

31"And you shall take the ram of the consecration and [a]boil its flesh in the holy place. 32Then Aaron and his sons shall eat the flesh of the ram, and the [a]bread that *is* in the basket, *by* the door of the tabernacle of meeting. 33[a]They shall eat those things with which the atonement was made, to consecrate *and* to sanctify them; [b]but an outsider shall not eat *them,* because they *are* holy. 34And if any of the flesh of the consecration offerings, or of the bread, remains until the morning, then [a]you shall burn the remainder with fire. It shall not be eaten, because it *is* holy.

35"Thus you shall do to Aaron and his sons, according to all that I have commanded you. [a]Seven days you shall consecrate them. 36And you

[a]shall offer a bull every day *as* a sin offering for atonement. [b]You shall cleanse the altar when you make atonement for it, and you shall anoint it to sanctify it. 37Seven days you shall make atonement for the altar and sanctify it. And the altar shall be most holy. [a]Whatever touches the altar must be holy.

The Daily Offerings

38“Now this *is* what you shall offer on the altar: [a]two lambs of the first year, [b]day by day continually. 39One lamb you shall offer [a]in the morning, and the other lamb you shall offer [*]at twilight. 40With the one lamb shall be one-tenth *of an ephah* of flour mixed with one-fourth of a hin of pressed oil, and one-fourth of a hin of wine *as* a drink offering. 41And the other lamb you shall [a]offer [*]at twilight; and you shall offer with it the grain offering and the drink offering, as in the morning, for a sweet aroma, an offering made by fire to the LORD. 42*This shall be* [a]a continual burnt offering throughout your generations *at* the door of the tabernacle of meeting before the LORD, [b]where I will meet you to speak with you. 43And there I will meet with the children of Israel, and *the tabernacle* [a]shall be sanctified by My glory. 44So I will consecrate the tabernacle of meeting and the altar. I will also [a]consecrate both Aaron and his sons to minister to Me as priests. 45[a]I will dwell among the children of Israel and will [b]be their God. 46And they shall know that [a]I *am* the LORD their

God, who [b]brought them up out of the land of Egypt, that I may dwell among them. I *am* the LORD their God.

Exodus 30

The Altar of Incense

[1]“You shall make [a]an altar to burn incense on; you shall make it of acacia wood. [2]A cubit *shall be* its length and a cubit its width—it shall be square—and two cubits *shall be* its height. Its horns *shall be* of one piece with it. [3]And you shall overlay its top, its sides all around, and its horns with pure gold; and you shall make for it a [*]molding of gold all around. [4]Two gold rings you shall make for it, under the molding on both its sides. You shall place *them* on its two sides, and they will be holders for the poles with which to bear it. [5]You shall make the poles of acacia wood, and overlay them with gold. [6]And you shall put it before the [a]veil that *is* before the ark of the Testimony, before the [b]mercy seat that *is* over the Testimony, where I will meet with you.

[7]“Aaron shall burn on it [a]sweet incense every morning; when [b]he tends the lamps, he shall burn incense on it. [8]And when Aaron lights the lamps [*]at twilight, he shall burn incense on it, a perpetual incense before the LORD throughout your generations. [9]You shall not offer [a]strange incense on it, or a burnt offering, or a grain offering; nor shall you pour a drink offering on it. [10]And

[a]Aaron shall make atonement upon its horns once a year with the blood of the sin offering of atonement; once a year he shall make atonement upon it throughout your generations. It *is* most holy to the LORD."

The Ransom Money

11 Then the LORD spoke to Moses, saying: 12 [a]"When you take the census of the children of Israel for their number, then every man shall give [b]a[*] ransom for himself to the LORD, when you number them, that there may be no [c]plague among them when *you* number them. 13 [a]This is what everyone among those who are numbered shall give: half a shekel according to the shekel of the sanctuary [b](a shekel *is* twenty gerahs). [c]The half-shekel *shall be* an offering to the LORD. 14 Everyone included among those who are numbered, from twenty years old and above, shall give an [*]offering to the LORD. 15 The [a]rich shall not give more and the poor shall not give less than half a shekel, when *you* give an offering to the LORD, to make atonement for yourselves. 16 And you shall take the atonement money of the children of Israel, and [a]shall [*]appoint it for the service of the tabernacle of meeting, that it may be [b]a memorial for the children of Israel before the LORD, to make atonement for yourselves."

The Bronze Laver

17 Then the LORD spoke to Moses, saying: 18 [a]"You shall also make a [*]laver of bronze, with its base also of

bronze, for washing. You shall [b]put it between the tabernacle of meeting and the altar. And you shall put water in it, 19for Aaron and his sons [a]shall wash their hands and their feet in water from it. 20When they go into the tabernacle of meeting, or when they come near the altar to minister, to burn an offering made by fire to the LORD, they shall wash with water, lest they die. 21So they shall wash their hands and their feet, lest they die. And [a]it shall be a [*]statute forever to them—to him and his descendants throughout their generations."

The Holy Anointing Oil

22Moreover the LORD spoke to Moses, saying: 23"Also take for yourself [a]quality spices—five hundred *shekels* of liquid [b]myrrh, half as much sweet-smelling cinnamon (two hundred and fifty *shekels*), two hundred and fifty *shekels* of sweet-smelling [c]cane, 24five hundred *shekels* of [a]cassia, according to the shekel of the sanctuary, and a [b]hin of olive oil. 25And you shall make from these a holy anointing oil, an ointment compounded according to the art of the perfumer. It shall be [a]a holy anointing oil. 26[a]With it you shall anoint the tabernacle of meeting and the ark of the Testimony; 27the table and all its utensils, the lampstand and its utensils, and the altar of incense; 28the altar of burnt offering with all its utensils, and the laver and its base. 29You shall consecrate them, that they may be most holy; [a]whatever touches them must be holy. 30[a]And you shall anoint Aaron and his sons, and consecrate them, that *they* may minister to Me as priests.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Effectively Use Your Weapons

Effectively use your weapons. The sword of the Spirit is the Word of God, the blood of Jesus Christ, the anointing and fire of the Holy

Spirit. Marching, walking, stomping, dancing, clapping, silence, praying in the Spirit, tithes, offerings, and shouting are all powerful weapons you can access from your spiritual arsenal. You will learn more about these weapons and other critical and strategic information for spiritual warfare as you continue studyin1g the material in this *Spiritual Warfare Bible.*[*]

[31]“And you shall speak to the children of Israel, saying: ‘This shall be a holy anointing oil to Me throughout your generations. [32]It shall not be poured on man’s flesh; nor shall you make *any other* like it, according to its composition. [a]It *is* holy, *and* it shall be holy to you. [33][a]Whoever [*]compounds *any* like it, or whoever puts *any* of it on an outsider, [b]shall be [*]cut off from his people.’ ”

The Incense

[34]And the LORD said to Moses: [a]“Take sweet spices, stacte and onycha and galbanum, and pure

---

[*] Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 5.

frankincense with *these* sweet spices; there shall be equal amounts of each. 35You shall make of these an incense, a compound [a]according to the art of the perfumer, salted, pure, *and* holy. 36And you shall beat *some* of it very fine, and put some of it before the Testimony in the tabernacle of meeting [a]where I will meet with you. [b]It shall be most holy to you. 37But *as for* the incense which you shall make, [a]you shall not make any for yourselves, according to its [*]composition. It shall be to you holy for the LORD. 38[a]Whoever makes *any* like it, to smell it, he shall be cut off from his people."

Exodus 31

Artisans for Building the Tabernacle

1Then the LORD spoke to Moses, saying: 2[a]"See, I have called by name Bezalel the [b]son of Uri, the son of Hur, of the tribe of Judah. 3And I have [a]filled him with the Spirit of God, in wisdom, in understanding, in knowledge, and in all *manner of* workmanship, 4to design artistic works, to work in gold, in silver, in bronze, 5in cutting jewels for setting, in carving wood, and to work in all *manner of* workmanship.

6"And I, indeed I, have appointed with him [a]Aholiab the son of Ahisamach, of the tribe of Dan; and I have put wisdom in the hearts of all the [b]gifted artisans, that they may make all that I have commanded you: 7[a]the tabernacle of meeting, [b]the ark of the Testimony and [c]the mercy seat that *is* on it, and all the furniture of the tabernacle—8[a]the table and its utensils, [b]the pure *gold* lampstand with all its utensils, the altar of incense, 9[a]the altar of burnt offering with all its utensils, and [b]the laver and its base—10[a]the [*]garments of ministry, the holy garments for Aaron the priest and the garments of his sons, to minister as priests, 11[a]and the anointing oil and [b]sweet incense for the holy *place.* According to all that I have commanded you they shall do.”

The Sabbath Law

12And the LORD spoke to Moses, saying, 13“Speak also to the children of Israel, saying: [a]‘Surely My Sabbaths you shall keep, for it *is* a sign between Me and you throughout your generations, that *you* may know that I *am* the LORD who [b]sanctifies[*] you. 14[a]You shall keep the Sabbath, therefore, for *it is* holy to you. Everyone who [*]profanes it shall surely be put to death; for [b]whoever does *any* work on it, that person shall be cut off from among his people. 15Work shall be done for [a]six days, but the [b]seventh *is* the Sabbath of rest, holy to the LORD. Whoever does *any* work on the Sabbath day, he shall surely be put to death. 16Therefore the children of Israel shall keep the Sabbath, to observe the Sabbath throughout their generations *as* a perpetual covenant. 17It *is* [a]a sign between Me and the children of Israel forever; for [b]*in* six days the LORD made the heavens and the earth, and on the seventh day He rested and was refreshed.’ ”

18And when He had made an end of speaking with him on Mount Sinai, He gave Moses [a]two tablets of the Testimony, tablets of stone, written with the finger of God.

Exodus 32

The Gold Calf

1Now when the people saw that Moses [a]delayed coming down from the mountain, the people [b]gathered together to Aaron, and said to him, [c]“Come, make us [*]gods that shall [d]go before us; for *as for* this Moses, the man who [e]brought us up out of the land of Egypt, we do not know what has become of him.”

2And Aaron said to them, “Break off the [a]golden earrings which *are* in the ears of your wives, your sons, and your daughters, and bring *them* to me.” 3So all the people broke off the golden earrings which *were* in their ears, and brought *them* to Aaron. 4[a]And he received *the gold* from their hand, and he fashioned it with an engraving tool, and made a molded calf.

Then they said, “This *is* your god, O Israel, that [b]brought you out of the land of Egypt!”

5So when Aaron saw *it,* he built an altar before it. And Aaron made a [a]proclamation and said, “Tomorrow *is* a feast to the LORD.” 6Then they rose early on the next day, offered burnt offerings, and brought peace offerings; and the people [a]sat down to eat and drink, and rose up to play.

7And the LORD said to Moses, [a]“Go,
get down! For your people whom you
brought out of the land of Egypt
[b]have corrupted *themselves.* 8They
have turned aside quickly out of the
way which [a]I commanded them. They
have made themselves a molded calf,
and worshiped it and sacrificed to it,
and said, [b]‘This *is* your god, O Israel,
that brought you out of the land of
Egypt!’ ” 9And the LORD said to
Moses, [a]“I have seen this people, and
indeed it *is* a [*]stiff-necked people!
10Now therefore, [a]let Me alone, that
[b]My wrath may burn hot against
them and I may [*]consume them. And
[c]I will make of you a great nation.”

11[a]Then Moses pleaded with [*]the
LORD his God, and said: “LORD, why
does Your wrath burn hot against
Your people whom You have brought
out of the land of Egypt with great
power and with a mighty hand?
12[a]Why should the Egyptians speak,
and say, ‘He brought them out to
harm them, to kill them in the
mountains, and to consume them
from the face of the earth’? Turn from
Your fierce wrath, and [b]relent from
this harm to Your people.
13Remember Abraham, Isaac, and
Israel, Your servants, to whom You
[a]swore by Your own self, and said to
them, [b]‘I will multiply your
descendants as the stars of heaven;
and all this land that I have spoken of
I give to your descendants, and they[1]
shall inherit *it* forever.’ ” 14So the
LORD [a]relented from the harm which
He said He would do to His people.

15And [a]Moses turned and went down from the mountain, and the two tablets of the Testimony *were* in his hand. The tablets *were* written on both sides; on the one *side* and on the other they were written. 16Now the [a]tablets *were* the work of God, and the writing *was* the writing of God engraved on the tablets.

17And when Joshua heard the noise of the people as they shouted, he said to Moses, "*There is* a noise of war in the camp."

18But he said:

"*It is*
not
the
noise
of
the
shout
of
victory,

Nor
the
noise
of
the
cry
of
defeat,

But
the
sound
of
singing
I

hear.”

19So it was, as soon as he came near the camp, that [a]he saw the calf *and* the dancing. So Moses’ anger became hot, and he cast the tablets out of his hands and broke them at the foot of the mountain. 20[a]Then he took the calf which they had made, burned *it* in the fire, and ground *it* to powder; and he scattered *it* on the water and made the children of Israel drink *it.* 21And Moses said to Aaron, [a]“What did this people do to you that you have brought *so* great a sin upon them?”

22So Aaron said, “Do not let the anger of my lord become hot. [a]You know the people, that they *are set* on evil. 23For they said to me, ‘Make us gods that shall go before us; *as for* this Moses, the man who brought us out of the land of Egypt, we do not know what has become of him.’ 24And I said to them, ‘Whoever has any gold, let them break *it* off.’ So they gave *it* to me, and I cast it into the fire, and this calf came out.”

25Now when Moses saw that the people *were* [a]unrestrained (for Aaron [b]had not restrained them, to *their* shame among their enemies), 126then Moses stood in the entrance of the camp, and said, “Whoever *is* on the LORD’s side—*come* to me!” And all the sons of Levi gathered themselves together to him. 27And he said to them, “Thus says the LORD God of Israel: ‘Let every man put his sword on his side, and go in and out from entrance to entrance throughout the camp, and [a]let every man kill his brother, every man his companion, and every man his neighbor.' " 28So the sons of Levi did according to the word of Moses. And about three thousand men of the people fell that day. 29[a]Then Moses said, [*]"Consecrate yourselves today to the LORD, that He may bestow on you a blessing this day, for every man has opposed his son and his brother."

30Now it came to pass on the next day that Moses said to the people, [a]"You have committed a great sin. So now I will go up to the LORD; [b]perhaps I can [c]make atonement for your sin." 31Then Moses [a]returned to the LORD and said, "Oh, these people have committed a great sin, and have [b]made for themselves a god of gold! 32Yet now, if You will forgive their sin—but if not, I pray, [a]blot me [b]out of Your book which You have written."

33And the LORD said to Moses, [a]"Whoever has sinned against Me, I will [b]blot him out of My book. 34Now therefore, go, lead the people to *the place* of which I have [a]spoken to you. [b]Behold, My Angel shall go before you. Nevertheless, [c]in the day when I visit for punishment, I will [d]visit punishment upon them for their sin."

35So the LORD plagued the people because of [a]what they did with the calf which Aaron made.

Exodus 33

The Command to Leave Sinai

[1]Then the LORD said to Moses, “Depart *and* go up from here, you [a]and the people whom you have brought out of the land of Egypt, to the land of which I swore to Abraham, Isaac, and Jacob, saying, [b]‘To your descendants I will give it.’ [2][a]And I will send *My* Angel before you, [b]and I will drive out the Canaanite and the Amorite and the Hittite and the Perizzite and the Hivite and the Jebusite. [3]*Go up* [a]to a land flowing with milk and honey; for I will not go up in your midst, lest [b]I [*]consume you on the way, for you *are* [c]a stiff-necked[*] people.”

[4]And when the people heard this bad news, [a]they mourned, [b]and no one put on his [*]ornaments. [5]For the LORD had said to Moses, “Say to the children of Israel, ‘You *are* a stiff-necked people. I could come up into your midst in one moment and consume you. Now therefore, take off your ornaments, that I may [a]know what to do to you.’ ” [6]So the children of Israel stripped themselves of their ornaments by Mount Horeb.

Moses Meets with the LORD

[7]Moses took his tent and pitched it outside the camp, far from the camp, and [a]called it the tabernacle of meeting. And it came to pass *that* everyone who [b]sought the LORD went out to the tabernacle of meeting which *was* outside the camp. [8]So it was, whenever Moses went out to the tabernacle, *that* all the people rose, and each man stood [a]*at* his tent door and watched Moses until he had gone

into the tabernacle. 9And it came to pass, when Moses entered the tabernacle, that the pillar of cloud descended and stood *at* the door of the tabernacle, and [1]*the LORD* [a]talked with Moses. 10All the people saw the pillar of cloud standing *at* the tabernacle door, and all the people rose and [a]worshiped, each man *in* his tent door. 11So [a]the LORD spoke to Moses face to face, as a man speaks to his friend. And he would return to the camp, but [b]his servant Joshua the son of Nun, a young man, did not depart from the tabernacle.

The Promise of God’s Presence

12Then Moses said to the LORD, “See, [a]You say to me, ‘Bring up this people.’ But You have not let me know whom You will send with me. Yet You have said, [b]‘I know you by name, and you have also found grace in My sight.’ 13Now therefore, I pray, [a]if I have found grace in Your sight, [b]show me now Your way, that I may know You and that I may find grace in Your sight. And consider that this nation *is* [c]Your people.”

14And He said, [a]“My Presence will go *with you,* and I will give you [b]rest.”

15Then he said to Him, [a]“If Your Presence does not go *with us,* do not bring us up from here. 16For how then will it be known that Your people and I have found grace in Your sight, [a]except You go with us? So we [b]shall be separate, Your people and I, from all the people who *are* upon the face of the earth.”

17So the LORD said to Moses, [a]“I

will also do this thing that you have spoken; for you have found grace in My sight, and I know you by name.”

18And he said, “Please, show me [a]Your glory.”

19Then He said, “I will make all My [a]goodness pass before you, and I wi1ll proclaim the name of the LORD before you. [b]I will be gracious to whom I will be [c]gracious, and I will have compassion on whom I will have compassion.” 20But He said, “You cannot see My face; for [a]no man shall see Me, and live.” 21And the LORD said, “Here is a place by Me, and you shall stand on the rock. 22So it shall be, while My glory passes by, that I will put you [a]in the cleft of the rock, and will [b]cover you with My hand while I pass by. 23Then I will take away My hand, and you shall see My back; but My face shall [a]not be seen.”

Exodus 34

Moses Makes New Tablets

1And the LORD said to Moses, [a]“Cut two tablets of stone like the first *ones,* and [b]I will write on *these* tablets the words that were on the first tablets which you broke. 2So be ready in the morning, and come up in the morning to Mount Sinai, and present yourself to Me there [a]on the top of the mountain. 3And no man shall [a]come up with you, and let no man be seen throughout all the mountain; let neither flocks nor herds feed before that mountain.”

4So he cut two tablets of stone like

the first *ones.* Then Moses rose early in the morning and went up Mount Sinai, as the LORD had commanded him; and he took in his hand the two tablets of stone.

5Now the LORD descended in the [a]cloud and stood with him there, and [b]proclaimed the name of the LORD. 6And the LORD passed before him and proclaimed, “The LORD, the LORD [a]God, merciful and gracious, longsuffering, and abounding in [b]goodness and [c]truth, 7[a]keeping mercy for thousands, [b]forgiving iniquity and transgression and sin, [c]by no means clearing *the guilty,* visiting the iniquity of the fathers upon the children and the children’s children to the third and the fourth generation.”

8So Moses made haste and [a]bowed his head toward the earth, and worshiped. 9Then he said, “If now I have found grace in Your sight, O Lord, [a]let my Lord, I pray, go among us, even though we *are* a [b]stiff-necked* people; and pardon our iniquity and our sin, and take us as [c]Your inheritance.”

The Covenant Renewed

10And He said: “Behold, [a]I make a covenant. Before all your people I will [b]do *marvels such as have not been done in all the earth, nor in any nation; and all the people among whom you *are* shall see the work of the LORD. For it *is* [c]an awesome thing that I will do with you. 11[a]Observe what I command you this day. Behold, [b]I am driving out from before

you the Amorite and the Canaanite
and the Hittite and the Perizzite and
the Hivite and the Jebusite. 12[a]Take
heed to yourself, lest you make a
covenant with the inhabitants of the
land where you are going, lest it be a
snare in your midst. 13But you shall
[a]destroy their altars, break their
sacred pillars, and [b]cut down their
wooden images 14(for you shall
worship [a]no other god, for the LORD,
whose [b]name *is* Jealous, *is* a [c]jealous
God), 15lest you make a covenant
with the inhabitants of the land, and
they [a]play the harlot with their gods
and make sacrifice to their go1ds,
and *one of them* [b]invites you and you
[c]eat of his sacrifice, 16and you take of
[a]his daughters for your sons, and his
daughters [b]play the harlot with their
gods and make your sons play the
harlot with their gods.

17[a]"You shall make no molded gods
for yourselves.

18"The Feast of [a]Unleavened Bread
you shall keep. Seven days you shall
eat unleavened bread, as I
commanded you, in the appointed
time of the [b]month of Abib; for in the
month of Abib you came out from
Egypt.

19[a]"All [*]that open the womb *are*
Mine, and every male firstborn
among your livestock, *whether* ox or
sheep. 20But [a]the firstborn of a donkey
you shall redeem with a lamb. And if
you will not redeem *him,* then you
shall break his neck. All the firstborn
of your sons you shall redeem.

"And none shall appear before Me

[b]empty-handed.

21[a]“Six days you shall work, but on the seventh day you shall rest; in plowing time and in harvest you shall rest.

22“And you shall observe the Feast of Weeks, of the firstfruits of wheat harvest, and the Feast of Ingathering at the year’s end.

23[a]“Three times in the year all your men shall appear before the Lord, the LORD God of Israel. 24For I will [a]cast out the nations before you and enlarge your borders; neither will any man covet your land when you go up to appear before the LORD your God three times in the year.

25“You shall not offer the blood of My sacrifice with leaven, [a]nor shall the sacrifice of the Feast of the Passover be left until morning.

26[a]“The first of the f1irstfruits of your land you shall bring to the house of the LORD your God. You shall not boil a young goat in its mother’s milk.”

27Then the LORD said to Moses, “Write [a]these words, for according to the tenor of these words I have made a covenant with you and with Israel.” 28[a]So he was there with the LORD forty days and forty nights; he neither ate bread nor drank water. And [b]He wrote on the tablets the words of the covenant, the [*]Ten Commandments.

The Shining Face of Moses

29Now it was so, when Moses came down from Mount Sinai (and the [a]two tablets of the Testimony *were* in Moses’ hand when he came down from the mountain), that Moses did not know that the skin of his face shone while he talked with Him. 30So when Aaron and all the children of Israel saw Moses, behold, [a]the skin of his face shone, and they were afraid to come near him. 31Then Moses called to them, and Aaron and all the rulers of the congregation returned to him; and Moses talked with them. 32Afterward all the children of Israel came near, [a]and he gave them as commandments all that the LORD had spoken with him on Mount Sinai. 33And when Moses had finished speaking with them, he put [a]a veil on his face. 34But [a]whenever Moses went in before the LORD to speak with Him, he would take the veil off until he came out; and he would come out and speak to the children of Israel whatever he had been commanded. 35And whenever the children of Israel saw the face of Moses, that the skin of Moses' face shone, then Moses would put the veil on his face again, until he went in to speak with Him.

Exodus 35

Sabbath Regulations

1Then Moses gathered all the congregation of the children of Israel together, and said to them, [a]"These *are* the words which the LORD has commanded *you* to do: 2Work shall be done for [a]six days, but the seventh day shall be a holy day for you, a Sabbath of rest to the LORD. Whoever does any work on it shall be put to [b]death. 3[a]You shall kindle no fire throughout your dwellings on the Sabbath day.”

Offerings for the Tabernacle

4And Moses spoke to all the congregation of the children of Israel, saying, [a]“This *is* the thing which the LORD commanded, saying: 5‘Take from among you an offering to the LORD. [a]Whoever *is* of a willing heart, let him bring it as an offering to the LORD: [b]gold, silver, and bronze; 6[a]blue, purple, and scarlet *thread,* fine linen, and [b]goats’ *hair;* 7ram skins dyed red, badger skins, and acacia wood; 8oil for the light, [a]and spices for the anointing oil and for the sweet incense; 9onyx stones, and stones to be set in the ephod and in the breastplate.

Articles of the Tabernacle

10[a]‘All *who are* gifted artisans among you shall come and make all that the LORD has commanded: 11[a]the tabernacle, its tent, its covering, its clasps, its boards, its bars, its pillars, and its sockets; 12[a]the ark and its poles, *with* the mercy seat, and the veil of the covering; 13the [a]table and its poles, all its utensils, [b]and the showbread; 14also [a]the lampstand for the light, its utensils, its lamps, and the oil for the light; 15[a]the incense altar, its poles, [b]the anointing oil, [c]the sweet incense, and the screen for the door at the entrance of the tabernacle; 16[a]the altar of burnt offering with its bronze grating, its poles, all its utensils, *and* the laver and its base; 17[a]the hangings of the court, its pillars, their sockets, and the screen for the gate of the court; 18the pegs of the tabernacle, the pegs of the court, and their cords; 19[a]the [*]garments of ministry, for ministering in the holy *place*—the holy garments for Aaron the priest and the garments of his sons, to minister as priests.' "

The Tabernacle Offerings Presented

20And all the congregation of the children of Israel departed from the presence of Moses. 21Then everyone came [a]whose heart [*]was stirred, and everyone whose spirit was willing, *and* they [b]brought the LORD's offering for the work of the tabernacle of meeting, for all its service, and for the holy garments. 22They came, both men and women, as many as had a willing heart, *and* brought [a]earrings and nose rings, rings and necklaces, all [b]jewelry of gold, that is, every man who *made* an offering of gold to the LORD. 23And [a]every man, with whom was found blue, purple, and scarlet *thread,* fine linen, and goats' *hair,* red skins of rams, and [*]badger skins, brought *them.* 24Everyone who offered an offering of silver or bronze brought the LORD's offering. And everyone with whom was found acacia wood for any work of the service, brought *it.* 25All the women *who were* [a]gifted artisans spun yarn with their hands, and brought what they had spun, of blue, purple, *and* scarlet, and fine linen. 26And all the women whose hearts [*]stirred with wisdom spun yarn of goats' *hair.* 27[a]The rulers brought onyx stones, and the stones to be set in the ephod and in the breastplate, [1] 28and [a]spices and oil for the light, for the anointing oil, and for the sweet incense. 29The children of Israel brought a [a]freewill offering to [b]the LORD, all the men and women whose hearts were willing to bring *material* for all kinds of work which the LORD, by the hand of Moses, had commanded to be done.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Time Is Now

The Bible clearly states that the purposes for which Christ was born was to destroy the works of Satan. We know that Christ completed His mission on the cross. Satan is relentless in his attempts to undermine the plans and purposes of God. He is skillful at even disguising himself in order to remain undetected.

The time has come

when God has stirred up the hearts of believers to rise up and take their rightful places as His official representatives in the earthly realm. Our role is to activate and enforce the authority God has given us. As an empowered believer, you should no longer be satisfied with standing on the sidelines or accepting anything from the enemy. There is a real battle going on. There are no demilitarized zones in this battle. Thank God we have been given the assurance that, in this warfare, we are fighting the good fight of faith. The outcome has been decided, and our victory has been downloaded into the equation. It is time to beat the devil at his own game.*

*Cindy Trimm, *The Rules of Engagement*, 5.

The Artisans Called by God

30And Moses said to the children of Israel, “See, the LORD has called by name Bezalel the son of Uri, the son of Hur, of the tribe of Judah; 31and He has filled him with the Spirit of God, in wisdom and understanding, in knowledge and all manner of workmanship, 32to design artistic works, to work in gold and silver and bronze, 33in cutting jewels for setting, in carving wood, and to work in all manner of artistic workmanship.

34“And He has put in his heart the ability to teach, *in* him and [a]Aholiab the son of Ahisamach, of the tribe of Dan. 35He has [a]filled them with skill to do all manner of work of the engraver and the designer and the tapestry maker, in blue, purple, and scarlet *thread,* and fine linen, and of the weaver—those who do every work and those who design artistic works.

Exodus 36

1“And Bezalel and Aholiab, and every [a]gifted artisan in whom the LORD has put wisdom and

understanding, to know how to do all
manner of work for the service of the
[b]sanctuary,[*] shall do according to all
that the LORD has commanded.”

The People Give More than Enough

2Then Moses called Bezalel and
Aholiab, and every gifted artisan in
[a]whose heart the LORD had put
wisdom, everyone whose heart [*]was
stirred, to come and do the work.
3And they received from Moses all
the [a]offering which the children of
Israel [b]had brought for the work of
the service of making the sanctuary.
So they continued bringing to him
freewill offerings every morning.
4Then all the craftsmen who were
doing all the work of the sanctuary
came, each from the work he was
doing, 5and they spoke to Moses,
saying, [a]“The people bring much
more than enough for the service of
the work which the LORD
commanded *us* to do.”

6So Moses gave a commandment,
and they caused it to be proclaimed
throughout the camp, saying, “Let
neither man nor woman do any more
work for the offering of the
sanctuary.” And the people were
restrained from bringing, 7for the
material they had was sufficient for
all the work to be done—indeed too
[a]much.

Building the Tabernacle

8[a]Then all the gifted artisans among
them who worked on the tabernacle
made ten curtains woven of fine
linen, and of blue, purple, and scarlet
thread; with artistic designs of

cherubim they made them. [9]The length of each curtain *was* twenty-eight cubits, and the width of each curtain four cubits; the curtains *were* all the same size. [10]And he coupled five curtains to one another, and *the other five curtains he coupled to one another.* [11]*He made loops of blue yarn on the edge of the curtain on the selvedge of one set; likewise he did on the outer edge of the other curtain of the second set.* [12][a]*Fifty loops he made on one curtain, and fifty loops he made on the edge of the curtain on the end of the second set; the loops held one curtain to another.* [13]*And he made fifty clasps of gold, and coupled the curtains to one another with the clasps, that it might be one tabernacle.*

[14][a]He made curtains of goats' *hair* for the tent over the tabernacle; he made eleven curtains. [15]The length of each curtain *was* thirty cubits, and the width of each curtain four cubits; the eleven curtains *were* the same size. [16]He coupled five curtains by themselves and six curtains by themselves. [17]And he made fifty loops on the edge of the curtain that is outermost in one set, and fifty loops he made on the edge of the curtain of the second set. [18]He also made fifty bronze clasps to couple the tent together, that it might be one. [19][a]Then he made a covering for the tent of ram skins dyed red, and a covering of [*]badger skins above *that.*

[20]For the tabernacle [a]he made boards of acacia wood, standing upright. [21]The length of each board

was ten cubits, and the width of each
board a cubit and a half. 22Each board
had two [*]tenons [a]for binding one to
another. Thus he made for all the
boards of the tabernacle. 23And he
made boards for the tabernacle,
twenty boards for the south side.
24Forty sockets of silver he made to
go under the twenty boards: two
sockets under each of the boards for
its two tenons. 25And for the other
side of the tabernacle, the north side,
he made twenty boards 26and their
forty sockets of silver: two sockets
under each of the boards. 27For the
west side of the tabernacle he made
six boards. 28He also made two
boards for the two back corners of
the tabernacle. 29And they were
coupled at the bottom and [*]coupled
together at the top by one ring. Thus
he made both of them for the two
corners. 30So there were eight boards
and their sockets—sixteen1 sockets of
silver—two sockets under each of the
boards.

31And he made [a]bars of acacia
wood: five for the boards on one side
of the tabernacle, 32five bars for the
boards on the other side of the
tabernacle, and five bars for the
boards of the tabernacle on the far
side westward. 33And he made the
middle bar to pass through the
boards from one end to the other.
34He overlaid the boards with gold,
made their rings of gold *to be* holders
for the bars, and overlaid the bars
with gold.

35And he made [a]a veil of blue,

purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen; it was worked *with* an artistic design of cherubim. [36]He made for it four pillars of acacia *wood,* and overlaid them with gold, with their hooks of gold; and he cast four sockets of silver for them.

[37]He also made a [a]screen for the tabernacle door, of blue, purple, and scarlet *thread,* and fine woven linen, made by a [*]weaver, [38]and its five pillars with their hooks. And he overlaid their capitals and their rings with gold, but their five sockets *were* bronze.

Exodus 37

Making the Ark of the Testimony

[1]Then [a]Bezalel made [b]the ark of acacia wood; two and a half cubits *was* its length, a cubit and a half its width, and a cubit and a half its height. [2]He overlaid it with pure gold inside and outside, and made a molding of gold all around it. [3]And he cast for it four rings of gold *to be set* in its four corners: two rings on one side, and two rings on the other side of it. [4]He made poles of acacia wood, and overlaid them with gold. [5]And he put the poles into the rings at the sides of the ark, to bear the ark. [6]He also made the [a]mercy seat of pure gold; two and a half cubits *was* its length and a cubit and a half its width. [7]He made two cherubim of beaten gold; he made them of one piece at the two ends of the mercy seat: [8]one cherub at one end on this side, and the other cherub at the *other*

end on that side.1 He made the cherubim at the two ends *of one piece* with the mercy seat. [9]The cherubim spread out *their* wings above, *and* covered the [a]mercy seat with their wings. They faced one another; the faces of the cherubim were toward the mercy seat.

Making the Table for the Showbread

[10]He made [a]the table of acacia wood; two cubits *was* its length, a cubit its width, and a cubit and a half its height. [11]And he overlaid it with pure gold, and made a molding of gold all around it. [12]Also he made a frame of a handbreadth all around it, and made a molding of gold for the frame all around it. [13]And he cast for it four rings of gold, and put the rings on the four corners that *were* at its four legs. [14]The rings were close to the frame, as holders for the poles to bear the table. [15]And he made the poles of acacia wood to bear the table, and overlaid them with gold. [16]He made of pure gold the utensils which were on the table: its [a]dishes, its cups, its bowls, and its pitchers for pouring.

Making the Gold Lampstand

[17]He also made the [a]lampstand of pure gold; of hammered work he made the lampstand. Its shaft, its branches, its bowls, its *ornamental* knobs, and its flowers were of the same piece. [18]And six branches came out of its sides: three branches of the lampstand out of one side, and three branches of the lampstand out of the other side. [19]There were three bowls

made like almond *blossoms* on one branch, with an *ornamental* knob and a flower, and three bowls made like almond *blossoms* on the other branch, with an *ornamental* knob and a flower—and so for the six branches coming out of the lampstand. 20And on the lampstand itself *were* four bowls made like almond *blossoms, each with* its *ornamental* knob and flower. 21*There was* a knob under the *first* two branches of the same, a knob under the *second* two branches of the same, and a knob under the *third* two branches of the same, according to the six branches extending from it. 22Their knobs and their branches were of one piece; all of it *was* one hammered piece of pure gold. 23And he made its seven lamps, its [a]wick-trimmers, and its trays of pure gold. 24Of a talent of pure gold he made it, with all its utensils.

Making the Altar of Incense

25[a]He made the incense altar of acacia wood. Its length *was* a cubit and its width a cubit—*it was* square—and two cubits *was* its height. Its horns were *of one piece* with it. 26And he overlaid it with pure gold: its top, its sides all around, and its horns. He also made for it a molding of gold all around it. 27He made two rings of gold for it under its molding, by its two corners on both sides, as holders for the poles with which to bear it. 28And he [a]made the poles of acacia wood, and overlaid them with gold.

Making the Anointing Oil and the Incense

29He also made [a]the holy anointing oil and the pure incense of sweet spices, according to the work of the perfumer.

Exodus 38

Making the Altar of Burnt Offering

1He made [a]the altar of burnt offering of acacia wood; five cubits *was* its length and five cubits its width—*it was* square—and its height *was* three cubits. 2He made its horns on its four corners; the horns were *of one piece* with it. And he overlaid it with bronze. 3He made all the utensils for the altar: the pans, the shovels, the basins, the forks, and the firepans; all its utensils he made of bronze. 4And he made a grate of bronze network for the altar, under its rim, midway from the bottom. 5He cast four rings for the four corners of the bronze grating, *as* holders for the poles. 6And he made the poles of acacia wood, and overlaid them with bronze. 7Then he put the poles into the rings on the sides of the altar, with which to bear it. He made the altar hollow with boards.

Making the Bronze Laver

8He made [a]the laver of bronze and its base of bronze, from the bronze mirrors of the serving women who assembled at the door of the tabernacle of meeting.

Making the Court of the Tabernacle

9Then he made [a]the court on the south side; the hangings of the court *were of* fine woven linen, one1 hundred cubits long. 10There *were* twenty pillars for them, with twenty bronze sockets. The hooks of the pillars and their bands *were* silver. 11On the north side *the hangings were* one hundred cubits *long,* with twenty pillars and their twenty bronze sockets. The hooks of the pillars and their bands *were* silver. 12And on the west side *there were* hangings of fifty cubits, with ten pillars and their ten sockets. The hooks of the pillars and their bands *were* silver. 13For the east side *the hangings were* fifty cubits. 14The hangings of one side *of the gate were* fifteen cubits *long, with* their three pillars and their three sockets, 15and the same for the other side of the court gate; on this side and that *were* hangings of fifteen cubits, *with* their three pillars and their three sockets. 16All the hangings of the court all around *were of* fine woven linen. 17The sockets for the pillars *were* bronze, the hooks of the pillars and their bands *were* silver, and the overlay of their capitals *was* silver; and all the pillars of the court had bands of silver. 18The screen for the gate of the court *was* woven of blue, purple, and scarlet *thread,* and of fine woven linen. The length *was* twenty cubits, and the height along its width *was* five cubits, corresponding to the hangings of the court. 19And *there were* four pillars *with* their four sockets of bronze; their hooks *were* silver, and the overlay of their capitals and their bands *was* silver. 20All the [a]pegs of the tabernacle, and of the court all around, *were* bronze.

Materials of the Tabernacle

21[*]This is the inventory of the
tabernacle, [a]the tabernacle of the
Testimony, which was counted
according to the commandment of
Moses, for the service of the Levites,
[b]by the hand of [c]Ithamar, son of
Aaron the priest.

22[a]Bezalel the son of Uri, the son of
Hur, of the tribe of Judah, made all
that the LORD had commanded
Moses. 23And with him *was* [a]Aholiab
the son of Ahisamach, of the tribe of
Dan, an engraver and [*]designer, a
weaver of blue, purple, and scarlet
thread, and of fine linen.

24All the gold that was used in all
the work of the holy *place,* that is, the
gold of the [a]offering, was twenty-nine
talents and seven hundred and thirty
shekels, according to [b]the shekel of
the sanctuary. 25And the silver from
those who were [a]numbered of the
congregation *was* one hundred talents
and one thousand seven hundred and
seventy-five shekels, according to the
shekel of the sanctuary: 26[a]a bekah for
[*]each man (*that is,* half a shekel,
according to the shekel of the
sanctuary), for everyone included in
the numbering from twenty years old
and above, for [b]six hundred and three
thousand, five hundred and fifty *men.*
27And from the hundred talents of
silver were cast [a]the sockets of the
sanctuary and the bases of the veil:
one hundred sockets from the
hundred talents, one talent for each
socket. 28Then from the one thousand
seven hundred and seventy-five

shekels he made hooks for the pillars, overlaid their capitals, and [a]made bands for them.

29The offering of bronze *was* seventy talents and two thousand four hundred shekels. 30And with it he made the sockets for the door of the tabernacle of meeting, the bronze altar, the bronze grating for it, and all the utensils for the altar, 31the sockets for the court all around, the bases for the court gate, all the pegs for the tabernacle, and all the pegs for the court all around.

Exodus 39

Making the Garments of the Priesthood

1Of the [a]blue, purple, and scarlet *thread* they made [b]garments* of ministry, for ministering in the *holy *place,* and made the holy garments for Aaron, [c]as the LORD had commanded Moses.

Making the Ephod

2[a]He made the [b]ephod of gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and of fine woven linen. 3And they beat the gold into thin sheets and cut *it into* threads, to work *it* in *with* the blue, purple, and scarlet *thread,* and the fine linen, *into* artistic designs. 4They made shoulder straps for it to couple *it* together; it was coupled together at its two edges. 5And the intricately woven band of his ephod that *was* on it *was* of the same workmanship, *woven of* gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and *of* fine woven linen, as the LORD had commanded

Moses.

6[a]And they set onyx stones, enclosed in [*]settings of gold; they were engraved, as signets are engraved, with the names of the sons of Israel. 7He put them on the shoulders of the ephod *as* [a]memorial stones for the sons of Israel, as the LORD had commanded Moses.

Making the Breastplate

8[a]And he made the breastplate, artistically woven like the workmanship of the ephod, of gold, blue, purple, and scarlet *thread,* and of fine woven linen. 9They made the breastplate square by doubling it; a span *was* its length and a span its width when doubled. 10[a]And they set in it four rows of stones: a row with a sardius, a topaz, and an emerald was the first row; 11the second row, a turquoise, a sapphire, and a diamond; 12the third row, a jacinth, an agate, and an amethyst; 13the fourth row, a beryl, an onyx, and a jasper. *They were* enclosed in settings of gold in their mountings. 14*There were* [a]twelve stones according to the names of the sons of Israel: according to their names, *engraved like* a signet, each one with its own name according to the twelve tribes. 15And they made chains for the breastplate at the ends, like braided cords of pure gold. 16They also made two settings of gold and two gold rings, and put the two rings on the two ends of the breastplate. 17And they put the two braided *chains* of gold in the two rings on the ends of the breastplate.

18The two ends of the two braided *chains* they fastened in the two settings, and put them on the shoulder straps of the ephod in the front. 19And they made two rings of gold and put *them* on the two ends of the breastplate, on the edge of it, which *was* on the inward side of the ephod. 20They made two *other* gold rings and put them on the two shoulder straps, underneath the ephod toward its front, right at the seam above the intricately woven band of the ephod. 21And they bound the breastplate by means of its rings to the rings of the ephod with a blue cord, so that it would be above the intricately woven band of the ephod, and that the breastplate would not come loose from the ephod, as the LORD had commanded Moses.

Making the Other Priestly Garments

22[a]He made the [b]robe of the ephod of woven work, all of blue. 23And *there was* an opening in the middle of the robe, like the opening in a coat of mail, *with* a woven binding all around the opening, so that it would not tear. 24They made on the hem of the robe pomegranates of blue, purple, and scarlet, and of fine woven *linen.* 25And they made [a]bells of pure gold, and put the bells between the pomegranates on the hem of the robe all around between the pomegranates: 26a bell and a pomegranate, a bell and a pomegranate, all around the hem of the robe to [*]minister in, as the LORD had commanded Moses.

27[a]They made tunics, artistically

woven of fine linen, for Aaron and his
sons, 28[a]a turban of fine linen,
exquisite hats of fine linen, [b]short
trousers of fine woven linen, 29[a]and a
sash of fine woven linen with blue,
purple, and scarlet *thread,* made by a
weaver, as the LORD had commanded
Moses.

30[a]Then they made the plate of the
holy crown of pure gold, and wrote
on it an inscription *like* the engraving
of a signet:

[b]HOLINESS TO THE LORD.

31And they tied to it a blue cord, to
fasten *it* above on the turban, as the
LORD had commanded Moses.

The Work Completed

32Thus all the work of the
tabernacle of the tent of meeting was
[a]finished. And the children of Israel
did [b]according to all that the LORD
had commanded Moses; so they did.
33And they brought the tabernacle to
Moses, the tent and all its furnishings:
its clasps, its boards, its bars, its
pillars, and its sockets; 34the covering
of ram skins dyed red, the covering of
badger skins, and the veil of the
covering; 35the ark of the Testimony
with its poles, and the mercy seat;
36the table, all its utensils, and the
[a]showbread; 37the pure *gold*
lampstand with its lamps (the lamps
set in order), all its utensils, and the
oil for light; 38the gold altar, the
anointing oil, and the sweet incense;
the screen for the tabernacle door;
39the bronze altar, its grate of bronze,
its poles, and all its utensils; the laver
with its base; 40the hangings of the

court, its pillars and its sockets, the screen for the court gate, its cords, and its pegs; all the utensils for the service of the tabernacle, for the tent of meeting; 41and the [*]garments of ministry, to [*]minister in the holy *place:* the holy garments for Aaron the priest, and his sons' garments, to minister as priests.

42According to all that the LORD had commanded Moses, so the children of Israel [a]did all the work. 43Then Moses looked over all the work, and indeed they had done it; as the LORD had commanded, just so they had done it. And Moses [a]blessed them.

Exodus 40

The Tabernacle Erected and Arranged

1Then the LORD [a]spoke to Moses, saying: 2"On the first day of the [a]first month you shall set up [b]the tabernacle of the tent of meeting. 3[a]You shall put in it the ark of the Testimony, and [*]partition off the ark with the veil. 4[a]You shall bring in the table and [b]arrange the things that are to be set in order on it; [c]and you shall bring in the lampstand [*]and light its lamps. 5[a]You shall also set the altar of gold for the incense before the ark of the Testimony, and put up the screen for the door of the tabernacle. 6Then you shall set the [a]altar of the burnt offering before the door of the tabernacle of the tent of meeting. 7And [a]you shall set the laver between the tabernacle of meeting and the altar, and put water in it. 8You shall set up the court all around, and hang up the screen at the court gate.

9“And you shall take the anointing oil, and [a]anoint the tabernacle and all that *is* in it; and you shall hallow it and all its utensils, and it shall be holy. 10You shall [a]anoint the altar of the burnt offering and all its utensils, and consecrate the altar. [b]The altar shall be most holy. 11And you shall anoint the laver and its base, and consecrate it.

12[a]“Then you shall bring Aaron and his sons to the door of the tabernacle of meeting and wash them with water. 13You shall put the holy [a]garments on Aaron, [b]and anoint him and consecrate him, that he may minister to Me as priest. 14And you shall bring his sons and clothe them with tunics. 15You shall anoint them, as you anointed their father, that they may minister to Me as priests; for their anointing shall surely be [a]an everlasting priesthood throughout their generations.”

16Thus Moses did; according to all that the LORD had commanded him, so he did.

17And it came to pass in the first month of the second year, on the first *day* of the month, *that* the [a]tabernacle was [*]raised up. 18So Moses raised up the tabernacle, fastened its sockets, set up its boards, put in its bars, and raised up its pillars. 19And he spread out the tent over the tabernacle and put the covering of the tent on top of it, as the LORD had commanded Moses. 20He took [a]the Testimony and put *it* into the ark, inserted the poles through the rings of the ark, and put the mercy seat on top of the ark. 21And he brought the ark into the tabernacle, [a]hung up the veil of the covering, and partitioned off the ark of the Testimony, as the LORD had commanded Moses.

22[a]He put the table in the tabernacle of meeting, on the north side of the tabernacle, outside the veil; 23[a]and he set the bread in order upon it before the LORD, as the LORD had commanded Moses. 24[a]He put the lampstand in the tabernacle of meeting, across from the table, on the south side of the tabernacle; 25and [a]he lit the lamps before the LORD, as the LORD had commanded Moses. 26[a]He put the gold altar in the tabernacle of meeting in front of the veil; 27[a]and he burned sweet incense on it, as the LORD had commanded Moses. 28[a]He hung up the screen *at* the door of the tabernacle. 29[a]And he put the altar of burnt offering *before* the door of the tabernacle of the tent of meeting, and [b]offered upon it the burnt offering and the grain offering, as the LORD had commanded Moses. 30[a]He set the laver between the tabernacle of meeting and the altar, and put water there for washing; 31and Moses, Aaron, and his sons would [a]wash their hands and their feet *with water* from it. 32Whenever they went into the tabernacle of meeting, and when they came near the altar, they washed, [a]as the LORD had commanded Moses. 33[a]And he raised up the court all around the tabernacle and the altar, and hung up the screen of the court gate. So Moses [b]finished the work.

The Cloud and the Glory

34[a]Then the [b]cloud covered the tabernacle of meeting, and the [c]glory of the LORD filled the tabernacle. 35And Moses [a]was not able to enter the tabernacle of meeting, because the cloud rested above it, and the glory of the LORD filled the tabernacle. 36[a]Whenever the cloud was taken up from above the tabernacle, the children of Israel would [*]go onward in all their journeys. 37But [a]if the cloud was not taken up, then they did not journey till the day that it was taken up. 38For [a]the cloud of the LORD *was* above the tabernacle by day, and fire was over it by night, in the sight of all the house of Israel, throughout all their journeys.

Exodus 1

[1:1] a. Gen. 46:8–27; Ex. 6:14–16

[1:5] a. Gen. 46:26, 27; (Deut. 10:22)

[1:5] * Lit. *who came from the loins of*

[1:5] * DSS, LXX *seventy-five;* cf. Acts 7:14

[1:6] a. Gen. 50:26; Acts 7:15

[1:7] a. Gen. 12:2; 28:3; 35:11; 46:3; 47:27; 48:4; Num. 22:3; Deut. 1:10, 11; 26:5; Ps. 105:24; Acts 7:17

[1:7] * *became very numerous*

[1:8] a. Acts 7:18, 19

[1:9] a. Gen. 26:16

[1:10] a. Ps. 83:3, 4

[1:10] b. Ps. 105:25; (Prov. 16:25); Acts 7:19

[1:11] a. Gen. 15:13; Ex. 3:7; 5:6

[1:11] b. Ex. 1:14; 2:11; 5:4–9; 6:6

[1:11] c. 1 Kin. 9:19; 2 Chr. 8:4

[1:11] d. Gen. 47:11

[1:13] a. Gen. 15:13; Ex. 5:7–19

[1:13] * *harshness*

[1:14] a. Ex. 2:23; 6:9; Num. 20:15; (Acts 7:19, 34)

[1:14] b. Ps. 81:6

[1:15] a. Ex. 2:6

[1:16] a. Matt. 2:16; Acts 7:19

[1:17] a. Ex. 1:21; Prov. 16:6

[1:17] b. Dan. 3:16, 18; Acts 4:18–20; 5:29

[1:19] a. Josh. 2:4; 2 Sam. 17:19, 20

[1:19] * *have vigor of life,* bear quickly, easily

[1:20] a. Gen. 15:1;1 Ruth 2:12; (Prov. 11:18); Eccl. 8:12; (Is. 3:10); Heb. 6:10

[1:20] * *became very numerous*

[1:21] a. 1 Sam. 2:35; 2 Sam. 7:11, 13, 27, 29; 1 Kin.

2:24; 11:38; (Ps. 127:1)

[1:21] * *gave them families*

[1:22] a. Acts 7:19

[1:22] * Sam., LXX, Tg. add *to the Hebrews*

Exodus 2

[2:1] a. Ex. 6:16–20; Num. 26:59; 1 Chr. 23:14

[2:2] a. Acts 7:20; Heb. 11:23

[2:3] a. Is. 18:2

[2:3] b. Gen. 14:10

[2:3] c. Gen. 6:14; Is. 34:9

[2:3] d. Is. 19:6

[2:4] a. Ex. 15:20; Num. 26:59

[2:5] a. Ex. 7:15; Acts 7:21

[2:10] a. Acts 7:21

[2:10] * Heb. *Mosheh,* lit. *Drawn Out*

[2:11] a. Acts 7:23, 24; Heb. 11:24–26

[2:12] a. Acts 7:24, 25

[2:13] a. Acts 7:26–28

[2:13] b. Prov. 25:8

[2:14] a. Gen. 19:9; Acts 7:27, 28

[2:14] b. Judg. 6:27; Heb. 11:27

[2:15] a. Acts 7:29; Heb. 11:27

[2:15] b. Ex. 3:1

[2:15] c. Gen. 24:11; 29:2; Ex. 15:27

[2:15] * *the presence of Pharaoh*

[2:16] a. Ex. 3:1; 4:18; 18:12

[2:16] b. Gen. 24:11, 13, 19; 29:6–10; 1 Sam. 9:11

[2:16] c. Gen. 30:38

[2:17] a. Gen. 47:3; 1 Sam. 25:7

[2:17] b. Gen. 26:19–21

[2:17] c. Gen. 29:3, 10

[2:18] a. Num. 10:29

[2:18] b. Ex. 3:1; 4:18

[2:18] * *Jethro,* Ex. 3:1

[2:20] a. Gen. 31:54; 43:25

[2:21] a. Ex. 4:25; 18:2

[2:22] a. Ex. 4:20; 18:3, 4

[2:22] b. Gen. 23:4; Lev. 25:23; Acts 7:29; Heb. 11:13, 14

[2:22] * Lit. *Stranger There*

[2:22] * *sojourner,* temporary resident

[2:23] a. Acts 7:34

[2:23] b. Deut. 26:7

[2:23] c. Ex. 3:7, 9; James 5:4

[2:24] a. Ex. 6:5; Acts 7:34

[2:24] b. Gen. 15:13; 22:16–18; 26:2–5; 28:13–15; Ps. 105:8, 42

[2:24] c. Gen. 12:1–3; 15:14; 17:1–14

[2:25] a. Ex. 4:31; Luke 1:25; Acts 7:34

[2:25] b. Ex. 3:7

Exodus 3

[3:1] a. Ex. 4:18

[3:1] b. Ex. 2:16

[3:1] c. Ex. 17:6; 1 Kin. 19:8

[3:1] d. Ex. 18:5

[3:2] a. Deut. 33:16; Mark 12:26; Luke 20:37; Acts 7:30

[3:3] a. Acts 7:31

[3:4] a. Ex. 4:5;

Deut. 33:16

[3:5] a. Josh. 5:15; Acts 7:33

[3:6] a. Gen. 28:13; Ex. 3:16; 4:5; (Matt. 22:32; Mark 12:26, 27; Luke 20:37, 38); Acts 7:32

[3:6] b. 1 Kin. 19:13

[3:7] a. Ex. 2:23–25; Neh. 9:9; Ps. 106:44

[3:7] b. Ex. 1:11

[3:7] c. Gen. 18:21; Ex. 2:25

[3:7] * *pain*

[3:8] a. Gen. 15:13–16; 46:4; 50:24, 25

[3:8] b. Ex. 6:6–8; 12:51

[3:8] c. Num. 13:27; Deut. 1:25; 8:7–9; Josh. 3:17

[3:8] d. Ex. 3:17; 13:5; Jer. 11:5; Ezek. 20:6

[3:8] e. Gen. 15:19–21; Josh. 24:11

[3:9] a. Ex. 2:23

[3:9] b. Ex. 1:11, 13, 14

[3:10] a. Gen. 15:13, 14; Ex. 12:40, 41; (Mic. 6:4); Acts 7:6, 7

[3:11] a. Ex. 4:10; 6:12; 1 Sam. 18:18

[3:12] a. Gen. 31:3; Ex. 4:12, 15; 33:14–16; Deut. 31:23; Josh. 1:5; Is. 43:2; Rom. 8:31

[3:12] b. Ex. 4:8; 19:3

[3:14] a. (Ex. 6:3; John 8:24, 28, 58; Heb. 13:8; Rev. 1:8; 4:8)

[3:15] a. Ps. 30:4; 97:12; 102:12; 135:13; (Hos. 12:5)

[3:16] a. Ex. 4:29

[3:16] b. Gen. 50:24; Ex. 2:25; 4:31; Ps. 33:18; Luke 1:68

[3:17] a. Gen. 15:13–21; 46:4; 50:24, 25

[3:18] a. Ex. 4:31

[3:18] b. Ex. 5:1, 3

[3:18] c. Num. 23:3, 4, 15, 16

[3:19] a. Ex. 5:2

[3:20] a. Ex. 6:6; 9:15

[3:20] b. Deut. 6:22; Neh. 9:10; Ps. 105:27; 135:9; Jer. 32:20; Acts 7:36

[3:20] c. Ex. 11:1; 12:31–37

[3:21] a. Ex. 11:3; 12:36; 1 Kin. 8:50; Ps. 105:37; 106:46; (Prov. 16:7)

[3:22] a. Ex. 11:2

[3:22] b. Ex. 33:6

[3:22] c. Job 27:17; Prov. 13:22; (Ezek. 39:10)

Exodus 4

[4:5] a. Ex. 4:31; 19:9

[4:5] b. Gen. 28:13; 48:15; Ex. 3:6, 15

[4:6] a. Num. 12:10; 2 Kin. 5:27

[4:7] a. Num. 12:13–15; Deut. 32:39

[4:8] a. Ex. 7:6–13

[4:9] a. Ex. 7:19, 20

[4:9] * The Nile

[4:10] a. Ex. 3:11; 4:1; 6:12; Jer. 1:6

[4:10] * *heavy* or *dull of tongue;* cannot talk very well

[4:11] a. Ps. 94:9; 146:8; Matt. 11:5; Luke 1:20, 64

[4:12] a. Ex. 4:15, 16; Deut. 18:18; Is. 50:4; Jer. 1:9; (Matt. 10:19; Mark 13:11; Luke 12:11, 12; 21:14, 15)

[4:13] a. Jon. 1:3

[4:14] a. Num. 11:1, 33

[4:14] b. Num. 26:59

[4:14] c. Ex. 4:27; 1 Sam. 10:2, 3, 5

[4:15] a. Ex. 4:12, 30; 7:1, 2

[4:15] b. Num. 23:5, 12; Deut. 18:18; 2 Sam. 14:3, 19; Is. 51:16; 59:21; Jer. 1:9

[4:15] c. Deut. 5:31

[4:16] a. Ex. 7:1, 2

[4:18] a. Ex. 2:21; 3:1; 4:18

[4:18] b. Gen. 43:23; Judg. 18:6

[4:19] a. Ex. 3:1; 18:1

[4:19] b. Gen. 46:3, 6

[4:19] c. Ex. 2:15,

23; Matt. 2:20

[4:20] a. Ex. 18:2–5; Acts 7:29

[4:20] b. Ex. 4:17; 17:9; Num. 20:8, 9, 11

[4:21] a. Ex. 3:20; 11:9, 10

[4:21] b. Ex. 7:3, 13; 9:12, 35; 10:1, 20, 27; 14:4, 8; Deut. 2:30; Josh. 11:20; 1 Sam. 6:6; Is. 63:17; John 12:40; Rom. 9:18

[4:22] a. Ex. 5:1

[4:22] b. Is. 63:16; 64:8; Hos. 11:1; (Rom. 9:4; 2 Cor. 6:16, 18)

[4:22] c. Jer. 31:9;

(James 1:18)

[4:23]
a.
Ex.
11:5;
12:29;
Ps.
105:36;
135:8;
136:10

[4:24]
a.
Gen.
42:27

[4:24]
b.
Ex.
3:18;
5:3;
Num.
22:22

[4:24]
c.
Gen.
17:14

[4:25]
a.
Ex.

2:21;
18:2

[4:25]
b.
Gen.
17:14;
Josh.
5:2,
3

[4:25]
* Lit.
made
it
touch

[4:25]
* Lit.
his

[4:25]
*
bridegroom

[4:27]
a.
Ex.
4:14

[4:27]
b.
Ex.
3:1;
18:5;
24:13

[4:28]
a.
Ex.
4:15,
16

[4:28]
b.
Ex.
4:8,
9

[4:29]
a.
Ex.
3:16;
12:21

[4:30]
a.
Ex.
4:15,
16

[4:31]

a. Ex. 3:18; 4:8, 9; 19:9

[4:31] b. Gen. 50:24; Ex. 3:16

[4:31] c. Ex. 2:25; 3:7

[4:31] d. Gen. 24:26; Ex. 12:27; 1 Chr. 29:20

Exodus 5

[5:1] a.

Ex. 3:18; 7:16; 10:9

[5:1] * *keep a pilgrim-feast*

[5:2] a. 2 Kin. 18:35; 2 Chr. 32:14; Job 21:15

[5:2] b. Ex. 3:19; 7:14

[5:3] a. Ex. 3:18; 7:16

[5:3] b. Ex. 4:24; Num. 23:3

[5:3] c. Ex. 9:15

[5:4] a. Ex. 1:11; 2:11; 6:6

[5:5] a. Ex. 1:7, 9

[5:6] a. Ex. 1:11; 3:7; 5:10,

13, 14

[5:7] a. Ex. 1:14

[5:14] a. Ex. 5:6

[5:14] b. Is. 10:24

[5:21] a. Ex. 6:9; 14:11; 15:24; 16:2

[5:21] * Lit. *our scent to stink before*

Exodus 6

[6:1] a. Ex. 3:19

[6:1] b. Ex. 12:31, 33, 39

[6:2] * Heb. *YHWH*

[6:3] a. Gen. 17:1; 35:9; 48:3

[6:3] b. Gen. 28:3; 35:11

[6:3]
c.
Ex.
3:14,
15;
15:3;
Ps.
68:4;
83:18;
Is.
52:6;
Jer.
16:21;
Ezek.
37:6,
13;
John
8:58

[6:3]
*
Heb.
YHWH,
traditionally
Jehovah

[6:4]
a.
Gen.
12:7;
15:18;
17:4,
7, 8;
26:3;
28:4,
13

[6:4] b. Gen. 47:9; Lev. 25:23

[6:4] c. Gen. 28:4

[6:4] * *made* or *ratified*

[6:4] * *sojournings*

[6:4] * *sojourners,* temporary residents

[6:5] a.

Ex. 2:24; (Job 34:28); Acts 7:34

[6:6] a. Ex. 13:3, 14; 20:2; Deut. 6:12

[6:6] b. Ex. 3:17; 7:4; 12:51; 16:6; 18:1; Deut. 26:8; Ps. 136:11

[6:6] c. Ex. 15:13; Deut. 7:8;

1
Chr.
17:21;
Neh.
1:10

[6:6]
*
Mighty
power

[6:7]
a.
Ex.
19:5;
Deut.
4:20;
7:6;
2
Sam.
7:24

[6:7]
b.
Gen.
17:7;
Ex.
29:45,
46;
Lev.
26:12,
13,
45;
Deut.
29:13;

Rev. 21:7

[6:7] c. Ex. 5:4, 5

[6:8] a. Gen. 15:18; 26:3; Num. 14:30; Neh. 9:15; Ezek. 20:5, 6

[6:8] * *promised,* lit. *lifted up My hand*

[6:9] a.

Ex. 5:21

[6:9] b. Ex. 2:23; Num. 21:4

[6:9] * Lit. *shortness*

[6:12] a. Ex. 4:10; 6:30; Jer. 1:6

[6:12] * One who does not speak well

[6:13]

a. Num. 27:19, 23; Deut. 31:14

[6:13] * *charge*

[6:14] a. Gen. 46:9; Num. 26:5–11; 1 Chr. 5:3

[6:15] a. Gen. 46:10; Num. 26:12–14; 1 Chr. 4:24

[6:15] *

Nemuel, Num. 26:12

[6:16] a. Gen. 46:11; Num. 3:17; 1 Chr. 6:16–30

[6:17] a. 1 Chr. 6:17

[6:18] a. 1 Chr. 6:2, 18

[6:19] a. 1 Chr. 6:19; 23:21

[6:20] a. Ex. 2:1, 2; Num. 3:19

[6:20] b. Num. 26:59

[6:20] c. Num. 26:59

[6:21] a. Num. 16:1; 1 Chr. 6:37, 38

[6:22] a. Lev. 10:4

[6:23]
a.
Ruth
4:19,
20; 1
Chr.
2:10;
Matt.
1:4

[6:23]
b.
Lev.
10:1;
Num.
3:2;
26:60

[6:23]
c.
Ex.
28:1

[6:24]
a.
Num.
26:11

[6:25]
a.
Num.
25:7,
11;

Josh. 24:33

[6:26] a. Ex. 7:4; 12:17, 51; Num. 33:1

[6:26] * *hosts*

[6:27] a. Ex. 6:13; 32:7; 33:1; Ps. 77:20

[6:29] a. Ex. 6:11; 7:2

[6:30]

a. Ex. 4:10; 6:12; Jer. 1:6

[6:30] * One who does not speak well

Exodus 7

[7:1] a. Ex. 4:16; Jer. 1:10

[7:1] b. Ex. 4:15, 16

[7:2] a. Ex.

4:15;
Deut.
18:18

[7:3]
a.
Ex.
4:21;
9:12

[7:3]
b.
Ex.
11:9;
Acts
7:36

[7:3]
c.
Ex.
4:7;
Deut.
4:34

[7:4]
a.
Ex.
3:19,
20;
10:1;
11:9

[7:4]
b.
Ex.
9:14

[7:4]
c.
Ex.
6:6;
12:12

[7:4]
*
hosts

[7:5]
a.
Ex.
7:17;
8:22;
14:4,
18;
Ps.
9:16

[7:5]
b.
Ex.
9:15

[7:5]
c.

Ex. 3:20; 6:6; 12:51

[7:6] a. Ex. 7:2

[7:7] a. Deut. 29:5; 31:2; 34:7; Acts 7:23, 30

[7:7] b. Num. 33:39

[7:9] a. Ex. 10:1; Is. 7:11; John 2:18;

6:30

[7:9]
b.
Ex.
4:2,
3, 17

[7:10]
a.
Ex.
7:9

[7:10]
b.
Ex.
4:3

[7:11]
a.
Gen.
41:8

[7:11]
b.
Dan.
2:2;
2
Tim.
3:8

[7:11] c. Ex. 7:22; 8:7, 18; 2 Tim. 3:9; Rev. 13:13, 14

[7:11] * *soothsayers*

[7:11] * *secret arts*

[7:14] a. Ex. 8:15; 10:1, 20, 27

[7:15] a. Ex. 2:5;

8:20

[7:15]
b.
Ex.
4:2,
3;
7:10

[7:16]
a.
Ex.
3:13,
18;
4:22

[7:16]
b.
Ex.
3:12,
18;
4:23;
5:1,
3;
8:1

[7:16]
*
worship

[7:17]
a.

Ex. 5:2; 7:5; 10:2; Ps. 9:16; Ezek. 25:17

[7:17] b. Ex. 4:9; 7:20

[7:17] c. Rev. 11:6; 16:4, 6

[7:18] a. Ex. 7:24

[7:18] * *be weary of drinking*

[7:19]
a.
Ex.
8:5,
6,
16;
9:22;
10:12,
21;
14:21,
26

[7:20]
a.
Ex.
17:5

[7:20]
b.
Ps.
78:44;
105:29,
30

[7:21]
a.
Ex.
7:18

[7:22]
a.

Ex.
7:11

[7:22]
b.
Ex.
8:7

[7:22]
c.
Ex.
3:19;
7:3

[7:22]
*
secret
arts

Exodus 8

[8:1]
a.
Ex.
3:12,
18;
4:23;
5:1,
3

[8:2]
a.
Ex.

7:14;
9:2

[8:2]
b.
Rev.
16:13

[8:3]
a. Ps.
105:30

[8:5]
a.
Ex.
7:19

[8:6]
a. Ps.
78:45;
105:30

[8:7]
a.
Ex.
7:11,
22

[8:7]
*

secret arts

[8:8] a. Ex. 8:28; 9:28; 10:17; Num. 21:7; 1 Kin. 13:6

[8:8] b. Ex. 10:8, 24

[8:8] * *Pray to, Make supplication to*

[8:10] a. Ex. 9:14;

15:11; Deut. 4:35, 39; 33:26; 2 Sam. 7:22; 1 Chr. 17:20; Ps. 86:8; Is. 46:9; (Jer. 10:6, 7)

[8:12] a. Ex. 8:30; 9:33; 10:18; 32:11; (James 5:16–18)

[8:15] a. Eccl. 8:11

[8:15] b. Ex. 7:14, 22; 9:34; 1 Sam. 6:6

[8:16] * *gnats*

[8:17] a. Ps. 105:31

[8:18] a. Ex. 7:11, 12; 8:7

[8:18] b. Dan. 5:8; 2 Tim. 3:8, 9

[8:18] * *secret arts*

[8:19] a. Ex. 7:5; 10:7; 1 Sam. 6:3, 9; Ps. 8:3; Luke 11:20

[8:19] b. Ex. 8:15

[8:19] * An act of God

[8:20]

a.
Ex.
7:15;
9:13

[8:20]
b.
Ex.
3:18;
4:23;
5:1,
3;
8:1

[8:22]
a.
Ex.
9:4,
6,
26;
10:23;
11:6,
7;
12:13

[8:22]
b.
Gen.
50:8

[8:22]
c.
Ex.

7:5,
17;
10:2;
14:4

[8:22]
d.
Ex.
9:29

[8:23]
a.
Ex.
4:8

[8:23]
* Lit.
set a
ransom,
Ex.
9:4;
11:7

[8:24]
a. Ps.
78:45;
105:31

[8:26]
a.
Gen.
43:32;

46:34; (Deut. 7:25, 26; 12:31)

[8:26] * Put us to death by stoning

[8:27] a. Ex. 3:18; 5:3

[8:27] b. Ex. 3:12

[8:28] a. Ex. 8:8, 15, 29, 32; 9:28; 1

Kin.
13:6

[8:29]
a.
Ex.
8:8,
15

[8:30]
a.
Ex.
8:12

[8:32]
a.
Ex.
4:21;
8:8,
15;
Ps.
52:2

Exodus 9

[9:1]
a.
Ex.
4:23;
8:1

[9:1]
b.

Ex. 7:16

[9:2] a. Ex. 8:2

[9:3] a. Ex. 7:4; 1 Sam. 5:6; Ps. 39:10; Acts 13:11

[9:4] a. Ex. 8:22

[9:6] a. Ex. 9:19, 20, 25; Ps. 78:48,

[9:7] a. Ex. 7:14; 8:32

[9:9] a. Deut. 28:27; Rev. 16:2

[9:10] a. Deut. 28:27

[9:11] a. (Ex. 8:18, 19; 2 Tim. 3:9)

[9:11] b. Deut. 28:27; Job

2:7;
Rev.
16:1,
2

[9:12]
a.
Ex.
7:13

[9:12]
b.
Ex.
4:21

[9:13]
a.
Ex.
8:20

[9:13]
b.
Ex.
9:1

[9:14]
a.
Ex.
8:10;
Deut.
3:24;
2

Sam. 7:22; 1 Chr. 17:20; Ps. 86:8; Is. 45:5–8; 46:9; Jer. 10:6, 7

[9:15] a. Ex. 3:20; 7:5

[9:15] b. Ex. 5:3

[9:16] a. Ex. 14:17; Prov. 16:4; (Rom. 9:17, 18; 1

Pet. 2:8, 9)

[9:16] b. Ex. 7:4, 5; 10:1; 11:9; 14:17

[9:16] c. 1 Kin. 8:43

[9:20] a. Ex. 1:17; 14:31; (Prov. 13:13)

[9:20] b. Ex. 8:19; 10:7

[9:22] a. Rev. 16:21

[9:23] a. Gen. 19:24; Josh. 10:11; Ps. 18:13; 78:47; 105:32; 148:8; Is. 30:30; Ezek. 38:22; Rev. 8:7

[9:25] a. Ex. 9:19; Ps. 78:47, 48; 105:32, 33

[9:26] a.

Ex. 8:22, 23; 9:4, 6; 10:23; 11:7; 12:13; Is. 32:18, 19

[9:27] a. Ex. 8:8

[9:27] b. Ex. 9:34; 10:16, 17

[9:27] c. 2 Chr. 12:6; Ps. 129:4; 145:17; Lam. 1:18

[9:28] a. Ex. 8:8, 28; 10:17; Acts 8:24

[9:28] b. Ex. 8:25; 10:8, 24

[9:28] * *Pray to, Make supplication to*

[9:28] * Lit. *voices of God* or *sounds of God*

[9:29] a. 1 Kin. 8:22, 38; Ps. 143:6; Is. 1:15

[9:29] b. Ex. 8:22; 19:5; 20:11; Ps. 24:1; 1 Cor. 10:26, 28

[9:30] a. Ex. 8:29; (Is. 26:10)

[9:31] a. Ruth 1:22; 2:23

[9:32]
* Lit.
darkened

[9:33]
a.
Ex.
8:12;
9:29

[9:35]
a.
Ex.
4:21

Exodus 10

[10:1]
a.
Ex.
4:21;
7:14;
9:12;
10:27;
11:10;
14:4;
Josh.
11:20;
John
12:40;
Rom.
9:18

[10:1] b. Ex. 7:4; 9:16

[10:2] a. Ex. 12:26; 13:8, 14; Deut. 4:9; 6:7; 11:19; Ps. 44:1; 78:5; Joel 1:3

[10:2] b. Ex. 7:5, 17; 8:22

[10:3] a. (1 Kin. 21:29; 2 Chr.

34:27); Job 42:6; (James 4:10; 1 Pet. 5:6)

[10:3] b. Ex. 4:23; 8:1; 9:1

[10:4] a. Prov. 30:27; Rev. 9:3

[10:5] a. Ex. 9:32; Joel 1:4; 2:25

[10:6] a.

Ex. 8:3, 21

[10:7] a. Ex. 7:5; 8:19; 9:20; 12:33

[10:7] b. Ex. 23:33; Josh. 23:13; 1 Sam. 18:21; Eccl. 7:26; 1 Cor. 7:35

[10:9] a. Ex. 5:1; 7:16

[10:11]
a.
Ex.
10:28

[10:12]
a.
Ex.
7:19

[10:12]
b.
Ex.
10:5,
15

[10:14]
a.
Deut.
28:38;
Ps.
78:46;
105:34

[10:14]
b.
Joel
1:4,
7;
2:1–
11;
Rev.
9:3

[10:15]
a.
Ex.
10:5

[10:15]
b.
Ps.
105:35

[10:16]
a.
Ex.
8:8

[10:16]
b.
Ex.
9:27

[10:17]
a.
Ex.
8:8,
28;
9:28;
1
Kin.
13:6

[10:17] * *make supplication to*

[10:18] a. Ex. 8:30

[10:19] a. Joel 2:20

[10:20] a. Ex. 4:21; 10:1; 11:10

[10:21] a. Ex. 9:22

[10:21] * Lit. *that one*

may feel the darkness

[10:22] a. Ps. 105:28; Rev. 16:10

[10:22] b. Ex. 3:18

[10:23] a. Ex. 8:22, 23

[10:24] a. Ex. 8:8, 25; 10:8

[10:24] b. Ex.

10:10

[10:25]
* Lit.
into
our
hands

[10:26]
a.
Ex.
10:9

[10:27]
a.
Ex.
4:21;
10:1,
20;
14:4,
8

[10:28]
a.
Ex.
10:11

[10:29]
a.
Ex.
11:8;
Heb.

11:27

Exodus 11

[11:1]
a.
Ex.
12:31,
33,
39

[11:1]
b.
Ex.
6:1;
12:39

[11:2]
a.
Ex.
3:22;
12:35,
36

[11:3]
a.
Ex.
3:21;
12:36;
Ps.
106:46

[11:3]

b. Deut. 34:10–12; 2 Sam. 7:9; Esth. 9:4

[11:4] a. Ex. 12:12, 23, 29

[11:5] a. Ex. 4:23; 12:12, 29; Ps. 78:51; 105:36; 135:8; 136:10; Amos 4:10

[11:6] a. Ex. 12:30; Amos

5:17

[11:6] b. Ex. 10:14

[11:7] a. Ex. 8:22

[11:7] b. Josh. 10:21

[11:7] * *sharpen*

[11:8] a. Ex. 12:31–33

[11:8] b. Ex.

10:29; Heb. 11:27

[11:9] a. Ex. 3:19; 7:4; 10:1

[11:9] b. Ex. 7:3; 9:16

[11:10] a. Ex. 7:3; 9:12; 10:1, 20, 27; Josh. 11:20; Is. 63:17; John 12:40; Rom. 2:5

Exodus 12

[12:2] a. Ex. 13:4; 23:15; 34:18; Deut. 16:1

[12:3] a. Josh. 4:19

[12:5] a. Lev. 22:18–21; 23:12; Mal. 1:8, 14; (Heb. 9:14; 1 Pet. 1:19)

[12:5] * *perfect* or

sound

[12:5] * *a year old*

[12:6] a. Ex. 12:14, 17; Lev. 23:5; Num. 9:1–3, 11; 28:16; Deut. 16:1, 4, 6

[12:8] a. Ex. 34:25; Num. 9:12

[12:8] b. Deut.

16:7

[12:8] c. Deut. 16:3, 4; 1 Cor. 5:8

[12:9] a. Deut. 16:7

[12:10] a. Ex. 16:19; 23:18; 34:25

[12:11] a. Ex. 12:13, 21, 27, 43

[12:11] *

Made ready to travel

[12:12] a. Ex. 11:4, 5

[12:12] b. Num. 33:4

[12:12] c. Ex. 6:2

[12:14] a. Ex. 13:9

[12:14] b. Lev. 23:4, 5; 2 Kin. 23:21

[12:14] c. Ex. 12:17, 24; 13:10

[12:15] a. Ex. 13:6, 7; 23:15; 34:18; Lev. 23:6; Num. 28:17; Deut. 16:3, 8

[12:15] b. Gen. 17:14; Ex. 12:19; Num. 9:13

[12:15] *

soul

[12:15]
* Put
to
death

[12:16]
a.
Lev.
23:2,
7, 8;
Num.
28:18,
25

[12:17]
a.
Ex.
12:14;
13:3,
10

[12:17]
b.
Num.
33:1

[12:17]
*
hosts

[12:18] a. Ex. 12:2; Lev. 23:5–8; Num. 28:16–25

[12:19] a. Ex. 12:15; 23:15; 34:18

[12:21] a. (Heb. 11:28)

[12:21] b. Ex. 3:16

[12:21] c. Ex.

12:3; Num. 9:4; Josh. 5:10; 2 Kin. 23:21; Ezra 6:20; Mark 14:12–16

[12:22] a. Heb. 11:28

[12:22] b. Ex. 12:7

[12:23] a. Ex. 11:4; 12:12, 13

[12:23] b.

Ex. 24:8

[12:23] c. Ezek. 9:6; Rev. 7:3; 9:4

[12:23] d. 1 Cor. 10:10; Heb. 11:28

[12:23] * Crosspiece at top of door

[12:24] a. Ex. 12:14, 17; 13:5, 10

[12:25] a. Ex. 3:8, 17

[12:26] a. Ex. 10:2; 13:8, 14, 15; Deut. 32:7; Josh. 4:6; Ps. 78:6

[12:27] a. Ex. 12:11

[12:27] b. Ex. 4:31

[12:28]

a.
(Heb.
11:28)

[12:29]
a.
Ex.
11:4,
5

[12:29]
b.
Num.
8:17;
33:4;
Ps.
135:8;
136:10

[12:29]
c.
Ex.
9:6

[12:29]
* *in
prison*

[12:31]
a.
Ex.
10:28,

29

[12:31] b. Ex. 8:25; 11:1

[12:31] c. Ex. 10:9

[12:32] a. Ex. 10:9, 26

[12:33] a. Ex. 10:7

[12:33] b. Ex. 11:8; Ps. 105:38

[12:35]
a.
Ex.
3:21,
22;
11:2,
3;
Ps.
105:37

[12:36]
a.
Ex.
3:21

[12:36]
b.
Gen.
15:14

[12:37]
a.
Num.
33:3,
5

[12:37]
b.
Gen.
47:11;
Ex.
1:11;
Num.

33:3,
4

[12:37]
c.
Gen.
12:2;
Ex.
38:26;
Num.
1:46;
2:32;
11:21;
26:51

[12:38]
a.
Num.
11:4

[12:38]
b.
Ex.
17:3;
Num.
20:19;
32:1;
Deut.
3:19

[12:39]
a.
Ex.

6:1; 11:1; 12:31–33

[12:40] a. Gen. 15:13, 16; Acts 7:6; Gal. 3:17

[12:40] * Length of the stay

[12:40] * Sam., LXX *Egypt and Canaan*

[12:41] a. Ex.

3:8,
10;
6:6;
7:4

[12:42]
a.
Ex.
13:10;
34:18;
Deut.
16:1,
6

[12:42]
*
night
of
vigil

[12:43]
a.
Ex.
12:11;
Num.
9:14

[12:44]
a.
1Gen.
17:12,
13;
Lev.

22:11

[12:45]
a.
Lev.
22:10

[12:46]
a.
Num.
9:12;
Ps.
34:20;
(John
19:33,
36)

[12:47]
a.
Ex.
12:6;
Num.
9:13,
14

[12:48]
a.
Num.
9:14

[12:48]
* As

a resident alien

[12:49] a. Lev. 24:22; Num. 15:15, 16; (Gal. 3:28)

[12:51] a. Ex. 12:41; 20:2

[12:51] b. Ex. 6:26

Exodus 13

[13:2] a. Ex. 13:12, 13, 15; 22:29;

Lev. 27:26; Num. 3:13; 8:16; 18:15; Deut. 15:19; Luke 2:23

[13:2] * *Set apart*

[13:3] a. Ex. 12:42; Deut. 16:3

[13:3] b. Ex. 3:20; 6:1

[13:3] c. Ex. 12:8, 19

[13:3]
* Lit.
slaves

[13:4]
a.
Ex.
12:2;
23:15;
34:18;
Deut.
16:1

[13:5]
a.
Ex.
3:8,
17;
Josh.
24:11

[13:5]
b.
Gen.
17:8;
Deut.
30:5

[13:5]
c.
Ex.

6:8

[13:5]
d.
Ex.
12:25,
26

[13:6]
a.
Ex.
12:15–
20

[13:7]
a.
Ex.
12:19

[13:8]
a.
Ex.
10:2;
12:26;
13:14;
Ps.
44:1

[13:9]
a.
Ex.
12:14;

13:16;
31:13;
Deut.
6:8;
11:18;
Matt.
23:5

[13:10]
a.
Ex.
12:14,
24

[13:10]
*
regulation

[13:11]
a.
Ex.
13:5

[13:11]
b.
Num.
21:3

[13:12]
a.
Ex.
13:1,

2; 22:29; 34:19; Lev. 27:26; Num. 18:15; Ezek. 44:30; Luke 2:23

[13:12] * Lit. *cause to pass over*

[13:13] a. Ex. 34:20; Num. 18:15

[13:13] b. Num. 3:46, 47; 18:15, 16

[13:14] a. Ex. 10:2; 12:26, 27; 13:8; Deut. 6:20; Josh. 4:6, 21

[13:14] b. Ex. 13:3, 9

[13:15] a. Ex. 12:29

[13:16] a. Ex. 13:9; Deut. 6:8

[13:17] a.

Ex. 14:11; Num. 14:1–4

[13:17] b. Deut. 17:16

[13:18] a. Ex. 14:2; Num. 33:6

[13:19] a. Gen. 50:24, 25; Josh. 24:32

[13:19] b. Ex. 1:6; Deut. 33:13–17

[13:19] c. Ex. 4:31

[13:19] * *give attention to*

[13:20] a. Num. 33:6–8

[13:20] b. Ex. 12:37

[13:21] a. Ex. 14:19, 24; 33:9, 10; Num. 9:15;

14:14; Deut. 1:33; Neh. 9:12; Ps. 78:14; 99:7; 105:39; (Is. 4:5); 1 Cor. 10:1

Exodus 14

[14:2] a. Ex. 13:18

[14:2] b. Num. 33:7

[14:2] c. Jer. 44:1

[14:3] a. Ps.

71:11

[14:4]
a.
Ex.
4:21;
7:3;
14:17

[14:4]
b.
Ex.
9:16;
14:17,
18,
23;
Rom.
9:17,
22,
23

[14:4]
c.
Ex.
7:5;
14:25

[14:5]
a. Ps.
105:25

[14:6]

*
harnessed

[14:7]
a.
Ex.
15:4

[14:8]
a.
Ex.
14:4

[14:8]
b.
Ex.
6:1;
13:9;
Num.
33:3;
Acts
13:17

[14:9]
a.
Ex.
15:9;
Josh.
24:6

[14:10]
a.

Josh.
24:7;
Neh.
9:9;
Ps.
34:17;
107:6

[14:11]
a.
Ex.
5:21;
15:24;
16:2;
17:3;
Num.
14:2,
3;
20:3;
Ps.
106:7,
8

[14:12]
a.
Ex.
5:21;
6:9

[14:13]
a.
Gen.
15:1;
46:3;
Ex.

20:20;
2
Chr.
20:15,
17;
Is.
41:10,
13,
14

[14:13]
b.
Ps.
46:10,
11

[14:13]
c.
Ex.
14:30;
15:2

[14:13]
d.
Deut.
28:68

[14:13]
*
deliverance

[14:14]

a. Ex. 14:25; 15:3; Deut. 1:30; 3:22; Josh. 10:14, 42; 23:2; 2 Chr. 20:29; Neh. 4:20; Is. 31:4

[14:14] b. (Is. 30:15)

[14:14] * Lit. *be quiet*

[14:16] a. Ex. 4:17, 20; 7:19;

14:21, 26; 17:5, 6, 9; Num. 20:8, 9, 11; Is. 10:26

[14:17] a. Ex. 14:8

[14:17] b. Ex. 14:4

[14:19] a. Ex. 13:21, 22; (Is. 63:9)

[14:21] a. Ps. 66:6; 106:9;

136:13, 14

[14:21] b. Ex. 15:8; Josh. 3:16; 4:23; Neh. 9:11; Ps. 74:13; 78:13; 114:3, 5; Is. 63:12, 13

[14:22] a. Ex. 15:19; Josh. 3:17; 4:22; Neh. 9:11; Ps. 66:6; 78:13; Is. 63:13; 1 Cor. 10:1;

Heb.
11:29

[14:22]
b.
Ex.
14:29;
15:8;
Hab.
3:10

[14:24]
a.
Judg.
7:19

[14:24]
b.
Ex.
13:21

[14:24]
*
confused

[14:25]
a.
Ex.
7:5;
14:4,
14,
18

[14:25] * Sam., LXX, Syr. *bound*

[14:27] a. Josh. 4:18

[14:27] b. Ex. 15:1, 7; Deut. 11:4; Neh. 9:11; Ps. 78:53; Heb. 11:29

[14:27] * Lit. *shook off*

[14:28] a. Ps. 78:53; 106:11

[14:29] a. Ex. 14:22; Ps. 66:6; 78:52, 53; Is. 11:15

[14:30] a. Ex. 14:13; Ps. 106:8, 10; Is. 63:8, 11

[14:30] b. Ps. 58:10; 59:10

[14:30]
*
delivered

[14:31]
a.
Ex.
4:31;
19:9;
Ps.
106:12;
John
2:11;
11:45

[14:31]
* Lit.
hand
with
which
the
LORD
worked

Exodus 15

[15:1]
a. Ps.
106:12;
Rev.
15:3

[15:1]
b. Is.

12:1–6

[15:2] a. Ps. 18:1, 2; Is. 12:2; Hab. 3:18, 19

[15:2] b. Gen. 28:21, 22

[15:2] c. Ex. 3:6, 15, 16

[15:2] d. 2 Sam. 22:47; Ps. 99:5; Is. 25:1

[15:3]
a.
Ex.
14:14;
Rev.
19:11

[15:3]
b.
Ex.
3:15;
6:2,
3, 7,
8;
Ps.
24:8;
83:18

[15:4]
a.
Ex.
14:28

[15:4]
b.
Ex.
14:7

[15:5]
a.
Ex.

15:10; Neh. 9:11

[15:6] a. Ex. 3:20; Ps. 17:7; 118:15

[15:7] a. Deut. 33:26

[15:7] b. Ps. 78:49, 50

[15:7] c. Ps. 59:13

[15:7] d. Deut. 4:24; Is.

5:24; Heb. 12:29

[15:8] a. Ex. 14:21, 22, 29

[15:8] b. Ps. 78:13

[15:8] * *became firm*

[15:9] a. Judg. 5:30

[15:9] b. Is. 53:12

[15:11] a. Ex. 8:10; 9:14; Deut. 3:24; 2 Sam. 7:22; 1 Kin. 8:23; Ps. 71:19; 86:8; Mic. 7:18

[15:11] b. Ps. 68:35; Is. 6:3; Rev. 4:8

[15:11] c. 1 Chr. 16:25

[15:11] d.

Ex. 3:20; Ps. 77:11, 14

[15:11] * *mighty ones*

[15:13] a. Neh. 9:12; (Ps. 77:20)

[15:13] b. Ex. 15:17; Deut. 12:5; Ps. 78:54

[15:14] a. Josh. 2:9

[15:14]
b.
Ps.
48:6

[15:14]
*
Anguish

[15:15]
a.
Gen.
36:15,
40

[15:15]
b.
Deut.
2:4

[15:15]
c.
Num.
22:3,
4

[15:15]
d.
Josh.
5:1

[15:15] e. Josh. 2:9–11, 24

[15:16] a. Ex. 23:27; Deut. 2:25; Josh. 2:9

[15:16] b. 1 Sam. 25:37

[15:16] c. Ex. 15:13; Ps. 74:2; Is. 43:1; Jer. 31:11; (Titus 2:14); 2 Pet.

2:1

[15:17] a. Ps. 44:2; 80:8, 15

[15:17] b. Ps. 2:6; 78:54, 68

[15:17] c. Ps. 68:16; 76:2; 132:13, 14

[15:18] a. 2 Sam. 7:16; Ps. 10:16; 29:10; Is. 57:15

[15:19] a. Ex. 14:23

[15:19] b. Ex. 14:28

[15:20] a. Judg. 4:4

[15:20] b. Ex. 2:4; Num. 26:59; 1 Chr. 6:3; Mic. 6:4

[15:20] c. 1 Sam. 18:6; 1 Chr.

15:16; Ps. 68:25; 81:2; 149:3; Jer. 31:4

[15:20] d. Judg. 11:34; 21:21; 2 Sam. 6:16; Ps. 30:11; 150:4

[15:21] a. 1 Sam. 18:7

[15:21] b. Ex. 15:1

[15:22] a. Gen.

16:7;
20:1;
25:18;
Num.
33:8

[15:22]
b.
Ex.
17:1;
Num.
20:2

[15:23]
a.
Num.
33:8;
Ruth
1:20

[15:23]
* Lit.
Bitter

[15:24]
a.
Ex.
14:11;
16:2;
Ps.
106:13

[15:25]
a. 2
Kin.
2:21

[15:25]
b.
Josh.
24:25

[15:25]
c.
Ex.
16:4;
Deut.
8:2,
16;
Judg.
2:22;
3:1,
4;
Ps.
66:10

[15:25]
*
regulation

[15:26]
a.
Ex.
19:5,
6;

Deut. 7:12, 15

[15:26] b. Deut. 28:27, 58, 60

[15:26] c. Ex. 23:25; Deut. 32:39; Ps. 41:3, 4; 103:3; 147:3

[15:27] a. Num. 33:9

Exodus 16

[16:1] a. Num. 33:10,

11; Ezek. 30:15

[16:1] b. Ex. 12:6, 51; 19:1

[16:2] a. Ex. 14:11; 15:24; Ps. 106:25; 1 Cor. 10:10

[16:3] a. Ex. 17:3; Num. 14:2, 3; 20:3; Lam. 4:9

[16:3] b. Num. 11:4, 5

[16:4] a. Neh. 9:15; Ps. 78:23–25; 105:40; (John 6:31–35); 1 Cor. 10:3

[16:4] b. Ex. 15:25; Deut. 8:2, 16

[16:4] c. Judg. 2:22

[16:4]
* Lit. *the portion of a day in its day*

[16:5]
a. Ex. 16:22, 29; Lev. 25:21

[16:6]
a. Ex. 6:7

[16:7]
a. Ex. 16:10, 12; Is. 35:2; 40:5; John 11:4, 40

[16:7] b. Num. 14:27; 17:5

[16:7] c. Num. 16:11

[16:8] a. 1 Sam. 8:7; Luke 10:16; (Rom. 13:2); 1 Thess. 4:8

[16:9] a. Num. 16:16

[16:10] a. Ex. 13:21; 16:7;

Num. 16:19; 1 Kin. 8:10

[16:12] a. Ex. 16:8; Num. 14:27

[16:12] b. Ex. 16:6

[16:12] c. Ex. 16:7; 1 Kin. 20:28; Joel 3:17

[16:13] a. Num. 11:31; Ps.

78:27–
29;
105:40

[16:13]
b.
Num.
11:9

[16:14]
a.
Ex.
16:31;
Num.
11:7,
8;
Deut.
8:3;
Neh.
9:15;
Ps.
78:24;
105:40

[16:14]
b.
Ps.
147:16

[16:15]
a.
Ex.
16:4;

Neh. 9:15; Ps. 78:24; (John 6:31, 49, 58); 1 Cor. 10:3

[16:16] a. Ex. 12:4

[16:16] b. Ex. 16:32, 36

[16:18] a. 2 Cor. 8:15

[16:19] a. Ex. 12:10; 16:23;

23:18

[16:20] * *listen to*

[16:23] a. Gen. 2:3; Ex. 20:8–11; 23:12; 31:15; 35:2; Lev. 23:3; Neh. 9:13, 14

[16:24] a. Ex. 16:20

[16:26] a. Ex. 20:9, 10

[16:28] a. 2 Kin. 17:14; Ps. 78:10; 106:13

[16:31] a. Num. 11:7–9; Deut. 8:3, 16

[16:31] * Lit. *What?* Ex. 16:15

[16:33] a. Heb. 9:4; Rev. 2:17

[16:34]

a.
Ex.
25:16,
21;
27:21;
40:20;
Num.
17:10

[16:35]
a.
Deut.
8:3,
16

[16:35]
b.
Num.
33:38;
John
6:31,
49

[16:35]
c.
Josh.
5:12;
Neh.
9:20,
21

Exodus 17

[17:1]

a.
Ex.
16:1

[17:1]
b.
Num.
33:11–
15

[17:1]
c.
Ex.
15:22;
Num.
20:2

[17:2]
a.
Ex.
14:11;
Num.
20:2,
3, 13

[17:2]
b.
(Deut.
6:16);
Ps.
78:18,
41;
(Matt.

4:7); 1 Cor. 10:9

[17:3] a. Ex. 16:2, 3

[17:3] b. Ex. 12:38

[17:4] a. Ex. 14:15

[17:4] b. John 8:59; 10:31

[17:4] * Put me to death

by stoning

[17:5] a. Ezek. 2:6

[17:5] b. Num. 20:8

[17:6] a. Num. 20:10, 11; Deut. 8:15; Neh. 9:15; Ps. 78:15; 105:41; 114:8; (1 Cor. 10:4)

[17:7] a. Num.

20:13,
24;
27:14;
Ps.
81:7

[17:7]
* Lit.
Tempted

[17:7]
* Lit.
Contention

[17:7]
*
tested

[17:8]
a.
Gen.
36:12;
Num.
24:20;
Deut.
25:17–19; 1
Sam.
15:2

[17:9]
a.

Ex. 4:20

[17:11] a. (James 5:16)

[17:12] * Weary of being held up

[17:14] a. Ex. 24:4; 34:27; Num. 33:2

[17:14] b. Deut. 25:19; 1 Sam. 15:3; 2 Sam.

1:1; 1 Chr. 4:43

[17:15] * Heb. *YHWH Nissi*

[17:16] a. Gen. 22:14–16

[17:16] * Lit. *a hand is upon the throne of the LORD*

Exodus 18

[18:1] a. Ex.

2:16,
18;
3:1

[18:1]
b.
(Ps.
106:2,
8)

[18:2]
a.
Ex.
2:21;
4:20–
26

[18:3]
a.
Ex.
2:20;
4:20;
Acts
7:29

[18:3]
b.
Ex.
2:22

[18:3]
*
Lit.

Stranger There

[18:3] * *sojourner,* temporary resident

[18:4] a. Gen. 49:25

[18:4] * Lit. *My God Is Help*

[18:5] a. Ex. 3:1, 12; 4:27; 24:13

[18:7] a.

Gen. 18:2

[18:7] b. Gen. 29:13; Ex. 4:27

[18:8] a. Ex. 15:6, 16; Ps. 81:7

[18:9] a. (Is. 63:7–14)

[18:10] a. Gen. 14:20; 2 Sam. 18:28; 1 Kin.

8:56;
Ps.
68:19,
20

[18:11]
a.
Ex.
12:12;
15:11;
2
Chr.
2:5;
Ps.
95:3;
97:9;
135:5

[18:11]
b.
Ex.
1:10,
16,
22;
5:2,
7

[18:11]
c.
Luke
1:51

[18:11]

* *acted presumptuously*

[18:12] a. Ex. 24:5

[18:12] b. Gen. 31:54; Deut. 12:7

[18:12] * So with MT, LXX; Syr., Tg., Vg. *offered*

[18:13] a. Deut. 33:4, 5; Matt.

23:2

[18:14] * Sit as judge

[18:15] a. Lev. 24:12; Num. 9:6, 8; 27:5; Deut. 17:8–13

[18:16] a. Ex. 24:14; Deut. 19:17

[18:16] * *dispute*

[18:18]

a.
Num.
11:14,
17;
Deut.
1:12

[18:19]
a.
Ex.
4:16;
20:19

[18:19]
b.
Num.
9:8;
27:5

[18:19]
*
advice

[18:20]
a.
Deut.
5:1

[18:20]
b.
Deut.
1:18

[18:21] a. Ex. 18:24, 25; Deut. 1:13, 15; 2 Chr. 19:5–10; Ps. 15:1–5; Acts 6:3

[18:21] b. Gen. 42:18; 2 Sam. 23:3

[18:21] c. Ezek. 18:8

[18:21] d.

Deut. 16:19

[18:22] a. Lev. 24:11; Deut. 1:17

[18:22] b. Num. 11:17

[18:23] a. Ex. 16:29

[18:25] a. Ex. 18:21; Deut. 1:15

[18:26] a. Job 29:16

[18:26]
*
difficult matters

[18:27]
a.
Num. 10:29, 30

Exodus 19

[19:1]
a.
Num. 33:15

[19:2]
a.
Ex. 17:1

[19:2]
b.
Ex. 3:1, 12; 18:5

[19:3]
a.
Acts
7:38

[19:3]
b.
Ex.
3:4

[19:4]
a.
Deut.
29:2

[19:4]
b.
Deut.
32:11;
Is.
63:9;
Rev.
12:14

[19:4]
*
sustained

[19:5]
a.
Ex.
15:26;

23:22

[19:5] b. Deut. 5:2; Ps. 78:10

[19:5] c. Deut. 4:20; 7:6; 14:2; 26:18; 1 Kin. 8:53; Ps. 135:4; Titus 2:14; 1 Pet. 2:9

[19:5] d. Ex. 9:29; Deut. 10:14; Job 41:11;

Ps. 50:12; 1 Cor. 10:26

[19:6] a. Deut. 33:2–4; (1 Pet. 2:5, 9; Rev. 1:6; 5:10)

[19:6] b. Deut. 7:6; 14:21; 26:19; Is. 62:12; (1 Cor. 3:17)

[19:7] a. Ex. 4:29,

30

[19:7]
*
set

[19:8]
a.
Ex.
4:31;
24:3,
7;
Deut.
5:27;
26:17

[19:9]
a.
Ex.
19:16;
20:21;
24:15;
Deut.
4:11;
Ps.
99:7;
Matt.
17:5

[19:9]
b.
Deut.
4:12,

36; John 12:29, 30

[19:10] a. Lev. 11:44, 45; (Heb. 10:22)

[19:12] a. Ex. 34:3; Heb. 12:20

[19:15] a. (1 Cor. 7:5)

[19:16] a. Heb. 12:18, 19

[19:16] b. Heb. 12:21

[19:17] a. Deut. 4:10

[19:18] a. Deut. 4:11; Judg. 5:5; Ps. 104:32; 144:5

[19:18] b. Ex. 3:2; 24:17; Deut. 5:4; 2 Chr. 7:1–3; Heb. 12:18

[19:18] c. Gen. 15:17; 19:28; Rev. 15:8

[19:18] d. Ps. 68:8; 1 Kin. 19:12; Jer. 4:24; (Heb. 12:26)

[19:18] * LXX *all the people*

[19:19] a. Heb. 12:21

[19:19] b. Neh.

9:13;
Ps.
81:7

[19:21]
a.
1
Sam.
6:19

[19:22]
a.
Ex.
19:24;
24:5

[19:22]
b.
Lev.
10:3;
21:6–
8

[19:122]
c.
2
Sam.
6:7,
8

[19:23]
a.

Ex. 19:12

Exodus 20

[20:1] a. Deut. 5:22

[20:2] a. Hos. 13:4

[20:2] b. Ex. 13:3; Deut. 7:8

[20:2] * *slaves*

[20:3] a. Deut. 6:14; 2 Kin.

17:35;
Jer.
25:6;
35:15

[20:4]
a.
Lev.
19:4;
26:1;
Deut.
4:15–19;
27:15

[20:5]
a.
Is.
44:15,
19

[20:5]
b.
Ex.
34:14;
Deut.
4:24;
Josh.
24:19;
Nah.
1:2

[20:5]
c.
Num.

14:18, 33; Deut. 5:9, 10; 1 Kin. 21:291; Ps. 79:8; Jer. 32:18

[20:5] * *worship*

[20:5] * *punishing*

[20:6] a. Deut. 7:9; Rom. 11:28

[20:7] a. Lev. 19:12; Deut.

6:13;
10:20;
(Matt.
5:33–
37)

[20:7]
b.
Mic.
6:11

[20:8]
a.
Ex.
23:12;
31:13–
16;
Lev.
26:2;
Deut.
5:12

[20:9]
a.
Ex.
34:21;
35:2,
3;
Lev.
23:3;
Deut.
5:13;
Luke
13:14

[20:10] a. Gen. 2:2, 3

[20:10] b. Neh. 13:16–19

[20:11] a. Gen. 2:2, 3; Ex. 31:17

[20:12] a. Lev. 19:3; Deut. 27:16; Matt. 15:4; 19:19; Mark 7:10; 10:19; Luke

18:20; Eph. 6:2

[20:12] b. Deut. 5:16, 33; 6:2; 11:8, 9

[20:13] a. (Matt. 5:21, 22); 19:18; Mark 10:19; Luke 18:20; Rom. 13:9; (1 John 3:15)

[20:14] a. Matt. 5:27; Mark 10:19;

Luke
18:20;
Rom.
13:9;
James
2:11

[20:14]
b.
Lev.
20:10;
Deut.
5:18

[20:15]
a.
Ex.
21:16;
Lev.
19:11,
13;
Matt.
19:18;
Rom.
13:9

[20:16]
a.
Ex.
23:1,
7;
Deut.
5:20;
Matt.
19:18

[20:17] a. (Luke 12:15); Rom. 7:7; 13:9; (Eph. 5:3, 5); Heb. 13:5

[20:17] b. 2 Sam. 11:2; (Matt. 5:28)

[20:18] a. Heb. 12:18, 19

[20:18] b. Rev. 1:10, 12

[20:18]
c.
Ex.
19:16,
18

[20:19]
a.
Gal.
3:19;
Heb.
12:19

[20:19]
b.
Deut.
5:5,
23–
27

[20:20]
a.
Ex.
14:13;
(Is.
41:10,
13)

[20:20]
b.
Ex.

15:25;
(Deut.
13:3)

[20:20]
c.
Deut.
4:10;
6:24;
Prov.
3:7;
16:6;
Is.
8:13

[20:21]
a.
Ex.
19:16;
Deut.
5:22

[20:22]
a.
Deut.
4:36;
5:24,
26;
Neh.
9:13

[20:23]
a.

Ex. 32:1, 2, 4; Deut. 29:17

[20:24] a. Ex. 20:25; 27:1–8

[20:24] b. Ex. 24:5; Lev. 1:2

[20:24] c. Deut. 12:5; 16:6, 11; 1 Kin. 9:3; 2 Chr. 6:6

[20:24] d. Gen. 12:2

[20:24] * *cause My name to be remembered*

[20:25] a. Deut. 27:5

[20:25] b. Josh. 8:30, 31

[20:26] a. Ex. 28:42, 43

Exodus 21

[21:1] a. Ex. 24:3, 4; Deut. 4:14; 6:1

[21:1] * *ordinances*

[21:2] a. Lev. 25:39–43; Deut. 15:12–18; Jer. 34:14

[21:5] a. Deut. 15:16, 17

[21:6]

a. Ex. 12:12; 22:8, 9

[21:7] a. Neh. 5:5

[21:8] * Lit. *is evil in the eyes of*

[21:10] a. (1 Cor. 7:3, 5)

[21:12] a. Gen. 9:6; Lev.

24:17; Num. 35:30; (Matt. 26:52)

[21:13] a. Deut. 19:4, 5

[21:13] b. 1 Sam. 24:4, 10, 18

[21:13] c. Num. 35:11; Deut. 19:3; Josh. 20:2

[21:14] a. Deut. 19:11,

12;
(Heb.
10:26)

[21:14]
b.
1
Kin.
2:28–
34

[21:16]
a.
Deut.
24:7

[21:16]
b.
Gen.
37:28

[21:16]
c.
Ex.
22:4

[21:17]
a.
Lev.
20:9;
Prov.
20:20;

Matt. 15:4; Mark 7:10

[21:19] a. 2 Sam. 3:29

[21:19] * *exempt from punishment*

[21:21] a. Lev. 25:44–46

[21:22] a. Ex. 18:21, 22; 21:30; Deut. 22:18

[21:22]

*
struggle

[21:22]
*
Lit.
her
children
come
out

[21:24]
a.
Lev.
24:20;
Deut.
19:21;
(Matt.
5:38–
44;
1
Pet.
2:19–
21)

[21:28]
a.
Gen.
9:5

[21:28]
*
exempt

from punishment

[21:29] * *was inclined*

[21:30] a. Ex. 21:22; Num. 35:31

[21:32] a. Zech. 11:12, 13; Matt. 26:15; 27:3, 9

[21:32] b. Ex. 21:28

[22:1] a. 2 Sam. 12:6; Prov. 6:31; Luke 19:8

[22:2] a. Job 24:16; Matt. 6:19; 24:43; 1 Pet. 4:15

[22:2] b. Num. 35:27

[22:3] a. Ex. 21:2; Matt. 18:25

[22:3] * Sold as a slave

[22:4] a. Ex. 21:16

[22:4] b. Prov. 6:31

[22:7] a. Lev. 6:1–7

[22:7] b. Ex. 22:4

[22:8] a. Ex. 21:6,

22; 22:28; Deut. 17:8, 9; 19:17

[22:9] a. Deut. 25:1; 2 Chr. 19:10

[22:11] a. Heb. 6:16

[22:12] a. Gen. 31:39

[22:13] a. Gen. 31:39

[22:16] a.

Deut. 22:28, 29

[22:17] a. Gen. 34:12; 1 Sam. 18:25

[22:18] a. Lev. 19:31; 20:6, 27; Deut. 18:10, 11; 1 Sam. 28:3–10; Jer. 27:9, 10

[22:19] a. Lev. 18:23; 20:15, 16;

Deut.
27:21

[22:20]
a.
Ex.
32:8;
34:15;
Lev.
17:7;
Num.
25:2;
Deut.
17:2,
3,
5;
1
Kin.
18:40;
2
Kin.
10:25

[22:21]
a.
Ex.
23:9;
Deut.
10:19;
Zech.
7:10

[22:21]
*
sojourner

[22:22]
a.
Deut.
24:17,
18;
Prov.
23:10,
11;
Jer.
7:6,
7;
(James
1:27)

[22:231a>]
a.
(Luke
18:7)

[22:23]
b.
Deut.
10:17,
18;
Ps.
18:6

[22:24]
a.
Ps.
69:24

[22:24]
b.
Ps.
109:9

[22:25]
a.
Lev.
25:35–
37

[22:25]
b.
Deut.
23:19,
20;
Neh.
5:1–
13;
Ps.
15:5;
Ezek.
18:8

[22:26]
a.
Deut.
24:6,
10–
13;
Job
24:3;
Prov.
20:16;
Amos

2:8

[22:27] a. Ex. 34:6, 7

[22:28] a. Eccl. 10:20

[22:28] b. Acts 23:5

[22:29] a. Ex. 23:16, 19; Deut. 26:2–11; Prov. 3:9

[22:29] b. Ex.

13:2,
12,
15

[22:30]
a.
Deut.
15:19

[22:30]
b.
Lev.
22:27

[22:31]
a.
Ex.
19:6;
Lev.
11:44;
19:2

[22:31]
b.
Lev.
7:24;
17:15;
Ezek.
4:14

Exodus
23

[23:1] a. Ex. 20:16; Lev. 19:11; Deut. 5:20; Ps. 101:5; (Prov. 10:18)

[23:1] b. Deut. 19:16–21; Ps. 35:11; (Prov. 19:5); Acts 6:11

[23:2] a. Gen. 7:1

[23:2] b. Lev. 19:15

[23:3]
a.
Ex.
23:6;
Lev.
19:15;
Deut.
1:17;
16:19

[23:4]
a.
(Rom.
12:20)

[23:5]
a.
Deut.
22:4

[23:6]
a.
Eccl.
5:8

[23:7]
a.
Ex.
20:16;
Ps.
119:29;

Eph. 4:25

[23:7] b. Matt. 27:4

[23:7] c. Ex. 34:7; Deut. 25:1; Rom. 1:18

[23:8] a. Deut. 10:17; 16:19; Prov. 15:27; 17:8, 23; Is. 5:22, 23

[23:8] b. Ex.

22:21; Lev. 19:33; Deut. 24:17; 27:19

[23:9] * *sojourner*

[23:10] a. Lev. 25:1–7

[23:11] * *olive yards*

[23:12] a. Luke 13:14

[23:13] a. Deut. 4:9, 23; 1 Tim.

4:16

[23:13]
b.
Josh.
23:7;
Ps.
16:4;
Hos.
2:17

[23:14]
a.
Ex.
23:17;
34:22–24;
Deut.
16:16

[23:15]
a.
Ex.
12:14–20;
Lev.
23:6–8;
Num.
28:16–25

[23:15]

b.
Ex.
22:29;
34:20

[23:16]
a.
Ex.
34:22;
Lev.
23:10;
Num.
28:26

[23:16]
b.
Deut.
16:13

[23:17]
a.
Ex.
23:14;
34:23;
Deut.
16:16

[23:17]
*
Heb.
YHWH,
usually
translated

LORD

[23:18]
a.
Ex.
34:25;
Lev.
2:11

[23:18]
b.
Ex.
12:101font>;
Lev.
7:15;
Deut.
16:4

[23:18]
*
feast

[23:19]
a.
Ex.
22:29;
34:26;
Deut.
26:2,
10;
Neh.
10:35;
Prov.

3:9

[23:19] b. Deut. 14:21

[23:20] a. Ex. 3:2; 13:15; 14:19; Josh. 5:14

[23:21] a. Num. 14:11; Deut. 9:7; Ps. 78:40, 56

[23:21] b. Deut. 18:19; 1 John 5:16

[23:21]
c. Is.
9:6;
Jer.
23:6

[23:22]
a.
Gen.
12:3;
Num.
24:9;
Deut.
30:7;
Jer.
30:20

[23:23]
a.
Ex.
23:20

[23:23]
b.
Josh.
24:8,
11

[23:23]
*
annihilate

them

[23:24] a. Ex. 20:5; 23:13, 33

[23:24] b. Deut. 12:30, 31

[23:24] c. Ex. 34:13; Num. 33:52; Deut. 7:5; 12:3; 2 Kin. 18:4

[23:25] a. Deut. 6:13; (Matt.

4:10)

[23:25] b. Deut. 28:5

[23:25] c. Ex. 15:26; Deut. 7:15

[23:26] a. Deut. 7:14; 28:4; Mal. 3:11

[23:26] b. 1 Chr. 23:1

[23:27] a. Gen. 35:5; Ex.

15:16;
Deut.
2:25;
Josh.
2:9

[23:27]
b.
Deut.
7:23

[23:28]
a.
Deut.
7:20;
Josh.
24:12

[23:29]
a.
Deut.
7:22

[23:31]
a.
Gen.
15:18;
Deut.
1:7,
8;
11:24;
1
Kin.

4:21, 24

[23:31] b. Josh. 21:44

[23:31] * *boundaries*

[23:31] * Heb. *Nahar,* the Euphrates

[23:32] a. Ex. 34:12, 15; Deut. 7:2

[23:32] * *treaty*

[23:33] a. Ex. 34:12; Deut. 12:30; Josh. 23:13; Judg. 2:3; 1 Sam. 18:21; Ps. 106:36

Exodus 24

[24:1] a. Ex. 6:23; 28:1; Lev. 10:1, 2

[24:1] b. Ex. 1:5; Num. 11:16

[24:3] a.

Ex.
19:8;
24:7;
Deut.
5:27;
(Gal.
3:19)

[24:3]
*
ordinances

[24:4]
a.
Ex.
17:14;
34:27;
Deut.
31:9

[24:4]
b.
Gen.
28:18

[24:5]
a.
Ex.
18:12;
20:24

[24:6]

a. Ex. 29:16, 20; Heb. 9:18

[24:7] a. Ex. 24:4; Heb. 9:19

[24:8] a. Zech. 9:11; (Matt. 26:28; Mark 14:24; Luke 22:20; 1 Cor. 11:25; Heb. 9:19, 20; 13:20; 1 Pet. 1:2)

[24:10] a.

Ex. 24:11; Num. 12:8; Is. 6:5; (John 1:18; 6:46); 1 John 4:12

[24:10] b. Ezek. 1:26; Rev. 4:3

[24:10] c. Matt. 17:2

[24:10] * Lit. *substance of heaven*

[24:11] a.

Ex. 19:21

[24:11] b. Gen. 32:30; Judg. 13:22

[24:11] c. 1 Cor. 10:18

[24:11] * *stretch out His*

[24:12] a. Ex. 24:2, 15

[24:12] b. Ex. 31:18; 32:15;

Deut.
5:22

[24:13]
a.
Ex.
32:17

[24:14]
a.
Ex.
17:10,
12

[24:15]
a.
Ex.
19:9;
Matt.
17:5

[24:16]
a.
Ex.
16:10;
33:18;
Num.
14:10

[24:17]
a.
Ex.

3:2; Deut. 4:26, 36; 9:3; Heb. 12:18, 29

[24:18] a. Ex. 34:28; Deut. 9:9; 10:10

Exodus 25

[25:2] a. Ex. 35:4–9, 21; 1 Chr. 29:3, 5, 9; Ezra 2:68; Neh. 11:2; (2 Cor. 8:11–13; 9:7)

[25:2]
*
heave offering

[25:5]
* Or *dolphin*

[25:6]
a. Ex. 27:20

[25:6]
b. Ex. 30:23

[25:7]
a. Ex. 28:4, 6–14

[25:8]
a. Ex. 36:1, 3, 4;

Lev. 4:6; 10:4; 21:12; Heb. 9:1, 2

[25:8] b. Ex. 29:45; 1 Kin. 6:13; (2 Cor. 6:16; Heb. 3:6; Rev. 2:13)

[25:8] * *sacred place*

[25:10] a. Ex. 37:1–9; Deut. 10:3;

Heb. 9:4

[25:11] a. Ex. 37:2; Heb. 9:4

[25:15] a. Num. 4:6; 1 Kin. 8:8

[25:16] a. Ex. 16:34; 31:18; Deut. 10:2; 31:26; 1 Kin. 8:9; Heb. 9:4

[25:17]

a. Ex. 37:6; Heb. 9:5

[25:20] a. 1 Kin. 8:7; 1 Chr. 28:18; H1eb. 9:5

[25:21] a. Ex. 26:34; 40:20

[25:21] b. Ex. 25:16

[25:22] a. Ex. 29:42, 43; 30:6,

36; Lev. 16:2; Num. 17:4

[25:22] b. Num. 7:89; 1 Sam. 4:4; 2 Sam. 6:2; 2 Kin. 19:15; Ps. 80:1; Is. 37:16

[25:23] a. Ex. 37:10–16; 1 Kin. 7:48; 2 Chr. 4:8; Heb. 9:2

[25:29] a. Ex. 37:16; Num. 4:7

[25:30] a. Ex. 39:36; 40:23; Lev. 24:5–9

[25:31] a. Ex. 37:17–24; 1 Kin. 7:49; Zech. 4:2; Heb. 9:2; Rev. 1:12

[25:33] a. Ex.

37:19

[25:34] a. Ex. 37:20–22

[25:37] a. Ex. 27:21; 30:8; Lev. 24:3, 4; 2 Chr. 13:11

[25:37] b. Num. 8:2

[25:40] a. Ex. 25:9; 26:30; Num. 8:4; 1 Chr.

28:11,
19;
Acts
7:44;
(Heb.
8:5)

Exodus 26

[26:1]
a.
Ex.
36:8–
19

[26:2]
* Lit.
*one
measure*

[26:7]
a.
Ex.
36:14

[26:14]
a.
Ex.
35:7,
23;
36:19

[26:15]

a. Ex. 36:20–34

[26:17] * Projections for joining, lit. *hands*

[26:24] * Lit. *doubled*

[26:28] a. Ex. 36:33

[26:30] a. Ex. 25:9, 40; 27:8; 39:32; Num. 8:4; Acts 7:44;

(Heb. 8:2, 5)

[26:31] a. Ex. 27:21; 36:35–38; Lev. 16:2; 2 Chr. 3:14; Matt. 27:51; Heb. 9:3; 10:20

[26:33] a. Ex. 25:10–16; 40:21

[26:33] b. Lev. 16:2; Heb. 9:2, 3

[26:34]
a.
Ex.
25:17–22;
40:20;
Heb.
9:5

[26:35]
a.
Ex.
40:22;
Heb.
9:2

[26:35]
b.
Ex.
40:24

[26:36]
a.
Ex.
36:37

[26:37]
a.
Ex.
36:38

Exodus 27

[27:1]
a.
Ex.
38:1;
Ezek.
43:13

[27:8]
a.
Ex.
25:40;
26:30;
Acts
7:44;
(Heb.
8:5)

[27:9]
a.
Ex.
38:9–20

[27:17]
a.
Ex.
38:19

[27:20]
a.
Ex.

35:8,
28;
Lev.
24:1–
4

[27:20]
* Lit.
ascend

[27:21]
a.
Ex.
26:31,
33

[27:21]
b.
Ex.
30:8;
1
Sam.
3:3;
2
Chr.
13:11

[27:21]
c.
Ex.
28:43;
29:9;
Lev.

3:17; 16:34; Num. 18:23; 19:21; 1 Sam. 30:25

Exodus 28

[28:1] a. Num. 3:10; 18:7

[28:1] b. Ps. 99:6; Heb. 5:4

[28:1] c. Ex. 24:1, 9; Lev. 10:1

[28:1] d.

Ex. 6:23; Lev. 10:6, 16

[28:2] a. Ex. 29:5, 29; 31:10; 39:1–31; Lev. 8:7–9, 30

[28:2] * *sacred*

[28:3] a. Ex. 31:6; 36:1

[28:3] b. Ex. 31:3; 35:30,

31;
Is.
11:2;
Eph.
1:17

[28:4]
a.
Ex.
28:15

[28:4]
b.
Ex.
28:6

[28:4]
c.
Ex.
28:31

[28:4]
d.
Ex.
28:39

[28:4]
e.
Lev.
8:7

[28:4] * Ornamented vest

[28:6] a. Ex. 39:2–7; Lev. 8:7

[28:8] * *ingenious work of*

[28:9] a. Ex. 35:27

[28:10] a. Gen. 29:31—30:24; 35:16–18

[28:11] a. Ex. 35:35

[28:12] a. Ex. 28:29, 30; 39:6, 7

[28:12] b. Lev. 24:7; Num. 31:54; Josh. 4:7; Zech. 6:14; 1 Cor. 11:24

[28:15] a. Ex. 39:8–21

[28:17]
a.
Ex.
39:10

[28:17]
* Or
ruby

[28:19]
* Or
amber

[28:20]
* Or
yellow
jasper

[28:20]
* Or
carnelian

[28:27]
*
ingenious
work
of

[28:29] a. Ex. 28:12

[28:30] a. Lev. 8:8; Num. 27:21; Deut. 33:8; 1 Sam. 28:6; Ezra 2:63; Neh. 7:65

[28:30] * Lit. *Lights and the Perfections*

[28:31] a. Ex. 39:22–26

[28:36] a. Ex. 39:30, 31; Lev. 8:9; Zech. 14:20

[28:38] a. Ex. 28:43; Lev. 10:17; 22:9, 16; Num. 18:1; (Is. 53:11); Ezek. 4:4–6; (John 1:29; Heb. 9:28; 1 Pet. 2:24)

[28:38] b. Lev. 1:4; 22:27;

23:11;
Is.
56:7

[28:38]
*
sacred

[28:39]
a.
Ex.
35:35;
39:27–
29

[28:40]
a.
Ex.
28:4;
39:27–
29,
41;
Ezek.
44:17,
18

[28:40]
b.
Ex.
28:2

[28:40]

* *headpieces* or *turbans*

[28:41] a. Ex. 29:7–9; 30:30; 40:15; Lev. 10:7

[28:41] b. Ex. 29:9; Lev. 8; Heb. 7:28

[28:41] * *set them apart*

[28:42] a. Ex. 39:28;

Lev. 6:10; 16:4; Ezek. 44:18

[28:42] * *bare flesh*

[28:42] * Lit. *be*

[28:43] a. Ex. 20:26

[28:43] b. Lev. 5:1, 17; 20:19, 20; 22:9; Num. 9:13; 18:22

[28:43]
c.
Ex.
27:21;
Lev.
17:7

[28:43]
*
guilt

Exodus 29

[29:1]
a.
Lev.
8;
(Heb.
7:26–
28)

[29:2]
a.
Lev.
2:4;
6:19–
23

[29:4]
a.
Ex.
40:12;
Lev.
8:6;

(Heb. 10:22)

[29:5] a. Ex. 28:2; Lev. 8:7

[29:5] b. Ex. 28:8

[29:6] a. Ex. 28:36, 37; Lev. 8:9

[29:7] a. Ex. 25:6; 30:25–31; Lev. 8:12; 10:7; 21:10;

Num. 35:25; Ps. 133:2

[29:8] a. Ex. 28:39, 40; Lev. 8:13

[29:9] a. Ex. 40:15; Num. 3:10; 18:7; 25:13; Deut. 18:5

[29:9] b. Ex. 28:41; Lev. 8

[29:10] a.

Lev.
1:4;
8:14

[29:12]
a.
Lev.
8:15

[29:12]
b.
Ex.
27:2;
30:2;
Lev.
4:7

[29:13]
a.
Lev.
1:8;
3:3,
4

[29:14]
a.
Lev.
4:11,
12,
21;
Heb.
13:11

[29:15] a. Lev. 8:18

[29:15] b. Lev. 1:4–9

[29:16] a. Ex. 24:6; Lev. 1:5, 11

[29:18] a. Ex. 20:24

[29:19] a. Lev. 8:22

[29:21] a. Ex.

30:25,
31;
Lev.
8:30

[29:21]
b.
Ex.
28:41;
29:1;
(Heb.
9:22)

[29:23]
a.
Lev.
8:26

[29:24]
a.
Lev.
7:30;
10:14

[29:25]
a.
Lev.
8:28

[29:26]
a.
Lev.

7:31,
34;
8:29

[29:27]
a.
Lev.
7:31,
34;
Num.
18:11,
18;
Deut.
18:3

[29:28]
a.
Lev.
10:15

[29:28]
b.
Lev.
3:1;
7:34

[29:29]
a.
Ex.
28:2

[29:29]

b.
Num.
20:26,
28

[29:29]
c.
Ex.
28:41;
30:30;
Num.
18:8

[29:30]
a.
Num.
20:28

[29:30]
b.
Lev.
8:35

[29:30]
*
sanctuary

[29:31]
a.
Lev.
8:31

[29:32]
a.
Matt.
12:4

[29:33]
a.
Lev.
10:14,
15,
17

[29:33]
b.
Ex.
12:43;
Lev.
22:10

[29:34]
a.
Ex.
12:10;
23:18;
34:25;
Lev.
7:18;
8:32

[29:35]
a.

Lev. 8:33–35

[29:36] a. Heb. 10:11

[29:36] b. Ex. 30:26–29; 40:10, 11

[29:37] a. Num. 4:15; Hag. 2:11–13; Matt. 23:19

[29:38] a. Num. 28:3–31; 29:6–

38; 1 Chr. 16:40; Ezra 3:3

[29:38] b. Dan. 12:11

[29:39] a. Ezek. 46:13–15

[29:39] * Lit. *between the two evenings*

[29:41] a. 1 Kin. 18:29, 36; 2

Kin.
16:15;
Ezra
9:4,
5;
Ps.
141:2

[29:41]
*
Lit.
between
the
two
evenings

[29:42]
a.
Ex.
30:8

[29:421a>]
b.
Ex.
25:22;
33:7,
9;
Num.
17:4

[29:43]
a.
Ex.

40:34; 1 Kin. 8:11; 2 Chr. 5:14; Ezek. 43:5; Hag. 2:7, 9

[29:44] a. Lev. 21:15

[29:45] a. Ex. 25:8; Lev. 26:12; Num. 5:3; Deut. 12:11; Zech. 2:10; (John 14:17, 23; Rev. 21:3)

[29:45]
b.
Gen.
17:8;
Lev.
11:45

[29:46]
a.
Ex.
16:12;
20:2;
Deut.
4:35

[29:46]
b.
Lev.
11:45

Exodus
30

[30:1]
a.
Ex.
37:25–29

[30:3]
*
border

[30:6] a. Ex. 26:31–35

[30:6] b. Ex. 25:21, 22

[30:7] a. Ex. 30:34; 1 Sam. 2:28; 1 Chr. 23:13; Luke 1:9

[30:7] b. Ex. 27:20, 21

[30:8] *

Lit. *between the two evenings*

[30:9] a. Lev. 10:1

[30:10] a. Lev. 16:3–34

[30:12] a. Ex. 38:25, 26; Num. 1:2; 26:2; 2 Sam. 24:2

[30:12] b. Num. 31:50;

(Matt. 20:28; 1 Pet. 1:18, 19)

[30:12] c. 2 Sam. 24:15

[30:12] * *the price of a life*

[30:13] a. Matt. 17:24

[30:13] b. Lev1. 27:25; Num. 3:47; Ezek.

45:12

[30:13]
c.
Ex.
38:26

[30:14]
*
contribution

[30:15]
a.
Job
34:19;
Prov.
22:2;
(Eph.
6:9)

[30:16]
a.
Ex.
38:25–31

[30:16]
b.
Num.
16:40

[30:16] * *give*

[30:18] a. Ex. 38:8; 1 Kin. 7:38

[30:18] b. Ex. 40:30

[30:18] * *basin*

[30:19] a. Ex. 40:31, 32; Ps. 26:6; Is. 52:11; John 13:8, 10;

Heb.
10:22

[30:21]
a.
Ex.
28:43

[30:21]
*
requirement

[30:23]
a.
Song
4:14;
Ezek.
27:22

[30:23]
b.
Ps.
45:8;
Prov.
7:17

[30:23]
c.
Song
4:14;
Jer.
6:20

[30:24]
a.
Ps.
45:8

[30:24]
b.
Ex.
29:40

[30:25]
a.
Ex.
37:29;
40:9;
Lev.
8:10;
Num.
35:25;
Ps.
89:20;
133:2

[30:26]
a.
Ex.
40:9;
Lev.
8:10;
Num.
7:1

[30:29]

a. Ex. 29:37; Num. 4:15; Hag. 2:11–13

[30:30] a. Ex. 29:7; Lev. 8:12

[30:32] a. Ex. 30:25, 37

[30:33] a. Ex. 30:38

[30:33] b. Gen. 17:14; Ex. 12:15;

Lev. 7:20, 21

[30:33] * *mixes*

[30:33] * Put to death

[30:34] a. Ex. 25:6; 37:29

[30:35] a. Ex. 30:25

[30:36] a. Ex. 29:42; Lev. 16:2

[30:36] b. (Ex. 29:37; 30:32); Lev. 2:3

[30:37] a. Ex. 30:32

[30:37] * Lit. *proportion*

[30:38] a. Ex. 30:33

Exodus 31

[31:2] a. Ex. 35:30—36:1

[31:2]
b.
1
Chr.
2:20

[31:3]
a.
Ex.
28:3;
35:31;
1
Kin.
7:14;
Eph.
1:171

[31:6]
a.
Ex.
35:34

[31:6]
b.
Ex.
28:3;
35:10,
35;
36:1

[31:7]

a.
Ex.
36:8

[31:7]
b.
Ex.
37:1–5

[31:7]
c.
Ex.
37:6–9

[31:8]
a.
Ex.
37:10–16

[31:8]
b.
Ex.
37:17–24;
Lev.
24:4

[31:9]
a.

Ex. 38:1–7

[31:9] b. Ex. 38:8

[31:10] a. Ex. 39:1, 41

[31:10] * Or *woven garments*

[31:11] a. Ex. 30:23–33

[31:11] b. Ex. 30:34–38

[31:13]
a.
Ex.
31:17;
Lev.
19:3,
30;
26:2;
Ezek.
20:12,
20

[31:13]
b.
Lev.
20:8

[31:13]
*
consecrates

[31:14]
a.
Ex.
20:8;
Deut.
5:12

[31:14]
b.
Ex.

31:15; 35:2; Num. 15:32–36; John 7:23

[31:14] * *defiles*

[31:15] a. Ex. 20:9–11; Lev. 23:3; Deut. 5:12–14

[31:15] b. Gen. 2:2; Ex. 16:23; 20:8; 35:2

[31:17]

a.
Ex.
31:13;
Ezek.
20:12

[31:17]
b.
Gen.
1:31;
2:2,
3;
Ex.
20:11

[31:18]
a.
(Ex.
24:12;
32:151font>,
16;
Deut.
4:13;
5:22;
2
Cor.
3:3)

Exodus
32

[32:1]
a.
Ex.
24:18;
Deut.

9:9–12

[32:1] b. Ex. 17:1–3

[32:1] c. Acts 7:40

[32:1] d. Ex. 13:21

[32:1] e. Ex. 32:8

[32:1] * Or *a god*

[32:2] a. Ex. 11:2; 35:22; Judg. 8:24–27

[32:4] a. Ex. 20:3, 4, 23; Deut. 9:16; Judg. 17:3, 4; 1 Kin. 12:28; Neh. 9:18; Ps. 106:19; Acts 7:41

[32:4] b. Ex. 29:45, 46

[32:5] a. Lev. 23:2, 4, 21, 37; 2 Kin. 10:20; 2 Chr. 30:5

[32:6] a. Ex. 32:17–19; Num. 25:2; 1 Cor. 10:7

[32:7] a. Deut. 9:8–21; Dan. 9:14

[32:7] b.

Gen. 6:11, 12

[32:8] a. Ex. 20:3, 4, 23; Deut. 32:17

[32:8] b. 1 Kin. 12:28

[32:9] a. Ex. 33:3, 5; 34:9; Deut. 9:6; 2 Chr. 30:8; Is. 48:4; (Acts 7:51)

[32:9]
*
stubborn

[32:10]
a.
Deut.
9:14,
19

[32:10]
b.
Ex.
22:24

[32:10]
c.
Num.
14:12

[32:10]
*
destroy

[32:11]
a.
Deut.
9:18,
26–
29

[32:11] * Lit. *the face of the LORD*

[32:12] a. Num. 14:13–19; Deut. 9:28; Josh. 7:9

[32:12] b. Ex. 32:14

[32:13] a. Gen. 22:16–18; (Heb. 6:13)

[32:13]
b.
Gen.
12:7;
13:15;
15:7,
18;
22:17;
26:4;
35:11,
12;
Ex.
13:5,
11;
33:1

[32:14]
a.
2
Sam.
24:16

[32:15]
a.
Deut.
9:15

[32:16]
a.
Ex.
31:18

[32:19]

a.
Deut.
9:16,
17

[32:20]
a.
Num.
5:17,
24;
Deut.
9:21

[32:21]
a.
Gen.
26:10

[32:22]
a.
Ex.
14:11;
Deut.
9:24

[32:25]
a.
Ex.
33:4,
5

[32:25]

b. 2 Chr. 28:19

[32:27] a. Num. 25:5–13

[32:29] a. Ex. 28:41; 1 Sam. 15:18, 22; Prov. 21:3; Zech. 13:3

[32:29] * Lit. *Fill your hand*

[32:30] a.

1 Sam. 12:20, 23

[32:30] b. 2 Sam. 16:12

[32:30] c. Num. 25:13

[32:31] a. Deut. 9:18

[32:31] b. Ex. 20:23

[32:32] a. Ps. 69:28; Is. 4:3;

Mal.
3:16;
Rom.
9:3

[32:32]
b.
Dan.
12:1;
Phil.
4:3;
Rev.
3:5;
21:27

[32:33]
a.
Lev.
23:30;
(Ezek.
18:4;
33:2,
14,
15)

[32:33]
b.
Ex.
17:14;
Deut.
29:20;
Ps.
9:5;
Rev.
3:5;

21:27

[32:34]
a.
Ex.
3:17

[32:34]
b.
Ex.
23:20;
Josh.
5:14

[32:34]
c.
Deut.
32:35;
Rom.
2:5,
6

[32:34]
d.
Ps.
89:32

[32:35]
a.
Neh.
9:18

[33:1] a. Ex. 32:1, 7, 13; Josh. 3:17

[33:1] b. Gen. 12:7

[33:2] a. Ex. 32:34; Josh. 5:14

[33:2] b. Ex. 23:27–31; Josh. 24:11

[33:3]
a.
Ex.
3:8

[33:3]
b.
Num.
16:21,
45

[33:3]
c.
Ex.
32:9;
33:5

[33:3]
*
destroy

[33:3]
*
stubborn

[33:4]
a.
Num.
14:1,
39

[33:4]
b.
Ezra
9:3;
Esth.
4:1,
4;
Ezek.
24:17,
23

[33:5]
a.
(Ps.
139:23)

[33:4]
*
jewelry

[33:7]
a.
Ex.
29:42,
43

[33:7]
b.
Deut.
4:29

[33:8]

a.
Num.
16:27

[33:9]
a.
Ex.
25:22;
31:18;
Ps.
99:7

[33:10]
a.
Ex.
4:31

[33:11]
a.
Num.
12:8;
Deut.
34:10

[33:11]
b.
Ex.
24:13

[33:12]
a.
Ex.

3:10;
32:34

[33:12]
b.
Ex.
33:17;
John
10:14,
15;
2
Tim.
2:19

[33:13]
a.
Ex.
34:9

[33:13]
b.
Ps.
25:4;
27:11;
86:11;
119:33

[33:13]
c.
Ex.
3:7,
10;
5:1;

32:12,
14;
Deut.
9:26,
29

[33:14]
a.
Ex.
3:12;
Deut.
4:37;
Is.
63:9

[33:14]
b.
Deut.
12:10;
25:19;
Josh.
21:44;
22:4

[33:15]
a.
Ex.
33:3

[33:16]
a.
Num.
14:14

[33:16]
b.
Ex.
34:10;
Deut.
4:7,
34

[33:17]
a.
(James
5:16)

[33:18]
a.
Ex.
24:16,
17;
(1
Tim.
6:16)

[33:19]
a.
Ex.
34:6,
7

[33:19]
b.
(Rom.

9:15,
16,
18)

[33:19]
c.
(Rom.
4:4,
16)

[33:20]
a.
(Gen.
32:30)

[33:22]
a.
Song
2:14;
Is.
2:21

[33:22]
b.
Ps.
91:1,
4;
Is.
49:2;
51:16

[33:23]

a.
Ex.
33:20;
(John
1:18)

Exodus
34

[34:1]
a.
(Ex.
24:12;
31:18;
32:15,
16,
19;
Deut.
4:13)

[34:1]
b.
Deut.
10:2,
4

[34:2]
a.
Ex.
19:11,
18,
20

[34:3]

a. Ex. 19:12, 13; 24:9–11

[34:5] a. Ex. 19:9

[34:5] b. Ex. 33:19

[34:6] a. Num. 14:18; Deut. 4:31; Neh. 9:17; Joel 2:13

[34:6] b. Rom. 2:4

[34:6] c. Ps. 108:4

[34:7] a. Ex. 20:6

[34:7] b. Ps. 103:3, 4; Dan. 9:9; Eph. 4:32; 1 John 1:9

[34:7] c. Josh. 24:19; Job 10:14; Mic. 6:11; Nah. 1:3

[34:8]
a.
Ex.
4:31

[34:9]
a.
Ex.
33:12–
16

[34:9]
b.
Ex.
33:3

[34:9]
c. Ps.
33:12;
94:14

[34:9]
*
stubborn

[34:10]
a.
Ex.
34:27,
28;
Deut.
5:2

[34:10] b. Deut. 4:32; Ps. 77:14

[34:10] c. Ps. 145:6

[34:10] * *wonderful acts*

[34:11] a. Deut. 6:25

[34:11] b. Ex. 23:20–33; 33:2; Josh. 11:23

[34:12] a. Ex. 23:32, 33

[34:13] a. Ex. 23:24; Deut. 12:3

[34:13] b. Deut. 16:21; Judg. 6:25, 26; 2 Kin. 18:4; 2 Chr. 34:3, 4

[34:14] a. (Ex. 20:3–5)

[34:14] b. (Is. 9:6; 57:15)

[34:14] c. (Ex. 20:5; Deut. 4:24)

[34:15] a. Judg. 2:17

[34:15] b. Num. 25:1, 2; Deut. 32:37, 38

[34:15] c. 1 Cor. 8:4, 7, 10

[34:16] a. Gen. 28:1; Deut. 7:3; Josh. 23:12, 13; 1 Kin. 11:2; Ezra 9:2; Neh. 13:25

[34:16] b. Num. 25:1, 2; 1 Kin. 11:4

[34:17] a. Ex. 20:4, 23; 32:8; Lev. 19:4; Deut. 5:8

[34:18]
a.
Ex.
12:15,
16

[34:18]
b.
Ex.
12:2;
13:4

[34:19]
a.
Ex.
13:2;
22:29

[34:19]
* *the firstborn*

[34:20]
a.
Ex.
13:13

[34:20]
b.
Ex.

22:29; 23:15; Deut. 16:16

[34:21] a. Ex. 20:9; 23:12; 31:15; 35:2; Lev. 23:3; Deut. 5:13

[34:23] a. Ex. 23:14–17

[34:24] a. (Ex. 33:2); Josh. 11:23; 1 Kin. 4:21; 2 Chr. 36:14–

16;
Ps.
78:55

[34:25]
a.
Ex.
12:10

[34:26]
a.
Ex.
23:19;
Deut.
26:2

[34:27]
a.
Ex.
17:14;
24:4;
Deut.
31:9

[34:28]
a.
Ex.
24:18

[34:28]
b.
Ex.

34:1, 4; Deut. 4:31; 10:2, 4

[34:28] * Lit. *Ten Words*

[34:29] a. Ex. 32:15

[34:30] a. Matt. 17:2; 2 Cor. 3:7

[34:32] a. Ex. 24:3

[34:33] a. (2

Cor. 3:13, 14)

[34:34] a. (2 Cor. 3:13–16)

Exodus 35

[35:1] a. Ex. 34:32

[35:2] a. Ex. 20:9, 10; Lev. 23:3; Deut. 5:13

[35:2] b. Num. 15:32–36

[35:3]
a.
Ex.
12:16;
16:23

[35:4]
a.
Ex.
25:1,
2

[35:5]
a.
Ex.
25:2;
1
Chr.
29:14;
Mark
12:41–44; 2
Cor.
8:10–12;
9:7

[35:5]
b.
Ex.
38:24

[35:6]

a.
Ex.
36:8

[35:6]
b.
Ex.
36:14

[35:8]
a.
Ex.
25:6;
30:23–
25

[35:10]
a.
Ex.
31:2–
6;
36:1,
2

[35:11]
a.
Ex.
26:1,
2;
36:14

[35:12]

a.
Ex.
25:10–
22

[35:13]
a.
Ex.
25:23

[35:13]
b.
Ex.
25:30;
Lev.
24:5,
6

[35:14]
a.
Ex.
25:31

[35:15]
a.
Ex.
30:1

[35:15]
b.
Ex.
30:125

[35:15] c. Ex. 30:34–38

[35:16] a. Ex. 27:1–8

[35:17] a. Ex. 27:9–18

[35:19] a. Ex. 31:10; 39:1, 41

[35:19] * Or *woven garments*

[35:21]
a.
Ex.
25:2;
35:5,
22,
26,
29;
36:2

[35:21]
b.
Ex.
35:24

[35:21]
* Lit.
lifted
him
up

[35:22]
a.
Ex.
32:2,
3

[35:22]
b.
Ex.
11:2

[35:23]
a. 1
Chr.
29:8

[35:23]
* Or
dolphin

[35:25]
a.
Ex.
28:3;
31:6;
36:1

[35:26]
* Lit.
*lifted
them
up*

[35:27]
a. 1
Chr.
29:6;
Ezra
2:68

[35:28]
a.
Ex.

30:23

[35:29] a. Ex. 35:5, 21; 36:3; 1 Chr. 29:9

[35:29] b. Ex. 31:1–6

[35:34] a. Ex. 31:6

[35:35] a. Ex. 31:3, 6; 35:31; 1 Kin. 7:14; 2

Chr.
2:14;
Is.
28:26

Exodus 36

[36:1]
a.
Ex.
28:3;
31:6;
35:10,
35

[36:1]
b.
Ex.
25:8

[36:1]
*
*holy
place*

[36:2]
a.
Ex.
35:21,
26; 1
Chr.
29:5,
9, 17

[36:2] * *lifted him up*

[36:3] a. Ex. 35:5

[36:3] b. Ex. 35:27

[36:5] a. 2 Chr. 24:14; 31:6–10; (2 Cor. 8:2, 3)

[36:7] a. 1 Kin. 8:64

[36:8]
a.
Ex.
26:1–
14

[36:12]
a.
Ex.
26:5

[36:14]
a.
Ex.
26:7

[36:19]
a.
Ex.
26:14

[36:19]
* Or
dolphin

[36:20]
a.
Ex.
26:15–
29

[36:22] a. Ex. 26:17

[36:22] * Projections for joining, lit. *hands*

[36:29] * Lit. *doubled*

[36:31] a. Ex. 26:26–29

[36:35] a. Ex. 26:31–37

[36:37]

a.
Ex.
26:36

[36:37]
* Lit.
variegator,
a
weaver
in
colors

Exodus 37

[37:1]
a.
Ex.
35:30;
36:1

[37:1]
b.
Ex.
25:10–20

[37:6]
a.
Ex.
25:17

[37:9]
a.

Ex. 25:20

[37:10] a. Ex. 25:23–29

[37:16] a. Ex. 25:29

[37:17] a. Ex. 25:31–39

[37:23] a. Num. 4:9

[37:25] a. Ex. 30:1–5

[37:28]
a.
Ex.
30:5

[37:29]
a.
Ex.
30:23–25

Exodus 38

[38:1]
a.
Ex.
27:1–8

[38:8]
a.
Ex.
30:18

[38:9]
a.
Ex.
27:9–19

[38:20]
a.
Ex.

27:19

[38:21] a. Num. 1:50, 53; 9:15; 10:11; 17:7, 8; 2 Chr. 24:6; Acts 7:44

[38:21] b. Num. 4:28, 33

[38:21] c. Ex. 28:1; Lev. 10:6, 16

[38:21] * Lit. *These*

are the things appointed for

[38:22] a. Ex. 31:2, 6; 1 Chr. 2:18–20

[38:23] a. Ex. 31:6; 36:1

[38:23] * *skillful workman*

[38:24] a. Ex. 35:5, 22

[38:24] b. Ex. 30:13, 24; Lev. 5:15; 27:3, 25; Num. 3:47; 18:16

[38:25] a. Ex. 30:11–16; Num. 1:2

[38:26] a. Ex. 30:13, 15

[38:26] b. Ex. 12:37; Num. 1:46; 26:51

[38:26] * Lit. *a head*

[38:27] a. Ex. 26:19, 21, 25, 32

[38:28] a. Ex. 27:17

Exodus 39

[39:1] a. Ex. 25:4; 35:23

[39:1] b. Ex. 31:10; 35:19

[39:1]
c.
Ex.
28:4

[39:1]
* Or
*woven
garments*

[39:1]
*
sanctuary

[39:2]
a.
Ex.
28:6–
14

[39:2]
b.
Lev.
8:7

[39:6]
a.
Ex.
28:9–
11

[39:6]
*
plaited work

[39:7]
a.
Ex. 28:12, 29; Josh. 4:7

[39:8]
a.
Ex. 28:15–30

[39:10]
a.
Ex. 28:17

[39:14]
a.
Rev. 21:12

[39:22]
a.
Ex.

28:31–
35

[39:22]
b.
Ex.
29:5;
Lev.
8:7

[39:25]
a.
Ex.
28:33

[39:26]
*
serve

[39:127]
a.
Ex.
28:39,
40

[39:28]
a.
Ex.
28:4,
39;
Lev.
8:9;

Ezek. 44:18

[39:28] b. Ex. 28:42; Lev. 6:10

[39:29] a. Ex. 28:39

[39:30] a. Ex. 28:36, 37

[39:30] b. Zech. 14:20

[39:32] a. Ex. 40:17

[39:32]
b.
Ex.
25:40;
39:42,
43

[39:36]
a.
Ex.
25:23–
30

[39:41]
* Or
woven
garments

[39:41]
*
serve

[39:42]
a.
Ex.
35:10

[39:43]
a.
Lev.
9:22,
23;

Num. 6:23–26; Josh. 22:61; 2 Sam. 6:18; 1 Kin. 8:14; 2 Chr. 30:27

Exodus 40

[40:1] a. Ex. 25:1—31:18

[40:2] a. Ex. 12:2; 13:4

[40:2] b. Ex. 26:1, 30; 40:17

[40:3] a. Ex. 26:33; 40:21; Lev. 16:2; Num. 4:5

[40:3] * *screen*

[40:4] a. Ex. 26:35; 40:22

[40:4] b. Ex. 25:30; 40:23

[40:4] c. Ex. 40:24, 25

[40:4]
* *set up*

[40:5]
a.
Ex.
40:26

[40:6]
a.
Ex.
39:39

[40:7]
a.
Ex.
30:18;
40:30

[40:9]
a.
Ex.
30:26;
Lev.
8:10

[40:10]
a.
Ex.

30:26–30

[40:10] b. Ex. 29:36, 37

[40:12] a. Ex. 29:4–9; Lev. 8:1–13

[40:13] a. Ex. 29:5; 39:1, 41

[40:13] b. (Ex. 28:41); Lev. 8:12

[40:15]
a.
Ex.
29:9;
Num.
25:13

[40:17]
a.
Ex.
40:2;
Num.
7:1

[40:17]
*
erected

[40:20]
a.
Ex.
25:16;
Deut.
10:5;
1
Kin.
8:9;
2
Chr.
5:10;
Heb.
9:4

[40:21]
a.
Ex.
26:33

[40:22]
a.
Ex.
26:35

[40:23]
a.
Ex.
40:4;
Lev.
24:5,
6

[40:24]
a.
Ex.
26:35

[40:25]
a.
Ex.
25:37;
30:7,
8;
40:4;
Lev.
24:3,
4

[40:26]
a.
Ex.
30:1,
6;
40:5

[40:27]
a.
Ex.
30:7

[40:28]
a.
Ex.
26:36;
40:5

[40:29]
a.
Ex.
40:6

[40:29]
b.
Ex.
29:38–42

[40:30]

a.
Ex.
30:18;
40:7

[40:31]
a.
Ex.
30:19,
20;
John
13:8

[40:32]
a.
Ex.
30:19

[40:33]
a.
Ex.
27:9–
18;
40:8

[40:33]
b.
(Heb.
3:2–
5)

[40:34]

a.
Ex.
29:43;
Lev.
16:2;
Num.
9:15;
2
Chr.
5:13;
Is.
6:4

[40:34]
b. 1
Kin.
8:10,
11

[40:34]
c.
Lev.
9:6,
23

[40:35]
a.
(Lev.
16:2);
1
Kin.
8:11;
2
Chr.
5:13,

14

[40:36] a. Ex. 13:21, 22; Num. 9:17; Neh. 9:19

[40:36] * *journey*

[40:37] a. Num. 9:19–22

[40:38] a. Ex. 13:21; Num. 9:15; Ps. 78:14; Is. 4:5

The Holy Spirit’s W1ork in

LEVITICUS

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

Because He is holy, God’s Spirit requires holiness from His people. God commands, “You shall therefore be holy, for I am holy” (Lev. 11:45). Throughout the Book of Leviticus, God commands holiness from His people. All the objects for sacrifice and worship in the Tabernacle are to be set apart and consecrated as holy unto God. Even the verification of the cleansing of a leper (Lev. 14) requires the anointing of the oil (Spirit) and blood to make the diseased man pure and holy.

Priests are anointed with oil, symbolizing the anointing of God’s Spirit (Lev. 8). The sanctifying work of the Holy Spirit in the New Testament is foreshadowed in Leviticus by the act of making holy everything belonging to the Lord, including His people.

God’s Holy Spirit demands holiness, sanctification, cleansing, purification, and the setting apart of His people for worship and service.* Only then will we be ready to engage the enemy in spiritual warfare.

---

* *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Leviticus, 93.

Leviticus 1

The Burnt Offering

1 Now the LORD [a]called to Moses, and spoke to him [b]from the tabernacle of meeting, saying, 2 “Speak to the

children of Israel, and say to them: [a]‘When any one of you brings an offering to the LORD, you shall bring your offering of the livestock—of the herd and of the flock.

3‘If his offering *is* a burnt sacrifice of the herd, let him offer a male [a]without blemish; he shall offer it of his own free will at the door of the tabernacle of meeting before the LORD. 4[a]Then he shall put his hand on the head of the burnt offering, and it will be [b]accepted on his behalf [c]to make atonement for him. 5He shall kill the [a]bull before the LORD; [b]and the priests, Aaron’s sons, shall bring the blood [c]and sprinkle the blood all around on the altar that *is by* the door of the tabernacle of meeting. 6And he shall [a]skin the burnt offering and cut it into its pieces. 7The sons of Aaron the priest shall put [a]fire on the altar, and [b]lay the wood in order on the fire. 8Then the priests, Aaron’s sons, shall lay the parts, the head, and the fat in order on the wood that *is* on the fire upon the altar; 9but he shall wash its entrails and its legs with water. And the priest shall burn all on the altar as a burnt sacrifice, an offering made by fire, a [a]sweet* aroma to the LORD.

10‘If his offering *is* of the flocks—of the sheep or of the goats—as a burnt sacrifice, he shall bring a male [a]without blemish. 11[a]He shall kill it on the north side of the altar before the LORD; and the priests, Aaron’s sons, shall sprinkle its blood all around on the altar. 12And he shall cut it into its pieces, with its head and its fat; and the priest shall lay them in order on the wood that *is* on the fire upon the altar; 13but he shall wash the entrails and the legs with water. Then the priest shall bring *it* all and burn *it* on the altar; it *is* a burnt sacrifice, an [a]offering made by fire, a sweet aroma to the LORD.

14‘And if the burnt sacrifice of his offering to the LORD *is* of birds, then he shall bring his offering of [a]turtledoves or young pigeons. 15The priest shall bring it to the altar, *wring off its head, and burn *it* on the altar; its blood shall be drained out at the side of the altar. 16And he shall remove its crop with its feathers and cast it [a]beside the altar on the east side, into the place for ashes. 17Then he shall split it at its wings, *but* [a]shall not divide *it* completely; and the priest shall burn it on the altar, on the wood that *is* on the fire. [b]It *is* a burnt sacrifice, an offering made by fire, a *sweet aroma to the

LORD.

Leviticus 2

The Grain Offering

1‘When anyone offers [a]a grain offering to the LORD, his offering shall be *of* fine flour. And he shall pour oil on it, and put [b]frankincense on it. 2He shall bring it to Aaron’s sons, the priests, one of whom shall take from it his handful of fine flour and oil with all the frankincense. And the priest shall burn [a]*it as* a memorial on the altar, an offering made by fire, a sweet aroma to the LORD. 3[a]The rest of the grain offering *shall be* Aaron’s and his [b]sons’. [c]*It is* most holy of the offerings to the LORD made by fire.

4‘And if you bring as an offering a grain offering baked in the oven, *it shall be* unleavened cakes of fine flour mixed with oil, or unleavened wafers [a]anointed[*] with oil. 5But if your offering *is* a grain offering *baked* in a

[*]pan, *it shall be of* fine flour, unleavened, mixed with oil. 6You shall break it in pieces and pour oil on it; it *is* a grain offering.

7‘If your offering *is* a grain offering *baked* in a [a]covered pan, it shall be made *of* fine flour with oil. 8You shall bring the grain offering that is made of these things to the LORD. And when it is presented to the priest, he shall bring it to the altar. 9Then the priest shall take from the grain offering [a]a memorial portion, and burn *it* on the altar. *It is* an [b]offering made by fire, a sweet aroma to the LORD. 10And [a]what is left of the grain offering *shall be* Aaron’s and his sons’. *It is* most holy of the offerings to the LORD made by fire.

11‘No grain offering which you bring to the LORD shall be made with [a]leaven, for you shall burn no leaven nor any honey in any offering to the LORD made by fire. 12[a]As for the offering of the firstfruits, [b]you shall offer them to the LORD, but they shall not be burned on the altar for a sweet aroma. 13And every offering of your grain offering you shall season with salt; you shall not allow [a]the salt of the covenant of your God to be lacking from your grain offering. [b]With all your offerings [c]you shall offer salt.

14'If you offer a grain offering of your firstfruits to the LORD, you shall offer for the grain offering of your firstfruits green heads of grain roasted on the fire, grain beaten from [a]full heads. 15And [a]you shall put oil on it, and lay frankincense on it. It *is* a grain offering. 16Then the priest shall burn [a]the memorial portion: *part* of its beaten grain and *part* of its oil, with all the frankincense, as an offering made by fire to the LORD.

Leviticus 3

The Peace Offering

1‘When his offering *is* a [a]sacrifice of a peace offering, if he offers *it* of the herd, whether male or female, he shall offer it [b]without [*]blemish before the LORD. 2And [a]he shall lay his hand on the head of his offering, and kill it *at* the door of the tabernacle of meeting; and Aaron’s sons, the priests, shall [b]sprinkle the blood all around on the altar. 3Then he shall offer from the sacrifice of the [1]peace offering an offering made by fire to the LORD. [a]The fat that covers the entrails and all the fat that *is* on the entrails, 4the two kidneys and the fat that *is* on them by the flanks, and the fatty lobe *attached* to the liver above the kidneys, he shall remove; 5and Aaron’s sons [a]shall burn it on the altar upon the [b]burnt sacrifice, which *is* on the wood that *is* on the fire, *as* an [c]offering made by fire, a [d]sweet aroma to the LORD.

6 'If his offering as a sacrifice of a peace offering to the LORD *is* of the flock, *whether* male or female, [a]he shall offer it without blemish. 7 If he offers a [a]lamb as his offering, then he shall [b]offer it [c]before the LORD. 8 And he shall lay his hand on the head of his offering, and kill it before the tabernacle of meeting; and Aaron's sons shall sprinkle its blood all around on the altar.

9 'Then he shall offer from the sacrifice of the peace offering, as an offering made by fire to the LORD, its fat *and* the whole fat tail which he shall remove close to the backbone. And the fat that covers the entrails and all the fat that *is* on the

entrails, 10the two kidneys and the fat that *is* on them by the flanks, and the fatty lobe *attached* to the liver above the kidneys, he shall remove; 11and the priest shall burn *them* on the altar *as* [a]food, an offering made by fire to the LORD.

12'And if his [a]offering *is* a goat, then he shall offer it before the LORD. 13He shall lay his hand on its head and kill it before the tabernacle of meeting; and the sons of Aaron shall sprinkle its blood all around on the altar. 14Then [a]he shall offer from it his offering, as an offering made by fire to the LORD. The fat that covers the entrails and all the fat that *is* on the entrails, 15the two kidneys and the fat that is on them by the flanks, and the fatty 1lobe *attached* to the liver above the kidneys, he shall remove; 16and the priest shall burn them on the altar *as* food, an offering made by fire for a sweet aroma; [a]all the fat *is* the LORD's.

17 '*This shall be* a [a]perpetual[*] statute throughout your generations in all your dwellings: you shall eat neither fat nor [b]blood.' "

Leviticus 4

The Sin Offering

1 Now the LORD spoke to Moses, saying, 2 "Speak to the children of Israel, saying: [a]'If a person sins [*]unintentionally against any of the commandments of the LORD *in anything* which ought not to be done, and does any of them, 3 [a]if the anointed priest sins, bringing guilt on the people, then let him offer to the LORD for his sin which he has sinned [b]a young bull without blemish as a [c]sin offering. 4 He shall bring the bull [a]to the door of the tabernacle of meeting before the LORD, lay his hand on the bull's

head, and kill the bull before the LORD. 5Then the anointed priest shall [a]take some of the bull’s blood and bring it to the tabernacle of meeting. 6The priest shall dip his finger in the blood and sprinkle some of the blood seven times before the LORD, in front of the [a]veil of the sanctuary. 7And the priest shall [a]put some of the blood on the horns of the altar of sweet incense before the LORD, which is in the tabernacle of meeting; and he shall pour [b]the remaining blood of the bull at the base of the altar of the burnt offering, which is at the door of the tabernacle of meeting. 8He shall take from it all the fat of the bull as the sin offering. The fat that covers the entrails and all the fat which *is* on the entrails, 9the two kidneys and the fat that *is* on them by the flanks, and the fatty lobe *attached* to the liver above the kidneys, he shall remove, 10[a]as it was taken from the bull of the sacrifice of the peace offering; and the priest shall burn them on the altar of the burnt offering. 11[a]But the bull's hide and all its flesh, with its head and legs, its entrails and offal— 12the whole bull he shall carry outside the camp to a clean place, [a]where the ashes are poured out, and [b]burn it on wood with fire; where the ashes are poured out it shall be burned.

13'Now [a]if the whole congregation of Israel sins unintentionally, [b]and the thing is hidden from the eyes of the assembly, and they have done *something against* any of the commandments of the LORD *in anything* which should not be done, and are guilty; 14when the sin which they have committed becomes known, then the assembly shall offer a young bull for the sin, and bring it before the tabernacle of meeting. 15And the elders of the congregation [a]shall lay their hands on the head of the bull before the LORD. Then the bull shall be killed before the LORD. 16[a]The anointed priest shall bring some of the bull's blood to the tabernacle of meeting. 17Then the priest shall dip his finger in the blood and sprinkle *it* seven times before the LORD, in front of the veil. 18And he shall put *some* of the blood on the horns of the altar which *is* before the LORD, which *is* in the tabernacle of meeting; and he shall pour the remaining blood at the base of the altar of burnt offering, which is at the door of the tabernacle of meeting. 19He shall take all the fat from it and burn *it* on the altar. 20And he shall do [a]with the bull as he did with the bull as a sin offering; thus he shall do with it. [b]So the priest shall make [*]atonement for them, and it shall be forgiven them. 21Then he shall carry the bull outside the camp, and burn it as he burned the first bull. It *is* a sin offering for the assembly.

22‘When a [*]ruler has sinned, and [a]done *something* unintentionally *against* any of the commandments of the LORD his God *in anything* which should not be done, and is guilty, 23or [a]if his sin which he has committed [*]comes to his knowledge, he shall bring as his offering a kid of the goats, a male without blemish. 24And [a]he shall lay his hand on the head of the goat, and kill it at the place where they kill the burnt offering before the LORD. It *is* a sin offering. 25[a]The priest shall take some of the blood of the sin offering with his finger, put *it* on the horns of the altar of burnt offering, and pour its blood at the base of the altar of burnt offering. 26And he shall burn all its fat on the altar, like [a]the fat of the sacrifice of the peace offering. [b]So the priest shall make [*]atonement for him concerning his sin, and it shall be forgiven him.

27[a]'If [*]anyone of the [*]common people sins unintentionally by doing *something against* any of the commandments of the LORD *in anything* which ought not to be done, and is guilty, 28or [a]if his sin which he has committed comes to his knowledge, then he shall bring as his offering a kid of the goats, a female without blemish, for his sin which he has committed. 29[a]And he shall lay his hand on the head of the sin offering, and kill the sin offering at the place of the burnt offering. [30]Then the priest shall take *some* of its blood with his finger, put *it* on the horns of the altar of burnt offering, and pour all *the remaining* blood at the base of the altar. [31][a]He shall remove all its fat, [b]as fat is removed from the sacrifice of the peace offering; and the priest shall burn it on the altar for a [c]sweet aroma to the LORD. [d]S1o the priest shall make atonement for him, and it shall be forgiven him.

[32]‘If he brings a lamb as his sin offering, [a]he shall bring a female without blemish. [33]Then he shall [a]lay his hand on the head of the sin offering, and kill it as a sin offering at the place where they kill the burnt offering. [34]The priest shall take *some* of the blood of the sin offering with his finger, put *it* on the horns of the altar of

burnt offering, and pour all *the remaining* blood at the base of the altar. [35]He shall remove all its fat, as the fat of the lamb is removed from the sacrifice of the peace offering. Then the priest shall burn it on the altar, [a]according to the offerings made by fire to the LORD. [b]So the priest shall make atonement for his sin that he has committed, and it shall be forgiven him.

Leviticus 5

The Trespass Offering

[1]‘If a person sins in [a]hearing the utterance of an oath, and *is* a witness, whether he has seen or known *of the matter*—if he does not tell *it*, he [b]bears [*]guilt.

[2]‘Or [a]if a person touches any unclean thing, whether *it is* the carcass of an unclean beast, or the carcass of unclean livestock, or the carcass of unclean

creeping things, and he is unaware of it, he also shall be unclean and [b]guilty. [3]Or if he touches [a]human uncleanness—whatever uncleanness with which a man may be defiled, and he is unaware of it—when he realizes *it,* then he shall be guilty.

[4]‘Or if a person [*]swears, speaking thoughtlessly with *his* lips [a]to do evil or [b]to do good, whatever *it is* that a man may pronounce by an oath, and he is unaware of it—when he realizes *it,* then he shall be guilty in any of these *matters*.

[5]‘And it shall be, when he is guilty in any of these *matters*, that he shall [a]confess that he has sinned in that *thing*; [6]and he shall bring his trespass offering to the LORD for his sin which he has committed, a female from the flock, a lamb or a kid of the goats as a sin offering. So the priest

shall make atonement for him concerning his sin.

7[a]‘If he is not able to bring a lamb, then he shall bring to the LORD, for his trespass which he has committed, two [b]turtledoves or two young pigeons: one as a sin offering and the other as a burnt offering. 8And he shall bring them to the priest, who shall offer *that* which *is* for the sin offering first, and [a]wring off its head from its neck, but shall not divide *it* [*]completely. 9Then he shall sprinkle *some* of the blood of the sin offering on the side of the altar, and the [a]rest of the blood shall be drained out at the base of the altar. It *is* a sin offering. 10And he shall offer the second *as* a burnt offering according to the [a]prescribed manner. So [b]the priest shall make atonement on his behalf for his sin which he has committed, and it shall be forgiven him.

11‘But if he is [a]not able to bring two turtledoves or two young pigeons, then he who sinned shall bring for his offering one-tenth of an ephah of fine flour as a sin offering. [b]He shall put no oil on it, nor shall he put frankincense on it, for it *is* a sin offering. 12Then he shall bring it to the priest, and the priest shall take his handful of it [a]as a memorial portion, and burn *it* on the altar [b]according to the offerings made by fire to the LORD. It *is* a sin offering. 13[a]The priest shall make atonement for him, *for his sin that he has committed in any of these matters; and it shall be forgiven him. [b]*The rest* shall be the priest’s as a grain offering.’ ”

Offerings with Restitution

14Then the LORD spoke to Moses,

saying: 15[a]“If a person commits a trespass, and sins unintentionally in regard to the holy things of the LORD, then [b]he shall bring to the LORD as his trespass offering a ram without blemish from the flocks, with your valuation in shekels of silver according to [c]the shekel of the sanctuary, as a trespass offering. 16And he shall make restitution for the harm that he has done in regard to the holy thing, [a]and shall add one-fifth to it and give it to the priest. [b]So the priest shall make atonement for him with the ram of the trespass offering, and it shall be forgiven him.

17“If a person sins, and commits any of these things which are forbidden to be done by the commandments of the LORD, [a]though he does not know *it*, yet he is [b]guilty and shall

bear his [*]iniquity.
18[a]And he shall bring to the priest a ram without blemish from the flock, with your valuation, as a trespass offering. So the priest shall make atonement for him regarding his ignorance in which he erred and did not know *it*, and it shall be forgiven him. 19It is a trespass offering; [a]he has certainly trespassed against the LORD."

Leviticus 6

1And the LORD spoke to Moses, saying: 2"If a person sins and [a]commits a trespass against the LORD by [b]lying[*] to his neighbor about [c]what was delivered to him for safekeeping, or about [*]a pledge, or about a robbery, or if he has [d]extorted from his neighbor, 3or if he [a]has found what was lost and lies concerning it, and [b]swears falsely—in any one of these things that a man may do in which he sins: 4then it shall be, because he has sinned and is guilty, that he shall [*]restore [a]what he has stolen, or the thing which he has extorted, or what was delivered to him for safekeeping, or the lost thing which he found, 5or all that about which he has sworn falsely. He shall [a]restore its full value, add one-fifth more to it, *and* give it to whomever it belongs, on the day of his trespass offering. 6And he shall bring his trespass offering to the LORD, [a]a ram without blemish from the flock, with your [*]valuation, as a trespass offering, to the priest. 7[a]So the priest shall make atonement for him before the LORD, and he shall be forgiven for any one of these things that he may have done in which he trespasses."

The Law of the Burnt Offering

8Then the LORD

spoke to Moses, saying, 9“Command Aaron and his sons, saying, ‘This *is* the [a]law of the burnt offering: The burnt offering *shall* be on the hearth upon the altar all night until morning, and the fire of the altar shall be kept burning on it. 10[a]And the priest shall put on his linen garment, and his linen trousers he shall put on his body, and take up the ashes of the burnt offering which the fire has consumed on the altar, and he shall put them [b]beside the altar. 11Then [a]he shall take off his garments, put on other garments, and carry the ashes outside the camp [b]to a clean place. 12And the fire on the altar shall be kept burning on it; it shall not be put out. And the priest shall burn wood on it every morning, and lay the burnt offering in order on it; and he shall burn on it the [a]fat of the peace offerings. 13A fire shall always be burning on the [a]altar; it shall never go out.

The Law of the Grain Offering

14‘This *is* the law of the grain offering: The sons of Aaron shall offer it on the altar before the LORD. 15He shall take from it his handful of the fine flour of the grain offering, with its oil, and all the frankincense which *is* on the grain offering, 1and shall burn *it* on the altar *for* a sweet aroma, as a memorial to the LORD. 16And the remainder of it Aaron and his sons shall eat; with unleavened bread it shall be eaten in a holy place; in the court of the tabernacle of meeting they shall eat it. 17It shall not be baked with leaven. I have given it *as* their *portion of My offerings made by fire; it *is* most holy, like the sin offering and the [a]trespass offering. 18[a]All the males among the children of Aaron may eat it. [b]*It shall be* a statute forever in your generations concerning the offerings made by fire to the LORD. [c]Everyone who touches them must be holy.' "

19And the LORD spoke to Moses, saying, 20[a]"*This is* the offering of Aaron and his sons, which they shall offer to the LORD, *beginning* on the day when he is anointed: one-tenth of an [b]ephah of fine flour as a daily grain offering, half of it in the morning and half of it at night. 21It shall be made in a [a]pan with oil. *When it is* mixed, you shall bring it in. The baked pieces of the grain offering you shall offer *for* [*]a sweet aroma to the LORD. 22The priest from among his sons, [a]who is anointed in his place, shall offer it. *It is* a statute forever to the LORD. [b]It shall be [*]wholly burned. 23For every grain offering for the priest shall be wholly burned. It shall not be eaten.”

The Law of the Sin Offering

24Also the LORD spoke to Moses, saying, 25“Speak to Aaron and to his sons, saying, ‘This *is* the law of the sin offering: [a]In the place where the burnt offering is killed, the sin offering shall be killed before the LORD. It *is* most holy. 26[a]The priest who offers it for sin shall eat it. In a holy place it shall be eaten, in the cou1rt of the tabernacle of meeting. 27[a]Everyone who touches its flesh [*]must be holy. And when its blood is sprinkled on any garment, you shall wash that on which it was sprinkled, in a holy place. 28But the earthen vessel in which it is boiled [a]shall be broken. And if it is boiled in a bronze pot, it shall be both scoured and rinsed in water. 29All the males among the priests may eat it. It *is* most holy. 30[a]But no sin offering from which *any* of the blood is brought into the tabernacle of meeting, to make atonement in [*]the holy [b]*place*, shall be [c]eaten. It shall be [d]burned in the fire.

Leviticus 7

The Law of the Trespass Offering

1‘Likewise [a]this *is* the law of the trespass offering (it *is* most holy): 2In the place where they kill the burnt offering they shall kill the trespass offering. And its blood he shall sprinkle all around on the altar. 3And he shall offer from it all its fat. The fat tail and the fat that covers the entrails, 4the two kidneys and the fat that *is* on them by the flanks, and the fatty lobe *attached* to the liver above the kidneys, he shall remove; 5and the priest shall burn them on the altar *as* an offering made by fire to the LORD. It *is* a trespass offering. 6[a]Every male among the priests may eat it. It shall be eaten in a holy place. [b]It *is* most holy. 7[a]The trespass offering *is* like the sin offering; *there is* one law for them both: the priest who makes atonement with it shall have *it.* 8And the priest who offers anyone's burnt offering, that priest shall have for himself the skin of the burnt offering which he has offered. 9Also [a]every grain offering that is baked in the oven and all that is prepared in the covered pan, or [*]in a pan, shall be the priest's who offers it. 10Every grain offering, *whether* mixed with oil or dry, shall belong to all the sons of Aaron, to one *as much* as the other.

The Law of Peace Offerings

11[a]'This *is* the law of the sacrifice of peace offerings which he shall offer to the LORD: 12If he offers it for a thanksgiving, then he shall offer, with the sacrifice of thanksgiving, unleavened cakes mixed with oil, unleavened wafers [a]anointed with oil, or cakes of blended flour mixed with oil. 13Besides the cakes, *as* his offering he shall offer [a]leavened bread with the sacrifice of thanksgiving of his peace offering. 14And from it he shall offer one cake from each offering *as* a heave offering to the LORD. [a]It shall belong to the priest who sprinkles the blood of the peace offering.

15[a]'The flesh of the sacrifice of his peace offering for thanksgiving shall be eaten the same day it is offered. He shall not leave any of it until morning. 16But [a]if the sacrifice of his offering *is* a vow or a voluntary offering, it shall be eaten the same day that he offers his sacrifice; but on the next day the remainder of it also may be eaten; 17the remainder of the flesh of the sacrifice on the third day must be burned with fire. 18And if *any* of the flesh of the sacrifice of his peace offering is eaten at all on the third day, it shall not be accepted, nor shall it be [a]imputed to him; it shall be an [b]abomination *to* him who offers it, and the person who eats of it shall bear [*]guilt.

19'The flesh that touches any unclean thing shall not be eaten. It shall be burned with fire. And as for the *clean* flesh, all who are [*]clean may eat of it. 20But the person who eats the flesh of the sacrifice of the peace offering that *belongs* to the [a]LORD, [b]while he is unclean, that person [c]shall be cut off from his people. 21Moreover the person who touches any unclean thing, *such as* [a]human uncleanness, *an* [b]unclean animal, or any [c]abominable[*] unclean thing, and who eats the flesh of the sacrifice of the peace offering that *belongs* to the LORD, that person [d]shall be cut off from his people.' "

Fat and Blood May Not Be Eaten

22And the LORD spoke to Moses, saying, 23"Speak to the children of Israel, saying: [a]'You shall not eat any fat, of ox or sheep or goat. 24And the fat of an animal that dies *naturally*, and the fat of what is torn by wild beasts, may be used in any other way; but you shall by no means eat it. 25For whoever eats the fat of the animal of which men offer an offering made by fire to the LORD, the person who eats *it* shall be cut off from his people. 26[a]Moreover you shall not eat any blood in any of your dwellings, *whether* of bird or beast. 27Whoever eats any blood, that person shall be cut off from his people.' "

The Portion of Aaron and His Sons

28Then the LORD spoke to Moses, saying, 29"Speak to the children of Israel, saying: [a]'He who offers the sacrifice of his peace offering to the LORD shall bring his offering to the LORD from the sacrifice of his peace offering. 30[a]His own hands shall bring the offerings made by fire to the LORD. The fat with the breast he shall bring, that the [b]breast may be waved *as* a wave offering before the LORD. 31[a]And the priest shall burn the fat on the altar, but the [b]breast shall be Aaron's and his sons'. 32[a]Also the right thigh you shall give to the priest *as* a heave offering from the sacrifices of your peace offerings. 33He among the sons of Aaron, who offe1rs the blood of the peace offering and the fat, shall have the right thigh for *his* part. [34]For [a]the breast of the wave offering and the thigh of the heave offering I have taken from the children of Israel, from the sacrifices of their peace offerings, and I have given them to Aaron the priest and to his sons from the children of Israel by a statute forever.' "

[35]This *is* the consecrated portion for Aaron and his sons, from the offerings made by fire to the LORD, on the day when *Moses* presented them to [*]minister to the LORD as priests. [36]The LORD commanded this to be given to them by the children of Israel, [a]on the day that He anointed them, *by* a statute forever throughout their generations.

[37]This *is* the law [a]of

the burnt offering, [b]the grain offering, [c]the sin offering, [d]the trespass offering, [e]the consecrations, and [f]the sacrifice of the peace offering, 38which the LORD commanded Moses on Mount Sinai, on the day when He commanded the children of Israel [a]to offer their offerings to the LORD in the Wilderness of Sinai.

Leviticus 8

Aaron and His Sons Consecrated

1And the LORD spoke to Moses, saying: 2[a]“Take Aaron and his sons with him, and [b]the garments, [c]the anointing oil, a [d]bull as the sin offering, two [e]rams, and a basket of unleavened bread; 3and gather all the congregation together at the door of the tabernacle of meeting.”

4So Moses did as the LORD commanded him. And the congregation was gathered together at the door of the tabernacle of meeting. [5]And Moses said to the congregation, “This *is* what the LORD commanded to be done.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Laying on Hands

In Leviticus 8, Moses ordained Aaron and his sons into the priesthood as the spiritual leaders of the people by anointing them and laying his hands upon them to commit them to the priesthood. The anointing of God’s Spirit for leadership passed from Moses to Aaron through the laying on of hands. The anointing for leadership may be conveyed by the laying on of hands (Acts 13:1–3). In the same way, believers can be anointed in preparation for spiritual warfare and to receive the power and authority of God to defeat Satan and his demons. Anointing gives God's people God's power and authority to lead, shepherd, and nurture others, or to prepare to engage in spiritual warfare in order to defeat the schemes and plans of Satan.[*]

---

[*] Adapted from *Holy Spirit Encounter Bible*, Holy Spirit Encounter Moment, “Laying on

Hands,” at Numbers 27:18.

6Then Moses brought Aaron and his sons and [a]washed them with water. 7And he [a]put the tunic on him, girded him with the sash, clothed him with the robe, and put the ephod on him; and he girded him with the intricately woven band of the ephod, and with it tied *the ephod* on him. 8Then he put the breastplate on him, and he [a]put the [*]Urim and the Thummim in the breastplate. 9[a]And he put the turban on his head. Also on the turban, on its front, he put the golden plate, the holy crown, as the LORD had commanded Moses.

Lev. 8:6

Like

Moses, I bring my family before the Lord and wash them with the water of the Word.

10[a]Also Moses took the anointing oil, and anointed the tabernacle and all that *was* in it, and consecrated them. 11He sprinkled some of it on the altar seven times, anointed the1 altar and all its utensils, and the laver and its base, to *consecrate them. 12And he [a]poured some of the anointing oil on Aaron’s head and anointed him, to consecrate him.

13[a]Then Moses brought Aaron’s sons and put tunics on them, girded them with sashes, and put [*]hats on them, as the LORD had commanded Moses.

14[a]And he brought the bull for the sin offering. Then Aaron and his sons [b]laid their hands on the head of the bull for the sin offering, 15and Moses killed *it*. [a]Then he took the blood, and put *some* on the horns of the altar all around with his finger, and purified the altar. And he poured the blood at the base of the altar, and consecrated it, to make [*]atonement for it. 16[a]Then he took all the fat that *was* on the entrails, the fatty lobe *attached to* the liver, and the two kidneys with their fat, and Moses burned *them* on the altar. 17But the bull, its hide, its flesh, and its offal, he burned with fire outside the camp, as the LORD [a]had commanded Moses.

18[a]Then he brought the ram as the burnt offering. And Aaron and his sons laid their hands on the head of the ram, 19and Moses killed *it.* Then he sprinkled the blood all around on the altar. 20And he cut the ram into pieces; and Moses [a]burned the head, the pieces, and the fat. 21Then he washed the entrails and the legs in water. And Moses burned the whole ram on the altar. It *was* a burnt sacrifice for a [*]sweet aroma, an offering made by fire to the LORD, [a]as the LORD had commanded Moses.

22And [a]he brought the second ram, the ram of consecration. Then Aaron and his sons laid their hands on the head of the ram, 23and Moses killed *it.* Also he took *some1* of [a]its blood and put it on the tip of Aaron’s right ear, on the thumb of his right hand, and on the big toe of his right foot. 24Then he brought Aaron’s sons.

And Moses put *some* of the [a]blood on the tips of their right ears, on the thumbs of their right hands, and on the big toes of their right feet. And Moses sprinkled the blood all around on the altar. 25[a]Then he took the fat and the fat tail, all the fat that *was* on the entrails, the fatty lobe *attached to* the liver, the two kidneys and their fat, and the right thigh; 26[a]and from the basket of unleavened bread that was before the LORD he took one unleavened cake, a cake of bread *anointed with* oil, and one wafer, and put *them* on the fat and on the right thigh; 27and he put all *these* [a]in Aaron's hands and in his sons' hands, and waved them *as* a wave offering before the LORD. 28[a]Then Moses took them from their hands and burned *them* on the altar, on the burnt offering. They *were* consecration offerings for a sweet aroma. That *was* an offering made by fire to the LORD. [29]And [a]Moses took the [b]breast and waved it *as* a wave offering before the LORD. It was Moses' [c]part of the ram of consecration, as the LORD had commanded Moses.

[30]Then [a]Moses took some of the anointing oil and some of the blood which *was* on the altar, and sprinkled *it* on Aaron, on his garments, on his sons, and on the garments of his sons with him; and he consecrated Aaron, his garments, his sons, and the garments of his sons with him.

[31]And Moses said to Aaron and his sons, [a]"Boil the flesh *at* the door of the tabernacle of meeting, and eat it there with the bread that *is* in the basket of consecration offerings, as I

commanded, saying,
‘Aaron and his sons
shall eat it.’ [32][a]What
remains of the flesh
and of the bread you
shall burn with fire.
[33]And you shall not
go outside the door
of the tabernacle of
meeting *for* seven
days, until the days
of your consecration
are ended. For [a]seven
days he shall
[1]consecrate you.
[34][a]As he has done
this day, *so* the LORD
has commanded to
do, to make
atonement for you.
[35]Therefore you shall
stay *at* the door of
the tabernacle of
meeting day and
night for seven days,
and [a]keep the [*]charge
of the LORD, so that
you may not die; for
so I have been
commanded.” [36]So
Aaron and his sons
did all the things that
the LORD had
commanded by the
hand of Moses.

Leviticus 9

The Priestly Ministry Begins

[1]It came to pass on

the [a]eighth day that Moses called Aaron and his sons and the elders of Israel. [2]And he said to Aaron, “Take for yourself a young [a]bull as a sin offering and a ram as a burnt offering, without blemish, and offer *them* before the LORD. [3]And to the children of Israel you shall speak, saying, [a]‘Take a kid of the goats as a sin offering, and a calf and a lamb, *both* of the first year, without blemish, as a burnt offering, [4]also a bull and a ram as peace offerings, to sacrifice before the LORD, and [a]a grain offering mixed with oil; for [b]today the LORD will appear to you.’ ”

[5]So they brought what Moses commanded before the tabernacle of meeting. And all the congregation drew near and stood [*]before the LORD. [6]Then Moses said, “This *is* the thing which the LORD

commanded you to do, and the glory of the LORD will appear to you.” 7And Moses said to Aaron, “Go to the altar, [a]offer your sin offering and your burnt offering, and make atonement for yourself and for the people. [b]Offer the offering of the people, and make atonement for them, as the LORD commanded.”

8Aaron therefore went to the altar and killed the calf of the sin offering, which *was* for himself. 9Then the sons [1]of Aaron brought the blood to him. And he dipped his finger in the blood, put *it* on the horns of the altar, and poured the blood at the base of the altar. 10[a]But the fat, the kidneys, and the fatty lobe from the liver of the sin offering he burned on the altar, as the LORD had commanded Moses. 11[a]The flesh and the hide he burned with fire outside the camp.

12And he killed the burnt offering; and Aaron’s sons presented to him the blood, [a]which he sprinkled all around on the altar. 13[a]Then they presented the burnt offering to him, with its pieces and head, and he burned *them* on the altar. 14[a]And he washed the entrails and the legs, and burned *them* with the burnt offering on the altar.

15[a]Then he brought the people’s offering, and took the goat, which *was* the sin offering for the people, and killed it and offered it for sin, like the first one. 16And he brought the burnt offering and offered it [a]according to the [*]prescribed manner. 17Then he brought the grain offering, took a handful of it, and burned *it* on the altar, [a]besides the burnt sacrifice of the morning.

18He also killed the

bull and the ram *as* [a]sacrifices of peace offerings, which *were* for the people. And Aaron's sons presented to him the blood, which he sprinkled all around on the altar, 19and the fat from the bull and the ram—the fatty tail, what covers *the entrails* and the kidneys, and the fatty lobe *attached to* the liver; 20and they put the fat on the breasts. [a]Then he burned the fat on the altar; 21but the breasts and the right thigh Aaron waved [a]*as* a wave offering before the LORD, as Moses had commanded.

22Then Aaron lifted his hand toward the people, [a]blessed them, and came down from offering the sin offering, the burnt offering, and peace offerings. 23And Moses and Aaron went into the tabernacle of meeting, and came out and blessed the people. Then the glory of the LORD appeared to all the people, [24]and [a]fire came out from before the LORD and consumed the burnt offering and the fat on the altar. When all the people saw *it*, they [b]shouted and fell on their [c]faces.

Leviticus 10

The Profane Fire of Nadab and Abihu

[1]Then [a]Nadab and Abihu, the sons of Aaron, [b]each took his censer and put fire in it, put incense on it, and offered [c]profane fire before the LORD, which He had not commanded them. [2]So [a]fire went out from the LORD and devoured them, and they died before the LORD. [3]And Moses said to Aaron, "This is what the LORD spoke, saying:

'By those [a]who come near Me

I
must
be
regarded
as
holy;

And
before
all
the
people

I
must
be
glorified.’
”

So Aaron held his peace.

4Then Moses called Mishael and Elzaphan, the sons of Uzziel the uncle of Aaron, and said to them, “Come near, [a]carry your brethren from *before the sanctuary out of the camp.” 5So they went near and carried them by their tunics out of the camp, as Moses had said.

6And Moses said to Aaron, and to Eleazar and Ithamar, his sons, “Do not *uncover your heads nor tear your clothes, lest you die, and [a]wrath come upon all the people. But let your brethren, the whole house of Israel, [*]bewail the burning which the LORD has kindled. 7[a]You shall not go out from the door of the tabernacle of meeting, lest you die, [b]for the anointing oil of the LORD *is* upon you." And they did according to the word of Moses.

Conduct Prescribed for Priests

8Then the LORD spoke to Aaron, saying: 9[a]"Do not drink wine or intoxicating drink, you, nor your sons with you, when you go into the tabernacle of meeting, lest you die. *It shall be* a statute forever throughout your generations, 10that you may [a]distinguish between holy and unholy, and between unclean and clean, 11[a]and that you may teach the children of Israel all the statutes which the LORD has spoken to them by the hand of Moses.”

12And Moses spoke to Aaron, and to Eleazar and Ithamar, his sons who were left: [a]“Take the grain offering that remains of the offerings made by fire to the LORD, and eat it without leaven beside the altar; [b]for it *is* most holy. 13You shall eat it in a [a]holy place, because it *is* your [*]due and your sons’ due, of the sacrifices made by fire to the LORD; for [b]so I have been commanded. 14[a]The breast of the wave offering and the thigh of the heave offering you shall eat in a clean place, you, your sons, and your [b]daughters with you; for *they are* your due and your sons’ [c]due, *which* are given from the sacrifices of peace offerings of the children of Israel. 15[a]The thigh of the heave offering and the breast of the wave offering they shall bring with the offerings of fat made by fire, to offer *as* a wave offering before the LORD. And it shall be yours and your sons’ with you, by a statute forever, as the LORD has commanded.”

[16]Then Moses made careful inquiry about [a]the goat of the sin offering, and there it was—burned up. And he was angry with Eleazar and Ithamar, the sons of Aaron *who were* left, saying, [17][a]“Why have you not eaten the sin offering in a holy place, since it *is* most holy, and *God* has given it to you to bear [b]the guilt of the congregation, to make atonement for them before the LORD? [18]See! [a]Its blood was not brought inside [*]the *holy place*; indeed you should have eaten it in a holy *place*, [b]as I commanded.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Tabernacle — Picture of Our Being

The Old Testament tabernacle is a picture of our being. The courtyard represents our flesh, the holy place our soul, and the holy of holies our spirit. The holy of holies is where the Spirit of God dwells. This is important in understanding how the temple is defiled. Where does the Spirit of God dwell in the believer? In our spirit. Not in our soul and flesh — that is the part of us that we can yield to God or to disobedience. Our soul is made up of our mind, will, and emotions. Our flesh is that which can be seen, touched, and felt; it has substance. The spirit has no substance; it is intangible. It is our spirit that is born again, and it is in our spirit that the Holy Spirit of God takes up residence.[*]

---

[*] Don Dickerman *Keep the Pigs Out,* 174.

19And Aaron said to Moses, “Look, [a]this day they have offered their sin offering and their burnt offering before the LORD, and such things have befallen me! *If* I had eaten the sin offering today, [b]would it have been accepted in the sight of the LORD?” 20So when Moses heard *that*, he was content.

Leviticus 11

Foods Permitted and Forbidden

1Now the LORD spoke to Moses and Aaron, saying to them, 2“Speak to the children of Israel, saying, [a]‘These *are* the animals which you may eat among all the animals that *are* on the earth: 3Among the animals, whatever divides the hoof, having cloven hooves *and* chewing the cud—that you may eat. 4Nevertheless these you shall [a]not eat among those that chew the cud or those that have cloven hooves: the camel, because it chews the cud but does not have cloven hooves, is [*]unclean to you; 5the *rock hyrax, because it chews the cud but does not have cloven hooves, *is* *unclean to you; 6the hare, because it chews the cud but does not have cloven hooves, *is* unclean to you; 7and the swine, though it divides the hoof, having cloven hooves, yet does not chew the cud, [a]*is* unclean to you. 8Their flesh you shall not eat, and their carcasses you shall not touch. [a]They *are* unclean to you.

9[a]‘These you may eat of all that *are* in the water: whatever in the water has fins and scales, whether in the seas or in the rivers—that you may eat. 10But all in the seas or in the rivers that do not have fins and scales, all that move in the water or any living thing which *is* in the water, they *are* *an [a]abomination to you. 11They shall be an abomination to you; you shall not eat their flesh, but you shall regard their carcasses as an abomination. 12Whatever in the water does not have fins or scales—that

shall be an
abomination to you.

13[a]‘And these you
shall regard as an
abomination among
the birds; they shall
not be eaten, they *are*
an abomination: the
eagle, the vulture,
the buzzard, 14the
kite, and the falcon
after its kind; 15every
raven after its kind,
16the ostrich, the
short-eared owl, the
sea gull, and the
hawk after its kind;
17the little owl, the
fisher owl, and the
screech owl; 18the
white owl, the
jackdaw, and the
carrion vulture; 19the
stork, the heron after
its kind, the hoopoe,
and the bat.

20‘All flying insects
that creep on *all*
fours *shall be* an
abomination to you.
21Yet these you may
eat of every flying
insec1t that creeps
on *all* fours: those
which have jointed
legs above their feet
with which to leap
on the earth. 22These
you may eat: [a]the
locust after its kind,

the destroying locust after its kind, the cricket after its kind, and the grasshopper after its kind. 23But all *other* flying insects which have four feet *shall* be an abomination to you.

Unclean Animals

24‘By these you shall become [*]unclean; whoever touches the carcass of any of them shall be unclean until evening; 25whoever carries part of the carcass of any of them [a]shall wash his clothes and be unclean until evening: 26*The carcass* of any animal which divides the foot, but is not cloven-hoofed or does not chew the cud, *is* unclean to you. Everyone who touches it shall be unclean. 27And whatever goes on its paws, among all kinds of animals that go on *all* fours, those *are* unclean to you. Whoever touches any such carcass shall be unclean until evening. 28Whoever carries *any such* carcass shall wash his clothes and be unclean until evening. It *is* unclean to you.

29‘These also *shall be* unclean to you among the creeping things that creep on the earth: the mole, [a]the mouse, and the large lizard after its kind; 30the gecko, the monitor lizard, the sand reptile, the sand lizard, and the chameleon. 31These *are* unclean to you among all that creep. Whoever [a]touches them when they are dead shall be unclean until evening. 32Anything on which *any* of them falls, when they are dead shall be [*]unclean, whether *it is* any item of wood or clothing or skin or sack, whatever item *it is,* in which *any* work is done, [a]it must be put in water. And it shall be unclean until evening; then it shall be clean. 33Any [a]earthen vessel into which *any* of them falls [b]you shall break; and whatever *is* in it shall be unclean: [34]in such a vessel, any edible food upon which water falls becomes unclean, and any drink that may be drunk from it becomes unclean. [35]And everything on which *a part* of *any such* carcass falls shall be unclean; *whether it is* an1 oven or cooking stove, it shall be broken down; *for* they *are* unclean, and shall be [*]unclean to you. [36]Nevertheless a spring or a cistern, *in which there is* plenty of water, shall be clean, but whatever touches any such carcass becomes unclean. [37]And if a part of *any such* carcass falls on any planting seed which is to be sown, it *remains* clean. [38]But if water is put on the seed, and if *a part* of *any such* carcass falls on it, it *becomes* unclean to you.

[39]‘And if any animal which you

may eat dies, he who touches its carcass shall be [a]unclean until evening. 40[a]He who eats of its carcass shall wash his clothes and be unclean until evening. He also who carries its carcass shall wash his clothes and be unclean until evening.

41‘And every creeping thing that creeps on the earth *shall be* *an abomination. It shall not be eaten. 42Whatever crawls on its belly, whatever goes on *all* fours, or whatever has many feet among all creeping things that creep on the earth—these you shall not eat, for they *are* an abomination. 43[a]You shall not make *yourselves *abominable with any creeping thing that creeps; nor shall you make yourselves unclean with them, lest you be defiled by them. 44For I *am* the LORD your [a]God. You shall therefore consecrate yourselves, and [b]you shall be holy; for I *am* holy. Neither shall you defile yourselves with any creeping thing that creeps on the earth. 45 [a]For I *am* the LORD who brings you up out of the land of Egypt, to be your God. [b]You shall therefore be holy, for I *am* holy.

46 ‘This *is* the law [*]of the animals and the birds and every living creature that moves in the waters, and of every creature that creeps on the earth, 47 [a]to distinguish between the unclean and the clean, and between the animal that may be eaten and the animal that may not be eaten.’ ”

Leviticus 12

The Ritual After Childbirth

1 Then the LORD spoke to Moses, saying, 2 “Speak to the children of Israel, saying: ‘If a [a]woman has conceived, and

borne a male child, then [b]she shall be [*]unclean seven days; [c]as in the days of her customary impurity she shall be unclean. 3And on the [a]eighth day the flesh of his foreskin shall be circumcised. 4She shall then continue in the blood of *her* purification thirty-three days. She shall not touch any [*]hallowed thing, nor come into the sanctuary until the days of her purification are fulfilled.

5‘But if she bears a female child, then she shall be unclean two weeks, as in her customary impurity, and she shall continue in the blood of *her* purification sixty-six days.

6[a]‘When the days of her purification are fulfilled, whether for a son or a daughter, she shall bring to the priest a [b]lamb [*]of the first year as a burnt offering, and a young pigeon or a turtledove as a [c]sin offering, to the door of the tabernacle of meeting. 7Then he shall offer it before the LORD, and make [*]atonement for her. And she shall be clean from the flow of her blood. This *is* the law for her who has borne a male or a female.

8[a]‘And if she is not able to bring a lamb, then she may bring two turtledoves or two young pigeons—one as a burnt offering and the other as a sin offering. [b]So the priest shall make atonement for her, and she will be [*]clean.’ ”

Leviticus 13

The Law Concerning Leprosy

1And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying: 2“When a man has on the skin of his body a swelling, [a]a scab, or a bright spot, and it becomes on the skin of his body *like* a [*]leprous sore, [b]then he shall be brought to Aaron the priest or to one of his sons the priests. 3The priest shall examine the sore on the skin of the body; and if the hair on the sore has turned white, and the sore appears to *be* deeper than the skin of his body, it *is* a leprous sore. Then the priest shall examine him, and pronounce him [*]unclean. 4But if the bright spot *is* white on the skin of his body, and does not appear *to be* deeper than the skin, and its hair has not turned white, then the priest shall isolate *the one who has* the sore [a]seven days. 5And the priest shall examine him on the seventh day; and indeed *if* the sore appears to be as it was, *and* the sore has not spread on the skin, then the priest shall isolate him another seven days. 6Then the priest shall examine him again on the seventh day; and indeed *if* the sore has faded, *and* the sore has not spread on the skin, then the priest shall pronounce him clean; it *is only* a scab, and he [a]shall wash his clothes and be clean. 7But if the scab should at all spread over the skin, after he has been seen by the priest for his cleansing, he shall be seen by the priest again. 8And *if* the priest sees that the scab has indeed spread on the skin, then the priest shall pronounce him *unclean. It *is* leprosy.

9"When the leprous sore is on a person, then he shall be brought to the priest. 10[a]And the priest shall examine *him;* and indeed *if* the swelling on the skin *is* white, and it has turned the hair white, and *there is* a spot of raw flesh in the swelling, 11it *is* an old leprosy on the skin of his body. The priest shall pronounce him *unclean, and shall not isolate him, for he *is* unclean.

12“And if leprosy breaks out all over the skin, and the leprosy covers all the skin of the *one who has* the sore, from his head to his foot, wherever the priest looks, 13then the priest shall consider; and indeed *if* the leprosy has covered all his body, he shall pronounce *him* clean *who has* the sore. It has all turned [a]white. He *is* clean. 14But when raw flesh appears on him, he shall be unclean. 15And the priest shall examine the raw flesh and pronounce him to be unclean; *for* the raw flesh *is* unclean. It *is* leprosy. 16Or if the raw flesh changes and turns white again, he shall come to the priest. 17And the priest shall examine him; and indeed *if* the sore has turned white, then the priest shall pronounce *him* clean *who has* the sore. He *is* clean.

[18]“If the body develops a [a]boil in the skin, and it is healed, [19]and in the place of the boil there comes a white swelling or a bright spot, reddish-white, then it shall be shown to the priest; [20]and *if,* when the priest sees it, it indeed appears deeper than the skin, and its hair has turned white, the priest shall pronounce him unclean. It *is* a leprous sore which has broken out of the boil. [21]But if the priest examines it, and indeed *there are* no white hairs in it, and it is not deeper than the skin, but has faded, then the priest shall isolate him seven days; [22]and if it should at all spread over the skin, then the priest shall pronounce him unclean. It *is* a [*]leprous sore. [23]But if the bright spot stays in one place, *and* has not spread, it *is* the

scar of the boil; and the priest shall pronounce him clean.

24“Or if the body receives a [a]burn on its skin by fire, and the raw *flesh* of the burn becomes a bright spot, reddish-white or white, 25then the priest shall examine it; and indeed *if* the hair of the bright spot has turned white, and it appears deeper than the skin, it *is* leprosy broken out in the burn. Therefore the priest shall pronounce him unclean. It *is* a leprous sore. 26But if the priest examines it, and indeed *there are* no white hairs in the bright spot, and it *is* not deeper than the skin, but has faded, then the priest shall isolate him seven days. 27And the priest shall examine him on the seventh day. If it has at all spread over the skin, then the priest shall pronounce him unclean. It *is* a leprous sore. 28But if the bright spot stays in one place, *and* has not spread on the skin, but has faded, it *is* a swelling from the burn. The priest shall pronounce him clean, for it *is* the scar from the burn.

[29]“If a man or woman has a sore on the head or the beard, [30]then the priest shall examine the sore; and indeed if it appears deeper than the skin, *and there is* in it thin yellow hair, then the priest shall pronounce him unclean. It *is* a scaly leprosy of the head or beard. [31]But if the priest examines the scaly sore, and indeed it does not appear deeper than the skin, and *there is* no black hair in it, then the priest shall isolate *the one who has* the scal1e seven days. [32]And on the seventh day the priest shall examine the sore; and indeed *if* the scale has not spread, and there is no yellow hair in it,

and the scale does not appear deeper than the skin, [33]he shall shave himself, but the scale he shall not shave. And the priest shall isolate *the one who has* the scale another seven days. [34]On the seventh day the priest shall examine the scale; and indeed *if* the scale has not spread over the skin, and does not appear deeper than the skin, then the priest shall pronounce him clean. He shall wash his clothes and be clean. [35]But if the scale should at all spread over the skin after his cleansing, [36]then the priest shall examine him; and indeed *if* the scale has spread over the skin, the priest need not seek for yellow hair. He *is* unclean. [37]But if the scale appears to be at a standstill, and there is black hair grown up in it, the scale has healed. He *is* clean, and the priest shall pronounce him clean.

38“If a man or a woman has bright spots on the skin of the body, *specifically* white bright spots, 39then the priest shall look; and indeed *if* the bright spots on the skin of the body *are* dull white, it *is* a white spot *that* grows on the skin. He *is* clean.

40“As for the man whose hair has fallen from his head, he *is* bald, *but* he *is* clean. 41He whose hair has fallen from his forehead, he *is* bald on the forehead, *but* he *is* clean. 42And if there is on the bald head or bald [a]forehead a reddish-white sore, it *is* leprosy breaking out on his bald head or his bald forehead. 43Then the priest shall examine it; and indeed *if* the swelling of the sore *is* reddish-white on his bald head or on his bald forehead, as the appearance of leprosy on the skin of the body, 44he is a leprous man. He *is* unclean. The priest shall surely pronounce him [*]unclean; his sore *is* on his [a]head.

45“Now the leper on whom the sore *is*, his clothes shall be torn and his head [a]bare; and he shall [b]cover his mustache, and cry, [c]‘Unclean! Unclean!’ 46He shall be unclean. All the days he has the sore he shall be unclean. He *is* unclean, and he shall [*]dwell alone; his dwelling *shall be* [a]outside the camp.

The Law Concerning Lep1rous Garments

47“Also, if a garment has a [*]leprous plague in it, *whether it is* a woolen garment or a linen garment, 48whether *it is* in the warp or woof of linen or wool, whether in leather or in anything made of leather, 49and if the plague is greenish or reddish in the garment or in the leather, whether in the warp or in the woof, or in anything made of leather, it *is* a *leprous plague and shall be shown to the priest. 50The priest shall examine the plague and isolate *that which has* the plague seven days. 51And he shall examine the plague on the seventh day. If the plague has spread in the garment, either in the warp or in the woof, in the leather *or* in anything made of leather, the plague *is* an [a]active leprosy. It *is* unclean. 52He shall therefore burn that garment in which is the plague, whether warp or woof, in wool or in linen, or anything of leather, for it *is* an active leprosy; *the garment* shall be burned in the fire.

53"But if the priest examines *it,* and indeed the plague has not spread in the garment, either in the warp or in the woof, or in anything made of leather, 54then the priest shall command that they wash *the thing* in which *is* the plague; and he shall isolate it another seven days. 55Then the priest shall examine the plague after it has been washed; and indeed *if* the plague has not changed its color, though the plague has not spread, it *is* unclean, and you shall burn it in the fire; it continues eating away, *whether* the damage *is* outside or inside. 56If the priest examines *it*, and indeed the plague has faded after washing it, then he shall tear it out of the garment, whether out of the warp or out of the woof, or out of the leather. 57But if it appears again in the garment, either in the warp or in the woof, or in anything made of leather, it *is* a spreading *plague*; you shall burn with fire that in which is the plague. 58And if you wash the garment, either warp or woof, or whatever is made of leather, if the plague has disappeared from it, then it shall be washed a second time, and shall be clean.

59“This *is* the law of the leprous plague in a garment of wool or linen, either in the warp or woof, or in anything made of leather, to pronounce it clean or to pronounce it unclean.”

Leviticus 14

The Ritual for Cleansing Healed Lepers

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2“This shall be the law of the *leper for the day of his cleansing: He [a]shall be brought to the priest. 3And the priest shall go out of the camp, and the priest shall examine *him;* and indeed, *if* the *leprosy is healed in the leper, 4then the priest shall command to take for him who is to be cleansed two living *and* clean birds, [a]cedar wood, [b]scarlet, and [c]hyssop. 5And the priest shall command that one of the birds be killed in an earthen vessel over running water. 6As for the living bird, he shall take it, the cedar wood and the scarlet and the hyssop, and dip them and the living bird in the blood of the bird *that was* killed over the running water. 7And he shall [a]sprinkle it [b]seven times on him who is to be cleansed from the leprosy, and shall pronounce him clean, and shall let the living bird loose in the open field. 8He who is to be cleansed [a]shall wash his clothes, shave off all his hair, and [b]wash himself in water, that he may be clean. After that he shall come into the camp, and [c]shall stay outside his tent seven days. 9But on the [a]seventh day he shall shave all the hair off his head and his beard and his eyebrows—all his hair he shall shave off. He shall wash his clothes and wash his body in water, and he shall be clean.

10“And on the eighth day [a]he shall take two male lambs without blemish, one ewe lamb of the first year without blemish, three-tenths *of an ephah* of fine flour mixed with oil as [b]a grain offering, and one log of oil. 11Then the priest who makes *him* clean shall present the man who is to be made clean, and those things, before the LORD, *at* the door of the tabernacle of meeting. 12And the priest shall take one male lamb and [a]offer it as a trespass offering, and the log of oil, and [b]wave them *as* a wave offering before the LORD. 13Then he shall kill the lamb [a]in the place where he kills the sin offering and the burnt offering, in a holy place; for [b]as the sin offering *is* the priest's, so *is* the trespass offering. [c]It *is* most holy. 14The priest shall take *some* of the blood of the trespass offering, and the priest shall put *it* [a]on the tip of the right ear of him who is to be cleansed, on the thumb of his right hand, and on the big toe of his right foot. 15And the priest shall take *some* of the log of oil, and pour *it* into the palm of his own left hand. 16Then the priest shall dip his right finger in the oil that *is* in his left hand, and shall [a]sprinkle some of the oil with his finger seven times before the LORD. 17And of the rest of the oil in his hand, the priest shall put *some* on the tip of the right ear of him who is to be cleansed, on the thumb of his right hand, and on the big toe of his right foot, on the blood of the trespass offering. 18The rest of the oil that *is* in the priest's hand he shall put on the head of him who is to be cleansed. [a]So the priest shall make [*]atonement for him before the LORD.

19“Then the priest shall offer [a]the sin offering, and make atonement for him who is to be cleansed from his uncleanness. Afterward he shall kill the burnt offering. 20And the priest shall offer the burnt offering and the grain offering on the altar. So the priest shall make atonement for him, and he shall be [a]clean.

21“But [a]if he *is* poor and cannot afford it, then he shall take one male lamb *as* a trespass offering to be waved, to make atonement for him, [*]one-tenth *of an ephah* of fine flour mixed with oil as a grain offering, a log of oil, 22[a]and two turtledoves or two young pigeons, such as he is able to afford: one shall be a sin offering and the other a burnt offering. 23[a]He shall bring them to the priest on the eighth day for his cleansing, to the door of the tabernacle of meeting, before the LORD. 24[a]And [1]the priest shall take the lamb of the trespass offering and the log of oil, [b]and the priest shall wave them *as* a wave offering before the LORD. 25Then he shall kill the lamb of the trespass offering, and the priest shall take *some* of the blood of the trespass offering and put *it* on the tip of the right ear of him who is to be cleansed, on the thumb of his right hand, and on the big toe of his right foot. 26And the priest shall pour some of the oil into the palm of his own left hand. 27Then the priest shall sprinkle with his right finger *some* of the oil that *is* in his left hand seven times before the LORD. 28And the priest shall put *some* of the oil that *is* in his hand on the tip of the right ear of him who is to be cleansed, on the thumb of the right hand, and on the big toe of his right foot, on the place of the blood of the trespass offering. 29The rest of the oil that *is* in the priest's hand he shall put on the head of him who is to be cleansed, to make atonement for him before the LORD. 30And he shall offer one of [a]the turtledoves or young pigeons, such as he can afford—31such as he is able to afford, the one *as* a sin offering and the other *as* a burnt offering, with the grain offering. So the priest shall make atonement for him who is to be cleansed before the LORD. 32This *is* the law *for one* who had a leprous sore, who cannot afford [a]the usual cleansing."

The Law Concerning Leprous Houses

33And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying: 34[a]“When you have come into the land of Canaan, which I give you as a possession, and [b]I put the [*]leprous plague in a house in the land of your possession, 35and he who owns the house comes and tells the priest, saying, ‘It seems to me that *there is* [a]some plague in the house,’ 36then the priest shall command that they empty the house, before the priest goes *into it* to examine the plague, that all that *is* in the house may not be made unclean; and afterward the priest shall go in to examine the house. 37And he shall examine the plague; and indeed *if* the plague *is* on the walls of the house with ingrained streaks, greenish or reddish, which appear to be [*]deep in the wall, 38then t1he priest shall go out of the house, to the door of the house, and *shut up the house seven days. 39And the priest shall come again on the seventh day and look; and indeed *if* the plague has spread on the walls of the house, 40then the priest shall command that they take away the stones in which *is* the plague, and they shall cast them into an unclean place outside the city. 41And he shall cause the house to be scraped inside, all around, and the dust that they scrape off they shall pour out in an unclean place outside the city. 42Then they shall take other stones and put *them* in the place of *those* stones, and he shall take other mortar and plaster the house.

43"Now if the plague comes back and breaks out in the house, after he has taken away the stones, after he has scraped the house, and after it is plastered, 44then the priest shall come and look; and indeed *if* the plague has spread in the house, it *is* [a]an active leprosy in the house. It *is* unclean. 45And he shall break down the house, its stones, its timber, and all the plaster of the house, and he shall carry *them* outside the city to an unclean place. 46Moreover he who goes into the house at all while it is shut up shall be *unclean until [a]evening. 47And he who lies down in the house shall [a]wash his clothes, and he who eats in the house shall wash his clothes.

48"But if the priest comes in and examines *it,* and indeed the plague has not spread in the house after the house was plastered, then the priest shall pronounce the house clean, because the plague is healed. 49And [a]he shall take, to cleanse the house, two birds, cedar wood, scarlet, and hyssop. [50]Then he shall kill one of the birds in an earthen vessel over running water; [51]and he shall take the cedar wood, the hyssop, the scarlet, and the living bird, and dip them in the blood of the slain bird and in the running water, and sprinkle the house seven times. [52]And he shall [*]cleanse the house with the blood of the bird and the running water and the living bird, with the cedar wood, the hyssop, and the scarlet. [53]Then he shall let the living bird loose outside the city in the open field, and [a]make atonement for the house, and it shall be clean.

[54]“This *is* the law f1or any [a]leprous sore and scale, [55]for the [a]leprosy of a garment [b]and of a house, [56][a]for a swelling and a scab and a bright spot, [57]to [a]teach when *it is* unclean and when *it is* clean. This *is* the law of leprosy.”

Leviticus 15

The Law Concerning Bodily Discharges

1And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying, 2“Speak to the children of Israel, and say to them: [a]‘When any man has a discharge from his body, his discharge *is* unclean. 3And this shall be his uncleanness in regard to his discharge—whether his body runs with his discharge, or his body is stopped up by his discharge, it *is* his uncleanness. 4Every bed is [*]unclean on which he who has the discharge lies, and everything on which he sits shall be unclean. 5And whoever [a]touches his bed shall [b]wash his clothes and [c]bathe in water, and be unclean until evening. 6He who sits on anything on which he who has the [a]discharge sat shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. [7]And he who touches the body of him who has the discharge shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. [8]If he who has the discharge [a]spits on him who is clean, then he shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. [9]Any saddle on which he who has the discharge rides shall be unclean. [10]Whoever touches anything that was under him shall be unclean until evening. He who carries *any of* those things shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. [11]And whomever the one who has the discharge touches, and has not rinsed his hands in water, he shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until

evening. 12 [1]The
[a]vessel of earth that
he who has the
discharge touches
shall be broken, and
every vessel of wood
shall be rinsed in
water.

13 ‘And when he
who has a discharge
is cleansed of his
discharge, then [a]he
shall count for
himself seven days
for his cleansing,
wash his clothes, and
bathe his body in
running water; then
he shall be clean.
14 On the eighth day
he shall take for
himself [a]two
turtledoves or two
young pigeons, and
come before the
LORD, to the door of
the tabernacle of
meeting, and give
them to the priest.
15 Then the priest
shall offer them, [a]the
one *as* a sin offering
and the other *as* a
burnt offering. [b]So
the priest shall make
[*]atonement for him
before the LORD
because of his
discharge.

16 [a]‘If any man has

an emission of semen, then he shall wash all his body in water, and be unclean until evening. 17And any garment and any leather on which there is semen, it shall be washed with water, and be unclean until evening. 18Also, when a woman lies with a man, and *there is* an emission of semen, they shall bathe in water, and [a]be unclean until evening.

19[a]‘If a woman has a discharge, *and* the discharge from her body is blood, she shall be *set apart seven days; and whoever touches her shall be unclean until evening. 20Everything that she lies on during her impurity shall be unclean; also everything that she sits on shall be unclean. 21Whoever touches her bed shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. 22And whoever touches anything that she sat on shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening. 23If *anything* is on *her* bed or on anything on which she sits, when he touches it, he shall be unclean until evening. 24And [a]if any man lies with her at all, so that her impurity is on him, he shall be *unclean seven days; and every bed on which he lies shall be unclean.

25‘If [a]a woman h1as a discharge of blood for many days, other than at the time of her *customary* impurity, or if it runs beyond her *usual time of* impurity, all the days of her unclean discharge shall be as the days of her *customary* impurity. She *shall be* unclean. 26Every bed on which she lies all the days of her discharge shall be to her as the bed of her impurity; and whatever she sits on shall be unclean, as the uncleanness of her impurity. 27Whoever touches those things shall be unclean; he shall wash his clothes and bathe in water, and be unclean until evening.

28‘But [a]if she is cleansed of her discharge, then she shall count for herself seven days, and after that she shall be clean. 29And on the eighth day she shall take for herself two turtledoves or two young pigeons, and bring them to the priest, to the door of the tabernacle of meeting. 30Then the priest shall offer the one *as* a sin offering and the other *as* a [a]burnt offering, and the priest shall make atonement for her before the LORD for the discharge of her uncleanness.

31‘Thus you shall [a]separate the children of Israel from their uncleanness, lest they die in their uncleanness when they [b]defile My tabernacle that *is* among them. 32[a]This *is* the law for one who has a discharge, [b]and *for him* who emits semen and is unclean thereby, 33[a]and for her who is indisposed because of her *customary* impurity, and for one who has a discharge, either man [b]or woman, [c]and for him who lies with her who is unclean.' "

Leviticus 16

The Day of Atonement

1Now the LORD spoke to Moses after [a]the death of the two sons of Aaron, when they offered *profane fire* before the LORD, and died; 2and the LORD said to Moses: "Tell Aaron your brother [a]not to come at *just* any time into the Holy *Place* inside the veil, before the mercy seat which *is* on the ark, lest he die; for [b]I will a1ppear in the cloud above the mercy seat.

3[*]“Thus Aaron shall [a]come into the Holy *Place:* [b]with *the blood of* a young bull as a sin offering, and *of* a ram as a burnt offering. 4He shall put the [a]holy linen tunic and the linen trousers on his body; [b]he shall be girded with a linen sash, and with the linen turban he shall be attired. These *are* holy garments. Therefore he shall wash his body in water, and put them on. 5And he shall take from [a]the congregation of the children of Israel two kids of the goats as a sin offering, and one ram as a burnt offering.

6“Aaron shall offer the bull as a sin offering, which *is* for himself, and [a]make atonement for himself and for his house. 7He shall take the two goats and present them before the LORD *at* the door of the tabernacle of meeting. 8Then Aaron shall cast lots for the two goats: one lot for the LORD and the other lot for the scapegoat. 9And Aaron shall bring the goat on which the LORD's lot fell, and offer it *as* a sin offering. 10But the goat on which the lot fell to be the scapegoat shall be presented alive before the LORD, to make [a]atonement upon it, *and* to let it go as the scapegoat into the wilderness.

11"And Aaron shall bring the bull of the sin offering, which is for himself, and make atonement for [a]himself and for his house, and shall kill the bull as the sin offering which *is* for himself. 12Then he shall take [a]a censer full of burning coals of fire from the altar before the LORD, with his hands full of [b]sweet incense beaten fine, and bring *it* inside the veil. 13[a]And he shall put the incense on the fire before the LORD, that the cloud of incense may cover the [b]mercy seat that *is* on the Testimony, lest he [c]die. 14 [a]He shall take some of the blood of the bull and [b]sprinkle *it* with his finger on the mercy seat on the east *side;* and before the mercy seat he shall sprinkle some of the blood with his finger seven times.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Inner Man

Perhaps the spirit is also the “inner man.” It is very important to understand that we are a trinity, a three-part being. The spirit has been born again; the soul and the flesh are “being saved” as we yield ourselves and conform to the image of Christ. It is the soul and the flesh that can be inhabited by demon powers. It is the soul where spiritual battles take place, often manifesting in the flesh.*

15[a]“Then he shall kill the goat of the sin offering, which *is* for the people, bring its blood [b]inside the veil, do with that blood as he did with the blood of the bull, and sprinkle it on the mercy seat and before the mercy seat. 16So he shall [a]make atonement for the Holy *Place*, because of the uncleanness of the children of Israel, and because of their transgressions, for all their sins; and so he shall do for the tabernacle of meeting which remains among them in the midst of their uncleanness. 17There shall be [a]no man in the tabernacle of meeting when he goes in to make atonement in the Holy *Place*, until he comes out, that he may make atonement for himself, for his household, and for all the assembly of Israel. 18And he shall go out to the altar that *is* before the LORD, and make atonement for [a]it, and shall take some of the blood of the bull and some of the blood of the goat, and put it on the horns of the altar all around. 19Then he shall sprinkle some of the blood on it with his finger seven times, cleanse it, and [a]consecrate* it from the *uncleanness of the children of Israel.

---

* Don Dickerman, *Keep the Pigs Out,* 174.

20“And when he has made an end of atoning for the Holy *Place*, the tabernacle of meeting, and the altar,1 he shall bring the live goat. 21Aaron shall lay both his hands on the head of the live goat, [a]confess over it all the iniquities of the children of Israel, and all their transgressions, concerning all their sins, [b]putting them on the head of the goat, and shall send *it* away into the wilderness by the hand of a suitable man. 22The goat *shall [a]bear on itself all their iniquities to an *uninhabited land; and he shall [b]release the goat in the wilderness.

23“Then Aaron shall come into the tabernacle of meeting, [a]shall take off the linen garments which he put on when he went into the Holy *Place*, and shall leave them there. 24And he shall wash his body with water in a holy place, put on his garments, come out and offer his burnt offering and the burnt offering of the people, and make *atonement for himself and for the people. 25[a]The fat of the sin offering he shall burn on the altar. 26And he who released the goat as the scapegoat shall wash his clothes [a]and bathe his body in water, and afterward he may come into the camp. 27[a]The bull *for* the sin offering and the goat *for* the sin offering, whose blood was brought in to make atonement in the Holy *Place*, shall be carried outside the camp. And they shall burn in the fire their skins, their flesh, and their offal. 28Then he who burns them shall wash his

clothes and bathe his
body in water, and
afterward he may
come into the camp.

29“*This* shall be a
statute forever for
you: [a]In the seventh
month, on the tenth
day of the month,
you shall *afflict your
souls, and do no
work at all, *whether* a
native of your own
country or a stranger
who *dwells among
you. 30For on that
day *the priest* shall
make *atonement for
you, to [a]cleanse you,
that you may be
clean from all your
sins before the LORD.
31[a]It *is* a sabbath of
solemn rest for you,
and you shall afflict
your souls. *It is* a
statute forever.
32[a]And the priest,
who is anointed and
[b]consecrated to
minister as priest in
his father’s place,
shall make
atonement, and put
on the linen clothes,
the holy garments;
33then he shall make
*atonement for *the
Holy Sanctuary, and
he shall make

atonement for the tabernacle of meeting and for the altar, and he shall make atonement for the priests and for all the people of the assembly. 34[a]This shall be an everlasting statute for you, to make atonement for the children of Israel, for all their sins, [b]once a year.” And he did as the LORD commanded Moses.

Lev. 16:32–33

The man of God, who is consecrated to minister as priest, will seek God in prayer on

my behalf.

Leviticus 17

The Sanctity of Blood

1And the LORD spoke to Moses, saying, 2“Speak to Aaron, to his sons, and to all the children of Israel, and say to them, ‘This *is* the thing which the LORD has commanded, saying: 3“Whatever man of the house of Israel who [a]kills an ox or lamb or goat in the camp, or who kills *it* outside the camp, 4and does not bring it to the door of the tabernacle of meeting to offer an offering to the LORD before the tabernacle of the LORD, the guilt of bloodshed shall be [a]imputed to that man. He has shed blood; and that man shall be *cut off from among his people, 5to the end that the children of Israel may bring their sacrifices [a]which they offer in the open field, that they may bring them to the LORD at the door of the tabernacle of meeting, to the priest, and offer them *as* peace offerings to the LORD. 6And the priest [a]shall sprinkle the blood on the altar of the LORD *at* the door of1 the tabernacle of meeting, and [b]burn the fat for a sweet aroma to the LORD. 7They shall no more offer their sacrifices [a]to *demons, after whom they [b]have played the harlot. This shall be a statute forever for them throughout their generations.” ’

Lev. 17:7

I nullify the power of any sacrifice made to

devils in my city, region, or nation, in the name of Jesus.

8“Also you shall say to them: ‘Whatever man of the house of Israel, or of the strangers who dwell among you, [a]who offers a burnt offering or sacrifice, 9and does not [a]bring it to the door of the tabernacle of meeting, to offer it to the LORD, that man shall be [*]cut off from among his people.

10[a]‘And whatever man of the house of Israel, or of the strangers who dwell among you, who eats any blood, [b]I will set My face against that person who eats blood, and will cut him off from among his people. 11For the [a]life of the flesh *is* in the blood, and I have given it to you upon the altar [b]to make atonement for your souls; for [c]it *is* the blood *that* makes atonement for the soul.’ 12Therefore I said to the children of Israel, ‘No one among you shall eat blood, nor shall any stranger who dwells among you eat blood.’

13“Whatever man of the children of Israel, or of the strangers who dwell among you, who [a]hunts and catches any animal or bird that may be eaten, he shall [b]pour out its blood and [c]cover it with dust; 14[a]for *it is* the life of all flesh. Its blood sustains its life. Therefore I said to the children of Israel, ‘You shall not eat the blood of any flesh, for the life of all flesh is its blood. Whoever eats it shall be cut off.’

15[a]“And every person who eats what died *naturally* or what was torn *by beasts, whether he is* a native of your own country or a stranger, [b]he shall both wash his clothes and [c]bathe in water, and be unclean until evening. Then he shall be clean. 16 But if he does not wash *them* or bathe his body, then [a]he shall bear his [*]guilt.”

Leviticus 18

Laws of Sexual Morality

1 Then the LORD spoke to Moses, saying, 2 “Speak to the children of Israel, and say to them: [a]‘I am the LORD your God. 3 [a]According to [*]the doings of the land of Egypt, where you dwelt, you shall not do; and [b]according to the doings of the land of Canaan, where I am bringing you, you shall not do; nor shall you walk in their [*]ordinances. 4 [a]You shall observe My judgments and keep My ordinances, to walk in them: I *am* the LORD your God. 5 You shall therefore keep My statutes and My judgments, which if a man does, he shall live by them: I *am* the LORD.

6‘None of you shall approach anyone who is near of kin to him, to uncover his nakedness: I *am* the LORD. 7The nakedness of your father or the nakedness of your mother you shall not uncover. She *is* your mother; you shall not uncover her nakedness. 8The nakedness of your [a]father’s wife you shall not uncover; it *is* your father’s nakedness. 9[a]The nakedness of your sister, the daughter of your father, or the daughter of your mother, *whether* born at home or elsewhere, their nakedness you shall not uncover. 10The nakedness of your son’s daughter or your daughter’s daughter, their nakedness you shall not uncover; for theirs *is* your own nakedness. 11The nakedness of your father’s wife’s daugh1ter, begotten by your father—she *is* your sister—you shall not uncover her nakedness. 12[a]You shall not uncover the nakedness of your father's sister; she *is* near of kin to your father. 13You shall not uncover the nakedness of your mother's sister, for she *is* near of kin to your mother. 14[a]You shall not uncover the nakedness of your father's brother. You shall not approach his wife; she *is* your aunt. 15You shall not uncover the nakedness of your daughter-in-law—she *is* your son's wife—you shall not uncover her nakedness. 16You shall not uncover the nakedness of your brother's wife; it *is* your brother's nakedness. 17You shall not uncover the nakedness of a woman and her [a]daughter, nor shall you take her son's daughter or her daughter's daughter, to uncover her nakedness. They *are* near of kin to her. It *is* wickedness. 18Nor shall you take a woman [a]as a rival to her sister, to uncover her nakedness while the other is alive.

19‘Also you shall not approach a woman to uncover her nakedness as [a]long as she is in her [b]*customary* impurity. 20[a]Moreover you shall not lie carnally with your [b]neighbor’s wife, to defile yourself with her. 21And you shall not let any of your descendants [a]pass through [b]*the fire* to [c]Molech, nor shall you profane the name of your God: I *am* the LORD. 22You shall not lie with [a]a male as with a woman. It *is* an abomination. 23Nor shall you mate with any [a]animal, to defile yourself with it. Nor shall any woman stand before an animal to mate with it. It *is* perversion.

24[a]‘Do not defile yourselves with any of these things; [b]for by all these the nations are defiled, which I am casting out before you. 25For [a]the land is defiled; therefore I [b]visit* the punishment of its iniquity upon it, and the land [c]vomits out its inhabitants. 26[a]You shall therefore *keep My statutes and My judgments, and shall not commit *any* of these abominations, *either* any of your own nation or any stranger who dwells among you 27(for all these abominations the men of the land have done, who *were* before you, and thus the land is defiled), 28lest [a]the land vomit you out also when you defile it, as it vomited out the nations that *were* before you. 29For whoever commits any of these abominations, the persons who commit *them* shall be *cut off from among their people.

30‘Therefore you shall keep My *ordinance, so [a]that *you* do not commit *any* of these abominable customs which were committed before you, and that you do not defile yourselves by them: [b]I *am* the LORD your God.' "

Leviticus 19

Moral and Ceremonial Laws

1And the LORD spoke to Moses, saying, 2"Speak to all the congregation of the children of Israel, and say to them: [a]'You shall be holy, for I the LORD your God *am* holy.

3[a]'Every one of you shall revere his mother and his father, and [b]keep My Sabbaths: I *am* the LORD your God.

4[a]'Do not turn to idols, [b]nor make for yourselves [*]molded gods: I *am* the LORD your God.

5'And [a]if you offer a sacrifice of a peace offering to the LORD, you shall offer it of your own free will. 6It shall be eaten the same day you offer *it,* and on the next day. And if any remains until the third day, it shall be burned in the fire. 7And if it is eaten at all on the third day, it *is* an abomination. It shall not be accepted. 8Therefore *everyone* who eats it shall bear his iniquity, because he has profaned the hallowed *offering* of the LORD; and that person shall be cut off from his people.

9[a]‘When you reap the harvest of your land, you shall not wholly reap the corners of your field, nor shall you gather the gleanings of your harvest. 10And you shall not glean your vineyard, nor shall you gather *every* grape of your vineyard; you shall leave them for the poor and the stranger: I *am* the LORD your God.

11[a]‘You shall not steal, nor deal falsely, [b]nor lie to one another. 12And you shall not [a]swear by My name falsely,

[b]nor shall you profane the name of your God: I *am* the LORD.

13 [a]'You shall not cheat your neighbor, nor rob *him*. [b]The wages of him who is hired shall not remain with you all night until morning. 14 You shall not curse the deaf, [a]nor put a stumbling block before the blind, but shall fear your God: I *am* the LORD.

15 'You shall do no injustice in [a]judgment. You shall not [b]be partial to the poor, nor honor the person of the mighty. In righteousness you shall judge your neighbor. 16 You shall not go about *as* a [a]talebearer among your people; nor shall you [b]take a stand against the life of your neighbor: I *am* the LORD.

17 [a]'You shall not hate your brother in your heart. [b]You shall surely *rebuke your neighbor, and not bear sin because of him. 18 [a]You shall

not take vengeance, nor bear any grudge against the children of your people, [b]but you shall love your neighbor as yourself: I *am* the LORD.

19‘You shall keep My statutes. You shall not let your livestock breed with another kind. You shall not sow your field with mixed seed. Nor shall a garment of mixed linen and wool come upon you.

20‘Whoever lies carnally with a woman who *is* [a]betrothed to a man as a concubine, and who has not at all been redeemed nor given her freedom, for this there shall be *scourging; *but* they shall not be put to death, because she was not free. 21And he shall bring his trespass offering to the LORD, to the door of the tabernacle of meeting, a ram as a trespass offering. 22The priest shall make *atonement for him with the ram of the trespass offering before the LORD for his sin which he has committed. And the sin which he has committed shall be forgiven him.

23‘When you come into the land, and have planted all kinds of trees for food, then you shall count their fruit as [*]uncircumcised. Three years it shall be as uncircumcised to you. *It* shall not be eaten. 24But in the fourth year all its fruit shall be holy, a praise to the LORD. 25And in the fifth year you may eat its fruit, that it may yield to you its increase: I *am* the LORD your God.

26‘You shall not eat *anything* with the blood, nor shall you practice divination or soothsaying. 27You shall not shave around the sides of your head, nor shall you disfigure the edges of your beard. 28You shall not [a]make any cuttings in your flesh for the dead, nor tattoo any marks on you: I *am* the LORD.

29[a]‘Do not prostitute your daughter, to cause her to be a harlot, lest the land fall into harlotry, and the land become full of wickedness.

30‘You shall [*]ke1ep My Sabbaths and [a]reverence My sanctuary: I *am* the LORD.

31‘Give no regard to mediums and familiar spirits; do not seek after [a]them, to be defiled by them: I *am* the LORD your God.

32[a]‘You shall [*]rise before the gray headed and honor the presence of an old man, and [b]fear your God: I am the LORD.

33‘And [a]if a stranger dwells with you in your land, you shall not mistreat him. 34[a]The stranger who dwells among you shall be to you as [*]one born among you, and [b]you shall love him as yourself; for you were strangers in the land of Egypt: I *am* the LORD your God.

35 ‘You shall do no injustice in judgment, in measurement of length, weight, or volume. 36 You shall have [a]honest scales, honest weights, an honest ephah, and an honest hin: I *am* the LORD your God, who brought you out of the land of Egypt.

37 [a]‘Therefore you shall observe all My statutes and all My judgments, and perform them: I *am* the LORD.’ ”

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

DON’T NEGLECT YOUR SPIRITUAL ALTAR

Go to your

spiritual altar every day. Choose a place. Let it be your bedside, a chair, your walk-in closet, the bathroom, the garage, your car… be creative. But make it the same place every day. Surrender there to God daily.

In God's

presence
you
wash
ourselves
clean.
Your
devotional
time
is
just
as
important
as
brushing
your
teeth,
and
it
should
become
a
daily
habit.
To
render
praise
and
worship
to
your
magnificent
God
and
Father
is a
privilege
and
an
honor
—

and
it is
also
an
honor
to
thank
Him
and
confess
and
acknowledge
Him.
God
is
ready
to
perform
His
Word
when
you
come
to
Him
with
praise
and
adoration,
declaring
His
Word.
(Have
a list
of
scriptures
that
minister
deeply
to

you, such as for healing or believing for a husband, son, daughter, a job, business, and so forth.)

The Wo1rd you speak in faith is living water, and it will wash you and sanctify you as you speak it in faith.

Praying, praising, and worshiping God the Father, Jesus the Son, and the Holy Spirit are acts of sacrifice because your flesh constantly desires to be gratified, pampered, and indulged.

Don’t go by your feelings. This practice of praying and declaring

God’s
Word
is as
important
as
remembering
to
take
your
vitamins
and
minerals.
It is
as
important
as
going
to
work
and
paying
your
rent,
and
more
important
than
your
exercise
routine
or
eating
your
meals.
By
practicing
this
spiritual
discipline,
you

will
become
stronger
and
more
energetic
and
will
acquire
wisdom
and
knowledge
to
make
wise
decisions
and
choices.

Your
discernment,
which
means
your
“understanding,”
will
be
exercised,
developed,
and
tested.
Your
speech
will
improve.
Your
relationships
will
become
healthier.

Your intuition will help you make wise decisions. Wisdom will rise up to meet you.

You were created for fellowship with Father God. Christ Jesus is always interceding for you (Rom. 8:34). The Holy Spirit receives your supplications (your prayers) and intercedes for you with groanings too deep for words (v. 26). Now that is outstanding news. Both Jesus and the Holy Spirit are praying, supplicating, pleading, yearning, and groaning for your well-being and your salvation. That is an awesome

thought
and
mental
picture.
How
selfish
can
you
be,
or
insensitive,
to
neglect
this
spiritual
relationship?
What
are
you
doing
for
yourself?

Don’t
be
asking
for a
lot of
stuff.
God
knows
what
your
needs
are,
and
He
has
already
made

provision. “The Lord is my Shepherd; I shall not want” (Ps. 23:1). He’s already made provision for you.

All your decisions should be based on what God says in His Word. There should be a lining of wisdom in all you do and say. Other people such as your friends, family, children, and coworkers should look up to you and desire to be around you. They should want to ask you for prayer when they have a need because God's wisdom and understanding

are
ruling
your
life
and
evident
for
all to
see.

Oh,
you
may
think
that
is
impossible
to
achieve.
You
may
battle
with
negative
thoughts.
It
will
take
one
step
at a
time,
one
prayer
at a
time,
one
verse
and
scripture

at a time, and one moment of privacy at your personal altar in God’s presence at a time. God doesn’t take naps. He’s always waiting for you. The Holy Spirit is the enabler, your helper, your friend, and your teacher (John 14:26).

You
have
nothing
to
lose
and
much
to
gain.
God
already
put
ability
in
you
to
become
strong,
positive,
healthy,
wealthy,
and
able
to do
all
things
above
and
beyond
what
your
little
finite
mind
can
comprehend.

Allow
the
Holy

Spirit
to
stretch
you
and
teach
you
how
to
become
strong,
vivacious,
healthy,
fearless
of
the
attacks
of
the
enemy,
and
capable
of
achieving
those
things
you
have
thought
in
your
mind
are
impossible
to
achieve
but
desire.
The
Spirit

of God supplies us with intelligence, wisdom, and inspiration (Acts 6:10). When you are in Christ, and His Spirit dwells in you, you are full of grace, divine blessing, favor, power, strength, and ability. And the miraculous is also at work in you (v. 8). Being led by the Spirit of God grants you the privilege of becoming His possession, His son or daughter of royalty (Rom. 8:14).[1*]

---

[*] Iris Delgado, *Satan, You Can't Have My Marriage*, 128–

Leviticus 20

Penalties for Breaking the Law

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2[a]“Again, you shall say to the children of Israel: [b]‘Whoever of the children of Israel, or of the strangers who *dwell in Israel, who gives *any* of his descendants to Molech, he shall surely be put to death. The people of the land shall [c]stone him with stones. 3[a]I will set My face against that man, and will *cut him off from his people, because he has given *some* of his descendants to Molech, to defile My sanctuary and profane My holy name. 4And if the people of the land should in any way *hide their eyes from the man, when he gives *some* of his descendants to Molech, and they do not kill him, 5then I will set My face against that man and against his family; and I will cut him off from his people, and all who prostitute themselves with him to commit harlotry with Molech.

6‘And [a]the person who turns to mediums and familiar spirits, to prostitute himself with them, I will set My face against that person and cut him off from his people. 7[a]Consecrate* yourselves therefore, and be holy, for I *am* the LORD your God. 8And you shall keep [a]My statutes, and perform them: [b]I *am* the LORD who *sanctifies you.

9‘For [a]everyone who curses his father or his mother shall surely be put to death. He has cursed his father or his mother. [b]His blood *shall be* upon him.

10[a]‘The man who commits adultery

with *another* man's wife, *he* who commits adultery with his neighbor's wife, the adulterer and the adulteress, shall surely be put to death. 11The man who lies with his [a]father's wife has uncovered his father's nakedness; both of them shall surely be put to death. Their blood *shall be* upon them. 12If a man lies with his [a]daughter-in-law, both of them shall surely be put to death. They have committed perversion. Their blood *shall be* upon them. 13[a]If a man lies with a male as he lies with a woman, both of them have committed an abomination. They shall surely be put to death. Their blood *shall be* upon them. 14If a man marries a woman and her [a]mother, it *is* wickedness. They shall be burned with fire, both he and they, that there may be no wickedness among you. 15If a man mates with an [a]animal, he shall surely be put to death, and you shall kill the animal. 16If a woman approaches any animal and mates with it, you shall kill the woman and the animal. They shall surely be put to death. Their blood *is* upon them.

17‘If a man takes his [a]sister, his father’s daughter or his mother’s daughter, and sees her nakedness and she sees his nakedness, it *is* a wicked thing. And they shall be *cut off in the sight of their people. He has uncovered his sister’s nakedness. He shall bear his *guilt. 18[a]If a man lies with a woman during her *sickness and uncovers her nakedness, he has *exposed her flow, and she has uncovered the flow of her blood. Both of them shall be *cut off from their people.

19‘You shall not uncover the nakedness of your [a]mother’s sister nor of your [b]father’s sister, for that would uncover his near of kin. They shall bear their guilt. 20If a man lies with his [a]uncle’s wife, he has uncovered his uncle’s nakedness. They shall bear their sin; they shall die childless. 21If a man takes his [a]brother’s wife, it *is* an [*]unclean thing. He has uncovered his brother’s nakedness. They shall be childless.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Battlefield Is the Mind

The mind is the battlefield. I

believe that the mind and the brain are separate. The brain is physical; the mind is soulish. The seed of sin is in the mind, while the fruit of sin may be manifested in the flesh. Demons do not —

cannot — possess a believer, but they can and do *oppress* believers, and the oppression takes place in the body and soul. Remember, possession implies ownership. We are clearly owned by God. We are purchased with a price. We are redeemed. Genuine possession cannot take place. There are many words that can be appropriately used to describe demons in or attached to Christians. Perhaps the clearest term would be *demonized.*[*]

---

[*] Don Dickerman *Keep the Pigs Out*, 174.

22‘You shall therefore keep all My [a]statutes and all My judgments, and perform them, that the land where I am bringing you to dwell [b]may not vomit you out. 23[a]And you shall not walk in the statutes of the nation which I am casting out before you; for they commit all these things, and [b]therefore I abhor them. 24But [a]I have said to you, “You shall inherit their land, and I will give it to you to possess, a land flowing with milk and honey.” I *am* the LORD your God, [b]who has separated you from the peoples. 25[a]You shall therefore distinguish between clean animals and unclean, between unclean birds and clean, [b]and you shall not make yourselves [*]abominable by beast or by bird, or by any kind of living thing that creeps on the ground, which I have separated from you as *unclean. 26And you shall be holy to Me, [a]for I the LORD *am* holy, and have separated you from the peoples, that you should be Mine.

27[a]'A man or a woman who is a medium, or who has familiar spirits, shall surely be put to death; they shall stone them with stones. Their blood *shall be* upon them.' "

Leviticus 21

Regulations for Conduct of Priests

1And the LORD said to Moses, "Speak to the priests, the sons of Aaron, and say to them: [a]'None shall defile himself for the dead among his people, 2except for his relatives who are nearest to him: his mother, his father, his son, his daughter, and his brother; 3also his virgin sister who is near to him, who has had no husband, for her he may defile himself. 4*Otherwise* he shall not defile himself, *being* a [*]chief man among his people, to profane himself.

5[a]'They shall not make any bald *place* on their heads, nor shall they shave the edges of their beards nor make any cuttings in their flesh. 6They shall be [a]holy to their God and not profane the name of their God, for they offer the offerings of the LORD made by fire, *and* the [b]bread of their God; [c]therefore they shall be holy. 7[a]They shall not take a wife *who is* a harlot or a defiled woman, nor shall they take a woman [b]divorced from her husband; for [*]*the priest* is holy to his God. 8Therefore you shall [*]consecrate him, for he offers the bread of your God. He shall be holy to you, for [a]I the LORD, who [b]sanctify you, *am* holy. 9The daughter of any priest, if she profanes herself by playing the harlot, she profanes her father. She shall be [a]burned with fire.

10‘*He who is* the high priest among his brethren, on whose head the anointing oil was [a]poured and who is consecrated to wear the garments, shall not [b]uncover* his head nor tear his clothes; 11nor shall he go [a]near any dead body, nor defile himself for his father or his mother; 12[a]nor shall he go out of the sanctuary, nor profane the sanctuary of his God; for the [b]consecration of the anointing oil of his God *is* upon him: I *am* the LORD. 13And he shall take a wife in her virginity. 14A widow or a divorced woman or a defiled woman *or* a harlot—these he shall not marry; but he shall take a virgin of his own people as wife. 15Nor shall he profane his posterity among his people, for I the LORD sanctify him.’ ”

16And the LORD spoke to Moses, saying, 17"Speak to Aaron, saying: 'No man of your descendants in *succeeding* generations, who has *any* defect, may approach to offer the bread of his God. 18For any man who has a [a]defect shall not approach: a man blind or lame, who has a marred *face* or any *limb* [b]too long, 19a man who has a broken foot or broken hand, 20or is a hunchback or a *dwarf*, or *a man* who has a defect in his eye, or eczema or scab, or is a eunuch. 21No man of the descendants of Aaron the priest, who has a defect, shall come near to offer the offerings made by fire to the LORD. He has a defect; he shall not come near to offer the bread of his God. 22He may eat the bread of his God, *both* the most holy and the holy; 23only he shall not go near the [a]veil or approach the altar, because he has a defect, lest [b]he profane My sanctuaries; for I the LORD sanctify them.' "

24And Moses told *it* to Aaron and his sons, and to all the children of Israel.

Leviticus 22

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2"Speak to Aaron and his sons, that they [a]separate [*]themselves from the holy things of the children of Israel, and that they [b]do not profane My holy name *by* what they [c]dedicate to Me: I *am* the LORD. 3Say to them: 'Whoever of all your descendants throughout your generations, who goes near the holy things which the children of Israel dedicate to the LORD, [a]while he has [*]uncleanness upon him, that person shall be cut off from My presence: I *am* the LORD.

4‘Whatever man of the descendants of Aaron, who *is* a [a]leper or has [b]a discharge, shall not eat the holy offerings [c]until he is clean. And [d]whoever touches anything made unclean *by* a corpse, or [e]a man who has had an emission of semen, 5or [a]whoever touches any creeping thing by which he would be made unclean, or [b]any person by whom he would become unclean, whatever his uncleanness may be —6the person who has touched any such thing shall be unclean until evening, and shall not eat the holy *offerings* unless he [a]washes his body with water. 7And when the sun goes down he shall be clean; and afterward he may eat the holy *offerings*, because [a]it *is* his food.
8[a]Whatever dies *naturally* or is torn *by beasts* he shall not

eat, to defile himself with it: I *am* the LORD.

9‘They shall therefore keep [a]My [*]ordinance, [b]lest they bear sin for it and die thereby, if they profane it: I the LORD sanctify them.

10[a]‘No outsider shall eat the holy *offering;* one who [*]dwells with the priest, or a hired servant, shall not eat the holy thing. 11But if the priest [a]buys a person with his money, he may eat it; and one who is born in his house may eat his food. 12If the priest’s daughter is married to an outsider, she may not eat of the holy offerings. 13But if the priest’s daughter is a widow or divorced, and has no child, and has returned to her father’s house as in her youth, she may eat her father’s food; but no outsider shall eat it.

14‘And if a man eats the [a]holy *offering* unintentionally, then he shall restore a holy *offering* to the priest, and add one-fifth to it. 15They shall not profane the holy *offerings* of the children of Israel, which they offer to the LORD, 16or allow them to bear the guilt of trespass when they eat their holy *offerings;* for I the LORD sanctify them.' "

Offerings Accepted and Not Accepted

17And the LORD spoke to Moses, saying, 18"Speak to Aaron and his sons, and to all the children of Israel, and say to them: [a]'Whatever man of the house of Israel, or of the strangers in Israel, who *offers his sacrifice for any of his vows or for any of his freewill offerings, which they offer to the LORD as a burnt offering— 19[a]*you shall offer* of your own free will a male without blemish from the cattle, from the sheep, or from the goats. 20[a]Whatever has a defect, you shall not offer, for it shall not be acceptable on your behalf. 21And [a]whoever offers a sacrifice of a peace offering to the LORD, [b]to fulfill *his* vow, or a freewill offering from the cattle or the sheep, it must be perfect to be accepted; there shall be no defect in it. 22[a]Those *that are* blind or broken or maimed, or have an [*]ulcer or eczema or scabs, you shall not offer to the LORD, nor make [b]an offering by fire of them on the altar to the LORD. 23Either a bull or a lamb that has any limb [a]too long or too short you may offer as a freewill offering, but for a vow it shall not be accepted.

24‘You shall not offer to the LORD what is bruised or crushed, or torn or cut; nor shall you make *any offering of them* in your land.

25Nor [a]from a foreigner’s hand shall you offer any of these as [b]the bread of your God, because their [c]corruption *is* in them, *and* defects *are* in them. They shall not be accepted on your behalf.’ ”

26And the LORD spoke to Moses, saying: 27[a]“When a bull or a sheep or a goat is born, it shall be seven days with its mother; and from the eighth day and thereafter it shall be accepted as an offering made by fire to the LORD. 28*Whether it is* a cow or ewe, do not kill both her [a]and her young on the same day. 29And when you [a]offer a sacrifice of thanksgiving to the LORD, offer *it* of your own free will. 30On the same day it shall be eaten; you shall leave [a]none of it until morning: I *am* the LORD.

31[a]“Therefore you shall keep My commandments, and perform them: I *am* the LORD. 32[a]You shall not profane My holy name, but [b]I will be [*]hallowed among the children of Israel. I *am* the LORD who [c]sanctifies you, 33[a]who brought you out of the land of Egypt, to be your God: I *am* the LORD.”

Leviticus 23

Feasts of the LORD

1And the LORD spoke to Moses, saying, 2“Speak to the children of Israel, and say to them: ‘The feasts of the LORD, which you shall proclaim *to be* [a]holy convocations, these *are* My feasts.

The Sabbath

3[a]‘Six days shall work be done, but the seventh day *is* a Sabbath of solemn rest, a holy convocation. You shall do no work *on it;* it *is* the Sabbath of the LORD in all your dwellings.

The Passover and Unleavened Bread

4[a]‘These *are* the feasts of the LORD, holy convocations which you shall proclaim at their appointed times. 5[a]On the fourteenth *day* of the first month at twilight *is* the LORD’s Passover. 6And on the fifteenth day of the same month *is* the Feast of Unleavened Bread to the LORD; seven days you must eat unleavened bread. 7[a]On the first day you shall have a holy convocation; you shall do no *customary work on it. 8But you shall offer an offering made by fire to the LORD for seven days. The seventh day *shall be* a holy convocation; you shall do no customary work *on it.*’ ”

The Feast of Firstfruits

9And the LORD spoke to Moses, saying, 10“Speak to the children of Israel, and say to them: [a]‘When you come into the land which I give to you, and reap its harvest, then you shall bring a sheaf of

[b]the firstfruits of your harvest to the priest. 11He shall [a]wave the sheaf before the LORD, to be accepted on your behalf; on the day after the Sabbath the priest shall wave it. 12And you shall offer on that day, when you wave the sheaf, a male lamb of the first year, without blemish, as a burnt offering to the LORD. 13Its grain offering *shall be* two-tenths *of an ephah* of fine flour m1ixed with oil, an offering made by fire to the LORD, for a [*]sweet aroma; and its drink offering *shall be* of wine, one-fourth of a hin. 14You shall eat neither bread nor parched grain nor fresh grain until the same day that you have brought an offering to your God; *it shall be* a statute forever throughout your generations in all your dwellings.

The Feast of Weeks

15‘And you shall count for yourselves from the day after the Sabbath, from the day that you brought the sheaf of the wave offering: seven Sabbaths shall be completed. 16Count [a]fifty days to the day after the seventh Sabbath; then you shall offer [b]a new grain offering to the LORD. 17You shall bring from your dwellings two wave *loaves* of two-tenths *of an ephah*. They shall be of fine flour; they shall be baked with leaven. *They are* [a]the firstfruits to the LORD. 18And you shall offer with the bread seven lambs of the first year, without blemish, one young bull, and two rams. They shall be *as* a burnt offering to the LORD, with their grain offering and their drink offerings, an offering made by fire for a sweet aroma to the LORD. 19Then you shall sacrifice [a]one kid of the goats as a sin offering, and two male lambs of the first year as a sacrifice of a [b]peace offering. 20The priest shall wave them with the bread of the firstfruits *as* a wave offering before the LORD, with the two lambs. [a]They shall be holy to the LORD for the priest. 21And you shall proclaim on the same day *that* it is a holy convocation to you. You shall do no customary work on *it. It shall be* a statute forever in all your dwellings throughout your generations.

22[a]'When you reap the harvest of your land, you shall not wholly reap the corners of your field when you reap, nor shall you gather any gleaning from your harvest. You shall leave them for the poor and for the stranger: I *am* the LORD your God.' "

The Feast of Trumpets

23Then the LORD spoke to Moses, saying, 24"Speak to the children of Israel, saying: 'In the [a]seventh month, on the first *day* of the month, you shall have a sabbath-*rest*, [b]a memorial of blowing of trumpets, a holy convocation. 25You shall do no customary work *on it;* and you shall offer an offering made by fire to the LORD.' "

The Day of Atonement

26And the LORD spoke to Moses, saying: 27[a]"Also the tenth *day* of this seventh month *shall be* the Day of Atonement. It shall be a holy convocation for you; you shall afflict your souls, and offer an offering made by fire to the LORD. 28And you shall do no work on that same day, for it *is* the Day of Atonement, [a]to make atonement for you before the LORD your God. 29For any person who is not [a]afflicted *in soul* on that same day [b]shall be cut off from his people. 30And any person who does any work on that same day, [a]that person I will destroy from among his people. 31You shall do no manner of work; *it shall be* a statute forever throughout your generations in all your dwellings. 32It *shall be* to you a sabbath of *solemn* rest, and you shall [*]afflict your souls; on the ninth *day* of the month at evening, from evening to evening, you shall [*]celebrate your sabbath.”

The Feast of Tabernacles

33Then the LORD spoke to Moses, saying, 34“Speak to the children of Israel, saying: [a]‘The fifteenth day of this seventh month *shall be* the Feast of Tabernacles *for* seven days to the LORD. 35On the first day *there shall* be a holy convocation. You shall do no customary work *on it.* 36*For* seven days you shall offer an [a]offering made by fire to the LORD. [b]On the eighth day you

shall have a holy
convocation, and you
shall offer an offering
made by fire to the
LORD. It *is* a [c]sacred*
assembly, *and* you
shall do no
customary work *on it*.

37[a]‘These *are* the
feasts of the LORD
which you shall
proclaim *to be* holy
convocations, to offer
an offering made by
fire to the LORD, a
burnt offering and a
grain offering, a
sacrifice and drink
offerings, everything
on its day—
38[a]besides the
Sabbaths of the
LORD, besides your
gifts, besides all your
vows, and besides all
your freewill
offerings which you
give to the LORD.

39‘Also on the
fifteenth day of the
seventh month, when
you have [a]gathered in
the fruit of the land,
you shall keep the
feast of the LORD *for*
seven days; on the
first day *there shall be*
a sabbath-*rest*, and
on the eighth day a
sabbath-*rest*. 40And

[a]you shall take for yourselves on the first day the [*]fruit of beautiful trees, branches of palm trees, the boughs of leafy trees, and willows of the brook; [b]and you shall rejoice before the LORD your God for seven days. 41 [a]You shall keep it as a feast to the LORD for seven days in the year. *It shall be* a statute forever in your generations. You shall celebrate it in the seventh month. 42 [a]You shall dwell in [*]booths for seven days. [b]All who are native Israelites shall dwell in booths, 43 [a]that your generations may [b]know that I made the children of Israel dwell in booths when [c]I brought them out of the land of Egypt: I *am* the LORD your God.' ”

44 So Moses [a]declared to the children of Israel the feasts of the LORD.

Leviticus 24

Care of the Tabernacle Lamps

1Then the LORD spoke to Moses, sayin1g: 2[a]“Command the children of Israel that they bring to you pure oil of pressed olives for the light, to make the lamps burn continually. 3Outside the veil of the Testimony, in the tabernacle of meeting, Aaron shall be in charge of it from evening until morning before the LORD continually; *it shall be* a statute forever in your generations. 4[*]He shall be in charge of the lamps on [a]the pure *gold* lampstand before the LORD continually.

The Bread of the Tabernacle

5“And you shall take fine flour and bake twelve [a]cakes with it. Two-tenths *of an ephah* shall be in each cake. 6You shall set them in two rows, six in a row, [a]on the pure *gold* table before the LORD. 7And you shall put pure frankincense on *each* row, that it may be on the bread for a [a]memorial, an offering made by fire to the LORD. 8[a]Every Sabbath he shall set it in order before the LORD continually, *being taken* from the children of Israel by an everlasting covenant. 9And [a]it shall be for Aaron and his sons, [b]and they shall eat it in a holy place; for it *is* most holy to him from the offerings of the LORD made by fire, by a perpetual statute.”

The Penalty for Blasphemy

10Now the son of an Israelite woman, whose father *was* an Egyptian, went out among the children of Israel; and this Israelite *woman’s* son and a man of Israel fought each other in the camp. 11And the Israelite woman’s son [a]blasphemed the name of *the LORD* and [b]cursed; and so they [c]brought him to

Moses. (His mother’s
name *was* Shelomith
the daughter of
Dibri, of the tribe of
Dan.) 12Then they
[a]put him [*]in custody,
[b]tha1t [*]the mind of
the LORD might be
shown to them.

13And the LORD
spoke to Moses,
saying, 14“Take
outside the camp him
who has cursed; then
let all who heard *him*
[a]lay their hands on
his head, and let all
the congregation
stone him.

15“Then you shall
speak to the children
of Israel, saying:
‘Whoever curses his
God [a]shall [*]bear his
sin. 16And whoever
[a]blasphemes the
name of the LORD
shall surely be put to
death. All the
congregation shall
certainly stone him,
the stranger as well
as him who is born in
the land. When he
blasphemes the name
of the LORD, he shall
be put to death.

17[a]‘Whoever kills
any man shall surely
be put to death.

18[a]Whoever kills an animal shall make it good, animal for animal.

19‘If a man causes disfigurement of his neighbor, as [a]he has done, so shall it be done to him— 20fracture for [a]fracture, [b]eye for eye, tooth for tooth; as he has caused disfigurement of a man, so shall it be done to him. 21And whoever kills an animal shall restore it; but whoever kills a man shall be put to death. 22You shall have [a]the[*] same law for the stranger and for one from your own country; for I *am* the LORD your God.’ ”

23Then Moses spoke to the children of Israel; and they took outside the camp him who had cursed, and stoned him with stones. So the children of Israel did as the LORD commanded Moses.

Leviticus 25

The Sabbath of the

Seventh Year

1And the LORD spoke to Moses on Mount [a]Sinai, saying, 2“Speak to the children of Israel, and say to them: ‘When you come into the land which I give you, then the land shall [a]keep a sabbath to the LORD. 3Six years you shall sow your field, and six years you shall prune your vineyard, and gather its fruit; 4but in the [a]seventh year there shall be a sabbath of solemn [b]rest for the land, a sabbath to the LORD. You shall neither sow your field nor prune your vineyard. 5[a]What grows of its own accord of your harvest you shall not reap, nor gather the grapes of your untended vine, *for* it is a year of rest for the land. 6And the sabbath *produce* of the land shall be food for you: for you, your male and female servants, your hired man, and the stranger who dwells with you, [7]for your livestock and the beasts that *are* in your land—all its produce shall be for food.

The Year of Jubilee

[8]‘And you shall count seven sabbaths of years for yourself, seven times seven years; and the time of the seven sabbaths of years shall be to you forty-nine years. [9]Then you shall cause the trumpet of the Jubilee to sound on the tenth *day* of the seventh month; [a]on the Day of Atonement you shall make the trumpet to sound throughout all your land. [10]And you shall consecrate the fiftieth year, and [a]proclaim liberty throughout *all* the land to all its inhabitants. It shall be a Jubilee for you; and each of you shall return to his possession, [b]and each of you shall return to his family. [11]That fiftieth year shall be a Jubilee to you; in it [a]you shall neither

sow nor reap what grows of its own accord, nor gather *the grapes* of your untended vine. 12For it *is* the Jubilee; it shall be holy to you; [a]you shall eat its produce from the field.

13[a]‘In this Year of Jubilee, each of you shall return to his possession. 14And if you sell anything to your neighbor or buy from your neighbor’s hand, you shall not [a]oppress one another. 15[a]According to the number of years after the Jubilee you shall buy from your neighbor, and according to the number of years of crops he shall sell to you. 16According to the multitude of years you shall increase its price, and according to the fewer number of years you shall diminish its price; for he sells to you *according* to the number *of the years* of the crops. 17Therefore [a]you shall not [*]oppress one another, [b]but you shall fear your God; for I *am* the LORD your God.

Provisions for the Seventh Year

18 [a]‘So you shall observe My statutes and keep My judgments, and perform them; [b]and you will dwell in the land in safety. 19 Then the land will yield its fruit, and [a]you will eat your fill, and dwell there in safety.

20 ‘And if you say, [a]“What shall we eat in the seventh year, since [b]we shall not sow nor gather in our produce?” 21 Then I will [a]command My blessing on you in the [b]sixth year, and it will bring forth produce enough for three years. 22 [a]And you shall sow in the eighth year, and eat [b]old produce until the ninth year; until its produce comes in, you shall eat *of* the old *harvest.*

Redemption of Property

23 ‘The land shall

not be sold permanently, for [a]the land *is* Mine; for you *are* [b]strangers and sojourners with Me. 24And in all the land of your possession you shall grant redemption of the land.

25[a]‘If one of your brethren becomes poor, and has sold *some* of his possession, and if [b]his redeeming relative comes to redeem it, then he may redeem what his brother sold. 26Or if the man has no one to redeem it, but he him1self becomes able to redeem it, 27then [a]let him count the years since its sale, and restore the remainder to the man to whom he sold it, that he may return to his possession. 28But if he is not able to have *it* restored to himself, then what was sold shall remain in the hand of him who bought it until the Year of Jubilee; [a]and in the Jubilee it shall be released, and he shall return to his possession.

[29]‘If a man sells a house in a walled city, then he may redeem it within a whole year after it is sold; *within* a full year he may redeem it. [30]But if it is not redeemed within the space of a full year, then the house in the walled city shall belong permanently to him who bought it, throughout his generations. It shall not be released in the Jubilee. [31]However the houses of villages which have no wall around them shall be counted as the fields of the country. They may be redeemed, and they shall be released in the Jubilee.
[32]Nevertheless [a]the cities of the Levites, *and* the houses in the cities of their possession, the Levites may redeem at any time. [33]And if a man purchases a house from the Levites, then the house that was sold

in the city of his possession shall be released in the Jubilee; for the houses in the cities of the Levites *are* their possession among the children of Israel. 34But [a]the field of the common-land of their cities may not be [b]sold, for it *is* their perpetual possession.

Lending to the Poor

35‘If one of your brethren becomes poor, and [*]falls into poverty among you, then you shall [a]help him, like a stranger or a sojourner, that he may live with you. 36[a]Take no usury or interest from him; but [b]fear your God, that your brother may live with you. 37You shall not lend him your money for usury, nor lend him your food at a profit. 38[a]I *am* the LORD your God, who brought you out of the land of Egypt, to give you the land of Canaan *and* to be your God.

The Law Concerning Slavery

[39]‘And if *one of* your brethren *who dwells1i> by you becomes poor, and sells himself to you, you shall not compel him to serve as a slave. [40]As a hired servant and a sojourner he shall be with you, and shall serve you until the Year of Jubilee. [41]And then he shall depart from you—he and his children [a]with him—and shall return to his own family. He shall return to the possession of his fathers. [42]For they are [a]My servants, whom I brought out of the land of Egypt; they shall not be sold as slaves. [43][a]You shall not rule over him [b]with [*]rigor, but you [c]shall fear your God. [44]And as for your male and female slaves whom you may have—from the nations that are around you, from them you may buy male and female slaves. [45]Moreover you may buy [a]the children of the strangers who dwell among you, and*

their families who are with you, which they beget in your land; and they shall become your property. 46*And* [a]*you may take them as an inheritance for your children after you, to inherit them as a possession; they shall be your permanent slaves. But regarding your brethren, the children of Israel, you shall not rule over one another with rigor.*

47‘Now if a sojourner or stranger close to you becomes rich, and *one of* your brethren *who dwells* by him becomes poor, and sells himself to the stranger or sojourner close to you, or to a member of the stranger’s family, 48after he is sold he may be redeemed again. One of his brothers may redeem him; 49or his uncle or his uncle’s son may redeem him; or *anyone* who is near of kin to him in his family may redeem him; or if he is able he may redeem himself. 50Thus he shall reckon with him who bought him: The price of his release shall be according to the number of years, from the year that he was sold to him until the Year of Jubilee; *it shall be* [a]according to the time of a hired servant for him. 51If *there are* still many years *remaining*, according to them he shall repay the price of his redemption from the money with which he was bought. 52And if there remain but a few years until the Year of Jubilee, then he shall reckon with him, *and* according to his years he shall repay him the price of his redemption. 53He shall be with him as a yearly hired servant, and he shall not rule with rigor over him in your sight. 54And if he is not redeemed in these *years*, then he shall be released in the Year of Jubilee—he and his children with him. 55For the children of Israel *are* servants to Me; they *are* My servants whom I brought out of the land of Egypt: I *am* the LORD your God.

Leviticus 26

Promise of Blessing and Retribution

1‘You shall [a]not make idols for yourselves;

neither a carved image nor a *sacred* pillar shall you rear up for yourselves;

nor shall you set

up an engraved stone in your land, to bow down to it;

for I *am* the LORD your God.

2[a]You shall *keep My Sabbaths and reverence My sanctuary:

I *am* the LORD.

3[a]‘If you walk in My

statutes
and
keep
My
commandments,
and
perform
them,

4[a]then
I
will
give
you
rain
in
its
season,
[b]the
land
shall
yield
its
produce,
and
the
trees
of
the
field
shall
yield
their
fruit.

5[a]Your
threshing
shall
last
till

the time of vintage, and the vintage shall last till the time of sowing;

you shall eat your bread to the full, and [b]dwell in your land safely.

Lev. 26:5

Let me dwell in my land safely.

[6][a]I will give peace in the land, and [b]you shall lie down, and none will make *you* afraid;

I will rid the land of [c]evil[*] beasts,

and [d]the sword will not go through your land.

[7]You will

chase your enemies, and they shall fall by the sword before you.

8[a]Five of you shall chase a hundred, and a hundred of you shall put ten thousand to flight;

your enemies shall fall by the sword before you.

9 ‘For I will [a]look on you favorably and [b]make you fruitful, multiply you and confirm My [c]covenant with you.

10 You shall eat the [a]old harvest, and clear out the old because of the new.

11 [a]I will

set My *tabernacle among you, and My soul shall not abhor you.

12[a]I will walk among you and be your God, and you shall be My people.

13I *am* the LORD your God, who brought you out of

the
land
of
Egypt,
that
you
should
not
be
their
slaves;

I
have
broken
the
bands
of
your
[a]yoke
and
made
you
walk
*upright.

141font>‘But
if
you
do
not
obey
Me,
and
do
not
observe
all
these
commandments,

[15]and
if
you
despise
My
statutes,
or
if
your
soul
abhors
My
judgments,
so
that
you
do
not
perform
all
My
commandments,
but
break
My
covenant,

[16]I
also
will
do
this
to
you:

I
will
even
appoint
terror

over you, [a]wasting disease and fever which shall [b]consume the eyes and [c]cause sorrow of heart.

And [d]you shall sow your seed *in vain, for your enemies shall eat it.

17 I will *set [a]My face against you, and

[b]you shall be defeated by your enemies.

[c]Those who hate you shall reign over you, and you shall [d]flee when no one pursues you.

18 ‘And after all this, if you do not obey Me, then I will punish

you [a]seven times more for your sins.

19 I will [a]break the pride of your power;

I [b]will make your heavens like iron and your earth like bronze.

20 And your [a]strength shall be spent in vain;

for your

[b]land shall not yield its produce, nor shall the trees of the land yield their fruit.

21 ‘Then, if you walk contrary to Me, and1 are not willing to obey Me, I will bring on you seven times more plagues,

according
to
your
sins.

22[a]I
will
also
send
wild
beasts
among
you,
which
shall
rob
you
of
your
children,
destroy
your
livestock,
and
make
you
few
in
number;

and
[b]your
highways
shall
be
desolate.

23‘And
if
[a]by

these things you are not reformed by Me, but walk contrary to Me,

24 [a]then I also will walk contrary to you, and I will punish you yet seven times for your sins.

25 And [a]I will bring a sword

against you that will execute the vengeance of the covenant;

when you are gathered together within your cities [b]I will send pestilence among you;

and you shall be delivered into the hand of the enemy.

26 [a]When I

have cut off your supply of bread, ten women shall bake your bread in one oven, and they shall bring back your bread by weight, [b]and you shall eat and not be satisfied.

27‘And after all this, if you

do
not
obey
Me,
but
walk
contrary
to
Me,

[28]then
I
also
will
walk
contrary
to
you
in
fury;

and
I,
even
I,
will
chastise
you
seven
times
for
your
sins.

[29][a]You*
shall
eat
the
flesh
of

your
sons,
and
you
shall
eat
the
flesh
of
your
daughters.

30[a]I
will
destroy
your
high
places,
cut
down
your
incense
altars,
and
cast
your
carcasses
on
the
lifeless
forms
of
your
idols;

and
My
soul
shall
abhor

you.

Lev. 26:30

Lord, destroy the idols in high places.

31I will lay your [a]cities waste and [b]bring your sanctuaries to desolation, and I will not [c]smell the fragrance of your [*]sweet aromas.

32[a]I will bring

the
land
to
desolation,
and
your
enemies
who
dwell
in
it
shall
be
astonished
at
it.

33[a]I
will
scatter
you
among
the
nations
and
draw
out
a
sword
after
you;

your
land
shall
be
desolate
and
your
cities

waste.

[34][a]Then the land shall enjoy its sabbaths as long as it lies desolate and you *are* in your enemies’ land;

then the land shall rest and enjoy its sabbaths.

[35]As long as *it* lies desolate it

shall
rest
—

for
the
time
it
did
not
rest
on
your
[a]sabbaths
when
you
dwelt
in
it.

[36]‘And
as
for
those
of
you
who
are
left,
I
will
send
[a]faintness[*]
into
their
hearts
in
the
lands
of

their enemies;

the sound of a shaken leaf shall cause them to flee;

they shall flee as though fleeing from a sword, and they shall fall when no one pursues.

37[a]They shall stumble over one another, as

it
were
before
a
sword,
when
no
one
pursues;

and
[b]you
shall
have
no
power
to
stand
before
your
enemies.

38You
shall
[a]perish
among
the
nations,
and
the
land
of
your
enemies
shall
eat
you
up.

39And

those
of
you
who
are
left
[a]shall
[*]waste
away
in
their
iniquity
in
your
enemies’
lands;

also
in
their
[b]fathers’
iniquities,
which
are
with
them,
they
shall
waste
away.

40‘*But*
[a]if
they
confess
their
iniquity
and
the
iniquity

of
their
fathers,
with
their
unfaithfulness
in
which
they
were
unfaithful
to
Me,
and
that
they
also
have
walked
contrary
to
Me,

41and
that
I
also
have
walked
contrary
to
them
and
have
brought
them
into
the
land
of

their
enemies;

if
their
[a]uncircumcised
hearts
are
[b]humbled,
and
they
[c]accept
their
guilt
—

42then
I
will
[a]remember
My
covenant
with
Jacob,
and
My
covenant
with
Isaac
and
My
covenant
with
Abraham
I
will
remember;

I
will

[b]remember the land.

43[a]The land also shall be left empty by them, and will enjoy its sabbaths while it lies desolate without them;

they will accept their guilt, because they [b]despised My judgments and because their so1ul abhorred

My statutes.

44Yet for all that, when they are in the land of their enemies, [a]I will not cast them away, nor shall I abhor them, to utterly destroy them and break My covenant with them;

for I

am the LORD their God.

45 But [a]for their sake I will remember the covenant of their ancestors, [b]whom I brought out of the land of Egypt [c]in the sight of the nations, that I might be their God:

I
am
the
LORD.’
”

46[a]These *are* the statutes and judgments and laws which the LORD made between Himself and the children of Israel [b]on Mount Sinai by the hand of Moses.

Leviticus 27

Redeeming Persons and Property Dedicated to God

1Now the LORD spoke to Moses, saying, 2“Speak to the children of Israel, and say to them: [a]‘When a man [*]consecrates by a vow certain persons to the LORD, according to your [*]valuation, 3if your valuation is of a male from twenty years old up to sixty years old, then your valuation shall be fifty shekels of silver, [a]according to the shekel of the sanctuary. 4If it *is* a female, then your valuation shall be thirty shekels; 5and if from five years old up to twenty years old, then your valuation for a male shall be twenty shekels, and for a female ten shekels; 6and if from a month old up to five years old, then your valuation for a male shall be five shekels of silver, and for a female your valuation shall be three shekels of silver; 7and if from sixty years old and above, if *it is* a male, then your valuation shall be fifteen shekels, and for a female ten shekels.

81‘But if he is too poor to pay your

valuation, then he shall present himself before the priest, and the priest shall set a value for [a]him; according to the ability of him who vowed, the priest shall value him.

9‘If *it is* an animal that men may bring as an offering to the LORD, all that *anyone* gives to the LORD shall be holy. 10He shall not substitute it or exchange it, good for bad or bad for good; and if he at all exchanges animal for animal, then both it and the one exchanged for it shall be [a]holy. 11If *it is* an unclean animal which they do not offer as a sacrifice to the LORD, then he shall present the animal before the priest; 12and the priest shall set a value for it, whether it is good or bad; as you, the priest, value it, so it shall be. 13[a]But if he *wants* at all *to* redeem it, then he must add one-fifth to your valuation.

14‘And when a man *dedicates his house *to be* holy to the LORD, then the priest shall set a value for it, whether it is good or bad; as the priest values it, so it shall stand. 15If he who dedicated it *wants to* *redeem his house, then he must add one-fifth of the money of your valuation to it, and it shall be his.

16‘If a man *dedicates to the LORD *part* of a field of his possession, then your valuation shall be according to the seed for it. A homer of barley seed *shall be valued* at fifty shekels of silver. 17If he dedicates his field from the Year of Jubilee, according to your valuation it shall stand. 18But if he dedicates his field after the Jubilee, then the priest shall [a]reckon to him the money due according to the years that remain till the Year of Jubilee, and it shall be deducted from your valuation. 19And if he who dedicates the field ever wishes to redeem it, then he must add one-fifth of the money of your valuation to it, and it shall belong to him. 20But if he does not want to redeem the field, or if he has sold the field to another man, it shall not be redeemed anymore; 21but the field, [a]when it is released in the Jubilee, shall be holy to the LORD, as a [b]devoted field; it shall be [c]the possession of the priest.

22‘And if a man dedicates to the LORD a field which he has bought, which is not the field of [a]his possession, 23then the priest shall reckon to him the worth of your valuation, up to the Year of Jubilee, and he shall give your valuation on that day *as* a holy *offering* to the LORD. 24[a]In the Year of Jubilee the field shall return to him from whom it was bought, to the one who *owned* the land as a possession. 25And all your valuations shall be according to the shekel of the sanctuary: [a]twenty gerahs to the shekel.

26‘But the [a]firstborn of the animals, which should be the LORD’s firstborn, no man shall dedicate; whether *it is* an ox or sheep, it *is* the LORD’s. 27And if *it is* an unclean animal, then he shall redeem *it* according to your valuation, and [a]shall add one-fifth to it; or if it is not redeemed, then it shall be sold according to your valuation.

28[a]‘Nevertheless no [*]devoted *offering* that a man may devote to the LORD of all that he has, *both* man and beast, or the field of his possession, shall be sold or redeemed; every devoted *offering is* most holy to the LORD. 29[a]No person under the ban, who may become doomed to destruction among men, shall be redeemed, *but* shall surely be put to death. 30And [a]all the tithe of the land, *whether* of the seed of the land *or* of the fruit of the tree, *is* the LORD’s. It *is* holy to the LORD. 31[a]If a man wants at all to redeem *any* of his tithes, he shall add one-fifth to it. 32And concerning the tithe of the herd or the flock, of whatever [a]passes under the rod, the tenth one shall be holy to the LORD. 33He shall not inquire whether it is good or bad, [a]nor shall he exchange it; and if he exc1hanges it at all, then both it and the one exchanged for it shall be holy; it shall not be redeemed.’ ”

34[a]These *are* the commandments which the LORD commanded Moses for the children of Israel on Mount [b]Sinai.

SHARPENING *your* SWORD

WHY DO WE PAY OUR TITHES?

Read Leviticus 27:30

Ever since Cain and

Abel, God made it clear that we could not give Him what we wanted to give Him. Although tithing is for the welfare of the priest and the keeping of God's storehouse, it is unto the Lord. Genesis 4:4 says that Abel gave God the "firstborn" of his flock, and the Lord had respect for it. Abel brought the chief or best part. He presented God with his best. Though in this day we do not offer God goats and calves (in Bible times animals were given as a type of currency), God still wants the best of our increase.

The importance of this topic is not money or goats; it is about "seedtime and harvest." Genesis 8:22 tells us that as long as the earth remains, there will be seedtime and harvest. This word seedtime is zera in the Hebrew, and it is defined as sowing time. We can safely say that as long as the earth remains, the spiritual principles of God will be set in place.

The first place that the word tithe is mentioned in the Bible is in the Book of Leviticus. In this book tithes are described as holy or separated unto the Lord. I believe that the first thing God wants us to know is that the principle of tithing is holy or separated unto Him. Once we understand the principle, the act will become a part of life. God is so merciful that He allowed us to be stewards of all that is His. The entire earth is the Lord's and the fullness thereof. Yes, Psalm 24:1 says that not only does the whole earth belong to the Lord, but also He owns everything that is in it. God is so wonderful that He gave Adam dominion over all the earth (Gen. 1:26). The devil came in and infiltrated the plan. All of a sudden man had an enemy to contend with concerning his inheritance or place in God.

* * *

Read each of the Scriptures below, and identify what the Old Testament says about tithing:

Scripture	Physical Restriction—
Genesis 28:22	What did Jacob promise?
Numbers 18:21–24	Who was to receive the tithes?
Deuteronomy 12:17–19	What were the Israelites instructed to do?

Tithing is a covenant principle. Our Father allows us to have stewardship over all that is His and only requires that 10 percent be given back to Him. We can spend 90 percent (of what really belongs to God) at our own discretion. This is a tight covenant! God promises that if we obey Him by putting Him first in our increase, He will make us prosper. Tithing gives us the power to get wealth. God wants our first love. He can measure if we are really giving our first love when we give Him our firstfruits.

Read Malachi 3:6–11, and give at least four warnings about not paying our tithes:

____

____

____

Sharpening Point: The principle of tithing will be a friend or foe to you based on where you are in the Spirit. If you are a robber of God, it will be your worst enemy; if you are a faithful

in tithing (from your heart), it will be your best friend.

Is tithing relevant for the born-again believer today? What a silly question! It is a principle that is foundational in the kingdom—one that is eternal! The church will one day stop having services, but the kingdom has no end![*]

---

[*] Adapted from: Kimberly Daniels, *Spiritual Boot Camp*, chapter 12.

[1:1] a. Ex. 19:3; 25:22; Num. 7:89

[1:1] b. Ex. 40:34

[1:2] a. Lev. 22:18, 19

[1:3] a. Ex. 12:5; Lev. 22:20–24; Deut. 15:21; Eph. 5:27; Heb. 9:14; 1 Pet. 1:19

[1:4] a. Ex. 29:10, 15, 19; Lev. 3:2, 8, 13; 4:15

[1:4] b. (Rom. 12:1); Phil. 4:18

[1:4] c. Lev. 4:20, 26, 31; 2 Chr. 29:23, 24

[1:5] a. Mic. 6:6

[1:5] b. 2 Chr. 35:11

[1:5] c. Lev. 1:11; 3:2, 8, 13; (Heb. 12:24; 1 Pet. 1:2)

[1:6] a. Lev. 7:8

[1:7] a. Lev. 6:8–13; Mal. 1:10

[1:7] b. Gen. 22:9

[1:9] a. Gen. 8:21; (Ezek. 20:28, 41; 2 Cor. 2:15)

[1:9] * *soothing* or *pleasing aroma*

[1:10] a. Ex. 12:5; Lev. 1:3; Ezek. 43:22; (1 Pet. 1:19)

[1:11] a. Ex. 24:6;

40:22; Lev. 1:5; Ezek. 8:5

[1:13] a. Num. 15:4–7; 28:12–14

[1:14] a. Gen. 15:9; Lev. 5:7, 11; 12:8; Luke 2:24

[1:15] * Lit. *nip* or *chop off*

[1:16] a. Lev. 6:10

[1:17] a. Gen. 15:10; Lev. 5:8

[1:17] b. Lev. 1:9, 13

[1:17] * *soothing* or *pleasing aroma*

Leviticus 2

[2:1] a. Lev. 6:14; 9:17; Num. 15:4

[2:1] b. Lev. 5:11

[2:2] a. Lev. 2:9; 5:12; 6:15; 24:7; Acts 10:4

[2:3] a. Lev. 7:9

[2:3] b. Lev. 6:6; 10:12, 13

[2:3] c. Ex. 29:37; Num. 18:9

[2:4] a. Ex. 29:2

[2:4] * *spread*

[2:5] * *flat plate* or *griddle*

[2:7] a. Lev. 7:9

[2:9] a. Lev. 2:2, 16; 5:12; 6:15

[2:9] b. Ex. 29:18

[2:10] a. Lev. 2:3; 6:16

[2:11] a. Ex. 23:18; 34:25; Lev. 6:16, 17; (Matt. 16:12; Mark 8:15; Luke 12:1; 1 Cor. 5:8; Gal. 5:9)

[2:12] a. Ex. 22:29; 34:22; Lev. 23:10, 11, 17, 18

[2:12] b. (Mark 9:49, 50; Col. 4:6)

[2:13] a. Num. 18:19; 2 Chr. 13:5

[2:13] b. Ezek. 43:24

[2:13] c. Lev. 23:10,

14

[2:14] a. 2 Kin. 4:42

[2:15] a. Lev. 2:1

[2:16] a. Lev. 2:2

Leviticus 3

[3:1] a. Lev. 7:11, 29

[3:1] b. Lev. 1:3; 22:20–24

[3:1] * *imperfection* or *defect*

[3:2] a. Ex. 29:10, 11, 16, 20; Lev. 1:4, 5; 16:21

[3:2] b. Lev. 1:5

[3:3] a. Ex. 29:13, 22; Lev. 1:8; 3:16;

4:8, 9

[3:5] a. Ex. 29:13; Lev. 6:12; 7:28–34

[3:5] b. 2 Chr. 35:14

[3:5] c. Num. 28:3–10

[3:5] d. Num. 15:8–10

[3:6] a. Lev. 3:1; 22:20–24

[3:7] a. Num. 15:4, 5

[3:7] b. 1 Kin. 8:62

[3:7] c. Lev. 17:8, 9

[3:11] a. Lev. 21:6, 8, 17, 21, 22; 22:25; Num. 28:2; (Ezek.

44:7; Mal. 1:7, 12)

[3:12] a. Num. 15:6–11

[3:14] a. Lev. 3:1, 7

[3:16] a. Lev. 7:23–25; 1 Sam. 2:15; 2 Chr. 7:7

[3:17] a. Lev. 6:18; 7:36; 17:7; 23:14

[3:17] b. Gen. 9:4; Lev. 7:23, 26; 17:10, 14; 1 Sam. 14:33

[3:17] * *everlasting* or *never-ending*

Leviticus 4

[4:2] a. Lev. 5:15–18; Num. 15:22–30; 1 Sam. 14:27; Acts 3:17

[4:2] * *through error*

[4:3] a. Ex. 40:15; Lev. 8:12

[4:3] b. Lev. 3:1; 9:2

[4:3] c. Lev. 9:7

[4:4] a. Lev. 1:3, 4; 4:15; Num. 8:12

[4:5] a. Lev. 16:14; Num. 19:4

[4:6] a. Ex. 40:21, 26

[4:7] a. Lev. 4:18, 25, 30, 34; 8:15; 9:9; 16:18

[4:7] b. Ex. 40:5, 6; Lev. 5:9

[4:10] a. Lev. 3:3–5

[4:11] a. Ex. 29:14; Lev. 9:11; Num. 19:5

[4:12] a. Lev. 4:21; 6:10, 11; 16:27

[4:12] b. (Heb. 13:11, 12)

[4:13] a. Num. 15:24–26; Josh. 7:11

[4:13] b. Lev. 5:2–4, 17

[4:15] a. Lev. 1:3, 4

[4:16] a. Lev. 4:5; (Heb. 9:12–14)

[4:20] a. Lev. 4:3

[4:20] b. Lev. 1:4; Num. 15:25

[4:20] * Lit. *covering*

[4:22] a. Lev. 4:2, 13, 27

[4:22] * *leader*

[4:23] a. Lev. 4:14; 5:4

[4:23] * *is made known to him*

[4:24] a. Lev. 4:4; (Is. 53:6)

[4:25] a. Lev. 4:7, 18, 30, 34

[4:26] a. Lev. 3:3–5

[4:26] b. Lev. 4:20; Num. 15:128

[4:26] * Lit. *covering*

[4:27] a. Lev. 4:2; Num. 15:27

[4:27] * Lit. *any soul*

[4:27] * Lit. *people of the land*

[4:28] a. Lev. 4:23

[4:29] a. Lev. 1:4; 4:4, 24

[4:31] a. Lev. 3:14

[4:31] b. Lev. 3:3, 4

[4:31] c. Gen. 8:21; Ex. 29:18; Lev. 1:9, 13; 2:2, 9, 12

[4:31] d. Lev. 4:26

[4:32] a. Lev. 4:28

[4:33] a. Lev. 1:4; Num. 8:12

[4:35] a. Lev. 3:5

[4:35] b. Lev. 4:26, 31

Leviticus 5

[5:1] a. Prov. 29:24; (Jer. 23:10)

[5:1] b. Lev. 5:17; 7:18; 17:16; 19:8; 20:17; Num. 9:13

[5:1] * *his iniquity*

[5:2] a. Lev. 11:24, 28, 31, 39; Num. 19:11–16; Deut. 14:8

[5:2] b. Lev. 5:17

[5:3] a. Lev. 5:12, 13, 15

[5:4] a. 1 Sam. 25:22; Acts 23:12

[5:4] b. (Matt. 5:33–37); Mark 6:23; (James 5:12)

[5:4] * *vows*

[5:5] a. Lev. 16:21; 26:40; Num. 5:7; Ezra 10:11, 12; Ps. 32:5; Prov. 28:13

[5:7] a. Lev. 12:6, 8; 14:21

[5:7] b. Lev. 1:14

[5:8] a. Lev. 1:15–17

[5:8] * Lit. *apart*

[5:9] a. Lev. 4:7, 18, 30, 34

[5:10] a. Lev. 1:14–17

[5:10] b. Lev. 4:20, 26; 5:13, 16

[5:11] a. Lev. 14:21–32

[5:11] b. Lev. 2:1, 2; 6:15; Num. 5:15

[5:12] a. Lev. 2:2

[5:12] b. Lev. 4:35

[5:13] a. Lev. 4:26

[5:13] b. Lev. 2:3; 6:17, 26

[5:13] * *concerning his sin*

[5:15] a. Lev. 4:2; 22:14; Num. 5:5–8

[5:15] b. Ezra 10:19

[5:15] c. Ex. 30:13; Lev. 27:25

[5:16] a. Lev. 6:5; 22:14; 27:13, 15, 27, 31; Num. 5:7

[5:16] b. Lev. 4:26

[5:17] a. Lev. 4:2, 13, 22, 27

[5:17] b. Lev. 5:1, 2

[5:17] * *punishment*

[5:18] a. Lev. 5:15

[5:19] a. Ezra 10:2

Leviticus 6

[6:2] a. Num. 5:6

[6:2] b. Lev. 19:11; Acts 5:4; Col. 3:9

[6:2] c. Ex. 22:7, 10

[6:2] d. Prov. 24:28

[6:2] * *deceiving his associate*

[6:2] * *an entrusted security*

[6:3] a. Ex. 23:4; Deut. 22:1–4

[6:3] b. Ex. 22:11; Lev. 19:12; Jer. 7:9; Zech. 5:4

[6:4] a. Lev. 24:18, 21

[6:4] * *return*

[6:5] a. Lev. 5:16; Num. 5:7, 8; 2 Sam. 12:6

[6:6] a. Lev. 1:3; 5:15

[6:6] * *appraisal*

[6:7] a. Lev. 4:26

[6:9] a. Ex. 29:38–42; Num. 28:3–10

[6:10] a. Ex. 28:39–43; Lev. 16:4; Ezek. 44:17, 18

[6:10] b. Lev. 1:16

[6:11] a. Ezek. 44:19

[6:11] b. Lev. 4:12

[6:12] a. Lev. 3:3, 5, 9, 14

[6:13] a. Lev. 1:7

[6:17] a. Lev. 7:7

[6:17] * *share*

[6:18] a. Lev. 6:29; 7:6; Num. 18:10; 1 Cor. 9:13

[6:18] b. Lev. 3:17

[6:18] c. Ex. 29:37; Lev. 22:3–7; Num. 4:15; Hag. 2:11–13

[6:20] a. Ex. 29:2

[6:20] b. Ex. 16:36

[6:21] a. Lev. 2:5; 7:9

[6:21] * *pleasing*

[6:22] a. Lev. 4:3

[6:22] b. Ex. 29:25

[6:22] * *completely*

[6:25] a. Lev. 1:1, 3, 5, 11

[6:26] a. (Lev. 10:17, 18); Num. 18:9, 10; (Ezek. 44:28, 29)

[6:27] a. Ex. 29:37; Num. 4:15; Hag. 2:11–13

[6:27] * Lit. *shall*

[6:28] a. Lev. 11:33; 15:12

[6:30] a. Lev. 4:7, 11, 12, 18, 21; 10:18; 16:27; (Heb. 13:11, 12)

[6:30] b. Ex. 26:33

[6:30] c. Lev. 6:16, 23, 26

[6:30] d. Lev. 16:27

[6:30] * The Most Holy Place when capitalized

Leviticus 7

[7:1] a. Lev. 5:14—6:7

[7:6] a. Lev. 6:16–18, 29; Num. 18:9

[7:6] b. Lev. 2:3

[7:7] a. Lev. 6:24–30;
14:13

[7:9] a. Lev. 2:3, 10;
Num. 18:9; Ezek.
44:29

[7:9] * *on a griddle*

[7:11] a. Lev. 3:1;
22:18, 21; Ezek.
45:15

[7:12] a. Lev. 2:4;
Num. 6:15

[7:13] a. Lev. 2:12;
23:17, 18; Amos 4:5

[7:14] a. Num. 18:8,
11, 19

[7:15] a. Lev. 22:29,

[7:16] a. Lev. 19:5–8

[7:18] a. Num. 18:27

[7:18] b. Lev. 11:10, 11, 41; 19:7; (Prov. 15:8)

[7:18] * *his iniquity*

[7:19] * *pure*

[7:20] a. (Heb. 2:17)

[7:20] b. Lev. 5:3; 15:3; 22:3–7; Num. 19:13; (1 Cor. 11:28)

[7:20] c. Gen. 17:14; Ex. 31:14

[7:21] a. Lev. 5:2, 3, 5

[7:21] b. Lev. 11:24, 28

[7:21] c. Ezek. 4:14

[7:21] d. Lev. 7:20

[7:21] * So with MT, LXX, Vg.; Sam., Syr., Tg. *swarming thing* (cf. 5:2)

[7:23] a. Lev. 3:17; 17:10–15; Deut. 14:21; Ezek. 4:14; 44:31

[7:26] a. Gen. 9:4; Lev. 3:17; 17:10–16; 19:26; Deut. 12:23; 1 Sam. 14:33; Ezek. 33:25; Acts 15:20, 29

[7:29] a. Lev. 3:1; 22:21; Ezek. 45:15

[7:30] a. Lev. 3:3, 4, 9, 14

[7:30] b. Ex. 29:24, 27; Lev. 8:27; 9:21; Num. 6:20

[7:31] a. Lev. 3:5, 11, 16

[7:31] b. Num. 18:11; Deut. 18:3

[7:32] a. Ex. 29:27; Lev. 7:34; 9:21; Num.

6:20

[7:34] a. Ex. 29:28; Lev. 10:14, 15; Num. 18:18, 19; Deut. 18:3

[7:35] * *serve*

[7:36] a. Ex. 40:13–15; Lev. 8:12, 30

[7:37] a. Lev. 6:9

[7:37]
b.
Lev.
6:14

[7:37]
c.
Lev.
6:25

[7:37]
d.
Lev.
7:1

[7:37]
e.
Ex.
29:1;
Lev.
6:20

[7:37]
f.
Lev.
7:11

[7:38]
a.
Lev.

1:1,
2;
Deut.
4:5

Leviticus 8

[8:2]
a.
1Ex.
29:1–
3

[8:2]
b.
Ex.
28:2,
4

[8:2]
c.
Ex.
30:24,
25

[8:2]
d.
Ex.
29:10

[8:2]
e.
Ex.

29:15,
19

[8:6]
a.
Ex.
30:20;
Heb.
10:22

[8:7]
a.
Ex.
39:1–
31

[8:8]
a.
Ex.
28:30;
Num.
27:21;
Deut.
33:8;
1
Sam.
28:6;
Ezra
2:63;
Neh.
7:65

[8:8]

* Lit. *Lights and the Perfections,* Ex. 28:30

[8:9] a. Ex. 28:36, 37; 29:6

[8:10] a. Ex. 30:26–29; 40:10, 11; Lev. 8:2

[8:11] * *set them a1part* for the LORD

[8:12] a. Ex. 29:7; 30:30; Lev. 21:10, 12; Ps. 133:2

[8:13] a. Ex. 29:8, 9

[8:13] * *headpieces*

[8:14] a. Ex. 29:10; Ps. 66:15; Ezek. 43:19

[8:14] b. Lev.

4:4

[8:15] a. Ex. 29:12, 36; Lev. 4:7; Ezek. 43:20, 26; (Heb. 9:22)

[8:15] * Lit. *covering*

[8:16] a. Ex. 29:13; Lev. 4:8

[8:17] a. Ex. 29:14; Lev. 4:11, 12

[8:18]
a.
Ex.
29:15

[8:20]
a.
Lev.
1:8

[8:21]
a.
Ex.
29:18

[8:21]
*
pleasing

[8:22]
a.
Ex.
29:19,
31;
Lev.
8:2

[8:23]
a.
Ex.

29:20, 21; Lev. 14:14

[8:24] a. (Heb. 9:13, 14, 18–23)

[8:25] a. Ex. 29:22

[8:26] a. Ex. 29:23

[8:27] a. Ex. 29:24; Lev. 7:30, 34

[8:28]

a.
Ex.
29:25

[8:29]
a. Ps.
99:6

[8:29]
b.
Ex.
29:27

[8:29]
c.
Ex.
29:26

[8:30]
a.
Ex.
29:21;
30:30;
Num.
3:3

[8:31]
a.
Ex.
29:31,
32

[8:32] a. Ex. 29:34

[8:33] a. Ex. 29:30, 35; Lev. 10:7; Ezek. 43:25, 26

[8:34] a. (Heb. 7:16)

[8:35] a. Num. 1:53; 3:7; 9:19; Deut. 11:1; 1 Kin. 2:3; Ezek. 48:11

[8:35]
*
office

Leviticus 9

[9:1]
a.
Ezek. 43:27

[9:2]
a.
Ex. 29:21; Lev. 4:1–12

[9:3]
a.
Lev. 4:23, 28; Ezra 6:17; 10:19

[9:4]
a.
Lev. 2:4

[9:4] b. Ex. 29:43; Lev. 9:6, 23

[9:5] * *in the presence of*

[9:7] a. Lev. 4:3; 1 Sam. 3:14; (Heb. 5:3–5; 7:27)

[9:7] b. Lev. 4:16, 20; Heb. 5:1

[9:10]
a.
Ex.
23:18;
Lev.
8:16

[9:11]
a.
Lev.
4:11,
12;
8:17

[9:12]
a.
Lev.
1:5;
8:19

[9:13]
a.
Lev.
8:20

[9:14]
a.
Lev.
8:21

[9:15]
a.
(Is.
53:10;
Heb.
2:17;
5:3)

[9:16]
a.
Lev.
1:1–
13

[9:16]
*
ordinance

[9:17]
a.
Ex.
29:38,
39

[9:18]
a.
Lev.
3:1–
11

[9:20]
a.

Lev. 3:5, 16

[9:21] a. Ex. 29:24, 26, 27; Lev. 7:30–34

[9:22] a. Num. 6:22–26; Deut. 21:5; Luke 24:50

[9:24] a. Gen. 4:4; Judg. 6:21; 2 Chr. 7:1; Ps. 20:3

[9:24]
b.
Ezra
3:11

[9:24]
c. 1
Kin.
18:38,
39

Leviticus 10

[10:1]
a.
Ex.
24:1,
9;
Num.
3:2–
4; 1
Chr.
24:2

[10:1]
b.
Lev.
16:12

[10:1]
c.
Ex.
30:9;
1

Sam.
2:17

[10:2]
a.
Gen.
19:24;
Num.
11:1;
16:35;
Rev.
20:9

[10:3]
a.
Ex.
19:22;
Lev.
21:6;
Is.
52:11;
Ezek.
20:41

[10:4]
a.
Acts
5:6,
10

[10:4]
* *in
front*

of

[10:6] a. Num. 1:53; 16:22, 46; 18:5; Josh. 7:1; 22:18, 20; 2 Sam. 24:1

[10:6] * An act of mourning

[10:6] * *weep bitterly*

[10:7] a. Lev. 8:33; 21:12

[10:7] b. Lev. 8:30

[10:9] a. Gen. 9:21; (Prov. 20:1; 31:5); Is. 28:7; Ezek. 44:21; Hos. 4:11; Luke 1:15; (Eph. 5:18); 1 Tim. 3:3; Titus 1:7

[10:10] a. Lev. 11:47; 20:25; Ezek. 22:26;

44:23

[10:11]
a.
Deut.
24:8;
Neh.
8:2,
8;
Jer.
18:18;
Mal.
2:7

[10:12]
a.
Num.
18:9

[10:12]
b.
Lev.
21:22

[10:13]
a.
Num.
18:10

[10:13]
b.
Lev.

2:3;
6:16

[10:13]
*
portion

[10:14]
a.
Ex.
29:24,
26,
27;
Lev.
7:30–
34;
Num.
18:11

[10:14]
b.
Lev.
22:13

[10:14]
c.
Num.
18:10

[10:15]
a.
Lev.

7:29,
30,
34

[10:16]
a.
Lev.
9:3,
15

[10:17]
a.
Lev.
6:24–
30

[10:17]
b.
Ex.
28:38;
Lev.
22:16;
Num.
18:1

[10:18]
a.
Lev.
6:30

[10:18]
b.

Lev. 6:26, 30

[10:18] * The Most Holy Place when capitalized

[10:19] a. Lev. 9:8, 12

[10:19] b. (Is. 1:11–15); Jer. 6:20; 14:12; Hos. 9:4; (Mal. 1:10, 13; 3:1–4)

Leviticus 11

[11:2] a. Deut. 14:4; Ezek. 4:14; Dan. 1:8; (Matt. 15:11); Acts 10:12, 14; (Rom. 14:14; Heb. 9:10; 13:9)

[11:4] a. Acts 10:14

[11:4] * *impure*

[11:5] * *rock badger*

[11:5]
*
impure

[11:7]
a. Is. 65:4; 66:3, 17; Mark 5:1–17

[11:8]
a. Is. 52:11; (Mark 7:2, 15, 18); Acts 10:14, 15; 15:29

[11:9]
a. Deut. 14:9

[11:10]

a.
Lev.
7:18,
21;
Deut.
14:3

[11:10]
*
detestable

[11:13]
a.
Deut.
14:12–
19;
Is.
66:17

[11:22]
a.
Matt.
3:4;
Mark
1:6

[11:24]
*
impure

[11:25]
a.
Lev.

14:8; 15:5; Num. 19:10, 21, 22; 31:24; Zech. 13:1; (Heb. 9:10; 10:22; Rev. 7:14)

[11:29] a. Is. 66:17

[11:31] a. Hag. 2:13

[11:32] a. Lev. 15:12

[11:32] * *impure*

[11:33] a. Lev. 6:28

[11:33] b. Lev. 15:12; Ps. 2:9; Jer. 48:38; (2 Tim. 2:21); Rev. 2:27

[11:35] * *impure*

[11:39] a. Hag. 2:11–13

[11:40] a.

Ex. 22:31; Lev. 17:15; 22:8; Deut. 14:21; Ezek. 4:14; 44:31

[11:41] * *detestable*

[11:43] a. Lev. 20:25

[11:43] * Lit. *your souls*

[11:43] * *impure*

[11:44] a. Ex.

6:7; Lev. 22:33; 25:38; 26:45

[11:44] b. Ex. 19:6; Lev. 19:2; 20:7, 26; (Amos 3:3); Matt. 5:48; 1 Thess. 4:7; 1 Pet. 1:15, 16; (Rev. 22:11, 14)

[11:45] a. Ex. 6:7; 20:2; Lev. 22:33; 25:38;

26:45;
Ps.
105:43–
45;
Hos.
11:1

[11:45]
b.
Lev.
11:44

[11:46]
*
concerning

[11:47]
a.
Lev.
10:10;
Ezek.
44:23;
Mal.
3:18

Leviticus 12

[12:2]
a.
Lev.
15:19;
(Job
14:4;
Ps.

51:5)

[12:2] b. Ex. 22:30; Lev. 8:33; 13:4; Luke 2:22

[12:2] c. Lev. 18:19

[12:2] * *impure*

[12:3] a. Gen. 17:12; Luke 1:59; 2:21; John 7:22, 23; Gal. 5:3

[12:4]
*
consecrated

[12:6]
a.
Luke
2:22

[12:6]
b.
(John
1:29;
1
Pet.
1:18,
19)

[12:6]
c.
Lev.
5:7

[12:6]
* Lit.
*a son
of his
year*

[12:7]

* Lit.
covering

[12:8]
a.
Lev.
5:7;
Luke
2:22–
24

[12:8]
b.
Lev.
4:26

[12:8]
*
pure

Leviticus 13

[13:2]
a.
Deut.
28:27;
Is.
3:17

[13:2]
b.
Deut.
17:8,

9; 24:8; Mal. 2:7; Luke 17:14

[13:2] * Heb. *saraath,* disfiguring skin diseases, including leprosy, and so in vv. 2–46 and 14:2–32

[13:3] * *defiled*

[13:4] a. Lev. 14:8

[13:6]
a.
Lev.
11:25;
14:8;
(John
13:8,
10)

[13:8]
*
defiled

[13:10]
a.
Num.
12:10,
12; 2
Kin.
5:27;
2
Chr.
26:19,
20

[13:11]
*
defiled

[13:13]
a.
Ex.
4:6

[13:18]
a.
Ex.

9:9;
15:26

[13:22]
*
infection

[13:24]
a. Is.
3:24

[13:42]
a. 2
Chr.
26:19

[13:44]
a. Is.
1:5

[13:44]
*
altogether defiled

[13:45]
a.
Lev.
10:6;
21:10

[13:45]
b.
Ezek.
24:17,
22;
Mic.
3:7

[13:45]
c. Is.

6:5; 64:6; Lam. 4:15; Luke 5:8

[13:46] a. Num. 5:1–4; 12:14; 2 Kin. 7:3; 15:5; 2 Chr. 26:21; Ps. 38:11; Luke 17:12

[13:46] * *live alone*

[13:47] * A mold, fungus, or similar infestation, and so in vv. 47–

59

[13:49] * *mark*

[13:51] a. Lev. 14:44

Leviticus 14

[14:2] a. Matt. 8:2, 4; Mark 1:40, 44; Luke 5:12, 14; 17:14

[14:2] * See note at 13:2

[14:3] * Heb. *saraath,* disfiguring skin diseases, including leprosy, and so in vv. 2–32

[14:4] a. Lev. 14:6, 49, 51, 52; Num. 19:6; Heb. 9:19

[14:4] b. E1x. 25:4

[14:4] c. Ex. 12:22; Ps. 51:7

[14:7] a. Num. 19:18, 19; (Heb. 9:13, 21; 12:24)

[14:7] b. 2

Kin.
5:10,
14;
Ps.
51:2

[14:8]
a.
Lev.
11:25;
13:6;
Num.
8:7

[14:8]
b.
Lev.
11:25;
(Eph.
5:26;
Heb.
10:22;
Rev.
1:5,
6)

[14:8]
c.
Lev.
13:5;
Num.
5:2,
3;
12:14,
15; 2
Chr.
26:21

[14:9]
a.
Num.

19:19

[14:10]
a.
Matt.
8:4;
Mark
1:44;
Luke
5:14

[14:10]
b.
Lev.
2:1;
Num.
15:4

[14:12]
a.
Lev.
5:6,
18;
6:6;
14:19

[14:12]
b.
Ex.
29:22–
24,
26

[14:13]
a.
Ex.
29:11;
Lev.
1:5,
11;
4:4,

24

[14:13]
b.
Lev.
6:24–
30;
7:7

[14:13]
c.
Lev.
2:3;
7:6;
21:22

[14:14]
a.
Ex.
29:20;
Lev.
8:23,
24

[14:16]
a.
Lev.
4:6

[14:18]
a.
Lev.
4:26;
5:6;
Num.
15:28;
(Heb.
2:17)

[14:18]
* Lit.

covering

[14:19] a. Lev. 5:1, 6; 12:7; (2 Cor. 5:21)

[14:20] a. Lev. 14:8, 9

[14:21] a. Lev. 5:7, 11; 12:8; 27:8

[14:21] * Approximately two dry quarts

[14:22] a. Lev. 12:8; 15:14, 15

[14:23]

a.
Lev.
14:10,
11

[14:24]
a.
Lev.
14:12

[14:24]
b.
Lev.
14:14,
17

[14:30]
a.
Lev.
14:22;
15:14,
15

[14:32]
a.
Lev.
14:10

[14:34]
a.
Gen.
12:7;
13:17;
17:8;
Num.
32:22;
Deut.
7:1;
32:49

[14:34]

b. (Prov. 3:33)

[14:34] * Decomposition by mildew, mold, dry rot, etc., and so in vv. 34–53

[14:35] a. (Ps. 91:9, 10; Prov. 3:33; Zech. 5:4)

[14:37] * Lit. *lower than the wall*

[14:38] * *quarantine*

[14:44]

a.
Lev.
13:51;
(Zech.
5:4)

[14:46]
a.
Lev.
11:24;
15:5

[14:46]
*
defiled

[14:47]
a.
Lev.
14:8

[14:49]
a.
Lev.
14:4

[14:52]
*
ceremonially cleanse

[14:53]
a.
Lev.
14:20

[14:54]
a.
Lev.
13:30;
26:21

[14:55]
a.
Lev.
13:47–52

[14:55]
b.
Lev.
14:34

[14:56]
a.
Lev.
13:2

[14:57]
a.
Lev.
11:47;
20:25;
Deut.
24:8;
Ezek.
44:23

Leviticus 15

[15:2]
a.
Lev.
22:4;
Num.
5:2;
2
Sam.
3:29

[15:4]
*
defiled

[15:5]
a.
Lev.
5:2;
14:46

[15:5]
b.
Lev.
14:8,
47

[15:5]
c.
Lev.
11:25;
17:15

[15:6]
a.
Lev.
15:10;
Deut.
23:10

[15:8]
a.
Num.
12:14

[15:12]
a.
Lev.
6:28;
11:32,
33

[15:13]
a.
Lev.
14:8;

15:28;
Num.
19:11,
12

[15:14]
a.
Lev.
14:22,
23,
30,
31

[15:15]
a.
Lev.
14:30,
31

[15:15]
b.
Lev.
14:19,
31

[15:15]
* Lit.
covering

[15:16]
a.
Lev.
22:4;
Deut.
23:10,
11

[15:18]
a.
(Ex.
19:15;

1 Sam. 21:4; 1 Cor. 6:18)

[15:19] a. Lev. 12:2

[15:19] * Lit. *in her impurity*

[15:24] a. Lev. 18:19; 20:18

[15:24] * *defiled*

[15:25] a. Matt. 9:20; Mark 5:25; Luke 8:43

[15:28] a. Lev. 15:13–

15

[15:30]
a.
Lev.
5:7

[15:31]
a.
Lev.
11:47;
14:57;
22:2;
Deut.
24:8;
Ezek.
44:23;
(Heb.
12:15)

[15:31]
b.
Lev.
20:3;
Num.
5:3;
19:13,
20;
Ezek.
5:11;
23:38;
36:17

[15:32]
a.
Lev.
15:2

[15:32]
b.
Lev.

15:16

[15:33]
a.
Lev.
15:19

[15:33]
b.
Lev.
15:25

[15:33]
c.
Lev.
15:24

Leviticus 16

[16:1]
a.
Lev.
10:1,
2; 2
Sam.
6:6–
8

[16:2]
a.
Ex.
30:10;
Lev.
16:341font>;
23:27;
(Heb.
6:19;
9:7,
8,
12;
10:19)

[16:2] b. Ex. 25:21, 22; 40:34; 1 Kin. 8:10–12

[16:3] a. Lev. 4:1–12; 16:6; (Heb. 9:7, 12, 24, 25)

[16:3] b. Lev. 4:3

[16:3] * Lit. *With this*

[16:4] a. Ex. 28:39, 42, 43; Lev. 6:10;

Ezek. 44:17, 18

[16:4] b. Ex. 30:20; Lev. 8:6, 7

[16:5] a. Lev. 4:14; Num. 29:11; 2 Chr. 29:21; Ezra 6:17; Ezek. 45:22, 23

[16:6] a. Lev. 9:7; (Heb. 5:3; 7:27, 28; 9:7)

[16:10] a. (Is. 53:5,

6; Rom. 3:25; Heb. 7:27; 9:23, 24; 1 John 2:2)

[16:11] a. (Heb. 7:27; 9:7)

[16:12] a. Lev. 10:1; Num. 16:7, 18; Is. 6:6, 7; Rev. 8:5

[16:12] b. Ex. 30:34–38

[16:13] a. Ex. 30:7, 8; Num.

16:7,
18,
46

[16:13]
b.
Ex.
25:21

[16:13]
c.
Ex.
28:43;
Lev.
22:9;
Num.
4:15,
20

[16:14]
a.
Lev.
4:5;
(Heb.
9:25;
10:4)

[16:14]
b.
Lev.
4:6,
17

[16:15]
a.
(Heb.
2:17)

[16:15]
b.
(Heb.

6:19; 7:27; 9:3, 7, 12)

[16:16] a. Ex. 29:36; 30:10; Ezek. 45:18; (Heb. 9:22–24)

[16:17] a. Ex. 34:3; Luke 1:10

[16:18] a. Ex. 29:36

[16:19] a. Lev. 16:14; Ezek. 43:20

[16:19] * *set it apart*

[16:19] * *impurity*

[16:21] a. Lev. 5:5; 26:40

[16:21] b. (Is. 53:6)

[16:22] a. Lev. 8:14; (Is. 53:6, 11, 12; John 1:29; Heb. 9:28; 1 Pet. 2:24)

[16:22] b. Lev. 14:7

[16:22] * *shall carry*

[16:22]
* *solitary land*

[16:23]
a. Lev. 6:11; 16:4; Ezek. 42:14; 44:19

[16:24]
* Lit. *covering*

[16:25]
a. Lev. 1:8; 4:10

[16:26]
a. Lev. 15:5

[16:27]
a. Lev. 4:12, 21; 6:30; Heb. 13:11

[16:29]
a. Ex.

30:10; Lev. 23:27–32; Num. 29:7

[16:29] * *humble yourselves*1font>

[16:29] * As a resident alien

[16:30] a. Ps. 51:2; Jer. 33:8; (Eph. 5:26; Heb. 9:13, 14; 1 John 1:7, 9)

[16:30] * Lit. *covering*

[16:31] a. Lev. 23:27, 32;

Ezra
8:21;
Is.
58:3,
5;
Dan.
10:12

[16:32]
a.
Lev.
4:3,
5,
16;
21:10

[16:32]
b.
Ex.
29:29,
30;
Num.
20:26,
28

[16:33]
* Lit.
covering

[16:33]
*
The
Most
Holy
Place

[16:34]
a.
Lev.
23:31;
Num.

29:7

[16:34] b. Ex. 30:10; (Heb. 9:7, 25, 28)

Leviticus 17

[17:3] a. Deut. 12:5, 15, 21

[17:4] a. Rom. 5:13

[17:4] * Put to death

[17:5] a. Gen. 21:33; 22:2; 31:54; Deut. 12:1–27; Ezek. 20:28

[17:6] a. Lev. 3:2

[17:6] b. Ex. 29:13, 18; Num. 18:17

[17:7] a. Ex. 22:20; 32:8; 34:15; Deut. 32:17; 2 Chr. 11:15; Ps. 106:37; 1 Cor. 10:20

[17:7] b. Ex. 34:15; Deut. 31:16; Ezek. 23:8

[17:7] *

Having the form of a goat or satyr

[17:8] a. Lev. 1:2, 3; 18:26

[17:9] a. Lev. 14:23

[17:9] * Put to death

[17:10] a. Gen. 9:4; Lev. 3:17; 7:26, 27; Deut. 12:16, 23–25; 15:23; 1 Sam. 14:33

[17:10] b. Lev. 20:3, 5, 6

[17:11] a. Gen. 9:4; Lev. 17:14

[17:11] b. (Matt. 26:28; Rom. 3:25; Eph. 1:7; Col. 1:14, 20; 1 Pet. 1:2; 1 John 1:7)

[17:11] c. (Heb. 9:22)

[17:13] a. Lev. 7:26

[17:13]

b.
Deut.
12:16,
24

[17:13]
c.
Ezek.
24:7

[17:14]
a.
Gen.
9:4;
Lev.
17:11;
Deut.
12:23

[17:15]
a.
Ex.
22:31;
Lev.
7:24;
22:8;
Deut.
14:21;
Ezek.
4:14;
44:31

[17:15]
b.
Lev.
11:25

[17:15]
c.
Lev.
15:5

[17:16] a. Lev. 5:1

[17:16] * *iniquity*

Leviticus 18

[18:2] a. Ex. 6:7; Lev. 11:44, 45; 19:3; Ezek. 20:5, 7, 19, 20

[18:3] a. Josh. 24:14; Ezek. 20:7, 8

[18:3] b. Ex. 23:24; Lev. 18:24–30; 20:23;

Deut.
12:30,
31

[18:3]
*
*what
is
done
in*

[18:3]
*
statutes

[18:4]
a.
Ezek.
20:19

[18:8]
a.
Gen.
35:22

[18:9]
a.
Lev.
18:11;
20:17;
Deut.
27:22

[18:12]
a.
Lev.
20:19

[18:14]
a.
Lev.

20:20

[18:17] a. Lev. 20:14

[18:18] a. 1 Sam. 1:6, 8

[18:19] a. Ezek. 18:6

[18:19] b. Lev. 15:24; 20:18

[18:20] a. (Prov. 6:25–33)

[18:20] b. Ex. 20:14; Lev. 20:10; (Matt. 5:27, 28; 1 Cor. 6:9;

Heb. 13:4)

[18:21] a. Lev. 20:2–5; Deut. 12:31

[18:21] b. 2 Kin. 16:3

[18:21] c. 1 Kin. 11:7, 33; Acts 7:43

[18:22] a. Lev. 20:13; Rom. 1:27

[18:23] a. Ex. 22:19; Lev. 20:15, 16; Deut. 27:21

[18:24] a. Matt. 15:18–20; 1 Cor. 3:17

[18:24] b. Lev. 18:3; 20:23; Deut. 18:12

[18:25] a. Num. 35:33, 34; Ezek. 36:17

[18:25] b. Is. 26:21; Jer. 5:9

[18:25] c. Lev. 18:28; 20:22

[18:25] * *bring judgment for*

[18:26]
a.
Lev.
18:5,
30

[18:26]
*
obey

[18:28]
a.
Jer.
9:19

[18:29]
* Put
to
death

[18:30]
a.
Lev.
18:3;
22:9

[18:30]
b.
Lev.
18:2

[18:30]
*
charge

Leviticus 19

[19:2]
a.
Ex.
19:6;

Lev. 11:44; 20:7, 26; (Eph. 1:4); 1 Pet. 1:16

[19:3] a. Ex. 20:12; Deut. 5:16; Matt. 15:4; Eph. 6:2

[19:3] b. Ex. 16:23; 20:8; 31:13

[19:4] a. Ex. 20:4; Ps. 96:5; 115:4–7; 1 Cor. 10:14; (Col. 3:5)

[19:4] b. Ex. 34:17

[19:4] * *molten*

[19:5] a. Lev. 7:16

[19:9] a. Lev. 23:22; Deut. 24:19–22

[19:11] a. Ex. 20:15, 16

[19:11] b. Jer. 9:3–5; Eph. 4:25

[19:12] a. Ex. 20:7; Deut.

5:11; (Matt. 5:33–37; James 5:12)

[19:12] b. Lev. 18:21

[19:13] a. Ex. 22:7–15, 21–27; Mark 10:19

[19:13] b. Deut. 24:15; Mal. 3:5; James 5:4

[19:14] a. Deut. 27:18

[19:15] a. Deut. 16:19

[19:15] b. Ex. 23:3, 6; Deut. 1:17; 10:17; Ps. 82:2

[19:16] a. Prov. 11:13; 18:8; 20:19

[19:16] b. Ex. 23:7; Deut. 27:25; 1 Kin. 21:7–19

[19:17] a. (1 John 2:9, 11; 3:15)

[19:17] b. Matt. 18:15; (Luke

17:3); Eph. 5:11

[19:17] * *reprove*

[19:18] a. (Deut. 32:35; 1 Sam. 24:12; Rom. 12:19; Heb. 10:30)

[19:18] b. Matt. 5:43; 19:19; Mark 12:31; Luke 10:27; (Rom. 13:9; Gal. 5:14); James 2:8

[19:20] a. Deut. 22:23–27

[19:20]
*
punishment

[19:22]
* Lit.
covering

[19:23]
*
unclean

[19:28]
a. 1
Kin.
18:28;
Jer.
16:6

[19:29]
a.
Lev.
21:9;
Deut.
22:21;
23:17,
18

[19:30]
a.
Lev.
26:2;
Eccl.
5:1

[19:30]
*
observe

[19:31]
a.

Lev. 20:6, 27; Deut. 18:11; 1 Sam. 28:3; Is. 8:19

[19:32] a. Prov. 23:22; Lam. 5:12; 1 Tim. 5:1

[19:32] b. Lev. 19:14

[19:32] * *rise to give honor*

[19:33] a. Ex. 22:21; Deut. 24:17, 18

[19:34]

a.
Ex.
12:48

[19:34]
b.
Deut.
10:19

[19:34]
*
*native
among
you*

[19:36]
a.
Deut.
25:13–
15;
Prov.
20:10

[19:37]
a.
Lev.
18:4,
5;
Deut.
4:5,
6;
5:1;
6:25

Leviticus 20

[20:2]
a.
Lev.
18:2

[20:2] b. Lev. 18:21; 2 Kin. 23:10; 2 Chr. 33:6; Jer. 7:31

[20:2] c. Deut. 17:2–5

[20:2] * As resident aliens

[20:3] a. Lev. 17:10

[20:3] * Put him to death

[20:4] * *disregard*

[20:6] a.

Lev. 19:31; 1 Sam. 28:7–25

[20:7] a. Lev. 19:2; Heb. 12:14

[20:7] * *Set yourselves apart* for the LORD

[20:8] a. Lev. 19:19, 37

[20:8] b. Ex. 31:13; Deut. 14:2; Ezek. 37:28

[20:8] * *sets you apart*

[20:9] a. Ex. 21:17; Deut. 27:16; Prov. 20:20; Matt. 15:4

[20:9] b. 2 Sam. 1:16

[20:10] a. Ex. 20:14; Lev. 18:20; Deut. 5:18; 22:22; John 8:4, 5

[20:11] a. Lev. 18:7, 8; Deut. 27:20

[210:12] a. Lev. 18:15

[20:13] a. Lev. 18:22; Deut. 23:17; Judg. 19:22

[20:14] a. Lev. 18:17

[20:15] a. Lev. 18:23; Deut. 27:21

[20:17] a. Lev. 18:9; Deut. 27:22

[20:17] * Put to death

[20:17] * *iniquity*

[20:18] a. Lev. 15:24;

18:19

[20:18]
* Or
customary
impurity

[20:18]
* Lit.
made
bare

[20:18]
* Put
to
death

[20:19]
a.
Lev.
18:13

[20:19]
b.
Lev.
18:12

[20:20]
a.
Lev.
18:14

[20:21]
a.
Lev.
18:16;
Matt.
14:3,
4

[20:21]

*
indecent, impure

[20:22] a. Lev. 18:26; 19:37

[20:22] b. Lev. 18:25, 28; 2 Chr. 36:14–16

[20:23] a. Lev. 18:3, 24

[20:23] b. Deut. 9:5

[20:24] a. Ex. 3:17; 6:8; 13:5; 33:1–3

[20:24] b.

Ex. 19:5; 33:16; Lev. 20:26; Deut. 7:6; 14:2; 1 Kin. 8:53

[20:25] a. Lev. 10:10; 11:1–47; Deut. 14:3–21

[20:25] b. Lev. 11:43

[20:25] * *detestable* or *loathsome*

[20:25] * *defiled*

[20:26] a. Lev. 19:2;

1 Pet. 1:16

[20:27] a. Lev. 19:31; 1 Sam. 28:9

Leviticus 21

[21:1] a. Lev. 19:28; Ezek. 44:25

[21:4] * Lit. *master* or *husband*

[21:5] a. Lev. 19:27; Deut. 14:1; Ezek. 44:20

[21:6] a. Ex. 22:31

[21:6] b. Lev. 3:11

[21:6] c. Is. 52:11

[21:7] a. Ezek. 44:22

[21:7] b. Deut. 24:1, 2

[21:7] * Lit. *he*

[21:8] a. Lev. 11:44, 45

[21:8] b. Lev. 8:12, 30

[21:8] * *set him apart*

[21:9]
a.
Deut.
22:21

[21:10]
a.
Lev.
8:12

[21:10]
b.
Lev.
10:6,
7

[21:10]
* In
mourning

[21:11]
a.
Num.
19:14

[21:12]
a.
Lev.
10:7

[21:12]
b.
Ex.
29:6,
7

[21:18]
a.
Lev.
22:19–
25

[21:18]
b.
Lev.
22:23

[21:23]
a.
Lev.
16:2

[21:23]
b.
Lev.
21:12

Leviticus 22

[22:2]
a.
Num.
6:3

[22:2]
b.
Lev.
18:21

[22:2]
c.
Ex.
28:38;
Lev.
16:19;
25:10;
Num.
18:32;
Deut.
15:19

[22:2]
*

keep themselves apart from

[22:3] a. Lev. 7:20, 21; Num. 19:13

[22:3] * *defilement*

[22:4] a. Num. 5:2

[22:4] b. Lev. 15:2

[22:4] c. Lev. 14:2; 15:13

[22:4] d. Lev. 11:24–28, 39, 40; Num.

19:11

[22:4]
e.
Lev.
15:16,
17

[22:5]
a.
Lev.
11:23–
28

[22:5]
b.
Lev.
15:7,
19

[22:6]
a.
Lev.
15:5

[22:7]
a.
Lev.
21:22;
Num.
18:11,
13

[22:8]
a.
Ex.
22:31;
Lev.
7:24;
11:39,
40;

17:15; Ezek. 44:31

[22:9] a. Lev. 18:30

[22:9] b. Ex. 28:43; Lev. 22:16; Num. 18:22

[22:9] * *charge*

[22:10] a. Ex. 29:33; Lev. 22:13; Num. 3:10

[22:10] * As a visitor

[22:11] a. Ex. 12:44

[22:14]
a.
Num.
18:32

[22:18]
a.
Lev.
1:2,
3, 10

[22:18]
*
brings
his
offering

[22:19]
a.
Lev.
1:3;
Deut.
15:21

[22:20]
a.
Deut.
15:21;
17:1;
Mal.
1:8,
14;
(Eph.
5:27;
Heb.
9:14;
1
Pet.
1:19)

[22:21]

a.
Lev.
3:1,
6

[22:21]
b.
Num.
15:3,
8;
Ps.
61:8;
65:1;
Eccl.
5:4,
5

[22:22]
a.
Lev.
22:20;
Mal.
1:8

[22:22]
b.
Lev.
1:9,
13;
3:3,
5

[22:22]
*
running
sore

[22:23]
a.
Lev.
21:18

[22:25]
a.
Num.
15:15,
16

[22:25]
b.
Lev.
21:6,
17

[22:25]
c.
Mal.
1:14

[22:27]
a.
Ex.
22:30

[22:28]
a.
Deut.
22:6,
7

[22:29]
a.
Lev.
7:12;
Ps.
107:22;
116:17;
Amos
4:5

[22:30]
a.
Lev.

7:15

[22:31]
a.
Lev.
19:37;
Num.
15:40;
Deut.
4:40

[22:32]
a.
Lev.
18:21

[22:32]
b.
Lev.
10:3;
Matt.
6:9;
Luke
11:2

[22:32]
c.
Lev.
20:8

[22:32]
*
treated
as
holy

[22:33]
a.
Lev.
19:36,
37;

Num. 15:40; Deut. 4:40

Leviticus 23

[23:2] a. Ex. 12:16

[23:3] a. Ex. 20:9; 23:12; 31:15; Lev. 19:3; Deut. 5:13, 14; Luke 13:14

[23:4] a. Ex. 23:14–16; Lev. 23:2, 37

[23:5] a. Ex. 12:1–28; Num.

9:1–5; 28:16–25; Deut. 16:1–8; Josh. 5:10

[23:7] a. Ex. 12:16; Num. 28:18, 25

[23:7] * *occupational*

[23:10] a. Ex. 23:19; 34:26

[23:10] b. (Rom. 11:16); James 1:18; Rev. 14:4

[23:11] a. Ex. 29:24

[23:13]
*
pleasing

[23:16]
a.
Acts
2:1

[23:16]
b.
Num.
28:26

[23:17]
a.
Ex.
23:16,
19;
Num.
15:17–
21

[23:19]
a.
Lev.
4:23,
28;
Num.
28:30;
(2
Cor.
5:21)

[23:19]
b.
Lev.
3:1

[23:20]
a.

Lev.
14:13;
Num.
18:12;
Deut.
18:4

[23:22]
a.
Lev.
19:9,
10;
Deut.
24:19–
22;
Ruth
2:2,
15

[23:24]
a.
Num.
29:1

[23:24]
b.
Lev.
25:9

[23:27]
a.
Lev.
16:1–
34;
25:9;
Num.
29:7

[23:28]
a.
Lev.

16:34

[23:29]
a. Is.
22:12;
Jer.
31:9;
Ezek.
7:16

[23:29]
b.
Gen.
17:141;
Lev.
13:46;
Num.
5:2

[23:30]
a.
Lev.
20:3–
6

[23:32]
*
humble
yourselves

[23:32]
*
observe
your
sabbath

[23:34]
a.
Ex.
23:16;
Num.

29:12;
Deut.
16:13–
16;
Ezra
3:4;
Neh.
8:14;
Zech.
14:16–
19;
John
7:2

[23:36]
a.
Num.
29:12–
34

[23:36]
b.
Num.
29:35–
38;
Neh.
8:18;
John
7:37

[23:36]
c.
Deut.
16:8;
2
Chr.
7:8

[23:36]
*
solemn

[23:37] a. Lev. 23:2, 4

[23:38] a. Num. 29:39

[23:39] a. Ex. 23:16; Deut. 16:13

[23:40] a. Neh. 8:15

[23:40] b. Deut. 12:7; 16:14, 15

[23:40] * *foliage*

[23:41] a. Num. 29:12; Neh. 8:18

[23:42] a. (Is. 4:6)

[23:42] b. Neh. 8:14–16

[23:42] * *tabernacles;* shelters made of boughs

[23:43] a. Ex. 13:14; Deut. 31:13; Ps. 78:5

[23:43] b. Ex. 10:2

[23:43] c. Lev. 22:33

[23:44] a. Lev.

23:2

Leviticus 24

[24:2] a. Ex. 27:20, 21

[24:4] a. Ex. 25:31; 31:8; 37:17

[24:4] * *arrange* or *set in order*

[24:5] a. Ex. 25:30; 39:36; 40:23

[24:6] a. Ex. 25:23, 24; 1 Kin. 7:48; 2 Chr. 4:19;

13:11;
Heb.
9:2

[24:7]
a.
Lev.
2:2,
9, 16

[24:8]
a.
Num.
4:7;
1
Chr.
9:32;
2
Chr.
2:4;
Matt.
12:4,
5

[24:9]
a. 1
Sam.
21:6;
Matt.
12:4;
Mark
2:26;
Luke
6:4

[24:9]
b.
Ex.
29:33;
Lev.
8:31

[24:11] a. Ex. 22:28

[24:11] b. Job 1:5, 11, 22; Is. 8:21

[24:11] c. Ex. 18:22, 26

[24:12] a. Num. 15:34

[24:12] b. Num. 27:5

[24:12] * *under guard*

[24:12] * Lit. *it might be declared*

to them from the mouth of the LORD

[24:14] a. Deut. 13:9; 17:7

[24:15] a. Lev. 20:17; Num. 9:13

[24:15] * *be responsible for*

[24:16] a. Ex. 20:7; 1 Kin. 21:10, 13; (Matt. 12:31; Mark 3:28, 29)

[24:17]
a.
Gen.
9:6;
Ex.
21:12;
Num.
35:30,
31;
Deut.
19:11,
12;
27:24

[24:18]
a.
Lev.
24:21

[24:19]
a.
Ex.
21:24

[24:20]
a.
Ex.
21:23;
Deut.
19:21

[24:20]
b.
(Matt.
5:38,
39)

[24:22]
a.
Ex.
12:49;

Lev. 19:33–37; Num. 9:14; 15:15, 16, 29

[24:22] * *one standard of judgment*

Leviticus 25

[25:1] a. Lev. 26:46

[25:2] a. Lev. 26:34, 35

[25:4] a. Deut. 15:1; Neh. 10:31

[25:4] b. (Heb. 4:9)

[25:5]

a. 2
Kin.
19:29

[25:9]
a.
Lev.
23:24,
27

[25:10]
a. Is.
61:2;
63:4;
Jer.
341:8,
15,
17;
(Luke
4:19)

[25:10]
b.
Lev.
25:13,
28,
54;
Num.
36:4

[25:11]
a.
Lev.
25:5

[25:12]
a.
Lev.
25:6,
7

[25:13] a. Lev. 25:10; 27:24; Num. 36:4

[25:14] a. Lev. 19:13

[25:15] a. Lev. 27:18, 23

[25:17] a. Lev. 25:14; Prov. 14:31; 22:22; Jer. 7:5, 6; 1 Thess. 4:6

[25:17] b. Lev. 19:14, 32; 25:43

[25:17] *

mistreat

[25:18] a. Lev. 19:37

[25:18] b. Lev. 26:5; Deut. 12:10; Ps. 4:8; Jer. 23:6

[25:19] a. Lev. 26:5; Ezek. 34:25

[25:20] a. Matt. 6:25, 31

[25:20] b. Lev. 25:4, 5

[25:21] a. Deut. 28:8

[25:21] b. Ex. 16:29

[25:22] a. 2 Kin. 19:29

[25:22] b. Lev. 26:10; Josh. 5:11

[25:23] a. Ex. 19:5; 2 Chr. 7:20

[25:23] b. Gen. 23:4; Ex. 6:4; 1 Chr. 29:15; Ps. 39:12; Heb. 11:13; 1 Pet. 2:11

[25:25] a. Ruth 2:20; 4:4, 6

[25:25] b. Num. 5:8; Ruth 3:2, 9, 12; (Job 19:25); Jer. 32:7, 8

[25:27] a. Lev. 25:50–52

[25:28] a. Lev. 25:10, 13

[25:32] a. Num. 35:1–8; Josh. 21:2

[25:34] a. Num. 35:2–5

[25:34] b. Acts 4:36, 37

[25:35] a. Deut. 15:7–11; 24:14, 15; Luke 6:35; 1 John 3:17

[25:35] * Lit. *his hand fails*

[25:36] a. Ex. 22:25; Deut. 23:19, 20

[25:36] b.

Neh. 5:9

[25:38] a. Lev. 11:45; 22:32, 33

[25:41] a. Ex. 21:3

[25:42] a. Lev. 25:55; (Rom. 6:22; 1 Cor. 7:22, 23)

[25:43] a. Eph. 6:9; Col. 4:1

[25:43] b. Ex. 1:13, 14; Lev. 25:46, 53;

Ezek.
34:4

[25:43]
c.
Ex.
1:17;
Deut.
25:18;
Mal.
3:5

[25:43]
*
severity

[25:45]
a.
(Is.
56:3,
6, 7)

[25:46]
a. Is.
14:2

[25:50]
a.
Job
7:1;
Is.
16:14

Leviticus 26

[26:1]
a.
Ex.
20:4,
5;
Deut.

4:15–18; 5:8

[26:2] a. Lev. 19:30

[26:2] * *observe*

[26:3] a. Deut. 28:1–14

[26:4] a. Is. 30:23

[26:4] b. Ps. 67:6

[26:5] a. Deut. 11:15; Joel 2:19, 26; Amos 9:13

[26:5] b. Lev.

25:18, 19; Ezek. 34:25

[26:6] a. Is. 45:7

[26:6] b. Job 11:19; Ps. 4:8; Zeph. 3:13

[26:6] c. 2 Kin. 17:25; Hos. 2:18

[26:6] d. Ezek. 14:17

[26:6] * *wild beasts*

[26:8] a. Deut. 32:30; Judg. 7:7–

12

[26:9] a. Ex. 2:25; 2 Kin. 13:23

[26:9] b. Gen. 17:6, 7; Ps. 107:38

[26:9] c. Gen. 17:1–7

[26:10] a. Lev. 25:22

[26:11] a. Ex. 25:8; 29:45, 46; Josh. 22:19; Ps. 76:2; Ezek. 37:26;

Rev. 21:3

[26:11] * *dwelling place*

[26:12] a. Deut. 23:14; (2 Cor. 6:16)

[26:13] a. Gen. 27:40

[26:13] * *erect*

[26:16] a. Deut. 28:22

[26:16] b. 1 Sam. 2:33

[26:16] c. Ezek. 24:23; 133:10

[26:16] d. Judg. 6:3–6; Job 31:8; Mic. 6:15

[26:16] * *without profit*

[26:17] a. Ps. 34:16

[26:17] b. Deut. 28:25; 1 Sam. 4:10; 31:1

[26:17] c. Ps. 106:41

[26:17] d. Prov. 28:1

[26:17] * *oppose you*

[26:18] a. 1 Sam. 2:5

[26:19] a. Is. 25:11

[26:19] b. Deut. 28:23

[26:20] a. Ps. 127:1; Is. 17:10, 11; 49:4; Jer. 12:13

[26:20] b. Gen. 4:12; Deut. 11:17

[26:22] a. Deut. 32:24; Ezek. 14:21

[26:22] b. Judg.

5:6; 2 Chr. 15:5; Zech. 7:14

[26:23] a. Jer. 2:30; Amos 4:6–12

[26:24] a. Lev. 26:28, 41; Ps. 18:26

[26:25] a. Ezek. 5:17

[26:25] b. Num. 16:49; Deut. 28:21; 2 Sam. 24:15

[26:26] a. Ps. 105:16;

Is. 3:1; Ezek. 4:16, 17; 5:16

[26:26] b. Mic. 6:14; Hag. 1:6

[26:29] a. Deut. 28:53; 2 Kin. 6:28, 29

[26:29] * In time of famine

[26:30] a. 1 Kin. 13:2; 2 Chr. 34:3; Is. 27:9; Ezek. 6:3–6, 13

[26:31]
a. 2
Kin.
25:4,
10

[26:31]
b. 2
Chr.
36:19;
Ps.
74:7

[26:31]
c. Is.
1:11–
15

[26:31]
*
pleasing

[26:32]
a.
Jer.
9:11;
18:16

[26:33]
a.
Deut.
4:27;
Ps.
44:11;
Ezek.
12:15;
20:23;
22:15;
Zech.
7:14

[26:34] a. Lev. 26:43; 2 Chr. 36:21

[26:35] a. Lev. 25:2

[26:36] a. Is. 30:17; Lam. 1:3, 6; 4:19; Ezek. 21:7, 12, 15

[26:36] * *fear*

[26:37] a. Judg. 7:22; 1 Sam. 14:15, 16; Is. 10:4

[26:37]

b. Josh. 7:12, 13; Judg. 2:14

[26:38] a. Deut. 4:26

[26:39] a. Deut. 28:65; Ezek. 4:17; 33:10; Zech. 10:9

[26:39] b. Ex. 34:7

[26:39] * *rot away*

[26:40] a. Num. 5:7; 1 Kin. 8:33, 34; Neh. 9:2;

Luke 15:18; (1 John 1:9)

[26:41] a. Acts 7:51; Rom. 2:29

[26:41] b. 2 Chr. 12:6, 7, 12; 1 Pet. 5:5, 6

[26:41] c. Ps. 39:9; 51:3, 4; Dan. 9:7

[26:42] a. Ex. 2:24; 6:5; Ps. 106:45; Ezek. 16:60

[26:42]
b.
Ps.
136:23

[26:43]
a.
Lev.
26:34,
35

[26:43]
b.
Lev.
26:15

[26:44]
a.
Deut.
4:31;
2
Kin.
13:23;
Jer.
30:11;
(Rom.
11:1–
36)

[26:45]
a.
(Rom.
11:28)

[26:45]
b.
Lev.
22:33;
25:38

[26:45]

c. Ps.
98:2;
Ezek.
20:9,
14,
22

[26:46]
a.
Lev.
27:34;
Deut.
6:1;
12:1;
(John
1:17)

[26:46]
b.
Lev.
25:1

Leviticus
271font>

[27:2]
a.
Lev.
7:16;
Num.
6:2;
Deut.
23:21–
23;
Judg.
11:30,
31,
39

[27:2]
* Or

makes a difficult or *extraordinary vow*

[27:2] * *appraisal*

[27:3] a. Ex. 30:13; Lev. 27:25; Num. 3:47; 18:16

[27:8] a. Lev. 5:11; 14:21–24

[27:10] a. Lev. 27:33

[27:13] a. Lev. 6:5; 22:14; 27:15, 19

[27:14]
* *sets apart*

[27:15]
* *buy back*

[27:16]
* *sets apart*

[27:18]
a. Lev. 25:15, 16, 28

[127:21]
a. Lev. 25:10, 28, 31

[27:21]
b. Lev. 27:28

[27:21]
c. Num. 18:14; Ezek. 44:29

[27:22]
a. Lev.

25:10,
25

[27:24]
a.
Lev.
25:10–
13,
28

[27:25]
a.
Ex.
30:13;
Lev.
27:3;
Num.
3:47;
18:16;
Ezek.
45:12

[27:26]
a.
Ex.
13:2,
12;
22:30

[27:27]
a.
Lev.
27:11,
12

[27:28]
a.
Lev.
27:21;
Num.
18:14;

Josh. 6:17–19

[27:28] * Given exclusively and irrevocably

[27:29] a. Num. 21:2

[27:30] a. Gen. 28:22; Num. 18:21, 24; 2 Chr. 31:5, 6, 12; Neh. 13:12; Mal. 3:8

[27:31] a. Lev. 27:13

[27:32] a. Jer. 33:13;

Ezek. 20:37; Mic. 7:14

[27:33] a. Lev. 27:10

[27:34] a. Lev. 26:46; Deut. 4:5; Mal. 4:4

[27:34] b. Ex. 19:1–6, 25; (Heb. 12:18–29)

The Holy Spirit’s Work in

NUMBERS

Introduction

The Holy

Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

What could have been a short journey from Sinai into Canaan became forty years of wandering in the wilderness because of Israel’s lack of faith in God (Num. 13–14). Only

Caleb and Joshua trusted the leading of God’s Spirit and ultimately survived to enter the Promised Land.

In Numbers, we begin to see the role of God’s Holy Spirit in empowering and preparing us for the tasks God gives to us. God took some of the anointing of His Spirit that He had placed on Moses and put it on seventy men chosen to be leaders of Israel so that the burden of leadership could be carried by more than just

Moses (Num. 11). The Spirit’s empowerment is not some *thing* we can possess; we need to be continually filled and refilled with the Spirit to be prep1ared for spiritual warfare.

The fiery cloud of the Spirit’s presence covered the Tabernacle and led the people through the wilderness (Num. 9). Moses obeyed the commands he heard from God's Spirit — with one exception. In anger he struck a rock to bring forth water for the complaining Israelites (Num. 20). Disobeying God's Spirit kept both Moses and Aaron from entering the Promised Land.

Following and obeying God’s Spirit, and making sure we are continually filled and refilled with the Spirit’s power, lead to claiming His promises, but disobedience and rebellion result in death.[*]

---

[*] Adapted from the *Holy Spirit Encounter Bible,* Introduction to Numbers, 123, and John Rea, *Charisma's Bible Handbook on the Holy Spirit,* 37–41.

Numbers 1

The First Census of Israel

[1]Now the LORD spoke to Moses [a]in the Wilderness of Sinai, [b]in the tabernacle of meeting, on the [c]first *day* of the second month, in the second

year after they had come out of the land of Egypt, saying: 2[a]“Take a census of all the congregation of the children of Israel, by their families, by their fathers’ houses, according to the number of names, every male [b]individually, 3from [a]twenty years old and above—all who *are able to* go to war in Israel. You and Aaron shall number them by their armies. 4And with you there shall be a man from every tribe, each one the head of his father’s house.

5“These are the names of the men who shall stand with you: from Reuben, Elizur the son of Shedeur; 6from Simeon, Shelumiel the son of Zurishaddai; 7from Judah, Nahshon the son of Amminadab; 8from Issachar, Nethanel the son of Zuar; 9from Zebulun, Eliab the son of Helon; 10from the sons of Joseph: from Ephraim, Elishama the son of Ammihud; from Manasseh, Gamaliel the son of Pedahzur; 11from Benjamin1, Abidan the son of Gideoni; 12from Dan, Ahiezer the son of Ammishaddai; 13from Asher, Pagiel the son of Ocran; 14from Gad, Eliasaph the son of [a]Deuel;[*]15from Naphtali, Ahira the son of Enan.”

16[a]These *were* [b]chosen[*] from the congregation, leaders of their fathers’ tribes, [c]heads of the divisions in Israel.

17Then Moses and Aaron took these men who had been [*]mentioned [a]by name, 18and they assembled all the congregation together on the first *day* of the second month; and they recited their [a]ancestry by families, by their fathers’ houses, according to the number of names, from twenty years old and above,

each one
individually. 19As the
LORD commanded
Moses, so he
numbered them in
the Wilderness of
Sinai.

20Now the
[a]children of Reuben,
Israel's oldest son,
their genealogies by
their families, by
their fathers' house,
according to the
number of names,
every male
individually, from
twenty years old and
above, all who *were
able to* go to war:
21those who were
numbered of the
tribe of Reuben *were*
forty-six thousand
five hundred.

22From the
[a]children of Simeon,
their genealogies by
their families, by
their fathers' house,
of those who were
numbered, according
to the number of
names, every male
individually, from
twenty years old and
above, all who *were
able to* go to war:
23those who were
numbered of the

tribe of Simeon *were* fifty-nine thousand three hundred.

24From the [a]children of Gad, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 25those who were numbered of the tribe of Gad *were* forty-five thousand six hundred and fifty.

26From the [1][a]children of Judah, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 27those who were numbered of the tribe of Judah *were* [a]seventy-four thousand six hundred.

28From the [a]children of Issachar, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 29those who were numbered of the tribe of Issachar *were* fifty-four thousand four hundred.

30From the [a]children of Zebulun, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 31those who were numbered of the tribe of Zebulun *were* fifty-seven thousand four hundred.

32From the sons of Joseph, the [a]children of Ephraim, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 33those who were numbered of the tribe of Ephraim *were* forty thousand five hundred.

34From the [a]children of Manasseh, their genealogies by their families, by their fathers’ house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 35those who were numbered of the tribe of Manasseh *were* thirty-two thousand two hundred.

36From the [a]children of Benjamin, their genealogies by their families, by their fathers’ house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 37those who were numbered of the tribe of Benjamin *were* thirty-five thousand four hundred.

38From the [a]children of Dan, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 39those who were numbered of the tribe of Dan *were* sixty-two thousand seven hundred.

40From the [a]children of Asher, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 41those who were numbered of the tribe of Asher *were* forty-one thousand five hundred.

42From the children of Naphtali, their genealogies by their families, by their fathers' house, according to the number of names, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war: 43those who were numbered of the tribe of Naphtali *were* fifty-three thousand four hundred.

44[a]These are the ones who were numbered, whom Moses and Aaron numbered, with the leaders of Israel, twelve men, each one representing his father's house. 45So all who were numbered of the children of Israel, by their fathers' houses, from twenty years old and above, all who *were able to* go to war in Israel—46all who were numbered were [a]six hundred and three thousand five hundred and fifty.

47But [a]the Levites were not numbered among them by their fathers' tribe; 48for the LORD had spoken to Moses, saying: 49[a]"Only the tribe of Levi you shall not number, nor take a census of them among the children of Israel; 50[a]but you shall appoint the Levites over the tabernacle of the

Testimony, over all its furnishings, and over all things that belong to it; they shall carry the tabernacle and all its furnishings; they shall attend to it [b]and camp around the tabernacle. 51[a]And when the tabernacle is to go forward, the Levites shall take it down; and when the tabernacle is to be set up, the Levites shall set it [b]up. [c]The outsider who comes near shall be put to death. 52The children of Israel shall pitch their tents, everyone by his own camp, [a]everyone by his own standard, according to their armies; 53[a]but the Levites shall camp around the tabernacle of the Testimony, that there may be no [b]wrath on the congregation of the children of Israel; and the Levites shall [c]keep[*] charge of the tabernacle of the Testimony."

54Thus the children of Israel did; according to all that the LORD commanded Moses, so they did.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

EXPERIENCING DELIVERANCE AND RELEASE

Failures that cause bitterness are reversed through warfare prayer. Prosperity and success will come. Advancement will be seen in different areas of your life. You will experience success in relationships, finances, ministry, and projects. Deliverance is designed to eliminate the spiritual obstacles that impede progress. Deliverance makes the rough places smooth and the crooked places straight.

You can see the enemy routed from your life.

You can live free from the bondages and oppressions of demons. You can experience victory through prayer. Your words and prayers have tremendous power to destroy the works of darkness. Those who experience deliverance and release will see notable changes.

Sometimes the change is progressive and sometimes instantaneous. The change, however, will be dramatic. There will be an increase of joy, liberty, peace, and success. This will result in a better spiritual life with an increase of strength and holiness.

Patience is necessary to see breakthrough. God promised Israel that He would drive the enemy out little by little (Deut. 7:22; Ex. 23:29–30). Unless you understand this principle, you will become weary in praying for some people, and you will become discouraged in your own deliverance. The more freedom you will receive, the more you need to grow and possess your land.

You have the authority to bind and loose (Matt. 18:18). Webster's dictionary defines the word *bind* as "to make secure by tying; to confine, restrain, or restrict as if with bonds: to constrain with legal authority: to exert a restraining or compelling effect." It also means "to arrest, apprehend, handcuff, lead captive, take charge of, lock up, restrain, check, or put a stop to.” Binding is done by legal authority. We have legal authority in the name of Jesus to bind the works of darkness.

The works of darkness encompass sin, iniquity, perversion, sickness, disease, infirmity, death, destruction, curses, witchcraft, sorcery, divination, poverty, lack, strife, lust, pride, rebellion, fear, torment, and confusion. We have legal authority to put a stop to these things in our lives and in the lives of those we minister to.

Loose means

“to
untie,
to
free
from
restraint,
to
detach,
to
disjoin,
divorce,
separate,
unhitch,
get
free,
get
loose,
escape,
break
away,
unbind,
unchain,
unfetter,
free,
release,
unlock,
liberate,
disconnect,
or
forgive.”

People
need
to be
loosed
from
curses,
evil
inheritance,
familiar

spirits, sin, guilt, shame, condemnation, control, domination, manipulation, intimidation, mind control, reli1gious control, sickness, disease, deception, false teaching, sin, habits, worldliness, carnality, demons, tradition, ungodly soul ties, ungodly pledges, ungodly vows, spoken words, hexes, vexes, jinxes, trauma, and cults. We have legal authority in the name of Jesus to loose ourselves and others to whom we minister from these destroying influences.[*]

---

[*] John Eckhardt, *Prayers That Rout Demons*, 82–84.

Numbers 2

The Tribes and Leaders by Armies

1 And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying:

2[a]“Everyone of the children of Israel shall camp by his own [*]standard, beside the emblems of his father’s house; they shall camp [b]some distance from the tabernacle of meeting. 3On the [a]east side, toward the rising of the sun, those of the standard of the forces with Judah shall camp according to their armies; and [b]Nahshon the son of Amminadab *shall be* the leader of the children of Judah.” 4And his army was numbered at seventy-four thousand six hundred.

5“Those who camp next to him *shall be* the tribe of Issachar, and Nethanel the son of Zuar *shall be* the leader of the children of Issachar.” 6And his army was numbered at fifty-four thousand four hundred.

7“Then *comes* the tribe of Zebulun, and Eliab the son of Helon *shall be* the leader of the children of Zebulun.” 8And his army was numbered at fifty-seven thousand four hundred. 9“All who were numbered according to their armies of the forces with Judah, one hundred and eighty-six thousand four hundred—[a]these shall *break camp first.

10“On the [a]south side *shall be* the standard of the forces with Reuben according to their armies, and the leader of the children of Reuben *shall be* Elizur the son of Shedeur.” 11And his army was numbered at forty-six thousand five hundred.

12“Those who camp next to him *shall be* the tribe of Simeon, and the leader of the children of Simeon *shall be* Shelumiel the son of Zurishaddai.” 13And his army was numbered at fifty-nine thousand three hundred.

14“Then *comes* the

tribe of Gad, and the leader of the children of Gad *shall be* Eliasaph the son of *Reuel." 15And his army was numbered at forty-five thousand six hundred and fifty. 16"All who were numbered according to their armies of the forces with Reuben, one hundred and fifty-one thousand four hundred and fifty—[a]they shall *be the second to break camp.

17[a]"And the tabernacle of meeting shall move out with the *camp of the Levites [b]in the middle of the *camps; as they camp, so they shall move out, everyone in his place, by their *standards.

18"On the west side *shall be* the standard of the forces with Ephraim according to their armies, and the leader of the children of Ephraim *shall be* Elishama the son of Ammihud." 19And his army was numbered at forty thousand five hundred.

20“Next to him *comes* the tribe of Manasseh, and the leader of the children of Manasseh *shall be* Gamaliel the son of Pedahzur.” 21And his army was numbered at thirty-two thousand two hundred.

22“Then *comes* the tribe of Benjamin, and the leader of the children of Benjamin *shall be* Abidan the son of Gideoni.” 23And his army was numbered at thirty-five thousand four hundred. 24“All who were numbered according to their armies of the forces with Ephraim, one hundred and eight thousand one hundred—[a]they shall [*]be the third to break camp.

25“The [*]standard of the forces with Dan *shall be* on the north side according to their armies, and the leader of the children of Dan *shall be* [1]Ahiezer the son of Ammishaddai.” 26And his army was numbered at sixty-two thousand seven hundred.

27“Those who camp next to him *shall be* the tribe of Asher, and the leader of the children of Asher *shall be* Pagiel the son of Ocran.” 28And his army was numbered at forty-one thousand five hundred.

29“Then *comes* the tribe of Naphtali, and the leader of the children of Naphtali *shall be* Ahira the son of Enan.” 30And his army was numbered at fifty-three thousand four hundred. 31“All who were numbered of the forces with Dan, one hundred and fifty-seven thousand six hundred—[a]they shall *break camp last, with their *standards.”

32These *are* the ones who were numbered of the children of Israel by their fathers’ houses. [a]All who were numbered according to their armies of the forces *were* six hundred and three thousand five hundred and fifty. 33But [a]the Levites were not numbered among the children of Israel, just as the LORD commanded Moses.

34Thus the children of Israel [a]did according to all that the LORD commanded Moses; [b]so they camped by their [*]standards and so they broke camp, each one by his family, according to their fathers' houses.

Numbers 3

The Sons of Aaron

1Now these *are* the [a]records[*] of Aaron and Moses when the LORD spoke with Moses on Mount Sinai. 2And these *are* the names of the sons of Aaron: Nadab, the [a]firstborn, and [b]Abihu, Eleazar, and Ithamar. 3These *are* the names of the sons of Aaron, [a]the anointed priests, [*]w1hom he consecrated to minister as priests.

4[a]Nadab and Abihu had died before the LORD when they offered profane fire before the LORD in the Wilderness of Sinai; and they had no children. So Eleazar and Ithamar ministered as priests in the presence of Aaron their father.

The Levites Serve in the Tabernacle

5And the LORD spoke to Moses, saying: 6[a]“Bring the tribe of Levi near, and present them before Aaron the priest, that they may serve him. 7And they shall attend to his needs and the needs of the whole congregation before the tabernacle of meeting, to do [a]the work of the tabernacle. 8Also they shall attend to all the furnishings of the tabernacle of meeting, and to the needs of the children of Israel, to do the work of the tabernacle. 9And [a]you shall give the Levites to Aaron and his sons; they *are* given entirely to [*]him from among the children of Israel. 10So you shall appoint Aaron and his sons, [a]and they shall attend to their priesthood; [b]but the outsider who comes near shall be put to death."

11Then the LORD spoke to Moses, saying: 12"Now behold, [a]I Myself have taken the Levites from among the children of Israel instead of every firstborn who opens the womb among the children of Israel. Therefore the Levites shall be [b]Mine, 13because [a]all the firstborn *are* Mine. [b]On the day that I struck all the firstborn in the land of Egypt, I sanctified to Myself all the firstborn in Israel, both man and beast. They shall be Mine: I *am* the LORD."

Census of the Levites Commanded

14Then the LORD spoke to Moses in the Wilderness of Sinai, saying: 15“Number the children of Levi by their fathers’ houses, by their families; you shall number [a]every male from a month old and above.”

16So Moses numbered them according to the [*]word of the LORD, as he was commanded. 17[a]These were the sons of Levi by their names: Gershon, Kohath, and Merari. 18And these *are* the names of the sons of [a]Gershon by their families: [b]Libni and Shimei. 19And the sons of [a]Kohath by their families: [b]Amram, Izehar, Hebron, and Uzziel. 20[a]And the sons of Merari by their families: Mahli and Mushi. These *are* the families of the Levites by their fathers’ houses.

21From Gershon *came* the family of the Libnites and the family of the Shimites; these *were* the families of the Gershonites. 22Those who were numbered, according to the number of all the males from a month old and above—of those who were numbered *there were* seven thousand five hundred. 23[a]The families of the Gershonites were to camp behind the tabernacle westward. 24And the leader of the father's house of the Gershonites *was* Eliasaph the son of Lael. 25[a]The duties of the children of Gershon in the tabernacle of meeting *included* [b]the tabernacle, [c]the tent with [d]its covering, the [e]screen for the door of the tabernacle of meeting, 26[a]the screen for the door of the court, [b]the hangings of the court which *are* around the tabernacle and the altar, and [c]their cords, according to all the work relating to them.

27[a]From Kohath *came* the family of the Amramites, the family of the Izharites, the family of the Hebronites, and the family of the Uzzielites; these *were* the families of the Kohathites. 28According to the number of all the males, from a month old and above, *there were* eight thousand *six hundred *keeping charge of the sanctuary. 29[a]The families of the children of Kohath were to camp on the south side of the tabernacle. 30And the leader of the fathers' house of the families of the Kohathites *was* Elizaphan the son of [a]Uzziel. 31[a]Their duty *included* [b]the ark, [c]the table, [d]the lampstand, [e]the altars, the utensils of the sanctuary with which they ministered, [f]the screen, and all the work relating to them.

32And Eleazar the son of Aaron the priest *was to be* chief over the leaders of the Levites, *with* oversight of those who kept charge of the sanctuary.

[33]From Merari *came* the family of the Mahlites and the family of the Mushites; these *were* the families of Merari. [34]And those who were numbered, according to the number of all the males from a month old and above, *were* six thousand two hundred. [35]The leader of the fathers' house of the families of Merari *was* Zuriel the son of Abihail. [a]These *were* to camp on the north side of the tabernacle. [36]And [a]the appointed duty of the children of Merari *included* the boards of the tabernacle, its bars, its pillars, its sockets, its utensils, all the work relating to them, [37]and the pillars of the court all around, with their sockets, their pegs, and their cords.

[38][a]Moreover those who were to camp before the tabernacle on the east, before

the tabernacle of meeting, *were* Moses, Aaron, and his sons, [b]keeping charge of the sanctuary, [c]to meet the needs of the children of Israel; but [d]the outsider who came near was to be put to death. 39[a]All who were numbered of the Levites, whom Moses and Aaron numbered at the commandment of the LORD, by their families, all the males from a month old and above, *were* twenty-two thousand.

Levites Dedicated Instead of the Firstborn

40Then the LORD said to Moses: [a]“Number[*] all the firstborn males of the children of Israel from a month old and above, and take the number of their names. 41[a]And you shall take the Levites for Me—I *am* the LORD—instead of all the firstborn among the children of Israel, and the livestock of the Levites instead of all the firstborn among the livestock of the children of Israel.” 42So Moses numbered all the firstborn among the children of Israel, as the LORD commanded him. 43And all the firstborn males, according to the number of names from a month old and above, of those who were numbered of them, were twenty-two thousand two hundred and seventy-three.

44Then the LORD spoke to Moses, saying: 45[a]“Take the Levites instead of all the firstborn among the children of Israel, and the livestock of the Levites instead of their livestock. The Levites shall be Mine: I *am* the LORD. 46And for [a]the redemption of the two hundred and seventy-three of the firstborn of the children of Israel, [b]who are more than the number of the Levites, 47you shall take [a]five shekels for each one [b]individually; you shall take *them* in the currency of the shekel of the sanctuary, [c]the shekel of twenty gerahs. 48And you shall give the money, with which the excess number of them is redeemed, to Aaron and his sons.”

49So Moses took the redemption money from those who were over and above those who were redeemed by the Levites. 50From the firstborn of the children of Israel he took the money, [a]one thousand three hundred and sixty-five *shekels,* according to the shekel of the sanctuary. 51And Moses [a]gave their redemption money to Aaron and his sons, according to the word of the LORD, as the LORD commanded Moses.

Numbers 4

Duties of the Sons of Kohath

1Then the LORD

spoke to Moses and Aaron, saying: 2“Take a census of the sons of [a]Kohath from among the children of Levi, by their families, by their fathers’ house, 3[a]from thirty years old and above, even to fifty years old, all who enter the service to do the work in the tabernacle of meeting.

4[a]“This *is* the service of the sons of Kohath in the tabernacle of meeting, *relating to* [b]the most holy things: 5When the camp prepares to journey, Aaron and his sons shall come, and they shall take down [a]the covering veil and cover the [b]ark of the Testimony with it. 6Then they shall put on it a covering of badger skins, and spread over *that* a cloth entirely of [a]blue; and they shall insert [b]its poles.

7“On the [a]table of showbread they shall spread a blue cloth, and put on it the dishes, the pans, the bowls, and the *pitchers for pouring; and the [b]showbread* shall be on it. 8They shall spread over them a scarlet cloth, and cover the same with a covering of badger skins; and they shall insert its poles. 9And they shall take a blue cloth and cover the [a]lampstand of the light, [b]with its lamps, its wick-trimmers, its trays, and all its oil vessels, with which they service it. 10Then they shall put it with all its utensils in a covering of badger skins, and put *it* on a carrying beam.

11"Over [a]the golden altar they shall spread a blue cloth, and cover it with a covering of badger skins; and they shall insert its poles. 12Then they shall take all the [a]utensils of service with which they minister in the sanctuary, put *them* in a blue cloth, cover them with a covering of badger skins, and put *them1* on a carrying beam. 13Also they shall take away the ashes from the altar, and spread a purple cloth over it. 14They shall put on it all its implements with which they minister there—the firepans, the forks, the shovels, the *basins, and all the utensils of the altar—and they shall spread on it a covering of badger skins, and insert its poles. 15And when Aaron and his sons have finished covering the sanctuary and all the furnishings of the sanctuary, when the camp is set to go, then [a]the sons of Kohath shall come to carry *them;* [b]but they shall not touch any holy thing, lest they die.

“ [c]These *are* the things in the tabernacle of meeting which the sons of Kohath are to carry.

16“The appointed duty of Eleazar the son of Aaron the priest *is* [a]the oil for the light, the [b]sweet incense, [c]the daily grain offering, the [d]anointing oil, the oversight of all the tabernacle, of all that *is* in it, with the sanctuary and its furnishings.”

17Then the LORD spoke to Moses and Aaron, saying: 18“Do not cut off the tribe of the families of the Kohathites from among the Levites; 19but do this in regard to them, that they may live and not die when they approach [a]the most holy things: Aaron and his sons shall go in and [*]appoint each of them to his service and his task. 20[a]But they shall not go in to watch while the holy things are being covered, lest they die.”

Duties of the Sons of [b]Gershon

21Then the LORD spoke to Moses, saying: 22“Also take a census of the sons of Gershon, by their fathers’ house, by

their families.
23[a]From thirty years old and above, even to fifty years old, you shall number them, all who enter to perform the service, to do the work in the tabernacle of meeting. 24This *is* the [a]service of [1]the families of the Gershonites, in serving and carrying: 25[a]They shall carry the [b]curtains of the tabernacle and the tabernacle of meeting *with* its covering, the covering of [c]badger skins that *is* on it, the screen for the door of the tabernacle of meeting, 26the screen for the door of the gate of the court, the hangings of the court which *are* around the tabernacle and altar, and their cords, all the furnishings for their service and all that is made for these things: so shall they serve.

27"Aaron and his sons shall [*]assign all the service of the sons of the Gershonites, all their tasks and all their service. And you shall *appoint to them all their tasks as their duty. 28This *is* the service of the families of the sons of Gershon in the tabernacle of meeting. And their duties *shall be* [a]under the *authority of Ithamar the son of Aaron the priest.

Duties of the Sons of Merari

29"*As for* the sons of [a]Merari, you shall number them by their families and by their fathers' house. 30[a]From thirty years old and above, even to fifty years old, you shall number them, everyone who enters the service to do the work of the tabernacle of meeting. 31And [a]this *is* [b]what they must carry as all their service for the tabernacle of meeting: [c]the boards of the tabernacle, its bars, its pillars, its sockets, 32and the pillars around the court with their sockets, pegs, and cords, with all their furnishings and all their service; and you shall [a]assign *to each man* by name the items he must carry. [33]This *is* the service of the families of the sons of Merari, as all their service for the tabernacle of meeting, under the [*]authority of Ithamar the son of Aaron the priest.”

Census of the Levites

[34][a]And Moses, Aaron, and the leaders of the congregation numbered the sons of the Koha1thites by their families and by their fathers’ house, [35]from thirty [a]years old and above, even to fifty years old, everyone who entered the service for work in the tabernacle of meeting; [36]and those who were numbered by their families were two thousand seven hundred and fifty. [37]These *were* the ones who were numbered of the

families of the Kohathites, all who might serve in the tabernacle of meeting, whom Moses and Aaron numbered according to the commandment of the LORD by the hand of Moses.

38And those who were numbered of the sons of Gershon, by their families and by their fathers' house, 39from thirty years old and above, even to fifty years old, everyone who entered the service for work in the tabernacle of meeting —40those who were numbered by their families, by their fathers' house, were two thousand six hundred and thirty. 41[a]These *are* the ones who were numbered of the families of the sons of Gershon, of all who might serve in the tabernacle of meeting, whom Moses and Aaron numbered according to the commandment of the LORD.

42Those of the

families of the sons of Merari who were numbered, by their families, by their fathers' [*]house, 43from thirty years old and above, even to fifty years old, everyone who entered the service for work in the tabernacle of meeting —44those who were numbered by their families were three thousand two hundred. 45These *are* the ones who were numbered of the families of the sons of Merari, whom Moses and Aaron numbered [a]according to the word of the LORD by the hand of Moses.

46All who were [a]numbered of the Levites, whom Moses, Aaron, and the leaders of Israel numbered, by their families and by their fathers' houses, 47[a]from thirty years old and above, even to fifty years old, everyone who came to do the work of service and the work of bearing burdens in the tabernacle of meeting—[48]those who were numbered were eight thousand five hundred and eighty.

[49]According to the commandment of the LORD they were numbered by the hand of Moses, [a]each according to his service and according to his task; thus were they numbered by him, [b]as the LORD commanded Moses.

Numbers 5

Ceremonially Unclean Persons Isolated

[1]And the LORD spoke to Moses, saying: [2]“Command the children of Israel that they put out of the camp every [a]leper, everyone who has a [b]discharge, and whoever becomes [c]defiled [*]by a corpse. [3]You shall put out both male and female; you shall put them outside the camp, that they may not defile their camps [a]in the midst of which I dwell.”

4And the children of Israel did so, and put them outside the camp; as the LORD spoke to Moses, so the children of Israel did.

Confession and Restitution

5Then the LORD spoke to Moses, saying, 6"Speak to the children of Israel: [a]'When a man or woman commits any sin that men commit in unfaithfulness against the LORD, and that person is guilty, 7[a]then he shall confess the sin which he has committed. He shall make restitution for his trespass [b]in full, plus one-fifth of it, and give *it* to the one he has wronged. 8But if the man has no [*]relative to whom restitution may be made for the wrong, the restitution for the wrong *must go* to the LORD for the priest, in addition to [a]the ram of the atonement with which atonement is made for him. 9Every

[a]offering[*] of all the holy things of the children of Israel, which they bring to the priest, shall be [b]his. [10]And every man's [*]holy things shall be [a]his; whatever any man gives the priest shall be his.' "

Concerning Unfaithful Wives

[11]And the LORD spoke to Moses, saying, [12]"Speak to the children of Israel, and say to them: 'If any man's wife goes astray and behaves unfaithfully toward him, [13]and a man [a]lies with her carnally, and it is hidden from the eyes of her husband, and it is concealed that she has defiled herself, and *there was* no witness against her, nor was she [b]caught—[14]if the spirit of jealousy comes upon him and he becomes [a]jealous of his wife, who has defiled herself; or if the spirit of jealousy comes upon him and he becomes jealous

of his wife, although she has not defiled herself—15then the man shall bring his wife to the priest. He shall [a]bring the offering required for her, one-tenth of an ephah of barley meal; he shall pour no oil on it and put no frankincense on it, because it *is* a grain offering of jealousy, an offering for remembering, for [b]bringing iniquity to remembrance.

16‘And the priest shall bring her near, and set her before the [a]LORD. 17The priest shall take holy water in an earthen vessel, and take some of the dust that is on the floor of the tabernacle and put *it* into the water. 18Then the priest shall stand the woman before the LORD, uncover the woman’s head, and put the offering for remembering in her hands, which *is* the grain offering of jealousy. And the priest shall have in his hand the bitter water that brings a curse. 19And the priest shall put her under oath, and say to the woman, "If no man has lain with you, and if you have not gone astray to uncleanness *while* under your husband's *authority,* be free from this bitter water that brings a curse. 20But if you have gone astray *while* under your husband's *authority,* and if you have defiled yourself and some man other than your husband has lain with you"— 21then the priest shall [a]put the woman under the oath of the curse, and he shall say to the woman— [b]"the LORD make you a curse and an oath among your people, when the LORD makes your thigh *rot and your belly swell; 22and may this water that causes the curse [a]go into your stomach, and make *your* belly swell and *your* thigh rot."

‘ [b]Then the woman shall say, “Amen, so be it.”

23‘Then the priest shall write these curses in a book, and he shall scrape *them* off into the bitter water. 24And he shall make the woman drink the bitter water that brings a curse, and the water that brings the curse shall enter her *to become* bitter. 25[a]Then the priest shall take the grain offering of jealousy from the woman’s hand, shall [b]wave the offering before the LORD, and bring it to the altar; 26and the priest shall take a handful of the offering, [a]as its memorial portion, burn *it* on the altar, and afterward make the woman drink the water. 27When he has made her drink the water, then it shall be, if she has defiled herself and behaved unfaithfully toward her husband, that the water that brings a [a]curse will enter her *and become* bitter, and her belly will swell, her thigh will rot, and the woman [b]will become a curse among her people. 28But if the woman has not defiled herself, and is clean, then she shall be free and may conceive children.

29‘This *is* the law of jealousy, when a wife, *while* under her husband’s *authority,* [a]goes astray and defiles herself, 30or when the spirit of jealousy comes upon a man, and he becomes jealous of his wife; then he shall stand the woman before the LORD, and the priest shall execute all this law upon her. 31Then the man shall be free from [*]iniquity, but that woman [a]shall bear her [*]guilt.’ ”

Numbers 6

The Law of the Nazirite

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2“Speak to the children of Israel, and say to them: ‘When either a man or woman [*]consecrates an offering to take the vow of a Nazirite, [a]to separate himself to the LORD, [3][a]he shall separate himself from wine and *similar* drink; he shall drink neither vinegar m1ade from wine nor vinegar made from *similar* drink; neither shall he drink any grape juice, nor eat fresh grapes or raisins. [4]All the days of his [*]separation he shall eat nothing that is produced by the grapevine, from seed to skin.

[5]‘All the days of the vow of his separation no [a]razor shall come upon his head; until the days are fulfilled for which he separated himself to the LORD, he shall be holy. *Then* he shall let the locks of the hair of his head grow. [6]All the days that he separates himself to the LORD [a]he shall not go near a dead body. [7][a]He shall not [*]make himself

unclean even for his father or his mother, for his brother or his sister, when they die, because his separation to God *is* on his head. 8[a]All the days of his separation he shall be holy to the LORD.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Post-Deliverance Attack: Lies

In order to avoid the enemy’s snares, it helps to recognize some of his strategy. The Spiritual Warfare Basics in

Numbers will outline four of these strategies. The first strategy is *Lies.* The Scriptures say that *Satan is the father of lies.* Even though they are now outside of you, demon powers may still talk to you. Do not accept ideas, thoughts, or guidance as coming from the Lord unless it lines up with Scripture and unless it gives you peace and is a normal Christian behavior. The Holy Spirit never contradicts the Bible, never creates chaos within, and never tells us to do strange things. Make your stand on the Word of God: “Therefore if the Son makes you free, you shall be free indeed” (John 8:36).[*]

---

[*] Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 202.

9‘And if anyone
dies very suddenly
beside him, and he
defiles his
consecrated head,
then he shall [a]shave
his head on the day
of his cleansing; on
the seventh day he
shall shave it. 10Then
[a]on the eighth day he
shall b1ring two
turtledoves or two
young pigeons to the
priest, to the door of
the tabernacle of
meeting; 11and the
priest shall offer one
as a sin offering and
the other as a burnt
offering, and make
atonement for him,
because he sinned in
regard to the corpse;
and he shall sanctify
his head that same
day. 12He shall
consecrate to the
LORD the days of his
separation, and bring
a male lamb in its
first year [a]as a
trespass offering; but
the former days shall
be [*]lost, because his
separation was
defiled.

13‘Now this *is* the
law of the Nazirite:
[a]When the days of his

separation are fulfilled, he shall be brought to the door of the tabernacle of meeting. 14And he shall present his offering to the LORD: one male lamb in its first year without blemish as a burnt offering, one ewe lamb in its first year without blemish [a]as a sin offering, one ram without blemish [b]as a peace offering, 15a basket of unleavened bread, [a]cakes of fine flour mixed with oil, unleavened wafers [b]anointed with oil, and their grain offering with their [c]drink offerings.

16Then the priest shall bring *them* before the LORD and offer his sin offering and his burnt offering; 17and he shall offer the ram as a sacrifice of a peace offering to the LORD, with the basket of unleavened bread; the priest shall also offer its grain offering and its drink offering. 18[a]Then the Nazirite shall shave his consecrated head *at* the door of the tabernacle of meeting, and shall take the hair from his consecrated head and put *it* on the fire which is under the sacrifice of the peace offering.

19‘And the priest shall take the [a]boiled shoulder of the ram, one [b]unleavened cake from the basket, and one unleavened wafer, and [c]put *them* upon the hands of the Nazirite after he has shaved his consecrated *hair,* 20and the priest shall wave them as a wave offering before the LORD; [a]they *are* holy for the priest, together with the breast of the wave offering and the thigh of the heave offering. After that the Nazirite may drink wine.’

21“This is the law of the Nazirite who vows to the LORD the offering for his separation, and besides that, whatever else his hand is able to provide; according to the vow which he takes, so he must do according to the law of his separation.”

The Priestly Blessing

22And the LORD spoke to Moses, saying: 23“Speak to Aaron and his sons, saying, ‘This is the way you shall bless the children of Israel. Say to them:

24“The LORD [a]bless you and [b]keep you;

25The LORD [a]make His face shine upon you,

And [b]be gracious to you;

26[a]The LORD

[*]lift
up
His
countenance
upon
you,

And
[b]give
you
peace.”
’

27[a]“So they shall [*]put My name on the children of Israel, and [b]I will bless them.”

Numbers 7

Offerings of the Leaders

1Now it came to pass, when Moses had finished [a]setting up the tabernacle, that he [b]anointed it and consecrated it and all its furnishings, and the altar and all its utensils; so he anointed them and consecrated them. 2Then [a]the leaders of Israel, the heads of their fathers’ houses, who *were* the leaders of the tribes [*]and over those who were numbered, made an

offering. [3]And they
brought their
offering before the
LORD, six covered
carts and twelve
oxen, a cart for *every*
two of the leaders,
and f1or each one an
ox; and they
presented them
before the
tabernacle.

[4]Then the LORD
spoke to Moses,
saying, [5]“Accept *these*
from them, that they
may be used in doing
the work of the
tabernacle of
meeting; and you
shall give them to the
Levites, *to* every man
according to his
service.” [6]So Moses
took the carts and
the oxen, and gave
them to the Levites.
[7]Two carts and four
oxen [a]he gave to the
sons of Gershon,
according to their
service; [8][a]and four
carts and eight oxen
he gave to the sons
of Merari, according
to their service,
under the [*]authority
of Ithamar the son of
Aaron the priest. [9]But
to the sons of Kohath

he gave none, because theirs *was* [a]the service of the holy things, [b]*which* they carried on their shoulders.

10Now the leaders offered [a]the dedication *offering* for the altar when it was anointed; so the leaders offered their offering before the altar. 11For the LORD said to Moses, “They shall offer their offering, one leader each day, for the dedication of the altar.”

12And the one who offered his offering on the first day *was* [a]Nahshon the son of Amminadab, from the tribe of Judah. 13His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to [a]the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a [b]grain offering; 14one gold pan of ten *shekels,* full of [a]incense; 15[a]one young bull, one ram, and one male lamb [b]in its first year, as a burnt offering; 16one kid of the goats as a [a]sin offering; 17and for [a]the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Nahshon the son of Amminadab.

18On the second day Nethanel the son of Zuar, leader of Issachar, presented *an offering.* 19*For* his offering he offered one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 20one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 21one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; [22]one kid of the goats as a sin offering; [23]and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Nethanel the son of Zuar.

[24]On the third day Eliab the son of Helon, leader of the children of Zebulun, *presented an offering.* [25]His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; [26]one gold pan of ten *shekels,* full of incense; [27]one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; [28]one kid of the goats as a sin offering; [29]and for the sacrifice of peace

offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Eliab the son of Helon.

30On the fourth day [a]Elizur the son of Shedeur, leader of the children of Reuben, *presented an offering.* 31His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 32one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 33one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 34one kid of the goats as a sin offering; 35and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Elizur the son of Shedeur.

36On the fifth day [a]Shelumiel the son of Zurishaddai, leader of the children of Simeon, *presented an offering.* 37His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 38one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 39one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 40one kid of the goats as a sin offering; 41and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Shelumiel the son of Zurishaddai.

42On the sixth day [a]Eliasaph the son of [*]Deuel, leader of the children of Gad, *presented an offering.* 43His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 44one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 45one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as [a]a burnt offering; 46one kid of the goats as a sin offering; 47and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Eliasaph the son of Deuel.

48On the seventh day [a]Elishama the son of Ammihud, leader of the children of Ephraim, *presented* *an offering.* 49His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 50one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 51one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 52one kid of the goats as a sin offering; 53and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Elishama the son of Ammihud.

54On the eighth day [a]Gamaliel the son of Pedahzur, leader of the children of Manasseh, *presented an offering.* 55His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 56one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 57one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 58one kid of the goats as a sin offering; 59and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Gamaliel the son of Pedahzur.

60On the ninth day [a]Abidan the son of Gideoni, leader of the children of Benjamin, *presented an offering.* 61His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 62one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 63one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 64one kid of the goats as a sin offering; 65and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Abidan the son of Gideoni.

66On the tenth day [a]Ahiezer the son of Ammishaddai, leader of the children of Dan, *presented an offering.* 67His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 68one gold pan of ten *shekels,* full of incense; 69one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; 70one kid of the goats as a sin offering; 71and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Ahiezer the son of Ammishaddai.

72On the eleventh day [a]Pagiel the son of Ocran, leader of the children of Asher, *presented an offering.* 73His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; 74one gold pan of ten *shekels,* full of incense; [75]one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; [76]one kid of the goats as a sin offering; [77]and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Pagiel the son of Ocran.

[78]On the twelfth day [a]Ahira the son of Enan, leader of the children of Naphtali, *presented an offering.* [79]His offering *was* one silver platter, the weight of which *was* one hundred and thirty *shekels,* and one silver bowl of seventy shekels, according to the shekel of the sanctuary, both of them full of fine flour mixed with oil as a grain offering; [80]one gold pan of ten *shekels,* full of incense; [81]one young bull, one ram, and one male lamb in its first year, as a burnt offering; [82]one kid of

the goats as a sin offering; [83]and as the sacrifice of peace offerings: two oxen, five rams, five male goats, and five male lambs in their first year. This *was* the offering of Ahira the son of Enan.

[84]This *was* [a]the dedication *offering* for the altar from the leaders of Israel, when it was anointed: twelve silver platters, twelve silver bowls, and twelve gold pans. [85]Each silver platter *weighed* one hundred and thirty *shekels* and each bowl seventy *shekels.* All the silver of the vessels *weighed* two thousand four hundred *shekels,* according to the shekel of the sanctuary. [86]The twelve gold pans full of incense *weighed* ten *shekels* apiece, according to the shekel of the sanctuary; all the gold of the pans *weighed* one hundred and twenty *shekels.* [87]All the oxen for the

burnt offering *were* twelve young bulls, the rams twelve, the male lambs in their first year twelve, with their grain offering, and the kids of the goats as a sin offering twelve. 88And all the oxen for the sacrifice of peace offerings were twenty-four bulls, the rams sixty, the male goats sixty, and the lambs in their first year sixty. This *was* the dedication *offering* for the altar after it was [a]anointed.

89Now when Moses went into the tabernacle of meeting [a]to speak with Him, he heard [b]the voice of One speaking to him from above the mercy seat that *was* on the ark of the Testimony, from [c]between the two cherubim; thus He spoke to him.

Numbers 8

Arrangement of the Lamps

1And the LORD spoke to Moses, saying: 2"Speak to

Aaron, and say to him, ‘When you [a]arrange the lamps, the seven [b]lamps shall give light in front of the lampstand.’ ” [1]3And Aaron did so; he arranged the lamps to face toward the front of the lampstand, as the LORD commanded Moses. 4[a]Now this workmanship of the lampstand *was* hammered gold; from its shaft to its flowers it *was* [b]hammered work. [c]According to the pattern which the LORD had shown Moses, so he made the lampstand.

Cleansing and Dedication of the Levites

5Then the LORD spoke to Moses, saying: 6“Take the Levites from among the children of Israel and cleanse them *ceremonially*. 7Thus you shall do to them to cleanse them: [a]Sprinkle water of purification on them, and [b]let[*] them shave all their body, and let

them wash their clothes, and *so* make themselves clean.
8Then let them take a young bull with [a]its grain offering of fine flour mixed with oil, and you shall take another young bull as a sin offering.
9[a]And you shall bring the Levites before the tabernacle of meeting, [b]and you shall gather together the whole congregation of the children of Israel.
10So you shall bring the Levites before the LORD, and the children of Israel [a]shall lay their hands on the Levites; 11and Aaron shall [*]offer the Levites before the LORD *like* a [a]wave offering from the children of Israel, that they may perform the work of the LORD. 12[a]Then the Levites shall lay their hands on the heads of the young bulls, and you shall offer one as a sin offering and the other as a burnt offering to the LORD,

to make atonement
for the Levites.

13“And you shall
stand the Levites
before Aaron and his
sons, and then offer
them *like* a wave
offering to the LORD.
14Thus you shall
[a]separate the Levites
from among the
children of Israel,
and the Levites shall
be [b]Mine. 15After that
the Levites shall go
in to service the
tabernacle of
meeting. So you shall
cleanse them and
[a]offer them *like* a
wave offering. 16For
they *are* [a]wholly
given to Me from
among the children
of Israel; I have taken
them for Myself
[b]instead of all who
open the womb, the
firstborn of all the
children of Israel.
17[a]For all the
firstborn among the
children of Israel *are*
Mine, *both* man and
beast; on the day that
I struck all the
firstborn in the land
of Egypt I *sanctified
them to Myself. 18I
have taken the

Levites instead of all the firstborn of the children of Israel. 19And [a]I have given the Levites as a gift to Aaron and his sons from among the children of Israel, to do the work for the children of Israel in the tabernacle of meeting, and to make atonement for the children of Israel, [b]that there be no plague among the children of Israel when the children of Israel come near the sanctuary."

20Thus Moses and Aaron and all the congregation of the children of Israel did to the Levites; according to all that the LORD commanded Moses concerning the Levites, so the children of Israel did to them. 21[a]And the Levites purified themselves and washed their clothes; then Aaron presented them *like* a wave offering before the LORD, and Aaron made atonement for

them to cleanse
them. 22[a]After that
the Levites went in to
do their work in the
tabernacle of meeting
before Aaron and his
sons; [b]as the LORD
commanded Moses
concerning the
Levites, so they did
to them.

23Then the LORD
spoke to Moses,
saying, 24“This *is*
what *pertains* to the
Levites: [a]From
twenty-five years old
and above one may
enter to perform
service in the work of
the tabernacle of
meeting; 25and at the
age of fifty years
they must cease
performing this
work, and shall work
no more. 26They may
minister with their
brethren in the
tabernacle of
meeting, [a]to attend to
needs, but they
themselves shall do no
work. Thus you shall
do to the Levites
regarding their
duties.”

LESSONS FROM

GOD’S WARRIORS

PROFILE

JOSEPH

Trust God to Make You Fruitful in the Area of Your Greatest Affliction

Joseph was the second youngest of Jacob’s sons and his father’s favorite. His walk with God began with dreams and visions. Joseph’s life is a pattern for many who have had a genuine call from God. Our walk with God may also have begun with a “travel brochure” of dreams and visions where God gives us a picture of His destination for us. Yet we fail to be able to see how His promises will come to pass in our lives.

Joseph was betrayed by his brothers and delivered up by them to die. He was unjustly accused when Potiphar's wife tried to seduce him. He was imprisoned and forgotten by all except God, who patiently watched and measured Joseph’s reaction to difficulty.

Rich or poor, blessed or smitten, Joseph served God. He was being tested, but he continued to pass his tests. Joseph was on trial before men, but he was found innocent before God.

Finally, at the right moment, the Lord suddenly connected all the loose ends of Joseph’s life. Everything that Joseph went through would have seemed cruel and unfair except that the Lord was shaping a man for His purpose. God uses everything we go through for future purposes that He alone sees. We do not see His ultimate plan while we are in the valley.

We must remember the vision, keeping faith in what God has promised.

Just as He allowed Joseph to go through many trials, so He allows us to go through great conflicts as well. For He knows that our lives—what

we
have
become
through
His
grace
—
will
help
others
find
the
shelter
of
the
Most
High
God
in
their
lives.

“Joseph
called
the
name
of
the
firstborn
Manasseh:
‘For
God
has
made
me
forget
all
my
toil
and

all my father's house'" (Gen. 41:51). God caused Joseph to forget the difficulty and pain of his life. There is something wonderful about the Lord's capacity to cause all things to work for good. With Jesus in our lives, a time ultimately comes when God causes us to forget all the troubles of the past.

“And the name of the second he called Ephraim: ‘For God has caused me to be fruitful in the land of my affliction’” (v. 52). God

made
him
fruitful
in
the
very
things
that
afflicted
him.
In
the
land
of
your
affliction,
in
your
battle,
is
the
place
where
God
will
make
you
fruitful.

God
has
not
promised
to
keep
us
from
valleys
and
sufferings,

but He *has* promised to make us fruitful in them. As we remain faithful to Him in trials, the character and nature of Christ Jesus will emerge in our spirits; and Christ will be revealed to those around us. He intends to make your life a key that unlocks God’s shelter for others.*

---

* Francis Frangipane, *The Shelter of the Most High*, 130–132.

Numbers 9

The Second Passover

[1]Now the LORD spoke to Moses in the Wilderness of Sinai, in the first month of the second year after they had come out of the land of Egypt, saying: [2]“Let the children of Israel keep [a]the Passover at

its appointed [b]time. 3On the fourteenth day of this month, [*]at twilight, you shall [*]keep it at its appointed time. According to all its [*]rites and ceremonies you shall keep it.” 4So Moses told the children of Israel that they should keep the Passover. 5And [a]they kept the Passover on the fourteenth day of the first month, at twilight, in the Wilderness of Sinai; according to all that the LORD commanded Moses, so the children of Israel did.

6Now there were *certain* men who were [a]defiled by a human corpse, so that they could not keep the Passover on that day; [b]and they came before Moses and Aaron that day. 7And those men said to him, “We *became* defiled by a human corpse. Why are we kept from presenting the offering of the LORD at its appointed time among the children of Israel?”

8And Moses said to them, “Stand still, that [a]I may hear what the LORD will command concerning you.”

9Then the LORD spoke to Moses, saying, 10“Speak to the children of Israel, saying: ‘If anyone of you or your *posterity is unclean because of a corpse, or *is* far away on a journey, he may still keep the LORD’s Passover. 11On [a]the fourteenth day of the second month, at twilight, they may keep it. They shall [b]eat it with unleavened bread and bitter herbs. 12[a]They shall leave none of it until morning, [b]nor break one of its bones. [c]According to all the *ordinances of the Passover they shall keep it. 13But the man who *is* clean and is not on a journey, and ceases to keep the Passover, that same person [a]shall be

cut off from among
his people, because
he [b]did not bring the
offering of the LORD
at its appointed time;
that man shall [c]bear
his sin.

14‘And if a stranger
[*]dwells among you,
and would keep the
LORD’s Passover, he
must do so according
to the rite of the
Passover and
according to its
ceremony; [a]you shall
have [*]one ordinance,
both for the stranger
and the native of the
land.’ ”

The Cloud and the Fire

15Now [a]on the day
that the tabernacle
was raised up, the
cloud [b]covered the
tabernacle, the tent
of the Testimony;
[c]from evening until
morning it was above
the tabernacle like
the appearance of
fire. 16So it was
always: the cloud
covered it *by day,*
and the appearance
of fire by night.
17Whenever the
cloud [a]was [*]taken up
from above the

tabernacle, after that the children of Israel would journey; and in the place where the cloud settled, there the children of Israel would pitch their tents. 18At the [*]command of the LORD the children of Israel would journey, and at the command of the LORD they would camp; [a]as long as the cloud stayed above the tabernacle they remained encamped. 19Even when the cloud continued long, many days above the tabernacle, the children of Israel [a]kept the charge of the LORD and did not journey. 20So it was, when the cloud was above the tabernacle a few days: according to the command of the LORD they would remain encamped, and according to the command of the LORD they would journey. 21So it was, when the cloud remained only from evening until morning: when the cloud was taken up in the morning, then they would journey; whether by day or by night, whenever the cloud was taken up, they would journey. 22*Whether it was* two days, a month, or a year that the cloud remained above the tabernacle, the children of Israel [a]would remain encamped and not journey; but when it was taken up, they would journey. 23At the command of the LORD they remained encamped, and at the command of the LORD they journeyed; they [a]kept the charge of the LORD, at the command of the LORD by the hand of Moses.

Numbers 10

Two Silver Trumpets

1And the LORD spoke to Moses, saying: 2“Make two silver trumpets for yourself; you shall make them of hammered work; you shall use them for

[a]calling the congregation and for directing the movement of the camps. 3When [a]they blow both of them, all the congregation shall gather before you at the door of the tabernacle of meeting. 4But if they blow *only* one, then the leaders, the [a]heads of the divisions of Israel, shall gather to you. 5When you sound the [a]advance, the camps that lie on the east side shall then begin their journey. 6When you sound the advance the second time, then [a]the camps that lie [b]on the south side shall begin their journey; they shall sound the call for them to begin their journeys. 7And when the assembly is to be gathered together, [a]you shall blow, but not [b]sound the advance. 8[a]The sons of Aaron, the priests, shall blow the trumpets; and these shall be to you as an [*]ordinance forever

throughout your generations.

9 [a]"When you go to war in your land against the enemy who [b]oppresses you, then you shall sound an alarm with the trumpets, and you will be [c]remembered before the LORD your God, and you will be saved from your enemies. 10 Also [a]in the day of your gladness, in your appointed feasts, and at the beginning of your months, you shall blow the trumpets over your burnt offerings and over the sacrifices of your peace offerings; and they shall be [b]a memorial for you before your God: I *am* the LORD your God."

Departure from Sinai

11 Now it came to pass on the twentieth *day* of the second month, in the second year, that the cloud [a]was taken up from above the tabernacle of the Testimony. 12 And the children of

Israel set out from [a]the Wilderness of Sinai on [b]their journeys; then the cloud settled down in the [c]Wilderness of Paran. 13So they started out for the first time [a]according to the command of the LORD by the hand of Moses.

14The [*]standard of the camp of the children of Judah [a]set out first according to their armies; over their army was [b]Nahshon the son of Amminadab. 15Over the army of the tribe of the children of Issachar *was* Nethanel the son of Zuar. 16And over the army of the tribe of the children of Zebulun *was* Eliab the son of Helon.

17Then [a]the tabernacle was taken down; and the sons of Gershon and the sons of Merari set out, [b]carrying the tabernacle.

18And [a]the standard of the camp of Reuben set out according to their armies; over their army *was* Elizur the son of Shedeur. 19Over the army of the tribe of the children of Simeon *was* Shelumiel the son of Zurishaddai. 20And over the army of the tribe 1of the children of Gad *was* Eliasaph the son of Deuel.

21Then the Kohathites set out, carrying the [a]holy things. (The tabernacle would be [*]prepared for their arrival.)

22And [a]the standard of the camp of the children of Ephraim set out according to their armies; over their army *was* Elishama the son of Ammihud. 23Over the army of the tribe of the children of Manasseh *was* Gamaliel the son of Pedahzur. 24And over the army of the tribe of the children of Benjamin *was* Abidan the son of Gideoni.

25Then [a]the standard of the camp

of the children of Dan (the rear guard of all the camps) set out according to their armies; over their army *was* Ahiezer the son of Ammishaddai. 26Over the army of the tribe of the children of Asher *was* Pagiel the son of Ocran. 27And over the army of the tribe of the children of Naphtali *was* Ahira the son of Enan.

28[a]Thus *was* the order of march of the children of Israel, according to their armies, when they began their journey.

29Now Moses said to [a]Hobab the son of [b]Reuel* the Midianite, Moses' father-in-law, "We are setting out for the place of which the LORD said, [c]'I will give it to you.' Come with us, and [d]we will treat you well; for [e]the LORD has promised good things to Israel."

30And he said to him, "I will not go, but I will depart to my *own* land and to my relatives.”

31So *Moses* said, “Please do not leave, inasmuch as you know how we are to camp in the wilderness, and you can [*]be our [a]eyes. 32And it shall be, if you go with us—indeed it shall be—that [a]whatever good the LORD will do to us, the same we will do to you.”

33S1o they departed from [a]the mountain of the LORD on a journey of three days; and the ark of the covenant of the LORD [b]went before them for the three days’ journey, to search out a resting place for them. 34And [a]the cloud of the LORD *was* above them by day when they went out from the camp.

35So it was, whenever the ark set out, that Moses said:

[a]“Rise
up,
O
LORD!

Let
Your
enemies
be
scattered,

And
let
those
who
hate
You
flee
before
You.”

36And when it rested, he said:

“Return,
O
LORD,

To
the
many
thousands
of
Israel.”

Numbers 11

The People Complain

1Now [a]*when* the people complained, it displeased the LORD; [b]for the LORD heard *it,* and His anger was aroused. So the [c]fire of the LORD burned among them, and consumed *some* in the outskirts of the camp. 2Then the people [a]cried out to Moses, and when Moses [b]prayed to the LORD, the fire was [*]quenched. 3So he called the name of the place [*]Taberah, because the fire of the LORD had burned among them.

4Now the [a]mixed multitude who were among them [*]yielded to [b]intense craving; so the children of Israel also wept again and said: [c]“Who will give us meat to eat? 5[1a]We remember the fish which we ate freely in Egypt, the cucumbers, the melons, the leeks, the onions, and the garlic; 6but now [a]our whole being *is* dried up; *there is* nothing at all except this manna *before* our eyes!”

7Now [a]the manna *was* like coriander seed, and its color like the color of bdellium. 8The people went about and gathered *it,* ground *it* on millstones or beat *it* in the mortar, cooked *it* in pans, and made cakes of it; and [a]its taste was like the taste of pastry prepared with oil. 9And [a]when the dew fell on the camp in the night, the manna fell on it.

10Then Moses heard the people weeping throughout their families, everyone at the door of his tent; and [a]the anger of the LORD was greatly aroused; Moses also was displeased. 11[a]So Moses said to the LORD, “Why have You afflicted Your servant? And why have I not found favor in Your sight, that You have laid the *burden of all these people on me? 12Did I conceive all these people? Did I beget them, that You should say to me, [a]‘Carry them in your bosom, as a [b]guardian carries a nursing child,’ to the land which You [c]swore* to their fathers? 13[a]Where am I to get meat to give to all these people? For they weep all over me, saying, 'Give us meat, that we may eat.' 14[a]I am not able to bear all these people alone, because the burden *is* too heavy for me. 15If You treat me like this, please kill me here and now—if I have found favor in Your sight—and [a]do not let me see my wretchedness!"

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Post-Deliverance Attack: Accusation

One meaning for the name *Satan* is "1accuser." You may find yourself feeling guilty for having had demon powers from your past sins. Remember that all your sins and failings are under the cleansing of the blood of Jesus Christ, and God has put them out of His memory. On the other hand, you may be told that you are too weak to resist the devil, that you are failing God, and that you are just a lousy person generally. The trick behind these lies is getting you to focus on yourself instead of Jesus Christ. No matter what we are or have been, Jesus Christ is perfect, and He loves us. Remember that your strength comes not from your own faithfulness, but rather from your faithful Lord. “But I have trusted in Your mercy; my heart shall rejoice in Your salvation" (Ps. 13:5).[*]

The Seventy Elders

16 So the LORD said to Moses: "Gather to Me [a]seventy men of the elders of Israel, whom you know to be the elders of the people and [b]officers over them; bring them to the tabernacle of meeting, that they may stand there with you. 17 Then I will come down and talk with you there. [a]I

---

[*] Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 202.

will take of the Spirit that *is* upon you and will put *the same* upon them; and they shall bear the burden of the people with you, that you may not bear *it* yourself alone. [18]Then you shall say to the people, [*]‘Consecrate yourselves for tomorrow, and you shall eat meat; for you have wept [a]in the hearing of the LORD, saying, “Who will give us meat to eat? For *it was* well with us in Egypt.” Therefore the LORD will give you meat, and you shall eat. [19]You shall eat, not one day, nor two days, nor five days, nor ten days, nor twenty days, [20][a]but *for* a whole month, until it comes out of your nostrils and becomes loathsome to you, because you have [b]despised the LORD who is among you, and have wept before Him, saying, [c]“Why did we ever come up out of Egypt?” ’ ”

21And Moses said, [a]“The people whom I *am* among *are* six hundred thousand men on foot; yet You have said, ‘I will give them meat, that they may eat *for* a whole month.’ 122[a]Shall flocks and herds be slaughtered for them, to provide enough for them? Or shall all the fish of the sea be gathered together for them, to provide enough for them?”

23And the LORD said to Moses, [a]“Has[*] the LORD’s arm been shortened? Now you shall see whether [b]what I say will happen to you or not.”

24So Moses went out and told the people the words of the LORD, and he [a]gathered the seventy men of the elders of the people and placed them around the tabernacle.

25Then the LORD came down in the cloud, and spoke to him, and took of the Spirit that *was* upon him, and placed *the* *same* upon the seventy elders; and it happened, [a]when the Spirit rested upon them, that [b]they prophesied, [*]although they never did *so* again.

26But two men had remained in the camp: the name of one *was* Eldad, and the name of the other Medad. And the Spirit rested upon them. Now they *were* among those listed, but who [a]had not gone out to the tabernacle; yet they prophesied in the camp. 27And a young man ran and told Moses, and said, "Eldad and Medad are prophesying in the camp."

28So Joshua the son of Nun, Moses' assistant, *one* of his choice men, answered and said, "Moses my lord, [a]forbid them!"

29Then Moses said to him, "Are you [*]zealous for my sake? [a]Oh, that all the LORD's people were prophets *and* that the

LORD would put His Spirit upon them!” 30And Moses returned to the camp, he and the elders of Israel.

The LORD Sends Quail

31Now a [a]wind went out from the LORD, and it brought quail from the sea and left *them* fluttering near the camp, about a day’s journey on this side and about a day’s journey on the other side, all around the camp, and about two cubits above the surface of the [1]ground. 32And the people stayed up all that day, all night, and all the next day, and gathered the quail (he who gathered least gathered ten [a]homers); and they spread *them* out for themselves all around the camp. 33But while the [a]meat *was* still between their teeth, before it was chewed, the wrath of the LORD was aroused against the people, and the LORD struck the people with a very great plague. 34So he called the name of that place [*]Kibroth Hattaavah, because there they buried the people who had yielded to craving.

35[a]From Kibroth Hattaavah the people moved to Hazeroth, and camped at Hazeroth.

Numbers 12

Dissension of Aaron and Miriam

1Then [a]Miriam and Aaron [*]spoke [b]against Moses because of the [*]Ethiopian woman whom he had married; for [c]he had married an Ethiopian woman. 2So they said, “Has the LORD indeed spoken only through [a]Moses? [b]Has He not spoken through us also?” And the LORD [c]heard *it.* 3(Now the man Moses *was* very humble, more than all men who *were* on the face of the earth.)

4[a]Suddenly the LORD said to Moses, Aaron, and Miriam, “Come out, you three, to the tabernacle of meeting!” So the three came out. 5[a]Then the LORD came down in the pillar of cloud and stood *in* the door of the tabernacle, and called Aaron and Miriam. And they both went forward. 6Then He said,

“Hear now My words:

If there is a prophet among you,

I, the LO1RD, make Myself known to him [a]in a vision;

I

speak
to
him
[b]in
a
dream.

[7]Not
so
with
[a]My
servant
Moses;

[b]He
is
faithful
in
all
[c]My
house.

[8]I
speak
with
him
[a]face
to
face,

Even
[b]plainly,*
and
not
in
*dark
sayings;

And
he
sees

[c]the
form
of
the
LORD.

Why
then
[d]were
you
not
afraid

To
speak
against
My
servant
Moses?”

9So the anger of the LORD was aroused against them, and He departed. 10And when the cloud departed from above the tabernacle, [a]suddenly Miriam *became* [b]leprous, as *white as* snow. Then Aaron turned toward Miriam, and there she was, a leper. 11So Aaron said to Moses, “Oh, my lord! Please [a]do not lay [*]*this* sin on us, in which we have done foolishly and in which we have sinned. 12Please [a]do not let her be as one dead, whose flesh is half consumed when he comes out of his mother's womb!"

13So Moses cried out to the LORD, saying, "Please [a]heal her, O God, I pray!"

14Then the LORD said to Moses, "If her father had but [a]spit in her face, would she not be shamed seven days? Let her be [b]sh1ut* out of the camp seven days, and afterward she may be received *again.*" 15[a]So Miriam was shut out of the camp seven days, and the people did not journey till Miriam was brought in *again.* 16And afterward the people moved from [a]Hazeroth and camped in the Wilderness of Paran.

Numbers 13

Spies Sent into Canaan

1And the LORD spoke to Moses, saying, 2[a]"Send men to spy out the land of

Canaan, which I am giving to the children of Israel; from each tribe of their fathers you shall send a man, every one a leader among them."

3So Moses sent them [a]from the Wilderness of Paran according to the command of the LORD, all of them men who *were* heads of the children of Israel. 4Now these *were* their names: from the tribe of Reuben, Shammua the son of Zaccur; 5from the tribe of Simeon, Shaphat the son of Hori; 6[a]from the tribe of Judah, [b]Caleb the son of Jephunneh; 7from the tribe of Issachar, Igal the son of Joseph; 8from the tribe of Ephraim, [*]Hoshea the son of Nun; 9from the tribe of Benjamin, Palti the son of Raphu; 10from the tribe of Zebulun, Gaddiel the son of Sodi; 11from the tribe of Joseph, *that is,* from the tribe of Manasseh, Gaddi the son of Susi; 12from the tribe of Dan, Ammiel the son of Gemalli; 13from the tribe of Asher, Sethur the son of Michael; 14from the tribe of Naphtali, Nahbi the son of Vophsi; 15from the tribe of Gad, Geuel the son of Machi.

16These *are* the names of the men whom Moses sent to [*]spy out the land. And Moses called [a]Hoshea[*] the son of Nun, Joshua.

17Then Moses sent them to spy out the land of Canaan, and said to them, “Go up this *way* into the South, and go up to [a]the mountains, 18and see what the land is like: whether the people who dwell in it *are* strong or weak, few or many; 19whether the land they dwell in *is* good or bad; whether the cities they inhabit *are* like camps or strongholds; 20whether the land *is* [*]rich or poor; and whether there are forests there or not. [a]Be of good courage. And bring some of the fruit of the land." Now the time *was* the season of the first ripe grapes.

21So they went up and spied out the land [a]from the Wilderness of Zin as far as [b]Rehob, near the entrance of [c]Hamath. 22And they went up through the South and came to [a]Hebron; Ahiman, Sheshai, and Talmai, the descendants of [b]Anak, *were* there. (Now Hebron was built seven years before Zoan in Egypt.) 23[a]Then they came to the [*]Valley of Eshcol, and there cut down a branch with one cluster of grapes; they carried it between two of them on a pole. *They* also *brought* some of the pomegranates and figs. 24The place was called the Valley of [*]Eshcol, because of the cluster which the men of Israel cut down there. 25And they returned from spying out the land after forty days.

26Now they departed and came back to Moses and Aaron and all the congregation of the children of Israel in the Wilderness of Paran, at [a]Kadesh; they brought back word to them and to all the congregation, and showed them the fruit of the land. 27Then they told him, and said: “We went to the land where you sent us. It truly [*]flows with [a]milk and honey, [b]and this *is* its fruit. 28Nevertheless the [a]people who dwell in the land *are* strong; the cities *are* fortified *and* very large; moreover we saw the descendants of [b]Anak there. 29[a]The Amalekites dwell in the land of the South; the Hittites, the Jebusites, and the Amorites dwell in the mountains; and the Canaanites dwell by the sea and along the banks of the Jordan.”

30Then [a]Caleb quieted the people

before Moses, and said, “Let us go up at once and take possession, for we are well able to overcome it.”

31[a]But the men who had gone up with him said, “We are not able to go up against the people, for they *are* stronger than we.” 32[a]And they gave the children of Israel a bad report of the land which they had spied out, saying, “The land through which we have gone as spies *is* a land that devours its inhabitants, and [b]all the people whom we saw in it *are* men of *great* stature. 33There we saw the [*]giants ([a]the descendants of Anak came from the giants); and we were [b]like[*] grasshoppers in our own sight, and so we were [c]in their sight.”

Numbers 14

Israel Refuses to Enter Canaan

1So all the congregation lifted up their voices and

cried, and the people [a]wept that night.
2[a]And all the children of Israel complained against Moses and Aaron, and the whole congregation said to them, “If only we had died in the land of Egypt! Or if only we had died in this wilderness! 3Why has the LORD brought us to this land to [*]fall by the sword, that our wives and [a]children should become victims? Would it not be better for us to return to Egypt?” 4So they said to one another, [a]“Let us select a leader and [b]return to Egypt.”

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Trench Prayer (When Under Major Attack)

Father, I take

courage
and
comfort
knowing
that
You
are
my
strength
when
I
am
weak.
I
call
You
faithful
in
the
midst
of
what
seems
so
horrible
and
unexplainable.
My
trust
is
in
You,
God.
I
take
You
at
Your
Word,
for

Your Word will not return void unto You. I expect Your word to bring back all that was lost or stolen from me, in the name of Jesus. I pronounce Proverbs 6:31 over my life — all that was taken

will
be
returned
seven
times.
I
decree
that
no
weapon
formed
against
me
will
be
able
to
prosper,
and
every
tongue
that
rises
against
me
I
will
show
to
be
wrong.
Lord,
I
thank
You
for
being
a
shield
all

around
me.
You
are
my
exceeding
great
reward,
and
my
shelter
is
in
You.
You
are
my
refuge
and
my
fortress.
There
is
absolutely
nothing
that
can
separate
me
from
Your
love.
I
am
fully
persuaded
that
neither
death
nor

life,
nor
angels,
nor
principalities,
nor
powers,
nor
things
present,
nor
things
to
come,
nor
height,
nor
depth,
nor
any
other
created
thing
will
be
able
to
separate
me
from
the
love
of
God.

No
spirits
of
fear,
anxiety,

hopelessness, depression, or worry will plague my soul. The spirit of defeat is displaced by victory. I do not have a spirit of fear; therefore, I boldly say that I have the spirit of power, love, and a sound mind.

Lord, I take authority over every opposing spirit that comes to contend with Your divine purpose for my life. I declare that I will fulfill the destiny You have ordained for me, and I will not be distracted. I bind *the spirit of distraction that comes to confuse and discourage me. I am not moved by what I see! I walk by faith and not by sight. I release the voice of faith over my situation and say that Jehovah-*

Jireh is my provider. Every need is already met concerning this matter.

I am more than a conqueror. Lord, I thank You for the prevailing anointing that causes me to triumph in the face of adversity. I grab hold

of
the
horns
of
the
altar
and
refuse
to
let
go.
I
commit
to
bless
You
in
the
midst
of
my
trouble.
Your
divine
will
for
this
time
of
my
life
will
be
accomplished.
What
the
devil
has
meant
for

my demise will cause my promotion and prosperity. The greater One is on the inside of me. I command the resurrection power of Jesus to come forth on my behalf, in Jesus' name. Amen.[*]

---

[*]
Kin
Da
Pro

[5]Then Moses and Aaron *fell on their faces before all the assembly of the congregation of the children of Israel.

[6]But Joshua the son of Nun and Caleb the son of Jephunneh,

who were among those who had spied out the land, tore their clothes; [17]and they spoke to all the congregation of the children of Israel, saying: [a]“The land we passed through to spy out *is* an exceedingly good land. [8]If the LORD

[a]delights in us, then He will bring us into this land and give it to us, [b]‘a land which flows with milk and honey.’ [9]Only [a]do not rebel against the LORD, [b]nor fear the people of the land, for [c]they*_are_ our

bread; their protection has departed from them, [d]and the LORD *is* with us. Do not fear them.”

10 [a]And all the congregation said to stone them with stones. Now [b]the glory of the LORD appeared in the tabernacle of meeting before

all the children of Israel.

Moses Intercedes for the People

[11] Then the LORD said to Moses: "How long will these people [a]reject* Me? And how long will they not [b]believe Me, with all the *signs which I have performed among

them? [12]I will strike them with the pestilence and disinherit them, and I will [a]make of you a nation greater and mightier than they.”

[13]And [a]Moses said to the LORD: [b]“Then the Egyptians will hear *it,* for by Your might You

brought these people up from among them, 14and they will tell *it* to the inhabitants of this land. They have [a]heard that You, LORD, *are* among these people; that You, LORD, are seen face to face and Your cloud stands above them, and You go before them in a pillar of cloud by day and in a pillar of fire by night. [15]Now *if* You kill these people as one man, then the nations which have heard of Your fame will speak, saying,

[16]‘Because the LORD was not [a]able to bring this people to the land which He swore to give them, therefore He killed them in the wilderness.’ [17]And now, I pray, let the power of my Lord be great, just as

You have spoken, saying, 18[a]‘The LORD is longsuffering and abundant in mercy, forgiving iniquity and transgression; but He by no means clears *the guilty,* [b]visiting the iniquity of the fathers on the children to the third and fourth *generation.*’ 19[a]Pardon the iniquity of this people, I pray, [b]according to the greatness of Your mercy, just [c]as You have forgiven this people, from Egypt even until now.”

20Then the LORD said: “I have pardoned, [a]according to your word; 21but truly, as I live, [a]all the earth shall be filled with the glory of the LORD— 22[a]because all these men who have seen My glory and the signs which I did in Egypt and in the wilderness, and have put Me to the test now [b]these ten times, and have not heeded My voice, [23]they certainly shall not [a]see the land of which I [*]swore to their fathers, nor shall any of those who rejected Me see it. [24]But My servant [a]Caleb, because he has a different spirit in him and [b]has followed Me fully, I will bring into the land where he went, and his descendants shall inherit it. 25Now the Amalekites and the Canaanites dwell in the valley; tomorrow turn and [a]move out into the wilderness by the Way of the Red Sea.”

Death Sentence on the Rebels

26And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying, 27[a]“How long *shall I bear with* this evil congregation who complain against Me? [b]I have heard the complaints which the children of Israel make against Me. 28[a]Say to them, ‘As I live,’ says the LORD, ‘just as you have spoken in My hearing, so I will do to you: 29The carcasses of you who have complained against Me shall fall in this wilderness, [a]all of you who were numbered, according to your entire number, from twenty years old and above. 30 [a]Except for Caleb the son of Jephunneh and Joshua the son of Nun, you shall by no means enter

the
land
which
I
*swore
I
would
make
you
dwell
in.
31[a]But
your
little
ones,
whom
you
said
would
be
victims,
I will
bring
in,
and
they
shall
*know
the
land
which
[b]you
have
despised.
32But
as
for
you,
[a]your*
carcasses

shall fall in this wilderness. 33 And your sons shall [a]be [*]shepherds in the wilderness [b]forty years, and [c]bear the brunt of your infidelity, until your carcasses are consumed in the wilderness. 34 [a]According to the number of the days in which

you spied out the land, [b]forty days, for each day you shall bear your [*]guilt one year, *namely* forty years, [c]and you shall know My [*]rejection.
35 [a]I the LORD have spoken this. I will surely do so to all [b]this evil congregation who

are gathered together against Me. In this wilderness they shall be consumed, and there they shall die.’ ”

[36]Now the men whom Moses sent to spy out the land, who returned and made all the congregation complain against him by

bringing a bad report of the land, 37 those very men who brought the evil report about the land, [a]died by the plague before the LORD. 38 [a]But Joshua the son of Nun and Caleb the son of Jephunneh remained alive, of the men who went to spy out the land.

A Futile Invasion Attempt

[39]Then Moses told these words to all the children of Israel, [a]and the people mourned greatly. [40]And they rose early in the morning and went up to the top

of the mountain, saying, [a]“Here we are, and we will go up to the place which the LORD has promised, for we have sinned!”

41 And Moses said, “Now why do you *transgress the command of the LORD? For this will not

succeed. 42[a]Do not go up, lest you be defeated by your enemies, for the LORD *is* not among you. 43For the Amalekites and the Canaanites *are* there before you, and you shall fall by the sword; [a]because you have turned away from the LORD, the LORD will not be with you.”

44[a]But they presumed to go up to the mountaintop. Nevertheless, neither the ark of the covenant of the LORD nor Moses departed from the camp. 45Then the Amalekites and the Canaanites who dwelt in that mountain came down and attacked them, and drove them back as far as [a]Hormah.

Numbers 15

Laws of Grain and Drink Offerings

1And the LORD spoke to Moses, saying, 2[a]“Speak to the children of Israel, and say to them: ‘When you have come into the land you are to inhabit, which I am giving to you, [3]and you [a]make an offering by fire to the LORD, a burnt offering or a sacrifice, [b]to fulfill a vow or as a freewill offering or [c]in your appointed feasts, to make a [d]sweet[*] aroma to the LORD, from the herd or the flock, [4]then [a]he who presents his offering to the LORD shall bring [b]a grain offering of one-tenth *of an ephah* of fine flour mixed [c]with one-fourth of a hin of oil; 5 [a]and one-fourth of a hin of wine as a drink offering you shall prepare with the burnt offering or the sacrifice, for each [b]lamb. 6 [a]Or for a ram you shall prepare as a grain offering two-tenths *of an ephah* of fine flour mixed with one-third of a hin of oil; 7and as a drink offering you shall offer one-third of a hin of wine as a sweet aroma to the LORD. 8And when you prepare a young bull as a burnt offering, or as a sacrifice to fulfill a vow, or as a [a]peace offering to the LORD, [9]then shall be offered [a]with the young bull a grain offering of three-tenths *of an ephah* of fine flour mixed with half a hin of oil; [10]and you shall bring as the drink offering half a hin of wine as an offering made by fire, a sweet aroma to the LORD.

[11][a]‘Thus it shall be done for each young bull, for each

ram, or for each lamb or young goat. [12]According to the number that you prepare, so you shall do with everyone according to their number. [13]All who are native-born shall do these things in this manner, in presenting an offering made by fire, a sweet aroma to the LORD. 14And if a stranger *dwells with you, or whoever *is* among you throughout your generations, and would present an offering made by fire, a sweet aroma to the LORD, just as you do, so shall he do. 15 [a]One *ordinance *shall be* for you of the assembly and for the stranger who dwells *with you,* an ordinance forever throughout your generations; as you are, so shall the stranger be before the LORD.

16 One law and one custom shall be for you and for the stranger who dwells with you.' "

17 Again the LORD spoke to Moses, saying, 18 [a]"Speak to the children of Israel, and say to them: 'When you come into the

land to which I bring you, 19 then it will be, when you eat of [a]the bread of the land, that you shall offer up a heave offering to the LORD. 20 [a]You shall offer up a cake of the first of your ground meal *as* [b]a heave offering; as a heave offering of the threshing floor, so shall you offer it up. 21 Of the first of your ground meal you shall give to the LORD a heave offering throughout your generations.

Laws Concerning Unintentional Sin

22 [a]‘If

you sin unintentionally, and do not observe all these commandments which the LORD has spoken to Moses—[23]all that the LORD has commanded you by the hand of Moses, from the day the LORD gave commandment and onward throughout your generations —

[24]then it will be, [a]if it is unintentionally committed, [*]without the knowledge of the congregation, that the whole congregation shall offer one young bull as a burnt offering, as a sweet aroma to the LORD, [b]with its grain offering and

its drink offering, according to the ordinance, and [c]one kid of the goats as a sin offering. 25[a]So the priest shall make atonement for the whole congregation of the children of Israel, and it shall be forgiven them, for it was unintentional;

they shall bring their offering, an offering made by fire to the LORD, and their sin offering before the LORD, for their unintended sin. [26]It shall be forgiven the whole congregation of the children of Israel and the stranger who dwells among them, because all the people *did it* unintentionally.

27‘And [a]if a person sins unintentionally, then he shall bring a female goat in its first year as a sin offering. 28[a]So the priest shall make atonement for the person who sins unintentionally, when he sins unintentionally before the LORD, to make atonement for him; and it shall be forgiven him. 29[a]You shall have one law for him who sins unintentionally, *for* him who is native-born among the children of Israel and for the stranger who dwells among them.

Law Concerning Presumptuous Sin

30[a]‘But the person who does *anything* *presumptuously, *whether he is* native-born or a stranger, that one *brings reproach on the LORD, and he shall be *cut off from among his people.

31 Because he has [a]despised the word of the LORD, and has broken His commandment, that person shall be completely cut off; his *guilt *shall be* upon him.' "

Penalty for Violating the Sabbath

32 Now while the children of Israel were

in the wilderness, [a]they found a man gathering sticks on the Sabbath day. [33]And those who found him gathering sticks brought him to Moses and Aaron, and to all the congregation. [34]They put him [a]under guard, because it had not been explained what should be done to him.

35 Then the LORD said to Moses, [a]“The man must surely be put to death; all the congregation shall [b]stone him with stones outside the camp.” 36 So, as the LORD commanded Moses, all the

congregation brought him outside the camp and stoned him with stones, and he died.

Tassels on Garments

[37]Again the LORD spoke to Moses, saying, [38]“Speak to the children of Israel: Tell [a]them to make tassels on the corners of their

garments throughout their generations, and to put a blue thread in the tassels of the corners. [39]And you shall have the tassel, that you may look upon it and [a]remember all the commandments of the LORD and do them, and that you [b]*may* not [c]follow the harlotry to which your own heart and your own eyes are inclined[1], 40 and that you may remember and do all My commandments, and be [a]holy for your God. 41 I *am* the LORD your God, who brought you out of the land of Egypt, to be your God: I *am* the LORD your God.”

Numbers 16

Rebellion Against Moses and Aaron

[1]Now [a]Korah the son of Izhar, the son of Kohath, the son of Levi, with [b]Dathan

and Abiram the sons of Eliab, and On the son of Peleth, sons of Reuben, took *men;* [2]and they rose up before Moses with some of the children of Israel, two hundred and fifty leaders of the congregation, [a]representatives of the congregation, men of renown. 3[a]They gathered together against Moses and Aaron, and said to them, “*You* *[*]*take* too much upon yourselves, for [b]all the congregation *is* holy, every one of them, [c]and the LORD *is* among them. Why then do you exalt yourselves above the assembly of the LORD?”

4So when Moses heard *it,* he [a]fell on his face; 5and he spoke to Korah and all his company, saying, “Tomorrow morning the LORD will show who *is* [a]His and *who* *is* [b]holy,[*] and will cause *him* to [c]come near to Him. That one whom He chooses He will cause to come near to Him. [6]Do this: Take censers, Korah and all your company; [7]put fire in them and put incense in them before the LORD tomorrow, and it shall be *that* the man whom the LORD chooses *is* the holy one. *You take* too much upon yourselves, you sons of Levi!”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Post-Deliverance Attack: Intimidation

The e1nemy may try to intimidate you with demonstrations of his power. Do not be frightened if things seem to go wrong for you for a while or if some symptoms from before deliverance seem to reappear. Remember that if

Satan was as powerful as he claims to be, he would have swept us all away a long time ago. The reason that we are still here is that his power, in fact, is very limited. There is only one all-powerful Person, and He is the same God, the Father of our Lord Jesus Christ, who sends us the Holy Spirit to dwell within us and in whom we are baptized. We are on the winning side.*

[8]Then Moses said to Korah, “Hear now, you sons of Levi: [9]*Is it* [a]a small thing to you that the God of Israel has [b]separated you from the congregation of

*

Do
Di
Wh
Pig
Mo
In,
20

Israel, to bring you near to Himself, to do the work of the tabernacle of the LORD, and to stand before the congregation to serve them; [10]and that He has brought you near *to Himself,* you and all your brethren, the sons of Levi, with you? And are you seeking the priesthood also? 11 Therefore you and all your company *are* gathered together against the LORD. [a]And what *is* Aaron that you complain against him?”

12 And Moses sent to call Dathan and

Abiram the sons of Eliab, but they said, “We will not come up! 13*Is it* a small thing that you have brought us up out of [a]a land flowing with milk and honey, to kill us in the wilderness, that you should [b]keep acting like a prince over us? 14 Moreover [a]you have not brought us into [b]a land flowing with milk and honey, nor given us inheritance of fields and vineyards. Will you put out the eyes of these men? We will not come up!”

[15]Then Moses was very angry, and said to the LORD, [a]“Do not *respect their offering. [b]I have not taken one donkey from them, nor have I hurt one of them.”

[16]And Moses said to Korah, “Tomorrow, you and

all your company be present [a]before the LORD—you and they, as well as Aaron. 17Let each take his censer and put incense in it, and each of you bring his censer before the LORD, two hundred and fifty censers;

both
you
and
Aaron,
each
with
his
censer.”
[18]So
every
man
took
his
censer,
put
fire
in it,
laid
incense
on it,
and
stood
at
the
door
of
the
tabernacle
of
meeting
with
Moses
and
Aaron.
[19]And
Korah
gathered
all
the
congregation

against them at the door of the tabernacle of meeting. Then [a]the glory of the LORD appeared to all the congregation.

20And the LORD spoke to Moses and Aaron, saying, 21[a]“Separate yourselves from among this congregation, that I may [b]consume them in a moment.”

22Then they [a]fell[*] on their faces, and said, “O God, [b]the God of the spirits of all flesh, shall one man sin, and You be angry with all the [c]congregation?”

23So the LORD spoke to Moses, saying, 24“Speak to the congregation, saying, ‘Get away from the tents of Korah, Dathan, and Abiram.’ ”

[25]Then Moses rose and went to Dathan and Abiram, and the elders of Israel followed him. [26]And he spoke to the congregation, saying, [a]“Depart now from

the tents of these wicked men! Touch nothing of theirs, lest you be consumed in all their sins.” [27]So they got away from around the tents of Korah, Dathan, and Abiram; and Dathan and Abiram came out and stood at the door of their tents, with their wives, their sons, and their little [a]children.

28And Moses said: [a]“By this you shall know that the LORD has sent me to do all these works, for *I have* not *done them* [b]of my own will.

[29]If these men die naturally like all men, or if they are [a]visited by the common fate of all men, *then* the LORD has not sent me. [30]But if the LORD creates [a]a new thing, and the earth opens its mouth and swallows

them up with all that belongs to them, and they [b]go down alive into the pit, then you will understand that these men have rejected the LORD.”

31 [a]Now it came to pass, as he finished speaking all these words, that the

ground split apart under them, [32]and the earth opened its mouth and swallowed them up, with their households and [a]all the men with Korah, with all *their* goods. [33]So they and all those with them went down alive into the pit; the earth closed over them, and they perished from among the assembly. 34Then all Israel who *were* around them fled at their cry, for they said, “Lest the earth swallow us up *also!*”

35And [a]a fire came out from

the LORD and consumed the two hundred and fifty men who were offering incense.

[36]Then the LORD spoke to Moses, saying: [37]“Tell Eleazar, the son of Aaron the priest, to pick up the censers out of the blaze, for [a]they

are holy, and scatter the fire some distance away. 38The censers of [a]these men who sinned *against their own souls, let them be made into hammered plates as a covering for the altar. Because they presented them before the LORD, therefore they are holy; [b]and they shall be a sign to the children of Israel.” [39]So Eleazar the priest took the bronze censers, which those who were burned up had presented, and they were hammered out as a covering on the altar, [40]*to* *be* a *memorial to the children of Israel [a]that no outsider, who *is* not a descendant of Aaron, should come near to offer incense before the LORD, that he might not become like Korah and his companions, just as the LORD had said to him through Moses.

Complaints of the People

[41]On the next day [a]all the congregation of the children of Israel complained against Moses and Aaron, saying, “You have killed the people of the LORD.” [42]Now it happened, when the

congregation had gathered against Moses and Aaron, that they turned toward the tabernacle of meeting; and suddenly [a]the cloud covered it, and the glory of the LORD appeared. 43Then Moses and Aaron came before the tabernacle of meeting.

44And the

LORD spoke to Moses, saying, [45]“Get away from among this congregation, that I may consume them in a moment.”

And they fell on their faces.

[46]So Moses said to Aaron, “Take a censer and put fire in it from the altar, put

incense *on it,* and take it quickly to the congregation and make *atonement for them; [a]for wrath has gone out from the LORD. The plague has begun.” 47Then Aaron took *it* as Moses commanded, and ran into the midst of the assembly;

and already the plague had begun among the people. So he put in the incense and made atonement for the people. 48And he stood between the dead and the living; [a]so the plague was stopped. 49Now those who died in the plague were fourteen thousand seven hundred, besides those who died in the Korah incident. [50]So Aaron returned to Moses at the door of the tabernacle of meeting, for the plague had stopped.

Num. 16:50

Every plague

is stopped when it comes near me through the atonement of Jesus Christ.

Numbers 17

The Budding of Aaron's Rod

[1]And the LORD spoke to Moses, saying: [2]"Speak to the children of Israel, and get from them a rod

from
each
father’s
house,
all
their
leaders
according
to
their
fathers’
houses
—
twelve
rods.
Write
each
man’s
name
on
his
rod.
[3]And
you
shall
write
Aaron’s
name
on
the
rod
of
Levi.
For
there
shall
be
one
rod
for

the head of *each* father’s house. 4 Then you shall place them in the tabernacle of meeting before [a]the Testimony, [b]where I meet with you. 5 And it shall be *t1hat* the rod of the man [a]whom I choose will blossom; thus

I will rid Myself of the complaints of the children of Israel, [b]which they make against you.”

[6]So Moses spoke to the children of Israel, and each of their leaders gave him a rod apiece, for each leader according to their fathers’

houses, twelve rods; and the rod of Aaron *was* among their rods. [7]And Moses placed the rods before the LORD in [a]the tabernacle of witness.

[8]Now it came to pass on the next day that Moses went into the tabernacle

of witness, and behold, the [a]rod of Aaron, of the house of Levi, had sprouted and put forth buds, had produced blossoms and yielded ripe almonds. [9]Then Moses brought out all the rods from before the LORD to all the children of Israel; and they looked, and each man took his rod.

10And the LORD said to Moses, “Bring [a]Aaron’s rod back before the Testimony, to be kept [b]as a sign against the rebels, [c]that you may put their complaints away from Me, lest they die.” [11]Thus did Moses; just as the LORD had commanded him, so he did.

[12]So the children of Israel spoke to Moses, saying, “Surely we die, we perish, we all perish! [13][a]Whoever even comes near the tabernacle of the

LORD must die. Shall we all utterly die?”

Numbers 18

Duties of Priests and Levites

[1] Then the LORD said to Aaron: [a]“You and your sons and your father’s house with you shall [b]bear the [*]iniquity *related to* the sanctuary,

and you and your sons with you shall bear the iniquity *associated with* your priesthood. 2Also bring with you your brethren of the [a]tribe of Levi, the tribe of your father, that they may be [b]joined with you and serve you while you and your sons *are* with you before the tabernacle of [*]witness. [3]They shall attend to your [*]needs and [a]all the needs of the tabernacle; [b]but they shall not come near the articles of the sanctuary and the altar, [c]lest they die—they and you also. 4They shall be joined with you and attend to the needs of the tabernacle of meeting, for all the work of the tabernacle; [a]but an outsider shall not come near you. 5And you shall attend to the duties of the sanctuary and [a]the duties of the altar, [b]that there *may* be no more wrath on the children of Israel. [6]Behold, I Myself have [a]taken your brethren the Levites from among the children of Israel; [b]*they are* a gift to you, given by the LORD, to do the work of the tabernacle of meeting. [7]Therefore [a]you and your sons with you shall attend to your priesthood for everything at the altar and [b]behind the veil;

and you shall serve. I give your priesthood *to you* as a [c]gift for service, but the outsider who comes near shall be put to death.”

Offerings for Support of the Priests

8 And the LORD spoke to Aaron: “Here, [a]I Myself

have also given you *charge of My heave offerings, all the holy gifts of the children of Israel; I have given them [b]as a portion to you and your sons, as an ordinance forever. [9]This shall be yours of the most holy things *reserved* from the fire: every offering of theirs, every [a]grain offering and every [b]sin offering and every [c]trespass offering which they render to Me, *shall be* most holy for you and your sons. 10 [a]In a most holy *place* you shall eat it; every male shall eat it. It shall be holy to you.

[11]“This also *is* yours: [a]the heave offering of their gift, with all the wave offerings of the children of Israel; I have given them to you, and

your sons and daughters with you, as an ordinance forever. [b]Everyone who is *clean in your house may eat it.

12[a]“All the *best of the oil, all the best of the new wine and the grain, [b]their firstfruits which they offer to the LORD, I have given them to you. 13Whatever first ripe fruit is in their land, [a]which they bring to the LORD, shall be yours. Everyone who is clean in your house may eat it.

14[a]“Every [*]devoted thing in Israel

shall be yours.

[15]“Everything that first opens [a]the womb of all flesh, which they bring to the LORD, whether man or beast, shall be yours; nevertheless the firstborn of man you shall surely redeem, and [b]the firstborn of unclean animals you

shall redeem. 16And those redeemed of the devoted things you shall redeem when one month old, [a]according to your valuation, for five shekels of silver, according to the shekel of the sanctuary, which *is* [b]twenty gerahs. 17[a]But the firstborn of a cow, the firstborn of a sheep, or the firstborn of a goat you shall not redeem; they *are* holy. [b]You shall sprinkle their blood on the altar, and burn their fat *as* an offering made by fire for a sweet aroma to the LORD.

18And their flesh shall be yours, just as the [a]wave* breast and the right thigh are yours.

19“All the heave offerings of the holy things, which the children of Israel offer to the LORD, I have given to you and your sons and daughters with you as an ordinance forever; [a]it *is* a covenant of salt forever before the LORD with you and your descendants with you.”

20Then the LORD said to Aaron: “You shall have [a]no inheritance in their land, nor shall you have any portion among them; [b]I *am* your portion and your inheritance among the children of Israel.

Tithes for Support of the Levites

21 “Behold, [a]I have given the children of Levi all the tithes in Israel as [*]an inheritance

in return for the work which they perform, [b]the work of the tabernacle of meeting. 22 [a]Hereafter the children of Israel shall not come near the tabernacle of meeting, [b]lest they bear sin and die. 23 But the Levites shall perform the

work
of
the
tabernacle
of
meeting,
and
they
shall
bear
their
iniquity;
it
shall
be a
statute
forever,
throughout
your
generations,
that
among
the
children
of
Israel
they
shall
have
no
inheritance.
[24]For
the
tithes
of
the
children
of
Israel,
which

they offer up *as* a heave offering to the LORD, I have given to the Levites *as an inheritance; therefore I have said to them, ‘Among the children of Israel they shall have no inheritance.’ ”

The Tithe of the Levites

[25]Then the LORD spoke to Moses, saying, [26]“Speak thus to the Levites, and say to them: ‘When you take from the children of Israel the tithes which I have given you from them as your inheritance, then you shall offer

up a heave offering of it to the LORD, [a]a tenth of the tithe. 27And your heave offering shall be reckoned to you as though *it were* the grain of the [a]threshing floor and as the fullness of the winepress. 28Thus you shall also offer a heave offering to the LORD from all your tithes which you receive from the children of Israel, and you shall give the LORD’s heave offering from it to Aaron the priest. [29]Of all your gifts you shall offer up every heave offering due to the LORD, from all the *best of them, the consecrated part of them.’ [30]Therefore you shall say to them: ‘When you have lifted up the best of it, then *the rest* shall be accounted to the Levites as the produce of the threshing floor and as the produce of the winepress. 31You may eat it in any place, you and your households, for it *is* [a]your [*]reward for your work in the tabernacle of meeting. 32And you shall [a]bear no sin because of it, when you have lifted up the best of it. But you shall not [b]profane the holy gifts of the children of Israel, lest you die.' "

Numbers 19

Laws of Purification

1Now the

LORD spoke to Moses and Aaron, saying, [2]“This *is* the [*]ordinance of the law which the LORD has commanded, saying: ‘Speak to the children of Israel, that they bring you a red heifer without [*]blemish, in which there *is* no [a]defect [b]*and* on

which
a
yoke
has
never
come.
3You
shall
give
it to
Eleazar
the
priest,
that
he
may
take
it
[a]outside
the
camp,
and
it
shall
be
slaughtered
before
him;
4and
Eleazar
the
priest
shall
take
some
of its
blood
with
his
finger,

and [a]sprinkle some of its blood seven times directly in front of the tabernacle of meeting. [5]Then the heifer shall be burned in his sight: [a]its hide, its flesh, its blood, and its offal shall be burned. [6]And the priest shall take [a]cedar wood and [b]hyssop and scarlet, and cast *them* into the midst of the fire burning the heifer. 7 [a]Then the priest shall wash his clothes, he shall bathe in water, and afterward he shall come into the camp; the priest shall be unclean until evening. [8]And the one who burns it shall wash his clothes in water, bathe in water, and shall be unclean until evening. [9]Then a man *who is* clean shall gather up [a]the ashes of the heifer, and store *them* outside the camp in a clean place; and they shall be kept for the congregation of the children of Israel [b]for the water of *1a>purification; it *is* for purifying from sin. [10]And the one who gathers the ashes of the heifer shall wash his clothes, and be unclean until evening. It shall be a statute forever to the children of Israel and to the stranger who dwells among them.

11[a]‘He who touches the dead *body of anyone shall be unclean seven days. 12[a]He shall purify himself with the water on the third day and on the seventh day; *then* he will be clean. But if he does not purify himself on the third day and on the seventh day, he will not be clean. 13Whoever touches the body of anyone who has died, and [a]does not purify himself, [b]defiles the tabernacle of the LORD. That person shall be cut off from Israel. He shall be unclean, because [c]the water of purification was not sprinkled on him; [d]his uncleanness *is* still on him.

[14]‘This *is* the law when a man dies in a tent: All who come into the tent and all who *are* in the tent shall be unclean seven days; [15]and

every [a]open vessel, which has no cover fastened on it, *is* unclean. [16][a]Whoever in the open field touches one who is slain by a sword or who has died, or a bone of a man, or a grave, shall be unclean seven days.

[17]‘And for

an unclean *person* they shall take some of the [a]ashes of the heifer burnt for purification from sin, and [*]running water shall be put on them in a vessel. 18 A clean person shall take [a]hyssop and dip *it* in the water, sprinkle *it* on the tent, on all the vessels, on the persons who were there, or on the one who touched a bone, the slain, the dead, or a grave. 19The clean *person* shall sprinkle the unclean on the third day and on the seventh day; [a]and on the seventh day he shall purify himself, wash his clothes, and bathe in water; and at evening he shall be clean.

20‘But the man who is unclean and does not purify himself, that person shall be cut off from among the assembly, because he has [a]defiled the sanctuary of the LORD. The water of purification has not been sprinkled on him; he *is* unclean. [21]It shall be a perpetual statute for them. He who sprinkles the water of

purification shall wash his clothes; and he who touches the water of purification shall be unclean until evening. 22[a]Whatever the unclean *person* touches shall be unclean; and [b]the person who touches *it* shall be unclean until evening.'
"

20

Moses' Error at Kadesh

1Then [a] the children of Israel, the whole congregation, came into the Wilderness of Zin in the first month, and the people stayed in [b]Kadesh; and [c]Miriam died there and was buried there.

2[a]Now there was

no water for the congregation; [b]so they gathered together against Moses and Aaron. 3 And the people [a]contended with Moses and spoke, saying: “If only we had died [b]when our brethren died before the LORD! 4 [a]Why have you brought up the assembly of the LORD into this wilderness, that we and our animals should die here? [5]And why have you made us come up out of Egypt, to bring us to this evil place? It *is* not a place of grain or figs or vines or pomegranates; nor *is* there any water to drink.” 6 So Moses and Aaron went from the presence of the assembly to the door of the tabernacle of meeting, and [a]they [*]fell on their faces. And [b]the glory of the

LORD appeared to them.

7Then the LORD spoke to Moses, saying, 8[a]“Take the rod; you and your brother Aaron gather the congregation together. Speak to the rock before their eyes, and it will yield its water; thus [b]you shall bring water for them out of the rock, and give drin1k to the congregation and their animals.” [9]So Moses took the rod [a]from before the LORD as He commanded him.

Num. 20:8

I will speak to the rock

of my salvation, and He shall bring forth His water so that I can drink.

[10]And Moses and Aaron gathered the assembly together before the rock; and he said to them, [a]“Hear now, you rebels! Must we bring water

for you out of this rock?” [11]Then Moses lifted his hand and struck the rock twice with his rod; [a]and water came out abundantly, and the congregation and their animals drank.

[12]Then the LORD spoke to Moses and Aaron, “Because

[a]you did not believe Me, to [b]hallow Me in the eyes of the children of Israel, therefore you shall not bring this assembly into the land which I have given them.”

13[a]This *was* the water of [*]Meribah, because the children of Israel contended with the LORD, and He was hallowed among them.

Passage Through Edom Refused

14 [a]Now Moses sent messengers from Kadesh to the king of [b]Edom. [c]“Thus says your brother Israel: ‘You know all the hardship that has befallen

us, 15[a]how our fathers went down to Egypt, [b]and we dwelt in Egypt a long time, [c]and the Egyptians [*]afflicted us and our fathers. 16[a]When we cried out to the LORD, He heard our voice and [b]sent the Angel and brought us up out of Egypt; now here we are in Kadesh, a city on the edge of your border. [17]Please [a]let us pass through your country. We will not pass through field1s or vineyards, nor will we drink water

from
wells;
we
will
go
along
the
King’s
Highway;
we
will
not
turn
aside
to
the
right
hand
or to
the
left
until
we
have
passed
through
your
territory.’
”

Num. 20:16

**Lord,
hear
my
voice
and
send**

Your angels to deliver me.

[18]Then [a]Edom said to him, “You shall not pass through my *land,* lest I come out against you with the sword.”

[19]So the children of Israel said to him, “We will go by the Highway,

and
if I
or
my
livestock
drink
any
of
your
water,
[a]then
I will
pay
for
it; let
me
only
pass
through
on
foot,
nothing
more.”

[20]Then
he
said,
[a]“You
shall
not
pass
through.”
So
Edom
came
out
against
them
with
many
men

and with a strong hand. 21 Thus Edom [a]refused to give Israel passage through his territory; so Israel [b]turned away from him.

Death of Aaron

22 Now the children of Israel, the whole congregation, journeyed from [a]Kadesh [b]and came to Mount Hor.

[23]And the LORD spoke to Moses and Aaron in Mount Hor by the border of the land of Edom, saying: [24]“Aaron shall [*]be [a]gathered to his people, for he shall not enter the land which I have given to the

children of Israel, because you rebelled against My word at the water of Meribah. 25[a]Take Aaron and Eleazar his son, and bring them up to Mount Hor; 26and strip Aaron of his garments and put them on Eleazar his son; for

Aaron shall be gathered *to his people* and die there.” [27]So Moses did just as the LORD commanded, and they went up to Mount Hor in the sight of all the congregation. [28][a]Moses stripped Aaron of his garments and put them on Eleazar his son; and [b]Aaron died there on the top of the mountain. Then Moses and Eleazar came down from the mountain.

29Now when all the congregation saw that Aaron was dead, all the house of Israel mourned for Aaron [a]thirty days.

Numbers 21

Canaanites Defeated at Hormah

1The [a]king of Arad, the Canaanite, who dwelt in the South, heard that Israel was coming on the road to Atharim. Then he fought against Israel and took *some* of them prisoners. 2[a]So

Israel made a vow to the LORD, and said, “If You will indeed deliver this people into my hand, then [b]I will utterly destroy their cities.” 3And the LORD listened to the voice of Israel and delivered up the Canaanites, and they utterly destroyed them and their cities. So the name of that place was called *Hormah.

The Bronze Serpent

4Then they journeyed from Mount Hor by the Way of the Red Sea, to [a]go around the land of Edom; and the soul of the people became very *discouraged on the way. 5And the people [a]spoke against God and against Moses: “Why have you brought us up out of Egypt to die in the wilderness? For *there is* no food and no water, and our soul *loathes this worthless bread.” 6So [a]the LORD sent [b]fiery serpents among the people, and they bit the people; and many of the people of Israel died.

7 [a]Therefore the people came to Moses, and said, “We have [b]sinned, for we have spoken against the LORD and against you; [c]pray to the LORD that He take away the serpents from us.” So Moses prayed for the people.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Post-Deliverance Attack: Temptation

You may find yourself tempted with old habits or behavior that do not fit in with the Christian life. The devil has a way of making the old times seem rosy to us, just as he tricked the Israelites in the desert into missing the “leeks and onions” that they had left behind in Egypt.

Of course Satan forgot to mention the misery and slavery that went along with those tasty onions. Do not become nostalgic about the past, but keep your eyes on the future as you prepare to enter God's promised land. Jesus

Christ did not come to take good things away from you but rather to bring you real life. “I have come that they may have life… more abundantly” (John 10:10). Put your trust in Jesus Christ, and you will have the desire of your heart (Ps. 37:4).[*]

---

[*] Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 203.

8Then the LORD said to Moses, [a]“Make a [b]fiery *serpent,* and set it on a pole; and it shall be that everyone who is bitten, when he looks at it, shall live.” 9So [a]Moses made a bronze serpent, and put it on a pole; and so it was, if a serpent had bitten anyone, when he looked at the bronze serpent, he lived.

From Mount Hor to Moab

10Now the children of Israel moved on and [a]camped in Oboth. 11And they journeyed from Oboth and camped at [*]Ije Abarim, in the wilderness which *is* east of Moab, toward the sunrise. 12[a]From there they moved and camped in the Valley of Zered. 13From there they moved and camped on the other side of the Arnon, which *is* in the wilderness that extends from the border of the Amorites; for [a]the

Arnon *is* the border of Moab, between Moab and the Amorites. 14Therefore it is said in the Book of the Wars of the LORD:

[*]“Waheb in Suphah,

The brooks of the Arnon,

15And the slope of the brooks

That reaches to the dwelling of [a]Ar,

And lies on the border of Moab.”

16From there *they went* [a]to Beer, which *is* the well where the LORD said to Moses, “Gather the people

together, and I will give them water.”
17Then Israel sang this song:

[a]“Spring
up,
O
well!

All
of
you
sing
to it
—

18The
well
the
leaders
sank,

Dug
by
the
nation’s
nobles,

By
the
[a]lawgiver,
with
their
staves.”

And from the wilderness *they went* to Mattanah, 19from Mattanah to Nahaliel, from Nahaliel to Bamoth, 20and from Bamoth, *in* the valley that *is* in the *country of Moab, to the top of Pisgah which looks [a]down on the *wasteland.

King Sihon Defeated

21Then [a]Israel sent messengers to Sihon king of the Amorites, saying, 22[a]“Let me pass through your land. We will not turn aside into fields or vineyards; we will not drink water from wells. We will go by the King’s Highway until we have passed through your territory.” 23[a]But Sihon would not allow Israel to pass through his territory. So Sihon gathered all his people together and [*]went out against Israel in the wilderness, [b]and he came to Jahaz and fought against Israel. 24Then [a]Israel defeated him with the edge of the sword, and took possession of his land from the Arnon to the Jabbok, as far as the people of Ammon; for the border of the people of Ammon *was* fortified. 25So Israel took all these cities, and Israel [a]dwelt in all the cities of the Amorites, in Heshbon and in all its villages. 26For Heshbon *was* the city of Sihon king of the Amorites, who had fought against the former king of Moab, and had taken all his land from his hand as far as the Arnon. 27Therefore those who speak in [*]proverbs say:

“Come
to
Heshbon,
let it
be
built;

Let
the

city of Sihon be repaired.

28“For [a]fire went out from Heshbon,

A flame from the city of Sihon;

It consumed [b]Ar of Moab,

The lords of the [c]heights of the Arnon.

29Woe to you, [a]Moab!

You have perished, O people of [b]Chemosh!

He has given his [c]sons as fugitives,

And his [d]daughters into captivity,

To Sihon king of the Amorites.

[30]“But we have shot at them;

Heshbon has perished [a]as far

as
Dibon.

Then
we
laid
waste
as
far
as
Nophah,

Which
reaches
to
[b]Medeba."

31Thus Israel dwelt in the land of the Amorites. 32Then Moses sent to [*]spy out [a]Jazer; and they took its villages and drove out the Amorites who *were* there.

King Og Defeated

33 1[a]And they turned and went up by the way to [b]Bashan. So Og king of Bashan went out against them, he and all his people, to battle [c]at Edrei. 34Then the LORD said to Moses, [a]"Do not fear him, for I have [*]delivered him into your hand, with all his people and his land; and [b]you shall do to him as you did to Sihon king of the Amorites, who dwelt at Heshbon." 35[a]So they defeated him, his sons, and all his people, until there was no survivor left him; and they took possession of his land.

Numbers 22

Balak Sends for Balaam

1Then [a]the children of Israel moved, and camped in the plains of Moab on the side of the Jordan *across from* Jericho.

2Now [a]Balak the son of Zippor saw all that Israel had done to the Amorites. 3And [a]Moab was exceedingly afraid of the people because they *were* many, and Moab was sick with dread because of the children of Israel. 4So Moab said to [a]the elders of Midian, “Now this company will [*]lick up everything around us, as an ox licks up the grass of the field.” And Balak the son of Zippor *was* king of the Moabites at that time. 5Then [a]he sent messengers to Balaam the son of Beor at [b]Pethor, which *is* near [*]the River in the land of [*]the sons of his people, to call him, saying: “Look, a people has come from Egypt. See, they cover the face of the earth, and are settling next to me! 6[a]Therefore please come at once, [b]curse this people for me, for they *are* too mighty for me. Perhaps I shall be able to defeat them and drive them out of the land, for I know that he whom you bless *is* blessed, and he whom you curse is cursed.”

7So the elders of Moab and the elders of Midian departed with the [a]diviner’s fee in their hand, and they came to Balaam and spoke to him the words of Balak. 8And he said to them, [a]“Lodge here tonight, and I will bring back word to you, as the LORD speaks to me.” So the princes of Moab stayed with Balaam.

9[a]Then God came to Balaam and

said, “Who *are* these men with you?”

10So Balaam said to God, “Balak the son of Zippor, king of Moab, has sent to me, *saying,* 11‘Look, a people has come out of Egypt, and they cover the face of the earth. Come now, curse them for me; perhaps I shall be able to overpower them and drive them out.’ ”

12And God said to Balaam, “You shall not go with them; you shall not curse the people, for [a]they *are* blessed.”

13So Balaam rose in the morning and said to the princes of Balak, “Go back to your land, for the LORD has refused to give me permission to go with you.”

14And the princes of Moab rose and went to Balak, and said, “Balaam refuses to come with us.”

15Then Balak again sent princes, more numerous and more [*]honorable than they. 16And they came to Balaam and said to him, “Thus says Balak the son of Zippor: ‘Please let nothing hinder you from coming to me; 17for I will certainly [a]honor you greatly, and I will do whatever you say to me. [b]Therefore please come, curse this people for me.’ ”

18Then Balaam answered and said to the servants of Balak, [a]“Though Balak were to give me his house full of silver and gold, [b]I could not go beyond the word of the LORD my God, to do less or more. 19Now therefore, please, you also [a]stay here tonight, that I may know what more the LORD will say to me.”

20[a]And God came to Balaam at night and said to him, “If the men come to call you, rise *and* go with them; but [b]only the word which I speak to you—that you shall do.” 21So Balaam rose in the morning, saddled his donkey, and went with the princes of Moab.

Balaam, the Donkey, and the Angel

22Then God’s anger was aroused because he went, [a]and the Angel of the LORD took His stand in the way as an adversary against him. And he was riding on his donkey, and his two servants *were* with him. 23Now [a]the donkey saw the Angel of the LORD standing in the way with His drawn sword in His hand, and the donkey turned aside out of the way and went into the field. So Balaam struck the donkey to turn her back onto the road. 24Then the Angel of the LORD stood in a narrow path between the vineyards, *with* a wall on this side and a wall on that side. 25And when the donkey saw the Angel of the LORD, she pushed herself against the wall and crushed Balaam’s foot against the wall; so he struck her again. 26Then the Angel of the LORD went further, and stood in a narrow place where there *was* no way to turn either to the right hand or to the left. 27And when the donkey saw the Angel of the LORD, she lay down under Balaam; so Balaam’s anger was aroused, and he struck the donkey with his staff.

28Then the LORD [a]opened the mouth of the donkey, and she said to

Balaam, “What have I done to you,
that you have struck me these three
times?”

29And Balaam said to the donkey,
“Because you have [*]abused me. I wish
there were a sword in my hand, [a]for
now I would kill you!”

30[a]So the donkey said to Balaam,
“*Am* I not your donkey on which you
have ridden, ever since *I became*
yours, to this day? Was I ever
[*]disposed to do this to you?”

And he said, “No.”

31Then the LORD [a]opened Balaam’s
eyes, and he saw the Angel of the
LORD standing in the way with His
drawn sword in His hand; and he
bowed his head and fell flat on his
face. 32And the Angel of the LORD
said to him, “Why have you struck
your donkey these three times?
Behold, I have come out [*]to stand
against you, because *your* way is
[a]perverse[*] before Me. 33The donkey
saw Me and turned aside from Me
these three times. If she had not
turned aside from Me, surely I would
also have killed you by now, and let
her live.”

34And Balaam said to the Angel of
the LORD, [a]“I have sinned, for I did
not know You stood in the way
against me. Now therefore, if it
[*]displeases You, I will turn back.”

35Then the Angel of the LORD said
to Balaam, “Go with the men, [a]but
only the word that I speak to you,
that you shall speak.” So Balaam
went with the princes of Balak.

36Now when Balak heard that

Balaam was coming, [a]he went out to meet him at the city of Moab, [b]which *is* on the border at the Arnon, the boundary of the territory. [37]Then Balak said to Balaam, “Did I not earnestly send to you, calling for you? Why did you not come to me? Am I not able [a]to honor you?”

[38]And Balaam said to Balak, “Look, I have come to you! Now, have I any power at all to say anything? [a]The word that God puts in my mouth, that I must speak.” [39]So Balaam went with Balak, and they came to Kirjath Huzoth. [40]Then Balak offered oxen and sheep, and he sent *some* to Balaam and to the princes who *were* with him.

Balaam’s First Prophecy

[41]So it was, the next day, that Balak took Balaam and brought him up to the [a]high places of Baal, that from there he might observe [*]the extent of the people.

Numbers 23

[1]Then Balaam said to Balak, [a]“Build seven altars for me here, and prepare for me here seven bulls and seven rams.”

[2]And Balak did just as Balaam had spoken, and Balak and Balaam [a]offered a bull an1d a ram on *each* altar. [3]Then Balaam said to Balak, [a]“Stand by your burnt offering, and I will go; perhaps the LORD will come [b]to meet me, and whatever He shows me I will tell you.” So he went to a desolate height. [4][a]And God met Balaam, and he said to Him, “I have

prepared the seven altars, and I have offered on *each* altar a bull and a ram.”

5Then the LORD [a]put a word in Balaam’s mouth, and said, “Return to Balak, and thus you shall speak.” 6So he returned to him, and there he was, standing by his burnt offering, he and all the princes of Moab.

7And he [a]took up his [*]oracle and said:

“Balak the king of Moab has brought me from Aram,

From the mountains of the east.

[b]‘Come, curse Jacob for me,

And come, [c]denounce Israel!’

[8]“How[a] shall I curse whom God has not cursed?

And how shall I denounce *whom* the LORD has not denounced?

[9]For from the top of the rocks I see him,

And from the hills I behold him;

There! [a]A people dwelling alone,

[b]Not reckoning itself among the nations.

10“Who [a] can count the [*]dust of Jacob,

Or number one-fourth of Israel?

Let me die [b]the death of the righteous,

And let my end

be
like
his!”

11Then Balak said to Balaam, “What have you done to me? [a]I took you to curse my enemies, and look, you have blessed *them* bountifully!”

12So he answered and said, [a]“Must I not take heed to speak what the LORD has put in my mouth?”

Balaam’s Second Prophecy

13Then Balak said to him, “Please come with me to another place from which you may see them; you shall see only the outer part of them, and shall not see them all; curse them for me from there.” 14So he brought him to the field of Zophim, to the top of Pisgah, [a]and built seven altars, and offered a bull and a ram on *each* altar.

15And he said to Balak, “Stand here by your burnt offering while I [*]meet *the LORD* over there.”

16Then the LORD met Balaam, and [a]put a word in his mouth, and said, “Go back to Balak, and thus you shall speak.” 17So he came to him, and there he was, standing by his burnt offering, and the princes of Moab were with him. And Balak said to him, “What has the LORD spoken?”

18Then he took up his oracle and said:

[a]“Rise
up,
Balak,
and

hear!

Listen
to
me,
son
of
Zippor!

19“God
[a]*is*
not a
man,
that
He
should
lie,

Nor
a son
of
man,
that
He
should
repent.

Has
He
[b]said,
and
will
He
not
do?

Or
has
He
spoken,
and

will
He
not
make
it
good?

[20]Behold,
I
have
received
a
command
to
bless;

[a]He
has
blessed,
and[1]
I
cannot
reverse
it.

[21]“He
[a] has
not
observed
iniquity
in
Jacob,

Nor
has
He
seen
[*]wickedness
in
Israel.

The LORD his God *is* with him,

[b]And the shout of a King *is* among them.

22 [a]God brings them out of Egypt;

He has [b]strength like a wild ox.

23 “For *there* *is* no [*]sorcery against Jacob,

Nor any

[*]divination against Israel.

It now must be said of Jacob

And of Israel, ‘Oh, [a]what God has done!’

24Look, a people rises [a]like a lioness,

And lifts itself up like a lion;

[b]It shall not lie

down until it devours the prey,

And drinks the blood of the slain.”

25Then Balak said to Balaam, “Neither curse them at all, nor bless them at all!”

26So Balaam answered and said to Balak, “Did I not tell you, saying, [a]‘All that the LORD speaks, that I must do’?”

Balaam’s Third Prophecy

27Then Balak said to Balaam, “Please come, I will take you to another place; perhaps it will please God that you may curse them for me from there.” 28So Balak took Balaam to the top of Peor, that [a]overlooks the *wasteland. 29Then Balaam said to Balak, “Build for me here seven altars, and prepare for me here seven bulls and seven rams.” 30And Balak did as Balaam had said, and offered a bull and a ram on *every* altar.

Numbers 24

1Now when Balaam saw that it pleased the LORD to bless Israel, he did not go as at [a]other times, to seek to use [*]sorcery, but he set his face toward the wilderness. [2]And Balaam raised his eyes, and saw Israel [a]encamped according to their tribes; and [b]the Spirit of God came upon him.

[3][a]Then he took up his oracle and said:

“The utterance of Balaam the son of Beor,

The utterance of the man whose eyes are opened,

[4]The utterance of him who hears the words of God,

Who sees

the vision of the Almighty,

Who [a]falls down, with eyes wide open:

5“How lovely are your tents, O Jacob!

Your dwellings, O Israel!

6Like valleys that stretch out,

[a]Like gardens by the riverside,

Like aloes

[b]planted by the LORD,

Like cedars beside the waters.

7He shall pour water from his buckets,

And his seed *shall be* [a]in many waters.

Num. 24:5–7

He will pour out His Spirit over me like

gushing
buckets
of
water,
and
my
seed
will
be
supplied
with
all
they
need.

“His
king
shall
be
higher
than
[b]Agag,

And
his
[c]kingdom
shall
be
exalted.

8“God
[a]
brings
him
out
of
Egypt;

He
has
strength

like
a
wild
ox;

He
shall
[b]consume
the
nations,
his
enemies;

He
shall
[c]break
their
bones

And
[d]pierce
them
with
his
arrows.

9 ‘He
[a]
bows
down,
he
lies
down
as a
lion;

And
as a
lion,
who
shall

rouse
him?’

[b]“Blessed
is he
who
blesses
you,

And
cursed
is he
who
curses
you.”

10Then Balak’s anger was aroused against Balaam, and he [a]struck his hands together; and Balak said to Balaam, [b]“I called you to curse my enemies, and look, you have bountifully blessed *them* these three times! 11Now therefore, flee to your place. [a]I said I would greatly honor you, but in fact, the LORD has kept you back from honor.”

12So Balaam said to Balak, “Did I not also speak to your messengers whom you sent to me, saying, 13‘If Balak were to give me his house full of silver and gold, I could not go beyond the word of the LORD, to do good or bad of my own will. What the LORD says, that I must speak’? 14And now, indeed, I am going to my people. Come, [a]I will advise you what this people will do to your people in the [b]latter days.”

Balaam’s Fourth Prophecy

15So he took up his oracle and said:

“The
utterance
of
Balaam
the
son
of
Beor,

And
the
utterance
of
the
man
whose
eyes
are
opened;

[16]The
utterance
of
him
who
hears
the
words
of
God,

And
has
the
knowledge
of
the
Most
High,

Who

sees the vision of the Almighty,

Who falls down, with eyes wide open:

17“I [a] see Him, but not now;

I behold Him, but not near;

[b]A Star shall come out of Jacob;

[c]A Scepter shall rise

out of Israel,

And [*]batter the brow of Moab,

And destroy all the sons of [*]tumult.

18 “And [a]Edom shall be a possession;

Seir also, his enemies, shall be a possession,

While Israel does [*]valiantly.

19 [a]Out of Jacob

One
*shall
have
dominion,

And
destroy
the
remains
of
the
city.”

20Then he looked on Amalek, and he took up his oracle and said:

“Amalek
was
first
among
the
nations,

But
shall
be
last
until
he
perishes.”

121Then he looked on the Kenites, and he took up his oracle and said:

“Firm
is
your
dwelling
place,

And

your
nest
is set
in
the
rock;

[22]Nevertheless
Kain
shall
be
burned.

How
long
until
Asshur
carries
you
away
captive?”

[23]Then he took up his oracle and said:

“Alas!
Who
shall
live
when
God
does
this?

[24]But
ships
shall
come
from
the
coasts

of
[a]Cyprus,[*]

And
they
shall
afflict
Asshur
and
afflict
[b]Eber,

And
so
shall
[*]*Amalek,*
until
he
perishes.”

25So Balaam rose and departed and [a]returned to his place; Balak also went his way.

Numbers 25

Israel’s Harlotry in Moab

1Now Israel remained in [a]Acacia Grove,[*] and the [b]people began to commit harlotry with the women of Moab. 2[a]They invited the people to [b]the sacrifices of their gods, and the people ate and [c]bowed down to their gods. 3So Israel was joined to Baal of Peor, and [a]the anger of the LORD was aroused against Israel.

4Then the LORD said to Moses, [a]“Take all the leaders of the people and hang the offenders before the LORD, out in the sun, [b]that the fierce anger of the LORD may turn away from Israel.”

5So Moses said to [a]the judges of Israel, [b]“Every one of you kill his men who were joined to Baal of Peor.”

6And indeed, one of the children of Israel came and presented to his brethren a Midianite woman in the sight of Moses and in the sight of all the congregation of the children of Israel, [a]who *were* weeping at the door of the tabernacle of meeting. 7Now [a]when Phinehas [b]the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, saw *it,* he rose from among the congregation and took a javelin in his hand; 8and he went after the man of Israel into the tent and thrust both of them through, the man of Israel, and the woman through her body. So [a]the plague was [b]stopped among the children of Israel. 9And [a]those who died in the plague were twenty-four thousand.

10Then the LORD spoke to Moses, saying: 11[a]“Phinehas the son of Eleazar, the son of Aaron the priest, has turned back My wrath from the children of Israel, because he was zealous with My zeal among them, so that I did not consume the children of Israel in [b]My zeal. 12Therefore say, [a]‘Behold, I give to him [b]My covenant of peace; 13and it shall be to him and [a]his descendants after him a covenant of [b]an everlasting priesthood, because he was [c]zealous for his God, and [d]made [*]atonement for the children of Israel.’ ”

14Now the name of the Israelite who was killed, who was killed with the Midianite woman, *was* Zimri the son of Salu, a leader of a father's house among the Simeonites. 15And the name of the Midianite woman who was killed *was* Cozbi the daughter of [a]Zur; he *was* head of the people of a father's house in Midian.

16Then the LORD spoke to Moses, saying: 17[a]"Harass the Midianites, and [*]attack them; 18for they harassed you with their [a]schemes[*] by which they seduced you in the matter of Peor and in the matter of Cozbi, the daughter of a leader of Midian, their sister, who was killed in the day of the plague because of Peor."

Numbers 26

The Second Census of Israel

1And it came to pass, after the [a]plague, that the LORD spoke to Moses and Eleazar the son of Aaron the priest, saying: 2[a]"Take a census of all the congregation of the children of Israel [b]from twenty years old and above, by their fathers' houses, all who are able to go to war in Israel." 3So Moses and Eleazar the priest spoke with them [a]in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho, saying: 4"*Take a census of the people* from twenty years old and above, just as the LORD [a]commanded Moses and the children of Israel who came out of the land of Egypt."

5[a]Reuben *was* the firstborn of Israel. The children of Reuben *were: of* Hanoch, the family of the Hanochites; *of* Pallu, the family of the Palluites; 6*of* Hezron, the family of the

Hezronites; *of* Carmi, the family of the Carmites. 7These *are* the families of the Reubenites: those who were numbered of them were forty-three thousand seven hundred and thirty. 8And the son of Pallu *was* Eliab. 9The sons of Eliab *were* Nemuel, Dathan, and Abiram. These *are* the Dathan and Abiram, [a]representatives of the congregation, who contended against Moses and Aaron in the company of Korah, when they contended against the LORD; 10[a]and the earth opened its mouth and swallowed them up together with Korah when that company died, when the fire devoured two hundred and fifty men; [b][1]and they became a sign. 11Nevertheless [a]the children of Korah did not die.

12The sons of Simeon according to their families *were: of* *Nemuel, the family of the Nemuelites; *of* Jamin, the family of the Jaminites; *of* *Jachin, the family of the Jachinites; 13*of* *Zerah, the family of the Zarhites; *of* Shaul, the family of the Shaulites. 14These *are* the families of the Simeonites: twenty-two thousand two hundred.

15The sons of Gad according to their families *were: of* *Zephon, the family of the Zephonites; *of* Haggi, the family of the Haggites; *of* Shuni, the family of the Shunites; 16*of* *Ozni, the family of the Oznites; *of* Eri, the family of the Erites; 17*of* *Arod, the family of the Arodites; *of* Areli, the family of the Arelites. 18These *are* the families of the sons of Gad according to those who were numbered of them: forty thousand five hundred.

19[a]The sons of Judah *were* Er and Onan; and Er and Onan died in the land of Canaan. 20And [a]the sons of Judah according to their families were: *of* Shelah, the family of the Shelanites; *of* Perez, the family of the Parzites; *of* Zerah, the family of the Zarhites. 21And the sons of Perez were: *of* Hezron, the family of the Hezronites; *of* Hamul, the family of the Hamulites. 22These *are* the families of Judah according to those who were numbered of them: seventy-six thousand five hundred.

23The sons of Issachar according to their families *were: of* Tola, the family of the Tolaites; of *Puah, the family of the *Punites; 24of *Jashub, the family of the Jashubites; of Shimron, the family of the Shimronites. 25These *are* the families of Issachar according to those who were numbered of them: sixty-four thousand three hundred.

26[a]The sons of Zebulun according to their families *were:* of Sered, the family of the Sardites; of Elon, the family of the Elonites; of Jahleel, the family of the Jahleelites. 27These *are* the families of the Zebulunites according to those who were numbered of them: sixty thousand five hundred.

28[a]The sons of Joseph according to their families, by Manasseh and Ephraim, *were:* 29The sons of [a]Manasseh: of [b]Machir, the family of the Machirites; and Machir begot Gilead; of Gilead, the family of the

Gileadites. 30These *are* the sons of Gilead: *of* *Jeezer, the family of the Jeezerites; of Helek, the family of the Helekites; 31*of* Asriel, the family of the Asrielites; *of* Shechem, the family of the Shechemites; 32*of* Shemida, the family of the Shemidaites; *of* Hepher, the family of the Hepherites. 33Now [a]Zelophehad the son of Hepher had no sons, but daughters; and the names of the daughters of Zelophehad *were* Mahlah, Noah, Hoglah, Milcah, and Tirzah. 34These *are* the families of Manasseh; and those who were numbered of them *were* fifty-two thousand seven hundred.

35These *are* the sons of Ephraim according to their families: of Shuthelah, the family of the Shuthalhites; of *Becher, the family of the Bachrites; of Tahan, the family of the Tahanites. 36And these *are* the sons of Shuthelah: of Eran, the family of the Eranites. 37These *are* the families of the sons of Ephraim according to those who were numbered of them: thirty-two thousand five hundred.

These *are* the sons of Joseph according to their families.

38[a]The sons of Benjamin according to their families were: of Bela, the family of the Belaites; of Ashbel, the family of the Ashbelites; of [b]Ahiram, the family of the Ahiramites; 39of [a]Shupham,* the family of the Shuphamites; of *Hupham, the family of the Huphamites. 40And the sons of Bela were *Ard and Naaman: [a]*of Ard,* the family of the Ardites; of Naaman, the family of the Naamites. 41These *are* the sons of Benjamin according to their families; and those who were numbered of them *were* forty-five thousand six hundred.

42These *are* the sons of Dan according to their families: of *Shuham, the family of the Shuhamites. These *are* the families of Dan according to their families. 43All the families of the Shuhamites, according to those who were numbered of them, *were* sixty-four thousand four hundred.

44[a]The sons of Asher according to their families *were:* of Jimna, the family of the Jimnites; of Jesui, the family of the Jesuites; of Beriah, the family of the Beriites. 45Of the sons of Beriah: of Heber, the family of the Heberites; of Malchiel, the family of the Malchielites. 46And the name of the daughter of Asher *was* Serah. 47These *are* the families of the sons of Asher according to those who were numbered of them: fifty-three thousand four hundred.

48[a]The sons of Naphtali according to their families *were:* of *Jahzeel, the family of the Jahzeelites; of Guni, the family of the Gunites; 49of Jezer, the family of the Jezerites; of [a]Shillem, the family of the Shillemites. 50These *are* the families of Naphtali according to their families; and those who were numbered of them *were* forty-five thousand four hundred.

51[a]These *are* those who were numbered of the children of Israel:

six hundred and one thousand seven hundred and thirty.

52Then the LORD spoke to Moses, saying: 53[a]“To these the land shall be [b]divided as an inheritance, according to the number of names. 54[a]To a large *tribe* you shall give a larger inheritance, and to a small *tribe* you shall give a smaller inheritan1ce. Each shall be given its inheritance according to those who were numbered of them. 55But the land shall be [a]divided by lot; they shall inherit according to the names of the tribes of their fathers. 56According to the lot their inheritance shall be divided between the larger and the smaller.”

57[a]And these *are* those who were numbered of the Levites according to their families: of Gershon, the family of the Gershonites; of Kohath, the family of the Kohathites; of Merari, the family of the Merarites. 58These *are* the families of the Levites: the family of the Libnites, the family of the Hebronites, the family of the Mahlites, the family of the Mushites, and the family of the Korathites. And Kohath begot Amram. 59The name of Amram’s wife *was* [a]Jochebed the daughter of Levi, who was born to Levi in Egypt; and to Amram she bore Aaron and Moses and their sister Miriam. 60[a]To Aaron were born Nadab and Abihu, Eleazar and Ithamar. 61And [a]Nadab and Abihu died when they offered profane fire before the LORD.

62[a]Now those who were numbered

of them were twenty-three thousand, every male from a month old and above; [b]for they were not numbered among the other children of Israel, because there was [c]no inheritance given to them among the children of Israel.

63These *are* those who were numbered by Moses and Eleazar the priest, who numbered the children of Israel [a]in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho. 64[a]But among these there was not a man of those who were numbered by Moses and Aaron the priest when they numbered the children of Israel in the [b]Wilderness of Sinai. 65For the LORD had said of them, “They [a]shall surely die in the wilderness.” So there was not left a man of them, [b]except Caleb the son of Jephunneh and Joshua the son of Nun.

Numbers 27

Inheritance Laws

1Then came the daughters of [a]Zelophehad the son of Hepher, the son of Gilead, the son of Machir, the son of Manasseh, from the families of Manasseh the son of Joseph; and these *were* the names of his daughters: Mahlah, Noah, Hoglah, Milcah, and Tirzah. 2And they stood before Moses, before Eleazar the priest, and before the leaders and all the congregation, *by* the doorway of the tabernacle of meeting, saying: 3“Our father [a]died in the wilderness; but he was not in the company of those who gathered together against the LORD, [b]in company with Korah, but he died in his own sin; and he had no sons. [4]Why should the name of our father be [a]removed[*] from among his family because he had no son? [b]Give us a [*]possession among our father's brothers."

[5]So Moses [a]brought their case before the LORD.

[6]And the LORD spoke to Moses, saying: [7]"The daughters of Zelophehad speak *what is* right; [a]you shall surely give them a possession of inheritance among their father's brothers, and cause the inheritance of their father to pass to them. [8]And you shall speak to the children of Israel, saying: 'If a man dies and has no son, then you shall cause his inheritance to pass to his daughter. [9]If he has no daughter, then you shall give his inheritance to his brothers. [10]If he has no brothers, then you shall give his inheritance to his father's brothers. [11]And if his father has no brothers, then you shall give his inheritance to the relative closest to him in his family, and he shall possess it.' " And it shall be to the children of Israel [a]a statute of judgment, just as the LORD commanded Moses.

Joshua the Next Leader of Israel

[12]Now the LORD said to Moses: [a]"Go up into this Mount Abarim, and see the land which I have given to the children of Israel. [13]And when you have seen it, you also [a]shall [*]be gathered to your people, as Aaron your brother was gathered. [14]For in the Wilderness of Zin, during the

strife of the congregation, you
[a]rebelled against My command to
hallow Me at the waters before their
eyes." (These *are* the [b]waters of
Meribah, at Kadesh in the Wilderness
of Zin.)

15Then Moses spoke to the LORD,
saying: 16"Let the LORD, [a]the God of
the spirits of all flesh, set a man over
the congregation, 17[a]who may go out
before them and go in before them,
who may lead them out and bring
them in, that the congregation of the
LORD may not be [b]like sheep which
have no shepherd."

18And the LORD said to Moses:
"Take Joshua the son of Nun with
you, a man [a]in whom *is* the Spirit,
and [b]lay your hand on him; 19set him
before Eleazar the priest and before
all the congregation, and [a]inaugurate[*]
him in their sight. 20And [a]you shall
give *some* of your authority to him,
that all the congregation of the
children of Israel [b]may be obedient.
21[a]He shall stand before Eleazar the
priest, who shall inquire before the
LORD for him [b]by the judgment of the
Urim. [c]At his word they shall go out,
and at his word they shall come in,
he and all the children of Israel with
him—all the congregation."

22So Moses did as the LORD
commanded him. He took Joshua and
set him before Eleazar the priest and
before all the congregation. 23And he
laid his hands on him [a]and
[*]inaugurated him, just as the LORD
commanded by the hand of Moses.

Numbers 28

Daily Offerings

1Now the LORD spoke to Moses, saying, 2“Command the children of Israel, and say to them, ‘My offering, [a]My food for My offerings made by fire as a sweet aroma to Me, you shall be careful to offer to Me at their appointed time.’

3“And you shall say to them, [a]‘This *is* the offering made by fire which you shall offer to the LORD: two male lambs in their first year without blemish, day by day, as a regular burnt offering. 4The one lamb you shall offer in the morning, the other lamb you shall offer in the evening, 5and [a]one-tenth of an ephah of fine flour as a [b]grain offering mixed with one-fourth of a hin of pressed oil. 6*It is* [a]a regular burnt offering which was ordained at Mount Sinai for a sweet aroma, an offering made by fire to the LORD. 7And its drink offering *shall be* one-fourth of a hin for each lamb; [a]in a holy *place* you shall pour out the drink to the LORD as an offering. 8The other lamb you shall offer in the evening; as the morning grain offering and its drink offering, you shall offer *it* as an offering made by fire, a [*]sweet aroma to the LORD.

Meaning of Wiles

In the Book of Numbers it mentions the matter of Peor (Num. 25:18). This matter referred to Baal Peor, known as the “lord of the opening.” This is the idol that stopped twenty-four thousand of the children of Israel from entering into the Promised Land because they worshiped this idol. It was more than a lack of faith — they were in idolatry! This scripture also shows that the Midianites vexed the people of God with their wiles.

The Hebrew word for *wiles* is *nekel*. It means: “treachery, conspiracy, beguilement, subtly, deceit, trickery, deception.” Spirits that came in the form of idols tricked the people of God into idolatry. Most idolatry is rooted in fetishism. A fetish is an object with a demon attached to it.

To be subject to the wiles of the enemy means to be deceiv1ed. Few people willingly worship the devil. His methods blind their minds into making them think that they are doing anything but worshiping. Worship is what the warfare is all about. God desires our worship, but the devil wants to be worshiped as well.[*]

---

[*] Kimberly Daniels, *Give It Back!*, 73–74.

Sabbath Offerings

9‘And on the Sabbath day two lambs in their first year, without blemish, and two-tenths *of an ephah* of fine flour as a grain offering, mixed with oil, with its drink offering —10*this is* [a]the burnt offering for every Sabbath, besides the regular burnt offering with its drink offering.

Monthly Offerings

11[a]‘At the beginnings of your months you shall present a burnt offering to the LORD: two young bulls, one ram, and seven lambs in their first year, without blemish; 12[a]three-tenths *of an ephah* of fine flour as a grain offering, mixed with oil, for each bull; two-tenths *of an ephah* of fine flour as a grain offering, mixed with oil, for the one ram; 13and one-tenth *of an ephah* of fine flour, mixed with oil, as a grain offering for each lamb, as a burnt offering of sweet aroma, an offering made by fire to the LORD. 14Their drink offering shall be half a hin of wine for a bull, one-third of a hin for a ram, and one-fourth of a hin for a lamb; this *is* the burnt offering for each month throughout the months of the year. 15Also [a]one kid of the goats as a sin offering to the LORD shall be offered, besides the regular burnt offering and its drink offering.

Offerings at Passover

16[a]‘On the fourteenth day of the first month *is* the Passover of the LORD. 17[a]And on the fifteenth day of this month *is* the feast; unleavened bread shall be eaten for seven days. 18On the [a]first day *you shall have* a holy *convocation. You shall do no *customary work. 19And you shall present an offering made by fire as a burnt offering to the LORD: two young bulls, one ram, and seven lambs in their first year. [a]Be sure they are without blemish. 20Their grain offering shall be of fine flour mixed with oil: three-tenths *of an ephah* you shall offer for a bull, and two-tenths for a ram; 21you shall offer one-tenth *of an ephah* for each of the seven lambs; 22also [a]one goat *as* a sin offering, to make *atonement for you. 23You shall offer these besides the burnt offering of the morning, which *is* for a regular burnt offering. 24In this manner you shall offer the food of the offering made by fire daily for seven days, as a sweet aroma to the LORD; it shall be offered besides the regular burnt offering and its drink offering. 25And [a]on the seventh day you shall have a holy convocation. You shall do no customary work.

Offerings at the Feast of Weeks

26‘Also [a]on the day of the firstfruits, when you bring a new grain offering to the LORD at your *Feast of* Weeks, you shall have a holy convocation. You shall do no customary work. 27You shall present a burnt offering as a sweet aroma to the LORD: [a]two young bulls, one ram, and seven lambs in their first year, 28with their grain offering of fine flour mixed with oil: three-tenths *of an ephah* for each bull, two-tenths for the one ram, 29and one-tenth for each of the seven lambs; 30*also* one kid of the goats, to make [*]atonement for you. 31[a]Be sure they are without [*]blemish. You shall present *them* with their drink offerings, besides the regular burnt offering with its grain offering.

Numbers 29

Offerings at the Feast of Trumpets

1‘And in the seventh month, on the first [1]*day* of the month, you shall have a holy convocation. You shall do no customary work. For you [a]it is a day of blowing the trumpets. 2You shall offer a burnt offering as a sweet aroma to the LORD: one young bull, one ram, *and* seven lambs in their first year, without blemish. 3Their grain offering *shall be* fine flour mixed with oil: three-tenths *of an ephah* for the bull, two-tenths for the ram, 4and one-tenth for each of the seven lambs; 5also one kid of the goats *as* a sin offering, to make atonement for you; 6besides [a]the burnt offering with its grain offering for the New Moon, [b]the regular burnt offering with its grain offering, and their drink offerings, [c]according to their ordinance, as a sweet aroma, an offering made by fire to the LORD.

Offerings on the Day of Atonement

7[a]‘On the tenth *day* of this seventh month you shall have a holy convocation. You shall [b]afflict your souls; you shall not do any work. 8You shall present a burnt offering to the LORD *as* a sweet aroma: one young bull, one ram, *and* seven lambs in their first year. [a]Be sure they are without blemish. 9Their grain offering *shall be of* fine flour mixed with oil: three-tenths *of an ephah* for the bull, two-tenths for the one ram, 10and one-tenth for each of the seven lambs; 11also one kid of the goats *as* a sin offering, besides [a]the sin offering for atonement, the regular burnt offering with its grain offering, and their drink offerings.

Offerings at the Feast of Tabernacles

12[a]‘On the fifteenth day of the seventh month you shall have a holy convocation. You shall do no customary work, and you shall keep a feast to the LORD seven days. 13[a]You shall present a burnt offering, an offering made by fire as a sweet aroma to the LORD: thirteen young bulls, two rams, *and* fourteen lambs in their first year. They shall be without blemish. 14Their grain offering *shall be of* [1]fine flour mixed with oil: three-tenths *of an ephah* for each of the thirteen bulls, two-tenths for each of the two rams, 15and one-tenth for each of the fourteen lambs; 16also one kid of the goats *as* a sin offering, besides the regular burnt offering, its grain offering, and its drink offering.

17‘On the [a]second day *present* twelve young bulls, two rams, fourteen lambs in their first year without blemish, 18and their grain offering and their drink offerings for the bulls, for the rams, and for the lambs, by their number, [a]according to the ordinance; [19]also one kid of the goats *as* a sin offering, besides the regular burnt offering with its grain offering, and their drink offerings.

[20]‘On the third day *present* eleven bulls, two rams, fourteen lambs in their first year without blemish, [21]and their grain offering and their drink offerings for the bulls, for the rams, and for the lambs, by their number, [a]according to the ordinance; [22]also one goat *as* a sin offering, besides the regular burnt offering, its grain offering, and its drink offering.

[23]‘On the fourth day *present* ten bulls, two rams, *and* fourteen lambs in their first year, without blemish, [24]and their grain offering and their drink offerings for the bulls, for the rams, and for the lambs, by their number, according to the ordinance; [25]also one kid of the goats *as* a sin offering, besides the regular burnt offering, its grain offering, and its drink offering.

[26]‘On the fifth day *present* nine bulls, two rams, *and* fourteen lambs in their first year without blemish, [27]and their grain offering and their drink offerings for the bulls, for the rams, and for the lambs, by their number, according to the ordinance; [28]also one goat *as* a sin offering, besides the regular burnt offering, its grain offering, and its drink offering.

[29]‘On the sixth day *present* eight bulls, two rams, *and* fourteen lambs in their first year without blemish, [30]and their grain offering and their drink offerings for the bulls, for the

rams, and for the lambs, by their
number, according to the ordinance;
[31]also one goat *as* a sin offering,
besides the regular burnt offering, its
grain offering, and its drink offering.

[32]‘On the seventh day *present* seven
bulls, two rams, *and* fourteen lambs
in their first year without blemish,
[33]and their grain offering and t1heir
drink offerings for the bulls, for the
rams, and for the lambs, by their
number, according to the ordinance;
[34]also one goat *as* a sin offering,
besides the regular burnt offering, its
grain offering, and its drink offering.

[35]‘On the eighth day you shall have
a [a]sacred[*] assembly. You shall do no
customary work. [36]You shall present a
burnt offering, an offering made by
fire as a sweet aroma to the LORD:
one bull, one ram, seven lambs in
their first year without blemish, [37]and
their grain offering and their drink
offerings for the bull, for the ram,
and for the lambs, by their number,
according to the ordinance; [38]also one
goat *as* a sin offering, besides the
regular burnt offering, its grain
offering, and its drink offering.

[39]‘These you shall present to the
LORD at [a]your appointed feasts
(besides your [b]vowed offerings and
your freewill offerings) as your burnt
offerings and your grain offerings, as
your drink offerings and your peace
offerings.’ ”

[40]So Moses told the children of
Israel everything, just as the LORD
commanded Moses.

Numbers 30

The Law Concerning Vows

1Then Moses spoke to [a]the heads of the tribes concerning the children of Israel, saying, “This *is* the thing which the LORD has commanded: 2[a]If a man makes a vow to the LORD, or [b]swears an oath to bind himself by some agreement, he shall not break his word; he shall [c]do according to all that proceeds out of his mouth.

3“Or if a woman makes a vow to the LORD, and binds *herself* by some agreement while in her father’s house in her youth, 4and her father hears her vow and the agreement by which she has bound herself, and her father [*]holds his peace, then all her vows shall stand, and every agreement with which she has bound herself shall stand. 5But if her father overrules her on the day that he hears, then none of her vows nor her agreements by which she has bound herself shall stand; and the LORD will release her, because her father overruled her.

6“If indeed she takes a husband, while bound by her vows or by a rash utterance from her lips by which she bound herself, 7and her husband hears *it,* and makes no response to her on the day that he hears, then her vows shall stand, and her agreements by which she bound herself shall stand. 8But if her husband [a]overrules her on the day that he hears *it,* he shall make void her vow which she took and what she uttered with her lips, by which she bound herself, and the LORD will release her.

9“Also any vow of a widow or a divorced woman, by which she has bound herself, shall stand against her.

10“If she vowed in her husband’s house, or bound herself by an agreement with an oath, 11and her husband heard *it,* and made no response to her *and* did not overrule her, then all her vows shall stand, and every agreement by which she bound herself shall stand. 12But if her husband truly made them void on the day he heard *them,* then whatever proceeded from her lips concerning her vows or concerning the agreement binding her, it shall not stand; her husband has made them *void, and the LORD will release her. 13Every vow and every binding oath to afflict her soul, her husband may confirm it, or her husband may make it void. 14Now if her husband makes no response whatever to her from day to day, then he confirms all her vows or all the agreements that bind her; he confirms them, because he made no response to her on the day that he heard *them.* 15But if he does make them void after he has heard *them,* then he shall bear her guilt.”

16These *are* the statutes which the LORD commanded Moses, between a man and his wife, and between a father and his daughter in her youth in her father’s house.

Numbers 31

Vengeance on the Midianites

1And the LORD spoke to Moses,

saying: 2[a]“Take vengeance on the Midianites for the children of Israel. Afterward you shall [b]be gathered to your people.”

3So Moses spoke to the people, saying, “Arm some of yourselves for war, and let them go against the Midianites to take vengeance for the LORD on [a]Midian. 4A thousand from each tribe of all the tribes of Israel you shall send to the war.”

5So there were recruited from the divisions of Israel one thousand from *each* tribe, twelve thousand armed for war. 6Then Moses sent them to the war, one thousand from *each* tribe; he sent them to the war with Phinehas the son of Eleazar the priest, with the holy articles and [a]the signal trumpets in his hand. 7And they warred against the Midianites, just as the LORD commanded Moses, and [a]they killed all the [b]males. 8They killed the kings of Midian with *the rest of* those who were killed—[a]Evi, Rekem, [b]Zur, Hur, and Reba, the five kings of Midian. [c]Balaam the son of Beor they also killed with the sword.

9And the children of Israel took the women of Midian captive, with their little ones, and took as spoil all their cattle, all their flocks, and all their goods. 10They also burned with fire all the cities where they dwelt, and all their forts. 11And [a]they took all the spoil and all the booty—of man and beast.

Return from the War

12Then they brought the captives, the booty, and the spoil to Moses, to

Eleazar the priest, and to the congregation of the children of Israel, to the camp in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho. 13And Moses, Eleazar the priest, and all the leaders of the congregation, went to meet them outside the camp. 14But Moses was angry with the officers of the army, *with* the captains over thousands and captains over hundreds, who had come from the battle.

15And Moses said to them: “Have you kept [a]all the women alive? 16Look, [a]these *women* caused the children of Israel, through the [b]counsel of Balaam, to trespass against the LORD in the incident of Peor, and [c]there was a plague among the congregation of the LORD. 17Now therefore, [a]kill every male among the little ones, and kill every woman who has known a man intimately. 18But keep alive [a]for yourselves all the young girls who have not known a man intimately. 19And as for you, [a]remain outside the camp seven days; whoever has killed any person, and [b]whoever has touched any slain, purify yourselves and your captives on the third day and on the seventh day. 20Purify every garment, everything made of leather, everything woven of goats’ *hair,* and everything made of wood.”

21Then Eleazar the priest said to the men of war who had gone to the battle, “This *is* the [*]ordinance of the law which the LORD commanded Moses: 22Only the gold, the silver, the bronze, the iron, the tin, and the lead, 23everything that can endure fire, you shall put through the fire, and it shall be clean; and it shall be purified [a]with the water of purification. But all that cannot endure fire you shall put through water. 24[a]And you shall wash your clothes on the seventh day and be clean, and afterward you may come into the camp."

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Warfare Is Real

As the body of Christ, we are engaged in spiritual warfare with the powers of darkness. "For we do not wrestle against flesh and blood, but against principalities, against powers, against the rulers of the darkness of this age, against spiritual hosts of wickedness in the heavenly places" (Eph. 6:12). A great portion of Jesus' own earthly ministry was devoted to casting out demon powers, and this authority was passed on to believers in Jesus Christ. (See Mark 16:17.) Walking in the Spirit after deliverance is essential in order to keep a person free. The fact is that Satan is determined to rob us of our freedom and every other good thing we have from God. We must learn to stand our ground by means of the weapons that are at our disposal (Eph. 6:13–18).*

---

* Don

Dickerman,
*When
Pigs
Move
In*,
201.

*Num.
31:23*

**I
will
be
purified
with
the
water
of
separation.**

Division of the Plunder

25Now the LORD spoke to Moses, saying: 26“Count up the plunder that was [*]taken—of man and beast—you and Eleazar the priest and the chief fathers of the congregation; 27and [a]divide the plunder into two parts, between those who took part in the war, who went out to battle, and all the congregation. 28And levy a [*]tribute for the LORD on the men of war who went out to battle: [a]one of every five hundred of the persons, the cattle, the donkeys, and the sheep; 29take *it* from their half, and [a]give *it* to Eleazar the priest as a heave offering to the LORD. 30And from the children of Israel’s half you shall take

[a]one of every fifty, drawn from the persons, the cattle, the donkeys, and the sheep, from all the livestock, and give them to the Levites [b]who [*]keep charge of the tabernacle of the LORD.” 31So Moses and Eleazar the priest did as the LORD commanded Moses.

32The booty remaining from the plunder, which the men of war had taken, was six hundred and seventy-five thousand sheep, 33seventy-two thousand cattle, 34sixty-one thousand donkeys, 35and thirty-two thousand persons in all, of women who had not known a man intimately. 36And the half, the portion for those who had gone out to war, was in number three hundred and thirty-seven thousand five hundred sheep; 37and the LORD’s [*]tribute of the sheep was six hundred and seventy-five. 38The cattle *were* thirty-six thousand, of which the LORD’s tribute *was* seventy-two. 39The donkeys *were* thirty thousand five hundred, of which the LORD’s tribute *was* sixty-one. 40The persons *were* sixteen thousand, of which the LORD’s tribute *was* thirty-two persons.1 41So Moses gave the tribute *which was* the LORD’s heave offering to Eleazar the priest, [a]as the LORD commanded Moses.

42And from the children of Israel’s half, which Moses separated from the men who fought—43now the half belonging to the congregation was three hundred and thirty-seven thousand five hundred sheep, 44thirty-six thousand cattle, 45thirty thousand five hundred donkeys, 46and sixteen thousand persons—47and [a]from the children of Israel's half Moses took one of every fifty, drawn from man and beast, and gave them to the Levites, who kept charge of the tabernacle of the LORD, as the LORD commanded Moses.

48Then the officers who *were* over thousands of the army, the captains of thousands and captains of hundreds, came near to Moses; 49and they said to Moses, "Your servants have taken a count of the men of war who *are* under our command, and not a man of us is missing. 50Therefore we have brought an offering for the LORD, what every man found of ornaments of gold: armlets and bracelets and signet rings and earrings and necklaces, [a]to make *atonement for ourselves before the LORD." 51So Moses and Eleazar the priest received the gold from them, all the fashioned ornaments. 52And all the gold of the offering that they offered to the LORD, from the captains of thousands and captains of hundreds, was sixteen thousand seven hundred and fifty shekels. 53[a](The men of war had taken spoil, every man for himself.) 54And Moses and Eleazar the priest received the gold from the captains of thousands and of hundreds, and brought it into the tabernacle of meeting [a]as a memorial for the children of Israel before the LORD.

Numbers 32

The Tribes Settling East of the Jordan

1Now the children of Reuben and the children of Gad had a very great multitude of livestock; and when they saw the land of [a]Jazer and the land of [b]Gilead, that indeed the region *1was* a place for livestock, 2the children of Gad and the children of Reuben came and spoke to Moses, to Eleazar the priest, and to the leaders of the congregation, saying, 3"Ataroth, Dibon, Jazer, [a]Nimrah, [b]Heshbon, Elealeh, [c]Shebam, Nebo, and [d]Beon, 4the country [a]which the LORD defeated before the congregation of Israel, *is* a land for livestock, and your servants have livestock." 5Therefore they said, "If we have found favor in your sight, let this land be given to your servants as a possession. Do not take us over the Jordan."

6And Moses said to the children of Gad and to the children of Reuben: "Shall your brethren go to war while you sit here? 7Now why will you [a]discourage the heart of the children of Israel from going over into the land which the LORD has given them? 8Thus your fathers did [a]when I sent them away from Kadesh Barnea [b]to see the land. 9For [a]when they went up to the Valley of Eshcol and saw the land, they discouraged the heart of the children of Israel, so that they did not go into the land which the LORD had given them. 10[a]So the LORD's anger was aroused on that day, and He swore an oath, saying, 11'Surely none of the men who came

up from Egypt, [a]from twenty years
old and above, shall see the land of
which I swore to Abraham, Isaac, and
Jacob, because [b]they have not wholly
followed Me, 12except Caleb the son
of Jephunneh, the Kenizzite, and
Joshua the son of Nun, [a]for they have
wholly followed the LORD.’ 13So the
LORD’s anger was aroused against
Israel, and He made them [a]wander in
the wilderness forty years, until [b]all
the generation that had done evil in
the sight of the LORD was gone.
14And look! You have risen in yo1ur
fathers’ place, a brood of sinful men,
to increase still more the [a]fierce anger
of the LORD against Israel. 15For if
you [a]turn away from following Him,
He will once again leave them in the
wilderness, and you will destroy all
these people.”

16Then they came near to him and
said: “We will build sheepfolds here
for our livestock, and cities for our
little ones, 17but [a]we ourselves will be
armed, ready *to go* before the
children of Israel until we have
brought them to their place; and our
little ones will dwell in the fortified
cities because of the inhabitants of
the land. 18[a]We will not return to our
homes until every one of the children
of Israel has [*]received his inheritance.
19For we will not inherit with them
on the other side of the Jordan and
beyond, [a]because our inheritance has
fallen to us on this eastern side of the
Jordan.”

20Then [a]Moses said to them: “If you
do this thing, if you arm yourselves

before the LORD for the war, 21and all your armed men cross over the Jordan before the LORD until He has driven out His enemies from before Him, 22and [a]the land is subdued before the LORD, then afterward [b]you may return and be blameless before the LORD and before Israel; and [c]this land shall be your possession before the LORD. 23But if you do not do so, then take note, you have sinned against the LORD; and be sure [a]your sin will find you out. 24[a]Build cities for your little ones and folds for your sheep, and do [*]what has proceeded out of your mouth."

25And the children of Gad and the children of Reuben spoke to Moses, saying: "Your servants will do as my lord commands. 26[a]Our little ones, our wives, our flocks, and all our livestock will be there in the cities of Gilead; 27[a]but your servants will cross over, every man armed for war, before the LORD to battle, just as my lord says."

28So Moses gave command [a]concerning them to Eleazar the priest, to Joshua the son of Nun, and to the chief fathers of the tribes of the children of Israel. 29And Moses said to them: "If the children of Gad and the children of Reuben cross over the Jordan with you, every man armed for battle before the LORD, and the land is subdued before you, then you shall give them the land of Gilead as a possession. 30But if they do not cross over armed with you, they shall have possessions among you in the

land of Canaan.”
31Then the children of Gad and the
children of Reuben answered, saying:
“As the LORD has said to your
servants, so we will do. 32We will
cross over armed before the LORD
into the land of Canaan, but the
possession of our inheritance *shall
remain* with us on this side of the
Jordan.”

33So [a]Moses gave to the children of
Gad, to the children of Reuben, and
to half the tribe of Manasseh the son
of Joseph, [b]the kingdom of Sihon king
of the Amorites and the kingdom of
Og king of Bashan, the land with its
cities within the borders, the cities of
the surrounding country. 34And the
children of Gad built [a]Dibon and
Ataroth and [b]Aroer, 35Atroth and
Shophan and [a]Jazer and Jogbehah,
36[a]Beth Nimrah and Beth Haran,
[b]fortified cities, and folds for sheep.
37And the children of Reuben built
[a]Heshbon and Elealeh and Kirjathaim,
38[a]Nebo and [b]Baal Meon [c](*their* names
being changed) and Shibmah; and
they gave *other* names to the cities
which they built.

39And the children of [a]Machir the
son of Manasseh went to Gilead and
took it, and [*]dispossessed the
Amorites who *were* in it. 40So Moses
[a]gave Gilead to Machir the son of
Manasseh, and he dwelt in it. 41Also
[a]Jair the son of Manasseh went and
took its small towns, and called them
[b]Havoth Jair.[*]42Then Nobah went and
took Kenath and its villages, and he
called it Nobah, after his own name.

Numbers 33

Israel’s Journey from Egypt Reviewed

1These *are* the journeys of the children of Israel, who went out of the land of Egypt by their armies under the [a]hand of Moses and Aaron. 2Now Moses wrote down the starting points of their journeys at the command of the LORD. And these *are* their journeys according to their starting points:

3They [a]departed from Rameses in [b]the first month, on the fifteenth day of the first month; on the day after the Passover the children of Israel went out [c]with boldness in the sight of all the Egyptians. 4For the Egyptians were burying all *their* firstborn, [a]whom the LORD had killed among them. Also [b]on their gods the LORD had executed judgments.

5[a]Then the children of Israel moved from Rameses and camped at Succoth. 6They departed from [a]Succoth and camped at Etham, which *is* on the edge of the wilderness. 7[a]They moved from Etham and turned back to Pi Hahiroth, which *is* east of Baal Zephon; and they camped near Migdol. 8They departed [*]from before Hahiroth and [a]passed through the midst of the sea into the wilderness, went three days’ journey in the Wilderness of Etham, and camped at Marah. 9They moved from Marah and [a]came to Elim. At Elim *were* twelve springs of water and seventy palm trees; so they camped there.

10They moved from Elim and camped by the Red Sea. 11They moved from the Red Sea and camped in the [a]Wilderness of Sin. 12They journeyed from the Wilderness of Sin and camped at Dophkah. 13They departed from Dophkah and camped at Alush. 14They moved from Alush and camped at [a]Rephidim, where there was no water for the people to drink.

15They departed from Rephidim and camped in the [a]Wilderness of Sinai. 16They moved from the Wilderness of Sinai and camped [a]at [*]Kibroth Hattaavah. 17They departed from Kibroth Hattaavah and [a]camped at Hazeroth. 18They departed from Hazeroth and camped at [a]Rithmah. 19They departed from Rithmah and camped at Rimmon Perez. 20They departed from Rimmon Perez and camped at Libnah. 21They moved from Libnah and camped at Rissah. 22They journeyed from Rissah and camped at Kehelathah. 23They went from Kehelathah and camped at Mount Shepher. 24They moved from Mount Shepher and camped at Haradah. 25They moved from Haradah and camped at Makheloth. 26They moved from Makheloth and camped at Tahath. 27They departed from Tahath and camped at Terah. 28They moved from Terah and camped at Mithkah. 29They went from Mithkah and camped at Hashmonah. 30They departed from Hashmonah and [a]camped at Moseroth. 31They departed from

Moseroth and camped at Bene Jaakan. 32They moved from [a]Bene Jaakan and [b]camped at Hor Hagidgad. 33They went from Hor Hagidgad and camped at Jotbathah. 34They moved from Jotbathah [a]and camped at Abronah. 35They departed from Abronah and camped at Ezion Geber. 36They moved from Ezion Geber and camped in the [a]Wilderness of Zin, which *is* Kadesh. 37They moved from [a]Kadesh and camped at Mount Hor, on the boundary of the land of Edom.

38Then [a]Aaron the priest went up to Mount Hor at the command of the LORD, and died there in the fortieth year after the children of Israel had come out of the land of Egypt, on the first *day* of the fifth month. 39Aaron *was* one hundred and twenty-three years old when he died on Mount Hor.

40Now [a]the king of Arad, the Canaanite, who dwelt in the South in the land of Canaan, heard of the coming of the children of Israel.

41So they departed from Mount Hor and camped at Zalmonah. 42They departed from Zalmonah and camped at Punon. 43They departed from Punon and [a]camped at Oboth. 44[a]They departed from Oboth and camped at Ije Abarim, at the border of Moab. 45They departed from *Ijim and camped [a]at Dibon Gad. 46They moved from Dibon Gad and camped at [a]Almon Diblathaim. 47They moved from Almon Diblathaim [a]and camped in the mountains of Abarim, before

Nebo. 48They departed from the mountains of Abarim and [a]camped in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho. 49They camped by the Jordan, from Beth Jesimoth as far as the [a]Abel Acacia Grove* in the plains of Moab.

Instructions for the Conquest of Canaan

50Now the LORD spoke to Moses in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho, saying, 51"Speak to the children of Israel, and say to them: [a]'When you have crossed the Jordan into the land of Canaan, 52[a]then you shall drive out all the inhabitants of the land from before you, destroy all their engraved stones, destroy all their molded images, and demolish all their *high places; 53you shall dispossess *the inhabitants of* the land and dwell in it, for I have given you the land to [a]possess. 54And [a]you shall divide the land by lot as an inheritance among your families; to the larger you shall give a larger inheritance, and to the smaller you shall give a smaller inheritance; there everyone's *inheritance* shall be whatever falls to him by lot. You shall inherit according to the tribes of your fathers. 55But if you do not drive out the inhabitants of the land from before you, then it shall be that those whom you let remain *shall be* [a]irritants in your eyes and thorns in your sides, and they shall harass you in the land where you dwell. 56Moreover it shall be *that* I will do to you as I thought to do to them.' "

Num. 33:52

I pluck down the high places of the enemy.

Numbers 34

The Appointed Boundaries of Canaan

1Then the LORD spoke to Moses, saying, 2"Command the children of Israel, and say to them: 'When you come into [a]the land of Canaan, this *is* the land that shall fall to you as an inheritance—the land of Canaan to its boundaries. 3[a]Your southern border shall be from the Wilderness of Zin along the border of Edom; then your southern border shall extend eastward to the end of [b]the Salt Sea; 4your border shall turn from the southern side of [a]the Ascent of Akrabbim, continue to Zin, and be on the south of [b]Kadesh Barnea; then it shall go on to [c]Hazar Addar, and continue to Azmon; 5the border shall turn from Azmon [a]to the Brook of Egypt, and it shall end at the Sea.

6'As for the [a]western border, you shall have the Great Sea for a border; this shall be your western border.

7‘And this shall be your northern border: From the Great Sea you shall mark out your *border* line to [a]Mount Hor; 8from Mount Hor you shall mark out *your border* [a]to the entrance of Hamath; then the direction of the border shall be toward [b]Zedad; 9the border shall proceed to Ziphron, and it shall end at [a]Hazar Enan. This shall be your northern border.

10‘You shall mark out your eastern border from Hazar Enan to Shepham; 11the border shall go down from Shepham to [a]Riblah on the east side of Ain; the border shall go down and reach to the eastern [*]side of the Sea [b]of Chinnereth; 12the border shall go down along the Jordan, and it shall end at [a]the Salt Sea. This shall be your land with its surrounding boundaries.’ ”

13Then Moses commanded the children of Israel, saying: [a]“This *is* the land which you shall inherit by lot, which the LORD has commanded to give to the nine tribes and to the half-tribe. 14[a]For the tribe of the children of Reuben according to the house of their fathers, and the tribe of the children of Gad according to the house of their fathers, have received *their inheritance;* and the half-tribe of Manasseh has received its inheritance. 15The two tribes and the half-tribe have received their inheritance on this side of the Jordan, *across from* Jericho eastward, toward the sunrise.”

The Leaders Appointed to Divide the Land

16And the LORD spoke to Moses, saying, 17“These *are* the names of the men who shall divide the land among you as an inheritance: [a]Eleazar the priest and Joshua the son of Nun. 18And you shall take one [a]leader of every tribe to divide the land for the inheritance. 19These *are* the names of the men: from the tribe of Judah, Caleb the son of Jephunneh; 20from the tribe of the children of Simeon, Shemuel the son of Ammihud; 21from the tribe of Benjamin, Elidad the son of Chislon; 22a leader from the tribe of the children of Dan, Bukki the son of Jogli; 23from the sons of Joseph: a leader from the tribe of the children of Manasseh, Hanniel the son of Ephod, 24and a leader from the tribe of the children of Ephraim, Kemuel the son of Shiphtan; 25a leader from the tribe of the children of Zebulun, Elizaphan the son of Parnach; 26a leader from the tribe of the children of Issachar, Paltiel the son of Azzan; 27a leader from the tribe of the children of Asher, Ahihud the son of Shelomi; 28and a leader from the tribe of the children of Naphtali, Pedahel the son of Ammihud.”

29These *are* the ones the LORD commanded to [*]divide the inheritance among the children of Israel in the land of Canaan.

Numbers 35

Cities for the Levites

1And the LORD spoke to Moses in [a]the plains of Moab by the Jordan *across from* Jericho, saying:

2[a]“Command the children of Israel that they give the Levites cities to dwell in from the inheritance of their possession, and you shall *also* give the Levites [b]common-land around the cities. 3They shall have the cities to dwell in; and their common-land shall be for their cattle, for their herds, and for all their animals. 4The common-land of the cities which you will give the Levites *shall extend* from the wall of the city outward a thousand cubits all around. 5And you shall measure outside the city on the east side two thousand cubits, on the south side two thousand cubits, on the west side two thousand cubits, and on the north side two thousand cubits. The city *shall be* in the middle. This shall belong to them as common-land for the cities.

6“Now among the cities which you will give to the Levites *you shall a1ppoint* [a]six cities of refuge, to which a manslayer may flee. And to these you shall add forty-two cities. 7So all the cities you will give to the Levites *shall be* [a]forty-eight; these *you shall give* with their common-land. 8And the cities which you will give *shall be* [a]from the possession of the children of Israel; [b]from the larger *tribe* you shall give many, from the smaller you shall give few. Each shall give some of its cities to the Levites, in proportion to the inheritance that each receives.”

Cities of Refuge

9Then the LORD spoke to Moses, saying, 10“Speak to the children of

Israel, and say to them: [a]‘When you cross the Jordan into the land of Canaan, 11then [a]you shall appoint cities to be cities of refuge for you, that the manslayer who kills any person accidentally may flee there. 12[a]They shall be cities of refuge for you from the avenger, that the manslayer may not die until he stands before the congregation in judgment. 13And of the cities which you give, you shall have [a]six cities of refuge. 14[a]You shall appoint three cities on this side of the Jordan, and three cities you shall appoint in the land of Canaan, *which* will be cities of refuge. 15These six cities shall be for refuge for the children of Israel, [a]for the stranger, and for the sojourner among them, that anyone who kills a person accidentally may flee there.

16[a]‘But if he strikes him with an iron implement, so that he dies, he *is* a murderer; the murderer shall surely be put to death. 17And if he strikes him with a stone in the hand, by which one could die, and he does die, he *is* a murderer; the murderer shall surely be put to death. 18Or *if* he strikes him with a wooden hand weapon, by which one could die, and he does die, he *is* a murderer; the murderer shall surely be put to death. 19[a]The* avenger of blood himself shall put the murderer to1 death; when he meets him, he shall put him to death. 20[a]If he pushes him out of hatred or, [b]while lying in wait, hurls something at him so that he dies, 21or in enmity he strikes him with his hand so that he dies, the one who struck *him* shall surely be put to death. He *is* a murderer. The avenger of blood shall put the murderer to death when he meets him.

22‘However, if he pushes him suddenly [a]without enmity, or throws anything at him without lying in wait, 23or uses a stone, by which a man could die, throwing *it* at him without seeing *him,* so that he dies, while he was not his enemy or seeking his harm, 24then [a]the congregation shall judge between the manslayer and the avenger of blood according to these judgments. 25So the congregation shall deliver the manslayer from the hand of the avenger of blood, and the congregation shall return him to the city of refuge where he had fled, and [a]he shall remain there until the death of the high priest [b]who was anointed with the holy oil. 26But if the manslayer at any time goes outside the limits of the city of refuge where he fled, 27and the avenger of blood finds him outside the limits of his city of refuge, and the avenger of blood kills the manslayer, he shall not be guilty of *blood, 28because he should have remained in his city of refuge until the death of the high priest. But after the death of the high priest the manslayer may return to the land of his possession.

29‘And these *things* shall be [a]a statute of judgment to you throughout your generations in all your dwellings. 30Whoever kills a person, the murderer shall be put to death on the [a]testimony of witnesses; but one witness is not *sufficient* testimony against a person for the death *penalty*. [31]Moreover you shall take no ransom for the life of a murderer who *is* guilty of death, but he shall surely be put to death. [32]And you shall take no ransom for him who has fled to his city of refuge, that he may return to dwell in the land before the death of the priest. [33]So you shall not pollute the land where you *are;* for blood [a]defiles the land, and no [*]atonement can be made for the land, for the blood that is shed on it, except [b]by the blood of him who shed it. [34]Therefore [a]do not defile the land which you inhabit, in the midst of which I dwell; for [b]I the LORD dwell among the children of Israel.' "

Numbers 36

Marriage of Female Heirs

[1]Now the chief fathers of the families of the [a]children of Gilead the son of Machir, the son of Manasseh, of the families of the sons of Joseph, came near and [b]spoke before Moses and before the leaders, the chief fathers of the children of Israel. [2]And they said: [a]"The LORD commanded my lord *Moses* to give the land as an inheritance by lot to the children of Israel, and [b]my lord was commanded by the LORD to give the inheritance of our brother Zelophehad to his daughters. [3]Now if they are married to any of the sons of the *other* tribes of the children of Israel, then their

inheritance will be [a]taken from the inheritance of our fathers, and it will be added to the inheritance of the tribe into which they marry; so it will be taken from the lot of our inheritance. [4]And when [a]the Jubilee of the children of Israel comes, then their inheritance will be added to the inheritance of the tribe into which they marry; so their inheritance will be taken away from the inheritance of the tribe of our fathers."

[5]Then Moses commanded the children of Israel according to the word of the LORD, saying: [a]"What the tribe of the sons of Joseph speaks is right. [6]This *is* what the LORD commands concerning the daughters of Zelophehad, saying, 'Let them [*]marry whom they think best, [a]but they may marry only within the family of their father's tribe.' [7]So the inheritance of the children of Israel shall not change hands from tribe to tribe, for every one of the children of Israel shall [a]keep the inheritance of the tribe of his fathers. [8]And [a]every daughter who possesses an inheritance in any tribe of the children of Israel shall be the wife of one of the family of her father's tribe, so that the children of Israel each may possess the inheritance of his fathers. [9]Thus no inheritance shall change hands from *one* tribe to another, but every tribe of the children of Israel shall keep its own inheritance."

[10]Just as the LORD commanded Moses, so did the daughters of

Zelophehad; 11[a]for Mahlah, Tirzah, Hoglah, Milcah, and Noah, the daughters of Zelophehad, were married to the sons of their father's brothers. 12They were married into the families of the children of Manasseh the son of Joseph, and their inheritance remained in the tribe of their father's family.

13These *are* the commandments and the judgments which the LORD commanded the children of Israel by the hand of Moses [a]in the plains of Moab by the Jordan, *across from* Jericho.

Numbers 1

[1:1] a. Ex. 19:1; Num. 10:11, 12

[1:1] b. Ex. 25:22

[1:1] c. Ex. 40:2, 17; Num. 9:1; 10:11

[1:2] a. Ex. 30:12; Num. 26:2, 63, 64; 2 Sam. 24:2; 1 Chr. 21:2

[1:2] b. Ex. 30:12,

13; 38:26

1

[1:3] a. Ex. 30:14; 38:26

[1:14] a. Num. 7:42

[1:14] * *Reuel,* Num. 2:14

[1:16] a. Ex. 18:21; Num. 7:2; 1 Chr. 27:16–22

[1:16] b. Num. 16:2

[1:16] c. Ex. 18:21, 25; Jer. 5:5; Mic. 3:1, 9; 5:2

[1:16] * *called*

[1:17] a. Is. 43:1

[1:17] * *designated*

[1:18] a. Ezra 2:59;
Heb. 7:3

[1:20] a. Num. 2:10,
11; 26:5–11; 32:6,
15, 21, 29

[1:22] a. Num. 2:12, 13; 26:12–14

[1:24] a. Gen. 30:11; Num. 26:15–18; Josh. 4:12; Jer. 49:1

[1:26] a. Gen. 29:35; Num. 26:19–22; 2 Sam. 24:9; Ps. 78:68; Matt. 1:2

[1:27] a. 2 Chr. 17:14

[1:28] a. Num. 2:5, 6

[1:30] a. Num. 2:7, 8; 26:26, 27

[1:32] a. Gen. 48:1–22; Num. 26:28–37; Deut. 33:13–17; Jer. 7:15; Obad. 19

[1:34] a. Num. 2:20, 21; 26:28–34

[1:36] a. Gen. 49:27; Num. 26:38–41; 2 Chr. 17:17; Rev. 7:8

[1:38] a. Gen. 30:6; 46:23; Num. 2:25, 26; 26:42, 43

[1:40] a. Num. 2:27, 28; 26:44–47

[1:44] a. Num. 26:64

[1:46] a. Ex. 12:37; 38:26; Num. 2:32; 26:51, 63; Heb. 11:12; Rev. 7:4–8

[1:47] a. Num. 2:33; 3:14–22; 26:57–62; 1 Chr. 6:1–47; 21:6

[1:49] a. Num. 2:33; 26:62

[1:50] a. Ex. 38:21; Num. 3:7, 8; 4:15, 25–27, 33

[1:50] b. Num. 3:23, 291, 35, 38

[1:51] a. Num. 4:5–15; 10:17, 21

[1:51] b. Num. 10:21

[1:51] c. Num. 3:10, 38; 4:15, 19, 20; 18:22

[1:52] a. Num. 2:2, 34; 24:2

[1:53] a. Num. 1:50

[1:53] b. Lev. 10:6; Num. 8:19; 16:46; 18:5; 1 Sam. 6:19

[1:53] c. Num. 8:24; 18:2–4; 1 Chr. 23:32

[1:53] * *have in their care*

Numbers 2

[2:2] a. Num. 1:52; 24:2

[2:2] b. Josh. 3:4

[2:2] * *banner*

[2:3] a. Num. 10:5

[2:3] b. Num. 1:7; 7:12; 10:14; Ruth 4:20; 1 Chr. 2:10; Matt. 1:4; Luke 3:32, 33

[2:9] a. Num. 10:14

[2:9] * Lit. *set forth*

[2:10] a. Num. 10:6

[2:14] * *Deuel,* Num. 1:14; 7:42

[2:16] a. Num. 10:18

[2:16] * Lit. *set forth second*

[2:17] a. Num. 10:17, 21

[2:17] b. Num. 1:53

[2:17] * *company*

[2:17] * *whole company*

[2:17] * *banners*

[2:24] a. Num. 10:22

[2:24] * Lit. *set forth third*

[2:25] * *banner*

[2:31] a. Num. 10:25

[2:31] * Lit. *set forth last*

[2:31] * *banners*

[2:32] a. Ex. 38:26; Num. 1:46; 11:21

[2:33] a. Num. 1:47; 26:57–62

[2:34] a. Num. 1:54

[2:34] b. Num. 24:2, 5, 6

[2:34] * *banners*

Numbers 3

[3:1] a. Ex. 6:16–27

[3:1] * Lit. *generations*

[3:2] a. Ex. 6:23

[3:2] b. Lev. 10:1, 2; Num. 26:60, 61; 1 Chr. 24:2

[3:3] a. Ex. 28:41; Lev. 8

[3:3] * Lit. *whose hands he filled*

[3:4] a. Lev. 10:1, 2; Num. 26:61; 1 Chr. 24:2

[3:6] a. Num. 8:6–22; 18:1–7; Deut. 10:8; 33:8–11

[3:7] a. Num. 1:50; 8:11, 15, 24, 26

[3:9] a. Num. 8:19; 18:6, 7

[3:9] * Sam., LXX *Me*

[3:10] a. Ex. 29:9; Num. 18:7

[3:10] b. Num. 1:51; 3:38; 16:40

[3:12] a. Num. 3:41; 8:16; 18:6

[3:12] b. Ex. 13:2; Num. 3:45; 8:14

[3:13] a. Ex. 13:2; Lev. 27:26; Num. 8:16, 17; Neh. 10:36; Luke 2:23

[3:13] b. Ex. 13:12, 15; Num. 8:17

[3:15] a. Num. 3:39; 26:62

[3:16] * Lit. *mouth*

[3:17] a. Gen. 46:11; Ex. 6:16–22; Num. 26:57; 1 Chr. 6:1, 16; 23:6

[3:18] a. Num. 4:38–41

[3:18] b. Ex. 6:17

[3:19] a. Num. 4:34–37

[3:19] b. Ex. 6:18

[3:20] a. Ex. 6:19; Num. 4:42–45

[3:23] a. Num. 1:53

[3:25] a. Num. 4:24–26

[3:25] b. Ex. 25:9

[3:25] c. Ex. 26:1

[3:25] d. Ex. 26:7, 14

[3:25] e. Ex. 26:36

[3:26] a. Ex. 27:9, 12, 14, 15

[3:26] b. Ex. 27:16

[3:26] c. Ex. 35:18

[3:27] a. 1 Chr. 26:23

[3:28] * Some LXX mss. *three*

[3:28] * *taking care of*

[3:29] a. Ex. 6:18; Num. 1:53

[3:30] a. Lev. 10:4

[3:31] a. Num. 4:15

[3:31] b. Ex. 25:10

[3:31] c. Ex. 25:23

[3:31] d. Ex. 25:31

[3:31] e. Ex. 27:1; 30:1

[3:31] f. Ex. 26:31–33

[3:35] a. Num. 1:53; 2:25

[3:36] a. Num. 4:31, 32

[3:38] a. Num. 1:53

[3:38] b. Num. 18:5

[3:38] c. Num. 3:7, 8

[3:38] d. Num. 3:10

[3:39] a. Num. 3:43; 4:48; 26:62

[3:40] a. Num. 3:15

[3:40] * *Take a census of*

[3:41] a. Num. 3:12, 45

[3:45] a. Num. 3:12, 41

[3:46] a. Ex. 13:13, 15; Num. 18:15, 16

[3:46] b. Num. 3:39, 43

[3:47] a. Lev. 27:6; Num. 18:16

[3:47] b. Num. 1:2, 18, 20

[3:47] c. Ex. 30:13

[3:50] a. Num. 3:46, 47

[3:51] a. Num. 3:48

Numbers 4

[4:2] a. Num. 3:27–32

[4:3] a. Num. 4:23, 30, 35; 8:24; 1 Chr. 23:3, 24, 27; Ezra 3:8

[4:4] a. Num. 4:15

[4:4] b. Num. 4:19

[4:5] a. Ex. 26:31; Heb. 9:3

[4:5] b. Ex. 25:10, 16

[4:6] a. Ex. 39:1

[4:6] b. Ex. 25:13; 1 Kin. 8:7, 8

[4:7] a. Ex. 25:23, 29, 30

[4:7] b. Lev. 24:5–9

[4:7] * *jars for the drink offering*

[4:7] * Lit. *continual bread*

[4:9] a. Ex. 25:31

[4:9] b. Ex. 25:37, 38

[4:11] a. Ex. 30:1–5

[4:12] a. Ex. 25:9; 1 Chr. 9:29

[4:14] * *bowls*

[4:15] a. Num. 7:9; 10:21; Deut. 31:9; Josh. 4:10; 2 Sam. 6:13; 1 Chr. 15:2, 15

[4:15] b. 2 Sam. 6:6, 7; 1 Chr. 13:9, 10

[4:15] c. Num. 3:31

[4:16] a. Ex. 25:6; Lev. 24:2

[4:16] b. Ex. 30:34

[4:16] c. Ex. 29:38

[4:16] d. Ex. 30:23–25

[4:19] a. Num. 4:4

[4:19] * *assign*

[4:20] a. Ex. 19:21; 1 Sam. 6:19

[4:20] b. Num. 3:22

[4:23] a. Num. 4:3; 1 Chr. 23:3, 24, 27

[4:24] a. Num. 7:7

[4:25] a. Num. 3:25, 26

[4:25] b. Ex. 36:8

[4:25] c. Ex. 26:14

[4:27] * *command*

[4:27] * *assign*

[4:28] a. Num. 4:33

[4:28] * Lit. *hand*

[4:29] a. N1um. 3:33–37

[4:30] a. Num. 4:3; 8:24–26

[4:31] a. Num. 3:36, 37

[4:31] b. Num. 7:8

[4:31] c. Ex. 26:15

[4:32] a. Ex. 25:9; 38:21

[4:33] * Lit. *hand*

[4:34] a. Num. 4:2

[4:35] a. Num. 4:47

[4:41] a. Num. 4:22

[4:42] * *household*

[4:45] a. Num. 4:29

[4:46] a. Num. 3:39; 26:57–62; 1 Chr. 23:3–23

[4:47] a. Num. 4:3, 23, 30

[4:49] a. Num. 4:15, 24, 31

[4:49] b. Num. 4:1, 21

Numbers 5

[5:2] a. Lev. 13:3, 8, 46; Num. 12:10, 14, 15

[5:2] b. Lev. 15:2

[5:2] c. Lev. 21:1; Num. 9:6, 10; 19:11, 13; 31:19

[5:2] * *by contact with*

[5:3] a. Lev. 26:11, 12; Num. 35:34; (2 Cor. 6:16)

[5:6] a. Lev. 5:14—6:7

[5:7] a. Lev. 5:5; 26:40, 41; Josh. 7:19; Ps. 32:5; 1 John 1:9

[5:7] b. Lev. 6:4, 5

[5:8] a. Lev. 5:15; 6:6, 7; 7:7

[5:8] * *redeemer,* Heb. *goel*

[5:9] a. Ex. 29:28; Lev. 6:17, 18, 26; 7:6–14

[5:9] b. Lev. 7:32–34; 10:14, 15

[5:9] * *heave offering*

[5:10] a. Lev. 10:13

[5:10] * *consecrated*

[5:13] a. Lev. 18:20; 20:10

[5:13] b. John 8:4

[5:14] a. Prov. 6:34; Song 8:6

[5:15] a. Lev. 5:11

[5:15] b. 1 Kin. 17:18; Ezek. 29:16; Heb. 10:3

[5:16] a. Heb. 13:4

[5:21] a. Josh. 6:26; 1 Sam. 14:24; Neh. 10:29

[5:21] b. Jer. 29:22

[5:21] * Lit. *fall away*

[5:22] a. Ps. 109:18

[5:22] b. Deut. 27:15–26

[5:25] a. Lev. 8:27

[5:25] b. Lev. 2:2, 9

[5:26] a. Lev. 2:2, 9

[5:27] a. Deut. 28:37; Is. 65:15; Jer. 24:9; 29:18, 22; 42:18

[5:27] b. Num. 5:21

[5:29]1 a. Num. 5:19

[5:31] a. Lev. 20:17, 19, 20

[5:31] * *guilt*

[5:31] * *iniquity*

Numbers 6

[6:2] a. Lev. 27:2; Judg. 13:5; (Lam. 4:7; Amos 2:11, 12); Acts 21:23; Rom. 1:1

[6:2] * Or *makes a difficult vow*

[6:3] a. Lev. 10:9; Amos 2:12; Luke

1:15

[6:4] * Separation as a Nazirite

[6:5] a. Judg. 13:5; 16:17; 1 Sam. 1:11

[6:6] a. Lev. 21:1–3, 11; Num. 19:11–22

[6:7] a. Lev. 21:1, 2, 11; Num. 9:6

[6:7] * By touching a dead body

[6:8] a. (2 Cor. 6:17, 18)

[6:9] a. Lev. 14:8, 9; Acts 18:18; 21:24

[6:10] a. Lev. 5:7; 14:22; 15:14, 29

[6:12] a. Lev. 5:6

[6:12] * *void*

[6:13] a. Acts 21:26

[6:14] a. Lev. 4:2, 27, 32

[6:14] b. Lev. 3:6

[6:15] a. Lev. 2:4

[6:15] b. Ex. 29:2

[6:15] c. Num. 15:5, 7, 10

[6:18] a. Num. 6:9; Acts 21:23, 24

[6:19] a. 1 Sam. 2:15

[6:19] b. Ex. 29:23, 24

[6:19] c. Lev. 7:30

[6:20] a. Ex. 29:27, 28

[6:24] a. Deut. 28:3–6

[6:24] b. Ps. 121:7; John 7:11

[6:25] a. Ps. 31:16; 67:1; 80:3, 7, 19; 119:135; Dan. 9:17

[6:25] b. Gen. 43:29; Ex. 33:19; Mal. 1:9

[6:26] a. Ps. 4:6; 89:15

[6:26] b. Lev. 26:6; Is. 26:3, 12; Jo1hn 14:27; Phil. 4:7

[6:26] * Look upon you with favor

[6:27] a. Deut. 28:10; 2 Sam. 7:23; 2 Chr. 7:14; Is. 43:7; Dan. 9:18, 19

[6:27] b. Ex. 20:24; Num. 23:20; Ps. 5:12; 67:7; 115:12, 13; Eph. 1:3

[6:27] * *invoke*

Numbers 7

[7:1] a. Ex. 40:17–33

[7:1] b. Lev. 8:10, 11

[7:2] a. Num. 1:4

[7:2] * Lit. *who stood over*

[7:7] a. Num. 4:24–28

[7:8] a. Num. 4:29–33

[7:8] * Lit. *hand*

[7:9] a. Num. 4:15

[7:9] b. Num. 4:6–14

[7:10] a. Num. 7:1; Deut. 20:5; 1 Kin. 8:63; 2 Chr. 7:5, 9; Ezra 6:16; Neh. 12:27

[7:12] a. Num. 2:3

[7:13] a. Ex. 30:13

[7:13] b. Lev. 2:1

[7:14] a. Ex. 30:34, 35

[7:15] a. Lev. 1:2

[7:15] b. Ex. 12:5

[7:16] a. Lev. 4:23

[7:17] a. Lev. 3:1

[7:30] a. Num. 1:5; 2:10

[7:36] a. Num. 1:6; 2:12; 7:41

[7:42] a. Num. 1:14; 2:14; 10:20

[7:42] * *Reuel,* Num. 2:14

[7:45] a. Ps. 40:6

[7:48] a. Num. 1:10; 2:18; 1 Chr. 7:26

[7:54] a. Num. 1:10; 2:20

[7:60] a. Num. 1:11; 2:22

[7:66] a. Num. 1:12; 2:25

[7:72] a. Num. 1:13; 2:27

[7:78] a. Num. 1:15; 2:29

[7:84] a. Num. 7:10

[7:88] a. Num. 7:1, 10

[7:89] a. (Ex. 33:9, 11); Num. 12:8

[7:89] b. Ex. 25:21, 22

[7:89] c. Ps. 80:1; 99:1

Numbers 8

[8:2] a. Lev. 24:2–4

[8:2] b. Ex. 25:37; 40:25

[8:4] a. Ex. 25:31

[8:4] b. Ex. 25:18

[8:4] c. Ex. 25:40; Acts 7:44

[8:7] a. Num. 19:9, 13, 17, 20; Ps. 51:2, 7; (Heb. 9:13, 14)

[8:7] b. Lev. 14:8, 9

[8:7] * Heb. *let them cause a razor to pass over*

[8:8] a. Lev. 2:1; Num. 15:8–10

[8:9] a. Ex. 29:4; 40:12

[8:9] b. Lev. 8:3

[8:10] a. Lev. 1:4

[8:11] a. Num. 18:6

[8:11] * *present*

[8:12] a. Ex. 29:10

[8:14] a. Num. 16:9

[8:14] b. Num. 3:12, 45; 16:9

[8:15] a. Num. 8:11, 13

[8:16] a. Num. 3:9

[8:16] b. Ex. 13:2; Num. 3:12, 45

[8:17] a. Ex. 12:2, 12, 13, 15; Num. 3:13; Luke 2:23

[8:17] * *set them apart*

[8:19] a. Num. 3:9

[8:19] b. Num. 1:53; 16:46; 18:5; 2 Chr. 26:16

[8:21] a. Num. 8:7

[8:22] a. Num. 8:15

[8:22] b. Num. 8:5

[8:24] a. Num. 4:3; 1 Chr. 23:3, 24, 27

[8:26] a. Num. 1:53

Numbers 9

[9:2] a. Ex. 12:1–16; Lev. 23:5; Num. 28:16; Deut. 16:1, 2

[9:2] b. 2 Chr. 30:1–15; Luke 22:7; (1 Cor. 5:7, 8)

[9:3] * Lit. *between the evenings*

[9:3] *1 *observe*

[9:3] * *statutes*

[9:5] a. Josh. 5:10

[9:6] a. Num. 5:2; 19:11–22; John 18:28

[9:6] b. Ex. 18:15,

19, 26; Num. 27:2

[9:8] a. Ex. 18:22; Num. 27:5

[9:10] * *descendants*

[9:11] a. 2 Chr. 30:2, 15

[9:11] b. Ex. 12:8

[9:12] a. Ex. 12:10

[9:12] b. Ex. 12:46; (John 19:36)

[9:12] c. Ex. 12:43

[9:12] * *statutes*

[9:13] a. Gen. 17:14; Ex. 12:15, 47

[9:13] b. Num. 9:7

[9:13] c. Num. 5:31

[9:14] a. Ex. 12:49; Lev. 24:22; Num. 15:15, 16, 29

[9:14] * As a resident alien

[9:14] * *statute*

[9:15] a. Ex. 40:33, 34; Neh. 9:12, 19; Ps. 78:14

[9:15] b. Is. 4:5

[9:15] c. Ex. 13:21, 22; 40:38

[9:17] a. Ex. 40:36–38; Num. 10:11, 12, 33, 34; Ps. 80:1

[9:17] * *lifted up*

[9:18] a. 1 Cor. 10:1

[9:18]
* Lit.
mouth

[9:19]
a.
Num.
1:53;
3:8

[9:22]
a.
Ex.
40:36,
37

[9:23]
a.
Num.
9:19

Numbers 10

[10:2]
a. Is.
1:13

[10:3]
a.
Jer.
4:5;
Joel
2:15

[10:4]
a.
Ex.
18:21;
Num.
1:16;
7:2

[10:5]
a.
Joel
2:1

[10:6]
a.
Num.
2:3

[10:6]
b.
Num.
2:10

[10:7]
a.

Num. 10:3

[10:7] b. Joel 2:1

[10:8] a. Num. 31:6; Josh. 6:4; 1 Chr. 15:24; 2 Chr. 13:12

[10:8] * *statute*

[10:9] a. Num. 31:6; Josh. 6:5; 2 Chr.

13:14

[10:9]
b.
Judg.
2:18;
4:3;
6:9;
10:8,
12

[10:9]
c.
Gen.
8:1;
Ps.
106:4

[10:10]
a.
Lev.
23:24;
Num.
29:1;
1
Chr.
15:24;
2
Chr.
5:12;
Ps.
81:3

[10:10] b. Lev. 23:24; Num. 10:9

[10:11] a. Num. 9:17

[10:12] a. Ex. 19:1; Num. 1:1; 9:5

[10:12] b. Ex. 40:36

[10:12] c. Gen. 21:21; Num. 12:16; Deut. 1:1

[10:13]
a.
Num.
10:5,
6

[10:14]
a.
Num.
2:3–
9

[10:14]
b.
Num.
1:7

[10:14]
*
banner

[10:17]
a.
Num.
1:51

[10:17]
b.
Num.
4:21–

32; 7:7–9

[10:18] a. Num. 2:10–16

[10:21] a. Num. 4:4–20; 7:9

[10:21] * Prepared by the Gershonites and the Merarites

[10:22] a. Num. 2:18–24

[10:25]
a.
Num.
2:25–
31;
Josh.
6:9

[10:28]
a.
Num.
2:34

[10:29]
a.
Judg.
4:11

[10:29]
b.
Ex.
2:18;
3:1;
18:12

[10:29]
c.
Gen.
12:7;
Ex.
6:4–

[10:29] d. Judg. 1:16

[10:29] e. Gen. 32:12; Ex. 3:8

[10:29] * *Jethro,* Ex. 3:1; LXX *Raguel*

[10:31] a. Job 29:15

[10:31] * Act as our guide

[10:32] a. Ex. 18:9; Lev. 19:34; Judg. 1:16

[10:33] a. Ex. 3:1; Deut. 1:6

[10:33] b. Deut. 1:33; Josh. 3:3–6; Ezek. 20:6

[10:34] a. Ex. 13:21; Neh. 9:12, 19

[10:35]
a. Ps. 68:1, 2; 132:8; Is. 17:12–14

Numbers 11

[11:1]
a. Num. 14:2; 16:11; 17:5; Deut. 9:22

[11:1]
b. Ps. 78:21

[11:1]
c. Lev. 10:2; 2 Kin. 1:12

[11:2]
a.
Num.
12:11,
13;
21:7

[11:2]
b.
(James
5:16)

[11:2]
*
extinguished

[11:3]
* Lit.
Burning

[11:4]
a.
Ex.
12:38

[11:4]
b. 1
Cor.
10:6

[11:4]
c.
(Ps.
78:18)

[11:4]
* Lit.
*lusted
intensely*

[11:5]
a.
Ex.
16:3

[11:6]
a.
Num.
21:5

[11:7]
a.
Ex.
16:14,
31

[11:8]
a.
Ex.
16:31

[11:9]
a.
Ex.
16:13,
14

[11:10]
a. Ps.
78:21

[11:11]
a.
Ex.
5:22;
Deut.
1:12

[11:11]
*
responsibility

[11:12]
a. Is.
40:11

[11:12]
b. Is.
49:23;
1
Thess.
2:7

[11:12]
c.
Gen.
26:3

[11:12]
*
solemnly
promised

[11:13]
a.
Matt.
15:33;
Mark
8:4

[11:14]
a.
Ex.
18:18;
Deut.
1:12

[11:15]
a.
Rev.
3:17

[11:16]

a.
Ex.
18:25;
24:1,
9

[11:16]
b.
Deut.
16:18

[11:17]
a. 1
Sam.
10:6;
2
Kin.
2:15;
(Joel
2:28)

[11:18]
a.
Ex.
16:7

[11:18]
* *Set*
yourselves
apart

[11:20]

a. Ps. 78:29; 106:15

[11:20] b. 1 Sam. 10:19

[11:20] c. Num. 21:5

[11:21] a. Gen. 12:2; Ex. 12:37; Num. 1:46; 2:32

[11:22] a. 2 Kin. 7:2

[11:23] a. Is. 50:2;

59:1

[11:23] b. Num. 23:19

[11:23] * Is the LORD’s power limited?

[11:24] a. Num. 11:16

[11:25] a. 2 Kin. 2:15

[11:25] b. 1 Sam. 10:5, 6, 10; Joel 2:28;

Acts 2:17, 18; 1 Cor. 14:1

[11:25] * Tg., Vg. *and they did not cease*

[11:26] a. Jer. 36:5

[11:28] a. (Mark 9:38–40; Luke 9:49)

[11:29] a. 1

Cor.
14:5

[11:29]
*
jealous

[11:31]
a.
Ex.
16:13;
Ps.
78:26–
28;
105:40

[11:32]
a.
Ex.
16:36;
Ezek.
45:11

[11:33]
a.
Ps.
78:29–
31;
106:15

[11:34]
*

Lit. *Graves of Craving*

[11:35] a. Num. 33:17

Numbers 12

[12:1] a. 1font>Ex. 15:20, 21; Num. 20:1

[12:1] b. Num. 11:1

[12:1] c. Ex. 2:21

[12:1] *

criticized

[12:1]
*
Cushite

[12:2]
a.
Num.
16:3

[12:2]
b.
Ex.
15:20;
Mic.
6:4

[12:2]
c.
Gen.
29:33;
Num.
11:1;
2
Kin.
19:4;
Is.
37:4;
Ezek.
35:12,
13

[12:4] a. (Ps. 76:9)

[12:5] a. Ex. 19:9; 34:5; Num. 11:25; 16:19

[12:6] a. Gen. 46:2; 1 Sam. 3:15; Job 33:15; Ezek. 1:1; Dan. 8:2; Luke 1:11; Acts 10:11, 17; 22:17, 18

[12:6] b. Gen. 31:10; 1 Kin. 3:5, 15; Matt. 1:20

[12:7] a. Josh. 1:1; Ps. 105:26

[12:7] b. Heb. 3:2, 5

[12:7] c. 1 Tim. 1:12

[12:8]

a.
Ex.
33:11;
Deut.
34:10;
Hos.
12:13

[12:8]
b.
(1
Cor.
13:12)

[12:8]
c.
Ex.
33:19–
23

[12:8]
d.
2
Pet.
2:10;
Jude
8

[12:8]
*
appearing

[12:8]
*
riddles

[12:10]
a.
Deut.
24:9

[12:10]
b.
Ex.
4:6;
2
Kin.
5:27;
15:5;
2
Chr.
26:19,
20

[12:11]
a.
2
Sam.
19:19;
24:10

[12:11]
*
the
penalty

for
this

[12:12]
a.
Ps.
88:4

[12:13]
a.
Ps.
103:3

[12:14]
a.
Deut.
25:9;
Job
30:10;
Is.
50:6

[12:14]
b.
Lev.
13:46;
Num.
5:1–
4

[12:14]
*

exiled

[12:15]
a.
Deut.
24:9;
2
Chr.
26:20,
21

[12:16]
a.
Num.
11:35;
33:17,
18

Numbers 13

[13:2]
a.
Num.
32:8;
Deut.
1:22;
9:23

[13:3]
a.
Num.
12:16;
32:8;

Deut. 1:19; 9:23

[13:6] a. Num. 34:19

[13:6] b. Num. 14:6, 30; Josh. 14:6, 7; Judg. 1:12; 1 Chr. 4:15

[13:8] * LXX, Vg. *Oshea*

[13:16] a. Ex. 17:9;

Deut.
32:44

[13:16]
*
secretly
search

[13:16]
*
LXX,
Vg.
Oshea

[13:17]
a.
Judg.
1:9

[13:20]
a.
Deut.
31:6,
7,
23

[13:20]
*
fertile
or
barren

[13:21] a. Num. 20:1; 27:14; 33:36; Josh. 15:1

[13:21] b. Josh. 19:28

[13:21] c. Num. 34:8; Josh. 13:5

[13:22] a. Josh. 15:13, 14; Judg. 1:10

[13:22] b.

Josh.
11:21,
22

[13:23]
a.
Gen.
14:13;
Num.
13:24;
32:9;
Deut.
1:24,
25

[13:23]
*
Wadi

[13:24]
*
Lit.
Cluster

[13:26]
a.
Num.
20:1,
16;
32:8;
33:36;
Deut.
1:19;

Josh. 14:6

[13:27] a. Ex. 3:8, 17; 13:5; 33:3

[13:27] b. Deut. 1:25

[13:27] * Has an abundance of food

[13:28] a. Deut. 1:28; 9:1, 2

[13:28]

b.
Josh.
11:21,
22

[13:29]
a.
Ex.
17:8;
Judg.
6:3

[13:30]
a.
Num.
14:6,
24

[13:31]
a.
Num.
32:9;
Deut.
1:28;
9:1–
3;
Josh.
14:8

[13:32]
a.
Num.
14:36,
37;
Ps.

106:24

[13:32]
b.
Amos
2:9

[13:33]
a.
Deut.
1:28;
9:2;
Josh.
11:21

[13:33]
b.
Is.
40:22

[13:33]
c.
1
Sam.
17:42

[13:33]
*
Heb.
nephilim

[13:33] * As mere insects

Numbers 14

[14:1] a. Num. 11:4; Deut. 1:45

[14:2] a. Ex. 16:2; 17:3; Num. 16:41; Ps. 106:25; 1 Cor. 10:10

[14:3] a. Num. 14:31; Deut. 1:39

[14:3] * *be killed in battle*

[14:4] a. Neh. 9:17

[14:4] b. Deut. 17:16; Acts 7:39

[14:5] * *prostrated themselves*

[14:7] a. Num. 13:27; Deut. 1:25

[14:8] a. Deut. 10:15; 2 Sam. 15:25, 26; 1 Kin. 10:9; Ps. 147:11

[14:8] b. Ex. 3:8; Num. 13:27

[14:9] a. Deut. 1:26; 9:7, 23, 24; 1 Sam. 15:23

[14:9] b. Deut.

7:18

[14:9]
c.
Num.
24:8

[14:9]
d.
Gen.
48:21;
Ex.
33:16;
Deut.
20:1,
3,
4;
31:6–
8;
Josh.
1:5;
Judg.
1:22;
2
Chr.
13:12;
Ps.
46:7,
11;
Zech.
8:23;
Matt.
28:20;
Heb.
13:5

[14:9] * They shall be as food for our consumption.

[14:10] a. Ex. 17:4

[14:10] b. Ex. 16:10; Lev. 9:23

[14:11] a. Ps. 95:8; Heb. 3:8

[14:11] b. Deut.

9:23;
(John
12:37)

[14:11]
*
despise

[14:11]
*
*miraculous
signs*

[14:12]
a.
Ex.
32:10

[14:13]
a1.
Ps.
106:23

[14:13]
b.
Ex.
32:12;
Deut.
9:26–28;
32:27

[14:14] a. Deut. 2:25

[14:16] a. Deut. 9:28

[14:18] a. Ex. 34:6, 7; Deut. 5:10; 7:9; Ps. 103:8; 145:8; Jon. 4:2

[14:18] b. Ex. 20:5; Deut. 5:9

[14:19] a. Ex. 32:32; 34:9

[14:19] b. Ps. 51:1; 106:45

[14:19] c. Ps. 78:38

[14:20] a. 2 Sam. 12:13; Mic. 7:18–20; (1 John 5:14–16)

[14:21] a. Ps.

72:19;
Is.
6:3;
66:18,
19;
Hab.
2:14

[14:22]
a.
Deut.
1:35;
1
Cor.
10:5;
Heb.
3:17

[14:22]
b.
Gen.
31:7

[14:23]
a.
Num.
26:65;
32:11;
Heb.
3:18

[14:23]
*

solemnly promised

[14:24] a. Josh. 14:6, 8, 9

[14:24] b. Num. 32:12

[14:25] a. Num. 21:4; Deut. 1:40

[14:27] a. Ex. 16:28

[14:27] b. Ex. 16:12

[14:28] a. Deut. 1:35; 2:14, 15; Heb. 3:16–19

[14:29] a. Num. 1:45, 46; 26:64; Josh. 5:6

[14:30] a. Num. 26:65; 32:12; Deut. 1:36–38; Josh. 14:6–15

[14:30] *

solemnly promised

[14:31] a. Num. 14:3; Deut. 1:39

[14:31] b. Ps. 106:24

[14:31] * *be acquainted with*

[14:32] a. Num. 26:64, 65; 32:13; 1 Cor. 10:5

[14:32]

*
You
shall
die.

[14:33]
a.
Num.
32:13;
Ps.
107:40

[14:33]
b.
Deut.
2:14

[14:33]
c.
Ezek.
23:35

[14:33]
*
Vg.
wanderers

[14:34]
a.
Num.
13:25

[14:34]
b.
Ps.
95:10;
Ezek.
4:6

[14:34]
c.
1
Kin.
8:56;
(Heb.
4:1)

[14:34]
*
iniquity

[14:34]
*
opposition

[14:35]
a.
Num.
23:19

[14:35]
b.

1 Cor. 10:5

[14:37] a. Num. 16:49; (1 Cor. 10:10); Heb. 3:17, 18

[14:38] a. Josh. 14:6, 10

[14:39] a. Ex. 33:4

[14:40] a. Deut. 1:41–44

[14:41]
*
overstep

[14:42]
a.
Deut.
1:42;
31:17

[14:43]
a.
2
Chr.
15:2

[14:44]
a.
Deut.
1:43

[14:45]
a.
Num.
21:3

Numbers
15

[15:2]
a.
Lev.
23:10;

Num.
15:18;
Deut.
7:1

[15:3]
a.
Lev.
1:2,
3

[15:3]
b.
Lev.
7:16;
22:18,
21

[15:3]
c.
Lev.
23:2,
8,
12,
38;
Num.
28:18,
19,
27;
Deut.
16:10

[15:3]

d.
Gen.
8:21;
Ex.
29:18;
Lev.
1:9

[15:3]
*
pleasing

[15:4]
a.
Lev.
2:1;
6:14

[15:4]
b.
Ex.
29:40;
Lev.
23:13

[15:4]
c.
Lev.
14:10;
Num.
28:5

[15:5] a. Num. 28:7, 14

[15:5] b. Lev. 1:10; 3:6; Num. 15:11; 28:4, 5

[15:6] a. Num. 28:12, 14

[15:8] a. Lev. 7:11

[15:9] a. Num. 28:12, 14

[15:11] a. Num. 28

[15:14] * As a resident alien

[15:15] a. Ex. 12:49; Num. 9:14; 15:29

[15:15] * *statute*

[15:18] a. Num. 15:2; Deut. 26:1

[15:19] a. Josh. 5:11, 12

[15:20] a. Ex. 34:26; Lev. 23:10, 14, 17; Deut. 26:2, 10; Prov. 3:9, 10

[15:20] b. Lev. 2:14; 23:10, 16

[15:22] a. Lev. 4:2

[15:24] a. Lev. 4:13

[15:24] b. Num. 15:8–10

[15:24] c. Lev. 4:23

[15:24] * Lit. *away from the eyes*

[15:25] a. Lev. 4:20; (Heb. 2:17)

[15:27]

a.
Lev.
4:27–
31

[15:28]
a.
Lev.
4:35

[15:29]
a.
Num.
15:15

[15:30]
a.
Num.
14:40–
44;
Deut.
1:43;
17:12;
Ps.
19:13;
Heb.
10:26

[15:30]
*
defiantly,
lit.
with

a high hand

[15:30] * *blasphemes*

1

[15:30] * Put to death

[15:31] a. 2 Sam. 12:9; Prov. 13:13

[15:31] * *iniquity*

[15:32] a. Ex. 31:14, 15; 35:2,

3

[15:34] a. Lev. 24:12

[15:35] a. Ex. 31:14, 15

[15:35] b. Lev. 24:14; Deut. 21:21; 1 Kin. 21:13; Acts 7:58

[15:38] a. Deut. 22:12; Matt. 23:5

[15:39] a. Ps. 103:18

[15:39] b. Deut. 29:19

[15:39] c. Ps. 73:27; 106:39; James 4:4

[15:40] a. (Lev. 11:44, 45; Rom. 12:1; Col. 1:22; 1 Pet. 1:15, 16)

Numbers 16

[16:1]
a.
Ex.
6:21

[16:1]
b.
Num.
26:9;
Deut.
11:6

[16:2]
a.
Num.
1:16;
26:9

[16:3]
a.
Num.
12:2;
14:2;
Ps.
106:16

[16:3]
b.
Ex.
19:6

[16:3]

c.
Ex.
29:45

[16:3]
*
assume
too
much
for

[16:4]
a.
Num.
14:5;
20:6

[16:5]
a.
(2
Tim.
2:19)

[16:5]
b.
Lev.
21:6–
8,
12

[16:5]
c.

Ezek. 40:46; 44:15, 16

[16:5] * *set aside* for His use only

[16:9] a. 1 Sam. 18:23; Is. 7:13

[16:9] b. Num. 3:41, 45; 8:13–16; Deut. 10:8

[16:11]

a. Ex. 16:7, 8

[16:13] a. Ex. 16:3; Num. 11:4–6

[16:13] b. Ex. 2:14; Acts 7:27, 35

[16:14] a. Num. 14:1–4

[16:14] b. Ex. 3:8; Lev. 20:24

[16:15]
a.
Gen.
4:4,
5

[16:15]
b.
1
Sam.
12:3;
Acts
20:33

[16:15]
*
graciously
regard

[16:16]
a.
1
Sam.
12:3,
7

[16:19]
a.
Ex.
16:7,
10;

Lev. 9:6, 23; Num. 14:10

[16:21] a. Gen. 19:17; Jer. 51:6

[16:21] b. Ex. 32:10; 33:5

[16:22] a. Num. 14:5

[16:22] b. Num. 27:16; Job 12:10; Eccl. 12:7; Heb.

12:9

[16:22]
c.
Gen.
18:23–
32;
20:4

[16:22]
*
prostrated
themselves

[16:26]
a.
Gen.
19:12,
14,
15,
17

[16:27]
a.
Ex.
20:5;
Num.
26:11

[16:28]
a.
Ex.

3:12;
John
5:36

[16:28]
b.
Num.
24:13;
John
5:30

[16:29]
a.
Ex.
20:5;
Job
35:15;
Is.
10:3

[16:30]
a.
Job
31:3;
Is.
28:21

[16:30]
b.
(Ps.
55:15)

[16:31]
a.
Num.
26:10;
Ps.
106:17

[16:32]
a.
Num.
26:11;
1
Chr.
6:22,
37

[16:35]
a.
Lev.
10:2;
Num.
11:1–
3;
26:10;
Ps.
106:18

[16:37]
a.
Lev.
27:28

[16:38]

a. Prov. 20:2; Hab. 2:10

[16:38] b. Num. 17:10; Ezek. 14:8

[16:38] * Or *at the cost of their own lives*

[16:40] a. Num. 3:10; 2 Chr. 26:18

[16:40]

*
remi1nder

[16:41]
a.
Num.
14:2;
Ps.
106:25

[16:42]
a.
Ex.
40:34

[16:46]
a.
Lev.
10:6;
Num.
18:5

[16:46]
*
Lit.
covering

[16:48]
a.
Num.
25:8;
Ps.

106:30

Numbers 17

[17:4] a. Ex. 25:16

[17:4] b. Ex. 25:22; 29:42, 43; 30:36; Num. 17:7

[17:5] a. Num. 16:5

[17:5] b. Num. 16:11

[17:7] a. Ex.

38:21;
Num.
1:50,
51;
9:15;
18:2;
Acts
7:44

[17:8]
a.
(Ezek.
17:24);
Heb.
9:4

[17:10]
a.
Heb.
9:4

[17:10]
b.
Num.
16:38;
Deut.
9:7,
24

[17:10]
c.
Num.
17:5

[17:13] a. Num. 1:51, 53; 18:4, 7

Numbers 18

[18:1] a. Num. 17:13

[18:1] b. Ex. 28:38; Lev. 10:17; 22:16

[18:1] * *guilt*

[18:2] a. Gen. 29:34;

Num. 1:47

[18:2] b. Num. 3:5–10

[18:2] * *testimony*

[18:3] a. Num. 3:25, 31, 36

[18:3] b. Num. 16:40

[18:3] c. Num. 4:15

[18:3]
*
service

[18:4]
a.
Num.
3:10

[18:5]
a.
Ex.
27:21;
30:7;
Lev.
24:3

[18:5]
b.
Num.
8:19;
16:46

[18:6]
a.
Num.
3:12,
45

[18:6]
b.
Num.

3:9

[18:7] a. Num. 3:10; 18:5

[18:7] b. Heb. 9:3, 6

[18:7] c. Matt. 10:8; 1 Pet. 5:2, 3

[18:8] a. Lev. 6:16, 18; 7:28–34; Num. 5:9

[18:8] b. Ex. 29:29; 40:13, 15

[18:8] * *custody*

[18:9] a. Lev. 2:2, 3; 10:12, 13

[18:9] b. Lev. 6:25, 26

[18:9] c. Lev. 7:7; Num. 5:8–

10

[18:10]
a.
Lev.
6:16,
26

[18:11]
a.
Ex.
29:27,
28;
Deut.
18:3–
5

[18:11]
b.
Lev.
22:1–
16

[18:11]
*
purified

[18:12]
a.
Ex.
23:19;
Neh.

10:35,
36

[18:12]
b.
Ex.
22:29;
Lev.
23:20

[18:12]
*
Lit.
fat

[18:13]
a.
Ex.
22:29;
23:19;
34:26

[18:14]
a.
Lev.
27:1–
33

[18:14]
*
consecrated

[18:15] a. Ex. 13:2

[18:15] b. Ex. 13:12–15; Num. 3:46; Luke 2:22–24

[18:16] a. Lev. 27:6

[18:16] b. Ex. 30:13

[18:17] a. Deut. 15:19

[18:17]
b.
Lev.
3:2,
5

[18:18]
a.
Ex.
29:26–
28;
Lev.
7:31–
36

[18:18]
*
*breast
of
the
wave
offering*

[18:19]
a.
Lev.
2:13;
2
Chr.
13:5;
(Mark
9:49,
50)

[18:20] a. Deut. 10:8, 9; 12:12; 14:27–29; 18:1, 2; Josh. 13:14, 33

[18:20] b. Ps. 16:5; Ezek. 44:28

[18:21] a. Lev. 27:30–33; Deut. 14:22–29; Neh. 10:37; 12:44; Mal. 3:8–10; (Heb. 7:4–

10)

[18:21] b. Num. 3:7, 8

[18:21] * *a possession*

[18:22] a. Num. 1:51

[18:22] b. Lev. 22:9

[18:24] * *for a possession*

[18:26]

a. Neh. 10:38

[18:27] a. Num. 15:20; (2 Cor. 8:12)

[18:29] * Lit. *fat*

[18:31] a. (Matt. 10:10; Luke 10:7); 1 Cor. 9:13; (1 Tim. 5:18)

[118:31] * *wages*

[18:32]
a.
Lev. 19:8; 22:16; Ezek. 22:26

[18:32]
b.
Lev. 22:2, 15

Numbers
19

[19:2]
a.
Lev. 22:20–25

[19:2]
b.
Deut. 21:3; 1 Sam. 6:7

[19:2]

*
statute

[19:2]
*
defect

[19:3]
a.
Lev.
4:12,
21;
Num.
19:9;
Heb.
13:11

[19:4]
a.
Lev.
4:6;
Heb.
9:13

[19:5]
a.
Ex.
29:14;
Lev.
4:11,
12;
9:11

[19:6] a. Lev. 14:4, 6, 49

[19:6] b. Ex. 12:221; 1 Kin. 4:33

[19:7] a. Lev. 11:25; 15:5; 16:26, 28

[19:9] a. (Heb. 9:13, 14)

[19:9] b.

Num. 19:13, 20, 21

[19:9] * Lit. *impurity*

[19:11] a. Lev. 21:1, 11; Num. 5:2; 6:6; 9:6, 10; 31:19; Lam. 4:14; Hag. 2:13

[19:11] * Lit. *soul of man*

[19:12]
a.
Num.
19:19;
31:19

[19:13]
a.
Lev.
22:3–
7

[19:13]
b.
Lev.
15:31

[19:13]
c.
Num.
8:7;
19:9

[1font>19:13]
d.
Lev.
7:20;
22:3

[19:15]
a.
Lev.

11:32;
Num.
31:20

[19:16]
a.
Num.
19:11;
31:19

[19:17]
a.
Num.
19:9

[19:17]
*
Lit.
living

[19:18]
a.
Ps.
51:7

[19:19]
a.
Lev.
14:9

[19:20]
a.
Num.
19:13

[19:22]
a.
Hag.
2:11–
13

[19:22]
b.
Lev.
15:5

Numbers
20

[20:1]
a.
Num.
13:21;
33:36

[20:1]
b.
Num.
13:26

[20:1]
c.
Ex.

15:20; Num. 26:59

[20:2] a. Ex. 17:1

[20:2] b. Num. 16:19, 42

[20:3] a. Ex. 17:2; Num. 14:2

[20:3] b. Num. 11:1, 33; 14:37; 16:31–35, 49

[20:4]

a.
Ex.
17:3

[20:6]
a.
Num.
14:5;
16:4,
22,
45

[20:6]
b.
Num.
14:10

[20:6]
*
prostrated
themselves

[20:8]
a.
Ex.
4:17,
20;
17:5,
6

[20:8]
b.

Neh. 9:15; Ps. 78:15, 16; 105:41; Is. 43:20; 48:21; (1 Cor. 10:4)

[20:9] a. Num. 17:10

[20:10] a. Ps. 106:33

[20:11] a. Ex. 17:6; Deut. 8:15; Ps. 78:16; Is. 48:21; (1 Cor. 10:4)

[20:12] a. Num. 20:28; 27:14; Deut. 1:37; 3:26, 27; 34:5

[20:12] b. Lev. 10:3; Ezek. 20:41; 36:23; 1 Pet. 3:15

[20:13] a. Deut. 33:8; Ps. 106:32

[20:13] * Lit. *Contention*

[20:14] a. Judg. 11:16, 17

[20:14] b. Gen. 36:31–39

[20:14] c. Deut. 2:4; Obad. 10–12

[20:15] a. Gen. 46:6; Acts 7:15

[20:15] b1. Ex. 12:40

[20:15]
c.
Ex.
1:11;
Deut.
26:6;
Acts
7:19

[20:15]
* *did
evil
to*

[20:16]
a.
Ex.
2:23;
3:7

[20:16]
b.
Ex.
3:2;
14:19

[20:17]
a.
Num.
21:22

[20:18]
a.
Num.
24:18;
Ps.
137:7;
Ezek.
25:12,
13;
Obad.
10–
15

[20:19]
a.
Deut.
2:6,
28

[20:20]
a.
Judg.
11:17

[20:21]
a.
Deut.
2:27,
30

[20:21]
b.

Deut.
2:8;
Judg.
11:18

[20:22]
a.
Num.
33:37

[20:22]
b.
Num.
21:41

[20:24]
a.
Gen.
25:8;
Deut.
32:50

[20:24]
* Die
and
join
his
ancestors

[20:25]
a.
Num.

33:38;
Deut.
32:50

[20:28]
a.
Ex.
29:29,
30;
Deut.
10:6

[20:28]
b.
Num.
33:38

[20:29]
a.
Gen.
50:3,
10;
Deut.
34:8

Numbers 21

[21:1]
a.
Num.
33:40;
Josh.
12:14;
Judg.

1:16

[21:2]
a.
Gen.
28:20;
Judg.
11:30

[21:2]
b.
Deut.
2:34

[21:3]
* Lit.
Utter
Destruction

[21:4]
a.
Judg.
11:18

[21:4]
*
impatient

[21:5]
a.

Num.
20:4,
5

[21:5]
*
detests

[21:6]
a. 1
Cor.
10:9

[21:6]
b.
Deut.
8:15

[21:7]
a.
Num.
11:2;
Ps.
78:34;
Is.
26:16;
Hos.
5:15

[21:7]
b.
Lev.

26:40

[21:7] c. Ex. 8:8; 1 Sam. 12:19; 1 Kin. 13:6; Acts 8:24

[21:8] a. (John 3:14, 15)

[21:8] b. Is. 14:29; 30:6

[21:9] a. 2 Kin. 18:4; John 3:14, 15

[21:10]
a.
Num. 33:43, 44

[21:11]
* Lit. *The Heaps of Abarim*

[21:12]
a.
Deut. 2:13

[21:13]
a.
Num. 22:36; Judg. 11:18

[21:14]
*
Ancient unknown places; Vg.

What He did in the Red Sea

[21:15] a. Num. 21:28; Deut. 2:9, 18, 29

[21:16] a. Judg. 9:21

[21:17] a. Ex. 15:1

[21:18] a. Is. 33:22

[21:20] a.

Num. 23:28

[21:20] * Lit. *field*

[21:20] * Heb. *Jeshimon*

[21:21] a. Num. 32:33; Deut. 2:26–37; Judg. 11:19

[21:22] a. Num. 20:16, 17

[21:23] a. Deut. 29:7

[21:23]
b.
Deut.
2:32;
Judg.
11:20

[21:23]
*
attacked

[21:24]
a.
Deut.
2:33;
Josh.
12:1;
Neh.
9:22;
Ps.
135:10;
136:19;
Amos
2:9

[21:25]
a.
Amos
2:10

[21:27]
*

parables

[21:28]
a.
Jer.
48:45,
46

[21:28]
b.
Deut.
2:9,
18;
Is.
15:1

[21:28]
c.
Num.
22:41;
33:52

[21:29]
a.
Jer.
48:46

[21:29]
b.
Judg.
11:24;
1

Kin.
11:33;
2
Kin.
23:13

[21:29]
c. Is.
15:2,
5

[21:29]
d. Is.
16:2

[21:30]
a.
Num.
32:3,
34;
Jer.
48:18,
22

[21:30]
b. Is.
15:2

[21:32]
a.
Num.
32:1,

3,
35;
Jer.
48:32

[21:32]
*
secretly
search

[21:33]
a.
Deut.
29:7

[21:33]
b.
Deut.
3:1

[21:33]
c.
Josh.
13:12

[21:34]
a.
Deut.
3:2

[21:34] b. Num. 21:24; Ps. 135:10; 136:20

[21:34] * *given you victory over him*

[21:35] a. Deut. 3:3, 4; 29:7; Josh. 13:12

Numbers 22

[22:1] a. Num. 33:48, 49

[22:2]

a.
Josh.
24:9;
Judg.
11:25;
Mic.
6:5;
Rev.
2:14

[22:3]
a.
Ex.
15:15

[22:4]
a.
Num.
25:15–18;
31:1–3;
Josh.
13:21

[22:4]
*
consume

[22:5]
a.
Num.
31:8,

16; Deut. 23:4; Josh. 13:22; 24:9; Neh. 13:1, 2; Mic. 6:5; 2 Pet. 2:15; Jude 11; Rev. 2:14

[22:5] b. Deut. 23:4

[22:5] * The Euphrates

[22:5] * Or *the people of Amau*

[22:6] a. Num. 22:17; 23:7, 8

[22:6] b. Num. 22:12; 24:9

[22:7] a. 1 Sam. 9:7, 8

[22:8] a. Num. 22:19

[22:9] a. Gen. 20:3

[22:12]

a. Num. 23:20; (Rom. 11:28)

[22:15] * *distinguished*

[22:17] a. Num. 24:11

[22:17] b. Num. 22:6

[22:18] a. Num. 22:38; 24:13

[22:18] b. 1 Kin. 22:14; 2 Chr.

18:13

[22:19]
a.
Num.
22:8

[22:20]
a.
Num.
22:9

[22:20]
b.
Num.
22:35;
23:5,
12,
16,
26;
24:13

[22:22]
a.
Ex.
4:24

[22:23]
a.
Josh.
5:13;
2

Kin.
6:17;
Dan.
10:7;
Acts
22:9

[22:28]
a. 2
Pet.
2:16

[22:29]
a.
(Prov.
12:10;
Matt.
15:19)

[22:29]
*
mocked

[22:30]
a. 2
Pet.
2:16

[22:30]
*
accustomed

[22:31] a. Gen. 21:19; 2 Kin. 6:17; Luke 24:16, 31

[22:32] a. (2 Pet. 2:14, 15)

[22:32] * *as an adversary*

[22:32] * *contrary*

[22:34] a. 1 Sam. 15:24, 30;

26:21;
2
Sam.
12:13

[22:34]
* Lit.
is evil
in
your
eyes

[22:35]
a.
Num.
22:20

[22:36]
a.
Gen.
14:17

[22:36]
b.
Num.
21:13

[22:37]
a.
Num.
22:17;
24:11

[22:38]
a.
Num.
23:26;
24:13;
1
Kin.
22:14;
2
Chr.
18:13

[22:41]
a.
Num.
21:28;
Deut.
12:2

[22:41]
* *the
farthest
extent*

Numbers 23

[23:1]
a.
Num.
23:29

[23:2]

a.
Num.
23:14,
30

[23:3]
a.
Num.
23:15

[23:3]
b.
Num.
23:4,
16

[23:4]
a.
Num.
23:16

[23:5]
a.
Num.
22:20,
35,
38;
23:16;
Deut.
18:18;
Jer.
1:9

[23:7] a. Deut. 23:4; Job 27:1; 29:1; Ps. 78:2

[23:7] b. Num. 22:6, 11, 17

[23:7] c. 1 Sam. 17:10

[23:7] * *prophetic discourse*

[23:8] a. Num. 22:12

[23:9] a. Deut. 32:8; 33:28; Josh. 11:23

[23:9] b. Ex. 33:16; Ezra 9:2; (Eph. 2:14)

[23:10] a. Gen. 13:16; 22:17; 28:14; 2 Chr. 1:9

[23:10] b. Ps. 116:15

[23:10] * Or *dust cloud*

[23:11] a. Num. 22:11

[23:12] a. Num. 22:38

[23:14] a. Num. 23:1, 2

[23:15] * So with MT, Tg., Vg.; Syr. *call;* LXX *go and ask*

God

[23:16]
a.
Num.
22:35;
23:5

[23:18]
a.
Judg.
3:20

[23:19]
a. 1
Sam.
15:29;
Mal.
3:6;
James
1:17

[23:19]
b.
Num.
11:23;
1
Kin.
8:56

[23:20]
a.

Gen. 12:2; 22:17; Num. 22:12

[23:21] a. Ps. 32:2; (Rom. 4:7, 8)

[23:21] b. Ps. 89:15–18

[23:21] * *trouble*

[23:22] a. Num. 24:8

[23:22] b. 1Deut. 33:17;

Job
39:10

[23:23]
a. Ps.
31:19;
44:1

[23:23]
*
enchantment

[23:23]
*
fortune-telling

[23:24]
a.
Gen.
49:9

[23:24]
b.
Gen.
49:27;
Josh.
11:23

[23:26]

a.
Num.
22:38

[23:28]
a.
Num.
21:20

[23:28]
*
Heb.
Jeshimon

Numbers 24

[24:1]
a.
Num.
23:3,
15

[24:1]
*
enchantments

[24:2]
a.
Num.
2:2,
34

[24:2] b. Num. 11:25; 1 Sam. 10:10; 19:20, 23; 2 Chr. 15:1

[24:3] a. Num. 23:7, 18

[24:4] a. Ezek. 1:28

[24:6] a. Ps. 1:3; Jer. 17:8

[24:6] b. Ps. 104:16

[24:7]
a.
Jer.
51:13;
Rev.
17:1,
15

[24:7]
b. 1
Sam.
15:8,
9

[24:7]
c. 2
Sam.
5:12;
1
Chr.
14:2

[24:8]
a.
Num.
23:22

[24:8]
b.
Num.
14:9;

23:24

[24:8]
c. Ps.
2:9;
Jer.
50:17

[24:8]
d.
Ps.
45:5

[24:9]
a.
Gen.
49:9;
Num.
23:24

[24:9]
b.
Gen.
12:3;
27:29

[24:10]
a.
Ezek.
21:14,
17

[24:10]
b.
Num.
23:11;
Neh.
13:2

[24:11]
a.
Num.
22:17,
37

[24:14]
a.
(Mic.
6:5)

[24:14]
b.
Gen.
49:1;
Deut.
4:30;
Dan.
2:28

[24:17]
a.
Rev.
1:7;

Matt. 1:2; Luke 3:34

[24:17] b. Matt. 2:2

[24:17] c. Gen. 49:10

[24:17] * *shatter the forehead*

[24:17] * Heb. *Sheth,* Jer. 48:45

[24:18] a. 2 Sam. 8:14

[24:18]
*
mightily

[24:19]
a.
Gen.
49:10;
Amos
9:11,
12

[24:19]
*
shall
rule

[24:24]
a.
Gen.
10:4;
Ezek.
27:6;
Dan.
11:30

[24:24]
b.
Gen.
10:21,
25

[24:24]
*
Heb.
Kittim

[24:24]
* Lit.
he or
that
one

[24:25]
a.
Num.
22:5;
31:8

Numbers 25

[25:1]
a.
Num.
33:49;
Josh.
2:1

[25:1]
b.
Rev.
2:14

[25:1] * Heb. *Shittim*

[25:2] a. Josh. 22:17; Hos. 9:10

[25:2] b. Ex. 34:15; Deut. 32:38; 1 Cor. 10:20

[25:2] c. Ex. 20:5

[25:3] a. Ps. 106:28, 29

[25:4]

a.
Deut.
4:3

[25:4]
b.
Num.
25:11;
Deut.
13:17

[25:5]
a.
Ex.
18:21

[25:5]
b.
Deut.
13:6,
9

[25:6]
a.
Joel
2:17

[25:7]
a. Ps.
106:30

[25:7]
b.
Ex.
6:25

[25:8]
a. Ps.
106:30

[25:8]
b.
Num.
16:46–
48

[25:9]
a.
Deut.
4:3

[25:11]
a. Ps.
106:30

[25:11]
b.
(Ex.
20:5);
Deut.
32:16,
21; 1
Kin.

14:22;
Ps.
78:58;
Ezek.
16:38

[25:12]
a.
(Mal.
2:4,
5;
3:1)

[25:12]
b. Is.
54:10;
Ezek.
34:25;
37:26;
Mal.
2:5

[25:13]
a. 1
Chr.
6:4–
15

[25:13]
b.
Ex.
40:15

[25:13]
c.
Acts
22:3;
Rom.
10:2

[25:13]
d.
(Heb.
2:17)

[25:13]
* Lit.
covering

[25:15]
a.
Num.
31:8;
Josh.
13:21

[25:17]
a.
Num.
31:1–
3

[25:17]

* *be hostile toward*

[25:18] a. Num. 31:16; Rev. 2:14

[25:18] * *tricks*

Numbers 26

[26:1] a. Num. 25:9

[26:2] a. Ex. 30:12; 38:25, 26; Num. 1:2; 14:29

[26:2]

b. Num. 1:3

[26:3] a. Num. 22:1; 31:12; 33:48; 35:1

[26:4] a. Num. 1:1

[26:5] a. Gen. 46:8; Ex. 6:14; 1 Chr. 5:1–3

[26:9] a. Num. 1:16; 16:1,

2

[26:10] a. Num. 16:32–35

[26:10] b. Num. 16:38–40; 1 Cor. 10:6; 2 Pet. 2:6

[26:11] a. Ex. 6:24; 1 Chr. 6:22, 23

[26:12] * *Jemuel,* Gen. 46:10;

Ex.
6:15

[26:12]
*
Jarib,
1
Chr.
4:24

[26:13]
*
Zohar,
Gen.
46:10

[26:15]
*
Ziphion,
Gen.
46:16

[26:16]
*
Ezbon,
Gen.
46:16

[26:17]
*
Sam.,
Syr.

Arodi and Gen. 46:16

[26:19] a. Gen. 38:2; 46:12

[26:20] a. 1 Chr. 2:3

[26:23] * So with Sam., LXX, Syr., Vg.; Heb. *Puvah,* Gen. 46:13; 1 Chr. 7:1

[26:23] *

Sam., LXX, Syr., Vg. *Puaites*

[26:24] * *Job,* Gen. 46:13

[26:26] a. Gen. 46:14

[26:28] a. Gen. 46:20; Deut. 33:16

[26:29] a. Josh. 17:1

[26:29] b. 1 Chr.

7:14,
15

[26:30]
*
Abiezer,
Josh.
17:2

[26:33]
a.
Num.
27:1;
36:11

[26:35]
*
Bered,
1
Chr.
7:20

[26:38]
a.
Gen.
46:21;
1
Chr.
7:6

[26:38]
b.

Gen. 46:21; 1 Chr. 8:1, 2

[26:39] a. 1 Chr. 7:12

[26:39] * MT *Shephupham; Shephuphan,* 1 Chr. 8:5

[26:39] * *Huppim,* Gen. 46:21

[26:40] a. 1 Chr. 8:3

[26:40]

*
Addar,
1
Chr.
8:3

[26:42]
*
Hushim,
Gen.
46:23

[26:44]
a.
Gen.
46:17;
1
Chr.
7:30

[26:48]
a.
Gen.
46:24;
1
Chr.
7:13

[26:48]
*
Jahziel,
1
Chr.

7:13

[26:49]
a. 1
Chr.
7:13

[26:51]
a.
Ex.
12:37;
38:26;
Num.
1:46;
11:21

[26:53]
a.
Josh.
11:23;
14:1

[26:53]
b.
Num.
33:54

[26:54]
a.
Num.
33:54

[26:55] a. Num. 33:54; 34:13; Josh. 11:23; 14:2

[26:57] a. Gen. 46:11; Ex. 6:16–19; Num. 3:15; 1 Chr. 6:1, 16

[26:59] a. Ex. 2:1, 2; 6:20

[26:60] a. Num.

3:2

[26:61] a. Lev. 10:1, 2; Num. 3:3, 4; 1 Chr. 24:2

[26:62] a. Num. 3:39

[26:62] b. Num. 1:49

[26:62] c. Num. 18:20, 23, 24

[26:63] a. Num. 26:3

[26:64] a. Num. 14:29–35; Deut. 2:14–16; Heb. 3:17

[26:64] b. Num. 1:1–46

[26:65] a. Num. 14:26–35; (1 Cor. 10:5, 6)

[26:65] b. Num.

14:30

Numbers 27

[27:1] a. Num. 26:33; 36:1, 11; Josh. 17:3

[27:3] a. Num. 14:35; 26:64, 65

[27:3] b. Num. 16:1, 2

[27:4] a. Deut. 25:6

[27:4] b. Josh. 17:4

[27:4] * *withdrawn*

[27:4] * *inheritance*

[27:5] a. Ex. 18:13–26

[27:7] a. Num. 36:2;

Josh. 17:4

[27:11] a. Num. 35:29

[27:12] a. Num. 33:47; Deut. 3:23–27; 32:48–52; 34:1–4

[27:13] a. Num. 20:12, 24, 28; 31:2; Deut. 10:6; 34:5, 6

[27:13] * Die and join your ancestors

[27:14] a. Num. 20:12, 24; Deut. 1:37; 32:51; Ps. 106:32, 33

[27:14] b. Ex. 17:7

[27:16] a. Num. 16:22; Heb. 12:9

[27:17] a. Deut.

31:2; 1 Sam. 8:20; 18:13; 2 Chr. 1:10

[27:17] b. 1 Kin. 22:17; Zech. 10:2; Matt. 9:36; Mark 6:34

[27:18] a. Gen. 41:38; Judg. 3:10; 1 Sam. 16:13, 18

[27:18] b. Deut. 34:9

[27:19] a. Deut. 3:28; 31:3, 7, 8, 23

[27:19] * *commission*

[27:20] a. Num. 11:17

[27:20] b. Josh. 1:16–18

[27:21] a. Judg. 20:18, 23, 26; 1 Sam.

23:9; 30:7

[27:21] b. Ex. 28:30; 1 Sam. 28:6

[27:21] c. Josh. 9:14; 1 Sam. 22:10

[27:23] a. Deut. 3:28; 31:7, 8

[27:23] * *commissioned*

Numbers 28

[28:2] a. Lev. 3:11; 21:6, 8; (Mal. 1:7, 12)

[28:3] a. Ex. 29:38–42

[28:5] a. Ex. 16:36; Num. 15:4

[28:5] b. Lev. 2:1

[28:6] a. Ex. 29:42; Amos 5:25

[28:7] a. Ex. 29:42

[28:8] * *pleasing*

[28:10] a. Ezek. 46:4

[28:11] a. Num. 10:10; 1 Sam. 20:5; 1 Chr. 23:31; 2 Chr. 2:4; Ezra 3:5; Neh. 10:33; Is. 1:13, 14; Ezek. 45:17; 46:6, 7; Hos. 2:11; Col. 2:16

[28:12] a. Num. 15:4–12

[28:15] a. Num. 15:24; 28:3, 22

[28:16] a. Ex. 12:1–20; Lev. 23:5–8; Num. 9:2–5; Deut.

16:1–8; Ezek. 45:21

[28:17] a. Lev. 23:6

[28:18] a. Ex. 12:16; Lev. 23:7

[28:18] * *assembly* or *gathering*

[28:18] * *occupational*

[28:19] a. Lev. 22:20; Num. 28:31; 29:8; Deut. 15:21

[28:22] a. Num. 28:15

[28:22] * Lit. *covering*

[28:25] a. Ex. 12:16; 13:6; Lev. 23:8

[28:26] a. Ex. 23:16; 34:22; Lev. 23:10–21; Deut. 16:9–12; Acts 2:1

[28:27] a. Lev. 23:18, 19

[28:30] * Lit. *covering*

[28:31] a. Num. 28:3, 19

[28:31] * *defect*

Numbers 29

[29:1] a. Ex. 23:16; 34:22; Lev. 23:23–25

[29:6] a. Num. 28:11–15

[29:6] b. Num. 28:3

[29:6] c. Num. 15:11, 12

[29:7] a. Lev. 16:29–34; 23:26–32

[29:7] b. Ps. 35:13; Is. 58:5

[29:8] a. Num. 28:19

[29:11] a. Lev. 16:3, 5

[29:12] a. Lev. 23:33–35; Deut. 16:13–15; Ezek. 45:25

[29:13] a. Ezra 3:4

[29:17] a. Lev. 23:36

[29:18] a. Num. 15:12; 28:7, 14; 29:3, 4, 9, 10

[29:21] a. Num.

29:18

[29:35] a. Lev. 23:36

[29:35] * *solemn*

[29:39] a. Lev. 23:1–44; 1 Chr. 23:31; 2 Chr. 31:3; Ezra 3:5; Neh. 10:33; Is. 1:14

[29:39] b. Lev. 7:16; 22:18, 21, 23; 23:38

Numbers 30

[30:1] a. Num. 1:4, 16; 7:2

[30:2] a. Lev. 27:2; Deut. 23:21–23; Judg. 11:30, 31, 35; Eccl. 5:4

[30:2] b. Lev. 5:4; Matt. 14:9; Acts 23:14

[30:2] c. Job 22:27; Ps. 22:25; 50:14; 66:13, 14; Nah. 1:15

[30:4] * *says nothing* to interfere

[30:8] a. (Gen. 3:16)

[30:12] * *annulled* or *invalidated*

Numbers 31

[31:2] a. Num. 25:17

[31:2] b. Num. 27:12, 13

[31:3] a. Josh. 13:21

[31:6] a. Num. 10:9

[31:7] a. Deut. 20:13; Judg. 21:11; 1 Sam. 27:9; 1 Kin. 11:15, 16

[31:7] b. Gen. 34:25

[31:8] a. Josh. 13:21

[31:8] b. Num. 25:15

[31:8] c. Num. 31:16; Josh. 13:22

[31:11] a. Deut. 20:14

[31:15] a. Deut. 20:14

[31:16] a. Num. 25:2

[31:16] b. Num. 24:14; 2 Pet. 2:15; Rev. 2:14

[31:16] c. Num. 25:9

[31:17] a. Deut. 7:2; 20:16–18; Judg. 21:11

[31:18] a. Deut. 21:10–14

[31:19] a. Num. 5:2

[31:19] b. Num. 19:11–22

[31:21] * *statute*

[31:23] a. Num. 19:9, 17

[31:24] a. Lev. 11:25

[31:26] * *captured*

[31:27] a. Josh. 22:8; 1 Sam. 30:24

[31:28] a. Num.

31:30, 47

[31:28]
* *tax*

[31:29]
a.
Deut.
18:1–
5

[31:30]
a.
Num.
31:42–
47

[31:30]
b.
Num.
3:7,
8,
25,
31,
36;
18:3,
4

[31:30]
*
*perform
the
service*

[31:37]
* *tax*

[31:41]
a.
Num.
5:9,
10;
18:8,
19

[31:47]
a.
Num.
31:30

[31:50]
a.
Ex.
30:12–
16

[31:50]
* Lit.
covering

[31:53]
a.
Num.
31:32;

Deut. 20:14

[31:54] a. Ex. 30:16

Numbers 32

[32:1] a. Num. 21:32; Josh. 13:25; 2 Sam. 24:5

[32:1] b. Deut. 3:13

[32:3] a. Num. 32:36

[32:3] b. Josh.

13:17, 26

[32:3] c. Num. 32:38

[32:3] d. Num. 32:38

[32:4] a. Num. 21:24, 34, 35

[32:7] a. Num. 13:27—14:4

[32:8] a. Num. 13:3, 26

[32:8] b. Deut. 1:19–25

[32:9] a. Num. 13:24, 31; Deut. 1:24, 28

[32:10] a. Num. 14:11; Deut. 1:34–36

[32:11] a. Num. 14:28, 29; 26:63–65; Deut. 1:35

[32:11] b. Num. 14:24, 30

[32:12] a. Num. 14:6–9, 24, 30; Deut. 1:36; Josh. 14:8, 9

[32:13] a. Num. 14:33–35

[32:13] b. Num. 26:64, 65

[32:14] a. Num. 11:1; Deut. 1:34

[32:15] a. Deut. 30:17, 18; Josh. 22:16–18; 2 Chr. 7:19; 15:2

[32:17] a. Josh. 4:12, 13

[32:18] a. Josh. 22:1–4

[32:18] *

possessed

[32:19] a. Josh. 12:1; 13:8

[32:20] a. Deut. 3:18; Josh. 1:14

[32:22] a. Deut. 3:20; Josh. 11:23

[32:22] b. Josh. 22:4

[32:22] c. Deut. 3:12, 15,

16, 18; Josh. 1:15; 13:8, 32; 22:4, 9

[32:23] a. Gen. 4:7; 44:16; Josh. 7:1–26; Is. 59:12; (Gal. 6:7)

[32:24] a. Num. 32:16

[32:24] * *what you said you would do*

[32:26] a. Josh. 1:14

[32:27] a. Josh. 4:12

[32:28] a. Josh. 1:13

[32:33] a. Deut. 3:8–17; 29:8; Josh. 12:1–61; 13:8–31; 22:4

[32:33] b. Num.

21:24,
33,
35

[32:34]
a.
Num.
33:45,
46

[32:34]
b.
Deut.
2:36

[32:35]
a.
Num.
32:1,
3

[32:36]
a.
Num.
32:3

[32:36]
b.
Num.
32:24

[32:37]
a.
Num.
21:27

[32:38]
a. Is.
46:1

[32:38]
b.
Ezek.
25:9

[32:38]
c.
Ex.
23:13;
Josh.
23:7

[32:39]
a.
Gen.
50:23;
Num.
27:1;
36:1

[32:39]
*
drove

out

[32:40]
a.
Deut.
3:12,
13,
15;
Josh.
13:31

[32:41]
a.
Deut.
3:14;
Josh.
13:30

[32:41]
b.
Judg.
10:4;
1
Kin.
4:13

[32:41]
* Lit.
Towns
of
Jair

Numbers 33

[33:1]
a. Ps.
77:20

[33:3]
a.
Ex.
12:37

[33:3]
b.
Ex.
12:2;
13:4

[33:3]
c.
Ex.
14:8

[33:4]
a.
Ex.
12:29

[33:4]
b.
(Ex.
12:12;
18:11);

Is.
19:1

[33:5]
a.
Ex.
12:37

[33:6]
a.
Ex.
13:20

[33:7]
a.
Ex.
14:1,
2, 9

[33:8]
a.
Ex.
14:22;
15:22,
23

[33:8]
*
Many
Heb.
mss.,
Sam.,

Syr., Tg., Vg. *from Pi Hahiroth;* cf. Num. 33:7

[33:9] a. Ex. 15:27

[33:11] a. Ex. 16:1

[33:14] a. Ex. 17:1; 19:2

[33:15] a. Ex. 16:1; 19:1, 2

[33:16] a. Num. 11:34

[33:16] * Lit. *Graves of Craving*

[33:17] a. Num. 11:35

[33:18] a. Num. 12:16

[33:30] a. Deut. 10:6

[33:32] a. Deut. 10:6

[33:32] b. Deut. 10:7

[33:34] a. Deut. 2:8; 1 Kin. 9:26; 22:48

[33:36] a. Num. 20:1; 27:14

[33:37] a. Num. 20:22, 23; 21:4

[33:38] a. Num. 20:25,

28;
Deut.
10:6;
32:50

[33:40]
a.
Num.
21:1

[33:43]
a.
Num.
21:10

[33:44]
a.
Num.
21:11

[33:45]
a.
Num.
32:34

[33:45]
*
Same
as *Ije
Abarim,*
v. 44

[33:46]
a.
Jer.
48:22;
Ezek.
6:14

[33:47]
a.
Num.
21:20;
Deut.
32:49

[33:48]
a.
Num.
22:1;
31:12;
35:1

[33:49]
a.
Num.
25:1;
Josh.
2:1

[33:49]
*
Heb.

Abel Shittim

[33:51] a. Deut. 7:1, 2; 9:1; Josh. 3:17

[33:52] a. Ex. 23:24, 33; 34:13; Deut. 7:2, 5; 12:3; Judg. 2:2; Ps. 106:34–36

[33:52] * Places for pagan worship

[33:53] a. Deut. 11:31; Josh. 21:43

[33:54] a. Num. 26:53–56

[33:55] a. Josh. 23:13; Judg. 2:3

Numbers 34

[34:2] a. Gen. 17:8; Deut. 1:7, 8; Ps. 78:54, 55; 105:11

[34:3] a. Josh. 15:1–3; Ezek. 47:13, 19

[34:3] b. Gen. 14:3; Josh. 15:2

[34:4] a. Josh. 15:3

[34:4] b. Num. 13:26; 32:8

[34:4] c. Josh. 15:3,

4

[34:5]
a.
Gen.
15:18;
Josh.
15:4,
47; 1
Kin.
8:65;
Is.
27:12

[34:6]
a.
Ex.
23:31;
Josh.
15:12;
Ezek.
47:20

[34:7]
a.
Num.
33:37

[34:8]
a.
Num.
13:21;
Josh.

13:5; 2 Kin. 14:25

[34:8] b. Ezek. 47:15

[34:9] a. Ezek. 47:17

[34:11] a. 2 Kin. 23:33; Jer. 39:5, 6

[34:11] b. Deut. 3:17; Josh. 11:2; 12:3; 13:27; 19:35; Matt.

14:34;
Luke
5:1

[34:11]
* Lit.
shoulder

[34:12]
a.
Num.
34:3

[34:13]
a.
Gen.
15:18;
Num.
26:52–56;
Deut.
11:24;
Josh.
14:1–5

[34:14]
a.
Num.
32:33

[34:17]

a.
Josh.
14:1,
2;
19:51

[34:18]
a.
Num.
1:4,
16

[34:29]
*
apportion

Numbers 35

[35:1]
a.
Num.
33:50

[35:2]
a.
Josh.
14:3,
4;
21:2,
3;
Ezek.
45:1;
48:10–20

[35:2] b. Lev. 25:32–34

[35:6] a. Deut. 4:41; Josh. 20:2, 7, 8; 21:3, 13

[35:7] a. Josh. 21:41

[35:8] a. Josh. 21:3

[35:8] b. Num. 26:54; 33:54

[35:10] a. Deut. 19:2; Josh. 20:1–9

[35:11] a. Ex. 21:13; Num. 35:22–25; Deut. 19:1–13

[35:12] a. Deut. 19:6; Josh. 20:3, 5, 6

[35:13] a. Num. 35:6

[35:14] a. Deut. 4:41; Josh. 20:8

[35:15] a. Num. 15:16

[35:16] a. Ex. 21:12, 14; Lev. 24:17; Deut. 19:11, 12

[35:19] a. Num. 35:21, 24, 27; Deut. 19:6, 12

[35:19] * A family member who is to avenge the victim

[35:20] a. Gen. 4:8; 2 Sam. 3:27; 20:10; 1 Kin. 2:31, 32

[35:20] b. Ex. 21:14; Deut. 19:11, 12

[35:22] a. Ex. 21:13

[35:24]
a.
Num.
35:12;
Josh.
20:6

[35:25]
a.
Josh.
20:6

[35:25]
b.
Ex.
29:7;
Lev.
4:3;
21:10

[35:27]
*
Murder

[35:29]
a.
Num.
27:11

[35:30]

a.
Deut.
17:6;
19:15;
Matt.
18:16;
John
7:51;
8:17,
18; 2
Cor.
13:1;
Heb.
10:28

[35:33]
a.
Deut.
21:7,
8;
Ps.
106:38

[35:33]
b.
Gen.
9:6

[35:33]
* Lit.
covering

[35:34]

a.
Lev.
18:24,
25;
Deut.
21:23

[35:34]
b.
Ex.
29:45,
46

Numbers 36

[36:1]
a.
Num.
26:29

[36:1]
b.
Num.
27:1–
11

[36:2]
a.
Num.
26:55;
33:54;
Josh.
17:4

[36:2]
b.
Num.
27:1,
5–7

[36:3]
a.
Num.
27:4

[36:4]
a.
Lev.
25:10

[36:5]
a.
Num.
27:7

[36:6]
a.
Num.
36:11,
12

[36:6]
* Lit.
be

wives to

[36:7] a. 1 Kin. 21:3

[36:8] a. 1 Chr. 23:22

[36:11] a. Num. 26:33; 27:1

[36:13] a. Num. 26:3; 33:50

The Holy Spirit's Work in

DEUTERONOMY

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

Deuteronomy reiterates the Law of God, calling for a whole-hearted commitment to the Lord (Deut. 6:4–5). God’s gracious love for Israel singled out a nation to be a

holy
people,
set
apart
by
His
Spirit
to be
His
own
special
treasure:
“For
you
are a
holy
people
to
the
LORD
your
God;
the
LORD
your
God
has
chosen
you
to be
a
people
for
Himself,
a
special
treasure
above
all
the

peoples on the face of the earth” (Deut. 7:6).

In Deuteronomy we see that obeying God’s law brings the blessings of His Spirit, while a curse accompanies disobedience. “If you heed the commandments of the LORD your God, which

I
command
you
today,
and
are
careful
to
observe
them.
So
you
shall
not
turn
aside
from
any
of
the
words
which
I
command
you
this
day,
to
the
right
or
the
left,
to go
after
other
gods
to
serve
them”

(Deut. 28:13–14). We must remember th1at obeying His Word brings the blessings of His Spirit.

Also in Deuteronomy we see that God's Spirit fills us as preparation for the tasks God gives us to do. Joshua is described as a man, “full of the spirit of wisdom, for Moses had laid his hands on him” (Deut. 34:9). Thus Joshua was provided with divine charisma to be the shepherd-leader of Gods people. The emphasis is not on the Spirit’s living in him but rather on the *result* of His presence.[*]

---

[*] Adapted from *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Deuteronomy, 167, and John Rea, *Bible Handbook on the Holy Spirit*, 38.

Deuteronomy 1

The Previous Command to Enter Canaan

1 These *are* the

words which Moses spoke to all Israel [a]on this side of the Jordan in the wilderness, in the *plain opposite *Suph, between Paran, Tophel, Laban, Hazeroth, and Dizahab. 2*It is* eleven days' *journey* from Horeb by way of Mount Seir [a]to Kadesh Barnea. 3Now it came to pass [a]in the fortieth year, in the eleventh month, on the first *day* of the month, *that* Moses spoke to the children of Israel according to all that the LORD had given him as commandments to them, 4[a]after he had killed Sihon king of the Amorites, who dwelt in Heshbon, and Og king of Bashan, who dwelt at Ashtaroth [b]in* Edrei.

5On this side of the Jordan in the land of Moab, Moses began to explain this law, saying, 6"The LORD our God spoke to us [a]in Horeb, saying: 'You have dwelt long [b]enough at this mountain. [7]Turn and take your journey, and go to the mountains of the Amorites, to all the neighboring *places* in the [*]plain, in the mountains and in the lowland, in the South and on the seacoast, to the land of the Canaanites and to Lebanon, as far as the great river, the River E[1]uphrates. [8]See, I have set the land before you; go in and possess the land which the LORD [*]swore to your fathers—to [a]Abraham, Isaac, and Jacob—to give to them and their descendants after them.’

Tribal Leaders Appointed

[9]“And [a]I spoke to you at that time, saying: ‘I [*]alone am not able to bear you. [10]The LORD your God has multiplied you, [a]and here you *are* today, as the stars of heaven in multitude. [11][a]May the LORD God of your fathers make you a

thousand times more numerous than you are, and bless you [b]as He has promised you! 12[a]How can I alone bear your problems and your burdens and your complaints? 13Choose wise, understanding, and knowledgeable men from among your tribes, and I will make them *heads over you.' 14And you answered me and said, 'The thing which you have told *us* to do *is* good.' 15So I took [a]the heads of your tribes, wise and knowledgeable men, and *made them heads over you, leaders of thousands, leaders of hundreds, leaders of fifties, leaders of tens, and officers for your tribes.

16"Then I commanded your judges at that time, saying, 'Hear *the cases* between your brethren, and [a]judge righteously between a man and his [b]brother or the stranger who is with him. 17[a]You shall not show partiality in judgment; you shall hear the small as well as the great; you shall not be afraid in any man's presence, for [b]the judgment *is* God's. The case that is too hard for you, [c]bring to me, and I will hear it.' 18And I commanded you at that time all the things which you should do.

Israel's Refusal to Enter the Land

19"So we departed from Horeb, [a]and went through all that great and terrible wilderness which you saw on the way to the mountains of the Amorites, as the LORD our God had commanded us. Then [b]we came to Kadesh Barnea. 20And I said to you, 'You have come to the mountains of the Amorites, which the LORD our God is giving us. 21Look, the LORD your God has set the land before you; go up *and* possess *it,* as the

LORD God of your fathers has spoken to you; [a]do not fear or be discouraged.’

22“And every one of you came near to me and said, ‘Let us send men before us, and let them search out the land for us, and bring back word to us of the way by which we should go up, and of the cities into which we shall come.’

23“The plan pleased me well; so [a]I took twelve of your men, one man from *each* tribe. 24[a]And they departed and went up into the mountains, and came to the Valley of Eshcol, and spied it out. 25They also took *some* of the fruit of the land in their hands and brought *it* down to us; and they brought back word to us, saying, ‘*It is* a [a]good land which the LORD our God is giving us.’

26[a]“Nevertheless you would not go up, but rebelled against the command of the

LORD your God;
27and you
[a]complained in your
tents, and said,
‘Because the LORD
[b]hates us, He has
brought us out of the
land of Egypt to
deliver us into the
hand of the
Amorites, to destroy
us. 28Where can we
go up? Our brethren
have [*]discouraged
our hearts, saying,
[a]“The people *are*
greater and taller
than we; the cities
are great and
fortified up to
heaven; moreover we
have seen the sons of
the [b]Anakim there.” ’

29“Then I said to
you, ‘Do not be
terrified, [a]or afraid of
them. 30[a]The LORD
your God, who goes
before you, He will
fight for you,
according to all He
did for you in Egypt
before your eyes,
31and in the
wilderness where
you saw how the
LORD your God
carried you, as a
[a]man carries his son,
in all the way that

you went until you came to this place.’ 32Yet, for all that, [a]you did not believe the LORD your God, 33[a]who went in the way before you [b]to search out a place for you to pitch your tents, to show you the way you should go, in the fire by night and in the cloud by day.

The Penalty for Israel’s Rebellion

34“And the LORD heard the sound of your words, and was angry, [a]and took an oath, saying, 35[a]‘Surely not one of these men of this evil generation shall see that good land of which I [*]swore to give to your fathers, 36[a]except Caleb the son of Jephunneh; he shall see it, and to him and his children I am giving the land on which he walked, because [b]he [*]wholly followed the LORD.’ 37[a]The LORD was also angry with me for your sakes, saying, ‘Even you shall not go in there.

38[a]Joshua the son of Nun, [b]who stands before you, he shall go in there. [c]Encourage him, for he shall cause Israel to inherit it.

39[a]‘Moreover your little ones and your children, who [b]you say will be victims, who today [c]have no knowledge of good and evil, they shall go in there; to them I will give it, and they shall possess it. 40[a]But *as for* you, turn and take your journey into the wilderness by the Way of the Red Sea.’

41“Then [1]you answered and said to me, [a]‘We have sinned against the LORD; we will go up and fight, just as the LORD our God commanded us.’ And when everyone of you had girded on his weapons of war, you were ready to go up into the mountain.

42“And the LORD said to me, ‘Tell them, [a]“Do not go up nor fight, for I *am* not among you; lest you be defeated before your enemies.” 43So I spoke to you; yet you would not listen, but [a]rebelled against the command of the LORD, and [b]presumptuously[*] went up into the mountain. 44And the Amorites who dwelt in that mountain came out against you and chased you [a]as bees do, and drove you back from Seir to Hormah. 45Then you returned and wept before the LORD, but the LORD would not listen to your voice nor give ear to you.

46[a]“So you remained in Kadesh many days, according to the days that you spent *there.*

Deuteronomy 2

The Desert Years

1[a]“Then we turned and journeyed into the wilderness of the Way of the Red Sea, [b]as the LORD spoke to me, and we [*]skirted Mount Seir for many days.

2“And the LORD

spoke to me, saying: 3‘You have skirted this mountain [a]long enough; turn northward. 4And command the people, saying, [a]“You *are about to* pass through the territory of [b]your brethren, the descendants of Esau, who live in Seir; and they will be afraid of you. Therefore watch yourselves carefully. 5Do not meddle with them, for I will not give you *any* of their land, no, not so much as one footstep, [a]because I have given Mount Seir to Esau *as* a possession. 6You shall buy food from them with money, that you may eat; and you shall also buy water from them with money, that you may drink.

7“For the LORD your God has blessed you in all the work of your hand. He knows your [*]trudging through this great wilderness. [a]These forty years the LORD your God *has been* with you; you have lacked nothing." '

8"And when we passed beyond our brethren, the descendants of Esau who dwell in Seir, away from the road of the plain, away from [a]Elath and Ezion Geber, we [b]turned and passed by way of the Wilderness of Moab. 9Then the LORD said to me, 'Do not harass Moab, nor contend with them in battle, for I will not give you *any* of their land *as* a possession, because I have given [a]Ar to [b]the descendants of Lot *as* a possession.' "

10[a](The Emim had dwelt there in times past, a people as great and numerous and tall as [b]the Anakim. 11They were also regarded as [*]giants, like the Anakim, but the Moabites call them Emim. 12[a]The Horites formerly dwelt in Seir, but the descendants of Esau dispossessed them and destroyed them from before them, and dwelt in their [*]place, just as Israel did to the land of their possession which the LORD gave them.)

13“ ‘Now rise and cross over [a]the [*]Valley of the Zered.’ So we crossed over the Valley of the Zered. 14And the time we took to come [a]from Kadesh Barnea until we crossed over the Valley of the Zered *was* thirty-eight years, [b]until all the generation of the men of war [*]was consumed from the midst of the camp, [c]just as the LORD had sworn to them. 15For indeed the hand of the LORD was against them, to destroy them from the midst of the camp until they [*]were consumed.

16“So it was, when all the men of war had finally perished from among the people, 17that the LORD spoke to me, saying: 18‘This day you are to cross over at Ar, the boundary of Moab. 19And *when* you come near the people of Ammon, do not harass them or meddle with them, for I will not give you *any* of the land of the people of Ammon *as* a possession, because I have given it to [a]the descendants of Lot *as* a possession.' "

20(That was also regarded as a land of *giants; giants formerly dwelt there. But the Ammonites call them [a]Zamzummim, 21[a]a people as great and numerous and tall as the Anakim. But the LORD destroyed them before them, and they dispossessed them and dwelt in their place, 22just as He had done for the descendants of Esau, [a]who dwelt in Seir, when He destroyed [b]the Horites from before them. They dispossessed them and dwelt in their place, even to this day. 23And [a]the Avim, who dwelt in villages as far as Gaza—[b]the Caphtorim, who came from Caphtor, destroyed them and dwelt in their place.)

24“ ‘Rise, take your journey, and [a]cross over the River Arnon. Look, I have given into your hand [b]Sihon the Amorite, king of Heshbon, and his land. Begin [*]to possess *it,* and engage him in battle. 25[a]This day I will begin to put the dread and fear of you upon the nations [*]under the whole heaven, who shall hear the report of you, and shall [b]tremble and be in anguish because of you.’

King Sihon Defeated

26“And I [a]sent messengers from the Wilderness of Kedemoth to Sihon king of Heshbon, [b]with words of peace, saying, 27[a]‘Let me pass through your land; I will keep strictly to the road, and I will turn neither to the right

nor to the left. 28 You
shall sell me food for
money, that I may
eat, and give me
water for money,
that I may drink;
[a]only let me pass
through on foot,
29 [a]just as the
descendants of Esau
who dwell in Seir
and the Moabites
who dwell in Ar did
for me, until I cross
the Jordan to the
land which the LORD
our God is giving us.'

30 [a]"But Sihon king
of Heshbon would
not let us pass
through, for [b]the
LORD your God
[c]hardened his spirit
and made his heart
obstinate, that He
might deliver him
into your hand, as *it
is* this day.

31 "And the LORD
said to me, 'See, I
have begun to [a]give
Sihon and his land
over to you. Begin to
possess *it,* that you
may inherit his land.'
32 [a]Then Sihon and all
his people came out
against us to fight at
Jahaz. 33 And [a]the
LORD our God

delivered him [*]over to us; so [b]we defeated him, his sons, and all his people. 34We took all his cities at that time, and we [a]utterly destroyed the men, women, and little ones of every city; we left none remaining. 35We took only the livestock as plunder for ourselves, with the spoil of the cities which we took. 36[a]From Aroer, which *is* on the bank of the River Arnon, and *from* [b]the city that *is* in the ravine, as far as Gilead, there was not one city too strong for us; [c]the LORD our God delivered all to us. 37Only you did not go near the land of the people of Ammon—anywhere along the River [a]Jabbok, or to the cities of the mountains, or [b]wherever the LORD our God had forbidden us.

PREPARING *for*

PREPARING TO ENGAGE THE ENEMY

What makes a person successful in spiritual warfare? Some of the qualifications include:

- *Endurance* (2 Tim. 2:3) — the ability to endure and withstand hardship, adversity, or stress. We are to endure hardness as a good soldier of Jesus Christ.

- *Hatred* (Ps. 139:22) — extreme dislike or antipathy, loathing. In spiritual warfare, we must have a hatred of evil and evil spirits.

- *Knowledge* (2 Cor.

2:11) — we are not to be ignorant of Satan’s devices.

- *Persistence* (Ps. 18:37) — the ability to go on resolutely or stubbornly in spite of oppression. We must be persistent in dealing with the enemy.
-

Separation (2 Tim. 2:14) — to get or keep apart. No man who wars entangles himself with the affairs of this life.

God uses ordinary people to accomplish His purposes. Our ability comes through grace. Every believer is sitting in heavenly places in Christ. Your position in Christ is high above all principality and power. You must see who you are in Christ. You can do all things through Christ.

It is important to know your authority and engage the enemy in faith. There is no need to fear. Demons are subject to the authority of the believer. Jesus gives us power to tread on serpents and scorpions (Luke 10:19). He promised that nothing will by any means harm us.

Joshua was told to engage the enemy (Deut. 2:24). You will see great victories through engagement. To engage means “to bring troops into conflict.” There are some believers who fear engagement. They are afraid of backlash. Jesus sent His disciples out to engage the enemy. They were told to heal the sick and cast out devils.

Two important revelations every believer needs are an understanding of power and an understanding of authority. Power is the Greek word *dunamis*. Authority is the Greek word *exousia*. Authority is the legal right to use power. We have been given authority to use the power supplied by the Holy Spirit.

Authority and power must be used. You use them by faith. This is not based on feeling but on faith. It is based on the Word of God. Faith comes by hearing the Word of God. It is important for believers to attend churches that teach on power and authority. It is important to read and study on these subjects.

We have been given the legal right to use the name of Jesus. The name of Jesus is above every name. Authority in the name of Jesus is recognized by the spirit realm. We cast out demons in that name. We bind the works of darkness in that na1me. We teach and preach in that name. We receive power through the Holy Spirit (Acts 1:8). God is able to do exceeding abundantly according to the power that operates in us. Jesus cast out demons through the power of the Holy Spirit (Matt. 12:28). We combine the power of the Holy Spirit with the authority of the name of Jesus to rout the enemy. We do not engage the enemy in our own power and authority. We engage the enemy through the power of the Holy Spirit and in the authority of the name of Jesus.

Demons recognize power and authority. They recognize believers who operate in power and authority. The more you exercise power and authority, the more you will develop in these areas. It is important to start.

It is also important to make sure your sins are forgiven when engaging the enemy. If we confess our sins, He is faithful and just to forgive us, and to cleanse us from all unrighteousness (1 John 1:9). Do not engage the enemy with unconfessed sin in your life. There is power in the blood of Jesus. His blood cleanses us from all sin. Give no place to the devil. You must operate in righteousness.

We are made righteous through faith. We are the righteousness of God in Christ (2 Cor. 5:21). Many believers suffer from feelings of inferiority and low self-esteem because they do not understand righteousness. Righteousness gives us confidence. Righteousness gives us boldness. Righteousness is the scepter of the kingdom (Heb. 1:8). The righteous are as bold as a lion (Prov. 28:1).

God

covers our heads in the day of battle (Ps. 140:7). A covering is protection. Covering is based on subjection to God, His Word, and the Holy Spirit. Humility and submission are important characteristics of believers who engage in spiritual warfare.

It is important to be submitted to proper biblical authority. This includes being submitted to godly leaders who watch for your soul.*

---

* John Eckhardt, *Prayers That Rout Demons*, 26–28.

Deuteronomy 3

King Og Defeated

[1] “Then we turned and went up the road to Bashan; and [a]Og

king of Bashan came out against us, he and all his people, to battle [b]at Edrei. 2And the LORD said to me, ‘Do not fear him, for I have delivered him and all his people and his land into your hand; you shall do to him as you did to [a]Sihon king of the Amorites, who dwelt at Heshbon.’

3“So the LORD our God also delivered i1nto our hands Og king of Bashan, with all his people, and we [*]attacked him until he had no survivors remaining. 4And we took all his cities at that time; there was not a city which we did not take from them: sixty cities, [a]all the region of Argob, the kingdom of Og in Bashan. 5All these cities *were* fortified with high walls, gates, and bars, besides a great many rural towns. 6And we utterly destroyed them, as we did to Sihon king [a]of Heshbon, utterly destroying the men, women, and children of every city. 7But all the livestock and the spoil of the cities we took as booty for ourselves.

8“And at that time we took the [a]land from the hand of the two kings of the Amorites who *were* on this side of the Jordan, from the River Arnon to Mount [b]Hermon 9(the Sidonians call [a]Hermon Sirion, and the Amorites call it Senir), 10[a]all the cities of the plain, all Gilead, and [b]all Bashan, as far as Salcah and Edrei, cities of the kingdom of Og in Bashan.

11[a]“For only Og king of Bashan remained of the remnant of [b]the [*]giants. Indeed his bedstead *was* an iron bedstead. (*Is* it not in [c]Rabbah of the people of Ammon?) Nine cubits *is* its length and four cubits its width, according to the standard cubit.

The Land East of the Jordan Divided

12“And this [a]land, *which* we possessed at that time, [b]from Aroer, which *is* by the River Arnon, and half the mountains of Gilead and [c]its cities, I gave to the Reubenites and the Gadites. 13[a]The rest of Gilead, and all Bashan, the kingdom of Og, I gave to half the tribe of Manasseh. (All the region of Argob, with all Bashan, was called the land of the [*]giants. 14[a]Jair the son of Manasseh took all the region of Argob, [b]as far as the border of the Geshurites and the Maachathites, and [c]called Bashan after his own name, [*]Havoth Jair, to this day.)

15“Also I gave [a]Gilead to Machir. 16And to the Reubenites [a]and the Gadites I gave from Gilead as far as the River Arnon, the middle of the river as *the* border, as far as the River Jabbok, [b]the border of the people of Ammon; 17the plain also, with the Jordan as *the* border, from Chinnereth [a]as far as the east side of the Sea of the Arabah [b](the Salt Sea), below the slopes of Pisgah.

18“Then I commanded you at that time, saying: ‘The LORD your God has given you this land to possess. [a]All you men of valor shall cross over armed before your brethren, the children of Israel. 19But your wives, your little ones, and your livestock (I know that you have much livestock) shall stay in your cities which I have given you, 20until the LORD has given [a]rest to your brethren as to you, and they also possess the land which the LORD your God is giving them beyond the Jordan. Then each of you may [b]return to his possession which I have given you.’

21“And [a]I commanded Joshua at that time, saying, ‘Your eyes have seen all that the LORD your God has done to these two kings; so will the LORD do to all the kingdoms through which you pass. 22You must not fear them, for [a]the LORD your God Himself fights for you.’

Moses Forbidden to Enter the Land

23“Then [a]I pleaded with the LORD at that time, saying: 24‘O Lord GOD, You have begun to show Your servant [a]Your greatness and Your [*]mighty hand1, for [b]what god *is there* in heaven or on earth who can do *anything* like Your works and Your mighty *deeds?* 25I pray, let me cross over and see [a]the good land beyond the Jordan, those pleasant mountains, and Lebanon.’

26“But the LORD [a]was angry with me on your account, and would not listen to me. So the LORD said to me: 'Enough of that! Speak no more to Me of this matter. 27[a]Go up to the top of Pisgah, and lift your eyes toward the west, the north, the south, and the east; behold *it* with your eyes, for you shall not cross over this Jordan. 28But [a]command* Joshua, and encourage him and strengthen him; for he shall go over before this people, and he shall cause them to inherit the land which you will see.'

29"So we stayed in [a]the valley opposite Beth Peor.

Deuteronomy 4

Moses Commands Obedience

1"Now, O Israel, listen to [a]the statutes and the judgments which I teach you to observe, that you may live, and go in and *possess the land which the LORD God of your fathers is giving you. 2[a]You shall not add to the word which I command you, nor take from it, that you may keep the commandments of the LORD your God which I command you. 3Your eyes have seen what the LORD did at [a]Baal Peor; for the LORD your God has destroyed from among you all the men who followed Baal of Peor. 4But you who held fast to the LORD your God *are* alive today, every one of you.

5“Surely I have taught you statutes and judgments, just as the LORD my God commanded me, that you should act according *to them* in the land which you go to possess. 6Therefore be careful to observe *them;* for this *is* [a]your wisdom and[1] your understanding in the sight of the peoples who will hear all these statutes, and say, ‘Surely this great nation *is* a wise and understanding people.’

[7]“For [a]what great nation *is there* that has [b]God[*]*so* near to it, as the LORD our God *is* to us, for whatever *reason* we may call upon Him? [8]And what great nation *is there* that has *such* statutes and righteous judgments as are in all this law which I set before you this day? [9]Only take heed to yourself, and diligently [a]keep yourself, lest you [b]forget the things your eyes have seen, and lest they depart from your heart all the days of your life. And [c]teach them to your children and your grandchildren, [10]*especially concerning* [a]the day you stood before the LORD your God in Horeb, when the LORD said to me, ‘Gather the people to Me, and I will let them hear My words, that they may learn to fear Me all the days they live on the earth, and *that* they may teach their

children.’

11“Then you came near and stood at the foot of the mountain, and the mountain burned with fire to the midst of heaven, with darkness, cloud, and thick darkness. 12[a]And the LORD spoke to you out of the midst of the fire. You heard the sound of the words, but saw no [*]form; [b]*you* only *heard* a voice. 13[a]So He declared to you His covenant which He commanded you to perform, [b]the Ten Commandments; and [c]He wrote them on two tablets of stone. 14And [a]the LORD commanded me at that time to teach you statutes and judgments, that you might [*]observe them in the land which you cross over to possess.

Beware of Idolatry

15[a]“Take careful heed to yourselves, for you saw no [b]form when the LORD spoke to you at Horeb out of the midst of the fire, 16lest you [a]act corruptly and [b]make for yourselves a carved image in the [*]form of any figure: [c]the likeness of male or female, 17the likeness of any animal that *is* on the earth or the likeness of any winged bird that flies in the air, 18the likeness of anything that creeps on the ground or the likeness of any fish that *is* in the water beneath the earth. 19And *take heed,* lest you [a]lift your eyes to heaven, and *when* you see the sun, the moon, and the stars, [b]all the host of heaven, you feel driven to [c]worship them and serve them, which the LORD your God has [*]given to all the peoples under the whole heaven as a heritage. 20But the LORD has taken you and [a]brought you out of the iron furnace, out of Egypt, to be [b]His people, an inheritance, as you are this day. 21Furthermore [a]the

LORD was angry with me for your sakes, and swore that [b]I would not cross over the Jordan, and that I would not enter the good land which the LORD your God is giving you as an inheritance. 22But [a]I must die in this land, [b]I must not cross over the Jordan; but you shall cross over and [*]possess [c]that good land. 23Take heed to yourselves, lest you forget the covenant of the LORD your God which He made with you, [a]and make for yourselves a carved image in the form of anything which the LORD your God has forbidden you. 24For [a]the LORD your God *is* a consuming fire, [b]a jealous God.

25“When you beget children and grandchildren and have grown old in the land, and act corruptly and make a carved image in the form of anything, and [a]do evil in the sight of the LORD your God to provoke Him to anger, 26[a]I call heaven and earth to witness against you this day, that you will soon utterly perish from the land which you cross over the Jordan to possess; you will not [*]prolong *your* days in it, but will be utterly destroyed. 27And the LORD [a]will scatter you among the peoples, and you will be left few in number among the nations where the LORD will drive you. 28And [a]there you will serve gods, the work of men's hands, wood and stone, [b]which neither see nor hear nor eat nor smell. 29[a]But from there you will seek the LORD your God, and you will find *Him* if you seek Him with all your heart and with all your soul. 30When you are in [*]distress, and all these things come upon you in the [a]latter days, when you [b]turn to the LORD your God and obey His voice 31(for the LORD your God *is* a merciful God), He will not forsake you nor [a]destroy you, nor forget the covenant of your fathers which He swore to them.

32“For [a]ask now concerning the days that are past, which were before you, since the day that God created man on the earth, and *ask* [b]from one end of heaven to the other, whether *any* great *thing* like this has happened, or *anything* like it has been heard. 33[a]Did *any* people *ever* hear the voice of God speaking out of the midst of the fire, as you have heard, and live? 34Or did God *ever* try to go *and* take for Himself a nation from the midst of *another* nation, [a]by trials, [b]by signs, by wonders, by war, [c]by a mighty hand and [d]an outstretched arm, [e]and by great [*]terrors, according to all that the LORD1 your God did for you in Egypt before your eyes? 35To you it was shown, that you might know that the LORD Himself *is* God; [a]*there is* none other besides Him. 36[a]Out of heaven He let you hear His voice, that He might instruct you; on earth He showed you His great fire, and you heard His words out of the midst of the fire. 37And because [a]He loved your fathers, therefore He chose their [*]descendants after them; and [b]He brought you out of Egypt with His Presence, with His mighty power, 38[a]driving out from before you nations greater and mightier than you, to bring you in, to give you their land *as* an inheritance, as *it is* this day. 39Therefore know this day, and consider *it* in your heart, that [a]the LORD Himself *is* God in heaven above and on the earth beneath;

there is no other. 40[a]You shall therefore keep His statutes and His commandments which I command you today, that [*]it may go well with you and with your children after you, and that you may [*]prolong *your* days in the land which the LORD your God is giving you for all time.”

Cities of Refuge East of the Jordan

41Then Moses [a]set apart three cities on this side of the Jordan, toward the rising of the sun, 42[a]that the manslayer might flee there, who kills his neighbor unintentionally, without having hated him in time past, and that by fleeing to one of these cities he might live: 43[a]Bezer in the wilderness on the plateau for the Reubenites, Ramoth in Gilead for the Gadites, and Golan in Bashan for the Manassites.

Introduction to God’s Law

[44]Now this *is* the
law which Moses set
before the children of
Israel. [45]These *are* the
testimonies, the
statutes, and the
judgments which
Moses spoke to the
children of Israel
after they came out
of Egypt, [46]on this
side of the J1ordan,
[a]in the valley
opposite Beth Peor,
in the land of Sihon
king of the Amorites,
who dwelt at
Heshbon, whom
Moses and the
children of Israel
[b]defeated[*] after they
came out of Egypt.
[47]And they took
possession of his land
and the land [a]of Og
king of Bashan, two
kings of the
Amorites, who *were*
on this side of the
Jordan, toward the
[*]rising of the sun,
[48][a]from Aroer, which
is on the bank of the
River Arnon, even to
Mount [*]Sion (that is,
[b]Hermon), [49]and all
the plain on the east
side of the Jordan as
far as the Sea of the
Arabah, below the

[a]slopes of Pisgah.

Deuteronomy 5

The Ten Commandments Reviewed

1And Moses called all Israel, and said to them: “Hear, O Israel, the statutes and judgments which I speak in your hearing today, that you may learn them and be careful to observe them. 2[a]The LORD our God made a covenant with us in Horeb. 3The LORD [a]did not make this covenant with our fathers, but with us, those who *are* here today, all of us who *are* alive. 4[a]The LORD talked with you face to face on the mountain from the midst of the fire. 5[a]I stood between the LORD and you at that time, to declare to you the word of the LORD; for [b]you were afraid because of the fire, and you did not go up the mountain. *He* said:

6[a]‘I

am the LORD your God who brought you out of the land of Egypt, out of the house of *bondage.

7[a]‘You shall have no other gods *before Me.

8[a]‘You shall not make for yourself a carved image—

any likeness *of anything* that *is* in heaven above, or that *is* in the earth beneath, or that *is* in the water under the earth; [9]you shall not [a]bow[*] down to them nor serve them. For I, the LORD your

God, *am* a jealous God, *visiting the iniquity of the fathers upon the children to the third and fourth *generations* of those who hate Me, 10[a]but showing mercy to thousands, to those who love Me and *keep My commandments.

11[a]‘You shall not take the name of the LORD your God in vain, for the LORD will not hold *him* *guiltless who takes His name in vain.

12[a]‘Observe the Sabbath day, to *keep it holy, as the

LORD your God commanded you. 13[a]Six days you shall labor and do all your work, 14but the seventh day *is* the [a]Sabbath of the LORD your God. *In it* you shall do no work: you, nor your son, nor your

daughter,
nor
your
male
servant,
nor
your
female
servant,
nor
your
ox,
nor
your
donkey,
nor
any
of
your
cattle,
nor
your
stranger
who
is
within
your
gates,
that
your
male
servant
and
your
female
servant
may
rest
as
well

as you. 15[a]And remember that you were a slave in the land of Egypt, and the LORD your God brought you out from there [b]by a mighty hand and by an outstretched arm; therefore the LORD your God commanded you to keep the Sabbath day.

16[a]‘Honor your father and your mother, as the LORD your God has commanded you, [b]that your days may be long, and that it may be well with [c]you in the land which the LORD your God is giving you.

17[a]‘You shall not murder.

18[a]‘You shall not commit adultery.

19[a]‘You shall not steal.

20[a]‘You shall not bear false witness against your neighbor.

21[a]‘You shall not covet your neighbor’s wife;

and
you
shall
not
desire
your
neighbor’s
house,
his
field,
his
male
servant,
his
female
servant,
his
ox,
his
donkey,
or
anything
that
is
your
neighbor’s.’

22“These words the LORD spoke to all your assembly, in the mountain from the midst of the fire, the cloud, and the thick darkness, with a loud voice; and He added no more. And [a]He wrote them on two tablets of stone and gave them to me.

The People Afraid of

God's Presence

23[a]"So it was, when you heard the voice from the midst of the darkness, while the mountain was burning with fire, that you came near to me, all the heads of your tribes and your elders. 24And you said: 'Surely the LORD our God has shown us His glory and His greatness, and [a]we have heard His voice from the midst of the fire. We have seen this day that God speaks with man; yet he [b]*still* lives. 25Now therefore, why should we die? For this great fire will consume us; [a]if we hear the voice of the LORD our God anymore, then we shall die. 26[a]For who *is there* of all flesh who has heard the voice of the living God speaking from the midst of the fire, as we *have,* and lived? 27You go near and hear all that the LORD our God may say, and [a]tell us all that the LORD our God says to you, and we will hear and do *it.*’

28“Then the LORD heard the voice of your words when you spoke to me, and the LORD said to me: ‘I have heard the voice of the words of this people which they have spoken to you. [a]They are right *in* all that they have spoken. 29[a]Oh, that they had such a heart in them that they would fear Me and [b]always keep all My commandments, [c]that it might be well with them and with their children forever! 30Go and say to them, “Return to your tents.” 31But as for you, stand here by Me, [a]and I will speak to you all the commandments, the statutes, and the judgments which you shall teach them, that they may observe *them* in the land which I am giving them to possess.’

32“Therefore you shall [*]be careful to do as the LORD your God has commanded you; [a]you shall not turn aside to the right hand or to the left. 33You shall walk in [a]all the ways which the LORD your God has commanded you, that you may live [b]and *that it may be* well with you, and *that* you may prolong *your* days in the land which you shall possess.

Deuteronomy 6

The Greatest Commandment

1“Now this *is* [a]the commandment, *and these are* the statutes and judgments which the LORD your God has commanded to teach you, that you may observe *them* in the land which you are crossing over to possess, 2[a]that you may fear the LORD your God, to keep all His statutes and His commandments which I command you, you and your son and your grandson, all the days of your life,

[b]and that your days may be prolonged. [3]Therefore hear, O Israel, and [*]be ca1reful to observe *it,* that it may be well with you, and that you may [a]multiply greatly [b]as the LORD God of your fathers has promised you—[c]‘a land flowing with milk and honey.’

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Children of Belial

“Children of Belial” indicates individuals who were under the control of Belial. They were being used by

Belial to draw the people of God away from Him to serve other gods. It is interesting to note that the word *idol* is the Hebrew word *eliyl,* which means “good for nothing, vain or vanity, of no value, thing of nought.” This can be summed up in one word — *worthless*.

Belial, which means “worthlessness,” tries to lead men astray to follow something that is worthless. Idols are worthless; they have no value, and they cannot satisfy. There is a principle of Bible study that we call the law of first reference. This law of Bible study says that whenever a subject or a particular word is *first mentioned* in the Bible, there are some important principles that will be found concerning that subject or word.

The *first principle* we see in connection with Belial is that he attempts to draw people away from worshiping the true God. Under Belial are spirits that will *seduce* people and draw them away from the Lord. As a result, the demon spirits operating under the rulership of Belial inflict the people who have been drawn away from the protection of God with bondages and curses that often lead to destruction.*

[4][a]“Hear, O Israel:
[*]The LORD our God, the LORD *is* one!
[5][a]You shall love the LORD your God with all your heart, [b]with all your soul, and with all your strength.

[6]“And [a]these words which I command you today shall be in your heart. [7][a]Y1ou shall teach them diligently to your children, and shall talk of them when you sit in your house, when you walk by the way, when you lie down, and when you rise up. [8][a]You shall bind them as a sign on your hand, and they shall be as frontlets between your eyes. [9][a]You shall

---

[*] John Eckhardt, *Prayers That Break Curses*, 6–7.

write them on the doorposts of your house and on your gates.

Caution Against Disobedience

10“So it shall be, when the LORD your God brings you into the land of which He [*]swore to your fathers, to Abraham, Isaac, and Jacob, to give you large and beautiful cities [a]which you did not build, 11houses full of all good things, which you did not fill, hewn-out wells which you did not dig, vineyards and olive trees which you did not plant—[a]when you have eaten and are full—12*then* beware, lest you forget the [a]LORD who brought you out of the land of Egypt, from the house of bondage. 13You shall [a]fear the LORD your God and serve Him, and [b]shall take oaths in His name. 14You shall not go after other gods, [a]the gods of the peoples who *are* all around you

15(for [a]the LORD your God *is* a jealous God [b]among you), lest the anger of the LORD your God be aroused against you and destroy you from the face of the earth.

16[a]“You shall not [*]tempt the LORD your God [b]as you [*]tempted *Him* in Massah. 17You shall [a]diligently keep the commandments of the LORD your God, His testimonies, and His statutes which He has commanded you. 18And you [a]shall do *what is* right and good in the sight of the LORD, that it may be well with you,[1] and that you may go in and possess the good land of which the LORD swore to your fathers, 19[a]to cast out all your enemies from before you, as the LORD has spoken.

20[a]“When your son asks you in time to come, saying, ‘What *is the meaning of* the testimonies, the statutes, and the judgments which the LORD our God has commanded you?’ 21then you shall say to your son: ‘We were slaves of Pharaoh in Egypt, and the LORD brought us out of Egypt [a]with a mighty hand; 22and the LORD showed signs and wonders before our eyes, great and severe, against Egypt, Pharaoh, and all his household. 23Then He brought us out from there, that He might bring us in, to give us the land of which He [*]swore to our fathers. 24And the LORD commanded us to [*]observe all these [*]statutes, [a]to fear the LORD our God, [b]for our good always, that [c]He might preserve us alive, as *it is* [*]this day. 25Then [a]it will be righteousness for us, if we are careful to observe all these commandments before the LORD our God, as He has commanded us.’

Deuteronomy 7

A Chosen People

[1]“When the LORD your God brings you into the land which you go to [a]possess, and has cast out many [b]nations before you, [c]the Hittites and the Girgashites and the Amorites and the Canaanites and the Perizzites and the Hivites and the Jebusites, seven nations greater and mightier than you, [2]and when the LORD your God delivers [a]them over to you, you shall conquer them *and* utterly destroy them. [b]You shall make no covenant with them nor show mercy to them. 1a > [3][a]Nor shall you make marriages with them. You shall not give your daughter to their son, nor take their daughter for your son. [4]For they will turn your sons away from following Me, to serve other gods; [a]so the anger of the LORD will be aroused against you and destroy you

suddenly. [5]But thus you shall deal with them: you shall [a]destroy their altars, and break down their *sacred* pillars, and cut down their [*]wooden images, and burn their carved images with fire.

Deut. 7:5

Let the idols and images of the land be broken by Your power, O Lord.

[6]"For you *are* a [*]holy people to the LORD your God; [a]the LORD your God has chosen you to be a people for Himself, a special treasure above all the peoples on the face of the

earth. 7The LORD did not set His [a]love on you nor choose you because you were more in number than any other people, for you were [b]the least of all peoples; 8but [a]because the LORD loves you, and because He would keep [b]the oath which He swore to your fathers, [c]the LORD has brought you out with a mighty hand, and redeemed you from the house of [*]bondage, from the hand of Pharaoh king of Egypt.

9"Therefore know that the LORD your God, He *is* God, [a]the faithful God [b]who keeps covenant and mercy for a thousand generations with those who love Him and keep His commandments; 10and He repays those who hate Him to their face, to destroy them. He will not [*]be [a]slack with him who hates Him; He will repay him to his face. 11Therefore you shall keep the commandment, the statutes, and the judgments which I command you today, to observe them.

Blessings of Obedience

12“Then it shall come to pass, because you listen to these judgments, and keep and do them, that the LORD your God will keep with you the covenant and the mercy which He swore to your fathers. 13And He will [a]love you and bless you and [*]multiply you; [b]He will also bless the fruit of your womb and the fruit of your land, your grain and your new wine and your oil, the increase of your cattle and the offspring of your flock, in the land of which He [*]swore to your fathers to give you. 14You shall be blessed above all peoples; there shall not be a male or female [a]barren among you or among your livestock. 15And the LORD will take away from you all sickness, and will afflict you with none of the [a]terrible diseases of Egypt which you have known, but will lay *them* on all those who hate you. 16Also you shall [*]destroy all the peoples whom the LORD your God delivers over to you; your eye shall have no pity on them; nor shall you serve their gods, for that [a]*will be* a snare to you.

17“If you should say in your heart, ‘These nations are greater than I; how can I dispossess them?’—18you shall not be afraid of them, *but* you shall [a]remember well what the LORD your God did to Pharaoh and to all Egypt: 19[a]the great trials which your eyes saw, the signs and the wonders, the mighty hand and the outstretched arm, by which the LORD your God brought you out. So shall the LORD your God do to all the peoples of whom you are afraid. 20[a]Moreover the LORD your God will send the hornet among them until those who are left, who hide themselves from you, are destroyed. 21You shall not be terrified of them; for the LORD your God, the great and awesome God, *is* among you. 22And the LORD your God will drive out those nations before you [a]little by little; you will be unable to *destroy them at once, lest the beasts of the field become [1]*too* numerous for you. 23But the LORD your God will deliver them over to you, and will inflict defeat upon them until they are destroyed. 24And [a]He will deliver their kings into your hand, and you will destroy their name from under heaven; [b]no one shall be able to stand *against you until you have destroyed them. 25You shall burn the

carved images of
their gods with fire;
you shall not [a]covet[*]
the silver or gold *that*
is on them, nor take
it for yourselves, lest
you be snared by it;
for it *is* an
abomination to the
LORD your God.
26Nor shall you bring
an abomination into
your house, lest you
be doomed to
destruction like it.
You shall utterly
detest it and utterly
abhor it, [a]for it *is* an
[*]accursed thing.

Deuteronomy 8

Remember the LORD Your God

1“Every
commandment which
I command you
today [a]you must [*]be
careful to observe,
that you may live
and [b]multiply,[*] and
go in and possess the
land of which the
LORD [*]swore to your
fathers. 2And you
shall remember that
the LORD your God
[a]led you all the way
these forty years in
the wilderness, to
humble you *and* [b]test

you, [c]to know what *was* in your heart, whether you would keep His commandments or not. [3]So He humbled you, [a]allowed you to hunger, and [b]fed you with manna which you did not know nor did your fathers know, that He might make you know that man shall [c]not live by bread alone; but man lives by every *word* that proceeds from the mouth of the LORD. [4][a]1small>Your garments did not wear out on you, nor did your foot swell these forty years. [5][a]You should [*]know in your heart that as a man chastens his son, *so* the LORD your God chastens you.

[6]“Therefore you shall keep the commandments of the LORD your God, [a]to walk in His ways and to fear Him. [7]For the LORD your God is bringing you into a good land, [a]a land of brooks of water, of fountains and

springs, that flow out of valleys and hills; 8a land of wheat and barley, of vines and fig trees and pomegranates, a land of olive oil and honey; 9a land in which you will eat bread without scarcity, in which you will lack nothing; a land whose stones *are* iron and out of whose hills you can dig copper. 10[a]When you have eaten and are full, then you shall bless the LORD your God for the good land which He has given you.

Deut. 8:9

Bring me into a good land without scarceness and lack.

11“Beware that you

do not forget the
LORD your God by
not keeping His
commandments, His
judgments, and His
statutes which I
command you today,
12[a]lest—*when* you
have eaten and are
[*]full, and have built
beautiful houses and
dwell *in them;* 13and
when your herds and
your flocks multiply,
and your silver and
your gold are
[*]multiplied, and all
that you have is
multiplied; 14[a]when
your heart [*]is lifted
up, and you [b]forget
the LORD your God
who brought you out
of the land of Egypt,
from the house of
bondage; 15who [a]led
you through that
great and terrible
wilderness, [b]*in which
were* fiery serpents
and scorpions and
thirsty land where
there was no water;
[c]who brought water
for y1ou out of the
flinty rock; 16who fed
you in the wilderness
with [a]manna, which
your fathers did not
know, that He might

humble you and that He might test you, [b]to do you good in the end—17then you say in your heart, ‘My power and the might of my hand have gained me this wealth.’

18“And you shall remember the LORD your God, [a]for *it is* He who gives you power to get wealth, [b]that He may *establish His covenant which He swore to your fathers, as *it is* this day. 19Then it shall be, if you by any means forget the LORD your God, and follow other gods, and serve them and worship them, [a]I testify against you this day that you shall surely perish. 20As the nations which the LORD destroys before you, [a]so you shall perish, because you would not be obedient to the voice of the LORD your God.

Deuteronomy 9

Israel’s Rebellions Reviewed

1“Hear, O Israel: You *are* to cross over the Jordan today, and go in to dispossess nations greater and mightier than yourself, cities great and fortified up to heaven, 2a people great and tall, the [a]descendants of the Anakim, whom you know, and *of whom* you heard *it said,* ‘Who can stand before the descendants of Anak?’ 3Therefore understand today that the LORD your God *is* He who [a]goes over before you *as* a [b]consuming fire. [c]He will destroy them and bring them down before you; [d]so you shall drive them out and destroy them quickly, as the LORD has said to you.

4[a]“Do not think in your heart, after the LORD your God has cast them out before you, saying, ‘Because of my righteousness the LORD has brought me in to possess this land’; but *it is* [b]because of the

wickedness of these nations *that* th1e LORD is driving them out from before you.
[5][a]*It is* not because of your righteousness or the uprightness of your heart *that* you go in to possess their land, but because of the wickedness of these nations *that* the LORD your God drives them out from before you, and that He may [*]fulfill the [b]word which the LORD swore to your fathers, to Abraham, Isaac, and Jacob.
[6]Therefore understand that the LORD your God is not giving you this good land to possess because of your righteousness, for you *are* a [a]stiff-necked[*] people.

[7]“Remember! Do not forget how you [a]provoked the LORD your God to wrath in the wilderness. [b]From the day that you departed from the land of Egypt until you came to this place, you have been rebellious against the

LORD. 8Also [a]in
Horeb you provoked
the LORD to wrath,
so that the LORD was
angry *enough* with
you to have
destroyed you.
9[a]When I went up
into the mountain to
receive the tablets of
stone, the tablets of
the covenant which
the LORD made with
you, then I stayed on
the mountain forty
days and [b]forty
nights. I neither ate
bread nor drank
water. 10[a]Then the
LORD delivered to
me two tablets of
stone written with
the finger of God,
and on them *were* all
the words which the
LORD had spoken to
you on the mountain
from the midst of the
fire [b]in[*] the day of
the assembly. 11And
it came to pass, at
the end of forty days
and forty nights, *that*
the LORD gave me
the two tablets of
stone, the tablets of
the covenant.

12“Then the LORD
said to me, [a]‘Arise, go
down quickly from

here, for your people whom you brought out of Egypt have acted corruptly; they have [b]quickly turned aside from the way which I commanded them; they have made themselves a molded image.'

13“Furthermore [a]the LORD spoke to me, saying, ‘I have seen this people, and indeed [b]they are a [*]stiff-necked people. 14[a]Let Me alone, that I may destroy them and [b]blot out their name from under heaven; [c]and I will make of you a nation mightier and greater than they.'

15[a]“So I turned and came down from the mountain, and [b]the mountain burned with fire; and the two tablets of the covenant *were* in my two hands. 16And [a]I looked, and behold, you had sinned against the LORD your God—had made for yourselves a molded calf! You had turned aside quickly from the way which the LORD had commanded you. 17Then I took the two tablets and threw them out of my two hands and [a]broke them before your eyes. 18And I [a]fell* down before the LORD, as at the first, forty days and forty nights; I neither ate bread nor drank water, because of all your sin which you committed in doing wickedly in the sight of the LORD, to provoke Him to anger. 19[a]For I was afraid of the anger and hot displeasure with which the LORD was angry with you, to destroy you. [b]But the LORD listened to me at that time also. 20And the LORD was very angry with Aaron *and* would have destroyed him; so I prayed for Aaron also at the same time. 21Then I took your sin, the calf which you had made, and burned it with fire and crushed it *and* ground *it* very small, until it was as fine as dust; and I [a]threw its dust into the brook that descended from the mountain.

22“Also at [a]Taberah and [b]Massah and [c]Kibroth Hattaavah you *provoked the LORD to wrath. 23Likewise, [a]when the LORD sent you from Kadesh Barnea, saying, ‘Go up and possess the land which I have given you,’ then you rebelled against the commandment of the LORD your God, and [b]you did not believe Him nor obey His voice. 24[a]You have been rebellious against the LORD from the day that I knew you.

25[a]“Thus I *prostrated myself before the LORD; forty days and forty nights I kept prostrating myself, because the LORD had said He would destroy you. 26Therefore I prayed to the LORD, and said: ‘O Lord GOD, do not destroy Your people and [a]Your inheritance whom You have redeemed through Your greatness, whom You have brought out of Egypt with a mighty hand. [27]Remember Your servants, Abraham, Isaac, and Jacob; do not look on the stubbornness of this people, or on their wickedness or their sin, [28]lest the land from which You brought us should say, “Because the LORD was not able to bring them to the land which He promised them, and because He hated them, He has brought them out to kill them in the wilderness.” [29]Yet they *are* Your people and Your inheritance, whom You brought out by Your mighty power and by Your outstretched arm.’

Deuteronomy 10

The Second Pair of Tablets

[1]“At that time the LORD said to me, [*]‘Hew for yourself

two tablets of stone like the first, and come up to Me on the mountain and make yourself an [a]ark of wood. 2And I will write on the tablets the words that were on the first tablets, which you broke; and [a]you shall put them in the ark.’

3“So I made an ark of acacia wood, hewed two tablets of stone like the first, and went up the mountain, having the two tablets in my hand. 4And He wrote on the tablets according to the first writing, the Ten *Commandments, [a]which the LORD had spoken to you in the mountain from the midst of the fire in the day of the assembly; and the LORD gave them to me. 5Then I turned and [a]came down from the mountain, and [b]put the tablets in the ark which I had made; [c]and there they are, just as the LORD commanded me.”

6(Now the children of Israel journeyed from the wells of Bene Jaakan to Moserah, where Aaron [a]died, and where he was buried; and Eleazar his son ministered as priest in his [*]stead. 7[a]From there they journeyed to Gudgodah, and from Gudgodah to Jotbathah, a land of [*]rivers of water. 8At that time [a]the LORD [*]separated the tribe of Levi [b]to bear the ark of the covenant of the LORD, [c]to stand before the LORD to minister to Him and [d]to bless in His name, to this day. 9[a]Therefore Levi has no portion nor inheritance with his brethren; the LORD *is* his inheritance, just as the LORD your God promised him.)

10“As at the first time, [a]I stayed in the mountain forty days and forty nights; [b]the LORD also heard me at that time, *and* the LORD chose not to destroy you. 11[a]Then the LORD said to me, ‘Arise, begin *your* journey before the people, that they may go in and possess the land which I swore to their fathers to give them.’

The Essence of the Law

12“And now, Israel, [a]what does the LORD your God require of you, but to fear the LORD your God, to walk in all His ways and to [b]love Him, to serve the LORD your God with all your heart and with all your soul, 13*and* to keep the commandments of the LORD and His statutes which I command you today [a]for your [*]good? 14Indeed heaven and the highest heavens belong to the [a]LORD your God, *also* the earth with all that *is* in it. 15The LORD delighted only in your fathers, to love them; and He chose their [*]descendants after them, you above all peoples, as *it is* this day.

16 Therefore
circumcise the
foreskin of your
[a]heart, and be [b]stiff-
necked[*] no longer.
17 For the LORD your
God *is* [a]God of gods
and [b]Lord of lords,
the great God,
[c]mighty and
awesome, who
[d]shows no partiality
nor takes a bribe.
18 [a]He administers
justice for the
fatherless and the
widow, and loves the
stranger, giving him
food and clothing.
19 Therefore love the
stranger, for you
were strangers in the
land of Egypt. 20 [a]You
shall fear the LORD
your God; you shall
serve Him, and to
Him you shall hold
fast, and take oaths
in His name. 21 He *is*
your praise, and He
is your God, who has
done for you these
great and awesome
things which your
eyes have seen.
22 Your fathers went
down to Egypt with
seventy persons, and
now the LORD your
God has made you as

the stars of heaven in multitude.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Moses' Prayer for the Israelites

Therefore I prayed to the LORD, and said:

> *"O Lord GOD, do not destroy Your people and Your inheritance whom You have redeemed through Your*

greatness, whom You have brought out of Egypt with a mighty hand. Remember Your servants, Abraham, Isaac, and Jacob; do not look on the stubbornness of this people, or on their wickedness or their sin, lest the land from which

You brought us should say, ‘Because 1the LORD was not able to bring them to the land which He promised them, and because He hated them, He has brought them out to kill them in the wilderness.’ Yet they are

Your people and Your inheritance, whom You brought out by Your mighty power and by Your outstretched arm.”

—

DEUTERONOMY 9:26–29

Deuteronomy 11

Love and Obedience Rewarded

[1]“Therefore you shall love the LORD your God, and keep His charge, His statutes, His judgments, and His commandments always. [2]Know today that *I do* not *speak* with your children, who have not known and who have not

seen the [*]chastening of the LORD your God, His greatness and His mighty hand and His outstretched arm—3His signs and His acts which He did in the midst of Egypt, to Pharaoh king of Egypt, and to all his land; 4what He did to the army of Egypt, to their horses and their chariots: [a]how He made the waters of the Red Sea overflow them as they pursued you, and *how* the LORD has destroyed them to this day; 5[a]what He did for you in the wilderness until you came to this place; 6and what He did to Dathan and Abiram the sons of Eliab, the son of Reuben: how the earth opened its mouth and swallowed them up, their households, their tents, and all the substance that *was* in [*]their possession, in the midst of all Israel—7but your eyes have [a]seen every great [*]act of the LORD which

He did.

[8]“Therefore you shall keep every commandment which I command you today, that you may [a]be strong, and go in and possess the land which you cross over to possess, [9]and [a]that you may prolong *your* days in the land [b]which the LORD [*]swore to give your fathers, to them and their descendants, [c]‘a land flowing with milk and honey.’ [10]For the land which you go [1]to possess *is* not like the land of Egypt from which you have come, where you sowed your seed and watered *it* by foot, as a vegetable garden; [11][a]but the land which you cross over to possess *is* a land of hills and valleys, which drinks water from the rain of heaven, [12]a land for which the LORD your God cares; [a]the eyes of the LORD your God *are* always on it, from the beginning of the year to the

very end of the year.

13‘And it shall be that if you earnestly [*]obey My commandments which I command you today, to love the LORD your God and serve Him with all your heart and with all your soul,
14then [a]I[*] will give *you* the rain for your land in its season, [b]the early rain and the latter rain, that you may gather in your grain, your new wine, and your oil.
15[a]And I will send grass in your fields for your livestock, that you may [b]eat and be [*]filled.’
16“Take heed to yourselves, [a]lest your heart be deceived, and you turn aside and [b]serve other gods and worship them,
17lest [a]the LORD’s anger be aroused against you, and He [b]shut up the heavens so that there be no rain, and the land yield no produce, and [c]you perish quickly from the good land which the

LORD is giving you.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Awareness of Demonic Spirits

Demon spirits must have a door or gate that we open to allow them entrance into our lives. Evil spirits must honor our will and abide by guidelines spelled out in Scripture. They cannot enter our life by force. There must be legal permission when we live in disobedience, believe their lie, or when permission is granted by a curse. Perhaps the most important aspect of the warfare that we are engaged in is awareness. The Spiritual Warfare Basics here in Deuteronomy will give you a simple format that is easy to remember called *The Three Rs*. Like reading, ‘riting, and ‘rithmatic, these are some basic 1strategies for walking in the liberty that has been given by the Lord Jesus Christ.[*]

---

[*] Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 189–190.

18“Therefore [a]you shall [*]lay up these words of mine in your heart and in your [b]soul, and [c]bind them as a sign on your hand, and they shall be as frontlets between your eyes. 19[a]You shall teach them to your children, speaking of them when you sit in your house, when you walk by the way, when you lie down, and when you rise up. 20[a]And you shall write them on the doorposts of your house and on your gates, 21that [a]your days and the days of your children may be multiplied in the land of which the LORD swore to your fathers to give them, like [b]the days of the heavens above the earth.

22“For if [a]you carefully keep all these commandments which I command you to do—to love the LORD your God, to walk in all His ways, and [b]to hold fast to Him—23then the LORD will [a]drive out all these nations from before you, and you will [b]dispossess greater and mightier nations than yourselves. 24[a]Every place on which the sole of your foot treads shall be yours: [b]from the wilderness and Lebanon, from the river, the River

Euphrates, even to the [*]Western Sea, shall be your territory. 25No man shall be able to [a]stand [*]against you; the LORD your God will put the [b]dread of you and the fear of you upon all the land where you tread, just as He has said to you.

1

26[a]“Behold, I set before you today a blessing and a curse: 27[a]the blessing, if you obey the commandments of the LORD your God which I command you today; 28and the [a]curse, if you do not obey the commandments of the LORD your God, but turn aside from the way which I command you today, to go after other gods which you have not known. 29Now it shall be, when the LORD your God has brought you into the land which you go to possess, that you shall put the [a]blessing on Mount Gerizim and the [b]curse on Mount Ebal. [30]*Are* they not on the other side of the Jordan, toward the setting sun, in the land of the Canaanites who dwell in the plain opposite Gilgal, [a]beside the terebinth trees of Moreh? [31]For you will cross over the Jordan and go in to possess the land which the LORD your God is giving you, and you will possess it and dwell in it. [32]And you shall be careful to observe all the statutes and judgments which I set before you today.

Deut. 11:26

I choose blessing instead of cursing and life instead of death.

Deut. 11:27

I am blessed because I obey the commandments of the Lord.

Deuteronomy 12

A Prescribed Place of Worship

[1]“These [a]*are* the statutes and judgments which you shall be careful to observe in the land which the LORD God of your fathers is giving you to possess, [b]all[*] the days that you live on the earth. [2][a]You shall utterly destroy all the places where the nations which you shall dispossess served their gods, [b]on the high mountains and on the hills and under every green tree. [3]And [a]you shall

destroy their altars, break their *sacred* pillars, and burn their [*]wooden images with fire; you shall cut down the carved images of their gods and destroy their names from that place. 4You shall not [a]worship the LORD your God *with* such *things.*

5"But you shall seek the [a]place where the LORD your God chooses, out of all your tribes, to put His name for His [b]dwelling[*] place; and there you shall go. 6[a]There you shall take your burnt offerings, your sacrifices, your tithes, the heave offerings of your hand, your vowed offerings, your freewill offerings, and the [b]firstborn of your herds and flocks. 7And [a]there you shall eat before the LORD your God, and [b]you shall rejoice in [*]all to which you have put your hand, you and your households, in which the LORD your God has blessed you.

8“You shall not at all do as we are doing here today—[a]every man doing whatever *is* right in his own eyes—9for as yet you have not come to the [a]rest* and the inheritance which the LORD your God is giving you. 10But *when* you cross over the Jordan and dwell in the land which the LORD your God is giving you to inherit, and He gives you [a]rest from all your enemies round about, so that you dwell in safety, 11then there will be the place where the LORD your God chooses to make His name abide. There you shall bring all that I command you: your burnt offerings, your sacrifices, your tithes, the heave offerings of your hand, and all your choice offerings which you vow to the LORD. 12And [a]you shall rejoice before the LORD your God, you and your sons and your daughters, your male and female servants, and the [b]Levite who *is* within you1r gates, since he has no portion nor inheritance with you. [13]Take heed to yourself that you do not offer your burnt offerings in every place that you see; [14]but in the place which the LORD chooses, in one of your tribes, there you shall offer your burnt offerings, and there you shall do all that I command you.

[15]“However, [a]you may slaughter and eat meat within all your gates, whatever your heart desires, according to the blessing of the LORD your God which He has given you; [b]the unclean and the clean may eat of it, [c]of the gazelle and the deer alike. [16][a]Only you shall not eat the blood; you shall pour it on the earth like water. [17]You may not eat

within your gates the tithe of your grain or your new wine or your oil, of the firstborn of your herd or your flock, of any of your offerings which you vow, of your freewill offerings, or of the *heave offering of your hand. [18]But you must eat them before the LORD your God in the place which the LORD your God chooses, you and your son and your daughter, your male servant and your female servant, and the Levite who *is* within your gates; and you shall rejoice before the LORD your God in *all to which you put your hands. [19]*Take heed to yourself that you do not forsake the Levite as long as you live in your land.

[20]"When the LORD your God [a]enlarges your border as He has promised you, and you say, 'Let me eat meat,' because you long to eat meat, you may eat as much

meat as your heart desires. 21 If the place where the LORD your God chooses to put His name is too far from [a]you, then you may slaughter from your herd and from your flock which the LORD has given you, just as I have commanded you, and you may eat within your gates as much as your heart desires. 22 Just as the gazelle and the deer are eaten, so you may eat them; the unclean and the clean alike may eat them. 23 Only be sure that you do not eat the blood, [a]for the blood *is* the life; you may not eat the life with the meat. 24 You shall not eat it; you shall pour it on the earth like water. 25 You shall not eat it, [a]that it may go well with you and your children after you, [b]when you do *what is* right in the sight of the LORD. 26 Only the [a]holy things which you have, and your vowed offerings, you shall take and go to the place which the LORD chooses. 27And [a]you shall offer your burnt offerings, the meat and the blood, on the altar of the LORD your God; and the blood of your sacrifices shall be poured out on the altar of the LORD your God, and you shall eat the meat. 28Observe and obey all these words which I command you, [a]that it may go well with you and your children after you forever, when you do *what is* good and right in the sight of the LORD your God.

Beware of False Gods

29“When [a]the LORD your God cuts off from before you the nations which you go to dispossess, and you displace them and dwell in their land, 30take heed to yourself that you are not ensnared to follow them, after they are destroyed from before you, and that you do not inquire after their gods, saying, ‘How did these nations serve their gods? I also will do likewise.’ 31[a]You shall not worship the LORD your God in that way; for every [*]abomination to the LORD which He hates they have done to their gods; for [b]they burn even their sons and daughters in the fire to their gods.

32“Whatever I command you, be careful to observe it; [a]you shall not add to it nor take away from it.

Deuteronomy 13

Punishment of Apostates

1“If there arises among you a prophet or a [a]dreamer of dreams, [b]and he gives you a sign or a wonder, 2and [a]the sign or the wonder comes to pass, of which he spoke to you, saying, ‘Let us go after other gods’—which you hav1e not known—'and let us serve them,' 3you shall not listen to the words of that prophet or that dreamer of dreams, for the LORD your God [a]is testing you to know whether you love the LORD your God with all your heart and with all your soul. 4You shall [a]walk* after the LORD your God and fear Him, and keep His commandments and obey His voice; you shall serve Him and [b]hold fast to Him. 5But [a]that prophet or that dreamer of dreams shall be put to death, because he has spoken in order to turn *you* away from the LORD your God, who brought you out of the land of Egypt and redeemed you from the house of bondage, to entice you from the way in which the LORD your God commanded you to walk. [b]So you shall *put away the evil from your midst.

6[a]"If your brother,

the son of your mother, your son or your daughter, [b]the wife [*]of your bosom, or your friend [c]who is as your own soul, secretly entices you, saying, ‘Let us go and serve other gods,’ which you have not known, neither you nor your fathers, 7of the gods of the people which *are* all around you, near to you or far off from you, from *one* end of the earth to the *other* end of the earth, 8you shall [a]not [*]consent to him or listen to him, nor shall your eye pity him, nor shall you spare him or conceal him; 9but you shall surely kill him; your hand shall be first against him to put him to [a]death, and afterward the hand of all the people. 10And you shall stone him with stones until he dies, because he sought to entice you away from the LORD your God, who brought you out of the land of Egypt, from the house of bondage. 11So all Israel shall hear and [a]fear, and not again do such wickedness as this among you.

12[a]“If you hear someone in one of your cities, which the LORD your God gives you to dwell in, saying, 13*‘Corrupt men have gone out from among you and enticed the inhabitants of their city, saying, “Let us go and serve other gods” ’—which you have not known—14then you shall inquire, search out, and ask diligently. And *if it is* indeed true *and* certain *that* such an *abomination was committed among you, 15you shall surely strike the inhabitants of that city with the edge of the sword, utterly destroying it, all that is in it and its livestock—with the edge of the sword. 16And you shall gather all its plunder into the middle of the street, and *completely [a]burn with fire the city and all its plunder, for the LORD your God. It shall be [b]a [*]heap forever; it shall not be built again. 17[a]So none of the accursed things shall remain in your hand, that the LORD may [b]turn from the fierceness of His anger and show you mercy, have compassion on you and [*]multiply you, just as He swore to your fathers, 18because you have listened to the voice of the LORD your God, [a]to keep all His commandments which I command you today, to do *what is* right in the eyes of the LORD your God.

Deuteronomy 14

Improper Mourning

1"You *are* [a]the children of the LORD your God; [b]you shall not cut yourselves nor [*]shave the front of your head for the dead. 2[a]For you *are* a holy people to the LORD your God, and the LORD has chosen you to be a people for Himself, a special treasure above all the peoples who *are* on the face of the earth.

Clean and Unclean Meat

3[a]“You shall not eat any *detestable thing. 4[a]These *are* the animals which you may eat: the ox, the sheep, the goat, 5the deer, the gazelle, the roe deer, the wild goat, the *mountain goat, the antelope, and the mountain sheep. 6And you may eat every animal with cloven hooves, having the hoof split into two parts, *and that* chews the cud, among the animals. 7Nevertheless, of those that chew the cud or have cloven hooves, you shall not eat, *such as* these: the camel, the hare, and the rock hyrax; for they chew the cud but do not have cloven hooves; they *are* unclean for you. 8Also the swine is unclean for you, because it has cloven hooves, yet *does* not *chew* the cud; you shall not eat their flesh [a]or touch their dead carcasses.

9[a]“These you may eat of all that *are* in the waters: you may eat all that have fins and scales. 10And whatever does not have fins and scales you shall not eat; it *is* unclean for you.

11“All clean birds you may eat. 12[a]But these you shall not eat: the eagle, the vulture, the buzzard, 13the red kite, the falcon, and the kite after their kinds; 14every raven after its kind; 15the ostrich, the short-eared owl, the sea gull, and the hawk after their kinds; 16the little owl, the screech owl, the white owl, 17the jackdaw, the carrion vulture, the fisher owl, 18the stork, the heron after its kind, and the hoopoe and the bat.

19“Also [a]every *creeping thing that flies is unclean for you; [b]they shall not be eaten.

20“You may eat all

clean birds.

21[a]“You shall not eat anything that dies *of itself;* you may give it to the alien who *is* within your gates, that he may eat it, or you may sell it to a foreigner; [b]for you *are* a holy people to the LORD your God.

“ [c]You [1]shall not boil a young goat in its mother’s milk.

Tithing Principles

22[a]“You shall truly tithe all the increase of your grain that the field produces year by year. 23[a]And you shall eat before the LORD your God, in the place where He chooses to make His name abide, the tithe of your grain and your new wine and your oil, of [b]the firstborn of your herds and your flocks, that you may learn to fear the LORD your God always. 24But if the journey is too long for you, so that you are not able to carry *the tithe, or* [a]if the place where the

LORD your God chooses to put His name is too far from you, when the LORD your God has blessed you, 25then you shall exchange *it* for money, take the money in your hand, and go to the place which the LORD your God chooses. 26And you shall spend that money for whatever your heart desires: for oxen or sheep, for wine or similar drink, for whatever your heart desires; you shall eat there before the LORD your God, and you shall [a]rejoice, you and your household. 27You shall not [*]forsake the [a]Levite who *is* within your gates, for he has no part nor inheritance with you.

28[a]"At the end of *every* third year you shall bring out the [b]tithe of your produce of that year and store *it* up within your gates. 29And the Levite, because he has no portion nor inheritance with you, and the stranger and the fatherless and the widow who *are* within your gates, may come and eat and be satisfied, that the LORD your God may bless you in all the work of your hand which you do.

Deuteronomy 15

Debts Canceled Every Seven Years

1“At the end of [a]*every* seven years you shall grant a *release *of debts.* 2And this *is* the form of the release: Every creditor who has lent *anything* to his neighbor shall *release *it;* he shall not *require *it* of his neighbor or his brother, because it is called the LORD’s release. 3Of a foreigner you may require *it;* but you shall give up your claim to what is owed by your brother, 4except when there may be no poor among you; for the LORD will greatly [a]bless you in the land which the

LORD your God is giving you to possess *as* an inheritance—5only if you carefully obey the voice of the LORD your God, to observe with care all these commandments which I command you today. 6For the LORD your God will bless you just as He promised you; [a]you shall lend to many nations, but you shall not borrow; you shall reign over many nations, but they shall not reign over you.

Generosity to the Poor

7"If there is among you a poor man of your brethren, within any of the *gates in your land which the LORD your God is giving you, [a]you shall not harden your heart nor shut your hand from your poor brother, 8but [a]you shall *open your hand wide to him and willingly lend him sufficient for his need, whatever he needs. 9Beware lest there be a wicked thought in your heart, saying, 'The seventh year, the year of release, is at hand,' and your [a]eye be evil against your poor brother and you give him nothing, and [b]he cry out to the LORD against you, and [c]it become sin among you. 10You shall surely give to him, and [a]your heart should not be grieved when you give to him, because [b]for this thing the LORD your God will bless you in all your works and in all to which you put your hand. 11For [a]the poor will never cease from the land; therefore I command you, saying, 'You shall [*]open your hand wide to your brother, to your poor and your needy, in your land.'

The Law Concerning Bondservants

12[a]"If your brother, a Hebrew man, or a Hebrew woman, is [b]sold to you and serves you six years, then in the seventh year you shall let him go free from you. 13And when you [*]send him away free from you, you shall not let him go away empty-handed; 14you shall supply him liberally from your flock, from your threshing floor, and from your winepress. *From what* the LORD your God has [a]blessed you with, you shall give to him. 15[a]You shall remember that you were a slave in the land of Egypt, and the LORD your God redeemed you; therefore I command you this thing today. 16[a]And if it happens that he says to you, 'I will not go away from you,' because he loves you and your house, since he prospers with you, 17then you shall take an awl and thrust *it* through his ear to the door, and he shall be your servant forever. Also to your female servant you shall do likewise. 18It shall not seem hard to you when you send him away free from you; for he has been worth [a]a double hired servant in serving you six years. Then the LORD your God will bless you in all that you do.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Recognize

Recognizing the enemy and his plan of attacks is imperative in this fight.

- *Aw* to Sa int an pu fo yo life

- *Ale*
—
Be
ale
to
his
tac
anc
sch
tha
wo
bef
Wh
gav
der
acc
pre
is
lik
the
me
the
wil
try
aga
Do
mi
the
enc
bec
the
wa
is
rea

- *Acl*
the
Ho

Spi
as
yo
dai
hel
an
He
wi
giv
yo
spi
dis

---

* Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 190, 195.

The Law Concerning Firstborn Animals

19[a]“All the firstborn males that come from your herd and your flock you shall *sanctify to the LORD your God; you shall do no work with the firstborn of your herd, nor shear the firstborn of your flock. 20[a]You and your household shall eat *it* before the LORD your God year by year in the place which the LORD chooses. 21[a]But if there is a defect in it, *if it is* lame or blind *or has* any serious defect, you shall not sacrifice it to the LORD your God. 22You may eat it within your gates; [a]the unclean and the clean *person* alike *may eat it,* as *if it were* a gazelle or a deer. 23Only you shall not eat its blood; you shall pour it on the ground like water.

Deuteronomy 16

The Passover Reviewed

1“Observe the [a]month of Abib, and keep the Passover to the LORD your God, for [b]in the month of Abib the LORD your God brought you out of Egypt by night. 2Therefore you shall sacrifice the Passover to the LORD your God, from the flock and [a]the herd, in the [b]place where the LORD chooses to put

His name. 3You shall eat no leavened bread with it; [a]seven days you shall eat unleavened bread with it, *that is,* the bread of affliction (for you came out of the land of Egypt in haste), that you may [b]remember the day in which you came out of the land of Egypt all the days of your life. 4[a]And no leaven shall be seen among you in all your territory for seven days, nor shall *any* of the meat which you sacrifice the first day at twilight remain overnight until [b]morning.

5“You may not sacrifice the Passover within any of your gates which the LORD your God gives you; 6but at the place where the LORD your God chooses to make His name abide, there you shall sacrifice the Passover [a]at twilight, at the going down of the sun, at the time you came out of Egypt.

7And you shall roast and eat *it* in the place which the LORD your God chooses, and [a]in the morning you shall turn and go to your tents. 8Six days you shall eat unleavened bread, and [a]on the seventh day there *shall be* a *sacred assembly to the LORD your God. You shall do no work *on it.*

The Feast of Weeks Reviewed

9"You shall count seven weeks for yourself; begin to count the seven weeks from *the time* you begin *to put* the sickle to the grain. 10Then you shall keep the [a]Feast of Weeks to the LORD your God with the tribute of a freewill offering from your hand, which you shall give [b]as the LORD your God blesses you. 11[a]You shall rejoice before the LORD your God, you and your son and your daughter, your male servant and your female servant, the Levite who *is* within your gates, the stranger and the fatherless and the widow who *are* among you, at the place where the LORD your God chooses to make His name abide. 12[a]And you shall remember that you were a slave in Egypt, and you shall be careful to observe these statutes.

The Feast of Tabernacles Reviewed

13[a]"You shall observe the Feast of Tabernacles seven days, when you have gathered from your threshing floor and from your winepress. 14And [a]you shall rejoice in your feast, you and your son and your daughter, your male servant and your female servant and the Levite, the stranger and the fatherless and the widow, who *are* within your [*]gates. 15[a]Seven days you shall keep a sacred feast to the LORD your God in the place which the LORD [1]chooses, because the LORD your God will bless you in all your produce and in all the work of your hands, so that you surely rejoice.

16[a]“Three times a year all your males shall appear before the LORD your God in the place which He chooses: at the Feast of Unleavened Bread, at the Feast of Weeks, and at the Feast of Tabernacles; and [b]they shall not appear before the LORD empty-handed. 17Every man *shall give* as he is able, [a]according to the blessing of the LORD your God which He has given you.

Justice Must Be Administered

18“You shall appoint [a]judges and officers in all your [*]gates, which the LORD your God gives you, according to your tribes, and they shall judge the people with just judgment. 19[a]You shall not pervert justice; [b]you shall not *show partiality, [c]nor take a bribe, for a bribe blinds the eyes of the wise and *twists the words of the righteous. 20You shall follow what is altogether just, that you may [a]live and inherit the land which the LORD your God is giving you.

21[a]"You shall not plant for yourself any tree, as a *wooden image, near the altar which you build for yourself to the LORD your God. 22[a]You shall not set up a *sacred* pillar, which the LORD your God hates.

Deuteronomy 17

1"You [a]shall not sacrifice to the LORD your God a bull or sheep which has any *blemish *or* defect, for that *is* an *abomination to the LORD your God.

2[a]"If there is found among you, within any of your *gates which the LORD your God gives you, a man or a woman who has been wicked in the sight of the LORD your God, [b]in transgressing His covenant, 3who has gone and served other gods and worshiped them, either [a]the sun or moon or any of the host of heaven, [b]which I have not commanded, 4[a]and it is told you, and you hear *of it,* then you shall inquire diligently. And if *it is* indeed true *and* certain that such an [*]abomination has been committed in Israel, 5then you shall bring out to your gates that man or woman who has committed that wicked thing, and [a]shall stone [b]to death that man or woman with stones. 6Whoever is deserving of death shall be put to death on the testimony of two or three [a]witnesses; he shall not be put to death on the testimony of one witness. 7The hands of the witnesses shall be the first against him to put him to death, and afterward the hands of all the people. So you shall put away the evil from among [a]you.

8[a]“If a matter arises which is too hard for you to judge, between degrees of guilt for bloodshed, between one judgment or another, or between one punishment or another, matters of controversy within your gates, then you shall arise and go up to the [b]place which the LORD your God chooses. 9And [a]you shall come to the priests, the Levites, and [b]to the judge *there* in those days, and inquire *of them;* [c]they shall pronounce upon you the sentence of judgment. 10You shall do according to the sentence which they pronounce upon you in that place which the LORD chooses. And you shall be careful to do according to all that they order you. 11According to the sentence of the law in which they instruct you, according to the judgment which they tell you, you shall do; you shall not turn aside *to* the right hand or *to* the left from the sentence which they pronounce upon you. 12Now [a]the man who acts presumptuously and will not heed the priest who stands to minister there before the LORD your God, or the judge, that man shall die. So you shall put away the evil from Israel. 13[a]And all the people shall hear and fear, and no longer act presumptuously.

Principles Governing Kings

14"When you come to the land which the LORD your God is giving you, and possess it and dwell in it, and say, [a]'I will set a king over me like all the nations that *are* around me,' 15you shall surely set a king over you [a]whom the LORD your God chooses; *one* [b]from among your brethren you shall set as king over you; you may not set a foreigner over you, who *is* not your brother. 16But he shall not multiply [a]horses for himself, nor cause the people [b]to return to Egypt to multiply horses, for [c]the LORD has said to you, [d]'You shall not return that way again.' 17Neither shall he multiply wives for himself, lest his heart turn away; nor shall he greatly multiply silver and [a]gold for himself.

18"Also it shall be, when he sits on the throne of his kingdom, that he shall write for himself a copy of this law in a book, from *the one* [a]before the priests, the Levites. 19And [a]it shall be with him, and he shall read it all the days of his life, that he may learn to fear the LORD his God and be careful to observe all the words of this law and these statutes, 20that his heart may not [*]be lifted above his brethren, that he [a]may not turn aside from the commandment *to* the right hand or *to* the left, and that he may [*]prolong *his* days in his kingdom, he and his children in the midst of Israel.

Deuteronomy 18

The Portion of the Priests and Levites

1“The priests, the Levites—all the tribe of Levi—shall have [*]no part nor [a]inheritance with Israel; they shall eat the offerings of the LORD made by fire, and His portion. 2Therefore they shall have no inheritance among their brethren; the LORD is their inheritance, as He said to them.

3“And this shall be the priest’s [a]due[*] from the people, from those who offer a sacrifice, whether *it is* bull or sheep: they shall give to the priest the shoulder, the cheeks, and the stomach. 4[a]The firstfruits of your grain and your new wine and your oil, and the first of the fleece of your sheep, you shall give him. 5For [a]the LORD your God has chosen him out of all your tribes [b]to stand to minister in the name of the LORD, him and his sons forever.

6“So if a Levite comes from any of your [*]gates, from where he [a]dwells among all Israel, and comes with all the desire of his mind [b]to the place which the LORD chooses, 7then he may serve in the name of the LORD his God [a]as all his brethren the Levites *do,* who stand there before the LORD. 8They shall have equal [a]portions to eat, besides what comes from the sale of his inheritance.

Avoid Wicked

Customs

9“When you come into the land which the LORD your God is giving you, [a]you shall not learn to follow the [*]abominations of those nations. 10There shall not be found among you *anyone* who makes his son or his daughter [a]pass[*] through the fire, [b]*or one* who practices witchcraft, *or* a soothsayer, or one who interprets omens, or a sorcerer, 11[a]or [b]one who conjures spells, or a medium, or a spiritist, or one who calls up the dead. 12For all who do these things *are* [*]an abomination to the LORD, and [a]because of these abominations the LORD your God drives them out from before you. 13You shall be [*]blameless before the LORD your God. 14For these nations which you will dispossess listened to soothsayers and diviners; but as for you, the LORD your God has not [*]appointed such for you.

A New Prophet Like Moses

15[a]“The LORD your God will raise up for you a Prophet like me from your midst, from your brethren. Him you shall hear, 16according to all you desired of the LORD your God in Horeb [a]in the day of the assembly, saying, [b]‘Let me not hear again the voice of the LORD my God, nor let me see this great fire anymore, lest I die.’

17“And the LORD said to me: [a]‘What they have spoken is good. 18[a]I will raise up for them a Prophet like you from among their brethren, and [b]will put My words in His mouth, [c]and He shall speak to them all that I command Him. 19[a]And it shall be *that* whoever will not hear My words, which He speaks in My name, I will require *it* of him. 20But [a]the prophet who presumes to speak a word in My name, which I have not commanded him to speak, or [b]who speaks in the name of other gods, that prophet shall die.’ 21And if you say in your heart, ‘How shall we know the word which the LORD has not spoken?’—22[a]when a prophet speaks in the name o1f the LORD, [b]if the thing does not happen or come to pass, that *is* the thing which the LORD has not spoken; the prophet has spoken it [c]presumptuously; you shall not be afraid of him.

Deuteronomy 19

Three Cities of Refuge

1“When the LORD your God [a]has cut off the nations whose land the LORD your God is giving you, and you dispossess them and dwell in their cities and in their houses, 2[a]you shall separate three cities for yourself in the midst of your land which the LORD your God is giving you to possess. 3You shall prepare roads for yourself, and divide into three parts the territory of your land which the LORD your God is giving you to inherit, that any manslayer may flee there.

4“And [a]this *is* the case of the manslayer who flees there, that he may live: Whoever kills his neighbor [*]unintentionally, not having hated him in time past—5as when *a man* goes to the woods with his neighbor to cut timber, and his hand swings a stroke with the ax to cut down the tree, and the head slips from the handle and strikes his neighbor so that he dies—he shall flee to one of these cities and live; 6[a]lest the avenger of blood, while his anger is hot, pursue the manslayer and overtake him, because the way is long, and kill him, though he *was* not deserving of death, since he had not hated the victim in time past. [7]Therefore I command you, saying, ‘You shall separate three cities for yourself.’

[8]“Now if the LORD your God [a]enlarges your territory, as He swore to [b]your fathers, and gives you the land which He promised to give to your fathers, [9]and if you keep all these commandments and do them, which I command you today, to love the LORD your God and to walk always in His ways, [a]then you shall add three more cities for yourself besides these three, [10][a]lest innocent blood be shed in the midst of your land which the LORD yo1ur God is giving you *as* an inheritance, and *thus*

guilt of bloodshed be upon you.

11“But [a]if anyone hates his neighbor, lies in wait for him, rises against him and strikes him mortally, so that he dies, and he flees to one of these cities, 12then the elders of his city shall send and bring him from there, and deliver him over to the hand of the avenger of blood, that he may die. 13[a]Your eye shall not pity him, [b]but you shall *put away *the guilt of* innocent blood from Israel, that it may go well with you.

Property Boundaries

14[a]“You shall not remove your neighbor’s landmark, which the men of old have set, in your inheritance which you will inherit in the land that the LORD your God is giving you to possess.

The Law Concerning Witnesses

15[a]“One witness shall not rise against a man concerning any iniquity or any sin that he commits; by the mouth of two or three witnesses the matter shall be established. 16If a false witness [a]rises against any man to testify against him of wrongdoing, 17then both men in the controversy shall stand before the LORD, [a]before the priests and the judges who serve in those days. 18And the judges shall make careful inquiry, and indeed, *if* the witness *is* a false witness, who has testified falsely against his brother, 19[a]then you shall do to him as he thought to have done to his brother; so [b]you shall put away the evil from among you. 20[a]And those who remain shall hear and fear, and hereafter they shall not again commit such evil among you. 21[a]Your eye shall not pity: [b]life *shall be* for life, eye for eye, tooth for tooth, hand for hand, foot for foot.

Deuteronomy 20

Principles Governing Warfare

1“When you go out to battle against your enemies, and see [a]horses and chariots *and* people more numerous than you, do not be [b]afraid of them; for the LORD your God *is* [c]with you, who brought you up from the land of Egypt. 2So it shall be, when you are on the verge of battle, that the priest shall approach and speak to the people. 3And he shall say to them, ‘Hear, O Israel: Today you are on the verge of battle with your enemies. Do not let your heart faint, do not be afraid, and do not tremble or be terrified because of them; 4for the LORD your God *is* He who goes with you, [a]to fight for you against your enemies, to save you.’

5“Then the officers shall speak to the people, saying: ‘What man *is there* who has built a new house and has not [a]dedicated it? Let him go and return to his house, lest he die in the battle and another man dedicate it. [6]Also what man *is there* who has planted a vineyard and has not eaten of it? Let him go and return to his house, lest he die in the battle and another man eat of it. [7][a]And what man *is there* who is betrothed to a woman and has not married her? Let him go and return to his house, lest he die in the battle and another man marry her.’

[8]“The officers shall speak further to the people, and say, [a]‘What man *is there who is* fearful and fainthearted? Let him go and return to his house, [*]lest the heart of his brethren faint like his heart.’ [9]And so it shall be, when the officers have finished speaking to

the people, that they shall make captains of the armies to lead the people.

10“When you go near a city to fight against it, [a]then proclaim an offer of peace to it. 11And it shall be that if they accept your offer of peace, and open to you, then all the people *who are* found in it shall be placed under tribute to you, and serve you. 12Now if *the city* will not make peace with you, but makes war against you, then you shall besiege it. 13And when the LORD your God delivers it into your hands, [a]you shall strike every male in it with the edge of the sword. 14But the women, the little ones, [a]the livestock, and all that is in the city, all its spoil, you shall plunder for yourself; and [b]you shall eat the enemies’ plunder which the LORD your God gives you. 15Thus you shall do to all the cities *which* *are* very far from you, which *are* not of the cities of these nations.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Resist

Satan is a thief, and a thief must be resisted! The promise is that if you resist the devil, he will flee from you (James 4:7). It is your obedience to the Lord Jesus in submission that enriches your authority to resist.

- *Ar you* Pu on the wh arr of Go (Ep 6:1 12

- *Ac imr* Re it is *you* res to res Jes

alr
did
His
par
for
you
He
has
giv
you
aut
in
His
nar

- *Att*
to
det
Be
spe
wit
you
cor
in
Jes
Ch
nar
Bir
the
wit
aut

- *Ag*
Be
the
agg
Ha
dor

all to sta sta in the po of the Lor Do bac do Do bac up *

16“But [a]of the cities of these peoples which the LORD your God gives you *as* an inheritance, you shall let nothing that breathes remain alive, 17but you shall utterly destroy them: the Hittite and the

---

* Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 193, 195.

Amorite and the Canaanite and the Perizzite and the Hivite and the Jebusite, just as the LORD your God has commanded you, 18lest [a]they teach you to do acc1ording to all their [*]abominations which they have done for their gods, and you [b]sin against the LORD your God.

19“When you besiege a city for a long time, while making war against it to take it, you shall not destroy its trees by wielding an ax against them; if you can eat of them, do not cut them down to use in the siege, for the tree of the field *is* man’s *food.* 20Only the trees which you know *are* not trees for food you may destroy and cut down, to build siegeworks against the city that makes war with you, until it is subdued.

Deuteronomy 21

The Law Concerning

Unsolved Murder

1“If *anyone* is found slain, lying in the field in the land which the LORD your God is giving you to possess, *and* it is not known who killed him, 2then your elders and your judges shall go out and measure *the distance* from the slain man to the surrounding cities. 3And it shall be *that* the elders of the city nearest to the slain man will take a heifer which has not been worked *and* which has not pulled with a [a]yoke. 4The elders of that city shall bring the heifer down to a valley with flowing water, which is neither plowed nor sown, and they shall break the heifer’s neck there in the valley. 5Then the priests, the sons of Levi, shall come near, for [a]the LORD your God has chosen them to minister to Him and to bless in the name of the LORD; [b]by their word every controversy and every [*]assault shall be *settled.* 6And all the elders of that city nearest to the slain *man* [a]shall wash their hands over the heifer whose neck was broken in the valley. 7Then they shall answer and say, ‘Our hands have not shed this blood, nor have our eyes seen *it.* 8Provide atonement, O LORD, for Your people Israel, whom You have redeemed, [a]and do not lay innocent blood to the charge of Your people Israel.’ And atonement shall be provided on their behalf for the blood. 9So [a]you shall put away the *guilt of* innocent blood from among you when you do *what is* right in the sight of the LORD.

Female Captives

10“When you go out to war against your enemies, and the LORD your God delivers them into your hand, and you take them captive, [11]and you see among the captives a beautiful woman, and desire her and would take her for your [a]wife, [12]then you shall bring her home to your house, and she shall [a]shave her head and trim her nails. [13]She shall put off the clothes of her captivity, remain in your house, and [a]mourn her father and her mother a full month; after that you may go in to her and be her husband, and she shall be your wife. [14]And it shall be, if you have no delight in her, then you shall set her free, but you certainly shall not sell her for money; you shall not treat her brutally, because you have [a]humbled her.

Firstborn Inheritance Rights

[15]"If a man has two wives, one loved [a]and the other unloved, and they have borne him children, *both* the loved and the

unloved, and *if* the firstborn son is of her who is unloved, 16then it shall be, [a]on the day he bequeaths his possessions to his sons, *that* he must not bestow firstborn status on the son of the loved wife in preference to the son of the unloved, the *true* firstborn. 17But he shall acknowledge the son of the unloved wife *as* the firstborn [a]by giving him a double portion of all that he has, for he [b]*is* the beginning of his strength; [c]the right of the firstborn *is* his.

The Rebellious Son

18“If a man has a stubborn and rebellious son who will not obey the voice of his father or the voice of his mother, and *who,* when they have chastened him, will not heed them, 19then his father and his mother shall take hold of him and bring him out to the elders of his city, to the gate of his city.

20And they shall say to the elders of his city, ‘This son of ours is stubborn and rebellious; he will not obey our voice; he is a glutton and a drunkard.’ 21Then all the men of his city shall stone him to death with stones; [a]so you shall put away the evil from among you, 1[b]and all Israel shall hear and fear.

Miscellaneous Laws

22“If a man has committed a sin [a]deserving of death, and he is put to death, and you hang him on a tree, 23[a]his body shall not remain overnight on the tree, but you shall surely bury him that day, so that [b]you do not defile the land which the LORD your God is giving you *as* an inheritance; for [c]he who is hanged *is* accursed of God.

Deuteronomy 22

1“You [a]shall not see your brother’s ox or his sheep going astray, and [*]hide yourself from them;

you shall certainly bring them back to your brother. 2And if your brother *is* not near you, or if you do not know him, then you shall bring it to your own house, and it shall remain with you until your brother seeks it; then you shall restore it to him. 3You shall do the same with his donkey, and so shall you do with his garment; with any lost thing of your brother's, which he has lost and you have found, you shall do likewise; you *must not hide yourself.

4[a]"You shall not see your brother's donkey or his ox fall down along the road, and hide yourself from them; you shall surely help him lift *them* up again.

5"A woman shall not wear anything that pertains to a man, nor shall a man put on a woman's garment, for all who do so *are* *an abomination to the LORD your God.

[6]“If a bird’s nest
happens to be before
you along the way, in
any tree or on the
ground, with young
ones or eggs, with
the mother sitting on
the young or on the
eggs, [a]you shall not
take the mother with
the young; [7]you shall
surely let the mother
go, and take the
young for yourself,
[a]that it may be well
with you and *that*
you may prolong
your days.

[8]“When you build
a new house, then
you shall make a
parapet for your roof,
that you may not
bring guilt of
bloodshed on your
househ1old if anyone
falls from it.

[9][a]“You shall not
sow your vineyard
with different kinds
of seed, lest the yield
of the seed which
you have sown and
the fruit of your
vineyard be defiled.

[10][a]“You shall not
plow with an ox and
a donkey together.

[11][a]“You shall not
wear a garment of

different sorts, *such as* wool and linen mixed together.

12“You shall make [a]tassels on the four corners of the clothing with which you cover *yourself.*

Laws of Sexual Morality

13“If any man takes a wife, and goes in to her, and [a]detests her, 14and charges her with shameful conduct, and brings a bad name on her, and says, ‘I took this woman, and when I came to her I found she *was* not a virgin,’ 15then the father and mother of the young woman shall take and bring out *the evidence of* the young woman’s virginity to the elders of the city at the gate. 16And the young woman’s father shall say to the elders, ‘I gave my daughter to this man as wife, and he detests her. 17Now he has charged her with shameful conduct, saying, “I found your daughter *was* not a virgin,” and yet these *are the evidences of* my daughter's virginity.' And they shall spread the cloth before the elders of the city. 18Then the elders of that city shall take that man and punish him; 19and they shall fine him one hundred *shekels* of silver and give *them* to the father of the young woman, because he has brought a bad name on a virgin of Israel. And she shall be his wife; he cannot divorce her all his days.

20"But if the thing is true, *and evidences of* virginity are not found for the young woman, 21then they shall bring out the young woman to the door of her father's house, and the men of her city shall stone her to death with [a]stones, because she has [b]done a disgraceful thing in Israel, to play the harlot in her father's house. [c]So you shall [*]put away the evil from among you.

22[a]“If[1] a man is found lying with a woman married to a husband, then both of them shall die—the man that lay with the woman, and the woman; so you shall put away the evil from Israel.

23“If a young woman *who is* a virgin is [a]betrothed to a husband, and a man finds her in the city and lies with her, 24then you shall bring them both out to the gate of that city, and you shall stone them to death with stones, the young woman because she did not cry out in the city, and the man because he [a]humbled his neighbor’s wife; [b]so you shall put away the evil from among you.

25“But if a man finds a betrothed young woman in the countryside, and the man forces her and lies with her, then only the man who lay with her shall die. 26But you shall do nothing to the young woman; *there is* in the young woman no sin *deserving* of death, for just as when a man rises against his neighbor and kills him, even so *is* this matter. 27For he found her in the countryside, *and* the betrothed young woman cried out, but *there was* no one to save her.

28[a]“If a man finds a young woman *who is* a virgin, who is not betrothed, and he seizes her and lies with her, and they are found out, 29then the man who lay with her shall give to the young woman’s father [a]fifty *shekels* of silver, and she shall be his wife [b]because he has humbled her; he shall not be permitted to divorce her all his days.

30[a]“A man shall not take his father’s wife, nor [b]uncover his father’s bed.

Deuteronomy 23

Those Excluded

from the Congregation

1“He who is emasculated by crushing or mutilation shall [a]not enter the assembly of the LORD.

2“One of illegitimate birth shall not enter the assembly of the LORD; even to the tenth generation none of his *descendants* shall enter the assembly of the LORD.

3[a]“An Ammo1nite or Moabite shall not enter the assembly of the LORD; even to the tenth generation none of his *descendants* shall enter the assembly of the LORD forever,
4[a]because they did not meet you with bread and water on the road when you came out of Egypt, and [b]because they hired against you Balaam the son of Beor from Pethor of [*]Mesopotamia, to curse you.
5Nevertheless the LORD your God would not listen to

Balaam, but the LORD your God turned the curse into a blessing for you, because the LORD your God [a]loves you. 6[a]You shall not seek their peace nor their prosperity all your days forever.

7“You shall not abhor an Edomite, [a]for he *is* your brother. You shall not abhor an Egyptian, because [b]you were an alien in his land. 8The children of the third generation born to them may enter the assembly of the LORD.

Cleanliness of the Campsite

9“When the army goes out against your enemies, then keep yourself from every wicked thing. 10[a]If there is any man among you who becomes unclean by some occurrence in the night, then he shall go outside the camp; he shall not come inside the camp. 11But it shall be, when evening comes, that [a]he shall wash with water; and when the sun sets, he may come into the camp.

12“Also you shall have a place outside the camp, where you may go out; 13and you shall have an implement among your equipment, and when you sit down outside, you shall dig with it and turn and cover your refuse. 14For the LORD your God [a]walks in the midst of your camp, to deliver you and give your enemies over to you; therefore your camp shall be holy, that He may see no unclean thing among you, and turn away from you.

Miscellaneous Laws

15[a]“You shall not give back to his master the slave who has escaped from his master to you. 16He may dwell with you in your midst,1 in the place which he chooses within one of your gates, where it *seems best to him;

[a]you shall not oppress him.

17“There shall be no *ritual* [*]harlot [a] of the daughters of Israel, or a [b]perverted[*] one of the sons of Israel. 18You shall not bring the wages of a harlot or the price of a dog to the house of the LORD your God for any vowed offering, for both of these *are* [*]an abomination to the LORD your God.

19[a]“You shall not charge interest to your brother—interest on money *or* food *or* anything that is lent out at interest. 20[a]To a foreigner you may charge interest, but to your brother you shall not charge interest, [b]that the LORD your God may bless you in all to which you set your hand in the land which you are entering to possess.

21[a]“When you make a vow to the LORD your God, you shall not delay to pay it; for the LORD your God will surely require it of you, and it would be sin to you. 22But if you abstain from vowing, it shall not be sin to you. 23[a]That which has gone from your lips you shall keep and perform, for you voluntarily vowed to the LORD your God what you have promised with your mouth.

24“When you come into your neighbor’s vineyard, you may eat your fill of grapes at your pleasure, but you shall not put *any* in your container. 25When you come into your neighbor’s standing grain, [a]you may pluck the heads with your hand, but you shall not use a sickle on your neighbor’s standing grain.

Deuteronomy 24

Law Concerning Divorce

1“When a [a]man takes a wife and marries her, and it happens that she finds no favor in his eyes because he has found some [*]uncleanness in her, and he writes her a [b]certificate of divorce, puts *it* in her hand, and sends her out of his house, [2]when she has departed from his house, and goes and becomes another man's *wife,* [3]*if* the latter husband detests her and writes her a certificate of divorce, puts *it* in her hand, and sends her out of his house, or if the latter husband dies who took her as his wife, [4][a]*then* her former husband who divorced her must not take her back to be his wife after she has been defiled; for that *is* [*]an abomination before the LORD, and you shall not bring sin on the land which the LORD your God is giving you *as* an inheritance.

Miscellaneous Laws

[5][a]"When a man has taken a new wife, he shall not go out to war or be charged

with any business; he shall be free at home one year, and [b]bring happiness to his wife whom he has taken.

6“No man shall take the lower or the upper millstone in pledge, for he takes *one’s* living in pledge.

7“If a man is [a]found kidnapping any of his brethren of the children of Israel, and mistreats him or sells him, then that kidnapper shall die; [b]and you shall put away the evil from among you.

8“Take heed in [a]an outbreak of leprosy, that you carefully observe and do according to all that the priests, the Levites, shall teach you; just as I commanded them, *so* you shall be careful to do. 9[a]Remember what the LORD your God did [b]to Miriam on the way when you came out of Egypt!

10“When you [a]lend your brother anything, you shall not go into his house to get his pledge. 11You shall stand outside, and the man to whom you lend shall bring the pledge out to you. 12And if the man *is* poor, you shall not [*]1keep his pledge overnight. 13[a]You shall in any case return the pledge to him again when the sun goes down, that he may sleep in his own garment and [b]bless you; and [c]it shall be righteousness to you before the LORD your God.

14"You shall not [a]oppress a hired servant *who is* poor and needy, *whether* one of your brethren or one of the aliens who *is* in your land within your gates. 15Each day [a]you shall give *him* his wages, and not let the sun go down on it, for he *is* poor and has set his heart on it; [b]lest he cry out against you to the LORD, and it be sin to you.

16[a]"Fathers shall not be put to death for *their* children, nor shall children be put to death for *their* fathers; a person shall be put to death for his own sin.

17[a]“You shall not pervert justice due the stranger or the fatherless, [b]nor take a widow’s garment as a pledge. 18But [a]you shall remember that you were a slave in Egypt, and the LORD your God redeemed you from there; therefore I command you to do this thing.

19[a]“When you reap your harvest in your field, and forget a sheaf in the field, you shall not go back to get it; it shall be for the stranger, the fatherless, and the widow, that the LORD your God may [b]bless you in all the work of your hands. 20When you beat your olive trees, you shall not go over the boughs again; it shall be for the stranger, the fatherless, and the widow. 21When you gather the grapes of your vineyard, you shall not glean *it* afterward; it shall be for the stranger, the fatherless, and the widow. [22]And you shall remember that you were a slave in the land of Egypt; therefore I command you to do this thing.

Deuteronomy 25

[1]“If there is a [a]dispute between men, and they com1e to [*]court, that *the judges* may judge them, and they [b]justify the righteous and condemn the wicked, [2]then it shall be, if the wicked man [a]deserves to be beaten, that the judge will cause him to lie down [b]and be beaten in his presence, according to his guilt, with a certain number of blows. [3][a]Forty blows he may give him *and* no more, lest he should exceed this and beat him with many blows above these, and your brother [b]be humiliated in your sight.

[4][a]“You shall not

muzzle an ox while it [*]treads out *the grain.*

Marriage Duty of the Surviving Brother

5 [a]“If brothers dwell together, and one of them dies and has no son, the widow of the dead man shall not be *married* to a stranger outside *the family;* her husband’s brother shall go in to her, take her as his wife, and perform the duty of a husband’s brother to her. 6 And it shall be *that* the firstborn son which she bears [a]will succeed to the name of his dead brother, that [b]his name may not be blotted out of Israel. 7 But if the man does not want to take his brother’s wife, then let his brother’s wife go up to the [a]gate to the elders, and say, ‘My husband’s brother refuses to raise up a name to his brother in Israel; he will not perform the duty of my husband’s brother.’ 8 Then the elders of his city shall call him and

speak to him. But *if* he stands firm and says, [a]‘I do not want to take her,’ 9then his brother’s wife shall come to him in the presence of the elders, [a]remove his sandal from his foot, spit in his face, and answer and say, ‘So shall it be done to the man who will not [b]build up his brother’s house.’ 10And his name shall be called in Israel, ‘The house of him who had his sandal removed.’

Miscellaneous Laws

11“If *two* men fight together, and the wife of one draws near to rescue her husband from the hand [1]of the one attacking him, and puts out her hand and seizes him by the genitals, 12then you shall cut off her hand; [a]your eye shall not pity *her*.

13[a]“You shall not have in your bag differing weights, a heavy and a light. 14You shall not have in your house differing measures, a large and a small. 15You shall have a perfect and just weight, a perfect and just measure, [a]that your days may be lengthened in the land which the LORD your God is giving you. 16For [a]all who do such things, all who behave unrighteously, *are* [*]an abomination to the LORD your God.

Destroy the Amalekites

17[a]“Remember what Amalek did to you on the way as you were coming out of Egypt, 18how he met you on the way and attacked your rear ranks, all the stragglers at your rear, when you *were* tired and weary; and he [a]did not fear God. 19Therefore it shall be, [a]when the LORD your God has given you rest from your enemies all around, in the land which the LORD your God is giving you to possess *as* an inheritance, *that* you will [b]blot out the remembrance of Amalek from under heaven. You shall not forget.

Deuteronomy 26

Offerings of Firstfruits and Tithes

[1]“And it shall be, when you come into the land which the LORD your God is giving you *as* an inheritance, and you possess it and dwell in it, [2][a]that you shall take some of the first of all the produce of the ground, which you shall bring from your land that the LORD your God is giving you, and put *it* in a basket and [b]go to the place where the LORD your God chooses to make His name abide. [3]And you shall go to the one who is priest in those days, and say to him, ‘I declare today to the LORD *your God that I have come to the country which the LORD swore to our fathers to give us.’

SPIRITUAL

WARFARE BASICS

Remain

Rest in the Lord; abide in Him, and relax in the promises of God. It is by resting in Christ that wholeness comes and inner healing takes place from all the damage the enemy has done.

- *Ab in Ch* for thi is the key to fin ful pea and hea He *is* life and He *is* wh Ab in Hin and res in His Wo and pro
- *Ag wit Hin*

Ag wi the Wo an spe fai Do no all do a pla in yo life

- *Ap the Wo* to yo life See to do tho thi tha ple Hi

- *Ass wit Spi fill bel* Fel

wi
ma
bel
wh
lov
the
Lor
an
His
Wo

- *Ad*
Hi
wi
pra
an
wo
De
ha
pra
It
is
a
co
re
to
the
of
the
de
Fil
yo
life
wi
pra
Pra
is
po
in

spi
wa

---

* Don Dickerman, *When Pigs Move In*, 193, 195–196.

4“Then the priest shall take the basket out of your hand and set it down before the altar of the LORD your God. 5And you shall answer and say before the LORD your God: ‘My father *was* [a]a *Syrian, [b]about to perish, and [c]he went down to Egypt and *dwelt there, [d]few in number; and there he became a nation, [e]great, mighty, and populous. 6But the [a]Egyptians mistreated us, afflicted us, and laid hard bondage on us. 7[a]Then we cried out to the LORD God of our fathers, and the LORD heard our voice and looked on our affliction and our labor and our oppression. 8So [a]the LORD brought us out of Egypt with a mighty hand and with an outstretched arm, [b]with great terror and with signs and wonders. 9He has brought us to this place and has given us this land, [a]“a land flowing with milk and honey”; 10and now, behold, I have brought the firstfruits of the land which you, O LORD, have given me.’

“Then you shall set it before the LORD your God, and worship before the LORD your God. 11So [a]you shall rejoice in every good *thing* which the LORD your God has given to you and your house, you and the Levite and the stranger who *is* among you.

12“When you have finished laying aside all the [a]tithe of your increase in the third year—[b]the year of tithing—and have given *it* to the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, so that they may eat within your gates and be filled, 13then you shall say before the LORD your God: ‘I have removed the *holy *tithe* from *my* house, and also have given them to the Levite, the stranger, the fatherless, and the widow, according to all Your commandments which You have commanded me; I have not transgressed Your commandments, [a]nor have I forgotten *them.* 14[a]I have not eaten any of it *when in mourning, nor have I removed *any* of it *for an unclean *use,* nor given *any* of it for the dead. I have obeyed the voice of the LORD my God, and have done according to all that You have commanded me. 15[a]Look down from

Your holy [*]habitation, from heaven, and bless Your people Israel and the land which You have given us, just as You swore to our fathers, [b][1]“a land flowing with milk and honey.” ’

A Special People of God

[16]“This day the LORD your God commands you to observe these statutes and judgments; therefore you shall be careful to observe them with all your heart and with all your soul. [17]Today you have [a]proclaimed the LORD to be your God, and that you will walk in His ways and keep His statutes, His commandments, and His judgments, and that you will [b]obey His voice. [18]Also today [a]the LORD has proclaimed you to be His special people, just as He promised you, that *you* should keep all His commandments,

[19]and that He will set you [a]high above all nations which He has made, in praise, in name, and in honor, and that you may be [b]a [*]holy people to the LORD your God, just as He has spoken.”

Deuteronomy 27

The Law Inscribed on Stones

[1]Now Moses, with the elders of Israel, commanded the people, saying: “Keep all the commandments which I command you today. [2]And it shall be, on the day [a]when you cross over the Jordan to the land which the LORD your God is giving you, that [b]you shall set up for yourselves large stones, and whitewash them with lime. [3]You shall write on them all the words of this law, when you have crossed over, that you may enter the land which the LORD your God is giving you, [a]‘a land flowing with milk and

honey,' just as the LORD God of your fathers promised you. 4Therefore it shall be, when you have crossed over the Jordan, *that* [a]on Mount Ebal you shall set up these stones, which I command you today, and you shall whitewash them with lime. 5And there you shall build an altar to the LORD your God, an altar of stones; [a]you shall not use an iron *tool* on them. 6You shall build with *whole stones the altar of the LORD your 1God, and offer burnt offerings on it to the LORD your God. 7You shall offer peace offerings, and shall eat there, and [a]rejoice before the LORD your God. 8And you shall [a]write very plainly on the stones all the words of this law."

9Then Moses and the priests, the Levites, spoke to all Israel, saying, "Take heed and listen, O Israel: [a]This day you have become the people of the LORD your God. 10Therefore you shall obey the voice of the LORD your God, and observe His commandments and His statutes which I command you today.”

Curses Pronounced from Mount Ebal

11And Moses commanded the people on the same day, saying, 12“These shall stand [a]on Mount Gerizim to bless the people, when you have crossed over the Jordan: Simeon, Levi, Judah, Issachar, Joseph, and Benjamin; 13and [a]these shall stand on Mount Ebal to curse: Reuben, Gad, Asher, Zebulun, Dan, and Naphtali.

14“And [a]the Levites shall speak with a loud voice and say to all the men of Israel: 15[a]‘Cursed *is* the one who makes a carved or molded image, [*]an abomination to the LORD, the work of the hands of the craftsman, and sets *it* up in secret.’

[b]“And all the people shall answer and say, ‘Amen!’

16[a]‘Cursed *is* the one who treats his father or his mother with contempt.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

17[a]‘Cursed *is* the one who moves his neighbor’s landmark.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

18[a]‘Cursed *is* the one who makes the blind to wander off the road.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

19[a]‘Cursed *is* the one who perverts the justice due the stranger, the fatherless, and widow.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

20[a]‘Cursed *is* the one who lies with his father’s wife, because he has uncovered his father’s bed.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

21[a]‘Cursed *is* the one who lies with any kind of animal.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

22[a]‘Cursed *is* the one who lies with his sister, the daughter of his father or the daughter of his mother.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

23[a]‘Cursed *is* the one who lies with his mother-in-law.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

24[a]‘Cursed *is* the one who attacks his neighbor secretly.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

25[a]‘Cursed *is* the one who takes a bribe to slay an innocent person.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

26[a]‘Cursed *is* the one who does not confirm *all* the words of this law by observing them.’

“And all the people shall say, ‘Amen!’

Deuteronomy 28

Blessings on Obedience

1“Now it shall come to pass, [a]if you diligently obey the voice of the LORD your God, to observe carefully all His commandments which I command you today, that the LORD your God [b]will set you high above all nations of the earth. 2And all these blessings shall come upon you and [a]overtake you, because you1 obey the voice of the LORD your God:

3[a]“Blessed *shall* you *be* in the city, and blessed *shall* you *be* [b]in the country.

4“Blessed *shall be* [a]the [*]fruit of your body, the produce of your ground and the increase of your herds, the increase of your cattle and the offspring of your flocks.

5“Blessed *shall be* your basket and your kneading bowl.

6[a]“Blessed *shall* you *be* when you come in, and blessed *shall* you *be* when you go out.

7“The LORD [a]will cause your enemies who rise against you to be defeated before your face; they shall come out against you one way and flee before you seven ways.

8“The LORD will [a]command the blessing on you in your storehouses and in all to which you [b]set your hand, and He will bless you in the land which the LORD your God is giving you.

9[a]“The LORD will establish you as a holy people to Himself, just as He has sworn to you, if you keep the commandments of the LORD your God and walk in His ways. 10Then all peoples of the earth shall see that you are [a]called by the name of the LORD, and they shall be [b]afraid of you. 11And [a]the LORD will grant you plenty of goods, in the fruit of your body, in the increase of your livestock, and in the produce of your ground, in the land of which the

LORD [*]swore to your fathers to give you. 12The LORD will open to you His good [*]treasure, the heavens, [a]to give the rain to your land in its season, and [b]to bless all the work of your hand. [c]You shall lend to many nations, but you shall not borrow. 13And the LORD will make [a]you the head and not the tail; you shall be above only, and not be beneath, if you [*]heed the commandments of the LORD your God, which I command you today, and are careful to observe *them.* 14[a]So you shall not turn aside from any of the words which I command you this day, *to* the right or the left, to go after other gods to serve them.

Deut. 28:13

I am the

head and not the tail.

Curses on Disobedience

15“But it shall come to pass, [a]if you do not obey the voice of the LORD your God, to observe carefully all His commandments and His statutes which I command you today, that all these curses will come upon you and overtake you:

16“Cursed *shall* you *be* in the city, and cursed *shall* you *be* in the country.

17“Cursed *shall be* your basket and your kneading bowl.

18“Cursed *shall be* the [*]fruit of your body and the produce of your land, the increase of your cattle and the offspring of your flocks.

19“Cursed *shall* you *be* when you come in, and cursed *shall* you *be* when you go out.

20“The LORD will send on you [a]cursing, [b]confusion, and [c]rebuke in all that you set your hand to do, until you are destroyed and until you perish quickly, because of the wickedness of your doings in which you have forsaken Me. 21The LORD will make the [*]plague cling to you until He has consumed you from the land which you are going to possess. 22[a]The LORD will strike you with consumption, with fever, with inflammation, with severe burning fever, with the sword, with [b]scorching,[*] and with mildew; they shall pursue you until you perish. 23And [a]your heavens which *are* over your head shall be bronze, and the earth which is under you *shall be* iron. 24The LORD will change the rain of your land to powder and dust; from the heaven it shall come down on you until you are destroyed.

25[a]“The LORD will cause you to be defeated before your enemies; you shall go out one way against them and flee seven ways before them; and you shall become [*]troublesome to all the kingdoms of the earth. 26[a]Your carcasses shall be food for all the birds of the air and the beasts of the earth, and no one shall frighten *them* away. 27The LORD will strike you with [a]the boils of Egypt, with [b]tumors, with the scab, and with the itch, from which you cannot be healed. 28The LORD will strike you with madness and blindness and [a]confusion of heart. 29And you shall [a]grope at noonday, as a blind man gropes in darkness; you shall not prosper in your ways; you shall be only oppressed and plundered continually, and no one shall save *you.*

30[a]“You shall betroth a wife, but another man shall lie with her; [b]you shall build a house, but [c]you shall not dwell in it; you shall plant a vineyard, but shall not gather its grapes. 31Your ox *shall be* slaughtered before your eyes, but you shall not eat of it; your donkey *shall be* violently taken away from before you, and shall not be restored to you; your sheep *shall be* given to your enemies, and you shall have no one to rescue *them.* 32Your sons and your daughters *shall be* given to [a]another people, and your eyes shall look and [b]fail *with longing* for them all day long; and *there shall be* [*]no strength in your [c]hand. 33A nation whom you have not known shall eat [a]the fruit of your land and the produce of your labor, and you shall be only oppressed and crushed continually. 34So you

shall be driven mad
because of the sight
which your eyes see.
35The LORD will
strike you in the
knees and on the legs
with severe boils
which cannot be
healed, and from the
sole of your foot to
the top of your head.

36“The LORD will
[a]bring you and the
king whom you set
over you to a nation
which neither you
nor your fathers have
known, and [b]there
you shall serve other
gods—wood and
stone. 37And you
shall become [a]an[*]
astonishment, a
proverb, [b]and a
byword among all
nations where the
LORD will drive you.

38[a]“You shall carry
much seed out to the
field but gather little
in, for [b]the locust
shall [*]consume it.
39You shall plant
vineyards and tend
them, but you shall
neither drink *of* the
[a]wine nor gather the
grapes; for the worms
shall eat them. 40You
shall have olive trees

throughout all your territory, but you shall not anoint *yourself* with the oil; for your olives shall drop off. 41You shall beget sons and daughters, but they shall not be yours; for [a]they shall go into captivity. 42Locusts shall *consume all your trees and the produce of your land.

43“The alien who *is* among you shall rise higher and higher above you, and you shall come down lower and lower. 44He shall lend to you, but you shall not lend to him; he shall be the head, and you shall be the tail.

45“Moreover all these curses shall come upon you and pursue and overtake you, until you are destroyed, because you *did not obey the voice of the LORD your God, to keep His commandments and His statutes which He commanded you. 46And they shall be upon [a]you for a sign and a wonder, and on your descendants1 forever.

47[a]“Because you did not serve the LORD your God with joy and gladness of heart, [b]for the abundance of everything, 48therefore you shall serve your enemies, whom the LORD will send against you, in [a]hunger, in thirst, in nakedness, and in need of everything; and He [b]will put a yoke of iron on your neck until He has destroyed you. 49[a]The LORD will bring a nation against you from afar, from the end of the earth, [b]*as swift* as the eagle flies, a nation whose language you will not understand, 50a nation of fierce countenance, [a]which does not respect the elderly nor show favor to the young. 51And they shall eat the increase of your livestock and the produce of your land, until you are destroyed; they shall not leave you grain or new wine or oil, *or* the increase of your cattle or the offspring of your flocks, until they have destroyed you.

52“They shall [a]besiege you at all your gates until your high and fortified walls, in which you trust, come down throughout all your land; and they shall besiege you at all your gates throughout all your land which the LORD your God has given you. 53[a]You shall eat the *fruit of your own body, the flesh of your sons and your daughters whom the LORD your God has given you, in the siege and desperate straits in which your enemy shall distress you. 54The *sensitive and very refined man among you [a]will* be hostile toward his brother, toward [b]the wife of his bosom, and toward the rest of his children whom he leaves behind, [55]so that he will not give any of them the flesh of his children whom he will eat, because he has nothing left in the siege and desperate straits in which your enemy shall distress you at all your gates. [56]The *tender and *delicate woman among you, who would not venture to set the sole of her foot on the ground because of her delicateness an1d sensitivity, *will refuse to the husband of her bosom, and to her son and her daughter, [57]her *placenta which comes out [a]from between her feet and her children whom she bears; for she will eat them secretly for lack of everything in the siege and desperate straits in which your enemy shall distress you at all your gates.

[58]“If you do not carefully observe all the words of this law that are written in this book, that you

may fear [a]this glorious and awesome name, THE LORD YOUR GOD, [59]then the LORD will bring upon you and your descendants [a]extraordinary plagues—great and prolonged plagues—and serious and prolonged sicknesses. [60]Moreover He will bring back on you all [a]the diseases of Egypt, of which you were afraid, and they shall cling to you. [61]Also every sickness and every plague, which *is* not written in this Book of the Law, will the LORD bring upon you until you are destroyed. [62]You [a]shall be left few in number, whereas you were [b]as the stars of heaven in multitude, because you would not obey the voice of the LORD your God. [63]And it shall be, *that* just as the LORD [a]rejoiced over you to do you good and multiply you, so the LORD [b]will rejoice over you to destroy

you and bring you to
nothing; and you
shall be [c]plucked[*]
from off the land
which you go to
possess.
64“Then the LORD
[a]will scatter you
among all peoples,
from one end of the
earth to the other,
and [b]there you shall
serve other gods,
which neither you
nor your fathers have
known—wood and
stone. 65And [a]among
those nations you
shall find no rest, nor
shall the sole of your
foot have a resting
place; [b]but there the
LORD will give you a
[*]trembling heart,
failing eyes, and
[c]anguish of soul.
66Your life shall hang
in doubt before you;
you shall fear day
and night, and have
no assurance of life.
67[a]In the morning
you shall say, ‘Oh,
that it were evening!’
And at evening you
shall say, ‘Oh, that it
were morning!’
because of the fear
which terrifies your
heart, and [b]because

of the sight which your eyes see.

68“And the LORD [a]will take you back to Egypt in ships, by the way of which I said to you, [b]‘You shall never see it again.’ And there you shall be offered for sale to your enemies as male and female slaves, but no one will buy *you.*”

Deuteronomy 29

The Covenant Renewed in Moab

1These *are* the words of the [a]covenant which the LORD commanded Moses to make with the children of Israel in the land of Moab, besides the covenant which He made with them in Horeb.

2Now Moses called all Israel and said to them: [a]“You have seen all that the LORD did before your eyes in the land of Egypt, to Pharaoh and to all his servants and to all his land—3[a]the great trials which your eyes have seen, the signs, and those great wonders. 4Yet [a]the LORD has not given you a heart to [*]perceive and eyes to see and ears to hear, to this *very* day. 5[a]And I have led you forty years in the wilderness. [b]Your clothes have not worn out on you, and your sandals have not worn out on your feet. 6[a]You have not eaten bread, nor have you drunk wine or *similar* drink, that you may know that I *am* the LORD your God. 7And when you came to this place, [a]Sihon king of Heshbon and Og king of Bashan came out against us to battle, and we conquered them. 8We took their land and [a]gave it as an inheritance to the Reubenites, to the1 Gadites, and to half the tribe of Manasseh. 9Therefore [a]keep the words of this covenant, and do them, that you may [b]prosper in all that you do.

10“All of you stand

today before the LORD your God: your leaders and your tribes and your elders and your officers, all the men of Israel, 11your little ones and your wives—also the stranger who *is* in your camp, from [a]the one who cuts your wood to the one who draws your water—12that you may enter into covenant with the LORD your God, and [a]into His oath, which the LORD your God makes with you today, 13that He may [a]establish you today as a people for Himself, and *that* He may be God to you, [b]just as He has spoken to you, and [c]just as He has sworn to your fathers, to Abraham, Isaac, and Jacob.

14"I make this covenant and this oath, [a]not with you alone, 15but with *him* who stands here with us today before the LORD our God, [a]as well as with *him* who *is* not here with us today 16(for you know that we dwelt in the land of Egypt and that we came through the nations which you passed by, 17and you saw their [*]abominations and their idols which *were* among them—wood and stone and silver and gold); 18so that there may not be among you man or woman or family or tribe, [a]whose heart turns away today from the LORD our God, to go *and* serve the gods of these nations, [b]and that there may not be among you a root bearing [c]bitterness or wormwood; 19and so it may not happen, when he hears the words of this curse, that he blesses himself in his heart, saying, ‘I shall have peace, even though I [*]follow the [a]dictates of my heart’—[b]as though the drunkard could be included with the sober.

20[a]“The LORD would not spare him; for then [b]the anger of the LORD and [c]His jealousy would burn against that man, and every curse that is written in this book would settle on him, and the LORD [d]would blot out his name from under heaven. 21And the LORD [a]would separate him from all the tribes of Israel for adversity, according to all the curses of the covenant that are written in this Book of the [b]Law, 22so that the coming generation of your children who rise up after you, and the foreigner who comes from a far land, would say, when they [a]see the plagues of that land and the sicknesses which the LORD has laid on it:

23‘The whole land *is* brimstone, [a]salt, and burning; it is not sown, nor does it bear, nor does any grass grow there, [b]like the overthrow of Sodom and Gomorrah, Admah, and Zeboiim, which the LORD overthrew in His anger and His wrath.’ 24“All nations would say, [a]‘Why has the LORD done so to this land? What does the heat of this great anger mean?’ 25Then *people* would say: ‘Because they have forsaken the covenant of the LORD God of their fathers, which He made with them when He brought them out of the land of Egypt; 26for they went and served other gods and worshiped them, gods that they did not know and that He had not given to them. 27Then the anger of the LORD was aroused against this land, [a]to bring on it every curse that is written in this book. 28And the LORD [a]uprooted them from their land in anger, in wrath, and in great indignation, and cast them into another land, as *it is* this day.’

29“The secret *things belong* to the LORD our God, but those *things which are* revealed *belong* to us and to our children forever, that *we* may do all the words of this law.

Deuteronomy 30

The Blessing of Returning to God

1“Now [a]it shall come to pass, when [b]all these things come upon you, the blessing and the [c]curse which I have set before you, and [d]you [*]call *them* to mind among all the nations where the LORD your God drives you, 2and you [a]return to the LORD your God and obey His voice, according to all that I command you today, you and your children, with all your heart and with all your soul, 3[a]that the LORD your God will bring you back from captivity, and have compassion on you, and [b]gather you again from all the nations where the LORD your God has scattered you. 4[a]If *any* of you are driven

out to the farthest
parts under heaven,
from there the LORD
your God will gather
you, and from there
He will bring you.
5Then the LORD your
God will bring you to
the land which your
fathers possessed,
and you shall possess
it. He will prosper
you and multiply you
more than your
fathers. 6And [a]the
LORD your God will
circumcise your heart
and the heart of your
descendants, to love
the LORD your God
with all your heart
and with all your
soul, that you may
live.

7“Also the LORD
your God will put all
these [a]curses on your
enemies and on those
who hate you, who
persecuted you. 8And
you will [a]again obey
the voice of the
LORD and do all His
commandments
which I command
you today. 9[a]The
LORD your God will
make you abound in
all the work of your
hand, in the [*]fruit of

your body, in the increase of your livestock, and in the produce of your land for good. For the LORD will again [b]rejoice over you for good as He rejoiced over your fathers, 10if you obey the voice of the LORD your God, to keep His commandments and His statutes which are written in this Book of the Law, *and* if you turn to the LORD your God with all your heart and with1 all your soul.

The Choice of Life or Death

11“For this commandment which I command you today [a]*is* [*]not *too* mysterious for you, nor *is* it far off. 12[a]It *is* not in heaven, that you should say, ‘Who will ascend into heaven for us and bring it to us, that we may hear it and do it?’ 13Nor *is* it beyond the sea, that you should say, ‘Who will go over the sea for us and bring it to us, that we may hear it and do it?’ 14But the word *is* very near you, [a]in your mouth and in your heart, that you may do it.

15“See, [a]I have set before you today life and good, death and evil, 16in that I command you today to love the LORD your God, to walk in His ways, and to keep His commandments, His statutes, and His judgments, that you may live and multiply; and the LORD your God will bless you in the land which you go to possess. 17But if your heart turns away so that you do not hear, and are drawn away, and worship other gods and serve them, 18[a]I announce to you today that you shall surely perish; you shall not prolong *your* days in the land which you cross over the Jordan to go in and possess. 19[a]I call heaven and earth as witnesses today against you, *that* [b]I have set before you

life and death,
blessing and cursing;
therefore choose life,
that both you and
your descendants
may live; [20]that you
may love the LORD
your God, that you
may obey His voice,
and that you may
cling to Him, for He
is your [a]life and the
length of your days;
and that you may
dwell in the land
which the LORD
swore to your
fathers, to Abraham,
Isaac, and Jacob, to
give them.”

Deuteronomy 31

Joshua the New Leader of Israel

[1]Then Moses went
and spoke these
words to all Israel.
[2]And he said to them:
“I [a]*am* one hundred
and twenty years old
today. I can no
1longer [b]go out and
come in. Also the
LORD has said to me,
[c]‘You shall not cross
over this Jordan.’
[3]The LORD your God
[a]Himself crosses over
before you; He will
destroy these nations

from before you, and you shall dispossess them. [b]Joshua himself crosses over before you, just [c]as the LORD has said. 4[a]And the LORD will do to them [b]as He did to Sihon and Og, the kings of the Amorites and their land, when He destroyed them. 5[a]The LORD will give them over to you, that you may do to them according to every commandment which I have commanded you. 6[a]Be strong and of good courage, [b]do not fear nor be afraid of them; for the LORD your God, [c]He *is* the One who goes with you. [d]He will not leave you nor forsake you."

7Then Moses called Joshua and said to him in the sight of all Israel, [a]"Be strong and of good courage, for you must go with this people to the land which the LORD has sworn to their fathers to give them, and you shall cause them to inherit it.

8And the LORD, [a]He *is* the One who goes before you. [b]He will be with you, He will not leave you nor forsake you; do not fear nor be dismayed.”

The Law to Be Read Every Seven Years

9So Moses wrote this law [a]and delivered it to the priests, the sons of Levi, [b]who bore the ark of the covenant of the LORD, and to all the elders of Israel. 10And Moses commanded them, saying: “At the end of *every* seven years, at the appointed time in the [a]year of release, [b]at the Feast of Tabernacles, 11when all Israel comes to [a]appear before the LORD your God in the [b]place which He chooses, [c]you shall read this law before all Israel in their hearing. 12[a]Gather the people together, men and women and little ones, and the stranger who *is* within your gates, that they may hear and that they may learn to fear the LORD your God and carefully observe all the words of this law, 13and *that* their children, [a]who have not known it, [b]may hear and learn to fear the LORD your God as long as you live in the land which you cross the Jordan to possess.”

Prediction of Israel’s Rebellion

14Then the LORD said to Moses, [a]“Behold, the days approach when you must die; call Joshua, and present yourselves in the tabernacle of meeting, that [b]I may [*]inaugurate him.”

So Moses and Joshua went and presented themselves in the tabernacle of meeting. 15Now [a]the LORD appeared at the tabernacle in a pillar of cloud, and the pillar of cloud stood above the door of the tabernacle.

16And the LORD said to Moses:

“Behold, you will [*]rest with your fathers; and this people will [a]rise and [b]play the harlot with the gods of the foreigners of the land, where they go *to be* among them, and they will [c]forsake Me and [d]break My covenant which I have made with them. [17]Then My anger shall be [a]aroused against them in that day, and [b]I will forsake them, and I will [c]hide My face from them, and they shall be [*]devoured. And many evils and troubles shall befall them, so that they will say in that day, [d]‘Have not these evils come upon us because our God *is* [e]not among us?’ [18]And [a]I will surely hide My face in that day because of all the evil which they have done, in that they have turned to other gods.

[19]“Now therefore, write down this song for yourselves, and teach it to the children of Israel; put it in their mouths,

that this song may be [a]a witness for Me against the children of Israel. [20]When I have brought them to the land flowing with milk and honey, of which I swore to their fathers, and they have eaten and filled themselves [a]and grown fat, [b]then they will turn to other gods and serve them; and they will provoke Me and break My covenant. [21]Then it shall be, [a]when many evils and troubles have come upon them, that this song will testify against them as a witness; for it will not be forgotten in the mouths of their descendants, for [b]I know the inclination [c]of their behavior today, even before I have brought them to the land of which I swore *to give them.*”

Keep the Doors and Gates Locked

Keys are for locking or unlocking. Jesus gave us keys to the kingdom of heaven in Matthew 16:19 and 18:18. We bind, lock, or restrain on earth by faith, and that faith is honored in heaven. When we bind demons in the name of Jesus Christ, we speak it and God honors it. Demons are restrained, bound, and locked by the authority He has given us in Jesus' name.

Keeping the enemy

out of our lives, and keeping the Word of God in us is the focus for anyone desiring to live in the freedom that is ours through the Lord Jesus.

There is power in confession. Your salvation came through confession, and restoration to fellowship comes through confession. When you fall, don’t linger. Immediately claim truths, instantly confess sin, and receive God’s gracious forgiveness and cleansing. The goal is to *remain free*![*]

---

[*] Don Dickerman *When Pigs*

Move In, 190, 195.

22Therefore Moses wrote this song the same day, and taught it to the children of Israel. 23[a]Then He inaugurated Joshua the son of Nun, and said, [b]“Be strong and of good courage; for you shall bring the children of Israel into the land of which I swore to them, and I will be with you.”

24So it was, when Moses had completed writing the words of this law in a book, when they were finished, 25that Moses commanded the Levites, who bore the ark of the covenant of the LORD, saying: 26“Take this Book of the Law, [a]and put it beside the ark of the covenant of the LORD your God, that it may be there [b]as a witness against you; 27[a]for I know your rebellion and your

[b]stiff neck. *If* today, while I am yet alive with you, you have been rebellious against the LORD, then how much more after my death? 28Gather to me all the elders of your tribes, and your officers, that I may speak these words in their hearing [a]and call heaven and earth to witness against them. 29For I know that after my death you will [a]become utterly corrupt, and turn aside from the way which I have commanded you. And [b]evil will befall you [c]in the latter days, because you will do evil in the sight of the LORD, to provoke Him to anger through the work of your hands."

The Song of Moses

30Then Moses spoke in the hearing of all the assembly of Israel the words of this song until they were ended:

Deuteronomy 32

1“Give [a]ear, O heavens, and I will speak;
And hear, O [b]earth, the words of my mouth.
2Let [a]my [*]teaching drop as the rain,
My speech distill as the dew,
    [b]As raindrops on the tender herb,

And as showers on the grass.

[3]For I proclaim the [a]name of the LORD:

[b]Ascribe greatness to our God.

[4]*He is* [a]the Rock, [b]His work *is* perfect;

For all His ways *are* justice,

[c]A God of

truth and [d]without injustice;

Righteous and upright *is* He.

5 “They [a] have corrupted themselves;

They are not His children,

Because of their blemish:

A [b]perverse and crooked generation.

6 Do you thus [a]deal[*] with the LORD,

O
foolish
and
unwise
people?

Is
He
not
[b]your
Father,
who
[c]bought
you?

Has
He
not
[d]made
you
and
established
you?

7“Remember
[a]
the
days
of
old,

Consider
the
years
of
many
generations.

[b]Ask
your
father,

and he will show you;

Your elders, and they will tell you:

8When the Most High [a]divided their inheritance to the nations,

When He [b]separated the sons of Adam,

He set the boundaries of the peoples

According
to
the
number
of
the
[*]children
of
Israel.

9For
[a]the
LORD’s
portion
is
His
people;

Jacob
is
the
place
of
His
inheritance.

10“He
found
him
[a]in
a
desert
land

And
in
the
wasteland,
a
howling

wilderness;

He encircled him, He instructed him,

He [b]kept him as the *apple of His eye.

11 [a]As an eagle stirs up its nest,

Hovers over its young,

Spreading out its wings, taking them up,

Carrying

them
on
its
wings,

[12]*So*
the
LORD
alone
led
him,

And
there
was
no
foreign
god
with
him.

[13]“He
[a]
made
him
ride
in
the
heights
of
the
earth,

That
he
might
eat
the
produce
of

the fields;

He made him draw honey from the rock,

And oil from the flinty rock;

[14]Curds from the cattle, and m1ilk of the flock,

[a]With fat of lambs;

And rams of the breed of Bashan,

and
goats,

With
the
choicest
wheat;

And
you
drank
wine,
the
[b]blood
of
the
grapes.

15“But
Jeshurun
grew
fat
and
kicked;

[a]You
grew
fat,
you
grew
thick,

You
are
obese!

Then
he
[b]forsook
God
who

[c]made
him,

And
scornfully
esteemed
the
[d]Rock
of
his
salvation.

16[a]They
provoked
Him
to
jealousy
with
foreign
gods;

With
[*]abominations
they
provoked
Him
to
anger.

17[a]They
sacrificed
to
demons,
not
to
God,

To
gods
they
did

not know,

To new *gods,* new arrivals

That your fathers did not fear.

18[a]Of the Rock *who* begot you, you are unmindful,

And have [b]forgotten the God who fathered you.

19“And [a] when the LORD saw

it,
He
spurned
them,

Because
of
the
provocation
of
His
sons
and
His
daughters.

[20]And
He
said:
‘I
will
hide
My
face
from
them,

I will
see
what
their
end
will
be,

For
they
are a
perverse
generation,

[a]Children
in
whom
is no
faith.

21[a]They
have
provoked
Me
to
jealousy
by
what
is
not
God;

They
have
moved
Me
to
anger
[b]by
their
*foolish
idols.

But
[c]I
will
provoke
them
to
jealousy
by
those
who
are

not a nation;

I will move them to anger by a foolish nation.

[22]For [a]a fire is kindled in My anger,

And shall burn to the *lowest *hell;

It shall consume the earth with her increase,

And set on

fire
the
foundations
of
the
mountains.

23‘I
will
[a]heap
disasters
on
them;

[b]I
will
spend
My
arrows
on
them.

24*They
shall
be*
wasted
with
hunger,

Devoured
by
pestilence
and
bitter
destruction;

I will
also
send
against
them

the
[a]teeth
of
beasts,

With
the
poison
of
serpents
of
the
dust.

25The
sword
shall
destroy
outside;

There
shall
be
terror
within

For
the
young
man
and
virgin,

The
nursing
child
with
the
man
of
gray

hairs.

[26][a]I
would
have
said,
“I
will
dash
them
in
pieces,

I will
make
the
memory
of
them
to
cease
from
among
men,”

[27]Had
I not
feared
the
wrath
of
the
enemy,

Lest
their
adversaries
should
misunderstand,

Lest

they should say, [a]“Our hand *is* high;

And it is not the LORD who has done all this.”’

28“For they *are* a nation void of counsel,

Nor *is there any* understanding in them.

29[a]Oh, that they were

wise,
that
they
understood
this,

That
they
would
consider
their
[b]latter
end!

30 How
could
one
chase
a
thousand,

And
two
put
ten
thousand
to
flight,

Unless
their
Rock
[a]had
sold
them,

And
the
LORD
had
surrendered

them?

[31]For
their
rock
is
not
like
our
Rock,

[a]Even
our
enemies
themselves
being
judges.

[32]For
[a]their
vine
is of
the
vine
of
Sodom

And
of
the
fields
of
Gomorrah;

Their
grapes
are
grapes
of
gall,

Their
clusters
are
bitter.

33Their
wine
is
[a]the
poison
of
serpents,

And the cruel [b]venom
of cobras.

34‘*Is* this not [a]laid up
in store with Me,

Sealed up among My
treasures?

35[a]Vengeance is
Mine, and
recompense;

Their foot shall slip
in *due* time;

[b]For the day of their
calamity *is* at hand,

And the things to
come hasten upon
them.’

36“For [a] the LORD
will judge His people

[b]And have
compassion on His
servants,

When He sees that *their* power is gone,

And [c]*there is* no one *remaining,* bond or free.

37He will say:
[a]'Where *are* their gods,

The rock in which they sought refuge?

38Who ate the fat of their sacrifices,

And drank the wine of their drink offering?

Let them rise and help you,

And be your refuge.

39'Now see that [a]I, *even* I, *am* He,

And [b]*there is* no God besides Me;

[c]I kill and I make alive;

I wound and I heal;

Nor is there any who can deliver from My hand.

40For I raise My hand to heaven,

And say, “*As* I live forever,

41[a]If I [*]whet My glittering sword,

And My hand takes hold on judgment,

I will render vengeance to My enemies,

And repay those who hate Me.

42I will make My arrows drunk with blood,

And My sword shall devour flesh,

With the blood of the slain and the captives,

From the heads of the leaders of the enemy.” ’

43“Rejoice, [a] O Gentiles, *with* His [*]people;

For He will [b]avenge the blood of His servants,

And render
vengeance to His
adversaries;

He [c]will provide
atonement for His
land *and* His people.”

44So Moses came with [*]Joshua the son of Nun and spoke all the words of this song in the hearing of the people. 45Moses finished speaking all these words to all Israel, 46and he said to them: [a]“Set your hearts on all the words which I testify among you today, which you shall command your [b]children to be careful to observe—all the words of this law. 47For it *is* not a [*]futile thing for you, because it *is* your [a]life, and by this word you shall prolong *your* days in the land which you cross over the Jordan to possess.”

Moses to Die on Mount Nebo

48Then the LORD spoke to Moses that very same day, saying: 49[a]“Go up this mountain of the Abarim, Mount Nebo, which *is* in the land of Moab, across from Jericho; view the land of Canaan, which I give to the children of Israel as a possession; 50and die on the mountain which you ascend, and be [*]gathered to your people, just as [a]Aaron your brother died on Mount Hor and was gathered to his people; 51because [a]you trespassed against Me among the children of Israel at the waters of [*]Meribah Kadesh, in the Wilderness of Zin, because you [b]did not hallow Me in the midst of the children of Israel. 52[a]Yet you shall see the land before *you,* though you shall not go there, into the land which I am giving to the children of Israel.”

Deuteronomy 33

Moses’ Final Blessing on Israel

1Now this *is* [a]the blessing with which Moses [b]the man of God blessed the children of Israel before his death. 2And he said:

[a]“The LORD came
from Sinai,

And dawned on them
from [b]Seir;

He shone forth from
[c]Mount Paran,

And He came with
[d]ten thousands of
saints;

From His right hand

Came a fiery law for
them.

3Yes, [a]He loves the
people;

[b]All His saints *are* in
Your hand;

They [c]sit down at Your feet;

Everyone [d]receives Your words.

4[a]Moses [*]commanded a law for us,

[b]A heritage of the congregation of
Jacob.

5And He was [a]King in [b]Jeshurun,

When the leaders of the people were
gathered,

All the tribes of Israel together.

6“Let [a]Reuben live, and not die,

Nor let his men be few.”

7And this he said of [a]Judah:

“Hear, LORD, the voice of Judah,

And bring him to his people;

[b]Let his hands be sufficient for him,

And may You be [c]a help against his enemies.”

8And of [a]Levi he said:

[b]“*Let* Your *Thummim and Your Urim *be* with Your holy one,

[c]Whom You tested at Massah,

And with whom You contended at the waters of Meribah,

9[a]Who says of his father and mother,

‘I have not [b]seen them’;

[c]Nor did he acknowledge his brothers,

Or know his own children;

For [d]they have observed Your word

And kept Your covenant.

10[a]They shall teach Jacob Your judgments,

And Israel Your law.

They shall put incense before You,

[b]And a whole burnt sacrifice on Your altar.

11Bless his substance, LORD,

And [a]accept the work of his hands;

Strike the loins of those who rise against him,

And of those who hate him, that they rise not again.”

12Of Benjamin he said:

“The beloved of the LORD shall dwell in safety by Him,

Who shelters him all the day long;

And he shall dwell between His shoulders.”

13And of Joseph he said:

[a]“Blessed of the LORD *is* his land,

With the precious things of heaven, with the [b]dew,

And the deep lying beneath,

14With the precious fruits of the sun,

With the precious produce of the months,

15With the best things of [a]the ancient moun1tains,

With the precious things [b]of the everlasting hills, 16With the precious things of the earth and its fullness,

And the favor of [a]Him who dwelt in the bush.

Let *the blessing* come [b]‘on the head of Joseph,

And on the crown of the head of him *who was* separate from his brothers.’

17His glory *is like* a [a]firstborn bull,

And his horns *like* the [b]horns of the wild ox;

Together with them

[c]He shall push the peoples

To the ends of the earth;

[d]They *are* the ten thousands of Ephraim,

And they *are* the thousands of Manasseh.”

18And of Zebulun he said:

[a]“Rejoice, Zebulun, in your going out,

And Issachar in your tents!

19They shall [a]call the peoples *to* the mountain;

There [b]they shall offer sacrifices of righteousness;

For they shall partake *of* the abundance of the seas

And *of* treasures hidden in the sand.”

20And of Gad he said:

“Blessed *is* he who [a]enlarges Gad;

He dwells as a lion,

And tears the arm
and the crown of his
head.

21[a]He provided the
first *part* for himself,

Because a lawgiver’s
portion was reserved
there.

[b]He came *with* the
heads of the people;

He administered the
justice of the LORD,

And His judgments
with Israel.”

22And of Dan he said:

“Dan *is* a lion’s
whelp;

[a]He shall leap from
Bashan.”

23And of Naphtali he said:

Deut.
33:23

Let

me
be
satisfied
with
favor
and
filled
with
Your
blessing.

“O Naphtali,
[a]satisfied with favor,

And full of the
blessing of the LORD,

[b]Possess the west and
the south.”

24And of Asher he said:

[a]“Asher *is* most
blessed of sons;

Let him be favored
by his brothers,

And let him [b]dip his
foot in oil.

25Your sandals *shall*
be [a]iron and bronze;

As your days, *so shall*
your strength *be.*

26“*There is* [a]no one
like the God of
[b]Jeshurun,

1blockquote>

[c]*Who* rides the heavens to help you,

And in His excellency on the clouds.

27 The eternal God *is your* [a]refuge,

And underneath *are* the everlasting arms;

[b]He will thrust out the enemy from before you,

And

will
say,
‘Destroy!’

28Then
[a]Israel
shall
dwell
in
safety,

[b]The
fountain
of
Jacob
[c]alone,

In a
land
of
grain
and
new
wine;

His
[d]heavens
shall
also
drop
dew.

29[a]Happy
are
you,
O
Israel!

[b]Who
is
like

you,
a
people
saved
by
the
LORD,

[c]The
shield
of
your
help

And
the
sword
of
your
majesty!

Your
enemies
[d]shall
submit
to
you,

And
[e]you
shall
tread
down
their
[*]high
places.”

Deuteronomy 34

Moses Dies on Mount Nebo

[1]Then Moses went up from the

plains of Moab to [a]Mount Nebo, to the top of Pisgah, which is across from Jericho. And the LORD showed him all the land of Gilead as far as Dan, 2 all Naphtali and the land of Ephraim and Manasseh, all the land of Judah as far as the [*]Western Sea, 3 the South, and the plain of the Valley of Jericho, [a]the city of palm trees, as far as Zoar. 4 Then the LORD said to him, [a]"This *is* the land of which I swore to give Abraham, Isaac, and Jacob, saying, 'I will give it to your descendants.' [b]I have caused you to see *it* with your eyes, but you shall not cross over there."

5 [a]So Moses the servant of the LORD died there in the land of Moab, according to the word of the LORD. 6 And He buried him in a valley in the land of Moab, opposite Beth Peor; but [a]no one knows his grave to this day. 7 [a]Moses *was* one hundred and twenty years old when he died. [b]His [*]eyes were not dim nor his natural vigor [*]diminished. 8 And the children of Israel wept for Moses in the plains of Moab [a]thirty days. So the days of weeping *and* mourning for Moses ended.

9 Now Joshua the son of Nun was full of the [a]spirit of wisdom, for [b]Moses had laid his hands on him; so the children of Israel heeded him, and did as the LORD had commanded Moses.

10 But since then there [a]has not arisen in Israel a prophet like Moses, [b]whom the LORD knew face to face, 11 in all [a]the signs and wonders which

the LORD sent him to do in the land of Egypt, before Pharaoh, before all his servants, and in all his land, 12and by all that mighty power and all the great terror which Moses performed in the sight of all Israel.

Deuteronomy 1

[1:11] a. Deut. 4:44–46; Josh. 9:1, 10

[1:1] * Heb. *arabah*

[1:1] * One LXX ms., Tg., Vg. *Red Sea*

[1:2] a. Num. 13:26; 32:8; Deut. 9:23

[1:3] a. Num. 33:38

[1:4] a. Num. 21:23, 24, 33–35; Deut. 2:26–35; Josh. 13:10; Neh. 9:22

[1:4] b. Josh. 13:12

[1:4] * LXX, Syr., Vg. *and;* cf. Josh. 12:4

[1:6] a. Ex. 3:1, 12

[1:6] b. Ex. 19:1, 2

[1:7] * Heb. *arabah*

[1:8] a. Gen. 12:7; 15:5; 22:17; 26:3; 28:13; Ex. 33:1; Num. 14:23; 32:11

[1:8] * *promised*

[1:9] a. Ex. 18:18, 24; Num. 11:14, 24

[1:9] * *am not able to bear you by myself*

[1:10] a. Gen. 15:5; 22:17; Ex. 32:13; Deut. 7:7; 10:22;

26:5; 28:62

[1:11] a. 2 Sam. 24:3

[1:11] b. Gen. 15:5

[1:12] a. 1 Kin. 3:8, 9

[1:13] * *rulers*

[1:15] a. Ex. 18:25

[1:15] * *appointed*

[1:16] a. Deut. 16:18; John 7:24

[1:16] b. Lev. 24:22

[1:17] a. Lev. 19:15; Deut. 10:17; 16:19; 24:17; 1 Sam. 16:7; Prov. 24:23–26; Acts 10:34; James 2:1, 9

[1:17] b. 2 Chr. 19:6

[1:17] c. Ex. 18:22, 26

[1:19] a. Num. 10:12; Deut. 2:7; 8:15; 32:10; Jer. 2:6

[1:19] b. Num. 13:26

[1:21] a. Josh. 1:6, 9

[1:23] a. Num. 13:2, 3

[1:24] a. Num. 13:21–25

[1:25] a. Num. 13:27

[1:26] a. Num. 14:1–4; Ps. 106:24

[1:27] a. Ps. 106:25

[1:27] b. Deut. 9:28

[1:28] a. Num. 13:28, 31–33; Deut. 9:1, 2

[1:28] b. Num. 13:28

[1:28] * Lit. *melted*

[1:29] a. Num. 14:9; Deut. 7:18

[1:30] a. Ex. 14:14; Deut. 3:22; 20:4; Neh. 4:20

[1:31] a. Deut. 32:10–12; Is. 46:3, 4; 63:9; Hos. 11:3

[1:32] a. Num. 14:11; 20:12; Ps. 106:24; Heb. 3:9, 10, 16–19; 4:1, 2; Jude 5

[1:33] a. Ex. 13:21; Num. 9:15–23; Neh. 9:12; Ps. 78:14

[1:33] b. Num. 10:33; Ezek. 20:6

[1:34] a. Deut. 2:14, 15

[1:35] a. Num. 14:22, 23; Ps. 95:10, 11

[1:35] * *promised*

[1:36] a. Num. 14:24; (Josh. 14:9)

[1:36] b. Num. 32:11, 12

[1:36] * *fully*

[1:37] a. Num.

20:12; 27:14; Deut. 3:26; 4:21; 34:4; Ps. 106:32

[1:38] a. Num. 14:30

[1:38] b. Ex. 24:13; 33:11; 1 Sam. 161:22

[1:38] c. Num. 27:18, 19; Deut. 31:7, 23; Josh. 11:23

[1:39] a. Num. 14:31

[1:39] b. Num. 14:3

[1:39] c. Is. 7:15, 16

[1:40] a. Num. 14:25

[1:41] a. Num. 14:40

[1:42] a. Num. 14:41–43

[1:43] a. Num. 14:44

[1:43] b. Deut.
17:12, 13

[1:43] * *willfully*

[1:44] a. Num.
14:45; Ps. 118:12

[1:46] a. Num.
13:25; 20:1, 22;
Deut. 2:7, 14

Deuteronomy 2

[2:1] a. Deut. 1:40

[2:1] b. Num. 14:25

[2:1] * *circled around*

[2:3] a. Deut. 2:7, 14

[2:4] a. Num. 20:14–21

[2:4] b. Deut. 23:7

[2:5] a. Gen. 36:8; Josh. 24:4

[2:7] a. Deut. 8:2–4; (Matt. 6:8, 32)

[2:7] * Lit. *goings*

[2:8] a. Judg. 11:18; 1 Kin. 9:26

[2:8] b. Num. 21:4

[2:9] a. Num. 21:15, 28; Deut. 2:18, 29

[2:9] b. Gen. 19:36–38

[2:10] a. Gen. 14:5

[2:10] b. Num. 13:22, 33; Deut. 9:2

[2:11] * Heb. *rephaim*

[2:12] a. Gen. 14:6; 36:20; Deut. 2:22

[2:12] * *stead*

[2:13] a. Num. 21:12

[2:13] * *Wadi* or *Brook*

[2:14] a. Num. 13:26

[2:14] b. Num. 14:33; 26:64; Deut. 1:34, 35

[2:14] c. Num. 14:35; Ezek. 20:15

[2:14] * *perished*

[2:15] * *perished*

[2:19] a. Gen. 19:38; Num. 21:24

[2:20] a. Gen. 14:5

[2:20] * Heb. *rephaim*

[2:21] a. Deut. 2:10

[2:22] a. Gen. 36:8; Deut. 2:5

[2:22] b. Gen. 14:6; 36:20–30

[2:23] a. Josh. 13:3

[2:23] b. Gen. 10:14;

1 Chr. 1:12; Jer. 47:4; Amos 9:7

[2:24] a. Num. 21:13, 14; Judg. 11:18

[2:24] b. Deut. 1:4

[2:24] * *to take possession*

[2:25] a. Ex. 23:27; Deut. 11:25; Josh. 2:9

[2:25] b. Ex. 15:14–16

[2:25] * *everywhere under the heavens*

[2:26] a. Num. 21:21–32; Deut. 1:4; Judg. 11:19–21

[2:26] b. Deut. 20:10

[2:27] a. Num. 21:21, 22; Judg. 11:19

[2:28] a. Num. 20:19

[2:29] a. Num. 20:18; Deut. 23:3, 4; Judg. 11:17

[2:30] a. Num. 21:23

[2:30] b. Josh. 11:20

[2:30] c. Ex. 4:21

[2:31] a. Deut. 1:3, 8

[2:32] a. Num. 21:23

[2:33] a. Ex. 23:31; Deut. 7:2

[2:33] b. Num. 21:24

[2:33] * Lit. *before us*

[2:34] a. Lev. 27:28

[2:36] a. Deut. 3:12; 4:48; Josh. 13:9

[2:36] b. Josh. 13:9, 16

[2:36] c. Ps. 44:3

[2:37] a. Gen. 32:22; Num. 21:24; Deut. 3:16

[2:37] b. Deut. 2:5, 9, 19

Deuteronomy 3

[3:1] a. Num. 21:33–35; Deut. 29:7

[3:1] b. Deut. 1:4

[3:2] a. Num. 21:34; Josh. 13:21

[3:3] * *struck*

[3:4] a. Deut. 3:13, 14

[3:6] a. Deut. 2:24, 34, 35

[3:8] a. Num. 32:33; Josh. 12:6; 13:8–12

[3:8] b. Deut. 4:48; 1 Chr. 5:23

[3:9] a. 1 Chr. 5:23

[3:10] a. Deut. 4:49

[3:10] b. Josh. 12:5; 13:11

[3:11] a. Amos 2:9

[3:11] b. Gen. 14:5; Deut. 2:11, 20

[3:11] c. 2 Sam. 12:26; Jer. 49:2; Ezek. 21:20

[3:11] * Heb. *rephaim*

[3:12] a. Num. 32:33; Josh. 12:6; 13:8–12

[3:12] b. Deut. 2:36; Josh. 12:2

[3:12] c. Num.1 34:14

[3:13] a. Josh. 13:29–31; 17:1

[3:13] * Heb. *rephaim*

[3:14] a. 1 Chr. 2:22

[3:14] b. Josh. 13:13; 2 Sam. 3:3; 10:6

[3:14] c. Num. 32:41

[3:14] * Lit. *Towns of Jair*

[3:15] a. Num. 32:39, 40

[3:16] a. 2 Sam. 24:5

[3:16] b. Num. 21:24; Deut. 2:37; Josh. 12:2

[3:17] a. Num. 34:11, 12; Deut. 4:49; Josh. 12:3

[3:17] b. Gen. 14:3; Josh. 3:16

[3:18] a. Num. 32:20; Josh. 4:12, 13

[3:20] a. Deut. 12:9, 10

[3:20] b. Josh. 22:4

[3:21] a. (Num. 27:22, 23); Josh. 11:23

[3:22] a. Ex. 14:14; Deut. 1:30; 20:4; Neh. 4:20

[3:23] a. (2 Cor. 12:8, 9)

[3:24] a. Deut. 5:24; 11:2

[3:24] b. Ex. 8:10; 15:11; 2 Sam. 7:22;

Ps. 71:19; 86:8

[3:24] * *strong*

[3:25] a. Ex. 3:8; Deut. 4:22

[3:26] a. Num. 20:12; 27:14; Deut. 1:37; 31:2; 32:51, 52; 34:4

[3:27] a. Num. 23:14; 27:12

[3:28] a. Num. 27:18, 23; Deut. 31:3, 7, 8, 23

[3:28] * *charge*

[3:29] a. Deut. 4:46; 34:6

Deuteronomy 4

[4:1] a. Lev. 19:37; 20:8; 22:31; Deut.

5:1; 8:1; Ezek. 20:11; (Rom. 10:5)

[4:1] * *take possession of*

[4:2] a. Deut. 12:32; (Josh. 1:7); Prov. 30:6; (Rev. 22:18, 19)

[4:3] a. Num. 25:1–9; Josh. 22:17; Ps. 106:28

[4:6] a. Deut. 30:19, 20; 32:46, 47; Job 28:28; Ps. 19:7; 111:10; Prov. 1:7; (2 Tim. 3:15)

[4:7] a. (Deut. 4:32–34; 2 Sam. 7:23)

[4:7] b. (Ps. 46:1; Is. 55:6)

[4:7] * Or *a god*

[4:9] a. Prov. 4:23

[4:9] b. Deut. 29:2–8

[4:9] c. Gen. 18:19; Deut. 4:10; 6:7, 20–25; Ps. 78:5, 6; Prov. 22:6; Eph. 6:4

[4:10] a. Ex. 19:9, 16, 17

[4:12] a. Deut. 5:4, 22

[4:12] b. Ex. 19:17–19; 20:22; 1 Kin. 19:11–18

[4:12] * *similitude*

[4:13] a. Deut. 9:9, 11

[4:13] b. Ex. 34:28;

Deut. 10:4

[4:13] c. Ex. 24:12

[4:14] a. Ex. 21:1

[4:14] * *do* or
perform

[4:15] a. Josh. 23:11

[4:15] b. Is. 40:18

[4:16] a. Ex. 32:7;
Deut. 9:12; 31:29

[4:16] b. Ex. 20:4, 5

[4:16] c. Rom. 1:23

[4:16] * *similitude*

[4:19] a. Deut. 17:3;

Job 31:26–28

[4:19] b. 2 Kin. 21:3

[4:19] c. (Rom. 1:25)

[4:19] * *divided*

[4:20] a. 1 Kin. 8:51; Jer. 11:4

[4:20] b. Deut. 7:6; 27:9; (Titus 2:14)

[4:21] a. Num. 20:12; Deut. 1:37; 3:26

[4:21] b. Num. 27:13, 14

[4:22] a. 2 Pet. 1:13–15

[4:22] b. Deut. 3:27

[4:22] c. Deut. 3:25

[4:22] * *take possession of*

[4:23] a. Ex. 20:4, 5; Deut. 4:16

[4:24] a. Ex. 24:17; Deut. 9:3; Is. 33:14; Heb. 12:29

[4:24] b. Ex. 20:5; 34:14

[4:25] a. 2 Kin. 17:17

[4:26] a. Deut. 30:18, 19; 2 Chr. 36:14–20; Is. 1:2; Mic. 6:2

[4:26] * *live long on it*

[4:27] a. Lev. 26:33; Deut. 28:62; Neh. 1:8

[4:28] a. Deut. 28:64; 1 Sam. 26:19; Jer. 16:13

[4:28] b. Ps. 115:4–7; 135:15–17; Is. 44:9; 46:7

[4:29] a. (Lev. 26:39–45; Deut. 30:1–3; 2 Chr. 15:4; Neh. 1:9)

[4:30] a. Gen. 49:1; Deut. 31:29; Jer. 23:20; Hos. 3:5

[4:30] b. Joel 2:12; Heb. 1:2

[4:30] * *tribulation*

[4:31] a. Lev. 26:44; Jer. 30:11

[4:32] a. Deut. 32:7; Job 8:8

[4:32] b. Deut. 28:64; Matt. 24:31

[4:33] a. Ex. 20:22; 24:11; Deut. 5:24–26

[4:34] a. Deut. 7:19

[4:34] b. Ex. 7:3

[4:34] c. Ex. 13:3

[4:34] d. Ex. 6:6

[4:34] e. Deut. 26:8

[4:34] * *calamities*

[4:35] a. Ex. 8:10; 9:14; (Deut. 4:39; 32:12, 39; 1 Sam. 2:2; Is. 43:10–12; 44:6–8; 45:5–7); Mark 12:32

[4:36] a. Ex. 19:9, 19; 20:18, 22; Deut. 4:33; Neh. 9:13; Heb. 12:19, 25

[4:37] a. Deut. 7:7, 8; 10:15; 33:3

[4:37] b. Ex. 13:3, 9, 14

[4:37] * Lit. *seed*

[4:38] a. Deut. 7:1

[4:39] a. Deut. 4:35; Josh. 2:11

[4:40] a. Lev. 22:31; Deut. 5:16; 32:46, 47

[4:40] * *you may prosper*

[4:40] * *live long*

[4:41] a. Num. 35:6; Deut. 19:2–13; Josh. 20:7–9

[4:42] a. Deut. 19:4

[4:43] a. Josh. 20:8

[4:46] a. Deut. 3:29

[4:46] b. Num. 21:24; Deut. 1:4

[4:46] * *struck*

[4:47] a. Num. 21:33–35

[4:47] * *east*

[4:48] a. Deut. 2:36; 3:12

[4:48] b. Deut. 3:9; Ps. 133:3

[4:48] * Syr. *Sirion*

[4:49] a. Deut. 3:17

Deuteronomy 5

[5:2] a. Ex. 19:5; Deut. 4:23; Mal. 4:4

[5:3] a. Jer. 31:32; Matt. 13:17; Heb. 8:9

[5:4] a. Ex. 19:9

[5:5] a. Ex. 20:21; Gal. 3:19

[5:5] b. Ex. 19:16

[5:6] a. Ex. 20:2–17; Lev. 26:1; Deut. 6:4; Ps. 81:10

[5:6] * *slavery*

[5:7] a. Ex. 20:2, 3; 23:13; Hos. 13:4

[5:7] * *besides*

[5:8] a. Ex. 20:4

[5:9] a. Ex. 34:7, 14–16; Num. 14:18; Deut. 7:10

[5:9] * *worship them*

[5:9] * *punishing*

[5:10] a.1 Num. 14:18; Deut. 7:9; Jer. 32:18; Dan. 9:4

[5:10] * *observe*

[5:11] a. Ex. 20:7; Lev. 19:12; Deut. 6:13; 10:20; Matt. 5:33

[5:11] * *innocent*

[5:12] a. Ex. 20:8; Ezek. 20:12; Mark 2:27

[5:12] * *sanctify it*

[5:13] a. Ex. 23:12; 35:2

[5:14] a. (Gen. 2:2); Ex. 16:29; (Heb. 4:4)

[5:15] a. Deut. 15:15

[5:15] b. Deut. 4:34, 37

[5:16] a. Ex. 20:12; Lev. 19:3; Matt. 15:4; Eph. 6:2, 3; Col. 3:20

[5:16] b. Deut. 6:2

[5:16] c. Deut. 4:40

[5:17] a. Ex. 20:13; Matt. 5:21

[5:18] a. Ex. 20:14; Mark 10:19; Luke 18:20; (Rom. 13:9); James 2:11

[5:19] a. Ex. 20:15; Lev. 19:11; (Rom. 13:9)

[5:20] a. Ex. 20:16; 23:1; Matt. 19:18

[5:21] a. Ex. 20:17; (Rom. 7:7; 13:9)

[5:22] a. Ex. 24:12; 31:18; Deut. 4:13

[5:23] a. Ex. 20:18, 19

[5:24] a. Ex. 19:19

[5:24] b. Deut. 4:33; Judg. 13:22

[5:25] a. Ex. 20:18, 19; Deut. 18:16

[5:26] a. Deut. 4:33

[5:27] a. Ex. 20:19; Heb. 12:19

[5:28] a. Deut. 18:17

[5:29] a. Deut. 32:29; Ps. 81:13; Is. 48:18

[5:29] b. Deut. 11:1

[5:29] c. Deut. 4:40

[5:31] a. (Gal. 3:19)

[5:32] a. Deut. 17:20; 28:14; Josh. 1:7; 23:6; Prov. 4:27

[5:32] * *observe*

[5:33] a. Deut. 10:12; Ps. 119:3; Jer. 7:23; Luke 1:6

[5:33] b. Deut. 4:40; Eph. 6:3

Deuteronomy 6

[6:1] a. Deut. 12:1

[6:2] a. Ex. 20:20; Deut. 10:12, 13; (Ps. 111:10; 128:1; Eccl. 12:13)

[6:2] b. Deut. 4:40

[6:3] a. Deut. 7:13

[6:3] b. Gen. 22:17

[6:3] c. Ex. 3:8, 17

[6:3] * Lit. *observe to do*

[6:4] a. Deut. 4:35; Mark 12:29; John 17:3; (1 Cor. 8:4, 6)

[6:4] * Or *The LORD is our God, the LORD alone,* i.e., the only one

[6:5] a. Matt. 22:37; Mark 12:30; Luke 10:27

[6:5] b. 2 Kin. 23:25

[6:6] a. Deut. 11:18–20; Ps. 119:11, 98

[6:7] a. Deut. 4:9; 11:19; (Eph. 6:4)

[6:8] a. Ex. 12:14; 13:9, 16; Deut. 11:18; Prov. 3:3; 6:21; 7:3

[6:9] a. Deut. 11:20; Is. 57:8

[6:10] a. Deut. 9:1; 19:1; Josh. 24:13; Ps. 105:44

[6:10] * *promised*

[6:11] a. Deut. 8:10; 11:15; 14:29

[6:12] a. Deut. 8:11–18

[6:13] a. Deut. 13:4; Matt. 4:10; Luke 4:8

[6:13] b. Deut. 5:11; (Is. 45:23; Jer. 4:2)

[6:14] a. Deut. 13:7

[6:15] a. Ex. 20:5; Deut. 4:24

[6:15] b. Ex. 33:3

[6:16] a. Matt. 4:7; Luke 4:12

[6:16] b. (1 Cor. 10:9)

[6:16] * *test*

[6:16] * *tested*

[6:17] a. Deut. 11:22; Ps. 119:4

[6:18] a. Ex. 15:26; Deut. 8:7–10

[6:19] a. Num. 33:52, 53

[6:20] a. Ex. 13:8, 14

[61:21] a. Ex. 13:3

[6:23] * *promised*

[6:24] a. Deut. 6:2

[6:24] b. Deut. 10:12, 13; Job 35:7, 8; Jer. 32:39

[6:24] c. Deut. 4:1

[6:24] * *do*

[6:24] * *ordinances*

[6:24] * *today*

[6:25] a. Deut. 24:13; (Rom. 10:3, 5)

Deuteronomy 7

[7:1] a. Deut. 6:10

[7:1] b. Gen. 15:19–21

[7:1] c. Ex. 33:2

[7:2] a. Num. 31:17; Deut. 20:16–18

[7:2] b. Ex. 23:321a>, 33; Josh. 2:14

[7:3] a. Ex. 34:15, 16; Josh. 23:12; 1 Kin. 11:2; Ezra 9:2

[7:4] a. Deut. 6:15

[7:5] a. Ex. 23:24; 34:13; Deut. 12:3

[7:5] * Heb. *Asherim,* Canaanite deities

[7:6] a. Ex. 19:5, 6; Amos 3:2; 1 Pet. 2:9

[7:6] * *set-apart*

[7:7] a. Deut. 4:37

[7:7] b. Deut. 10:22

[7:8] a. Deut. 10:15

[7:8] b. Luke 1:55, 72, 73

[7:8] c. Ex. 13:3, 14

[7:8] * *slavery*

[7:9] a. 1 Cor. 1:9; 2 Thess. 3:3; 2 Tim. 2:13

[7:9] b. Ex. 20:6; Deut. 5:10; Neh. 1:5; Dan. 9:4

[7:10] a. (2 Pet. 3:9, 10)

[7:10] * *delay*

[7:13] a. Ps. 146:8; Prov. 15:9; John 14:21

[7:13] b. Deut. 28:4

[7:13] * *cause you to increase*

[7:13] * *promised*

[7:14] a. Ex. 23:26

[7:15] a. Ex. 9:14; 15:26; Deut. 28:27, 60

[7:16] a. Ex. 23:33; Judg. 8:27; Ps. 106:36

[7:16] * *consume*

[7:18] a. Ps. 105:5

[7:19] a. Deut. 4:34; 29:3

[7:20] a. Ex. 23:28; Josh. 24:12

[7:22] a. Ex. 23:29, 30

[7:22] * *consume*

[7:24] a. Josh. 10:24, 42; 12:1–24

[7:24] b. Josh. 23:9

[7:24] * *before*

[7:25] a. Prov. 23:6

[7:25] * *desire*

[7:26] a. Deut. 13:17

[7:26] * *devoted* or *banned*

Deuteronomy 8

[8:1] a. Deut. 4:1; 6:24

[8:1] b. Deut. 30:16

[8:1] * *observe to do*

[8:1] * *increase in number*

[8:1] * *promised*

[8:2] a. Deut. 1:3; 2:7; 29:5; Ps. 136:16; Amos 2:10

[8:2] b. Ex. 16:4

[8:2] c. (John 2:25)

[8:3] a. Ex. 16:2, 3

[8:3] b. Ex. 16:12, 14, 35

[8:3] c. Matt. 4:4; Luke 4:4

[8:4] a. Deut. 29:5; Neh. 9:21

[8:5] a. 2 Sam. 7:14; Ps. 89:30–33; Prov. 3:11, 12; Heb. 12:5–11; Rev. 3:19

[8:5] * *consider*

[8:6] a. (Deut. 5:33)

[8:7] a. Deut. 11:9–12; Jer. 2:7

[8:10] a. Deut. 6:11, 12

[8:12] a. Deut. 28:47; Prov. 30:9; Hos. 13:6

[8:12] * *satisfied*

[8:13] * *increased*

[8:14] a. 1 Cor. 4:7

[8:14] b. Deut. 8:11; Ps. 106:21

[8:14] * *becomes proud*

[8:15] a. Is. 63:12–14

[8:15] b. Num. 21:6

[8:15] c. Ex. 17:6; Num. 20:11

[8:16] a. Ex. 16:15

[8:16] b. Jer. 24:5, 6; (Heb. 12:11)

[8:18] a. Prov. 10:22; Hos. 2:8

[8:18] b. Deut. 7:8, 12

[8:18] * *confirm*

[8:19] a. Deut. 4:26; 30:18

[8:20] a. (Dan. 9:11, 12)

Deuteronomy 9

[9:2] a. Num. 13:22, 28, 33; Josh. 11:21, 22

[9:3] a. Deut. 1:33; 31:3; Josh. 3:11; 5:14; John 10:4

[9:3] b. Deut. 4:24; Heb. 12:29

[9:3] c. Deut. 7:24

[9:3] d. Ex. 23:31

[9:4] a. Deut. 8:17; (Rom. 11:6, 20; 1 Cor. 4:4, 7)

[9:4] b. Gen. 15:16; Lev. 18:3, 24–30; Deut. 12:31; 18:9–14

[9:5] a. (Titus 3:5)

[9:5] b. Gen. 50:24

[9:5] * *perform*

[9:6] a. Ex. 34:9; Deut. 31:27

[9:6] * *stubborn* or *rebellious*

[9:7] a. Num. 14:22

[9:7] b. Ex. 14:11

[9:8] a. Ex. 32:1–8; Ps. 106:19

[9:9] a. Ex. 24:12, 15; Deut. 5:2–22

[9:9] b. Ex. 24:18

[9:10] a. Ex. 31:18; Deut. 4:13

[9:10] b. Ex. 19:17

[9:10] * *when you were all gathered together*

[9:12] a. Ex. 32:7, 8

[9:12] b. Deut. 31:29

[9:13] a. Ex. 32:9

[9:13] b. Deut. 9:6

[9:13] * *stubborn* or *rebellious*

[9:14] a. Ex. 32:10

[9:14] b. Deut. 29:20

[9:14] c. Num. 14:12

[9:15] a. Ex. 32:15–19

[9:15] b. Ex. 19:18

[9:16] a. Ex. 32:19

[9:17] a. Ex. 32:19

[9:18] a. Ex. 34:28; Ps. 106:23

[9:18] * *prostrated myself*

[9:19] a. Ex. 32:10, 11; Heb. 12:21

[9:19] b. Ex. 32:14

[9:21] a. Ex. 32:20

[9:22] a. Num. 11:1, 3

[9:22] b. Ex. 17:7

[9:22] c. Num. 11:4, 34

[9:22] * *caused the LORD to be angry*

[9:23] a. Num. 13:3

[9:23] b. Ps. 106:24, 25

[9:24] a. Deut. 9:7; 31:27

[9:25] a. Deut. 9:18

[9:25] * *fell down*

[9:26] a. Deut. 32:9

[10:1] a. Ex. 25:10

[10:1] * *Cut out*

[10:2] a. Ex. 25:16, 21

[10:4] a. Ex. 20:1; 34:28

[10:4] * Lit. *Words*

[10:5] a. Ex. 34:29

[10:5] b. Ex. 40:20

[10:5] c. 1 Kin. 8:9

[10:6] a. Num. 20:25–28; 33:38

[10:6] * *place*

[10:7] a. Num. 33:32–34

[10:7] * *brooks*

[10:8] a. Num. 3:6

[10:8] b. Num. 4:5, 15; 10:21

[10:8] c. Deut. 18:5

[10:8] d. Num. 6:23

[10:8] * *set apart*

[10:9] a. Num. 18:20, 24; Deut. 18:1, 2; Ezek. 44:28

[10:10] a. Ex. 34:28; Deut. 9:18

[10:10] b. Ex. 32:14

[10:11] a. Ex. 33:1

[10:12] a. Mic. 6:8

[10:12] b. Deut. 6:5; Matt. 22:37; 1 Tim. 1:5

[10:13] a. Deut. 6:24

[10:13] * *benefit* or *welfare*

[10:14] a. (Neh. 9:6; Ps. 68:33; 115:16)

[10:15] * Lit. *seed*

[10:16] a. Lev. 26:41; Deut. 30:6; Jer. 4:4; Rom. 2:28, 29

[10:16] b. Deut. 9:6, 13

[10:16] * *rebellious*

[10:17] a. Deut. 4:35, 39; Is. 44:8; 46:9; Dan. 2:47; 1 Cor. 8:5, 6

[10:17] b. Rev. 19:16

[10:17] c. Deut. 7:21

[10:17] d. Acts 10:34

[10:18] a. Ex. 22:22–24; Ps. 68:5; 146:9

[10:20] a. Matt. 4:10

Deuteronomy 11

[11:2] * *discipline*

[11:4] a. Ex. 14:28; Ps. 106:11

[11:5] a. Num. 16:1–35; Ps. 106:16–18

[11:6] * *at their feet*

[11:7] a. Deut. 10:21; 29:2

[11:7] * *work*

[11:8] a. Deut. 31:6, 7, 23; Josh. 1:6, 7

[11:9] a. Deut. 4:40; 5:16, 33; 6:2; Prov. 10:27

[11:9] b. Deut. 9:5

[11:9] c. Ex. 3:8

[11:9] * *promised*

[11:11] a. Deut. 8:7

[11:12] a. 1 Kin. 9:3

[11:13] * Lit. *listen to*

[11:14] a. Lev. 26:4; Deut. 28:12

[11:14] b. Joel 2:23; James 5:7

[11:14] * So with MT, Tg.; Sam., LXX, Vg. *He*

[11:15] a. Ps. 104:14

[11:15] b. Deut. 6:11; Joel 2:19

[11:15] * *satisfied*

[11:16] a. Deut. 29:18; Job 31:27

[11:16] b. Deut. 8:19

[11:17] a. Deut. 6:15; 9:19

[11:17] b. Deut. 28:24; 1 Kin. 8:35; 2 Chr. 6:26; 7:13

[11:17] c. Deut. 4:26; 2 Chr. 36:14–20

[11:18] a. Deut. 6:6–9

[11:18] b. Ps. 119:2, 34

[11:18] c. Deut. 6:8

[11:18] * Lit. *put*

[11:19] a. Deut. 4:9, 10; 6:7; Prov. 22:6

[11:20] a. Deut. 6:9

[11:21] a. Deut. 4:40

[11:21] b. Ps. 72:5; 89:29; Prov. 3:2; 4:10; 9:11

[11:22] a. Deut. 11:1

[11:22] b. Deut. 10:20

[11:23] a. Deut. 4:38

[11:23] b. Deut. 9:1

[11:24] a. Josh. 1:3; 14:9

[11:24] b. Gen. 15:18; Ex. 23:31; Deut. 1:7, 8

[11:24] * Mediterranean

[11:25] a. Deut. 7:24

[11:25] b. Ex. 23:27; Deut. 2:25; Josh. 2:9–11

[11:25] * *before*

[11:26] a. Deut. 30:1, 15, 19

[11:27] a. Deut. 28:1–14

[11:28] a. Deut. 28:15–68

[11:29] a. Deut. 27:12, 13; Josh. 8:33

[11:29] b. Deut. 27:13–26

[11:30] a. Gen. 12:6

Deuteronomy 12

[12:1] a. Deut. 6:1

[12:1] b. Deut. 4:9, 10; 1 Kin. 8:40

[12:1] * As long as

[12:2] a. Ex. 34:13

[12:2] b. 2 Kin. 16:4; 17:10, 11

[12:3] a. Num. 33:52; Deut. 7:5; Judg. 2:2

[12:3] * Heb. *Asherim*

[12:4] a. Deut. 12:31

[12:5] a. Ex. 20:24

[12:5] b. Ex. 15:13; 1 Sam. 2:29

[12:5] * *home*

[12:6] a. Lev. 17:3, 4

[12:6] b. Deut. 14:23

[12:7] a. Deut. 14:26

[12:7] b. Deut. 12:12, 18

[12:7] * *all that you undertake*

[12:8] a. Judg. 17:6; 21:25

[12:9] a. Deut. 3:20; 25:19; Ps. 95:11

[12:9] * Or *place of rest*

[12:10] a. Josh. 11:23

[12:12] a. Deut. 12:18; 26:11

[12:12] b. Deut. 10:9; 14:29

[12:15] a. Deut. 12:21

[12:15] b. Deut. 12:22

[12:15] c. Deut. 14:5

[12:16] a. Gen. 9:4; Lev. 7:26; 17:10–12; 1 Sam. 14:33; Acts 15:20, 29

[12:17] * *contribution*

[12:18] * *all your undertakings*

[12:19] * *Be careful*

[12:20] a. Gen. 15:18; Ex. 34:24; Deut. 11:24; 19:8

[12:21] a. Deut. 14:24

[12:23] a. Gen. 9:4; Lev. 17:10–14; Deut. 12:16

[12:25] a. Deut. 4:40; 6:18; Is. 3:10

[12:25] b. Ex. 15:26; 1 Kin. 11:38

[12:26] a. Num. 5:9, 10; 18:19

[12:27] a. Lev. 1:5, 9, 13, 17

[12:28] a. Deut. 12:25

[12:29] a. Ex. 23:23; Deut. 19:1; Josh. 23:4

[12:31] a. Lev. 18:3, 26, 30; 20:1, 2

[12:31] b. Deut. 18:10; Ps. 106:37; Jer. 32:35

[12:31] * *detestable action*

[12:32] a. Deut. 4:2; 13:18; Josh. 1:7; Prov. 30:6; Rev. 22:18, 19

Deuteronomy 13

[13:1] a. Num. 12:6; Jer. 23:28; Zech. 10:2

[13:1] b. Matt. 24:24; Mark 13:22; 2 Thess. 2:9

[13:2] a. Deut. 18:22

[13:3] a. Ex. 20:20; Deut. 8:2, 16

[13:4] a. Deut. 10:12, 20; 2 Kin. 23:3

[13:4] b. Deut. 30:20

[13:4] * *follow the LORD*

[13:5] a. Deut. 18:20; Jer. 14:15

[13:5] b. Deut. 17:5, 7; 1 Cor. 5:13

[13:5] * *exterminate*

[13:6] a. Deut. 17:2

[13:6] b. Gen. 16:5

[13:6] c. 1 Sam. 18:1, 3

[13:6] * Whom you cherish

[13:8] a. Deut. 7:16; Prov. 1:10

[13:8] * *yield*

[13:9] a. Lev. 24:14; Deut. 17:7

[13:11] a. Deut. 17:13

[13:12] a. Judg. 20:1–48

[13:13] * Lit. *Sons of Belial*

[13:14] * *detestable action*

[13:16] a. Josh. 6:24

[13:16] b. Josh. 8:28; Is. 17:1; 25:2;
Jer. 49:2

[13:16] * Or *as a whole-offering*

[13:16] * Lit. *mound* or *ruin*

[13:17] a. Josh. 6:18

[13:17] b. Josh. 7:26

[13:17] * *increase*

[13:18] a. Deut. 12:25, 28, 32

Deuteronomy 14

[14:1] a. (Rom. 8:16; Gal. 3:26)

[14:1] b. Lev. 19:28; 21:1–5

[14:1] * *make any baldness between your eyes*

[14:21] a. Lev. 20:26; Deut. 7:6; (Rom. 12:1)

[14:3] a. Ezek. 4:14

[14:3] * *abominable*

[14:4] a. Lev. 11:2–45

[14:5] * Or *addax*

[14:8] a. Lev. 11:26, 27

[14:9] a. Lev. 11:9

[14:12] a. Lev. 11:13

[14:19] a. Lev. 11:20

[14:19] b. Lev. 11:23

[14:19] * *swarming*

[14:21] a. Lev. 17:15; 22:8; Ezek. 4:14; 44:31

[14:21] b. Deut. 14:2

[14:21] c. Ex. 23:19; 34:26

[14:22] a. Lev. 27:30; Deut. 12:6, 17; Neh. 10:37

[14:23] a. Deut. 12:5–7

[14:23] b. Deut. 15:19, 20

[14:24] a. Deut. 12:5, 21

[14:26] a. Deut. 12:7

[14:27] a. Deut. 12:12

[14:27] * *neglect*

[14:28] a. Deut. 26:12; Amos 4:4

[14:28] b. Num. 18:21–24

Deuteronomy 15

[15:1] a. Ex. 21:2; 23:10, 11; Lev. 25:4; Jer. 34:14

[15:1] * *remission*

[15:2] * *cancel the debt*

[15:2] * *exact it*

[15:4] a. Deut. 7:13

[15:6] a. Deut. 28:12, 44

[15:7] a. Ex. 23:6; Lev. 25:35–37; Deut. 24:12–14; (1 John 3:17)

[15:7] * *towns*

[15:8] a. Matt. 5:42; Gal. 2:10

[15:8] * *freely open*

[15:9] a. Deut. 28:54, 56

[15:9] b. Ex. 22:23; Deut. 24:15; Job 34:28; Ps. 12:5; James 5:4

[15:9] c. (Matt. 25:41, 42)

[15:10] a. 2 Cor. 9:5, 7

[15:10] b. Deut. 14:29; Ps. 41:1; Prov. 22:9

[15:11] a. Matt. 26:11; Mark 14:7; John 12:8

[15:11] * *freely open*

[15:12] a. Ex. 21:2–6; Jer. 34:14

[15:12] b. Lev. 25:39–46

[15:13] * *set him free*

[15:14] a. Prov. 10:22

[15:15] a. Deut. 5:15

[15:16] a. Ex. 21:5, 6

[15:18] a. Is. 16:14

[15:19] a. Ex. 13:2, 12

[15:19] * *set apart* or *consecrate*

[15:20] a. Lev. 7:15–18; Deut. 12:5;

14:23

[15:21] a. Lev. 22:19–25; Deut. 17:1

[15:22] a. Deut. 12:15, 16, 22

Deuteronomy 16

[16:1] a. Ex. 12:2

[16:1] b. Ex. 13:4

[16:2] a. Num. 28:19

[16:2] b. Deut. 12:5, 26; 15:20

[16:3] a. Num. 29:12

[16:3] b. Ex. 13:3; Deut. 4:9

[16:4] a. Ex. 13:7

[16:4] b. Num. 9:12

[16:6] a. Ex. 12:7–10

[16:7] a. 2 Kin. 23:23

[16:8] a. Ex. 12:16; 13:6; Lev. 23:8, 36

[16:8] * Lit. *restraint*

[16:10] a. Ex. 34:22; Lev. 23:15, 16; Num. 28:26

[16:10] b. 1 Cor. 16:2

[16:11] a. Deut. 16:14

[16:12] a. Deut. 15:15

[16:13] a. Ex. 23:16

[16:14] a. Neh. 8:9

[16:14] * *towns*

[16:15] a. Lev. 23:39–41

[16:16] a. Ex. 23:14–17; 34:22–24

[16:16] b. Ex. 23:15

[16:17] a. Lev. 14:30, 31; Deut. 16:10

[16:18] a. Ex. 23:1–8; Deut. 1:16, 17; John 7:24

[16:118] * *towns*

[16:19] a. Ex. 23:2, 6

[16:19] b. Deut. 1:17

[16:19] c. Ex. 23:8

[16:19] * Lit. *regard faces*

[16:19] * *perverts*

[16:20] a. Ezek. 18:5–9

[16:21] a. Ex. 34:13

[16:21] * Or *Asherah*

[16:22] a. Lev. 26:1

Deuteronomy 17

[17:1] a. Deut. 15:21; Mal. 1:8, 13

[17:1] * Lit. *evil thing*

[17:1] * *detestable thing*

[17:2] a. Deut. 13:6

[17:2] b. Josh. 7:11

[1font>17:2] * *towns*

[17:3] a. Deut. 4:19

[17:3] b. Jer. 7:22

[17:4] a. Deut. 13:12, 14

[17:4] * *detestable thing*

[17:5] a. Lev. 24:14–16; Josh. 7:25

[17:5] b. Deut. 13:6–18

[17:6] a. Num. 35:30; Deut. 19:15; Matt. 18:16; John 8:17; 2 Cor. 13:1; 1 Tim. 5:19; Heb. 10:28

[17:7] a. Deut. 13:5; 19:19; 1 Cor. 5:13

[17:8] a. Deut. 1:17; 2 Chr. 19:10

[17:8] b. Deut. 12:5; 16:2

[17:9] a. Jer. 18:18

[17:9] b. Deut. 19:17–19

[17:9] c. Ezek. 44:24

[17:12] a. Num. 15:30; Deut. 1:43

[17:13] a. Deut. 13:11

[17:14] a. 1 Sam. 8:5, 19, 20; 10:19

[17:15] a. 1 Sam. 9:15, 16; 10:24; 16:12, 13; 1 Chr. 22:8–10; Hos. 8:4

[17:15] b. Jer. 30:21

[17:16] a. 1 Kin. 4:26; 10:26–29; Ps. 20:7

[17:16] b. Is. 31:1; Ezek. 17:15

[17:16] c. Ex. 13:17, 18; Hos. 11:5

[17:16] d. Deut. 28:68

[17:17] a. 1 Kin. 10:14

[17:18] a. Deut. 31:24–26

[17:19] a. Ps. 119:97, 98

[17:20] a. Deut. 5:32; 1 Kin. 15:5

[17:20] * *become proud*

[17:20] * *continue long in his kingdom*

Deuteronomy 18

[18:1] a. Deut. 10:9; 1 Cor. 9:13

[18:1] * *no portion*

[18:3] a. Lev. 7:32–34; Num. 18:11, 12; 1 Sam. 2:13–16, 29

[18:3] * *right*

[18:4] a. Ex. 22:29

[18:5] a. Ex. 28:1

[18:5] b. Deut. 10:8

[18:6] a. Num. 35:2

[18:6] b. Deut. 12:5; 14:23

[18:6] * *towns*

[18:7] a. Num. 1:50; 2 Chr. 31:2

[18:8] a. Lev. 27:30–33; Num. 18:21–24; 2 Chr. 31:4; Neh. 12:44

[18:9] a. Lev. 18:26, 27, 30; Deut. 12:29, 30; 20:16–18

[18:9] * *detestable acts*

[18:10] a. Lev. 18:21; Deut. 12:31

[18:10] b. Ex. 22:18; Lev. 19:26, 31; 20:6, 27; Is. 8:19

[18:10] * Be burned as an offering to an idol

[18:11] a. Lev. 20:27

[18:11] b. 1 Sam. 28:7

[18:12] a. Lev. 18:24; Deut. 9:4

[18:12] * *detestable*

[18:13] * Lit. *perfect*

[18:14] * *allowed you to do so*

[18:15] a. Matt. 21:11; Luke 1:76; 2:25–34; 7:16; 24:19; Acts 3:22

[18:16] a. Deut. 5:23–27

[18:16] b. Ex. 20:18, 19; Heb. 12:19

[18:17] a. Deut. 5:28

[18:18] a. Deut. 34:10; John 1:45; Acts 3:22

[18:18] b. Num. 23:5; Is. 49:2; 51:16; John 17:8

[18:18] c. (John 4:125; 8:28)

[18:19] a. Acts 3:23; (Heb. 12:25)

[18:20] a. Deut. 13:5; Jer. 14:14, 15; Zech. 13:2–5

[18:20] b. Deut. 13:1–3; Jer. 2:8

[18:22] a. Jer. 28:9

[18:22] b. Deut. 13:2

[18:22] c. Deut. 18:20

Deuteronomy 19

[19:1] a. Deut. 12:29

[19:2] a. Ex. 21:13; Num. 35:10–15; Deut. 4:41; Josh. 20:2

[19:4] a. Num. 35:9–34; Deut. 4:42

[19:4] * *ignorantly,* lit. *without knowledge*

[19:6] a. Num. 35:12

[19:8] a. Deut. 12:20

[19:8] b. Gen. 15:18–21

[19:9] a. Josh. 20:7–9

[19:10] a. Num. 35:33; Deut. 21:1–9

[19:11] a. Num. 35:16, 24; Deut. 27:24; (1 John 3:15)

[19:13] a. Deut. 13:8

[19:13] b. Num. 35:33, 34; 1 Kin. 2:31

[19:13] * *purge the blood of the innocent*

[19:14] a. Deut. 27:17; Job 24:2; Prov. 22:28; Hos. 5:10

[19:15] a. Num. 35:30; Deut. 17:6; Matt. 18:16; John 8:17; 2 Cor. 13:1; 1 Tim. 5:19; Heb. 10:28

[19:16] a. Ex. 23:1; Ps. 27:12; 35:11

[19:17] a. Deut. 17:8–11; 21:5

[19:19] a. Prov. 19:5; Dan. 6:24

[19:19] b. Deut. 13:5; 17:7; 21:21; 22:21

[19:20] a. Deut. 17:13; 21:21

[19:21] a. Deut. 19:13

[19:21] b. Ex. 21:23, 24; Lev. 24:20; Matt. 5:38, 39

Deuteronomy 20

[20:1] a. Ps. 20:7; Is. 31:1

[20:1] b. Deut. 7:18

[20:1] c. Num. 23:21; Deut. 5:6; 31:6, 8; 2 Chr. 13:12; 32:7, 8; Ps. 23:4; Is. 41:10

[20:4] a. Deut. 1:30; 3:22; Josh. 23:10

[20:5] a. Neh. 12:27

[20:7] a. Deut. 24:5

[20:8] a. Judg. 7:3

[20:8] * So with MT, Tg.; Sam., LXX, Syr., Vg. *lest he make his brother's heart faint*

[20:10] a. 2 Sam. 10:19

[20:13] a. Num. 31:7

[20:14] a. Josh. 8:2

[20:14] b. 1 Sam. 14:30

[20:16] a. Ex. 23:31–33; Num. 21:2, 3; Deut. 7:1–5; Josh. 11:14

[20:18] a. Ex. 34:12–16; Deut. 7:4; 12:30; 18:9

[20:18] b. Ex. 23:33; 2 Kin. 211:3–15; Ps. 106:34–41

[20:18] * *detestable things*

Deuteronomy 21

[21:3] a. Num. 19:2

[21:5] a. Deut. 10:8; 1 Chr. 23:13

[21:5] b. Deut. 17:8, 9

[21:5] * Lit. *stroke*

[21:6] a. Ps. 19:12; 26:6; Matt. 27:24

[21:8] a. Deut. 19:10, 13; Jon. 1:14

[21:9] a. Deut. 19:13

[21:11] a. Num. 31:18

[21:12] a. Lev. 14:8, 9; Num. 6:9

[21:13] a. Ps. 45:10

[21:14] a. Gen. 34:2; Deut. 22:29; Judg. 19:24

[21:15] a. Gen. 29:33

[21:16] a. 1 Chr. 5:2; 26:10

[21:17] a. 2 Kin. 2:9

[21:17] b. Gen. 49:3

[21:17] c. Gen. 25:31, 33

[21:21] a. Deut. 13:5; 19:19, 20; 22:21, 24

[21:21] b. Deut. 13:11

[21:22] a. Deut. 22:26; Matt. 26:66; Mark 14:64; Acts 23:29

[21:23] a. Josh. 8:29; 10:26, 27; John 19:31

[21:23] b. Lev. 18:25; Num. 35:34

[21:23] c. Gal. 3:13

Deuteronomy 22

[22:1] a. Ex. 23:4

[22:1] * *ignore them*

[22:3] * *may not avoid responsibility*

[22:4] a. Ex. 23:5

[22:5] * *detestable*

[22:6] a. Lev. 22:28

[22:7] a. Deut. 4:40

[22:9] a. Lev. 19:19

[22:10] a. (2 Cor. 6:14–16)

[22:11] a. Lev. 19:19

[22:12] a. Num. 15:37–41; Matt. 23:5

[22:13] a. Deut. 21:15; 24:3

[22:21] a. Deut. 21:21

[22:21] b. Gen. 34:7; Judg. 20:5–10; 2 Sam. 13:12, 13

[22:21] c. Deut. 13:5

[22:21] * *purge the evil person*

[22:22] a. Lev. 20:10; Num. 5:22–27; Ezek. 16:38; (Matt. 5:27, 28); John 8:5; (1 Cor. 6:9; Heb. 13:4)

[22:23] a. Lev. 19:20–22; Matt. 1:18, 19

[22:24] a. Deut. 21:14

[22:24] b. Deut. 22:21, 22; 1 Cor. 5:2, 13

[22:28] a. Ex. 22:16, 17

[22:29] a. Ex. 22:16, 17

[22:29] b. Deut. 22:24

[22:30] a. Lev. 18:8; 20:11; Deut. 27:20; 1 Cor. 5:1

[22:30] b. Ruth 3:9; Ezek. 16:8

Deuteronomy 23

[23:1] a. Lev. 21:20; 22:24

[23:3] a. Neh. 13:1, 2

[23:4] a. Deut. 2:27–30

[23:4] b. Num. 22:5, 6; 23:7; Josh. 24:9; 2 Pet. 2:15; Jude 11

[23:4] * Heb. *Aram Naharaim*

[23:5] a. Deut. 4:37

[23:6] a. Ezra 9:12

[23:7] a. Gen. 25:24–26; Deut. 2:4, 8; Amos 1:11; Obad. 10, 12

[23:7] b. Ex. 22:21; 23:9; Lev. 19:34; Deut. 10:19

1[23:10] a. Lev. 15:16

[23:11] a. Lev. 15:5

[23:14] a. Lev. 26:12; Deut. 7:21

[23:15] a. 1 Sam. 30:15

[23:16] a. Ex. 22:21; Prov. 22:22

[23:16] * *pleases him best*

[23:17] a. Lev. 19:29; Deut. 22:21

[23:17] b. Gen. 19:5; 2 Kin. 23:7

[23:17] * Heb. *qedeshah,* fem. of *qadesh* (note 2)

[23:17] * Heb. *qadesh,* one practicing sodomy and prostitution in religious rituals

[23:18] * *detestable*

[23:19] a. Ex. 22:25; Lev. 25:35–37; Neh. 5:2–7; Ps. 15:5

[23:20] a. Deut. 15:3

[23:20] b. Deut. 15:101a>

[23:21] a. Num. 30:1, 2; Job 22:27; Ps. 61:8; Eccl. 5:4, 5; Matt. 5:33

[23:23] a. Num. 30:2; Ps. 66:13, 14

[23:25] a. Matt. 12:1; Mark 2:23; Luke 6:1

Deuteronomy 24

[24:1] a. (Matt. 5:31; 19:7; Mark 10:4)

[24:1] b. (Jer. 3:8)

[24:1] * *indecency,* lit. *nakedness of a thing*

[24:4] a. (Jer. 3:1)

[24:4] * *a detestable thing*

[24:5] a. Deut. 20:7

[24:5] b. Prov. 5:18

[24:6] * *life*

[24:7] a. Ex. 21:16

[24:7] b. Deut. 19:19

[24:7] * Lit. *stealing*

[24:8] a. Lev. 13:2; 14:2

[24:9] a. (1 Cor. 10:6)

[24:9] b. Num. 12:10

[24:10] a. Matt. 5:42

[24:12] * Lit. *sleep with his pledge*

[24:13] a. Ex. 22:26; Ezek. 18:7

[24:13] b. Job 29:11; 2 Tim. 1:18

[24:13] c. Deut. 6:25; Ps. 106:31; Dan. 4:27

[24:14] a. Lev. 19:13; Deut. 15:7–18; (Prov. 14:31); Amos 4:1; (Mal. 3:5; 1 Tim. 5:18)

[24:15] a. Lev. 19:13; Jer. 22:13

[24:15] b. Ex. 22:23; Deut. 15:9; Job 35:9; James 5:4

[24:16] a. 2 Kin. 14:6; 2 Chr. 25:4; Jer. 31:29, 30; Ezek. 18:20

[24:17] a. Ex. 23:6

[24:17] b. Ex. 22:26

[24:18] a. Deut. 24:22

[24:19] a. Lev. 19:9, 10

[24:19] b. Deut. 15:10; Ps. 41:1; Prov. 19:17

Deuteronomy 25

[25:1] a. Deut. 17:8–13; 19:17; Ezek. 44:24

[25:1] b. Prov. 17:15

[25:1] * Lit. *the judgment*

[25:2] a. Prov. 19:29; Luke 12:48

[25:2] b. Matt. 10:17

[25:3] a. 2 Cor. 11:24

[25:3] b. Job 18:3

[25:4] a. (Prov. 12:10; 1 Cor. 9:9; 1 Tim. 5:18)

[25:4] * *threshes*

[25:5] a. Matt. 22:24; Mark 12:19; Luke 20:28

[25:6] a. Gen. 38:9

[25:6] b. Ruth 4:5, 10

[25:7] a. Ruth 4:1, 2

[25:8] a. Ruth 4:6

[25:9] a. Ruth 4:7, 8

[25:9] b. Ruth 4:11

[25:12] a. Deut. 7:2; 19:13

[25:13] a. Lev. 19:35–37; Prov. 11:1; 20:23; Ezek. 45:10; Mic. 6:11

[25:15] a. Ex. 20:12

[25:16] a. Prov. 11:1; (1 Thess. 4:6)

[25:16] * *detestable*

[25:17] a. Ex. 17:8–16; 1 Sam. 15:1–3

[25:18] a. (Ps. 36:1); Rom. 3:18

[25:19] a. 1 Sam. 15:3

[25:19] b. Ex. 17:14

Deuteronomy 26

[26:2] a. Ex. 22:29; 23:16, 19; Num. 18:13; Deut. 16:10; Prov. 3:9

[26:2] b. Deut. 12:5

[26:3] * LXX *my*

[26:5] a. Gen. 25:20; Hos. 12:12

[26:5] b. Gen. 43:1, 2; 45:7, 11

[26:5] c. Gen. 46:1, 6; Acts 7:15

[26:5] d. Gen. 46:27; Deut. 10:22

[26:5] e. Deut. 1:10

[26:5] * Or *Aramean*

[26:5] * As a resident alien

[26:6] a. Ex. 1:8–11, 14

[26:7] a. Ex. 2:23–25; 3:9; 4:31

[26:8] a. Ex. 12:37, 51; 13:3, 14, 16; Deut. 5:15

[26:8] b. Deut. 4:34; 34:11, 12

[26:9] a. Ex. 3:8, 17

[26:11] a. Deut. 12:7; 16:11; Eccl. 3:12, 13; 5:18–20

[26:12] a. Lev. 27:30; Num. 18:24

[26:12] b. Deut. 14:28, 29

[26:13] a. Ps. 119:141, 153, 176

[26:13] * *hallowed things*

[26:14] a. Lev. 7:20; Jer. 16:7; Hos. 9:4

[26:14] * Lit. *in my mourning*

[26:14] * Or *while I was unclean*

[26:15] a. Ps. 80:14; Is. 63:15; Zech. 2:13

[26:15] b. Ex. 3:8

[26:15] * *home*

[26:17] a. Ex. 20:19

[26:17] b. Deut. 15:5

[26:18] a. Ex. 6:7; 19:5; Deut. 7:6; 14:2; 28:9; (Titus 2:14; 1 Pet. 2:9)

[26:19] a. Deut. 4:7, 8; 28:1

[26:19] b. Ex. 19:6; Deut. 7:6; 28:9; Is. 62:12; (1 Pet. 2:9)

[26:19] * *consecrated*

Deuteronomy 27

[27:2] a. Josh. 4:1

[27:2] b. Josh. 8:32

[27:3] a. Ex. 3:8

[27:4] a. Deut. 11:29; Josh. 8:30, 31

[27:5] a. Ex. 20:25; Josh. 8:31

[27:6] * *uncut*

[27:7] a. Deut. 26:11

[27:8] a. Josh. 8:32

[27:9] a. Deut. 26:18

[27:12] a. Deut. 11:29; Josh. 8:33; Judg. 9:7

[27:13] a. Deut. 11:29; Josh. 8:33

[27:14] a. Deut. 33:10; Josh. 8:33; Dan. 9:11

[27:15] a. Ex. 20:4, 23; 34:17; Lev. 19:4; 26:1; Deut. 4:16, 23; Is. 44:9; Hos. 13:2

[27:15] b. Num. 5:22; Jer. 11:5; 1 Cor. 14:16

[27:15] * *a detestable thing*

[27:16] a. Ex. 20:12; Lev. 19:3; 20:9; Deut. 5:16; 21:18–21; Ezek. 22:7

[27:17] a. Deut. 19:14; Prov. 22:28

[27:18] a. Lev. 19:14

[27:19] a. Ex. 22:21, 22; 23:9; Lev. 19:33; Deut. 10:18; 24:17

[27:20] a. Lev. 18:8; 20:11; Deut. 22:30; 1 Cor. 5:1

[27:21] a. Ex. 22:19; Lev. 18:23; 20:15, 16

[27:22] a. Lev. 18:9

[27:23] a. Lev. 18:17; 20:14

[27:24] a. Ex. 20:13; 21:12; Lev. 24:17; Num. 35:30, 31

[27:25] a. Ex. 23:7; Ps. 15:5; Ezek. 22:12

[27:26] a. Ps. 119:21; Jer. 11:3; Gal. 3:10

Deuteronomy 28

[28:1] a. Ex. 15:26; Lev. 26:3–13; Deut. 7:12–26;

11:13

[28:1] b. Deut. 26:19; 1 Chr. 14:2

[28:2] a. Deut. 28:15

[28:3] a. Ps. 128:1, 4

[28:3] b. Gen. 39:5

[28:4] a. Gen. 22:17

[28:4] * *offspring*

[28:6] a. Ps. 121:8

[28:7] a. Lev. 26:7, 8

[28:8] a. Lev. 25:21

[28:8] b. Deut. 15:10

[28:9] a. Ex. 19:5, 6

[28:10] a. Num. 6:27; 2 Chr. 7:14; Is. 63:19; Dan. 9:18, 19

[28:10] b. Deut. 11:25

[28:11] a. Deut. 30:9

[28:11] * *promised*

[28:12] a. Lev. 26:4; Deut. 11:14

[28:12] b. Deut. 14:29

[28:12] c. Deut. 15:6

[28:12] * *storehouse*

[28:13] a. (Is. 9:14, 15)

[28:13] * *listen to*

[28:14] a. Deut. 5:32; Josh. 1:7

[28:15] a. Lev. 26:14–39; Josh. 23:15; Dan. 9:10–14; Mal. 2:2

[28:18] * *offspring*

[28:20] a. Mal. 2:2

[28:20] b. Is. 65:14

[28:20] c. Ps. 80:16; Is. 30:17

[28:21] * *pestilence*

[28:22] a. Lev. 26:16

[28:22] b. Amos 4:9

[28:22] * *blight*

[28:23] a. Lev. 26:19

[28:25] a. Deut. 32:30

[28:25] * *a terror*

[28:26] a. 1 Sam. 17:44; Ps. 79:2

[28:27] a. Ex. 15:26

[28:27] b. 1 Sam. 5:6

[28:28] a. Jer. 4:9

[28:29] a. Job 5:14

[28:30] a. 2 Sam. 12:11; Job 31:10; Jer. 8:10

[28:30] b. Amos 5:11; Zeph. 1:13

[28:30] c. Deut. 20:6; Job 31:8; Jer. 12:13; Mic. 6:15

[28:32] a. 2 Chr. 29:9

[28:32] b. Ps. 119:82

[28:32] c. Neh. 5:5

[28:32] * *nothing you can do*

[28:33] a. Lev. 26:16; Jer. 5:15, 17

[28:36] a. 2 Kin. 17:4, 6; 24:12, 14; 25:7, 11; 2 Chr. 36:1–21; Jer. 39:1–9

[28:36] b. Deut. 4:28; Jer. 16:13

[28:37] a. 1 Kin. 9:7, 8; Jer. 24:9; 25:9

[28:37] b. Ps. 44:14

[28:37] * *a thing of horror*

[28:38] a. Mic. 6:15; Hag. 1:6

[28:38] b. Ex. 10:4; Joel 1:4

[28:38] * *devour*

[28:39] a. Zeph. 1:13

[28:41] a. Lam. 1:5

[28:42] * *possess*

[28:45] * *did not listen to*

[28:46] a. Num. 26:10; Is. 8:18; Ezek. 14:8

[28:47] a. Deut. 12:7; Neh. 9:35–37

[28:47] b. Deut. 32:15

[28:48] a. Lam. 4:4–6

[28:48] b. Jer. 28:13, 14

[28:49] a. Is. 5:26–30; 7:18–20; Jer. 5:15

[28:49] b. Jer. 48:40; 49:22; Lam. 4:19; Hos. 8:1

[28:50] a. 2 Chr. 36:17

[28:52] a. 2 Kin. 25:1, 2, 4

[28:53] a. Lev. 26:29; 2 Kin. 6:28, 29; Jer. 19:9; Lam. 2:20; 4:10

[28:53] * *offspring*

[28:54] a. Deut. 15:9

[28:54] b. Deut. 13:6

[28:54] * Lit. *tender*

[28:54] * Lit. *his eye shall be evil toward*

[28:56] * *sensitive*

[28:56] * *refined*

[28:56] * Lit. *her eye shall be evil toward*

[28:57] a. Gen. 49:10

[28:57] * *afterbirth*

[28:58] a. Ex. 6:3

[28:59] a. Dan. 9:12

[28:60] a. Deut. 7:15

[28:62] a. Deut. 4:27

[28:62] b. Deut. 10:22; Neh. 9:23

[28:63] a. Deut. 30:9; Jer. 32:41

[28:63] b. Prov. 1:26; (Is. 1:24)

[28:63] c. Jer. 12:14; 45:4

[28:63] * *torn*

[28:64] a. Lev. 26:33; Deut. 4:27, 28; Neh. 1:8; Jer. 16:13; Amos 9:9

[28:64] b. Deut. 28:36

[28:65] a. Lam. 1:3; Amos 9:4

[28:65] b. Lev. 26:36

[28:65] c. Lev. 26:16

[28:65] * *anxious*

[28:67] a. Job 7:4

[28:67] b. Deut. 28:34

[28:68] a. Jer. 43:7; Hos. 8:13

[28:68] b. Deut. 17:16

Deuteronomy 29

[29:1] a. Lev. 26:46; Deut. 5:2, 3

[29:2] a. Ex. 19:4; Deut. 11:7

[29:3] a. Deut. 4:34; 7:19

[29:4] a. (Is. 6:9, 10; Ezek. 12:2); Matt. 13:14; (Acts 28:26, 27); Rom. 11:8; (Eph. 4:18)

[29:4] * *understand* or *know*

[29:5] a. Deut. 1:3; 8:2

[29:5] b. Deut. 8:4

[29:6] a. Ex. 16:12; Deut. 8:3

[29:7] a. Num. 21:23, 24; Deut. 2:26—3:3

[29:8] a. Num. 32:33; Deut. 3:12, 13

[29:9] a. Deut. 4:6; 1 Kin. 2:3

[29:9] b. Josh. 1:7

[29:11] a. Josh. 9:21, 23, 27

[29:12] a. Neh. 10:29

[29:13] a. Deut. 28:9

[29:13] b. Ex. 6:7

[29:13] c. Gen. 17:7, 8

[29:14] a. (Jer. 31:31; Heb. 8:7, 8)

[29:15] a. Acts 2:39

[29:17] * *detestable things*

[29:18] a. Deut. 11:16

[29:18] b. Heb. 12:15

[29:18] c. Deut. 32:32; Acts 8:23

[29:19] a. Jer. 3:17; 7:24

[29:19] b. Is. 30:1

[29:19] * *walk in the stubbornness* or *imagination*

[29:20] a. Ezek. 14:7

[29:20] b. Ps. 74:1

[29:20] c. Ps. 79:5; Ezek. 23:25

[29:20] d. Ex. 32:33; Deut. 9:14; 2 Kin. 14:27

[29:21] a. (Matt. 24:51)

[29:21] b. Deut. 30:10

[29:22] a. Jer. 19:8; 49:17; 50:13

[29:23] a. Jer. 17:6; Zeph. 2:9

[29:23] b. Gen. 19:24, 25; Is. 1:9; Jer. 20:16; Hos. 11:8

[29:24] a. 1 Kin. 9:8; Jer. 22:8

[29:27] a. Dan. 9:11

[29:28] a. 1 Kin. 14:15; 2 Chr. 7:20; Ps. 52:5; Prov. 2:22

Deuteronomy 30

[30:1] a. Lev. 26:40

[30:1] b. Deut. 28:2

[30:1] c. Deut. 28:15–45

[30:1] d. Deut. 4:29, 30

[30:1] * Lit. *cause them to return to your heart*

[30:2] a. Deut. 4:29, 30; Neh. 1:9; Is. 55:7; Lam. 3:40; Joel 2:12

[30:3] a. Ps. 106:45; Jer. 29:14; Lam. 3:22, 32

[30:3] b. Ps. 147:2; Jer. 32:37; Ezek. 34:13

[30:4] a. Deut. 28:64; Neh. 1:9; Is. 62:11

[30:6] a. Deut. 10:16; Jer. 32:39; Ezek. 11:19

[30:7] a. Is. 54:15–17; Jer. 30:16, 20

[30:8] a. Zeph. 3:20

[30:9] a. Deut. 28:11

[30:9] b. Deut. 28:63; Jer. 32:41

[30:9] * *offspring*

[30:11] a. Is. 45:19

[30:11] * *not hidden from*

[30:12] a. Prov. 30:4; Rom. 10:6–8

[30:14] a. Rom. 10:8

[30:15] a. Deut. 30:1, 19

[30:18] a. Deut. 4:261; 8:19

[30:19] a. Deut. 4:26

[30:19] b. Deut. 30:15

[30:20] a. Ps. 27:1; (John 11:25; 14:6; Col. 3:4)

Deuteronomy 31

[31:2] a. Ex. 7:7; Deut. 34:7

[31:2] b. Num. 27:17; 1 Kin. 3:7

[31:2] c. Num. 20:12

[31:3] a. Deut. 9:3; Josh. 11:23

[31:3] b. Num. 27:18

[31:3] c. Num. 27:21

[31:4] a. Deut. 3:21

[31:4] b. Num. 21:24, 33

[31:5] a. Deut. 7:2; 20:10–20

[31:6] a. Josh. 10:25; 1 Chr. 22:13

[31:6] b. Deut. 1:29

[31:6] c. Deut. 20:4

[31:6] d. Josh. 1:5; Heb. 13:5

[31:7] a. Num. 27:19; Deut. 31:23; Josh. 1:6

[31:8] a. Ex. 13:21

[31:8] b. Deut. 31:6; Josh. 1:5; 1 Chr. 28:20; Heb. 13:5

[31:9] a. Deut. 17:18; 31:25, 26

[31:9] b. Num. 4:5, 6, 15; Deut. 10:8; 31:25, 26; Josh. 3:3

[31:10] a. Deut. 15:1, 2

[31:10] b. Lev. 23:34; Deut. 16:13

[31:11] a. Deut. 16:16

[31:11] b. Deut. 12:5

[31:11] c. Josh. 8:34; 2 Kin. 23:2

[31:12] a. Deut. 4:10

[31:13] a. Deut. 11:2

[31:13] b. Ps. 78:6, 7

[31:14] a. Num. 27:13

[31:14] b. Num. 27:19; Deut. 3:28

[31:14] * *commission*

[31:15] a. Ex. 33:9

[31:16] a. Deut. 29:22

[31:16] b. Ex. 34:15; Deut. 4:25–28; Judg. 2:11, 12, 17

[31:16] c. Deut. 32:15

[31:16] d. Judg. 2:20

[31:16] * Die and join your ancestors

[31:17] a. Judg. 2:14; 6:13

[31:17] b. 2 Chr. 15:2

[31:17] c. Deut. 32:20

[31:17] d. Judg. 6:13

[31:17] e. Num. 14:42

[31:17] * *consumed*

[31:18] a. Deut. 31:17; (Is. 1:15, 16)

[31:19] a. Deut. 31:22, 26

[31:20] a. Deut. 32:15–17

[31:20] b. Deut. 31:16

[31:21] a. Deut. 31:17

[31:21] b. Hos. 5:3

[31:21] c. Amos 5:25, 26

[31:23] a. Num. 27:23; Deut. 31:14

[31:23] b. Deut. 31:7

[31:26] a. 2 Kin. 22:8

[31:26] b. Deut. 31:19

[31:27] a. Deut. 9:7, 24

[31:27] b. Ex. 32:9; Deut. 9:6, 13

[31:28] a. Deut. 30:19

[31:29] a. Deut. 32:5; Judg. 2:19; (Acts 20:29, 30)

[31:29] b. Deut. 28:15

[31:29] c. Gen. 49:1; Deut. 4:30

Deuteronomy 32

[32:1] a. Deut. 4:26; Ps. 50:4; Is. 1:2

[32:1] b. Jer. 6:19

[32:2] a. Is. 55:10, 11

[32:2] b. Ps. 72:6

[32:2] * *doctrine*

[32:3] a. Deut. 28:58

[32:3] b. 1 Chr. 29:11

[32:4] a. Deut. 32:15, 18, 30; Ps. 18:2

[32:4] b. 2 Sam. 22:31

[32:4] c. Deut. 7:9; Is. 65:16; Jer. 10:10

[32:4] d. Job 34:10

[32:5] a. Deut. 4:25; 31:29

[32:5] b. Phil. 2:15

[32:6] a. Ps. 116:12

[32:6] b. Ex. 4:22; Deut. 1:31; Is. 63:16

[32:6] c. Ps. 74:2

[32:6] d. Deut. 32:15

[32:6] * *repay the*

[32:7] a. Ps. 44:1

[32:7] b. Ex. 12:26; 13:14; Ps. 78:5–8

[32:8] a. Acts 17:26

[32:8] b. Gen. 11:8

[32:8] * LXX, DSS *angels of God;* Symmachus, Lat. *sons of God*

[32:9] a. Ex. 19:5

[32:10] a. Jer. 2:6; Hos. 13:5

[32:10] b. Ps. 17:8; Prov. 7:2; Zech. 2:8

[32:10] * *pupil*

[32:11] a. Is. 31:5

[32:13] a. Is. 58:14

[32:14] a. Ps. 81:16

[32:14] b. Gen. 49:11

[32:15] a. Deut. 31:20

[32:15] b. Is. 1:4

[32:15] c. Is. 51:13

[32:15] d. Ps. 95:1

[32:16] a. Ps. 78:58; 1 Cor. 10:22

[32:16] * *detestable acts*

[32:17] a. Rev. 9:20

[32:18] a. Is. 17:10

[32:18] b. Jer. 2:32

[32:19] a. Judg. 2:14

[32:20] a. Matt. 17:17

[32:21] a. Ps. 78:58

[32:21] b. Ps. 31:6

[32:21] c. Rom. 10:19

[32:21] * *foolishness,* lit. *vanities*

[32:22] a. Num. 16:33–35; Ps. 18:7, 8; Lam. 4:11

[32:22] * *lowest part of*

[32:22] * Or *Sheol*

[32:23] a. Ex. 32:12; Deut. 29:21, 24

[32:23] b. Ps. 7:12, 13

[32:24] a. Lev. 26:22

[32:26] a. Ezek. 20:23

[32:27] a. Is. 10:12–15

[32:29] a. Ps. 81:13; (Luke 19:42)

[32:29] b. Deut. 31:29

[32:30] a. Judg. 2:14; Ps. 44:12

[32:31] a. (1 Sam. 4:7, 8; Jer. 40:2, 3)

[32:32] a. Is. 1:8–10

[32:33] a. Ps. 58:4

[32:33] b. Rom. 3:13

[32:34] a. (Jer. 2:22)

[32:35] a. Ps. 94:1; Rom. 12:19; Heb. 10:30

[32:35] b. 2 Pet. 2:3

[32:36] a. Ps. 135:14; Heb. 10:30

[32:36] b. Ps. 106:45; Jer. 31:20

[32:36] c. 2 Kin. 14:26

[32:37] a. Judg. 10:14; Jer. 2:28

[32:39] a. Is. 41:4; 43:10

[32:39] b. Deut. 32:12; Is. 45:5

[32:39] c. 1 Sam. 2:6; Ps. 68:20

[32:41] a. Is. 1:24; 66:16; Jer. 50:28–32

[32:41] * *sharpen*

[32:43] a. Rom. 15:10

[32:43] b. 2 Kin. 9:7; Rev. 6:10; 19:2

[32:43] c. Ps. 65:3; 79:9; 85:1

[32:43] * DSS fragment adds *And let all the gods (angels) worship Him;* cf. LXX and Heb. 1:6

[32:44] * Heb. *Hoshea,* Num. 13:8, 16

[32:46] a. Ezek. 40:4; 44:5

[32:46] b. Deut. 11:19

[32:47] a. Deut. 8:3; 30:15–20

[32:47] * *vain*

[32:49] a. Num. 27:12–14; Deut. 3:27

[32:50] a. Num. 20:25, 28; 33:38

[32:50] * Join your ancestors

[32:51] a. Num. 20:11–13

[32:51] b. Lev. 10:3

[32:51] * Lit. *Contention at Kadesh*

[32:52] a. Num. 27:12; Deut. 34:1–5

Deuteronomy 33

[33:1] a. Gen. 49:28

[33:1] b. Ps. 90

[33:2] a. Ex. 19:18, 20; Ps. 68:8, 17; Hab. 3:3

[33:2] b. Deut. 2:1, 4

[33:2] c. Num. 10:12

[33:2] d. Dan. 7:10; Acts 7:53; Rev. 5:11

[33:3] a. Ps. 47:4; Hos. 11:1

[33:3] b. 1 Sam. 2:9

[33:3] c. (Luke 10:39)

[33:3] d. Prov. 2:1

[33:4] a. Deut. 4:2; John 1:17; 7:19

[33:4] b. Ps. 119:111

[33:4] * *charged us with*

[33:5] a. Ex. 15:18

[33:5] b. Deut. 32:15

[33:6] a. Gen. 49:3, 4

[33:7] a. Gen. 49:8–12

[33:7] b. Gen. 49:8

[33:7] c. Ps. 146:5

[33:8] a. Gen. 49:5

[33:8] b. Ex. 28:30; Lev. 8:8

[33:8] c. Num. 20:2–13; Deut. 6:2, 3, 16; Ps. 81:7

[33:8] * Lit. *Perfections and Your Lights*

[33:9] a. (Num. 25:5–8; Matt. 10:37; 19:29)

[33:9] b. (Gen. 29:32)

[33:9] c. Ex. 32:26–28

[33:9] d. Mal. 2:5, 6

[33:10] a. Lev. 10:11; Deut. 31:9–13; Mal. 2:7

[33:10] b. Lev. 1:9; Ps. 51:19

[33:11] a. 2 S1am. 24:23; Ezek. 20:40

[33:13] a. Gen. 49:22–26

[33:13] b. Gen. 27:28

[33:15] a. Gen. 49:26

[33:15] b. Hab. 3:6

[33:16] a. Ex. 3:2–4; Acts 7:30–35

[33:16] b. Gen. 49:26

[33:17] a. 1 Chr. 5:1

[33:17] b. Num. 23:22

[33:17] c. 1 Kin. 22:11; Ps. 44:5

[33:17] d. Gen. 48:19

[33:18] a. Gen. 49:13–15

[33:19] a. Ex. 15:17; Ps. 2:6; Is. 2:3

[33:19] b. Ps. 4:5; 51:19

[33:20] a. 1 Chr. 12:8

[33:21] a. Num. 32:16, 17

[33:21] b. Josh. 4:12

[33:22] a. Gen. 49:16, 17; Josh. 19:47

[33:23] a. Gen. 49:21

[33:23] b. Josh. 19:32

[33:24] a. Gen. 49:20

[33:24] b. Job 29:6

[33:25] a. Deut. 8:9

[33:26] a. Ex. 15:11; Deut. 4:35; Ps. 86:8; Jer. 10:6

[33:26] b. Deut. 32:15

[33:26] c. Deut. 10:14; Ps. 68:3, 33, 34; 104:3

[33:27] a. (Ps. 90:1; 91:2, 9)

[33:27] b. Deut. 9:3–5

[33:28] a. Deut. 33:12; Jer. 23:6; 33:16

[33:28] b. Deut. 8:7, 8

[33:28] c. Num. 23:9

[33:28] d. Gen. 27:28

[33:29] a. Ps. 144:15

[33:29] b. Deut. 4:32–34; 2 Sam. 7:23

[33:29] c. Gen. 15:1; Ps. 115:9

[33:29] d. Ps. 18:44; 66:3

[33:29] e. Num. 33:52

[33:29] * Places for pagan worship

Deuteronomy 34

[34:1] a. Num. 27:12; Deut. 32:49

[34:2] * Mediterranean

[34:3] a. 2 Chr. 28:15

[34:4] a. Gen. 12:7

[34:4] b. Deut. 3:27

[34:5] a. Num. 20:12; Deut. 32:50;
Josh. 1:1, 2

[34:6] a. Jude 9

[34:7] a. Deut. 31:2

[34:7] b. Gen. 27:1; 48:10

[34:7] * *eyesight was not weakened*

[34:7] * *reduced*

[34:8] a. Gen. 50:3, 10

[34:9] a. Is. 11:2

[34:9] b. Num. 27:18, 23

[34:10] a. Deut. 18:15, 18

[34:10] b. Ex. 33:11; Num. 12:8;
Deut. 5:4

[34:11] a. Deut. 7:19

The Holy Spirit's Work in

JOSHUA

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

The anointing for leadership passed from Moses to Joshua (Josh. 1). God's Spirit commanded Joshua to be strong and courageous and to remain obedient to His Word. The Promised Land was given to Joshua and the people of Israel. God's mighty Spirit went with His people into battle to defeat the enemy and possess the land.

Through the life of Joshua we see revealed the powerful role of the Holy Spirit as our *partner* in spiritual warfare. We do not engage the devil alone—God's Holy Spirit is our partner in battle. God's Spirit won the victory before the battle was ever fought: "The LORD said to Joshua: 'See! I have given Jericho into your hand, its king, and the mighty men of valor'" (Josh. 6:2). Following God's Spirit into battle inspires His people with courage and assures that victory belongs to the Lord.

Yet sin in the camp of the Israelites hindered God's Spirit and opened up His people to defeat (Josh. 7). Not all of Israel's enemies were driven from the Promised Land. Their presence left the door open to future idolatry and destruction (Josh. 13–15). God's Spirit spoke through Joshua, commanding the Israelites to obey the Law, shun idolatry, and remain faithful to God.

We must determine to remain faithful as Joshua did. As he approached the end of his life, he admonished the people, "Choose for yourselves this day whom you will serve, whether the gods which your fathers served that were on the other side of the River, or the gods of the Amorites, in whose land you dwell" (Josh. 24:15–16). But he was clear about the choice he had made: "As for me and my house, we will serve the LORD."[*]

---

[*] Adapted from the *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Joshua, 201.

Joshua 1

God's Commission to Joshua

[1]After the death of Moses the servant of the LORD, it came to pass that the LORD spoke to Joshua the son of Nun, Moses' [a]assistant, saying: [2][a]"Moses My servant is dead. Now therefore, arise, go over this Jordan, you and all this people, to the land which I am giving to

them—the children of Israel. 3[a]Every place that the sole of your foot will tread upon I have given you, as I said to Moses. 4[a]From the wilderness and this Lebanon as far as the great river, the River Euphrates, all the land of the Hittites, and to the Great Sea toward the going down of the sun, shall be your territory. 5[a]No man shall *be able to* stand before you all the days of your life; [b]as I was with Moses, *so* [c]I will be with you. [d]I will not leave you nor forsake you. 6[a]Be strong and of good courage, for to this people you shall [*]divide as an inheritance the land which I swore to their fathers to give them. 7Only be strong and very courageous, that you may observe to do according to all the law [a]which Moses My servant commanded you; [b]do not turn from it to the right hand or to the left, that you may [*]prosper wherever you go. 8[a]This Book of the Law shall not depart from your mouth, but [b]you[*] shall meditate in it day and night, that you may observe to do according to all that is written in it. For then you will make your way prosperous, and then you will have good success. 9[a]Have I not commanded you? Be strong and of good courage; [b]do not be afraid, nor be dismayed, for the LORD your God *is* with you wherever you go."

The Order to Cross the Jordan

10Then Joshua commanded the officers of the people, saying, 11"Pass through the camp and command the people, saying, 'Prepare provisions for yourselves, for [a]within three days you will cross over this Jordan, to go in to possess the land which the LORD your God is giving you to possess.' "

12And to the Reubenites, the Gadites, and half the tribe of Manasseh Joshua spoke, saying, 13"Remember [a]the word which Moses the servant of the LORD commanded you, saying, 'The LORD your God is giving you rest and is giving you this land.' 14Your wives, your little ones, and your livestock shall remain in the land which Moses gave you on this side of the Jordan. But you shall [*]pass before your brethren armed, all your mighty men of valor, and help them, 15until the LORD has given your brethren rest, as He *gave* you, and they also have taken possession of the land which the LORD your God is giving them. [a]Then you shall return to the land of your possession and enjoy it, which Moses the LORD’s servant gave you on this side of the Jordan toward the sunrise.”

16So they answered Joshua, saying, “All that you command us we will do, and wherever you send us we will go. 17Just as we heeded Moses in all things, so we will heed you. Only the LORD your God [a]be with you, as He was with Moses. 18Whoever rebels against your command and does not heed your words, in all that you command him, shall be put to death. Only be strong and of good courage.”

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

TAKING BACK GROUND

The Old Testament offers beautiful pictures of New Testament truth. These are called types. The greatest picture or type of spiritual warfare is found in the Book of Joshua. The very name *Joshua* is the Hebrew *Yeshua*, or Jesus, which means “savior” or “deliverer.” The journey of the children of Israel from Egypt through the wilderness to Canaan is a picture of the Christian life. God used all of these experiences to break His people.

The Resistance We Face

In the Christian life we face a threefold enemy: the world, the flesh, and the devil. Deliverance from Egypt pictures our rescue from the world. Canaan represents what is rightfully the believers' now! It is the land flowing with milk and honey. It is the abundant life promised by Jesus in John 10:10.

Most believers have escaped from Egypt, but like the tribe of Gad and the half tribe of Manasseh, they have settled for less than the promises of God. God has willed that His sons and daughters be soldiers! He gave them the land of Canaan, and yet it was filled with fortified cities with great kings who had to be destroyed before they could possess their possessions.

The Riches That Are Yours

Do you see that there are spiritual vistas you have never viewed, mountains you haven't scaled, rivers of life you haven't swum in, fruit you've never tasted, harvests you haven't enjoyed, gifts you've never opened, and abundance you have never experienced?

The towering strongholds have frightened you away. God had given the children of Israel the land, yet they had to claim it, to fight for it (Josh. 1:2). So must you! In Joshua 3:5 God promises to do wonders, to do the supernatural. After you are saved, you must claim every inch of the territory of your soul. Just as the children of Israel had to march over the land, you must take every inch of what Satan would want to take away from you.

The Reinforcements Then Are Yours

The minute the children of Israel stepped out in faith, God showed up with invisible resources—“the Commander of the army of the LORD” (Josh. 5:14). God had promised never to forsake Joshua. Now the Lord has shown up with His army for the fight. We also see the Lord’s presence in that the angel of the Lord has his “sword drawn” (Josh. 5:13). This host of invisible warriors had come to the battle. Remember, God never commands His children to fight alone. “I am with you always, even to the end of the age” (Matt. 28:20).

The Realm That Is Yours

The key passage here is Joshua 6. The children of Israel had to obey the orders to march around Jericho once a day for six days and then seven times on the seventh day. After the seventh time around, they were to blow their trumpets. When this was done, the walls fell and the city was taken. Today if we obey God’s commandments, the walls of our strongholds cannot stand against us.[*]

---

[*] Ron Phillips,

Everyone's Guide to Demons and Spiritual Warfare, 252–254.

LESSONS FROM GOD'S WARRIORS

PROFILE

JOSHUA

Learn to Believe in Your Mind That You Can Do It

Every battle is won or lost in the arena of your mind.

One of the most heartbreaking stories of the Old Testament is told in Numbers when the Israelites disobeyed God by refusing to take possession of the land He had prepared for them. Because they saw themselves as small and weak—they believed in their own minds that they were as grasshoppers before giants—they were unable to fulfill God's call. The giants, who themselves had been afraid of the children of Israel, were instead empowered because of the Israelites' fear. "We were like grasshoppers in our own sight, and so we were in their sight” (Num. 13:33).

It was fear alone that caused the Israelites to miss out on the promise of God. Instead of inheriting property, they were forced to wander homeless until the next generation rose up bold enough to take possession and move in. Among those allowed to become property owners were Joshua and Caleb, the only two of the former generation given the right to hold title and deed in the land of promise. It is recorded in Numbers 13:30 that when the Israelites cried out in fear before Moses, it was Caleb who spoke up, saying, “Let’s go at once to take the land. We can certainly conquer it!” God honored Caleb’s faith.

But what compelled Caleb to speak with such boldness? What was it about Joshua and Caleb that set them apart? The secret to their success is summed up in the first chapter of Joshua. God gave very specific instructions to Joshua about how to secure success, prosperity, and victory over every adversary:

> This Book of the Law shall not depart from

your
mouth,
but
you
shall
meditate
in it
day
and
night,
that
you
may
observe
to do
according
to all
that
is
written
in it.
For
then
you
will
make
your
way
prosperous,
and
then
you
will
have
good
success.
Have
I not
commanded
you?

> Be strong and of good courage; do not be afraid, nor be dismayed, for the LORD your God is with you wherever you go.
>
> —JOSHUA 1:8–9

God instructed Joshua to meditate on His Word day and night so that it would fill his heart, mind, and mouth. Then He commanded him to be strong and courageous. Do you see the connection? Until his mind and mouth only thought and spoke God’s Word, Joshua could not have any hope of being strong and of good courage. Right from the outset God made it a priority to address the issue of Joshua's mind—no other instructions or strategies took precedence over what occupied Joshua's thoughts.

You are the sum total of your thoughts. I have learned that as your deepest driving desire is, so is your will; as your will is, so are your deeds; as your deeds are, so is your destiny. Just as it was important for Joshua to govern his thoughts by the Word of the Lord, it is important for you to meditate daily on God's Word —allowing it to fill your mind before anything else. But you have it better today because Jesus has come. You have the Word made flesh—the Spirit of Christ—residing in you. You have been given the name above 1every name as your spiritual authority, and you have a two-edged sword, which is the Word of God, at your disposal. Do you see how important God's Word is? All things are possible to those who believe (Mark 9:23), but without knowledge of the Word, you don't have the correct truths to believe.

As you follow God's specific instructions and fill your thoughts with those things the Bible tells you to, you will discover that the world will begin to unfold before you with an array of possibilities and reflect back what you choose to focus upon. It is critically important to stay conscious of what's going on in your mind. Random thoughts lead to random accomplishments that rarely build upon one another. Look at how Paul puts it in Philippians:

> Finally, brethren, whatever things are true, whatever things are noble, whatever things are just, whatever things are pure, whatever things are lovely, whatever things are of good report, if there is any virtue and if

> there is anything praiseworthy—meditate on these things. … These do, and the God of peace will be with you.
>
> —PHILIPPIANS 4:8–9

Remember—you must believe in your mind that you can be victorious when you engage the enemy in spiritual warfare!*

---

* Cindy Trimm, *Commanding Your Morning*, 19–

Joshua 2

Rahab Hides the Spies

1Now Joshua the son of Nun sent out two men
[a]from [*]Acacia Grove to spy secretly, saying, “Go, view
the land, especially Jericho.” So they went, and [b]came
to the house of a harlot named [c]Rahab, and [*]lodged
there. 2And [a]it was told the king of Jericho, saying,
“Behold, men have come here tonight from the
children of Israel to search out the country.”

3So the king of Jericho sent to Rahab, saying,
“Bring out the men who have come to you, who have
entered your house, for they have come to search out
all the country.”

4[a]Then the woman took the two men and hid them.
So1 she said, “Yes, the men came to me, but I did not
know where they *were* from. 5And it happened as the
gate was being shut, when it was dark, that the men
went out. Where the men went I do not know; pursue
them quickly, for you may overtake them.” 6(But [a]she
had brought them up to the roof and hidden them
with the stalks of flax, which she had laid in order on
the roof.) 7Then the men pursued them by the road to
the Jordan, to the fords. And as soon as those who
pursued them had gone out, they shut the gate.

8Now before they lay down, she came up to them
on the roof, 9and said to the men: [a]“I know that the
LORD has given you the land, that [b]the terror of you
has fallen on us, and that all the inhabitants of the
land [c]are fainthearted because of you. 10For we have
heard how the LORD [a]dried up the water of the Red
Sea for you when you came out of Egypt, and [b]what
you did to the two kings of the Amorites who *were* on
the other side of the Jordan, Sihon and Og, whom you
[c]utterly destroyed. 11And as soon as we [a]heard *these
things,* [b]our hearts melted; neither did there remain

any more courage in anyone because of you, for [c]the LORD your God, He *is* God in heaven above and on earth beneath. 12Now therefore, I beg you, [a]swear to me by the LORD, since I have shown you kindness, that you also will show kindness to [b]my father's house, and [c]give me *a true token, 13and [a]spare my father, my mother, my brothers, my sisters, and all that they have, and deliver our lives from death."

14So the men answered her, "Our lives for yours, if none of you tell this business of ours. And it shall be, when the LORD has given us the land, that [a]we will deal kindly and truly with you."

15Then she [a]let them down by a rope through the window, for her house *was* on the city wall; she dwelt on the wall. 16And she said to them, "Get to the mountain, lest the pursuers meet you. Hide there three days, until the pursuers have returned. Afterward you may go your way."

17So the men said to her: "We *will be* [a]blameless* of this oath of yours which you have made us swear, 18[a]unless, *when* we come into the land, you bind this line of scarlet cord in the window through which you let us down, [b]and unless you *bring your father, your mother, your brothers, and all your father's household to your own home. 19So it shall be *that* whoever goes outside the doors of your house into the street, his blood *shall be* on his own head, and we *will be* *guiltless. And whoever is with you in the house, [a]his *blood *shall be* on our head if a hand is laid on him. 20And if you tell this business of ours, then we will be *free from your oath which you made us swear."

21Then she said, "According to your words, so *be* it." And she sent them away, and they departed. And she bound the scarlet cord in the window.

22They departed and went to the mountain, and stayed there three days until the pursuers returned. The pursuers sought *them* all along the way, but did not find *them*. 23So the two men returned, descended from the mountain, and crossed over; and they came to Joshua the son of Nun, and told him all that had befallen them. 24And they said to Joshua, “Truly [a]the LORD has delivered all the land into our hands, for indeed all the inhabitants of the country are fainthearted because of us.”

Joshua 3

Israel Crosses the Jordan

1Then Joshua rose early in the morning; and they set out [a]from [*]Acacia Grove and came to the Jordan, he and all the children of Israel, and lodged there before they crossed over. 2So it was, [a]after three days, that the officers went through the camp; 3and they commanded the people, saying, [a]“When you see the ark of the covenant of the LORD your God, [b]and the priests, the Levites, [*]bearing it, then you shall set out from your place and go after it. 4[a]Yet there shall be a space between you and it, about two thousand cubits by measure. Do not come near it, that you may know the way by which you must go, for you have not passed *this* way before.”

5And Joshua said to the people, [a]“Sanctify[*] yourselves, for tomorrow the LORD will do wonders among you.” 6Then Joshua spoke to the priests, saying, [a]“Take up the ark of the covenant and cross over before the people.”

So they took up the ark of the covenant and went before the people.

7And the LORD said to Joshua, “This day I will begin to [a]exalt[*] you in the sight of all Israel, that they may know that, [b]as I was with Moses, *so* I will be with you. 8You shall command [a]the priests who bear the ark of the covenant, saying, ‘When you have come to the edge of the water of the Jordan, [b]you shall stand in the Jordan.’ ”

9So Joshua said to the children of Israel, “Come here, and hear the words of the LORD your God.” 10And Joshua said, “By this you shall know that [a]the living God *is* among you, and *that* He will without fail [b]drive out from before you the [c]Canaanites and the Hittites and the Hivites and the Perizzites and the

Girgashites and the Amorites and the Jebusites:
11Behold, the ark of the covenant of [a]the Lord of all
the earth is crossing over before you into the Jordan.
12Now therefore, [a]take for yourselves twelve men from
the tribes of Israel, one man from every tribe. 13And it
shall come to pass, [a]as soon as the soles of the feet of
the priests who bear the ark of the LORD, [b]the Lord of
all the earth, shall rest in the waters of the Jordan,
that the waters of the Jordan shall be cut off, the
waters that come down from upstream, and they
[c]shall stand as a heap."

14So it was, when the people set out from their
camp to cross over the Jordan, with the priests
bearing the [a]ark of the covenant before the people,
15and as those who bore the ark came to the Jordan,
and [a]the feet of the priests who bore the ark dipped in
the edge of the water (for the [b]Jordan overflows all its
banks [c]during the whole time of harvest), 16that the
waters which came down from upstream stood *still,*
and rose in a heap very far away [*]at Adam, the city
that *is* beside [a]Zaretan. So the waters that went down
[b]into the Sea of the Arabah, [c]the Salt Sea, failed, *and*
were cut off; and the people crossed over opposite
Jericho. 17Then the priests who bore the ark of the
covenant of the LORD stood firm on dry ground in the
midst of the Jordan; [a]and all Israel crossed over on
dry ground, until all the people had crossed
completely over the Jordan.

Joshua 4

The Memorial Stones

1And it came to pass, when all the people had
completely crossed [a]over the Jordan, that the LORD
spoke to Joshua, saying: 2[a]"Take for yourselves twelve
men from the people, one man from every tribe, 3and
command them, saying, 'Take for yourselves twelve
stones from here, out of the midst of the Jordan, from
the place where [a]the priests' feet stood firm. You shall
carry them over with you and leave them in [b]the
lodging place where you lod1ge tonight.' "

4Then Joshua called the twelve men whom he had appointed from the children of Israel, one man from every tribe; 5and Joshua said to them: “Cross over before the ark of the LORD your God into the midst of the Jordan, and each one of you take up a stone on his shoulder, according to the number of the tribes of the children of Israel, 6that this may be [a]a sign among you [b]when your children ask in time to come, saying, ‘What do these stones *mean* to you?’ 7Then you shall answer them that [a]the waters of the Jordan were cut off before the ark of the covenant of the LORD; when it crossed over the Jordan, the waters of the Jordan were cut off. And these stones shall be for [b]a memorial to the children of Israel forever.”

8And the children of Israel did so, just as Joshua commanded, and took up twelve stones from the midst of the Jordan, as the LORD had spoken to Joshua, according to the number of the tribes of the children of Israel, and carried them over with them to the place where they lodged, and laid them down there. 9Then Joshua set up twelve stones in the midst of the Jordan, in the place where the feet of the priests who bore the ark of the covenant stood; and they are there to this day.

10So the priests who bore the ark stood in the midst of the Jordan until everything was finished that the LORD had commanded Joshua to speak to the people, according to all that Moses had commanded Joshua; and the people hurried and crossed over. 11Then it came to pass, when all the people had completely crossed over, that the [a]ark of the LORD and the priests crossed over in the presence of the people. 12And [a]the men of Reuben, the men of Gad, and half the tribe of Manasseh crossed over armed before the children of Israel, as Moses had spoken to them. 13About forty thousand [*]prepared for war crossed over before the LORD for battle, to the plains of Jericho. 14On that day the LORD [a]exalted[*] Joshua in the sight of all Israel; and they feared him, as they had feared Moses, all the days of his life.

15Then the LORD spoke to Joshua, saying, 16“Command the priests who bear [a]the ark of the Testimony to come up from the Jordan.” 17Joshua therefore commanded the priests, saying, “Come up from the Jordan.” 18And it came to pass, when the priests who bore the ark of the covenant of the LORD had come from the midst of the Jordan, *and* the soles of the priests’ feet touched the dry land, that the waters of the Jordan returned to their place [a]and overflowed all its banks as before.

19Now the people came up from the Jordan on the tenth *day* of the first month, and they camped [a]in Gilgal on the east border of Jericho. 20And [a]those twelve stones which they took out of the Jordan, Joshua set up in Gilgal. 21Then he spoke to the children of Israel, saying: [a]“When your children ask their fathers in time to come, saying, ‘What *are* these stones?’ 22then you shall let your children know, saying, [a]‘Israel crossed over this Jordan on [b]dry land’; 23for the LORD your God dried up the waters of the Jordan before you until you had crossed over, as the LORD your God did to the Red Sea, [a]which He dried up before us until we had crossed over, 24[a]that all the peoples of the earth may know the hand of the LORD, that it *is* [b]mighty, that you may [c]fear the LORD your God [*]forever.”

Joshua 5

The Second Generation Circumcised

1So it was, when all the kings of the Amorites who *were* on the west side of the Jordan, and all the kings of the Canaanites [a]who *were* by the sea, [b]heard that the LORD had dried up the waters of the Jordan from before the children of Israel until [*]we had crossed over, that [*]their heart melted; [c]and there was no spirit in them any longer because of the children of Israel.

2At that time the LORD said to Joshua, “Make [a]flint knives for yourself, and circumcise the sons of Israel again the second time.” 3So Joshua made flint knives for himself, and circumcised the sons of Israel at [*]the hill of the foreskins. 4And this *is* the reason why Joshua circumcised them: [a]All the people who came out of Egypt *who were* males, all the men of war, had died in the wilderness on the way, after they had come out of Egypt. 5For all the people who came out had been circumcised, but all the people born in the wilderness, on the way as they came out of Egypt, had not been circumcised. 6For the children of Israel walked [a]forty years in the wilderness, till all the people *who were* men of war, who came out of Egypt, were [*]consumed, because they did not obey the voice of the LORD—to whom the LORD swore that [b]He would not show them the land which the LORD had sworn to their fathers that He would give us, [c]"a land flowing with milk and honey." 7Then Joshua circumcised [a]their sons *whom* He raised up in their place; for they were uncircumcised, because they had not been circumcised on the way.

8So it was, when they had finished circumcising all the people, that they stayed in their places in the camp [a]till they were healed. 9Then the LORD said to Joshua, "This day I have rolled away [a]the reproach of Egypt from you." Therefore the name of the place is called [b]Gilgal[*] to this day.

10Now the children of Israel camped in Gilgal, and kept the Passover [a]on the fourteenth day of the month at twilight on the plains of Jericho. 11And they ate of the produce of the land on the day after the Passover, unleavened bread and [*]parched grain, on the very same day. 12Then [a]the manna ceased on the day after they had eaten the produce of the land; and the children of Israel no longer had manna, but they ate the food of the land of Canaan that year.

The Commander of the Army of the LORD

13And it came to pass, when Joshua was by Jericho, that he lifted his eyes and looked, and behold, [a]a Man stood opposite him [b]with His sword drawn in His hand. And Joshua went to Him and said to Him, "*Are* You for us or for our adversaries?"

14So He said, "No, but *as* Commander of the army of the LORD I have now come.”

And Joshua [a]fell on his face to the earth and [b]worshiped, and said to Him, “What does my Lord say to His servant?”

15Then the Commander of the LORD’s army said to Joshua, [a]“Take your sandal off your foot, for the place where you stand *is* holy.” And Joshua did so.

Joshua 6

The Destruction of Jericho

1Now [a]Jericho was securely shut up because of the children of Israel; none went out, and none came in. 2And the LORD said to Joshua: “See! [a]I have given Jericho into your hand, its [b]king, *and* the mighty men of valor. 3You shall march around the city, all *you* men of war; you shall go all around the city once. This you shall do six days. 4And seven priests shall bear seven [a]trumpets of rams’ horns before the ark. But the seventh day you shall march around the city [b]seven times, and [c]the priests shall blow the trumpets. 5It shall come to pass, when they make a long *blast* with the ram’s horn, *and* when you hear the sound of the trumpet, that all the people shall shout with a great shout; then the wall of the city will fall down flat. And the people shall go up every man straight before him.”

Josh. 6:5

I break down every wall of Jericho.

6Then Joshua the son of Nun called the priests and said to them, “Take up the ark of the covenant, and let seven priests bear seven trumpets of rams’ horns before the ark of the LORD.” 7And he said to the people, “Proceed, and march around the city, and let him who is armed advance before the ark of the LORD.”

8So it was, when Joshua had spoken to the people, that the seven priests bearing the seven trumpets of rams’ horns before the LORD advanced and blew the trumpets, and the ark of the covenant of the LORD followed them. 9The armed men went before the priests who blew the trumpets, [a]and the rear guard came after the ark, while *the priests* continued blowing the trumpets. 10Now Joshua had commanded the people, saying, “You shall not shout or make any noise with your voice, nor shall a word proceed out of your mouth, until the day I say to you, ‘Shout!’ Then you shall shout.” 11So he had [a]the ark of the LORD circle the city, going around *it* once. Then they came into the camp and [*]lodged in the camp.

12And Joshua rose early in the morning, [a]and the priests took up the ark of the LORD. 13Then seven priests bearing seven trumpets of rams’ horns before the ark of the LORD went on continually and blew with the trumpets. And the armed men went before them. But the rear guard came after the ark of the LORD, while *the priests* continued blowing the trumpets. 14And the second day they marched around the city once and returned to the camp. So they did six days.

15But it came to pass on the seventh day that they rose early, about the dawning of the day, and marched around the city seven times in the same manner. On that day only they marched around the city seven times. 16And the seventh time it happened, when the priests blew the trumpets, that Joshua said to the people: “Shout, for the LORD has given you the city! 17Now the city shall be [a]doomed by the LORD to destruction, it and all who *are* in it. Only [b]Rahab the harlot shall live, she and all who *are* with her in the house, because [c]she hid the messengers that we sent. 18And you, [a]by all means abstain from the accursed things, lest you become accursed when you take of the accursed things, and make the camp of Israel a curse, [b]and trouble it. 19But all the silver and gold, and vessels of bronze and iron, *are* [*]consecrated to the LORD; they [*]shall come into the treasury of the LORD."

20So the people shouted when *the priests* blew the trumpets. And it happened when the people heard the sound of the trumpet, and the people shouted with a great shout, that [a]the wall fell down flat. Then the people went up into the city, every man straight before him, and they took the city. 21And they [a]utterly destroyed all that *was* in the city, both man and woman, young and old, ox and sheep and donkey, with the edge of the sword.

22But Joshua had said to the two men who had spied out the country, "Go into the harlot's house, and from there bring out the woman and all that she has, [a]as you swore to her." 23And the young men who had been spies went in and brought out Rahab, [a]her father, her mother, her brothers, and all that she had. So they brought out all her relatives and left them outside the camp of Israel. 24But they burned the city and all that *was* in it with fire. Only the silver and gold, and the vessels of bronze and iron, they put into the treasury of the house of the LORD. 25And Joshua spared Rahab the harlot, her father's household, and all that she had. So [a]she dwells in Israel to this day, because she hid the messengers whom Joshua sent to spy out Jericho.

26Then Joshua [*]charged *them* at that time, saying, [a]"Cursed *be* the man before the LORD who rises up and builds this city Jericho; he shall lay its foundation with his firstborn, and with his youngest he shall set up its gates."

27So the LORD was with Joshua, and his fame spread throughout all the country.

Joshua 7

Defeat at Ai

11font>But the children of Israel [*]committed a [a]trespass regarding the [b]accursed[*] things, for [c]Achan the son of Carmi, the son of [*]Zabdi, the son of Zerah, of the tribe of Judah, took of the accursed things; so the anger of the LORD burned against the children of Israel.

2Now Joshua sent men from Jericho to Ai, which *is* beside Beth Aven, on the east side of Bethel, and spoke to them, saying, “Go up and spy out the country.” So the men went up and spied out Ai. 3And they returned to Joshua and said to him, “Do not let all the people go up, but let about two or three thousand men go up and attack Ai. Do not weary all the people there, for *the people of Ai are* few.” 4So about three thousand men went up there from the people, [a]but they fled before the men of Ai. 5And the men of Ai struck down about thirty-six men, for they chased them *from* before the gate as far as Shebarim, and struck them down on the descent; therefore [a]the[*] hearts of the people melted and became like water.

6Then Joshua [a]tore his clothes, and fell to the earth on his face before the ark of the LORD until evening, he and the elders of Israel; and they [b]put dust on their heads. 7And Joshua said, “Alas, Lord [*]GOD, [a]why have You brought this people over the Jordan at all—to deliver us into the hand of the Amorites, to destroy us? Oh, that we had been content, and dwelt on the other side of the Jordan! 8O Lord, what shall I say when Israel turns its [*]back before its enemies? 9For the Canaanites and all the inhabitants of the land will hear *it,* and surround us, and [a]cut off our name from the earth. Then [b]what will You do for Your great name?”

The Sin of Achan

10So the LORD said to Joshua: “Get up! Why do you lie thus on your face? 11Israel has sinned, and they have also transgressed My covenant which I commanded them. [a]For they have even taken some of the [*]accursed things, and have both stolen and [b]deceived; and they have also put *it* among their own stuff. 12[a]Therefore the children of Israel could not stand before their enemies, *but* turned *their* backs before their enemies, because [b]they have become doomed to destruction. Neither will I be with you anymore, unless you destroy the accursed from among you. 13Get up, [a]sanctify[*] the people, and say, [b]'Sanctify yourselves for tomorrow, because thus says the LORD God of Israel: "*There is* an accursed thing in your midst, O Israel; you cannot stand before your enemies until you take away the accursed thing from among you." 14In the morning therefore you shall be brought according to your tribes. And it shall be *that* the tribe which [a]the LORD takes shall come according to families; and the family which the LORD takes shall come by households; and the household which the LORD takes shall come man by man. 15[a]Then it shall be *that* he who is taken with the accursed thing shall be burned with fire, he and all that he has, because he has [b]transgressed[*] the covenant of the LORD, and because he [c]has done a disgraceful thing in Israel.' "

16So Joshua rose early in the morning and brought Israel by their tribes, and the tribe of Judah was taken. 17He brought the clan of Judah, and he took the family of the Zarhites; and he brought the family of the Zarhites man by man, and Zabdi was taken. 18Then he brought his household man by man, and Achan the son of Carmi, the son of Zabdi, the son of Zerah, of the tribe of Judah, [a]was taken.

19Now Joshua said to Achan, "My son, I beg you, [a]give glory to the LORD God of Israel, [b]and make confession to Him, and [c]tell me now what you have done; do not hide *it*[1] from me."

20And Achan answered Joshua and said, "Indeed [a]I have sinned against the LORD God of Israel, and this is what I have done: 21When I saw among the spoils a beautiful Babylonian garment, two hundred shekels of silver, and a wedge of gold weighing fifty shekels, I

[*]coveted them and took them. And there they are,
hidden in the earth in the midst of my tent, with the
silver under it.”

22So Joshua sent messengers, and they ran to the
tent; and there it was, hidden in his tent, with the
silver under it. 23And they took them from the midst
of the tent, brought them to Joshua and to all the
children of Israel, and laid them out before the LORD.
24Then Joshua, and all Israel with him, took Achan
the son of Zerah, the silver, the garment, the wedge of
gold, his sons, his daughters, his oxen, his donkeys,
his sheep, his tent, and [a]all that he had, and they
brought them to [b]the Valley of Achor. 25And Joshua
said, [a]“Why have you troubled us? The LORD will
trouble you this day.” [b]So all Israel stoned him with
stones; and they burned them with fire after they had
stoned them with stones.

26Then they [a]raised over him a great heap of stones,
still there to this day. So [b]the LORD turned from the
fierceness of His anger. Therefore the name of that
place has been called [c]the Valley of [*]Achor to this day.

Joshua 8

The Fall of Ai

1Now the LORD said to Joshua: [a]“Do not be afraid,
nor be dismayed; take all the people of war with you,
and arise, go up to Ai. See, [b]I have given into your
hand the king of Ai, his people, his city, and his land.
2And you shall do to Ai and its king as you did to
[a]Jericho and its king. Only [b]its spoil and its cattle you
shall take as booty for yourselves. Lay an ambush for
the city behind it.”

3So Joshua arose, and all the people of war, to go
up against Ai; and Joshua chose thirty thousand
mighty men of valor and sent them away by night.
4And he commanded them, saying: “Behold, [a]you shall
lie in ambush against the city, behind the city. Do not
go very far from the city, but all of you be ready.
5Then I and all the people who *are* with me will
approach the city; and it will come about, when they

come out against us as at the first, that [a]we shall flee before them. 6For they will come out after us till we have drawn them from the city, for they will say, '*They are* fleeing before us as at the first.' Therefore we will flee before them. 7Then you shall rise from the ambush and seize the city, for the LORD your God will deliver it into your hand. 8And it will be, when you have taken the city, *that* you shall set the city on fire. According to the commandment of the LORD you shall do. [a]See, I have commanded you."

9Joshua therefore sent them out; and they went to lie in ambush, and stayed between Bethel and Ai, on the west side of Ai; but Joshua lodged that night among the people. 10Then Joshua rose up early in the morning and mustered the people, and went up, he and the elders of Israel, before the people to Ai. 11[a]And all the people of war who *were* with him went up and drew near; and they came before the city and camped on the north side of Ai. Now a valley *lay* between them and Ai. 12So he took about five thousand men and set them in ambush between Bethel and Ai, on the west side of [*]the city. 13And when they had set the people, all the army that *was* on the north of the city, and its rear guard on the west of the city, Joshua went that night into the midst of the valley.

14Now it happened, when the king of Ai saw *it,* that the men of the city hurried and rose early and went out against Israel to battle, he and all his people, at an appointed place before the plain. But he [a]did not know that *there was* an ambush against him behind the city. 15And Joshua and all Israel [a]made as if they were beaten before them, and fled by the way of the wilderness. 16So all the people who *were* in Ai were called together to pursue them. And they pursued Joshua and were drawn away from the city. 17There was not a man left in Ai or Bethel who did not go out after Israel. So they left the city[1] open and pursued Israel.

18Then the LORD said to Joshua, "Stretch out the spear that *is* in your hand toward Ai, for I will give it into your hand." And Joshua stretched out the spear that *was* in his hand toward the city. 19So *those in* ambush arose quickly out of their place; they ran as soon as he had stretched out his hand, and they entered the city and took it, and hurried to set the city on fire. 20And when the men of Ai looked behind them, they saw, and behold, the smoke of the city ascended to heaven. So they had no power to flee this way or that way, and the people who had fled to the wilderness turned back on the pursuers.

21Now when Joshua and all Israel saw that the ambush had taken the city and that the smoke of the city ascended, they turned back and struck down the men of Ai. 22Then the others came out of the city against them; so they were *caught* in the midst of Israel, some on this side and some on that side. And they struck them down, so that they [a]let none of them remain or escape. 23But the king of Ai they took alive, and brought him to Joshua.

24And it came to pass when Israel had made an end of slaying all the inhabitants of Ai in the field, in the wilderness where they pursued them, and when they all had fallen by the edge of the sword until they were consumed, that all the Israelites returned to Ai and struck it with the edge of the sword. 25So it was *that* all who fell that day, both men and women, *were* twelve thousand—all the people of Ai. 26For Joshua did not draw back his hand, with which he stretched out the spear, until he had [a]utterly destroyed all the inhabitants of Ai. 27[a]Only the livestock and the spoil of that city Israel took as booty for themselves, according to the word of the LORD which He had [b]commanded Joshua. 28So Joshua burned Ai and made it [a]a heap forever, a desolation to this day. 29[a]And the king of Ai he hanged on a tree until evening. [b]And as soon as the sun was down, Joshua commanded that they should take his corpse down from the tree, cast it at the entrance of the gate of the city, and [c]raise over it a great heap of stones *that* *remains* to this day.

Joshua Renews the Covenant

30Now Joshua built an altar to the LORD God of Israel [a]in Mount Ebal, 31as Moses the servant of the LORD had commanded the children of Israel, as it is written in the Book of the Law of Moses: [a]"an altar of whole stones over which no man has wielded an iron *tool.*" And [b]they offered on it burnt offerings to the LORD, and sacrificed peace offerings. 32And there, in the presence of the children of Israel, [a]he wrote on the stones a copy of the law of Moses, which he had written. 33Then all Israel, with their elders and officers and judges, stood on either side of the ark before the priests, the Levites, [a]who bore the ark of the covenant of the LORD, [b]the stranger as well as he who was born among them. Half of them *were* in front of Mount Gerizim and half of them in front of Mount Ebal, [c]as Moses the servant of the LORD had commanded before, that they should bless the people of Israel. 34And afterward [a]he read all the words of the law, [b]the blessings and the cursings, according to all that is written in the [c]Book of the Law. 35There was not a word of all that Moses had commanded which Joshua did not read before all the assembly of Israel, [a]with the women, the little ones, [b]and the strangers who were living among them.

Joshua 9

The Treaty with the Gibeonites

1And it came to pass when [a]all the kings who *were* on this side of the Jordan, in the hills and in the lowland and in all the coasts of [b]the Great Sea toward Lebanon—[c]the Hittite, the Amorite, the Canaanite, the Perizzite, the Hivite, and the Jebusite—heard *about it,* 2that they [a]gathered together to fight with Joshua and Israel with one [*]accord.

3But when the inhabitants of [a]Gibeon [b]heard what Joshua had done to Jericho and Ai, 4they worked craftily, and went and [*]pretended to be ambassadors. And they took old sacks on their donkeys, old

wineskins torn and [*]mended, 5old and patched sandals
on their feet, and old garments on themselves; and all
the bread of their provision was dry *and* moldy. 6And
they went to Joshua, [a]to the camp at Gilgal, and said
to him and to the men of Israel, “We have come from
a far country; now therefore, make a [*]covenant with
us.”

7Then the men of Israel said to the [a]Hivites,
“Perhaps you dwell among us; so [b]how can we make a
covenant with you?”

8But they said to Joshua, [a]“We *are* your servants.”

And Joshua said to them, “Who *are* you, and where
do you come from?”

9So they said to him: [a]“From a very far country your
servants have come, because of the name of the LORD
your God; for we have [b]heard of His fame, and all that
He did in Egypt, 10and [a]all that He did to the two
kings of the Amorites who *were* beyond the Jordan—
to Sihon king of Heshbon, and Og king of Bashan,
who was at Ashtaroth. 11Therefore our elders and all
the inhabitants of our country spoke to us, saying,
‘Take provisions with you for the journey, and go to
meet them, and say to them, “We *are* your servants;
now therefore, make a covenant with us.” ’ 12This
bread of ours we took hot *for* our provision from our
houses on the day we departed to come to you. But
now look, it is dry and moldy. 13And these wineskins
which we filled *were* new, and see, they are torn; and
these our garments and our sandals have become old
because of the very long journey.”

14Then the men of Israel took some of their
provisions; [a]but they [*]did not ask counsel of the LORD.
15So Joshua [a]made peace with them, and made a
cove1nant with them to let them live; and the rulers
of the congregation swore to them.

16And it happened at the end of three days, after
they had made a covenant with them, that they heard
that they *were* their neighbors who dwelt near them.
17Then the children of Israel journeyed and came to
their cities on the third day. Now their cities *were*

[a]Gibeon, Chephirah, Beeroth, and Kirjath Jearim. 18But the children of Israel did not [*]attack them, [a]because the rulers of the congregation had sworn to them by the LORD God of Israel. And all the congregation complained against the rulers.

19Then all the rulers said to all the congregation, “We have sworn to them by the LORD God of Israel; now therefore, we may not touch them. 20This we will do to them: We will let them live, lest [a]wrath be upon us because of the oath which we swore to them.” 21And the rulers said to them, “Let them live, but let them be [a]woodcutters and water carriers for all the congregation, as the rulers had [b]promised them.”

22Then Joshua called for them, and he spoke to them, saying, “Why have you deceived us, saying, [a]‘We *are* very far from you,’ when [b]you dwell near us? 23Now therefore, you *are* [a]cursed, and none of you shall be freed from being slaves—woodcutters and water carriers for the house of my God.”

24So they answered Joshua and said, “Because your servants were clearly told that the LORD your God [a]commanded His servant Moses to give you all the land, and to destroy all the inhabitants of the land from before you; therefore [b]we were very much afraid for our lives because of you, and have done this thing. 25And now, here we are, [a]in your hands; do with us as it seems good and right to do to us.” 26So he did to them, and delivered them out of the hand of the children of Israel, so that they did not kill them. 27And that day Joshua made them [a]woodcutters and water carriers for the[1] congregation and for the altar of the LORD, [b]in the place which He would choose, even to this day.

Joshua 10

The Sun Stands Still

1Now it came to pass when Adoni-Zedek king of Jerusalem [a]heard how Joshua had taken [b]Ai and had utterly destroyed it—[c]as he had done to Jericho and its king, so he had done to [d]Ai and its king—and [e]how the inhabitants of Gibeon had made peace with Israel and were among them, [2]that they [a]feared greatly, because Gibeon *was* a great city, like one of the royal cities, and because it *was* greater than Ai, and all its men *were* mighty. [3]Therefore Adoni-Zedek king of Jerusalem sent to Hoham king of Hebron, Piram king of Jarmuth, Japhia king of Lachish, and Debir king of Eglon, saying, [4]"Come up to me and help me, that we may attack Gibeon, for [a]it has made peace with Joshua and with the children of Israel." [5]Therefore the five kings of the [a]Amorites, the king of Jerusalem, the king of Hebron, the king of Jarmuth, the king of Lachish, *and* the king of Eglon, [b]gathered together and went up, they and all their armies, and camped before Gibeon and made war against it.

[6]And the men of Gibeon sent to Joshua at the camp [a]at Gilgal, saying, "Do not forsake your servants; come up to us quickly, save us and help us, for all the kings of the Amorites who dwell in the mountains have gathered together against us."

[7]So Joshua ascended from Gilgal, he and [a]all the people of war with him, and all the mighty men of valor. [8]And the LORD said to Joshua, [a]"Do not fear them, for I have delivered them into your hand; [b]not a man of them shall [c]stand before you." [9]Joshua therefore came upon them suddenly, having marched all night from Gilgal. [10]So the LORD [a]routed them before Israel, killed them with a great slaughter at Gibeon, chased them along the road that goes [b]to Beth Horon, and struck them down as far as [c]Azekah and Makkedah. [11]And it happened, as they fled before Israel *and* were on the descent of Beth Horon, [a]that the LORD cast down large hailstones from heaven on them as far as Azekah, and they died. *There were* more who died from the hailstones than the children of Israel killed with the sword.

Josh. 10:12–14

Fight against

the
spirits
of
the
valley,
and
let
my
enemies
be
avenged
in
the
valley.

12Then Joshua spoke to the LORD in the day when the LORD delivered up the Amorites before the children of Israel, and he said in the sight of Israel:

[a]"Sun, stand still over
Gibeon;

And Moon, in the
Valley of [b]Aijalon."

13So the sun stood
still,

And the moon
stopped,

Till the people had
revenge

Upon their enemies.

[a]*Is* this not written in the Book of Jasher? So the sun stood still in the midst of heaven, and did not hasten to go *down* for about a whole day. 14And there has been [a]no day like that, before it or after it, that the LORD heeded the voice of a man; for [b]the LORD

fought for Israel.

15[a]Then Joshua returned, and all Israel with him, to the camp at Gilgal.

The Amorite Kings Executed

16But these five kings had fled and hidden themselves in a cave at Makkedah. 17And it was told Joshua, saying, "The five kings have been found hidden in the cave at Makkedah."

Josh. 10:16

Let every spirit hiding from me be exposed in the name of Jesus.

18So Joshua said, "Roll large stones against the mouth of the cave, and set men by it to guard them. 19And do not stay *there* yourselves, *but* pursue your enemies, and attack their rear *guard.* Do not allow them to enter their cities, for the LORD your God has delivered them into your hand." 20Then it happened, while Joshua and the children of Israel made an end of slaying them with a very great slaughter, till they had finished, that those who escaped entered fortified cities. 21And all the people returned to the camp, to Joshua at Makkedah, in peace.

[a]No one *moved his tongue against any of the children of Israel.

22Then Joshua said, “Open the mouth of the cave, and bring out those five kings to me from the cave.” 23And they did so, and brought out those five kings to him from the cave: the king of Jerusalem, the king of Hebron, the king of Jarmuth, the king of Lachish, *and* the king of Eglon.

24So it was, when they brought out those kings to Joshua, that Joshua called for all the men of Israel, and said to the captains of the men of war who went with him, “Come near, put your feet on the necks of these kings.” And they drew near and [a]put their feet on their necks. 25Then Joshua said to [*]them, [a]“Do not be afraid, nor be dismayed; be strong and of good courage, for [b]thus the LORD will do to all your enemies against whom you fight.” 26And afterward Joshua struck [*]them and killed them, and hanged them on five trees; and they [a]were hanging on the trees until evening. 27So it was at the time of the going down of the sun *that* Joshua commanded, and they [a]took them down from the trees, cast them into the cave where they had been hidden, and laid large stones against the cave’s mouth, *which remain* until this very day.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Rule That Is Yours

Give the enemy no place.

In Joshua 10:8–25 Joshua was given a clear word from God concerning his enemies. God said no enemy of Israel would be left standing. After hearing from God, Joshua took quick and decisive action. After marching all night, the children of Israel did not rest in the presence of their enemies; instead they attacked them. In the midst of the battle Joshua needed a miracle if he was going to see the word of God fulfilled in the battle. He prayed. God heard his prayer and stopped the sun from going down on the battle. If God has promised victory, He will not allow darkness to overtake the day.

Five mighty kings, those who would stand against the children of Israel, were delivered into Joshua’s hands. With a proclamation of victory, not just for the battle at hand but also for future battles, Joshua destroyed the kings. God will do for you what He did for Joshua. He will give a clear word. Move quickly in that word, and you will be positioned to see a miracle of God. He will deliver your enemies into your hands.[*]

---

[*] Ron Phillips, *Everyone's Guide to Demons and Spiritual Warfare*, 254.

Conquest of the Southland

28On that day Joshua took Makkedah, and struck it and its king with the edge of the sword. He utterly [a]destroyed [*]them—all the people who *were* in it. He let none remain. He also did to the king of Makkedah [b]as he had done to the king of Jericho.

29Then Joshua passed from Makkedah, and all Israel with him, to [a]Libnah; and they fought against Libnah. 30And the LORD also delivered it and its king into the hand of Israel; he struck it and all the people who *were* in it with the edge of the sword. He let none remain in it, but did to its king as he had done to the king of Jericho.

31Then Joshua passed from Libnah, and all Israel with him, to Lachish; and they encamped against it and fought against it. 32And the LORD delivered Lachish into the hand of Israel, who took it on the second day, and struck it and all the people who *were* in it with the edge of the sword, according to all that he had done to Libnah. 33Then Horam king of Gezer came up to help Lachish; and Joshua struck him and his people, until he left him none remaining.

34From Lachish Joshua passed to Eglon, and all Israel with him; and they encamped a1gainst it and fought against it. 35They took it on that day and struck it with the edge of the sword; all the people who *were* in it he utterly destroyed that day, according to all that he had done to Lachish.

36So Joshua went up from Eglon, and all Israel with him, to [a]Hebron; and they fought against it. 37And they took it and struck it with the edge of the sword—its king, all its cities, and all the people who *were* in it; he left none remaining, according to all that he had done to Eglon, but utterly destroyed it and all the people who *were* in it.

38Then Joshua returned, and all Israel with him, to [a]Debir; and they fought against it. 39And he took it and its king and all its cities; they struck them with the edge of the sword and utterly destroyed all the people who *were* in it. He left none remaining; as he had done to Hebron, so he did to Debir and its king, as he had done also to Libnah and its king.

40So Joshua conquered all the land: the [a]mountain country and the *South and the lowland and the wilderness slopes, and [b]all their kings; he left none remaining, but [c]utterly destroyed all that breathed, as the LORD God of Israel had commanded. 41And Joshua conquered them from [a]Kadesh Barnea as far as [b]Gaza, [c]and all the country of Goshen, even as far as Gibeon. 42All these kings and their land Joshua took at one time, [a]because the LORD God of Israel fought for Israel. 43Then Joshua returned, and all Israel with him, to the camp at Gilgal.

Joshua 11

The Northern Conquest

1And it came to pass, when Jabin king of Hazor heard *these things,* that he [a]sent to Jobab king of Madon, to the king [b]of Shimron, to the king of Achshaph, 2and to the kings who *were* from the north, in the mountains, in the plain south of [a]Chinneroth, in the lowland, and in the heights [b]of Dor on the west, 3to the Canaanites in the east and in the west, the [a]Amorite, the Hittite, the Perizzite, the Jebusite in the mountains, [b]and the Hivite below [c]Hermon [d]in the land of Mizpah. 4So they went out, they and all their armies with them, *as* many people [a]*as* the sand that *is* on the seashore in multitude, with very many horses and chariots. 5And when all these kings had *met together, they came and camped together at the waters of Merom to fight against Israel.

6But the LORD said to Joshua, [a]“Do not be afraid because of them, for tomorrow about this time I will deliver all of them slain before Israel. You shall [b]hamstring their horses and burn their chariots with fire.” 7So Joshua and all the people of war with him came against them suddenly by the waters of Merom, and they attacked them. 8And the LORD delivered them into the hand of Israel, who defeated them and chased them to *Greater [a]Sidon, to the *Brook [b]Misrephoth, and to the Valley of Mizpah eastward; they attacked them until they left none of them remaining. [9]So Joshua did to them as the LORD had told him: he hamstrung their horses and burned their chariots with fire.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Battling for Your Children’s Promised Land

The battleground against Satan will be in your mind. Your thoughts will carry on conversations. You will say things in your mind that you will learn not to say with your mouth. For example: "It's no use; my children will never amount to anything." Discipline yourself to bring those thoughts captive to the obedience of Christ as you confess God's Word over them. It is God who helps your children become the people He intended them to become.

One important place of spiritual warfare is in prayer. This is the place where the victories are won. Make prayer a habit. Whenever the en1emy tries to attack your mind with wrong attitudes, discouragement, guilt, condemnation, anger, confusion, panic attacks, or any other negative thought, immediately begin to pray the Word and to declare your position in Christ. You are a child of God, and the evil one cannot harm you. You are a joint-heir with Christ and more than a conqueror. You are “in Christ,” and Christ victoriously defeated Satan in the past, now, and for all eternity.[*]

---

[*] Iris Delgado, *Satan,*

You
Can’t
Have
My
Children,
77.

10Joshua turned back at that time and took Hazor, and struck its king with the sword; for Hazor was formerly the head of all those kingdoms. 11And they struck all the people who *were* in it with the edge of the sword, [a]utterly destroying *them.* There was none left [b]breathing. Then he burned Hazor with fire.

12So all the cities of those kings, and all their kings, Joshua took and struck with the edge of the sword. He utterly destroyed them, [a]as Moses the servant of the LORD had commanded. 13But *as for* the cities that stood on their [*]mounds, Israel burned none of them, except Hazor only, *which* Joshua burned. 14And all the [a]spoil of these cities and the livestock, the children of Israel took as booty for themselves; but they struck every man with the edge of the sword until they had destroyed them, and they left none breathing. 15[a]As the LORD had commanded Moses his servant, so [b]Moses commanded Joshua, and [c]so Joshua did. [*]He left nothing undone of all that the LORD had commanded Moses.

Summary of Joshua’s Conquests

16Thus Joshua took all this land: [a]the mountain country, all the South, [b]all the land of Goshen, the lowland, and the Jordan [*]plain—the mountains of Israel and its lowlands, 171[a]from [*]Mount Halak and the ascent to Seir, even as far as Baal Gad in the Valley of Lebanon below Mount Hermon. He captured [b]all their kings, and struck them down and killed them. 18Joshua made war a long time with all those kings. 19There was not a city that made peace with the children of Israel, except [a]the Hivites, the inhabitants of Gibeon. All *the others* they took in battle. 20For [a]it was of the LORD [*]to harden their hearts, that they should come against Israel in battle, that He might utterly destroy them, *and* that they might receive no mercy, but that He might destroy them, [b]as the LORD had commanded Moses.

21And at that time Joshua came and cut off [a]the Anakim from the mountains: from Hebron, from Debir, from Anab, from all the mountains of Judah, and from all the mountains of Israel; Joshua utterly destroyed them with their cities. 22None of the Anakim were left in the land of the children of Israel; they remained only [a]in Gaza, in Gath, [b]and in Ashdod.

23So Joshua took the whole land, [a]according to all that the LORD had said to Moses; and Joshua gave it as an inheritance to Israel [b]according to their divisions by their tribes. Then the land [c]rested from war.

Joshua 12

The Kings Conquered by Moses

1These *are* the kings of the land whom the children of Israel defeated, and whose land they possessed on the other side of the Jordan toward the rising of the sun, [a]from the River Arnon [b]to Mount Hermon, and all the eastern Jordan plain: 2*One king was* [a]Sihon king of the Amorites, who dwelt in Heshbon *and* ruled half of Gilead, from Aroer, which is on the bank of the River Arnon, from the middle of that river, even as far as the River Jabbok, *which is* the border of the Ammonites, 3and [a]the eastern Jordan plain from the [*]Sea of Chinneroth as far as the [*]Sea of the Arabah (the Salt Sea), [b]the road to Beth Jeshimoth, and [*]southward below [c]the[*] slopes of Pisgah. 4*The other king was* [a]Og king of Bashan and his territory, *who was* of [b]the remnant of the giants, [c]who dwelt at Ashtaroth and at Edrei, 5and reigned over [a]Mount Hermon, [b]over Salcah, over all Bashan, [c]as far as the border of the Geshurites and the Maachathites, and over half of Gilead *to* the border of Sihon king of Heshbon.

6[a]These Moses the servant of the LORD and the children of Israel had conquered; and [b]Moses the servant of the LORD had given it *as* a possession to the Reubenites, the Gadites, and half the tribe of Manasseh.

The Kings Conquered by Joshua

7 And these *are* the kings of the country [a]which Joshua and the children of Israel conquered on this side of the Jordan, on the west, from Baal Gad in the Valley of Lebanon as far as [*]Mount Halak and the ascent to [b]Seir, which Joshua [c]gave to the tribes of Israel *as* a possession according to their divisions, 8 [a]in the mountain country, in the lowlands, in the *Jordan* plain, in the slopes, in the wilderness, and in the South—[b]the Hittites, the Amorites, the Canaanites, the Perizzites, the Hivites, and the Jebusites: 9 [a]the king of Jericho, one; [b]the king of Ai, which *is* beside Bethel, one; 10 [a][1]the king of Jerusalem, one; the king of Hebron, one; 11 the king of Jarmuth, one; the king of Lachish, one; 12 the king of Eglon, one; [a]the king of Gezer, one; 13 [a]the king of Debir, one; the king of Geder, one; 14 the king of Hormah, one; the king of Arad, one; 15 [a]the king of Libnah, one; the king of Adullam, one; 16 [a]the king of Makkedah, one; [b]the king of Bethel, one; 17 the king of Tappuah, one; [a]the king of Hepher, one; 18 the king of Aphek, one; the king of [*]Lasharon, one; 19 the king of Madon, one; [a]the king of Hazor, one; 20 the king of [a]Shimron Meron, one; the king of Achshaph, one; 21 the king of Taanach, one; the king of Megiddo, one; 22 [a]the king of Kedesh, one; the king of Jokneam in Carmel, one; 23 the king of Dor in the [a]heights of Dor, one; the king of [b]the people of Gilgal, one; 24 the king of Tirzah, one—[a]all the kings, thirty-one.

Joshua 13

Remaining Land to Be Conquered

1 Now Joshua [a]was old, advanced in years. And the LORD said to him: “You are old, advanced in years, and there remains very much land yet to be possessed. 2 [a]This is the land that yet remains: [b]all the

territory of the Philistines and all [c]*that of* the Geshurites, 3[a]from Sihor, which *is* east of Egypt, as far as the border of Ekron northward (*which* is counted as Canaanite); the [b]five lords of the Philistines—the Gazites, the Ashdodites, the Ashkelonites, the Gittites, and the Ekronites; also [c]the Avites; 4from the south, all the land of the Canaanites, and Mearah that belongs to the Sidonians [a]as far as Aphek, to the border of [b]the Amorites; 5the land of [a]the [*]Gebalites, and all Lebanon, toward the sunrise, [b]from Baal Gad below Mount Hermon as far as the entrance to Hamath; 6all the inhabitants of the mountains from Lebanon as far as [a]the [*]Brook Misrephoth, *and* all the Sidonians—them [b]I will drive out from before the children of Israel; only [c]divide[*] it by lot to Israel as an inheritance, as I have commanded you. 7Now therefore, divide this land as an inheritance to the nine tribes and half the tribe of Manasseh."

The Land Divided East of the Jordan

8With the other half-tribe the Reubenites and the Gadites received their inheritance, [a]which Moses had given them, [b]beyond the Jordan eastward, as Moses the servant of the LORD had given them: 9from Aroer which *is* on the bank of the River Arnon, and the town that *is* in the midst of the ravine, [a]and all the plain of Medeba as far as Dibon; 10[a]all the cities of Sihon king of the Amorites, who reigned in Heshbon, as far as the border of the children of Ammon; 11[a]Gilead, and the border of the Geshurites and Maachathites, all Mount Hermon, and all Bashan as far as Salcah; 12all the kingdom of Og in Bashan, who reigned in Ashtaroth and Edrei, who remained of [a]the remnant of the giants; [b]for Moses had [*]defeated and [*]cast out these.

13Nevertheless the children of Israel [a]did not drive out the Geshurites or the Maachathites, but the Geshurites and the Maachathites dwell among the Israelites until this day.

14[a]Only to the tribe of Levi he had given [*]no inheritance; the sacrifices of the LORD God of Israel made by fire *are* their inheritance, [b]as He said to them.

The Land of Reuben

15[a]And Moses had given to the tribe of the children of Reuben *an inheritance* according to their families. 16Their territory was [a]from Aroer, which *is* on the bank of the River Arnon, [b]and the city that *is* in the midst of the ravine, [c]and all the plain by Medeba; 17[a]Heshbon and all its cities that *are* in the plain: Dibon, Bamoth Baal, Beth Baal Meon, 18[a]Jahaza, Kedemoth, Mephaath, 19[a]Kirjathaim, [b]Sibmah, Zereth Shahar on the mountain of the valley, 20Beth Peor, [a]the slopes of Pisgah, and Beth Jeshimoth—21[a]all the cities of the plain and all the kingdom of Sihon king of the Amorites, who reigned in Heshbon, [b]whom Moses had struck [c]with the princes of Midian: Evi, Rekem, Zur, Hur, and Reba, who *were* princes of Sihon dwelling in the country. 22The children of Israel also killed with the sword [a]Balaam the son of Beor, the [*]soothsayer, among those who were killed by them. 23And the border of the children of Reuben was the bank of the Jordan. This *was1i> the inheritance of the children of Reuben according to their families, the cities and their villages.*

The Land of Gad

24[a]Moses also had given *an inheritance* to the tribe of Gad, to the children of Gad according to their families. 25[a]Their territory was Jazer, and all the cities of Gilead, [b]and half the land of the Ammonites as far as Aroer, which *is* before [c]Rabbah, 26and from Heshbon to Ramath Mizpah and Betonim, and from Mahanaim to the border of Debir, 27and in the valley [a]Beth Haram, Beth Nimrah, [b]Succoth, and Zaphon, the rest of the kingdom of Sihon king of Heshbon, with the Jordan as *its* border, as far as the edge [c]of the [*]Sea of Chinnereth, on the other side of the Jordan eastward. 28This *is* the inheritance of the children of Gad according to their families, the cities and their villages.

Half the Tribe of Manasseh (East)

29[a]Moses also had given *an inheritance* to half the tribe of Manasseh; it was for half the tribe of the children of Manasseh according to their families: 30Their territory was from Mahanaim, all Bashan, all the kingdom of Og king of Bashan, and [a]all the towns of Jair which are in Bashan, sixty cities; 31half of Gilead, and [a]Ashtaroth and Edrei, cities of the kingdom of Og in Bashan, *were* for the [b]children of Machir the son of Manasseh, for half of the children of Machir according to their families.

32These *are the areas* which Moses had [*]distributed as an inheritance in the plains of Moab on the other side of the Jordan, by Jericho eastward. 33[a]But to the tribe of Levi Moses had given no inheritance; the LORD God of Israel *was* their inheritance, [b]as He had said to them.

Joshua 14

The Land Divided West of the Jordan

1These *are the areas* which the children of Israel inherited in the land of Canaan, [a]which Eleazar the priest, Joshua the son of Nun, and the heads of the fathers of the tribes of the children of Israel distributed as an inheritance to them. 2Their inheritance *was* [a]by lot, as the LORD had commanded by the hand of Moses, for the nine tribes and the half-tribe. 3[a]For Moses had given the inheritance of the two tribes and the half-tribe on the other side of the Jordan; but to the Levites he had given no inheritance among them. 4For [a]the children of Joseph were two tribes: Manasseh and Ephraim. And they gave no part to the Levites in the land, except [b]cities to dwell *in,* with their common-lands for their livestock and their property. 5[a]As the LORD had commanded Moses, so the children of Israel did; and they divided the land.

Caleb Inherits Hebron

6Then the children of Judah came to Joshua in Gilgal. And Caleb the son of Jephunneh the [a]Kenizzite said to him: “You know [b]the word which the LORD said to Moses the man of God concerning [c]you and me in Kadesh Barnea. 7I *was* forty years old when Moses the servant of the LORD [a]sent me from Kadesh Barnea to spy out the land, and I brought back word to him as *it was* in my heart. 8Nevertheless [a]my brethren who went up with me made the [*]heart of the people melt, but I wholly [b]followed the LORD my God. 9So Moses swore on that day, saying, [a]'Surely the land [b]where your foot has trodden shall be your inheritance and your children's forever, because you have wholly followed the LORD my God.' 10And now, behold, the LORD has kept me [a]alive, [b]as He said, these forty-five years, ever since the LORD spoke this word to Moses while Israel [*]wandered in the wilderness; and now, here I am this day, eighty-five years old. 11[a]As yet I *am as* strong this day as on the day that Moses sent me; just as my strength *was* then, so now *is* my strength for war, both [b]for going out and for coming in. 12Now therefore, give me this mountain of which the LORD spoke in that day; for you heard in that day how [a]the Anakim *were* there, and *that* the cities *were* great *and* fortified. [b]It may be that the LORD *will be* with me, and [c]I shall be able to drive them out as the LORD said."

13And Joshua [a]blessed him, [b]and gave Hebron to Caleb the son of Jephunneh as an inheritance. 14[a]Hebron therefore became the inheritance of Caleb the son of Jephunneh the Kenizzite to this day, because he [b]wholly followed the LORD God of Israel. 15And [a]the name of Hebron formerly was Kirjath Arba (*Arba was* the greatest man among the Anakim).

[b]Then the land had rest from war.

Joshua 15

The Land of Judah

1So *this* was the [*]lot of the tribe of the children of Judah according to their families:

[a]The border of Edom at the [b]Wilderness of Zin southward *was* the extreme southern boundary. 2And their [a]southern border began at the shore of the Salt Sea, from the bay that faces southward. 3Then it went out to the southern side of [a1]the Ascent of Akrabbim,

passed along to Zin, ascended on the south side of Kadesh Barnea, passed along to Hezron, went up to Adar, and went around to Karkaa. 4*From there* it passed [a]toward Azmon and went out to the Brook of Egypt; and the border ended at the sea. This shall be your southern border.

5The east border *was* the Salt Sea as far as the mouth of the Jordan.

And the [a]border on the northern quarter *began* at the bay of the sea at the mouth of the Jordan. 6The border went up to [a]Beth Hoglah and passed north of Beth Arabah; and the border went up [b]to the stone of Bohan the son of Reuben. 7Then the border went up toward [a]Debir from [b]the Valley of Achor, and it turned northward toward Gilgal, which *is* before the Ascent of Adummim, which *is* on the south side of the valley. The border continued toward the waters of En Shemesh and ended at [c]En Rogel. 8And the border went up [a]by the Valley of the Son of Hinnom to the southern slope of the [b]Jebusite *city* (which *is* Jerusalem). The border went up to the top of the mountain that *lies* before the Valley of Hinnom westward, which *is* at the end of the Valley [c]of [*]Rephaim northward. 9Then the border went around from the top of the hill to [a]the fountain of the water of Nephtoah, and extended to the cities of Mount Ephron. And the border went around [b]to Baalah (which *is* [c]Kirjath Jearim). 10Then the border [*]turned westward from Baalah to Mount Seir, passed along to the side of Mount Jearim on the north (which *is* Chesalon), went down to Beth Shemesh, and passed on to [a]Timnah. 11And the border went out to the side of [a]Ekron northward. Then the border went around to Shicron, passed along to Mount Baalah, and extended to Jabneel; and the border ended at the sea.

Josh.
15:8

Let
all
the
giants
of
the
valley
be
destroyed.

12The west border *was* [a]the coastline of the Great Sea. This *is* the boundary of the children of Judah all around according to their families.

Caleb Occupies Hebron and Debir

13[a]Now to Caleb the son of Jephunneh he gave a share among the children of [b]Judah, according to the commandment of the LORD to Joshua, *namely,* [c]Kirjath Arba, which *is* Hebron (*Arba was* the father of Anak). 14Caleb drove out [a]the three sons of Anak from there: [b]Sheshai, Ahiman, and Talmai, the children of Anak. 15Then [a]he went up from there to the inhabitants of Debir (formerly the name of Debir *was* Kirjath Sepher).

16[a]And Caleb said, “He who [*]attacks Kirjath Sepher and takes it, to him I will give Achsah my daughter as wife.” 17So [a]Othniel the [b]son of Kenaz, the brother of Caleb, took it; and he gave him [c]Achsah his daughter as wife. 18[a]Now it was so, when she came *to him,* that she persuaded him to ask her father for a field. So [b]she dismounted from *her* donkey, and Caleb said to her, “What do you wish?” 19She answered, “Give me a [a]blessing; since you have given me land in the South, give me also springs of water.” So he gave her the upper springs and the lower springs.

The Cities of Judah

20This *was* the inheritance of the tribe of the children of Judah according to their families:

21The cities at the limits of the tribe of the children of Judah, toward the border of Edom in the South, were Kabzeel, [a]Eder, Jagur, 22Kinah, 1Dimonah, Adadah, 23Kedesh, Hazor, Ithnan, 24[a]Ziph, Telem, Bealoth, 25Hazor, Hadattah, Kerioth, Hezron (which *is* Hazor), 26Amam, Shema, Moladah, 27Hazar Gaddah, Heshmon, Beth Pelet, 28Hazar Shual, [a]Beersheba, Bizjothjah, 29Baalah, Ijim, Ezem, 30Eltolad, Chesil, [a]Hormah, 31[a]Ziklag, Madmannah, Sansannah, 32Lebaoth, Shilhim, Ain, and [a]Rimmon: all the cities *are* twenty-nine, with their villages.

33In the lowland: [a]Eshtaol, Zorah, Ashnah, 34Zanoah, En Gannim, Tappuah, Enam, 35Jarmuth, [a]Adullam, Socoh, Azekah, 36Sharaim, Adithaim, Gederah, and Gederothaim: fourteen cities with their villages; 37Zenan, Hadashah, Migdal Gad, 38Dilean, Mizpah, [a]Joktheel, 39[a]Lachish, Bozkath, [b]Eglon, 40Cabbon, [*]Lahmas, Kithlish, 41Gederoth, Beth Dagon, Naamah, and Makkedah: sixteen cities with their villages; 42[a]Libnah, Ether, Ashan, 43Jiphtah, Ashnah, Nezib, 44Keilah, Achzib, and Mareshah: nine cities with their villages; 45Ekron, with its towns and villages; 46from Ekron to the sea, all that *lay* near [a]Ashdod, with their villages; 47Ashdod with its towns and villages, Gaza with its towns and villages—as far as [a]the Brook of Egypt and [b]the Great Sea with *its* coastline.

48And in the mountain country: Shamir, Jattir, Sochoh, 49Dannah, Kirjath Sannah (which *is* Debir), 50Anab, Eshtemoh, Anim, 51[a]Goshen, Holon, and Giloh: eleven cities with their villages; 52Arab, Dumah, Eshean, 53Janum, Beth Tappuah, Aphekah, 54Humtah, [a]Kirjath Arba (which *is* Hebron), and Zior: nine cities with their villages; 55[a]Maon, Carmel, Ziph, Juttah, 56Jezreel, Jokdeam, Zanoah, 57Kain, Gibeah, and Timnah: ten cities with their villages; 58Halhul, Beth Zur, Gedor, 59Maarath, Beth Anoth, and Eltekon: six cities with their villages; 60[a]Kirjath Baal (which *is* Kirjath Jearim) and Rabbah: two cities with their villages.

61In the wilderness: Beth Arabah, Middin, Secacah, 62Nibshan, the City of Salt, and [a]En Gedi: six cities with their villages.

63As for the Jebusites, the inhabitants of Jerusalem,

[a]the children of Judah could not drive them out; [b]but the Jebusites dwell with the children of Judah at Jerusalem to this day.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Speak Life to Your Children

Always speak life—even when your flesh and your mind demand to stand up for your rights, and even when you know you are

right.
Build
up
instead
of
tear
down.
Encourage
instead
of
discourage.
There
is
power
in
your
tongue
to
give
life
or to
destroy,
to
cause
anger
or to
bring
peace,
and
to
bring
unity
or
cause
division.

There
is
power
in

God’s
love!
Go
against
your
flesh
and
speak
life.
Command
your
flesh
to
walk
in
love.
Love
will
disperse
the
darkness.
If
you
have
ever
experienced
the
overwhelming,
unconditional
love
of
God,
then
you
should
be
willing
to
allow
God

to
love
your
children
unconditionally
through
the1
power
of
your
tongue.

Unconditional
love
is an
enormously
powerful
instrument
that
can
be
used
to
encourage
your
children
or to
destroy
their
hopes
and
dreams.
It is
your
choice.
You
can
build
up or
you

can
diminish.[*]

---

[*] Iris Delgado, *Satan, You Can’t Have My Children*, 78.

Joshua 16

Ephraim and West Manasseh

[1]The lot [*]fell to the children of Joseph from the Jordan, by Jericho, to the waters of Jericho on the east, to the [a]wilderness that goes up from Jericho through the mountains to [*]Bethel, [2]then went out [*]from [a]Bethel to Luz, passed along to the border of the Archites at Ataroth, [3]and went down westward to the boundary of the Japhletites, [a]as far as the boundary of Lower Beth Horon to [b]Gezer; and [*]it ended at the sea.

[4][a]So the children of Joseph, Manasseh and Ephraim, took their [*]inheritance.

The Land of Ephraim

[5][a]The border of the children of Ephraim, according to their families, was *thus:* The border of their inheritance on the east side was [b]Ataroth Addar [c]as far as Upper Beth Horon.

[6]And the border went out toward the sea on the north side of [a]Michmethath; then the border went around eastward to Taanath Shiloh, and passed by it on the east of Janohah. [7]Then it went down from Janohah to Ataroth and [*]Naarah, reached to Jeric1ho,

and came out at the Jordan.

8The border went out from [a]Tappuah westward to the [b]Brook Kanah, and [*]it ended at the sea. This *was* the inheritance of the tribe of the children of Ephraim according to their families. 9[a]The separate cities for the children of Ephraim *were* among the inheritance of the children of Manasseh, all the cities with their villages.

10[a]And they did not drive out the Canaanites who dwelt in Gezer; but the Canaanites dwell among the Ephraimites to this day and have become forced laborers.

Joshua 17

The Other Half-Tribe of Manasseh (West)

1There was also a lot for the tribe of Manasseh, for he *was* the [a]firstborn of Joseph: *namely* for [b]Machir the firstborn of Manasseh, the father of Gilead, because he was a man of war; therefore he was given [c]Gilead and Bashan. 2And there was *a lot* for [a]the rest of the children of Manasseh according to their families: [b]for the children of [*]Abiezer, the children of Helek, [c]the children of Asriel, the children of Shechem, [d]the children of Hepher, and the children of Shemida; these *were* the male children of Manasseh the son of Joseph according to their families.

3But [a]Zelophehad the son of Hepher, the son of Gilead, the son of Machir, the son of Manasseh, had no sons, but only daughters. And these *are* the names of his daughters: Mahlah, Noah, Hoglah, Milcah, and Tirzah. 4And they came near before [a]Eleazar the priest, before Joshua the son of Nun, and before the rulers, saying, [b]“The LORD commanded Moses to give us an [*]inheritance among our brothers.” Therefore, according to the commandment of the LORD, he gave them an inheritance among their father’s brothers. 5Ten shares fell to [a]Manasseh, besides the land of Gilead and Bashan, which *were* on the other side of the Jordan, 6because the daughters of Manasseh received an inheritance among his sons; and the rest of Manasseh's sons had the land of Gilead.

7And the territory of Manasseh was from Asher to [a]Michmethath, that *lies* east of Shechem; and the border went along south to the inhabitants of En Tappuah. 8Manasseh had the land of Tappuah, but [a]Tappuah on the border of Manasseh *belonged* to the children of Ephraim. 9And the [*]border descended to the [*]Brook Kanah, southward to the brook. [a]These cities of Ephraim *are* among the cities of Manasseh. The border of Manasseh *was* on the north side of the brook; and it ended at the sea.

10Southward *it was* Ephraim's, northward *it was* Manasseh's, and the sea was its border. Manasseh's territory was adjoining Asher on the north and Issachar on the east. 11And in Issachar and in Asher, [a]Manasseh had [b]Beth Shean and its towns, Ibleam and its towns, the inhabitants of Dor and its towns, the inhabitants of En Dor and its towns, the inhabitants of Taanach and its towns, and the inhabitants of Megiddo and its towns—three hilly regions. 12Yet [a]the children of Manasseh could not drive out *the inhabitants of* those cities, but the Canaanites were determined to dwell in that land. 13And it happened, when the children of Israel grew strong, that they put the Canaanites to [a]forced labor, but did not utterly drive them out.

More Land for Ephraim and Manasseh

14[a]Then the children of Joseph spoke to Joshua, saying, "Why have you given us *only* [b]one [*]lot and one share to inherit, since we *are* [c]a great people, inasmuch as the LORD has blessed us until now?"

15So Joshua answered them, "If you *are* a great people, *then* go up to the forest *country* and clear a place for yourself there in th1e land of the Perizzites and the giants, since the mountains of Ephraim are too confined for you."

16But the children of Joseph said, "The mountain country is not enough for us; and all the Canaanites who dwell in the land of the valley have [a]chariots of iron, *both those* who *are* of Beth Shean and its towns and *those* who *are* [b]of the Valley of Jezreel.”

17And Joshua spoke to the house of Joseph—to Ephraim and Manasseh—saying, “You *are* a great people and have great power; you shall not have *only* one [*]lot, 18but the mountain country shall be yours. Although it *is* wooded, you shall cut it down, and its [*]farthest extent shall be yours; for you shall drive out the Canaanites, [a]though they have iron chariots *and* are strong.”

Joshua 18

The Remainder of the Land Divided

1Now the whole congregation of the children of Israel assembled together [a]at Shiloh, and [b]set up the tabernacle of meeting there. And the land was subdued before them. 2But there remained among the children of Israel seven tribes which had not yet received their inheritance.

3Then Joshua said to the children of Israel: [a]“How long will you neglect to go and possess the land which the LORD God of your fathers has given you? 4Pick out from among you three men for *each* tribe, and I will send them; they shall rise and go through the land, survey it according to their inheritance, and come *back* to me. 5And they shall divide it into seven parts. [a]Judah shall remain in their territory on the south, and the [b]house of Joseph shall remain in their territory on the north. 6You shall therefore [*]survey the land in seven parts and bring *the survey* here to me, [a]that I may cast lots for you here before the LORD our God. 7[a]But the Levites have no part among you, for the priesthood of the LORD *is* their inheritance. [b]And Gad, Reuben, and half the tribe of Manasseh have received their inheritance beyond the Jordan on the east, which Moses the servant of the LORD gave them.”

8Then the men arose to go away; and Joshua charged those who went to [*]survey the land, saying, “Go, walk [a]through the land, survey it, and come back to me, that I may cast lots for you here before the

LORD in Shiloh.” 9So the men went, passed through the land, and [*]wrote the survey in a book in seven parts by cities; and they came to Joshua at the camp in Shiloh. 10Then Joshua cast [a]lots for them in Shiloh before the LORD, and there [b]Joshua divided the land to the children of Israel according to their [*]divisions.

The Land of Benjamin

11[a]Now the lot of the tribe of the children of Benjamin came up according to their families, and the territory of their lot came out between the children of Judah and the children of Joseph. 12[a]Their border on the north side began at the Jordan, and the border went up to the side of Jericho on the north, and went up through the mountains westward; it ended at the Wilderness of Beth Aven. 13The border went over from there toward Luz, to the side of Luz [a](which *is* Bethel) southward; and the border descended to Ataroth Addar, near the hill that *lies* on the south side [b]of Lower Beth Horon.

14Then the border extended around the west side to the south, from the hill that *lies* before Beth Horon southward; and [*]it ended at [a]Kirjath Baal (which *is* Kirjath Jearim), a city of the children of Judah. This *was* the west side.

15The south side *began* at the end of Kirjath Jearim, and the border extended on the west and went out to [a]the spring of the waters of Nephtoah. 16Then the border came down to the end of the mountain that *lies* before [a]the Valley of the Son of Hinnom, [1]which *is* in the Valley of the [*]Rephaim on the north, descended to the Valley of Hinnom, to the side of the Jebusite *city* on the south, and descended to [b]En Rogel. 17And it went around from the north, went out to En Shemesh, and extended toward Geliloth, which is before the Ascent of Adummim, and descended to [a]the stone of Bohan the son of Reuben. 18Then it passed along toward the north side of [*]Arabah, and went down to Arabah. 19And the border passed along to the north side of Beth Hoglah; then [*]the border ended at the north bay at the [a]Salt Sea, at the south end of the

Jordan. This *was* the southern boundary.

20The Jordan was its border on the east side. This *was* the inheritance of the children of Benjamin, according to its boundaries all around, according to their families.

21Now the cities of the tribe of the children of Benjamin, according to their families, were Jericho, Beth Hoglah, Emek Keziz, 22Beth Arabah, Zemaraim, Bethel, 23Avim, Parah, Ophrah, 24Chephar Haammoni, Ophni, and Gaba: twelve cities with their villages; 25[a]Gibeon, [b]Ramah, Beeroth, 26Mizpah, Chephirah, Mozah, 27Rekem, Irpeel, Taralah, 28Zelah, Eleph, [a]Jebus (which *is* Jerusalem), Gibeath, *and* Kirjath: fourteen cities with their villages. This was the inheritance of the children of Benjamin according to their families.

Joshua 19

Simeon's Inheritance with Judah

1The [a]second lot came out for Simeon, for the tribe of the children of Simeon according to their families. [b]And their inheritance was within the inheritance of the children of Judah. 2[a]They had in their inheritance Beersheba (Sheba), Moladah, 3Hazar Shual, Balah, Ezem, 4Eltolad, Bethul, Hormah, 5Ziklag, Beth Marcaboth, Hazar Susah, 6Beth Lebaoth, and Sharuhen: thirteen cities and their villages; 7Ain, Rimmon, Ether, and Ashan: four cities and their villages; 8and all the villages that *were* all around these cities as far as Baalath Beer, [a]Ramah of the South. This *was* the inheritance of the tribe of the children of Simeon according to their families.

9The inheritance of the children of Simeon *was included* in the share of the children of Judah, for the share of the children of Judah was [*]too much for them. [a]Therefore the children of Simeon had *their* inheritance within the inheritance of [*]that people.

The Land of Zebulun

10The third lot came out for the children of Zebulun according to their families, and the border of their inheritance was as far as Sarid. 11[a]Their border went toward the west and to Maralah, went to Dabbasheth, and extended along the brook that is [b]east of Jokneam. 12Then from Sarid it went eastward toward the sunrise along the border of Chisloth Tabor, and went out toward [a]Daberath, bypassing Japhia. 13And from there it passed along on the east of [a]Gath Hepher, toward Eth Kazin, and extended to Rimmon, which borders on Neah. 14Then the border went around it on the north side of Hannathon, and [*]it ended in the Valley of Jiphthah El. 15Included were Kattath, Nahallal, Shimron, Idalah, and Bethlehem: twelve cities with their villages. 16This *was* the inheritance of the children of Zebulun according to their families, these cities with their villages.

The Land of Issachar

17The fourth lot came out to Issachar, for the children of Issachar according to their families. 18And their territory went to Jezreel, and *included* Chesulloth, Shunem, 19Haphraim, Shion, Anaharath, 20Rabbith, Kishion, Abez, 21Remeth, En Gannim, En Haddah, and Beth Pazzez. 22And the border reached to Tabor, Shahazimah, and [a]Beth Shemesh; their border ended at the Jordan: sixteen cities with their villages. 23This *was* the inheritance of the tribe of the children of Issachar according to their families, the cities and their villages.

The Land of Asher

24[a]The fifth lot came out for the tribe of the children of Asher according to their families. 25And their territory included Helkath, Hali, Beten, Achshaph, 26Alammelech, Amad, and Mishal; it reached to [a]Mount Carmel westward, along *the Brook* Shihor Libnath. 27It turned toward the sunrise to Beth Dagon; and it reached to Zebulun and to the Valley of Jiphthah El, then northward beyond Beth Emek and Neiel, bypassing [a]Cabul *which was* on the left, 28including [*]Ebron, Rehob, Hammon, and Kanah, [a]as far as Greater Sidon. 29And the border turned to Ramah and to the fortified city of Tyre; then the border turned to Hosah, and ended at the sea by the region of [a]Achzib. 30Also Ummah, Aphek, and Rehob *were included:* twenty-two cities with their villages. 31This *was* the inheritance of the tribe of the children of Asher according to their families, these cities with their villages.

The Land of Naphtali

32[a]The sixth lot came out to the children of Naphtali, for the children of Naphtali according to their families. 33And their border began at Heleph, enclosing the territory from the terebinth tree in Zaanannim, Adami Nekeb, and Jabneel, as far as Lakkum; [*]it ended at the Jordan. 34[a]From Heleph the border extended westward to Aznoth Tabor, and went out from there toward Hukkok; it adjoined Zebulun on the south side and Asher on the west side, and ended at Judah by the Jordan toward the sunrise. 35And the fortified cities *are* Ziddim, Zer, Hammath, Rakkath, Chinnereth, 36Adamah, Ramah, Hazor, 37[a]Kedesh, Edrei, En Hazor, 38Iron, Migdal El, Horem, Beth Anath, and Beth Shemesh: nineteen cities with their villages. 39This *was* the inheritance of the tribe of the children of Naphtali according to their families, the cities and their villages.

The Land of Dan

40[a]The seventh lot came out for the tribe of the children of Dan according to their families. 41And the territory of their inheritance was Zorah, [a]Eshtaol, Ir Shemesh, 42[a]Shaalabbin, [b]Aijalon, Jethlah, 43Elon, Timnah, [a]Ekron, 44Eltekeh, Gibbethon, Baalath, 45Jehud, Bene Berak, Gath Rimmon, 46Me Jarkon, and Rakkon, with the region [*]near [*]Joppa. 47And the [a]border of the children of Dan went beyond these, because the children of Dan went up to fight against Leshem and took it; and they struck it with the edge of the sword, took possession of it, and dwelt in it. They called Leshem, [b]Dan, after the name of Dan their father. 48This *is* the inheritance of the tribe of the children of Dan according to their families, these cities with their villages.

Joshua’s Inheritance

49When they had [*]made an end of dividing the land as an inheritance according to their borders, the children of Israel gave an inheritance among them to Joshua the son of Nun. 50According to the word of the LORD they gave him the city which he asked for, [a]Timnath [b]Serah in the mountains of Ephraim; and he built the city and dwelt in it.

51[a]These *were* the inheritances which Eleazar the priest, Joshua th1e son of Nun, and the heads of the fathers of the tribes of the children of Israel divided as an inheritance by lot [b]in Shiloh before the LORD, at the door of the tabernacle of meeting. So they made an end of dividing the country.

Joshua 20

The Cities of Refuge

1The LORD also spoke to Joshua, saying, 2“Speak to the children of Israel, saying: [a]‘Appoint[*] for yourselves cities of refuge, of which I spoke to you through Moses, 3that the slayer who kills a person accidentally *or* unintentionally may flee there; and they shall be your refuge from the avenger of blood. 4And when he flees to one of those cities, and stands at the entrance of the gate of the city, and [*]declares his case in the hearing of the elders of that city, they shall take him into the city as one of them, and give him a place, that he may dwell among them. 5[a]Then if the avenger of blood pursues him, they shall not deliver the slayer into his hand, because he struck his neighbor unintentionally, but did not hate him beforehand. 6And he shall dwell in that city [a]until he stands before the congregation for judgment, *and* until the death of the one who is high priest in those days. Then the slayer may return and come to his own city and his own house, to the city from which he fled.’ ”

7So they appointed [a]Kedesh in Galilee, in the mountains of Naphtali, [b]Shechem in the mountains of Ephraim, and [c]Kirjath Arba (which *is* Hebron) in [d]the mountains of Judah. 8And on the other side of the

Jordan, by Jericho eastward, they assigned [a]Bezer in the wilderness on the plain, from the tribe of Reuben, [b]Ramoth in Gilead, from the tribe of Gad, and [c]Golan in Bashan, from the tribe of Manasseh. 9 [a]These were the cities appointed for all the children of Israel and for the stranger who *dwelt among them, th1at whoever killed a person accidentally might flee there, and not die by the hand of the avenger of blood [b]until he stood before the congregation.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Demonstrate Your Love for Your Children

As you enter into spiritual warfare prayer, do not be moved by the increased negative behavior of your child or loved one. Do not be moved by the lies and arguments, how your child looks at you, or by what he or she does.

Your child is not happy separated from God. Intensify your prayers, and demonstrate your love

when
things
seem
to
get
worse.
Submit
your
child
to
God.
This
is
not
something
you
can
do
with
your
own
strength
and
strategies.
Your
dependence
and
control
will
only
bring
disappointment
and
failure.
There
must
be a
complete
surrendering
to

God
of all
your
cares
and
concerns.
Only
then
will
God
be
able
to
act
on
your
behalf
to
perform
His
Word.

To
keep
your
mind
in
perspective,
you
must
try
to
remember
that
God
is a
just
God.
His
ways

are not our ways. The bottom line is that God answers the fervent prayers of a righteous man or woman.[*]

---

[*] Iris Delgado, *Satan, You Can't Have My Children*, 79–80.

Joshua 21

Cities of the Levites

[1]Then the heads of the fathers' *houses* of the [a]Levites came near to [b]Eleazar the priest, to Joshua the son of

Nun, and to the heads of the fathers' *houses* of the tribes of the children of Israel. 2And they spoke to them at [a]Shiloh in the land of Canaan, saying, [b]"The LORD commanded through Moses to give us cities to dwell in, with their common-lands for our livestock." 3So the children of Israel gave to the Levites from their inheritance, at the commandment of the LORD, these cities and their common-lands:

4Now the lot came out for the families of the Kohathites. And [a]the children of Aaron the priest, *who wer1e* of the Levites, [b]had thirteen cities by lot from the tribe of Judah, from the tribe of Simeon, and from the tribe of Benjamin. 5[a]The rest of the children of Kohath had ten cities by lot from the families of the tribe of Ephraim, from the tribe of Dan, and from the half-tribe of Manasseh.

6And [a]the children of Gershon had thirteen cities by lot from the families of the tribe of Issachar, from the tribe of Asher, from the tribe of Naphtali, and from the half-tribe of Manasseh in Bashan.

7[a]The children of Merari according to their families had twelve cities from the tribe of Reuben, from the tribe of Gad, and from the tribe of Zebulun.

8[a]And the children of Israel gave these cities with their common-lands by lot to the Levites, [b]as the LORD had commanded by the hand of Moses.

9So they gave from the tribe of the children of Judah and from the tribe of the children of Simeon these cities which are [*]designated by name, 10which were for the children of Aaron, one of the families of the Kohathites, *who were* of the children of Levi; for the lot was theirs first. 11[a]And they gave them [*]Kirjath Arba (*Arba was* the father of [b]Anak), [c]which *is* Hebron, in the mountains of Judah, with the common-land surrounding it. 12But [a]the fields of the city and its villages they gave to Caleb the son of Jephunneh as his possession.

13Thus [a]to the children of Aaron the priest they gave [b]Hebron with its common-land (a city of refuge for the slayer), [c]Libnah with its common-land, 14[a]Jattir with its common-land, [b]Eshtemoa with its common-land, 15[a]Holon with its common-land, [b]Debir with its common-land, 16[a]Ain with its common-land, [b]Juttah with its common-land, and [c]Beth Shemesh with its common-land: nine cities from those two tribes; 17and from the tribe of Benjamin, [a]Gibeon with its common-land, [b]Geba with its common-land, 18Anathoth with its common-land, and [a]Almon with its common-land: four cities. 19All the cities of the children of Aaron, the priests, *were* thirteen cities with their common-lands.

20[a]And the families of the children of Kohath, the Levites, the rest of the children of Kohath, even they had the cities of their [*]lot from the tribe of Ephraim. 21For they gave them [a]Shechem with its common-land in the mountains of Ephraim (a city of refuge for the slayer), [b]Gezer with its common-land, 22Kibzaim with its common-land, and Beth Horon with its common-land: four cities; 23and from the tribe of Dan, Eltekeh with its common-land, Gibbethon with its common-land, 24[a]Aijalon with its common-land, *and* Gath Rimmon with its common-land: four cities; 25and from the half-tribe of Manasseh, Tanach with its common-land and Gath Rimmon with its common-land: two cities. 26All the ten cities with their common-lands were for the rest of the families of the children of Kohath.

27[a]Also to the children of Gershon, of the families of the Levites, from the *other* half-tribe of Manasseh, *they gave* [b]Golan in Bashan with its common-land (a city of refuge for the slayer), and Be Eshterah with its common-land: two cities; 28and from the tribe of Issachar, Kishion with its common-land, Daberath with its common-land, 29Jarmuth with its common-land, *and* En Gannim with its common-land: four cities; 30and from the tribe of Asher, Mishal with its common-land, Abdon with its common-land, 31Helkath with its common-land, and Rehob with its common-land: four cities; 32and from the tribe of Naphtali, [a]Kedesh in Galilee with its common-land (a city of refuge for the slayer), Hammoth Dor with its common-land, and Kartan with its common-land: three cities. 33All the cities of the Gershonites according to their families *were* thirteen cities with their common-lands.

34[a]And to the families of the children of Merari, the rest of the Levites, from the tribe of Zebulun, Jokneam with its common-land, Kartah with its common-land, 35Dimnah with its common-land, *and* Nahalal with its common-land: four cities; 36[*]and from the tribe of Reuben, [a]Bezer with its common-land, Jahaz with its common-land, 37Kedemoth with its common-land, and Mephaath with its common-land: four cities; 38and from the tribe of Gad, [a]Ramoth in Gilead with its common-land (a city of refuge for the slayer), Mahanaim with its common-land, 39Heshbon with its common-land, *and* Jazer with its common-land: four cities in all. 40So all the cities for the children of Merari according to their families, the rest of the families of the Levites, were *by* their lot twelve cities.

41[a]All the cities of the Levites within the possession of the children of Israel *were* forty-eight cities with their common-lands. 42Every one of these cities had its common-land surrounding it; thus *were* all these cities.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Prayer to Release Angels

Jesus, Your Word

declares
that
angels
intervene
in
the
lives
of
human
beings.
I
believe
that
angels
are
released
by
positive
confessions
and
demons
are
released
by
negative
confessions.
Father,
I
thank
You
for
the
hosts
of
heaven
that
are
operating
on
my

behalf.

Make me sensitive to the existence and presence of angelic beings. There are more angels working for me than there are demons working against me. One-third of the angels fell with Lucifer. This means that two-thirds

of
the
angels
in
heaven
are
working
on
my
behalf.
Lord,
I
thank
You
for
opening
my
eyes
to
see
the
angelic
hosts
and
chariots
of
fire
circling
my
situations
to
fight
on
my
behalf.

I
command
the
angels

that
take
vengeance
on
the
ungodly
to
fight
battles
on
my
behalf.
My
battles
are
not
by
power
and
might
but
by
the
Spirit
of
the
Most
High
God.
The
weapons
of
my
warfare
are
not
carnal
but
mighty
through

God
to
the
pulling
down
of
strongholds.
As
I
decree
and
declare
the
Word
and
will
of
the
Lord,
angels
will
be
released
to
minister
the
vengeance
of
the
Lord.
I
call
the
captain
of
the
hosts
to
go
before

me in battle with His sword drawn against all that would harm my family and me (Josh. 5:13–14).

Father, I thank You that You hear my prayers. I thank You for the angels that excel in strength, hear

Your responses to my prayers as You command them, and do Your bidding (Ps. 103:20). Blessed be Your name, Lord. Your angels do Your pleasure. I thank You for Your angels that watch over me (Dan. 4:13–14). I thank

You for the angels You have commanded to protect me. Shut every lion's mouth that has been set in my way to devour me (Dan. 6:22).

Lord, I thank You for the angels that:

> *Are sent to answer*

prayer (Dan. 9:21–23)

Minister peace and encouragement (Dan. 10:12; Acts 27:23–25)

Remind God's people of His love (Dan. 10:10–11)

Deliver warnings (Matt. 2:13)

Reap the end-time harvest (Matt. 13:39)

Minister to children

(Matt. 18:10)

Inform believers (Luke 1:13–20)

Rejoice when souls are saved (Luke 15:10)

Strengthen believers (Luke 22:43)

Amen.[*]

---

[*] Kimberly Daniels, *Prayers That Bring Change*, 47–49.

The Promise Fulfilled

[43]So the LORD gave to Israel [a]all the land of which He had sworn to give to their fathers, and they [b]took

possession of it and dwelt in it. 44[a]The LORD gave them [b]rest all around, according to all that He had sworn to their fathers. And [c]not a man of all their enemies stood against them; the LORD delivered all their enemies into their hand. 45[a]Not a word failed of any good thing which the LORD had spoken to the house of Israel. All came to pass.

Joshua 22

Eastern Tribes Return to Their Lands

1Then Joshua called the Reubenites, the Gadites, and half the tribe of Manasseh, 2and said to them: “You have kept [a]all that Moses the servant of the LORD commanded you, [b]and have obeyed my voice in all that I commanded you. 3You have not [*]left your brethren these many days, up to this day, but have kept the charge of the commandment of the LORD your God. 4And now the LORD your God has given [a]rest to your brethren, as He promised them; now therefore, return and go to your tents *and* to the land of your possession, [b]which Moses the servant of the LORD gave you on the other side of the Jordan. 5But [a]take[*] careful heed to do the c1ommandment and the law which Moses the servant of the LORD commanded you, [b]to love the LORD your God, to walk in all His ways, to keep His commandments, to hold fast to Him, and to serve Him with all your heart and with all your soul.” 6So Joshua [a]blessed them and sent them away, and they went to their tents.

[7]Now to half the tribe of Manasseh Moses had given a possession in Bashan, [a]but to the *other* half of it Joshua gave *a possession* among their brethren on this side of the Jordan, westward. And indeed, when Joshua sent them away to their tents, he blessed them, [8]and spoke to them, saying, "Return with much riches to your tents, with very much livestock, with silver, with gold, with bronze, with iron, and with very much clothing. [a]Divide the [*]spoil of your enemies with your brethren."

[9]So the children of Reuben, the children of Gad, and half the tribe of Manasseh returned, and departed from the children of Israel at Shiloh, which *is* in the land of Canaan, to go to [a]the country of Gilead, to the land of their possession, which they had obtained according to the word of the LORD by the hand of Moses.

An Altar by the Jordan

[10]And when they came to the region of the Jordan which *is* in the land of Canaan, the children of Reuben, the children of Gad, and half the tribe of Manasseh built an altar there by the Jordan—a great, impressive altar. [11]Now the children of Israel [a]heard *someone* say, "Behold, the children of Reuben, the children of Gad, and half the tribe of Manasseh have built an altar on the [*]frontier of the land of Canaan, in the region of the Jordan—on the children of Israel's side." [12]And when the children of Israel heard *of it,* [a]the

whole congregation of the children of Israel gathered together at Shiloh to go to war against them.

13Then the children of Israel [a]sent [b]Phinehas the son of Eleazar the priest to the children of Reuben, to the children of Gad, and to half the tribe of Manasseh, into the land of Gilead, 14and with him ten rulers, one ruler each from the chief house of every tribe of Israel; and [a]each [1]one *was* the head of the house of his father among the *divisions of Israel. 15Then they came to the children of Reuben, to the children of Gad, and to half the tribe of Manasseh, to the land of Gilead, and they spoke with them, saying, 16“Thus says the whole congregation of the LORD: ‘What [a]treachery**is* this that you have committed against the God of Israel, to turn away this day from following the LORD, in that you have built for yourselves an altar, [b]that you might rebel this day against the LORD? 17*Is* the iniquity [a]of Peor not enough for us, from which we are not cleansed till this day, although there was a plague in the congregation of the LORD, 18but that you must turn away this day from following the LORD? And it shall be, if you rebel today against the LORD, that tomorrow [a]He will be angry with the whole congregation of Israel. 19*Nevertheless, if the land of your possession *is* unclean, *then* cross over to the land of the possession of the LORD, [a]where the LORD’s tabernacle stands, and take possession among us;

but do not rebel against the LORD,
nor rebel against us, by building
yourselves an altar besides the altar
of the LORD our God. 20[a]Did not
Achan the son of Zerah [*]commit a
trespass in the [*]accursed thing, and
wrath fell on all the congregation of
Israel? And that man did not perish
alone in his iniquity.' "

21Then the children of Reuben, the
children of Gad, and half the tribe of
Manasseh answered and said to the
heads of the [*]divisions of Israel:
22"The LORD [a]God of gods, the LORD
God of gods, He [b]knows, and let Israel
itself know—if *it is* in rebellion, or if
in treachery against the LORD, do not
save us this day. 23If we have built
ourselves an altar to turn from
following the LORD, or if to offer on
it burnt offerings or grain offerings,
or if to offer peace offerings on it, let
the LORD Himself [a]require *an
account.* 24But in fact we have done it
[*]for fear, for a reason, saying, 'In time
to come your descendants may speak
to our descendants, saying, "What
have you to do with the LORD God of
Israel? 25For the LORD has made the
Jordan a border between you and us,
you children of Reuben and children
of Gad. You have no part in the
LORD." So your descendants would
make our descendants cease fearing
the LORD.' 26Therefore we said, 'Let
us now prepare to build ourselves an
altar, not for burnt offering nor for
sacrifice, 27but *that* it *may be* [a]a
[*]witness between you and us and our
generations after us, that we may

[b]perform the service of the LORD before Him with our burnt offerings, with our sacrifices, and with our peace offerings; that your descendants may not say to our descendants in time to come, “You have no part in the LORD.” ’ 28Therefore we said that it will be, when they say *this* to us or to our generations in time to come, that we may say, ‘Here is the replica of the altar of the LORD which our fathers made, though not for burnt offerings nor for sacrifices; but it *is* a witness between you and us.’ 29Far be it from us that we should rebel against the LORD, and turn from following the LORD this day, [a]to build an altar for burnt offerings, for grain offerings, or for sacrifices, besides the altar of the LORD our God which *is* before His tabernacle.”

30Now when Phinehas the priest and the rulers of the congregation, the heads of the *divisions of Israel who *were* with him, heard the words that the children of Reuben, the children of Gad, and the children of Manasseh spoke, it pleased them. 31Then Phinehas the son of Eleazar the priest said to the children of Reuben, the children of Gad, and the children of Manasseh, “This day we perceive that the LORD *is* [a]among us, because you have not committed this treachery against the LORD. Now you have delivered the children of Israel out of the hand of the LORD.”

32And Phinehas the son of Eleazar the priest, and the rulers, returned from the children of Reuben and the children of Gad, from the land of Gilead to the land of Canaan, to the children of Israel, and brought back word to them. 33So the thing pleased the children of Israel, and the children of Israel [a]blessed God; they spoke no more of going against them in battle, to destroy the land where the children of Reuben and Gad dwelt.

34The children of Reuben and the children of [*]Gad called the altar, *Witness,* "For *it is* a witness between us that the LORD *is* God."

Joshua 23

Joshua's Farewell Address

1Now it came to pass, a long time after the LORD [a]had given rest to Israel from all their enemies round about, that Joshua [b]was old, advanced in age. 2And Joshua [a]called for all Israel, for their elders, for their heads, for their judges, and for their officers, and said to them:

"I am old, advanced in age. 3You have seen all that the [a]LORD your God has done to all these nations because of you, for the [b]LORD your God *is* He who has fought for you. 4See, [a]I have divided to you by lot these nations that remain, to be an inheritance for your tribes, from the Jordan, with all the nations that I have cut off, as far as the Great Sea westward. 5And the LORD your God [a]will expel them from before you and drive them out of your sight. So you shall possess their land, [b]as the LORD

your God promised you. 6[a]Therefore
be very courageous to keep and to do
all that is written in the Book of the
Law of Moses, [b]lest you turn aside
from it to the right hand or to the
left, 7*and* lest you [a]go[*] among these
nations, these who remain among
you. You shall not [b]make mention of
the name of their gods, nor cause
anyone to [c]swear *by them;* you shall
not [d]serve them nor bow down to
them, 8but you shall [a]hold fast to the
LORD your God, as you have done to
this day. 9[a]For the LORD has [*]driven
out from before you great and strong
nations; but *as for* you, no one has
been able to stand against you to this
day. 10[a]One man of you shall chase a
thousand, for the LORD your God *is*
He who fights for you, [b]as He
promised you. 11[a]Therefore take
careful heed to yourselves, that you
love the LORD your God. 12Or else, if
indeed you do [a]go back, and cling to
the remnant of these nations—these
that remain among you—and [b]make
marriages with them, and go in to
them and they to you, 13know for
certain that [a]the LORD your God will
no longer drive out these nations
from before you. [b]But they shall be
snares and traps to you, and scourges
on your sides and thorns in your eyes,
until you perish from this good land
which the LORD your God has given
you.

14“Behold, this day [a]I[*]*am* going the
way of all the earth. And you know in
all your hearts and in all your souls
that [b]not one thing has failed of all

the good things which the LORD your God spoke concerning you. All have come to pass for you; not one word of them has failed. 15[a]Therefore it shall come to pass, that as all the good things have come upon you which the LORD your God promised you, so the LORD will bring upon you [b]all harmful things, until He has destroyed you from this good land which the LORD your God has given you. 16[*]When you have transgressed the covenant of the LORD your God, which He commanded you, and have gone and served other gods, and bowed down to them, then the [a]anger of the LORD will burn against you, and you shall perish quickly from the good land which He has given you."

Joshua 24

The Covenant at Shechem

1Then Joshua gathered all the tribes of Israel to [a]Shechem and [b]called for the elders of Israel, for their heads, for their judges, and for their officers; and they [c]presented themselves before God. 2And Joshua said to all the people, "Thus says the LORD God of Israel: [a]'Your fathers, *including* Terah, the father of Abraham and the father of Nahor, dwelt on the other side of [*]the River in old times; and [b]they served other gods. 3[a]Then I took your father Abraham from the other side of [*]the River, led him throughout all the land of Canaan, and multiplied his [*]descendants and [b]gave him Isaac. 4To Isaac I gave [a]Jacob and Esau. To

[b]Esau I gave the mountains of Seir to possess, [c]but Jacob and his children went down to Egypt. 5[a]Also I sent Moses and Aaron, and [b]I plagued Egypt, according to what I did among them. Afterward I brought you out.

6‘Then I [a]brought your fathers out of Egypt, and you came to the sea; and the Egyptians pursued your fathers with chariots and horsemen to the Red Sea. 7So they cried out to the LORD; and He put [a]darkness between you and the Egyptians, brought the sea upon them, and covered them. And [b]your eyes saw what I did in Egypt. Then you dwelt in the wilderness [c]a long time. 8And I brought you into the land of the Amorites, who dwelt on the other side of the Jordan, [a]and they fought with you. But I gave them into your hand, that you might possess their land, and I destroyed them from before you. 9Then [a]Balak the son of Zippor, king of Moab, arose to make war against Israel, and [b]sent and called Balaam the son of Beor to curse you. 10[a]But I would not listen to Balaam; [b]therefore he continued to bless you. So I delivered you out of his hand. 11Then [a]you went over the Jordan and came to Jericho. And [b]the men of Jericho fought against you—*also* the Amorites, the Perizzites, the Canaanites, the Hittites, the Girgashites, the Hivites, and the Jebusites. But I delivered them into your hand. 12[a]I sent the hornet before you which drove them out from before you, *also* the two kings of the

Amorites, *but* [b]not with your sword or with your bow. 13I have given you a land for which you did not labor, and [a]cities which you did not build, and you dwell in them; you eat of the vineyards and olive groves which you did not plant.’

14[a]“Now therefore, fear the LORD, serve Him in [b]sincerity and in truth, and [c]put away the gods which your fathers served on the other side of [*]the River and [d]in Egypt. Serve the LORD! 15And if it seems evil to you to serve the LORD, [a]choose for yourselves this day whom you will serve, whether [b]the gods which your fathers served that *were* on the other side of [*]the River, or [c]the gods of the Amorites, in whose land you dwell. [d]But as for me and my house, we will serve the LORD.”

16So the people answered and said: “Far be it from us that we should forsake the LORD to serve other gods; 17for the LORD our God *is* He who brought us and our fathers up out of the land of Egypt, from the house of bondage, who did those great signs in our sight, and preserved us in all the way that we went and among all the people through whom we passed. 18And the LORD drove out from before us all the people, including the Amorites who dwelt in the land. [a]We also will serve the LORD, for He *is* our God.”

19But Joshua said to the people, [a]“You cannot serve the LORD, for He *is* a [b]holy God. He *is* [c]a jealous God; [d]He will not forgive your transgressions nor your sins. 20[a]If you forsake the LORD and serve foreign gods, [b]then He will turn and do you harm and consume you, after He has done you good."

21And the people said to Joshua, "No, but we will serve the LORD!"

22So Joshua said to the people, "You *are* witnesses against yourselves that [a]you have chosen the LORD for yourselves, to serve Him."

And they said, "*We are* witnesses!"

23"Now therefore," *he said,* [a]"put away the foreign gods which *are* among you, and [b]incline your heart to the LORD God of Israel."

24And the people [a]said to Joshua, "The LORD our God we will serve, and His voice we will obey!"

Josh. 24:24

I will serve the Lord my God, and His voice I will obey.

25So Joshua [a]made* a covenant with the people that day, and made for them a statute and an ordinance [b]in Shechem.

26Then Joshua [a]wrote these words in the Book of the Law of God. And he took [b]a large stone, and [c]set it up there [d]under the oak that *was* by t1he sanctuary of the LORD. 27And Joshua said to all the people, “Behold, this stone shall be [a]a witness to us, for [b]it has heard all the words of the LORD which He spoke to us. It shall therefore be a witness to you, lest you deny your God.” 28So [a]Joshua let the people depart, each to his own inheritance.

Death of Joshua and Eleazar

29[a]Now it came to pass after these things that Joshua the son of Nun, the servant of the LORD, died, *being* one hundred and ten years old. 30And they buried him within the border of his inheritance at [a]Timnath Serah, which *is* in the mountains of Ephraim, on the north side of Mount Gaash.

31[a]Israel served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders who outlived Joshua, who had [b]known all the works of the LORD which He had done for Israel.

32[a]The bones of Joseph, which the children of Israel had brought up out of Egypt, they buried at Shechem, in the plot of ground [b]which Jacob had bought from the sons of Hamor the father of Shechem for one hundred *pieces of silver, and which had become an inheritance of the children of Joseph.

33And [a]Eleazar the son of Aaron

died. They buried him in a hill *belonging to* [b]Phinehas his son, which was given to him in the mountains of Ephraim.

Joshua 1

[1:1] a. Ex. 24:13; Num. 13:16; 14:6, 29, 30, 37, 38; Deut. 1:38; Acts 7:45

[1:2] a. Num. 12:7; Deut. 34:5

[1:3] a. Deut. 11:24; Josh. 11:23

[1:4] a. Gen. 15:18; Ex. 23:31; Num. 34:3–12

[1:5] a. Deut. 7:24

[1:5] b. Ex. 3:12

[1:5] c. Deut. 31:8, 23

[1:5] d. Deut. 31:6, 7; Heb. 13:5

[1:6] a. Deut. 31:7, 23

[1:6] * *give as a possession*

[1:7] a. Num. 27:23; Deut. 31:7; Josh. 11:15

[1:7] b. Deut. 5:32

[1:7] * *have success* or *act wisely*

[1:8] a. Deut. 17:18, 19; 31:24, 26; Josh. 8:34

[1:8] b. Deut. 29:9; Ps. 1:1–3

[1:8] * *you shall be constantly in*

[1:9] a. Deut. 31:7

[1:9] b. Ps. 27:1

[1:11] a. Deut. 9:1; Josh. 3:17

[1:13] a. Num. 32:20–28

[1:14] * *cross over ahead of*

[1:15] a. Josh. 22:1–4

[1:17] a. 1 Sam. 20:13; 1 Kin. 1:37

Joshua 2

[2:1] a. Num. 25:1; Josh. 3:1

[2:1] b. Heb. 11:31; James 2:25

[2:1] c. Matt. 1:5

[2:1] * Heb. *Shittim*

[2:1] * Lit. *lay down*

[2:2] a. Josh. 2:22

[2:4] a. 2 Sam. 17:19, 20

[2:6] a. Ex. 1:17; 2 Sam. 17:19

[2:9] a. Deut. 1:8

[2:9] b. Gen. 35:5; Ex. 23:27; Deut. 2:25; 11:25; Josh. 9:9, 10

[2:9] c. Ex. 15:15;

Josh. 5:1

[2:10] a. Ex. 14:21; Josh. 4:23

[2:10] b. Num. 21:21–35

[2:10] c. Deut. 20:17; Josh. 6:21

[2:11] a. Ex. 15:14, 15

[2:11] b. Josh. 5:1; 7:5; Ps. 22:14; Is. 13:7

[2:11] c. Deut. 4:39

[2:12] a. 1 Sam. 20:14, 15, 17

[2:12] b. 1 Tim. 5:8

[2:12] c. Ex. 12:13; Josh. 2:18

[2:12] * *a pledge of truth*

[2:13] a. Josh. 6:23–25

[2:14] a. Gen. 47:29; Judg. 1:24; (Matt. 5:7)

[2:15] a. Acts 9:25

[2:17] a. Ex. 20:7

[2:17] * *free from obligation to this oath*

[2:18] a. Josh. 2:12

[2:18] b. Josh. 6:23

[2:18] * Lit. *gather*

[2:19] a. 1 Kin. 2:32; Matt. 27:25

[2:19] * *free from obligation*

[2:19] * *guilt of bloodshed*

[2:20] * *free from obligation to*

[2:24] a. Ex. 23:31; Josh. 6:2; 21:44

Joshua 3

[3:1] a. Josh. 2:1

[3:1] * Heb. *Shittim*

[3:2] a. Josh. 1:10, 11

[3:3] a. Num. 10:33

[3:3] b. Deut. 31:9, 25

[3:3] * *carrying*

[3:4] a. Ex. 19:12

[3:5] a. Ex. 19:10, 14, 15; Lev. 20:7; Num. 11:18; Josh. 7:13; 1 Sam. 16:5; Job 1:5; Joel 2:16

[3:5] * *Consecrate*

[3:6] a. Num. 4:15

[3:7] a. Josh. 4:14; 1 Chr. 29:25; 2 Chr. 1:1

[3:7] b. Josh. 1:5, 9

[3:7] * *make you great*

[3:8] a. Josh. 3:3

[3:8] b. Josh. 3:17

[3:10] a. Deut. 5:26; Josh. 11:23; 1 Sam. 17:26; 2 Kin. 19:4; Hos. 1:10; Matt. 16:16; 1 Thess. 1:9

[3:10] b. Ex. 33:2; Deut. 7:1; 18:12; Ps. 44:2

[3:10] c. Acts 13:19

[3:11] a. Josh. 3:13; Job 41:11; Ps. 24:1; Mic. 4:13; Zech. 4:14; 6:5

[3:12] a. Josh. 4:2, 4

[3:13] a. Josh. 3:15, 16

[3:13] b. Josh. 3:11

[3:13] c. Ps. 78:13;
114:3

[3:14] a. Ps. 132:8;
Acts 7:44, 45

[3:15] a. Josh. 3:13

[3:15] b. 1 Chr.
12:15; Jer. 12:5;
49:19

[3:15] c. Josh. 4:18;
5:10, 12

[3:16] a. 1 Kin. 4:12;
7:46

[3:16] b. Deut. 3:17

[3:16] c. Gen. 14:3;
Num. 34:3

[3:16] * Qr., many mss. and vss. *from Adam*

[3:17] a. Gen. 50:24; Ex. 3:8; 6:1–8; 14:21, 22, 29; 33:1; Deut. 6:10; Heb. 11:29

Joshua 4

[4:1] a. Deut. 27:2; Josh. 3:17

[4:2] a. Josh. 3:12

[4:3] a. Josh. 3:13

[4:3] b. Josh. 4:19, 20

[4:6] a. Deut. 27:2; Ps. 103:2

[4:6] b. Ex. 12:26; 13:14; Deut. 6:20

[4:7] a. Josh. 3:13,

16

[4:7] b. Ex. 12:14; Num. 16:40

[4:11] a. Josh. 3:11; 6:11

[4:12] a. Num. 32:17, 20, 27, 28; Josh. 1:14

[4:13] * *equipped*

[4:14] a. Josh. 3:7; 1 Chr. 29:25

[4:14] * *made Joshua great*

[4:16] a. Ex. 25:16, 22

[4:18] a. Josh. 3:15; 1 Chr. 12:15

[4:19] a. Josh. 5:9

[4:20] a. Deut. 11:30; Josh. 4:3; 5:9, 10

[4:21] a. Josh. 4:6

[4:22] a. Ex. 12:26, 27; 13:8–14; Deut. 26:5–9

[4:22] b. Josh. 3:17

[4:23] a. Ex. 14:21

[4:24] a. 1 Kin. 8:42; 2 Kin. 19:19; Ps. 106:8

[4:24] b. Ex. 15:16; 1 Chr. 29:12; Ps. 89:13

[4:24] c. Ex. 14:31; Deut. 6:2; Ps. 76:7; Jer. 10:7

[4:24] * Lit. *all days*

Joshua 5

[5:1] a. Num. 13:29

[5:1] b. Ex. 15:14, 15

[5:1] c. Josh. 2:10, 11; 9:9; 1 Kin. 10:5

[5:1] * So with Kt.; Qr., some Heb. mss. and editions, LXX, Syr., Tg., Vg. *they*

[5:1] * *their courage failed*

[5:2] a. Ex. 4:25

[5:3] * Heb. *Gibeath Haaraloth*

[5:4] a. Num. 14:29; 26:64, 65; Deut.

2:14–16

[5:6] a. Num. 14:33;
Deut. 1:3; 29:5

[5:6] b. Num. 14:23,
29–35; 26:23–65;
Heb. 3:11

[5:6] c. Ex. 3:8

[5:6] * *destroyed*

[5:7] a. Num. 14:31;
Deut. 1:39

[5:8] a. Gen. 34:25

[5:9] a. Gen. 34:14

[5:9] b. Josh. 4:19

[5:9] * Lit. *Rolling*

[5:10] a. Ex. 12:6; Num. 9:5

[5:11] * *roasted*

[5:12] a. Ex. 16:35

[5:13] a. Gen. 18:1, 2; 32:24, 30; Ex. 23:23; Num. 22:31; Zech. 1:8; Acts 1:10

[5:13] b. Num. 22:23; 1 Chr. 21:16

[5:14] a. Gen. 17:3; Num. 20:6

[5:14] b. Ex. 34:8

[5:15] a. Ex. 3:5; Acts 7:33

Joshua 6

[6:1] a. Josh. 2:1

[6:2] a. Josh. 2:9, 24; 8:1

[6:2] b. Deut. 7:24

[6:4] a. Lev. 25:9; Judg. 7:16, 22

[6:4] b. 1 Kin. 18:43; 2 Kin. 4:35; 5:10

[6:4] c. Num. 10:8

[6:9] a. Num. 10:25

[6:11] a. Josh. 4:11

[6:11] * *spent the night*

[6:12] a. Deut. 31:25

[6:17] a. Deut. 13:17; Josh. 7:1

[6:17] b. Josh. 2:1; Matt. 1:5

[6:17] c. Josh. 2:4, 6

[6:18] a. Deut. 7:26

[6:18] b. Josh. 7:1, 12, 25; 1 Kin. 18:17, 18; (Jon. 1:12)

[6:19] * *set apart*

[6:19] * *shall go*

[6:20] a. Heb. 11:30

[6:21] a. Deut. 7:2; 20:16, 17

[6:22] a. Josh. 2:12–19; Heb. 11:31

[6:23] a. Josh. 2:13

[6:25] a. (Matt. 1:5)

[6:26] a. 1 Kin. 16:34

[6:26] * *warned*

Joshua 7

[7:1] a. Josh. 7:20, 21

[7:1] b. Josh. 6:17–19

[7:1] c. Josh. 22:20

[7:1] * *acted unfaithfully*

[7:1] * *devoted*

[7:1] * *Zimri,* 1 Chr. 2:6

[7:41a>] a. Lev. 26:17; Deut. 28:25

[7:5] a. Lev. 26:36; Josh. 2:9, 11

[7:5] * *the people's courage failed*

[7:6] a. Gen. 37:29, 34

[7:6] b. 1 Sam. 4:12

[7:7] a. Ex. 17:3; Num. 21:5

[7:7] * Heb. *YHWH, LORD*

[7:8] * Lit. *neck*

[7:9] a. Deut. 32:26

[7:9] b. Ex. 32:12; Num. 14:13

[7:11] a. Josh. 6:17–19

[7:11] b. Acts 5:1, 2

[7:11] * *devoted*

[7:12] a. Judg. 2:14

[7:12] b. Deut. 7:26; (Hag. 2:13, 14)

[7:13] a. Ex. 19:10

[7:13] b. Josh. 3:5

[7:13] * *set apart*

[7:14] a. (Prov. 16:33)

[7:15] a. 1 Sam. 14:38, 39

[7:15] b. Josh. 7:11

[7:15] c. Gen. 34:7; Judg. 20:6

[7:15] * *overstepped*

[7:18] a. 1 Sam. 14:42

[7:19] a. 1 Sam. 6:5; Jer. 13:16; John 9:24

[7:19] b. Num. 5:6, 7; 2 Chr. 30:22; Ezra 10:10, 11; Ps. 32:5; Prov. 28:13; Jer. 3:12, 13; Dan. 9:4

[7:19] c. 1 Sam. 14:43

[7:20] a. Num. 22:34; 1 Sam. 15:24

[7:21] * *desired*

[7:24] a. Num. 16:32, 33; Dan. 6:24

[7:24] b. Josh. 7:26; 15:7

[7:25] a. Josh. 6:18; 1 Chr. 2:7; (Gal. 5:12)

[7:25] b. Deut. 17:5

[7:26] a. Josh. 8:29; 2 Sam. 18:17; Lam. 3:53

[7:26] b. Deut. 13:17

[7:26] c. Josh. 7:24; Is. 65:10; Hos. 2:15

[7:26] * Lit. *Trouble*

Joshua 8

[8:1] a. Deut. 1:21;
7:18; 31:8; Josh. 1:9;
10:8

[8:1] b. Josh. 6:2

[8:2] a. Josh. 6:21

[8:2] b. Deut. 20:14;
Josh. 8:27

[8:4] a. Judg. 20:29

[8:5] a. Josh. 7:5;
Judg. 20:32

[8:8] a. 2 Sam. 13:28

[8:11] a. Josh. 8:5

[8:12] * Ai

[8:14] a. Judg. 20:34; Eccl. 9:12

[8:15] a. Judg. 20:36

[8:22] a. Deut. 7:2

[8:26] a. Josh. 6:21

[8:27] a. Num. 31:22, 26

[8:27] b. Josh. 8:2

[8:28] a. Deut. 13:16

[8:29] a. Josh. 10:26

[8:29] b. Deut. 21:22, 23; Josh. 10:27

[8:29] c. Josh. 7:26; 10:27

[8:30] a. Deut. 27:4–8

[8:31] a. Ex. 20:25; Deut. 27:5, 6

[8:31] b. Ex. 20:24

[8:32] a. Deut. 27:2, 3, 8

[8:33] a. Deut. 31:9, 25

[8:33] b. Deut. 31:12

[8:33] c. Deut. 11:29; 27:12

[8:341] a. Deut. 31:11; Neh. 8:3

[8:34] b. Deut. 28:2, 15, 45; 29:20, 21; 30:19

[8:34] c. Josh. 1:8

[8:35] a. Ex. 12:38; Deut. 31:12

[8:35] b. Josh. 8:33

Joshua 9

[9:1] a. Num. 13:29; Josh. 3:10

[9:1] b. Num. 34:6

[9:1] c. Ex. 3:17; 23:23

[9:2] a. Josh. 10:5; Ps. 83:3, 5

[9:2] * Lit. *mouth*

[9:3] a. Josh. 9:17, 22; 10:2; 21:17; 2 Sam. 21:1, 2

[9:3] b. Josh. 6:27

[9:4] * *acted as envoys*

[9:4] * Lit. *tied up*

[9:6] a. Josh. 5:10

[9:6] * *treaty*

[9:7] a. Josh. 9:1; 11:19

[9:7] b. Ex. 23:32; Deut. 7:2

[9:8] a. Deut. 20:11; 2 Kin. 10:5

[9:9] a. Deut. 20:15

[9:9] b. Ex. 15:14;

Josh. 2:9, 10; 5:1

[9:10] a. Num. 21:24, 33

[9:14] a. Num. 27:21; Is. 30:1

[9:14] * Lit. *did not inquire at the mouth of*

[9:15] a. 2 Sam. 21:2

[9:17] a. Josh. 18:25

[9:18] a. Ps. 15:4

[9:18] * *strike*

[9:20] a. 2 Sam. 21:1, 2, 6; Ezek. 17:13, 15

[9:21] a. Deut. 29:11

[9:21] b. Josh. 9:15

[9:22] a. Josh. 9:6, 9

[9:22] b. Josh. 9:16

[9:23] a. Gen. 9:25

[9:24] a. Ex. 23:31–33; Deut. 7:1, 2

[9:24] b. Ex. 15:14

[9:25] a. Gen. 16:6

[9:27] a. Josh. 9:21, 23

[9:27] b. Deut. 12:5

Joshua 10

[10:1] a. Josh. 9:1

[10:1] b. Josh. 8:1

[10:1] c. Josh. 6:21

[10:1] d. Josh. 8:22, 26, 28

[10:1] e. Josh. 9:15

[10:2] a. Ex. 15:14–16; Deut. 11:25; 1 Chr. 14:17

[10:4] a. Josh. 9:15; 10:1

[10:5] a. Num. 13:29

[10:5] b. Josh. 9:2

[10:6] a. Josh. 5:10; 9:6

[10:7] a. Josh. 8:1

[10:8] a. Josh. 11:6; Judg. 4:14

[10:8] b. Josh. 1:5, 9

[10:8] c. Josh. 21:44

[10:10] a. Judg. 4:15; 1 Sam. 7:10, 12; Is. 28:21

[10:10] b. Josh. 16:3, 5

[10:10] c. Josh. 15:35

[10:11] a. Is. 30:30; Rev. 16:21

[10:12] a. Is. 28:21; Hab. 3:11

[10:12] b. Judg. 12:12

[10:13] a. 2 Sam. 1:18

[10:14] a. Is. 38:7, 8

[10:14] b. Ex. 14:14; Deut. 1:30; 20:4; Josh. 10:42; 23:3

[10:15] a. Josh. 10:43

[10:21] a. Ex. 11:7

[10:21] * *criticized,* lit. *sharpened his tongue*

[10:24] a. Ps. 107:40; Is. 26:5, 6; Mal. 4:3

[10:25] a. Deut. 31:6–8; Josh. 1:9

[10:25] b. Deut. 3:21; 7:19

[10:25] * The captains

[10:26] a. Josh. 8:29; 2 Sam. 21:9

[10:26] * The kings

[10:27] a. Deut. 21:22, 23; Josh. 8:29

[10:28] a. Deut. 7:2, 16

[10:28] b. Josh. 6:21

[10:28] * So with MT and most authorities; many Heb. mss., some LXX mss., and some Tg. mss. *it*

[10:29] a. Josh. 15:42; 21:13; 2 Kin. 8:22; 19:8

[10:36] a. Num. 13:22; Josh. 14:13–15; 15:13; Judg. 1:10, 20; 2 Sam. 5:1, 3, 5, 13; 2 Chr. 11:10

[10:38] a. Josh. 15:15; Judg. 1:11; 1 Chr. 6:58

[10:40] a. Deut. 1:7

[10:40] b. Deut. 7:24

[10:40] c. Deut. 20:16, 17

[10:40] * Heb. *Negev,* and so throughout the book

[10:41] a. Num. 13:26; Deut. 9:23

[10:41] b. Gen. 10:19; Josh. 11:22

[10:41] c. Josh. 11:16; 15:51

[10:42] a. Josh. 10:14

Joshua 11

[11:1] a. Josh. 10:3

[11:1] b. Josh. 19:15

[11:2] a. Num. 34:11

[11:2] b. Josh. 17:11; Judg. 1:27; 1 Kin. 4:11

[11:3] a. Josh. 9:1

[11:3] b. Deut. 7:1; Judg. 3:3, 5; 1 Kin. 9:20

[11:3] c. Josh. 11:17; 13:5, 11

[11:3] d. Gen. 31:49

[11:4] a. Gen. 22:17; 32:12; Judg. 7:12; 1 Sam. 13:5

[11:5] * Lit. *assembled by appointment*

[11:6] a. Josh. 10:8

[11:6] b. 2 Sam. 8:4

[11:8] a. Gen. 49:13

[11:8] b. Josh. 13:6

[11:8] * Heb. *Sidon Rabbah*

[11:8] * Heb. *Misrephoth Maim,* lit. *Burnings of Water*

[11:11] a. Deut. 20:16

[11:11] b. Josh. 10:40

[11:12] a. Num. 33:50–56; Deut. 7:2; 20:16

[11:13] * Heb. *tel,* a heap of successive city ruins

[11:14] a. Deut. 20:14–18

[11:15] a. Ex. 34:10–17

[11:15] b. Deut. 31:7, 8

[11:15] c. Josh. 1:7

[11:15] * Lit. *He turned aside from nothing*

[11:16] a. Josh. 12:81font>

[11:16] b. Josh. 10:40, 41

[11:16] * Heb. *arabah*

[11:17] a. Josh. 12:7

[11:17] b. Deut. 7:24

[11:17] * Lit. *The Smooth* or *Bald Mountain*

[11:19] a. Josh. 9:3–7

[11:20] a. Deut. 2:30

[11:20] b. Deut. 20:16, 17

[11:20] * Lit. *to make strong*

[11:21] a. Num. 13:22, 33; Deut. 1:28; 9:2; Josh. 15:13, 14

[11:22] a. 1 Sam. 17:4

[11:22] b. Josh. 15:46; 1 Sam. 5:1; Is. 20:1

[11:23] a. Ex. 33:2; Num. 34:2–15

[11:23] b. Num. 26:53; Josh. 14; 15

[11:23] c. Deut. 12:9, 10; 25:19; (Heb. 4:8)

[12:1] a. Num. 21:24

[12:1] b. Deut. 3:8

[12:2] a. Num. 21:24; Deut. 2:24–27

[12:3] a. Deut. 3:17

[12:3] b. Josh. 13:20

[12:3] c. Deut. 3:17; 4:49

[12:3] * Sea of Galilee

[12:3] * Lit. *Sea of the Plain,* the Dead Sea

[12:3] * Or *Teman*

[12:3] * Or *Ashdoth Pisgah*

[12:4] a1. Num. 21:33; Deut. 3:4, 10

[12:4] b. Deut. 3:11; Josh. 13:12

[12:4] c. Deut. 1:4

[12:5] a. Deut. 3:8

[12:5] b. Deut. 3:10; Josh. 13:11; 1 Chr. 5:11

[12:5] c. Deut. 3:14; 1 Sam. 27:8

[12:6] a. Num. 21:24, 35

[12:6] b. Num. 32:29–33; Deut. 3:12; Josh. 13:8

[12:7] a. Josh. 11:17

[12:7] b. Gen. 14:6; 32:3; Deut. 2:1, 4

[12:7] c. Josh. 11:23

[12:7] * Lit. *The Bald Mountain*

[12:81] a. Josh. 10:40; 11:16

[12:8] b. Ex. 3:8; 23:23; Josh. 9:1

[12:9] a. Josh. 6:2

[12:9] b. Josh. 8:29

[12:10] a. Josh. 10:23

[12:12] a. Josh. 10:33

[12:13] a. Josh. 10:38, 39

[12:15] a. Josh. 10:29, 30

[12:16] a. Josh. 10:28

[12:16] b. Josh. 8:17; Judg. 1:22

[12:17] a. 1 Kin. 4:10

[12:18] * Or *Sharon*

[12:19] a. Josh. 11:10

[12:20] a. Josh. 11:1; 19:15

[12:22] a. Josh. 19:37; 20:7; 21:32

[12:23] a. Josh. 11:2

[12:23] b. Gen. 14:1, 2; Is. 9:1

[12:24] a. Deut. 7:24

Joshua 13

[13:1] a. Josh. 14:10; 23:1, 2

[13:2] a. Judg. 3:1–3

[13:2] b. Joel 3:4

[13:2] c. Josh. 13:13; 2 Sam. 3:3

[13:3] a. 1 Chr. 13:5; Jer. 2:18

[13:3] b. Judg. 3:3

[13:3] c. Deut. 2:23

[13:4] a. Josh. 12:18; 19:30; 1 Sam. 4:1; 1 Kin. 20:216, 30

[13:4] b. Judg. 1:34

[13:5] a. 1 Kin. 5:18; Ezek. 27:9

[13:5] b. Josh. 12:7

[13:5] * Or *Giblites*

[13:6] a. Josh. 11:8

[13:6] b. Josh. 23:13; Judg. 2:21, 23

[13:6] c. Josh. 14:1, 2

[13:6] * Heb. *Misrephoth Maim,* lit. *Burnings of Water*

[13:6] * *apportion*

[13:8] a. Num. 32:33; Deut. 3:12, 13; Josh. 22:4

[13:8] b. Josh. 12:1–6

[13:9] a. Num. 21:30; Josh. 13:16

[13:10] 1a. Num. 21:24, 25

[13:11] a. Num. 32:1; Josh. 12:5

[13:12] a. Deut. 3:11; Josh. 12:4

[13:12] b. Num. 21:24, 34, 35

[13:12] * Lit. *struck*

[13:12] * *dispossessed*

[13:13] a. Josh. 13:11

[13:14] a. Num. 18:20, 23, 24; Deut. 18:1; Josh. 14:3, 4

[13:14] b. Josh. 13:33

[13:14] * *no land as a possession*

[13:15] a. Num. 34:14; Josh. 13:15–23

[13:16] a. Josh. 12:2

[13:16] b. Num. 21:28

[13:16] c. Num. 21:30; Josh. 13:9

[13:17] a. Num. 21:28, 30

[13:18] a. Num. 21:23; Judg. 11:20; Is. 15:4; Jer. 48:34

[13:19] a. Num. 32:37; Jer. 48:1, 23; Ezek. 25:9

[13:19] b. Num. 32:38

[13:20] a. Deut. 3:17; Josh. 12:3

[13:21] a. Deut. 3:10

[13:21] b. Num. 21:24

[13:21] c. Num. 31:8

[13:22] a. Num.
22:5; 31:8

[13:22] * *diviner*

[13:24] a. Num.
34:14; 1 Chr. 5:11

[13:25] a. Num.
32:1, 35

[13:25] b. Judg.
11:13, 15

[13:25] c. Deut. 3:11;
2 Sam. 11:1; 12:26

[13:27] a. Num.
32:36

[13:27] b. Gen.
33:17; 1 Kin. 7:46

[13:27] c. Num. 34:11; Deut. 3:17

[13:27] * Sea of Galilee

[13:29] a. Num. 34:14; 1 Chr. 5:23

[13:30] a. Num. 32:41; 1 Chr. 2:23

[13:31] a. Josh. 9:10; 12:4; 13:12; 1 Chr. 6:71

[13:31] b. Num. 32:39, 40; Josh. 17:1

[13:32] * *apportioned*

[13:33] a. Deut. 18:1; Josh. 13:14; 18:7

[13:33] b. Num. 18:20; Deut. 10:9;

18:1, 2

Joshua 14

[14:1] a. Num. 34:16–29

[14:2] a. Num. 26:55; 33:54; 34:13; Ps. 16:5

[14:3] a. Num. 32:33; Josh. 13:8, 32, 33

[14:4] a. Gen. 41:51; 46:20; 48:1, 5; Num. 26:28; 2 Chr. 30:1

[14:4] b. Num. 35:2–8; Josh. 21:1–42

[14:5] a. Num. 35:2; Josh. 21:2

[14:6] a. Num. 32:11, 12

[14:6] b. Num. 14:24, 30

[14:6] c. Num. 13:26

[14:7] a. Num. 13:6, 17; 14:6

[14:8] a. Num. 13:31, 32; Deut. 1:28

[14:8] b. Num. 14:24; Deut. 1:36

[14:8] * *courage of the people fail*

[14:9] a. Num. 14:23, 24

[14:9] b. Num. 13:22; Deut. 1:36

[14:10] a. Num. 14:24, 30, 38

[14:10] b. Josh. 5:6; Neh. 9:21

[14:10] * Lit. *walked*

[14:11] a. Deut. 34:7

[14:11] b. Deut. 31:2

[14:12] a. Num. 13:28, 33

[14:12] b. Rom. 8:31

[14:12] c. Josh. 15:14; Judg. 1:20

[14:13] a. Josh. 22:6

[14:13] b. Josh. 10:37; 15:13

[14:14] a. Josh. 21:12

[14:14] b. Josh. 14:8, 9

[14:15] a. Gen. 23:2; Josh. 15:13

[14:15] b. Josh. 11:23

Joshua 15

[15:1] a. Num. 34:3

[15:1] b. Num. 33:36

[15:1] * *allotment*

[15:2] a. Num. 34:3, 4

[15:3] a. Num. 34:4

[15:4] a. Num. 34:5

[15:5] a. Josh. 18:15–19

[15:6] a. Josh. 18:19, 21

[15:6] b. Josh. 18:17

[15:7] a. Josh. 13:26

[15:7] b. Josh. 7:26

[15:7] c. 2 Sam. 17:17; 1 Kin. 1:9

[15:8] a. Josh. 18:16; 2 Kin. 23:10; Jer. 19:2, 6

[15:8] b. Josh. 15:63; 18:28; Judg. 1:21; 19:10

[15:8] c. Josh. 18:16

[15:8] * Lit. *Giants*

[15:9] a. Josh. 18:15

[15:9] b. 1 Chr. 13:6

[15:9] c. Judg. 18:12

[15:10] a. Gen. 38:13; Judg. 14:1

[15:10] * *turned around*

[15:11] a. Josh. 19:43

[15:12] a. Num. 34:6, 7; Josh. 15:47

[15:13] a. Josh. 14:13

[15:13] b. Num. 13:6

[15:13] c. Josh. 14:15

[15:14] a. Judg. 1:10, 20

[15:14] b. Num. 13:22

[15:15] a. Josh. 10:38; Judg. 1:11

[15:16] a. Judg. 1:12

[15:16] * Lit. *strikes*

[15:17] a. Judg. 1:13; 3:9

[15:17] b. Num. 32:12; Josh. 14:6

[15:17] c. Judg. 1:12

[15:18] a. Judg. 1:14

[15:18] b. Gen. 24:64; 1 Sam. 25:23

[15:19] a. Gen. 33:11

[15:21] a. Gen. 35:21

[15:24] a. 1 Sam. 23:14

[15:28] a. Gen. 21:31; Josh. 19:2

[15:30] a. Josh. 19:4

[15:31] a. Josh. 19:5; 1 Sam. 27:6; 30:1

[15:32] a. Judg. 20:45, 47

[15:33] a. Judg. 13:25; 16:31

[15:35] a. 1 Sam. 22:1

[15:38] a. 2 Kin. 14:7

[15:39] a. 2 Kin. 14:19

[15:39] b. Josh. 10:3

[15:40] * Or *Lahmam*

[15:42] a. Josh. 21:13

[15:46] a. Josh. 11:22

[15:47] a. Josh. 15:4

[15:47] b. Num. 34:6

[15:51] a. Josh. 10:41; 11:16

[15:54] a. Josh. 14:15

[15:55] a. 1 Sam. 23:24, 25

[15:60] a. Josh. 18:14; 1 Sam. 7:1, 2

[15:62] a. 1 Sam. 23:29; Ezek. 47:10

[15:63] a. Judg. 1:8, 21; 2 Sam. 5:6; 1 Chr. 11:4

[15:63] b. Judg. 1:21

Joshua 16

[16:1] a. Josh. 8:15; 18:12

[16:1] * Lit. *went out*

[16:1] * LXX *Bethel Luz*

[16:2] a. Josh. 18:13; Judg. 1:26

[16:2] * LXX *to Bethel,*

[16:3] a. Josh. 18:13; 1 Kin. 9:17; 2 Chr. 8:5

[16:3] b. Josh. 21:21; 1 Kin. 9:15; 1 Chr. 7:28

[16:3] * Lit. *the goings out of it were at the sea*

[16:4] a. Josh. 17:14

[16:4] * *possession*

[16:5] a. Judg. 1:29; 1 Chr. 7:28, 29

[16:5] b. Josh. 18:13

[16:5] c. 2 Chr. 8:5

[16:6] a. Josh. 17:7

[16:7] * *Naaran,* 1 Chr. 7:28

[16:8] a. Josh. 17:8

[16:8] b. Josh. 17:9

[16:8] * Lit. *the goings out of it were at the sea*

[16:9] a. Josh. 17:9

[16:10] a. Josh. 15:63; 17:12, 13; Judg. 1:29; 1 Kin.

9:16

Joshua 17

[17:1] a. Gen. 41:51; 46:20; 48:18

[17:1] b. Gen. 50:23; Judg. 5:14

[17:1] c. Deut. 3:15

[17:2] a. Num. 26:29–33

[17:2] b. 1 Chr. 7:18

[17:2] c. Num. 26:31

[17:2] d. Num. 26:32

[17:2] * *Jeezer,* Num. 26:30

[17:3] a. Num. 26:33; 27:1; 36:2

[17:4] a. Josh. 14:1

[17:4] b. Num. 27:2–11

[17:4] * *possession*

[17:5] a. Josh. 22:7

[17:7] a. Josh. 16:6

[17:8] a. Josh. 16:8

[17:9] a. Josh. 16:9

[17:9] * *boundary*

[17:9] * *Wadi*

[17:11] a. 1 Chr. 7:29

[17:11] b. Judg. 1:27; 1 Sam. 31:10; 1 Kin. 4:12

[17:12] a. Judg. 1:19, 27, 28

[17:13] a. Josh. 16:10

[17:14] a. Josh. 16:4

[17:14] b. Gen. 48:22

[17:14] c. Gen. 48:19; Num. 26:34, 37

[17:14] * *allotment*

[17:16] a. Josh. 17:18; Judg. 1:19; 4:3

[17:16] b. Josh. 19:18; 1 Kin. 4:12

[17:17] * *allotment*

[17:18] a. Deut. 20:1

[17:18] * Lit. *goings out*

Joshua 18

[18:1] a. Josh. 19:51; 21:2; 22:9; Jer. 7:12

[18:1] b. Judg. 18:31; 1 Sam. 1:3, 24; 4:3, 4

[18:3] a. Judg. 18:9

[18:5] a. Josh. 15:1

[18:5] b. Josh. 16:1—17:18

[18:6] a. Josh. 14:2; 18:10

[18:6] * *describe in writing*

[18:7] a. Num. 18:7, 20; Josh. 13:33

[18:7] b. Josh. 13:8

[18:8] a. Gen. 13:17

[18:8] * *describe in writing*

[18:9] * *described it in writing*

[18:10] a. Acts 13:19

[18:10] b. Num. 34:16–29; Josh. 19:51

[18:10] * *portions*

[18:11] a. Judg. 1:21

[18:12] a. Josh. 16:1

[18:13] a. Gen. 28:19; Josh. 16:2; Judg. 1:23

[18:13] b. Josh. 16:3

[18:14] a. Josh. 15:9

[18:14] * Lit. *its goings out were*

[18:15] a. Josh. 15:9

[18:16] a. Josh. 15:8

[18:16] b. Josh. 15:7

[18:16] * Lit. *Giants*

[18:17] a. Josh. 15:6

[18:18] * *Beth Arabah,* Josh. 15:6; 18:22

[18:19] a. Josh. 15:2, 5

[18:19] * Lit. *the goings out of the border were*

[18:25] a. Josh. 11:19; 21:17; 1 Kin. 3:4, 5

[18:25] b. Jer. 31:15

[18:28] a. Josh. 15:8, 63

Joshua 19

[19:1] a. Judg. 1:3

[19:1] b. Josh. 19:9

[19:2] a. 1 Chr. 4:28

[19:8] a. 1 Sam.
30:27

[19:9] a. Josh. 19:1

[19:9] * *too large*

[19:9] * Lit. *them*

[19:11] a. Gen. 49:13

[19:11] b. Josh.
12:22

[19:12] a. 1 Chr.
6:72

[19:13] a. 2 Kin.
14:25

[19:14] * Lit. *the*

goings out of it were

[19:22] a. Josh. 15:10; Judg. 1:33

[19:24] a. Judg. 1:31, 32

[19:26] a. 1 Sam. 15:12; 1 Kin. 18:20; Is. 33:9; 35:2; Jer. 46:18

[19:27] a. 1 Kin. 9:13

[19:28] a. Gen. 10:19; Josh. 11:8; Judg. 1:31; Acts 27:3

[19:28] * So with MT, Tg., Vg.; a few Heb. mss. *Abdon* (cf. 21:30 and 1 Chr. 6:74)

[19:29] a. Judg. 1:31

[19:32] a. Josh. 19:32–39; Judg. 1:33

[19:33] * Lit. *its goings o1ut were*

[19:34] a. Deut. 33:23

[19:37] a. Josh. 20:7

[19:40] a. Josh. 19:40–48; Judg. 1:34–36

[19:41] a. Josh. 15:33

[19:42] a. Judg. 1:35; 1 Kin. 4:9

[19:42] b. Josh. 10:12; 21:24

[19:43] a. Josh.

15:11; Judg. 1:18

[19:46] * *over against*

[19:46] * Heb. *Japho*

[19:47] a. Judg. 18

[19:47] b. Judg. 18:29

[19:49] * *finished*

[19:50] a. Josh. 24:30

[19:50] b. 1 Chr. 7:24

[19:51] a. Num. 34:17; Josh. 14:1

[19:51] b. Josh. 18:1, 10

Joshua 20

[20:2] a. Ex. 21:13; Num. 35:6–34; Deut. 19:2, 9

[20:2] * *Designate*

[20:4] * *states*

[20:5] a. Num. 35:12

[20:6] a. Num. 35:12, 24, 25

[20:7] a. Josh. 21:32; 1 Chr. 6:76

[20:7] b. Josh. 21:21; 2 Chr. 10:1

[20:7] c. Josh. 14:15; 21:11, 13

[20:7] d. Luke 1:39

[20:8] a. Deut. 4:43; Josh. 21:36; 1 Chr. 6:78

[20:8] b. Josh. 21:38; 1 Kin. 22:3

[20:8] c. Josh. 21:27

[20:9] a. Num. 35:15

[20:9] b. Josh. 20:6

[20:9] * As a resident alien

Joshua 21

[21:1] a. Num. 35:1–8

[21:1] b. Num. 34:16–29; Josh. 14:1; 17:4

[21:2] a. Josh. 18:1

[21:2] b. Num. 35:2

[21:4] a. Josh. 21:8, 19

[21:4] b. Josh. 19:51

[21:5] a. Josh. 21:20

[21:6] a. Josh. 21:27

[21:7] a. Josh. 21:314

[21:8] a. Josh. 21:3

[21:8] b. Num. 35:2

[21:9] * Lit. *called*

[21:11] a. Josh. 20:7; 1 Chr. 6:55

[21:11] b. Josh. 14:15; 15:13, 14

[21:11] c. Josh. 20:7; Luke 1:39

[21:11] * Lit. *City of Arba*

[21:12] a. Josh. 14:14; 1 Chr. 6:56

[21:13] a. 1 Chr. 6:57

[21:13] b. Josh. 15:54; 20:2, 7

[21:13] c. Josh. 15:42; 2 Kin. 8:22

[21:14] a. Josh. 15:48

[21:14] b. Josh.

15:50

[21:15] a. 1 Chr. 6:58

[21:15] b. Josh. 15:49

[21:16] a. 1 Chr. 6:59

[21:16] b. Josh. 15:55

[21:16] c. Josh. 15:10

[21:17] a. Josh. 18:25

[21:17] b. Josh. 18:24

[21:18] a. 1 Chr. 6:60

[21:20] a. 1 Chr. 6:66

[21:20] * *allotment*

[21:21] a. Josh. 20:7

[21:21] b. Judg. 1:29

[21:24] a. Josh. 10:12

[21:27] a. Josh. 21:6; 1 Chr. 6:71

[21:27] b. Josh. 20:8

[21:32] a. Josh. 20:7

[21:34] a. Josh. 21:7; 1 Chr. 6:77–81

[21:36] a. Deut. 4:43; Josh. 20:8

[21:36] * So with LXX, Vg. (cf. 1 Chr. 6:78, 79); MT, Bg., Tg. omit vv. 36, 37

[21:38] a. Josh. 20:8

[21:41] a. Num. 35:7

[21:43] a. Gen. 12:7; 26:3, 4; 28:4, 13, 14

[21:43] b. Num. 33:53; Josh. 1:11

[21:44] a. Deut. 7:23, 24; Josh. 11:23; 22:4

[21:44] b. Josh. 1:13, 15; 11:23

[21:44] c. Deut. 7:24

[21:45] a. (Num.

23:19); Josh. 23:14; 1 Kin. 8:56

Joshua 22

[22:2] a. Num. 32:20–22; Deut. 3:18

[22:2] b. Josh. 1:12–18

[22:3] * *forsaken*

[22:4] a. Josh. 21:44

[22:4] b. Num. 32:33

[22:5] a. Deut. 6:6, 17; 11:22; Jer. 12:16

[22:5] b. Deut. 10:12; 11:13, 22

[22:5] * *be very careful to do*

[22:6] a. Gen. 47:7; Ex. 39:43; Josh.

14:13; 2 Sam. 6:18; Luke 24:50

[22:7] a. Josh. 17:1–13

[22:8] a. Num. 31:27; 1 Sam. 30:24

[22:8] * *plunder*

[22:9] a. Num. 32:1, 26, 29

[22:11] a. Deut. 13:12–18; Judg. 20:12, 13

[22:11] * Lit. *front*

[22:12] a. Josh. 18:1; Judg. 20:1

[22:13] a. Deut. 13:14; Judg. 20:12

[22:13] b. Ex. 6:25; Num. 25:7, 11–13

[22:14] a. Num. 1:4

[22:14] * Lit. *thousands*

[22:16] a. Deut. 12:5–14

[22:16] b. Lev. 17:8, 9

[22:16] * *unfaithful act*

[22:17] a. Num. 25:1–9; Deut. 4:3

[22:18] a. Num. 16:22

[22:19] a. Josh. 18:1

[22:19] * *However*

[22:20] a. Josh. 7:1–26

[22:20] * *act unfaithfully*

[22:20] * *devoted thing*

[22:21] * Lit. *thousands*

[22:22] a. Deut. 4:35; 10:17; Is. 44:8; 45:5; 46:9; (1 Cor. 8:5, 6)

[22:22] b. (Job 10:7; 23:10; Jer. 12:3; 2 Cor. 11:11, 31)

[22:23] a. Deut. 18:19; 1 Sam. 20:16

[22:24] * Lit. *from*

fear

[22:27] a. Gen. 31:48; Josh. 22:34; 24:27

[22:27] b. Deut. 12:5, 14

[22:27] * *testimony*

[22:29] a. Deut. 12:13, 14

[22:30] * Lit. *thousands*

[22:31] a. Ex. 25:8; Lev. 26:11, 12; 2 Chr. 15:2; Zech. 8:23

[22:33] a. 1 Chr. 29:20; Neh. 8:6; Dan. 2:19; Luke 2:28

[22:34] * LXX adds *and half the tribe of*

Manasseh

Joshua 23

[23:1] a. Josh. 21:44; 22:4

[23:1] b. Josh. 13:1; 24:29

[23:2] a. Deut. 31:28

[23:3] a. Ps. 44:3

[23:3] b. Ex. 14:14; Deut. 1:30; Josh. 10:14, 42

[23:4] a. Josh. 13:2, 6; 18:10

[23:5] a. Ex. 23:30; 33:2

[23:5] b. Num. 33:53

[23:6] a. Josh. 1:7

[23:6] b. Deut. 5:32

[23:7] a. Ex. 23:33; Deut. 7:2, 3; (Prov. 4:14; Eph. 5:11)

[23:7] b. Ex. 23:13; Ps. 16:4; Jer. 5:7; Hos. 2:17

[23:7] c. Deut. 6:13; 10:20

[23:7] d. Ex. 20:5

[23:7] * *associate with*

[23:8] a. Deut. 10:20

[23:9] a. Deut. 7:24; 11:23; Josh. 1:5

[23:9] * *dispossessed*

[23:10] a. Lev. 26:8; Deut. 28:7; Is. 30:17

[23:10] b. Ex. 14:14

[23:11] a. Josh. 22:5

[23:12] a. (2 Pet. 2:20, 21)

[23:12] b. Deut. 7:3, 4; Ezra 9:2; Neh. 13:25

[23:13] a. Judg. 2:3

[23:13] b. Ex. 23:33; 34:12; Deut. 7:16

[23:14] a. 1 Kin. 2:2

[23:14] b. Josh. 21:45; (Luke 21:33)

[23:14] * I am going to die.

[23:15] a. Deut. 28:63

[23:15] b. Lev. 26:14–39; Deut. 28:15–68

[23:16] a. Deut. 4:24–28

[23:16] * Or *if ever*

Joshua 24

[24:1] a. Gen. 35:4

[24:1] b. Josh. 23:2

[24:1] c. 1 Sam. 10:19

[24:2] a. Gen. 11:7–32

[24:2] b. Josh. 24:14

[24:2] * The Euphrates

[24:3] a. Gen. 12:1; Acts 7:2, 3

[24:3] b. Gen. 21:1–8; (Ps. 127:3)

[24:3] * The Euphrates

[24:3] * Lit. *seed*

[24:4] a. Gen. 25:24–26

[24:4] b. Gen. 36:8; Deut. 2:5

[24:4] c. Gen. 46:1, 3, 6

[24:5] a. Ex. 3:10

[24:5] b. Ex. 7—10

[24:6] a. Ex. 12:37, 51; 14:2–31

[24:7] a. Ex. 14:20

[24:7] b. Deut. 4:34

[24:7] c. Josh. 5:6

[24:8] a. Num. 21:21–35

[24:9] a. Judg. 11:25

[24:9] b. Num. 22:2–14

[24:10] a. Deut. 23:5

[24:10] b. Num. 23:11, 20; 24:10

[24:11] a. Josh. 3:14, 17

[24:11] b. Josh. 6:1; 10:1

[24:12] a. Ex. 23:28; Deut. 7:20

[24:12] b. Ps. 44:3

[24:13] a. Deut. 6:10, 11

[24:14] a. Deut. 10:12, 13; 1 Sam. 12:24

[24:14] b. 2 Cor. 1:12

[24:14] c. Josh. 24:2,

23; Ezek. 20:18

[24:14] d. Ezek. 20:7, 8

[24:14] * The Euphrates

[24:15] a. Ruth 1:15; 1 Kin. 18:21

[24:15] b. Josh. 24:2; Ezek. 20:39

[24:15] c. Ex. 23:24, 32

[24:15] d. Gen. 18:19; Ps. 101:2; (1 Tim. 3:4, 5)

[24:15] * The Euphrates

[24:18] a. Ps. 116:16

[24:19] a. Matt. 6:24

[24:19] b. Lev. 11:44, 45; 1 Sam. 6:20

[24:19] c. Ex. 20:5

[24:19] d. Ex. 23:21

[24:20] a. 1 Chr. 28:9; Ezra 8:22; Is. 1:28; 63:10; 65:11, 12; Jer. 17:13

[24:20] b. Deut. 4:24–26; Josh. 23:15

[24:22] a. Ps. 119:173

[24:23] a. Gen. 35:2; Josh. 24:14; Judg. 10:15, 16; 1 Sam. 7:3

[24:23] b. 1 Kin. 8:57, 58; Ps. 119:36;

141:4

[24:24] a. Ex. 19:8; 24:3, 7; Deut. 5:24–27

[24:25] a. Ex. 15:25

[24:25] b. Josh. 24:1

[24:25] * Lit. *cut a covenant*

[24:26] a. Deut. 31:24

[24:26] b. Judg. 9:6

[24:26] c. Gen. 28:18

[24:26] d. Gen. 35:4

[24:27] a. Gen. 31:48

[24:27] b. Deut. 32:1

[24:281] a. Judg. 2:6, 7

[24:29] a. Judg. 2:8

[24:30] a. Josh. 19:50; Judg. 2:9

[24:31] a. Judg. 2:7

[24:31] b. Deut. 11:2

[24:32] a. Gen. 50:25; Ex. 13:19; Heb. 11:22

[24:32] b. Gen. 33:19; John 4:5

[24:32] * Heb. *qesitah,* an unknown ancient measure of weight

[24:33] a. Ex. 28:1; Num. 20:28; Josh. 14:1

[24:33] b. Ex. 6:25

The Holy Spirit's Work in

JUDGES

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

Because some of the enemies of Israel were left in the land during Joshua's conquest, God's people were tested in their faithfulness to Him (Judg. 3:1–6). Israel continually went through the cycle of doing evil in the Lord's sight, falling into idolatry, being oppressed and enslaved by the 1enemies in the land, and finally crying out to God for deliverance.

Charismatic leadership continued to characterize the style of government in Israel until well into the reign of King David. Again and again God's Spirit came upon men and women who became the judges of Israel. Each anointed judge would be controlled and empowered by the Spirit of God (Judg. 3:10; 6:34; 11:29; 13:25; 14:6, 19; 15:14). When the Spirit stirred them, came upon them, and invested them with charismatic ability, by faith they "subdued kingdoms" and "worked righteousness" (Heb. 11:32–33). How illustrative of what the Holy Spirit will do with believing Christians today!

When an anointed judge died, then Israel would again succumb to evil, perpetuating the cycle of sin, oppression, and crying out to God.

Through this we see one of the major differences between the Holy Spirit's manifestation before and after Pentecost. In the days of the Old Testament, the presence of God's Spirit in a person's life was occasional, sporadic, and temporary, and as a result the people continually succumbed to the pull of Satan into evil. They lacked the supernatural power of the Holy Spirit continually present in their lives to keep them from sinning. Since Pentecost, that power is continuously available to the believer. We need to be seeking the continual filling and empowering of the Holy Spirit to prepare and equip us for spiritual battle against the enemy.*

---

* Adapted from

the *Holy Spirit Encounter Bible*, Introduction to Judges, 226, and John Rea, *Charisma’s Bible Handbook on the Holy Spirit*, 40, 42.

Judges 1

The Continuing Conquest of Canaan

1Now after the [a]death of Joshua it came to pass that the children of Israel [b]asked the LORD, saying, “Who shall be first to go up for us against the [c]Canaanites to fight against them?”

2And the LORD said, [a]“Judah shall go up. Indeed I have delivered the land into his hand.”

3So Judah said to [a]Simeon his brother, “Come up with me to my allotted territory, that we may fight against the Canaanites; and [b]I will likewise go with you to your allotted territory.” And Simeon went with him. 4Then Judah went up, and the LORD delivered the Canaanites and the Perizzites into their hand; and they killed ten thousand men at [a]Bezek. 5And they found Adoni-Bezek in Bezek, and fought against him; and they defeated the Canaanites and the Perizzites. 6Then Adoni-Bezek fled, and they pursued him and caught him and cut off his thumbs and big toes. 7And Adoni-Bezek said, “Seventy kings with their thumbs and big toes cut off used to gather *scraps* under my table; [a]as I have done, so God has repaid me.” Then they brought him to Jerusalem, and there he died.

8Now [a]the children of Judah fought against Jerusalem and took it; they struck it with the edge of the sword and set the city on fire. 9[a]And afterward the children of Judah went down to fight against the Canaanites who dwelt in the mountains, in the [*]South, and in the lowland. 10Then Judah [*]went against the Canaanites who dwelt in [a]Hebron. (Now the name of Hebron *was* formerly [b]Kirjath Arba.) And they killed Sheshai, Ahiman, and Talmai.

11[a]From there they went against the inhabitants of Debir. (The name of Debir *was* formerly Kirjath Sepher.)

12[a]Then Caleb said, “Whoever attacks Kirjath Sepher and takes it, to him I will give my daughter Achsah as wife.” 13And Othniel the son of Kenaz, [a]Caleb’s younger brother, took it; so he gave him his daughter

Achsah as wife. 14[a]Now it happened, when she came *to him,* that [*]she urged him to ask her father for a field. And she dismounted from *her* donkey, and Caleb said to her, “What do you wish?” 15So she said to him, [a]“Give me a blessing; since you have given me land in the South, give me also springs of water.”

And Caleb gave her the upper springs and the lower springs.

16[a]Now the children of the Kenite, Moses’ father-in-law, went up [b]from the City of Palms with the children of Judah into the Wilderness of Judah, which *lies* in the South *near* [c]Arad; [d]and they went and dwelt among the people. 17[a]And Judah went with his brother Simeon, and they attacked the Canaanites who inhabited Zephath, and utterly destroyed it. So the name of the city was called [b]Hormah. 18Also Judah took [a]Gaza with its territory, Ashkelon with its territory, and Ekron with its territory. 19So the LORD was with Judah. And they drove out the mountaineers, but they could not drive out the inhabitants of the lowland, because they had [a]chariots of iron. 20[a]And they gave Hebron to Caleb, as Moses had said. Then he [*]expelled from there the [b]three sons of Anak. 21[a]But the children of Benjamin did not drive out the Jebusites who inhabited Jerusalem; so the Jebusites dwell with the children of Benjamin in Jerusalem to this day.

1:19

I
break
the
chariots
of
the
enemies
of
the
valley
in
the
name
of
Jesus.

22And the [*]house of Joseph also went up against Bethel, [a]and the LORD *was* with them. 23So the [*]house of Joseph [a]sent men to spy out Bethel. (The name of the city *was* formerly [b]Luz.) 24And when the spies saw a man coming out of the city, they said to him, “Please show us the entrance to the city, and [a]we will show you mercy.” 25So he showed them the entrance to the city, and they struck the city with the edge of the sword; but they let the man and all his family go. 26And the man went to the1 land of the Hittites, built a city, and called its name Luz, which *is* its name to this day.

Incomplete Conquest of the Land

27[a]However, Manasseh did not drive out *the inhabitants of* Beth Shean and its villages, or [b]Taanach and its villages, or the inhabitants of [c]Dor and its villages, or the inhabitants of Ibleam and its villages, or the inhabitants of Megiddo and its villages; for the Canaanites were determined to dwell in that land. 28And it came to pass, when Israel was strong, that they put the Canaanites [*]under tribute, but did not completely drive them out.

29[a]Nor did Ephraim drive out the Canaanites who dwelt in Gezer; so the Canaanites dwelt in Gezer among them.

30Nor did [a]Zebulun drive out the inhabitants of Kitron or the inhabitants of Nahalol; so the Canaanites dwelt among them, and [*]were put under tribute.

31[a]Nor did Asher drive out the inhabitants of Acco or the inhabitants of Sidon, or of Ahlab, Achzib, Helbah, Aphik, or Rehob. 32So the Asherites [a]dwelt among the Canaanites, the inhabitants of the land; for they did not drive them out.

33[a]Nor did Naphtali drive out the inhabitants of Beth Shemesh or the inhabitants of Beth Anath; but they dwelt among the Canaanites, the inhabitants of the land. Nevertheless the inhabitants of Beth Shemesh and Beth Anath were put under tribute to them.

34And the Amorites forced the children of Dan into the mountains, for they would not allow them to come down to the valley; 35and the Amorites were determined to dwell in Mount Heres, [a]in Aijalon, and in

[*]Shaalbim; yet when the strength of the house of Joseph became greater, they [*]were put under tribute.

[36]Now the boundary of the Amorites *was* [a]from the Ascent of Akrabbim, from Sela, and upward.

Judges 2

Israel’s Disobedience

[1]Then the Angel of the LORD came up from Gilgal to Bochim, and said: [a]“I led you up from Egypt and [b]brought you to the land of which I swore to your fathers; and [c]I said, ‘I will never break My covenant with you. [2]And [a]you shall make no [*]covenant with the inhabitants of this land; [b]you shall tear down their altars.’ [c]But you have not obeyed My voice. Why have you done this? [3]Therefore I also said, ‘I will not drive them out before you; but they shall be [a]*thorns*[*] in your side, and [b]their gods shall [*]be a [c]snare to you.’ ” [4]So it was, when the Angel of the LORD spoke these words to all the children of Israel, that the people lifted up their voices and wept.

[5]Then they called the name of that place [*]Bochim; and they sacrificed there to the LORD. [6]And when [a]Joshua had dismissed the people, the children of Israel went each to his own inheritance to possess the land.

Death of Joshua

[7][a]So the people served the LORD all the days of Joshua, and all the days of the elders who outlived Joshua, who had seen all the great works of the LORD which He had done for

Israel. 8Now [a]Joshua the son of Nun, the servant of the LORD, died *when he was* one hundred and ten years old. 9[a]And they buried him within the border of his inheritance at [b]Timnath Heres, in the mountains of Ephraim, on the north side of Mount Gaash. 10When all that generation had [*]been gathered to their fathers, another generation arose after them who [a]did not know the LORD nor the work which He had done for Israel.

Israel's Unfaithfulness

11Then the children of Israel did [a]evil in the sight of the LORD, and served the Baals; 12and they [a]forsook the LORD God of their fathers, who had brought them out of the land of Egypt; and they followed [b]other gods from *among* the gods of the people who *were* all around them, and they [c]bowed down to them; and they provoked the LORD to anger. 13They forsook the LORD [a]and served [*]Baal and the [*]Ashtoreths. 14[a]And the anger of the LORD was hot against Israel. So He [b]delivered them into the hands of plunderers who despoiled them; and [c]He sold them into the hands of their enemies all around, so that they [d]could no longer stand before their enemies. 15Wherever they went out, the hand of the LORD was against them for calamity, as the LORD had said, and as the LORD had [a]sworn to them. And they were greatly distressed.

16Nevertheless, [a]the LORD raised up judges who delivered them out of the hand of those who plundered them.

17Yet they would not listen to their judges, but they [a]played the harlot with other gods, and bowed down to them. They turned quickly from the way in which their fathers walked, in obeying the commandments of the LORD; they did not do so. 18And when the LORD raised up judges for them, [a]the LORD was with the judge and delivered them out of the hand of their enemies all the days of the judge; [b]for the LORD was m1oved to pity by their groaning because of those who oppressed them and harassed them. 19And it came to pass, [a]when the judge was dead, that they reverted and behaved more corruptly than their fathers, by following other gods, to serve them and bow down to them. They did not cease from their own doings nor from their stubborn way.

20Then the anger of the LORD was hot against Israel; and He said, “Because this nation has [a]transgressed My covenant which I commanded their fathers, and has not heeded My voice, 21I also will no longer drive out before them any of the nations which Joshua [a]left when he died, 22so [a]that through them I may [b]test Israel, whether they will keep the ways of the LORD, to walk in them as their fathers kept *them,* or not.” 23Therefore the LORD left those nations, without driving them out immediately; nor did He deliver them into the hand of Joshua.

Judges 3

The Nations Remaining in the Land

1Now these *are* [a]the nations which the LORD left, that He might test Israel by them, *that is,* all who had not [*]known any of the wars in Canaan 2(*this was* only so that the generations of the children of Israel might be taught to know war, at least those who had not formerly known it), 3*namely,* [a]five lords of the Philistines, all the Canaanites, the Sidonians, and the Hivites who dwelt in Mount Lebanon, from Mount Baal Hermon to the entrance of Hamath. 4And they were *left, that He might* test Israel by them, to [*]know whether they would obey the commandments of the LORD, which He had commanded their fathers by the hand of Moses.

5[a]Thus the children of Israel dwelt among the Canaanites, the Hittites, the Amorites, the Perizzites, the Hivites, and the Jebusites. 6And [a]they took their daughters to be their wives, and gave their daughters to their sons; and they served their gods.

Othniel

7So the children of Israel did [a]evil in the sight of the LORD. They [b]forgot the LORD their God, and served the Baals and [*]Asherahs. 8Therefore the anger of the LORD was hot against Israel, and He [a]sold them into the hand of [b]Cushan-Rishathaim king of Mesopotamia; and the children of Israel served Cushan-Rishathaim eight years. 9When the children of Israel [a]cried out to the LORD, the LORD [b]raised up a deliverer for the children of Israel, who delivered them: [c]Othniel the son of Kenaz, Caleb’s younger brother. 10[a]The Spirit of the LORD came upon him, and he judged Israel. He went out to war, and the LORD delivered Cushan-Rishathaim king of Mesopotamia into his hand; and his hand prevailed over Cushan-Rishathaim. 11So the land had rest for forty years. Then Othniel the son of Kenaz died.

Ehud

12[a]And the children of Israel again did evil in the sight of the LORD. So the LORD strengthened [b]Eglon king of Moab against Israel, because they had done evil in the sight of the LORD. 13Then he gathered to himself the people of Ammon and [a]Amalek, went and [*]defeated Israel, and took possession of [b]the City of Palms. 14So the children of Israel [a]served Eglon king of Moab eighteen years.

15But when the children of Israel [a]cried out to the LORD, the LORD raised up a deliverer for them: Ehud the son of Gera, the Benjamite, a [b]left-handed man. By him the children of Israel sent tribute to Eglon king of Moab. 16Now Ehud made himself a dagger (it was double-edged and a cubit in length) and fastened it under his clothes on his right thigh. 17So he brought the tribute to Eglon king of Moab. (Now Eglon *was* a very fat man.) 18And when he had finished presenting the tribute, he sent away the people who had carried the tribute. 19But he himself turned back [a]from the [*]stone images that *were* at Gilgal, and said, “I have a secret message for you, O king.”

He said, “Keep silence!” And all who attended him went out from him.

20So Ehud came to him (now he was sitting upstairs in his cool private chamber). Then Ehud said, “I have a message from God for you.” So he arose from *his* seat. 21Then Ehud reached with his left hand, took the dagger from his right thigh, and thrust it into his belly. 22Even the [*]hilt went in after the blade, and the fat closed over the blade, for he did not draw the dagger out of his belly; and his entrails came out. 23Then Ehud went out through the porch and shut the doors of the upper room behind him and locked them.

24When he had gone out, [*]*Eglon’s* servants came to look, and *to their* surprise, the doors of the upper room were locked. So they said, “He is probably [a]attending[*] to his needs in the cool chamber.” 25So they waited till they were [a]embarrassed, and still he had not opened the doors of the upper room. Therefore they took the key and opened *them.* And there was their master, fallen dead on the floor.

26But Ehud had escaped while they delayed, and passed beyond the [*]stone images and escaped to Seirah. 27And it happened, when he arrived, that [a]he blew the trumpet in the [b]mountains of Ephraim, and the children of Israel went down with him from the mountains; and [*]he led them. 28Then he said to them, “Follow *me,* for [a]the LORD has delivered your enemies the Moabites into your hand.” So they went down after him, seized the [b]fords of the Jordan leading to Moab, and did not allow1 anyone to cross over. 29And at that time they killed about ten thousand men of Moab, all stout men of valor; not a man escaped. 30So Moab was subdued that day under the hand of Israel. And [a]the land had rest for eighty years.

Shamgar

31After him was [a]Shamgar the son of Anath, who killed six hundred men of the Philistines [b]with an ox goad; [c]and he also delivered [d]Israel.

SHARPENING *your* SWORD

ANOINTED BY GOD’S SPIRIT

Read Judges 3:10

When the Spirit of God comes upon people, God powerfully anoints them to do His will. The Spirit comes upon men like Othniel, judge of Israel, to defeat mighty enemies and win great victories (Judg. 3:10).

God’s Spirit takes hold of Gideon, making him a mighty hero of God’s people (Judg. 6). God’s Spirit comes upon

Saul, anointing him to prophesy (1 Sam. 10:1–16). As His Spirit anoints the prophets, they speak of His judgment, comfort, and of the coming Anointed One (Messiah) to His people, Israel (Isa. 9, 53, 61).

* * *

God’s powerful anointing by His Spirit imparts: (Write down the specific anointing in each example below):

- Isaiah 61:1 ____________________
- Judges 14:6, 19 ____________________
- 1 Samuel 16:13 ____________________
-

Isaiah 44:3

In what area of your life do you need to encounter the anointing of His Spirit?

- Family
- Ministry
- Faith
- Obedience
- Prayer
- Giving
- Worship
- Relationships
- Work
- Marriage
- Confrontations

* * *

Sharpening Point: What hinders the Spirit's anointing in

your life?

God anoints, comes upon, and empowers people to do His will—that includes you. So if you are spiritually powerless, then you must search for anything within that will hinder the flow of His Spirit. Receiving His anointing brings power and strength into your life.

When His Spirit comes upon you, you fear no enemy and face no problem that cannot be overcome. When His Spirit takes complete control of your life, you will have the strength and power to overcome all of life's obstacles and to do His will.*

---

* *Holy Spirit Encounter Bible,* Holy Spirit

Encounters, 50.

Judges 4

Deborah

1When Ehud was dead, [a]the children of Israel again did [b]evil in the sight of the LORD. 2So the LORD [a]sold them into the hand of Jabin king of Canaan, who reigned in [b]Hazor. The commander of his army *was* [c]Sisera, who dwelt in [d]Harosheth Hagoyim. 3And the children of Israel cried out to the LORD; for Jabin had nine hundred [a]chariots of iron, and for twenty years [b]he had harshly oppressed the children of Israel.

4Now Deborah, a prophetess, the wife of Lapidoth, was judging Israel at that time. 5[a]And she would sit under the palm tree of Deborah between Ramah and Bethel in the mountains of Ephraim. And the children of Israel came up to her for judgment. 6Then she sent and called for [a]Barak the son of Abinoam from [b]Kedesh in Naphtali, and said to him, “Has not the LORD God of Israel commanded, ‘Go and [*]deploy *troops* at Mount [c]Tabor; take with you ten thousand men of the sons of Naphtali and of the sons of Zebulun; 7and against you [a]I will deploy Sisera, the commander of Jabin’s army, with his chariots and his multitude at the [b]River Kishon; and I will [*]deliver him into your hand’?”

8And Barak said to her, “If you will go with me, then I will go; but if you will not go with me, I will not go!”

9So she said, “I will surely go with you; nevertheless there will be no glory for you in the journey you are taking, for the LORD will [a]sell Sisera into the hand of a woman.” Then Deborah arose and went with Barak to Kedesh. 10And Barak called [a]Zebulun and Naphtali to Kedesh; he went up with ten thousand men [b]under[*] his command, and Deborah went up with him.

11Now Heber [a]the Kenite, of the children of [b]Hobab the father-in-law of Moses, had separated himself from the Kenites and pitched his tent near the terebinth tree at Zaanaim, [c]which *is* beside Kedesh.

121small>And they reported to Sisera that Barak the son of Abinoam had gone up to Mount Tabor. 13So Sisera gathered together all his chariots, nine hundred chariots of iron, and all the people who *were* with him, from Harosheth Hagoyim to the River Kishon.

14Then Deborah said to Barak, [*]“Up! For this *is* the day in which the LORD has delivered Sisera into your hand. [a]Has not the LORD gone out before you?” So Barak went down from Mount Tabor with ten thousand men following him. 15And the LORD routed Sisera and all *his* chariots and all *his* army with the edge of the sword before Barak; and Sisera alighted from *his* chariot and fled away on foot. 16But Barak pursued the chariots and the army as far as Harosheth Hagoyim, and all the army of Sisera fell by the edge of the sword; not a man was [a]left.

17However, Sisera had fled away on foot to the tent of [a]Jael, the wife of Heber the Kenite; for *there was* peace between Jabin king of Hazor and the house of Heber the Kenite. 18And Jael went out to meet Sisera, and said to him, “Turn aside, my lord, turn aside to me; do not fear.” And when he had turned aside with her into the tent, she covered him with a [*]blanket.

19Then he said to her, “Please give me a little water to drink, for I am thirsty.” So she opened [a]a jug of milk, gave him a drink, and covered him. 20And he said to her, “Stand at the door of the tent, and if any man comes and inquires of you, and says, ‘Is there any man here?’ you shall say, ‘No.’ ”

21Then Jael, Heber’s wife, [a]took a tent peg and took a hammer in her hand, and went softly to him and drove the peg into his temple, and it went down into the ground; for he was fast asleep and weary. So he died. 22And then, as Barak pursued Sisera, Jael came out to meet him, and said to him, “Come, I will show you the man whom you seek.” And when he went into her *tent,* there lay Sisera, dead with the peg in his temple.

23So on that day God subdued Jabin king of Canaan in the presence of the children of Israel. 24And the hand of the children of Israel grew stronger and stronger against Jabin king of Canaan, until they had destroyed Jabin king of Canaan.

Judges 5

The Song of Deborah

1Then Deborah and Barak the son of Abinoam [a]sang on that day, saying:

2“When[*]
leaders
[a]lead
in
Israel,

[b]When
the
people
[*]willingly
offer
themselves,

Bless
the
LORD!

3“Hear,
[a] O
kings!
Give
ear,
O
princes!

I,
even
[b]I,
will
sing
to
the

LORD;

I will
sing
praise
to
the
LORD
God
of
Israel.

4“LORD,
[a]when
You
went
out
from
Seir,

When
You
marched
from
[b]the
field
of
Edom,

The
earth
trembled
and
the
heavens
poured,

The
clouds
also
poured

water;

5[a]The mountains [*]gushed before the LORD,

[b]This Sinai, before the LORD God of Israel.

Judg. 5:5

Let the mountains melt at Your presence, O God.

6“In the days of [a]Shamgar, son of Anath,

In
the
days
of
[b]Jael,

[c]The
highways
were
deserted,

And
the
travelers
walked
along
the
byways.

[7]Village
life
ceased,
it
ceased
in
Israel,

Until
I,
Deborah,
arose,

Arose
a
mother
in
Israel.

[8]They
chose
[a]new

gods;

Then
there
was
war
in
the
gates;

Not
a
shield
or
spear
was
seen
among
forty
thousand
in
Israel.

[9]My
heart
is
with
the
rulers
of
Israel

Who
offered
themselves
willingly
with
the
people.

Bless

the
LORD!

10“Speak,
you
who
ride
on
white
[a]donkeys,

Who
sit in
judges’
attire,

And
who
walk
along
the
road.

11Far
from
the
noise
of
the
archers,
among
the
watering
places,

There
they
shall
recount
the
righteous

acts
of
the
LORD,

The
righteous
acts
for
His
villagers
in
Israel;

Then
the
people
of
the
LORD
shall
go
down
to
the
gates.

12“Awake,
[a]
awake,
Deborah!

Awake,
awake,
sing
a
song!

Arise,
Barak,
and

lead
your
captives
away,

O
son
of
Abinoam!

13“Then
the
survivors
came
down,
the
people
against
the
nobles;

The
LORD
came
down
for
me
against
the
mighty.

14From
Ephraim
were
those
wh1ose
roots
were
in
[a]Amalek.

After
you,
Benjamin,
with
your
peoples,

From
Machir
rulers
came
down,

And
from
Zebulun
those
who
bear
the
recruiter’s
staff.

[15]And
*the
princes
of
Issachar
were
with
Deborah;

As
Issachar,
so
was
Barak

Sent
into
the

valley
*under
his
command;

Among
the
divisions
of
Reuben

*There
were*
great
resolves
of
heart.

[16]Why
did
you
sit
among
the
sheepfolds,

To
hear
the
pipings
for
the
flocks?

The
divisions
of
Reuben
have
great
searchings

of
heart.

17[a]Gilead
stayed
beyond
the
Jordan,

And
why
did
Dan
remain
[*]on
ships?

[b]Asher
continued
at
the
seashore,

And
stayed
by
his
inlets.

18[a]Zebulun
is a
people
who
jeopardized
their
lives
to
the
point
of
death,

Naphtali also, on the heights of the battlefield.

19 “The kings came *and* fought,

Then the kings of Canaan fought

In [a]Taanach, by the waters of Megiddo;

They took no spoils of silver.

20 They fought from the

heavens;

The stars from their [1]courses fought against Sisera.

21[a]The torrent of Kishon swept them away,

That ancient torrent, the torrent of Kishon.

O my soul, march on in strength!

22Then the horses’ hooves pounded,

The

galloping,
galloping
of
his
steeds.

23‘Curse
Meroz,’
said
the
*angel
of
the
LORD,

‘Curse
its
inhabitants
bitterly,

Because
they
did
not
come
to
the
help
of
the
LORD,

To
the
help
of
the
LORD
against
the

mighty.’

[24]“Most blessed among women is Jael,

The wife of Heber the Kenite;

[a]Blessed is she among women in tents.

[25]He asked for water, she gave milk;

She brought out cream in a lordly bowl.

[26]She

stretched
her
hand
to
the
tent
peg,

Her
right
hand
to
the
workmen’s
hammer;

She
pounded
Sisera,
she
pierced
his
head,

She
split
and
struck
through
his
temple.

[27]At
her
feet
he
sank,
he
fell,
he

lay
still;

At
her
feet
he
sank,
he
fell;

Where
he
sank,
there
he
fell
[a]dead.

28“The
mother
of
Sisera
looked
through
the
window,

And
cried
out
through
the
lattice,

‘Why
is his
chariot
so
long
in

coming?

Why tarries the clatter of his chariots?’

[29]Her wisest *ladies answered her,

Yes, she *answered herself,

[30]‘Are they not finding and dividing the spoil:

To every man a girl *or* two;

For Sisera, plunder of

dyed garments,

Plunder of garments embroidered and dyed,

Two pieces of dyed embroidery for the neck of the looter?’

31“Thus let all Your enemies [a]perish, O LORD!

But *let* those who love Him *be* [b]like the

[c]sun

When
it
comes
out
in
full
[d]strength.”

So the land had rest for forty years.

Judges 6

Midianites Oppress Israel

[1]Then the children of Israel did
[a]evil in the sight of the LORD. So the
LORD delivered them into the hand
of [b]Midian for seven years, [2]and the
hand of Midian prevailed against
Israel. Because of the Midianites, the
children of Israel made for
themselves the dens, [a]the caves, and
the strongholds which *are* in the
mountains. [3]So it was, whenever
Israel had sown, Midianites would
come up; also Amalekites and the
[a]people of the East would come up
against them. [4]Then they would
encamp against them and [a]destroy the
produce of the earth as far as Gaza,
and leave no sustenance for Israel,
neither sheep nor ox nor [b][1]donkey.
[5]For they would come up with their
livestock and their tents, coming in as
numerous as locusts; both they and
their camels were [*]without number;
and they would enter the land to
destroy it. [6]So Israel was greatly
impoverished because of the
Midianites, and the children of Israel

[a]cried out to the LORD.

7And it came to pass, when the children of Israel cried out to the LORD because of the Midianites, 8that the LORD sent a prophet to the children of Israel, who said to them, “Thus says the LORD God of Israel: ‘I brought you up from Egypt and brought you out of the [a]house of [*]bondage; 9and I delivered you out of the hand of the Egyptians and out of the hand of all who oppressed you, and [a]drove them out before you and gave you their land. 10Also I said to you, “I *am* the LORD your God; [a]do not fear the gods of the Amorites, in whose land you dwell.” But you have not obeyed My [b]voice.’ ”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Removing the Cause of a Curse (1–2)

God’s Word says there is no cause

for a curse (Prov. 26:2), so if someone does have demon spirits, the key is removing the cause. The Spiritual Warfare Basics in Judges will give you a simple step-by-step procedure that is always true.

- *Cause*

— What event(s) gave legal permission for demons to torment?

- *Curse* — What is the result from that root cause? All demons kill, steal, and destroy. What is being stolen from you? What is damaged? What is dying?

*

---

* Don Dickerman, *Keep the Pigs Out*, 94–95.

Gideon

[11]Now the Angel of the LORD came and sat under the terebinth tree which *was* in Ophrah, which *belonged* to Joash [a]the Abiezrite, while his son [b]Gideon threshed wheat in the winepress, in order to hide *it* from the Midianites. [12]And the [a]Angel of the LORD appeared to him, and said to him, “The LORD *is* [b]with you, you mighty man of valor!”

[13]Gideon said to Him, “O *my lord, if the LORD is with us, why then has all this happened to us? And [a]where *are* all His miracles [b]which our fathers told us about, saying, ‘Did not the LORD bring us up from Egypt?’ But now the LORD has [c]forsaken us and delivered us into the hands of the Midianites.”

[14]Then the LORD turned to him and said, [a]“Go in this might of yours, and you shall save Israel from the hand of the Midianites. [b]Have I not sent you?”

[15]So he said to Him, “O *my Lord,

how can I save Israel? Indeed [a]my clan *is* the weakest in Manasseh, and I *am* the least in my father's house."

16And the LORD said to him, [a]"Surely I will be with you, and you shall [*]defeat the Midianites as one man."

17Then he said to Him, "If now I have found favor in Your sight, then [a]show me a sign that it is You who talk with me. 18[a]Do not depart from here, I pray, until I come to You and bring out my offering and set *it* before You."

And He said, "I will wait until you come back."

19[a]So Gideon went in and prepared a young goat, and unleavened bread from an ephah of flour. The meat he put in a basket, and he put the broth in a1 pot; and he brought *them* out to Him under the terebinth tree and presented *them.* 20The Angel of God said to him, "Take the meat and the unleavened bread and [a]lay *them* on this rock, and [b]pour out the broth." And he did so.

21Then the Angel of the LORD put out the end of the staff that *was* in His hand, and touched the meat and the unleavened bread; and [a]fire rose out of the rock and consumed the meat and the unleavened bread. And the Angel of the LORD departed out of his sight.

22Now Gideon [a]perceived that He *was* the Angel of the LORD. So Gideon said, "Alas, O Lord GOD! [b]For I have seen the Angel of the LORD face to face."

23Then the LORD said to him, [a]“Peace *be* with you; do not fear, you shall not die.” 24So Gideon built an altar there to the LORD, and called it [*]The-LORD-*Is*-Peace. To this day it *is* still [a]in Ophrah of the Abiezrites.

25Now it came to pass the same night that the LORD said to him, “Take your father’s young bull, the second bull of seven years old, and [a]tear down the altar of [b]Baal that your father has, and [c]cut down the [*]wooden image that *is* beside it; 26and build an altar to the LORD your God on top of this [*]rock in the proper arrangement, and take the second bull and offer a burnt sacrifice with the wood of the image which you shall cut down.” 27So Gideon took ten men from among his servants and did as the LORD had said to him. But because he feared his father’s household and the men of the city too much to do *it* by day, he did *it* by night.

Gideon Destroys the Altar of Baal

28And when the men of the city arose early in the morning, there was the altar of Baal, torn down; and the wooden image that *was* beside it was cut down, and the second bull was being offered on the[1] altar *which had been* built. 29So they said to one another, “Who has done this thing?” And when they had inquired and asked, they said, “Gideon the son of Joash has done this thing.” 30Then the men of the city said to Joash, “Bring out your son, that he may die, because he has torn down the altar of

Baal, and because he has cut down the wooden image that *was* beside it."

31But Joash said to all who stood against him, "Would you [*]plead for Baal? Would you save him? Let the one who would plead for him be put to death by morning! If he *is* a god, let him plead for himself, because his altar has been torn down!" 32Therefore on that day he called him [a]Jerubbaal,[*] saying, "Let Baal plead against him, because he has torn down his altar."

33Then all [a]the Midianites and Amalekites, the people of the East, gathered together; and they crossed over and encamped in [b]the Valley of Jezreel. 34But [a]the Spirit of the LORD came upon Gideon; then he [b]blew the trumpet, and the Abiezrites gathered behind him. 35And he sent messengers throughout all Manasseh, who also gathered behind him. He also sent messengers to [a]Asher, [b]Zebulun, and Naphtali; and they came up to meet them.

The Sign of the Fleece

36So Gideon said to God, "If You will save Israel by my hand as You have said—37[a]look, I shall put a fleece of wool on the threshing floor; if there is dew on the fleece only, and *it is* dry on all the ground, then I shall know that You will save Israel by my hand, as You have said." 38And it was so. When he rose early the next morning and squeezed the fleece together, he wrung the dew out of the fleece, a bowlful of water. 39Then Gideon said to God, [a]"Do not be angry with me, but let me speak just once more: Let me test, I pray, just once more with the fleece; let it now be dry only on the fleece, but on all the ground let there be dew.” [40]And God did so that night. It was dry on the fleece only, but there was dew on all the ground.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

GETTING PAST GAZA

The ultimate joy of the devil is to destroy our seed. It is a terrible thing to sow and not reap. This is the fruit of the spirit of poverty. In Judges 6:3 the Bible says that every time the people of Israel sowed their seed, the Midianites destroyed their increase. They left no nourishment for the people of Israel. This passage specifically says that their increase could be destroyed only as far as Gaza. People of God, to experience true prosperity, *we must get past Gaza*!

Your seed is precious, and this is why the devil comes immediately to steal it. He is a seedeater. His goal is to destroy the seed, because without it you will always be in need. Where there is no seed, there is no multiplication.

The good news is that the enemy has limitations. In this case it was a place called Gaza. Gaza means “the place of the strong will,” and it is a territorial spirit. Territorial spirits are limited to jurisdiction of authority based on territory. If you can get past their jurisdiction of authority, they have no rule over you. You have to get past Gaza. It is like getting past a county line where the laws are different. When you get past Gaza, spiritual law overrides the enemy’s right to destroy your increase. Though Gaza is a natural place, it represents a place in the spirit.

Judges 6:6 speaks of the great poverty of Israel. The spirit of poverty is a curse, and it must be broken off of God’s people. There are too many needy intercessors. We all have needs, and it is the will of the Father to meet them. The need that I am referring to is a *spirit of need*. This means that there is a demon that keeps people in constant want to the point that they are distracted from their purpose. Need that distracts you from your purpose is demonic and should not be tolerated.

The Israelites cried out to God for deliverance. Because poverty is a spirit, the people who are bound by it must be delivered. Poverty is a mind-set. The strength of poverty is not the manifestations, but what is actually happening behind the scenes. Poverty does not just grip pockets; it grips the mind.

Judges 6:15 tells us that Gideon's family was the poorest in Israel, yet God chose him to lead his people out of bondage. Gideon had to get past the circumstances that were before him. To be delivered from poverty, he had to change his way of thinking. This was his spiritual barrier, or Gaza. The enemy can only bind you up as far as your mind will limit you.

In doing research, I discovered that Gaza is currently one of the most poverty-stricken places in the world. Scripture declares that God cursed the land of Gaza to be bald. The Philistines were trading His people as slaves, and God pronounced eternal judgment upon them. Today the curse is so prevalent that people cannot get jobs there. Gaza is located between Egypt and Israel. Still today, anyone born in Gaza is not allowed entrance to Israel. They have to remain in Gaza or go to Egypt.

I believe there is a spiritual meaning to this. Though Gaza is between Egypt and Israel in the natural, spiritual Gaza is set up the same. Egypt represents the world, Israel represents the Promised Land, and Gaza is a type of wilderness in the spirit. All believers have an Egypt that they have come o1ut of, but they must go through Gaza to get to their Jerusalem in the spirit.

Even though you may be having a Gaza experience, move forward and get past it. You must get past Gaza! If you stay where you are, the enemy has the right to destroy your increase.

During the time that Israel was in great poverty, God sent a prophet to them. The prophet reminded them that God had brought them out of Egypt (Judg. 6:8). Gideon asked God that if He was with them, then why were bad things befalling them? He asked, “Where are the miracles that our fathers told us about?” He even asked, “Did the Lord really bring us out of Egypt as our fathers have told?”

Prophet of God, are you reminded of what God has brought you out of up to this point in your life? No matter what you have experienced, never forget the goodness of the Lord. He has already done great things for you. Do not allow your present situation to rob you of what God has already done. Be thankful. A prayerful heart is a thankful heart. *

---

* Kimberly Daniels, *Give It Back!*, 198–200.

Judges 7

Gideon's Valiant Three Hundred

1Then [a]Jerubbaal (that *is,* Gideon) and all the people who *were* with him rose early and encamped beside the well of Harod, so that the camp of the Midianites was on the north side of them by the hill of Moreh in the valley.

2And the LORD said to Gideon, "The people who *are* with you *are* too many for Me to give the Midianites into their hands, lest Israel [a]claim glory for itself against Me, saying, 'My own hand has saved me.' 3Now therefore, proclaim in the hearing of the people, saying, [a]'Whoever *is* fearful and afraid, let him turn and depart at once from Mount Gilead.' " And twenty-two thousand of the people returned, and ten thousand remained.

4But the LORD said to Gideon, "The people *are* still *too* many; bring them down to the water, and I will test them for you there. Then it will be, *that* of whom I say to you, 'This one shall go with you,' the same shall go with you; and of whomever I say to you, 'This one shall not go with you,' the same shall not go." 5So he brought the people down to the water. And the LORD said to Gideon, "Everyone who laps from the water with his tongue, as a dog laps, you shall set apart by himself; likewise everyone who gets down on his knees to drink." 6And the number of those who lapped, *putting* their hand to their mouth, was three hundred men; but all the rest of the people got down on their knees to drink water. 7Then the LORD said to Gideon, [a]"By the three hundred men who lapped I will save you, and deliver the Midianites into your hand. Let all the *other* people go, every man to his *place." 8So the people took provisions and their trumpets in their hands. And he sent away all *the rest of* Israel, every man to his tent, and retained those three hundred men. Now the camp of Midian was below him in the valley.

9It happened on the same [a]night that the LORD said to him, "Arise, go down against the camp, for I have delivered it into your hand. 10But if you are afraid to go down, go down to the camp with Purah your servant, 11and you shall [a]hear what they say; and afterward [*]your hands shall be strengthened to go down against the camp." Then he went down with Purah his servant to the outpost of the armed men who *were* in the camp. 12Now the Midianites and Amalekites, [a]all the people of the East, were lying in the valley [b]as numerous as locusts; and their camels *were* [*]without number, as the sand by the seashore in multitude.

13And when Gideon had come, there was a man telling a dream to his companion. He said, "I have had a dream: *To my* surprise, a loaf of barley bread tumbled into the camp of Midian; it came to a tent and struck it so that it fell and overturned, and the tent collapsed."

14Then his companion answered and said, "This *is* nothing else but the sword of Gideon the son of Joash, a man of Israel! Into his hand [a]God has delivered Midian and the whole camp."

15And so it was, when Gideon heard the telling of the dream and its interpretation, that he worshiped. He returned to the camp of Israel, and said, "Arise, for the LORD has delivered the camp of Midian into your hand." 16Then he divided the three hundred men *into* three companies, and he put a trumpet into every man's hand, with empty pitchers, and torches inside the pitchers. 17And he said to them, “Look at me and do likewise; watch, and when I come to the edge of the camp you shall do as I do: [18]When I blow the trumpet, I and all who *are* with me, then you also blow the trumpets on every side of the whole camp, and say, ‘*The sword of* the LORD and of Gideon!’ ”

Judg. 7:18

I release the sword of the Lord against the powers of hell in the name of Jesus.

[19]So Gideon and the hundred men who *were* with him came to the outpost of the camp at the beginning of the middle watch, just as they had posted the watch; and they blew the trumpets and broke the pitchers that *were* in their hands. [20]Then the three companies blew the trumpets and broke the pitchers—they held the

torches in their left hands and the trumpets in their right hands for blowing—and they cried, “The sword of the LORD and of Gideon!” 21And [a]every man stood in his place all around the camp; [b]and the whole army ran and cried out and fled. 22When the three hundred [a]blew the trumpets, [b]the LORD set [c]every man’s sword against his companion throughout the whole camp; and the army fled to [*]Beth Acacia, toward Zererah, as far as the border of [d]Abel Meholah, by Tabbath.

23And the men of Israel gathered together from [a]Naphtali, Asher, and all Manasseh, and pursued the Midianites.

24Then Gideon sent messengers throughout all the [a]mountains of Ephraim, saying, “Come down against the Midianites, and seize from them the watering places as far as Beth Barah and the Jordan.” Then all the men of Ephraim gathered together and [b]seized the watering places as far as [c]Beth Barah and the Jordan. 25And they captured [a]two princes of the Midianites, [b]Oreb and Zeeb. They killed Oreb at the rock of Oreb, and Zeeb they killed at the winepress of Zeeb. They pursued Midian and brought the heads of Oreb and Zeeb to Gideon on the [c]other side of the Jordan.

Judges 8

Gideon Subdues the Midianites

1Now [a]the men of Ephraim said to him, “Why have you done this to us by not calling us when you went to fight with the Midianites?” And they reprimanded him sharply.

2So he said to them, “What have I done now in comparison with you? *Is* not the [*]gleaning *of the grapes* of Ephraim better than [*]the vintage of [a]Abiezer? 3[a]God has delivered into your hands the princes of Midian, Oreb and Zeeb. And what was I able to do in comparison with you?” Then their [b]anger toward him subsided when he said that.

4When Gideon came [a]to the Jordan, he and [b]the three hundred men who *were* with him crossed over, exhausted but still in pursuit. 5Then he said to the men of [a]Succoth, “Please give loaves of bread to the people who follow me, for they are exhausted, and I am pursuing Zebah and Zalmunna, kings of Midian.”

6And the leaders of Succoth said, [a]“*Are*[*] the hands of Zebah and Zalmunna now in your hand, that [b]we should give bread to your army?”

7So Gideon said, “For this cause, when the LORD has delivered Zebah and Zalmunna into my hand, [a]then I will tear your flesh with the thorns of the wilderness and with briers!” 8Then he went up from there [a]to Penuel and spoke to them in the same way. And the men of Penuel answered him as the men of Succoth had answered. 9So he also spoke to the men of Penuel, saying, “When I [a]come back in peace, [b]I will tear down this tower!”

10Now Zebah and Zalmunna *were* at

Karkor, and their armies with them, about fifteen thousand, all who were left of [a]all the army of the people of the East; for [b]one hundred and twenty thousand men who drew the sword had fallen. 11Then Gideon went up by the road of those who dwell in tents on the east of [a]Nobah and Jogbehah; and he [*]attacked the army while the camp felt [b]secure. 12When Zebah and Zalmunna fled, he pursued them; and he [a]took the two kings of Midian, Zebah and Zalmunna, and routed the whole army.

13Then Gideon the son of Joash returned from battle, from the Ascent of Heres. 14And he caught a young man of the men of Succoth and interrogated him; and he wrote down for him the leaders of Succoth and its elders, seventy-seven men. 15Then he came to the men of Succoth and said, “Here are Zebah and Zalmunna, about whom you [a]ridiculed me, saying, ‘*Are* the hands of Zebah and Zalmunna now in your hand, that we should give bread to your weary men?’ ” 16[a]And he took the elders of the city, and thorns of the wilderness and briers, and with them he [*]taught the men of Succoth. 17[a]Then he tore down the tower of [b]Penuel and killed the men of the city.

18And he said to Zebah and Zalmunna, “What kind of men *were they* whom you killed at [a]Tabor?”

So they answered, “As you *are,* so *were* they; each one resembled the son of a king.”

19Then he said, “They *were* my

brothers, the sons of my mother. *As* the LORD lives, if you had let them live, I would not kill you.” 20And he said to Jether his firstborn, “Rise, kill them!” But the youth would not draw his sword; for he was afraid, because he *was* still a youth.

21So Zebah and Zalmunna said, “Rise yourself, and kill us; for as a man *is, so is* his strength.” So Gideon arose and [a]killed Zebah and Zalmunna, and took the crescent ornaments that *were* on their camels’ necks.

Gideon’s Ephod

22Then the men of Israel said to Gideon, [a]“Rule over us, both you and your son, and your grandson also; for you have [b]delivered us from the hand of Midian.”

23But Gideon said to them, “I will not rule over you, nor shall my son rule over you; [a]the LORD shall rule over you.” 24Then Gideon said to them, “I would like to [*]make a request of you, that each of you would give me the earrings from his plunder.” For they had golden earrings, [a]because they *were* Ishmaelites.

25So they answered, “We will gladly give *them.*” And they spread out a garment, and each man threw into it the earrings from his plunder. 26Now the weight of the gold earrings that he requested was one thousand seven hundred *shekels* of gold, besides the crescent ornaments, pendants, and purple robes which *were* on the kings of Midian, and besides the chains that *were* around their camels' necks. [27]Then Gideon [a]made it into an ephod and set it up in his city, [b]Ophrah. And all Israel [c]played the harlot with it there. It became [d]a snare to Gideon and to his house.

[28]Thus Midian was subdued before the children of Israel, so that they lifted their heads no more. [a]And the country was quiet for forty years in the days of Gideon.

Death of Gideon

[29]Then [a]Jerubbaal the son of Joash went and dwelt in his own house. [30]Gideon had [a]seventy sons who were his own offspring, for he had many wives. [31][a]And his concubine who *was* in Shechem also bore him a son, whose name he called Abimelech. [32]Now Gideon the son of Joash died [a]at a good old age, and was buried in the tomb of Joash his father, [b]in Ophrah of the Abiezrites.

[33]So it was, [a]as soon as Gideon was dead, that the children of Is1rael again [b]played the harlot with the Baals, [c]and made Baal-Berith their god. [34]Thus the children of Israel [a]did not remember the LORD their God, who had delivered them from the hands of all their enemies on every side; [35][a]nor did they show kindness to the house of Jerubbaal (Gideon) in accordance with the good he had done for Israel.

Judges 9

Abimelech's Conspiracy

[1]Then Abimelech the son of Jerubbaal went to Shechem, to [a]his

mother's brothers, and spoke with them and with all the family of the house of his mother's father, saying, 2"Please speak in the hearing of all the men of Shechem: 'Which is better for you, that all [a]seventy of the sons of Jerubbaal reign over you, or that one reign over you?' Remember that I *am* your own flesh and [b]bone."

3And his mother's brothers spoke all these words concerning him in the hearing of all the men of Shechem; and their heart was inclined to follow Abimelech, for they said, "He is our [a]brother." 4So they gave him seventy *shekels* of silver from the temple of [a]Baal-Berith, with which Abimelech hired [b]worthless and reckless men; and they followed him. 5Then he went to his father's house [a]at Ophrah and [b]killed his brothers, the seventy sons of Jerubbaal, on one stone. But Jotham the youngest son of Jerubbaal was left, because he hid himself. 6And all the men of Shechem gathered together, all of Beth Millo, and they went and made Abimelech king beside the terebinth tree at the pillar that *was* in Shechem.

The Parable of the Trees

7Now when they told Jotham, he went and stood on top of [a]Mount Gerizim, and lifted his voice and cried out. And he said to them:

"Listen
to
me,
you
men

of
Shechem,

That
1God
may
listen
to
you!

8“The

[a]
trees
once
went
forth
to
anoint
a
king
over
them.

And
they
said
to
the
olive
tree,

[b]‘Reign
over
us!’

9But
the
olive
tree
said
to

them,

‘Should I cease giving my oil,

[a]With which they honor God and men,

And go to sway over trees?’

10“Then the trees said to the fig tree,

‘You come *and* reign over us!’

11But the

fig
tree
said
to
them,

‘Should
I
cease
my
sweetness
and
my
good
fruit,

And
go to
sway
over
trees?’

12“Then
the
trees
said
to
the
vine,

‘You
come
and
reign
over
us!’

13But
the
vine
said

to
them,

‘Should
I
cease
my
new
wine,

[a]Which
cheers
both
God
and
men,

And
go to
sway
over
trees?’

14“Then
all
the
trees
said
to
the
bramble,

‘You
come
and
reign
over
us!’

15And
the

bramble
said
to
the
trees,

‘If in
truth
you
anoint
me
as
king
over
you,

Then
come
and
take
shelter
in
my
[a]shade;

But
if
not,
[b]let
fire
come
out
of
the
bramble

And devour the [c]cedars of Lebanon!’

[16]“Now therefore, if you have acted in truth and sincerity in making Abimelech king, and if you have dealt well with Jerubbaal and his house, and have done to him [a]as[*] he deserves—[17]for my [a]father fought

for you, risked his life, and [b]delivered you out of the hand of Midian; 18[a]but you have risen up against my father's house this day, and killed his seventy sons on one stone, and made Abimelech, the son of his [b]female servant, king over the men of Shechem, because he is your brother—19if then you have acted in truth and sincerity with Jerubbaal and with his house this day, *then* [a]rejoice in Abimelech, and let him also rejoice in you. 20"But if not, [a]let fire come from Abimelech and devour the men of Shechem and Beth Millo; and let fire come from the men of Shechem and from Beth Millo and devour Abimelech!" 21And Jotham ran away and fled; and he went to [a]Beer and dwelt there, for fear of Abimelech his brother.

Downfall of Abimelech

22After Abimelech had reigned over Israel three years, 23[a]God sent a [b]spirit of ill will between Abimelech and the men of Shechem; and the men of Shechem [c]dealt treacherously with Abimelech, 24[a]that the crime *done* to the seventy sons of Jerubbaal might be settled and their [b]blood be laid on Abimelech their brother, who killed them, and on the men of Shechem, who aided him in the killing of his brothers. 25And the men of Shechem set [*]men in ambush against him on the tops of the mountains, and they robbed all who passed by them along that way; and it was told Abimelech.

26Now Gaal the son of Ebed came with his brothers and went over to Shechem; an1d the men of Shechem put their confidence in him. 27So they went out into the fields, and gathered *grapes* from their vineyards and trod *them,* and [*]made merry. And they went into [a]the house of their god, and ate and drank, and cursed Abimelech. 28Then Gaal the son of Ebed said, [a]"Who *is* Abimelech, and who *is* Shechem, that we should serve him? *Is he* not the son of Jerubbaal, and *is not* Zebul his officer? Serve the men of [b]Hamor the father of Shechem; but why should we serve him? 29[a]If only this people were under my [*]authority! Then I would remove Abimelech." So [*]he said to Abimelech, "Increase your army and come out!"

30When Zebul, the ruler of the city, heard the words of Gaal the son of Ebed, his anger was aroused. 31And he sent messengers to Abimelech secretly, saying, "Take note! Gaal the son of Ebed and his brothers have come to Shechem; and here they are, fortifying the city against you. 32Now therefore, get up by night, you and the people who *are* with you, and [*]lie in wait in the field. 33And it shall be, as soon as the sun is up in the morning, *that* you shall rise early and rush upon the city; and *when* he and the people who are with him come out against you, you may then do to them [*]as you find opportunity.”

34So Abimelech and all the people who *were* with him rose by night,
and [*]lay in wait against Shechem in four companies. 35When Gaal the
son of Ebed went out and stood in the entrance to the city gate,
Abimelech and the people who *were* with him rose from lying in wait.
36And when Gaal saw the people, he said to Zebul, “Look, people are
coming down from the tops of the mountains!”

But Zebul said to him, “You see the shadows of the mountains as *if
they were* men.”

37So Gaal spoke again and said, “See, people are coming down from
the center of the land, and another company is coming from the
[*]Diviners’ Terebinth Tree.”

38Then Zebul said to him, “Where indeed *is* your mouth now, with
which you [a]said, ‘Who is Abimelech, t1hat we should serve him?’ *Are*
not these the people whom you despised? Go out, if you will, and fight
with them now.”

39So Gaal went out, leading the men of Shechem, and fought with
Abimelech. 40And Abimelech chased him, and he fled from him; and
many fell wounded, to the *very* entrance of the gate. 41Then Abimelech
dwelt at Arumah, and Zebul [*]drove out Gaal and his brothers, so that
they would not dwell in Shechem.

42And it came about on the next day that the people went out into
the field, and they told Abimelech. 43So he took his people, divided
them into three companies, and lay in wait in the field. And he
looked, and there were the people, coming out of the city; and he rose
against them and [*]attacked them. 44Then Abimelech and the company
that *was* with him rushed forward and stood at the entrance of the
gate of the city; and the *other* two companies rushed upon all who
were in the fields and killed them. 45So Abimelech fought against the
city all that day; [a]he took the city and killed the people who *were* in it;
and he [b]demolished the city and sowed it with salt.

46Now when all the men of the tower of Shechem had heard *that,*
they entered the [*]stronghold of the temple [a]of the god Berith. 47And it
was told Abimelech that all the men of the tower of Shechem were
gathered together. 48Then Abimelech went up to Mount [a]Zalmon, he
and all the people who *were* with him. And Abimelech took an ax in
his hand and cut down a bough from the trees, and took it and laid *it*
on his shoulder; then he said to the people who were with him, “What
you have seen me do, make haste *and* do as I *have done.*” 49So each of
the people likewise cut down his own bough and followed Abimelech,

put *them* against the [*]stronghold, and set the stronghold on fire above them, so that all the people of the tower of Shechem died, about a thousand men and women.

50Then Abimelech went to Thebez, and he [*]encamped against Thebez and took it. 51But there was a strong tower in the city, and all the men and women—all the people of the city—fled there and shut themselves in; then they went up to the top of the tower. 52So Abimelech came as far as the tower and fought against it; and he drew [1]near the door of the tower to burn it with fire. 53But a certain woman [a]dropped an upper millstone on Abimelech's head and crushed his skull. 54Then [a]he called quickly to the young man, his armorbearer, and said to him, "Draw your sword and kill me, lest men say of me, 'A woman killed him.' " So his young man thrust him through, and he died. 55And when the men of Israel saw that Abimelech was dead, they departed, every man to his [*]place.

56[a]Thus God repaid the wickedness of Abimelech, which he had done to his father by killing his seventy brothers. 57And all the evil of the men of Shechem God returned on their own heads, and on them came [a]the curse of Jotham the son of Jerubbaal.

Judges 10

Tola

1After Abimelech there [a]arose to save Israel Tola the son of Puah, the son of Dodo, a man of Issachar; and he dwelt in Shamir in the mountains of Ephraim. 2He judged Israel twenty-three years; and he died and was buried in Shamir.

Jair

3After him arose Jair, a Gileadite; and he judged Israel twenty-two years. 4Now he had thirty sons who [a]rode on thirty donkeys; they also had thirty towns, [b]which are called [*]"Havoth Jair" to this day, which *are* in the land of Gilead. 5And Jair died and was buried in Camon.

Israel Oppressed Again

6Then [a]the children of Israel again did evil in the sight of the LORD, and [b]served the Baals and the Ashtoreths, [c]the gods of Syria, the gods of [d]Sidon, the gods of Moab, the gods of the people of Ammon, and the gods of the Philistines; and they forsook the LORD and did not serve Him. [1]7So the anger of the LORD was hot against Israel; and He [a]sold them into the hands of the [b]Philistines and into the hands of the people of [c]Ammon. 8From that year they [*]harassed and oppressed the children of Israel for eighteen years—all the children of Israel who *were* on the other side of the Jordan in the [a]land of the Amorites, in Gilead. 9Moreover the people of Ammon crossed over the Jordan to fight against Judah also, against Benjamin, and against the house of Ephraim, so that Israel was severely distressed.

10[a]And the children of Israel cried out to the LORD, saying, "We have [b]sinned against You, because we have both forsaken our God and served the Baals!"

11So the LORD said to the children of Israel, "*Did I* not *deliver you* [a]from the Egyptians and [b]from the Amorites and [c]from the people of Ammon and [d]from the Philistines? 12Also [a]the Sidonians [b]and Amalekites and [*]Maonites [c]oppressed you; and you cried out to Me, and I delivered you from their hand. 13[a]Yet you have forsaken Me and served other gods. Therefore I will deliver you no more. 14"Go and [a]cry out to the gods which you have chosen; let them deliver you in your time of distress."

15And the children of Israel said to the LORD, "We have sinned! [a]Do to us whatever seems best to You; only deliver us this day, we pray." 16[a]So they put away the foreign gods from among them and served the LORD. And [b]His soul could no longer endure the misery of Israel.

[1]17Then the people of Ammon gathered together and encamped in Gilead. And the children of Israel assembled together and encamped in [a]Mizpah. 18And the people, the leaders of Gilead, said to one another, "Who *is* the man who will begin the fight against the people of Ammon? He shall [a]be head over all the inhabitants of Gilead."

Judges 11

Jephthah

1Now [a]Jephthah the Gileadite was [b]a mighty man of valor, but he *was* the son of a harlot; and Gilead begot Jephthah. 2Gilead's wife bore sons; and when his wife's sons grew up, they drove Jephthah out, and said to him, "You shall have [a]no inheritance in our father's house, for you *are* the son of another woman." 3Then Jephthah fled from his brothers and dwelt in the land of [a]Tob; and [b]worthless men banded together with Jephthah and went out *raiding* with him.

4It came to pass after a time that the [a]people of Ammon made war against Israel. 5And so it was, when the people of Ammon made war against Israel, that the elders of Gilead went to get Jephthah from the land of Tob. 6Then they said to Jephthah, "Come and be our commander, that we may fight against the people of Ammon."

7So Jephthah said to the elders of Gilead, [a]"Did you not hate me, and expel me from my father’s house? Why have you come to me now when you are in *distress?”

8[a]And the elders of Gilead said to Jephthah, “That is why we have [b]turned* again to you now, that you may go with us and fight against the people of Ammon, and be [c]our head over all the inhabitants of Gilead.”

9So Jephthah said to the elders of Gilead, “If you take me back home to fight against the people of Ammon, and the LORD delivers them1 to me, shall I be your head?”

10And the elders of Gilead said to Jephthah, [a]“The LORD will be a witness between us, if we do not do according to your words.” 11Then Jephthah went with the elders of Gilead, and the people made him [a]head and commander over them; and Jephthah spoke all his words [b]before the LORD in Mizpah.

12Now Jephthah sent messengers to the king of the people of Ammon, saying, [a]“What do you have against me, that you have come to fight against me in my land?”

13And the king of the people of Ammon answered the messengers of Jephthah, [a]“Because Israel took away my land when they came up out of Egypt, from [b]the Arnon as far as [c]the Jabbok, and to the Jordan. Now therefore, restore those *lands* peaceably.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Removing the Cause of a Curse (3–5)

- *Consequence* — This is tied to the curse; the curse is tied to the cause. You can’t remove the curse until you have dealt with the cause.

- *Choice*—God always honors our choices. Choosing to hold on to a legitimate cause for curse extends the consequences. I have seldom seen a demon leave without being cast out.

- *Confess*—Until there is confession of sin and agreement and alignment with truth, demons do not have to leave. Confession cancels permission.[*]

---

[*] Don Dickerman,

Keep
the
Pigs
Out,
95.

14So Jephthah again sent messengers to the king of the people of Ammon, 15and said to him, “Thus says Jephthah: [a]‘Israel did not take aw1ay the land of Moab, nor the land of the people of Ammon; 16for when Israel came up from Egypt, they walked through the wilderness as far as the Red Sea and [a]came to Kadesh. 17Then [a]Israel sent messengers to the king of Edom, saying, “Please let me pass through your land.” [b]But the king of Edom would not heed. And in like manner they sent to the [c]king of Moab, but he would not *consent.* So Israel [d]remained in Kadesh. 18And they [a]went along through the wilderness and [b]bypassed the land of Edom and the land of Moab, came to the east side of the land of Moab, and encamped on the other side of the Arnon. But they did not enter the border of Moab, for the Arnon *was* the border of Moab. 19Then [a]Israel sent messengers to Sihon king of the Amorites, king of Heshbon; and Israel said to him, “Please [b]let us pass through your land into our place.” 20[a]But Sihon did not trust Israel to pass through his territory. So Sihon gathered all his people together, encamped in Jahaz, and fought against Israel. 21And the LORD God of Israel [a]delivered Sihon and all his people into the hand of Israel, and they [b]defeated[*] them. Thus Israel gained possession of all the land of the Amorites, who inhabited that country. 22They took possession of [a]all the territory of the Amorites, from the Arnon to the Jabbok and from the wilderness to the Jordan.

23‘And now the LORD God of Israel has [*]dispossessed the Amorites from before His people Israel; should you then possess it? 24Will you not possess whatever [a]Chemosh your god gives you to possess? So whatever [b]the LORD our God takes possession of before us, we will possess. 25And now, *are* you any better than [a]Balak the son of Zippor, king of Moab? Did he ever strive against Israel? Did he ever flight against them? 26While Israel dwelt in [a]Heshbon and its villages, in [b]Aroer and its villages, and in all the cities along the banks of the Arnon, for three hundred years, why did you not recover *them* within that time? 27Therefore I have not sinned against you, but you wronged me by fighting against me. May the LORD, [a]the Judge, [b]render judgment this day between the children of Israel and the people of Ammon.' " 28However, the king of the people of Ammon did not heed the words which Jephthah sent him.

Jephthah's Vow and Victory

29Then [a]the Spirit of the LORD came upon Jephthah, and he passed through Gilead and Manasseh, and passed through Mizpah of Gilead; and from Mizpah of Gilead he advanced *toward* the people of Ammon. 30And Jephthah [a]made a vow to the LORD, and said, "If You will indeed deliver the people of Ammon into my hands, 31then it will be that whatever comes out of the doors of my house to meet me, when I return in peace from the people of Ammon, [a]shall surely be the LORD's, [b]and I will offer it up as a burnt offering."

32So Jephthah advanced toward the people of Ammon to fight against them, and the LORD delivered them into his hands. 33And he *defeated them from Aroer as far as [a]Minnith—twenty cities—and to *Abel Keramim, with a very great slaughter. Thus the people of Ammon were subdued before the children of Israel.

Jephthah's Daughter

34When Jephthah came to his house at [a]Mizpah, there was [b]his daughter, coming out to meet him with timbrels and dancing; and she *was his* only child. Besides her he had neither son nor daughter. 35And it came to pass, when he saw her, that he [a]tore his clothes, and said, "Alas, my daughter! You have brought me very low! You are among those who trouble me! For I [b1a>]have *given my word to the LORD, and [c]I cannot *go back on it."

36So she said to him, "My father, *if* you have given your word to the LORD, [a]do to me according to what has gone out of your mouth, because [b]the LORD has avenged you of your enemies, the people of Ammon." 37Then she said to her father, "Let this thing be done for me: let me alone for two months, that I may go and wander on the mountains and *bewail my virginity, my *friends and I."

38So he said, "Go." And he sent her away *for* two months; and she went with her friends, and bewailed her virginity on the mountains. 39And it was so at the end of two months that she returned to her father, and he [a]carried out his vow with her which he had vowed. She *knew no man.

And it became a custom in Israel 40*that* the daughters of Israel went four days each year to *lament the daughter of Jephthah the Gileadite.

Judges 12

Jephthah’s Conflict with Ephraim

1Then [a]the men of Ephraim [*]gathered together, crossed over toward Zaphon, and said to Jephthah, “Why did you cross over to fight against the people of Ammon, and did not call us to go with you? We will burn your house down on you with fire!”

2And Jephthah said to them, “My people and I were in a great struggle with the people of Ammon; and when I called you, you did not deliver me out of their hands. 3So when I saw that you would not deliver *me,* I [a]took my life in my hands and crossed over against the people of Ammon; and the LORD delivered them into my hand. Why then have you come up to me this day to fight against me?” 4Now Jephthah gathered together all the men of Gilead and fought against Ephraim. And the men of Gilead defeated Ephraim, because they said, “You Gileadites [a]*are* fugitives of Ephraim among the Ephraimites *and* among the Manassites.” 5The Gileadites seized the [a]fords of the Jordan before the Ephraimites *arrived.* And when *any* Ephraimite who escaped said, “Let me cross over,” the men of Gilead would say to him, “*Are* you an Ephraimite?” If he said, “No,” 6then they would say to him, “Then say, [a]‘Shibboleth’!”[*] And he would say, “Sibboleth,” for he could not [*]pronounce *it* right. Then they would take him and kill him at the fords of the Jordan. There fell at that time forty-two thousand Ephraimites.

7And Jephthah judged Israel six years. Then Jephthah the Gileadite died and was buried in among the cities of Gilead.

Ibzan, Elon, and Abdon

8After him, Ibzan of Bethlehem judged Israel. 9He had thirty sons. And he gave away thirty daughters in marriage, and brought in thirty daughters from elsewhere for his sons. He judged Israel seven years. 10Then Ibzan died and was buried at Bethlehem.

11After him, Elon the Zebulunite judged Israel. He judged Israel ten years. 12And Elon the Zebulunite died and was buried at Aijalon in the country of Zebulun.

13After him, Abdon the son of Hillel the Pirathonite judged Israel. 14He had forty sons and thirty grandsons, who [a]rode on seventy young donkeys. He judged Israel eight years. 15Then Abdon the son of Hillel the Pirathonite died and was buried in Pirathon in the land of Ephraim, [a]in the mountains of the Amalekites.

Judges 13

The Birth of Samson

1Again the children of Israel [a]did evil in the sight of the LORD, and the LORD delivered them [b]into the hand of the Philistines for forty years.

2Now there was a certain man from [a]Zorah, of the family of the Danites, whose name *was* Manoah; and his wife *was*[1] barren and had no children. 3And the [a]Angel of the LORD appeared to the woman and said to her, “Indeed now, you are barren and have borne no children, but you shall conceive and bear a son. 4Now therefore, please be careful [a]not to drink wine or *similar* drink, and not to eat anything unclean. 5For behold, you shall conceive and bear a son. And no [a]razor shall come upon his head, for the child shall be [b]a Nazirite to God from the womb; and he shall [c]begin to deliver Israel out of the hand of the Philistines.”

6So the woman came and told her husband, saying, [a]“A Man of God came to me, and His [b]countenance[*]*was* like the countenance of the Angel of God, very awesome; but I [c]did not ask Him where He *was* from, and He did not tell me His name. 7And He said to me, ‘Behold, you shall conceive and bear a son. Now drink no wine or *similar* drink, nor eat anything unclean, for the child shall be a Nazirite to God from the womb to the day of his death.’ ”

8Then Manoah prayed to the LORD, and said, “O my Lord, please let the Man of God whom You sent come to us again and teach us what we shall do for the child who will be born.”

9And God listened to the voice of Manoah, and the Angel of God came to the woman again as she was sitting in the field; but Manoah her husband *was* not with her. 10Then the woman ran in haste and told her husband, and said to him, “Look, the Man who came to me the *other* day has just now appeared to me!”

11So Manoah arose and followed his wife. When he came to the Man, he said to Him, “Are You the Man who spoke to this woman?”

And He said, “I *am.*”

12Manoah said, “Now let Your words come *to pass!* What will be the boy’s rule of life, and his work?”

13So the Angel of the LORD said to Manoah, “Of all that I said to the woman let her be careful. 14She may not eat anything that comes from the vine, [a]nor may she drink wine or *similar* drink, nor eat anything unclean. All that I commanded her let her observe.”

15Then Manoah said to the Angel of the LORD, “Please [a]let us detain You, and we will prepare a young goat for You.”

16And the Angel of the LORD said to Manoah, “Though you detain Me, I will not eat your food. But if you offer a burnt offering, you must offer it to the LORD.” (For Manoah did not know He *was* the

Angel of the LORD.)

17Then Manoah said to the Angel of the LORD, “What *is* Your name, that when Your words come *to pass* we may honor You?”

18And the Angel of the LORD said to him, [a]“Why do you ask My name, seeing it *is* wonderful?”

19So Manoah took the young goat with the grain offering, [a]and offered it upon the rock to the LORD. And He did a wondrous thing while Manoah and his wife looked on—20it happened as the flame went up toward heaven from the altar—the Angel of the LORD ascended in the flame of the altar! When Manoah and his wife saw *this,* they [a]fell on their faces to the ground. 21When the Angel of the LORD appeared no more to Manoah and his wife, [a]then Manoah knew that He *was* the Angel of the LORD.

22And Manoah said to his wife, [a]“We shall surely die, because we have seen God!”

23But his wife said to him, “If the LORD had desired to kill us, He would not have accepted a burnt offering and a grain offering from our hands, nor would He have shown us all these *things,* nor would He have told us *such things* as these at this time.”

24So the woman bore a son and called his name [a]Samson; and [b]the child grew, and the LORD blessed him. 25[a]And the Spirit of the LORD began to move upon him at [*]Mahaneh Dan [b]between Zorah and [c]Eshtaol.

Judges 14

Samson’s Philistine Wife

1Now Samson went down [a]to Timnah, and [b]saw a woman in Timnah of the daughters of the Philistines. 2So he went up and told his father and mother, saying, “I have seen a woman in Timnah of the daughters of the Philistines; now therefore, [a]get her for me as a wife.”

3Then his father and mother said to him, “*Is there* no woman among the daughters of [a]your brethren, or among all my people, that you must go and get a wife from the [b]uncircumcised Philistines?”

And Samson said to his father, “Get her for me, for [*]she pleases me well.”

4But his father and mother did not know that it was [a]of the LORD—that He was seeking an occasion to move against the Philistines. For at that time [b]the Philistines had dominion over Israel.

5So Samson went down to Timnah with his father and mother, and came to the vineyards of Timnah.

Now *to his* surprise, a young lion *came* roaring against him. 6And [a]the Spirit of the LORD came mightily upon him, and he tore the lion apart as one would have torn apart a young goat, though *he had* nothing in his hand. But he did not tell his father or his mother what he had done.

7Then he went down and talked with the woman; and she pleased Samson well. 8After some time, when he returned to get her, he turned aside to see the carcass of the lion. And behold, a swarm of bees and honey *were* in the carcass of the lion. 9He took some of it in his hands and went along, eating. When he came to his father and mother, he gave *some* to them, and they also ate. But he did not tell them that he had taken the honey out of the [a]carcass of the lion.

10So his father went down to the woman. And Samson gave a feast there, for young men used to do so. 11And it happened, when they saw him, that they brought thirty companions to be with him.

12[1]Then Samson said to them, âœet me [a]pose a riddle to you. If you can correctly solve and explain it to me [b]within the seven days of the feast, then I will give you thirty linen garments and thirty [c]changes of clothing. 13But if you cannot explain *it* to me, then you shall give me thirty linen garments and thirty changes of clothing.â/p>

And they said to him, [a]âœose your riddle, that we may hear it.â/p>

14So he said to them:

> âœut of the eater came something to eat,
>
> And out of the strong came something sweet.â/blockquote>

Now for three days they could not explain the riddle.

15But it came to pass on the [*]seventh day that they said to Samsonâ™ wife, [a]âœentice your husband, that he may explain the riddle to us, [b]or else we will burn you and your fatherâ™ house with fire. Have you invited us in order to take what is ours? *Is that* not *so?* â/p>

16Then Samsonâ™ wife wept on him, and said, [a]âœou only hate me! You do not love me! You have posed a riddle to the sons of my people, but you have not explained *it* to me.â/p>

And he said to her, âœook, I have not explained *it* to my father or my mother; so should I explain *it* to you?â17Now she had wept on him the seven days while their feast lasted. And it happened on the seventh day that he told her, because she pressed him so much. Then she explained the riddle to the sons of her people. 18So the men of the city said to him on the seventh day before the sun went down:

âœhat *is* sweeter
than honey?

And what *is* stronger
than a lion?â/
blockquote>

And he said to them:

âœf
you
had
not
plowed
with
my
heifer,

You
would
not
have
solved
my
riddle!
â/
blockquote>

19Then [a]the Spirit
of the LORD came
upon him mightily,

and he went down to Ashkelon and killed thirty of their men, took their apparel, and gave the changes *of clothing* to those who had explained the riddle. So his anger was aroused, and he went back up to his fatherâ™ house. 20And Samsonâ™ wife [a]was *given* to his companion, who had been [b]his best man.

Judges 15

Samson Defeats the Philistines

1After a while, in the time of wheat harvest, it happened that Samson visited his wife with a [a]young goat. And he said, âœet me go in to my wife, into *her* room.âBut her father would not permit him to go in.

2Her father said, âœ really thought that you thoroughly [a]hated her; therefore I gave her to your companion. *Is* not her younger sister better than she? Please, take her instead.â/p>

[3]And Samson said to them, âœhis time I shall be blameless regarding the Philistines if I harm them!â[4]Then Samson went and caught three hundred foxes; and he took torches, turned *the foxes* tail to tail, and put a torch between each pair of tails. [5]When he had set the torches on fire, he let *the foxes* go into the standing grain of the Philistines, and burned up both the shocks and the standing grain, as well as the vineyards *and* olive groves.

[6]Then the Philistines said, âœho has done this?â/p>

And they answered, âœamson, the son-in-law of the Timnite, because he has taken his wife and given her to his companion.â[a]So the Philistines came up and burned her and her father with fire.

[7]Samson said to them, âœince you

would do a thing like
this, I will surely take
revenge on you, and
after that I will
cease.â8So he
attacked them hip
and thigh with a
great slaughter; then
he went down and
dwelt in the cleft of
the rock of [a]Etam.

9Now the
Philistines went up,
encamped in Judah,
and deployed
themselves [a]against
Lehi. 10And the men
of Judah said, âœhy
have you come up
against us?â/p>

So they answered,
âœe have come up to
[*]arrest Samson, to do
to him as he has
done to us.â/p>

11Then three
thousand men of
Judah went down to
the cleft of the rock
of Etam, and said to
Samson, âœo you not
know that the
Philistines [a]rule over
us? What *is* this you
have done to us?”

And he said to
them, “As they did to
me, so I have done to
them.”

12But they said to

him, “We have come down to arrest you, that we may deliver you into the hand of the Philistines.”

Then Samson said to them, “Swear to me that you will not kill me yourselves.”

13So they spoke to him, saying, “No, but we will tie you securely and deliver you into their hand; but we will surely not kill you.” And they bound him with two [a]new ropes and brought him up from the rock.

14When he came to Lehi, the Philistines came shouting against him. Then [a]the Spirit of the LORD came mightily upon him; and the ropes that *were* on his arms became like flax that is burned with fire, and his bonds [*]broke loose from his hands. 15He found a fresh jawbone of a donkey, reached out his hand and took it, and [a]killed a thousand men with it. 16Then Samson said:

“With the jawbone of a donkey,

Heaps upon heaps,

With the jawbone of a donkey

I have slain a thousand men!”

[17]And so it was, when he had finished speaking, that he threw the jawbone from his hand, and called that place [*]Ramath Lehi.

[18]Then he became very thirsty; so he cried out to the LORD and said, [a]“You have given this great deliverance by the hand of Your servant; and now shall I die of

thirst and fall into the hand of the uncircumcised?” 19So God split the hollow place that *is* in [*]Lehi, and water came out, and he drank; and [a]his spirit returned, and he revived. Therefore he called its name [*]En Hakkore, which is in Lehi to this day. 20And [a]he judged Israel [b]twenty years [c]in the days of the Philistines.

1

Judges 16

Samson and Delilah

1Now Samson went to [a]Gaza and saw a harlot there, and went in to her. 2*When* the Gazites *were told,* “Samson has come here!” they [a]surrounded *the place* and lay in wait for him all night at the gate of the city. They were quiet all night, saying, “In the morning, when it is daylight, we will kill him.” 3And Samson lay *low* till midnight; then he arose at midnight, took hold of the doors of the gate of the city and the two gateposts, pulled them up, bar and all, put *them* on his shoulders, and carried them to the top of the hill that faces Hebron.

4Afterward it happened that he loved a woman in the Valley of Sorek, whose name *was* Delilah. 5And the [a]lords of the Philistines came up to her and said to her, [b]"Entice him, and find out where his great strength *lies,* and by what *means* we may overpower him, that we may bind him to afflict him; and every one of us will give you eleven hundred *pieces* of silver."

Judg. 16:4

I loose myself from every Delilah spirit

**operating
in
the
valley.**

[6]So Delilah said to Samson, “Please tell me where your great strength *lies,* and with what you may be bound to afflict you.”

[7]And Samson said to her, “If they bind me with seven fresh bowstrings, not yet dried, then I shall become weak, and be like any *other* man.”

[8]So the lords of the Philistines brought up to her seven fresh bowstrings, not yet dried, and she bound him with them. [9]Now *men were* lying in wait, staying with her in the room. And she said to him, “The Philistines *are* upon you, Samson!” But he broke the bowstrings as a strand of yarn breaks when it touches fire. So the secret of his strength was not known.

[10]Then Delilah said to Samson, “Look, you have mocked me

and told me lies. Now, please tell me what you may be bound with.”

11So he said to her, “If they bind me securely with [a]new ropes *that have never been used, then I shall become weak, and be like any *other* man.”

12Therefore Delilah took new ropes and bound him with them, and said to him, “The Philistines *are* upon you, Samson!” And *men were* lying in wait, staying in the room. But he broke them off his arms like a thread.

13Delilah said to Samson, “Until now you have mocked me and told me lies. Tell me what you may be bound with.”

And he said to her, “If you weave the seven locks of my head into the web of the loom”—

Removing the Cause of a Curse (6–7)

- *Co cas ou* — De mu be cas ou the car be cou or me ou Jes sai “Ca ou der

- *Cu* — On the der spi hav

bec
ren
oft
phy
hea
tak
pla
and
em
wo
beg
to
me
Th
is
Go
pro
and
it
alw
wo

Sometimes it sounds too simple. But it is no more complicated than these seven procedures.[*]

---

[*]

Don
Dickerman
*Keep
the
Pigs
Out*,
95.

[14]So she wove *it* tightly with the batten of the loom, and said to him, "The Philistines *are* upon you, Samson!" But he awoke from his sleep, and pulled out the batten and the web from the loom.

[15]Then she said to him, [a]"How can you say, 'I love you,' when your heart *is* not with me? You have mocked me these three times, and have not told me where your great strength *lies.*" [16]And it came to pass, when she pestered him daily with her words and pressed him, *so* that his soul was [*]vexed to death, [17]that he [a]told her all his heart, and said to her, [b]"No razor has ever come upon my

head, for I *have been* a Nazirite to God from my mother’s womb. If I am shaven, then my strength will leave me, and I shall become weak, and be like any *other* man.”

[18]When Delilah 1saw that he had told her all his heart, she sent and called for the lords of the Philistines, saying, “Come up once more, for he has told me all his heart.” So the lords of the Philistines came up to her and brought the money in their hand. [19][a]Then she lulled him to sleep on her knees, and called for a man and had him shave off the seven locks of his head. Then *she began to torment him, and his strength left him. [20]And she said, “The Philistines *are* upon you, Samson!” So he awoke from his sleep, and said, “I will go out as before, at other times, and shake myself free!”

But he did not know that the LORD [a]had departed from him.

21Then the Philistines took him and [*]put out his [a]eyes, and brought him down to Gaza. They bound him with bronze fetters, and he became a grinder in the prison. 22However, the hair of his head began to grow again after it had been shaven.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Eye Sees

The eye is a major gate where information is perceived and channeled into the human soul and spirit. The Bible calls the eye “the lamp of the body.” Matthew 6:22–23 reads, “The lamp of the body is the eye. If therefore your eye is good, your whole body will be full of light.

But if your eye is bad, your whole body will be full of darkness. If therefore the light that is in you is darkness, how great is that darkness!” In the Bible, one method of punishment in war was to blind or put out the eyes of the captive (Judg. 16:21; 2 Kin. 25:7; Jer. 52:11). If the eye is to be useful, it must see clearly. Biblically, the eye is of great importance for a person to prosper fully in God’s plan. The eye also relates to the heart and mind, since the “eye of the heart” determines our spiritual perception. As we read in Matthew 6, if our spiritual eyes are open, we can receive enlightenment, and the

Spirit of God can flow. If our eyes are darkened, our whole body becomes dark, and eventually we lose our way.[*]

---

[*] Chuck D. Pierce, *Time to Defeat the Devil*, 190–191.

Samson Dies with the Philistines

[23]Now the lords of

the Philistines gathered together to offer a [1]great sacrifice to [a]Dagon their god, and to rejoice. And they said:

“Our god has delivered into our hands

Samson our enemy!”

[24]When the people saw him, they [a]praised their god; for they said:

“Our god has delivered into our hands our enemy,

The destroyer of our land,

And
the
one
who
multiplied
our
dead."

25So it happened, when their hearts were [a]merry, that they said, "Call for Samson, that he may perform for us." So they called for Samson from the prison, and he performed for them. And they stationed him between the pillars. 26Then Samson said to the lad who held him by the hand, "Let me feel the pillars which support the temple, so that I can lean on them." 27Now the temple was full of men and women. All the lords of the Philistines *were* there—about three thousand men and women on the [a]roof watching while Samson performed.

28Then Samson called to the LORD, saying, "O Lord GOD,

[a]remember me, I pray! Strengthen me, I pray, just this once, O God, that I may with one *blow* take vengeance on the Philistines for my two eyes!” 29And Samson took hold of the two middle pillars which supported the temple, and he braced himself against them, one on his right and the other on his left. 30Then Samson said, “Let me die with the Philistines!” And he pushed with *all his* might, and the temple fell on the lords and all the people who *were* in it. So the dead that he killed at his death were more than he had killed in his life.

31And his brothers and all his father’s household came down and took him, and brought *him* up and [a]buried him between Zorah and Eshtaol in the tomb of his father Manoah. He had judged Israel [b]twenty years.

Judges 17

Micah's Idolatry

1Now there was a man from the mountains of Ephraim, whose name *was* [a]Micah. 2And he said to his mother, "The eleven hundred *shekels* of silver that were taken from you, and on which you [a]put a curse, even saying it in my ears—here *is* the silver with me; I took it."

And his mother said, [b]"*May you be* blessed by the LORD, my son!" 3So when he had returned the eleven hundred *shekels* of silver to his mother, his mother said, "I had wholly dedicated the silver from my hand to the LORD for my son, to [a]make a carved image and a molded image; now therefore, I will return it to you." 4Thus he returned the silver to his mother. Then his mother [a]took two hundred *shekels* of silver and gave them to the silversmith, and he made it into a carved image and a molded image; and they were in the house of Micah.

5The man Micah had a [a]shrine, and made an [b]ephod and [c]household[*] idols; and he consecrated one of his sons, who became his priest. 6[a]In those days *there was* no king in Israel; [b]everyone did *what was* right in his own eyes.

7Now there was a young man from [a]Bethlehem in Judah, of the family of Judah; he *was* a Levite, and [b]was staying there. 8The man departed from the city of Bethlehem in Judah to stay wherever he could find *a place*. Then he came to the mountains of Ephraim, to the house of Micah, as he journeyed. 9And Micah said to him, “Where do you come from?”

So he said to him,

“I *am* a Levite from Bethlehem in Judah, and I am on my way to find *a place* to stay.”

10Micah said to him, “Dwell with me, [a]and be a [b]father and a priest to me, and I will give you ten *shekels* of silver per year, a suit of clothes, and your sustenance.” So the Levite went in. 11Then the Levite was content to dwell with the man; and the young man became like one of his sons to him. 12So Micah [a]consecrated[*] the Levite, and the young man [b]became his priest, and lived in the house of Micah. 13Then Micah said, “Now I know that the LORD will be good to me, since I have a Levite as [a]priest!”

Judges 18

The Danites Adopt Micah’s Idolatry

1In [a]those days *there was* no king in Israel. And in those days [b]the tribe of the

Danites was seeking an inheritance for itself to dwell in; for until that day *their* inheritance among the tribes of Israel had not fallen to them. 2So the children of Dan sent five men of their family from their territory, men of valor from [a]Zorah and Eshtaol, [b]to spy out the land and search it. They said to them, “Go, search the land.” So they went to the mountains of Ephraim, to the [c]house of Micah, and lodged there. 3While they *were* at the house of Micah, they recognized the voice of the young Levite. They turned aside and said to him, “Who brought you here? What are you doing in this *place?* What do you have here?”

4He said to them, “Thus and so Micah did for me. He has [a]hired me, and I have become his priest.”

5So they said to

him, “Please [a]inquire of [b]God, that we may know whether the journey on which we go will be prosperous.”

6And the priest said to them, [a]“Go in peace. [*]The presence of the LORD *be* with you on your way.”

7So the five men departed and went to [a]Laish. They saw the people who *were* there, [b]how they dwelt safely, in the manner of the Sidonians, quiet and secure. *There were* no rulers in the land who might put *them* to shame for anything. They *were* far from the [c]Sidonians, and they had no ties [*]with anyone.

8Then *the spies* came back to their brethren at [a]Zorah and Eshtaol, and their brethren said to them, “What *is* your *report?*”

9So they said, [a]“Arise, let us go up against them. For we have seen the land, and indeed it *is* very good. *Would* you [b]*do* nothing? Do not hesitate to go, *and* enter to possess the land. 10When you go, you will come to a [a]secure people and a large land. For God has given it into your hands, [b]a place where *there is* no lack of anything that *is* on the earth.”

11And six hundred men of the family of the Danites went from there, from Zorah and Eshtaol, armed with weapons of war. 12Then they went up and encamped in [a]Kirjath Jearim in Judah. (Therefore they call that place [b]Mahaneh Dan[*] to this day. There *it is,* west of Kirjath Jearim.) 13And they passed from there to the mountains of Ephraim, and came to [a]the house of Micah.

14[a]Then the five men who had gone to spy out the country of Laish answered and said to their brethren, “Do you know that [b]there are in these houses an ephod, household idols, a carved image, and a molded image? Now therefore, consider what you should do.” 15So they turned aside there, and came to the house of the young Levite man—to the house of Micah—and greeted him. 16The [a]six hundred men armed with their weapons of war, who *were* of the children of Dan, stood by the entrance of the gate. 17Then [a]the five men who had gone to spy out the land went up. Entering there, they took [b]the carved image, the ephod, the household idols, and the molded image. The priest stood at the entrance of the gate with the six hundred men *who were* armed with weapons of war.

18When these went into Micah’s house and took the carved image, the ephod, the household idols, and the molded image, the priest said to them, “What are you doing?”

19And they said to him, “Be quiet, [a]put your hand over your mouth, and come with us; [b]be a father and a priest to us. *Is it* better for you to be a priest to the household of one man, or that you be a priest to a tribe and a family in Israel?” 20So the priest’s heart was glad; and he took the ephod, the household idols, and the carved image, and took his place among the people.

21Then they turned and departed, and put the little ones, the livestock, and the goods in front of them. 22When they were a good way from the house of Micah, the men who *were* in the houses near Micah’s house gathered together and overtook the children of Dan. 23And they called out to the children of Dan. So they turned around and said to Micah, [a]"What ails you, that you have gathered such a company?"

24So he said, "You have [a]taken away my [*]gods which I made, and the priest, and you have gone away. Now what more do I have? How can you say to me, 'What ails you?' "

25And the children of Dan said to him, "Do not let your voice be heard among us, lest [*]angry men fall upon you, and you lose your life, with the lives of your household!" 26Then the children of Dan went their way. And when Micah saw that they *were* too strong for him, he turned and went back to his house.

Danites Settle in Laish

27So they took *the things* Micah had made, and the priest who had belonged to him, and went to Laish, to a people quiet and secure;

[a]and they struck them with the edge of the sword and burned the city with fire. [28]*There was* no deliverer, because it *was* [a]far from Sidon, and they had no ties with anyone. It was in the valley that belongs [b]to Beth Rehob. So they rebuilt the city and dwelt there. [29]And [a]they called the name of the city [b]Dan, after the name of Dan their father, who was born to Israel. However, the name of the city formerly *was* Laish.

[30]Then the children of Dan set up for themselves the carved image; and Jonathan the son of Gershom, the son of [*]Manass1eh, and his sons were priests to the tribe of Dan [a]until the day of the captivity of the land. [31]So they set up for themselves Micah’s carved image which he made, [a]all the time that the house of God was in Shiloh.

Judges 19

The Levite's Concubine

1And it came to pass in those days, [a]when *there was* no king in Israel, that there was a certain Levite staying in the remote mountains of Ephraim. He took for himself a concubine from [b]Bethlehem in Judah. 2But his concubine played the harlot against him, and went away from him to her father's house at Bethlehem in Judah, and was there four whole months. 3Then her husband arose and went after her, to [a]speak *kindly to her *and* bring her back, having his servant and a couple of donkeys with him. So she brought him into her father's house; and when the father of the young woman saw him, he was glad to meet him. 4Now his father-in-law, the young woman's father, detained him; and he stayed with him three days. So they ate and drank and lodged there.

5Then it came to pass on the fourth day that they arose early in the morning, and he stood to depart; but the young woman's father said to his son-in-law, [a]"Refresh your heart with a morsel of bread, and afterward go your way."

6So they sat down, and the two of them ate and drank together. Then the young woman's father said to the man, "Please be content to stay all night, and let your heart be merry." 7And when the man stood to depart, his father-in-law urged him; so he lodged there again. 8Then he arose early in the morning on the fifth day to depart, but the young woman's father said, "Please refresh your heart." So they delayed until afternoon; and both of them ate.

9And when the man stood to depart

—he and his concubine and his servant—his father-in-law, the young woman’s father, said to him, “Look, the day is now drawing toward evening; please spend the night. See, the day is coming to an end; lodge here, that your heart may be merry. Tomorrow go your way early, so that you may get [*]home.”

10However, the man was not willing to spend that night; so he rose and departed, and came opposite [a]Jebus (that *is,* Jerusalem). With him were the two saddled donkeys; his concubine *was* also with him. 11They *were* near Jebus, and the day was far spent; and the servant said to his master, “Come, please, and let us turn aside into this city [a]of the Jebusites and lodge in it.”

12But his master said to him, “We will not turn aside here into a city of foreigners, who *are* not of the children of Israel; we will go on [a]to Gibeah." 13So he said to his servant, "Come, let us draw near to one of these places, and spend the night in Gibeah or in [a]Ramah." 14And they passed by and went their way; and the sun went down on them near Gibeah, which belongs to Benjamin. 15They turned aside there to go in to lodge in Gibeah. And when he went in, he sat down in the open square of the city, for no one would [a]take them into *his* house to spend the night.

16Just then an old man came in from [a]his work in the field at evening, who also *was* from the mountains of Ephraim; he was staying in Gibeah, whereas the men of the place *were* Benjamites. 17And when he raised his eyes, he saw the traveler in the open square of the city;

and the old man said, “Where are you going, and where do you come from?”

18So he said to him, “We *are* passing from Bethlehem in Judah toward the remote mountains of Ephraim; I *am* from there. I went to Bethlehem in Judah; *now* I am going to [a]the house of the LORD. But there *is* no one who will take me into his house, 19although we have both straw and fodder for our donkeys, and bread and wine for myself, for your female servant, and for the young man *who is* with your servant; *there is* no lack of anything.”

20And the old man said, [a]“Peace *be* with you! However, *let* all your needs *be* my responsibility; [b]only do not spend the night in the open square.” 21[a]So he brought him into his house, and gave fodder to the donkeys. [b]And they washed their feet, and ate and drank.

Gibeah's Crime

22 [1]As they were [a]enjoying themselves, suddenly [b]certain men of the city, [c]perverted* men, surrounded the house *and* beat on the door. They spoke to the master of the house, the old man, saying, [d]"Bring out the man who came to your house, that we may know him *carnally!*"

23 But [a]the man, the master of the house, went out to them and said to them, "No, my brethren! I beg you, do not act *so* wickedly! Seeing this man has come into my house, [b]do not commit this outrage. 24 [a]Look, *here is* my virgin daughter and **the man's* concubine; let me bring them out now. [b]Humble them, and do with them as you please; but to this man do not do such a vile thing!" 25 But the men would not heed him. So the man took his concubine and

brought *her* out to them. And they [a]knew her and abused her all night until morning; and when the day began to break, they let her go.

[26]Then the woman came as the day was dawning, and fell down at the door of the man's house where her master *was,* till it was light.

[27]When her master arose in the morning, and opened the doors of the house and went out to go his way, there was his concubine, fallen *at* the door of the house with her hands on the threshold. [28]And he said to her, "Get up and let us be going." But [a]there was no answer. So the man lifted her onto the donkey; and the man got up and went to his place.

[29]When he entered his house he took a knife, laid hold of his concubine, and [a]divided her into twelve pieces, [*]limb by limb, and sent her

throughout all the territory of Israel. 30And so it was that all who saw it said, “No such deed has been done or seen from the day that the children of Israel came up from the land of Egypt until this day. Consider it, [a]confer, and speak up!”

Judges 20

Israel’s War with the Benjamites

1So [a]all the children of Israel came out, from [b]Dan to [c]Beersheba, as well as from the land of Gilead, and the congregation gathered together as one man before the LORD [d]at Mizpah. 2And the leaders of all the people, all the tribes of Israel, presented themselves in the assembly of the people of God, four hundred thousand foot soldiers [a]who drew the sword. 3(Now the children of Benjamin heard that the children of Israel had gone up to Mizpah.)

Then the children of Israel said, “Tell *us,* how did this wicked deed happen?”

4So the Levite, the husband of the woman who was murdered, answered and said, “My concubine and [a]I went into Gibeah, which belongs to Benjamin, to spend the night. 5[a]And the men of Gibeah rose against me, and surrounded the house at night because of me. They intended to kill me, [b]but instead they ravished my concubine so that she died. 6So [a]I took hold of my concubine, cut her in pieces, and sent her throughout all the territory of the inheritance of Israel, because they [b]committed lewdness and outrage in Israel. 7Look! All of you *are* children of Israel; [a]give your advice and counsel here and now!”

8So all the people arose as one man,

saying, “None *of us* will go to his tent, nor will any turn back to his house; 9but now this *is* the thing which we will do to Gibeah: *We will go up* [a]against it by lot. 10We will take ten men out of *every* hundred throughout all the tribes of Israel, a hundred out of *every* thousand, and a thousand out of *every* ten thousand, to make provisions for the people, that when they come to Gibeah in Benjamin, they may repay all the vileness that they have done in Israel.” 11So all the men of Israel were gathered against the city, united together as one man.

12[a]Then the tribes of Israel sent men through all the tribe of Benjamin, saying, “What *is* this wickedness that has occurred among you? 13Now therefore, deliver up the men, [a]the *perverted men who *are* in Gibeah, that we may put them to death and [b]remove the evil from Israel!” But the children of Benjamin would not listen to the voice of their brethren, the children of Israel. [14]Instead, the children of Benjamin gathered together from their cities to Gibeah, to go to battle against the children of Israel. [15]And from their cities at that time [a]the children of Benjamin numbered twenty-six thousand men who drew the sword, besides the inhabitants of Gibeah, who numbered seven hundred select men. [16]Among all this people *were* seven hundred select men *who were* [a]left-handed; every one could sling a stone at a hair’s *breadth* and not miss. [17]Now besides Benjamin, the men of Israel numbered four hundred thousand men who drew the

sword; all of these
were men of war.

18Then the
children of Israel
arose and [a]went up to
[*]the house of God to
[b]inquire of God. They
said, “Which of us
shall go up first to
battle against the
children of
Benjamin?”

The LORD said,
[c]“Judah first!”

19So the children
of Israel rose in the
morning and
encamped against
Gibeah. 20And the
men of Israel went
out to battle against
Benjamin, and the
men of Israel put
themselves in battle
array to fight against
them at Gibeah.
21Then [a]the children
of Benjamin came
out of Gibeah, and
on that day cut down
to the ground
twenty-two thousand
men of the Israelites.
22And the people,
that is, the men of
Israel, encouraged
themselves and again
formed the battle
line at the place
where they had put

themselves in array on the first day. 23[a]Then the children of Israel went up and wept before the LORD until evening, and asked counsel of the LORD, saying, “Shall I again draw near for battle against the children of my brother Benjamin?”

And the LORD said, “Go up against him.”

24So the children of Israel approached the children of Benjamin on the second day. 25And [a]Benjamin went out against them from Gibeah on the second day, and cut down to the ground eighteen thousand more of the children of Israel; all these drew the sword.

26Then all the children of Israel, that is, all the people, [a]went up and came to *the house of God and wept. They sat there before the LORD and fasted that day until evening; and they offered burnt offerings and peace offerings before the LORD. 27So the children of Israel inquired of the LORD ([a]the ark of the covenant of God *was* there in those days, 28[a]and Phinehas the son of Eleazar, the son of Aaron, [b]stood before it in those days), saying, “Shall I yet again go out to battle against the children of my brother Benjamin, or shall I cease?”

And the LORD said, “Go up, for tomorrow I will deliver them into your hand.”

29Then Israel [a]set men in ambush all around Gibeah. 30And the children of Israel went up against the children of Benjamin on the third day, and put themselves in battle array against Gibeah as at the other times. 31So the children of Benjamin went out against the people, *and* were drawn away from the city. They began to strike down *and* kill some of the people, as at the other times, in the highways [a](one of which goes up to Bethel and the other to Gibeah) and in the field, about thirty men of Israel. 32And the children of Benjamin said, “They *are* defeated before us, as at first.”

But the children of Israel said, “Let us flee and draw them away from the city to the highways.” 33So all the men of Israel rose from their place and put themselves in battle array at Baal Tamar. Then Israel’s men in ambush burst forth from their position in the plain of Geba. 34And ten thousand select men from all Israel came against Gibeah, and the battle was fierce. [a]But *[*]the Benjamites* did not know that disaster *was* upon them. 35The LORD [*]defeated Benjamin before Israel. And the children of Israel destroyed that day twenty-five thousand one hundred Benjamites; all these drew the sword.

36So the children of Benjamin saw that they were defeated. [a]The men of Israel had given ground to the Benjamites, because they relied on the men in ambush whom they had set against Gibeah. 37[a]And the men in ambush quickly rushed upon Gibeah; the men in ambush spread out and struck the whole city with the edge of the sword. 38Now the appointed signal between the men of Israel and the men in ambush was that they would make a great cloud of [a]smoke rise up from the city, 39whereupon the men of Israel would turn in battle. Now Benjamin had begun [*]to strike *and* kill about thirty of the men of Israel. For they said, “Surely they are defeated before us, as *in* the first battle.” 40But when the cloud began to rise from the city in a column of smoke, the Benjamites [a]looked behind them, and there was the whole city going up *in smoke* to heaven. 41And when the men of Israel turned back, the men of Benjamin panicked, for they saw that disaster had come upon them. 42Therefore they [*]turned *their backs* before the men of Israel in the direction of the wilderness; but the battle overtook them, and whoever *came* out of the cities they destroyed in their midst. 43They surrounded the Benjamites, chased them, *and* easily trampled them down as far as the front of Gibeah toward the east. 44And eighteen thousand men of Benjamin fell; all these *were* men of valor. 45[*]Then they turned and fled toward the wilderness to the rock of [a]Rimmon; and they cut down five thousand of them on the highways. Then they pursued them relentlessly up to Gidom, and killed two thousand of them. 46So all who fell of Benjamin that day were twenty-five thousand men who drew the sword; all these *were* [*]men of valor.

47[a]But six hundred men turned and fled toward the wilderness to the rock of Rimmon, and they stayed at the rock of Rimmon for four months. 48And the men of Israel turned back against the children of Benjamin, and struck them down with the edge of the sword—from *every* city, men and beasts, all who were found. They also set fire to all the cities they came to.

Judges 21

Wives Provided for the Benjamites

1Now [a]the men of Israel had sworn an oath at Mizpah, saying, “None of us shall give his daughter to Benjamin as a wife.” 2Then the people came [a]to [*]the house of God, and remained there before God till evening. They lifted up their voices and wept bitterly, 3and said, “O LORD God of Israel, why has this come to pass in Israel, that today there should be one tribe *missing* in Israel?”

4So it was, on the next morning, that the people rose early and [a]built an altar there, and offered burnt offerings and peace offerings. 5The children of Israel said, “Who *is there* among all the tribes of Israel who did not come up with the assembly to the LORD?” [a]For they had made a great oath concerning anyone who had not come up to the LORD at Mizpah, saying, “He shall surely be put to death.” 6And the children of Israel grieved for Benjamin their brother, and said, “One tribe is cut off from Israel today. 7What shall we do for wives for those who remain, seeing we have sworn by the LORD that we will not give them our daughters as wives?”

8And they said, “What one *is there* from the tribes of Israel who did not come up to Mizpah to the LORD?” And, in fact, no one had come to the camp from [a]Jabesh Gilead to the assembly. 9For when the people were counted, indeed, not one of the inhabitants of Jabesh Gilead *was* there. 10So the congregation sent out there twelve thousand of their most valiant men, and commanded them, saying, [a]“Go and strike the inhabitants of Jabesh Gilead with the edge of the sword, including the women and children. 11And this *is* the thing that you shall do: [a]You shall utterly destroy every male, and every woman who has known a man intimately.” 12So they found among the inhabitants of Jabesh Gilead four hundred young virgins who had not known a man intimately; and they brought them to the camp at [a]Shiloh, which is in the land of Canaan.

13Then the whole congregation sent *word* to the children of Benjamin [a]who *were* at the rock of Rimmon, and announced peace to them. 14So Benjamin came back at that time, and they gave them the women whom they had saved alive of the women of Jabesh Gilead; and yet they had not found enough for them.

15And the people [a]grieved for Benjamin, because the LORD had made a void in the tribes of Israel.

16Then the elders of the congregation

said, “What shall we do for wives for those who remain, since the women of Benjamin have been destroyed?” 17And they said, “*There must be* an inheritance for the survivors of Benjamin, that a tribe may not be destroyed from Israel. 18However, we cannot give them wives from our daughters, [a]for the children of Israel have sworn an oath, saying, ‘Cursed *be* the one who gives a wife to Benjamin.’ ”
19Then they said, “In fact, *there is* a yearly [a]feast of the LORD in [b]Shiloh, which *is* north of Bethel, on the east side of the [c]highway that goes up from Bethel to Shechem, and south of Lebonah.”

20Therefore they instructed the children of Benjamin, saying, “Go, lie in wait in the vineyards, 21and watch; and just when the daughters of

Shiloh come out [a]to perform their dances, then come out from the vineyards, and every man catch a wife for himself from the daughters of Shiloh; then go to the land of Benjamin. [22]Then it shall be, when their fathers or their brothers come to us to complain, that we will say to them, ‘Be kind to them for our sakes, because we did not take a wife for any of them in the war; for *it is* not *as though* you have given the *women* to them at this time, making yourselves guilty of your oath.’ ”

[23]And the children of Benjamin did so; they took enough wives for their number from those who danced, whom they caught. Then they went and returned to their inheritance, and they [a]rebuilt the cities and dwelt in them. [24]So the children of Israel departed from there at that time, every

man to his tribe and family; they went out from there, every man to his inheritance.

25[a]In those days *there was* no king in Israel; [b]everyone did *what was* right in his own eyes.

Judges 1

[1:1]
a.
Josh.
24:29

[1:1]
b.
Num.
27:21;
Judg.
20:18

[1:1]
c.
Josh.
17:12,
13

[1:2]
a.
Gen.

49:8,
9;
Rev.
5:5

[1:3]
a.
Josh.
19:1

[1:3]
b.
Judg.
1:17

[1:4]
a. 1
Sam.
11:8

[1:7]
a.
Lev.
24:19;
1
Sam.
15:33;
(James
2:13)

[1:8]
a.

Josh. 15:63; Judg. 1:21

[1:9] a. Josh. 10:36; 11:21; 15:13

[1:9] * Heb. *Negev,* and so throughout the book

[1:10] a. Josh. 15:13–19

[1:10] b. Josh. 14:15

1

[1:10]
*
attacked

[1:11]
a.
Josh.
15:15

[1:12]
a.
Josh.
15:16,
17

[1:13]
a.
Judg.
3:9

[1:14]
a.
Josh.
15:18,
19

[1:14]
*
LXX,
Vg.
he
urged
her

[1:15]
a.
Gen.
33:11

[1:16] a. Num. 10:29–32; Judg. 4:11, 17; 1 Sam. 15:6; 1 Chr. 2:55

[1:16] b. Deut. 34:3; Judg. 3:13

[1:16] c. Josh. 12:14

[1:16] d. 1 Sam. 15:6

[1:17] a. Judg. 1:3

[1:17] b. Num. 21:3; Josh.

19:4

[1:18] a. Josh. 11:22

[1:19] a. Josh. 17:16, 18; Judg. 4:3, 13

[1:20] a. Num. 14:24; Josh. 14:9, 14

[1:20] b. Josh. 15:14; Judg. 1:10

[1:20] * *drove out from there*

[1:21] a. Josh.

15:63;
Judg.
1:8

[1:22]
a.
Judg.
1:19

[1:22]
*
family

[1:23]
a.
Josh.
2:1;
7:2

[1:23]
b.
Gen.
28:19

[1:23]
*
family

[1:24]
a.
Josh.
2:12,
14

[1:27]
a.
Josh.
17:11–
13

[1:27]

b.
Josh.
21:25

[1:27]
c.
Josh.
17:11

[1:28]
* *to forced labor*

[1:29]
a.
Josh.
16:10;
1
Kin.
9:16

[1:30]
a.
Josh.
19:10–16

[1:30]
*
became forced laborers

[1:31]
a.
Josh.
19:24–31

[1:32]

a. Ps.
106:34,
35

[1:33]
a.
Josh.
19:32–
39

[1:35]
a.
Josh.
19:42

[1:35]
*
Shaalabbin,
Josh.
19:42

[1:35]
*
became
forced
laborers

[1:36]
a.
Num.
34:4;
Josh.
15:3

Judges 2

[2:1]
a.
Ex.
20:2;
Judg.

6:8,
91

[2:1]
b.
Deut.
1:8

[2:1]
c.
Gen.
17:7,
8;
Lev.
26:42,
44;
Deut.
7:9;
Ps.
89:34

[2:2]
a.
Ex.
23:32;
Deut.
7:2

[2:2]
b.
Ex.
34:12,
13;
Deut.
12:3

[2:2]
c. Ps.
106:34

[2:2]

*
treaty

[2:3] a. Num. 33:55; Josh. 23:13

[2:3] b. Judg. 3:6

[2:3] c. Ex. 23:33; Deut. 7:16; Ps. 106:36

[2:3] * LXX, Tg., Vg. *enemies to you*

[2:3] * *entrap you*

[2:5] * Lit. *Weeping*

[2:6]
a.
Josh.
22:6;
24:28–
31

[2:7]
a.
Josh.
24:31

[2:8]
a.
Josh.
24:29

[2:9]
a.
Josh.
24:30

[2:9]
b.
Josh.
19:49,
50

[2:10]
a.
Ex.
5:2;
1
Sam.
2:12;
Gal.
4:8;
(Titus
1:16)

[2:10]

* Died and joined their ancestors

[2:11] a. Judg. 3:7, 12; 4:1; 6:1

[2:12] a. Deut. 31:16; Judg. 8:33; 10:6

[2:12] b. Deut. 6:14

[2:12] c. Ex. 20:5

[2:13] a. Judg. 10:6; Ps. 106:36

[2:13]

* A Canaanite god1font>

[2:13] * Canaanite goddesses

[2:14] a. Deut. 31:17; Judg. 3:8; Ps. 106:40–42

[2:14] b. 2 Kin. 17:20

[2:14] c. Is. 50:1

[2:14] d. Lev. 26:37; Josh. 7:12, 13

[2:15] a. Lev. 26:14–26;

Deut.
28:15–
68

[2:16]
a.
Judg.
3:9,
10,
15;
Ps.
106:43–
45

[2:17]
a.
Ex.
34:15

[2:18]
a.
Josh.
1:5

[2:18]
b.
Gen.
6:6

[2:19]
a.
Judg.
3:12

[2:20]
a.
(Josh.
23:16)

[2:21]
a.

Josh.
23:4,
5, 13

[2:22]
a.
Judg.
3:1,
4

[2:22]
b.
Deut.
8:2,
16;
13:3

Judges 3

[3:1]
a.
Judg.
1:1;
2:21,
22

[3:1]
*
experienced

[3:3]
a.
Josh.
13:3

[3:4]
*
find
out

[3:5]

a. Ps. 106:35

[3:6] a. Ex. 34:15, 16; Deut. 7:3, 4; Josh. 23:12

[3:7] a. Judg. 2:11

[3:7] b. Deut. 32:18

[3:7] * Name or symbol for Canaanite goddesses

[3:8] a. Deut. 32:30; Judg. 2:14

[3:8]

b.
Hab.
3:7

[3:9]
a.
Judg.
3:15

[3:9]
b.
Judg.
2:16

[3:9]
c.
Judg.
1:13

[3:10]
a.
Num.
27:18;
1
Sam.
11:6;
2
Chr.
15:1

[3:12]
a.
Judg.
2:19

[3:12]
b. 1
Sam.
12:9

[3:13]

a. Judg. 5:14

[3:13] b. Deut. 34:3; Judg. 1:16; 2 Chr. 28:15

[3:13] * *struck*

[3:14] a. Deut. 28:48

[3:15] a. Ps. 78:34

[3:15] b. Judg. 20:16

[3:19] a. Josh. 4:20

[3:19] * Tg. *quarries*

[3:22]
*
handle

[3:24]
a. 1
Sam.
24:3

[3:24]
* Lit.
his

[3:24]
* Lit.
covering
his
feet

[3:25]
a. 2
Kin.
2:17;
8:11

[3:26]
* Tg.
quarries

[3:27]
a.
Judg.
6:34;
1
Sam.
13:3

[3:27]
b.
Josh.
17:15

[3:27] * Lit. *he went before them*

[3:28] a. Judg. 7:9, 15; 1 Sam. 17:47

[3:28] b. Josh. 2:7; Judg. 12:5

[3:30] a. Judg. 3:11

[3:31] a. Judg. 5:6

[3:31] b. 1 Sam. 17:47

[3:31] c. Judg. 2:16

[3:31]
d. 1
Sam.
4:1

Judges 4

[4:1]
a.
Judg.
2:19

[4:1]
b.
Judg.
2:11

[4:2]
a.
Judg.
2:14

[4:2]
b.
Josh.
11:1,
10

[4:2]
c. 1
Sam.
12:9;
Ps.
83:9

[4:2]
d.
Judg.
4:13,
16

[4:3]
a.
Deut.
20:1;
Judg.
1:19

[4:3]
b.
Ps.
106:42

[4:5]
a.
Gen.
35:8

[4:6]
a.
Heb.
11:32

[4:6]
b.
Josh.
19:37;
21:32

[4:6]
c.
Judg.
8:18

[4:6]
*
march

[4:7]
a.
Ex.
14:4

[4:7]
b.
Judg.
5:21;
1
Kin.
18:40;
Ps.
83:9,
10

[4:7]
* Lit.
draw

[4:9]
a.
Judg.
2:14

[4:10]
a.
Judg.
5:18

[4:10]
b.
Ex.
11:8;
1
Kin.
20:10

[4:10]
* Lit.
at his
feet

[4:11]
a.
Judg.

1:16

[4:11] b. Num. 10:29

[4:11] c. Judg. 4:6

[4:14] a. Deut. 9:3; 31:3; 2 Sam. 5:24; Ps. 68:7; Is. 52:12

[4:14] * *Arise!*

[4:16] a. Ex. 14:28; Ps. 83:9

[4:17] a. Judg. 5:6

[4:18]
* *rug*

[4:19]
a.
Judg.
5:24–
27

[4:21]
a.
Judg.
5:24–
27

Judges 5

[5:1]
a.
Ex.
15:1;
Judg.
4:4

[5:2]
a. Ps.
18:47

[5:2]
b. 2
Chr.
17:16

[5:2]
* Or
*When
locks
are
loosed*

[5:2]

*
volunteer

[5:3]
a.
Deut.
32:1,
3

[5:3]
b.
Ps.
27:6

[5:4]
a.
Deut.
33:2;
Ps.
68:7

[5:4]
b.
Ps.
68:8

[5:5]
a. Ps.
97:5

[5:5]
b.
Ex.
19:18

[5:5]
*
flowed

[5:6]
a.

Judg. 3:31

[5:6] b. Judg. 4:17

[5:6] c. Is. 33:8

[5:8] a. Deut. 32:17

[5:10] a. Judg. 10:4; 12:14

[5:12] a. Ps. 57:8

[5:14] a. Judg. 3:13

[5:15] * So with LXX, Syr., Tg., Vg.; MT *And* *my princes in Issachar*

[5:15] * Lit. *at his feet*

[5:17] a. Josh. 22:9

[5:17] b. Josh. 19:29, 31

[5:17] * Or *at ease*

[5:18] a. Judg. 4:6, 10

[5:19] a. Judg. 1:27

[5:21] a. Judg. 4:7

[5:23] * Or *Angel*

[5:24] a. (Luke 1:28)

[5:27] a. Judg. 4:18–21

[5:29] * *princesses*

[5:29] * Lit. *repeats her words to herself*

[5:31] a. Ps. 92:9

[5:31] b. 2 Sam. 23:4

[5:31] c. Ps. 37:6; 89:36, 37

[5:31] d. Ps. 19:5

Judges 6

[6:1] a. Judg. 2:11

[6:1] b. Num. 22:4; 31:1–3

[6:2] a. 1 Sam. 13:6; Heb. 11:38

[6:3] a. Judg. 7:12

[6:4] a. Lev. 26:16

[6:4] b. Deut. 28:31

[6:5]
*
innumerable

[6:6]
a. Ps.
50:15;
Hos.
5:15

[6:8]
a.
Josh.
24:17

[6:8]
*
slavery

[6:9]
a. Ps.
44:2,
3

[6:10]
a. 2
Kin.
17:35,
37,
38;
Jer.
10:2

[6:10]
b.
Judg.
2:1,
2

[6:11]
a.

Josh.
17:2;
Judg.
6:15

[6:11]
b.
Judg.
7:1;
Heb.
11:32

[6:12]
a.
Judg.
13:3;
Luke
1:11,
28

[6:12]
b.
Josh.
1:5

[6:13]
a.
(Is.
59:1)

[6:13]
b.
Josh.
4:6,
21;
Ps.
44:1

[6:13]
c.
Deut.

31:17; 2 Chr. 15:2; Ps. 44:9–16

[6:13] * Heb. *adoni,* used of man

[6:14] a. 1 Sam. 12:11

[6:14] b. Josh. 1:9

[6:15] a. 1 Sam. 9:21

[6:15] * Heb. *Adonai,* used of God

[6:16] a.

Ex. 3:12; Josh. 1:5

[6:16] * Lit. *strike*

[6:17] a. Judg. 6:36, 37; 2 Kin. 20:8; Ps. 86:17; Is. 7:11; 38:7, 8

[6:18] a. Gen. 18:3, 5

[6:19] a. Gen. 18:6–8

[6:20] a. Judg. 13:19

[6:20]

b. 1 Kin. 18:33, 34

[6:21] a. Lev. 9:24

[6:22] a. Gen. 32:30; Ex. 33:20; Judg. 13:21, 22

[6:22] b. Gen. 16:13

[6:23] a. Dan. 10:19

[6:24] a. Judg. 8:32

[6:24] * Heb. *YHWH Shalom*

[6:25] a. Judg. 2:2

[6:25] b. Judg. 3:7

[6:25] c. Ex. 34:13; Deut. 7:5

[6:25]1 * Heb. *Asherah,* a Canaanite goddess

[6:26] * *stronghold*

[6:31] * *contend*

[6:32] a. Judg. 7:1; 1 Sam. 12:11; 2

Sam.
11:21

[6:32]
* Lit.
*Let
Baal
Plead*

[6:33]
a.
Judg.
6:3

[6:33]
b.
Josh.
17:16;
Hos.
1:5

[6:34]
a.
Judg.
3:10;
1
Chr.
12:18;
2
Chr.
24:20

[6:34]
b.
Num.
10:3;
Judg.
3:27

[6:35]
a.

Judg. 5:17; 7:23

[6:35] b. Judg. 4:6, 10; 5:18

[6:37] a. (Ex. 4:3–7)

[6:39] a. Gen. 18:32

Judges 7

[7:1] a. Judg. 6:32

[7:2] a. Deut. 8:17; Is. 10:13

[7:3] a. Deut. 20:8

[7:7]
a. 1
Sam.
14:6

[7:7]
*
home

[7:9]
a.
Gen.
46:2,
3;
Judg.
6:25

[7:11]
a.
Gen.
24:14;
1
Sam.
14:9,
10

[7:11]
* *you
shall
be
encouraged*

[7:12]
a.
Judg.
6:3,
33;
8:10

[7:12]
b.

Judg. 6:5

[7:12] * *innumerable*

[7:14] a. Judg. 6:14, 16

[7:21] a. Ex. 14:13, 14; 2 Chr. 20:17

[7:21] b. 2 Kin. 7:7

[7:22] a. Josh. 6:4, 16, 20

[7:22] b. Ps. 83:9; Is. 9:4

[7:22]

c. 1 Sam. 14:20; 2 Chr. 20:23

[7:22] d. 1 Kin. 4:12

[7:22] * Heb. *Beth Shittah*

[7:23] a. Judg. 6:35

[7:24] a. Judg. 3:27

[7:24] b. Judg. 3:28

[7:24] c. John 1:28

[7:25] a. Judg.

8:3

[7:25] b. Ps. 83:11; Is. 10:26

[7:25] c. Judg. 8:4

Judges 8

[8:1] a. Judg. 12:1; 2 Sam. 19:41

[8:2] a. Judg. 6:11

[8:2] * Few grapes left after the harvest

[8:2] * The

whole harvest

[8:3] a. Judg. 7:24, 25

[8:3] b. Prov. 15:1

[8:4] a. Judg. 7:25

[8:4] b. Judg. 7:6

[8:5] a. Gen. 33:17; Ps. 60:6

[8:6] a. 1 Kin. 20:11; Judg. 8:15

[8:6] b. 1 Sam.

25:11

[8:6]
* Lit.
Is the palm

[8:7]
a.
Judg.
8:16

[8:8]
a.
Gen.
32:30,
31; 1
Kin.
12:25

[8:9]
a. 1
Kin.
22:27

[8:9]
b.
Judg.
8:17

[8:10]
a.
Judg.
7:12

[8:10]
b.
Judg.
6:5

[8:11]

a.
Num.
32:35,
42

[8:11]
b.
Judg.
18:27;
(1
Thess.
5:3)

[8:11]
* Lit.
struck

[8:12]
a. Ps.
83:11

[8:15]
a.
Judg.
8:6

[8:16]
a.
Judg.
8:7

[8:16]
*
disciplined

[8:17]
a.
Judg.
8:9

[8:17]

b. 1 Kin. 12:25

[8:18] a. Judg. 4:6; Ps. 89:12

[8:21] a. Ps. 83:11

[8:22] a. (Judg. 9:8)

[8:22] b. Judg. 3:9; 9:17

[8:23] a. 1 Sam. 8:7; 10:19; 12:12; Ps. 10:16

[8:24] a. Gen. 37:25, 28

[8:24]
* Lit.
request
a
request

[8:27]
a.
Judg.
17:5

[8:27]
b.
Judg.
6:11,
24

[8:27]
c.
(Ps.
106:39)

[8:27]
d.
Deut.
7:16

[8:28]
a.
Judg.
5:31

[8:29]
a.
Judg.
6:32;
7:1

[8:30]
a.
Judg.

9:2,
5

[8:31]
a.
Judg.
9:1

[8:32]
a.
Gen.
25:8;
Job
5:26

[8:32]
b.
Judg.
6:24;
8:27

[8:33]
a.
Judg.
2:19

[8:33]
b.
Judg.
2:17

[8:33]
c.
Judg.
9:4,
46

[8:34]
a.
Deut.
4:9;

Judg. 3:7; Ps. 78:11, 42; 106:13, 21

[8:35] a. Judg. 9:16–18

Judges 9

[9:1] a. Judg. 8:31, 35

[9:2] a. Judg. 8:30; 9:5, 18

[9:2] b. Gen. 29:14

[9:3] a. Gen. 29:15

[9:4] a.

Judg. 8:33

[9:4] b. Judg.1 11:3; 2 Chr. 13:7; Acts 17:5

[9:5] a. Judg. 6:24

[9:5] b. Judg. 8:30; 9:2, 18; 2 Kin. 11:1, 2

[9:7] a. Deut. 11:29; 27:12; Josh. 8:33; John 4:20

[9:8] a. 2 Kin.

14:9

[9:8]
b.
Judg.
8:22,
23

[9:9]
a.
(John
5:23)

[9:13]
a. Ps.
104:15

[9:15]
a. Is.
30:2;
Dan.
4:12;
Hos.
14:7

[9:15]
b.
Num.
21:28;
Judg.
9:20;
Ezek.
19:14

[9:15]
c. 2
Kin.
14:9;
Is.
2:13;
Ezek.

31:3

[9:16]
a.
Judg.
8:35

[9:16]
* Lit.
*according
to the
doing
of his
hands*

[9:17]
a.
Judg.
7

[9:17]
b.
Judg.
8:22

[9:18]
a.
Judg.
8:30,
35;
9:2,
5, 6

[9:18]
b.
Judg.
8:31

[9:19]
a. Is.
8:6;

(Phil. 3:3)

[9:20] a. Judg. 9:15, 45, 56, 57

[9:21] a. Num. 21:16

[9:23] a. 1 Kin. 12:15; Is. 19:14

[9:23] b. 1 Sam. 16:14; 18:9, 10; 1 Kin. 22:22; 2 Chr. 18:22

[9:23] c. Is. 33:1

[9:24] a. 1

Kin. 2:32; Esth. 9:25; Matt. 23:35, 36

[9:24] b. Num. 35:33

[9:25] * Lit. *liers-in-wait for*

[9:27] a. Judg. 9:4

[9:27] * *rejoiced*

[9:28] a. 1 Sam. 25:10; 1 Kin. 12:16

[9:28] b. Gen. 34:2,

6; Josh. 24:32

[9:29] a. 2 Sam. 15:4

[9:29] * Lit. *hand*

[9:29] * So with MT, Tg.; DSS *they;* LXX *I*

[9:32] * Set up an ambush

[9:33] * Lit. *as your hand can find*

[9:34] * Set up an

ambush

[9:37]
*
Heb.
Meonenim

[9:38]
a.
Judg.
9:28,
29

[9:41]
*
exiled

[9:43]
* Lit.
struck

[9:45]
a.
Judg.
9:20

[9:45]
b.
Deut.
29:23;
2
Kin.
3:25

[9:46]
a.
Judg.
8:33

[9:46]
*

fortified room

[9:48] a. Ps. 68:14

[9:49] * *fortified room*

[9:50] * *besieged*

[9:53] a. 2 Sam. 11:21

[9:54] a. 1 Sam. 31:4

[9:55] * *home*

[9:56] a. Judg. 9:24; Job 31:3; Prov. 5:22

[9:57] a.

Judg. 9:20

Judges 10

[10:1] a. Judg. 2:16

[10:4] a. Judg. 5:10; 12:14

[10:4] b. Deut. 3:14

[10:4] * Lit. *Towns of Jair,* Num. 32:41; Deut. 3:14

[10:6] a. Judg. 2:11; 3:7; 6:1; 13:1

[10:6] b.

Judg.
2:13

[10:6]
c.
Judg.
2:12

[10:6]
d. 1
Kin.
11:33;
Ps.
106:36

[10:7]
a.
Judg.
2:14;
4:2;
1
Sam.
12:9

[10:7]
b.
Judg.
13:1

[10:7]
c.
Judg.
3:13

[10:8]
a.
Num.
32:33

[10:8]
* Lit.

shattered

[10:10]
a.
Judg.
6:6;
1
Sam.
12:10

[10:10]
b.
Deut.
1:41

[10:11]
a.
Ex.
14:30

[10:11]
b.
Num.
21:21,
24,
25

[10:11]
c.
Judg.
3:12,
13

[10:11]
d.
Judg.
3:31

[10:12]
a.
Judg.

1:31;
5:19

[10:12]
b.
Judg.
6:3;
7:12

[10:12]
c. Ps.
106:42,
43

[10:12]
*
LXX
mss.
Midianites

[10:13]
a.
(Deut.
32:15;
Judg.
2:12;
Jer.
2:13)

[10:14]
a.
Deut.
32:37,
38

[10:15]
a. 1
Sam.
3:18;
2
Sam.

15:26

[10:16] a. 2 Chr. 7:14; Jer. 18:7, 8

[10:16] b. Ps. 106:44, 45; Is. 63:9

[10:17] a. Gen. 31:49; Judg. 11:11, 29

[10:18] a. Judg. 11:8, 11

Judges 11

[11:1] a. Heb. 11:32

[11:1] b.

Judg. 6:12; 2 Kin. 5:1

[11:2] a. Gen. 21:10; Deut. 23:2

[11:3] a. 2 Sam. 10:6, 8

[11:3] b. 1 Sam. 22:2

[11:4] a. Judg. 10:9, 17

[11:7] a. Gen. 26:27

[11:7] * *trouble*

[11:8] a.

Judg. 10:18

[11:8] b. (Luke 17:4)

[11:8] c. Judg. 10:18

[11:8] * *returned*

[11:10] a. Gen. 31:49, 50; Jer. 29:23; 42:5

[11:11] a. Judg. 11:8

[11:11] b. Judg. 10:17; 20:1; 1 Sam. 10:17

[11:12]

a. 2 Sam. 16:10

[11:13] a. Num. 21:24–26

[11:13] b. Josh. 13:9

[11:13] c. Gen. 32:22

[11:15] a. Deut. 2:9, 19

[11:16] a. Num. 13:26; 20:1

[11:17] a. Num. 20:14

[11:17] b. Num. 20:14–

21

[11:17]
c.
Josh.
24:9

[11:17]
d.
Num.
20:1

[11:18]
a.
Deut.
2:9,
18,
19

[11:18]
b.
Num.
21:4

[11:19]
a.
Num.
21:21;
Deut.
2:26–
36

[11:19]
b.
Num.
21:22;
Deut.
2:27

[11:20]
a.

Num. 21:23; Deut. 2:27

[11:21] a. Josh. 24:8

[11:21] b. Num. 21:24, 25

[11:21] * Lit. *struck*

[11:22] a. Deut. 2:36, 37

[11:23] * *driven out*

[11:24] a. Num. 21:29; 1 Kin. 11:7; Jer. 48:7

[11:24] b. (Deut. 9:4, 5; Josh. 3:10)

[11:25] a. Num. 22:2; Josh. 24:9; Mic. 6:5

[11:26] a. Num. 21:25, 26

[11:26] b. Deut. 2:36

[11:27] a. Gen. 18:25

[11:27] b. Gen. 16:5; 31:53; (1 Sam. 24:12,

15)

[11:29]
a.
Judg.
3:10

[11:30]
a.
Gen.
28:20;
Num.
30:2;
1
Sam.
1:11

[11:31]
a.
Lev.
27:2,
3,
28; 1
Sam.
1:11

[11:31]
b.
Ps.
66:13

[11:33]
a.
Ezek.
27:17

[11:33]
* Lit.
struck

[11:33]

* Lit. *Plain of Vineyards*

[11:34] a. Judg. 10:17; 11:11

[11:34] b. Ex. 15:20; 1 Sam. 18:6; Ps. 68:25; Jer. 31:4

[11:35] a. Gen. 37:29, 34

[11:35] b. Eccl. 5:2, 4, 5

[11:35] c. Num. 30:2

[11:35]

* Lit. *opened my mouth*

[11:35] * Lit. *take it back*

[11:36] a. Num. 30:2

[11:36] b. 2 Sam. 18:19, 31

[11:37] * *lament*

[11:37] * *companions*

[11:39] a. Judg. 11:31

[11:39] * Remained a virgin

[11:40]
*
commemorate

Judges 12

[12:1]
a.
Judg.
8:1

[12:1]
*
were
summoned

[12:3]
a. 1
Sam.
19:5;
28:21;
Job
13:14

[12:4]
a. 1
Sam.
25:10

[12:5]
a.
Josh.
22:11

[12:6]
a. Ps.
69:2,
15

[12:6]
* Lit.

a flowing stream; used as a test of dialect

[12:6] * Lit. *speak so*

[12:14] a. Judg. 5:10; 10:4

[12:15] a. Judg. 3:13, 27; 5:14

Judges 13

[13:1] a. Judg. 2:11

[13:1] b. Judg. 10:7; 1 Sam. 12:9

[13:2] a. Josh. 19:41; Judg. 16:31

[13:3] a. Judg. 6:12

[13:4] a. Num. 6:2, 3, 20; Judg. 13:4; Luke 1:15

[13:5] a. Num. 6:5; 1 Sam. 1:11

[13:5] b. Num. 6:2

[13:5] c. 1 Sam. 7:13; 2

Sam.
8:1;
1
Chr.
18:1

[13:6]
a.
Gen.
32:24–
30

[13:6]
b.
Matt.
28:3;
Luke
9:29;
Acts
6:15

[13:6]
c.
Judg.
13:17,
18

[13:6]
*
appearance

[13:14]
a.
Num.
6:3,
4;
Judg.
13:4

[13:15]
a.

Gen. 18:5; Judg. 6:18

[13:18] a. Gen. 32:29

[13:19] a. Judg. 6:19–21

[13:20] a. Lev. 9:24; 1 Chr. 21:16; Ezek. 1:28; Matt. 17:6

[13:21] a. Judg. 6:22

[13:22] a. Gen. 32:30; Ex. 33:20; Deut. 5:26;

Judg. 6:22, 23

[13:24] a. Heb. 11:32

[13:24] b. 1 Sam. 3:19; Luke 1:80

[13:25] a. Judg. 3:10; 1 Sam. 11:6; 1Matt. 4:1

[13:25] b. Josh. 15:33; Judg. 18:11

[13:25] c. Judg. 16:31

[13:25] * Lit. *Camp*

of
Dan,
Judg.
18:12

Judges 14

[14:1]
a.
Gen.
38:13;
Josh.
15:10,
57

[14:1]
b.
Gen.
34:2

[14:2]
a.
Gen.
21:21

[14:3]
a.
Gen.
24:3,
4

[14:3]
b.
Gen.
34:14;
Ex.
34:16;
Deut.
7:3

[14:3]

* Lit. *she is right in my eyes*

[14:4] a. Josh. 11:20; 1 Kin. 12:15; 2 Kin. 6:33; 2 Chr. 10:15

[14:4] b. Deut. 28:48; Judg. 13:1

[14:6] a. Judg. 3:10

[14:9] a. Lev. 11:27

[14:12] a. 1 Kin. 10:1;

Ezek. 17:2

[14:12] b. Gen. 29:27

[14:12] c. Gen. 45:22; 2 Kin. 5:22

[14:13] a. Ezek. 17:2

[14:15] a. Judg. 16:5

[14:15] b. Judg. 15:6

[14:15] * So with MT, Tg., Vg.; LXX, Syr. *fourth*

[14:16]
a.
Judg.
16:15

[14:19]
a.
Judg.
3:10;
13:25

[14:20]
a.
Judg.
15:2

[14:20]
b.
John
3:29

Judges 15

[15:1]
a.
Gen.
38:17

[15:2]
a.
Judg.
14:20

[15:6]
a.
Judg.
14:15

[15:8]
a. 2
Chr.

11:6

[15:9]
a.
Judg.
15:19

[15:10]
* Lit.
bind

[15:11]
a.
Lev.
26:25;
Deut.
28:43;
Judg.
13:1;
14:4;
Ps.
106:40–
42

[15:13]
a.
Judg.
16:11,
12

[15:14]
a.
Judg.
3:10;
14:6

[15:14]
* Lit.
were
melted

[15:15]
a.
Lev.
26:8;
Josh.
23:10;
Judg.
3:31

[15:17]
* Lit.
*Jawbone
Height*

[15:18]
a. Ps.
3:7

[15:19]
a.
Gen.
45:27;
Is.
40:29

[15:19]
* Lit.
Jawbone,
Judg.
15:14

[15:19]
* Lit.
*Spring
of
the
Caller*

[15:20]
a.
Judg.

10:2;
12:7–
14

[15:20]
b.
Judg.
16:31

[15:20]
c.
Judg.
13:1

Judges 16

[16:1]
a.
Josh.
15:47

[16:2]
a. 1
Sam.
23:26;
Ps.
118:10–
12

[16:5]
a.
Josh.
13:3

[16:5]
b.
Judg.
14:15

[16:11]
a.

Judg. 15:13

[16:11] * Lit. *with which work has never been done*

[16:15] a. Judg. 14:16

[16:16] * Lit. *impatient to the point of*

[16:17] a. (Mic. 7:5)

[16:17] b. Num. 6:5; Judg. 13:5

[16:19] a. Prov. 7:26,

27

[16:19] * So with MT, Tg., Vg.; LXX *he began to be weak,*

[16:20] a. Num. 14:9, 42, 43; (Josh. 7:12); 1 Sam. 16:14; 18:12; 28:15, 16; 2 Chr. 15:2

[16:21] a. 2 Kin. 25:7

[16:21] * Lit. *bored out*

[16:23]
a. 1
Sam.
5:2

[16:24]
a.
Dan.
5:4

[16:25]
a.
Judg.
9:27

[16:27]
a.
Deut.
22:8

[16:28]
a.
Jer.
15:15

[16:31]
a.
Judg.
13:25

[16:31]
b.
Judg.
15:20

Judges 17

[17:1]
a.
Judg.
18:2

[17:2]
a.
Lev.
5:1

[17:2]
b.
Gen.
14:19

[17:3]
a.
Ex.
20:4,
23;
34:17;
Lev.
19:4

[17:4]
a. Is.
46:6

[17:5]
a.
Judg.
18:24

[17:5]
b.
Judg.
8:27;
18:14

[17:5]
c.
Gen.
31:19,
30;
Hos.
3:4

[17:5]
*
Heb.
teraphim

[17:6]
a.
Judg.
18:1;
19:1

[17:6]
b.
Deut.
12:8;
Judg.
21:25

[17:7]
a.
Josh.
19:15;
Judg.
19:1;
Ruth
1:1,
2;
Mic.
5:2;
Matt.
2:1,
5, 6

[17:7]
b.
Deut.
18:6

[17:10]
a.
Judg.

18:19

[17:10] b. Gen. 45:8; Job 29:16

[17:12] a. Judg. 17:5

[17:12] b. Judg. 18:30

[17:12] * Lit. *filled the hand of*

[17:13] a. Judg. 18:4

Judges 18

[18:1] a. Judg. 17:6; 19:1; 21:25

[18:1]

b. Josh. 19:40–48

[18:2] a. Judg. 13:25

[18:2] b. Num. 13:17; Josh. 2:1

[18:2] c. Judg. 17:1

[18:4] a. Judg. 17:10, 12

[18:5] a. 1 Kin. 22:5; (Is. 30:1); Hos. 4:12

[18:5] b. Judg. 1:1;

17:5; 18:14

[18:6] a. 1 Kin. 22:6

[18:6] * Lit. *The LORD is before the way in which you go*

[18:7] a. Josh. 19:47

[18:7] b. Judg. 18:27–29

[18:7] c. Judg. 10:12

[18:7] * So with MT,

Tg., Vg.; LXX *with Syria*

[18:8] a. Judg. 18:2

[18:9] a. Num. 13:30; Josh. 2:23, 24

[18:9] b. 1 Kin. 22:3

[18:10] a. Judg. 18:7, 27

[18:10] b. Deut. 8:9

[18:12] a. Josh. 15:60

[18:12]

b.
Judg.
13:25

[18:12]
* Lit.
Camp
of
Dan

[18:13]
a.
Judg.
18:2

[18:14]
a. 1
Sam.
14:28

[18:14]
b.
Judg.
17:5

[18:16]
a.
Judg.
18:11

[18:17]
a.
Judg.
18:2,
14

[18:17]
b.
Judg.
17:4,
5

[18:19]
a.
Job
21:5;
29:9;
40:4;
Mic.
7:16

[18:19]
b.
Judg.
17:10

[18:23]
a. 2
Kin.
6:28

[18:24]
a.
Gen.
31:30;
Judg.
17:5

[18:24]
*
idols

[18:25]
* Lit.
bitter
of
soul

[18:27]
a.
Josh.
19:47

[18:28] a. Judg. 18:7

[18:28] b. Num. 13:21; 2 Sam. 10:6

[18:29] a. Josh. 19:47

[18:29] b. Judg. 20:1; 1 Kin. 12:29, 30; 15:20

[18:30] a. 2 Kin. 15:29

[18:30] * LXX, Vg. *Moses*

[18:31] a.

Deut. 12:1–32; Josh. 18:1, 8; Judg. 19:18; 21:12

Judges 19

[19:1] a. Judg. 17:6; 18:1; 21:25

[19:1] b. Judg. 17:7; Ruth 1:1

[19:3] a. G1en. 34:3; 50:21

[19:3] * Lit. *to her heart*

[19:5] a. Gen.

18:5; Judg. 19:8; Ps. 104:15

[19:9] * Lit. *to your tent*

[19:10] a. Josh. 18:28; 1 Chr. 11:4, 5

[19:11] a. Josh. 15:8, 63; Judg. 1:21; 2 Sam. 5:6

[19:12] a. Josh. 18:28

[19:13] a. Josh. 18:25

[19:15]
a.
Matt.
25:43

[19:16]
a. Ps.
104:23

[19:18]
a.
Josh.
18:1;
Judg.
18:31;
20:18;
1
Sam.
1:3,
7

[19:20]
a.
Gen.
43:23;
Judg.
6:23;
1
Sam.
25:6

[19:20]
b.
Gen.
19:2

[19:21]
a.
Gen.
24:32;
43:24

[19:21] b. Gen. 18:4; John 13:5

[19:22] a. Judg. 16:25; 19:6, 9

[19:22] b. Gen. 19:4, 5; Judg. 20:5; Hos. 9:9; 10:9

[19:22] c. Deut. 13:13; 1 Sam. 2:12; 1 Kin. 21:10; (2 Cor. 6:15)

[19:22]

d. Gen. 19:5; (Rom. 1:26, 27)

[19:22] * Lit. *sons of Belial*

[19:23] a. Gen. 19:6, 7

[19:23] b. Gen. 34:7; Deut. 22:21; Judg. 20:6, 10; 2 Sam. 13:12

[19:24] a. Gen. 19:8

[19:24] b. Gen. 34:2; Deut.

21:14

[19:24] * Lit. *his*

[19:25] a. Gen. 4:1

[19:28] a. Judg. 20:5

[19:29] a. Judg. 20:6; 1 Sam. 11:7

[19:29] * Lit. *with her bones*

[19:30] a. Judg. 20:7; Prov. 13:10

Judges 20

[20:1] a.

Josh. 22:12; Judg. 20:11; 21:5

[20:1] b. Judg. 18:29; 1 Sam. 3:20; 2 Sam. 3:10; 24:2

[20:1] c. Josh. 19:2

[20:1] d. Judg. 10:17; 1 Sam. 7:5

[20:2] a. Judg. 8:10

[20:4] a. Judg. 19:15

[20:5]
a.
Judg.
19:22

[20:5]
b.
Judg.
19:25,
26

[20:6]
a.
Judg.
19:29

[20:6]
b.
Josh.
7:15

[20:7]
a.
Judg.
19:30

[20:9]
a.
Judg.
1:3

[20:12]
a.
Deut.
13:14;
Josh.
22:13,
16

[20:13]
a.

Deut.
13:13;
Judg.
19:22

[20:13]
b.
Deut.
17:12;
1
Cor.
5:13

[20:13]
* Lit.
sons
of
Belial

[20:15]
a.
Num.
1:36,
37;
2:23;
26:41

[20:16]
a.
Judg.
3:15;
1
Chr.
12:2

[20:18]
a.
Judg.
20:23,
26

[20:18]
b.
Num.
27:21

[20:18]
c.
Judg.
1:1,
2

[20:18]
* Or
Bethel

[20:21]
a.
(Gen.
49:27)

[20:23]
a.
Judg.
20:26,
27

[20:25]
a.
Judg.
20:21

[20:26]
a.
Judg.
20:18,
23;
21:2

[20:26]
* Or
Bethel

[20:27] a. Josh. 18:1; 1 Sam. 1:3; 3:3; 4:3, 4

[20:28] a. Num. 25:7, 13; Josh. 24:33

[20:28] b. Deut. 10:8; 18:5

[20:29] a. Josh. 8:4

[20:31] a. Judg. 21:19

[20:34] a. Josh. 8:14; Job 21:13;

Is.
47:11

[20:34]
* Lit.
they

[20:35]
* Lit.
struck

[20:36]
a.
Josh.
8:15

[20:37]
a.
Josh.
8:19

[20:38]
a.
Josh.
8:20

[20:39]
* Lit.
to
strike
the
slain
ones

[20:40]
a.
Josh.
8:20

[20:42]
* *fled*

[20:45] a. Josh. 15:32; 1 Chr. 6:77; Zech. 14:10

[20:45] * LXX *the rest*

[20:46] * *valiant warriors*

[20:47] a. Judg. 21:13

Judges 21

[21:1] a. Judg. 20:1

[21:2] a. Judg. 20:18, 26

[21:2] * Or

Bethel

[21:4] a. Deut. 12:5; 2 Sam. 24:25

[21:5] a. Judg. 20:1–3

[21:8] a. 1 Sam. 11:1; 31:11

[21:10] a. Num. 31:17; Judg. 5:23; 1 Sam. 11:7

[21:11] a. Num. 31:17; Deut. 20:13, 14

[21:12]

a.
Josh.
18:1;
Judg.
18:31

[21:13]
a.
Judg.
20:47

[21:15]
a.
Judg.
21:6

[21:18]
a.
Judg.
11:35;
21:1

[21:19]
a.
Lev.
23:2

[21:19]
b.
Deut.
12:5;
Josh.
18:1;
Judg.
18:31;
1
Sam.
1:3

[21:19]
c.

Judg. 20:31

[21:21] a. Ex. 15:20; Judg. 11:34; 1 Sam. 18:6

[21:23] a. Judg. 20:48

[21:25] a. Judg. 17:6; 18:1; 19:1

[21:25] b. Deut. 12:8; Judg. 17:6

The Holy Spirit's Work in

RUTH

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

As God’s Spirit moved through history, preparing for the coming Anointed One (*Messiah*), He inspired a Gentile woman, Ruth, to return with her Jewish mother-in-law, Naomi, from

Moab to Judah. Portraying a type of Christ (*Messiah*), God’s Spirit used Boaz as a kinsman-redeemer to marry Ruth, thus continuing the messianic line through Boaz and Ruth, Obed, and Jesse, the father of David.

In the love of a

Jew and Gentile — Boaz and Ruth — God reveals a type of the love that Christ has for His bride, the church. His Spirit carefully prepares the way for the coming Messiah, Jesus, who would be the kinsman-redeemer for humanity.

The words of the women of the town to Naomi become the wo1rds for the saints today in praise of Messiah, “Blessed be the LORD, who has not left you this day without a close relative [kinsman-redeemer]" (Ruth 4:14).

God's Spirit prepares the way for His coming Messiah.*

---

* *Holy Spirit Encounter Bible,* Introduction to Ruth, 253.

Ruth 1

Elimelech's Family Goes to Moab

1Now it came to pass, in the days when [a]the judges *ruled, that there was [b]a famine in the land. And a certain man of [c]Bethlehem, Judah, went to *dwell in the country of [d]Moab, he and his wife and his two sons. 2The name of the man *was* Elimelech, the name of his wife *was* Naomi, and the names of his two sons *were* Mahlon and Chilion—[a]Ephrathites of Bethlehem, Judah. And they went [b]to the country of Moab and remained there. 3Then Elimelech, Naomi's husband, died; and she was left, and her two sons. 4Now they took wives of the women of Moab: the name of the one *was* Orpah, and the name of the other Ruth. And they *dwelt there about ten years. 5Then both Mahlon and Chilion also died; so the woman survived her two sons and her husband.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Prepared by the Spirit

When we don’t know what to do, the Holy Spirit does. Just as Naomi was guided by God to return to her own land with her daughter-in-law Ruth and to seek out the help of her kinsman-redeemer, Boaz, so the Spirit guides believers today and prepares them to know how to engage in spiritual warfare. Before turning to human wisdom and advice in overcoming Satan's attack, seek the Spirit. When you need strength in the midst of weakness, seek the Spirit’s might. The Messiah — the anointed One in the Spirit — gives us the Spirit of counsel and might.

The Spirit also pr1epares us to know how to do spiritual warfare through wisdom that comes from God's perspective, not ours. Understanding applies God's Word daily. We acquire wisdom and understanding from the Word (Prov. 1–4) by asking the Holy Spirit to teach us His wisdom and understanding for using the sword of His Spirit to defeat Satan’s demonic strategies.*

Naomi Returns with Ruth

[6]Then she arose with her daughters-in-law that she might return from the country of Moab, for she had heard in the country of Moab that the LORD had [a]visited* His people by [b]giving them bread. [7]Therefore she went out from the place where she was, and her two daughters-in-law

---

* *Holy Spirit Encounter Bible*, Holy Spirit Enccounter Moments, Isaiah 11:2 and 11:3.

with her; and they went on the way to return to the land of Judah. 8And Naomi said to her two daughters-in-law, [a]“Go, return each to her mother’s house. [b]The LORD deal kindly with you, as you have dealt [c]with the dead and with me. 9The LORD grant that you may find [a]rest, each in the house of her husband.”

So she kissed them, and they lifted up their voices and wept. 10And they said to her, “Surely we will return with you to your people.”

11But Naomi said, “Turn back, my daughters; why will you go with me? *Are* there still sons in my womb, [a]that they may be your husbands? 12Turn back, my daughters, go—for I am too old to have a husband. If I should say I have hope, *if* I should have a husband tonight and should also bear sons, 13would you wait for them till they were grown? Would you restrain yourselves from having husbands? No, my daughters; for it grieves me very much for your sakes that [a]the hand of the LORD has gone out against me!”

14Then they lifted up their voices and wept again; and Orpah kissed her mother-in-law, but Ruth [a]clung to her.

15And she said, “Look, your sister-in-law has gone back to [a]her people and to her gods; [b]return after your sister-in-law.” 16But Ruth said:

[a]“Entreat[*] me not to leave you,

Or to turn back from following after you;

For
wherever
you
go,
I
will
go;

And
wherever
you
lodge,
I
will
lodge;

[b]Your
people
shall
be
my
people,

And
your
God,
my
God.

[17]Where
you
die,
I
will
die,

And
there
will
I
be

buried.

[a]The
LORD
do
so
to
me,
and
more
also,

If
anything
but
death
parts
you
and
me.”

18[a]When she saw that she *was determined to go with her, she stopped speaking to her.

19Now the two of them went until they came to Bethlehem. And it happened, when they had come to Bethlehem, that [a]all the city was excited because of them; and the women said, [b]“*Is* this Naomi?”

20But she said to them, “Do not call me *Naomi; call me

[*]Mara, for the Almighty has dealt very bitterly with me. [21]I went out full, [a]and the LORD has brought me home again empty. Why do you call me Naomi, since the LORD has testified against me, and [*]the Almighty has afflicted me?”

[22]So Naomi returned, and Ruth the Moabitess her daughter-in-law with her, who returned from the country of Moab. Now they came to Bethlehem [a]at the beginning of barley harvest.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

HE WILL NEVER LEAVE YOU

In Ruth 1:16–17 Ruth promises

Naomi
that
she
will
never
leave
her
but
will
follow
her
wherever
she
goes
—
even
though
that
meant
leaving
her
own
country
and
going
with
Naomi
into
an
uncertain
future.
Like
Ruth,
God
has
promised
that
He
will
never

leave or forsake His own (Josh. 1:5).

Not only does venturing for God involve separation from security, but it also brings a separation from the familiar. Most of us can handle change if our security base remains intact or if we are still in the midst of familiar faces and surroundings. But when we step into unfamiliar lion territory where all the security we were provided in the past is gone, our bravado wavers.

When God calls you out of

the
bus,
it
may
seem
like
a
great
idea
—at
first.
But
when
the
high
grasses
of
the
unknown
begin
to
rake
over
your
skin…
when
you
scan
the
horizon
for a
scraggly
tree
to
break
the
intensity
of
the
sun…

when
the
tepid
water
in
your
canteen
runs
low
and
you
are
parched
and
dry,
you
may
start
to
ask
yourself,
“Was
it
really
God
who
called
me,
or
did I
just
use
poor
judgment
when
I left
the
safety
of
the

familiar?”

Standing there in the middle of those danger-laden grasses, you have no idea how to forge a path to wherever it is God wants you to go. You may even begin to question the reliability of your Guide.

And
the
enemy
of
your
soul
—
Satan
himself
—
whispers
in
your
ear,
“Aha!
You
made
a
wrong
turn.
Now
you’re
mine.”

Our
Guide
has
promised
never
to
abandon
us.
He
may
be
out
of
view,
but
He is

always
there.
He
knows
where
and
when
you
will
reach
the
end
of
your
resources
and
often
plants
a
cache
of
supplies
to
meet
your
needs
at
the
exact
moment
you
reach
that
site
of
desperation.
He
will
watch
over

you with great care as you take those first uneasy steps in running to the roar.

With His supply at your disposal, you can attempt projects that are far beyond your resources or capabilities.[*]

---

[*] Joe Hurston,

Run to the Roar, 33–34, 37.

Ruth 2

Ruth Meets Boaz

1There was a [a]relative of Naomi's husband, a man of great w1ealth, of the family of [b]Elimelech. His name *was* [c]Boaz. 2So Ruth the Moabitess said to Naomi, "Please let me go to the [a]field, and glean heads of grain after *him* in whose sight I may find favor."

And she said to her, "Go, my daughter."

3Then she left, and went and gleaned in the field after the reapers. And she happened to come to the part of the field *belonging* to Boaz, who *was* of the family of Elimelech.

4Now behold, Boaz came from

[a]Bethlehem, and said to the reapers, [b]"The LORD *be* with you!"

And they answered him, "The LORD bless you!"

5Then Boaz said to his servant who was in charge of the reapers, "Whose young woman *is* this?"

6So the servant who was in charge of the reapers answered and said, "It *is* the young Moabite woman [a]who came back with Naomi from the country of Moab. 7And she said, 'Please let me glean and gather after the reapers among the sheaves.' So she came and has continued from morning until now, though she rested a little in the house."

8Then Boaz said to Ruth, "You will listen, my daughter, will you not? Do not go to glean in another field, nor go from here, but stay close by my young women. 9*Let* your eyes *be* on the field which they reap, and go after them. Have I not commanded the young men not to touch you? And when you are thirsty, go to the vessels and drink from what the young men have drawn."

10So she [a]fell on her face, bowed down to the ground, and said to him, "Why have I found [b]favor in your eyes, that you should take notice of me, since I *am* a foreigner?"

11And Boaz answered and said to her, "It has been fully reported to me, [a]all that you have done for your mother-in-law since the death of your husband, and *how* you have left your father and your mother and the land of your birth, and have come to a people whom you did not know before. 12[a]The LORD repay your work, and a full reward be given you by the LORD God of Israel, [b]under whose wings you have come for refuge.”

13Then she said, [a]“Let me find favor in your sight, my lord; for you have comforted me, and have spoken [*]kindly to your maidservant, [b]though I am not like one of your maidservants.”

Ruth 2:13

Let me find favor in Your sight, O Lord, for You have comforted me.

14Now Boaz said to her at mealtime, “Come here, and eat of the bread, and dip your piece of bread in the vinegar.” So she sat beside the reapers, and he passed parched *grain* to her; and she ate and [a]was satisfied, and kept some back. 15And when she rose up to [*]glean, Boaz commanded his young men, saying, “Let her glean even among the sheaves, and do not [*]reproach her. 16Also let *grain* from the bundles fall purposely for her; leave *it* that she may glean, and do not rebuke her.”

17So she gleaned in the field until evening, and beat out what she had gleaned, and it was about an ephah of [a]barley. 18Then she took *it* up and went into the city, and her mother-in-law saw what she had gleaned.

So she brought out and gave to her [a]what she had kept back after she had been satisfied.

19And her mother-in-law said to her, “Where have you gleaned today? And where did you work? Blessed be the one who [a]took notice of you.”

So she told her mother-in-law with whom she had worked, and said, “The man’s name with whom I worked today *is* Boaz.”

20Then Naomi said to her daughter-in-law, [a]“Blessed *be* he of the LORD, who [b]has not forsaken His kindness to the living and the dead!” And Naomi said to her, “This man *is* a relation of ours, [c]one of [*]our close relatives.”

21Ruth the Moabitess said, “He also said to me, ‘You shall stay close[1] by my young men until they have finished all my harvest.’ ”

22And Naomi said to Ruth her daughter-in-law, “*It is* good, my daughter, that you go out with his young women, and that people do not [*]meet you in any other field.” 23So she stayed close by the young women of Boaz, to glean until the end of barley harvest and wheat harvest; and she dwelt with her mother-in-law.

SHARPENING *your* SWORD

THE VICTORY IS ALREADY OURS

Read Ruth 2

Warfare battles are often won or lost before the first engagement. In the war rooms strategies are developed and decisions made that ultimately reveal the victor! So it is for all of us in the kingdom. Our war manual, the Holy Scriptures, reveals the record of a victory already determined and decided. In the incarnation, life, death, and resurrection of Jesus the Messiah, God struck the decisive blow and declared victory over Satan and his forces.

Though the victory is already ours, we remain in this present world, and it is our obligation to enforce the victory of Christ. Christ's coming was a paradigm shift in the ancient battle, a turning point in human history! The victory of Christ is clearly pictured in the Book of Ruth. The redemption of Christ for our sins—paid through the sacrifice of His own blood—is unveiled in the story of Boaz, who redeems the land of Naomi, marries Ruth, and redeems the whole family.

◆

The centerpiece of our human struggle with the sin, and our burden of captivity to the evil clutch of Satan, the enemy of God, can be seen in the fifth chapter of the Book of Revelation. There we see the history, mystery, and victory of humanity.

Read Revelation 5:1–4. Answer these questions:

- What

was in the hand of God as He sat on His throne in heaven?

____

- What was the angel proclaiming in a loud voice?

____

- Who had the power to tak1e the

scroll and break open the seven seals?

____

____

The scroll in the hand of God represents man’s failure from Adam until now. It is the record of Satan’s war against humanity and the purposes of God. It represents every sin, every way, every grave, every tear, every defeat, and every misery of the human race.

Read Ruth 2 and 3, and then answer these questions:

- How is Boaz a picture of Christ, who became a human so He might redeem us?

____

____

- How did Boaz pay the price of Naomi and Ruth?

____

____

- How did Christ pay the price of our redemption?

____

____

In

the Book of Ruth, Boaz is pictured as the kinsman-redeemer (a near relative) of Ruth, who is rich and willing to marry Ruth, thereby paying the debt of Naomi and redeeming the whole family. He is the picture of Christ, God’s own Son, who alone has the power to redeem our sins with His blood, willingly suffering to bring us back to freedom.

◆

Sharpening Point: If Christ has already paid the price of redemption

for the whole of humanity, how must we engage in spiritual warfare against Satan today?

Though the victory is already ours, we remain in this present world, and it is our obligation to enforce the victory of Christ. The church must rediscover spiritual warfare. We must open our biblical and spiritual armory and outfit the people of God to take the faith to the enemy. Our future inheritance is tied to spiritual warfare. If we overcome, we are sons and daughters of God and have a rich inheritance to claim now and in the future (Rev. 21:7).*

---

* Adapted from Ron Phillips, *Everyone's Guide to Demons and Spiritual Warfare*, 15–20.

Ruth 3

Ruth's Redemption Assured

1Then Naomi her mother-in-law said to

her, “My daughter, [a]shall I not seek [b]security[*] for you, that it may be well with you? 2Now Boaz, [a]whose young women you were with, *is he* not our relative? In fact, he is winnowing barley tonight at the threshing floor. 3Therefore wash yourself and [a]anoint yourself, put on your *best* garment and go down to the threshing floor; *but* do not make yourself known to the man until he has finished eating and drinking. 4Then it shall be, when he lies down, that you shall notice the place where he lies; and you shall go in, uncover his feet, and lie down; and he will tell you what you should do.”

5And she said to her, “All that you say to me I will do.”

6So she went down to the threshing floor and did according to all that her mother-in-law instructed her. 7And after Boaz had

eaten and drunk, and
[a]his heart was
cheerful, he went to
lie down at the end
of the heap of grain;
and she came softly,
uncovered his feet,
and lay down.

8Now it happened
at midnight that the
man was startled,
and turned himself;
and there, a woman
was lying at his feet.
9And he said, “Who
are you?”

So she answered,
“I *am* Ruth, your
maidservant. [a]Take[*]
your maidservant
under your wing, for
you are [b]a [*]close
relative.”

10Then he said,
[a]“Blessed *are* you of
the LORD, my
daughter! For you
have shown more
kindness at the end
than [b]at the
beginning, in that
you did not go af1ter
young men, whether
poor or rich. 11And
now, my daughter,
do not fear. I will do
for you all that you
request, for all the
people of my town
know that you *are* a

[a]virtuous woman.
12Now it is true that I *am* a [a]close relative; however, [b]there is a relative closer than I.
13Stay this night, and in the morning it shall be *that* if he will [a]perform the duty of a close relative for you—good; let him do it. But if he does not want to perform the duty for you, then I will perform the duty for you, [b]*as* the LORD lives! Lie down until morning."

14So she lay at his feet until morning, and she arose before one could recognize another. Then he said, [a]"Do not let it be known that the woman came to the threshing floor."
15Also he said, "Bring the [*]shawl that *is* on you and hold it." And when she held it, he measured six *ephahs* of barley, and laid *it* on her. Then [*]she went into the city.

16When she came to her mother-in-law, she said, [*]"*Is* that you, my daughter?"

Then she told her

all that the man had done for her. [17]And she said, “These six *ephahs* of barley he gave me; for he said to me, ‘Do not go empty-handed to your mother-in-law.’ ”

[18]Then she said, [a]“Sit still, my daughter, until you know how the matter will turn out; for the man will not rest until he has concluded the matter this day.”

LESSONS FROM GOD’S WARRIORS

PROFILE

RUTH

Learn That Submission Is the Key to Redemption

A major revelation in

the Book of Ruth is the power of *redemption.* The verb *redeem* means “to bu1y back and to protect.” God can redeem your lost time. Just as in the case of the ten years that Naomi spent in Moab while her land and fortune was lost in Bethlehem, God our Kinsman can redeem our lost time, reposition us for victory, and give us a plan of security for the future.

Ruth chose to go with her mother-in-law, Naomi, back to

Naomi’s homeland rather than staying in her own land. But she had to learn the power of submission to gain redemption for herself and Naomi. Naomi perceived that Ruth had to make a shift if their inheritance was to be secured.

On
the
night
after
Ruth
had
received
the
favor
of
Boaz
by
gleaning
in
his
field,
Naomi
told
Ruth:
“TONIGHT
is
our
NOW,
Ruth!
Get
cleaned
up,
look
good,
get
rid
of
that
widow’s
garment
that
you
have
worn
for a

year, get anointed, and go to where the celebration is. When you get there, wait until midnight, and then when Boaz is asleep, lie down and submit yourself to him. If you will do this, our future will be secured. Tonight is our future!” Can you imagine what must have been going on in Ruth’s mind? Naomi was telling her to lie down at the feet of a man. This was a true test of submission.

Ruth submitted to Naomi’s request and lay down at Boaz's feet when he fell asleep. This startled Boaz, and he awoke and said, "Who are you?" Knowing the Jewish tradition of a close relative serving as the kinsman-redeemer for a widow, she responded: "I am Ruth, your maidservant.

Take your maidservant under your wing, for you are a close relative” (Ruth 3:9).

In asking for Boaz to cover her, Ruth was declaring, “I need a redeemer. I am a widow, disgraced, with no inheritance. You can take my shame, my poverty, the bleakness of my future, and give me a new beginning.” Ruth was willing to be submissive to Naomi’s request and to make big changes to secure her future and that of her mother-in-law. As you already know, Boaz married her, and everyone received the best of the redeemed time. That is what happens when we are willing to embrace change and find our new place.

Visualize what this act of submission meant to Naomi. Her bitterness

has
let
go.
She
has a
smile
on
her
face
and
laughter
in
her
heart.
Her
life
has
been
“bought
back.”
Lost
time
has
been
redeemed.
Her
neighbors
said,
“A
son
has
been
born
to
Naomi!”
They
named
him
Obed,
the

father of Jesse, the father of King David (Ruth 4:17), of the lineage of the Messiah, Jesus Christ (Matt. 1:5). God had redeemed her.

God has a path for *your* redemption. Believe Him for the power to buy back lost years and move you into your future. You can conceive and birth your future if you will learn to be submissive to what He tells you to do![*]

---

[*] Chuck D. Pierce, *Redeeming the Time*, 169–174.

Ruth 4

Boaz Redeems Ruth

[1]Now Boaz went up to the gate and sat down there; and behold, [a]the close relative of whom Boaz had spoken came by. So Boaz said, “Come aside, [*]friend, sit down here.” So he came aside and sat down. [2]And he took ten men of [a]the elders of the city, and said, “Sit down here.” So they sat down. [3]Then he said to the close relative, “Naomi, who has come back from the country of Moab, sold the piece of land [a]which *belonged* to our brother Elimelech. [4]And I thought to [*]inform you, saying, [a]‘Buy *it* back [b]in the presence of the inhabitants and the elders of my people. If you will redeem *it,* redeem *it;* but if [*]you will not redeem *it, then* tell me, that I may know; [c]for *there is* no one but you to redeem *it,* and I *am* next after you.’ ”

And he said, "I will redeem *it.*"

5Then Boaz said, "On the day you buy the field from the hand of Naomi, you must also buy *it* from Ruth the Moabitess, the wife of the dead, [a]to [*]perpetuate the name of the dead through his inheritance."

6[a]And the close relative said, "I cannot redeem *it* for myself, lest I ruin my own inheritance. You redeem my right of redemption for yourself, for I cannot redeem *it.*"

7[a]Now this *was the custom* in former times in Israel concerning redeeming and exchanging, to confirm anything: one man took off his sandal and gave *it* to the other, and this *was* a confirmation in Israel.

8Therefore the close relative said to Boaz, "Buy *it* for yourself." So he took off his sandal. 9And Boaz said to the elders and all the people, “You *are* witnesses this day that I have bought all that was Elimelech’s, and all that *was* Chilion’s and Mahlon’s, from the hand of Naomi. 10Moreover, Ruth the Moabitess, the widow of Mahlon, I have acquired as my wife, to perpetuate the name of the dead through his inheritance, [a]that the name of the dead may not be cut off from among his brethren and from [*]his position at the gate. You *are* witnesses this [1]day.”

11And all the people who *were* at the gate, and the elders, said, “*We are* witnesses. [a]The LORD make the woman who is coming to your house like Rachel and Leah, the two who [b]built the house of Israel; and may you prosper in [c]Ephrathah and be famous in [d]Bethlehem. 12May your house be like the house of [a]Perez, [b]whom Tamar bore to Judah, because of [c]the offspring which the LORD will give you from this young woman."

Descendants of Boaz and Ruth

13So Boaz [a]took Ruth and she became his wife; and when he went in to her, [b]the LORD gave her conception, and she bore a son. 14Then [a]the women said to Naomi, "Blessed *be* the LORD, who has not left you this day without a [*]close relative; and may his name be famous in Israel! 15And may he be to you a restorer of life and a [*]nourisher of your old age; for your daughter-in-law, who loves you, who is [a]better to you than seven sons, has borne him." 16Then Naomi took the child and laid him on her bosom, and became a nurse to him. 17[a]Also the neighbor women gave him a name, saying, "There is a son born to Naomi." And they called his name Obed. He *is* the father of Jesse, the father of David.

Ruth 4:15

I declare, O Lord, that You are the restorer of my life and the nourisher of my old age.

18[a]Now this *is* the genealogy of Perez: [b]Perez begot Hezron; 19Hezron begot Ram, and Ram begot Amminadab; 20Amminadab begot [a][1]Nahshon, and Nahshon begot [b]Salmon;[*]21Salmon begot Boaz, and Boaz begot Obed; 22Obed begot Jesse, and Jesse begot [a]David.

Ruth 1

[1:1] a. Judg. 2:16–18

[1:1] b. Gen. 12:10; 26:1; 2 Kin. 8:1

[1:1] c. Judg. 17:8; Mic. 5:2

[1:1] d. Gen. 19:37

[1:1] * Lit. *judged*

[1:1] * As a resident

alien

[1:2] a. Gen. 35:19; 1 Sam. 1:1; 1 Kin. 11:26

[1:2] b. Judg. 3:30

[1:4] * *lived*

[1:6] a. Ex. 3:16; 4:31; Jer. 29:10; Zeph. 2:7; Luke 1:68

[1:16] b. Ps. 132:15; Matt. 6:11

[1:6]
*
attended to

[1:8]
a.
Josh. 24:15

[1:8]
b. 2 Tim. 1:16–18

[1:8]
c.
Ruth 2:20

[1:9]
a.
Ruth 3:1

[1:11]
a.
Gen. 38:11; Deut. 25:5

[1:13]
a.
Judg. 2:15; Job 19:21; Ps. 32:4;

38:2

[1:14]
a.
(Prov.
17:17)

[1:15]
a.
Judg.
11:24

[1:15]
b.
Josh.
1:15

[1:16]
a. 2
Kin.
2:2,
4, 6

[1:16]
b.
Ruth
2:11,
12

[1:16]
*
*Urge
me
not*

[1:17]
a. 1
Sam.
3:17;
2
Sam.

19:13;
2
Kin.
6:31

[1:18]
a.
Acts
21:14

[1:18]
* Lit.
made
herself
strong
to go

[1:19]
a.
Matt.
21:10

[1:19]
b. Is.
23:7;
Lam.
2:15

[1:20]
* Lit.
Pleasant

[1:20]
* Lit.
Bitter

[1:21]
a.
Job
1:21

[1:21]
*
Heb.
Shaddai

[1:22]
a.
Ruth
2:23;
2
Sam.
21:9

Ruth 2

[2:1]
a.
Ruth
3:2,
12

[2:1]
b.
Ruth
1:2

[2:1]
c.
Ruth
4:21

[2:2]
a.
Lev.
19:9,
10;
23:22;
Deut.
24:19

[2:4]

a. Ruth 1:1

[2:4] b. Ps. 129:7, 8; Luke 1:28; 2 Thess. 3:16

[2:6] a. Ruth 1:22

[2:10] a. 1 Sam. 25:23

[2:10] b. 1 Sam. 1:18

[2:11] a. Ruth 1:14–18

[2:12] a. 1 Sam. 24:19; Ps.

58:11

[2:12] b. Ruth 1:16; Ps. 17:8; 36:7; 57:1; 61:4; 63:7; 91:4

[2:13] a. Gen. 33:15; 1 Sam. 1:18

[2:13] b. 1 Sam. 25:41

[2:13] * Lit. *to the heart of*

[2:14] a. Ruth 2:18

[2:15] * Gather

after the reapers

[2:15] * *rebuke*

[2:17] a. Ruth 1:22

[2:18] a. Ruth 2:14

[2:19] a. Ruth 2:10; (Ps. 41:1)

[2:20] a. Ruth 3:10; 2 Sam. 2:5

[2:20] b. Prov. 17:17

[2:20] c. Ruth

3:9;
4:4,
6

[2:20]
* *our redeemers,* Heb. *goalenu*

[2:22]
* *encounter*

Ruth 3

[3:1]
a. 1 Cor. 7:36; 1 Tim. 5:8

[3:1]
b. Ruth 1:9

[3:1]
* Lit. *rest*

[3:2]
a. Ruth 2:3, 8

[3:3]
a. 2

Sam. 14:2

[3:7] a. Judg. 19:6, 9, 22; 2 Sam. 13:28; Esth. 1:10

[3:9] a. Ezek. 16:8

[3:9] b. Ruth 2:20; 3:12

[3:9] * Or *Spread the corner of your garment over your maidservant*

[3:9] * *redeemer,* Heb.

goel

[3:10] a. Ruth 2:20

[3:10] b. Ruth 1:8

[3:11] a. Prov. 12:4; 31:10–31

[3:12] a. Ruth 3:9

[3:12] b. Ruth 4:1

[3:13] a. Deut. 25:5–10; Ruth 4:5, 10; Matt. 22:24

[3:13]

b. Judg. 8:19; Jer. 4:2; 12:16

[3:14] a. (Rom. 12:17; 14:16; 1 Cor. 10:32; 2 Cor. 8:21; 1 Thess. 5:22)

[3:15] * *cloak*

[3:15] * Many Heb. mss., Syr., Vg. *she;* MT, LXX, Tg. *he*

[3:16]

* Or *How are you,*

[3:18] a. (Ps. 37:3, 5)

Ruth 4

[4:1] a. Ruth 3:12

[4:1] * Heb. *peloni almoni,* lit. *so and so*

[4:2] a. 1 Kin. 21:8; Prov. 31:23

[4:3] a. Lev. 25:25

[4:4]

a.
Jer.
32:7,
8

[4:4]
b.
Gen.
23:18

[4:4]
c.
Lev.
25:25

[4:4]
* Lit.
uncover
your
ear

[4:4]
* So
with
many
Heb.
mss.,
LXX,
Syr.,
Tg.,
Vg.;
MT
he

[4:5]
a.
Gen.
38:8;
Deut.
25:5,
6;

Ruth 3:13; Matt. 22:24

[4:5] * Lit. *raise up*

[4:6] a. Ruth 3:12, 13; Job 19:14

[4:7] a. Deut. 25:7–10

[4:10] a. Deut. 25:6

[4:10] * Probably his civic office

[4:11] a. Ps. 127:3; 128:3

[4:11] b. Gen. 29:25–30; Deut. 25:9

[4:11] c. Gen. 35:16–18

[4:11] d. 1 Sam. 16:4–13; Mic. 5:2; Matt. 2:1–8

[4:12] a. 1 Chr. 2:4; Matt. 1:3

[4:12] b. Gen. 38:6–29

[4:12] c. 1 Sam.

2:20

[4:13] a. Ruth 3:11

[4:13] b. Gen. 29:31; 33:5; Matt. 1:5

[4:14] a. Luke 1:58; (Rom. 12:15)

[4:14] * *redeemer,* Heb. *goel*

[4:15] a. 1 Sam. 1:8

[4:15] * *sustainer*

[4:17] a. Luke 1:58

[4:18] a. 1 Chr. 2:4, 5; Matt. 1:1–7

[4:18] b. Num. 26:20, 21

[4:20] a. Num. 1:7

[4:20] b. Matt. 1:4

[4:20] * Heb. *Salmah*

[4:22] a. 1 Chr. 2:15; Matt. 1:6

The Holy Spirit's Work

in

1 SAMUEL

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

Israel's last judge, Samuel, anointed the nation's first two kings—Saul and David. The Spirit of God prophesied through Saul but ultimately left him because of his rebellion and disobedience (1 Sam. 10:10; 15:35).

The purpose of the Spirit’s coming on Saul seems to have been twofold. First, the prophesying and the new boldness against God’s enemies proved that God

Himself had chosen him and was controlling him by His Spirit. Second, Saul needed to be empowered and ignited with righteous anger to wage war against Israel’s enemies. The same Spirit who endued Saul with power is able to give us power to engage in spiritual warfare (Eph. 6:10–18).

When Saul stopped walking with the Lord, the Spirit of the Lord departed from him (1 Sam. 16:14), no longer empowering and guiding him in battle.

When Samuel anointed

David as king of Israel, “the Spirit of the Lord came upon David from that day forward” (1 Sam. 16:13). Inspired by the Spirit, David faced the giant Goliath and declared, “For the battle is the Lord’s, and He will give you into our hands” (1 Sam. 17:47).

Not until the coming of the Messiah would anyone again enjoy such continuous anointing. David alone is the royal prototype of the coming Messiah. In his earlier years David showed himself as one certainly anointed by God’s Spirit. However, he began to depend less and less on Spirit-anointing and more and more on human methods. With his son, Solomon, the changeover became set. Only in the earliest year or so of his reign did he give any sign of charismatic leaning. During his reign Solomon “transformed the concept of kingship from the idea of charismatic or divinely inspired leadership to that of typical Oriental despotism.”*

Through the lives of Saul,

David, and Solomon we ca1n see that the power of the Holy Spirit within us enables us to overcome the wicked powers of evil. But the warning is clear: only as we continually seek God’s guidance and direction will we be prepared to engage in spiritual warfare and be victorious.[†]

---

[*] R. K. Harrison, *Old Testament Times* (Grand Rapids, MI: Eerdmans, 1970), 209.

[†] Adapted from the *Holy Spirit Encounter Bible,* Introduction to 1 Samuel, 259,

and John Rea, *Charisma's Bible Handbook on the Holy Spirit*, 49–56.

1 Samuel 1

The Family of Elkanah

1Now there was a certain man of Ramathaim Zophim, of the [a]mountains of Ephraim, and his name *was* [b]Elkanah the son of Jeroham, the son of [*]Elihu, the son of [*]Tohu, the son of Zuph, [c]an Ephraimite. 2And he had [a]two wives: the name of one *was* Hannah, and the name of the other Peninnah. Peninnah had children, but Hannah had no children. 3This man went up from his city [a]yearly [b]to worship and sacrifice to the

LORD of hosts in [c]Shiloh. Also the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, the priests of the LORD, *were* there. 4And whenever the time came for Elkanah to make an [a]offering, he would give portions to Peninnah his wife and to all her sons and daughters. 5But to Hannah he would give a double portion, for he loved Hannah, [a]although the LORD had closed her womb. 6And her rival also [a]provoked her severely, to make her miserable, because the LORD had closed her womb. 7So it was, year by year, when she went up to the house of the LORD, that she provok1ed her; therefore she wept and did not eat.

Hannah’s Vow

8Then Elkanah her husband said to her, “Hannah, why do you weep? Why do you not eat? And why is your heart grieved? *Am* I not [a]better to you than ten sons?”

9So Hannah arose after they had finished eating and drinking in Shiloh. Now Eli the priest was sitting on the seat by the doorpost of [a]the *tabernacle of the LORD. 10[a]And she *was* in bitterness of soul, and prayed to the LORD and *wept in anguish. 11Then she [a]made a vow and said, “O LORD of hosts, if You will indeed [b]look on the affliction of Your maidservant and [c]remember me, and not forget Your maidservant, but will give Your maidservant a male child, then I will give him to the LORD all the days of his life, and [d]no razor shall come upon his head.”

12And it happened, as she continued praying before the LORD, that Eli watched her mouth. 13Now Hannah spoke in her heart; only her lips moved, but her voice was not heard. Therefore Eli thought she was drunk. 14So Eli said to her, “How long will you be drunk? Put your wine away from you!”

15But Hannah answered and said, “No, my lord, I *am* a woman of sorrowful spirit. I have drunk neither wine nor intoxicating drink, but have [a]poured out my soul before the LORD. 16“Do not consider your maidservant a [a]wicked* woman, for out of the abundance of my complaint and grief I have spoken until now.”

17Then Eli answered and said, [a]“Go in peace, and [b]the God of Israel grant your petition which you have asked of Him.”

18And she said, [a]“Let your maidservant find favor in your sight.[1]” So the woman [b]went her way and ate, and her face was no longer *sad.*

Samuel Is Born and Dedicated

19Then they rose early in the morning and worshiped before the LORD, and returned and came to their house at Ramah. And Elkanah [a]knew Hannah his wife, and the LORD [b]remembered her. 20So it came to pass in the process of time that Hannah conceived and bore a son, and called his name [*]Samuel, *saying,* “Because I have asked for him from the LORD.”

21Now the man Elkanah and all his house [a]went up to offer to the LORD the yearly sacrifice and his vow. 22But Hannah did not go up, for she said to her husband, “*Not* until the child is weaned; then I will [a]take him, that he may appear before the LORD and [b]remain there [c]forever.”

23So [a]Elkanah her husband said to her, “Do what seems best to you; wait until you have weaned him.

Only let the LORD *establish *His word.” Then the woman stayed and nursed her son until she had weaned him.

24Now when she had weaned him, she [a]took him up with her, with *three bulls, one ephah of flour, and a skin of wine, and brought him to [b]the house of the LORD in Shiloh. And the child *was* young. 25Then they slaughtered a bull, and [a]brought the child to Eli. 26And she said, “O my lord! [a]As your soul lives, my lord, I *am* the woman who stood by you here, praying to the LORD. 27[a]For this child I prayed, and the LORD has granted me my petition which I asked of Him. 28Therefore I also have lent him to the LORD1font>; as long as he lives he shall be *lent to the LORD.” So they [a]worshiped the LORD there.

1 Samuel 2

Hannah’s Prayer

1And Hannah [a]prayed and said:

[b]“My heart rejoices in the LORD;

[c]My [*]horn is exalted in the LORD.

[*]I smile at my enemies,

Because I [d]rejoice in Your salvation.

2“No [a] one is holy like the LORD,

For
there
is
[b]none
besides
You,

Nor
is
there
any
[c]rock
like
our
God.

[3]“Talk
no
more
so
very
proudly;

[a]Let
no
arrogance
come
from
your
mouth,

For
the
LORD
is
the
God
of
[b]knowledge;

And

by
Him
actions
are
weighed.

4“The
[a]
bows
of
the
mighty
men
are
broken,

And
those
who
stumbled
are
girded
with
strength.

5*Those*
who
were
full
have
hired
themselves
out
for
bread,

And
the
hungry
have

ceased *to hunger*.

Even [a]the barren has borne seven,

And [b]she who has many children has become feeble.

6“The [a] LORD kills and makes alive;

He brings down to the grave and brings up.

7The LORD

[a]makes poor and makes rich;

[b]He brings low and lifts up.

8[a]He raises the poor from the dust

And lifts the beggar from the ash heap,

[b]To set *them* among princes

And make them inherit the

throne
of
glory.

[c]“For
the
pillars
of
the
earth
are
the
LORD’s,

And
He
has
set
the
world
upon
them.

9[a]He
will
guard
the
feet
of
His
saints,

But
the
[b]wicked
shall
be
silent
in
darkness.

“For by strength no man shall prevail.

[10]The adversaries of the LORD shall be [a]broken in pieces;

[b]From heaven He will thunder against them.

[c]The LORD will judge the ends of the earth.

1 Sam. 2:10

The Lord will exhalt the horn of His anoint1ed; He will give strength to the man of God.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Hannah’s Prayer

And Hannah prayed and said:

> *“My heart rejoices in the Lord;*

My
horn
is
exalted
in
the
LORD.

I
smile
at
my
enemies,

Because
I
rejoice
in
Your
salvation.

No
one
is
holy
like
the
LORD,

For
there
is
none
besides
You,

Nor
is
there
any
rock

like
our
God.

Talk
no
more
so
very
proudly;

Let
no
arrogance
come
from
your
mouth,

For
the
LORD
is
the
God
of
knowledge;

And
by
Him
actions
are
weighed.

“The
bows
of
the
mighty
men

are
broken,

And
those
who
stumbled
are
girded
with
strength.

Those
who
were
full
have
hired
themselves
out
for
bread,

And
the
hungry
have
ceased
to
hunger.

Even
the
barren
has
borne
seven,

And
she
who

has many children has become feeble.

The LORD kills and makes alive;

He brings down to the grave and brings up.

The LORD makes poor and makes rich;

He brings low and lifts up.

“He raises

the poor from the dust

And lifts the beggar from the ash heap,

To set them among princes

And make them inherit the throne of glory.

For the pillars of the earth are the LORD’s,

And

He
has
set
the
world
upon
them.

He
will
guard
the
feet
of
His
saints,

But
the
wicked
shall
be
silent
in
darkness.

For
by
strength
no
man
shall
prevail.

The
adversaries
of
the
LORD
shall

be broken in pieces;

From heaven He will thunder against them.

The LORD will judge the ends of the earth.

He will give strength to His king,

And exalt the horn of His anointed.”

1

[d]"He will give [e]strength to His king,

And [f]exalt the *horn of His anointed."

1

[11]Then Elkanah went to his house at Ramah. But the child *ministered to the LORD before Eli the priest.

The Wicked Sons of Eli

12Now the sons of Eli *were* [a]corrupt;[*][b]they did not know the LORD. 13And the priests' custom with the people *was that* when any man offered a sacrifice, the priest's servant would come with a three-pronged fleshhook in his hand while the meat was boiling. [14]Then he would thrust *it* into the pan, or kettle, or caldron, or pot; and the priest would take for himself all that the fleshhook brought up. So they did in [a]Shiloh to all the Israelites who came there. 15Also, before they [a]burned the fat, the priest’s servant would come and say to the man who sacrificed, “Give meat for roasting to the priest, for he will not take boiled meat from you, but raw.”

[16]And *if* the man said to him, “They should really burn the fat first; *then* you may take *as much* as your heart desires,” he would then answer him, “*No,* but you must give *it* now; and if not, I

will take *it* by force.”

[17]Therefore the sin of the young men was very great [a]before the LORD, for men [b]abhorred[*] the offering of the LORD.

Samuel’s Childhood Ministry

[18][a]But Samuel ministered before the LORD, *even as* a child, [b]wearing a linen

ephod. 19Moreover his mother used to make him a little robe, and bring *it* to him year by year when she [a]came up with her husband to offer the yearly sacrifice. 20And Eli [a]would bless Elkanah and his wife, and say, “The LORD give you descendants from this woman for the [*]loan that was [b]given to the LORD.” Then they would go to their own home.

[21]And the LORD [a]visited[*] Hannah, so that she conceived and bore three sons and two daughters.

Meanwhile the child Samuel [b]grew before the LORD.

Prophecy Against Eli's Household

[22]Now Eli was very old; and he heard everything his sons did to all Israel, [*]and how they lay with [a]the women who assembled at the door of the

tabernacle of meeting. [23]So he said to them, “Why do you do such things? For I hear of your evil dealings from all the people. [24]No, my sons! For *it is* not a good report that I hear. You make the LORD’s people transgress. 25If one man sins against another, [a]God* will judge him. But if a man [b]sins against the LORD, who will intercede for him?” Nevertheless they did not heed the voice of their father, [c]because the LORD desired to kill them.

26 And the child Samuel [a]grew in stature, and [b]in favor both with the LORD and men.

27 Then a [a]man of God came to Eli and said to him, “Thus says the LORD: [b]‘Did I not clearly reveal Myself to the house of

your father when they were in Egypt in Pharaoh’s house? 28 Did I not [a]choose him out of all the tribes of Israel *to be* My priest, to offer upon My altar, to burn incense, and to wear an ephod before Me? And [b]did

I not give to the house of your father all the offerings of the children of Israel made by fire? [29]Why do you [a]kick at My sacrifice and My offering which I have commanded *in My* [b]dwelling place, and honor your sons more than [c]Me, to make yourselves fat with the best of all the offerings of Israel My [1]people?’ 30 Therefore the LORD God of Israel says: [a]‘I said indeed *that* your house and the house of your father would walk before

Me forever.’ But now the LORD says: [b]‘Far be it from Me; for those who honor Me I will honor, and [c]those who despise Me shall be lightly esteemed. 31 Behold, [a]the days are coming that I will cut off your *arm and the

arm
of
your
father's
house,
so
that
there
will
not
be
an
old
man
in
your
house.
[32]And
you
will
see
an
enemy
in
My
dwelling
place,
despite
all
the
good
which
God
does
for
Israel.
And
there
shall
not

be
[a]an
old
man
in
your
house
forever.
33But
any
of
your
men
whom
I do
not
cut
off
from
My
altar
shall
consume
your
eyes
and
grieve
your
heart.
And
all
the
descendants
of
your
house
shall
die
in
the

flower of their age. 34Now this *shall be* [a]a sign to you that will come upon your two sons, on Hophni and Phinehas: [b]in one day they shall die, both of them. 35Then [a]I will raise up for Myself a faithful priest *who* shall do according to what *is* in My heart and in My mind. [b]I will build him a sure house, and he shall walk before [c]My anointed forever. 36 [a]And it shall come to pass that everyone who is left

in
your
house
will
come
and
bow
down
to
him
for a
piece
of
silver
and
a
morsel
of
bread,
and
say,
“Please,
*put
me
in
one
of
the
priestly
positions,
that
I
may
eat a
piece
of
bread.”
’ ”

Samuel 3

Samuel's First Prophecy

1Now [a]the boy Samuel ministered to the LORD before Eli. And [b]the word of the LORD was rare in those days; *there was* no widespread revelation. 2And it came to pass at that time, while

Eli *was* lying down in his place, and when his eyes had begun to grow [a]so dim that [1]he could not see, [3]and before [a]the lamp of God went out in the *tabernacle of the LORD where the ark of

God
was,
and
while
Samuel
was
lying
down,
[4]that
the
LORD
called
Samuel.
And
he
answered,
“Here
I
am!”
[5]So
he
ran
to Eli
and
said,
“Here
I am,
for
you
called
me.”

And
he
said,
“I
did
not
call;
lie
down

again.” And he went and lay down.

[6]Then the LORD called yet again, “Samuel!”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

How Can God Use Corrupt Leaders?

Many people ask, “Why does God put people under leaders who make serious mistakes and even some who are wicked?" Look at the childhood of Samuel (1 Sam. 2–4). God, not the devil, was the One who put this young man under the authority of a corrupt priest named Eli and his two wicked sons, Hophni and Phinehas, who were priests as well. These men were very wicked. They took offerings by manipulation and force, and they committed fornication with the women who assembled at the door of the tabernacle.

God

had placed Samuel there, and he was not responsible for the behavior of Eli or his sons. He was put under them not to judge them but to serve them. He knew Eli was God’s servant, not his. He knew that God was quite capable of dealing with His own.

Samuel served God's appointed minister the best he could, without the pressure to judge him or correct him. The only time Samuel spoke a word of correction was when

Eli came to Samuel and asked him what prophecy God had given him the night before. But even then it was not a word of correction from Samuel, but from God. If more people would get hold of this truth, our churches would be different.[*]

So Samuel arose and went to Eli, and said, “Here I am, for you called me.” He answered, “I did not call, my son; lie down again.” [7](Now Samuel [a]did not yet know the LORD, nor was the word of the LORD yet revealed to him.)

---

[*] Jo Be *Th Ba of Sa* 49- 50

1 Sam. 3:7

Let Your Word be revealed unto me.

[8]And the

LORD called Samuel again the third time. So he arose and went to Eli, and said, “Here I am, for you did call me.”

Then Eli perceived that the LORD had called the boy. [9]Therefore Eli said to Samuel, “Go, lie down; and it shall be, if He calls you, that you must say, [a]‘Speak, LORD, for Your servant hears.’ ” So Samuel went and lay down in his place.

10Now the LORD came and stood and called as at other times, “Samuel! Samuel!”

And Samuel answered, “Speak, for Your servant hears.”

11Then the LORD said to Samuel: “Behold, I will do something in Israel [a]at which both ears of everyone who hears it will tingle. 12In that day I will perform against Eli [a]all that

I have spoken concerning his house, from beginning to end. [13][a]For I have told him that I will [b]judge his house forever for the iniquity which he knows, because [c]his sons made themselves vile, and he [d]did not [*]restrain them. [14]And therefore I have sworn to the house of Eli that the iniquity of Eli’s house [a]shall not be atoned for by sacrifice or offering forever.”

15 So Samuel lay down until *morning, and opened the doors of the house of the LORD.

And Samuel was afraid to tell Eli the vision. [16]Then Eli called Samuel and said, “Samuel, my son!”

He answered, “Here I am.”

[17]And he said, “What *is* the word that *the LORD* spoke to you? Please do not hide *it*

from me. [a]God do so to you, and more also, if you hide anything from me of all the things that He said to you.” 18Then Samuel told him everything, and hid nothing from him. And he said, [a]“It *is* the LORD. Let

Him do what seems good to Him.”

19So Samuel [a]grew, and [b]the LORD was with him [c]and let none of his words [*]fall to the ground. 20And all Israel [a]from Dan to Beersheba knew that Samuel *had been* [*]established as a prophet of the LORD. 21Then the LORD appeared again in Shiloh. For the LORD revealed Himself to Samuel in Shiloh by [a]the word of the LORD.

1 Samuel 4

1And the word of Samuel came to all [*]Israel.

The Ark

of God Captured

Now Israel went out to battle against the Philistines, and encamped beside [a]Ebenezer; and the Philistines encamped in Aphek. 2 Then the [a]Philistines put themselves in battle array against Israel. And when they joined battle, Israel was [*]defeated by the Philistines, who killed about four thousand men of the army in the field. [3]And when the people had come into the camp, the elders of Israel said, “Why has the LORD defeated us today before the Philistines? [a]Let

us
bring
the
ark
of
the
covenant
of
the
LORD
from
Shiloh
to
us,
that
when
it
comes
among
us it
may
save
us
from
the
hand
of
our
enemies.”
[4]So
the
people
sent
to
Shiloh,
that
they
might
bring
from

there the ark of the covenant of the LORD of hosts, [a]who dwells *between* [b]the cherubim. And the [c]two sons of Eli, Hophni and Phinehas, *were* there with the ark of the covenant of God.

5 And when the ark of

the covenant of the LORD came into the camp, all Israel shouted so loudly that the earth shook. [6]Now when the Philistines heard the noise of the shout, they said, “What *does* the sound of this great shout in the camp of the Hebrews *mean?*” Then they understood that the ark of the LORD had come into the camp. [7]So the Philistines were afraid, for they said, “God has come into the camp!” And they said, [a]“Woe to us! For such a thing has never happened before. 8Woe to us! Who will deliver us from the hand of these mighty gods? These *are* the gods who struck the Egyptians with all the plagues in the wilderness. 9[a]Be strong and conduct yourselves like men, you Philistines, that you do not become servants of the Hebrews, [b]as they have been to you. [*]Conduct yourselves like men, and fight!”

10 So the Philistines fought, and [a]Israel was [*]defeated, and every man fled to his

tent. There was a very great slaughter, and there fell of Israel thirty thousand foot soldiers. 11Also [a]the ark of God was captured; and [b]the two sons of Eli, Hophni and Phinehas, died.

Death of Eli

12Then a man of Benjamin

ran from the battle line the same day, and [a]came to Shiloh with his clothes torn and [b]dirt on his head. 13 Now when he came, there was Eli, sitting on [a]a seat [*]by the wayside watching, for his heart [*]trembled for the ark of God. And when the man came into the city and told *it,* all the city cried out. [14]When Eli heard the noise of the outcry, he said, “What *does* the sound of this tumult *mean?*” And the man came quickly and told Eli. 15Eli was ninety-eight years old, and [a]his eyes were so *dim that he could not see.

16Then the man said to Eli, “I *am* he who came from the battle. And I fled today from the battle line.”

And he said, [a]“What happened, my son?”

17So the messenger answered and said, “Israel has fled before the Philistines, and there has been a great slaughter among the people. Also your two sons, Hophni and [1]Phinehas, are dead; and the ark of God has been captured.”

[18]Then it happened, when he made mention of the ark of God, that Eli fell off the seat backward by the side of the gate; and his neck was broken and

he died, for the man was old and heavy. And he had judged Israel forty years.

Ichabod

[19]Now his daughter-in-law, Phinehas's wife, was with child, *due* to be delivered; and when she heard the news that the ark of

God was captured, and that her father-in-law and her husband were dead, she bowed herself and gave birth, for her labor pains came upon her. [20]And about the time of her death [a]the women who stood by her said to her, “Do not fear, for you have borne a son.” But she did not answer, nor did she [*]regard *it.* 21 Then she named the child [a]Ichabod,[*] saying, [b]“The glory has departed from Israel!” because the ark of God had been captured and because of her father-in-law and her husband. [22]And she said, “The glory has departed from Israel, for the ark of God has been captured.”

1 Samuel 5

The Philistines and the Ark

[1]Then

the Philistines took the ark of God and brought it [a]from Ebenezer to Ashdod. 2When the Philistines took the ark of God, they brought it into the house of [a]Dagon* and set it by Dagon. 3And when the people of Ashdod arose early in the morning, there was Dagon, [a]fallen on its face to the earth before the ark of the LORD. So they took Dagon and [b]set it in its place again. 4And when they arose early the next morning, there was Dagon, fallen on its face to the ground before the ark of the LORD. [a]The head of Dagon and both the palms of its hands *were* broken off on the threshold; only [*]Dagon's *torso* was left of it. [5]Therefore neither the priests of Dagon nor any who come into Dagon’s house [a]tread o1n the threshold of Dagon in Ashdod to this day.

[6]But the [a]hand of the LORD was heavy on the people of Ashdod, and He [b]ravaged them and struck

them with [c]tumors,[*]*both* Ashdod and its [d]territory. 7And when the men of Ashdod saw how *it was,* they said, “The ark of the [a]God of Israel must not remain with us, for His hand is harsh toward us and Dagon our god.” [8]Therefore they sent and gathered to themselves all the [a]lords of the Philistines, and said, “What shall we do with the ark of the God of Israel?”

And they answered, “Let the ark of the God of Israel be carried away to [b]Gath.” So they carried the ark of the God of Israel away. 9So it was, after they had carried it away, that [a]the hand of the LORD was against the city with a very great destruction;

and He struck the men of the city, both small and great, *and tumors broke out on them.

[10]Therefore they sent the ark of God to Ekron. So it was, as the ark of God came to Ekron, that the Ekronites

cried out, saying, “They have brought the ark of the God of Israel to us, to kill us and our people!” 11So they sent and gathered together all the lords of the Philistines, and said, “Send away the ark of the God of Israel, and let it go back to its own place, so that it does not kill us and our people.” For there was a deadly destruction throughout all the city; the hand of God was very heavy there. [12]And the men who did not die were stricken with the tumors, and the [a]cry of the city went up to heaven.

1 Samuel 6

The Ark Returned to Israel

[1]Now the ark of the LORD was in the country of

the Philistines seven months. [2]And the Philistines [a]called for the priests and the diviners, saying, “What shall we do with the ark of the LORD? Tell us how we should send it to its place.”

[3]So they said, “If you send

away th1e ark of the God of Israel, do not send it [a]empty; but by all means return *it* to Him *with* [b]a trespass offering. Then you will be healed, and it will be known to you why His hand is not removed from you.”

[4]Then they said, “What *is* the trespass offering which we shall return to Him?”

They answered, [a]“Five golden tumors and five golden rats, *according to* the number of the lords of the Philistines. For the same plague *was* on all of [*]you and on your lords. 5 Therefore you shall make images of your tumors and images of your rats that [a]ravage the land, and you shall [b]give glory to the God of Israel; perhaps He will [c]lighten[*] His hand from you, from [d]your gods, and from your land. [6]Why then do you harden your hearts [a]as the Egyptians and Pharaoh hardened their hearts? When He did mighty things among them, [b]did they not let the people go, that they might depart? 7Now therefore, make [a]a new cart, take two milk cows [b]which have never been yoked, and hitch the cows to the cart; and take their calves home, away from them. 8Then take the ark of the LORD

and
set it
on
the
cart;
and
put
[a]the
articles
of
gold
which
you
are
returning
to
Him
as a
trespass
offering
in a
chest
by
its
side.
Then
send
it
away,
and
let it
go.
9And
watch:
if it
goes
up
the
road
to its

own territory, to [a]Beth Shemesh, *then* He has done [*]us this great evil. But if not, then [b]we shall know that *it is* not His hand *that* struck us—it happened to us by chance.”

[10]Then the men did so; they took

two milk cows and hitched them to the cart, and shut up their calves at home. [11]And they set the ark of the LORD on the cart, and the chest with the gold rats and the images of their tumors.

12Then the cows headed straight for the road to Beth Shemesh, *and* went along the [a]highway, lowin1g as they went, and did not turn aside to the right hand or the left. And the lords of the Philistines went after them to the border of Beth Shemesh.

[13]Now *the people of* Beth Shemesh *were* reaping their [a]wheat harvest in the valley; and they lifted their eyes and saw the ark, and rejoiced to see *it.* [14]Then the cart came into

the field of Joshua of Beth Shemesh, and stood there; a large stone *was* there. So they split the wood of the cart and offered the cows as a burnt offering to the LORD. [15]The Levites took down the ark of the LORD and the chest that *was* with it, in which *were* the articles of gold, and put *them* on the large stone. Then the men of Beth Shemesh offered burnt offerings and made sacrifices the same day to the LORD.

16So when [a]the five lords of the Philistines had seen *it,* they returned to Ekron the same day.

17[a]These *are* the golden tumors which the Philistines returned *as* a trespass offering to the LORD: one for Ashdod, one for Gaza, one for Ashkelon, one for [b]Gath, one for Ekron; [18]and the golden rats, *according to* the number of all the cities of the Philistines *belonging* to the five lords, *both* fortified cities and country villages, even as far as the large *stone* *of* Abel on which they set the ark of the LORD, *which stone remains* to this day in the field of Joshua of Beth Shemesh.

19 Then [a]He struck the men of Beth Shemesh, because they had looked into the ark

of the LORD. [*]He [b]struck fifty thousand and seventy men of the people, and the people lamented because the LORD had struck the people with a great slaughter.

The Ark at Kirjath Jearim

20 And the men of Beth Shemesh said,

[a]“Who is able to stand before this holy LORD God? And to whom shall it go up from us?” [21]So they sent messengers to the inhabitants of [a]Kirjath Jearim, saying, “The Philistines have brought back the ark of the LORD; come

down *and* take it up with you.”

1 Samuel 7

1Then the men of [a]Kirjath Jearim came and took the ark of the LORD, and brought it into the house of [b]Abinadab on the hill, and [c]consecrated Eleazar his son to keep the ark of the LORD.

Samuel Judges Israel

[2] So it was that the ark remained in Kirjath Jearim a long time; it was there twenty years. And all the house of Israel lamented after the LORD.

[3] Then Samuel

spoke to all the house of Israel, saying, “If you [a]return to the LORD with all your hearts, *then* [b]put away the foreign gods and the [c]Ashtoreths[*] from among you, and [d]prepare your hearts for the LORD, and [e]serve Him only;

and He will deliver you from the hand of the Philistines.” 4So the children of Israel put away the [a]Baals and the [*]Ashtoreths, and served the LORD only.

5And Samuel said, [a]“Gather all Israel to Mizpah, and [b]I will pray to the LORD for you.” 6So they gathered together at Mizpah, [a]drew water, and poured *it* out before the LORD. And they [b]fasted that day, and said there, [c]“We have sinned against the LORD.” And Samuel judged the children of Israel at Mizpah.

[7]Now when the Philistines heard that the children of Israel had gathered together at Mizpah, the lords of the Philistines went up against Israel. And when the children of Israel heard *of it,* they were afraid of the Philistines.

8So the children of Israel said to Samuel, [a]"Do not cease to cry out to the LORD our God for us, that He may save us from the hand of the Philistines."

9And Samuel took a [a]suckling lamb and offered *it as* a whole burnt offering to the LORD. Then [b]Samuel cried out to the LORD for Israel, and the LORD answered him. [10]Now as Samuel was offering up the burnt offering, the Philistines drew near to battle against Israel. [a]But the LORD thundered with a loud thunder upon the Philistines that day, and so confused them that they were overcome before Israel. [11]And the men of Israel went out of Mizpah and pursued the Philistines, and *drove them back as far as below Beth Car. [12]Then Samuel [a]took a stone and set *it* up between Mizpah and Shen, and called its name *Ebenezer, saying, “Thus far the LORD has helped us.”

13[a]So the Philistines were subdued, and they [b]did not come anymore into the territory of Israel. And the hand of the LORD was against the Philistines all the days of Samuel. 14Then the cities which the Philistines had taken from Israel were restored to Israel, from Ekron to Gath; and Israel recovered its territory from the hands of the Philistines. Also there was peace between Israel and the Amorites.

15 And Samuel [a]judged Israel all the

days of his life. [16]He went from year to year on a circuit to Bethel, Gilgal, and Mizpah, and judged Israel in all those places. [17]But [a]he always returned to Ramah, for his home *was* there. There he judged Israel, and there he [b]built an altar to the LORD.

1 Samuel 8

Israel Demands a King

[1]Now it came to pass when Samuel was [a]old that he [b]made his [c]sons judges over Israel. [2]The name of his firstborn was Joel, and

the name of his second, Abijah; *they were* judges in Beersheba. [3]But his sons [a]did not walk in his ways; they turned aside [b]after dishonest gain, [c]took bribes, and perverted justice.

[4]Then all the elders of Israel gathered together and

came to Samuel at Ramah, [5]and said to him, “Look, you are old, and your sons do not walk in your ways. Now [a]make us a king to judge us like all the nations.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The

Discipline of Fasting

The Spiritual Warfare Basics in 1 and 2 Samuel will cover important aspects about the importance of fasting. The Bible tells us about seven different kinds of fasts, and we will take a closer look at each of these. The discipline of fasting releases the anointing, the favor, and the blessing of God in the life of a Christian. So if you are not content to go through this year the way you went through last year, now is the time to use the discipline of fasting to see breakthroughs. You know there’s more—there’s an assignment for your life, there’s something God desires to release in your life, and there is a genuine desperation for those things gripping your heart.

There are dimensions of our glorious Lord that will never be revealed to the casual, disinterested worshiper. There are walls of intercession that will never be scaled by dispassionate religious services and spiritual warfare battles that cannot be won by unprepared spiritual warriors. If you will make a commitment now to commit to a period of fasting, you will be amazed at the things God will show you as you press in to

Him![*]

---

[*] Jer
Fra
Fas
v–
vi.

[6]But the thing [a]displeased Samuel when they said, “Give us a king to judge us.” So Samuel [b]prayed to the LORD. [7]And the LORD said to Samuel, “Heed the

voice of the people in all that they say to you; for [a]they have not rejected you, but [b]they have rejected Me, that I should not reign over them. [8]According to all the works which they have done since the day that

I brought them up out of Egypt, even to this day—with which they [1]have forsaken Me and served other gods—so they are doing to you also. [9]Now therefore, heed their voice. However, you shall solemnly forewarn them, and [a]show them the behavior of the king who will reign over them.”

[10]So Samuel told all the words of the LORD to the people who asked him for a king. [11]And he said, [a]“This will be the behavior of the

king who will reign over you: He will take your [b]sons and appoint *them* for his own [c]chariots and *to be* his horsemen, and *some* will run before his chariots. [12]He will [a]appoint captains over his thousands and captains over his fifties, *will set some* to plow his ground and reap his harvest, and *some* to make his weapons of war and equipment for his chariots. [13]He will take your daughters *to be* perfumers, cooks, and bakers. [14]And [a]he will take the

best
of
your
fields,
your
vineyards,
and
your
olive
groves,
and
give
them
to
his
servants.
[15]He
will
take
a
tenth
of
your
grain
and
your
vintage,
and
give
it to
his
officers
and
servants.
[16]And
he
will
take
your
male

servants, your female servants, your finest *young men, and your donkeys, and put *them* to his work. [17]He will take a tenth of your sheep. And you will be his servants. [18]And you will cry out in that day because of your king whom you have chosen for yourselves, and the LORD [a]will not hear you in that day.”

19 Nevertheless the people [a]refused to obey the voice of Samuel; and they said, “No, but we will have a king over

us, [20]that we also may be [a]like all the nations, and that our king may judge us and go out before us and fight our battles.”

[21]And Samuel heard all the words of the people, and he repeated them in

the hearing of the LORD. 22So the LORD said to Samuel, [a]“Heed their voice, and make them a king.”

And Samuel said to the men of Israel, “Every man go to his city.”

1 Samuel 9

Saul Chosen to Be King

1There was a man of Benjamin whose name *was* [a]Kish the son of Abiel, the son of Zeror, the son of Bechorath, the son of Aphiah, a Benjamite, a mighty man of [*]power. 2And he had a choice and handsome son whose name *was* Saul. *There was* not a more handsome person than he among the children of Israel. [a]From his shoulders upward *he was* taller than any of the people.

[3]Now the donkeys of Kish, Saul’s father, were lost. And

Kish said to his son Saul, “Please take one of the servants with you, and arise, go and look for the donkeys.” 4So he passed through the mountains of Ephraim and through the land of [a]Shalisha, but they did not find *them.* Then they passed through the land of Shaalim, and *they were* not *there.* Then he passed through the land of the Benjamites, but they did not find *them.*

5 When they had come to the land of [a]Zuph, Saul

said to his servant who *was* with him, “Come, let [b]us return, lest my father cease *caring* about the donkeys and become worried about us.”

[6]And he said to him, “Look now, *there is* in this city [a]a man of God,

and *he is* an honorable man; [b]all that he says surely comes to pass. So let us go there; perhaps he can show us the way that we should go."

[7]Then Saul said to his servant, "But look, *if* we go, [a]what shall

we bring the man? For the bread in our vessels is all gone, and *there is* no present to bring to the man of God. What do we have?”

[8]And the servant answered Saul again and said, “Look, I have here at

hand one-fourth of a shekel of silver. I will give *that* to the man of God, to tell us our way.” 9(Formerly in Israel, when a man [a]went [*]to inquire of God, he spoke thus: “Come, let us go to the seer”;

for *he who is* now *called* a prophet was formerly called [b]a seer.)

10Then Saul said to his servant, *“Well said; come, let us go.” So they went to the city where the man of God *was.*

11As they went

up the hill to the city, [a]they met some young women going out to draw water, and said to them, “Is the seer here?”

12 And they answered them and said, “Yes, there he is, just ahead of you. Hurry now; for

today he came to this city, because [a]there is a sacrifice of the people today [b]on the high place. 13 As soon as you come into the city, you will surely find him before he goes up to the high place to eat.

For the people will not eat until he comes, because he must bless the sacrifice; afterward those who are invited will eat. Now therefore, go up, for about this time you will find him.” [14]So they went up to the city.

As they were coming into the city, there was Samuel, coming out toward them on his way up to the high place.

15[a]Now the LORD had told Samuel in his ear the day before Saul came, saying, 16“Tomorrow about this time

[a]I will send you a man from the land of Benjamin, [b]and you shall anoint him [*]commander over My people Israel, that he may save My people from the hand of the Philistines; for I have [c]looked upon My people, because

their cry has come to Me.”

[17]So when Samuel saw Saul, the LORD said to him, [a]“There he is, the man of whom I spoke to you. This one shall reign over My people.” [18]Then Saul drew near to Samuel in

the
gate,
and
said,
“Please
tell
me,
where
is the
seer’s
house?”

[19]Samuel
answered
Saul
and
said,
“I
am
the
seer.
Go
up
before
me
to
the
high
place,
for
you
shall
eat
with
me
today;
and
tomorrow
I will
let
you

go and will tell you all that *is* in your heart. 20But as for [a]your donkeys that were lost three days ago, do not be anxious about them, for they have been found. And [*]on whom [b]*is* all the desire of

Israel? *Is it* not on you and on all your father's house?"

[21]And Saul answered 1and said, [a]"*Am* I not a Benjamite, of the [b]smallest of the tribes of Israel, and [c]my family the least of all the families of the *tribe of

Benjamin? Why then do you speak like this to me?”

[22]Now Samuel took Saul and his servant and brought them into the hall, and had them sit in the place of honor among those who were invited; there *were* about thirty

persons. [23]And Samuel said to the cook, “Bring the portion which I gave you, of which I said to you, ‘Set it apart.’ ”

[24]So the cook took up [a]the thigh with its upper part and set *it* before Saul. And

Samuel said, “Here it is, what was kept back. *It* was set apart for you. Eat; for until this time it has been kept for you, since I said I invited the people.” So Saul ate with Samuel that day.

[25]When

they had come down from the high place into the city, *Samuel spoke with Saul on [a]the top of the house. 26They arose early; and it was about the dawning of the day that Samuel called to Saul on the top of the house, saying, “Get up, that I may send you on your way.” And Saul arose, and both of them went outside, he and Samuel.

Saul Anointed King

[27]As they were going down to the outskirts of the

city, Samuel said to Saul, “Tell the servant to go on ahead of us.” And he went on. “But you stand here *awhile, that I may announce to you the word of God.”

1 Samuel 10

1 Then [a]Samuel took a

flask of oil and poured *it* on his head, [b]and kissed him and said: “*Is it* not because [c]the LORD has anointed you commander over [d]His [*]inheritance? 2When you have departed from me today, you will find two men by [a]Rachel’s tomb in the territory of Benjamin [b]at Zelzah; and they will say to you, ‘The donkeys which you went to look for have been found. And now your father has ceased caring about the donkeys and is worrying about [1c]you, saying, “What

shall I do about my son?”
’

[3]Then you shall go on forward from there and come to the terebinth tree of Tabor. There three men going up [a]to God at Bethel will meet you, one carrying three young goats, another

carrying three loaves of bread, and another carrying a skin of wine. [4]And they will *greet you and give you two *loaves* of bread, which you shall receive from their hands. [5]After that you shall come to the hill of

God [a]where the Philistine garrison *is.* And it will happen, when you have come there to the city, that you will meet a group of prophets coming down [b]from the high place with a stringed instrument, a tambourine, a flute, and a harp before them; [c]and they will be prophesying. 6 Then [a]the Spirit of the LORD will come upon you, and [b]you will prophesy with them and be turned into another man. 7 And let it be, when these [a]signs come to

you,
that
you
do as
the
occasion
demands;
for
[b]God
is
with
you.
8You
shall
go
down
before
me
[a]to
Gilgal;
and
surely
I will
come
down
to
you
to
offer
burnt
offerings
and
make
sacrifices
of
peace
offerings.
[b]Seven
days
you

shall wait, till I come to you and show you what you should do.”

[9]So it was, when he had turned his back to go from Samuel, that God *gave him another heart; and all those signs came to pass that day.

10[a]When they came there to the hill, there was [b]a group of prophets to meet him; then the Spirit of God came upon him, and he prophesied among them. 11And it happened, when all who knew him formerly saw that he indeed prophesied among the prophets, that the people said to one another, “What *is* this *that* has come upon the son of Kish? [a]*Is* Saul also among the prophets?” 12Then a man from there answered and said, “But [a]who *is* their father?" Therefore it became a proverb: "*Is* Saul also among the prophets?" 13And when he had finished prophesying, he went to the high place.

14Then Saul's [a]uncle said to him and his servant, "Where did you go?"

So

he said, “To look for the donkeys. When we saw that *they were* nowhere *to be found,* we went to Samuel.”

[15]And Saul’s uncle said, “Tell me, please, what Samuel said to you.”

[16]So Saul said to his uncle, “He told

us plainly that the donkeys had been [a]found.” But about the matter of the kingdom, he did not tell him what Samuel had said.

Saul Proclaimed King

17Then Samuel called the people together [a]to the LORD [b]at Mizpah, 18and said to the children of Israel, [a]“Thus says the LORD God of Israel: ‘I brought up Israel out of Egypt, and delivered you from the hand of the Egyptians *and* from the hand of all kingdoms and from those who oppressed you.’

19[a]But you have today rejected your God, who Himself saved you from all your adversities and your tribulations; and you have said to Him, ‘No, set a king over us!’ Now therefore, present yourselves before the LORD by your tribes and by your [*]clans.”

[20]And when Samuel had [a]caused all the tribes of Israel to come near, the tribe of Benjamin was chosen. [21]When he had caused the tribe of Benjamin to come near by their families, the family of Matri

was chosen. And Saul the son of Kish was chosen. But when they sought him, he could not be found. 22Therefore they [a]inquired of the LORD further, “Has the man come here yet?”

And the LORD answered, “There he is, hidden among the equipment.”

[23]So they ran and brought him from there; and when he stood among the people, [a]he was taller than any of the people from his shoulders upward. [24]And Samuel said to all the people, “Do you see him

[a]whom the LORD has chosen, that *there is* no one like him among [1]all the people?”

So all the people shouted and said, [b]“Long[*] live the king!”

25 Then Samuel explained to the people [a]the behavior of royalty, and wrote *it* in a

book and laid *it* up before the LORD. And Samuel sent all the people away, every man to his house. 26And Saul also went home [a]to Gibeah; and valiant *men* went with him, whose hearts God had touched. 27[a]But some [b]rebels said, “How can this man save us?” So they despised him, [c]and brought him no presents. But he *held his peace.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

THE DANGEROUS ROOTS OF INSECURITY AND INFERIORITY

Insecurity and inferiority have

torn many great men of God from their positions of honor and anointing. They start so strong and humble before God, but their lives end in destruction. Probably one of the best examples in Scripture is in the story of

Saul and David. Saul had been anointed king over Israel, and the Spirit of God was upon him (1 Sam. 9:15–16; 10:1). But Saul was ruled by insecurity and inferiority. He was so insecure about his position within the hearts of the people that he became a slave to the fear of man. Eventually that led to Saul’s undoing. In 1 Samuel 15, God commanded Saul to attack the Amalekites and destroy everything—every man, woman, child, and animal. But Saul did not obey the command of God.

Saul utterly destroyed all the Amalekites except one: Agag, their king. And he killed all the weak and worthless animals but spared the best. When Saul reported the results of the battle to Samuel, he told the prophet that he had “performed the commandment of the LORD” (1 Sam. 15:13). But Samuel couldn’t be fooled. God had already shown him that Saul did not obey His orders (v. 10).

When Samuel confronted Saul, Saul attempted to make excuses and justify his disobedience.

After Samuel pressed Saul a third time and delivered to him the word of the Lord, Saul finally admitted his guilt and even the reason for his disobedience. Saul told Samuel, “I have transgressed the commandment of the LORD and your words, *because I feared the people and obeyed their voice*” (v. 24, emphasis added).

This was the beginning of the end for King Saul.

Saul gave Satan a foothold when he listened to his lies and didn’t trust that because God had placed him in position as 1king, He could keep him there. Instead Saul reached for the fruit of the fear of man, then disobedience. He fell to political pressure and ended up losing his standing with God.

The root of insecurity was now firmly established in Saul, and he had to pay a painful consequence: the Spirit of God departed from

Saul, who desperately wanted to keep his kingdom.

Saul's life reflects so many today. They start out under the anointing but end up believing a lie. They fall prey because in their hearts there was an open door to insecurity and inferiority. We must go deep into the spirit to the root cause if we are truly going to be free.*

---

* Steve Foss, *Satan's Dirty Little Secret*, 39–44.

1 Samuel 11

Saul Saves Jabesh Gilead

1Then [a]Nahash the Ammonite came up and [*]encamped against [b]Jabesh Gilead; and all the men of Jabesh said to Nahash, [c]“Make a covenant with us, and we will serve you.”

2And Nahash the Ammonite answered them,

“On this *condition* I will make *a covenant* with you, that I may put out all your right eyes, and bring [a]reproach on all Israel.”

[3]Then the elders of Jabesh said to him, “Hold off for seven days, that we may

send messengers to all the territory of Israel. And then, if *there is* no one to *save us, we will come out to you.”

[4]So the messengers came [a]to Gibeah of Saul and told the news in the hearing of the people.

And [b]all the people lifted up their voices and wept. 5 Now there was Saul, coming behind the herd from the field; and Saul said, “What *troubles* the people, that they weep?” And they told him the words of the men of Jabesh. 6 [a]Then the Spirit of God came upon Saul when he heard this news, and his anger was greatly aroused. 7 So he took a yoke of oxen and [a]cut them in pieces[1], and sent *them* throughout all the territory of Israel by the hands of messengers, saying, [b]“Whoever does not go out with Saul and Samuel to battle, so it shall be done to his oxen.”

And the fear of the LORD fell on the people, and they came out

[*]with one consent. 8When he numbered them in [a]Bezek, the children [b]of Israel were three hundred thousand, and the men of Judah thirty thousand. 9And they said to the messengers who came, “Thus you shall say to the men of

Jabesh Gilead: ‘Tomorrow, by *the time* the sun is hot, you shall have help.’ ” Then the messengers came and reported *it* to the men of Jabesh, and they were glad. [10]Therefore the men of Jabesh said, “Tomorrow we will come out to you, and you may do with us whatever seems good to you.”

[11]So it was, on the next day, that [a]Saul put the people [b]in three companies; and they came into the midst of the camp in the

morning watch, and killed Ammonites until the heat of the day. And it happened that those who survived were scattered, so that no two of them were left together.

12 Then the people said to Samuel, [a]“Who *is* he who said, ‘Shall

Saul reign over us?’ [b]Bring the men, that we may put them to death.”

[13]But Saul said, [a]“Not a man shall be put to death this day, for today [b]the LORD has accomplished salvation in Israel.”

[14]Then Samuel said to

the people, “Come, let us go [a]to Gilgal and renew the kingdom there.” 15So all the people went to Gilgal, and there they made Saul king [a]before the LORD in Gilgal. [b]There they made sacrifices of peace offerings before the LORD, and there Saul and all the men of Israel rejoiced greatly.

1 Samuel 12

Samuel's Address at Saul's Coronation

[1]Now Samuel said to all Israel: "Indeed I have [*]heeded [a]your voice in all that you said to me, and [b]have made

a king over you. [2]And now here is the king, [a]walking before you; [b]and I am old and grayheaded, and look, my sons *are* with you. I have walked before you from my childhood to this day. [3]Here I am. Witness against me before the LORD and before [a]His anointed: [b]Whose ox have I taken, or whose donkey have I taken, or whom have I cheated? Whom have I oppressed, or from whose hand have I received *any* [c]bribe with which to

[d]blind my eyes? I will restore *it* to you.”

4And they said, [a]“You have not cheated us or oppressed us, nor have you taken anything from any man’s hand.”

5Then he said to them, “The LORD *is* witness against you, and His anointed *is* witness this day, [a]that you have not found anything [b]in my hand.”

And they answered, “*He is* witness.”

6 Then Samuel said to the people, [a]“*It is* the LORD who raised up Moses and Aaron, and who brought your fathers up

from the land of Egypt. 7 Now therefore, stand still, that I may [a]reason with you before the LORD concerning all the [b]righteous acts of the LORD which He did to you and your fathers: 8 [a]When Jacob had gone into *Egypt, and your fathers [b]cried out to the LORD, then the LORD [c]sent Moses and Aaron, who brought your fathers out of Egypt and made them dwell in this place. 9And when they [a]forgot the LORD their God, He sold them into the hand of [b]Sisera, commander of the army of Hazor, into the hand of the [c]Philistines, and into the hand of the king of [d]Moab; and they fought against them. 10 Then they cried out to the LORD, and said,

[a]‘We have sinned, because we have forsaken the LORD [b]and served the Baals and [*]Ashtoreths; but now deliver us from the hand of our enemies, and we will serve You.’ 11And the LORD sent [*]Jerubbaal, [*]Bedan, [a]Jephthah, and [b]Samuel,[*] and

delivered you out of the hand of your enemies on every side; and you dwelt in safety. 12And when you saw that [a]Nahash king of the Ammonites came against you, [b]you said to me, ‘No, but a king shall reign over us,’ when [c]the LORD your God *was* your king.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Esther Fast — the Three-Day Fast

In Esther 4:16 we read of the fast initiated by Queen Esther. She needed favor with the king when she stood before him. The purpose of the three-day Esther fast is to seek God’s favor in the time of crisis. Are you in trouble? Are your finances in a state of crisis? One biblical reason to fast is when there is trouble in your life.

When trouble and great crisis come, we should not fall to pieces or collapse. We don’t back down when the enemy comes in. We rise up like a flood, come right back at him, and say: “You think you are bringing a crisis to me. You meant this crisis for my evil, but God is going to turn it around for my good, and this crisis is going to become a blessing.” If you are in a crisis; if you are in trouble; if the crisis of depression, hopelessness, or bankruptcy is threatening, give God a chance. God will turn that crisis and deliver you, just as He delivered

Paul in Acts 9.[*]

[13] “Now therefore, [a]here is the king [b]whom you have chosen *and* whom you have desired. And take note, [c]the LORD has set a king over you.

---

[*] Jer Fra *Fas* 3–4.

14 If you [a]fear the LORD and serve Him and obey His voice, and do not rebel against the commandment of the LORD, then both you and the king who reigns over you will continue following the LORD your God. 15 However,

if you do [a]not obey the voice of the LORD, but [b]rebel against the commandment of the LORD, then the hand of the LORD will be against you, as *it was* against your fathers.

16 “Now therefore, [a]stand and see this great

thing which the LORD will do before your eyes: 17*Is* today not the [a]wheat harvest? [b]I will call to the LORD, and He will send thunder and [c]rain, that you may perceive and see that [d]your wickedness *is* great, which you have done in the sight of the LORD, in asking a king for yourselves.”

18So Samuel called to the LORD, and the LORD sent thunder and rain that day; and [a]all the people greatly feared the LORD and Samuel.

[19] And all the people said to Samuel, [a] “Pray for your servants to the LORD your God, that we may not die; for we have added to all our sins the evil of asking a king for ourselves.”

[20] Then Samuel said to

the people, “Do not fear. You have done all this wickedness; [a]yet do not turn aside from following the LORD, but serve the LORD with all your heart. 21And [a]do not turn aside; [b]for *then you would go* after empty things which cannot profit or deliver, for they *are* nothing. [22]For [a]the LORD will not forsake [b]His people, [c]for His great name's sake, because [d]it has pleased the LORD to make you His people. [23]Moreover, as for me, far be it from me that I should sin against the LORD [a]in ceasing to pray for you; but [b]I will teach you the [c]good and the right way. 24 [a]Only fear the LORD, and serve Him in truth with all your heart; for

[b]consider what [c]great things He has done for you. 25But if you still do wickedly, [a]you shall be swept away, [b]both you and your king.”

1 Samuel 13

Saul’s Unlawful Sacrifice

1Saul [*]reigned one year; and when he had reigned two years over Israel, 2 Saul chose for himself three thousand *men* of Israel. Two thousand were with Saul in [a]Michmash and in the mountains of Bethel, and a thousand were with [b]Jonathan in [c]Gibeah of Benjamin. The rest of the people he sent away, every man to his tent.

[3]And Jonathan attacked [a]the garrison of the Philistines that *was* in [b]Geba, and the Philistines heard *of it.* Then Saul blew the trumpet throughout all the land, saying, “Let the Hebrews

hear!”
[4]Now all Israel heard it said *that* Saul had attacked a garrison of the Philistines, and *that* Israel had also become *an abomination to the Philistines. And the people were called together to Saul at Gilgal.

[5]Then the Philistines

gathered together to fight with Israel, [*]thirty thousand chariots and six thousand horsemen, and people [a]as the sand which *is* on the seashore in multitude. And they came up and encamped in Michmash, to the east of [b]Beth Aven. 6When the men of Israel saw that they were in danger (for the people were distressed), then the people [a]hid in caves, in thickets, in rocks, in holes, and in pits. 7And *some of* the Hebrews crossed over the Jordan to the

[a]land of Gad and Gilead.

As for Saul, he *was* still in Gilgal, and all the people followed him trembling. 8 [a]Then he waited seven days, according to the time set by Samuel. But Samuel did not come to Gilgal; and the people were scattered from him. [9]So Saul said, “Bring a burnt offering and peace offerings here to me.” And he offered the burnt offering. [10]Now it happened, as soon as he had finished presenting the burnt offering, that Samuel came;

and Saul went out to meet him, that he might *greet him.

[11]And Samuel said, “What have you done?”

Saul said, “When I saw that the people were scattered from me, and *that* you did not come within the days appointed, and *that* the Philistines gathered together at Michmash, [12]then I said, ‘The Philistines will now come down on me at Gilgal, and I have not made supplication to the LORD.’ Therefore I felt compelled, and offered a burnt offering.”

[13]And Samuel said

to Saul, [a]“You have done foolishly. [b]You have not kept the commandment of the LORD your God, which He commanded you. For now the LORD would have established your kingdom over Israel forever. 14 [a]But now your kingdom shall not continue.

[b]The LORD has sought for Himself a man [c]after His own heart, and the LORD has commanded him *to be* commander over His people, because you have [d]not kept what the LORD commanded you.”

15Then Samuel arose and went up from

Gilgal to Gibeah of *Benjamin. And Saul numbered the people present with him, [a]about six hundred men.

No Weapons for the Army

16 Saul, Jonathan his son, and the people present with them remained in *Gibeah of Benjamin. But the Philistines

encamped in Michmash. 17Then raiders came out of the camp of the Philistines in three companies. One company turned onto the road to [a]Ophrah, to the land of Shual, 18another company turned to the road *to* [a]Beth Horon, and another company turned *to* the road of the border that overlooks the Valley of [b]Zeboim toward the wilderness.

[19]Now [a]there was no blacksmith to be found throughout all the land of Israel, for the Philistines said, “Lest the Hebrews make swords or

spears.” [20]But all the Israelites would go down to the Philistines to sharpen each man’s plowshare, his mattock, his ax, and his sickle; [21]and the charge for a sharpening was a *pim for the plowshares, the mattocks, the forks, and the axes, and to set the points of the goads. [22]So it came about, on the day of battle, that [a]there was neither sword nor spear found in the hand of any of the people who *were* with Saul and Jonathan.

But they were found with Saul and Jonathan his son.

[23] [a]And the garrison of the Philistines went out to the pass of Michmash.

1 Samuel 14

Jonathan Defeats the Philistines

[1]Now it happened one day that Jonathan the son

of Saul said to the young man who [*]bore his armor, “Come, let us go over to the Philistines’ garrison that *is* on the other side.” But he did not tell his father. [2]And Saul was sitting in the outskirts of [a]Gibeah under a pomegranate tree which *is* in Migron. The people who *were* with him *were* about six hundred men. 3 [a]Ahijah the son of Ahitub, [b]Ichabod’s brother, the son of Phinehas, the son of Eli, the LORD’s priest in Shiloh, was [c]wearing an ephod. But the people did not know that Jonathan had gone.

4Between the passes, by which Jonathan sought to go over [a]to the Philistines’ garrison, *there was* a sharp rock on one side and a sharp rock on the other side. And the name of one *was* Bozez, and the name of the other Seneh. [5]The front of one faced northward opposite Michmash, and the other southward opposite Gibeah.

[6]Then Jonathan said to the young man who bore his armor,

“Come, let us go over to the garrison of these [a]uncircumcised; it may be that the LORD will work for us. For nothing restrains the LORD [b]from saving by many or by few.”

7So his armorbearer said to him, “Do all that is in your heart. Go then; here I am with you, according to your heart.”

[8]Then Jonathan said, “Very well, let us cross over to *these* men, and we will show ourselves to them. [9]If they say thus to us, ‘Wait until

we come to you,’ then we will stand still in our place and not go up to them. [10]But if they say thus, ‘Come up to us,’ then we will go up. For the LORD has delivered them into our hand, and

[a]this *will be* a sign to us.”

[11]So both of them showed themselves to the garrison of the Philistines. And the Philistines said, “Look, the Hebrews are coming out of the holes where they have [a]hidden.” [12]Then the men of the

garrison called to Jonathan and his armorbearer, and said, “Come up to us, and we will *show you something.”

Jonathan said to his armorbearer, “Come up after me, for the LORD has delivered them into the hand of Israel.” [13]And Jonathan climbed up on his hands and knees with his armorbearer after him; and they [a]fell before Jonathan. And as he came after him, his armorbearer killed them. [14]That first slaughter which Jonathan and his armorbearer made was about twenty men within about [*]half an acre of land.

15 And [a]there was [*]trembling in the camp, in the field, and among all the people. The garrison and [b]the raiders also trembled; and the earth quaked, so that it was [c]a very great trembling.

16Now the watchmen of Saul in Gibeah of Benjamin looked, and *there* was the multitude, melting away; and they [a]went here and there. 17Then Saul said to the people who *were* with him, “Now call the roll and see who has gone from us.” And when they had called the roll, surprisingly, Jonathan and his armorbearer *were* not *there.* [18]And Saul said to Ahijah, “Bring the *ark of God here” (for at that time the ark of God was with the children of Israel). 19Now it happened, while Saul [a]talked to the priest, that the noise which *was* in the camp of the Philistines continued to increase; so Saul said to the priest, “Withdraw your hand.” 20Then Saul and all the people who *were* with him assembled, and they went to the battle; and indeed [a]every man's sword was against his neighbor, *and there was* very great confusion. 21Moreover the Hebrews *who* were with the Philistines before that time, who went up with them into the camp *from the* surrounding *country,* they also joined the Israelites who *were* with Saul and Jonathan. 22Likewise all the men of Israel who [a]had hidden in the mountains of Ephraim, *when* they heard that the Philistines fled, they also followed hard after them in the battle. 23[a]So the LORD saved Israel that day, and the battle shifted [b]to Beth Aven.

Saul's Rash Oath

24And the men of Israel were distressed that day, for Saul had [a]placed the people under oath, saying, “Cursed *is* the man who eats *any* food until evening, before I have taken vengeance on my enemies.” So none of the people tasted food. 25 [a]Now all *the people* of the land came to a forest; and there was [b]honey on the ground. 26And when the people had come into the woods, there was the honey, dripping; but no one put his hand to his mouth, for the people feared the oath. 27But Jonathan had not heard his father charge the people with the oath; therefore he stretched out the end of1 the rod that *was* in his hand and dipped it in a honeycomb, and put his hand to his mouth; and his *countenance brightened.

[28]Then one of the people said, "Your father strictly charged the people with an oath, saying, 'Cursed *is* the man who eats food this day.' " And the people were faint.

[29]But Jonathan said, "My father has troubled the land. Look

now,
how
my
countenance
has
brightened
because
I
tasted
a
little
of
this
honey.
30 How
much
better
if the
people
had
eaten
freely
today
of
the
spoil
of
their
enemies
which
they
found!
For
now
would
there
not
have
been
a

much greater slaughter among the Philistines?”

[31]Now they had *driven back the Philistines that day from Michmash to Aijalon. So the people were very faint. [32]And the people rushed on the *spoil, and took sheep, oxen, and calves, and slaughtered

them on the ground; and the people ate *them* [a]with the blood. 33Then they told Saul, saying, “Look, the people are sinning against the LORD by eating with the blood!”

So he said, “You have dealt treacherously; roll a large stone to me this day.” [34]Then Saul said, “Disperse yourselves among the people, and say to them, ‘Bring me here every man’s ox and every man’s sheep, slaughter *them* here, and eat; and do not sin against the LORD by eating with the blood.' " So every one of the people brought his ox with him that night, and slaughtered *it* there. 35Then Saul [a]built an altar to the LORD. This was the first altar that he built to the LORD.

36Now

Saul said, “Let us go down after the Philistines by night, and plunder them until the morning light; and let us not leave a man of them.”

And they said, “Do whatever seems good to you.”

Then the priest said, “Let

us draw near to God here.”

37So Saul [a]asked counsel of God, “Shall I go down after the Philistines? Will You deliver them into the hand of Israel?” But [b]He did not answer him that day. 38And Saul said, [a]“Come over here, all you chiefs of the people, and know and see what this sin was today. [39]For a1font>*as* the LORD lives, who saves Israel, though it be in Jonathan my son, he shall surely die.” But not a man among all the people answered him. [40]Then he said to all Israel, “You be on one side, and my son Jonathan and I will be on the other side.” And the people said to Saul, “Do what seems good to you.”

[41]Therefore Saul said to

the LORD God of Israel, [a]“Give[*] a perfect *lot.*” [b]So Saul and Jonathan were taken, but the people escaped. 42And Saul said, “Cast *lots* between my son Jonathan and me.” So Jonathan was taken. 43Then Saul said to Jonathan, [a]“Tell me what you have done.”

And Jonathan told him, and said, [b]“I only tasted a little honey with the end of the rod that *was* in my hand. So now I must die!”

44 Saul answered, [a]“God do so and more also;

[b]for you shall surely die, Jonathan.”

45 But the people said to Saul, “Shall Jonathan die, who has accomplished this great deliverance in Israel? Certainly not! [a]*As* the LORD lives, not one hair of his head shall fall to the ground,

for he has worked [b]with God this day.” So the people rescued Jonathan, and he did not die.

[46]Then Saul returned from pursuing the Philistines, and the Philistines went to their own place.

Saul’s Continuing Wars

[47]So Saul established his

sovereignty over Israel, and fought against all his enemies on every side, against Moab, against the people of [a]Ammon, against Edom, against the kings of [b]Zobah, and against the Philistines. Wherever he turned, he [*]harassed *them.* 48 And he gathered an army and [a]attacked[*] the Amalekites, and delivered Israel from the hands of those who plundered them.

49 [a]The sons of Saul were Jonathan, [*]Jishui, and Malchishua. And the names of his two daughters *were these:* the name of the firstborn Merab,

and the name of the younger [b]Michal. 50The name of Saul’s wife *was* Ahinoam the daughter of Ahimaaz. And the name of the commander of his army *was* Abner the son of Ner, Saul’s [a]uncle. 51[a]Kish *was* the father of

Saul, and Ner the father of Abner *was* the son of Abiel.

52Now there was fierce war with the Philistines all the days of Saul. And when Saul saw any strong man or any valiant man, [a]he took him for himself.

1 Samuel 15

Saul Spares King Agag

[1]Samuel also said to Saul, [a]“The LORD sent me to anoint you king over His people, over Israel. Now therefore, heed the voice of the words of the LORD. [2]Thus says

the LORD of hosts: ‘I will punish Amalek *for* what he did to Israel, [a]how he ambushed him on the way when he came up from Egypt. 3Now go and [a]attack* Amalek, and [b]utterly destroy all that they have, and do not spare them. But kill both man and woman, infant and nursing child, ox and sheep, camel and donkey.' ”

[4]So Saul gathered the people together and numbered them in Telaim, two hundred thousand foot soldiers and ten thousand

men of Judah. 5And Saul came to a city of Amalek, and lay in wait in the valley.

6Then Saul said to [a]the Kenites, [b]“Go, depart, get down from among the Amalekites, lest I destroy you with them. For [c]you showed kindness to all the children of Israel when they came up out of Egypt.” So the Kenites departed from among the Amalekites. 7[a]And Saul attacked the Amalekites, from [b]Havilah all the way to [c]Shur, which is east of Egypt. 8[a]He also took

Agag king of the Amalekites alive, and [b]utterly destroyed all the people with the edge of the sword. [9]But Saul and the people [a]spared Agag and the best of the sheep, the oxen, the fatlings, the lambs, and all *that* *was* good, and were unwilling to utterly destroy them. But everything despised and worthless, that they utterly destroyed.

Saul Rejected as King

10Now the word of the LORD came to Samuel, saying, 11[a]“I greatly regret that I have set up

Saul *as* king, for he has [b]turned back from following Me, [c]and has not performed My commandments.” And it [d]grieved Samuel, and he cried out to the LORD all night. [12]So when Samuel rose early in the morning to meet

Saul, it was told Samuel, saying, “Saul went to [a]Carmel, and indeed, he set up a monument for himself; and he has gone on around, passed by, and gone down to Gilgal.” 13Then Samuel went to Saul, and Saul said to him, [a]“Blessed *are* you of the LORD! I have performed the commandment of the LORD.”

14 But Samuel said, “What then *is* this bleating of the sheep in my ears, and the lowing of the oxen which I hear?”

15 And Saul

said, “They have brought them from the Amalekites; [a]for the people spared the best of the sheep and the oxen, to sacrifice to the LORD your God; and the rest we have utterly destroyed.”

16Then Samuel said to Saul, “Be

quiet! And I will tell you what the LORD said to me last night.”

And he said to him, “Speak on.”

17So Samuel said, [a]“When you *were* little in your own eyes, *were* you not head of the tribes of Israel?

And did not the LORD anoint you king over Israel? 18Now the LORD sent you on a mission, and said, ‘Go, and utterly destroy the sinners, the Amalekites, and fight against them until they are *consumed.’ 19Why then did you not obey the voice of the LORD? Why did you swoop down on the *spoil, and do evil in the sight of the LORD?”

20And Saul said to Samuel, [a]“But I have obeyed the voice of the LORD, and gone on

the mission on which the LORD sent me, and brought back Agag king of Amalek; I have utterly destroyed the Amalekites.
21[a]But the people took of the plunder, sheep and oxen, the best of the things which should have been

utterly destroyed, to sacrifice to the LORD your God in Gilgal.”
[22]So Samuel said:

[a]“Has the LORD *as great* delight in burnt offerings and sacrifices,

As in obeying the voice of the LORD?

Behold, [b]to obey is

better than sacrifice,

And to heed than the fat of rams.

[23]For rebellion *is* *as* the sin of [*]witchcraft,

And stubbornness *is* *as* iniquity and idolatry.

Because you have rejected the word of the LORD,

[a]He

also has rejected you from *being* king.”

24[a]Then Saul said to Samuel, “I have sinned, for I have transgressed the commandment of the LORD and your words, because I [b]feared the people and obeyed their voice. 25Now therefore, please pardon my sin, and return with me, that I may worship the LORD.”

26 But Samuel said to Saul, “I will not return with you, [a]for you have rejected the word of the LORD, and the LORD has rejected you from being

king over Israel.”

27[1]And as Samuel turned around to go away, [a]*Saul* seized the edge of his robe, and it tore. 28So Samuel said to him, [a]“The LORD has torn the kingdom of Israel from you today, and has given it to a neighbor of yours, *who is* better than you. [29]And also the Strength of Israel [a]will not lie nor relent. For He *is* not a man, that He should relent.”

[30]Then he said, “I have sinned; *yet* [a]honor me now, please, before

the elders of my people and before Israel, and return with me, that I may worship the LORD your God.” [31]So Samuel turned back after Saul, and Saul worshiped the LORD.

[32]Then Samuel said, “Bring Agag king of the Amalekites

here to me.” So Agag came to him cautiously.

And Agag said, “Surely the bitterness of death is past.”

33But Samuel said, [a]“As your sword has made women childless, so shall your mother be childless among women.” And Samuel hacked

Agag in pieces before the LORD in Gilgal.

34Then Samuel went to [a]Ramah, and Saul went up to his house at [b]Gibeah of Saul. 35And [a]Samuel went no more to see Saul until the day of his death. Nevertheless Samuel mourned for Saul, and the LORD regretted that He had made Saul king over Israel.

1 Samuel 16

David Anointed King

[1] Now the LORD said to Samuel, [a]“How long will you mourn for Saul, seeing I have rejected him from

reigning over Israel? [b]Fill your horn with oil, and go; I am sending you to [c]Jesse the Bethlehemite. For [d]I have [*]provided Myself a king among his sons.”

[2]And Samuel said, “How can I go? If Saul hears *it,* he will kill me.”

But the LORD said, “Take a heifer with you, and say, [a]‘I have come to sacrifice to the LORD.’ 3Then invite Jesse to the sacrifice, and I will show you what you shall do; you shall anoint for Me the one I name to you.”

[4] So Samuel did what the LORD said, and went to Bethlehem. And the elders of the town [a]trembled at his coming, and said, [b]“Do you come peaceably?”

[5] And he said, “Peaceably; I have come to sacrifice to

the LORD. [a]Sanctify[*] yourselves, and come with me to the sacrifice.” Then he consecrated Jesse and his sons, and invited them to the sacrifice.

6 So it was, when they came, that he looked at [a]Eliab and [b]said, “Surely the LORD’s

anointed *is* before Him!”

7 But the LORD said to Samuel, [a]“Do not look at his appearance or at his physical stature, because I have [*]refused him. [b]For[*] *the LORD does* not *see* as man sees; for man [c]looks at the outward appearance,

but the LORD looks at the [d]heart.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Daniel Fast—a Twenty-One-Day Fast

In Daniel 10:2–3 we read of the fast of Daniel—a fast of only vegetables, fruit, and water. It includes no bread of any type, no pasta, and no meat. This will be one of the greatest, healthiest things you will ever do. Your entire system will be healthier. But why do people do the twenty-one-day fast? What result did Daniel get? Daniel received a vision from God during his fast. Just as God had a vision for Daniel, God has a vision for your life, a dream for you. He has ordered your life from beginning to end—whom you should marry, what you should do, and where you are supposed to go. He knows your every step—all of it. God has the vision. But notice that the twenty-one-day fast is what caused understanding of the vision to Daniel. It brought about the know-how to make the vision happen. Through a Daniel fast, God will give you understanding of the visio1n He has given to you.*

[8]So Jesse called Abinadab, and made him pass before Samuel. And he said, “Neither has the LORD chosen this one.” [9]Then Jesse made Shammah pass by. And he said, “Neither

---

*
Jer
Fra
Fas
4–
5.

has the LORD chosen this one.” [10]Thus Jesse made seven of his sons pass before Samuel. And Samuel said to Jesse, “The LORD has not chosen these.” [11]And Samuel said to Jesse, “Are all the young men here?” Then he said, “There remains yet the youngest, and there he is, keeping the [a]sheep.”

And Samuel said to Jesse, “Send and bring him. For we will not [*]sit down till he comes here.” [12]So he sent and brought him in. Now he *was* [a]ruddy, [b]with [*]bright eyes, and good-looking. [c]And the LORD said, “Arise, anoint him; for this *is* the one!” 13Then Samuel took the horn of oil and anointed him in the midst of his brothers; and [a]the Spirit of the LORD came upon David from that day forward. So Samuel arose and went to Ramah.

A Distressing Spirit Troubles Saul

14 [a]But the Spirit of the LORD departed from Saul, and [b]a distressing spirit from the LORD troubled him. 15 And Saul’s servants

said
to
him,
“Surely,
a
distressing
spirit
from
God
is
troubling
you.
[16]Let
our
master
now
command
your
servants,
who
are
before
you,
to
seek
out a
man
who
is a
skillful
player
on
the
harp.
And
it
shall
be
that
he

will [a]play it with his hand when the *distressing spirit from God is upon you, and you shall be well.”

[17] So Saul said to his servants, *“Provide me now a man who can play well, and bring *him* to me.”

[18]Then one of the servants answered and said, “Look, I have seen a son of Jesse the Bethlehemite, *who is* skillful in playing, a mighty man of valor, a man of war, prudent in speech, and a handsome person; and [a]the

LORD *is* with him.”

19Therefore Saul sent messengers to Jesse, and said, “Send me your son David, who *is* with the sheep.” 20And Jesse [a]took a donkey *loaded with* bread, a skin of wine, and a young goat, and sent *them* by his son David to Saul. 21So David came to Saul and [a]stood before him. And he loved him greatly, and he became his armorbearer. 22Then Saul sent to Jesse, saying, “Please let David stand before me, for he has found favor in my sight.” [23]And so it was, whenever the spirit from God was upon Saul, that David would take a harp and play *it* with his hand. Then Saul would become refreshed and well, and the distressing spirit would depart from him.

1 Samuel 17

David and Goliath

[1]Now the Philistines gathered their armies together to battle, and were gathered at [a]Sochoh, which *belongs* to Judah; they encamped between Sochoh and Azekah, in Ephes Dammim. [2]And Saul

and
the
men
of
Israel
were
gathered
together,
and
they
encamped
in
the
Valley
of
Elah,
and
drew
up in
battle
array
against
the
Philistines.
[3]The
Philistines
stood
on a
mountain
on
one
side,
and
Israel
stood
on a
mountain
on
the
other

side, with a valley between them.

4And a champion went out from the camp of the Philistines, named [a]Goliath, from [b]Gath, whose height *was* six cubits and a span. 5*He had* a bronze helmet on his head, and he *was* *armed with a coat of mail, and the weight of the coat *was* five thousand shekels of bronze. [6]And *he had* bronze armor on his legs and a bronze javelin between his shoulders. [7]Now the staff of his spear *was* like a weaver’s beam, and his iron spearhead *weighed* six hundred shekels; and a shield-bearer went before h1im. [8]Then he stood and cried out to the armies of Israel, and said to them, “Why have you come out to line up for battle? *Am* I not a Philistine, and you the [a]servants of Saul? Choose a man for yourselves, and let him come down to me. 9 If he is able to fight with me and kill me, then we will be your servants. But if I prevail against him and kill him, then you shall be our servants and [a]serve us.” 10And the Philistine said, [a]“I defy the armies of Israel this day; give me a man, that we may fight together.” 11When Saul and all Israel heard these words of the Philistine, they were dismayed and greatly afraid.

1 Sam. 17:1–4

I bind and rebuke every Goliath that would challenge me in the valley.

12Now David *was* [a]the

son of that [b]Ephrathite of Bethlehem Judah, whose name *was* Jesse, and who had [c]eight sons. And the man was old, advanced *in years,* in the days of Saul. [13]The three oldest sons of Jesse had gone to follow Saul to the battle. The [a]names of his three sons who went to the battle *were* Eliab the firstborn, next to him Abinadab, and the third Shammah. [14]David *was* the youngest. And the three oldest followed Saul. [15]But David occasionally went and returned from Saul [a]to feed his father’s sheep at Bethlehem.

16And the Philistine drew near and presented himself forty days, morning and evening.

17Then Jesse said to his son David, “Take now for your brothers an ephah of this dried *grain* and these ten loaves, and run to your brothers at the camp. 18And carry these ten cheeses to the captain of *their* thousand, and [a]see how your brothers fare, and bring back news of them.” 19Now Saul and they and all the men of Israel *were* in the Valley of Elah, fighting with the Philistines.

[20]So David rose early in the morning, left the sheep with a keeper, and took *the things* and went as Jesse had commanded

him. And he came to the camp as the army was going out to the fight and shouting for the battle. [21]For Israel and the Philistines had drawn up in battle array, army against army. [22]And David left his supplies in the hand of the supply keeper, ran to the army, and came and greeted his brothers. [23]Then as he talked with them, there was the champion, the Philistine of Gath, Goliath by name, coming up from the armies of the Philistines;

and he spoke [a]according to the same words. So David heard *them.* 24And all the men of Israel, when they saw the man, fled from him and were dreadfully afraid. 25So the men of Israel said, “Have you seen this

man
who
has
come
up?
Surely
he
has
come
up to
defy
Israel;
and
it
shall
be
that
the
man
who
kills
him
the
king
will
enrich
with
great
riches,
[a]will
give
him
his
daughter,
and
give
his
father's
house
exemption

from taxes in Israel.”

[26]Then David spoke to the men who stood by him, saying, “What shall be done for the man who kills this Philistine and takes away [a]the reproach from Israel? For who *is* this [b]uncircumcised Philistine, that

he should [c]defy the armies of [d]the living God?”

27 And the people answered him in this manner, saying, [a]“So shall it be done for the man who kills him.”

28 Now Eliab his oldest brother heard when he spoke to the men;

and Eliab’s [a]anger was aroused against David, and he said, “Why did you come down here? And with whom have you left those few sheep in the wilderness? I know your pride and the insolence of your heart, for you have come down to see the battle.”

29And David said, “What have I done now? [a]*Is*[*] *there* not a cause?” 30Then he turned from him toward another and [a]said the same thing; and these people answered him as the first ones *did.*

31Now when the words which David spoke were heard, they reported *them* to Saul; and he sent for him. 32Then David said to Saul, [a]“Let no man’s heart fail because of him; [b]your servant will go and fight with this Philistine.”

[33]And Saul said to David, [a]“You are not able to go against this Philistine to fight with him; for you *are* a youth, and he a man of war from his youth.”

[34]But David said to Saul, “Your servant used to

keep
his
father’s
sheep,
and
when
a
[a]lion
or a
bear
came
and
took
a
lamb
out
of
the
flock,
35I
went
out
after
it
and
struck
it,
and
delivered
the
lamb
from
its
mouth;
and
when
it
arose
against
me, I

caught *it* by its beard, and struck and killed it. [36]Your servant has killed both lion and bear; and this uncircumcised Philistine will be like one of them, seeing he has defied the armies of the living God.” [37]Moreover David said,

[a]“The LORD, who delivered me from the paw of the lion and from the paw of the bear, He will deliver me from the hand of this Philistine.”

And Saul said to David, [b]“Go, and the LORD be with you!”

[38]So Saul clothed David with his *armor, and he put a bronze helmet on his head; he also clothed him with a coat of mail. [39]David fastened his sword to his armor and tried to walk, for he had not tested

them. And David said to Saul, “I cannot walk with these, for I have not tested *them.*” So David took them off.

[40]Then he took his staff in his hand; and he chose for himself five smooth stones from the brook,

and
put
them
in a
shepherd’s
bag,
in a
pouch
which
he
had,
and
his
sling
was
in
his
hand.
And
he
drew
near
to
the
Philistine.
[41]So
the
Philistine
came,
and
began
drawing
near
to
David,
and
the
man
who
bore

the shield *went* before him. 42And when the Philistine looked about and saw David, he [a]disdained* him; for he was *only* a youth, [b]ruddy and good-looking. 43So the Philistine [a]said to David, “*Am* I a dog, that you come to me with sticks?” And the Philistine cursed David by his gods. 44And the Philistine [a]said to David, “Come to me, and I will give your flesh to the birds of the air and the beasts of the field!”

45Then David said

to the Philistine, “You come to me with a sword, with a spear, and with a javelin. [a]But I come to you in the name of the LORD of hosts, the God of the armies of Israel, whom you have

[b]defied. 46This day the LORD will deliver you into my hand, and I will strike you and take your head from you. And this day I will give [a]the carcasses of the camp of the Philistines to the birds of the air

and the wild beasts of the earth, [b]that all the earth may know that there is a God in Israel. [47]Then all this assembly shall know that the LORD [a]does not save with sword and spear; for [b]the battle *is* the LORD’s, and He will give you into our hands.”

[48]So it was, when the Philistine arose and came and drew near to meet David, that David hurried and [a]ran toward the army to meet the Philistine. [49]Then David put his hand

in
his
bag
and
took
out a
stone;
and
he
slung
it
and
struck
the
Philistine
in
his
forehead,
so
that
the
stone
sank
into
his
forehead,
and
he
fell
on
his
face
to
the
earth.
[50]So
David
prevailed
over
the

Philistine with a [a]sling and a stone, and struck the Philistine and killed him. But *there was* no sword in the hand of David. 51 Therefore David ran and stood over the Philistine, took his [a]sword and drew it out of its sheath and killed him, and cut off his head with it.

And when the Philistines saw that their champion was dead, [b]they fled. 52Now the men of Israel and Judah arose and shouted, and pursued the Philistines as far as the entrance of *the valley and to the gates of Ekron. And the wounded of the Philistines fell along the road to [a]Shaaraim, even as far as Gath and Ekron. 53Then the children of Israel returned from chasing the Philistines, and they plundered their tents. [54]And David took the head of the Philistine and brought it to Jerusalem, but he put his armor in his tent.

1 Sam. 17:53

I spoil the tents of the enemy in the

name of Jesus.

55 When Saul saw David going out against the Philistine, he said to [a]Abner, the commander of the army, “Abner, [b]whose son *is* this youth?”

And Abner said, “As your soul lives, O king, I do not know.”

56So the king said, “Inquire whose son this young man *is.*”

57Then, as David returned from the slaughter of the Philistine, Abner took him and brought him before Saul [a]with the head of the Philistine in his hand. 58And Saul said to him, "Whose son *are* you, young man?"

So David answered, [a]"*I am* the son of your servant Jesse the Bethlehemite."

1 Samuel 18

Saul Resents David

1 Now when he had finished speaking to Saul, [a]the [*]soul of

Jonathan was knit to the soul of David, [b]and Jonathan loved him as his own soul. 2Saul took him that day, [a]and would not let him go home to his father's house anymore. 3Then Jonathan and David made a [a]covenant, because he loved him as his own soul. [4]And Jonathan took off the robe that *was* on him and gave it to David, with his armor, even to his sword and his bow and his belt.

[5]So David went out wherever

Saul sent him, *and* *behaved wisely. And Saul set him over the men of war, and he was accepted in the sight of all the people and also in the sight of Saul’s servants. 6Now it had happened as they were coming *home,* when David was returning from the slaughter of the [*]Philistine, that [a]the women had come out of all the cities of Israel, singing and dancing, to meet King Saul, with tambourines, with joy, and with musical instruments. 7 So the women [a]sang as they danced, and said:

[b]“Saul has slain his thousands,

And David [1]his ten thousands.”

[8]Then Saul was very angry, and the saying [a]displeased him; and he said, “They have ascribed to David ten thousands,

and to me they have ascribed *only* thousands. Now *what* more can he have but [b]the kingdom?” [9]So Saul [*]eyed David from that day forward.

[10]And it happened on the next day that [a]the distressing spirit from God came upon

Saul, [b]and he prophesied inside the house. So David [c]played *music* with his hand, as at other times; [d]but *there was* a spear in Saul's hand. [11]And Saul [a]cast the spear, for he said, "I will pin David to the wall!"

But David escaped his presence twice.

12 Now Saul was [a]afraid of David, because [b]the LORD was with him, but had [c]departed from Saul. 13 Therefore Saul removed him from [*]his presence, and made him his captain over a thousand; and [a]he

went out and came in before the people. 14And David behaved wisely in all his ways, and [a]the LORD *was* with him. 15Therefore, when Saul saw that he behaved very wisely, he was afraid of him. 16But [a]all Israel and Judah loved David, because he went out and came in before them.

David Marries Michal

17Then Saul said to David, “Here is my older daughter Merab; [a]I will give her to you as a wife. Only be valiant for me, and fight

[b]the LORD’s battles.” For Saul thought, [c]“Let my hand not be against him, but let the hand of the Philistines be against him.”

18So David sa1id to Saul, [a]“Who *am* I, and what *is* my life *or* my father’s family in Israel, that I should be son-in-law to the king?” 19But it happened at the time when Merab, Saul’s daughter, should have been given to David, that she was given to [a]Adriel the [b]Meholathite as a wife.

20[a]Now Michal, Saul’s daughter,

loved David. And they told Saul, and the thing pleased him. [21]So Saul said, “I will give her to him, that she may [*]be a snare to him, and that [a]the hand of the Philistines may be against him.” Therefore Saul said to David a second time, [b]“You shall be my son-in-law today.”

22And Saul commanded his servants, “Communicate with David secretly, and say, ‘Look, the king has delight in you, and all his servants love you. Now therefore, become the king's son-in-law.' "

[23]So Saul's servants spoke those words in the hearing of David. And David said, "Does it seem to you *a* light *thing* to be a king's son-in-law, seeing I *am* a poor and

lightly esteemed man?” [24]And the servants of Saul told him, saying, [*]“In this manner David spoke.”

[25]Then Saul said, “Thus you shall say to David: ‘The king does not desire any [a]dowry but one hundred foreskins of the Philistines, to

take [b]vengeance on the king’s enemies.’ ” But Saul [c]thought to make David fall by the hand of the Philistines. [26]So when his servants told David these words, it pleased David well to become the king’s son-in-law. Now [a]the days had not expired; 27therefore David arose and went, he and [a]his men, and killed two hundred men of the Philistines. And [b]David brought their foreskins, and they gave them in full count to the king, that he might become the king's son-in-law. Then Saul gave him Michal his daughter as a wife.

[28]Thus Saul saw and knew that the LORD *was* with David, and *that* Michal, Saul's daughter, loved him; [29]and Saul [1]was still more afraid of David.

So Saul became David’s enemy [*]continually. 30Then the princes of the Philistines [a]went out *to war*. And so it was, whenever they went out, *that* David [b]behaved more wisely than all the servants of Saul, so that his name became highly esteemed.

1 Samuel 19

Saul Persecutes David

1Now Saul spoke to Jonathan his son and to all his servants, that they should kill [a]David; but Jonathan, Saul’s son, [b]delighted greatly in David. 2So Jonathan told David, saying, “My father Saul

seeks
to
kill
you.
Therefore
please
be
on
your
guard
until
morning,
and
stay
in a
secret
place
and
hide.
[3]And
I will
go
out
and
stand
beside
my
father
in
the
field
where
you
are,
and I
will
speak
with
my
father

about you. Then what I observe, I will tell [a]you.”

4 Thus Jonathan [a]spoke well of David to Saul his father, and said to him, “Let not the king [b]sin against his servant, against David, because he has not sinned against you,

and because his works *have been* very good toward you. 5For he took his [a]life in his hands and [b]killed the Philistine, and [c]the LORD brought about a great deliverance for all Israel. You saw *it* and rejoiced. [d]Why then will you [e]sin against innocent blood, to kill David without a cause?”

6So Saul heeded the voice of Jonathan, and Saul swore, “*As* the LORD lives, he shall not be killed.” 7Then Jonathan called David, and Jonathan told him all these things. So Jonathan brought David to Saul, and he was in his presence [a]as in times past.

8 And there was war again; and David went out and fought with the Philistines, [a]and struck them with a mighty blow, and

they fled from him.

9 Now [a]the distressing spirit from the LORD came upon Saul as he sat in his house with his spear in his hand. And David was playing *music* with *his* hand. 10 Then Saul sought to pin David to

the wall with the spear, but he slipped away from Saul’s presence; and he drove the spear into the wall. So David fled and escaped that night.

11[a]Saul also sent messengers to David’s house to watch him and to kill him in the morning. And Michal, David’s wife, told him, saying, “If you do not save your life tonight, tomorrow you will be killed.” [12]So Michal [a]let David down through a window. And he went and fled and escaped. [13]And

Michal took *an image and laid *it* in the bed, put a cover of goats' *hair* for his head, and covered *it* with clothes. [14]So when Saul sent messengers to take David, she said, "He *is* sick."

[15]Then Saul sent the messengers

back to see David, saying, “Bring him up to me in the bed, that I may kill him.” [16]And when the messengers had come in, there was the image in the bed, with a cover of goats’ *hair* for his head.

17 Then Saul said to Michal, “Why have you deceived me like this, and sent my enemy away, so that he has escaped?”

And Michal answered Saul, “He said to me, ‘Let me go! [a]Why should I kill you?’ ”

18 So David

fled and escaped, and went to [a]Samuel at [b]Ramah, and told him all that Saul had done to him. And he and Samuel went and stayed in Naioth. [19]Now it was told Saul, saying, “Take note, David *is* at Naioth in

Ramah!” [20]Then [a]Saul sent messengers to take David. [b]And when they saw the group of prophets prophesying, and Samuel standing *as* leader over them, the Spirit of God came upon the messengers of Saul, and they also [c]prophesied. [21]And when

Saul was told, he sent other messengers, and they prophesied likewise. Then Saul sent messengers again the third time, and they prophesied also. [22]Then he also went to Ramah, and came to the great well that *is* at Sechu. So he asked, and said, “Where *are* Samuel and David?”

And *someone* said, “Indeed *they are* at Naioth in Ramah.” [23]So he went there to Naioth in Ramah. Then [a]the Spirit of God was upon him also, and he went on and prophesied until he came to Naioth in Ramah. 24[a]And he also stripped off his clothes and prophesied before Samuel in like manner, and lay down [b]naked all that day and all that night. Therefore they say, [c]“*Is* Saul also among the prophets?”

1 Samuel 20

Jonathan’s Loyalty to David

[1]Then David fled from Naioth in Ramah, and went and said to Jonathan, “What have I done? What *is* my iniquity, and what *is* my sin before your father, that he seeks

my life?”

[2]So Jonathan said to him, “By no means! You shall not die! Indeed, my father will do nothing either great or small without first telling me. And why should my father hide this thing from me? It *is* not

so!”

[3]Then David took an oath again, and said, “Your father certainly knows that I have found favor in your eyes, and he has said, ‘Do not let Jonathan know this, lest he be grieved.’ But [a]truly, *as* the LORD

lives and *as* your soul lives, *there is* but a step between me and death.”

[4]So Jonathan said to David, “Whatever you yourself desire, I will do *it* for you.”

[5]And David said to Jonathan, “Indeed tomorrow *is* the [a]New Moon, and I should not

fail to sit with the king to eat. But let me go, that I may [b]hide in the field until the third *day* at evening. [6]If your father misses me at all, then say, ‘David earnestly asked *permission* of me that he might run over [a]to Bethlehem, his city, for *there is* a yearly sacrifice there for all the family.’ 7 [a]If he says thus: ‘*It is* well,’ your servant will be safe. But if he is very angry, be sure that [b]evil is determined

by
him.
8Therefore
you
shall
[a]deal
kindly
with
your
servant,
for
[b]you
have
brought
your
servant
into
a
covenant
of
the
LORD
with
you.
Nevertheless,
[c]if
there
is
iniquity
in
me,
kill
me
yourself,
for
why
should
you
bring
me

to your father?”

[9]But Jonathan said, “Far be it from you! For if I knew certainly that evil was determined by my father to come upon you, then would I not tell you?”

[10]Then David said to Jonathan, “Who will tell me, or

what *if* your father answers you roughly?”

[11]And Jonathan said to David, “Come, let us go out into the field.” So both of them went out into the field. [12]Then Jonathan said to David: “The LORD God of Israel *is witness!*

When I have [*]sounded out my father sometime tomorrow, *or* the third *day,* and indeed *there is* good toward David, and I do not send to you and tell you, 13 may [a]the LORD do so and much more to Jonathan. But if it pleases my father *to do* you evil, then I will report it to you and send you away, that you may go in safety. And [b]the LORD be with you as He has [c]been with my father. 14And you shall not only show me the kindness of the LORD while I still live, that I may not die; 15 but [a]you shall not *cut off your kindness from my *house forever, no, not when the LORD has cut off every one of the enemies of David from the face of the earth.” [16]So Jonathan made *a covenant* with the [*]house of David, *saying,* [a]“Let the LORD require *it* at the hand of David’s enemies.”

[17]Now Jonathan again caused David to vow, because he loved him; [a]for he

loved him as he loved his own soul. [18]Then Jonathan said to David, [a]“Tomorrow *is* the New Moon; and you will be missed, because your seat will be empty. [19]And *when* you have stayed three days, go down quickly and come to

[a]the place where you hid on the day of the deed; and remain by the stone Ezel. 20Then I will shoot three arrows to the side, as though 1I shot at a target; 21and there I will send a lad, *saying,* ‘Go, find

the arrows.' If I expressly say to the lad, 'Look, the arrows *are* on this side of you; get them and come'—then, [a]as the LORD lives, *there is* safety for you and no harm. [22]But if I say thus to the young man, ‘Look, the arrows *are* beyond you’—go your way, for the LORD has sent you away. [23]And as for [a]the matter which you and I have spoken of, indeed the LORD *be* between you and me forever.”

[24]Then David

hid in the field. And when the New Moon had come, the king sat down to eat the feast. 25Now the king sat on his seat, as at other times, on a seat by the wall. And *Jonathan arose, and Abner sat by Saul’s side, but David’s place was empty. 26Nevertheless Saul did not say anything that day, for he thought, “Something has happened to him; he *is* unclean, surely he *is* [a]unclean.” 27And it happened the next day, the second *day* of the month, that David’s place was empty. And Saul said to Jonathan his son, “Why has the son of Jesse not come to eat, either yesterday or today?”

28 So Jonathan [a]answered Saul, “David earnestly asked *permission* of me *to go* to Bethlehem.

[29]And
he
said,
‘Please
let
me
go,
for
our
family
has a
sacrifice
in
the
city,
and
my
brother
has
commanded
me
to be
there.
And
now,
if I
have
found
favor
in
your
eyes,
please
let
me
get
away
and
see
my

brothers.’ Therefore he has not come to the king’s table.”

[30]Then Saul’s anger was aroused against Jonathan, and he said to him, “You son of a perverse, rebellious *woman!* Do I not know that you have chosen the son of Jesse to

your
own
shame
and
to
the
shame
of
your
mother’s
nakedness?
[31]For
as
long
as
the
son
of
Jesse
lives
on
the
earth,
you
shall
not
be
established,
nor
your
kingdom.
Now
therefore,
send
and
bring
him
to
me,
for

he *shall surely die.”

[32]And Jonathan answered Saul his father, and said to him, [a]“Why should he be killed? What has he done?” [33]Then Saul [a]cast a spear at him to *kill him, [b]by which Jonathan k1new that it was

determined by his father to kill David.

[34]So Jonathan arose from the table in fierce anger, and ate no food the second day of the month, for he was grieved for David, because his father had treated him shamefully.

[35]And

so it was, in the morning, that Jonathan went out into the field at the time appointed with David, and a little lad *was* with him. [36]Then he said to his lad, “Now run, find the arrows which I shoot.” As the lad ran, he shot an arrow beyond him. [37]When the lad had come to the place where the arrow was which Jonathan had shot, Jonathan cried out after the lad and said, "*Is* not the arrow beyond you?" [38]And

Jonathan cried out after the lad, “Make haste, hurry, do not delay!” So Jonathan’s lad gathered up the arrows and came back to his master. [39]But the lad did not know anything. Only Jonathan and David knew of the matter.

[40]Then Jonathan gave his *weapons to his lad, and said to him, “Go, carry *them* to the city.”

[41]As soon as the lad had gone, David arose from *a place* toward the south, fell on his face to the ground,

and bowed down three times. And they kissed one another; and they wept together, but David more so. 42Then Jonathan said to David, [a]“Go in peace, since we have both sworn in the name of the LORD, saying, ‘May the

LORD be between you and me, and between your descendants and my descendants, forever.' " So he arose and departed, and Jonathan went into the city.

1 Samuel 21

David and the Holy Bread

[1]Now David came to Nob, to

Ahimelech the priest. And [a]Ahimelech was [b]afraid when he met David, and said to him, “Why *are* you alone, and no one is with you?”

2 So David said to Ahimelech the priest, “The king has ordered me on some business,

and
said
to
me,
‘Do
not
let
anyone
know
anything
about
the
business
on
which
I
send
you,
or
what
I
have
commanded
you.’
And
I
have
directed
my
young
men
to
such
and
such
a
place.
[3]Now
therefore,
what

have you on hand? Give *me* five *loaves of* bread in my hand, or whatever can be found.”

[4]And the priest answered David and said, “*There is* no [*]common bread on hand; but there is [a]holy[1*] bread, [b]if the young men

have at least kept themselves from women.”

[5]Then David answered the priest, and said to him, “Truly, women *have been* kept from us about three days since I came out. And [*]the [a]vessels of the young men are holy, and

the bread is in effect common, even though it was consecrated [b]in the vessel this day.”

[6]So the priest [a]gave him holy *bread;* for there was no bread there but the showbread [b]which had been taken from before the LORD, in

order to put hot bread *in its place* on the day when it was taken away.

7Now a certain man of the servants of Saul *was* there that day, detained before the LORD. And his name *was* [a]Doeg, an Edomite, the chief of the herdsmen who *belonged* to Saul.

[8]And David said to Ahimelech, "Is there not here on hand a spear or a sword? For I have brought neither my sword nor my weapons with me, because the king's business required haste."

9 So the priest said, “The sword of Goliath the Philistine, whom you killed in [a]the Valley of Elah, [b]there it is, wrapped in a cloth behind the ephod. If you will take that, take *it.* For *there is* no other except that one

here."

And David said, "*There is* none like it; give it to me."

David Flees to Gath

10 Then David arose and fled that day from before Saul, and went to Achish the king of Gath. 11 And [a]the servants of Achish said

to him, “*Is* this not David the king of the land? Did they not sing of him to one another in dances, saying:

> [b]‘Saul has slain his thousands,
>
> And David his ten thousands’?”

12 Now David [a]took these

words *to heart, and was very much afraid of Achish the king of Gath. [13]So [a]he changed his behavior before them, pretended *madness in their hands, *scratched on the doors of the gate, and let his saliva fall down on

his
beard.
[14]Then
Achish
said
to
his
servants,
“Look,
you
see
the
man
is
insane.
Why
have
you
brought
him
to
me?
[15]Have
I
need
of
madmen,
that
you
have
brought
this
fellow
to
play
the
madman
in
my
presence?

Shall this *fellow* come into my house?”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Self-Examination Fast — the One-Day Fast

In Leviticus 23:27, we read about a one-day fast. What is this about? There is a confirming scripture in Jeremiah 36:6; both show us that God is saying: “I want you to set aside a certain time that you fast and seek Me, and here’s the purpose for it—self-examination and consecration.” When you do this fast, you need to say: “God, I’m doing a checkup on me spiritually. How am I doing? Do I love You as I loved You when I first met You? Have I drawn closer to You this year, or have I lost my passion? Is my worship at the level You desire? Lord, I’m bringing myself to You because I really do want to be more like You, and I need a self-examination. I’m seeing some things in my life that are not like You, and I want You to help me deal with them during this fast.” The one-day fast is a fast of self-examination.[*]

---

[*] Jer Fra *Fas* 5–6.

1 Samuel 22

David's Four Hundred Men

1 David therefore departed from there and [a]escaped [b]to the cave of Adullam. So when his brothers and all his father's house heard *it,* they went down there to him. 2 [a]And

everyone *who was* in distress, everyone who *was* in debt, and everyone *who was* [*]discontented gathered to him. So he became captain over them. And there were about [b]four hundred men with him.

[3]Then David went from there to Mizpah

of [a]Moab; and he said to the king of Moab, “Please let my father and mother come here with you, till I know what God will do for me.” 4So he brought them before the king of Moab, and they dwelt with him all the time that David was in the stronghold.

[5]Now the prophet [a]Gad said to David, “Do not stay in the stronghold; depart, and go to the land of Judah.” So David departed and went into the forest of

Hereth.

Saul Murders the Priests

6 When Saul heard that David and the men who *were* with him had been discovered—now Saul was staying in [a]Gibeah under a tamarisk tree in Ramah, with his spear in his hand, and

all his servants standing about him—[7]then Saul said to his servants who stood about him, “Hear now, you Benjamites! Will the son of Jesse [a]give every one of you fields and vineyards, *and* make you all captains of thousands and captains of hundreds? 8 All of you have conspired against me, and *there is* no one who reveals to me that [a]my son has made a covenant with the son of Jesse; and *there is* not one of you who is sorry for me or reveals to me that my son has stirred up my servant against me, to lie in wait, as *it is* this day.”

[9]Then answered [a]Doeg the Edomite, who was set over the servants of Saul, and said,

“I saw the son of Jesse going to Nob, to [b]Ahimelech the son of [c]Ahitub. 10 [a]And he inquired of the LORD for him, [b]gave him provisions, and gave him the sword of Goliath the Philistine.”

11 So the king sent to

call Ahimelech the priest, the son of Ahitub, and all his father's house, the priests who *were* in Nob. And they all came to the king. [12]And Saul said, "Hear now, son of Ahitub!"

He answered, "Here I am, my lord."

[13]Then Saul said to him, “Why have you conspired against me, you and the son of Jesse, in that you have given him bread and a sword, and have inquired of God for him, that he should rise against me,

to lie in wait, as it is this day?”

14 So Ahimelech answered the king and said, “And who among all your servants *is as* [a]f1aithful as David, who is the king’s son-in-law, who goes at your bidding, and is honorable in

your house? [15]Did I then begin to inquire of God for him? Far be it from me! Let not the king impute anything to his servant, *or* to any in the house of my father. For your servant knew nothing of all this, little or much.”

[16]And the king said, “You shall surely die, Ahimelech, you and all [a]your father’s house!” [17]Then the king said to the guards who stood about him, “Turn and kill the priests of the LORD, because their hand

also *is* with David, and because they knew when he fled and did not tell it to me.” But the servants of the king [a]would not lift their hands to strike the priests of the LORD. 18And the king said to

Doeg, “You turn and kill the priests!” So Doeg the Edomite turned and *struck the priests, and [a]killed on that day eighty-five men who wore a linen ephod. 19 [a]Also Nob, the city of the priests, he struck with the edge of the sword, both men and women, children and nursing infants, oxen and donkeys and sheep—with the edge of the sword.

20 [a]Now one of the sons of Ahimelech the son of Ahitub, named Abiathar, [b]escaped and fled

after David. [21]And Abiathar told David that Saul had killed the LORD’s priests. [22]So David said to Abiathar, “I knew that day, when Doeg the Edomite *was* there, that he would surely tell Saul. I have caused *the death* of all the persons of your father's [*]house. 23Stay with me; do not fear. [a]For he who seeks my life seeks your life, but with me you *shall be* safe."

1 Samuel 23

David Saves the City of Keilah

1Then they

told David, saying, “Look, the Philistines are fighting against [a]Keilah, and they are robbing the threshing floors.”

2 Therefore David [a]inquired of the LORD, saying, “Shall I go and *attack these Philistines?”

And the LORD said to David, “Go and attack the

Philistines, and save Keilah.”

[3]But David’s men said to him, “Look, we are afraid here in Judah. How much more then if we go to Keilah against the armies of the Philistines?” [4]Then David inquired of the LORD once again.

And the

LORD answered him and said, “Arise, go down to Keilah. For I will deliver the Philistines into your hand.” 5And David and his men went to Keilah and [a]fought with the Philistines, struck them with a mighty blow, and took away their livestock. So David saved the inhabitants of Keilah.

[6]Now it happened, when Abiathar the son of Ahimelech [a]fled to David at Keilah, *that* he went down *with* an ephod in his hand.

[7]And Saul was told that David had

gone to Keilah. So Saul said, “God has delivered him into my hand, for he has shut himself in by entering a town that has gates and bars.” [8]Then Saul called all the people together for war, to go down to Keilah to besiege David and his men.

[9]When David knew that Saul plotted evil against him, [a]he said to Abiathar the priest, "Bring the ephod here." [10]Then David said, "O LORD God of Israel, Your servant has certainly heard that Saul

seeks to come to Keilah [a]to destroy the city for my sake. 11Will the men of Keilah deliver me into his hand? Will Saul come down, as Your servant has heard? O LORD God of Israel, I pray, tell Your servant.”

And the LORD said, “He will come down.”

[12]Then David said, “Will the men of Keilah *deliver me and my men into the hand of Saul?”

And the LORD said, “They will deliver *you.*”

[13]So David and his men,

[a]about six hundred, arose and departed from Keilah and went wherever they could go. Then it was told Saul that David had escaped from Keilah; so he halted the expedition.

David in Wilderness Strongholds

14 And David stayed in strongholds in the

wilderness, and remained in [a]1small > the mountains in the Wilderness of [b]Ziph. Saul [c]sought him every day, but God did not deliver him into his hand. [15] So David saw that Saul had come out to seek his life. And David *was* in the Wilderness of Ziph *in a forest. [16]Then Jonathan, Saul’s son, arose and went to David in the woods and *strengthened his hand in God. [17]And he said to him, [a]“Do not fear, for the hand of Saul my father shall not find you. You shall be king over Israel, and I shall be next to you. [b]Even my father Saul knows that.” 18So the two of them [a]made a covenant before the LORD. And David stayed in the woods, and

Jonathan went to his own house.

[19]Then the Ziphites [a]came up to Saul at Gibeah, saying, “Is David not hiding with us in strongholds in the woods, in the hill of Hachilah, which *is* on the south of Jeshimon? [20]Now therefore, O king,

come down according to all the desire of your soul to come down; and [a]our part *shall be* to deliver him into the king's hand."

21And Saul said, "Blessed *are* you of the LORD, for you have compassion on me. 22Please go

and
find
out
for
sure,
and
see
the
place
where
his
hideout
is,
and
who
has
seen
him
there.
For I
am
told
he is
very
crafty.
[23]See
therefore,
and
take
knowledge
of all
the
lurking
places
where
he
hides;
and
come
back

to me with certainty, and I will go with you. And it shall be, if he is in the land, that I will search for him throughout all the *clans of Judah.”

[24]So they arose and went to Ziph before Saul. But David and

his men *were* in the Wilderness [a]of Maon, in the plain on the south of Jeshimon. [25]When Saul and his men went to seek *him,* they told David. Therefore he went down [*]to the rock, and stayed in the Wilderness of Maon. And when Saul heard *that,* he pursued David in the Wilderness of Maon. 26Then Saul went on one side of the mountain, and David and his men on the other side of the mountain. [a]So David made haste to1 get away from Saul, for Saul and his men [b]were encircling David and his men to take them.

27[a]But a messenger came to Saul, saying, “Hurry and come, for the Philistines have invaded the land!” 28Therefore Saul returned from pursuing David, and went against the Philistines; so they called that place *the Rock of Escape. 29Then David went up from there and dwelt in strongholds at [a]En Gedi.

1 Samuel 24

David Spares Saul

1Now it happened, [a]when

Saul had returned from following the Philistines, that it was told him, saying, “Take note! David *is* in the Wilderness of En Gedi.” [2]Then Saul took three thousand chosen men from all Israel, and [a]went to seek David and his men on the Rocks of the Wild Goats. [3]So he came to the sheepfolds by the road, where there *was* a cave; and [a]Saul went in to [b]attend to his needs. ([c]David and his men were staying in the recesses of the cave.) 4[a]Then the men of David said to him, “This is the day of which the LORD said to you, ‘Behold, I will deliver your enemy into your hand, that you may do to him as it seems good to you.’ ” And

David arose and secretly cut off a corner of Saul’s robe. 5 Now it happened afterward that [a]David’s heart troubled him because he had cut Saul’s robe. 6 And he said to his men, [a]“The LORD forbid that I should do this thing to my master, the LORD’s anointed, to stretch out my hand against him, seeing he *is* the anointed of the LORD.” 7So David [a]restrained his servants with *these* words, and did not allow them to rise against Saul. And Saul got up from the cave and went on *his* way.

[8]David also arose afterward, went out of the cave, and called out to Saul, saying, “My lord the king!” And when Saul looked [1]behind him, David stooped with his face to

the earth, and bowed down. 9And David said to Saul: [a]“Why do you listen to the words of men who say, ‘Indeed David seeks your harm’? 10Look, this day your eyes have seen that the LORD delivered you today into

my
hand
in
the
cave,
and
someone
urged
me
to
kill
you.
But
my
eye
spared
you,
and I
said,
‘I
will
not
stretch
out
my
hand
against
my
lord,
for
he *is*
the
LORD’s
anointed.’
[11]Moreover,
my
father,
see!
Yes,
see

the
corner
of
your
robe
in
my
hand!
For
in
that
I cut
off
the
corner
of
your
robe,
and
did
not
kill
you,
know
and
see
that
there
is
[a]neither
evil
nor
rebellion
in
my
hand,
and I
have
not
sinned

against you. Yet you [b]hunt my life to take it. 12 [a]Let the LORD judge between you and me, and let the LORD avenge me on you. But my hand shall not be against you. 13 As the proverb of the ancients says, [a]‘Wickedness proceeds from the wicked.’ But my hand shall not be against you. 14 After whom has the king of Israel come out? Whom do you pursue? [a]A dead dog? [b]A flea? 15 [a]Therefore let the LORD be judge, and judge between you and me, and [b]see and [c]plead my case, and deliver me out of your hand.”

16So it was, when David had finished speaking these words to Saul, that Saul said, [a]“*Is* this your voice, my son David?” And

Saul lifted up his voice and wept. 17 [a]Then he said to David: "You *are* [b]more righteous than I; for [c]you have rewarded me with good, whereas I have rewarded you with evil. 18 And you have shown this day how you have dealt well with me; for when [a]the LORD delivered me into your hand, you did not kill me. 19For if a man finds his enemy, will he let him get away safely? Therefore may the LORD reward you with good for

what
you
have
done
to
me
this
day.

20And now [a]I know indeed that you shall surely be king, and that the kingdom of Israel shall be established in your hand. 21[a]Therefore swear now to me by the LORD [b]that you will not cut off my descendants after me, and that you will not destroy my name from my father's house."

22So David swore to Saul. And Saul went home, but David and his men went up to [a]the stronghold.

1 Samuel 25

Death of Samuel

1Then [a]Samuel died; and the Israelites gathered together and [b]lamented for him, and buried him at his home in Ramah. And

David arose and went down [c]to the Wilderness of [*]Paran.

David and the Wife of Nabal

2Now *there was* a man [a]in Maon whose business *was* in [b]Carmel, and the man *was* very rich. He had three thousand sheep and a thousand goats. And he was shearing his sheep in Carmel. 3The name of the man *was* Nabal, and the name of his wife Abigail. And *she was* a woman of good understanding and beautiful appearance; but the man *was* harsh and evil in *his* doings. He *was of the house of* [a]Caleb.

4When David heard in the wilderness that Nabal was [a]shearing his sheep, 5David sent ten young men; and David said to the young men, “Go up to Carmel, go to Nabal, and greet him in my name. 6And thus you shall say to him who lives *in prosperity:* [a]‘Peace *be* to you, peace to your house, and peace to all that you have! 7Now I have heard that you have shearers. Your shepherds were with us, and we did not hurt them, [a]nor was there anything missing from them all the while they were in Carmel. 8Ask your young men, and they will tell you. Therefore *let *my* young men find favor in your eyes, for we come on [a]a feast day. Please give whatever comes to your hand to your servants and to your son David.' "

9So when David's young men came, they spoke to Nabal according to all these words in the name of David, and waited.

10Then Nabal answered David's servants, and said, [a]"Who *is* David, and who *is* the son of Jesse? There are many servants nowadays who break away each one from his master. 11[a]Shall I then take my bread and my water and my *meat that I have killed for my shearers, and give *it* to men when I do not know where they *are* from?”

12So David’s young men turned on their heels and went back; and they came and told him all these words. 13Then David said to his men, “Every man gird on his sword.” So every man girded on his sword, and David also girded on his sword. And about four hundred men went with David, and two hundred [a]stayed with the supplies.

14Now one of the young men told Abigail, Nabal’s wife, saying, “Look, David sent messengers from the wilderness to greet our master; and he *reviled them. 15But the men *were* very good to us, and [a]we were not hurt, nor did we miss anything as long as we accompanied them, when we were in the fields. 16They were [a]a wall to us both by night and day, all the time we were with them keeping the sheep. 17Now therefore, know and consider what you will do, for [a]harm is determined against our master and against all his household. For he *is such* a [b]scoundrel[*] that *one* cannot speak to him."

18Then Abigail made haste and [a]took two hundred *loaves* of bread, two skins of wine, five sheep already dressed, five seahs of roasted *grain,* one hundred clusters of raisins, and two hundred cakes of figs, and loaded *them* on donkeys. 19And she said to her servants, [a]"Go on before me; see, I am coming after you." But she did not tell her husband Nabal.

20So it was, *as* she rode on the donkey, that she went down under cover of the hill; and there were David and his men,

coming down toward
her, and she met
them. 21Now David
had said, “Surely in
vain I have protected
all that this *fellow* has
in the wilderness, so
that nothing was
missed of all that
belongs to him. And
he has [a]repaid me
evil for good. 22[a]May
God do so, and more
also, to the enemies
of David, if I [b]leave
[c]one male of all who
belong to him by
morning light.”

23Now when
Abigail saw David,
she [a]dismounted
quickly from the
donkey, fell on her
face before David,
and bowed down to
the ground. 24So she
fell at his feet and
said: “On me, my
lord, *on* me *let* this
iniquity *be!* And
please let your
maidservant [*]speak
in your ears, and
hear the words of
your maidservant.
25Please, let not my
lord [*]regard this
scoundrel Nabal. For
as his name *is,* so *is*
he: [*]Nabal *is* his

name, and folly *is* with him! But I, your maidservant, did not see the young men of my lord whom you sent. 26Now therefore, my lord, [a]*as* the LORD lives and *as* your soul lives, since the LORD has [b]held you back from coming to bloodshed and from [c]avenging* yourself with your own hand, now then, [d]let your enemies and those who seek harm for my lord be as Nabal. 27And now [a]this present which your maidservant has brought to my lord, let it be given to the young men who follow my lord. 28Please forgive the trespass of your maidservant. For [a]the LORD will certainly make for my lord an enduring house, because my lord [b]fights the battles of the LORD, [c]and evil is not found in you throughout your days. 29Yet a man has risen to pursue you and seek your life, but the life of my lord shall be [a]bound in the bundle of the living with the LORD your God; and the lives of your enemies He shall [b]sling out, *as from* the pocket of a sling. 30And it shall come to pass, when the LORD has done for my lord according to all the good that He has spoken concerning you, and has appointed you [a]ruler over Israel, 31that this will be no grief to you, nor offense of heart to my lord, either that you have shed blood without cause, or that my lord has avenged himself. But when the LORD has dealt well with my lord, then remember your maidservant."

32Then David said to Abigail: [a]"Blessed *is* the LORD God of Israel, who sent you this day to meet me! 33And blessed *is* your advice and blessed *are* you, because you have [a]kept me this day from coming to bloodshed and from avenging myself with my own hand. 34For indeed, *as* the LORD God of Israel lives, who has [a]kept me back from hurting you, unless you had hurried and come to meet me, surely [b]by morning light no males would have been left to Nabal!” 35So David received from her hand what she had brought him, and said to her, [a]“Go up in peace to your house. See, I have heeded your voice and [b]respected your person.”

36Now Abigail went to Nabal, and there he was, [a]holding a feast in his house, like the feast of a king. And Nabal’s heart *was* merry within him, for he *was* very drunk; therefore she told him nothing, little or much, until morning light. 37So it was, in the morning, when the wine had gone from Nabal, and his wife had told him these things, that his heart died within him, and he became *like* a stone. 38Then it happened, *after* about ten days, that the LORD [a]struck Nabal, and he died.

39So when David heard that Nabal was dead, he said, [a]“Blessed *be* the LORD, who has [b]pleaded the cause of my reproach from the hand of Nabal, and has [c]kept His servant from evil! For the LORD has [d]returned the wickedness of Nabal on his own head.”

And David sent and proposed to Abigail, to take her as his wife. 40When the servants of David had come to Abigail at Carmel, they spoke to her saying, “David sent us to you, to ask you to become his wife.”

41Then she arose, bowed her face to the earth, and said, “Here is your maidservant, a servant to [a]wash the feet of the servants of my lord.” 42So

Abigail rose in haste and rode on a donkey, [*]attended by five of her maidens; and she followed the messengers of David, and became his wife. 43David also took Ahinoam [a]of Jezreel, [b]and so both of them were his wives.

44But Saul had given [a]Michal his daughter, David’s wife, to [*]Palti the son of Laish, who *was* from [b]Gallim.

1 Samuel 26

David Spares Saul a Second Time

1Now the Ziphites came to Saul at Gibeah, saying, [a]“Is David not hiding in the hill of Hachilah, opposite Jeshimon?” 2Then Saul arose and went down to the Wilderness of Ziph, having [a]three thousand chosen men of Israel with him, to seek David in the Wilderness of Ziph. 3And Saul encamped in the hill of Hachilah, which *is* opposite Jeshimon, by the road. But

David stayed in the wilderness, and he saw that Saul came after him into the wilderness. [4]David therefore sent out spies, and understood that Saul had indeed come.

[5]So David arose and came to the place where Saul had encamped. And David saw the place where Saul lay, and [a]Abner the son of Ner, the commander of his army. Now Saul lay within the camp, with the people encamped all around him. [6]Then David answered, and said to Ahimelech the Hittite and to Abishai [a]the son of Zeruiah, brother of [b]Joab, saying, “Who will [c]go down with me to Saul in the camp?”

And [d]Abishai said, “I will go down with you.”

[7]So David and Abishai came to the people by night; and there Saul lay sleeping within the camp, with his spear

stuck in the ground
by his head. And
Abner and the people
lay all around him.
8Then Abishai said to
David, [a]“God has
delivered your
enemy into your
hand this day. Now
therefore, please, let
me strike him [*]at
once with the spear,
right to the earth;
and I will not *have to*
strike him a second
time!”

9But David said to
Abishai, “Do not
destroy him; [a]for who
can stretch out his
hand against the
LORD’s anointed,
and be guiltless?”
10David said
furthermore, “*As* the
LORD lives, [a]the
LORD shall strike
him, or [b]his day shall
come to die, or he
shall [c]go out to battle
and perish. 11[a]The
LORD forbid that I
should stretch out
my hand against the
LORD’s anointed. But
please, take now the
spear and the jug of
water that *are* by his
head, and let us go.”
12So David took the

spear and the jug of water *by* Saul's head, and they got away; and no man saw or knew *it* or awoke. For they *were* all asleep, because [a]a deep sleep from the LORD had fallen on them.

13Now David went over to the other side, and stood on the top of a hill afar off, a great distance *being* between them. 14And David called out to the people and to Abner the son of Ner, saying, "Do you not answer, Abner?"

Then Abner answered and said, "Who *are* you, calling out to the king?"

15So David said to Abner, "*Are* you not a man? And who *is* like you in Israel? Why then have you not guarded your lord the king? For one of the people came in to destroy your lord the king. 16This thing that you have done *is* not good. *As* the LORD lives, you deserve to die, because you have not guarded your master, the LORD's anointed. And now see where the king's spear *is,* and the jug of water that *was* by his head."

17Then Saul knew David's voice, and said, [a]"*Is* that your voice, my son David?"

David said, "*It is* my voice, my lord, O king." 18And he said, [a]"Why does my lord thus pursue his servant? For what have I done, or what evil *is* in my hand? 19Now therefore, please, let my lord the king hear the words of his servant: If the LORD has [a]stirred you up against me, let Him accept an offering. But if *it is* the children of men, *may* they *be* cursed before the LORD, [b]for they have driven me out this day from sharing in the [c]inheritance of the LORD, saying, 'Go, serve other gods.' 20So now, do not let my blood fall to the earth before the face of the LORD. For the king of Israel has come out to seek [a]a flea, as when one hunts a partridge in the mountains."

21Then Saul said, [a]"I have sinned. Return, my son David. For I will harm you no more, because my life was precious in your eyes this day. Indeed I have played the fool and erred exceedingly."

22And David answered and said, "Here is the king's spear. Let one of the young men come over and get it. 23[a]May the LORD [b]repay every man *for* his righteousness and his faithfulness; for the LORD delivered you into *my* hand today, but I would not stretch out my hand against the LORD's anointed. 24And indeed, as your life was valued much this day in my eyes, so let my life be valued much in the eyes of the LORD, and let Him deliver me out of all tribulation."

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Fast Before a Battle

There is another fast in Judges 20, which is a powerful chapter about fasting. God had told the children of Israel to fight the tribe of Benjamin, because the tribe of Benjamin had become perverted and God was ready to judge them. God told them to send Judah up to the battle first. They sent Judah and his men to battle, and they lost the battle, losing 22,000 men. Think about what had happened; they did just what God told them to do, and it was a failure and a disaster.

Again they sought God, and again He told them to go. This time they lost 18,000 more men. But then we come to verse 26, which says how they sat before the Lord and fasted that day unti1l evening, offering burnt offerings and peace offerings before the Lord. Then they went out and completely killed off the enemy.

What is that about? You should never go into a major battle without fasting first. Don't expect to walk into expansion and do great things for God, or to start a new initiative or plan that launches you out and expands your business without putting a day of fasting behind that effort. First you need to attach fasting to your effort—it will bring victory every time.[*]

---

[*] Jentezen Franklin, *Fasting*,

6–
7.

[25]Then Saul said to David, "*May* you *be* blessed, my son David! You shall both do great things and also still [a]prevail."

So David went on his way, and Saul returned to his place.

1 Samuel 27

David Allied with the Philistines

[1]And David said in his heart, "Now I shall perish someday by the hand of Saul. *There is* nothing better for me than that I should speedily escape to the land of the Philistines; and Saul will [*]despair of me, to seek me anymore in any part of Israel. So I shall escape out of his hand." [2]Then David arose [a]and went over with the six hundred men who *were* with him [b]to Achish the son of Maoch, king of Gath. [3]So David

dwelt with Achish at Gath, he and his men, each man with his household, *and* David [a]with his two wives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the Carmelitess, Nabal’s widow. 4And it was told Saul that David had fled to Gath; so he sought him no more.

5Then David said to Achish, “If I have now found favor in your eyes, let them give me a place in some town in the country, that I may dwell there. For why should your servant dwell in the royal city with you?” 6So Achish gave him Ziklag that day. Therefore [a]Ziklag has belonged to the kings of Judah to this day. 7Now [*]the time that David [a]dwelt in the country of the Philist1ines was one full year and four months.

8And David and his men went up and raided [a]the Geshurites, [b]the

[*]Girzites, and the [c]Amalekites. For those *nations* were the inhabitants of the land from [*]of old, [d]as you go to Shur, even as far as the land of Egypt. 9Whenever David [*]attacked the land, he left neither man nor woman alive, but took away the sheep, the oxen, the donkeys, the camels, and the apparel, and returned and came to Achish. 10Then Achish would say, “Where have you made a raid today?” And David would say, “Against the southern *area* of Judah, or against the southern *area* of [a]the Jerahmeelites, or against the southern *area* of [b]the Kenites.” 11David would save neither man nor woman alive, to bring *news* to Gath, saying, “Lest they should inform on us, saying, ‘Thus David did.’ ” And thus *was* his behavior all the time he dwelt in the country of the Philistines. 12So

Achish believed David, saying, “He has made his people Israel utterly abhor him; therefore he will be my servant forever.”

1 Samuel 28

1Now [a]it happened in those days that the Philistines gathered their armies together for war, to fight with Israel. And Achish said to David, “You assuredly know that you will go out with me to battle, you and your men.”

2So David said to Achish, “Surely you know what your servant can do.”

And Achish said to David, “Therefore I will make you one of my chief guardians forever.”

Saul Consults a Medium

3Now [a]Samuel had died, and all Israel had lamented for him and buried him in [b]Ramah, in his own city. And Saul had put [c]the mediums and the spiritists out of the land.

4Then the Philistines gathered together, and came and encamped at [a]Shunem. So Saul gathered all Israel together, and they encamped at [b]Gilboa. 5When Saul saw the army of the Philistines, he was [a]afraid, and his heart trembled greatly. 6And when Saul inquired of the LORD, [a]the LORD did not answer him, either by [b]dreams or [c]by Urim or by the prophets.

7Then Saul said to his servants, “Find me a woman who is a medium, [a]that I may go to her and inquire of her.”

And his servants said to him, “In fact, *there is* a woman who is a medium at En Dor.”

8So Saul disguised himself and put on other clothes, and he went, and two men with him; and they came to the woman by night. And [a]he said, “Please conduct a séance for me, and bring up for me the one I shall name to you."

9Then the woman said to him, "Look, you know what Saul has done, how he has [a]cut off the mediums and the spiritists from the land. Why then do you lay a snare for my life, to cause me to die?"

10And Saul swore to her by the LORD, saying, "*As* the LORD lives, no punishment shall come upon you for this thing."

11Then the woman said, "Whom shall I bring up for you?"

And he said, "Bring up Samuel for me."

12When the woman saw Samuel, she cried out with a loud voice. And the woman spoke to Saul, saying, "Why have you deceived me? For you *are* Saul!"

13And the king said to her, "Do not be afraid. What did you see?"

And the woman said to Saul, "I saw

[a]a[*] spirit ascending out of the earth.”

14So he said to her, “What *is* his form?”

And she said, “An old man is coming up, and he *is* covered with [a]a mantle.” And Saul perceived that it *was* Samuel, and he stooped with *his* face to the ground and bowed down.

15Now Samuel said to Saul, “Why have you [a]disturbed me b1y bringing me up?”

And Saul answered, “I am deeply distressed; for the Philistines make war against me, and [b]God has departed from me and [c]does not answer me anymore, neither by prophets nor by dreams. Therefore I have called you, that you may reveal to me what I should do.”

16Then Samuel said: “So why do you ask me, seeing the LORD has departed from you and has become your enemy? 17And the LORD has done for [*]Himself [a]as

He spoke by me. For the LORD has torn the kingdom out of your hand and given it to your neighbor, David. 18[a]Because you did not obey the voice of the LORD nor execute His fierce wrath upon [b]Amalek, therefore the LORD has done this thing to you this day. 19Moreover the LORD will also deliver Israel with you into the hand of the Philistines. And tomorrow you and your sons *will be* with [a]me. The LORD will also deliver the army of Israel into the hand of the Philistines."

20Immediately Saul fell full length on the ground, and was dreadfully afraid because of the words of Samuel. And there was no strength in him, for he had eaten no food all day or all night.

21And the woman came to Saul and saw that he was severely troubled, and said to him, "Look, your maidservant has obeyed your voice, and I have [a]put my life in my hands and heeded the words which you spoke to me. 22Now therefore, please, heed also the voice of your maidservant, and let me set a piece of bread before you; and eat, that you may have strength when you go on *your* way."

23But he refused and said, "I will not eat."

So his servants, together with the woman, urged him; and he heeded their voice. Then he arose from the ground and sat on the bed. 24Now the woman had a fatted calf in the house, and she hastened to kill it. And she took flour and kneaded *it,* and baked unleavened bread from it. 25So she brought *it* before Saul and his servants, and they ate. Then they rose and went away that night.

1 Samuel 29

The Philistines Reject David

[1]Then [a]the Philistines gathered together all their armies [b]at Aphek, and the Israelites encamped by a fountain which *is* in Jezreel. [2]And the [a]lords of the Philistines [*]passed in review by hundreds and by thousands, but [b]David and his men passed in review at the rear with Achish. [3]Then the princes of the Philistines said, “What *are* these Hebrews *doing here?*”

And Achish said to the princes of the Philistines, “*Is* this not David, the servant of Saul king of Israel, who has been with me [a]these days, or these years? And to this day I have [b]found no fault in him since he defected *to me.*”

[4]But the princes of the Philistines were angry with him; so the princes of the Philistines said to

him, [a]“Make this fellow return, that he may go back to the place which you have appointed for him, and do not let him go down with us to [b]battle, lest [c]in the battle he become our adversary. For with what could he reconcile himself to his master, if not with the heads of these [d]men? 5*Is* this not David, [a]of whom they sang to one another in dances, saying:

[b]‘Saul
has
slain
his
thousands,

And
David
his
ten
thousands’?”

6Then Achish called David and said to him, “Surely, *as* the LORD lives, you have been upright, and [a]your going out and your coming in with me in the army *is* good in my sight. For to this day [b]I have not found evil in you since the day of your coming to me. Nevertheless the lords do not favor you. [7]Therefore return now, and go in peace, that you may not displease the lords of the Philistines.”

[8]So David said to Achish, “But what have I done? And to this day what have you found in your servant as long as I have been with you, that I may not go and fight against the enemies of my lord the king?”

[9]Then Achish answered and said to David, “I know that you *are* as good in my si1ght [a]as an angel of God; nevertheless [b]the princes of the Philistines have said, ‘He shall not go up with us to the battle.’ [10]Now therefore, rise early in the morning with your master’s servants [a]who have come with [*]you. And

as soon as you are up early in the morning and have light, depart."

11So David and his men rose early to depart in the morning, to return to the land of the Philistines. [a]And the Philistines went up to Jezreel.

1 Samuel 30

David's Conflict with the Amalekites

1Now it happened, when David and his men came to [a]Ziklag, on the third day, that the [b]Amalekites had invaded the South and Ziklag, attacked Ziklag and burned it with fire, 2and had taken captive the [a]women and those who *were* there, from small to great; they did not kill anyone, but carried *them* away and went their way. 3So David and his men came to the city, and there it was, burned with fire; and their wives, their sons, and their daughters had been taken captive. 4Then

David and the people who *were* with him lifted up their voices and wept, until they had no more power to weep. 5And David's two [a]wives, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the widow of Nabal the Carmelite, had been taken captive. 6Now David was greatly distressed, for [a]the people spoke of stoning him, because the soul of all the people [*]was grieved, every man for his sons and his daughters. [b]But David strengthened himself in the LORD his God.

7[a]Then David said to Abiathar the priest, Ahimelech's son, "Please bring the ephod here to me." And [b]Abiathar brought the ephod to David. 8[a]So David inquired of the LORD, saying, "Shall I pursue this troop? Shall I overtake them?"

And He answered him, "Pursue, for you shall surely overtake *them* and without fail recover *all.*”

9So David went, he and the six hundred men who *were* with him, and came to the Brook Besor, where those stayed who were left behind. 10But David pursued, he and four hundred men; [a]for two hundred stayed *behind,* who were so weary that they could not cross the Brook Besor.

11Then they found an Egyptian in the field, and brought him to David; and they gave him bread and he ate, and they let him drink water. 12And they gave him a piece of [a]a cake of figs and two clusters of raisins. So [b]when he had eaten, his strength came back to him; for he had eaten no bread nor drunk water for three days and three nights. 13Then David said to him, “To whom do you *belong,* and where *are* you from?”

And he said, “I *am*

a young man from Egypt, servant of an Amalekite; and my master left me behind, because three days ago I fell sick. 14We made an invasion of the southern *area* of [a]the Cherethites, in the *territory* which *belongs* to Judah, and of the southern *area* [b]of Caleb; and we burned Ziklag with fire."

15And David said to him, "Can you take me down to this troop?"

So he said, "Swear to me by God that you will neither kill me nor deliver me into the hands of my [a]master, and I will take you down to this troop."

16And when he had brought him down, there they were, spread out over all the land, [a]eating and drinking and dancing, because of all the great spoil which they had taken from the land of the Philistines and from the land of Judah.

17Then David attacked them from twilight until the evening of the next day. Not a man of them escaped, except four hundred young men who rode on camels and fled. 18So David recovered all that the Amalekites had carried away, and David rescued his two wives. 19And nothing of theirs was lacking, either small or great, sons or daughters, spoil or anything which they had taken from them; [a]David recovered all. 20Then David took all the flocks and herds they had driven before those *other* livestock, and said, “This *is* David’s spoil.”

21Now David came to the [a]two hundred men who had been so weary that they could not follow David, whom they also had made to stay at the Brook Besor. So they went out to meet David and to meet the people who *were* with him. And when David came near the people, he *greeted them. 22Then all the wicked and [a]worthless* men of those who went with David answered and said, “Because they did not go with us, we will not give them *any* of the spoil that we have recovered, except for every man’s wife and children, that they may lead *them* away and depart.”

23But David said, “My brethren, you shall not do so with what the LORD has given us, who has preserved us and delivered into our hand the troop that came against us. 24For who will heed you in this matter? But [a]as his part *is* who goes down to the battle, so *shall* his part *be* who stays by the supplies; they shall share alike.” 25So it was, from that day forward; he made it a statute and an ordinance for Israel to this day.

26Now when David came to Ziklag, he sent *some* of the [*]spoil to the elders of Judah, to his friends, saying, “Here is a present for you from the spoil of the enemies of the LORD”—27to *those* who *were* in Bethel, *those* who *were* in [a]Ramoth of the South, *those* who *were* in [b]Jattir, 28*those* who *were* in [a]Aroer, *those* who *were* in [b]Siphmoth, *those* who *were* in [c]Eshtemoa, 29*those* who *were* in Rachal, *those* who *were* in the cities of [a]the Jerahmeelites, *those* who *were* in the cities of the [b]Kenites, 30*those* who *were* in [a]Hormah, *those* who *were* in [*]Chorashan, *those* who *were* in Athach, 31*those* who *were* in [a]Hebron, and to all the places where David himself and his men were accustomed to [b]rove.

1 Samuel 31

The Tragic End of Saul and His Sons

1Now [a]the

Philistines fought against Israel; and the men of Israel fled from before the Philistines, and fell slain on Mount [b]Gilboa. 2Then the Philistines followed hard after Saul and his sons. And the Philistines killed [a]Jonathan, Abinadab, and Malchishua, Saul's sons. 3[a]The battle became fierce against Saul. The archers [*]hit him, and he was severely wounded by the archers.

4[a]Then Saul said to his armorbearer, "Draw your sword, and thrust me through with it, lest [b]these uncircumcised men come and thrust me through and [*]abuse me."

But his armorbearer would not, [c]for he was greatly afraid. Therefore Saul took a sword and [d]fell on it. 5And when his armorbearer saw that Saul was dead, he also fell on his sword, and died with him. 6So Saul, his three sons, his armorbearer, and all his men died together that same day.

7And when the men of Israel who *were* on the other side of the valley, and *those* who *were* on the other side of the Jordan, saw that the men of Israel had fled and that Saul and his sons were dead, they forsook the cities and fled; and the Philistines came and dwelt in them. 8So it happened the next day, when the Philistines came to strip the slain, that they found Saul and his three sons fallen on Mount Gilboa. 9And they cut off his head and stripped off his armor, and sent *word* throughout the land of the Philistines, to [a]proclaim *it in* the temple of their idols and among the people. 10[a]Then they put his armor in the temple of the

[b]Ashtoreths, and [c]they fastened his body to the wall of [d]Beth[*] Shan.

11[a]Now when the inhabitants of Jabesh Gilead heard what the Philistines had done to Saul, 12[a]all the valiant men arose and traveled all night, and took the body of Saul and the bodies of his sons from the wall of Beth Shan; and they came to Jabesh and [b]burned them there. 13Then they took their bones and [a]buried *them* under the tamarisk tree at [b]Jabesh, and fasted seven days.

1 Samuel 1

[1:1]
a.
Josh. 17:17, 18; 24:33

[1:1]
b. 1 Chr.

6:27, 33–38

[1:1] c. Ruth 1:2

[1:1] * *Eliel,* 1 Chr. 6:34

[1:1] * *Toah,* 1 Chr. 6:34

[1:2] a. Deut. 21:15–17

[1:3] a. Ex.

34:14, 23; Judg. 21:19; 1 Sam. 1:21; Luke 2:41

[1:3] b. Deut. 12:5–7; 16:16

[1:3] c. Josh. 18:1

[1:4] a. Deut. 12:17, 18

[1:5] a. Gen. 16:1; 30:1,

2

[1:6]
a.
Job
24:21

[1:8]
a.
Ruth
4:15

[1:9]
a. 1
Sam.
3:3

[1:9]
*
palace
or
temple,
Heb.
heykal

[1:10]
a.
Job
7:11

[1:10]
* Lit.
wept
greatly

[1:11]
a.
Gen.
28:20;
Num.
30:6–
11

[1:11]
b.
Ps.
25:18

[1:11]
c.
Gen.
8:1

[1:11]
d.
Num.
6:5;
Judg.
13:5

[1:15]
a.

Job 30:16; Ps. 42:4; 62:8; Lam. 2:19

[1:16] a. Deut. 13:13

[1:16] * Lit. *daughter of Belial*

[1:17] a. Judg. 18:6; 1 Sam. 25:35; 2 Kin. 5:19; Mark 5:34; Luke 7:50

[1:17] b. Ps. 20:3–5

[1:18] a. Gen. 33:15; Ruth 2:13

[1:18] b. Prov. 15:13; Eccl. 9:7; Rom. 15:13

[1:19] a. Gen. 4:1

[1:19] b. Gen. 21:1; 30:22

[1:20] * Lit. *Heard by God*

[1:21] a. Deut. 12:11; 1 Sam. 1:3

[1:22] a. Luke 2:22

[1:22] b. 11 Sam. 1:11, 28

[1:22] c. Ex. 21:6

[1:23] a.

Num. 30:7, 10, 11

[1:23] * *confirm*

[1:23] * So with MT, Tg., Vg.; DSS, LXX, Syr. *your*

[1:24] a. Num. 15:9, 10; Deut. 12:5, 6

[1:24] b. Josh. 18:1;

1 Sam. 4:3, 4

[1:24] * DSS, LXX, Syr. *a three-year-old bull*

[1:25] a. Luke 2:22

[1:26] a. 2 Kin. 2:2, 4, 6; 4:30

[1:27] a. (Matt. 7:7)

[1:28]
a.
Gen.
24:26,
52

[1:28]
*
granted

1 Samuel 2

[2:1]
a.
Phil.
4:6

[2:1]
b. 1
Sam.
2:1–
10;
Ps.
97:11,
12;
Luke
1:46–
55

[2:1]
c. Ps.
75:10;

89:17,
24;
92:10;
112:9

[2:1]
d.
Ps.
9:14;
13:5;
35:9;
Is.
12:2,
3

[2:1]
*
Strength

[2:1]
* Lit.
My
mouth
is
enlarged

[2:2]
a.
Ex.
15:11;
Ps.
86:8;
Rev.

15:4

[2:2] b. Deut. 4:35

[2:2] c. Deut. 32:4, 30, 31; 2 Sam. 22:32; Ps. 18:2

[2:3] a. Ps. 94:4

[2:3] b. 1 Sam. 16:7

[2:4] a. Ps. 37:15; 46:9

[2:5] a. Ps. 113:9

[2:5] b. Is. 54:1; Jer.

15:9

[2:6] a. Deut. 32:39; 2 Kin. 5:7; Job 5:18; (Rev. 1:18)

[2:7] a. Deut. 8:17, 18; Job 1:21

[2:7] b. Job 5:11; Ps. 75:7; James 4:10

[2:8] a. Job 42:10–12; Ps. 75:7; 113:7; Luke 1:52

[2:8] b. Job 36:7; Ps. 113:8

[2:8] c. Job 38:4–6; Ps. 75:3; 104:5

[2:9] a. Ps. 37:231font>, 24; 91:11, 12; 94:18; 121:3; Prov. 3:26; (1 Pet. 1:5)

[2:9] b. (Rom. 3:19)

[2:10] a. Ex. 15:6; Ps. 2:9

[2:10] b. 1 Sam. 7:10; 2 Sam. 22:14, 15; Ps. 18:13, 14

[2:10] c. Ps. 96:13; 98:9; (Matt. 25:31, 32)

[2:10] d. (Matt. 28:18)

[2:10] e. Ps. 21:1, 7

[2:10] f. Ps. 89:24

[2:10] * Strength

[2:11] * *served*

[2:12] a. Deut. 13:13

[2:12] b. Judg. 2:10; (Rom. 1:28)

[2:12] * Lit. *sons of Belial*

[2:14] a. 1 Sam. 1:3

[2:15] a. Lev. 3:3–5, 16

[2:17] a. Gen. 6:11

[2:17] b. (Mal. 2:7–9)

[2:17] * *despised*

[2:18] a. 1 Sam. 2:11; 3:1

[2:18] b. Ex. 28:4

[2:19] a. 1 Sam. 1:3, 21

[2:20] a. Gen. 14:19

[2:20] b. 1 Sam. 1:11, 27, 28

[2:20] * *gift*

[2:21] a. Gen. 21:1

[2:21] b. Judg. 13:24; 1 Sam. 2:26; 3:19–21; Luke 1:80; 2:40

[2:21] * *attended to*

[2:22] a. Ex. 38:8

[2:22] * So with MT, Tg., Vg.; DSS, LXX omit rest of verse

[2:25] a. Deut. 1:17; 25:1, 2

[2:25] b. Num. 15:30

[2:25] c. Josh. 11:20

[2:25] * Tg. *the Judge*

[2:26] a. 1 Sam. 2:21

[2:26] b. Prov. 3:4

[2:27] a. Deut. 33:1; Judg. 13:6; 1 Sam. 9:6; 1 Kin. 13:1

[2:27] b. Ex. 4:14–16; 12:1

[2:28] a. Ex. 28:1, 4; Num. 16:5

[2:28] b. Lev. 2:3, 10; 6:16; 7:7, 8, 34, 35; Num. 5:9

[2:29] a. Deut. 32:15

[2:29] b. Deut. 12:5; Ps. 26:8

[2:29] c. Matt. 10:37

[2:30] a. Ex. 29:9; Num. 25:13

[2:30] b. Jer. 18:9, 10

[2:30] c. Ps. 91:14; Mal. 2:9–12

[2:31] a. 1 Sam. 4:11–18; 22:18, 19; 1 Kin. 2:27, 35

[2:31] * *strength*

[2:32] a. Zech. 8:4

[2:34] a. 1 Sam. 10:7–9; 1 Kin. 13:3

[2:34] b. 1 Sam. 4:11, 17

[2:35] a. 1 Kin. 2:35; Ezek. 44:15; (Heb. 2:17; 7:26–28)

[2:35] b. 2 Sam. 7:11, 27; 1 Kin. 11:38

[2:35] c. Ps. 18:50

[2:36] a. 1 Kin. 2:27

[2:36] * *assign*

1 Samuel 3

[3:1] a. 1 Sam. 2:11, 18

[3:1] b. Ps. 74:9; Ezek. 7:26; Amos 8:11, 12

[3:2] a. Gen. 27:1; 48:10; 1 Sam. 4:15

[3:3] a. Ex. 27:20, 21

[3:3] * *palace* or *temple*

[3:7] a. 1 Sam. 2:12; Acts 19:2; 1 Cor. 13:11

[3:9] a. 1 Kin. 2:17

[3:11] a. 2 Kin. 21:12; Jer. 19:3

[3:12] a. 1 Sam. 2:27–36; Ezek. 12:25; Luke 21:33

[3:13] a. 1 Sam. 2:29–31

[3:13] b. 1 Sam. 2:22; Ezek. 7:3; 18:30

[3:13] c. 1 Sam. 2:12, 17, 22

[3:13] d. 1 Sam. 2:23, 25

[3:13] * Lit. *rebuke*

[3:14] a. Num. 15:30, 31; Is. 22:14; Heb. 10:4, 26–31

[3:15] * So with MT, Tg., Vg.; LXX adds *and he arose in the morning*

[3:17] a. Ruth 1:17

[3:18] a. Gen. 24:50; Ex. 34:5–7; Lev. 10:3; Is. 39:8; Acts

5:39

[3:19] a. 1 Sam. 2:21

[3:19] b. Gen. 21:22; 28:15; 39:2, 21, 23

[3:19] c. 1 Sam. 9:6

[3:19] * *fail*

[3:20] a. Judg. 20:1

[3:20] * *confirmed*

[3:21] a. 1 Sam. 3:1, 4

1 Samuel 4

[4:1] a. 1 Sam. 7:12

[4:1] * So with MT, Tg.; LXX, Vg. add *And it came to pass in those days that the*

Philistines gathered themselves together to fight; LXX adds further *against Israel*

[4:2] a. 1 Sam. 12:9

[4:2] * Lit. *struck*

[4:3] a. Num. 10:35; Josh. 6:6–21

[4:4] a. Ex. 25:18–21; 1 Sam. 6:2; Ps. 80:1

[4:4] b. Num. 7:89

[4:4] c. 1 Sam. 2:12

[4:7] a. Ex. 15:14

[4:9] a. 1 Cor. 16:13

[4:9] b. Judg. 13:1; 1

Sam. 14:21

[4:9] * Lit. *Be men*

[4:10] a. Lev. 26:17; Deut. 28:15, 25; 1 Sam. 4:2; 2 Sam. 18:17; 19:8; 2 Kin. 14:12; 2 Chr. 25:22

[4:10] * Lit. *struck down*

[4:11] a. 1 Sam. 2:32; Ps. 78:60, 61

[4:11] b. 1 Sam. 2:34; Ps. 78:64

[4:12] a. 2 Sam. 1:2

[4:12] b. Josh. 7:6; 2 Sam. 13:19; 15:32; Neh. 9:1; Job 2:12

[4:13] a. 1 Sam. 1:9; 4:18

[4:13] * So with MT, Vg.; LXX *beside the gate watching the road*

[4:13] * *trembled with anxiety*

[4:15] a. 1 Sam. 3:2; 1 Kin. 14:4

[4:15] * *fixed*

[4:16] a. 2 Sam. 1:4

[4:20] a. Gen. 35:16–19

[4:20] * *pay any attention to*

[4:21] a. 1 Sam. 14:3

[4:21] b. Ps. 26:8; 78:61; (Jer. 2:11)

[4:21] * Lit. *Inglorious*

1 Samuel 5

[5:1] a. 1 Sam. 4:1; 7:12

[5:2] a. Judg. 16:23–30; 1 Chr. 10:8–10

[5:2] * A Philistine idol

[5:3] a. Is. 19:1; 46:1, 2

[5:3] b. Is. 46:7

[5:4] a. Jer. 50:2; Ezek. 6:4, 6; Mic. 1:7

[5:4] * So with LXX, Syr., Tg., Vg.; MT *Dagon*

[5:5] a. Zeph. 1:9

[5:6] a. Ex. 9:3; Deut. 2:15; 1 Sam. 5:7; 7:13; Ps. 32:4; 145:20; 147:6

[5:6] b. 1 Sam. 6:5

[5:6] c. Deut. 28:27; Ps. 78:66

[5:6] d. Josh. 15:46, 47

[5:6] * Probably bubonic plague. LXX, Vg. add *And in the midst of their land rats sprang up, and there was a great death panic in the city.*

[5:7] a. 1 Sam. 6:5

[5:8] a. 1 Sam. 6:4

[5:8] b. Josh. 11:22

[5:9] a. Deut. 2:15; 1 Sam. 5:11; 7:13; 12:15

[5:9] * Vg. *and they had tumors in their secret parts*

[5:12] a. 1 Sam. 9:16; Jer. 14:2

1 Samuel 6

[6:2] a. Gen. 41:8; Ex. 7:11; Is. 2:6; 47:13; Dan. 2:2; 5:7

[6:3] a. Ex. 23:15; Deut. 16:16

[6:3] b. Lev. 5:15, 16

[6:4] a. 1 Sam. 5:6, 9, 12; 6:17

[6:4] * Lit. *them*

[6:5] a. 1 Sam. 5:6

[6:5] b. Josh. 7:19; 1 Chr. 16:28, 29; Is. 42:12; Jer. 13:16; Mal. 2:2; Rev. 14:7

[6:5] c. 1 Sam. 5:6, 11; Ps. 39:10

[6:5] d. 1 Sam. 5:3, 4, 7

[6:5] * *ease*

[6:6] a. Ex. 7:13; 8:15; 9:34; 14:17

[6:6] b. Ex. 12:31

[6:7] a. 2 Sam. 6:3

[6:7] b. Num. 19:2; Deut. 21:3, 4

[6:8] a. 1 Sam. 6:4, 5

[6:9] a. Josh. 15:10; 21:16

[6:9] b. 1 Sam. 6:3

[6:9] * *this calamity to us*

[6:12] a. Num. 20:19

[6:13] a. 1 Sam. 12:17

[6:16] a. Josh. 13:3; Judg. 3:3

[6:17] a. 1 Sam. 6:4

[6:17] b. 1 Sam. 5:8

[6:19] a. Ex. 19:21;

Num. 4:5, 15, 16, 20

[6:19] b. 2 Sam. 6:7

[6:19] * Or *He struck seventy men of the people and fifty oxen of a man*

[6:20] a. Lev. 11:44, 45; Ps. 24:3, 4; Mal. 3:2; Rev. 6:17

[6:21] a. Josh. 9:17; 15:9, 60; 18:14; Judg. 18:12; 1 Chr. 13:5, 6

1 Samuel 7

[7:1] a. 1 Sam. 6:21; Ps. 132:6

[7:1] b. 2 Sam. 6:3, 4

[7:1] c. Lev. 21:8

[7:3] a. Deut. 30:2–

10; 1 Kin. 8:48; Is. 55:7; Hos. 6:1; Joel 2:12–14

[7:3] b. Gen. 35:2; Josh. 24:14, 23; Judg. 10:16

[7:3] c. Judg. 2:13; 1 Sam. 31:10

[7:3] d. 2 Chr. 30:19; Job 11:13

[7:3] e. Deut. 6:13; 10:20; 13:4; Josh. 24:14; Matt. 4:10; Luke 4:8

[7:3] * Images of Canaanite goddesses

[7:4] a. Judg. 2:11; 10:16

[7:4] * Images of Canaanite goddesses

[7:5] a. Judg. 10:17; 20:1; 1 Sam. 10:17

[7:5] b. 1 Sam. 12:17–19

[7:6] a. 2 Sam. 14:14

[7:6] b. Judg. 20:26; Neh. 9:1, 2; Dan. 9:3–5; Joel 2:12

[7:6] c. Judg. 10:10; 1 Sam. 12:10; 1 Kin. 8:47; Ps. 106:6

[17:8] a. 1 Sam. 12:19–24; Is. 37:4

[7:9] a. Lev. 22:27

[7:9] b. 1 Sam. 12:18; Ps. 99:6; Jer. 15:1

[7:10] a. Josh. 10:10; 2 Sam. 22:14, 15; Ps. 18:13, 14

[7:11] * *struck them down*

[7:12] a. Gen. 28:18; 35:14; Josh. 4:9; 24:26

[7:12] * Lit. *Stone of Help*

[7:13] a. Judg. 13:1

[7:13] b. 1 Sam. 13:5

[7:15] a. 1 Sam. 12:11

[7:17] a. 1 Sam. 8:4

[7:17] b. Judg. 21:4

1 Samuel 8

[8:1] a. 1 Sam. 12:2

[8:1] b. Deut. 16:18, 19; 2 Chr. 19:5

[8:1] c. Judg. 10:4

[8:3] a. Jer. 22:15–17

[8:3] b. Ex. 18:21

[8:3] c. Ex. 23:6–8; Deut. 16:19; 1 Sam. 12:3

[8:5] a. Deut. 17:14, 15; Hos. 13:10, 11; Acts 13:21

[8:6] a. 1 Sam. 12:17

[8:6] b. 1 Sam. 7:9

[8:7] a. Ex. 16:8

[8:7] b. 1 Sam. 10:19

[8:9] a. 1 Sam. 8:11–18

[8:11] a. Deut. 17:14–20

[8:11] b. 1 Sam. 14:52

[8:11] c. 2 Sam. 15:1

[8:12] a. 1 Sam. 22:7

[8:14] a. 1 Kin. 21:7; (Ezek. 46:18)

[8:16] * LXX *cattle*

[8:18] a. Prov. 1:25–28; Is. 1:15; Mic. 3:4

[8:19] a. Is. 66:4;
Jer. 44:16

[8:20] a. 1 Sam. 8:5

[8:22] a. 1 Sam. 8:7;
Hos. 13:11

1 Samuel 9

[9:1] a. 1 Sam.
14:51; 1 Chr. 8:33;
9:36–39

[9:1] * *wealth*

[9:2] a. 1 Sam. 10:23

[9:4] a. 2 Kin. 4:42

[9:5] a. 1font>1
Sam. 1:1

[9:5] b. 1 Sam. 10:2

[9:6] a. Deut. 33:1; 1

Kin. 13:1; 2 Kin. 5:8

[9:6] b. 1 Sam. 3:19

[9:7] a. Judg. 6:18; 13:17; 1 Kin. 14:3; 2 Kin. 4:42; 8:8

[9:9] a. Gen. 25:22

[9:9] b. 2 Sam. 24:11; 2 Kin. 17:13; 1 Chr. 26:28; 29:29; 2 Chr. 16:7, 10; Is. 30:10; Amos 7:12

[9:9] * Lit. *to seek God*

[9:10] * Lit. *Your word is good*

[9:11] a. Gen. 24:11, 15; 29:8, 9; Ex. 2:16

[9:12] a. Gen. 31:54; 1 Sam. 16:2

[9:12] b. 1 Sam. 7:17; 10:5; 1 Kin. 3:2

[9:15] a. 1 Sam. 15:1

[9:16] a. Deut. 17:15

[9:16] b. 1 Sam. 10:1

[9:16] c. Ex. 2:23–25; 3:7, 9

[9:16] * *prince* or *ruler*

[9:17] a. 1 Sam. 16:12; Hos. 13:11

[9:20] a. 1 Sam. 9:3

[9:20] b. 1 Sam. 8:5, 19; 12:13

[9:20] * *for whom*

[9:21] a. 1 Sam. 15:17

[9:21] b. Judg. 20:46–48; Ps. 68:27

[9:21] c. Judg. 6:15

[9:21] * Lit. *tribes*

[9:24] a. Ex. 29:22, 27; Lev. 7:32, 33; Num. 18:18; Ezek. 24:4

[9:25] a. Deut. 22:8; 2 Sam. 11:2; Luke 5:19; Acts 10:9

[9:25] * So with MT, Tg.; LXX omits *He spoke with Saul on the top of the house;* LXX, Vg. afterward add *And he prepared a bed for Saul on the top of* *the house, and he slept.*

[9:27] * *now*

1 Samuel 10

[10:1] a. Ex. 30:23–33; 1 Sam. 9:16; 16:13; 2 Kin. 9:3, 6

[10:1] b. Ps. 2:12

[10:1] c. 2 Sam. 5:2; Acts 13:21

[10:1] d. Ex. 34:9; Deut. 32:9; Ps. 78:71

[10:1] * So with MT, Tg., Vg.; LXX *people Israel; and you shall rule the people of the Lord;* LXX, Vg. add *And you shall deliver His people from the hands of their enemies all around them. And this shall be a sign to you, that God has anointed you to be a* *prince.*

[10:2] a. Gen. 35:16–20; 48:7

[10:2] b. Josh. 18:28

[10:2] c. 1 Sam. 9:3–5

[10:3] a. Gen. 28:22; 35:1, 3, 7

[10:4] * *ask you about your welfare*

[10:5] a. 1 Sam. 13:2, 3

[10:5] b. 1 Sam. 19:12, 20; 2 Kin. 2:3, 5, 15

[10:5] c. Ex. 15:20, 21; 2 Kin. 3:15; 1 Chr. 25:1–6; 1 Cor. 14:1

[10:6] a. Num. 11:25, 29; Judg. 14:6; 1 Sam. 16:13

[10:6] b. 1 Sam. 10:10; 19:23, 24

[10:7] a. Ex. 4:8; Luke 2:12

[10:7] b. Josh. 1:5; Judg. 6:12; 1 Sam. 3:19; (Heb. 13:5)

[10:8] a. 1 Sam. 11:14, 15; 13:8

[10:8] b. 1 Sam. 13:8–10

[10:9] * *changed his heart*

[10:10] a. 1 Sam. 10:5

[10:10] b. 1 Sam. 19:20

[10:11] a. 1 Sam. 19:24; Amos 7:14, 15; Matt. 13:54–57; John 7:15; Acts 4:13

[10:12] a. John 5:30, 36

[10:14] a. 1 Sam. 14:50

[10:16] a. 1 Sam. 9:20

[10:17] a. Judg. 20:1

[10:17] b. 1 Sam. 7:5, 6

[10:18] a. Judg. 6:8, 9; 1 Sam. 8:8; 12:6, 8

[10:19] a. 1 Sam. 8:7, 19; 12:12

[10:19] * Lit. *thousands*

[10:20] a. Acts 1:24, 26

[10:22] a. 1 Sam. 23:2, 4, 10, 11

[10:23] a. 1 Sam. 9:2

[10:24] a. Deut. 17:15; 1 Sam. 9:16; 2 Sam. 21:6

[10:24] b. 1 Kin. 1:25, 39

[10:24] * Lit. *May the king live*

[10:25] a. Deut. 17:14–20; 1 Sam. 8:11–18

[10:26] a. Judg. 20:14

[10:27] a. 1 Sam. 11:12

[10:27] b. Deut. 13:13; 1 Sam. 25:17

[10:27] c. 2 Sam. 8:2; 1 Kin. 4:21; 10:25; 2 Chr. 17:5; Matt. 2:11

[10:27] * *kept silent*

1 Samuel 11

[11:1] a. 1 Sam. 12:12

[11:1] b. Judg. 21:8; 1 Sam. 31:11

[11:1] c. Gen. 26:28; 1 Kin. 20:34; Job 41:4; Ezek. 17:13

[11:1] * *besieged*

[11:2] a. Gen. 34:14; 1 Sam. 17:26; Ps. 44:13

[11:3] * *deliver*

[11:4] a. 1 Sam. 10:26; 15:34; 2 Sam. 21:6

[11:4] b. Gen. 27:38; Judg. 2:4; 20:23, 26; 21:2; 1 Sam. 30:4

[11:6] a. Judg. 3:10; 6:34; 11:29; 13:25; 14:6; 1 Sam. 10:10; 16:13

[11:7] a. Judg. 19:29

[11:7] b. Judg. 21:5, 8, 10

[11:7] * Lit. *as one*

man

[11:8] a. Judg. 1:5

[11:8] b. 2 Sam. 24:9

[11:11] a. 1 Sam. 31:11

[11:11] b. Judg. 7:16, 20

[11:12] a. 1 Sam. 10:27

[11:12] b. Luke 19:27

[11:13] a. 1 Sam. 10:27; 2 Sam. 19:22

[11:13] b. Ex. 14:13, 30; 1 Sam. 19:5

[11:14] a. 1 Sam.

7:16; 10:8

[11:15] a. 1 Sam. 10:17

[11:15] b. Josh. 8:31; 1 Sam. 10:8

1 Samuel 12

[12:1] a. 1 Sam. 8:5, 7, 9, 20, 22

[12:1] b. 1 Sam. 10:24; 11:14, 15

[12:1] * *listened to*

[12:2] a. Num. 27:17; 1 Sam. 8:20

[12:2] b. 1 Sam. 8:1, 5

[12:3] a. 1 Sam. 10:1; 24:6; 2 Sam. 1:14, 16

[12:3] b. Num. 16:15; Acts 20:33; 1 Thess. 2:5

[12:3] c. Ex. 23:8

[12:3] d. Deut. 16:19

[12:4] a. Lev. 19:13

[12:5] a. John 18:38; Acts 23:9; 24:20

[12:5] b. Ex. 22:4

[12:6] a. Ex. 6:26; Mic. 6:4

[12:7] a. Is. 1:18; Ezek. 20:35; Mic. 6:1–5

[12:7] b. Judg. 5:11; Ps. 103:6

[12:8] a. Gen. 46:5, 6; Ps. 105:23

[12:8] b. Ex. 2:23–25

[12:8] c. Ex. 3:10; 4:14–16

[12:8] * So with MT, Tg., Vg.; LXX adds *and the Egyptians afflicted them*

[12:9] a. Deut. 32:18; Judg. 3:7

[12:9] b. Judg. 4:2

[12:9] c. Judg. 3:31; 10:7; 13:1

[12:9] d. Judg. 3:12–30

[12:10] a. Judg.

10:10

[12:10] b. Judg. 2:13; 3:7

[12:10] * Images of Canaanite goddesses

[12:11] a. Judg. 11:1

[12:11] b. 1 Sam. 7:13

[12:11] * Gideon, cf. Judg. 6:25–32; Syr. *Deborah;* Tg. *Gideon*

[12:11] * LXX, Syr. *Barak;* Tg. *Simson*

[12:11] * Syr. *Simson*

[12:12] a. 1 Sam. 11:1, 2

[12:12] b. 1 Sam. 8:5, 19, 20

[12:12] c. Judg. 8:23; 1 Sam. 8:7; Ps. 59:13

[12:13] a. 1 Sam. 10:24

[12:13] b. 1 Sam. 8:5; 12:17, 19

[12:13] c. Hos. 13:11

[12:14] a. Josh. 24:14

[12:15] a. Deut. 28:15

[12:15] b. Lev. 26:14, 15; Josh. 24:20; Is. 1:20

[12:16] a. Ex. 14:13, 31

[12:17] a. Gen. 30:14

[12:17] b. Josh. 10:12; 1 Sam. 7:9, 10; (James 5:16–18)

[12:17] c. Ezra 10:9

[12:17] d. 1 Sam. 8:7

[12:18] a. Ex. 14:31

[12:19] a. Ex. 9:28; 1 Sam. 7:8; (James 5:15; 1 John 5:16)

[12:20] a. Deut. 11:16

[12:21] a. 2 Chr. 25:15

[12:21] b. Is. 41:29; Jer. 16:19; Hab. 2:18; 1 Cor. 8:4

[12:22] a. Deut. 31:6; 1 Kin. 6:13

[12:22] b. Is. 43:21

[12:22] c. Ex. 32:12; Num. 14:13; Josh. 7:9; Ps. 106:8; Jer. 14:21

[12:22] d. Deut. 7:6–11; 1 Pet. 2:9

[12:23] a. Acts 12:5; Rom. 1:9; Col. 1:9; 2 Tim. 1:3

[12:23] b. Ps. 34:11; Prov. 4:11

[12:23] c. 1 Kin. 8:36

[12:24] a. Eccl. 12:13

[12:24] b. Is. 5:12

[12:24] c. Deut. 10:21

[12:25] a. Josh. 24:20

[12:25] b. Deut. 28:36

1 Samuel 13

[13:1] * Heb. is difficult; cf. 2 Sam. 5:4; 2 Kin. 14:2; see also 2 Sam. 2:10; Acts 13:21

[13:2] a. 1 Sam. 14:5, 31

[13:2] b. 1 Sam. 14:1

[13:2] c. 1 Sam. 10:26

[13:3] a. 1 Sam. 10:5

[13:3] b. 2 Sam. 5:25

[13:4] * *odious*

[13:5] a. Judg. 7:12

[13:5] b. Josh. 7:2; 1 Sam. 14:23

[13:5] * So with MT, LXX, Tg., Vg.; Syr. and some mss. of LXX *three thousand*

[13:6] a. Judg. 6:2; 1 Sam. 14:11

[13:7] a. Num. 32:1–42

[13:8] a. 1 Sam. 10:8

[13:10] * Lit. *bless him*

[13:13] a. 2 Chr. 16:9

[13:13] b. 1 Sam. 15:11, 22, 28

[13:14] a. 1 Sam. 15:28; 131:6

[13:14] b. 1 Sam. 16:1

[13:14] c. Ps. 89:20; Acts 7:46; 13:22

[13:14] d. 1 Sam. 15:11, 19

[13:15] a. 1 Sam. 13:2, 6, 7; 14:2

[13:15] * So with MT, Tg.; LXX, Vg. add *And the rest of the people went up after Saul to meet the* *people who fought against them, going from Gilgal to Gibeah in the hill of Benjamin.*

[13:16] * Heb. *Geba*

[13:17] a. Josh. 18:23

[13:18] a. Josh. 16:3; 18:13, 14

[13:18] b. Gen. 14:2; Neh. 11:34

[13:19] a. Judg. 5:8; 2 Kin. 24:14; Jer. 24:1; 29:2

[13:21] * About two-thirds shekel weight

[13:22] a. Judg. 5:8

[13:23] a. 1 Sam. 14:1, 4

1 Samuel 14

[14:1] * *carried*

[14:2] a. 1 Sam. 13:15, 16

[14:3] a. 1 Sam. 22:9, 11, 20

[14:3] b. 1 Sam. 4:21

[14:3] c. 1 Sam. 2:28

[14:4] a. 1 Sam. 13:23

[14:6] a. 1 Sam. 17:26, 36; Jer. 9:25, 26

[14:6] b. Judg. 7:4, 7; 1 Sam. 17:46, 47; 2 Chr. 14:11; (Ps. 115:3; 135:6; Zech. 4:6; Matt. 19:26; Rom. 8:31)

[14:10] a. Gen. 24:14; Judg. 6:36–40

[14:11] a. 1 Sam. 13:6; 14:22

[14:12] * *teach*

[14:13] a. Lev. 26:8; Josh. 23:10

[14:14] * Lit. *half the area plowed by a yoke* of oxen in a day

[14:15] a. Deut. 28:7; 2 Kin. 7:6, 7; Job 18:11

[14:15] b. 1 Sam. 13:17

[14:15] c. Gen. 35:5

[14:15] * *terror*

[14:16] a. 1 Sam. 14:20

[14:18] * So with MT, Tg., Vg.; LXX *ephod*

[14:19] a. Num. 27:21

[14:20] a. Judg. 7:22; 2 Chr. 20:23

[14:22] a. 1 Sam. 13:6

[14:23] a. Ex. 14:30; 2 Chr. 32:22; Hos. 1:7

[14:23] b. 1 Sam. 13:5

[14:24] a. Josh. 6:26

[14:25] a. Deut. 9:28; Matt. 3:5

[14:25] b. Ex. 3:8; Num. 13:27; Matt. 3:4

[14:27] * Lit. *eyes*

[14:31] * Lit. *struck*

[14:32] a. Gen. 9:4; Lev. 3:17; 17:10–14; 19:26; Deut. 12:16, 23, 24; Acts 15:20

[14:32] * *plunder*

[14:35] a. 1 Sam. 7:12, 17; 2 Sam. 24:25

[14:37] a. Judg. 20:18

[14:37] b. 1 Sam. 28:6

[14:38] a. Josh. 7:14; 1 Sam. 10:19

[14:39] a. 1 Sam. 14:24, 44; 2 Sam. 12:5

[14:41] a. Prov. 16:33; Acts 1:24–26

[14:41] b. Josh. 7:16; 1 Sam. 10:20, 21

[14:41] * So with MT, Tg.; LXX, Vg. *Why do You not answer Your servant today? If the injustice is with me or Jonathan my son, O LORD God of Israel, give proof; and if You say it is with Your people Israel, give holiness.*

[14:43] a. Josh. 7:19

[14:43] b. 1 Sam.

14:27

[14:44] a. Ruth 1:17; 1 Sam. 25:22

[14:44] b. 1 Sam. 14:39

[14:45] a. 2 Sam. 14:11; 1 Kin. 1:52; Luke 21:18; Acts 27:34

[14:45] b. (2 Cor. 6:1; Phil. 2:12, 13)

[14:47] a. 1 Sam. 11:1–13

[14:47] b. 2 Sam. 10:6

[14:47] * LXX, Vg. *prospered*

[14:48] a. Ex. 17:16; 1 Sam. 15:3–7

[14:48] * Lit. *struck*

[14:49] a. 1 Sam. 31:2; 1 Chr. 8:33

[14:49] b. 1 Sam. 18:17–20, 27; 19:12

[14:49] * *Abinadab,* 1 Chr. 8:33; 9:39

[14:50] a. 1 Sam. 10:14

[14:51] a. 1 Sam. 9:1, 21

[14:52] a. 1 Sam. 8:11

1 Samuel 15

[15:1] a. 1 Sam. 9:16; 10:1

[15:2] a. Ex.

17:8, 14; Num. 24:20; Deut. 25:17–19

[15:3] a. Deut. 25:19

[15:3] b. Lev. 27:28, 29; Num. 24:20; Deut. 20:16–18; Josh. 6:17–21

[15:3] * Lit. *strike*

[15:6] a.

Num. 24:21; Judg. 1:16; 4:11–22; 1 Chr. 2:55

[15:6] b. Gen. 18:25; 19:12, 14; Rev. 18:4

[15:6] c. Ex. 18:10, 19; Num. 10:29, 32

[15:7] a. 1 Sam. 14:48

[15:7]

b.
Gen.
2:11;
25:17,
18

[15:7]
c.
Gen.
16:7;
1font> Ex.
15:22;
1
Sam.
27:8

[15:8]
a. 1
Sam.
15:32,
33

[15:8]
b. 1
Sam.
27:8,
9

[15:9]
a. 1
Sam.
15:3,
15,

19

[15:11] a. Gen. 6:6, 7; 1 Sam. 15:35; 2 Sam. 24:16

[15:11] b. Josh. 22:16; 1 Kin. 9:6

[15:11] c. 1 Sam. 13:13; 15:3, 9

[15:11] d. 1 Sam. 15:35; 16:1

[15:12] a. Josh. 15:55; 1 Sam. 25:2

[15:13] a. Gen. 14:19; Judg. 17:2; Ruth 3:10; 2 Sam. 2:5

[15:15] a. (Gen. 3:12, 13; Ex. 32:22, 23); 1 Sam. 15:9, 21; (Prov. 28:13)

[15:17]
a. 1
Sam.
9:21;
10:22

[15:18]
*
exterminated

[15:19]
*
plunder

[15:20]
a. 1
Sam.
15:13;
(Prov.
28:13)

[15:21]
a. 1
Sam.
15:15

[15:22]
a. Ps.
50:8,
9;

51:16, 17; (Prov. 21:3; Is. 1:11–17; Jer. 7:22, 23; Mic. 6:6–8; Heb. 10:4–10)

[15:22] b. (Eccl. 5:1; Hos. 6:6; Matt. 5:24; 9:13; 12:7; Mark 12:33)

[15:23] a. 1 Sam. 13:14; 16:1

[15:23] * *divination*

[15:24] a. Num. 22:34; Josh. 7:20; 1 Sam. 26:21; 2 Sam. 12:13; Ps. 51:4

[15:24] b. (Ex. 23:2; Prov. 29:25; Is. 51:12, 13)

[15:26] a. 1 Sam. 2:30

[15:27]
a. 1 Kin. 11:30, 31

[15:28]
a. 1 Sam. 28:17, 18; 1 Kin. 11:31

[15:29]
a. Num. 23:19; Ezek. 24:14; 2 Tim. 2:13; Titus 1:2

[15:30]
a. (John 5:44; 12:43)

[15:33]

a.
(Gen.
9:6);
Num.
14:45;
Judg.
1:7;
(Matt.
7:2)

[15:34]
a. 1
Sam.
7:17

[15:34]
b. 1
Sam.
11:4

[15:35]
a. 1
Sam.
19:24

1 Samuel 16

[16:1]
a. 1
Sam.
15:23,
35

[16:1]
b. 1
Sam.
9:16;
10:1;
2
Kin.
9:1

[16:1]
c.
Ruth
4:18–
22

[16:1]
d.
Ps.
78:70,
71;
Acts
13:22

[16:1]
* Lit.
seen

[16:2]
a. 1
Sam.
9:12

[16:4]
a. 1
Sam.
21:1

[16:4]
b. 1
Kin.
2:13;
2
Kin.
9:22

[16:5]
a.
Gen.
35:2;
Ex.
19:10

[16:5]
*
Consecrate

[16:6]
a. 1
Sam.
17:13,
28

[16:6]
b. 1

Kin.
12:26

[16:7]
a. Ps.
147:10

[16:7]
b. Is.
55:8,
9

[16:7]
c. 2
Cor.
10:7

[16:7]
d. 1
Kin.
8:39

[16:7]
*
rejected

[16:7]
*
LXX
For

God does not see as man sees; Tg. *It is not by the appearance of a man;* Vg. *Nor do I judge according to the looks of a man*

[16:11] a. 2 Sam. 7:8; Ps. 78:70–72

[16:11] * So with LXX,

Vg.; MT *turn around;* Tg., Syr. *turn away*

[16:12] a. 1 Sam. 17:42

[16:12] b. Gen. 39:6; Ex. 2:2; Acts 7:20

[16:12] c. 1 Sam. 9:17

[16:12] * Lit. *beautiful*

[16:13] a.1 Num. 27:18; 1 Sam. 10:6, 9, 10

[16:14] a. Judg. 16:20; 1 Sam. 11:6; 18:12; 28:15

[16:14] b. Judg. 9:23; 1 Sam. 16:15, 16; 18:10; 19:9; 1 Kin. 22:19–22

[16:16]

a. 1 Sam. 18:10; 19:9; 2 Kin. 3:15

[16:16] * Lit. *evil*

[16:17] * Lit. *Look now for a man for me*

[16:18] a. 1 Sam. 3:19; 18:12, 14

[16:20] a. 1 Sam. 10:4, 27;

Prov. 18:16

[16:21] a. Gen. 41:46; Prov. 22:29

1 Samuel 17

[17:1] a. Josh. 15:35; 2 Chr. 28:18

[17:4] a. 2 Sam. 21:19

[17:4] b. Josh. 11:21, 22

[17:5] *

clothed with scaled body armor

[17:8] a. 1 Sam. 8:17

[17:9] a. 1 Sam. 11:1

[17:10] a. 1 Sam. 17:26, 36, 45; 2 Sam. 21:21

[17:12] a. Ruth 4:22;

1 Sam. 16:1, 18; 17:58

[17:12] b. Gen. 35:19

[17:12] c. 1 Sam. 16:10, 11; 1 Chr. 2:13–15

[17:13] a. 1 Sam. 16:6, 8, 9; 1 Chr. 2:13

[17:15] a. 1 Sam. 16:11, 19; 2 Sam. 7:8

[17:18] a. Gen. 37:13, 14

[17:23] a. 1 Sam. 17:8–10

[17:25] a. Josh. 15:16

[17:26] a. 1 Sam. 11:2

[17:26] b. 1 Sam. 14:6; 17:36; Jer. 9:25, 26

[17:26] c. 1 Sam. 17:10

[17:26] d. Deut. 5:26; 2 Kin. 19:4; Jer. 10:10

[17:27] a. 1 Sam. 17:25

[17:28] a. Gen. 37:4, 8–36; (Prov. 18:19; Matt. 10:36)

[17:29] a. 1 Sam. 17:17

[17:29] * Lit. *Is it not a word?* or *matter?*

[17:30] a. 1 Sam. 17:26, 27

[17:32]
a.
Deut.
20:1–
4

[17:32]
b.
1
Sam.
16:18

[17:33]
a.
Num.
13:31;
Deut.
9:2

[17:34]
a.
Judg.
14:5

[17:37]
a.
(2
Cor.
1:10;
2
Tim.

4:17, 18)

[17:37] b. 1 Sam. 20:13; 1 Chr. 22:11, 16

[17:38] * Lit. *clothes*

[17:42] a. (Ps. 123:4; Prov. 16:18; 1 Cor. 1:27, 28)

[17:42] b. 1 Sam.

16:12

[17:42] * *belittled*

[17:43] a. 1 Sam. 24:14; 2 Sam. 3:8; 9:8; 16:9; 2 Kin. 8:13

[17:44] a. 1 Sam. 17:46; 1 Kin. 20:10, 11

[17:45] a. 2

Sam. 22:33, 35; 2 Chr. 32:8; Ps. 124:8; (2 Cor. 10:4); Heb. 11:33, 34

[17:45] b. 1 Sam. 17:10

[17:46] a. Deut. 28:26

[17:46] b. Josh. 4:24; 1 Kin. 8:43; 18:36; 2

Kin.
19:19;
Is.
52:10

[17:47]
a.
1
Sam.
14:6;
2
Chr.
14:11;
20:15;
Ps.
44:6;
Hos.
1:7;
Zech.
4:6

[17:47]
b.
2
Chr.
20:15

[17:48]
a.
Ps.
27:3

[17:50]

a. Judg. 3:31; 15:15; 20:16

[17:51] a. 1 Sam. 21:9; 2 Sam. 23:21

[17:51] b. Heb. 11:34

[17:52] a. Josh. 15:36

[17:52] * So with MT, Syr., Tg., Vg.;

LXX *Gath*

[17:55] a. 1 Sam. 14:50

[17:55] b. 1 Sam. 16:21, 22

[17:57] a. 1 Sam. 17:54

[17:58] a. 1 Sam. 17:12

1 Samuel 18

[18:1]

a. Gen. 44:30

[18:1] b. Deut. 13:6; 1 Sam. 20:17; 2 Sam. 1:26

[18:1] * *life of Jonathan was bound up with the life of*

[18:2] a. 1 Sam. 17:15

[18:3]
a.
1
Sam.
20:8–
17

[18:5]
*
Or
prospered

[18:6]
a.
Ex.
15:20,
21;
Judg.
11:34;
Ps.
68:25;
149:3

[18:6]
*
Philistines

[18:7]
a.
Ex.
15:21

[18:7] b. 1 Sam. 21:11; 29:5

[18:8] a. Eccl. 4:4

[18:8] b. 1 Sam. 15:28

[18:9] * Viewed with suspicion

[18:10] a. 1 Sam. 16:14

[18:10] b.

1 Sam. 19:24; 1 Kin. 18:29; Acts 16:16

[18:10] c. 1 Sam. 16:23

[18:10] d. 1 Sam. 19:9, 10

[18:11] a. 1 Sam. 19:10; 20:33

[18:12] a. 1 Sam.

18:15, 29

[18:12] b. 1 Sam. 16:13, 18

[18:12] c. 1 Sam. 16:14; 28:15

[18:13] a. Num. 27:17; 1 Sam. 18:16; 29:6; 2 Sam. 5:2

[18:13] * Lit. *himself*

[18:14] a. Gen. 39:2, 3, 23; Josh. 6:27; 1 Sam. 16:18

[18:16] a. Num. 27:16, 17; 1 Sam. 18:5; 2 Sam. 5:2; 1 Kin. 3:7

[18:17] a. 1 Sam. 14:49; 17:25

[18:17] b. Num. 32:20, 27, 29; 1 Sam. 25:28

[18:17] c. 1 Sam. 18:21, 25; 2 Sam. 12:9

[18:18] a. 1 Sam. 9:21; 18:23; 2 Sam. 7:18

[18:19] a. 2 Sam. 21:8

[18:19] b. Judg. 7:22; 2 Sam. 21:8; 1 Kin. 19:16

[18:20] a. 1 Sam. 18:28

[18:21] a. 1 Sam. 18:17

[18:21] b. 1 Sam. 18:26

[18:21] *

be bait for

[18:24] * Lit. *According to these words*

[18:25] a. Gen. 34:12; Ex. 22:17

[18:25] b. 1 Sam. 14:24

[18:25] c. 1 Sam. 18:17

[18:26]

a.
1
Sam.
18:21

[18:27]
a.
1
Sam.
18:13

[18:27]
b.
2
Sam.
3:14

[18:29]
*
all
the
days

[18:30]
a.
2
Sam.
11:1

[18:30]
b.
1

Sam. 18:5

1 Samuel 19

[19:1] a. 1 Sam. 8:8, 9

[19:1] b. 1 Sam. 18:1

[19:3] a. 1 Sam. 20:8–13

[19:4] a. 1 Sam. 20:32; (Prov. 31:8,

9)

[19:4]
b.
Gen.
42:22;
(Prov.
17:13);
Jer.
18:20

[19:5]
a.
Judg.
9:17;
12:3

[19:5]
b.
1
Sam.
17:49,
50

[19:5]
c.
1
Sam.
11:13;
1
Chr.
11:14

[19:5] d. 1 Sam. 20:32

[19:5] e. (Deut. 19:10–13)

[19:7] a. 1 Sam. 16:21; 18:2, 10, 13

[19:8] a. 1 Sam. 18:27; 23:5

[19:9] a. 1

Sam. 16:14; 18:10, 11

[19:11] a. Judg. 16:2; Ps. 59:title

[19:12] a. Josh. 2:15; Acts 9:25; 2 Cor. 11:33

[19:13] * *household idols,* Heb. *teraphim*

[19:17] a. 2 Sam.

2:22

[19:18] a. 1 Sam. 16:13

[19:18] b. 1 Sam. 7:17

[19:20] a. 1 Sam. 19:11, 14; John 7:32

[19:20] b. 1 Sam. 10:5, 6, 10; (1 Cor. 14:3, 24, 25)

[19:20] c. Num. 11:25; Joel 2:28

[19:23] a. 1 Sam. 10:10

[19:24] a. Is. 20:2

[19:24] b. Mic. 1:8

[19:24] c. 1 Sam. 10:10–12

[20:3] a. 1 Sam. 27:1; 2 Kin. 2:6

[20:5] a. Num. 10:10; 28:11–15

[20:5] b. 1 Sam. 19:2, 3

[20:6] a. 1 Sam. 16:4; 17:12;

John 7:42

[20:7] a. Deut. 1:23; 2 Sam. 17:4

[20:7] b. 1 Sam. 25:17; Esth. 7:7

[20:8] a. Josh. 2:14

[20:8] b. 1 Sam. 18:3; 20:16; 23:18

[20:8] c. 2 Sam. 14:32

[20:12] * *searched out*

[20:13] a. Ruth 1:17; 1 Sam. 3:17

[20:13] b. Josh. 1:5; 1 Sam. 17:37; 18:12; 1 Chr. 22:11, 16

[20:13]

c. 1 Sam. 10:7

[20:15] a. 1 Sam. 24:21; 2 Sam. 9:1, 3, 7; 21:7

[20:15] * *stop being kind*

[20:15] * *family*

[20:16] a. Deut. 23:21; 1 Sam.

25:22; 31:2; 2 Sam. 4:7; 21:8

[20:16] * *family*

[20:17] a. 1 Sam. 18:1

[20:18] a. 1 Sam. 20:5, 24

[20:19] a. 1 Sam. 19:2

[20:21] a.

Jer. 4:2

[20:23] a. 1 Sam. 20:14, 15

[20:25] * So with MT, Syr., Tg., Vg.; LXX *he sat across from Jonathan*

[20:26] a. Lev. 7:20, 21; 15:5

[20:28]

a. 1 Sam. 20:6

[20:31] * Lit. *is a son of death*

[20:32] a. Gen. 31:36; 1 Sam. 19:5; (Prov. 31:9); Matt. 27:23; Luke 23:22

[20:33] a. 1 Sam. 18:11; 19:10

[20:33] b. 1 Sam. 20:7

[20:33] * *strike him down*

[20:40] * *equipment*

[20:42] a. 1 Sam. 1:17

1 Samuel 21

[21:1] a. 1 Sam. 14:3; Mark

2:26

[21:1] b. 1 Sam. 16:4

[21:4] a. Ex. 25:30; Lev. 24:5–9; Matt. 12:4

[21:4] b. Ex. 19:15

[21:4] * *ordinary*

[21:4] * *consecrated*

[21:5] a. Ex. 19:14, 15; 1 Thess. 4:4

[21:5] b. Lev. 8:26

[21:5] * The young men are ceremonially undefiled

[21:6] a. Matt. 12:3, 4; Mark 2:25, 26; Luke 6:3, 4

[21:6] b. Lev. 24:8, 9

[21:7] a. 1 Sam. 14:47; 22:9; Ps. 52:title

[21:9] a. 1 Sam. 17:2, 50

[21:9] b. 1 Sam. 31:10

[21:11] a. Ps.

56:title

[21:11] b. 1 Sam. 18:6–8; 29:5

[21:12] a. Luke 2:19

[21:12] * Lit. *in his heart*

[21:13] a. Ps. 34:title

[21:13] * *insanity*

[21:13] * *scribbled*

1 Samuel 22

[22:1] a. Ps. 57:title; 142:title

[22:1] b. Josh. 12:15; 15:35; 2 Sam. 23:13

[22:2] a. Judg. 11:3

[22:2] b. 1 Sam. 25:13

[22:2] * Lit. *bitter of soul*

[22:3] a. 2 Sam. 8:2

[22:5] a. 2 Sam. 24:11; 1 Chr. 21:9; 29:29; 2 Chr. 29:25

[22:6] a. 1 Sam. 15:34

[22:7] a. 1 Sam. 8:14

[22:8] a. 1 Sam. 18:3; 20:16, 30

[22:9] a. 1 Sam. 21:7; 22:22; Ps. 52:title

[22:9] b. 1 Sam. 21:1

[22:9] c. 1 Sam.

14:3

[22:10] a. Num. 27:21; 1 Sam. 10:22

[22:10] b. 1 Sam. 21:6, 9

[22:14] a. 1 Sam. 19:4, 5; 20:32; 24:11

[22:16] a. Deut. 24:16

[22:17]

a.
Ex.
1:17

[22:18]
a.
1
Sam.
2:31

[22:18]
*
attacked

[22:19]
a.
Josh.
21:1–
45;
1
Sam.
22:9,
11

[22:20]
a.
1
Sam.
23:6,
9;
30:7;
1
Kin.

2:26, 27

[22:20] b. 1 Sam. 2:33

[22:22] * *family*

[22:23] a. 1 Kin. 2:26

1 Samuel 23

[23:1] a. Josh. 15:44; Neh. 3:17, 18

[23:2] a.

1 Sam. 22:10; 23:4, 6, 9; 28:6; 30:8; 2 Sam. 5:19, 23

[23:2] * Lit. *strike*

[23:5] a. 1 Sam. 19:8; 2 Sam. 5:20

[23:6] a. 1 Sam. 22:20

[23:9] a. Num. 27:21; 1 Sam. 23:6; 30:7

[23:10] a. 1 Sam. 22:19

[23:12] * Lit. *shut up*

[23:13] a. 1 Sam. 22:2; 25:13

[23:14] a. Ps. 11:1

[23:14] b. Josh. 15:55; 2 Chr. 11:8

[23:14] c. Ps. 32:7; 54:3, 4

[23:15] * Or *in Horesh*

[23:16] * *encouraged him*

[23:17] a. (Ps. 27:1–3;

Heb. 13:6)

[23:17] b. 1 Sam. 20:31; 24:20

[23:18] a. 1 Sam. 18:3; 20:12–17, 42; 2 Sam. 9:1; 21:7

[23:19] a. 1 Sam. 26:1; Ps. 54:title

[23:20] a.

Ps. 54:3

[23:23] * Lit. *thousands*

[23:24] a. Josh. 15:55; 1 Sam. 25:2

[23:25] * Or *from the rock*

[23:26] a. Ps. 31:22

[23:26] b. Ps. 17:9

[23:27] a. 2 Kin. 19:9

[23:28] * Heb. *Sela Hammahlekoth*

[23:29] a. Josh. 15:62; 2 Chr. 20:2

1 Samuel 24 1

[24:1] a. 1 Sam. 23:19, 28, 29

[24:2] a. 1 Sam. 26:2; Ps. 38:12

[24:3] a. 1 Sam. 24:10

[24:3] b. Judg. 3:24

[24:3] c. Ps. 57:title; 142:title

[24:4] a. 1 Sam. 26:8–11

[24:5] a. 2 Sam. 24:10

[24:6] a. 1 Sam. 26:11

[24:7] a. Ps. 7:4; (Matt. 5:44; Rom. 12:17, 19)

[24:9] a. Ps. 141:6; (Prov. 16:28; 17:9)

[24:11] a. Judg.

11:27;
Ps.
7:3;
35:7

[24:11]
b.
1
Sam.
26:20

[24:12]
a.
Gen.
16:5;
Judg.
11:27;
1
Sam.
26:10–
23;
Job
5:8

[24:13]
a.
(Matt.
7:16–
20)

[24:14]
a.
1

Sam.
17:43;
2
Sam.
9:8

[24:14]
b.
1
Sam.
26:20

[24:15]
a.
1
Sam.
24:12

[24:15]
b.
2
Chr.
24:22

[24:15]
c.
Ps.
35:1;
43:1;
119:154;
Mic.
7:9

[24:16]
a.
1
Sam.
26:17

[24:17]
a.
1
Sam.
26:21

[24:17]
b.
Gen.
38:26

[24:17]
c.
(Matt.
5:44)

[24:18]
a.
1
Sam.
26:23

[24:20]
a.

1 Sam. 23:17

[24:21] a. Gen. 21:23; 1 Sam. 20:14–17

[24:21] b. 2 Sam. 21:6–8

[24:22] a. 1 Sam. 23:29

1 Samuel 25

[25:1] a. 1 Sam. 28:3

[25:1] b. Num. 20:29; Deut. 34:8

[25:1] c. Gen. 21:21; Num. 10:12; 13:3

[25:1] * So with MT, Syr., Tg., Vg.; LXX *Maon*

[25:2] a. 1 Sam. 23:24

[25:2] b. Josh. 15:55

[25:3] a. Josh. 15:13; 1 Sam. 30:14

[25:4] a. Gen. 38:13; 2 Sam. 13:23

[25:6] a. Judg. 19:20; 1 Chr. 12:18; Ps. 122:7; Luke 10:5

[25:7] a. 1 Sam. 25:15, 21

[25:8] a. Neh. 8:10–12; Esth. 8:17; 9:19, 22

[25:8] * *be gracious to the young men*

[25:10] a. Judg. 9:28

[25:11] a.

Judg. 8:6, 15

[25:11] * Lit. *slaughter*

[25:13] a. 1 Sam. 30:24

[25:14] * *scolded* or *scorned at*

[25:15] a. 1 Sam. 25:7, 21

[25:16] a. Ex.

14:22; Job 1:10

[25:17] a. 1 Sam. 20:7

[25:17] b. Deut. 13:13; Judg. 19:22

[25:17] * Lit. *son of Belial*

[125:18] a. Gen. 32:13; (Prov. 18:16; 21:14)

[25:19] a. Gen. 32:16, 20

[25:21] a. 1 Sam. 24:17; Ps. 109:5; (Prov. 17:13)

[25:22] a. Ruth 1:17; 1 Sam. 3:17; 20:13, 16

[25:22] b. 1 Sam. 25:34

[25:22]

c. 1 Kin. 14:10; 21:21; 2 Kin. 9:8

[25:23] a. Josh. 15:18; Judg. 1:14

[25:24] * *speak to you*

[25:25] * *pay attention to*

[25:25] * Lit. *Fool*

[25:26] a. 2 Kin. 2:2

[25:26] b. Gen. 20:6; 1 Sam. 25:33

[25:26] c. (Rom. 12:19)

[25:26] d. 2 Sam. 18:32

[25:26] * Lit. *saving yourself*

[25:27] a. Gen. 33:11; 1 Sam. 30:26; 2 Kin. 5:15

[25:28] a. 2 Sam. 7:11–16, 27; 1 Kin. 9:5; 1 Chr. 17:10, 25

[25:28] b. 1 Sam. 18:17

[25:28] c.

1 Sam. 24:11; Ps. 7:3

[25:29] a. (Ps. 66:9; Col. 3:3)

[25:29] b. Jer. 10:18

[25:30] a. 1 Sam. 13:14; 15:28

[25:32] a. Gen. 24:27; Ex. 18:10; 1 Kin.

1:48;
Ps.
41:13;
72:18;
106:48;
Luke
1:68

[25:33]
a.
1
Sam.
25:26

[25:34]
a.
1
Sam.
25:26

[25:34]
b.
1
Sam.
25:22

[25:35]
a.
1
Sam.
20:42;
2
Sam.

15:9;
2
Kin.
5:19;
Luke
7:50;
8:48

[25:35]
b.
Gen.
19:21

[25:36]
a.
2
Sam.
13:28;
Prov.
20:1;
Is.
5:11;
Dan.
5:1;
(Hos.
4:11)

[25:38]
a.
1
Sam.
26:10;
2
Sam.
6:7;

Ps.
104:29

[25:39]
a.
1
Sam.
25:32

[25:39]
b.
1
Sam.
24:15;
Prov.
22:23

[25:39]
c.
1
Sam.
25:26,
34

[25:39]
d.
1
Kin.
2:44

[25:41]
a.

(Prov. 15:33); Luke 7:38, 44

[25:42] * Lit. *with five of her maidens at her feet*

[25:43] a. Josh. 15:56

[25:43] b. 1 Sam. 27:3; 30:5

[25:44] a. 1

Sam.
18:20;
2
Sam.
3:14

[25:44]
b.
Is.
10:30

[25:44]
*
Paltiel,
2
Sam.
3:15

1
Samuel
26

[26:1]
a.
1
Sam.
23:19;
Ps.
54:title

[26:2]
a.
1
Sam.

13:2;
24:2

[26:5]
a.
1
Sam.
14:50,
51;
17:55

[26:6]
a.
1
Chr.
2:16

[26:6]
b.
2
Sam.
2:13

[26:6]
c.
Judg.
7:10,
11

[26:6]
d.
2

Sam. 2:18, 24

[26:8] a. 1 Sam. 24:4

[26:8] * Or *one time*

[26:9] a. 1 Sam. 24:6, 7; 2 Sam. 1:14, 16

[26:10] a. (Deut. 32:35); 1 Sam.

25:26, 38; (Luke 18:7; Rom. 12:19; Heb. 10:30)

[26:10] b. Gen. 47:29; Deut. 31:14; (Job 7:1; 14:5); Ps. 37:13

[26:10] c. 1 Sam. 31:6

[26:11] a. 1 Sam. 24:6–12; (Rom. 12:17,

19)

[26:12] a. Gen. 2:21; 15:12; Is. 29:10

[26:171] a. 1 Sam. 24:16

[26:18] a. 1 Sam. 24:9, 11–14

[26:19] a. 2 Sam. 16:11; 24:1

[26:19]

b. Deut. 4:27, 28

[26:19] c. 2 Sam. 14:16; 20:19

[26:20] a. 1 Sam. 24:14

[26:21] a. Ex. 9:27; 1 Sam. 15:24, 30; 24:17; 2 Sam. 12:13

[26:23] a.

1 Sam. 24:19; Ps. 7:8; 18:20; 62:12

[26:23] b. 2 Sam. 22:21

[26:25] a. Gen. 32:28; 1 Sam. 24:20

1 Samuel 27

[27:1] * *despair of searching for*

[27:2]

a. 1 Sam. 25:13

[27:2] b. 1 Sam. 21:10; 1 Kin. 2:39

[27:3] a. 1 Sam. 25:42, 43

[27:6] a. Josh. 15:31; 19:5; 1 Chr. 12:1; Neh. 11:28

[27:7] a. 1

Sam. 29:3

[27:7] * Lit. *the number of days*

[27:8] a. Josh. 13:2, 13

[27:8] b. Josh. 16:10; Judg. 1:29

[27:8] c. Ex. 17:8, 16; 1 Sam. 15:7, 8

[27:8]
d.
Gen.
25:18;
Ex.
15:22

[27:8]
*
Or
Gezrites

[27:8]
*
ancient
times

[27:9]
*
Lit.
struck

[27:10]
a.
1
Chr.
2:9,
25

[27:10]

b. Judg. 1:16

1 Samuel 28

[28:1] a. 1 Sam. 29:1, 2

[28:3] a. 1 Sam. 25:1

[28:3] b. 1 Sam. 1:19

[28:3] c. Ex. 22:18; Lev. 19:31; 20:27;

Deut. 18:10, 11; 1 Sam. 15:23; 28:9

[28:4] a. Josh. 19:18; 1 Sam. 28:4; 1 Kin. 1:3; 2 Kin. 4:8

[28:4] b. 1 Sam. 31:1

[28:5] a. Job 18:11; (Is. 57:20)

[28:6] a. 1 Sam. 14:37; Prov. 1:28; Lam. 2:9

[28:6] b. Num. 12:6; Joel 2:28

[28:6] c. Ex. 28:30; Num. 27:21; Deut. 33:8

[28:7] a. 1 Chr. 10:13

[28:8] a. Deut. 18:10, 11; 1 Chr. 10:13; Is. 8:19

[28:9] a. 1 Sam. 28:3

[28:13] a. Ex. 22:28; Ps. 138:1

[28:13] * Heb. *elohim*

[28:14] a. 1 Sam.

15:27; 2 Kin. 2:8, 13

[28:15] a. Is. 14:9

[28:15] b. 1 Sam. 16:14; 18:12

[28:15] c. 1 Sam. 28:6

[28:17] a. 1 Sam. 15:28

[28:17] *

Or *him,* i.e., David

[28:18] a. 1 Sam. 13:9–13; 15:1–26; 1 Kin. 20:42; 1 Chr. 10:13; Jer. 48:10

[28:18] b. 1 Sam. 15:3–9

[28:19] a. 1 Sam. 31:1–6;

Job 3:17–19

[28:21] a. Judg. 12:3; 1 Sam. 19:5; Job 13:14

1 Samuel 29

[29:1] a. 1 Sam. 28:1

[29:1] b. Josh. 12:18; 19:30; 1 Sam. 4:1; 1 Kin. 20:30

[29:2] a. 1 Sam. 6:4; 7:7

[29:2] b. 1 Sam. 28:1, 2

[29:2] * *passed on in the rear*

[29:3] a. 1 Sam. 27:7

[29:3] b. 1

Sam. 27:1–6; 1 Chr. 12:19, 20; Dan. 6:5

[29:4] a. 1 Sam. 27:6

[29:4] b. 1 Sam. 14:21

[29:4] c. 1 Sam. 29:9

[29:4] d. 1 Chr. 12:19, 20

[29:5] a. 1 Sam. 21:11

[29:5] b. 1 Sam. 18:7

[29:6] a. 2 Sam. 3:25; 2 Kin. 19:27

[29:6] b. 1 Sam. 29:3

[29:9] a. 2 Sam. 14:17, 20;

19:27

[29:9] b. 1 Sam. 29:4

[29:10] a. 1 Chr. 12:19, 22

[29:10] * So with MT, Tg., Vg.; LXX adds *and go to the place which I have selected for you* *there; and set no bothersome word in your heart, for you are good before me. And rise on your way*

[29:11] a. 2 Sam. 4:4

1 Samuel 30

[30:1] a. 1 Sam. 27:6

[30:1] b. 1 Sam. 15:7; 27:8

[30:2] a. 1 Sam. 27:2, 3

[30:5] a. 1 Sam. 25:42, 43

[30:6] a. Ex. 17:4; John 8:59

[30:6] b. 1 Sam. 23:16;

Is. 25:4; Hab. 3:17–19

[30:6] * Lit. *bitter*

[30:7] a. 1 Sam. 23:2–9

[30:7] b. 1 Sam. 23:6

[30:8] a. 1 Sam. 23:2, 4; Ps. 50:15; 91:15

[30:10] a. 1 Sam. 30:9, 21

[30:12] a. 1 Sam. 25:18; 1 Kin. 20:7

[30:12] b. Judg. 15:19; 1 Sam. 14:27

[30:14] a. 2 Sam. 8:18; 1 Kin. 1:38, 44;

Ezek. 25:16; Zeph. 2:5

[30:14] b. Josh. 14:13; 15:13

[30:15] a. Deut. 23:15

[30:16] a. 1 Thess. 5:3

[30:19] a. 1 Sam. 30:8

[30:21] a. 1 Sam.

30:10

[30:21]
*
asked them concerning their welfare

[30:22]
a.
Deut. 13:13; Judg. 19:22

[30:22]
*
Lit. *men of Belial*

[30:24]
a.
Num. 31:27; Josh. 22:8

[30:26]

*
booty

[30:27]
a.
Josh.
19:8

[30:27]
b.
Josh.
15:48;
21:14

[30:28]
a.
Josh.
13:16

[30:28]
b.
1
Chr.
27:27

[30:28]
c.
Josh.
15:50

[30:29] a. 1 Sam. 27:10

[30:29] b. Judg. 1:16; 1 Sam. 15:6; 27:10

[30:30] a. Num. 14:45; 21:3; Josh. 12:14; 15:30; 19:4; Judg. 1:17

[30:30] * Or *Borashan*

[30:31]

a. Num. 13:22; Josh. 14:13–15; 21:11–13; 2 Sam. 2:1

[30:31] b. 1 Sam. 23:22

1 Samuel 31

[31:1] a. 1 Chr. 10:1–12

[31:1] b. 1 Sam. 28:4

[31:2]
a.
1
Sam.
14:49;
1
Chr.
8:33

[31:3]
a.
2
Sam.
1:6

[31:3]
*
Lit.
*found
him*

[31:4]
a.
Judg.
9:54;
1
Chr.
10:4

[31:4]
b.
Judg.
14:3;

1 Sam. 14:6; 17:26, 36

[31:4] c. 2 Sam. 1:14

[31:4] d. 2 Sam. 1:6, 10

[31:4] * *torture*

[31:9] a. Judg. 16:23, 24; 2 Sam. 1:20

[31:10]
a.
1
Sam.
21:9

[31:10]
b.
Judg.
2:13;
1
Sam.
7:3

[31:10]
c.
2
Sam.
21:12

[31:10]
d.
Judg.
1:27

[31:10]
*
Beth
Shean,
Josh.
17:11

[31:11] a. 1 Sam. 11:1–13

[31:12] a. 1 Sam. 11:1–11; 2 Sam. 2:4–7

[31:12] b. 2 Chr. 16:14; Jer. 34:5; Amos 6:10

[31:13] a. 2 Sam. 2:4, 5; 21:12–

14

[31:13] b. Gen. 50:10

The Holy Spirit's Work in

2 SAMUEL

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

From shepherd to warrior and then outlaw, David takes a journey to royalty that culminates with Israel’s leaders anointing him as king of all Israel (2 Sam. 5:1–5). God’s anointing on his life brings him great victories over Israel’s enemies and unites the tribes into a nation whose capital is the city of David, Jerusalem.

The Spirit of God covenants with David to establish his throne forever, and from his descendants will come the Messiah (2 Sam. 7). But no one, not even a king, can hide sin from the Spirit or avoid His convicting judgment, and the Holy Spirit convicts David of his sin with Bathsheba (2 Sam. 12). The Holy Spirit also inspired David to compose many psalms of praise (2 Sam. 22–23).

David sings, “The Spirit of the LORD spoke by me, and His word was on my tongue” (2 Sam. 23:2).

Inspired by God’s Spirit, David purchases the land on Mount Moriah for an altar to God and as the site of the temple that his son Solomon will build (2 Sam. 24). One of David’s greatest accomplishments as king was the preparati1on he made for the public worship of Israel in Jerusalem. Spiritual expressions of worship, together with the

Mosaic
law
and
prophecy,
form
Israel’s
greatest
contribution
to
humankind
—
all
because
they
are
from
the
heart
of
God.

The
Holy
Spirit
anoints
people
like
David
—
those
after
God’s
own
heart
—
to
sing
His
praises
and

lead God’s people in His righteous ways.*

---

* Adapted from the *Holy Spirit Encounter Bible*, Introductio to 2 Samuel, 291, and John Rea, *Charisma’s Bible Handbook on the Holy Spirit*, 57–58.

2 Samuel

1

The Report of Saul’s Death

1Now it came to pass after the [a]death of Saul, when David had returned from [b]the slaughter of the Amalekites, and David had stayed two days in Ziklag, 2on the third day, behold, it happened that [a]a man came from Saul’s camp [b]with his clothes [*]torn and dust on his head. So it was, when he came to David, that he [c]fell to the ground and prostrated himself.

[3]And David said to him, “Where

have you come from?”

So he said to him, “I have escaped from the camp of Israel.”

4Then David said to him, [a]“How did the matter go? Please tell me.”

And he answered, “The people have fled from the battle, many of the people are fallen and dead, and Saul and [b]Jonathan his son are dead also.”

5 So David said to the young man who told him, “How do you know that Saul and Jonathan his son are dead?”

6 Then

the young man who told him said, “As I happened by chance *to be* on [a]Mount Gilboa, there was [b]Saul, leaning on his spear; and indeed the chariots and horsemen followed hard after him. 7Now when he looked behind him, he saw me and called to me. And I answered, ‘Here I am.’ [8]And he said to me, ‘Who *are* you?’ So I answere1d him, ‘I *am* an Amalekite.’ [9]He said to me again, ‘Please stand over me and kill me, for [*]anguish has come upon me, but my life still *remains* in me.’ [10]So I stood over him and [a]killed him, because I was sure that he could not live after he had fallen. And I took the crown that *was* on his head and the bracelet that *was* on his arm, and have brought them here to my lord.”

11 Therefore David took hold of his own clothes and [a]tore them, and *so did* all the men who *were*

with him. [12]And they [a]mourned and wept and [b]fasted until evening for Saul and for Jonathan his son, for the [c]people of the LORD and for the house of Israel, because they had fallen by the sword.

[13]Then David said

to the young man who told him, “Where *are* you from?”

And he answered, “I *am* the son of an alien, an Amalekite.”

14So David said to him, “How [a]was it you were not [b]afraid to [c]put forth your hand to destroy the LORD's anointed?" 15Then [a]David called one of the young men and said, "Go near, *and* execute him!" And he struck him so that he died. 16So David said to him, [a]"Your blood *is* on your own head, for [b]your own mouth has testified against you, saying, ‘I have killed the LORD’s anointed.’ ”

The Song of the Bow

17 Then David lamented with this lamentation over Saul and over Jonathan his son, 18 [a]and he told *them* to teach

the children of Judah *the Song of* the Bow; indeed *it is* written [b]in the Book [*]of Jasher:

19“The beauty of Israel is slain on your high places!

[a]How the mighty have fallen!

20[a]Tell *it* not in

Gath,

Proclaim
it
not
in
the
streets
of
[b]Ashkelon
—

Lest
[c]the
daughters
of
the
Philistines
rejoice,

Lest
the
daughters
of
[d]the
uncircumcised
triumph.

21“O
[a]mountains
of
Gilboa,

[b]*Let*
there
be
no
dew
nor
rain
upon

you,
Nor fields of offerings.
For the shield of the mighty is [*]cast away there!
The shield of Saul, not [c]anointed with oil.
[22]From the blood of the slain,
From the fat of the mighty,

[a]The bow of Jonathan did not turn back,

And the sword of Saul did not return empty.

23“Saul and Jonathan *were* beloved and pleasant in their lives,

And in their [a]death they were not divided;

They

were swifter than eagles,

They were [b]stronger than lions.

24“O daughters of Israel, weep over Saul,

Who clothed you in scarlet, with luxury;

Who put ornaments of gold on your apparel.

[1]25“How the mighty have fallen

in
the
midst
of
the
battle!

Jonathan
was
slain
in
your
high
places.

26I
am
distressed
for
you,
my
brother
Jonathan;

You
have
been
very
pleasant
to
me;

[a]Your
love
to
me
was
wonderful,

Surpassing
the

love of women.

[27]“How [a] the mighty have fallen,

And the weapons of war perished!”

2 Samuel 2

David Anointed King of Judah

[1]It happened after this that David [a]inquired of the LORD, saying, “Shall I

go up to any of the cities of Judah?”

And the LORD said to him, “Go up.”

David said, “Where shall I go up?”

And He said, “To [b]Hebron.”

2So David went up there, and his [a]two wives also, Ahinoam the Jezreelitess, and Abigail the widow of Nabal the Carmelite. 3And David brought up [a]the men who *were* with him, every man with his household. So they dwelt in the cities of Hebron.

4[a]Then the men of Judah came, and

there they [b]anointed David king over the house of Judah. And they told David, saying, [c]“The men of Jabesh Gilead *were the ones* who buried Saul.” 5So David sent messengers to the men of Jabesh Gilead, and said to them,

[a]“You *are* blessed of the LORD, for you have shown this kindness to your lord, to Saul, and have buried him. 6And now may [a]the LORD show kindness and truth to you. I also will repay you [1]this kindness, because

you have done this thing. [7]Now therefore, let your hands be strengthened, and be valiant; for your master Saul is dead, and also the house of Judah has anointed me king over them.”

Ishbosheth Made King of Israel

[8]But [a]Abner

the son of Ner, commander of Saul’s army, took [*]Ishbosheth the son of Saul and brought him over to [b]Mahanaim; [9]and he made him king over [a]Gilead, over the [b]Ashurites, over [c]Jezreel, over Ephraim, over Benjamin, and over all Israel.

10Ishbosheth, Saul’s son, *was* forty years old when he began to reign over Israel, and he reigned two years. Only the house of Judah followed David. 11And [a]the [*]time that David was king in Hebron over the house of Judah was seven years and six months.

Israel and Judah at War

12Now Abner the son of Ner, and the servants of Ishbosheth the son of Saul, went out from Mahanaim to [a]Gibeon. 13And [a]Joab the son of Zeruiah, and the servants of David, went out and met them by [b]the pool of Gibeon. So they sat down, one on one side of the pool and the other on the other side of the pool. 14Then Abner said to Joab, “Let the young men now arise and compete before us.”

And Joab said, “Let them arise.”

[15]So they arose and went over by number, twelve from Benjamin, *followers* of Ishbosheth the son of Saul, and twelve from the servants of David.

[16] And each one grasped his opponent by the head and *thrust* his sword in his opponent’s side; so they fell down together. Therefore that place was called *the Field of Sharp Swords, which *is* in Gibeon. [17] So there was a

very fierce battle that day, and Abner and the men of Israel were beaten before the servants of David.

[18]Now the [a]three sons of Zeruiah were there: Joab and Abishai and Asahel. And Asahel *was* [b]*as* fleet of foot [c]as

a wild gazelle. 19So Asahel pursued Abner, and in going he did not turn to the right hand or to the left from following Abner.

20Then Abner looked behind him and said, “*Are* you Asahel?”

He answered, “I *am.*”

21And

Abner said to him, “Turn aside to your right hand or to your left, and lay hold on one of the young men and take his armor for yourself.” But Asahel would not turn aside from following him. [22]So Abner said again to Asahel, “Turn aside from following me. Why should I strike you to the ground? How then could I face your brother Joab?” [23]However, he refused to turn aside. Therefore Abner struck him [a]in the stomach with the blunt end of the spear, so that the spear came out of his back; and he fell down there and died on the spot. So it was *that* as many as came to the place where Asahel fell down and died, stood [b]still.

[24]Joab and Abishai also pursued Abner. And the sun was going down when they came to the hill of Ammah, which *is* before Giah by the road to the Wilderness of Gibeon. [25]Now the children of Benjamin

gathered together behind Abner and became *a unit, and took their stand on top of a hill. 26 Then Abner called to Joab and said, “Shall the sword devour forever? Do you not know that it will be bitter in the latter end? How long will it be then until you tell the people to return from pursuing their brethren?”

[27]And Joab said, “*As* God lives, *unless [a]you had spoken, surely then by morning all the people would have given up

pursuing their brethren.” [28]So Joab blew a trumpet; and all the people stood still and did not pursue Israel anymore, nor did they fight anymore. [29]Then Abner and his men went on all that night through the plain, crossed over the Jordan, and went through all Bithron; and they came to Mahanaim.

[30]So Joab returned from pursuing Abner. And when he had gathered all the people together, there were missing of David’s servants nineteen men and Asahel. [31]But the servants

of David had struck down, of Benjamin and Abner’s men, three hundred and sixty men who died. 32 Then they took up Asahel and buried him in his father’s tomb, which *was in* [a]Bethlehem. And Joab and his men went all night, and they came to Heb1ron at daybreak.

2 Samuel 3

[1]Now there was a long [a]war between the house of Saul and the house of David. But David grew stronger and stronger, and the house of Saul grew

weaker and weaker.

Sons of David

[2]Sons were born [a]to David in Hebron: His firstborn was Amnon [b]by Ahinoam the Jezreelitess; [3]his second, [*]Chileab, by Abigail the widow of Nabal the Carmelite; the third, [a]Absalom the son of Maacah, the

daughter of Talmai, king [b]of Geshur; 4the fourth, [a]Adonijah the son of Haggith; the fifth, Shephatiah the son of Abital; 5and the sixth, Ithream, by David’s wife Eglah. These were born to David in Hebron.

Abner Joins Forces with David

[6]Now it was so, while there was war between the house of Saul and the house of David, that Abner was strengthening *his hold* on the house of Saul.

[7]And Saul had a concubine, whose name *was* [a]Rizpah, the daughter

of Aiah. So *Ishbosheth* said to Abner, “Why have you [b]gone in to my father’s concubine?”

8 Then Abner became very angry at the words of Ishbosheth, and said, “*Am* I [a]a dog’s head that belongs to Judah? Today I show

loyalty to the house of Saul your father, to his brothers, and to his friends, and have not delivered you into the hand of David; and you charge me today with a fault concerning this woman? 9[a]May God do so to Abner, and more also, if I do not do for David [b]as the LORD has sworn to him—[10]to transfer the kingdom from the *house of Saul, and set up the throne of David over Israel and over

Judah, [a]from Dan to Beersheba.” [11]And he could not answer Abner another1 word, because he feared him.

[12]Then Abner sent messengers on his behalf to David, saying, “Whose *is* the land?” saying *also,* “Make your covenant with me, and indeed

my hand *shall be* with you to bring all Israel to you.”

[13] And *David* said, “Good, I will make a covenant with you. But one thing I require of you: [a] you shall not see my face unless you first bring

[b]Michal, Saul's daughter, when you come to see my face."

14 So David sent messengers to [a]Ishbosheth, Saul's son, saying, "Give *me* my wife Michal, whom I betrothed to myself [b]for a hundred foreskins of the Philistines."

15 And Ishbosheth sent and

took her from *her* husband, from [*]Paltiel the son of Laish. [16]Then her husband went along with her to [a]Bahurim, [*]weeping behind her. So Abner said to him, “Go, return!” And he returned.

[17]Now Abner had communicated with the elders

of Israel, saying, “In time past you were seeking for David *to be* king over you. 18Now then, do *it!*

[a]For the LORD has spoken of David, saying, ‘By the hand of My servant David, [*]I will save My

people Israel from the hand of the Philistines and the hand of all their enemies.' ”

[19]And Abner also spoke in the hearing of [a]Benjamin. Then Abner also went to speak in the hearing of David in Hebron all that

seemed good to Israel and the whole house of Benjamin.

[20]So Abner and twenty men with him came to David at Hebron. And David made a feast for Abner and the men who *were* with him. [21]Then Abner said to

David, “I will arise and go, and [a]gather all Israel to my lord the king, that they may make a covenant with you, and that you may [b]reign over all that your heart desires.” So David sent Abner away, and he went in peace.

Joab Murders Abner

22At that moment the servants of David and Joab came from a raid and brought much *spoil with them. But Abner *was* not wi1th David in Hebron, for he had sent him away, and he had gone in peace. [23]When Joab and all the troops that *were* with him had come, they told Joab, saying, “Abner the son of Ner came to the king, and he sent him away, and he has gone in peace.” [24]Then Joab came to the king and said, “What have you done? Look, Abner came to you; why *is* it *that* you sent him away, and he has already gone? [25]Surely you realize that Abner the son of

Ner came to deceive you, to know [a]your going out and your coming in, and to know all that you are doing.”

26And when Joab had gone from David’s presence, he sent messengers after Abner, who brought him back from the well of Sirah. But David did not know *it.* [27]Now when Abner had returned to Hebron, Joab [a]took him aside in the gate to speak with him privately, and there [*]stabbed him [b]in the stomach, so that he died for the blood of [c]Asahel his brother.

28Afterward, when David heard *it,* he said, “My kingdom and I *are* [*]guiltless before the LORD forever of the blood of Abner the son of Ner. 29[a]Let it rest on the head of

Joab
and
on
all
his
father’s
house;
and
let
there
never
fail
to
be
in
the
*house
of
Joab
one
[b]who
has
a
discharge
or
is
a
leper,
who
leans
on
a
staff
or
falls
by
the
sword,
or
who

lacks bread.” 30So Joab and Abishai his brother killed Abner, because he had killed their brother [a]Asahel at Gibeon in the battle.

David’s Mourning for Abner

31Then David said to Joab and to all the people who were with him,

[a]"Tear your clothes, [b]gird yourselves with sackcloth, and mourn for Abner." And King David followed the coffin. 32So they buried Abner in Hebron; and the king lifted up his voice and wept at the grave of Abner, and all the

people wept. [33]And the king sang *a lament* over Abner and said:

“Should Abner die as a [a]fool dies?

[34]Your hands were not bound

Nor your feet put into fetters;

As a man falls before wicked

men, *so* you fell.”

Then all the people wept over him again.

35And when all the people came [a]to persuade David to eat food while it was still day, David took an oath, saying, [b]“God do so to me, and more also, if I taste bread or anything else [c]till the sun goes down!” [36]Now all the people took note *of it,* and it pleased them, since whatever the king did pleased all the people. [37]For all the people and all Israel understood that day that it had not been the king’s intent to kill Abner the son of Ner. [38]Then the king said to his servants, “Do you not know that a prince and a great man has fallen this day in Israel? [39]And I *am* weak today, though anointed king; and these men, the sons of Zeruiah, [a]*are* too harsh for me. [b]The LORD shall repay the evildoer according to his wickedness.”

2 Samuel 4

Ishbosheth

Is Murdered

[1]When Saul's *son heard that Abner had died in Hebron, [a]he* lost heart, and all Israel was [b]troubled. [2]Now Saul's son *had* two men *who were* captains of troops. The name of one *was* Baanah and the name

of the other Rechab, the sons of Rimmon the Beerothite, of the children of Benjamin. (For [a]Beeroth also was [*]*part* of Benjamin, 3because the Beerothites fled to [a]Gittaim and have been sojourners there until this day.)

4[a]Jonathan, Saul's son, had

a son *who was* lame in *his* feet. He was five years old when the news about Saul and Jonathan came [b]from Jezreel; and his nurse took him up and fled. And it happened, as she made haste to flee, that he fell and became lame. His name *was* [c]Mephibosheth.[*]

[5]Then the sons of Rimmon the Beerothite, Rechab and Baanah, set out and came at about the heat of the day to the [a]house of Ishbosheth, who was lying on

his bed at noon. [6]And they came there, all the way into the house, *as though* to get wheat, and they *stabbed him [a]in the stomach. Then Rechab and Baanah his brother escaped. [7]For when they came into the house, he was lying on his bed in his bedroom; then they struck him and killed him, beheaded him and took his head, and were all night escaping through the plain. 8And they brought the head of Ishbosheth to David at

Hebron, and said to the king, “Here is the head of Ishbosheth, the son of Saul your enemy, [a]who sought your life; and the LORD has avenged my lord the king this day of Saul and his descendants.”

9But David

answered Rechab and Baanah his brother, the sons of Rimmon the Beerothite, and said to them, “*As* the LORD lives, [a]who has redeemed my life from all adversity, 10 when [a]someone told me, saying, ‘Look, Saul is dead,’ thinking to have

brought
good
news,
I
arrested
him
and
had
him
executed
in
Ziklag
—
the
one
who
thought
I
would
give
him
a
reward
for
his
news.
[11]How
much
more,
when
wicked
men
have
killed
a
righteous
person
in
his
own

house on his bed? Therefore, shall I not now [a]require his *blood at your hand and *remove you from the earth?” [12]So David [a]commanded his young men, and they executed them, cut off their hands and feet, and hanged *them* by the pool in Hebron. But they took the head of Ishbosheth and buried *it* in the [b]tomb of Abner in Hebron.

2 Samuel 5

David Reigns over All Israel

[1]Then all the tribes of Israel [a]came to David

at Hebron and spoke, saying, “Indeed [b]1sup > we *are* your bone and your flesh. [2]Also, in time past, when Saul was king over us, [a]you were the one who led Israel out and brought them in; and the LORD said to you, [b]‘You shall shepherd My people Israel, and be ruler over Israel.' "

3 [a]Therefore all the elders of Israel came to the king at Hebron, [b]and King David made a covenant with them at Hebron [c]before the LORD. And they anointed David king over Israel.

4 David *was* [a]thirty years old when he began to reign,

and [b]he reigned forty years. 5 In Hebron he reigned over Judah [a]seven years and six months, and in Jerusalem he reigned thirty-three years over all Israel and Judah.

The Conquest of Jerusalem

6 [a]And the king and his men went to Jerusalem against [b]the Jebusites,

the inhabitants of the land, who spoke to David, saying, “You shall not come in here; but the blind and the lame will repel you,” thinking, “David cannot come in here.” 7Nevertheless David took the stronghold of Zion [a](that *is,* the City of David).

[8]Now David said on that day, “Whoever climbs up by way of the water shaft and defeats the Jebusites (the lame and the blind, *who are* hated by David’s soul), [a]*he shall be chief and captain.*”

Therefore they say, “The blind and the lame shall not come into the house.”

[9]Then David dwelt in the stronghold, and called it [a]the City of David. And David built all around from [*]the Millo and inward. [10]So David went

on and became great, and [a]the LORD God of hosts *was* with [b]him.

11 Then [a]Hiram [b]king of Tyre sent messengers1 to David, and cedar trees, and carpenters and masons. And they built David a house. 12 So David knew that the

LORD had established him as king over Israel, and that He had [a]exalted His kingdom [b]for the sake of His people Israel.

13 And [a]David took more concubines and wives from Jerusalem, after he had come from Hebron. Also more sons

and daughters were born to David. 14Now [a]these *are* the names of those who were born to him in Jerusalem: *Shammua, Shobab, Nathan, [b]Solomon, 15Ibhar, *Elishua, Nepheg, Japhia, 16Elishama, Eliada, and Eliphelet.

The Philistines Defeated

17[a]Now when the Philistines heard

that they had anointed David king over Israel, all the Philistines went up to search for David. And David heard *of it* [b]and went down to the stronghold. [18]The Philistines also went and deployed themselves in [a]the Valley of Rephaim.

19So David [a]inquired of the LORD, saying, “Shall I go up against the Philistines? Will You deliver them into my hand?”

And the LORD said to David, “Go up, for I will doubtless deliver the Philistines into your hand.”

20So

David went to [a]Baal Perazim, and David defeated them there; and he said, “The LORD has broken through my enemies before me, like a breakthrough of water.” Therefore he called the name of that place *Baal Perazim. 21 And they left their *images there, and David and his men [a]carried them away.

2 Sam. 5:20

You have broken forth against my enemies.

12 2[a]Then the Philistines went up once again and deployed themselves in the Valley of Rephaim.

[23]Therefore [a]David inquired of the LORD, and He said, “You shall not go up; circle around behind them, and come upon them in front of the mulberry trees. [24]And it shall be, when you [a]hear the sound of marching in

the tops of the mulberry trees, then you shall advance quickly. For then [b]the LORD will go out before you to strike the camp of the Philistines.” [25]And David did so, as the LORD commanded him; and he drove back the Philistines from [a]Geba[*] as far as [b]Gezer.

2 Samuel 6

The Ark Brought to Jerusalem

[1]Again David gathered all *the* choice *men* of Israel, thirty thousand. [2]And [a]David arose and went with all the people who *were* with

him from *Baale Judah to bring up from there the ark of God, whose name is called *by the Name, the LORD of Hosts, [b]who dwells *between* the cherubim. [3]So they set the ark of God on a new cart, and brought it out of the house of Abinadab, which *was* on [a]the hill; and Uzzah and Ahio, the sons of Abinadab, drove the new [*]cart. [4]And they brought it out of [a]the house of Abinadab, which *was* on the hill, accompanying the ark of God; and Ahio went before the ark. 5Then David and all the house of Israel [a]played *music* before the LORD on all kinds of *instruments of* fir wood, on harps, on stringed instruments, on tambourines, on sistrums, and on cymbals.

6 And when they came to [a]Nachon’s threshing floor, Uzzah put out *his* [b]*hand* to the ark of Go1d and [*]took hold of it, for the oxen stumbled. 7 Then the anger of the LORD was aroused

against Uzzah, and God struck him there for *his* *error; and he died there by the ark of God. [8]And David became angry because of the LORDâ™ outbreak against Uzzah; and he called the name of the place *Perez Uzzah to this day.

[9][a]David was afraid of the LORD that day; and he said, âœow can the ark of the LORD come to me? â[10]So David would not move the ark of the LORD with him into the [a]City of

David; but David took it aside into the house of Obed-Edom the [b]Gittite. 11 [a]The ark of the LORD remained in the house of Obed-Edom the Gittite three months. And the LORD [b]blessed Obed-Edom and all his household.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Fasting to Lift Godâ™ Judgment

A fifth fast is found in 1 Kings 21:27â“9. This is the story of Ahab, a king who was extremely wicked. A prophet prophesied over him that the dogs would lick up his blood because he had sinned against God. Do you know someone who knows right from wrong and yet that person is living a wicked life? There is a supernatur power in fasting and prayer that is not confined just to your life.

Upon hearing what the prophet prophesied Ahab was so moved that he humbled himself and began to fast. God said that because that wicked man had humbled himself in fasting, God would lift the judgment. I believe that you can fast and pray and by so doing lift judgment off anotherâ™ life and give them more time for Godâ™ mercy to do a work in that personâ™ life. If you know someone for whom you desire to see Godâ™ judgment lifted, pray and fast for Godâ™ mercy to that individual.

[12]Now it was told King David, saying, â €The LORD has blessed the

house of Obed-Edom and all that *belongs* to him, because of the ark of God.â[a]So David went and brought up the ark of God from the house of Obed-Edom to the City of David with gladness. [13]And so it was, when [a]those bearing the ark of the LORD had gone six paces, that he sacrificed [b]oxen and fatted sheep. 14Then David [a]danced* before the LORD with all *his* might; and David *was* wearing [b]a linen ephod. 15[a]So David and all the house of Israel brought up the ark of the LORD with shouting and with the sound of the trumpet.

[16]Now as the ark of the LORD came into the City of David, [a]Michal, Saulâ™ daughter, looked through

a window and saw King David leaping and whirling before the LORD; and she despised him in her heart. 17So [a]they brought the ark of the LORD, and set it in [b]its place in the midst of the tabernacle that

David had erected for it. Then David [c]offered burnt offerings and peace offerings before the LORD. 18 And when David had finished offering burnt offerings and peace offerings, [a]he blessed the people in the name of the LORD of hosts. 19 [a]Then he distributed among all the people, among the whole multitude of Israel, both the women and the men, to everyone a loaf of bread, a piece *of meat,* and a cake of raisins. So all the people departed, everyone to his house.

20[a]Then David returned to bless his household. And Michal the daughter of Saul came out to meet David, and said, âœow glorious was the king of Israel today, [b]uncovering himself today in the eyes of the maids of his servants, as one of the [c]base fellows [*]shamelessly uncovers himself!â/p>

[21]So David said to Michal, âœi>It was before the LORD, [a]who chose me instead of your father and all his house, to appoint me ruler over the

[b]people of the LORD, over Israel. Therefore I will play *music* before the LORD. [22]And I will be even more undignified than this, and will be humble in my own sight. But as for the maidservants of whom you have

spoken, by them I will be held in honor.”

[23]Therefore Michal the daughter of Saul had no children [a]to the day of her death.

2 Samuel 7

God’s Covenant with David

[1]Now it came to pass [a]when the king

was dwelling in his house, and the LORD had given him rest from all his enemies all around, [2]that the king said to Nathan the prophet, “See now, I dwell in [a]a house of cedar, [b]but the ark of God dwells inside tent [c]curtains.”

[3]Then Nathan said to the king, “Go, do all that *is* in your [a]heart, for the LORD *is* with you.”

[4]But it happened that night that the word of the LORD came to Nathan, saying, [5]“Go

and tell My servant David, ‘Thus says the LORD: [a]“Would you build a house for Me to dwell in? 6For I have not dwelt in a house [a]since the time that I brought the children of Israel up from Egypt, even to this day, but have moved about in [b]a tent and in a tabernacle. [7]Wherever I have [a]moved about with all the children of Israel, have I ever spoken a word to anyone from the tribes of Israel, whom

I commanded [b]to shepherd My people Israel, saying, ‘Why have you not built Me a house of cedar?’ ” ’

8 Now therefore, thus shall you say to My servant David, ‘Thus says the LORD of hosts: [a]“I took you from

the sheepfold, from following the sheep, to be ruler over My people, over Israel. [9]And [a]I have been with you wherever you have gone, [b]and have *cut off all your enemies from before you, and have made you a great name, like the name of the great men who *are* on the earth. 10Moreover I will appoint a place for My people Israel, and will [a]plant them, that they may dwell in a place of their own and move no more; [b]nor shall the sons of wickedness oppress them anymore, as previously, 11 [a]since the time that I commanded judges *to be* over My people Israel, and have caused you to rest from all your enemies. Also the LORD [*]tells you

[b]that He will make you a [*]house.

12[a]“When your days are fulfilled and you [b]rest with your fathers, [c]I will set up your seed after you, who will come from your body, and I will establish his kingdom. 13[a]He shall build a house for My name, and I will [b]establish the throne of his kingdom forever. 14[a]I will be his Father, and he shall be [b]My son. If he commits iniquity, I will chasten him with the rod of men and with the [*]blows of the sons of men. 15But My mercy shall not depart from him, [a]as I took *it* from Saul, whom I removed from before you. 16And [a]your house and your kingdom shall be established forever before *you. Your throne shall be established forever.” ’ ”

17According to all these words and according to all this vision, so Nathan spoke to David.

David’s Thanksgiving to God

18Then King David went in and sat before the LORD; and he said: [a]“Who *am* I, O Lord GOD? And what is my house, that You have brought me this far? 19And yet this was a small thing in Your sight, O Lord GOD; and You have also spoken of Your servant's house for a great while to come. [a]*Is* this the manner of man, O Lord GOD? 20Now what more can David say to You? For You, Lord GOD, [a]know Your servant. 21For Your word's sake, and according to Your own heart, You have done all these great things, to make Your servant know *them.* [22]Therefore [a]You are great, [*]O Lord GOD. For [b]*there is* none like You, nor *is there any* God besides You, according to all that we have heard with our [c]ears. 23And who *is* like Your people, like Israel, [a]the one nation on the earth whom God went to redeem for Himself as a people, to make for Himself a name — and to do for

Yourself great and awesome deeds for Your land — before [b]Your people whom You redeemed for Yourself from Egypt, the nations, and their gods? [24]For [a]You have made Your people Israel Your very own people forever; [b]and You, LORD, have become their God.

[25]“Now, O LORD God, the word which You have spoken concerning Your servant and concerning his house, establish *it* forever and do as You have said. [26]So let Your name be magnified forever, saying, ‘The LORD of

hosts *is* the God over Israel.’ And let the house of Your servant David be established before You. [27]For You, O LORD of hosts, God of Israel, have revealed *this* to Your servant, saying, ‘I will build you a house.’

Therefore Your servant has found it in his heart to pray this prayer to You.

28“And now, O Lord GOD, You are God, and [a]Your words are true, and You have promised this goodness to Your servant. 29Now therefore, let it please You to bless the house of Your servant, that it may continue before You forever; for You, O Lord GOD, have spoken *it,* and with Your blessing let the house of Your servant be blessed [a]forever.1”

Samuel 8

David's Further Conquests

1After this it came to pass that David *attacked the Philistines and subdued them. And David took *Metheg Ammah from the hand of the Philistines.

2Then [a]he defeated Moab. Forcing them down to the ground, he measured them off with a line. With two lines he measured off those to be put to death, and with one full line those to be kept alive. So the Moabites became David's [b]servants, *and* [c]brought tribute.

3 David also

defeated Hadadezer the son of Rehob, king of [a]Zobah, as he went to recover [b]his territory at the River Euphrates. [4]David took from him one thousand *chariots,* [*]seven hundred horsemen, and twenty thousand foot soldiers. Also David [a]hamstrung all the chariot *horses*, except that he spared *enough* of them for one hundred chariots.

5[a]When the Syrians of Damascus came to help Hadadezer king of Zobah, David killed twenty-two thousand of the Syrians. 6Then David put garrisons in Syria of

Damascus; and the Syrians became David’s servants, *and* brought tribute. So [a]the LORD preserved David wherever he went. 7And David took [a]the shields of gold that had belonged to the servants of Hadadezer, and brought them to Jerusalem. 8Also from

Betah and from [a]Berothai, cities of Hadadezer, King David took a large amount of bronze.

[9]When *Toi king of [a]Hamath heard that David had defeated all the army of Hadadezer, [10]then Toi sent *Joram his son to King David, to

*greet him and bless him, because he had fought against Hadadezer and defeated him (for Hadadezer had been at war with Toi); and *Joram* brought with him articles of silver, articles of gold, and articles of bronze. 11King David also

[a]dedicated these to the LORD, along with the silver and gold that he had dedicated from all the nations which he had subdued—

12 from [*]Syria, from Moab, from the people of Ammon, from the [a]Philistines, from Amalek, and from

the spoil of Hadadezer the son of Rehob, king of Zobah.

[13]And David made *himself* a [a]name when he returned from killing [b]eighteen thousand [*]Syrians in [c]the Valley of Salt. [14]He also put garrisons in Edom; throughout all Edom he

put garrisons, and [a]all the Edomites became David's servants. And the LORD preserved David wherever he went.

David's Administration

15 So David reigned over all Israel; and David administered judgment and justice to all his people. 16 [a]Joab the son of Zeruiah

was over the army; [b]Jehoshaphat the son of Ahilud *was* recorder; 17 [a]Zadok the son of Ahitub and Ahimelech the son of Abiathar *were* the priests; *Seraiah *was* the *scribe; 18 [a]Benaiah the son of Jehoiada *was* *over* both the [b]Cherethites and the Pelethites; and David’s sons were *chief ministers.

2 Samuel 9

David’s Kindness to Mephibosheth

[1] Now David said, “Is there still anyone who is left of the house of Saul, that I may [a] show him *kindness for Jonathan’s sake?”

[2]And *there was* a servant of the house of Saul whose name *was* [a]Ziba. So when they had called him to David, the king said to him, “*Are* you Ziba?”

He said, “At your service!”

[3]Then the king said, “*Is*

there not still someone of the house of Saul, to whom I may show [a]the kindness of God?”

And Ziba said to the king, “There is still a son of Jonathan *who is* [b]lame in *his* feet.”

4So the king

said to him, "Where *is* he?"

And Ziba said to the king, "Indeed he *is* in the house of [a]Machir the son of Ammiel, in Lo Debar."

5Then King David sent and brought him out of the house of Machir the son of Ammiel, from Lo Debar.

6 Now when [a]Mephibosheth[*] the son of Jonathan, the son of Saul, had come to David, he fell on his face and prostrated himself. Then David said, “Mephibosheth?”

And he answered, “Here is your

servant!”

[7]So David said to him, “Do not fear, for I will surely show you kindness for Jonathan your father’s sake, and will restore to you all the land of Saul your grandfather; and you shall eat bread at my

table continually.”

8Then he bowed himself, and said, “What *is* your servant, that you should look upon such [a]a dead dog as I?”

9And the king called to Ziba, Saul’s servant, and said to him, [a]“I have given to your

master's
son
all
that
belonged
to
Saul
and
to
all
his
house.
[10]You
therefore,
and
your
sons
and
your
servants,
shall
work
the
land
for
him,
and
you
shall
bring
in
the
harvest,
that
your
master's
son
may
have
food

to eat. But Mephibosheth your master's son [a]shall eat bread at my table always." Now Ziba had [b]fifteen sons and twenty servants.

11 Then Ziba said to the king, "According to all that my lord the king has commanded his servant,

so will your servant do.” 1 “As for Mephibosheth,” *said the king,* “he shall eat at *my table like one of the king’s sons.” 12Mephibosheth had a young son [a]whose name *was* Micha. And all who dwelt in the house of Ziba *were* servants of Mephibosheth. [13]So Mephibosheth dwelt in Jerusalem, [a]for he ate continually at the king’s table. And he [b]was lame in both his feet.

2 Samuel 10

The Ammonites and Syrians Defeated

[1]It happened after this

that the [a]king of the people of Ammon died, and Hanun his son reigned in his place. 2Then David said, “I will show [a]kindness to Hanun the son of [b]Nahash, as his father showed kindness to me.”

So David sent

by the hand of his servants to comfort him concerning his father. And David’s servants came into the land of the people of Ammon. 3And the princes of the people of Ammon said to Hanun their lord, “Do you think that David really honors your father because he has sent comforters to you? Has David not *rather* sent his servants to you to search the city, to spy it out, and to overthrow it?”

[4]Therefore Hanun took David’s servants, shaved

off half of their beards, cut off their garments in the middle, [a]at their buttocks, and sent them away. 5When they told David, he sent to meet them, because the men were greatly *ashamed. And the king said, “Wait at

Jericho until your beards have grown, and *then* return.”

[6]When the people of Ammon saw that they [a]had made themselves repulsive to David, the people of Ammon sent and hired [b]the Syrians of [c]Beth Rehob and the Syrians of Zoba,

twenty thousand foot soldiers; and from the king of [d]Maacah one thousand men, and from [e]Ish-Tob twelve thousand men. 7 Now when David heard *of it,* he sent Joab and all the army of [a]the m1ighty men. 8 Then the people of Ammon came out and put themselves in battle array at the entrance of the gate. And [a]the Syrians of Zoba, Beth Rehob, Ish-Tob, and Maacah *were* by themselves in the field.

9 When Joab saw that the battle line

was against him before and behind, he chose some of Israel’s best and put *them* in battle array against the Syrians. [10]And the rest of the people he put under the command of [a]Abishai his brother, that he might set *them* in battle array against the people of Ammon. [11]Then he said, “If the Syrians are too strong for me, then you shall help me; but if the people of Ammon are too strong for you, then I will come and help you. [12][a]Be of good courage, and let us [b]be strong for our people and for the cities of our God. And may [c]the LORD do *what is* good in His sight.”

[13]So Joab and the people who *were*

with him drew near for the battle against the Syrians, and they fled before him. [14]When the people of Ammon saw that the Syrians were fleeing, they also fled before Abishai, and entered the city. So Joab returned from the people of Ammon and went to [a]Jerusalem.

15When the Syrians saw that they had been defeated by Israel, they gathered together. 16Then *Hadadezer sent and brought out the Syrians who *were* beyond *the River, and they came to Helam. And

*Shobach the commander of Hadadezer’s army *went* before them. [17]When it was told David, he gathered all Israel, crossed over the Jordan, and came to Helam. And the Syrians set themselves in battle array against David and fought with him.

18Then the Syrians fled before Israel; and David killed seven hundred charioteers and forty thousand [a]horsemen of the Syrians, and struck Shobach the commander of their army, who died there. 19And when all the kings *who were* servants to *Hadadezer saw that they were defeated by Israel, they made peace with Israel and [a]served them. So the Syrians were afraid to help the people of Ammon anymore.

2 Samuel 11

David, Bathsheba, and Uriah

[1]It happened in the spring

of the year, at the [a]time when kings go out *to battle,* that [b]David sent Joab and his servants with him, and all Israel; and they destroyed the people of Ammon and besieged [c]Rabbah. But David remained at Jerusalem.

[2]Then

it happened one evening that David arose from his bed [a]and walked on the roof of the king’s house. And from the roof he [b]saw a woman bathing, and the woman *was* very beautiful to behold. [3]So David sent and inquired about the woman. And *someone* said, “*Is* this not *Bathsheba, the daughter of *Eliam, the wife [a]of Uriah the [b]Hittite?” [4]Then David sent messengers, and took her; and she came to him, and [a]he lay with her, for she was [b]cleansed from her impurity; and she returned to her house. [5]And the woman conceived; so she sent and told David, and said, “I *am* with child.”

[6]Then David sent to Joab, *saying,* “Send me Uriah the Hittite.” And Joab

sent Uriah to David. 7When Uriah had come to him, David asked how Joab was doing, and how the people were doing, and how the war prospered. 8And David said to Uriah, “Go down to your house and [a]wash your feet.” So Uriah departed from the king’s house, and a gift *of food* from the king followed him. 9But Uriah slept at the [a]door of the king’s house with all the servants of his lord, and did not go down to his house. [10] So when they told David, saying, “Uriah did not go down to his house,” David said to Uriah, “Did you not come from a journey? Why did you not go down to your house?”

SPIRITUAL WARFARE

BASICS

The Fast for Healing

Just as 1 Corinthians has become known as the “love chapter,” Isaiah 58 is1 the “fasting chapter.” Read that chapter. “Then your light shall break forth like the morning, your healing shall spring forth speedily” (v. 8). This portion of Scripture says that your health will spring forth speedily. Fasting can usher in God’s healing; your cholesterol levels can come down, your blood pressure can normalize, and you will feel the healing power of God come upon you. Jesus is the same yesterday, today, and forever. If we would just get out of the way and let Him be God, we will see His supernatur power at work. But we must decrease, and He must increase.*

---

[11] And Uriah said to David, [a]“The ark and Israel and Judah are dwelling in tents, and [b]my lord Joab and the servants of my lord

are encamped in the open fields. Shall I then go to my house to eat and drink, and to lie with my wife? *As* you live, and *as* your soul lives, I will not do this thing.”

12 Then David said

to Uriah, “Wait here today also, and tomorrow I will let you depart.” So Uriah remained in Jerusalem that day and the next. 13 Now when David called him, he ate and drank before him; and he made him [a]drunk. And at evening he went out to lie on his bed [b]with the servants of his lord, but he did not go down to his house.

14 In the morning it happened that David [a]wrote a letter to Joab and sent *it*

by the hand of Uriah. 15And he wrote in the letter, saying, “Set Uriah in the forefront of the *hottest battle, and retreat from him, that he may [a]be struck down and die.” 16So it was, while Joab besieged the city, that he assigned Uriah to a place where he knew there *were* valiant men. [17]Then the men of the city came out and fought with Joab. And *some* of the people of the servants of David fell; and Uriah the Hittite died also.

[18]Then Joab sent and told David all the things concerning the war, [19]and charged the messenger, saying, “When you have finished telling the matters of the war to the king, [20]if it happens that the king’s

wrath rises, and he says to you: ‘Why did you approach so near to the city when you fought? Did you not know that they would shoot from the wall? [121]Who struck [a]Abimelech the son of *Jerubbesheth? Was it not

a
woman
who
cast
a
piece
of
a
millstone
on
him
from
the
wall,
so
that
he
died
in
Thebez?
Why
did
you
go
near
the
wall?’—
then
you
shall
say,
‘Your
servant
Uriah
the
Hittite
is
dead
also.’
”

[22]So the messenger went, and came and told David all that Joab had sent by him. [23]And the messenger said to David, “Surely the men prevailed against us and came out to us in the field; then we drove them

back as far as the entrance of the gate. [24]The archers shot from the wall at your servants; and *some* of the king's servants are dead, and your servant Uriah the Hittite is dead also."

[25]Then David said to the

messenger, “Thus you shall say to Joab: ‘Do not let this thing *displease you, for the sword devours one as well as another. Strengthen your attack against the city, and overthrow it.’ So encourage him.”

[26]When the wife of Uriah

heard that Uriah her husband was dead, she mourned for her husband. 27 And when her mourning was over, David sent and brought her to his house, and she [a]became his wife and bore him a son. But the thing that

David had done [b]displeased* the LORD.

2 Samuel 12

Nathan's Parable and David's Confession

[1] Then the LORD sent Nathan to David. And [a]he came to him, and [b]said to him: "There were two men in one city, one rich

and the other poor. [2]The rich *man* had exceedingly many flocks and herds. [3]But the poor *man* had nothing, except one little ewe lamb which he had bought and nourished; and it grew up together with him and with his children. It ate of his own food and drank from his own cup and lay in his bosom; and it was like a daughter to him. [4]And a traveler came to the rich man, who refused to take from his own flock and from his own herd to prepare one for the wayfaring man who had come to him; but he took the poor man's lamb and prepared it for the man who had come to him."

[5]So David's anger

was greatly aroused against the man, and he said to Nathan, “*As* the LORD lives, the man who has done this *shall surely die! [6]And he shall restore [a]fourfold for the lamb, because he did this thing and because he had no pity.”

[7]Then Nathan said to David, “You *are* the man! Thus says the LORD God of Israel: ‘I [a]anointed you king over Israel, and I delivered you from the hand of Saul. [8]I gave you your master’s house

and your master’s wives into your keeping, and gave you the house of Israel and Judah. And if *that had been* too little, I also would have given you much more! 9 [a]Why have you [b]despised the commandment of the LORD, to do evil in His sight? [c]You have killed Uriah the Hittite with the sword; you have taken his wife *to be* your wife, and have killed him with the sword of the people of Ammon. 10Now therefore, [a]the sword shall never depart from your house, because you have despised Me, and have taken the wife of Uriah the Hittite to be your wife.’ [11]Thus says the LORD: ‘Behold, I will raise up adversity against you from your own house;

and
I
will
[a]take
your
wives
before
your
eyes
and
give
them
to
your
neighbor,
and
he
shall
lie
with
your
wives
in
the
sight
of
this
sun.
[12]For
you
did
it
secretly,
[a]but
I
will
do
this
thing
before

all Israel, before the sun.' "

2 Sam. 12:7

You have anointed me and delivered me from the hands of my enemies, just as You did for King David.

13 [a]So David said to Nathan, [b]"I have

sinned against the LORD.”

And Nathan said to David, “The LORD also has [c]put away your sin; you shall not die. [14]However, because by this deed you have given great occasion to the enemies of the LORD [a]to blaspheme, the child also *who is* born to you shall surely die.” [15]Then Nathan departed to his house.

The Death of David’s Son

And the [a]LORD struck the child that Uriah’s wife bore to David, and it became ill. [16]David therefore pleaded with God for the child, and David fasted and went in and [a]lay all night on the ground. [17]So the elders of his house arose *and went* to him, to raise him up from the ground. But he would not, nor did he eat food with them. [18]Then on the seventh day it came to pass that the child died. And the servants of David were afraid to tell him that the child was dead. For they said, “Indeed, while the child was alive, we spoke to him, and he would not heed our voice. How can we tell him that the child is dead? He may do some harm!”

[19]When David saw that his servants were whispering, David perceived

that the child was dead. Therefore David said to his servants, “Is the child dead?”

And they said, “He is dead.”

20So David arose from the ground, washed and [a]anointed himself, and changed his clothes; and he went into the house of the LORD and [b]worshiped. Then he went to his own house; and when he requested, they set food before him, and he ate. [21]Then his servants said to him, “What *is* this that you have done? You fasted and wept for the child *while he was* alive, but when the child died, you arose and ate food.”

22And he said, “While the child was alive, I fasted and wept; [a]for I said, ‘Who can tell *whether* *the LORD will be gracious to me, that the child may live?’ [23]But now he is dead; why should I fast? Can I bring him back again? I shall go [a]to him, but [b]he shall not return to me.”

Solomon Is Born

24 Then David comforted Bathsheba his wife, and went in to her and lay with her. So [a]she bore a son, and [b]he* called his name Solomon. Now the LORD loved him, 25 and He sent *word* by the hand of Nathan

the prophet: So *he called his name *Jedidiah, because of the LORD.

1Rabbah Is Captured

26Now [a]Joab fought against [b]Rabbah of the people of Ammon, and took the royal city. 27And Joab sent messengers to David, and said, “I have fought against Rabbah, and I have taken the city’s water *supply*. [28]Now therefore, gather the rest of the people together and encamp against the city and take it, lest I take the city and it be called after my name.”

29So David gathered all the people together and went to Rabbah, fought against it, and took it. 30[a]Then he took their king’s crown from his head. Its weight *was* a talent of gold, with precious stones. And it was *set* on David’s head. Also he brought out the *spoil of the city in great abundance. [31]And he brought out the people who *were* in it, and put *them to work* with saws and iron picks and iron axes, and made them cross over to the brick works. So he did to all the cities of the people of Ammon. Then David and all the people returned to Jerusalem.

2 Samuel 13

Amnon and Tamar

1After this [a]Absalom the son

of David had a lovely sister, whose name *was* [b]Tamar; and [c]Amnon the son of David loved her. 2Amnon was so distressed over his sister Tamar that he became sick; for she *was* a virgin. And it was improper for

Amnon to do anything to her. [3]But Amnon had a friend whose name *was* Jonadab [a]the son of Shimeah, David’s brother. Now Jonadab *was* a very crafty man. [4]And he said to him, “Why *are* you, the king’s son, becoming

thinner
day
after
day?
Will
you
not
tell
me?”
Amnon
said
to
him,
“I
love
Tamar,
my
brother
Absalom’s
sister.”

[5]So
Jonadab
said
to
him,
“Lie
down
on
your
bed
and
pretend
to
be
ill.
And
when
your
father
comes

to see you, say to him, ‘Please let my sister Tamar come and give me food, and prepare the food in my sight, that I may see *it* and eat it from her hand.’ ”

[6]Then Amnon lay down and

pretended to be ill; and when the king came to see him, Amnon said to the king, “Please let Tamar my sister come and [a]make a couple of cakes for me in my sight, that I may eat from her ha1nd.”

[7]And David sent home to Tamar, saying, “Now go to your brother Amnon’s house, and prepare food for him.” [8]So Tamar went to her brother Amnon’s house; and he was lying down. Then she took flour and kneaded *it,*

made cakes in his sight, and baked the cakes. 9And she took the pan and placed *them* out before him, but he refused to eat. Then Amnon said, [a]“Have everyone go out from me.” And they all went out from him. [10]Then Amnon said to Tamar, “Bring the food into the bedroom, that I may eat from your hand.” And Tamar took the cakes which she had made, and brought *them* to Amnon her brother in the bedroom. [11]Now when she had brought *them* to him to eat, [a]he took hold of her and said to her, “Come, lie with me, my sister.”

12 But she answered him, “No, my brother, do not [*]force me, for [a]no such thing should be

done in Israel. Do not do this [b]disgraceful thing! 13 And I, where could I take my shame? And as for you, you would be like one of the fools in Israel. Now therefore, please speak to the king; [a]for he will not withhold me from you.” [14]However, he would not heed her voice; and being stronger than she, he [a]forced her and lay with her.

[15]Then Amnon hated her *exceedingly, so that the hatred with which he hated her *was*

greater than the love with which he had loved her. And Amnon said to her, “Arise, be gone!”

[16]So she said to him, “No, indeed! This evil of sending me away *is* worse than the other that you did to

me.” But he would not listen to her. [17]Then he called his servant who attended him, and said, “Here! Put this *woman* out, away from me, and bolt the door behind her.” [18]Now she had on [a]a robe of many colors, for the king's virgin daughters wore such apparel. And his servant put her out and bolted the door behind her.

[19]Then Tamar put [a]ashes on her head, and tore her robe of many colors that *was* on her, and

[b]laid her hand on her head and went away crying bitterly. 20And Absalom her brother said to her, “Has Amnon your brother been with you? But now hold your peace, my sister. He *is* your brother; do not take this

thing to heart.” So Tamar remained desolate in her brother Absalom’s house.

21But when King David heard of all these things, he was very angry. 22And Absalom spoke to his brother Amnon [a]neither good nor bad. For Absalom [b]hated Amnon, because he had forced his sister Tamar.

Absalom Murders Amnon

23And it came to pass, after two full years, that Absalom [a]had sheepshearers in Baal Hazor, which *is* near Ephraim; so Absalom invited all the king’s sons. 24Then Absalom came to the king and said, “Kindly note, your servant has sheepshearers; please, let the king and his servants go with your servant.”

[25]But the king said to Absalom, “No, my son, let us not all go now, lest we be

a burden to you.” Then he urged him, but he would not go; and he blessed him.

[26]Then Absalom said, “If not, please let my brother Amnon go with us.”

And the king said to him, “Why should he go with you?” [27]But Absalom urged him; so he let Amnon and all the king’s sons go with him.

[28]Now Absalom had commanded his servants, saying, “Watch now, when Amnon’s [a]heart is merry with wine, and when I say to you,

‘Strike Amnon!’ then kill him. Do not be afraid. Have I not commanded you? Be courageous and *valiant.” [29]So the servants of Absalom [a]did to Amnon as Absalom had commanded. Then all the king’s sons arose, and each one got on [b]his mule and fled.

[30]And it came to pass, while they were on the way, that news came to David, saying, “Absalom has killed all the king’s sons, and not one of them is left!” [31]So the king arose

and [a]tore his garments and [b]lay on the ground, and all his servants stood by with their clothes torn. [32]Then [a]Jonadab the son of Shimeah, David’s brother, answered and said, “Let not my lord suppose they have killed all the young men, the king’s sons, for only Amnon is dead. For by the command of Absalom this has been determined from the day that he forced his sister Tamar. 33Now therefore, [a]let not my lord the king take the thing to his heart, to think that all the king’s sons are dead. For only Amnon is dead.”

Absalom Flees to Geshur

34[a]Then Absalom fled. And the young man who was keeping watch lifted his eyes and looked, and there, many people were coming from the road on the hillside behind *him. [35]And Jonadab said to the king, “Look, the king’s sons are coming; as your servant said, so it is.” [36]So it was, as soon as he had finished speaking, that the king’s sons indeed came, and they lifted up their voice and wept. Also the king and all his servants wept very bitterly.

[37]But Absalom fled and went to [a]Talmai the son of Ammihud, king of Geshur. And *David*

mourned for his son every day. [38]So Absalom fled and went to [a]Geshur, and was there three years. [39]And *King David *longed to go to Absalom. For he had been [a]comforted concerning Amnon, because he was dead.

14

Absalom Returns to Jerusalem

1 So Joab the son of Zeruiah perceived that the king's heart *was* concerned [a]about Absalom. 2 And Joab sent to [a]Tekoa and brought from there a wise woman, and said to her, "Please pretend to be

a mourner, [b]and put on mourning apparel; do not anoint yourself with oil, but act like a woman who has been mourning a long time for the dead. [3]Go to the king and speak to him in this manner." So

Joab [a]put the words in her mouth.

[4]And when the woman of Tekoa [*]spoke to the king, she [a]fell on her face to the ground and prostrated herself, and said, [b]“Help, O king!”

[5]Then the king said to her, “What

troubles you?”

And she answered, [a]“Indeed I *am* a widow, my husband is dead. 6Now your maidservant had two sons; and the two fought with each other in the field, and *there was* no one to part them, but the one struck the other and killed him. [7]And now the whole family has risen up against your maidservant, and they said, ‘Deliver him who struck his brother, that we may execute him [a]for the life of his brother whom he killed; and we will destroy the heir also.’ So they would extinguish my ember that is left, and leave to my husband *neither* name nor remnant on the earth.”

[8]Then the king said to the woman, “Go to your house,

and I will give orders concerning you.”

[9]And the woman of Tekoa said to the king, “My lord, O king, *let* [a]the [*]iniquity *be* on me and on my father’s house, [b]and the king and his throne *be* guiltless.”

[10]So

the king said, “Whoever says *anything* to you, bring him to me, and he shall not touch you anymore.”

11 Then she said, “Please let the king remember the LORD your God, and do not permit [a]the avenger of blood to

destroy anymore, lest they destroy my son.”

And he said, [b]“*As* the LORD lives, not one hair of your son shall fall to the ground.”

[12]Therefore the woman said, “Please, let your maidservant speak *another* word to my lord the

king.” And he said, “Say on.” [13]So the woman said: “Why then have you schemed such a thing against [a]the people of God? For the king speaks this thing as one who is guilty, *in that* the king does not bring [b]his banished one home again. 14For we [a]will surely die and *become* like water spilled on the ground, which cannot be gathered up again. Yet God does not [b]take away a life; but He [c]devises means, so that His banished ones are not *expelled from Him. [15]Now therefore, I have come[1] to speak of this thing to my lord the king because the people have made me afraid. And your maidservant said, ‘I will now speak to the king;

it may be that the king will perform the request of his maidservant. [16]For the king will hear and deliver his maidservant from the hand of the man *who would* destroy me and my son together from the [a]inheritance of

God.’ 17Your maidservant said, ‘The word of my lord the king will now be comforting; for [a]as the angel of God, so *is* my lord the king in [b]discerning good and evil. And may the LORD your God be with you.’ ”

[18]Then the king answered and said to the woman, “Please do not hide from me anything that I ask you.”

And the woman said, “Please, let my lord the king speak.”

[19]So the king said, “*Is* the hand

of
Joab
with
you
in
all
this?”
And
the
woman
answered
and
said,
“*As*
you
live,
my
lord
the
king,
no
one
can
turn
to
the
right
hand
or
to
the
left
from
anything
that
my
lord
the
king
has

spoken. For your servant Joab commanded me, and [a]he put all these words in the mouth of your maidservant. [20]To bring about this change of affairs your servant Joab has done this thing; but my lord *is* wise, [a]according to the wisdom of the angel of God, to know everything that *is* in the earth.”

[21]And the king said to Joab, “All right, I have granted this thing. Go therefore, bring back the young man Absalom.”

[22]Then Joab fell to

the ground on his face and bowed himself, and *thanked the king. And Joab said, “Today your servant knows that I have found favor in your sight, my lord, O king, in that the king has fulfilled the request of his servant.” 23So Joab arose [a]and went to Geshur, and brought Absalom to Jerusalem. 24And the king said, “Let him return to his own house, but [a]do not let him see my face.” So Absalom returned to his own house, but did not see the king’s face.

David Forgives Absalom

[25]Now in all Israel there was no one who was praised as much as Absalom for his good looks. [a]From the sole of his foot to the crown of his

head there was no blemish in him. [26]And when he cut the hair of his head — at the end of every year he cut *it* because it[1] was heavy on him — when he cut it, he weighed the hair of his head at two hundred shekels according to the king’s standard. 27[a]To Absalom were born three sons, and one daughter whose name *was* Tamar. She was a woman of beautiful appearance.

28And Absalom dwelt two full years in

Jerusalem, [a]but did not see the king’s face. [29]Therefore Absalom sent for Joab, to send him to the king, but he would not come to him. And when he sent again the second time, he would not come. [30]So he said to his servants, “See, Joab’s field is near mine, and he has barley there; go and set it on fire.” And Absalom’s servants set the field on fire.

2 Sam. 14:30

The enemy will not be

able to burn up my harvest.

[31]Then Joab arose and came to Absalom's house, and said to him, "Why have your servants set my field on fire?"

[32]And Absalom answered Joab, "Look, I sent to you, saying, 'Come here,

so that I may send you to the king, to say, “Why have I come from Geshur? *It would be* better for me *to be* there still.” ’ Now therefore, let me see the king’s face; but [a]if there is iniquity in me, let him execute me.”

[33]So Joab went to the king and told him. And when he had called for Absalom, he came to the king and bowed himself on his face to the ground before the king.

Then the king [a]kissed Absalom.

2 Samuel 15

Absalom’s Treason

[1]After this [a]it happened that Absalom [b]provided himself with chariots and horses, and fifty men to run before him. [2]Now Absalom would rise early and stand beside the way

to the gate. *So* it was, whenever anyone who had a [a]lawsuit[*] came to the king for a decision, that Absalom would call to him and say, “What city *are* you from?” And he would say, “Your servant *is* from such and such a tribe of Israel.” [3]Then Absalom would say to him, “Look, your *case *is* good and right; but *there1* *is* no *deputy of the king to hear you.” [4]Moreover Absalom would say, [a]“Oh, that I were made

judge
in
the
land,
and
everyone
who
has
any
suit
or
cause
would
come
to
me;
then
I
would
give
him
justice.”
[5]And
so
it
was,
whenever
anyone
came
near
to
bow
down
to
him,
that
he
would
put
out

his hand and take him and [a]kiss him. 6In this manner Absalom acted toward all Israel who came to the king for judgment. [a]So Absalom stole the hearts of the men of Israel.

7Now it came to pass [a]after [*]forty

years that Absalom said to the king, “Please, let me go to [b]Hebron and pay the vow which I made to the LORD. 8 [a]For your servant [b]took a vow [c]while I dwelt at Geshur in Syria, saying, ‘If the LORD indeed brings me back to Jerusalem, then I will serve the LORD.’ ”

[9]And the king said to him, “Go in peace.” So he arose and went to Hebron.

[10]Then Absalom sent spies throughout all the tribes of Israel, saying,

“As soon as you hear the sound of the trumpet, then you shall say, ‘Absalom [a]reigns in Hebron!’ ” [11]And with Absalom went two hundred men [a]invited from Jerusalem, and they [b]went along innocently and did not know anything. [12]Then

Absalom sent for Ahithophel the Gilonite, [a]David’s counselor, from his city—from [b]Giloh—while he offered sacrifices. And the conspiracy grew strong, for the people with Absalom [c]continually increased in number.

David Escapes from Jerusalem

13 Now a messenger

came to David, saying, [a]“The hearts of the men of Israel are [*]with Absalom.”

[14]So David said to all his servants who *were* with him at Jerusalem, “Arise, and let us [a]flee, or we shall not escape from Absalom. Make

haste to depart, lest he overtake us suddenly and bring disaster upon us, and strike the city with the edge of the sword.”

[15]And the king’s servants said to the king, “We *are* your servants, *ready to do* whatever my

lord
the
king
commands.”
16Then
[a]the
king
went
out
with
all
his
household
after
him.
But
the
king
left
[b]ten
women,
concubines,
to
keep
the
house.
17And
the
king
went
out
with
all
the
people
after
him,
and
stopped
at

the outskirts. 18Then all his servants passed *before him; [a]and all the Cherethites, all the Pelethites, and all the Gittites, [b]six hundred men who had followed him from Gath, passed before the king.

19Then the king said to [a]Ittai the

Gittite,
“Why
are
you
also
going
with
us?
Return
and
remain
with
the
king.
For
you
are
a
foreigner
and
also
an
exile
from
your
own
place.
[20]In
fact,
you
came
only
yesterday.
Should
I
make
you
wander
up
and

down with us today, since I go [a]I know not where? Return, and take your brethren back. Mercy and truth *be* with you.”

21 But Ittai answered the king and said, [a]“*As* the LORD lives, and *as* my lord the king

lives, surely in whatever place my lord the king shall be, whether in death or life, even there also your servant will be.”

[22]So David said to Ittai, “Go, and cross over.” Then Ittai the Gittite and all his men

and all the little ones who *were* with him crossed over. [23]And all the country wept with a loud voice, and all the people crossed over. The king himself also crossed over the Brook Kidron, and all the people crossed over toward the way of the [a]wilderness.

24 There was [a]Zadok also, and all the Levites with him, bearing the [b]ark of the covenant of God. And they set down the ark of God, and [c]Abiathar went up until all the

people had finished crossing over from the city. [25] Then the king said to Zadok, “Carry the ark of God back into the city. If I find favor in the eyes of the LORD, He [a] will bring me back and show me *both* it and [b]His dwelling place. 26But if He says thus: ‘I have no [a]delight in you,’ here I am, [b]let Him do to me as seems good to Him.” 27The king also said to Zadok the priest, “*Are* you *not* a [a]seer? [*] Return to the city in peace, and [b]your two sons with you, Ahimaaz your son, and Jonathan the son of Abiathar. 28 See, [a]I will wait in the plains of the wilderness until word comes from you to inform me.”

[29]Therefore Zadok and Abiathar carried the ark of God back to Jerusalem. And they remained there.

[30]So David went up by the Ascent of the *Mount of* Olives, and wept as he went up; and he

[a]had his head covered and went [b]barefoot. And all the people who *were* with him [c]covered their heads and went up, [d]weeping as they went up. 31 Then *someone* told David, saying, [a]“Ahithophel *is* among the conspirators with Absalom.” And David

said, “O LORD, I pray, [b]turn the counsel of Ahithophel into foolishness!”

[32]Now it happened when David had come to the top *of the mountain,* where he worshiped God—there was Hushai the [a]Archite coming to meet him [b]with

his robe torn and dust on his head. [33]David said to him, “If you go on with me, then you will become [a]a burden to me. [34]But if you return to the city, and say to Absalom, [a]‘I will be your servant, O king; *as* I *was* your father's servant previously, so I *will* now also *be* your servant,' then you may defeat the counsel of Ahithophel for me. [35]And *do* you not *have* Zadok and Abiathar the priests with you there? Therefore i1t will be *that* whatever you hear from the king's house, you shall tell to [a]Zadok and Abiathar the priests. [36]Indeed *they have* there [a]with them their two sons, Ahimaaz, Zadok's *son,* and Jonathan, Abiathar's *son;* and by them you shall send me everything you hear.”

[37]So Hushai, [a]David’s friend, went into the city. [b]And Absalom came into Jerusalem.

SPIRITUAL WARFARE BASICS

The Dominion Fast — the Forty-Day Fast

Why did Jesus

fast for forty days and forty nights? (See Matthew 4.) He did it for dominion. He did it for authority. Adam lost dominion when he ate of the fruit of the tree God told him not to eat. In the wilderness the children of Israel lost the Promised Land by eating quail when God had given them His supernatur provision of manna.

Is that meat you feel like eating rather than fasting worth the risk of you missing the promise of God? Fasting makes you tough in the spirit. Fasting makes the inner man rise up and say, “Devil, who do you think you are to mess with my family, or put fear in my mind, or inflict my body? Greater is He that is in me.” By fasting forty days and nights, Jesus got back dominion. He returned in the power of the Spirit after He fasted.*

2 Samuel 16

Mephibosheth's Servant

1When [a] David was a little past the top *of the mountain,* there was [b]Ziba the servant of Mephibosheth, who met him with a couple of saddled donkeys, and on them two hundred *loaves* of bread, one hundred clusters of raisins, one hundred summer fruits, and a skin of wine. [2]And the king said to Ziba, “What do you mean to do with these?”

So Ziba said, “The donkeys *are* for the king’s household to ride on, the bread and summer fruit for the young men to eat, and the wine for [a]those who are fa[1]int in the wilderness to drink.”

[3]Then the king said, “And where *is* your [a]master’s son?”

[b]And Ziba said to

the king, “Indeed he is staying in Jerusalem, for he said, ‘Today the house of Israel will restore the kingdom of my father to me.’ ”

[4]So the king said to Ziba, “Here, all that *belongs* to Mephibosheth *is* yours.”

And Ziba said, “I humbly bow before you, *that* I may find favor in your sight, my lord, O king!”

Shimei Curses David

5 Now when King David came to [a]Bahurim, there was a man from the family of the house

of Saul, whose name *was* [b]Shimei the son of Gera, coming from there. He came out, cursing continuously as he came. 6 And he threw stones at David and at all the servants of King David. And all the people and all the mighty men *were* on his right hand and on his left. [7]Also Shimei said thus when he cursed: “Come out! Come out! You [*]bloodthirsty man, [a]you [*]rogue! [8]The LORD has [a]brought upon you all [b]the blood of the house of Saul, in whose place you have reigned; and the LORD has delivered the kingdom into the hand of Absalom your son. So now you *are caught* in your own evil, because you are a *bloodthirsty man!”

[9] Then Abishai

the son of Zeruiah said to the king, “Why should this [a]dead dog [b]curse my lord the king? Please, let me go over and take off his head!”

[10]But the king said, [a]“What have I to do with you, you

sons of Zeruiah? So let him curse, because [b]the LORD has said to him, ‘Curse David.’ [c]Who then shall say, ‘Why have you done so?’ ”

[11]And David said to Abishai and all his servants, “See how [a]m1y son who

[b]came from my own body seeks my life. How much more now *may this* Benjamite? Let him alone, and let him curse; for so the LORD has ordered him. [12]It may be that the LORD will look on *my affliction,

and that the LORD will [a]repay me with [b]good for his cursing this day.” 13And as David and his men went along the road, Shimei went along the hillside opposite him and cursed as he went, threw stones at him and *kicked up dust. 14Now the king and all the people who *were* with him became weary; so they refreshed themselves there.

The Advice of Ahithophel

15Meanwhile [a]Absalom and all the people, the men of Israel, came to Jerusalem; and

Ahithophel *was* with him. [16]And so it was, when Hushai the Archite, [a]David's friend, came to Absalom, that [b]Hushai said to Absalom, "*Long* live the king! *Long* live the king!"

[17]So Absalom said to Hushai, "*Is* this your loyalty to

your friend? [a]Why did you not go with your friend?”

[18]And Hushai said to Absalom, “No, but whom the LORD and this people and all the men of Israel choose, his I will be, and with him I will remain.

19 Furthermore, [a]whom should I serve? *Should I* not *serve* in the presence of his son? As I have served in your father's presence, so will I be in your presence."

20 Then Absalom said to [a]Ahithophel, "Give advice as to what

we should do.”

21 And Ahithophel said to Absalom, “Go in to your father’s [a]concubines, whom he has left to keep the house; and all Israel will hear that you [b]are abhorred by your father. Then [c]the hands of all who

are with you will be strong.” [22]So they pitched a tent for Absalom on the top of the house, and Absalom went in to his father’s concubines [a]in the sight of all Israel.

[23]Now the advice of Ahithophel, which he

gave in those days, *was* as if one had inquired at the oracle of God. So *was* all the advice of Ahithophel [a]both with David and with Absalom.

2 Samuel 17

[1]Moreover Ahithophel said to Absalom, “Now let me

choose twelve thousand men, and I will arise and pursue David tonight. [2]I will come upon him while he *is* [a]weary and weak, and make him [*]afraid. And all the people who *are* with him will flee, and I will

[b]strike only the king. [3]Then I will bring back all the people to you. When all return except the man whom you seek, all the people will be at peace.” [4]And the saying pleased Absalom and all the [a]elders of

Israel.

The Advice of Hushai

5 Then Absalom said, “Now call Hushai the Archite also, and let us hear what he [a]says too.” 6 And when Hushai came to Absalom, Absalom spoke to him, saying, “Ahithophel has spoken in this manner. Shall

we do as he says? If not, speak up.”

[7]So Hushai said to Absalom: “The advice that Ahithophel has given *is* not good at this time. [8]For,” said Hushai, “you know your father and his men, that they *are* mighty

men, and they *are* enraged in their minds, like [a]a bear robbed of her cubs in the field; and your father *is* a man of war, and will not camp with the people. 9Surely by now he is hidden in

some
pit,
or
in
some
other
place.
And
it
will
be,
when
some
of
them
are
overthrown
at
the
first,
that
whoever
hears
it
will
say,
‘There
is
a
slaughter
among
the
people
who
follow
Absalom.’
[10]And
even
he
who

is valiant, whose heart *is* like the heart of a lion, will [a]melt completely. For all Israel knows that your father *is* a mighty man, and *those* who *are* with him *are* valiant men. 11Therefore I advise that all Israel be fully gathered to you, [a]from Dan to Beersheba, [b]like the sand that *is* by the sea for multitude, and that you go[1] to battle in person. [12]So we will come upon him in some place where he may be found, and we will fall on him as the dew falls on the ground. And of him and all the men who *are* with him there shall not be left so much as one. [13]Moreover, if he has withdrawn into a city, then all Israel shall bring ropes to that city; and we will [a]pull it into the river, until there is not one small stone found there.”

[14]So Absalom and all the men of Israel said, “The advice of

Hushai the Archite *is* better than the advice of Ahithophel." For [a]the LORD had purposed to defeat the good advice of Ahithophel, to the intent that the LORD might bring disaster on Absalom.

Hushai Warns David to Escape

15[a]Then Hushai

said to Zadok and Abiathar the priests, “Thus and so Ahithophel advised Absalom and the elders of Israel, and thus and so I have advised. 16 Now therefore, send quickly and tell David, saying, ‘Do not spend this night [a]in the plains of the wilderness, but speedily cross over, lest the king and all the people who *are* with him be swallowed up.' "

17 [a]Now Jonathan and Ahimaaz [b]stayed at [c]En Rogel, for they dared not be seen coming into the

city; so a female servant would come and tell them, and they would go and tell King David. [18]Nevertheless a lad saw them, and told Absalom. But both of them went away quickly and came to a man’s house [a]in

Bahurim, who had a well in his court; and they went down into it. 19[a]Then the woman took and spread a covering over the well’s mouth, and spread ground grain on it; and the thing was not known. 20And when

Absalom's servants came to the woman at the house, they said, "Where *are* Ahimaaz and Jonathan?"

So [a]the woman said to them, "They have gone over the water brook."

And when they had searched and could not find *them,* they returned to Jerusalem. 21Now it came to pass, after they had departed, that they came up out of the well and went and told King David, and said to David, [a]“Arise and cross over the water quickly. For thus has

Ahithophel advised against you.” [22]So David and all the people who *were* with him arose and crossed over the Jordan. By morning light not one of them was left who had not gone over the Jordan.

[23]Now when Ahithophel saw

that his advice was not followed, he saddled a donkey, and arose and went home to [a]his house, to his city. Then he [*]put his [b]household in order, and [c]hanged himself, and died; and he was buried in his father’s tomb.

24Then David went to [a]Mahanaim. And Absalom crossed over the Jordan, he and all the men of Israel with him. 25And Absalom made [a]Amasa captain of the army instead of Joab. This Amasa *was* the son of a man whose name *was* *Jithra, an *Israelite, who had gone in to [b]Abigail the daughter of Nahash, sister of Zeruiah, Joab’s mother. [26]So Israel and Absalom encamped in the land of Gilead.

[27]Now it happened, when David had come to Mahanaim,

that [a]Shobi the son of Nahash from Rabbah of the people of Ammon, [b]Machir the son of Ammiel from Lo Debar, and [c]Barzillai the Gileadite from Rogelim, 28 brought beds and basins, earthen vessels and wheat, barley and flour, parched *grain* and beans, lentils and parched *seeds,* 29honey and curds, sheep and cheese of the herd, for David and the people who *were* with him to eat. For they said, “The people are hungry and weary and thirsty [a]in the wilderness.”

2 Samuel 18

Absalom’s Defeat and Death

[1]And David *numbered the people who *were* with him, and [a]set captains of thousands and captains of hundreds over them. [2]Then David sent out one third of the people under the hand

of Joab, [a]one third under the hand of Abishai the son of Zeruiah, Joab’s brother, and one third under the hand of [b]Ittai the Gittite. And the king said to the people, “I also will surely go out with you myself.”

3[a]But the people answered, “You shall not go out! For if we flee away, they will not care about us; nor if half of us die, will they care about us. But *you are* worth ten thousand of us now. For you are now more help to us in the city.”

[4]Then the king said to them, “Whatever seems best to you I will do.” So the king stood beside the gate, and all the people went out by

hundreds and by thousands. 5Now the king had commanded Joab, Abishai, and Ittai, saying, “*Deal* gently for my sake with the young man Absalom.” [a]And all the people heard when the king gave all the captains orders concerning Absalom.

6So

the people went out into the field of battle against Israel. And the battle was in the [a]woods of Ephraim. 7The people of Israel were overthrown there before the servants of David, and a great slaughter of twenty thousand took place there that day. [8]For the battle there was scattered over the face of the whole countryside, and the woods devoured more people that day than the sword devoured.

[9]Then Absalom met the servants of David. Absalom rode on a

mule. The mule went under the thick boughs of a great terebinth tree, and [a]his head caught in the terebinth; so he was left hanging between heaven and earth. And the mule which *was* under him went on. 10Now a

certain
man
saw
it
and
told
Joab,
and
said,
“I
just
saw
Absalom
hanging
in
a
terebinth
tree!”

[11]So
Joab
said
to
the
man
who
told
him,
“You
just
saw
him!
And
why
did
you
not
strike
him
there
to

the ground? I would have given you ten *shekels* of silver and a belt.”

[12]But the man said to Joab, “Though I were to receive a thousand *shekels* of silver in my hand, I would not raise my hand against

the king’s son. [a]For in our hearing the king commanded you and Abishai and Ittai, saying, [*]‘Beware lest anyone *touch* the young man Absalom!’ [13]Otherwise I would have dealt falsely against my own life. For there is nothing hidden from the king, and you yourself would have set yourself against *me.*”

[14]Then Joab said, “I cannot linger with you.” And he took three spears in his hand and thrust them through Absalom’s heart, while he was *still* alive in the

midst of the terebinth tree. [15]And ten young men who bore Joab’s armor surrounded Absalom,[1] and struck and killed him.

[16]So Joab blew the trumpet, and the people returned from pursuing Israel. For Joab held back the people. [17]And they

took Absalom and cast him into a large pit in the woods, and [a]laid a very large heap of stones over him. Then all Israel [b]fled, everyone to his tent.

18Now Absalom in his lifetime had taken and set up a [*]pillar for himself, which *is* in [a]the King’s Valley. For he said, [b]“I have no son to keep my name in remembrance.” He called the pillar after his own name. And to this day it is called Absalom’s Monument.

David Hears of Absalom’s Death

19Then [a]Ahimaaz the son of Zadok said, “Let me run now and take the news to the king, how the LORD has [*]avenged him of his enemies.”

20And Joab said to him, “You shall not

take the news this day, for you shall take the news another day. But today you shall take no news, because the king’s son is dead.” [21]Then Joab said to the Cushite, “Go, tell the king what you have seen.”

So the Cushite bowed himself to Joab and ran.

[22]And Ahimaaz the son of Zadok said again to Joab, “But *whatever happens, please let me also run after the Cushite.”

So Joab said, “Why will you run, my son, since you have no news ready?”

[23]“But whatever happens,” *he said,* “let me run.”

So he said to him, “Run.” Then Ahimaaz ran by way of the plain, and outran the Cushite.

[24]Now David was sitting between the [a]two gates. And

the watchman went up to the roof over the gate, to the wall, lifted his eyes and looked, and there was a man, running alone. [25]Then the watchman cried out and told the king. And the king said, “If he *is* alone, *there is* news in his mouth.” And he came rapidly and drew near.

[26]Then the watchman saw *another* man running, and the watchman called to the gatekeeper and said, “There is *another* man, running alone!”

And the king

said, “He also brings news.”

27 So1 the watchman said, [*]“I think the running of the first is like the running of Ahimaaz the son of Zadok.”

And the king said, “He *is* a good man, and comes with [a]good news.”

[28]So Ahimaaz called out and said to the king, [*]“All is well!” Then he bowed down with his face to the earth before the king, and said, [a]“Blessed *be* the LORD your God, who has delivered up the men who

raised their hand against my lord the king!”

[29]The king said, “Is the young man Absalom safe?”

Ahimaaz answered, “When Joab sent the king’s servant and *me* your servant, I saw a great tumult, but I did not know what *it was about.*”

[30]And the king said, “Turn aside *and* stand here.” So he turned aside and stood still.

[31]Just then the Cushite came, and the Cushite said, “There is good news, my lord the king! For the LORD has

avenged you this day of all those who rose against you.”

[32]And the king said to the Cushite, “Is the young man Absalom safe?”

So the Cushite answered, “May the enemies of my lord the king, and all who rise against you to do harm, be like *that* young man!”

David’s Mourning for Absalom

[33]Then the king was deeply moved, and went up to the chamber over the gate, and wept. And as he went, he said thus: [a]“O my

son Absalom—my son, my son Absalom—if only I had died in your place! O Absalom my son, [b]my son!”

2 Samuel 19

[1]And Joab was told, “Behold, the king is weeping and [a]mourning for Absalom.”

[2]So the victory that day was *turned* into [a]mourning for all the people. For the people heard it said that day, “The king is grieved for his son.” [3]And the people *stole back [a]into the city that day, as people

who are ashamed steal away when they flee in battle. 4But the king [a]covered his face, and the king cried out with a loud voice, [b]“O my son Absalom! O Absalom, my son, my son!”

5Then [a]Joab came into the

house
to
the
king,
and
said,
“Today
you
have
disgraced
all
your
servants
who
today
have
saved
your
life,
the
lives
of
your
sons
and
daughters,
the
lives
of
your
wives
and
the
lives
of
your
concubines,
[6]in
that
you

love your enemies and hate your friends. For you have declared today that you *regard neither princes nor servants; for today I perceive that if Absalom had lived and all of us had died today, then it would have pleased you well. [7]Now therefore, arise, go out and speak *comfort to your servants. For I swear by the LORD, if you do not go out, not one will stay with you this night. And that will be worse for you than all the evil that has befallen you from your youth until now.” 8Then the king arose and sat in the [a]gate. And they told all the people, saying, “There is the king, sitting in the gate.” So all the people came before the king. For everyone of Israel had [b]fled to his tent.

SPIRITUAL WARFARE PRAYER

Prayer Against Ungodlines

Lord, Your servant David came to a time in his life when he felt as *though he were drowning in a flood of enemies who were trying to destroy him, yet You rescued him. I pray that You will rescue me from the floodwaters of trouble, and I too will praise You, as David praised*

You. “The LORD is my rock and my fortress and my deliverer; the God of my strength, in whom I will trust; my shield and the horn of my salvation, my stronghold and my refuge; my Savior, You save me *from violence. I will call upon the LORD, who is worthy to be praised; so shall I be saved from my enemies. When the waves of death surrounded me, the floods of ungodliness made me afraid. The sorrows of Sheol* *surrounded me; the snares of death confronted me. In my distress I called upon the LORD, and cried out to my God; He heard my voice from His temple, and my cry entered His ears. … He drew me out* *of many waters. He delivered me from my strong enemy, from those who hated me; for they were too strong for me. … For who is God, except the LORD? And who is a rock, except our God?”* (2 Sam.

*22:2–7, 17–18, 32). You are my strong fortress, and You set me free, amen.**

David Returns to Jerusalem

9Now all the people were in

a dispute throughout all the tribes of Israel, saying, “The king saved us from the hand of our [a]enemies, he delivered us from the hand of the [b]Philistines, and now he has [c]fled from the land because of Absalom. 10But

Absalom, whom we anointed over us, has died in battle. Now therefore, why do you say nothing about bringing back the king?”

11 So King David sent to [a]Zadok and Abiathar the priests, saying, “Speak to the elders of Judah, saying,

‘Why are you the last to bring the king back to his house, since the words of all Israel have come to the king, to his *very* house? 12You *are* my brethren, you *are* [a]my bone and my flesh. Why then are you the last to bring back the king?’ [13][a]And say to Amasa, ‘*Are* you not my bone and my flesh? [b]God do so to me, and more also, if you are not commander of the army before me

[*]continually in place of Joab.' "

14So he swayed the hearts of all the men of Judah, [a]just as *the heart of* one man, so that they sent *this word* to the king: "Return, you and all your servants!"

15Then

the king returned and came to the Jordan. And Judah came to [a]Gilgal, to go to meet the king, to escort the king [b]across the Jordan. [16]And [a]Shimei the son of Gera, a Benjamite, who *was* from Bahurim, hurried and came down with the men of Judah to meet King David. 17 *There were* a thousand men of [a]Benjamin with him, and [b]Ziba the servant of the house of Saul, and his fifteen sons and his twenty servants with him; and they went over the Jordan before the king. [18]Then a ferryboat [1]went across to carry over the king's household, and to do what he thought good.

David's Mercy to Shimei

Now Shimei the son of Gera fell down before the king when he had crossed the Jordan. 19 Then he said to the king, [a]“Do not let my lord *impute iniquity to me, or remember what [b]wrong your servant did on the day that my lord the king left Jerusalem, that the king should [c]take *it* to heart. 20For I, your servant, know that I have sinned. Therefore here I am, the first to come today of all [a]the house of Joseph to go down to meet my lord the king.”

21But Abishai the son of Zeruiah answered and said, “Shall not Shimei be put to death for this, [a]because he [b]cursed the LORD’s anointed?”

22And David said, [a]“What have I to do with you, you sons of Zeruiah, that you should be adversaries to me today? [b]Shall any man be put to death today in Israel? For do I not know that today I *am* king over Israel?” 23Therefore [a]the king said to Shimei, “You shall not die.” And the king swore to him.

David and Mephibosheth Meet

[24]Now [a]Mephibosheth the son of Saul came down to meet the king. And he had not cared for his feet, nor trimmed his mustache, nor washed his clothes, from the day the

king departed until the day he returned in peace. 25So it was, when he had come to Jerusalem to meet the king, that the king said to him, [a]“Why did you not go with me, Mephibosheth?”

26And he answered, “My

lord, O king, my servant deceived me. For your servant said, ‘I will saddle a donkey for myself, that I may ride on it and go to the king,’ because your servant *is* lame. [27]And [a]he has slandered your servant to my lord the king, [b]but my lord the king *is* like the angel of God. Therefore do *what is* good in your eyes. 28For all my father's house were but dead [1]men before my lord the king. [a]Yet you set your servant among those who eat at your own table. Therefore what right have I still to *cry out anymore to the king?”

[29]So the king said to him, “Why do you speak anymore of your matters? I have

said, ‘You and Ziba divide the land.’ ”

[30]Then Mephibosheth said to the king, “Rather, let him take it all, inasmuch as my lord the king has come back in peace to his own house.”

David’s Kindness to Barzillai

[31]And

[a]Barzillai the Gileadite came down from Rogelim and went across the Jordan with the king, to escort him across the Jordan. [32]Now Barzillai was a very aged man, eighty years old. And [a]he had provided the king with supplies while

he stayed at Mahanaim, for he *was* a very rich man. [33]And the king said to Barzillai, “Come across with me, and I will provide for you while you are with me in Jerusalem.”

[34]But Barzillai said to the king,

“How long have I to live, that I should go up with the king to Jerusalem? 35 I *am* today [a]eighty years old. Can I discern between the good and bad? Can your servant taste what I eat or what I drink? Can I hear any longer the voice of singing men and singing women? Why then should your servant be a further burden to my lord the king? [36]Your servant will go a little way across the Jordan with the king. And why should the king repay me *with* such a reward? [37]Please let your servant turn back again, that I may die in my own city, near the grave of my father and mother. But here is your servant

[a]Chimham; let him cross over with my lord the king, and do for him what seems good to you.”

38 And the king answered, “Chimham shall cross over with me, and I will do for him what seems good to you.

Now whatever you request of me, I will do for you.” [39]Then all the people went over the Jordan. And when the king had crossed over, the king [a]kissed Barzillai and blessed him, and he returned to his own place.

The Quarrel About the King

[40]Now the king went on to Gilgal, and *Chimham went on with him. And all the people of Judah escorted the king, and also half the people of Israel. [41]Just then all the men of

Israel came to the king, and said to the king, “Why have our brethren, the men of Judah, stolen you away and [a]brought the king, his household, and all David’s men with him across the Jordan?”

42So all the men

of Judah answered the men of Israel, “Because the king *is* [a]a close relative of ours. Why then are you angry over this matter? Have we ever eaten at the king’s *expense?* Or has he given us any gift?”

43And

the men of Israel answered the men of Judah, and said, [a]“We have ten shares in the king; therefore we also have more *right* to David than you. Why then do you despise us—were we not the first to advise bringing back our king?”

Yet [b]the words of the men of Judah were *fiercer than the words of the men of Israel.

2 Samuel 20

The Rebellion of Sheba

1And there happened to be there a *rebel, whose name *was* Sheba the son of Bichri, a Benjamite. And he blew a trumpet, and said:

> [a]“We have no share in David,
>
> Nor do we have inheritance in the son of Jesse;
>
> [b]Every man to his

tents, O Israel!”

[2]So every man of Israel deserted David, *and* followed Sheba the son of Bichri. But the [a]men of Judah, from the Jordan as far as Jerusalem, remained loyal to their king.

[3]Now David came to his

house at Jerusalem. And the king took the ten women, [a]his concubines whom he had left to keep the house, and put them in seclusion and supported them, but did not go in to them. So they were shut up to the day of their death, living in widowhood.

[4]And the king said to Amasa, [a]“Assemble the men of Judah for me within three days, and be present here yourself.” [5]So Amasa went to assemble *the men of* Judah. But

he delayed longer than the set time which David had appointed him.

6 And David said to [a]Abishai, “Now Sheba the son of Bichri will do us more harm than Absalom. Take [b]your lord’s servants and pursue him, lest he find for himself fortified cities, and escape

us.” [7]So Joab’s men, with the [a]Cherethites, the Pelethites, and [b]all the mighty men, went out after him. And they went out of Jerusalem to pursue Sheba the son of Bichri. [8]When they *were* at the large stone which *is* in Gibeon, Amasa came before them. Now Joab was dressed in battle armor; on it was a belt *with* a sword fastened in its sheath at his hips; and as he was going forward, it fell out. [9]Then Joab said to Amasa, "*Are* you in health, my brother?" [a]And Joab took Amasa by the beard with his right hand to kiss him. [10]But Amasa did not notice the sword that *was* in Joab’s hand. And [a]he struck him with it [b]in the stomach, and his entrails poured out on the ground; and he did not *strike* him again. Thus he died.

Then Joab

and Abishai his brother pursued Sheba the son of Bichri. [11]Meanwhile one of Joab's men stood near Amasa, and said, "Whoever favors Joab and whoever *is* for David—follow Joab!" [12]But Amasa wallowed in *his* blood in the middle

of
the
highway.
And
when
the
man
saw
that
all
the
people
stood
still,
he
moved
Amasa
from
the
highway
to
the
field
and
threw
a
garment
over
him,
when
he
saw
that
everyone
who
came
upon
him
halted.
[13]When

he was removed from the highway, all the people went on after Joab to pursue Sheba the son of Bichri.

14 And he went through all the tribes of Israel to [a]Abel and Beth Maachah and all the Berites. So they

were gathered together and also went after [*]*Sheba.* 15Then they came and besieged him in Abel of Beth Maachah; and they [a]cast up a siege mound against the city, and it stood by the rampart. And all the people who *were* with Joab battered the wall to throw it down.

[16]Then a wise woman cried out from the city, “Hear, hear! Please say to Joab, ‘Come nearby, that I may speak with you.’ ” [17]When he had come near to

her, the woman said, “*Are* you Joab?”

He answered, “I *am.*”

Then she said to him, “Hear the words of your maidservant.”

And he answered, “[1]I am listening.”

[18]So she spoke, saying, “They used to talk in former times, saying,

‘They shall surely seek *guidance* at Abel,’ and so they would end *disputes.* [19]I *am among the* peaceable *and* faithful in Israel. You seek to destroy a city and a mother in Israel. Why would you swallow up [a]the inheritance of the LORD?”

[20]And Joab answered and said, “Far be it, far be it from me, that I should swallow up or destroy! [21]That *is* not so. But a man from the mountains of Ephraim, Sheba the son of Bichri

by name, has raised his hand against the king, against David. Deliver him only, and I will depart from the city.”

So the woman said to Joab, “Watch, his head will be thrown to you over the wall.” [22]Then the woman [a]in her wisdom went to all the people. And they cut off the head of Sheba the son of Bichri, and threw *it* out to Joab. Then he blew a trumpet, and they withdrew from the city, every man to his tent. So Joab returned to the king at Jerusalem.

David's Government Officers

23 And [a]Joab *was* over all the army of Israel; Benaiah the son of Jehoiada *was* over the Cherethites and the Pelethites; 24 Adoram *was* [a]in charge of

revenue; [b]Jehoshaphat the son of Ahilud *was* recorder; 25 Sheva *was* scribe; [a]Zadok and Abiathar *were* the priests; 26 [a]and Ira the Jairite was [*]a chief minister under David.

2 Samuel 21

David Avenges the Gibeonites

1 Now there was a famine

in the days of David for three years, year after year; and David [a]inquired of the LORD. And the LORD answered, "*It is* because of Saul and *his* *bloodthirsty house, because he killed the Gibeonites." 2So the king called the

Gibeonites and spoke to them. Now the Gibeonites *were* not of the children of Israel, but [a]of the remnant of the Amorites; the children of Israel had sworn protection to them, but Saul had sought to kill them [b]in his zeal for the children of Israel and Judah.

[3]Therefore David said to the Gibeonites, “What shall I do for you? And with what shall I make atonement, that you may bless [a]the inheritance of the LORD?”

[4]And the Gibeonites said

to
him,
“We
will
have
no
silver
or
gold
from
Saul
or
from
his
house,
nor
shall
you
kill
any
man
in
Israel
for
us.”
So
he
said,
“Whatever
you
say,
I
will
do
for
you.”
[5]Then
they
answered
the

king, “As for the man who consumed us and plotted against us, *that* we should be destroyed from remaining in any of the territories of Israel, 6let seven men of his descendants be delivered [a]to us, and we will hang them before the LORD [b]in Gibeah of Saul, [c]*whom* the LORD chose.”

And the king said, “I will give *them.*”

[7]But the king spared [a]Mephibosheth the son of Jonathan, the son of Saul, because of [b]the LORD’s oath that *was*

between them, between David and Jonathan the son of Saul. 8So the king took Armoni and Mephibosheth, the two sons of [a]Rizpah the daughter of Aiah, whom she bore to Saul, and the five sons of *Michal the daughter of

Saul, whom she [*]brought up for Adriel the son of Barzillai the Meholathite; [9]and he delivered them into the hands of the Gibeonites, and they hanged them on the hill [a]before the LORD. So they fell, *all* seven together, and were put to death in the days of harvest, in the first *days,* in the beginning of barley harvest.

10 Now [a]Rizpah the daughter of Aiah took sackcloth and spread it for herself on the rock, [b]from the beginning of harvest

until the late rains poured on them from heaven. And she did not allow the birds of the air to rest on them by day nor the beasts of the field by night.

[11]And David was told what Rizpah the

daughter of Aiah, the concubine of Saul, had done. [12]Then David went and took the bones of Saul, and the bones of Jonathan his son, from the men of [a]Jabesh Gilead who had stolen them from the street of *Beth

Shan, where the [b]Philistines had hung them up, after the Philistines had struck down Saul in Gilboa. 13So he brought up the bones of Saul and the bones of Jonathan his son from there; and they gathered the bones of those who had been hanged. [14]They buried the bones of Saul and Jonathan his son in the country of Benjamin in [a]Zelah, in the tomb of Kish his father. So they performed all that the king commanded. And after that

[b]God heeded the prayer for the land.

Philistine Giants Destroyed

15When the Philistines were at war again with Israel, David and his servants with him went down and fought against the Philistines; and David grew faint. 16Then Ishbi-Benob, who *was* one of the sons of [*]the [a]giant, the weight of whose bronze spear *was* three hundred *shekels,* who was bearing a new *sword,* thought he could kill David. 17But [a]Abishai the son of Zeruiah came to his aid, and struck the Philistine and killed him. Then the men of David swore to him, saying, [b]“You shall go out no more with us to battle, lest you quench the [c]lamp of Israel.”

18 [a]Now it happened afterward that there was again

a battle with the Philistines at Gob. Then [b]Sibbechai the Hushathite killed *Saph, who *was* one of the sons of *the giant. 19Again there was war at Gob with the Philistines, where [a]Elhanan the son of *Jaare-Oregim the Bethlehemite killed [b]*the brother of* Goliath the Gittite, the shaft of whose spear *was* like a weaver's beam.

[20]Yet again [a]there was war at Gath, where there was a man of *great* stature, who had six fingers on each hand and

six toes on each foot, twenty-four in number; and he also was born to [1]*the giant. 21 So when he [a]defied Israel, Jonathan the son of *Shimea, David's brother, killed him.

22 [a]These four were born to *the giant in Gath,

and fell by the hand of David and by the hand of his servants.

2 Samuel 22

Praise for God's Deliverance

1 Then David [a]spoke to the LORD the words of this song, on the day when the LORD had

[b]delivered him from the hand of all his enemies, and from the hand of Saul. 2And he [a]said:

[b]“The LORD *is* my rock and my [c]fortress and my deliverer;

3The God of my strength, [a]in whom I will trust;

My [b]shield and the [c]horn[*] of my salvation,

My [d]stronghold and my [e]refuge;

My Savior, You save me from violence.

[4]I will call upon the LORD, *who is worthy* to be praised;

So shall I

be saved from my enemies.

5“When the waves of death surrounded me,

The floods of ungodliness *made me afraid.

6The [a]sorrows of Sheol surrounded me;

The snares of death confronted me.

7In my distress [a]I called

upon the LORD,

And cried out to my God;

He [b]heard my voice from His temple,

And my cry *entered* His ears.

8“Then [a]the earth shook and trembled;

[b]The foundations of [*]heaven quaked and were shaken,

Because
He
was
angry.

[9]Smoke
went
up
from
His
nostrils,

And
devouring
[a]fire
from
His
mouth;

Coals
were
kindled
by
it.

[10]He
[a]bowed
the
heavens
also,
and
came
down

With
[b]darkness
under
His
feet.

[11]He

rode
upon
a
cherub,
and
flew;

And
He
*was
seen
[a]upon
the
wings
of
the
wind.

12He
made
[a]darkness
canopies
around
Him,

Dark
waters
and
thick
clouds
of
the
skies.

13From
the
brightness
before
Him

Coals

of fire were kindled.

14“The LORD [a]thundered from heaven,

And the Most High uttered His voice.

15He sent out [a]arrows and scattered them;

Lightning bolts, and He vanquished them.

16Then the channels of the sea [a]were

seen,

The foundations of the world were uncovered,

At the [b]rebuke of the LORD,

At the blast of the breath of His nostrils.

2 Sam. 22:16

Let the blast of Your nostrils rebuke the enemy.

17“He [a] sent from above, He took me,

He drew me out of many waters.

18He delivered me from my strong enemy,

From those who hated me;

For they were too strong for me.

19They confronted

me in the day of my calamity,

But the LORD was my [a]support.

20[a]He also brought me out into a broad place;

He delivered me because He [b]delighted in me.

21“The [a]LORD rewarded me according

to my righteousness;

According to the [b]cleanness of my hands

He has recompensed me.

22For I have [a]kept the ways of the LORD,

And have not wickedly departed from my God.

23For all His [a]judgments

were
before
me;

And
as
for
His
statutes,
I
did
not
depart
from
them.

24I
was
also
[a]blameless
before
Him,

And
I
kept
myself
from
my
iniquity.

25Therefore
[a]the
LORD
has
*recompensed
me
according
to
my

righteousness,

According to [*]my cleanness in His eyes.

[26]“With [a]the merciful You will show Yourself merciful;

With a blameless man You will show Yourself blameless;

[27]With the pure You will show Yourself pure;

And [a]with the

devious You will show Yourself shrewd.

28You will save the [a]humble[*] people;

But Your eyes *are* on [b]the haughty, *that* You may bring *them* down.

29“For You *are* my [a]lamp, O LORD;

The LORD shall enlighten

my
darkness.

[30]For
by
You
I
can
run
against
a
troop;

By
my
God
I
can
leap
over
a
[a]wall.

[31]*As*
for
God,
[a]His
way
is
perfect;

[b]The
word
of
the
LORD
is
proven;

He
is

a
shield
to
all
who
trust
in
Him.

32“For
[a]who
is
God,
except
the
LORD?

And
who
is
a
rock,
except
our
God?

33[*]God
is
my
[a]strength
and
power,

And
He
[b]makes
[*]my
way
[c]perfect.

34He

makes [*]my feet [a]like the *feet* of deer,

And [b]sets me on my high places.

35He teaches my hands [*]to make war,

So that my arms can bend a bow of bronze.

36“You have also given

me
the
shield
of
Your
salvation;

Your
gentleness
has
made
me
great.

37You
[a]enlarged
my
path
under
me;

So
my
feet
did
not
slip.

38“I
have
pursued
my
enemies
and
destroyed
them;

Neither
did
I
turn

back
again
till
they
were
d1estroyed.

[39]And
I
have
destroyed
them
and
wounded
them,

So
that
they
could
not
rise;

They
have
fallen
[a]under
my
feet.

[40]For
You
have
[a]armed
me
with
strength
for
the
battle;

You
have
*subdued
under
me
[b]those
who
rose
against
me.

41You
have
also
*given
me
the
[a]necks
of
my
enemies,

So
that
I
destroyed
those
who
hated
me.

42They
looked,
but
there
was
none
to
save;

Even [a]to the LORD, but He did not answer them.

43Then I beat them as fine [a]as the dust of the earth;

I trod them [b]like dirt in the streets,

And I [*]spread them out.

44“You

[a]have also delivered me from the *strivings of my people;

You have kept me as the [b]head of the nations.

[c]A people I have not known shall serve me.

45The foreigners submit to me;

As

soon as they hear, they obey me.

[46]The foreigners [1]fade away,

And *come frightened [a]from their hideouts.

[47]“The LORD lives!

Blessed *be* my Rock!

Let God be exalted,

The [a]Rock of my salvation!

[48]*It*

is God who avenges me,

And [a]subdues the peoples under me;

49He delivers me from my enemies.

You also lift me up above those who rise against me;

You have delivered me from the [a]violent man.

[50]Therefore I will give thanks to You, O LORD, among [a]the Gentiles,

And sing praises to Your [b]name.

[51]“*He* [a]*is* the tower of salvation to His king,

And shows mercy to His [b]anointed,

To David

and
[c]his
descendants
forevermore.”

PREPARING
for
SPIRITUAL
WARFARE

WHERE
EVERY
PRAYER
IS
ANSWERED

The
LORD
is
my
rock
and
my
fortress
and
my
deliverer;

The
God
of
my
strength,
in
whom
I
will
trust;

My
shield
and
the
horn
of
my
salvation,

My
str
and
my
ref

My
Sav
Yo
sav
me
fro
vio

I
wi
cal
upo
the
LO
wh
is
wo
to
be
pra

So
sha
I
be

sav fro my en

— 2 Samuel 22:2–4

We should not assume that simply because we are Christians we have learned the secret of abiding in Christ. Jesus said, “If you abide in Me, and My words abide in you, you will ask what you desire, and it shall be done for you” (John 15:7). To abide in Him is to live in ceaseless fusion with His passions. It is to have found the habitation of God where no barrier or shadow exists between our weakness and His sufficiency, or between our yearning and His fulfillment.

Considering the size of God’s promises, it is actually a misfortune that most of us have no more than a few minutes of devotions each day and a church service or two each week.

The shelter of God is not only a place to visit God, but it is also a place to dwell with Him. For those who dwell with God, His presence is not merely our refuge; it is a permanent address. When we are abiding in Christ, even as He and the Father are One, so we become one with Him. It is His life, His virtue, His wisdom, and His Spirit that sustain us. We become perfectly weak, unable to resist Him. Like the Son’s relationship with the Father, so we do nothing from our own initiative unless it is something we see Him do.

If He should require of us nothing more than our love, we are well content. Jesus is our first choice, not our last resort.

To those who have entered the abiding place, our questions are not about doctrines or pronouncing the right prayer at an altar. We have found Him whom our soul loves. We are constrained and guided by His voice, surrendered and imprisoned in His love. He says, “O my dove, in the clefts of the rock, in the secret places of the cliff, let me see your face, let me hear your voice; for your voice is sweet, and your face is lovely" (Song 2:14).

This communion of heart between Christ and His bride is a stronghold. It is God’s shelter from the distresses and distractions of life. Here He tells us what to pray; here our supplications are answered. Yet in spite of our flaws and the weakness of our prayers, to Him our voice is sweet; in spite of our lowliness, our form is lovely in His eyes.*

---

* Fra Fra *Th Sh of the Mo Hig* 91- 95

2 Samuel 23

David’s Last Words

[1]Now these

are the last words of David.

Thus says David the son of Jesse;

Thus says [a]the man raised up on high,

[b]The anointed of the God of Jacob,

And the sweet psalmist of Israel:

[2]“The [a]

Spirit of the LORD spoke by me,

And His word *was* on my tongue.

3 The God of Israel said,

[a]The Rock of Israel spoke to me:

‘He who rules over men *must be* just,

Ruling [b]in

the fear of God.

[4]And [a]*he shall be* like the light of the morning *when* the sun rises,

A morning without clouds,

Like the tender grass *springing* out of the earth,

By clear shining after rain.’

[5]“Although my house *is* not so with God,

[a]Yet He has made with me an everlasting covenant,

Ordered in all *things* and secure.

For *this* *is* all my salvation and all *my* desire;

Will He not

make
it
increase?

6But
the
sons
of
rebellion
shall
all
be
as
thorns
thrust
away,

Because
they
cannot
be
taken
with
hands.

7But
the
man
who
touches
them

Must
be
*armed
with
iron
and
the
shaft

of a spear,

And they shall be utterly burned with fire in *their* place.”

SPIRITUAL WARFARE BASICS

Coming Against Belial

Second Samuel 23:6–7 compares the “sons of Belial” to thorns that cannot be handled. Those who deal with Belial “must be armed with iron and the shaft of a spear.” A thorn is something that causes distress or irritation. To be thorny means “to be full of difficulties or controversi points.”

Verse 7 pronounce

the judgment upon Belial and those who follow him: “They shall be utterly burned with fire in their place.” This is a reference to eternal damnation in hellfire. I believe that Belial is a spirit that will cause many to die lost and spend eternity in hell. “Armed with iron and the shaft of a spear” is a reference to putting on the whole armor of God. We cannot deal with this spirit without the whole armor of God.

David had to fight and overcome the men controlled by Belial. David is a type of the New Testament church. He is a type of the prophetic church the Lord is raising up in this hour. Just as David overcame, we will also overcome this end-time spirit.

We will not handle this spirit with our natural hands. He is too thorny and difficult for that. But we must and will attack him in the power of the Spirit, wearing the whole armor of God.*

David's Mighty Men

8These *are* the names of the mighty men whom David had: *Josheb-Basshebeth the Tachmonite, chief among

[*]the captains. He was called Adino the Eznite, because he had killed eight hundred men at one time. 9And after him *was* [a]Eleazar the son of [*]Dodo, the Ahohite, *one* of the three mighty men with David when they defied

the Philistines *who* were gathered there for bat1tle, and the men of Israel had retreated. [10]He arose and attacked the Philistines until his hand was [a]weary, and his hand stuck to the sword. The LORD brought about a great victory that day; and the people returned after him only to [b]plunder. 11 And after him *was* [a]Shammah the son of Agee the Hararite. [b]The Philistines had gathered together into a troop where there was a piece of ground full of lentils.

So the people fled from the Philistines. 12But he stationed himself in the middle of the field, defended it, and killed the Philistines. So the LORD brought about a great victory.

13Then [a]three of the thirty chief men went down at harvest time and came to David at [b]the cave of Adullam. And the troop of Philistines encamped in [c]the Valley of Rephaim. 14David *was* then in [a]the stronghold, and the garrison of the Philistines *was* then *in* Bethlehem. 15And

David said with longing, “Oh, that someone would give me a drink of the water from the well of Bethlehem, which *is* by the gate!” [16]So the three mighty men broke through the camp of the Philistines, drew water from the well of Bethlehem that *was* by the gate, and took it and brought *it* to David. Nevertheless he would not drink it, but poured it out to the LORD. [17]And he said, “Far be it from me, O LORD, that I should do this! Is *this not* [a]the blood of the men who went in *jeopardy of* their lives?” Therefore he would not drink it.

These things were done by the three mighty men.

18Now [a]Abishai the brother of

Joab, the son of Zeruiah, was chief of ***another* three. He lifted his spear against three hundred *men,* killed *them,* and won a name among *these* three. [19]Was he not the most honored of three? Therefore he became their captain.

However, he did not attain to the *first* three.

[20]Benaiah *was* the son of Jehoiada, the son of a valiant man from [a]Kabzeel, [*]who had done many deeds. [b]He had killed two lion-like heroes of Moab. He also had

gone down and killed a lion in the midst of a pit on a snowy day. [21]And he killed an Egyptian, *a spectacular man. The Egyptian *had* a spear in his hand; so he went down to him with a staff, wrested the spear out of the Egyptian’s hand, and killed him with his own spear. 22These *things* Benaiah the son of Jehoiada did, and won a name among three mighty men. 23He was more honored than the thirty, but he did not attain to the *first* three. And David appointed him [a]over his guard.

24[a]Asahel the brother of Joab *was* one of the thirty; Elhanan the son of Dodo of Bethlehem, 25[a]Shammah the Harodite, Elika the Harodite, 26Helez the

Paltite, Ira the son of Ikkesh the Tekoite, 27Abiezer the Anathothite, Mebunnai the Hushathite, 28Zalmon the Ahohite, Maharai the Netophathite, 29Heleb the son of Baanah (the Netophathite), Ittai the son of Ribai from Gibeah of the children of Benjamin, 30Benaiah a Pirathonite, Hiddai from the brooks of [a]Gaash, [31]Abi-Albon the Arbathite, Azmaveth the Barhumite, [32]Eliahba the Shaalbonite (of the sons of Jashen), Jonathan, [33][a]Shammah the *Hararite, Ahiam the son of Sharar the Hararite, [34]Eliphelet the son of Ahasbai, the son of the Maachathite, Eliam the son of [a]Ahithophel the Gilonite, [35][*]Hezrai the Carmelite, Paarai the Arbite, [36]Igal the son of Nathan of [a]Zobah, Bani the Gadite, [37]Zelek the Ammonite, Naharai the Beerothite (armorbearer of Joab the son of Zeruiah), 38[a]Ira the Ithrite, Gareb the Ithrite, 39*and* [a]Uriah the Hittite:[1] thirty-seven in all.

2 Samuel 24

David's Census of Israel and Judah

1Again [a]the anger of the LORD was aroused against Israel, and He moved David against them to say, [b]“Go, [*]number Israel and Judah.”

2 So the king said to Joab the commander of the army who *was* with him, “Now go throughout all the tribes of Israel, [a]from Dan to Beersheba, and count the people, that [b]I

may know the number of the people.”

[3]And Joab said to the king, “Now may the LORD your God [a]add to the people a hundred times more than there are, and may the eyes of my lord the king see

it. But why does my lord the king desire this thing?” [4]Nevertheless the king’s word *prevailed against Joab and against the captains of the army. Therefore Joab and the captains of the army went out from the presence of the king to count the people of Israel.

5And they crossed over the Jordan and camped in [a]Aroer, on the right side of the town which *is* in the midst of the ravine of Gad, and toward [b]Jazer. 6Then they came to Gilead and to the land of Tahtim Hodshi; they came to [a]Dan Jaan and around to [b]Sidon; [7]and they came to the stronghold of [a]Tyre and to all the cities of the [b]Hivites and the Canaanites. Then they went out to South Judah *as far as* Beersheba. [8]So when they had gone through all the land, they came to Jerusalem at the end of nine months and twenty days. [9]Then Joab gave the sum of the number of the people to the king. [a]And there were in Israel eight hundred thousand valiant men who drew the sword, and the men of Judah were five hundred thousand men.

The Judgment on David's Sin

10 And [a]David's heart condemned him after he

had numbered the people. So [b]David said to the LORD, [c]“I have sinned greatly in what I have done; but now, I pray, O LORD, take away the iniquity of Your servant, for I have [d]done very foolishly.”

11 Now when

David arose in the morning, the word of the LORD came to the prophet [a]Gad, David's [b]seer, saying, 12"Go and tell David, 'Thus says the LORD: "I offer you three *things;* choose one of them for yourself, that I may do *it* to you.” ’ ”

[13] So Gad came to David and told him; and he said to him, “Shall [a]seven* years of famine come to you in your land? Or shall you flee three months before your enemies, while

they pursue you? Or shall there be three days’ plague in your land? Now consider and see what answer I should take back to Him who sent me.”

[14]And David said to Gad, “I am in great distress. Please let

us fall into the hand of the LORD, [a]for His mercies *are* great; but [b]do not let me fall into the hand of man.”

15So [a]the LORD sent a plague upon Israel from the morning till the appointed time. From

Dan to Beersheba seventy thousand men of the people died. [16][a]And when the [*]angel stretched out His hand over Jerusalem to destroy it, [b]the LORD relented from the destruction, and said to the angel who was destroying the people, “It is enough; now restrain your hand." And the angel of the LORD was by the threshing floor of *Araunah the Jebusite.

17Then David spoke to the LORD when he saw the angel who was striking the people, and said, "Surely

[a]I have sinned, and I have done wickedly; but these sheep, what have they done? Let Your hand, I pray, be against me and against my father's house."

The Altar on the Threshing Floor

18 And Gad came that day to

David and said to him, [a]“Go up, erect an altar to the LORD on the threshing floor of Araunah the Jebusite.” 19So David, according to the word of Gad, went up as the LORD commanded. 20Now Araunah looked, and saw the king and his servants coming toward him. So Araunah went out and bowed before the king with his face to the ground.

21 Then Araunah said, “Why has my lord the king come to his servant?”

[a] And David said, “To

buy the threshing floor from you, to build an altar to the LORD, that [b]the plague may be withdrawn from the people.”

[22]Now Araunah said to David, “Let my lord the king take and offer up whatever *seems* good to

him. [a]Look, *here are* oxen for burnt sacrifice, and threshing implements and the yokes of the oxen for wood. 23All these, O king, Araunah has given to the king.”

And Araunah said to the king, “May the LORD your God

[a]accept you.”

[24]Then the king said to Araunah, “No, but I will surely buy *it* from you for a price; nor will I offer burnt offerings to the LORD my God with that which costs me nothing.” So [a]David bought

the threshing floor and the oxen for fifty shekels of silver. 25And David built there an altar to the LORD, and offered burnt offerings and peace offerings. [a]So the LORD heeded the prayers for the land, and [b]the plague was withdrawn from Israel.

2 Samuel 1

[1:1] a. 1 Sam. 31:6

[1:1] b. 1 Sam. 30:1, 17, 26

[1:2] a. 2 Sam. 4:10

[1:2] b. 1 Sam. 4:12

[1:2] c. 1 Sam. 25:23

[1:2] * To show grief

[1:4] a. 1 Sam. 4:16; 31:3

[1:4] b. 1 Sam. 31:2

[1:6] a. 1 Sam. 31:1

[1:6]
b.
1
Sam.
31:2–
4

[1:9]
*
agony

[1:10]
a.
Judg.
9:54;
2
Kin.
11:12

[1:11]
a.
2
Sam.
3:31;
13:31

[1:12]
a.
2
Sam.
3:31

[1:12] b. 1 Sam. 31:13

[1:12] c. 2 Sam. 6:21

[1:14] a. Num. 12:8

[1:14] b. 1 Sam. 31:4

[1:14] c. 1 Sam. 24:6; 26:9

[1:15]

a. 2 Sam. 4:10, 12

[1:16] a. 1 Sam. 26:9; 2 Sam. 3:28; 1 Kin. 2:32–37

[1:16] b. 2 Sam. 1:10; Luke 19:22

[1:18] a. 1 Sam. 31:3

[1:18] b. Josh. 10:13

[1:18] * Lit. *of the Upright*

[1:19] a. 2 Sam. 1:27

[1:20] a. 1 Sam. 27:2; 31:8–13; Mic. 1:10

[1:20] b. 1 Sam. 6:17;

Jer.
25:20

[1:20]
c.
Ex.
15:20;
Judg.
11:34;
1
Sam.
18:6

[1:20]
d.
1
Sam.
31:4

[1:21]
a.
1
Sam.
31:1

[1:21]
b.
Ezek.
31:15

[1:21]
c.

1 Sam. 10:1

[1:21] * Lit. *defiled*

[1:22] a. Deut. 32:42; 1 Sam. 18:4

[1:23] a. 1 Sam. 31:2–4

[1:23] b. Judg. 14:18

[1:26] a. 1

Sam. 18:1–4; 19:2; 20:17

[1:27] a. 2 Sam. 1:19, 25

2 Samuel 2

[2:1] a. Judg. 1:1; 1 Sam. 23:2, 4, 9; 30:7, 8

[2:1] b. 1 Sam. 30:31; 2 Sam.

2:11; 5:1–3; 1 Kin. 2:11

[2:2] a. 1 Sam. 25:42, 43; 30:5

[2:3] a. 1 Sam. 27:2, 3; 30:1; 1 Chr. 12:1

[2:4] a. 1 Sam. 30:26; 2 Sam. 2:11; 5:5;

19:14, 41–43

[2:4] b. 1 Sam. 16:13; 2 Sam. 5:3

[2:4] c. 1 Sam. 31:11–13

[2:5] a. Ruth 2:20; 3:10

[2:6] a. Ex. 34:6; 2 Tim. 1:16,

[2:8] a. 1 Sam. 14:50; 2 Sam. 3:6

[2:8] b. Gen. 32:2; Josh. 21:38; 2 Sam. 17:24

[2:8] * *Esh-Baal,* 1 Chr. 8:33; 9:39

[2:9] a. Josh.

22:9

[2:9] b. Judg. 1:32

[2:9] c. 1 Sam. 29:1

[2:11] a. 2 Sam. 5:5; 1 Kin. 2:11

[2:11] * Lit. *number of days*

[2:12] a. Josh.

10:2–12; 18:25

[2:13] a. 1 Sam. 26:6; 2 Sam. 8:16; 1 Chr. 2:16; 11:6

[2:13] b. Jer. 41:12

[2:16] * Heb. *Helkath Hazzurim*

[2:18] a. 1 Chr. 2:16

[2:18] b. 1 Chr. 12:8; Hab. 3:19

[2:18] c. Ps. 18:33

[2:23] a. 2 Sam. 3:27; 4:6; 20:10

[2:23] b. 2 Sam. 20:12

[2:25] * *one band*

[2:27] a. 2 Sam. 2:14

[2:27] * *if you had not spoken*

[2:32] a. 1 Sam. 20:6

2 Samuel 3

[3:1] a. 1 Kin. 14:30; (Ps. 46:9)

[3:2] a. 1 Chr. 3:1–4

[3:2] b. 1 Sam. 25:42, 43

[3:3] a. 2 Sam. 15:1–10

[3:3] b. Josh. 13:13; 1 Sam. 27:8; 2 Sam. 13:37; 14:32; 15:8

[3:3] * *Daniel,* 1 Chr. 3:1

[3:4] a. 1 Kin. 1:5

[3:7] a. 2 Sam. 21:8–11

[3:7] b. 2 Sam. 16:21

[3:8] a. Deut. 23:18; 1 Sam. 24:14;

2 Sam. 9:8; 16:9

[3:9] a. Ruth 1:17; 1 Kin. 19:2

[3:9] b. 1 Sam. 15:28; 16:1, 12; 28:17; 1 Chr. 12:23

[3:10] a. Judg. 20:1; 1 Sam. 3:20; 2 Sam. 17:11;

1
Kin.
4:25

[3:10]
*
family

[3:13]
a.
Gen.
43:3

[3:13]
b.
1
Sam.
18:20;
19:11;
25:44;
2
Sam.
6:16

[3:14]
a.
2
Sam.
2:10

[3:14]
b.

1 Sam. 18:25–27

[3:15] * *Palti,* 1 Sam. 25:44

[3:16] a. 2 Sam. 16:5; 19:16

[3:16] * Lit. *going and weeping*

[3:18] a. 2 Sam. 3:9

[3:18] * So with many Heb. mss., LXX, Syr., Tg.; MT *he*

[3:19] a. 1 Sam. 10:20, 21; 1 Chr. 12:29

[3:21] a. 2 Sam. 3:10, 12

[3:21] b. 1 Kin. 11:37

[3:22] * *booty*

[3:25] a. Deut. 28:6; 1 Sam. 29:6; Is. 37:28

[3:27] a. 2 Sam. 20:9, 10; 1 Kin. 2:5

[3:27] b. 2 Sam. 4:6

[3:27]

c.
2
Sam.
2:23

[3:27]
*
Lit.
struck

[3:28]
*
innocent

[3:29]
a.
Deut.
21:6–
9;
1
Kin.
2:312,
33

[3:29]
b.
Lev.
15:2

[3:29]
*
family

[3:30] a. 2 Sam. 2:23

[3:31] a. Josh. 7:6; 2 Sam. 1:2, 11

[3:31] b. Gen. 37:34

[3:33] a. 2 Sam. 13:12, 13

[3:35] a. 2 Sam.

12:17; Jer. 16:7, 8

[3:35] b. Ruth 1:17

[3:35] c. Judg. 20:26; 2 Sam. 1:12

[3:39] a. 2 Sam. 19:5–7

[3:39] b. 1 Kin. 2:5, 6, 32–34;

2 Tim. 4:14

2 Samuel 4

[4:1] a. Ezra 4:4; Is. 13:7

[4:1] b. Matt. 2:3

[4:1] * Ishbosheth

[4:1] * Lit. *his hands dropped*

[4:2] a.

Josh. 18:25

[4:2] * *considered part of*

[4:3] a. Neh. 11:33

[4:4] a. 2 Sam. 9:3

[4:4] b. 1 Sam. 29:1, 11

[4:4] c. 2 Sam. 9:6

[4:4] * *Merib-Baal,* 1 Chr. 8:34; 9:40

[4:5] a. 2 Sam. 2:8, 9

[4:6] a. 2 Sam. 2:23; 20:10

[4:6] * Lit. *struck*

[4:8] a. 1

Sam. 19:2, 10, 11; 23:15; 25:29

[4:9] a. Gen. 48:16; 1 Kin. 1:29; Ps. 31:7

[4:10] a. 2 Sam. 1:2–16

[4:11] a. (Gen. 9:5, 6; Ps. 9:12)

[4:11]

*
Or
bloodshed

[4:11]
*
Lit.
consume
you

[4:12]
a.
2
Sam.
1:15

[4:12]
b.
2
Sam.
3:32

2
Samuel
5

[5:1]
a.
1
Chr.
11:1–
3

[5:1] b. Gen. 29:14; Judg. 9:2; 2 Sam. 19:12, 13

[5:2] a. 1 Sam. 18:5, 13, 16

[5:2] b. 1 Sam. 16:1

[5:3] a. 2 Sam. 3:17; 1 Chr. 11:3

[5:3] b. 2 Sam. 2:4; 3:21; 2 Kin. 11:17

[5:3] c. Judg. 11:11; 1 Sam. 23:18

[5:4] a. Gen. 41:46; Num. 4:3; Luke 3:23

[5:4] b. 1 Kin. 2:11; 1 Chr. 26:31;

29:27

[5:5] a. 2 Sam. 2:11; 1 Chr. 3:4; 29:27

[5:6] a. Judg. 1:21

[5:6] b. Josh. 15:63; Judg. 1:8; 19:11, 12

[5:7] a. 2 Sam. 6:12, 16; 1

Kin. 2:10; 8:1; 9:24

[5:8] a. 1 Chr. 11:6–9

[5:9] a. 2 Sam. 5:7; 1 Kin. 9:15, 24

[5:9] * Lit. *The Landfill*

[5:10] a. 1 Sam. 17:45

[5:10] b. 1 Sam. 18:12, 28

[5:11] a. 1 Kin. 5:1–18

[5:11] b. 1 Chr. 14:1

[5:12] a. Num. 24:7

[5:12] b. Is. 45:4

[5:13] a. (Deut. 17:17); 1 Chr. 3:9

[5:14] a. 1 Chr. 3:5–8

[5:14] b. 2 Sam. 12:24

[5:14] * *Shimea,* 1 Chr. 3:5

[5:15] * *Elishama,* 1 Chr.

3:6

[5:17] a. 1 Chr. 11:16

[5:17] b. 2 Sam. 23:14

1

[5:18] a. Gen. 14:5; Josh. 15:8; 1 Chr. 11:15; Is. 17:5

[5:19] a. 1 Sam. 23:2; 2 Sam.

2:1

[5:20]
a.
1
Chr.
14:11;
Is.
28:21

[5:20]
*
Lit.
Master
of
Breakthroughs

[5:21]
a.
Deut.
7:5,
25

[5:21]
*
idols

[5:22]
a.
1
Chr.
14:13

[5:23] a. 2 Sam. 5:19

[5:24] a. 2 Kin. 7:6; 1 Chr. 14:15

[5:24] b. Judg. 4:14

[5:25] a. 1 Chr. 14:16

[5:25] b. Josh. 16:10

[5:25] * So with MT, Tg., Vg.; LXX *Gibeon*

2 Samuel 6

[6:2] a. 1 Chr. 13:5, 6

[6:2] b. Ex. 25:22; 1 Sam. 4:4; Ps. 80:1

[6:2] * *Baalah,*

Kirjath Jearim, Josh. 15:9; 1 Chr. 13:6

[6:2] * LXX, Tg., Vg. omit *by the Name;* many Heb. mss., Syr. *there*

[6:3] a. 1 Sam. 26:1

[6:3] * LXX adds *with the*

ark

[6:4] a. 1 Sam. 7:1; 1 Chr. 13:7

[6:5] a. 1 Sam. 18:6, 7

[6:6] a. 1 Chr. 13:9

[6:6] b. Num. 4:15, 19, 20

[6:6]

*
held
it

[6:7]
*
Or
irreverence

[6:8]
*
Lit.
Outburst
Against
Uzzah

[6:9]
a.
Deut.
9:19;
Ps.
119:120;
Luke
5:8

[6:10]
a.
2
Sam.
5:7

[6:10]

b. 1 Chr. 13:13; 26:4–8

[6:11] a. 1 Chr. 13:14

[6:11] b. Gen. 30:27; 39:5

[6:12] a. 1 Chr. 15:25—16:3

[6:13] a. Num. 4:15; Josh. 3:3;

1 Sam. 6:15; 2 Sam. 15:24; 1 Chr. 15:2, 15

[6:13] b. 1 Kin. 8:5

[6:14] a. Ps. 30:11; 149:3

[6:14] b. 1 Sam. 2:18, 28

[6:14] * *whirled*

about

[6:15]
a.
1
Chr.
15:28

[6:16]
a.
2
Sam.
3:14

[6:17]
a.
1
Chr.
16:1

[6:17]
b.
1
Chr.
15:1;
2
Chr.
1:4

[6:17]
c.
1

Kin.
8:5,
62,
63

[6:18]
a.
1
Kin.
8:14,
15,
55

[6:19]
a.
1
Chr.
16:3

[6:20]
a.
Ps.
30:title

[6:20]
b.
2
Sam.
6:14,
16

[6:20]

c. Judg. 9:4

[6:20] * *openly*

[6:21] a. 1 Sam. 13:14; 15:28

[6:21] b. 2 Kin. 11:17

[6:23] a. 1 Sam. 15:35; Is. 22:14

[7:1] a. 1 Chr. 17:1–27

[7:2] a. 2 Sam. 5:11

[7:2] b. Acts 7:46

[7:2] c. Ex. 26:1

[7:3] a. 1 Kin. 8:17, 18; 1 Chr. 22:7

[7:5] a. 1 Kin. 5:3, 4; 8:19; 1 Chr. 22:8

[7:6] a. Josh. 18:1; 1 Kin. 8:16

[7:6] b. Ex. 40:18, 34

[7:7] a. Lev. 26:11, 12

[7:7] b. 2 Sam. 5:2; (Acts 20:28)

[7:8] a. 1 Sam. 16:11, 12; Ps. 78:70, 71

[7:9] a. 1 Sam. 18:14; 2 Sam. 5:10

[7:9] b. 1 Sam. 31:6

[7:9]
*
destroyed

[7:10]
a.
Ex.
15:17;
Ps.
44:2;
80:8;
Jer.
24:6

[7:10]
b.
Ps.
89:22,
23;
Is.
60:18

[7:11]
a.
Judg.
2:14–
16

[7:11]
b.
Ex.
1:21;
1

Sam.
25:28;
2
Sam.
7:27

[7:11]
*
declares
to
you

[7:11]
*
Royal
dynasty

[7:12]
a.
1
Kin.
2:1

[7:12]
b.
Deut.
31:16;
Acts
13:36

[7:12]
c.

1 Kin. 8:20; Ps. 132:11; Matt. 1:6; Luke 3:31

[7:13] a. 1 Kin. 5:5; 8:19; 2 Chr. 6:2

[7:13] b. 2 Sam. 7:16; (Is. 9:7; 49:8)

[7:14] a. (Heb. 1:5)

[7:14] b. (Ps. 2:7; 89:26, 27, 30); Matt. 3:17

[7:14] * *strokes*

[7:15] a. 1 Sam. 15:23, 28; 16:14

[7:16] a. 2 Sam. 7:13; Ps. 89:36, 37; Matt. 25:31; John 12:34

[7:16] * LXX *Me*

[7:18] a. Gen. 32:10; Ex. 3:11; 1 Sam. 18:18

[7:19] a. (Is. 55:8, 9)

[7:20] a. (1 Sam. 16:7); Ps. 139:1; John 21:17

[7:22] a. Deut. 10:17; 1 Chr. 16:25; 2 Chr. 2:5; Ps. 86:10; Jer. 10:6

[7:22] b. Ex. 15:11; Deut. 3:24; 4:35; 32:39

[7:22] c. Ex. 10:2; Ps. 44:1

[7:22] * Tg., Syr.

O
LORD
God

[7:23]
a.
Ps.
147:20

[7:23]
b.
Deut.
9:26;
33:29

[7:24]
a.
Gen.
17:7,
8;
Ex.
6:7;
(Deut.
26:18)

[7:24]
b.
Ps.
48:14

[7:28]
a.

Ex. 34:6; Josh. 21:45; John 17:17

[7:29] a. 2 Sam. 22:51

2 Samuel 8

[8:1] * Lit. *struck*

[8:1] * Lit. *The Bridle of the Mother City*

[8:2] a.

Num. 24:17

[8:2] b. 2 Sam. 12:31

[8:2] c. 1 Sam. 10:27; 1 Kin. 4:21

[8:3] a. 1 Sam. 14:47; 2 Sam. 10:16, 19

[8:3] b. Gen. 15:18; 2

Sam.
10:15–
19

[8:4]
a.
Josh.
11:6,
9

[8:4]
*
seven
thousand,
1
Chr.
18:4

[8:5]
a.
1
Kin.
11:23–
25

[8:6]
a.
2
Sam.
7:9;
8:14

[8:7] a. 1 Kin. 10:16

[8:8] a. Ezek. 47:16

[8:8] * *Tibhath,* 1 Chr. 18:8

[8:8] * *Chun,* 1 Chr. 18:8

[8:9] a. 1 Kin. 8:65; 2 Kin. 14:28;

2 Chr. 8:4

[8:9] * *Tou,* 1 Chr. 18:9

[8:10] * *Hadoram,* 1 Chr. 18:10

[8:10] * Lit. *ask him of his welfare*

[8:11] a. 1 Kin. 7:51

[8:12] a. 2 Sam. 5:17–25

[8:12] * LXX, Syr., Heb. mss. *Edom*

[8:13] a. 2 Sam. 7:9

[8:13] b. 2 Kin. 14:7

[8:13] c. 1 Chr.

18:12; Ps. 60:title

[8:13] * LXX, Syr., Heb. mss. *Edomites* and 1 Chr. 18:12

[8:14] a. Gen. 27:29, 37–40; Num. 24:18; 1 Kin. 11:15

[8:16] a. 2 Sam. 19:13; 20:23; 1

Chr.
11:6

[8:16]
b.
1
Kin.
4:3

[8:17]
a.
1
Chr.
6:4–
8;
24:3

[8:17]
*
Shavsha,
1
Chr.
18:16

[8:17]
*
secretary

[8:18]
a.
1
Kin.

1:8; 1 Chr. 18:17

[8:18] b. 1 Sam. 30:14; 1 Kin. 1:38

[8:18] * Lit. *priests*

2 Samuel 9

[9:1] a. 1 Sam. 18:3; 20:14–16; 2 Sam. 21:7; (Prov. 27:10)

[9:1]
*
covenant
faithfulness

[9:2]
a.
2
Sam.
16:1–
4;
19:17,
29

[9:3]
a.
1
Sam.
20:14

[9:3]
b.
2
Sam.
4:4

[9:4]
a.
2
Sam.
17:27–

29

[9:6] a. 2 Sam. 16:4; 19:24–30

[9:6] * Or *Merib-Baal*

[9:8] a. 2 Sam. 16:9

[9:9] a. 2 Sam. 16:4; 19:29

[9:10] a. 2

Sam. 9:7, 11, 13; 19:28

[9:10] b. 2 Sam. 19:17

[9:11] * LXX *David's table*

[9:12] a. 1 Chr. 8:34

[9:13] a. 2 Sam. 9:7, 10, 11; 1 Kin.

2:7; 2 Kin. 25:29

[9:13] b. 2 1Sam. 9:3

2 Samuel 10

[10:1] a. 2 Sam. 11:1; 1 Chr. 19:1

[10:2] a. 2 Sam. 9:1; 1 Kin. 2:7

[10:2]

b.
1
Sam.
11:1

[10:4]
a.
Is.
20:4;
47:2

[10:5]
*
humiliated

[10:6]
a.
Gen.
34:30;
Ex.
5:21

[10:6]
b.
2
Sam.
8:3,
5

[10:6]
c.
Judg.

18:28

[10:6] d. Deut. 3:14; Josh. 13:11, 13

[10:6] e. Judg. 11:3, 5

[10:7] a. 2 Sam. 23:8

[10:8] a. 2 Sam. 10:6

[10:10] a. 1 Sam.

26:6; 2 Sam. 3:30

[10:12] a. Deut. 31:6; Josh. 1:6, 7, 9; Neh. 4:14

[10:12] b. 1 Sam. 4:9; 1 Cor. 16:13

[10:12] c. 1 Sam. 3:18

[10:14] a.

2
Sam.
11:1

[10:16]
*
Heb.
Hadarezer

[10:16]
*
The
Euphrates

[10:16]
*
Shophach,
1
Chr.
19:16

[10:18]
a.
1
Chr.
19:18

[10:19]
a.
2
Sam.
8:6

[10:19] * Heb. *Hadarezer*

2 Samuel 11

[11:1] a. 1 Kin. 20:22–26

[11:1] b. 1 Chr. 20:1

[11:1] c. 2 Sam. 12:26; Jer. 49:2, 3; Amos 1:14

[11:2] a. Deut. 22:8; 1 Sam. 9:25; Matt. 24:17; Acts 10:9

[11:2] b. Gen. 34:2; (Ex. 20:17); Job 31:1; (Matt. 5:28)

[11:3] a. 2 Sam. 23:39

[11:3] b. 1 Sam.

26:6

[11:3] * *Bathshua,* 1 Chr. 3:5

[11:3] * *Ammiel,* 1 Chr. 3:5

[11:4] a. (Lev. 20:10; Deut. 22:22); Ps. 51:title; (James 1:14, 15)

[11:4] b. Lev. 15:19, 28

[11:8] a. Gen. 18:4; 19:2

[11:9] a. 1 Kin. 14:27, 28

[11:11] a. 2 Sam. 7:2, 6

[11:11] b. 2 Sam. 20:6–22

[11:13] a. Gen. 19:33,

35

[11:13] b. 2 Sam. 11:9

[11:14] a. 1 Kin. 21:8, 9

[11:15] a. 2 Sam. 12:9

[11:15] * *fiercest*

[11:21] a. Judg. 9:50–54

[11:21] * *Jerubbaal* (Gideon), Judg. 6:32.

[11:25] * Lit. *be evil in your sight*

[11:27] a. 2 Sam. 12:9

[11:27] b. 1 Chr. 21:7; (Heb. 13:4)

[11:27] * Lit.

was evil in the eyes of

2 Samuel 12

[12:1] a. Ps. 51:title

[12:1] b. 1 Kin. 20:35–41

[12:5] * *deserves to die,* lit. *is a son of death*

[12:6] a. (Ex. 22:1); Luke 19:8

[12:7] a. 1 Sam. 16:13; 2 Sam. 5:3

[12:9] a. 1 Sam. 15:19

[12:9] b. Num. 15:31

[12:9] c. 2 Sam. 11:14–17,

27

[12:10] a. 2 Sam. 13:28; 18:14; 1 Kin. 2:25; (Amos 7:9)

[12:11] a. Deut. 28:30; 2 Sam. 16:21, 22

[12:12] a. 2 Sam. 16:22

[12:13] a. 1 Sam.

15:24

[12:13] b. 2 Sam. 24:10; Job 7:20; Ps. 51; Luke 18:13

[12:13] c. 2 Sam. 24:10; Job 7:21; (Ps. 32:1–5; Prov. 28:13; Mic. 7:18); Zech. 3:4

[12:14] a. Is. 52:5;

(Ezek. 36:20, 23); Rom. 2:24

[12:15] a. 1 Sam. 25:38

[12:16] a. 2 Sam. 13:31

[12:20] a. Ruth 3:3; Matt. 6:17

[12:20] b. Job 1:20

[12:22] a.

Is. 38:1–5; Joel 2:14; Jon. 3:9

[12:22] * Heb. mss., Syr. *God*

[12:23] a. Gen. 37:35

[12:23] b. Job 7:8–10

[12:24] a. Matt. 1:6

[12:24]

b. 1 Chr. 22:9

[12:24] * So with Kt., LXX, Vg.; Qr., a few Heb. mss., Syr., Tg. *she*

[12:25] * Qr., some Heb. mss., Syr., Tg. *she*

[12:25] * Lit. *Beloved*

of the LORD

[12:26] a. 1 Chr. 20:1

[12:26] b. Deut. 3:11; 2 Sam. 11:1

[12:30] a. 1 Chr. 20:2

[12:30] * *plunder*

2 Samuel 13

[13:1]

a. 2 Sam. 3:2, 3; 1 Chr. 3:2

[13:1] b. 1 Chr. 3:9

[13:1] c. 2 Sam. 3:2

[13:3] a. 1 Sam. 16:9

[13:6] a. Gen. 18:6

[13:9]
a.
Gen.
45:1

[13:11]
a.
Gen.
39:12;
(Deut.
27:22);
Ezek.
22:11

[13:12]
a.
(Lev.
18:9–
11;
20:17)

[13:12]
b.
Gen.
34:7;
Judg.
19:23;
20:6

[13:12]
*
Lit.
humble

me

[13:13] a. Gen. 20:12

[13:14] a. Lev. 18:9; (Deut. 22:25; 27:22); 2 Sam. 12:11

[13:15] * *with a very great hatred*

[13:18] a. Gen. 37:3; Judg. 5:30; Ps.

45:13, 14

[13:19] a. Josh. 7:6; 2 Sam. 1:2; Job 2:12; 42:6

[13:19] b. Jer. 2:37

[13:22] a. Gen. 24:50; 31:24

[13:22] b. (Lev. 19:17, 18; 1 John 2:9,

11; 3:10, 12, 15)

[13:23] a. Gen. 38:12, 13; 1 Sam. 25:4

[13:28] a. Judg. 19:6, 9, 22; Ruth 3:7; 1 Sam. 25:36; Esth. 1:10

[13:28] * Lit. *sons of valor*

[13:29] a. 2 Sam. 12:10

[13:29] b. 2 Sam. 18:9; 1 Kin. 1:33, 38

[13:31] a. 2 Sam. 1:11

[13:31] b. 2 Sam. 12:16

[13:32] a. 2

Sam. 13:3–5

[13:33] a. 2 Sam. 19:19

[13:34] a. 2 Sam. 13:37, 38

[13:34] * LXX adds *And the watchman went and told the king, and said, "I see men from the way* *of Horonaim, from the regions of the mountains.”*

[13:37] a. 2 Sam. 3:3; 1 Chr. 3:2

[13:38] a. 2 Sam. 14:23, 32; 15:8

[13:39] a. Gen. 38:12; 2 Sam. 12:19, 23

[13:39] * So with MT, Syr., Vg.; LXX *the spirit of the king;* Tg. *the soul of King David*

[13:39] * So with MT, Tg.; LXX, Vg. *ceased to pursue after*

[14:1] a. 2 Sam. 13:39

[14:2] a. 2 Sam. 23:26; 2 Chr. 11:6; Amos 1:1

[14:2] b. Ruth 3:3

[14:3] a. Ex. 4:15; 2 Sam. 14:19

[14:4]

a. 1 Sam. 20:41; 25:23; 2 Sam. 1:2

[14:4] b. 2 Kin. 6:26, 28

[14:4] * Many Heb. mss., LXX, Syr., Vg. *came*

[14:5] a. (Zech. 7:10)

[14:7] a.

Num. 35:19; Deut. 19:12, 13

[14:9] a. Gen. 27:13; 43:9; 1 Sam. 25:24; Matt. 27:25

[14:9] b. 2 Sam. 3:28, 29; 1 Kin. 2:33

[14:9] * *guilt*

[14:11] a.

Num. 35:19, 21; (Deut. 19:4–10)

[14:11] b. 1 Sam. 14:45; 1 Kin. 1:52; Matt. 10:30; Acts 27:34

[14:13] a. Judg. 20:2

[14:13] b. 2 Sam. 13:37, 38

[14:14]

a.
Job
30:23;
34:15;
(Heb.
9:27)

[14:14]
b.
Job
34:19;
Matt.
22:16;
Acts
10:34;
Rom.
2:11

[14:14]
c.
Num.
35:15

[14:14]
*
*cast
out*

[14:16]
a.
Deut.
32:9;
1

Sam. 26:19; 2 Sam. 20:19

[14:17] a. 1 Sam. 29:9; 2 Sam. 19:27

[14:17] b. 1 Kin. 3:9

[14:19] a. 2 Sam. 14:3

[14:20] a. 2 Sam. 14:17; 19:27

[14:22] * Lit. *blessed*

[14:23] a. 2 Sam. 13:37, 38

[14:24] a. Gen. 43:3; 2 Sam. 3:13

[14:25] a. Deut. 28:35; Job 2:7; Is. 1:6

[14:27] a.

2 Sam. 13:1; 18:18

[14:28] a. 2 Sam. 14:24

[14:32] a. 1 Sam. 20:8; (Prov. 28:13)

[14:33] a. Gen. 33:4; 45:15; Luke 15:20

2 Samuel 15

[15:1] a. 2

Sam.
12:11

[15:1]
b.
1
Kin.
1:5

[15:2]
a.
Deut.
19:17

[15:2]
*
Lit.
controversy

[15:3]
*
Lit.
words

[15:3]
*
Lit.
listener

[15:4]

a.
Judg.
9:29

[15:5]
a.
2
Sam.
14:33;
20:9

[15:6]
a.
(Rom.
16:18)

[15:7]
a.
(Deut.
23:21)

[15:7]
b.
2
Sam.
3:2,
3

[15:7]
*
LXX
mss.,

Syr.,
Josephus
four

[15:8]
a.
1
Sam.
16:2

[15:8]
b.
Gen.
28:20,
21

[15:8]
c.
2
Sam.
13:38

[15:10]
a.
1
Kin.
1:34;
2
Kin.
9:13

[15:11]

a. 1 Sam. 16:3, 5

[15:11] b. Gen. 20:5

[15:12] a. 2 Sam. 16:15; 1 Chr. 27:33; Ps. 41:9; 55:12–14

[15:12] b. Josh. 15:51

[15:12] c. Ps. 3:1

[15:13]
a.
Judg.
9:3;
2
Sam.
15:6

[15:13]
*
Lit.
after

[15:14]
a.
2
Sam.
12:11;
Ps.
3:title

[15:16]
a.
Ps.
3:title

[15:16]
b.
2
Sam.
12:11;

16:21, 22

[15:18] a. 2 Sam. 8:18

[15:18] b. 1 Sam. 23:13; 25:13; 30:1, 9

[15:18] * Lit. *by his hand*

[15:19] a. 2 Sam. 18:2

[15:20]

a. 1 Sam. 23:13

[15:21] a. Ruth 1:16, 17; (Prov. 17:17)

[15:23] a. 2 Sam. 15:28; 16:2

[15:24] a. 2 Sam. 8:17

[15:24] b. Num. 4:15; 1 Sam. 4:4

[15:24] c. 1 Sam. 22:20

[15:25] a. (Ps. 43:3)

[15:25] b. Ex. 15:13; Jer. 25:30

[15:26] a. Num. 14:8; 2 Sam. 22:20; 1 Kin. 10:9; 2 Chr. 9:8; Is. 62:4

[15:26] b. 1 Sam. 3:18

[15:27] a. 1 Sam. 9:6–9

[15:27] b. 2 Sam. 17:17–20

[15:27] * *prophet*

[15:28] a. Josh. 5:10; 2 Sam. 17:16

[15:30] a. 2 Sam. 19:4; Esth. 6:12; Ezek. 24:17, 23

[15:30] b. Is. 20:2–4

[15:30] c. Jer. 14:3, 4

[15:30] d. (Ps. 126:6)

[15:31] a. Ps.

3:1,
2;
55:12

[15:31]
b.
2
Sam.
16:23;
17:14,
23

[15:32]
a.
Josh.
16:2

[15:32]
b.
2
Sam.
1:2

[15:33]
a.
2
Sam.
19:35

[15:34]
a.
2

Sam. 16:19

[15:35] a. 2 Sam. 17:15, 16

[15:36] a. 2 Sam. 15:27

[15:37] a. 2 Sam. 16:16; 1 Chr. 27:33

[15:37] b. 2 Sam. 16:15

[16:1]
a.
2
Sam.
15:30,
32

[16:1]
b.
2
Sam.
9:2;
19:17,
29

[16:2]
a.
2
Sam.
15:23;
17:29

[16:3]
a.
2
Sam.
9:9,
10

[16:3]

b. 2 Sam. 19:27

[16:5] a. 2 Sam. 3:16

[16:5] b. 2 Sam. 19:21; 1 Kin. 2:8, 9, 44–46

[16:7] a. Deut. 13:13

[16:7] * Lit. *man of*

bloodshed

[16:7] * *worthless man*

[16:8] a. Judg. 9:24, 56, 57; 1 Kin. 2:32, 33

[16:8] b. 2 Sam. 1:16; 3:28, 29; 4:11, 12

[16:8] * Lit. *man of*

bloodshed

[16:9] a. 1 Sam. 24:14; 2 Sam. 9:8

[16:9] b. Ex. 22:28

[16:10] a. 2 Sam. 3:39; 19:22; (1 Pet. 2:23)

[16:10] b. 2 Kin. 18:25; (Lam. 3:38)

[16:10] c. (Rom. 9:20)

[16:11] a. 2 Sam. 12:11

[16:11] b. Gen. 15:4

[16:12] a. Deut. 23:5; Neh. 13:2; Prov. 20:22

[16:12] b. Deut. 23:5; (Rom. 8:28;

Heb. 12:10, 11)

[16:12] * So with Kt., LXX, Syr., Vg.; Qr. *my eyes;* Tg. *tears of my eyes*

[16:13] * Lit. *dusted him with dust*

[16:15] a. 2 Sam. 15:12, 37

[16:16] a. 2 Sam. 15:37

[16:16] b. 2 Sam. 15:34

[16:17] a. 2 Sam. 19:25; (Prov. 17:17)

[16:19] a. 2 Sam. 15:34

[16:20] a. 2 Sam. 15:12

[16:21] a. 2 Sam. 15:16; 20:3

[16:21] b. Gen. 34:30; 1 Sam. 13:4

[16:21] c. 2 Sam. 2:7; Zech. 8:13

[16:22] a. 2 Sam. 12:11, 12

[16:23]

a. 2 Sam. 15:12

2 Samuel 17

[17:2] a. Deut. 25:18; 2 Sam. 16:14

[17:2] b. Zech. 13:7

[17:2] * *tremble with fear*

[17:4] a. 2 Sam. 5:3; 19:11

[17:5] a. 2 Sam. 15:32–34

[17:8] a. Hos. 13:8

[17:10] a. Josh. 2:11

[17:11] a. Judg. 20:1; 2 Sam. 3:10

[17:11] b. Gen. 22:17; Josh. 11:4;

1 Kin. 20:10

[17:13] a. Mic. 1:6

[17:14] a. 2 Sam. 15:31, 34

[17:15] a. 2 Sam. 15:35, 36

[17:16] a. 2 Sam. 15:28

[17:17] a. 2

Sam. 15:27, 36; 1 Kin. 1:42, 43

[17:17] b. Josh. 2:4–6

[17:17] c. Josh. 15:7; 18:16

[17:18] a. 2 Sam. 3:16; 16:5

[17:19] a. Josh. 2:4–6

[17:20] a. Ex. 1:19; (Lev. 19:11); Josh. 2:3–5

[17:21] a. 2 Sam. 17:15, 16

[17:23] a. 2 Sam. 15:12

[17:23] b. 2 Kin. 20:1

[17:23] c.

Matt. 27:5

[17:23] * Lit. *gave charge concerning his house*

[17:24] a. Gen. 32:2; Josh. 13:26; 2 Sam. 2:8; 19:32

[17:25] a. 2 Sam. 19:13; 20:9–12; 1 Kin. 2:5, 32

[17:25] b. 1 Chr. 2:16

[17:25] * *Jether,* 1 Chr. 2:17

[17:25] * So with MT, some LXX mss., Tg.; some LXX mss. *Ishmaelite* (cf. 1 Chr. 2:17); Vg. *of Jezrael*

[17:27] a. 1 Sam. 11:1; 2 Sam. 10:1; 12:29

[17:27] b. 2 Sam. 9:4

[17:27] c. 2 Sam. 19:31, 32; 1 Kin. 2:7

[17:29] a. 2 Sam. 16:2, 14

[18:1] a. Ex. 18:25; Num. 31:14; 1 Sam. 22:7

[18:1] * Lit. *attended to*

[18:2] a. Judg. 7:16; 1 Sam. 11:11

[18:2] b. 2 Sam. 15:19–22

[18:3] a. 2 Sam. 21:17

[18:5] a. 2 Sam. 18:12

[18:6] a. Josh. 17:15, 18; 2 Sam. 17:26

[18:9] a. 2 Sam. 14:26

[18:12] a. 2 Sam. 18:5

[18:12] * Vss. *'Protect the young man Absalom for me!'*

[18:17] a. Deut. 21:20, 21; Josh. 7:26; 8:29

[18:17] b. 2 Sam. 19:8; 20:1, 22

[18:18] a. Gen. 14:17

[18:18] b. 2 Sam. 14:27

[18:18] * *monument*

[18:19] a. 2 Sam. 15:36; 17:17

[18:19] * *vindicated*

[18:22] * Lit. *be what may*

[18:24] a. Judg. 5:11;

2 Sam. 13:34; 2 Kin. 9:17

[18:27] a. 1 Kin. 1:42

[18:27] * Lit. *I see the running*

[18:28] a. 2 Sam. 16:12

[18:28] * *Peace be to you*

[18:33] a. 2 Sam. 12:10

[18:33] b. 2 Sam. 19:4

2 Samuel 19

[19:1] a. Jer. 14:2

[19:2] a. Esth. 4:3

[19:3] a. 2 Sam. 17:24, 27;

19:32

[19:3]
*
went
by
stealth

[19:4]
a.
2
Sam.
15:30

[19:4]
b.
2
Sam.
18:33

[19:5]
a.
2
Sam.
18:14

[19:6]
*
have
no
respect
for

[19:7] * Lit. *to the heart of*

[19:8] a. 2 Sam. 15:2; 18:24

[19:8] b. 2 Sam. 18:17

[19:9] a. 2 Sam. 8:1–14

[19:9] b. 2

Sam.
3:18

[19:9]
c.
2
Sam.
15:14

[19:11]
a.
2
Sam.
15:24

[19:12]
a.
2
Sam.
5:1;
1
Chr.
11:1

[19:13]
a.
2
Sam.
17:25;
1
Chr.
2:17

[19:13] b. Ruth 1:17

[19:13] * *permanently*

[19:14] a. Judg. 20:1

[19:15] a. Josh. 5:9; 1 Sam. 11:14, 15

[19:15] b. 2 Sam. 17:22

[19:16]1

a.
2
Sam.
16:5;
1
Kin.
2:8

[19:17]
a.
2
Sam.
3:19;
1
Kin.
12:21

[19:17]
b.
2
Sam.
9:2,
10;
16:1,
2

[19:19]
a.
1
Sam.
22:15

[19:19]

b. 2 Sam. 16:5, 6

[19:19] c. 2 Sam. 13:33

[19:19] * *charge me with iniquity*

[19:20] a. Judg. 1:22; 1 Kin. 11:28

[19:21] a. (Ex. 22:28)

[19:21] b. (1 Sam. 26:9)

[19:22] a. 2 Sam. 3:39; 16:10

[19:22] b. 1 Sam. 11:13

[19:23] a. 1 Kin. 2:8, 9, 37, 46

[19:24] a. 2 Sam. 9:6;

21:7

[19:25] a. 2 Sam. 16:17

[19:27] a. 2 Sam. 16:3, 4

[19:27] b. 2 Sam. 14:17, 20

[19:28] a. 2 Sam. 9:7–13

[19:28] * *complain*

[19:31] a. 2 Sam. 17:27–29; 1 Kin. 2:7

[19:32] a. 2 Sam. 17:27–29

[19:35] a. Ps. 90:10

[19:37] a. 2 Sam. 19:40; Jer. 41:17

[19:39]

a. Gen. 31:55; Ruth 1:14; 2 Sam. 14:33

[19:40] * MT *Chimhan*

[19:41] a. 2 Sam. 19:15

[19:42] a. 2 Sam. 19:12

[19:43] a. 1 Kin. 11:30, 31

[19:43] b. Judg. 8:1; 12:1

[19:43] * *harsher*

2 Samuel 20

[20:1] a. 2 Sam. 19:43; 1 Kin. 12:16

[20:1] b. 1 Sam. 13:2; 2 Sam. 18:17; 2 Chr. 10:16

[20:1] * Lit. *man of Belial*

[20:2] a. 2 Sam. 19:14

[20:3] a. 2 Sam. 15:16; 16:21, 22

[20:4] a. 2 Sam. 17:25; 19:13

[20:6] a. 2

Sam.
21:17

[20:6]
b.
2
Sam.
11:11;
1
Kin.
1:33

[20:7]
a.
2
Sam.
8:18;
1
Kin.
1:38,
44

[20:7]
b.
2
Sam.
15:18

[20:9]
a.
Matt.
26:49;
Luke

22:47

[20:10] a. 2 Sam. 3:27; 1 Kin. 2:5

[20:10] b. 2 Sam. 2:23

[20:14] a. 1 Kin. 15:20; 2 Kin. 15:29; 2 Chr. 16:4

[20:14] * Lit. *him*

[20:15] a. 2 Kin. 19:32; Ezek. 4:2

[20:19] a. 1 Sam. 26:19; 2 Sam. 14:16; 21:3

[20:22] a. 2 Sam. 20:16; (Eccl. 9:13–16)

[20:23] a. 2 Sam. 8:16–18;

1 Kin. 4:3–6

[20:24] a. 1 Kin. 4:6

[20:24] b.1 2 Sam. 8:16; 1 Kin. 4:3

[20:25] a. 2 Sam. 8:17; 1 Kin. 4:4

[20:26] a. 2 Sam.

8:18

[20:26] * Or *David's priest*

2 Samuel 21

[21:1] a. Num. 27:21; 2 Sam. 5:19

[21:1] * Lit. *house of bloodshed*

[21:2] a. Josh. 9:3, 15–20

[21:2] b. (Ex. 34:11–16)

[21:3] a. 1 Sam. 26:19; 2 Sam. 20:19

[21:6] a. Num. 25:4

[21:6] b. 1 Sam. 10:26

[21:6] c. 1 Sam. 10:24;

(Hos. 13:11)

[21:7] a. 2 Sam. 4:4; 9:10

[21:7] b. 1 Sam. 18:3; 20:12–17; 23:18; 2 Sam. 9:1–7

[21:8] a. 2 Sam. 3:7

[21:8] * *Merab,* 1

Sam. 18:19; 25:44; 2 Sam. 3:14; 6:23

[21:8] * Lit. *bore to Adriel*

[21:9] a. 2 Sam. 6:17

[21:10] a. 2 Sam. 3:7; 21:8

[21:10] b. Deut. 21:23

[21:12] a. 1 Sam. 31:11–13

[21:12] b. 1 Sam. 31:8

[21:12] * *Beth Shean,* Josh. 17:11

[21:14] a. Josh. 18:28

[21:14] b. Josh. 7:26; 2 Sam.

24:25

[21:16] a. Num. 13:22, 28; Josh. 15:14; 2 Sam. 21:18–22

[21:16] * Or *Rapha*

[21:17] a. 2 Sam. 20:6–10

[21:17] b. 2 Sam. 18:3

[21:17] c. 2 Sam. 22:29; 1 Kin. 11:36

[21:18] a. 1 Chr. 20:4–8

[21:18] b. 1 Chr. 11:29; 27:11

[21:18] * *Sippai,* 1 Chr. 20:4

[21:18] * Or

Rapha

[21:19] a. 2 Sam. 23:24

[21:19] b. 1 Sam. 17:4; 1 Chr. 20:5

[21:19] * *Jair,* 1 Chr. 20:5

[21:20] a. 1 Chr. 20:6

[21:20] *

Or
Rapha

[21:211]
a.
1
Sam.
17:10

[21:21]
*
Shammah,
1
Sam.
16:9
and
elsewhere

[21:22]
a.
1
Chr.
20:8

[21:22]
*
Or
Rapha

2 Samuel 22

[22:1]
a.
Ex.
15:1;
Deut.
31:30;
Judg.
5:1

[22:1]
b.
Ps.
18:title;
34:19

[22:2]
a.
Ps.
18

[22:2]
b.
Deut.
32:4;
1
Sam.
2:2

[22:2]
c.
Ps.
91:2

[22:3]
a.
Ps.
7:1;
Heb.
2:13

[22:3]
b.
Gen.
15:1;
Deut.
33:29;
Ps.
84:11

[22:3]
c.
Luke
1:69

[22:3]
d.
Prov.
18:10

[22:3]
e.
Ps.
9:9;
46:1,

7,
11;
Jer.
16:19

[22:3]
*
Strength

[22:5]
*
Or
overwhelmed

[22:6]
a.
Ps.
116:3

[22:7]
a.
Ps.
116:4;
120:1

[22:7]
b.
Ex.
3:7;
Ps.
34:6,
15

[22:8] a. Judg. 5:4; Ps. 77:18; 97:4

[22:8] b. Job 26:11

[22:8] * So with MT, LXX, Tg.; Syr., Vg. *hills* (cf. Ps. 18:7)

[22:9] a. Deut. 32:22; Ps.

97:3, 4; Heb. 12:29

[22:10] a. Ex. 19:16–20; Is. 64:1

[22:10] b. Ex. 20:21

[22:11] a. Ps. 104:3

[22:11] * So with MT, LXX; many Heb. mss., Syr., Vg. *flew* (cf. Ps. 18:10); Tg. *spoke with power*

[22:12] a. Job 36:29; Ps. 97:2

[22:14] a. 1 Sam. 2:10; Job 37:2–5; Ps. 29:3

[22:15] a. Deut. 32:23; Josh. 10:10; 1

Sam. 7:10; Ps. 7:13

[22:16] a. Nah. 1:4

[22:16] b. Ex. 15:8

[22:17] a. Ps. 144:7; Is. 43:2

[22:19] a. Is. 10:20

[22:20] a. Ps. 31:8; 118:5

[22:20] b. 2 Sam. 15:26

[22:21] a. 1 Sam. 26:23; (Ps. 7:8)

[22:21] b. (Job 17:9); Ps. 24:4

[22:22] a. Gen. 18:19; 2 Chr. 34:33; Ps. 119:3

[22:23]

a. (Deut. 6:6–9; 7:12); Ps. 119:30, 102

[22:24] a. Gen. 6:9; 7:1; Job 1:1; (Eph. 1:4; Col. 1:21, 22)

[22:25] a. 2 Sam. 22:21

[22:25] * *rewarded*

[22:25]

* LXX, Syr., Vg. *the cleanness of my hands in His sight* (cf. Ps. 18:24); Tg. *my cleanness before His word*

[22:26] a. (Matt. 5:7)

[22:27] a. (Lev. 26:23, 24; Rom. 1:28)

[22:28]
a.
Ps.
72:12

[22:28]
b.
Job
40:11

[22:28]
*
afflicted

[22:29]
a.
Ps.
119:105;
132:17

[22:30]
a.
2
Sam.
5:6–
8

[22:31]
a.
(Deut.
32:4);
Dan.

4:37; (Matt. 5:48)

[22:31] b. Ps. 12:6; (Prov. 30:5)

[22:32] a. Is. 45:5, 6

[22:33] a. Ps. 27:1

[22:33] b. (Heb. 13:21)

[22:33] c. Ps. 101:2, 6

[22:33] * DSS, LXX, Syr., Vg. *It is God who arms me with strength* (cf. Ps. 18:32); Tg. *It is God who sustains me with strength*

[22:33] * So with Qr., LXX, Syr., Tg.,

Vg. (cf. Ps. 18:32); Kt. *His*

[22:34] a. 2 Sam. 2:18; Hab. 3:19

[22:34] b. Is. 33:16

[22:34] * So with Qr., LXX, Syr., Tg., Vg. (cf. Ps. 18:33); Kt. *His*

[22:35] * Lit. *for the war*

[22:37] a. 2 Sam. 22:20; Prov. 4:12

[22:39] a. Mal. 4:3

[22:40] a. (Ps. 18:32)

[22:40] b. (Ps. 44:5)

[22:40] * Lit. *caused to bow down*

[22:41] a. Gen. 49:8; Josh. 10:24

[22:41] * *given me victory over*

[22:42] a. 1 Sam. 28:6; Prov. 1:28; Is. 1:15

[22:43]

a. 2 Kin. 13:7; Ps. 18:42

[22:43] b. Is. 10:6

[22:43] * *scattered*

[22:44] a. 2 Sam. 3:1

[22:44] b. Deut. 28:13

[22:44] c. (Is. 55:5)

[22:44] * *contentions*

[22:46] a. 1 Sam. 14:11; (Mic. 7:17)

[22:46] * So with LXX, Tg., Vg. (cf. Ps. 18:45); MT *gird themselves*

[22:47] a. (2 Sam. 22:3); Ps. 89:26

[22:48]
a.
1
Sam.
24:12;
Ps.
144:2

[22:49]
a.
Ps.
140:1,
4,
11

[22:50]
a.
2
Sam.
8:1–
14

[22:50]
b.
Ps.
57:7;
Rom.
15:9

[22:51]
a.

Ps. 144:10

[22:51] b. Ps. 89:20

[22:51] c. 2 Sam. 7:12–16; Ps. 89:29

2 Samuel 23

[23:1] a. 2 Sam. 7:8, 9; Ps. 78:70, 71

[23:1] b. 1

Sam.
16:12,
13;
Ps.
89:20

[23:2]
a.
Matt.
22:43;
(2
Pet.
1:21)

[23:3]
a.
(Deut.
32:4)

[23:3]
b.
Ex.
18:21;
(Is.
11:1–
5)

[23:4]
a.
Ps.
89:36;
Is.
60:1

[23:5] a. 2 Sam. 7:12; Ps. 89:29; Is. 55:3

[23:7] * Lit. *filled*

[23:8] * Lit. *One Who Sits in the Seat* (1 Chr. 11:11)

[23:8] * So with MT,

Tg.; LXX, Vg. *the three*

[23:9] a. 1 Chr. 11:12; 27:4

[23:9] * *Dodai,* 1 Chr. 27:4

[23:10] a. Judg. 8:4

[23:10] b. 1 Sam. 30:24, 25

[23:11] a. 1 Chr. 11:27

[23:11] b. 1 Chr. 11:13, 14

[23:13] a. 1 Chr. 11:15

[23:13] b. 1 Sam. 22:1

[23:13] c. 2 Sam. 5:18

[23:14]

a. 1 Sam. 22:4, 5

[23:17] a. (Lev. 17:10)

[23:18] a. 2 Sam. 21:17; 1 Chr. 11:20

[23:18] * So with MT, LXX, Vg.; some Heb. mss., Syr. *thirty;* Tg. *the mighty* *men*

[23:20] a. Josh. 15:21

[23:20] b. Ex. 15:15

[23:20] * Lit. *great of acts*

[23:21] * Lit. *a man of appearance*

[23:23] a. 2 Sam. 8:18;

20:23

[23:24] a. 2 Sam. 2:18; 1 Chr. 27:7

[23:25] a. 1 Chr. 11:27

[23:30] a. Judg. 2:9

[23:33] a. 2 Sam. 23:11

[23:33] * Or *Ararite*

[23:34] a. 2 Sam. 15:12

[23:35] * *Hezro,* 1 Chr. 11:37

[23:36] a. 2 Sam. 8:3

[23:38] a. 1 Chr. 2:53

[23:39] a. 2 Sam. 11:3, 6

[24:1] a. 2 Sam. 21:1, 2

[24:1] b. Num. 26:2; 1 Chr. 27:23, 24

[24:1] * *take a census of*

[24:2] a. Judg. 20:1; 2 Sam.

3:10

[24:2]
b.
(Jer.
17:5)

[24:3]
a.
Deut.
1:11

[24:4]
*
overruled

[24:5]
a.
Deut.
2:36;
Josh.
13:9,
16

[24:5]
b.
Num.
32:1,
3

[24:6] a. Josh. 19:47; Judg. 18:29

[24:6] b. Josh. 19:28; Judg. 18:28

[24:7] a. Josh. 19:29

[24:7] b. Josh. 11:3; Judg. 3:3

[24:9] a. 1 Chr. 21:5

[24:10] a. 1 Sam. 24:5

[24:10] b. 2 Sam. 23:1

[24:10] c. 2 Sam. 12:13

[24:10] d. 1 Sam. 13:13; (2 Chr. 16:9)

[24:11] a. 1 Sam. 22:5

[24:11] b. 1 Sam. 9:9; 1 Chr. 29:29

[24:13] a. Ezek. 14:21

[24:13] * So with MT, Syr., Tg., Vg.; LXX *three* (cf. 1 Chr. 21:12)

[24:14] a. (Ps. 51:1;

103:8, 13, 14; 119:156; 130:4, 7)

[24:14] b. (Is. 47:6; Zech. 1:15)

[24:15] a. 1 Chr. 21:14

[24:16] a. Ex. 12:23; 2 Kin. 19:35; Acts 12:23

[24:16] b. Gen.

6:6; 1 Sam. 15:11

[24:16] * Or *Angel*

[24:16] * *Ornan,* 1 Chr. 21:15

[24:17] a. 2 Sam. 7:8; 1 Chr. 21:17; Ps. 74:1

[24:18] a. 1 Chr. 21:18

[24:21] a. Gen. 23:8–16

[24:21] b. Num. 16:48, 50

[24:22] a. 1 Sam. 6:14; 1 Kin. 19:21

[24:23] a. (Ezek. 20:40, 41)

[24:24] a. 1 Chr.

21:24, 25

[24:25] a. 2 Sam. 21:14

[24:25] b. 2 Sam. 24:21

The Holy Spirit's Work in

1 KINGS

Introduction

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual

Warfare

God’s Spirit gave David’s son, Solomon, great wisdom, understanding, and knowledge (1 Kin. 4). Spirit-inspired plans from David were used by Solomon to build the temple (1 Kin. 5–6).

As Solomon, the priests, and the

people dedicated the temple, the glorious presence of God’s Spirit filled the temple and blessed God’s people (1 Kin. 8–9). The blessings of God’s Spirit were upon Solomon and the nation as long as he obeyed the Law and did not worship other gods. However, Solomon’s love for his many pagan wives motivated him to allow idol worship and shrines in Israel, bringing God’s judgment upon Solomon and the nation (1 Kin. 11).

After Solomon’s death, the nation

was divided into the northern kingdom of Israel and the southern kingdom of Judah, ruled by the house of David (1 Kin. 11–15). The Spirit of God anointed the prophet Elijah to speak God's judgment against Israel's wicked rulers

—Ahab and Jezebel—and their idolatrous worship of Baal. Raining down fire from heaven, the Spirit of God manifested His power by defeating the prophets of Baal on Mount Carmel (1 Kin. 18).

God sovereignly raised up

Elijah to be the spiritual leader in a time of extreme apostasy. Elijah became the model or pattern of all prophets after Moses. He was the hinge figure or bridge in the prophetic line from Moses to Jesus. He was the one who kept the messianic hope alive during the period of deepest crisis in God’s covenant relationship with Israel.

As a gentle whisper, God’s Spirit spoke to a discouraged Elijah hiding in a cave on Mount Sinai (1

Kin. 19).

Through his anointed prophets, God spoke His words of judgment and impending destruction to kings and nations that turn from His ways. In much the same way today, God prepares prophetic voices to speak for Him through the supernatural power of His Holy Spirit.*

---

* Adapted from the *Holy Spirit Encounter Bible*, Introductio to 1 Kings, 319, and John Rea, *Charisma's Bible Handbook on the Holy Spirit*, 64–65.1font>

1 Kings

1

Adonijah Presumes to Be King

1Now King David was [a]old, [*]advanced in years; and they put covers on him, but he could not get warm. 2Therefore his servants said to him, “Let a young woman, a virgin, be sought for our lord the king, and let her *stand before the king, and let her care for him; and let her lie in your bosom, that our lord the king may be warm.” [3] So they sought for a lovely young woman throughout all the territory of Israel, and found [a]Abishag the [b]Shunammite, and brought her to the king. [4]The young woman *was* very lovely; and she cared for the king, and served him; but the king did not know her.

5Then [a]Adonijah the [*]son of Haggith exalted himself, saying, “I will [*]be king”; and [b]he prepared for himself chariots and horsemen, and fifty men to run before him. 6(And his father had not [*]rebuked him at any time by saying, “Why have you done so?” He *was* also very good-looking. [a]*His mother* had borne him after Absalom.) 7Then he conferred with [a]Joab the son of Zeruiah and with [b]Abiathar the priest, and [c]they followed and helped Adonijah. 8But [a]Zadok the priest, [b]Benaiah the son of Jehoiada, [c]Nathan the prophet, [d]Shimei, Rei, and [e]the mighty men who *belonged* to David were not with Adonijah.

9 And Adonijah sacrificed sheep and oxen and fattened cattle by the stone of *Zoheleth, which is

by [a]En Rogel;[*] he also invited all his brothers, the king's sons, and all the men of Judah, the king's servants. [10]But he did not invite Nathan the prophet, Benaiah, the mighty men, or [a]Solomon his brother.

[11]So Nathan spoke

to Bathsheba the mother of Solomon, saying, “Have you not heard that Adonijah the son of [a]Haggith has become king, and David our lord does not know *it?*

12Come, please, let me now give you advice, that you may save your own life and the life of your son Solomon. [13]Go immediately to King David and say to him, ‘Did you not, my lord, O king, swear to your maidservant, saying, [a]“Assuredly your son Solomon shall reign after me, and he shall sit on my throne“? Why then has Adonijah become king?’ [14]Then, while you are still talking there with the king, I also will come in after you and confirm your words.”

[15]So Bathsheba went into the chamber

to the king. (Now the king was very old, and Abishag the Shunammite was serving the king.) 16And Bathsheba bowed and did homage to the king. Then the king said, “What is your wish?”

17Then she said to him, “My

lord, [a]you swore by the LORD your God to your maidservant, *saying,* ‘Assuredly Solomon your son shall reign after me, and he shall sit on my throne.’ 18So now, look! Adonijah has become king; and now, my lord the king, you do not know about *it*. 19[a]He has sacrificed oxen and fattened cattle and sheep in abundance, and has invited all the sons of the king, Abiathar the priest, and Joab the commander of the army; but Solomon your servant he has not invited. [20]And as for you, my lord, O king, the eyes of all Israel *are* on you, that you should tell them who will sit on the throne of my lord the king after him. [21]Otherwise it will happen, when my lord the king [a]rests with his fathers, that I and my son Solomon will be counted as offenders.”

22And just then, while she was still talking with the king, Nathan the prophet also came in. 23So they told the king, saying, “Here is Nathan the prophet.” And when he came in before the king, he bowed down before the king with his face to the ground. [24]And Nathan said, “My lord, O king, have you said, ‘Adonijah shall reign after me, and he shall sit on[1] my throne’? 25[a]For he has gone down today, and has sacrificed oxen and fattened cattle and sheep in abundance, and has invited all the king’s sons, and the commanders of the army, and Abiathar the priest; and look! They are eating and drinking before him; and they say, [b]‘*Long*[*] live King Adonijah!’ 26But he has not invited me — me your servant — nor Zadok the priest, nor Benaiah the son of Jehoiada, nor your servant Solomon. [27]Has this thing been done by my lord the king, and you have not told your servant who should sit on the throne of my lord the king after him?”

David Proclaims Solomon

King

[28]Then King David answered and said, “Call Bathsheba to me.” So she came into the king’s presence and stood before the king. [29]And the king took an oath and said, [a]“*As* the LORD lives, who has redeemed my life

from every distress, 30[a]just as I swore to you by the LORD God of Israel, saying, ‘Assuredly Solomon your son shall be king after me, and he shall sit on my throne in my place,’ so I certainly will do this day.”

[31] Then Bathsheba bowed with *her* face to the earth, and paid homage to the king, and said, [a]“Let my lord King David live forever!”

[32] And King David said, “Call to me Zadok the priest, Nathan the prophet, and

Benaiah the son of Jehoiada.” So they came before the king. 33The king also said to them, [a]“Take with you the servants of your lord, and have Solomon my son ride on my own [b]mule, and take him down to

[c]Gihon.[*]34There let Zadok the priest and Nathan the prophet [a]anoint him king over Israel; and [b]blow the horn, and say, [*]‘*Long* live King Solomon!’ 35Then you shall come up after him, and he shall come and sit on my throne,

and he shall be king in my place. For I have appointed him to be ruler over Israel and Judah.”

36Benaiah the son of Jehoiada answered the king and said, [a]“Amen! May the LORD God of my lord the king say so *too.* 37[a]As the LORD has been with my lord the king, even so may He be with Solomon, and [b]make his throne greater than the throne of my lord King David.”

38So Zadok the priest, Nathan the prophet,

[a]Benaiah the son of Jehoiada, the [b]Cherethites, and the Pelethites went down and had Solomon ride on King David’s mule, and took him to Gihon. 39 Then Zadok the priest took a horn of [a]oil from the tabernacle and [b]anointed Solomon.

And they blew the horn, [c]and all the people said, [*]*“Long* live King Solomon!” [40]And all the people went up after him; and the people played the flutes and rejoiced with great joy, so that the earth *seemed to* split with their sound.

[41]Now Adonijah and all the guests who *were* with him heard *it* as they finished eating. And when Joab heard the sound of the horn, he said, "Why *is* the city in such a noisy uproar?" [42]While

he was still speaking, there came [a]Jonathan, the son of Abiathar the priest. And Adonijah said to him, “Come in, for [b]you *are* a prominent man, and bring good news.”

43 Then Jonathan answered and said to Adonijah, “No! Our lord

King David has made Solomon king. [44]The king has sent with him Zadok the priest, Nathan the prophet, Benaiah the son of Jehoiada, the Cherethites, and the Pelethites; and they have made him ride on the king’s mule. [45]So Zadok the priest and Nathan the prophet have anointed him king at Gihon; and they have gone up from there rejoicing, so that the city is in an uproar. This *is* the noise that you have heard. 46Also Solomon [a]sits on the throne of the kingdom. [47]And moreover the king's servants have gone to bless our lord King David, saying, [a]'May God make the name of Solomon better than your name, and may He make his throne greater than your throne.'

[b]Then the king bowed himself on the bed. 48Also the king said thus, ‘Blessed *be* the [1]LORD God of Israel, who has [a]given *one* to sit on my throne this day, while my eyes see [b]*it!*’ ”

49So all the

guests who were with Adonijah were afraid, and arose, and each one went his way.

50Now Adonijah was afraid of Solomon; so he arose, and went and [a]took hold of the horns of the altar. 51And it was told Solomon, saying, “Indeed Adonijah is afraid of King Solomon; for look, he has taken hold of the horns of the altar, saying, ‘Let King Solomon swear to me today that he will not put his servant to death with the sword.’

”

[52]Then Solomon said, “If he proves himself a worthy man, [a]not one hair of him shall fall to the earth; but if wickedness is found in him, he shall die.” [53]So King Solomon sent them to bring him down

from the altar. And he came and fell down before King Solomon; and Solomon said to him, “Go to your house.”

1 Kings 2

David’s Instructions to Solomon

1 Now [a]the days of David drew near that he should die,

and he *charged Solomon his son, saying: 2[a]“I go the way of all the earth; [b]be strong, therefore, and prove yourself a man. 3And keep the charge of the LORD your God: to walk in His ways, to keep His statutes, His commandments, His judgments, and His testimonies, as it is written in the Law of Moses, that you may [a]prosper in all that you do and wherever you turn; [4]that the LORD may [a]fulfill His word which He spoke concerning me, saying, [b]‘If your sons take heed to their way, to [c]walk before Me in truth with all their heart and with all their soul,’ He said, [d]‘you shall not lack a man on the throne of Israel.’

5 “Moreover

you know also what Joab the son of Zeruiah [a]did to me, *and* what he did to the two commanders of the armies of Israel, to [b]Abner the son of Ner and [c]Amasa the son of Jether, whom he killed.

And he shed the blood of war in peacetime, and put the blood of war on his belt that *was* around his waist, and on his sandals that *were* on his feet. 6 Therefore do [a]according to your wisdom, and do not let his gray hair go down to the grave in peace.

[7]“But show kindness to the sons of [a]Barzillai the Gileadite, and let them be among those who [b]eat at your table, for so [c]they came to me when

I fled from Absalom your brother.

8“And see, *you have* with you [a]Shimei the son of Gera, a Benjamite from Bahurim, who cursed me with a malicious curse in the day when I went to Mahanaim. But [b]he came down to meet me at the Jordan, and [c]I swore to him by the LORD, saying, ‘I will not put you to death with the sword.’ [9]Now therefore, [a]do not hold him guiltless, for you *are* a wise man and know what you ought to do to him; but [b]bring his gray hair down to the grave with blood.”

Death of David

10So [a]David [*]rested with his fathers, and was buried in [b]the City of David. 11The period that David [a]reigned over Israel *was* forty years; seven years he reigned in Hebron, and in Jerusalem he reigned thirty-three years. 12[a]Then Solomon sat on the throne of his father David; and his kingdom was [b]firmly established.

Solomon Executes Adonijah

13Now Adonijah

the son of Haggith came to Bathsheba the mother of Solomon. So she said, [a]"Do you come peaceably?"

And he said, "Peaceably." 14Moreover he said, "I have something *to say* to you."

And she said, "Say it."

15Then he said,

“You know that the kingdom was [a]mine, and all Israel had set their expectations on me, that I should reign. However, the kingdom has been turned over, and has become my brother’s; for [b]it was his from the LORD. [16]Now

I ask one petition of you; do not *deny me.”

And she said to him, “Say it.”

17 Then he said, “Please speak to King Solomon, for he will not refuse you, that he may give me [a]Abishag the Shunammite as

wife.”

[18]So Bathsheba said, “Very well, I will speak for you to the king.”

[19]Bathsheba therefore went to King Solomon, to speak to him for Adonijah. And the king rose up to meet her and [a]bowed down to her, and

sat down on his throne and had a throne set for the king’s mother; [b]so she sat at his right hand. [20]Then she said, “I desire one small petition of you; do not *refuse me.”

And the king said to

her, “Ask it, my mother, for I will not refuse you.”

[21]So she said, “Let Abishag the Shunammite be given to Adonijah your brother as wife.”

[22]And King Solomon answered and said to his mother, “Now why do you ask

Abishag the Shunammite for Adonijah? Ask for him the kingdom also—for he *is* my [a]older brother—for him, and for [b]Abiathar the priest, and for Joab the son of Zeruiah.” 23Then King Solomon swore by the LORD, saying, [a]“May God do so to me, and more also, if Adonijah has not spoken this word against his own life! [24]Now therefore, *as* the LORD lives, who has confirmed me and set me on the throne of David my father, and who has established a *house for me, as He [a]promised, Adonijah shall be put to death today!”

25 So King Solomon sent by the hand of [a]Benaiah the son of Jehoiada; and he struck him down, and he died.

Abiathar Exiled, Joab Executed

26 And to Abiathar the priest the king said, “Go to [a]Anathoth, to your own fields, for *you *are* deserving of death; but I will not put you to death at this time, [b]because you carried the

ark of the Lord GOD before my father David, and because you were afflicted every time my father was afflicted.” [27]So Solomon removed Abiathar from being priest to the LORD, that he might [a]fulfill the word of the LORD which

He spoke concerning the house of Eli at Shiloh.

28Then news came to Joab, for Joab [a]had defected to Adonijah, though he had not defected to Absalom. So Joab fled to the tabernacle of the LORD, and [b]took hold of the horns of the altar. 29And King Solomon was told, “Joab has fled to the tabernacle of the LORD; there *he is,* by the altar.” Then Solomon sent Benaiah the son of Jehoiada, saying, “Go, [a]strike him down.” 30So Benaiah went to the tabernacle of the LORD, and said to him, “Thus says the king, [a]‘Come out!’ ”

And he said, “No, but I will die here.” And Benaiah brought back word to the king, saying, “Thus said Joab, and thus he answered me.”

[31]Then the king said to him, [a]“Do as he has said, and strike him down and bury him, [b]that you may take away from me and from the house of my father the innocent blood which

Joab shed. 32 So the LORD [a]will return his [*]blood on his head, because he struck down two men more righteous [b]and better than he, and killed them with the sword—[c]Abner the son of Ner, the commander of the army of Israel, and [d]Amasa the son of Jether, the commander of the army of Judah—though my father David did not know *it.* [33]Their blood shall therefore return upon the head of Joab and [a]upon the head of his descendants forever. [b]But upon David and his descendants, upon his house and his throne, there shall be peace forever from the LORD.”

34 So Benaiah the son of Jehoiada went up and struck and killed him; and he was buried

in his own house in the wilderness. 35The king put Benaiah the son of Jehoiada in his place over the army, and the king put [a]Zadok the priest in the place of [b]Abiathar.

Shimei Executed

36Then the king sent and

called for [a]Shimei, and said to him, “Build yourself a house in Jerusalem and dwell there, and do not go out from there anywhere. 37For it shall be, on the day you go out and cross [a]the Brook Kidron, know for certain you shall surely die; [b]your [*]blood shall be on your own head.”

[38]And Shimei said to the king, “The saying *is* good. As my lord the king has said, so your servant will do.” So Shimei dwelt in

Jerusalem many days.

[39]Now it happened at the end of three years, that two slaves of Shimei ran away to [a]Achish the son of Maachah, king of Gath. And they told Shimei, saying, “Look, your slaves *are* in Gath!” [40]So

Shimei arose, saddled his donkey, and went to Achish at Gath to seek his slaves. And Shimei went and brought his slaves from Gath. [41]And Solomon was told that Shimei had gone from Jerusalem to Gath and had come back.

[42]Then the king sent and called for Shimei, and said to him, “Did I not make you swear by the LORD, and warn you, saying, ‘Know for certain that on the day you go out and travel anywhere, you shall

surely die’? And you said to me, ‘The word I have heard *is* good.’ [43]Why then have you not kept the oath of the LORD and the commandment that I gave you?” [44]The king said moreover to Shimei, “You know, as your heart acknowledges, [a]all the wickedness that you did to my father David; therefore the LORD will [b]return your wickedness on your own head. 45 But King Solomon *shall be* blessed, and [a]the throne of David shall be established before the LORD forever.”

[46] So the king commanded Benaiah the son of Jehoiada; and he went out and struck him down, and he died. Thus the [a]kingdom was established in the hand of Solomon.

1 Kings 3

Solomon Requests Wisdom

[1] Now [a]Solomon made [*]a treaty

with Pharaoh king of Egypt, and married Pharaoh’s daughter; then he brought her [b]to the City of David until he had finished building his [c]own house, and [d]the house of the LORD, and [e]the wall all around Jerusalem. 2 [a]Meanwhile the people sacrificed at the high places, because there was no house built for the name of the LORD until those days. 3And Solomon [a]loved the LORD, [b]walking in the statutes of his father David, except that he sacrificed and burned incense at the high places.

4Now [a]the king went to Gibeon to sacrifice there, [b]for that *was* the great high place: Solomon offered a thousand burnt offerings on that altar. 5[a]At Gibeon the LORD appeared to Solomon [b]in a dream by night; and God said, "Ask! What shall I give you?"

6[a]And Solomon said: "You have shown great mercy to Your servant David my father, because he [b]walked before You in truth, in righteousness, and in uprightness of heart with

You; You have continued this great kindness for him, and You [c]have given him a son to sit on his throne, as *it is* this day. [7]Now, O LORD my God, You have made Your servant king instead of my father David, but I *am* a [a]little child; I do not know *how* [b]to go out or come in. 8And Your servant *is* in1 the midst of Your people whom You [a]have chosen, a great people, too [b]numerous to be numbered or counted. 9[a]Therefore give to Your servant an [*]understanding heart [b]to judge Your people, that I may [c]discern between good and evil. For who is able to judge this great people of Yours?”

10The speech pleased the Lord, that

Solomon had asked this thing. [11]Then God said to him: “Because you have asked this thing, and have [a]not asked long life for yourself, nor have asked riches for yourself, nor have asked the life of your enemies, but have asked for yourself understanding to discern justice, [12][a]behold, I have done according to your words; [b]see, I have given you a wise and understanding heart, so that there has not been anyone like you before you, nor shall any like you arise after you. 13And I have also [a]given you what you have not asked: both [b]riches and honor, so that there shall not be anyone like you among the kings all your days. 14So [a]if you walk in My ways, to keep My statutes and My commandments, [b]as your father David walked, then I will [c]lengthen[*] your days.”

[15]Then Solomon [a]awoke; and indeed it had been a dream. And he came to Jerusalem and stood before the ark of

the covenant of the LORD, offered up burnt offerings, offered peace offerings, and [b]made a feast for all his servants.

Solomon's Wise Judgment

16 Now two women *who were* harlots came to the king, and [a]stood before him. 17 And one woman

said, “O my lord, this woman and I dwell in the same house; and I gave birth while she *was* in the house. [18]Then it happened, the third day after I had given birth, that this woman also gave birth.

And we *were* together;[1]*no one *was* with us in the house, except the two of us in the house. [19]And this woman's son died in the night, because she lay on him. [20]So she arose in the middle of

the
night
and
took
my
son
from
my
side,
while
your
maidservant
slept,
and
laid
him
in
her
bosom,
and
laid
her
dead
child
in
my
bosom.
[21]And
when
I
rose
in
the
morning
to
nurse
my
son,
there
he

was, dead. But when I had examined him in the morning, indeed, he was not my son whom I had borne.”

[22]Then the other woman said, “No! But the living one *is* my son, and the dead one *is* your

son.”

And the first woman said, “No! But the dead one *is* your son, and the living one *is* my son.”

Thus they spoke before the king.

[23]And the king said, “The one says, ‘This *is* my son, who lives,

and your son *is* the dead one’; and the other says, ‘No! But your son *is* the dead one, and my son *is* the living one.’ ”

[24]Then the king said, “Bring me a sword.” So they brought a sword

before the king. [25]And the king said, “Divide the living child in two, and give half to one, and half to the other.”

[26]Then the woman whose son *was* living spoke to the king, for [a]she yearned with compassion for

her son; and she said, “O my lord, give her the living child, and by no means kill him!”

But the other said, “Let him be neither mine nor yours, *but* divide *him.*”

[27]So the king answered and said, “Give

the first woman the living child, and by no means kill him; she *is* his mother.”

28 And all Israel heard of the judgment which the king had rendered; and they feared the king, for they saw that the [a]wisdom of

God *was* in him to administer justice.

1 Kings 4

Solomon's Administration

1So King Solomon was king over all Israel. 2And these *were* his officials: Azariah the son of Zadok, the priest; 3Elihoreph and Ahijah, the sons of Shisha,

[*]scribes; [a]Jehoshaphat the son of Ahilud, the recorder; 4 [a]Benaiah the son of Jehoiada, over the army; Zadok [1]and [b]Abiathar, the priests; 5 Azariah the son of Nathan, over [a]the officers; Zabud the son of Nathan, [b]a priest *and* [c]the king’s friend;

6Ahishar, over the household; and [a]Adoniram the son of Abda, over the labor force.

7And Solomon had twelve governors over all Israel, who provided food for the king and his household; each one made provision for one month of the year. [8]These *are* their names: *Ben-Hur, in the mountains of Ephraim; [9]*Ben-Deker, in Makaz, Shaalbim, Beth Shemesh, and Elon Beth Hanan; [10]*Ben-Hesed, in Arubboth; to him *belonged* Sochoh and all the land of Hepher; [11]*Ben-Abinadab, *in*

all
the
regions
of
Dor;
he
had
Taphath
the
daughter
of
Solomon
as
wife;
[12]Baana
the
son
of
Ahilud,
in
Taanach,
Megiddo,
and
all
Beth
Shean,
which
is
beside
Zaretan
below
Jezreel,
from
Beth
Shean
to
Abel
Meholah,
as
far

as the other side of Jokneam; 13[*]Ben-Geber, in Ramoth Gilead; to him *belonged* [a]the towns of Jair the son of Manasseh, in Gilead; to him *also belonged* [b]the region of Argob in Bashan—sixty large cities with walls and bronze gatebars; 14Ahinadab the son of Iddo, *in* Mahanaim; 15[a]Ahimaaz, in Naphtali; he also took Basemath the daughter of Solomon as wife; 16Baanah the son of [a]Hushai, in Asher and Aloth; 17Jehoshaphat the son of Paruah, in Issachar;

18[a]Shimei the son of Elah, in Benjamin; 19Geber the son of Uri, in the land of Gilead, *in* [a]the country of Sihon king of the Amorites, and of Og king of Bashan. *He was* the only governor who *was* in the land.

Prosperity and Wisdom of Solomon’s Reign

20 Judah and Israel *were* as numerous [a]as the sand by the sea in multitude, [b]eating and drinking and rejoicing. 21 So [a]Solomon reigned over all kingdoms from [b]the[*] River *to* the land of

the Philistines, as far as the border of Egypt. [c]*They* brought tribute and served Solomon all the days of his life.

22 [a]Now Solomon's *provision for one day was thirty *kors of fine flour, sixty kors of meal, 23 ten fatted oxen,

twenty oxen from the pastures, and one hundred sheep, besides deer, gazelles, roebucks, and fatted fowl.

24For he had dominion over all *the region* on this side of *the River from Tiphsah even to Gaza, namely over [a]all the kings on this side of the River; and [b]he had peace on every side all around him. 25And Judah and Israel [a]dwelt* safely, [b]each man under his vine and his fig tree, [c]from Dan as far as Beersheba, all the days of Solomon. 26[a]Solomon had [*]forty thousand stalls of [b]horses for his chariots, and twelve thousand horsemen. 27And [a]these governors, each man in his month, provided food for King Solomon and for all who came to King Solomon's table. There was no lack in their supply. [28]They also brought barley and straw to the proper place, for the horses and steeds, each man according to his charge.

[29]And [a]God gave Solomon wisdom and exceedingly great understanding, and largeness of heart like

the sand on the seashore. 30 Thus Solomon's wisdom excelled the wisdom of all the men [a]of the East and all [b]the wisdom of Egypt. 31 For he was [a]wiser than all men—[b]than Ethan the Ezrahite, [c]and Heman, Chalcol, and

Darda, the sons of Mahol; and his fame was in all the surrounding nations. 32[a]He spoke three thousand proverbs, and his [b]songs were one thousand and five. 33Also he spoke of trees, from the cedar tree of Lebanon even to the hyssop that springs out of the wall; he spoke also of animals, of birds, of creeping things, and of fish. 34And men of all nations, from all the kings of the earth who had heard of his wisdom, [a]came to hear the wisdom of Solomon.

1 Kings 5

Solomon Prepares to Build the Temple

[1] Now [a]Hiram king of Tyre sent his servants to Solomon, because he heard that they had anointed him king in place of his father,

[b]for Hiram had always loved David. 2Then [a]Solomon sent to Hiram, saying:

3[a]Y
kn
ho
my
fat
Da
cou
no
bu
a
ho
for
the
nar
of
the
LO
his
Go
[b]be
of
the
wa
wh
we
fou
aga

hir
on
eve
sid
un
the
LO
pu
*[hi]
foe
un
the
sol
of
his
fee

4Bu
no
the
LO
my
Go
has
giv
me
[a]re
on
eve
sid
the
is
nei
adv
no
*ev
occ

5[a]*A*
bel

*I
pro
to
bu
a
ho
for
the
na
of
the
LO
my
Go
[b]as
the
LO
spo
to
my
fat
Da
say
“Y
son
wh
I
wi
set
on
you
thr
in
you
pla
he
sha
bu
the
ho

for
My
nar

6N
the
cor
tha
the
cut
dov
[a]ce
for
me
fro
Lel
anc
my
ser
wil
be
wit
you
ser
anc
I
wil
pay
you
wa
for
you
ser
acc
to
wh
you
say
For
you

kn
the
is
no
am
us
wh
has
ski
to
cut
tim
lik
the
Sid

[7]So it was, when Hiram heard the words of Solomon, that he rejoiced greatly and said,

Ble
be
the
LO
thi
day
for

He has giv Da a wis son ove thi gre peo

8Then Hiram sent to Solomon, saying:

I hav con *the* *me* wh you sen me *and* I wil do all you des con the ced and cyp log

9M
ser
sha
bri
the
do
[a]fr
Leb
to
the
sea
I
wi
flo
the
in
raf
by
sea
to
the
pla
you
inc
to
me
an
wi
hav
the
bro
apa
the
the
you
car
tak
the

aw
An
yo
sha
ful
my
de
[b]by
giv
foo
for
my
ho

10Then Hiram gave Solomon cedar and cypress logs *according to* all his desire. 11[a]And Solomon gave Hiram twenty thousand *kors of wheat *as* food for his household, and *twenty kors of pressed oil. Thus Solomon gave to Hiram year by year.

**SP
WA
BA**

***Tw
Po
Wo
We***

As a bel you hol the key to adv the kin of hea and

des
the
wo
of
the
en
Yo
are
Go
off
age
her
on
Ea
Th
wh
you
all
hea
all
an
wh
you
dis
hea
dis
Ac
to
Ma
18
“W
you
bir
on
ea
wi
be
bo
in
hea

an
wh
yo
lo
on
ea
wi
be
lo
in
he

Yo
ha
1t
po
sp
wa
we
at
yo
dis
—
eff
pr
an
th
W
of
Go
Th
co
of
th
tw
pr
th
on
tw
pu

tha
ens
the
enc
is
kn
ou
of
yo
life
fan
bu
mi
cor
and
nat
eve
tim
Th
Bib
giv
us
ma
exa
of
ho
tru
thi
is.
Th
ren
Sp
Wa
Ba
in
1
Kir
wi
loo
clo

at the tw po we

[12]So the LORD gave Solomon wisdom, [a]as He had promised him; and there was peace between Hiram and Solomon, and the two

of them made a treaty together.

[13]Then King Solomon raised up a labor force out of all Israel; and the labor force was thirty thousand men. [14]And he sent them to Lebanon, ten thousand a month in shifts: they were

one month in Lebanon *and* two months at home; [a]Adoniram *was* in charge of the labor force. [15][a]Solomon had seventy thousand who carried burdens, and eighty thousand who quarried *stone* in the mountains, [16]besides three thousand [*]three hundred from the

[a]chiefs of Solomon’s deputies, who supervised the people who labored in the work. [17]And the king commanded them to quarry large stones, costly stones, *and* [a]hewn stones, to lay the foundation of the [*]temple. [18]So Solomon’s builders, Hiram’s builders, and

the Gebalites quarried *them;* and they prepared timber and stones to build the *temple.

1 Kings 6

Solomon Builds the Temple

1And [a]it came to pass in the four hundred and *eightieth year after the children of Israel had come out of the land of Egypt, in the fourth year of Solomon’s reign over Israel, in the month of *Ziv, which *is* the second month, [b]that he began to build the house of the LORD. 2Now [a]the house which

King Solomon built for the LORD, its length *was* sixty cubits, its width twenty, and its height thirty cubits. [3]The vestibule in front of the *sanctuary of the house *was* *twenty cubits long across the width of the house, *and* the width of *[*]the vestibule extended* [*]ten cubits from the front of the house. [4]And he made for the house [a]windows with beveled frames.

[5]Against the wall of the [*]temple he built [a]chambers all around, *against* the walls of the

temple, all around the sanctuary [b]and the [*]inner sanctuary. Thus he made side chambers all around it. [6]The lowest chamber *was* five cubits wide, the middle *was* six cubits wide, and the third *was* seven cubits wide; for he made narrow ledges around the outside of the temple, so that *the support beams* would not be fastened into the walls of the *temple. 7And [a]the temple, when it was being built, was built with stone finished at the quarry, so that no hammer or chisel *or* any iron tool was heard in the temple while it was being built. 8The doorway for the *middle story *was* on the right side of the temple. They went up by stairs to the middle *story,* and from the middle to the third.

9[a]So he built the [*]temple and finished it, and he paneled the temple with beams and boards of cedar. 10And he built side chambers against the entire temple, each five cubits high; they were attached to the temple with cedar beams.

[11]Then the word of the LORD came to Solomon, saying: [12]“*Concerning* this *temple which you are building, [a]if you [1]walk in My statutes, execute My judgments, keep all My commandments,

and walk in them, then I will perform My [*]word with you, [b]which I spoke to your father David. [13]And [a]I will dwell among the children of Israel, and will not [b]forsake My people Israel.”

[14]So Solomon built the temple

and finished it. [15]And he built the inside walls of the temple with cedar boards; from the floor of the temple to the ceiling he paneled the inside with wood; and he covered the floor of the temple with planks of cypress. [16]Then he built the twenty-cubit room at the rear of the temple, from floor to ceiling, with cedar boards; he built *it* inside as the inner sanctuary, as the [a]Most Holy *Place.* [17]And in front of it the temple sanctuary was forty cubits *long.* [18]The inside of the temple was cedar, carved with ornamental buds and open flowers. All *was* cedar; there was no stone *to be* seen.

[19]And he prepared the *inner sanctuary inside the temple,

to set the ark of the covenant of the LORD there. [20]The inner sanctuary *was* twenty cubits long, twenty cubits wide, and twenty cubits high. He overlaid it with pure gold, and overlaid the altar of cedar. [21]So Solomon overlaid the inside of the temple with pure gold. He stretched gold chains across the front of the inner sanctuary, and overlaid it with gold. [22]The whole temple he overlaid with gold, until he had finished all the temple; also he overlaid with gold [a]the entire altar that *was* by the inner sanctuary.

[23]Inside the inner sanctuary [a]he made two cherubim *of* olive wood, *each* ten cubits high. [24]One wing of the cherub *was* five cubits, and the other wing of

the
cherub
five
cubits:
ten
cubits
from
the
tip
of
one
wing
to
the
tip
of
the
other.
[25]And
the
other
cherub
was
ten
cubits;
both
cherubim
were
of
the
same
size
and
shape.
[26]The
height
of
one
cherub
was

ten cubits, and so *was* the other cherub. [27]Then he set the cherubim inside the inner [*]room; and [a]they stretched out the wings of the cherubim so t1hat the wing of the one touched *one* wall, and the wing of the other cherub touched the other wall. And their wings touched each other in the middle of the room. [28]Also he overlaid the cherubim with gold.

[29]Then he carved all the walls of the temple all around, both the inner

and outer *sanctuaries,* with carved [a]figures of cherubim, palm trees, and open flowers. 30And the floor of the temple he overlaid with gold, both the inner and outer *sanctuaries.*

31For the entrance of the inner sanctuary he made doors *of* olive wood; the lintel *and* doorposts *were* *one-fifth *of the wall.* [32]The two doors *were of* olive wood; and he carved on them figures of cherubim, palm trees, and open flowers, and overlaid *them* with gold; and he spread gold on the cherubim and on the palm trees. [33]So for the door of the [*]sanctuary he also made doorposts *of* olive wood, [*]one-fourth *of the wall.* [34]And the two doors *were of* cypress wood; [a]two panels *comprised* one folding door, and two panels *comprised* the other folding door. [35]Then he carved cherubim, palm trees, and open flowers *on them,* and overlaid *them* with gold applied evenly on the carved work.

[36]And he built the [a]inner court with three

rows of hewn stone and a row of cedar beams.

37[a]In the fourth year the foundation of the house of the LORD was laid, in the month of *Ziv. 38And in the eleventh year, in the month of *Bul, which is the eighth month, the house was finished in all its details and according to all its plans. So he was [a]seven years in building it.

1 Kings 7

Solomon's Other Buildings

1 But Solomon took [a]thirteen years to build

his own house; so he finished all his house.

2He also built the [a]House of the Forest of Lebanon; its length *was* [*]one hundred cubits, its width [*]fifty cubits, and its height thirty cubits, with four rows of cedar pillars, and cedar beams on the pillars. [3]And *it was* paneled with cedar above the beams that *were* on forty-five pillars, fifteen *to* a row. [4]*There were* windows *with beveled frames in* three rows, and window *was* opposite window *in* three tiers. [5]And all the doorways and doorposts *had* rectangular frames; and window *was* opposite window *in* three tiers.

[6]He also made the Hall of Pillars: its length *was* fifty cubits, and its width thirty cubits; and in front of

them *was* a portico with pillars, and a canopy *was* in front of them.

[7]Then he made a hall for the throne, the Hall of Judgment, where he might judge; and *it* *was* paneled with cedar from floor to *ceiling.

[8]And the house where he dwelt *had* another court inside the hall, of like workmanship. Solomon also made a house like this hall for Pharaoh's daughter, [a]whom he had taken *as wife.*

[9]All these *were of* costly stones cut to

size, trimmed with saws, inside and out, from the foundation to the eaves, and also on the outside to the great court. [10]The foundation *was of* costly stones, large stones, some ten cubits and some eight cubits. [11]And above *were* costly stones, hewn to size, and cedar wood. 12The great court *was* enclosed with three rows of hewn stones and a row of cedar beams. So were the [a]inner court of the house of the LORD [b]and the vestibule of the temple.

Hiram the Craftsman

13 Now King Solomon sent and brought [*]Huram from Tyre. 14 [a]He *was* the son of a widow from the tribe of Naphtali, and [b]his father *was* a man of Tyre, a bronze worker; [c]he was filled

with wisdom and understanding and skill in working with all kinds of bronze work. So he came to King Solomon and did all his work.

*The Bronze Pillars for the Temple*1p>

[15]And he [*]cast [a]two pillars of bronze, each one

eighteen cubits high, and a line of twelve cubits measured the circumference of each. [16]Then he made two capitals *of* cast bronze, to set on the tops of the pillars. The height of one capital *was* five cubits, and the height of the other capital *was* five cubits. [17]*He made* a lattice network, with wreaths of chainwork, for the capitals which *were* on top of the pillars: seven chains for one capital and seven for the other capital. [18]So he made the pillars, and two rows of pomegranates above the network all around to cover the capitals that *were* on top; and thus he did for the other capital.

[19]The capitals which *were* on top of the pillars in the

hall *were* in the shape of lilies, four cubits. 20The capitals on the two pillars also *had pomegranates* above, by the convex surface which *was* next to the network; and there *were* [a]two hundred such pomegranates in rows on each of the capitals all around.

21[a]Then he set up the pillars by the vestibule of the temple; he set up the pillar on the right and called its name *Jachin, and he set up the pillar on the left and called its name [*]Boaz. [22]The tops of the pillars were in the shape of lilies. So the work of the pillars was finished.

The Sea and the Oxen

[23]And he made [a]the Sea of cast bronze, ten cubits from one

brim to the other; *it was* completely round. Its height *was* five cubits, and a line of thirty cubits measured its circumference. [24]Below its brim *were* ornamental buds encircling it all around, ten to a cubit, [a]all the way around the Sea. The ornamental buds *were* cast in two rows when it was cast. [25]It stood on [a]twelve oxen: three looking toward the north, three looking toward the west, three looking toward the south, and three looking toward the east;

the Sea *was set* upon them, and all their back parts *pointed* inward. 26It *was* a handbreadth thick; and its brim was shaped like the brim of a cup, *like* a lily blossom. It contained *two thousand baths.

The Carts

and the Lavers

[27]He also made ten *carts of bronze; four cubits *was* the length of each cart, four cubits its width, and three cubits its height. [28]And this *was* the design of the carts: They had panels, and the

panels *were* between frames; [29]on the panels that *were* between the frames *were* lions, oxen, and cherubim. And on the frames *was* a pedestal on top. Below the lions and oxen *were* wreaths of plaited work. [30]Every cart had four bronze wheels and axles of bronze, and its four feet had supports. Under the laver *were* supports of cast *bronze* beside each wreath. [31]Its opening inside the crown at the top *was* one cubit in diameter; and the opening *was* round, shaped *like* a pedestal, one and a half cubits in outside diameter; and also on the opening *were* engravings, but the panels were square, not round. [32]Under the panels *were* the four wheels, and the axles of the wheels *were* *joined* to the cart. The height of a wheel *was* one and a half cubits. [33]The workmanship of the wheels *was* like the workmanship of a chariot wheel; their axle pins, their rims, their spokes, and their hubs *were* all of cast *bronze.* [34]And *there were* four supports at the four corners of each cart; its supports *were* part of the cart itself. [35]On the top of the cart, at the height of half a cubit, *it was* perfectly round. And on the top of the cart, its flanges and its panels *were* of the same casting. [36]On the plates of its flanges and on its panels he engraved cherubim, lions, and palm trees, wherever there was a clear space on each, with wreaths all around. [37]Thus he made the ten carts. All of them were of *the same mold, one measure, *and* one shape.

[38]Then [a]he made ten lavers of bronze; each laver contained *forty baths, *and* each

laver *was* four cubits. On each of the ten carts *was* a laver. [39]And he put five carts on the right side of the house, and five on the left side of the house. He set the Sea on the right side of the house, toward the southeast.

Furnishings of the Temple

40[a]Huram[*] made the lavers and the shovels and the bowls. So Huram finished doing all the work that he was to do for King Solomon *for* the house of the LORD: 41 the two pillars, the *two* bowl-shaped capitals that *were* on top of the two pillars; the two [a]networks covering the two bowl-shaped capitals which *were* on top of the pillars; 42 [a]four hundred pomegranates for the two networks (two rows of pomegranates for each network, to cover the two bowl-shaped capitals that *were* on top of the pillars); 43the ten carts, and ten lavers on the carts; 44one Sea, and twelve oxen under the Sea;

45[a]the pots, the shovels, and the bowls. All these articles which *Huram made for King Solomon *for* the house of the LORD *were* *of* burnished bronze. 46[a]In the plain of Jordan the king had them cast in clay molds, between

[b]Succoth and [c]Zaretan. [47]And Solomon did not weigh all the articles, because *there were* so many; the weight of the bronze was not [a]determined.

[48]Thus Solomon had all the furnishings made for the house of the LORD: [a]the altar of

gold, and [b]the table of gold on which *was* [c]the showbread; 49the lampstands of pure gold, five on the right *side* and five on the left in front of the inner sanctuary, with the flowers and the lamps and the wick-trimmers of gold; 50 the basins, the trimmers, the bowls, the ladles, and the *censers of pure gold; and the hinges of gold, *both* for the doors of the inner room (the Most Holy *Place*) *and* for the doors of the main hall of the temple.

[51] So all the work that King Solomon had done for the house of the LORD was finished; and Solomon brought in the things [a]which his father David had dedicated: the silver and the gold

and the furnishings. He put them in the treasuries of the house of the LORD.

1 Kings 8

The Ark Brought into the Temple

[1]Now [a]Solomon assembled the elders of Israel and all the heads of the tribes, the

chief fathers of the children of Israel, to King Solomon in Jerusalem, [b]that they might bring [c]up the ark of the covenant of the LORD from the City of David, which *is* Zion. [2]Therefore all the men of Israel assembled with King Solomon at the [a]feast in the month of [*]Ethanim, which *is* the seventh month. 3So all the elders of Israel came, [a]and the priests took up the ark. 4Then they brought up the ark of the LORD, [a]the *tabernacle of meeting, and all the holy furnishings that *were* in the tabernacle. The priests and the Levites brought them up. 5Also King Solomon, and all the congregation of Israel who were assembled with him, *were* with him before the ark, [a]sacrificing sheep and oxen that could not be counted or numbered for multitude. 6Then the priests [a]brought in the ark of the covenant of the LORD to [b]its place, into the inner sanctuary of the temple, to the Most

Holy *Place,* [c]under the wings of the cherubim. 7For the cherubim spread *their* two wings over the place of the ark, and the cherubim overshadowed the ark and its poles. 8The poles [a]extended so that the [*]ends of the poles could be seen from the holy *place,* in front of the inner sanctuary; but they could not be seen from outside. And they are there to this day. 9 [a]Nothing *was* in the ark [b]except the two tablets of stone which

Moses [c]put there at Horeb, [d]when the LORD made *a covenant* with the children of Israel, when they came out of the land of Egypt.

[10]And it came to pass, when the priests came out of the holy *place,* that

the cloud [a]filled the house of the LORD, 11so that the priests could not continue ministering because of the cloud; for the [a]glory of the LORD filled the house of the LORD.

12[a]Then Solomon spoke:

“The LORD said He

would dwell [b]in the dark cloud.

13[a]I have surely built You an exalted house,

[b]And a place for You to dwell in forever.”

Solomon’s Speech at Completion of the Work

14Then the king turned around and [a]blessed the whole assembly of Israel, while all the assembly of Israel was standing. 15And he said: [a]“Blessed *be* the LORD God of Israel, who [b]spoke with His mouth to my father David, and with His hand has fulfilled *it,* saying, 16 ‘Since the day that I brought My people Israel out of Egypt, I have chosen no city from any tribe of Israel *in which* to build a house, that [a]My name might be there; but I chose [b]David to be

over My people Israel.’ 17 Now [a]it was in the heart of my father David to build a *temple for the name of the LORD God of Israel. 18 [a]But the LORD said to my father David, ‘Whereas it was in your heart to build a temple for My name, you did well that it was in your heart. 19Nevertheless [a]you shall not build the temple, but your son who will come from your body, he shall build the temple for My name.’ 20So the LORD has fulfilled His word which He spoke; and I have *filled the position of my father David, and sit on the throne of Israel, [a]as the LORD promised; and I ha1ve built a temple for the name of the LORD God of Israel. 21And there I have made a place for the ark, in which *is* [a]the covenant of the LORD which He made with our fathers, when He brought them out of the land of

Egypt.”

Solomon’s Prayer of Dedication

[22]Then Solomon stood before [a]the altar of the LORD in the presence of all the assembly of Israel, and [b]spread out his hands toward heaven; [23]and he said: “LORD God of Israel, [a]*there is* no

God in heaven above or on earth below like You, [b]who keep *Your* covenant and mercy with Your servants who [c]walk before You with all their hearts. 24 You have kept what You promised Your servant David my father; You have both spoken with Your mouth and fulfilled *it* with Your hand, as *it is* this day. 25Therefore, LORD God of Israel, now keep what You promised Your servant David my father, saying, [a]‘You shall not fail to have a man sit before Me on the throne of Israel, only if your sons take heed to their way, that they walk before Me as you have walked before Me.’ 26[a]And now I pray, O God of Israel, let Your word come true, which You have spoken to Your servant David my father.

[27]“But [a]will God indeed dwell on the earth? Behold, heaven and the [b]heaven of heavens cannot contain You. How much less this temple which I have built! [28]Yet regard

the prayer of Your servant and his supplication, O LORD my God, and listen to the cry and the prayer which Your servant is praying before You today: [29]that Your eyes may be open toward this *temple night and day, toward the place of which You said, [a]‘My name shall be [b]there,’ that You may hear the prayer which Your servant makes [c]toward this place. 30 [a]And may You hear the supplication of Your servant and of Your people Israel, when they pray toward this place. Hear in heaven Your dwelling plac1e; and when You hear, forgive.

1 Ki 8:3

Go I tha Yo tha wh Yo he ou pra Yo als for us.

31“When anyone sins

against his neighbor, and is forced to take [a]an oath, and comes *and* takes an oath before Your altar in this temple, [32]then hear in heaven, and act, and judge Your servants, [a]condemning the wicked, bringing his way on his head, and justifying the righteous by giving him according to his righteousness.

33[a]“When Your people Israel are defeated before an enemy because they have sinned against You, and [b]when they turn back to You and confess Your name, and pray and make supplication to You in this temple, 34then hear in heaven, and forgive the sin of Your people Israel, and bring them back to the land which You gave to their [a]fathers.

35[a]“When the heavens are shut up and

there
is
no
rain
because
they
have
sinned
against
You,
when
they
pray
toward
this
place
and
confess
Your
name,
and
turn
from
their
sin
because
You
afflict
them,
[36]then
hear
in
heaven,
and
forgive
the
sin
of
Your
servants,

Your people Israel, that You may [a]teach them [b]the good way in which they should walk; and send rain on Your land which You have given to Your people as an inheritance.

37[a]“When there is famine in the land, pestilence *or* blight *or* mildew, locusts *or* grasshoppers; when their enemy besieges them in the land of their *cities; whatever plague or whatever sickness *there is;* [38]whatever prayer, whatever supplication is made by anyone, *or* by all Your people Israel, when

each
one
knows
the
plague
of
his
own
heart,
and
spreads
out
his
hands
toward
this
temple:
[39]then
hear
in
heaven
Your
dwelling
place,
and
forgive,
and
act,
and
give
to
everyone
according
to
all
his
ways,
whose
heart
You

know (for You alone [a]know the hearts of all the sons of men), 40 [a]that they may fear You all the days that they live in the land which Yo1u gave to our fathers.

41 “Moreover, concerning a foreigner, who *is* not

of Your people Israel, but has come from a far country for Your name's sake [42](for they will hear of Your great name and Your [a]strong hand and Your outstretched arm), when he comes and prays toward this temple, [43]hear in heaven Your dwelling place, and do according to all for which the foreigner calls to You, [a]that all peoples of the earth may know Your name and [b]fear You, as *do* Your people Israel, and that they may know that this temple which I have built is called by Your name.

[44]“When Your people go out to battle against their enemy, wherever You send them, and when they pray to the LORD toward the city which You have chosen

and the temple which I have built for Your name, [45]then hear in heaven their prayer and their supplication, and maintain their [*]cause.

[46]“When they sin against You [a](for *there is* no one who does not sin), and You become

angry with them and deliver them to the enemy, and they take them captive [b]to the land of the enemy, far or near; 47 [a]*yet* when they *come to themselves in the land where they were carried captive, and repent, and make supplication to You in the land of those who took them captive, [b]saying, ‘We have sinned and done wrong, we have committed wickedness’; [48]and *when* they [a]return to You with all their heart and with all their soul in the land of their enemies who led them away captive, and [b]pray to You toward their land which You gave to their fathers, the city which You have chosen and the temple which I have built for Your name: [49]then hear in heaven Your dwelling place their prayer and their supplication, and maintain their [*]cause, 50 and forgive Your people who have sinned against You, and all their transgressions which they have transgressed against You; and [a]grant them compassion before those who took them captive, that they may have compassion on them [51](for [a]they *are* Your people and Your in[1]heritance, whom You brought out of Egypt, [b]out of the iron furnace), [52][a]that Your eyes may be open to the supplication of

Your servant and the supplication of Your people Israel, to listen to them whenever they call to You. [53]For You separated them from among all the peoples of the earth *to be* Your inheritance, [a]as You spoke by Your servant

Moses, when You brought our fathers out of Egypt, O Lord GOD.”

Solomon Blesses the Assembly

54[a]And so it was, when Solomon had finished praying all this prayer and supplication to the LORD, that he arose from before the altar of the LORD, from kneeling on his knees with his hands spread up to heaven. 55Then he stood [a]and blessed all the assembly of Israel with a loud voice, saying: 56“Blessed *be* the LORD, who has given [a]rest* to His people Israel, according to all that He promised. [b]There has not failed one word of all His good promise, which He promised through His servant Moses. 57May the LORD our God be with us, as He was with our fathers.

[a]May He not leave us nor forsake us, 58that He may [a]incline our hearts to Himself, to walk in all His ways, and to keep His commandments and His statutes and His judgments, which He commanded our fathers. 59And may

these
words
of
mine,
with
which
I
have
made
supplication
before
the
LORD,
be
near
the
LORD
our
God
day
and
night,
that
He
may
maintain
the
cause
of
His
servant
and
the
cause
of
His
people
Israel,
as
each

day may require, 60[a]that all the peoples of the earth may know that [b]the LORD *is* God; *there is* no other. 61Let your [a]heart therefore be *loyal to the LORD our God, to walk in His statutes and keep His commandments, as at this day.”

Solomon Dedicates the Temple

62Then [a]the king and all Israel with him offered sacrifices before the LORD. 63And Solomon offered a sacrifice of peace offerings, which he offered to the LORD, twenty-two thousand bulls and one hundred and twenty thousand sheep. So the king and all the children of Israel dedicated the house of the LORD. 64On [a]the same day the king consecrated the middle of the court that *was* in front of the house of the LORD; for there he offered burnt offerings, grain offerings, and the fat of the peace offerings, because the [b]bronze altar that *was* before the LORD *was* too small to receive the burnt offerings, the grain offerings, and the fat of the peace offerings.

65 At that time Solomon held [a]a feast, and all Israel with him, a great assembly from [b]the entrance of Hamath to [c]the Brook of Egypt, before the LORD our God, [d]seven days and seven

more days — fourteen days. 66[a]On the eighth day he sent the people away; and they *blessed the king, and went to their tents joyful and glad of heart for all the good that the LORD had done for His servant David, and for Israel His people.

1 Kings 9

God's Second Appearance to Solomon

[1] And [a]it came to pass, when Solomon had finished building the house of the LORD [b]and the king's house, and [c]all Solomon's desire which

he wanted to do, 2that the LORD appeared to Solomon the second time, [a]as He had appeared to him at Gibeon. 3And the LORD said to him: [a]“I have heard your prayer and your supplication that you have made before

Me; I have consecrated this house which you have built [b]to put My name there forever, and [c]My eyes and My heart will be there perpetually. [4]Now if you [a]walk before Me [b]as your father David walked, in integrity of heart and in uprightness, to do according to all that I have commanded you, *and* if you [c]keep My statutes and My judgments, 5then I will establish the throne of your kingdom over Israel forever, [a]as I promised David your

father, saying, ‘You shall not fail to have a man on the throne of Israel.’
6[a]*But* if you or your sons at all *turn from following Me, and do not keep My commandments *and* My statutes which I have set

before you, but go and serve other gods and worship them, 7 [a]then I will *cut off Israel from the land which I have given them; and this house which I have consecrated [b]for My name I will cast out of

My sight. [c]Israel will be a proverb and a byword among all peoples. 8And *as for* [a]this house, *which* is exalted, everyone who passes by it will be astonished and will hiss, and say, [b]‘Why has the LORD done thus

to
this
land
and
to
this
house?’
9Then
they
will
answer,
‘Because
they
forsook
the
LORD
their
God,
who
brought
their
fathers
out
of
the
land
of
Egypt,
and
have
embraced
other
gods,
and
worshiped
them
and
served
them;
therefore

the LORD has brought all this [a]calamity on them.' "

Solomon and Hiram Exchange Gifts

[10]Now [a]it happened at the end of twenty years, when Solomon had built the two houses, the house of the LORD and the king's house

11[a](Hiram the king of Tyre had supplied Solomon with cedar and cypress and gold, as much as he desired), *that* King Solomon then gave Hiram twenty cities in the land of Galilee. 12Then Hiram went from Tyre to see the cities which Solomon had given him, but they did not please him. [13]So he said, “What *kind of* cities *are* these which you have given me, my brother?” [a]And he called them the land of *C1abul, as they are to this day. [14]Then Hiram sent the king one hundred and twenty talents of gold.

Solomon's Additional Achievements

[15]And this *is* the reason for [a]the labor force which King Solomon raised: to build the house of the LORD, his own house,

[*]the [b]Millo, the wall of Jerusalem, [c]Hazor, [d]Megiddo, and [e]Gezer. 16(Pharaoh king of Egypt had gone up and taken Gezer and burned it with fire, [a]had killed the Canaanites who dwelt in the city, and had given it *as* a

dowry to his daughter, Solomon’s wife.) 17 And Solomon built Gezer, Lower [a]Beth Horon, 18 [a]Baalath, and Tadmor in the wilderness, in the land *of Judah,* 19 all the storage cities that Solomon had, cities for [a]his chariots and cities for his [b]cavalry, and whatever Solomon [c]desired to build in Jerusalem, in Lebanon, and in all the land of his dominion.

20 [a]All the people *who were* left of the Amorites, Hittites, Perizzites, Hivites, and Jebusites, who *were* not of the children of Israel

—[21] that is, their descendants [a]who were left in the land after them, [b]whom the children of Israel had not been able to destroy completely—[c]from these Solomon raised [d]forced labor, as it is to this day. [22] But of the children of Israel Solomon [a]made no forced laborers, because they *were* men of war and his servants: his officers, his captains, commanders of his chariots, and his cavalry.

[23]Others *were* chiefs of the officials who *were* over Solomon’s work:

[a]five hundred and fifty, who ruled over the people who did the work.

24 But [a]Pharaoh's daughter came up from the City of David to [b]her house which [*]*Solomon* had built for her. [c]Then he built the Millo.

25 [a]Now three times

a year Solomon offered burnt offerings and peace offerings on the altar which he had built for the LORD, and he burned incense with them *on the altar* that *was* before the LORD. So he finished the temple.

26[a]King Solomon

also built a fleet of ships at [b]Ezion Geber, which *is* near *Elath on the shore of the Red Sea, in the land of Edom. 27[a]Then Hiram sent his servants with the fleet, seamen who knew the sea, to work with the servants of Solomon. [28]And they went to [a]Ophir, and acquired four hundred and twenty talents of gold from there, and brought *it* to King Solomon.

1 Kings 10

The Queen of Sheba's Praise of Solomon

[1]Now when

the [a]queen of Sheba heard of the fame of Solomon concerning the name of the LORD, she came [b]to test him with hard questions. 2She came to Jerusalem with a very great [*]retinue, with camels that bore spices, very much gold, and precious stones; and when she came to Solomon, she spoke with him about all that was in her heart. [3]So Solomon answered all her questions; there was nothing *so difficult for the king that he could not explain *it* to her. [4]And when the queen of Sheba had seen all the wisdom of Solomon, the house that he had built, [5]the food on his table, the seating of his servants, the service of his waiters and their apparel, his cupbearers, [a]and his entryway by which he went up to the house of the LORD, there was no more spirit in her. 6Then she said to the1 king: “It was a true report which I heard in my own land about your words and your wisdom. [7]However I did not believe the words until I came and saw with my own eyes; and indeed the half was not told me. Your wisdom and prosperity exceed the fame of which

I heard. 8 [a]Happy *are* your men and happy *are* these your servants, who stand continually before you *and* hear your wisdom! 9 [a]Blessed be the LORD your God, who [b]delighted in you, setting you on the throne of Israel! Because the

LORD has loved Israel forever, therefore He made you king, [c]to do justice and righteousness.”

[10]Then she [a]gave the king one hundred and twenty talents of gold, spices in great quantity, and precious stones. There never again came such abundance

of spices as the queen of Sheba gave to King Solomon. 11[a]Also, the ships of Hiram, which brought gold from Ophir, brought great quantities of *almug wood and precious stones from Ophir. 12[a]And the king made *steps of the almug wood for the house of the LORD and for the king’s house, also harps and stringed instruments for singers. There never again came such [b]almug wood, nor has the like been seen to this day.

13Now King Solomon gave the

queen of Sheba all she desired, whatever she asked, besides what Solomon had given her according to the royal generosity. So she turned and went to her own country, she and her servants.

Solomon's Great Wealth

[14]The weight of gold

that came to Solomon yearly was six hundred and sixty-six talents of gold, 15besides *that* from the [a]traveling merchants, from the income of traders, [b]from all the kings of Arabia, and from the governors of the country.

16And King

Solomon made two hundred large shields *of* hammered gold; six hundred *shekels* of gold went into each shield. [17]He also *made* [a]three hundred shields *of* hammered gold; three minas of gold went into each shield1. The king put them in the [b]House of the Forest of Lebanon.

18 [a]Moreover the king made a great throne of ivory, and overlaid it with pure gold. 19 The throne had six steps, and the top of the throne *was* round at the back; *there were*

armrests on either side of the place of the seat, and two lions stood beside the armrests. 20Twelve lions stood there, one on each side of the six steps; nothing like *this* had been made for any *other* kingdom.

21[a]All

King Solomon’s drinking vessels *were* gold, and all the vessels of the House of the Forest of Lebanon *were* pure gold. Not *one was* silver, for this was accounted as nothing in the days of Solomon. [22]For the king had

[a]merchant[*] ships at sea with the fleet of Hiram. Once every three years the merchant [b]ships came bringing gold, silver, ivory, apes, and [*]monkeys. 23 So [a]King Solomon surpassed all the kings of the earth in riches and wisdom.

24 Now all

the earth sought the presence of Solomon to hear his wisdom, which God had put in his heart. [25]Each man brought his present: articles of silver and gold, garments, armor, spices, horses, and mules, at a set rate year by year.

26[a]And Solomon [b]gathered chariots and horsemen; he had one thousand four hundred chariots and twelve thousand horsemen, whom he [*]stationed in the chariot cities and with the king at Jerusalem. 27[a]The king made silver *as common* in Jerusalem as stones, and he made cedar trees as abundant as the sycamores which *are* in the lowland.

28[a]Also Solomon had horses imported from Egypt and Keveh; the king's merchants bought them in Keveh at the *current* price. 29Now a chariot that was imported from Egypt cost six hundred *shekels* of silver, and a horse one hundred and fifty; [a]and [*]thus, through their1 agents, they exported *them* to all the kings of the Hittites and the kings of Syria.

1 Kings

11

Solomon's Heart Turns from the LORD

1But [a]King Solomon loved [b]many foreign women, as well as the daughter of Pharaoh: women of the Moabites, Ammonites, Edomites, Sidonians, *and* Hittites— 2from the nations of whom the LORD had said to the children of Israel, [a]“You shall not intermarry with them, nor they with you. Surely they will turn away your hearts after their gods.” Solomon clung to these in love. 3And he had seven hundred wives, princesses, and three hundred concubines; and his wives turned away his heart. [4]For it was so, when Solomon was old, [a]that his wives turned his heart after other gods; and his [b]heart was not *loyal to the LORD his God, [c]as *was* the heart of his father David. 5For Solomon went after [a]Ashtoreth the goddess of the Sidonians, and after [b]Milcom* the abomination of the [c]Ammonites. 6Solomon did evil in the sight of the LORD, and did not fully follow the LORD, as *did* his father David. 7[a]Then Solomon built a [*]high place for [b]Chemosh the abomination of Moab, on [c]the hill that *is* east of Jerusalem, and for Molech the abomination of the people of Ammon. 8And he did likewise for all his foreign wives, who burned incense and sacrificed to their gods.

9So the LORD became angry with Solomon, because his heart had turned from the LORD God of Israel, [a]who had appeared to him twice, 10and [a]had commanded him1 concerning this thing, that he should not go after other gods; but he did not keep what the LORD had commanded. [11]Therefore the LORD said to Solomon, “Because you have done this, and have not kept My covenant and My statutes, which I have commanded you, [a]I will surely tear the kingdom away from you and give it to your [b]servant. 12Nevertheless I will not do it in your days, for the sake of your father David; I will tear it out of the hand of your son. 13 [a]However I will not tear away the whole kingdom; I will give [b]one tribe to your son [c]for the sake of My servant David, and for the sake of Jerusalem [d]which I have chosen.”

Adversaries of Solomon

14Now the LORD [a]raised up an adversary against Solomon, Hadad the Edomite; he *was* a descendant of the king in Edom. 15[a]For it happened, when David was in Edom, and Joab the commander of the army had gone up to bury the slain, [b]after he had killed every male in Edom [16](because for six months Joab remained there with all Israel, until he had cut down every male in Edom), [17]that Hadad fled to go to

Egypt, he and certain Edomites of his father's servants with him. Hadad *was* still a little child. [18]Then they arose from Midian and came to Paran; and they took men with them from Paran and came to Egypt, to Pharaoh king of Egypt, who gave him a house, apportioned food for him, and gave him land. [19]And Hadad found great favor in the sight of Pharaoh, so that he gave him as wife the sister of his own wife, that is, the sister of Queen Tahpenes. 20Then the sister of Tahpenes bore him Genubath his son, whom Tahpenes weaned in Pharaoh’s house. And Genubath was in Pharaoh’s household among the sons of Pharaoh.

21[a]So when Hadad heard in Egypt that

David *rested with his fathers, and that Joab the commander of the army was dead, Hadad said to Pharaoh, *“Let me depart, that I may go to my own country.”

[22]Then Pharaoh said to him, “But what have you lacked

with me, that suddenly you seek to go to your own country?”

So he answered, “Nothing, but do let me go anyway.”

[23]And God raised up *another* adversary against him, Rezon the son of Eliadah, who had fled from his

lord, [a]Hadadezer king of Zobah. 24So he gathered men to him and became captain over a band *of raiders,* [a]when David killed those *of Zobah.* And they went to Damascus and dwelt there, and reigned in Damascus. 25He was an adversary of Israel all the days of Solomon (besides the trouble that Hadad *caused*); and he abhorred Israel, and reigned over Syria.

Jeroboam's Rebellion

26 Then Solomon's servant, [a]Jeroboam the son of Nebat, an Ephraimite from Zereda, whose mother's name *was*

Zeruah, a widow, [b]also [c]rebelled against the king.

[27]And this *is* what caused him to rebel against the king: [a]Solomon had built the Millo *and* [*]repaired the damages to the City of David his father. [28]The man Jeroboam *was* a

mighty man of valor; and Solomon, seeing that the young man was [a]industrious, made him the officer over all the labor force of the house of Joseph.

29 Now it happened at that time, when Jeroboam went out of Jerusalem, that

the prophet [a]Ahijah the Shilonite met him on the way; and he had clothed himself with a new garment, and the two *were* alone in the field. [30]Then Ahijah took hold of the new garment that *was* on him, and

[a]tore it *into* twelve pieces. 31And he said to Jeroboam, “Take for yourself ten pieces, for [a]thus says the LORD, the God of Israel: ‘Behold, I will tear the kingdom out of the hand of Solomon and will give ten

tribes to you [32](but he shall have one tribe for the sake of My servant David, and for the sake of Jerusalem, the city which I have chosen out of all the tribes of Israel), [33][a]because *they have forsaken Me,

and
worshiped
Ashtoreth
the
goddess
of
the
Sidonians,
Chemosh
the
god
of
the
Moabites,
and
Milcom
the
god
of
the
people
of
Am1mon,
and
have
not
walked
in
My
ways
to
do
what
is
right
in
My
eyes
and
keep

My statutes and My judgments, as *did* his father David. [34]However I will not take the whole kingdom out of his hand, because I have made him ruler all the days of his life for the sake of My servant

David, whom I chose because he kept My commandments and My statutes. 35But [a]I will take the kingdom out of his son’s hand and give it to you—ten tribes. 36And to his son I will give one tribe, that [a]My servant David may always have a lamp before Me in Jerusalem, the city which I have chosen for Myself, to put My name there. [37]So I will take you, and you shall reign over all your heart desires,

and
you
shall
be
king
over
Israel.
[38]Then
it
shall
be,
if
you
heed
all
that
I
command
you,
walk
in
My
ways,
and
do
what
is
right
in
My
sight,
to
keep
My
statutes
and
My
commandments,
as
My

servant David did, then [a]I will be with you and [b]build for you an enduring house, as I built for David, and will give Israel to you. [39]And I will afflict the descendants of David because of this, but not forever.’ ”

40 Solomon therefore sought to kill Jeroboam. But Jeroboam arose and fled to Egypt, to [a]Shishak king of Egypt, and was in Egypt until the death of Solomon.

Death of Solomon

41 Now [a]the rest of the acts of Solomon,

all that he did, and his wisdom, *are* they not written in the book of the acts of Solomon? 42[a]And the period that Solomon reigned in Jerusalem over all Israel *was* forty years. 43[a]Then Solomon *rested with his fathers, and was buried in the City of David his father. And Rehoboam his son reigned in his [b]place.

1 Kings 12

The Revolt Against Rehoboam

[1]And [a]Rehoboam went to [b]Shechem, for all Israel had gone to Shechem to make him

king. [2]So it happened, when [a]Jeroboam the son of Nebat heard *it* (he was still in [b]Egypt, for he had fled from the presence of King Solomon and had been dwelling in Egypt), [3]that they sent and called him.

Then Jeroboam and the whole assembly of Israel came and spoke to Rehoboam, saying, [4]“Your father made our [a]yoke [*]heavy; now therefore, lighten the burdensome service of your father, and his heavy yoke which he put on us, and we will serve you.”

[5]So he said to them, “Depart *for* three days, then come back to me.” And the people departed.

[6]Then King Rehoboam consulted the elders who stood before his father Solomon while he still lived, and he said,

“How do you advise *me* to answer these people?”

7And they spoke to him, saying, [a]“If you will be a servant to these people today, and serve them, and answer them, and speak good words to them, then they will be your servants forever.”

[8]But he rejected the advice which the elders had given him, and consulted the young men who had grown up with him, who stood before him. [9]And he said to them, “What advice do you give?

How should we answer this people who have spoken to me, saying, ‘Lighten the yoke which your father put on us’?”

[10]Then the young men who had grown up with him spoke to him, saying, “Thus you should speak to

this
people
who
have
spoken
to
you,
saying,
‘Your
father
made
our
yoke
heavy,
but
you
make
it
lighter
on
us’—
thus
you
shall
say
to
them:
‘My
little
finger
shall
be
thicker
than
my
father’s
waist!
[11]And
now,
whereas

my father put a heavy yoke on you, I will add to your yoke; my father chastised you with whips, but I will chastise you with *scourges!’ ”

12 So Jeroboam and all the people came to Rehoboam the third day,

as the king had directed, saying, “Come back to me the third day.” [13]Then the king answered the people *roughly, and rejected the advice which the elders had given him; [14]and he spoke to them according to the advice of the young men, saying, “My father made your yoke heavy, but I will add to your yoke; my father chastised you with whips, but I will chastise you with *scourges!” [15]So the king did not listen to[1] the people; for

[a]the turn *of events* was from the LORD, that He might fulfill His word, which the LORD had [b]spoken by Ahijah the Shilonite to Jeroboam the son of Nebat.

16 Now when all Israel saw that the king did not listen

to them, the people answered the king, saying:

[a]“What share have we in David?

We have no inheritance in the son of Jesse.

To your tents, O Israel!

Now, see to your own house, O David!”

So Israel departed to their tents. [17]But Rehoboam reigned over [a]the children of Israel who dwelt in the cities of Judah.

[18]Then King Rehoboam [a]sent Adoram, who *was* in charge of the revenue; but all Israel stoned him with stones,

and he died. Therefore King Rehoboam mounted his chariot in haste to flee to Jerusalem. [19]So [a]Israel has been in rebellion against the house of David to this day.

[20]Now it came to pass when all Israel heard that Jeroboam

had come back, they sent for him and called him to the congregation, and made him king over all [a]Israel. There was none who followed the house of David, but the tribe of Judah [b]only.

21 And when [a]Rehoboam came to

Jerusalem, he assembled all the house of Judah with the tribe of [b]Benjamin, one hundred and eighty thousand chosen *men* who were warriors, to fight against the house of Israel, that he might restore the kingdom to Rehoboam the son of Solomon. 22But [a]the word of God came to Shemaiah the man of God, saying, 23“Speak to Rehoboam the son of Solomon, king of Judah, to all the house of Judah and Benjamin, and to the rest of the people, saying, [24]‘Thus says the LORD: “You shall not go up nor fight against your brethren the children of Israel. Let every man return to his house, [a]for this thing is from Me.” ’ ”

Therefore they obeyed the word of

the LORD, and turned back, according[1] to the word of the LORD.

Jeroboam's Gold Calves

25 Then Jeroboam [a]built[*] Shechem in the mountains of Ephraim, and dwelt there. Also he went out from there and built [b]Penuel. 26 And Jeroboam said in

his heart, “Now the kingdom may return to the house of David: [27]If these people [a]go up to offer sacrifices in the house of the LORD at Jerusalem, then the heart of this people will turn back to their lord, Rehoboam king of Judah, and they will kill me and go back to Rehoboam king of Judah.”

28Therefore the king asked advice, [a]made two calves of gold, and said to the people, “It is too much for you to go up to Jerusalem. [b]Here are your gods, O Israel, which brought you up from the land of Egypt!” 29And he set up one in [a]Bethel, and the other he put in [b]Dan. 30Now this thing became [a]a sin, for the people went *to worship* before the one as far as Dan. [31]He made *shrines on the high places, [a]and made priests from every class of people, who were not of the sons of Levi.

1 Ki 12

Re ev fal mi in hig pla

32Jeroboam *ordained a feast on the fifteenth day of the eighth month, like [a]the feast that *was* in Judah, and offered sacrifices on the altar. So he did at Bethel, sacrificing to the calves that he had made. [b]And at Bethel he installed the priests of the high places which he had made. 33So he made offerings on the altar which he had made at Bethel on the fifteenth day of the eighth month, in the month which he had [a]devised in his own heart. And he [*]ordained a feast for the children of Israel, and offered sacrifices on the alt1ar and [b]burned incense.

1 Kings 13

The Message of the

Man of God

[1]And behold, [a]a man of God went from Judah to Bethel *by the word of the LORD, [b]and Jeroboam stood by the altar to burn incense. [2]Then he cried out against the altar *by the word of

the LORD, and said, “O altar, altar! Thus says the LORD: ‘Behold, a child, [a]Josiah by name, shall be born to the house of David; and on you he shall sacrifice the priests of the high places who burn incense on you, and men’s bones shall be [b]burned on you.’ ”

3 And he gave [a]a sign the same day, saying, “This *is* the sign which the LORD has spoken: Surely the altar shall split apart, and the ashes on it

shall be poured out.”

[4]So it came to pass when King Jeroboam heard the saying of the man of God, who cried out against the altar in Bethel, that he stretched out his hand from the altar, saying, “Arrest him!”

Then his hand, which he stretched out toward him, withered, so that he could not pull it back to himself. [5]The altar also was split apart, and the ashes poured out from the altar, according to the sign which the man of God had given by the word of the LORD. [6]Then the king answered and said to the man of God, “Please [a]entreat the favor of the LORD your God, and pray for me, that my hand may be restored to me.”

So the man of God entreated the LORD, and the king’s hand was restored to him, and became as before. [7]Then the king said to the man of God, “Come home with me and refresh yourself, and

[a]I will give you a reward.”

8But the man of God said to the king, [a]“If you were to give me half your house, I would not go in with you; nor would I eat bread nor drink water in this place. [9]For so it was commanded me by the word of the LORD, saying, [a]‘You shall not eat bread, nor drink water, nor return by the same way you came.’ ”

[10]So he went another way and did not

return by the way he came to Bethel.

Death of the Man of God

[11]Now an [a]old prophet dwelt in Bethel, and his [*]sons came and told him all the works that the man of God had done that day

in Bethel; they also told their father the words which he had spoken to the king. 12And their father said to them, “Which way did he go?” For his sons *had seen which way the man of God went who came from Judah. [13]Then he said to his sons, “Saddle the donkey for me.” So they saddled the donkey for him; and he rode on it, [14]and went after the man of God, and found him sitting under an oak.

Then he said to him, “*Are* you the man of God who came from Judah?”

And he said, “I *am.*”

15Then he said to him, “Come home with me and eat bread.”

16And he said, [a]“I cannot return with you nor go in with you; neither can I eat bread nor drink water with you in this place. 17For *I have been told [a]by the word of the LORD, ‘You shall not eat bread nor drink water there, nor return by going the way you came.' "

[18]He said to him, "I too *am* a prophet as you *are,* and an angel spoke to me by the word of the LORD, saying, 'Bring him back with you to your house,

that he may eat bread and drink water.' " (He was lying to him.)

19So he went back with him, and ate bread in his house, and drank water.

20Now it happened, as they sat at the table, that the word of the LORD came to the prophet who had brought him back; [21]and he cried out to the man of God who came from Judah, saying, “Thus says the LORD: ‘Because you have disobeyed the word of the LORD, and have not kept the commandment which the LORD your God commanded you, 22 but you came back, ate bread, and drank water in the [a]place of which *the LORD* said to you, "Eat no bread and drink no water," your corpse shall not come to the tomb of your fathers.' "

[23]So it was, after he had eaten bread and after he had drunk, that he saddled the donkey for him, the prophet whom he had brought back. [24]When he

was gone, [a]a lion met him on the road and killed him. And his corpse was thrown on the road, and the donkey stood by it. The lion also stood by the corpse. 25And there, men passed by and saw the corpse thrown on the road, and the lion standing by the corpse. Then they went and told *it* in the city where the old prophet dwelt.

[26]Now when the prophet who had brought him back from the way heard

it, he said, “It *is* the man of God who was disobedient to the word of the LORD. Therefore the LORD has delivered him to the lion, which has torn him and killed him, according to the word of the

LORD which He spoke to him.” [27]And he spoke to his sons, saying, “Saddle the donkey for me.” So they saddled *it*. [28]Then he went and found his corpse thrown on the road, and the donkey and the lion standing by the corpse. The lion had not eaten the corpse nor torn the donkey. [29]And the prophet took up the corpse of the man of God, laid it on the donkey, and brought it back. So the old prophet came to the city to mourn, and to bury him. [30]Then he laid the corpse in his own tomb; and they mourned over him, *saying,* [a]“Alas, my brother!” [31]So it was, after he had buried him, that he spoke to his sons, saying, “When I am dead, then bury me in the tomb where the man of God *is* buried; [a]lay my bones beside his bones.

32[a]For the *saying which he cried out by the word of the LORD against the altar in Bethel, and against all the *shrines on the high places which *are* in the cities of [b]Samaria, will surely come to pass.”

33[a]After this event Jeroboam did not turn from his evil way, but again he made priests from every class of people for the high places; whoever wished, he consecrated him, and he became *one* of the priests of the high places. 34 [a]And this thing was the sin of the house of Jeroboam, so as [b]to exterminate and destroy *it* from the face of the earth.

1 Kings 14

Judgment on the House of Jeroboam

1At t1hat time Abijah the son of Jeroboam became sick. 2And Jeroboam said to his wife, “Please arise, and disguise yourself, that they may not recognize you as the wife of Jeroboam, and go to Shiloh. Indeed, Ahijah the prophet *is* there, who told me that [a]*I would be* king over this people. 3 [a]Also take *with you ten loaves, *some* cakes, and a jar of honey, and go to him; he will tell you what will become of the child.” 4And Jeroboam’s wife did so; she arose [a]and went to Shiloh, and came to the house of Ahijah. But Ahijah could not see, for his eyes were *glazed by reason of his age.

[5]Now the LORD had said to Ahijah, “Here is the wife of Jeroboam, coming to ask you something about her son, for he *is* sick. Thus and thus

you shall say to her; for it will be, when she comes in, that she will pretend *to be* another *woman.*”

[6] And so it was, when Ahijah heard the sound of her footsteps as she came through the door, he

said, “Come in, wife of Jeroboam. Why do you pretend *to be* another *person?* For I *have been* sent to you *with* bad *news.* 7Go, tell Jeroboam, ‘Thus says the LORD God of Israel: [a]“Because I exalted you from among the people, and made you ruler over My people Israel, 8and [a]tore the kingdom away from the house of David, and gave it to you; and *yet* you have not been as My servant David, [b]who kept My commandments and

who
followed
Me
with
all
his
heart,
to
do
only
what
was
right
in
My
eyes;
9but
you
have
done
more
evil
than
all
who
were
before
you,
[a]for
you
have
gone
and
made
for
yourself
other
gods
and
molded

images to provoke Me to anger, and [b]have cast Me behind your back —

10 therefore behold! [a]I will bring disaster on the house of Jeroboam, and [b]will cut off from Jeroboam every male in Israel, [c]bond and free; I will

take away the remnant of the house of Jeroboam, as one takes away refuse until it is all gone. 11The dogs shall eat [a]whoever belongs to Jeroboam and dies in the city, and the birds of the air shall eat whoever dies in the field; for the LORD has spok1en!”’

[12]Arise therefore, go to your own house. [a]When your feet enter the city, the child shall die. [13]And all Israel shall mourn for him and bury him, for he

is the only one of Jeroboam who shall *come to the grave, because in him [a]there is found something good toward the LORD God of Israel in the house of Jeroboam.

14[a]“Moreover the LORD will raise up for Himself a king over Israel who shall cut off the house of Jeroboam; [*]this is the day. What? Even now! [15]For the LORD will strike Israel, as a reed is shaken in the water. He will [a]uproot Israel from this [b]good land which He gave to their fathers, and will scatter them [c]beyond [*]the River, [d]because they have made their [*]wooden images, provoking the LORD to anger. 16 And He will give Israel up because of the sins of Jeroboam, [a]who sinned and who made Israel sin.”

17Then Jeroboam’s wife arose and departed, and came to [a]Tirzah. [b]When she came to the threshold of the house, the child died. 18And they buried him; and all Israel mourned for him, [a]according to the word of the LORD which He spoke through His servant Ahijah the prophet.

Death of Jeroboam

19Now the rest of the acts of Jeroboam, how he [a]made war and how he reigned, indeed they *are* written in the book of the chronicles of the kings of Israel. 20The period that Jeroboam reigned *was* twenty-two years. So he rested with his fathers. [a]Then Nadab his son reigned in his place.

Rehoboam Reigns in Judah

21And Rehoboam the son of Solomon reigned in Judah. [a]Rehoboam *was* forty-one years old when he became king. He reigned seventeen years in Jerusalem, the city [b]which the LORD had chosen out of all the tribes of Israel, to put His name there. [c]His mother's name *was* Naamah, an Ammonitess. 22[a]Now Judah did evil in the sight of the LORD, and they [b]provoked Him to jealousy with their sins which they committed, more than all that their fathers had done. 23For they also built for themselves

[a]high[*] places, [b]*sacred* pillars, and [c]wooden images on every high hill and [d]under every green tree. 24 [a]And there were also [*]perverted persons in the land. They did according to all the [b]abominations of the nations which the LORD had cast

out before the children of [c]Israel.

25 [a]It happened in the fifth year of King Rehoboam *that* Shishak king of Egypt came up against Jerusalem. 26 [a]And he took away the treasures of the house of the LORD and the treasures of

the king's house; he took away everything. He also took away all the gold shields [b]which Solomon had made. 27Then King Rehoboam made bronze shields in their place, and *committed *them* to the hands of the captains of the *guard, who guarded the doorway of the king's house. 28And whenever the king entered the house of the LORD, the guards carried them, then brought them back into the guardroom.

29[a]Now the rest of the acts of Rehoboam, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? [30]And there was [a]war between Rehoboam and Jeroboam all *their* days. 1[31][a]So Rehoboam *rested with his fathers, and was buried with his fathers in the City of David. [b]His mother's name *was* Naamah, an Ammonitess. Then [c]Abijam[*] his son reigned in his place.

1 Kings 15

Abijam Reigns in Judah

1 [a]In the eighteenth year of King Jeroboam the son of Nebat, Abijam

became king over Judah. 2He reigned three years in Jerusalem. [a]His mother's name *was* [b]Maachah the granddaughter of [c]Abishalom. 3And he walked in all the sins of his father, which he had done before him; [a]his heart was not [*]loyal to the LORD his God, as was the heart of his father David. 4Nevertheless [a]for David's sake the LORD his God gave him a lamp in Jerusalem, by setting up his son after him and by establishing Jerusalem; 5because David

[a]did *what was* right in the eyes of the LORD, and had not turned aside from anything that He commanded him all the days of his life, [b]except in the matter of Uriah the Hittite. 6 [a]And there was war between

*Rehoboam and Jeroboam all the days of his life. 7[a]Now the rest of the acts of Abijam, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? And there was war between Abijam and Jeroboam.

8[a]So Abijam *rested with his fathers, and they buried him in the City of David. Then Asa his son reigned in his place.

Asa Reigns in Judah

[1]9In the twentieth year of Jeroboam king of

Israel, Asa became king over Judah. 10And he reigned forty-one years in Jerusalem. His grandmother’s name *was* Maachah the granddaughter of Abishalom. 11[a]Asa did *what was* right in the eyes of the LORD, as *did* his father David. 12[a]And he banished the *perverted persons from the land, and removed all the idols that his fathers had made. 13Also he removed [a]Maachah his grandmother from *being* queen mother, because she had made an obscene image of *Asherah. And Asa cut down her obscene image and [b]burned *it* by the Brook Kidron. 14 [a]But the *high places were not removed. Nevertheless Asa's [b]heart was loyal to the LORD all his days. 15 He also brought into the house of the LORD the things which his father [a]had dedicated, and the things which he himself had dedicated: silver and gold and utensils.

1 Ki 15

Le an id in my lif or na be de an bu wi Yo fir

16Now there was war between Asa and Baasha king of Israel all their days. 17And [a]Baasha king of Israel came up against Judah, and built [b]Ramah, [c]that he might let none go out or come in to Asa king of

Judah. [18]Then Asa took all the silver and gold *that was* left in the treasuries of the house of the LORD and the treasuries of the king’s house, and delivered them into the hand of his servants. And King Asa sent them to [a]Ben-Hadad the son of Tabrimmon, the son of Hezion, king of Syria, who dwelt in [b]Damascus, saying, 19“*Let there be* a treaty between you and me, as there was between my father and your father. See, I have sent you a present of silver and gold. Come and [1]break your treaty with Baasha king of Israel, so that he will withdraw from me.”

[20]So Ben-Hadad heeded King Asa, and [a]sent the captains of his armies

against the cities of Israel. He attacked [b]Ijon, [c]Dan, [d]Abel Beth Maachah, and all Chinneroth, with all the land of Naphtali. 21 Now it happened, when Baasha heard *it,* that he stopped building Ramah, and remained in [a]Tirzah.

22 [a]Then King Asa

made a proclamation throughout all Judah; none *was* exempted. And they took away the stones and timber of Ramah, which Baasha had used for building; and with them King Asa built [b]Geba of Benjamin, and [c]Mizpah.

23 The rest of all

the acts of Asa, all his might, all that he did, and the cities which he built, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? But [a]in the time of his old age he was diseased in his feet. [24]So Asa [*]rested with his fathers, and was buried with his fathers in the City of David his father. [a]Then [b]Jehoshaphat his son reigned in his place.

Nadab Reigns in Israel

[25]Now [a]Nadab the

son of Jeroboam became king over Israel in the second year of Asa king of Judah, and he reigned over Israel two years. [26]And he did evil in the sight of the LORD, and walked in the way of his father, and in [a]his sin by which he had made Israel sin.

27 [a]Then Baasha the son of Ahijah, of the house of Issachar, conspired against him. And Baasha killed him at [b]Gibbethon, which *belonged* to the Philistines, while Nadab and

all Israel laid siege to Gibbethon. [28]Baasha killed him in the third year of Asa king of Judah, and reigned in his place. [29]And it was so, when he became king, *that* he killed all the house of Jeroboam. He did not leave to Jeroboam anyone that breathed, until he had destr1oyed him, according to [a]the word of the LORD which He had spoken by His servant Ahijah the Shilonite, 30[a]because of the sins of Jeroboam, which he had sinned and by which he had made Israel sin, because of his provocation with which he had provoked the LORD God of Israel to anger.

SP
WA
BA

Th
Wo
Sil
the
En

Wh
you
use
the

Wo
of
Go
in
pra
it
sile
the
ene
Th
is
wh
hap
to
Jes
in
the
wi
Th
voi
of
the
ene
spo
to
Hi
on
thr
occ
Yo
hav
to
und
tha
the
con
wa
no
ver
bu

me
Spi
wa
is
the
cou
of
the
hu
mi
an
any
oth
spi
(in
the
hu
spi
oth
tha
the
Spi
of
Go
(M
4:1
11

Jes
fou
the
de
wi
the
Wo
of
Go
an
bro
His

tho
un
its
aut
Yo
mu
do
the
sar
Th
dev
wa
aft
Jes
aut
an
dor
in
the
ear
rea
an
he
is
aft
you
Yo
mu
fig
eve
tho
tha
do
not
alig
its
wit
the
Wo
of

Go
an
fig
wi
Go
Wo
Ca
the
tho
do
an
bri
the
un
the
au
of
the
Wo
an
un
the
lo
of
Ch
Ab
all,
re
vi
in
yo
pr
an
me
on
the
Wo
Be
yo
are

arr
wit
the
we
you
car
res
ass
tha
alt
the
enc
wil
att
to
exa
hir
upc
you
you
car
go
int
eve
bat
kno
tha
“N
we
for
aga
you
sha
pro
(Is
54

31 Now the rest of the acts of Nadab, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? 32 [a]And there

was war between Asa and Baasha king of Israel all their days.

Baasha Reigns in Israel

[33]In the third year of Asa king of Judah, Baasha the son of Ahijah became king over all Israel in Tirzah, and *reigned* twenty-

four years. [34]He did evil in the sight of the LORD, and walked in [a]the way of Jeroboam, and in his sin by which he had made Israel sin.

1 Kings 16

[1]Then the word of the LORD came

to [a]Jehu the son of [b]Hanani, against [c]Baasha, saying:

2[a]“Inasmuch as I lifted you out of the dust and made you ruler over My people Israel, and [b]you have walked in the way of Jeroboam, and have made My people

Israel sin, to provoke Me to anger with their sins, [3]surely I will [a]take[*] away the posterity of Baasha and the posterity of his house, and I will make your house like [b]the house of Jeroboam the son of Nebat.

[4]The dogs shall eat [a]whoever belongs to Baasha and dies in the city, and the birds of the air shall eat whoever dies in the fields.”

[5]Now the rest of the acts of Baasha, what he did, and his might,

[a]*are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? [6]So Baasha [*]rested with his fathers and was buried in [a]Tirzah. Then Elah his son reigned in his place.

[7]And also the word of the

LORD came by the prophet [a]Jehu the son of Hanani against Baasha and his house, because of all the evil that he did in the sight of the LORD in provoking Him to anger with the work of his hands, in being like the house of Jeroboam, and because [b]he killed them.

Elah Reigns in Israel

8 In the twenty-sixth year of Asa king of Judah, Elah the son of Baasha became king over Israel, *and reigned* two years in

Tirzah. 9[a]Now his servant Zimri, commander of half *his* chariots, conspired against him as he was in Tirzah drinking himself drunk in the house of Arza, [b]steward* of *his* house in Tirzah. 10And Zimri went in and struck him and killed him in the twenty-seventh year of Asa king of Judah, and reigned in his place. 11Then it came to pass, when he began to reign, as soon as he was seated on his throne, *that* he killed all the household of Baasha; he [a]did not leave him one male, neither of his relatives nor of his friends. [12]Thus Zimri destroyed all the household of Baasha, [a]according to the word of the LORD, which He spoke against Baasha by

Jehu the prophet, 13for all the sins of Baasha and the sins of Elah his son, by which they had sinned and by which they had made Israel sin, in provoking the LORD God of Israel to anger [a]with their *idols.

[14] Now the rest of the acts of Elah, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?

Zimri Reigns in Israel

[15] In the twenty-seventh year of Asa

king of Judah, Zimri had reigned in Tirzah seven days. And the people *were* encamped [a]against Gibbethon, which *belonged* to the Philistines. 16 Now the people *who were* encamped heard it said, “Zimri has conspired and also has killed the king.”

So all Israel made Omri, the commander of the army, king over Israel that day in the camp. [17]Then Omri and all Israel with him went up from Gibbethon, and they besieged Tirzah. [18]And it happened, when Zimri saw that the city was *taken, that he went into the citadel of the king’s house and burned the king’s house *down upon himself with fire, and died, 19because of the sins which he had committed in doing evil in the sight of the LORD, [a]in walking in the [b]way of Jeroboam, and in his sin which he had committed to make Israel sin.

[20]Now the rest of the acts of Zimri, and the treason he committed, *are* they not written in

the book of the chronicles of the kings of Israel?

Omri Reigns in Israel

[21]Then the people of Israel were divided into two parts: half of the people followed Tibni the son of Ginath, to make him king, and half

followed Omri. [22] But the people who followed Omri prevailed over the people who followed Tibni the son of Ginath. So Tibni died and Omri reigned. [23][1] In the thirty-first year of Asa king of Judah, Omri became king over Israel, *and reigned* twelve years. Six years he reigned in [a]Tirzah. 24And he bought the hill of Samaria from Shemer for two talents of silver; then he built on the hill, and called the name of the city which he built,

[a]Samaria,[*] after the name of Shemer, owner of the hill. 25[a]Omri did evil in the eyes of the LORD, and did worse than all who *were* before him. 26For he [a]walked in all the ways of Jeroboam the son of

Nebat, and in his sin by which he had made Israel sin, provoking the LORD God of Israel to anger with their [b]idols.*

[27]Now the rest of the acts of Omri which he did, and the might that he showed,

are they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?

[28]So Omri rested with his fathers and was buried in Samaria. Then Ahab his son reigned in his place.

Ahab Reigns in Israel

[29]In the

thirty-eighth year of Asa king of Judah, Ahab the son of Omri became king over Israel; and Ahab the son of Omri reigned over Israel in Samaria twenty-two years. [30]Now Ahab the son of Omri did evil in the sight of the LORD, more than all who *were* before him. 31And it came to pass, as though it had been a trivial thing for him to walk in the sins of Jeroboam the son of Nebat, [a]that he took as wife Jezebel the daughter of Ethbaal, king of the [b]Sidonians; [c]and he went and served Baal and worshiped him. [32]Then he set up an altar for Baal in [a]the temple of Baal, which he had built in Samaria.

33[a]And Ahab made a *wooden image. Ahab [b]did more to provoke the LORD God of Israel to anger than all the kings of Israel who were before him. 34In his days Hiel of Bethel built Jericho. He laid its foundation *with Abiram his firstborn, and with his youngest *son* Segub he set up its gates, [a]according to the word of the LORD, which He had spoken through Joshua the son of Nun.

1 Kings 17

Elijah Proclaims a Drought

[1]And Elijah the Tishbite, of the [a]inhabitants of Gilead, said to Ahab, [b]“*As* the LORD God of Israel lives, [c]before whom I stand, [d]there shall not be dew nor rain [e]these years, except at my word.”

SP
WA
BA

Eff
Pro
Pro
Sup
Rea

In
1
Kin
17
Elij
tol
Kin
Ah
“A
the
LO
Go
of
Isra
live
the
sha
no
be
dev
no
rai
the
yea
exc
at
my
wo
Elij
kno
the
pov
of

pra
an
thr
his
dea
wit
Ah
he
ma
cle
cor
to
the
Go
of
hea
His
pla
wa
we
est
in
Go
the
he
ha
a
rig
to
spe
aga
thi
tha
we
no
in
lin
wit
wh
Go

cor
He
kn
tha
as
he
pr
his
jud
ov
thi
tha
dis
Go
Go
wo
pr
the
sar
jud

As
Go
ear
rep
we
hav
aut
in
the
ear
to
dec
Go
jud
(G
1:2
Ps.
11
16

Pra is a div tec tha wh im giv Go per to int in the aff of hu Ch G. Fir sai “Ef pra is pra tha att wh it see It is pra tha mo Go eff its enc

Ou aut and dor car be act in the sar wa as Elij — thr fer eff pra

---

[2]Then the word of the LORD came to

him, saying, [3]“Get away from here and turn eastward, and hide by the Brook Cherith, which flows into the Jordan. [4]And it will be *that* you shall drink from the brook, and I have commanded the [a]ravens to feed you there.”

[5]So he went and did according to the word of the LORD, for he went and stayed by the Brook Cherith, which flows into the Jordan. [6]The ravens brought him bread and meat in the morning, and bread and

meat in the evening; and he drank from the brook. [7]And it happened after a while that the brook dried up, because there had been no rain in the land.

Elijah and the Widow

[8]Then the word of the LORD

came to him, saying, 9“Arise, go to [a]Zarephath, which *belongs* to [b]Sidon, and dwell there. See, I have commanded a widow there to provide for you.” 10So he arose and went to Zarephath. And when he came to the gate of the city, indeed a widow *was* there gathering sticks. And he called to her and said, “Please bring me a little water in a cup, that I may drink.” [11]And as she was going to get *it,* he called to her and said, “Please bring me a morsel of bread in your hand.”

[12]So she said, “As the LORD your God lives, I do not have bread, only a handful of flour in a bin, and a little oil

in a *jar; and see, I *am* gathering a couple of sticks that I may go in and prepare it for myself and my son, that we may eat it, and [a]die.”

13And Elijah said to her, “Do not fear;

go
and
do
as
you
have
said,
but
make
me
a
small
cake
from
it
first,
and
bring
it
to
me;
and
afterward
make
some
for
yourself
and
your
son.
[14]For
thus
says
the
LORD
God
of
Israel:
'The
bin

of flour shall not be used up, nor shall the jar of oil run dry, until the day the LORD sends rain on the earth.' "

[15]So she went away and did according to the word of Elijah; and she

and he and her household ate for *many* days. [16]The bin of flour was not used up, nor did the jar of oil run dry, according to the word of the LORD which He spoke by Elijah.

Elijah Revives the

Widow’s Son

[17] Now it happened after these things *that* the son of the woman who owned the house became sick. And his sickness was so *serious that *there was no breath left in him. [18] So she said to Elijah, [a]“What

hav1e I to do with you, O man of God? Have you come to me to bring my sin to remembrance, and to kill my son?”

[19]And he said to her, “Give me your son.” So he took him out

of her arms and carried him to the upper room where he was staying, and laid him on his own bed. [20]Then he cried out to the LORD and said, “O LORD my God, have You also brought tragedy on the widow with whom I lodge, by killing her son?” 21[a]And he stretched himself out on the child three times, and cried out to the LORD and said, “O LORD my God, I pray, let this child’s soul come back to him.” [22]Then the LORD heard the voice of Elijah; and the soul of the child came back to him, and he [a]revived.

[23]And Elijah took the child and brought him down from the upper room into the house, and

gave him to his mother. And Elijah said, “See, your son lives!”

24Then the woman said to Elijah, “Now by this [a]I know that you *are* a man of God, *and* that the word of the LORD in your mouth *is* the truth.”

1 Kings 18

Elijah’s Message to Ahab

[1]And it came to pass *after* [a]many days that the word of the LORD came to Elijah, in the third year, saying, “Go, present yourself to Ahab, and [b]I

will send rain on the earth.”

[2]So Elijah went to present himself to Ahab; and *there was* a severe famine in Samaria. [3]And Ahab had called Obadiah, who *was* *in charge of *his* house. (Now Obadiah feared the LORD greatly.

4For so it was, while Jezebel *massacred the prophets of the LORD, that Obadiah had taken one hundred prophets and hidden them, fifty to a cave, and had fed them with bread and water.) 5And Ahab had said to Obadiah, “Go into the land to all the springs of water and to all the brooks; perhaps we may find grass to keep the horses and mules alive, so that we will not have to kill any livestock.” [6]So they divided the land between them to explore it; Ahab went one way by himself, and Obadiah went another way by himself.

[7]Now as Obadiah was on his way, suddenly Elijah met him; and he [a]recognized him, and fell on his face,

and said, “*Is* that you, my lord Elijah?”

[8]And he answered him, “*It is* I. Go, tell your master, ‘Elijah *is here.*’ ”

[9]So he said, “How have I sinned, that you are delivering your servant into the hand of

Ahab, to kill me? [10]*As* the LORD your God lives, there is no nation or kingdom where my master has not sent someone to hunt for you; and when they said, ‘*He is* not *here,*’ he took an oath from the kingdom or nation that they could not find you. 11And now you say, 'Go, tell your master, "Elijah *is here*" '! 12And it shall come to pass, *as soon as* I am gone from you, that [a]the Spirit of the LORD will carry you to a place I do not know; so when I go and tell Ahab, and he cannot find you, he will kill me. But I your servant have feared the LORD from my youth. 13Was it not reported to my lord what I did when Jezebel killed the prophets of the LORD, how I hid one hundred men of the LORD’s prophets, fifty to a cave, and fed them with bread and water? [14]And now you say, ‘Go, tell your master, “Elijah *is here.*” ’ He will kill me!”

[15]Then Elijah said, “*As* the LORD of hosts lives, before whom I stand, I will surely present myself to him today.”

[16]So Obadiah went to meet

Ahab, and told him; and Ahab went to meet Elijah.

17 Then it happened, when Ahab saw Elijah, that Ahab said to him, [a]“*Is that* you, O [b]troubler of Israel?”

18 And he answered, “I have not troubled Israel, but you and

your father's house *have,* [a]in that you have forsaken the commandments of the LORD and have followed the Baals. [19]Now therefore, send *and* gather all Israel to me on [a]Mount Carmel, the four hundred and fifty prophets of Baal, [b]and the four hundred prophets of [*]Asherah, who [*]eat at Jezebel's table."

Elijah's Mount Carmel Victory

20So Ahab sent for all the children of Israel, and [a]gathered the prophets together on Mount Carmel. 21And Elijah came to all the people, and said, [a]“How long will you falter between two opinions? If the LORD *is* God, follow Him; but if Baal, [b]follow him.” But the people answered him not a word. 22Then Elijah said to the people, [a]“I alone am left a prophet of the LORD; [b]but Baal’s prophets *are* four hundred and fifty men. 23Therefore let them give us two bulls; and let them choose one bull for themselves, cut it in pieces, and lay *it* on the wood, but put no fire *under it;* and I will prepare the other bull, and lay *it* on the wood, but put no fire *under it.* [24] Then you call on the name of your gods, and I will call on the name of the LORD; and the God who [a]answers by fire, He is God.”

So all the people answered and said, *“It is well spoken.”

1 Ki
18

Yo
are
the
Go
tha
an
by
fir

25Now Elijah

said to the prophets of Baal, “Choose one bull for yourselves and prepare *it* first, for you *are* many; and call on the name of your god, but put no fire *under it.*”

[26]So they took the bull which was

given them, and they prepared *it,* and called on the name of Baal from morning even till noon, saying, “O Baal, *hear us!” But *there was* [a]no voice; no one answered. Then they *leaped about the altar which they had made.

[27]And so it was, at noon, that Elijah mocked them and said, “Cry *aloud, for he *is* a god; either he is meditating, or he is busy, or he is on a journey, *or* perhaps he is sleeping and

must be awakened.” 28 So they cried aloud, and [a]cut themselves, as was their custom, with [*]knives and lances, until the blood gushed out on them. 29 And when midday was past, [a]they prophesied until the *time* of the offering of the *evening* sacrifice. But *there was* [b]no voice; no one answered, no one paid attention.

[30]Then Elijah said to all the people, “Come near to me.” So all the people came near to him. [a]And he repaired the altar of the

LORD *that was* broken down. 31And Elijah took twelve stones, according to the number of the tribes of the sons of Jacob, to whom the word of the LORD had come, saying, [a]“Israel shall be your name.” 32Then with the stones he built an altar [a]in the name of the LORD; and he made a trench around the altar large enough to hold two seahs of seed. [33]And he [a]put the wood in order, cut the bull in pieces, and laid *it* on the wood, and said, “Fill four waterpots with water, and [b]pour *it* on the burnt sacrifice and on the wood.” [34]Then he said, “Do *it* a second time,” and they did *it* a second time; and he said, “Do *it* a third time,” and they did *it* a third time. [35]So the water ran all around the altar; and he also filled [a]the trench with water.

[36]And it came to pass, at *the time of* the offering

of the *evening* sacrifice, that Elijah the prophet came near and said, “LORD [a]God of Abraham, Isaac, and Israel, [b]let it be known this day that You *are* God in Israel and I *am* Your servant, and *that* [c]I have done all these things at Your word. [37]Hear me, O LORD, hear me, that this people may know that You *are* the LORD God, and *that* You have turned their hearts back *to You* again.”

[38]Then [a]the fire of the

LORD fell and consumed the burnt sacrifice, and the wood and the stones and the dust, and it licked up the water that *was* in the trench. [39]Now when all the people saw *it,* they fell on their faces; and they said, [a]“The LORD, He *is* God! The LORD, He *is* God!”

40 And Elijah said to them, [a]“Seize the prophets of Baal! Do not let one of them escape!” So they seized them; and Elijah brought them down to the

Brook [b]Kishon and [c]executed them there.

The Drought Ends

41 Then Elijah said to Ahab, “Go up, eat and drink; for *there is* the sound of abundance of rain.” 42 So Ahab went up to eat and drink. And Elijah went up

to the top of Carmel; [a]then he bowed down on the ground, and put his face between his knees, 43and said to his servant, "Go up now, look toward the sea."

So he went up and looked, and said, "*There* *is* nothing.” And seven times he said, “Go again.”

[44]Then it came to pass the seventh *time,* that he said, “There is a cloud, as small as a man’s hand, rising out of the sea!” So he said, “Go up,

say to Ahab, *‘Prepare *your chariot,* and go down before the rain stops you.’ ”

[45]Now it happened in the meantime that the sky became black with clouds and wind, and there was a heavy rain. So Ahab rode away

and went to Jezreel. 46Then the [a]hand of the LORD came upon Elijah; and he [b]girded* up his loins and ran ahead of Ahab to the entrance of Jezreel.

PREPARING *for* SPIRITUAL WARFARE

CAN DEMONS TORMENT PEOPLE

ON EARTH?

Yes, they most definitely can and have done so, as you can see in Scripture. However, they cannot arbitrarily torment just anyone. They have to have a point of access, an entrance into an individual’s life someplace.

But that is another topic in itself. The Bible gives evidence of the torment demons can cause to people on earth.

So the cri alo and cut the as wa the cus wit kn and lan un the blo

gu
ou
on
the

—
1
KI
18

So
Sa
we
ou
fro
the
pre
of
the
LO
an
str
Jo

—
JO
2:7

…
the
me
Hi
tw
de
po
me
co
ou
of
the

tor
exc
fie

—

MA
8:2

…
cut
hir
wit
sto
[th
der

—

MA
5:5

Th
one
of
the
cro
ans
and
sai
“Te
I
bro
Yo
my
son
wh
has
a
mu
spi
An

wh
it
sei
hir
it
thr
hir
do
he
foa
at
the
mo
gna
his
tee
anc
bec
rig
An
oft
he
has
thr
hir
bo
int
the
fire
anc
int
the
wa
to
des
hir

—

MA
9:1

18,
22

“..
a
spi
sei
hir
it
cor
hir
bru
hir
Th
der
thr
hir
dov
and
cor
hir

—
LU
9:3
42

Th
he
goo
[ur
spi
and
tak
wit
hir
sev
oth
spi
mo

wi
tha
hin
and
the
ent
and
dw
the
and
the
las
sta
of
tha
ma
is
wo
tha
the
firs

—

LU
11

An
the
Lor
sai
“Si
Sin
Ind
Sat
has
ask
for
you
tha
he

ma
sif
you
as
wh

—

LU
22

…
bri
sic
pe
an
tho
wh
we
tor
by
un
spi
an
the
we
all
hea

—

AC
5:1

1

…
a
tho
in
the
fle
wa

giv
to
me
a
me
of
Sat
to
bu
me

—
2
CO
12

…
qu
all
the
fie
da
of
the
wi
on

—
EP
6:1

Th
po
wa
to
hu
me
[re
to
de

cre ou of the bo pit

— RE 9:1

Demons cause pain and inflict people. Why? The Bible says, “The thief [Satan] does not come except to steal, and to kill, and to destroy” (John 10:10).*

LESSONS FROM GOD’S WARRIORS

PROFILE

ELIJAH

Learn to Offer the Lord Your Very Best

Elijah fought in a spiritual war similar to ours.

In his battle for the soul of Israel, he stood against the wiles of Jezebel and her husband, King Ahab. Yet his most intense battle was not against visible foes but against personal discouragement.

As bold as Elijah was,

he lived as a fugitive, moving in and out of caves and places of hiding. Jezebel had murdered nearly all of the Lord’s prophets, replacing their godly influence with the dark, satanic oppression accompanying the priests of Baal and the

Asherah. A new initiative, however, had come from the Lord: Both Elijah and the prophets of Baal were to build altars, each to the deity they individually served. The God who answered with fire would be acknowledged as Lord over the nation.

All Israel came to the confrontation. Try as they may, the priests of Baal could draw no response from their demonic idol, Baal. [1]But at Elijah’s prayer, fire immediately fell from heaven and consumed his sacrifice. This was Elijah’s greatest victory. And when the Israelites saw the display of God’s power, they cried, “The LORD, He is God! The LORD, He is God!” (1 Kin. 18:39).

But the Lord was not finished. After Elijah had the priests of Baal executed, he went to the top of Mount Carmel and, kneeling face down, prayed seven times for rain until the Lord brought a downpour that ended the three-year drought. On this day both fire and rain miraculously fell from heaven!

Perhaps if this tremendous day had occurred at almost any other time in Israel’s history, the nation would have repented, but it did not. In fact, nothing changed. Instead of the revival that Elijah envisioned, an enraged Jezebel vowed to kill the Lord’s prophet, spurring Elijah to flee into the wilderness. There Elijah collapsed, exhausted and despondent, beneath a juniper tree. “It is enough! Now, LORD,” the weary prophet prayed, “take my life, for I am no better than my fathers!” (1 Kin. 19:4).

Elijah had offered the Lord his very best effort. This day had been the culminating event of his life. Elijah had prayed that Israel would know the Lord was their

God and that, in response, the Lord would turn Israel’s “hearts back to You again” (1 Kin. 18:37). Yet, like the prophets before him, Elijah could not trigger revival for Israel. Discouragement overwhelmed him. He had had enough.

Elijah

lay down and slept. As he did, an angel touched him and said, “Arise and eat” (1 Kings 19:5). At his head were bread and water. Elijah, weary with life itself, ate and withdrew back into sleep.

Once more

the angel touched him. “Arise and eat,” he said, “because the journey is too great for you” (v. 7). The journey before each of us is also “too great.” Indeed, our journey is divinely designed to be too great for us. The Lord has no plan where we succeed without Him. Life is so constructed to drive us back to God.

Our primary purpose in life must be to abide in Christ. In His love, the Lord stops us and forces us to look honestly at our heart. We will soon discover, as Elijah did, that yesterday's anointing will not suffice for today's battles. The Lord brought a new beginning to Elijah's life, and He will bring a new beginning to you. Under the canopy of His compassion, you will discover that your *desolation is, in fact, a time of preparation.**

1

Elijah Escapes from Jezebel

[1]And Ahab told Jezebel all that Elijah had done, also how he had [a]executed all the prophets with the sword. [2]Then Jezebel sent a messenger to Elijah, saying, [a]“So let the gods do *to*

me,
and
more
also,
if
I
do
not
make
your
life
as
the
life
of
one
of
them
by
tomorrow
about
this
time.”
3And
when
he
saw
that,
he
arose
and
ran
for
his
life,
and
went
to
Beersheba,
which

belongs to Judah, and left his servant there.

[4]But he himself went a day's journey into the wilderness, and came and sat down under a [*]broom tree. And he [a]prayed that he might die, and said, "It is enough! Now,

LORD, take my life, for I *am* no better than my fathers!”

[5]Then as he lay and slept under a broom tree, suddenly an *angel touched him, and said to him, “Arise *and* eat.” [6]Then he looked, and there by

his head *was* a cake baked on *coals, and a jar of water. So he ate and drank, and lay down again. [7]And the *angel of the LORD came back the second time, and touched him, and said, “Arise *and* eat, because the journey *is* too great for you.” [8]So he arose, and ate and drank; and he went in the strength of that food forty days and [a]forty nights as far as [b]Horeb, the mountain of God.

[9]And there

he went into a cave, and spent the night in that place; and behold, the word of the LORD *came* to him, and He said to him, “What are you doing here, Elijah?”

10So he said, [a]“I have been very

[b]zealous for the LORD God of hosts; for the children of Israel have forsaken Your covenant, torn down Your altars, and [c]killed Your prophets with the sword. [d]I alone am left; and they seek to take my life.”

God’s Revelation

to Elijah

[11]Then He said, “Go out, and stand [a]on the mountain before the LORD.” And behold, the LORD [b]passed by, and [c]a great and strong wind tore into the mountains and broke the rocks in pieces before the LORD,

but
the
LORD
was
not
in
the
wind;
and
after
the
wind
an
earthquake,
but
the
LORD
was
not
in
the
earthquake;
[12]and
after
the
earthquake
a
fire,
but
the
LORD
was
not
in
the
fire;
and
after
the
fire

[*]a still small voice.

[13]So it was, when Elijah heard *it,* that he [a]wrapped his face in his mantle and went out and stood in the entrance of the cave. [b]Suddenly a voice *came* to him, and said, “What are

you doing here, Elijah?”

[14] [a]And he said, “I have been very zealous for the LORD God of hosts; because the children of Israel have forsaken Your covenant, torn down Your altars, and killed Your prophets with the sword. I alone

am left; and they seek to take my life.”

[15]Then the LORD said to him: “Go, return on your way to the Wilderness of Damascus; [a]and when you arrive, anoint Hazael *as* king over Syria. [16]Also you shall anoint [a]Jehu

the son of Nimshi *as* king over Israel. And [b]Elisha the son of Shaphat of Abel Meholah you shall anoint *as* prophet in your place. 17 [a]It shall be *that* whoever escapes the sword of Hazael, Jehu will [b]kill; and whoever escapes the sword of Jehu, [c]Elisha will kill. 18[a]Yet I have reserved seven thousand in Israel, all whose knees have not bowed to Baal, [b]and every mouth that has not kissed him.”

Elisha Follows Elijah

19So he departed from there,

and found Elisha the son of Shaphat, who *was* plowing *with* twelve yoke *of oxen* before him, and he was with the twelfth. Then Elijah passed by him and threw his [a]mantle on him. 20And he left the oxen and ran after Elijah, and said, [a]“Please let me kiss my father and my mother, and *then* I will follow you.”

And he said to him, “Go back again, for what have I done to you?”

21 So *Elisha* turned back from

him,
and
took
a
yoke
of
oxen
and
slaughtered
them
and
[a]boiled
their
flesh,
using
the
oxen's
equipment,
and
gave
it
to
the
people,
and
they
ate.
Then
he
arose
and
followed
Elijah,
and
became
his
servant.

your SWORD

A DOUBLE SHARE OF HIS SPIRIT

Read 1 Kings 19

In Numbers 11 God took some of His Spirit upon Moses and put it on the elders. In 1 Kings 19 God tells Elijah to anoint Elisha to take his place. The Spirit (*ruach*) of God on Elijah as an anointed prophet filled him with the dynamism not only to prophesy but also to be a vessel of God's miracle-working power. So in 2

Kings 2, Elisha asks for himself a double portion of the Spirit’s anointing found on Elijah (2 Kin. 2:9).

The striking insight to be drawn here is not that Elisha wants to be greater than Elijah. Rather, Elisha simply desires to have more of the Spirit than he has previously encountered. Not satisfied with where his mentor, Elijah, left him, Elisha desires to go further with God. “Most assuredly, I say to you, he who believes in Me, the works that I do he will do also; and greater than these he will do, because I go to My Father” (John 14:12). The relationship between Elijah and Elisha is a type of the relationship between Christ and the believer.

Just as Elijah departs, leaving Elisha with a greater anointing to serve God, so Jesus departs and sends His Spirit to anoint us to do even greater works than He did.

* * *

How great is

your desire for the Holy Spirit and His anointing? Indicate the intensity of your desire by putting an “X” in the column that reflects the intensity of your desire.

	Desire			
Anointing	Intense	Strong	Mild	None
For serving God				
For working miracles				
For greater faith				
For deeper prayer				

* * *

Elisha did receive a double share of the Spirit. He never forgot the source of the powerful anointing on His life. He recognized that the God of Elijah was His source.

The miracles he performed did dramatically increase over those of Elijah. Elisha became a mighty servant and prophet of God. Despite all the great works the Spirit did through him, the greatest example from Elisha’s life is his intensity for more and more of the Spirit. Examine the intensity of your hunger and thirst for His Spirit. How desperately do you

long for more of His Spirit?
*

---

1 Kings 20

Ahab Defeats the Syrians

[1]Now [a]Ben-Hadad the king of Syria gathered all his forces together;

thirty-two kings *were* with him, with horses and chariots. And he went up and besieged [b]Samaria, and made war against it. [2]Then he sent messengers into the city to Ahab king of Israel, and said to him, “Thus says

Ben-Hadad: [3]‘Your silver and your gold *are* mine; your loveliest wives and children are mine.’ ”

[4]And the king of Israel answered and said, “My lord, O king, just as you say, I and all that I have *are*

yours.”

[5]Then the messengers came back and said, “Thus speaks Ben-Hadad, saying, ‘Indeed I have sent to you, saying, “You shall deliver to me your silver and your gold, your wives and your children”; [6]but I will send my

servants to you tomorrow about this time, and they shall search your house and the houses of your servants. And it shall be, *that* whatever is *pleasant in your eyes, they will put *it* in their hands and take *it.*’

”

[7]So the[1] king of Israel called all the elders of the land, and said, “Notice, please, and see how this *man* seeks trouble, for he sent to me for my wives, my children, my silver, and my gold; and

I did not deny him.”

[8]And all the elders and all the people said to him, “Do not listen or consent.”

[9]Therefore he said to the messengers of Ben-Hadad, “Tell my lord the king, ‘All that you sent for

to your servant the first time I will do, but this thing I cannot do.' " And the messengers departed and brought back word to him.

10 Then Ben-Hadad sent to him and said, [a]"The gods do so to me,

and more also, if enough dust is left of Samaria for a handful for each of the people *who follow me.”

[11]So the king of Israel answered and said, “Tell *him,* ‘Let not the one who puts on *his armor*

[a]boast like the one who takes *it off.*’ ”

[12]And it happened when *Ben-Hadad* heard this message, as he and the kings *were* [a]drinking at the *command post, that he said to his servants, “Get ready.” And they got

ready to attack the city.

13 Suddenly a prophet approached Ahab king of Israel, saying, “Thus says the LORD: ‘Have you seen all this great multitude? Behold, [a]I will deliver it into your hand today, and you shall know that I

am the LORD.' "

[14]So Ahab said, "By whom?"

And he said, "Thus says the LORD: 'By the young leaders of the provinces.' "

Then he said, "Who will set the battle in order?"

And he answered, "You."

[15]Then he

mustered the young leaders of the provinces, and there were two hundred and thirty-two; and after them he mustered all the people, all the children of Israel — seven thousand. [16]So they went out at noon. Meanwhile Ben-Hadad and the thirty-two kings helping him were [a]getting drunk at the command post. 17The young leaders of the provinces went out first. And Ben-Hadad sent out *a patrol,* and they told him, saying, “Men are coming out of

Samaria!” [18]So he said, “If they have come out for peace, take them alive; and if they have come out for war, take them alive.” [19]Then these young leaders of the provinces went out of the city with the army which followed them.

[20]And each one killed his man; so the Syrians fled, and Israel pursued them; and Ben-Hadad the king of Syria escaped on a horse with the cavalry. [21]Then the king of Israel went out and attacked the horses and chariots, and killed the Syrians with a great

slaughter.

22And the prophet came to the king of Israel and said to him, “Go, strengthen yourself; take note, and see what you should do, [a]for [*]in the spring of the year the king of Syria will come up against you.”

The Syrians Again Defeated

[23]Then the servants of the king of Syria said to him, “Their gods *are* gods of the hills. Therefore they were stronger than we; but if we fight against them in the plain, surely we

will be stronger than they. [24]So do this thing: Dismiss the kings, each from his position, and put captains in their *places; [25]and you shall muster an army like the army *that you have lost, horse for horse and chariot for chariot. Then we will fight against them in the plain; surely we will be stronger than they.” And he listened to their voice and did so.

[26]So it was, in the spring of the year, that Ben-Hadad mustered

the Syrians and went up to [a]Aphek to fight against Israel. 27And the children of Israel were mustered and given provisions, and they went against them. Now the children of Israel encamped before them like two little flocks of goats, while the Syrians filled the [a]countryside.

28 Then a [a]man of God came and spoke to the king of Israel, and said, “Thus says the LORD: ‘Because the Syrians have said, “The LORD *is* God of the hills, but He *is*

not God of the valleys,” therefore [b]I will deliver all this great multitude into your hand, and you shall know that I *am* the LORD.’ ”

29And they encamped opposite each other for seven days. So it was that on the seventh day the battle was joined; and the children of Israel killed one hundred thousand foot soldiers *of* the Syrians in one day. [30]But the rest fled to Aphek, into the city; then a wall fell on twenty-seven thousand of the men *who were* left.

And Ben-Hadad fled and went into the city, into an inner chamber.

1Ahab’s Treaty with Ben-Hadad

[31]Then his servants said to him, “Look now, we have heard that the kings of

the house of Israel *are* merciful kings. Please, let us [a]put sackcloth around our waists and ropes around our heads, and go out to the king of Israel; perhaps he will spare your life.” [32]So they wore sackcloth around their waists and *put* ropes around their heads, and came to the king of Israel and said, “Your servant Ben-Hadad says, ‘Please let me live.’ ”

And he said, “*Is* he still alive? He *is* my brother.”

33Now the men

were
watching
closely
to
see
whether
any
sign
of
mercy
would
come
from
him;
and
they
quickly
grasped
at
this
word
and
said,
“Your
brother
Ben-Hadad.”
So
he
said,
“Go,
bring
him.”
Then
Ben-Hadad
came
out
to
him;

and he had him come up into the chariot.

34So *Ben-Hadad* said to him, [a]“The cities which my father took from your father I will restore; and you may set up marketplaces for yourself in Damascus, as my father did in Samaria.”

Then *Ahab said,* “I will send you away with this treaty.” So he made a treaty with him and sent him away.

Ahab Condemned

35Now a certain man of [a]the sons of the prophets said to his neighbor [b]by the word of the LORD, “Strike me, please.” And the man refused to strike him. 36Then he said to him, “Because you have not obeyed the voice of the LORD, surely, as soon as you depart from me, a lion shall kill you.” And as soon as he left him, [a]a lion found him and killed him.

37And he found another man, and said, “Strike me, please.” So the man struck him, inflicting a wound. 38Then the prophet departed and waited for the king by the road, and disguised himself with a bandage over his eyes. [39]Now [a]as the king passed by, he cried out to the king and said, “Your servant went out into the midst of the battle; and there, a man came over and brought a man to me, and said, ‘Guard this man; if by any means he is missing, [b]your life shall be for his life, or else you shall *pay a talent of silver.’ [40]While your servant was busy here and there, he was gone.”

Then the king of Israel said to him, “So *shall* your judgment *be;* you yourself have decided it.”

[41]And he hastened to take the bandage away from

his eyes; and the king of Israel recognized him as one of the prophets. 42Then he said to him, “Thus says the LORD: [a]‘Because you have let slip out of *your* hand a man whom I appointed to utter destruction, therefore your life shall go for his life, and your people for his people.’ ”

SP
WA
BA

Pr
an
the
Wo
Br
Vi
Ov
the
En

Yo
wi
be
des
bu
wi
be
lift
yo

life
an
the
liv
of
tho
yo
lov
wi
be
rev
yo
mi
wi
be
en
an
the
en
wi
be
ho
on
yo
co
yo
tw
mo
po
we
—
pr
an
the
W
—
an
beg
to
pr

anc
“W
pra
Th
are
pra
tha
cor
key
Scr
ver
anc
the
pra
you
are
led
to
pra
by
the
rev
of
the
Ho
Spi

In
eve
dis
anc
ger
Go
has
hac
a
ma
or
wo
wh

par
wit
Hi
for
the
rec
of
hu
Th
me
an
wo
par
thr
pra
an
the
aut
of
Go
Wo
to
cha
the
sta
of
the
wo
Th
inc
Ab
Mo
Ha
Da
An
Pat
St.
Fra
of
Ass

Ma
Lu
D.
L.
Mo
Co
te
Bo
Da
Yo
Ch
an
the
list
go
on
Yo
ca
be
yo
ge
pra
pa
wi
Go
If
ev
the
wa
a
tim
wh
the
wo
co
use
so
div
int
it

su
is
no
*

---

[43] So the king of Israel [a]went to his house sullen and displeased, and came to Samaria.

1 Kings 21

Naboth Is Murdered

for His Vineyard

1And it came to pass after these things *that* Naboth the Jezreelite had a vineyard which *was* in [a]Jezreel, next to the palace of Ahab king of Samaria. 2So Ahab spoke to Naboth, saying, “Give me your

[a]vineyard, that I may have it for a vegetable garden, because it *is* near, next to my house; and for it I will give you a vineyard better than it. *Or,* if it seems good to you, I will give

you its wor1th in money.”

[3]But Naboth said to Ahab, “The LORD forbid [a]that I should give the inheritance of my fathers to you!”

[4]So Ahab went into his house sullen and displeased because of the word which Naboth the

Jezreelite had spoken to him; for he had said, “I will not give you the inheritance of my fathers.” And he lay down on his bed, and turned away his face, and would eat no food. 5But [a]Jezebel his wife came to him, and said to him, “Why is your spirit so sullen that you eat no food?”

[6]He said to her, “Because I spoke to Naboth the Jezreelite, and said to him, ‘Give me your vineyard for money; or

else, if it pleases you, I will give you *another* vineyard for it.' And he answered, 'I will not give you my vineyard.' "

[7]Then Jezebel his wife said to him, "You now exercise authority over Israel! Arise, eat food,

and let your heart be cheerful; I will give you the vineyard of Naboth the Jezreelite.”

[8]And she wrote letters in Ahab’s name, sealed *them* with his seal, and sent the letters to the elders and the nobles who *were*

dwelling in the city with Naboth. [9]She wrote in the letters, saying,

Pro
a
fas
an
sea
Na
*w
hig
ho
am
the
pe
[10]a
sea
tw
me
sc
bef
hi
to
bea
wi
ag
hi
say
“Y
hav

[a]bl
Go
an
the
kin
Th
tak
hin
ou
an
[b]st
hin
tha
he
ma
die

11 So the men of his city, the elders and nobles who were inhabitants of his city, did as Jezebel had sent

to them, as it *was* written in the letters which she had sent to them. 12[a]They proclaimed a fast, and seated Naboth with high honor among the people. 13And two men, scoundrels, came in and sat before him; and the scoundrels [a]witnessed against him, against Naboth, in the presence of the people, saying, “Naboth has blasphemed God and the king!” [b]Then they took him outside the city and stoned him with stones, so that he died. 14Then they sent to

Jezebel, saying, “Naboth has been stoned and is dead.”

[15] And it came to pass, when Jezebel heard tha1t Naboth had been stoned and was dead, that Jezebel said to Ahab, “Arise, take possession of the vineyard of Naboth the Jezreelite,

which he refused to give you for money; for Naboth is not alive, but dead.” [16]So it was, when Ahab heard that Naboth was dead, that Ahab got up and went down to take possession of the vineyard of Naboth the Jezreelite.

The LORD Condemns Ahab

17[a]Then the word of the LORD came to [b]Elijah the Tishbite, saying, 18“Arise, go down to meet Ahab king of Israel, [a]who *lives* in Samaria. There *he is,* in the vineyard of Naboth, where he has gone down to take possession of it. [19]You shall speak to him, saying, ‘Thus says the LORD: “Have you murdered and also taken possession?” ’

And you shall speak to him, saying, ‘Thus says the LORD: [a]“In the place where dogs licked the blood of Naboth, dogs shall lick your blood, even yours.” ’ ”

[20]So Ahab said to Elijah, [a]“Have you found me, O my enemy?”

And he answered, “I have found *you,* because [b]you have sold yourself to do evil in the sight of the LORD: 21 ‘Behold, [a]I will bring calamity on you. I will take away your [b]posterity, and will cut off from Ahab [c]every male in Israel, both [d]bond and free. 22 I will make your house like the house of [a]Jeroboam the son of Nebat, and like the house of [b]Baasha the son of Ahijah, because of the provocation with which you have provoked *Me* to anger, and made Israel sin.’ 23 And [a]concerning Jezebel the LORD also spoke, saying, ‘The dogs shall eat Jezebel by the *wall of Jezreel.’ 24The dogs shall eat [a]whoever belongs to Ahab and dies in the city, and the birds of the air shall eat whoever dies in the field.”

25[1] But [a] there was no one like Ahab who sold himself to do wickedness in the sight of the LORD, [b] because Jezebel his wife [*] stirred him up. 26 And he behaved very abominably in following idols, according to all [a] *that* the

Amorites had done, whom the LORD had cast out before the children of Israel.

[27]So it was, when Ahab heard those words, that he tore his clothes and [a]put sackcloth on his body, and fasted and lay in sackcloth, and

went about mourning.

[28]And the word of the LORD came to Elijah the Tishbite, saying, [29]“See how Ahab has humbled himself before Me? Because he [a]has humbled himself before Me, I will not bring the calamity in his days. [b]In

the days of his son I will bring the calamity on his house.”

1 Kings 22

Micaiah Warns Ahab

[1]Now three years passed without war between Syria and Israel. [2]Then it came to pass, in the third year, that

[a]Jehoshaphat the king of Judah went down to *visit* the king of Israel.

[3]And the king of Israel said to his servants, “Do you know that [a]Ramoth in Gilead *is* ours, but we hesitate to take it out of the

hand of the king of Syria?” 4So he said to Jehoshaphat, “Will you go with me to fight at Ramoth Gilead?”

Jehoshaphat said to the king of Israel, [a]“I *am* as you *are,* my people as your people, my horses as your horses.” [5]Also Jehoshaphat said to the king of Israel, [a]“Please inquire for the word of the LORD today.”

[6]Then the king of Israel [a]gathered [*]the prophets together, about four hundred men, and said to them, “Shall I go

against Ramoth Gilead to fight, or shall I refrain?”

So they said, “Go up, for the Lord will delive1r *it* into the hand of the king.”

[7]And [a]Jehoshaphat said, “*Is there* not still a prophet of the LORD here, that

we may inquire of *Him?”

[8]So the king of Israel said to Jehoshaphat, “*There is* still one man, Micaiah the son of Imlah, by whom we may inquire of the LORD; but I hate him, because he does not prophesy

good concerning me, but evil.”

And Jehoshaphat said, “Let not the king say such things!”

[9]Then the king of Israel called an officer and said, “Bring Micaiah the son of Imlah quickly!”

[10]The king of Israel and Jehoshaphat the king

of Judah, having put on *their* robes, sat each on his throne, at a threshing floor at the entrance of the gate of Samaria; and all the prophets prophesied before them. 11Now Zedekiah the son of Chenaanah had made [a]horns of iron for himself; and he said, “Thus says the LORD: ‘With these you shall [b]gore the Syrians until they are destroyed.’ ”

12And all the prophets prophesied so, saying, “Go up to Ramoth Gilead and prosper, for the LORD will deliver *it* into the king's hand."

[13]Then the messenger who had gone to call Micaiah spoke to him, saying, "Now listen, the words of the prophets with one accord encourage the king. Please, let your word be like the

word of one of them, and speak encouragement.”

14And Micaiah said, “*As* the LORD lives, [a]whatever the LORD says to me, that I will speak.”

15Then he came to the king; and the king said to him, “Micaiah, shall we go to war against Ramoth Gilead, or shall we refrain?”

And he answered him, “Go and prosper, for the LORD will deliver *it* into the hand of the king!”

[16]So the king said to him, “How many times shall I

make you swear that you tell me nothing but the truth in the name of the LORD?”

17 Then he said, “I saw all Israel [a]scattered on the mountains, as sheep that have no shepherd. And the LORD said, ‘These have

no master. Let each return to his house in peace.’ ”

[18]And the king of Israel said to Jehoshaphat, “Did I not tell you he would not1 prophesy good concerning me, but evil?”

[19]Then *Micaiah* said, “Therefore hear the word

of the LORD: [a]I saw the LORD sitting on His throne, [b]and all the host of heaven standing by, on His right hand and on His left. 20And the LORD said, ‘Who will persuade Ahab to go up, that he may fall at Ramoth Gilead?’ So one spoke in this manner, and another spoke in that manner. [21]Then a spirit came forward and stood before the LORD, and said, ‘I will persuade him.’ [22]The LORD said to him, ‘In what

way?’ So he said, ‘I will go out and be a lying spirit in the mouth of all his prophets.’ And the LORD said, [a]‘You shall persuade *him,* and also prevail. Go out and do so.’
23[a]Therefore look! The LORD

has put a lying spirit in the mouth of all these prophets of yours, and the LORD has declared disaster against you.”

24Now Zedekiah the son of Chenaanah went near and [a]struck Micaiah on the cheek, and said, [b]“Which way did the spirit from the LORD go from me to speak to you?”

25And Micaiah said, “Indeed, you shall see on that day when you go into an [a]inner chamber to hide!”

26So the king of Israel said, “Take Micaiah, and return him to Amon the governor of the city and to Joash the king's son; 27and say, 'Thus says the king: "Put this *fellow* in [a]prison, and feed him with bread of affliction and water of affliction, until I come in peace.” ’ ”

[28]But Micaiah said, “If you ever return in peace, [a]the LORD has not spoken by me.” And he said, “Take heed, all you people!”

Ahab Dies in Battle

[29]So the king of Israel and Jehoshaphat

the king of Judah went up to Ramoth Gilead. [30]And the king of Israel said to Jehoshaphat, “I will disguise myself and go into battle; but you put on your robes.” So the king of Israel [a]disguised himself and w1ent into battle.

[31]Now the [a]king of Syria had commanded the thirty-two [b]captains of his chariots, saying, "Fight with no one small or great, but only with the king of Israel." [32]So it was, when the captains of the chariots

saw Jehoshaphat, that they said, “Surely it *is* the king of Israel!” Therefore they turned aside to fight against him, and Jehoshaphat [a]cried out. 33And it happened, when the captains of the chariots saw that it *was* not the king of Israel, that they turned back from pursuing him. [34]Now a *certain* man drew a bow at random, and struck the king of Israel between the joints of his armor. So he said to the driver of his chariot, “Turn around and take me out of the battle, for I am wounded.”

[35]The battle increased that day; and the king was propped up in his chariot, facing the Syrians, and died at evening. The blood ran out from the wound

onto the floor of the chariot. [36]Then, as the sun was going down, a shout went throughout the army, saying, “Every man to his city, and every man to his own country!”

[37]So the king died, and was brought to

Samaria. And they buried the king in Samaria. [38]Then *someone* washed the chariot at a pool in Samaria, and the dogs licked up his blood while [*]the harlots bathed, according [a]to the word of the LORD which He had spoken.

39 Now the rest of the acts of Ahab, and all that he did, [a]the ivory house which he built and all the cities that he built, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of

Israel? 40So Ahab [*]rested with his fathers. Then [a]Ahaziah his son reigned in his place.

Jehoshaphat Reigns in Judah

41[a]Jehoshaphat the son of Asa had become king over Judah in the fourth year of Ahab king of Israel. 42Jehoshaphat *was* thirty-five years old when he became king, and he reigned twenty-five years in Jerusalem. His mother's name *was* Azubah the daughter of Shilhi. 43And [a]he walked in all the ways of his father Asa. He did not turn aside from them, doing *what was* right in the eyes of the [1]LORD. Nevertheless [b]the high places were not taken away, *for* the people offered sacrifices and burned incense on the high places. 44 Also [a]Jehoshaphat made [b]peace with the king of Israel.

[45]Now the rest of the acts of Jehoshaphat, the might that he showed, and how he made war, *are* they not written [a]in the book of the chronicles of the kings of Judah? [46][a]And the rest of the

[*]perverted persons, who remained in the days of his father Asa, he banished from the land. 47[a]*There was* then no king in Edom, only a deputy of the king.

48[a]Jehoshaphat [b]made [*]merchant ships to go to [c]Ophir for gold; [d]but they never sailed, for the ships were wrecked at [e]Ezion Geber. [49]Then Ahaziah the son of Ahab said to Jehoshaphat, “Let my servants go with your servants in the ships.” But Jehoshaphat would not.

[50]And [a]Jehoshaphat [*]rested with his fathers,

and was buried with his fathers in the City of David his father. Then Jehoram his son reigned in his place.

Ahaziah Reigns in Israel

51 [a]Ahaziah the son of Ahab became king over Israel in Samaria in the seventeenth year

of Jehoshaphat king of Judah, and reigned two years over Israel. 52He did evil in the sight of the LORD, and [a]walked in the way of his father and in the way of his mother and in the way of

Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin; [53]for [a]he served Baal and worshiped him, and provoked the LORD God of Israel to anger, [b]according* to all that h1is father had done.

[1:1] a. 1 Chr. 23:1

[1:1] * Seventy years

[1:2] * Or *serve*

[1:3] a. 1 Kin. 2:17

[1:3] b. Josh. 19:18; 1 Sam. 28:4

[1:5] a.

2
Sam.
3:4

[1:5]
b.
2
Sam.
15:1

[1:5]
*
The
fourth
son

[1:5]
*
Lit.
reign

[1:6]
a.
2
Sam.
3:3,
4;
1
Chr.
3:2

[1:6]

* Lit. *pained*

[1:7] a. 1 Chr. 11:6

[1:7] b. 2 Sam. 20:25

[1:7] c. 1 Kin. 2:22, 28

[1:8] a. 1 Kin. 2:35

[1:8] b. 1

Kin. 2:25; 2 Sam. 8:18

[1:8] c. 2 Sam. 12:1

[1:8] d. 1 Kin. 4:18

[1:8] e. 2 Sam. 23:8

[1:9] a. Josh. 15:7; 18:16; 2 Sam. 17:17

[1:9] * Lit. *Serpent*

[1:9] * A spring south of Jerusalem in the Kidron Valley

[1:10] a. 2 Sam. 12:24

[1:11] a. 2 Sam. 3:4

[1:13] a.

1 Kin. 1:30; 1 Chr. 22:9–13

[1:17] a. 1 Kin. 1:13, 30

[1:19] a. 1 Kin. 1:7–9, 25

[1:21] a. Deut. 31:16; 2 Sam. 7:12; 1 Kin. 2:10

[1:25]
a.
1
Kin.
1:9,
19

[1:25]
b.
1
Sam.
10:24

[1:25]
*
Lit.
Let
King
Adonijah
live

[1:29]
a.
2
Sam.
4:9;
12:5

[1:30]
a.
1
Kin.
1:13,

17

[1:31] a. Neh. 2:3; Dan. 2:4; 3:9

[1:33] a. 2 Sam. 20:6

[1:33] b. Esth. 6:8

[1:33] c. 2 Chr. 32:30; 33:14

[1:33] * A spring

east of Jerusalem in the Kidron Valley

[1:34] a. 1 Sam. 10:1; 16:3, 12; 2 Sam. 2:4; 5:3; 1 Kin. 19:16; 2 Kin. 9:3; 11:12; 1 Chr. 29:22

[1:34] b. 2 Sam. 15:10; 2

Kin. 9:13; 11:14

[1:34] * Lit. *Let King Solomon live*

[1:36] a. Jer. 28:6

[1:37] a. Josh. 1:5, 17; 1 Sam. 20:13

[1:37] b. 1 Kin. 1:47

[1:38] a. 2 Sam. 8:18; 23:20–23

[1:38] b. 2 Sam. 20:7; 1 Chr. 18:17

[1:39] a. Ex. 30:23, 25, 32; Ps. 89:20

[1:39] b. 1 Chr. 29:22

[1:39]

c. 1 Sam. 10:24

[1:39] * Lit. *Let King Solomon live*

[1:42] a. 2 Sam. 17:17, 20

[11:42] b. 2 Sam. 18:27

[1:46] a. 1 Kin. 2:12; 1 Chr.

29:23

[1:47] a. 1 Kin. 1:37

[1:47] b. Gen. 47:31

[1:48] a. 1 Kin. 3:6; (Ps. 132:11, 12)

[1:48] b. 2 Sam. 7:12

[1:50] a. Ex. 27:2;

30:10; 1 Kin. 2:28

[1:52] a. 1 Sam. 14:45; 2 Sam. 14:11; Acts 27:34

1 Kings 2

[2:1] a. Gen. 47:29; Deut. 31:14

[2:1] * *commanded*

[2:2] a. Josh.

23:14

[2:2] b. Deut. 31:7, 23; 1 Chr. 22:13

[2:3] a. (Deut. 29:9; Josh. 1:7); 1 Chr. 22:12, 13

[2:4] a. 2 Sam. 7:25

[2:4] b. (Ps. 132:12)

[2:4] c. 2 Kin. 20:3

[2:4] d. 2 Sam. 7:12, 13; 1 Kin. 8:25

[2:5] a. 2 Sam. 3:39; 18:5, 12, 14

[2:5] b. 2 Sam. 3:27; 1 Kin. 2:32

[2:5] c. 2 Sam. 20:10

[2:6] a. 1 Kin. 2:9; Prov. 20:26

[2:7] a. 2 Sam. 19:31–39

[2:7] b. 2 Sam. 9:7, 10; 19:28

[2:7] c.

2 Sam. 17:17–29

1 [2:8] a. 2 Sam. 16:5–13

[2:8] b. 2 Sam. 19:18

[2:8] c. 2 Sam. 19:23

[2:9] a. Ex. 20:7; Job 9:28

[2:9]

b. Gen. 42:38; 44:31

[2:10] a. 1 Kin. 1:21; Acts 2:29; 13:36

[2:10] b. 2 Sam. 5:7; 1 Kin. 3:1

[2:10] * Died and joined his ancestors

[2:11] a.

2 Sam. 5:4, 5; 1 Chr. 3:4; 29:26, 27

[2:12] a. 1 Kin. 1:46; 1 Chr. 29:23

[2:12] b. 1 Kin. 2:46; 2 Chr. 1:1

[2:13] a. 1 Sam. 16:4, 5

1 [2:15] a. 1 Kin. 1:11, 18

[2:15] b. 1 Chr. 22:9, 10; 28:5–7; (Dan. 2:21)

[2:16] * Lit. *turn away the face*

[2:17] a. 1 Kin. 1:3, 4

[2:19] a. (Ex. 20:12)

[2:19] b. Ps. 45:9

[2:20] * Lit. *turn away the face*

[2:22] a. 1 Kin. 1:6; 2:15; 1 Chr. 3:2, 5

[2:22] b.

1 Kin. 1:7

[2:23] a. Ruth 1:17

[2:24] a. 2 Sam. 7:11, 13; 1 Chr. 22:10

[2:24] * Royal dynasty

[2:25] a. 2 Sam. 8:18; 1 Kin. 4:4

[2:26] a. Josh. 21:18; Jer. 1:1

[2:26] b. 1 Sam. 22:23; 23:6; 2 Sam. 15:14, 29

[2:26] * Lit. *you are a man of death*

[2:27] a. 1 Sam. 2:31–

35

[2:28] a. 1 Kin. 1:7

[2:28] b. 1 Kin. 1:50

[2:29] a. 1 Kin. 2:5, 6

[2:30] a. (Ex. 21:14)

[2:31] a. (Ex. 21:14)

[2:31] b. (Num. 35:33; Deut. 19:13; 21:8, 9)

[2:32] a. (Gen. 9:6); Judg. 9:24, 57

[2:32] b. 2 Chr. 21:13, 14

[2:32] c. 2 Sam. 3:27

[2:32] d. 2

Sam. 20:9, 10

[2:32] * Or *bloodshed*

[2:33] a. 2 Sam. 3:29

[2:33] b. (Prov. 25:5)

[2:35] a. 1 Sam. 2:35; 1 Kin. 4:4; 1 Chr. 6:53; 24:3; 29:22

[2:35] b. 1 Kin. 2:27

[2:36] a. 2 Sam. 16:5–13; 1 Kin. 2:8

[2:37] a. 2 Sam. 15:23; 2 Kin. 23:6; John 18:1

[2:37] b. Lev. 20:9; Josh. 2:19;

2 Sam. 1:16; Ezek. 18:13

[2:37] * Or *bloodshed*

[2:39] a. 1 Sam. 27:2

[2:44] a. 2 Sam. 16:5–13

[2:44] b. 1 Sam. 25:39; 2 Kin. 11:1, 12–

16; Ps. 7:16; Ezek. 17:19

[2:45] a. 2 Sam. 7:13; (Prov. 25:5)

[2:46] a. 1 Kin. 2:12; 2 Chr. 1:1

1 Kings 3

[3:1] a. 1 Kin. 7:8; 9:24

[3:1] b. 2 Sam. 5:7

[3:1] c. 1 Kin. 7:1

[3:1] d. 1 Kin. 6

[3:1] e. 1 Kin. 9:15, 19

[3:1] * *an alliance*

[3:2] a.

(Deut. 12:2–5, 13, 14); 1 Kin. 11:7; 22:43

[3:3] a. (Rom. 8:28)

[3:3] b. (1 Kin. 3:6, 14)

[3:4] a. 1 Kin. 9:2; 2 Chr. 1:3

[3:4] b.

1 Chr. 16:39; 21:29

[3:5] a. 1 Kin. 9:2; 11:9; 2 Chr. 1:7

[3:5] b. Num. 12:6; Matt. 1:20; 2:13

[3:6] a. 2 Chr. 1:8

[3:6] b. 1 Kin.

2:4; 9:4; 2 Kin. 20:3

[3:6] c. 2 Sam. 7:8–17; 1 Kin. 1:48

[3:7] a. 1 Chr. 22:5; Jer. 1:6, 7

[3:7] b. Num. 27:17; 2 Sam. 5:2

[3:8] a. (Ex. 19:6; Deut. 7:6)

[3:8] b. Gen. 13:6; 15:5; 22:17

[3:9] a. 2 Chr. 1:10; (James 1:5)

[3:9] b. Ps. 72:1, 2

[3:9] c. 2 Sam. 14:17;

Is. 7:15; (Heb. 5:14)

[3:9] * Lit. *hearing*

[3:11] a. (James 4:3)

[3:12] a. (1 John 5:14, 15)

[3:12] b. 1 Kin. 4:29–31; 5:12; 10:24; Eccl. 1:16

[3:13] a. (Matt. 6:33; Eph. 3:20)

[3:13] b. 1 Kin. 4:21, 24; 10:23; 1 Chr. 29:12

[3:14] a. (1 Kin. 6:12)

[3:14] b. 1 Kin. 15:5

[3:14] c. Ps.

91:16; Prov. 3:2

[3:14] * *prolong*

[3:15] a. Gen. 41:7

[3:15] b. Gen. 40:20; 1 Kin. 8:65; Esth. 1:3; Dan. 5:1; Mark 6:21

[3:16] a. Num. 27:2

[3:18] * Lit. *no stranger*

[3:26] a. Gen. 43:30; Is. 49:15; Jer. 31:20; Hos. 11:8

[3:28] a. 1 Kin. 3:9, 11, 12; 2 Chr. 1:12; Dan. 1:17; (Col. 2:2, 3)

[4:3]
a.
2
Sam.
8:16;
20:24

[4:3]
*
secretaries

[4:4]
a.
1
Kin.
2:35

[4:4]
b.
1
Kin.
2:27

[4:5]
a.
1
Kin.
4:7

[4:5]
b.
2

Sam. 8:18; 20:26

[4:5] c. 2 Sam. 15:37; 16:16; 1 Chr. 27:33

[4:6] a. 1 Kin. 5:14

[4:8] * Lit. *Son of Hur*

[4:9] * Lit. *Son of Deker*

[4:10] * Lit. *Son of Hesed*

[4:11] * Lit. *Son of Abinadab*

[4:13] a. Num. 32:41; 1 Chr. 2:22

[4:13] b. Deut. 3:4

[4:13] * Lit. *Son*

of Geber

[4:15] a. 2 Sam. 15:27

[4:16] a. 2 Sam. 15:32; 1 Chr. 27:33

[4:18] a. 1 Kin. 1:8

[4:19] a. Deut. 3:8–10

[4:20] a.

Gen. 22:17; 32:12; 1 Kin. 3:8; (Prov. 14:28)

[4:20] b. Ps. 72:3, 7; Mic. 4:4

[4:21] a. Ex. 34:24; 2 Chr. 9:26; Ps. 72:8

[4:21] b. Gen. 15:18; Josh. 1:4

[4:21] c. Ps. 68:29

[4:21] * The Euphrates

[4:22] a. Neh. 5:18

[4:22] * Lit. *bread*

[4:22] * Each about 5 bushels

[4:24] a. Ps. 72:11

[4:24] b. 1 Kin. 5:4; 1 Chr. 22:9

[4:24] * The Euphrates

[4:25] a. (Jer. 23:6)

[4:25] b. (Mic. 4:4; Zech. 3:10)

[4:25] c. Judg. 20:1

[4:25] * *lived in safety*

[4:26] a. 1 Kin. 10:26; 2 Chr. 1:14

[4:26] b. (Deut. 17:16)

[4:26] * So with MT, most other authorities; some LXX mss. *four thousand;* cf.

2 Chr. 9:25

[4:27] a. 1 Kin. 4:7

[4:29] a. 1 Kin. 3:12

[4:30] a. Gen. 25:6

[4:30] b. Is. 19:11, 12; Acts 7:22

[4:31] a. 1

Kin. 3:12

[4:31] b. 1 Chr. 15:19; Ps. 89:title

[4:31] c. 1 Chr. 2:6; Ps. 88:title

[4:32] a. Prov. 1:1; 10:1; 25:1; Eccl. 12:9

[4:32] b. Song 1:1

[4:34] a. 1 Kin. 10:1; 2 Chr. 9:1, 23

1 Kings 5

[5:1] a. 1 Kin. 5:10, 18; 2 Chr. 2:3

[5:1] b. 2 Sam. 5:11; 1 Chr. 14:1

[5:2]

a. 2 Chr. 2:3

[5:3] a. 1 Chr. 28:2, 3

[5:3] b. 1 Chr. 22:8; 28:3

[5:3] * Lit. *them*

[5:4] a. 1 Kin. 4:24; 1 Chr. 22:9

[5:4] * *peace*

[5:4] * *misfortune*

[5:5] a. 2 Chr. 2:4

[5:5] b. 2 Sam. 7:12, 13; 1 Kin. 6:38; 1 Chr. 17:12; 22:10; 28:6; 2 Chr. 6:2

[5:5] * Lit. *I am saying*

[5:6] a. 2 Chr. 2:8, 10

[5:9] a. Ezra 3:7

[5:9] b. Ezek. 27:17; Acts 12:20

[5:11] a. 2 Chr. 2:10

[5:11] * Each about 5 bushels

[5:11] * So with MT, Tg., Vg.; LXX, Syr. *twenty thousand kors*

[5:12] a. 1 Kin. 3:12

[5:14] a. 1 Kin. 12:18

[5:15]

a. 1 Kin. 9:20–22; 2 Chr. 2:17, 18

[5:16] a. 1 Kin. 9:23

[5:16] * So with MT, Tg., Vg.; LXX *six hundred*

[5:17] a. 1 Kin. 6:7; 1 Chr. 22:2

[5:17] * Lit. *house*

[5:18] * Lit. *house*

1 Kings 6

[6:1] a. 2 Chr. 3:1, 2

[6:1] b. Acts 7:47

[6:1] * So with MT, Tg.,

Vg.; LXX *fortieth*

[6:1] * Or *Ayyar,* April or May

[6:2] a. Ezek. 41:1

[6:3] * Heb. *heykal;* here the main room of the temple; elsewhere called the holy place, Ex. 26:33;

Ezek. 41:1

[6:3] * About 30 feet

[6:3] * Lit. *it*

[6:3] * About 15 feet

[6:4] a. Ezek. 40:16; 41:16

[6:5] a. Ezek. 41:6

[6:5]

b. 1 Kin. 6:16, 19–21, 31

[6:5] * Lit. *house*

[6:5] * Heb. *debir;* here the inner room of the temple; elsewhere called the Most Holy Place, v. 16

[6:6] *

Lit. *house*

[6:7] a. Ex. 20:25; Deut. 27:5, 6

[6:8] * So with MT, Vg.; LXX *upper story;* Tg. *ground story*

[6:9] a. 1 Kin. 6:14, 38

[6:9] *

Lit. *house*

[6:12] a. 11 Kin. 2:4; 9:4

[6:12] b. (2 Sam. 7:13; 1 Chr. 22:10)

[6:12] * Lit. *house*

[6:12] * *promise*

[6:13] a. Ex. 25:8;

Lev. 26:11; (2 Cor. 6:16; Rev. 21:3)

[6:13] b. (Deut. 31:6)

[6:16] a. Ex. 26:33; Lev. 16:2; 1 Kin. 8:6; 2 Chr. 3:8; Ezek. 45:3; Heb. 9:3

[6:19] * The Most Holy

Place

[6:22] a. Ex. 30:1, 3, 6

[6:23] a. Ex. 37:7–9; 2 Chr. 3:10–12

[6:27] a. Ex. 25:20; 37:9; 1 Kin. 8:7; 2 Chr. 5:8

[6:27] *

Lit. *house*

[6:29] a. Ex. 36:8, 35

[6:31] * Or *five-sided*

[6:33] * *temple*

[6:33] * Or *four-sided*

[6:34] a. Ezek. 41:23–25

[6:36] a. 1 Kin. 7:12; Jer. 36:10

[6:37] a. 1 Kin. 6:1

[6:37] * Or *Ayyar,* April or May

[6:38] a. 2 Sam. 7:13; 1 Kin. 5:5; 6:1; 8:19

[6:38] * Or *Heshvan,* October or November

1 Kings 7

[7:1] a. 1 Kin. 3:1; 9:10; 2 Chr. 8:1

[7:2] a. 1 Kin. 10:17, 21; 2 Chr. 9:16

[7:2] * About 150 feet

[7:2] * About 75 feet

[7:7] * Lit. *floor* of the upper level

[7:8] a. 1 Kin. 3:1; 9:24; 11:1; 2 Chr. 8:11

[7:12] a. 1 Kin. 6:36

[7:12]
b.
John
10:23;
Acts
3:11

[7:13]
*
Heb.
Hiram;
cf.
2
Chr.
2:13,
14

[7:14]
a.
2
Chr.
2:14

[7:14]
b.
2
Chr.
4:16

[7:14]
c.
Ex.
31:3;

36:1

[7:15] a. 2 Kin. 25:17; 2 Chr. 3:15; 4:12; Jer. 52:21

[7:15] * *fashioned*

[7:20] a. 2 Chr. 3:16; 4:13; Jer. 52:23

[7:21] a. 2 Chr. 3:17

[7:21] * Lit. *He Shall Establish*

[7:21] * Lit. *In It Is Strength*

[7:23] a. 2 Kin. 25:13; 2 Chr. 4:2; Jer. 52:17

[7:24] a. 2 Chr. 4:3

[7:25] a. 2 Chr. 4:4, 5; Jer. 52:20

[7:26] * About 12,000 gallons; *three thousand,* 2 Chr. 4:5

[7:27] * Or *stands*

[7:37] * *one*

[7:38] a. Ex. 30:18;

2 Chr. 4:6

[7:38] * About 240 gallons

[7:40] a. 2 Chr. 4:11—5:1

[7:40] * Heb. *Hiram;* cf. 2 Chr. 2:13, 14

[7:41] a. 1 Kin. 7:17, 18

[7:42] a. 1 Kin. 7:20

[7:45] a. Ex. 27:3; 2 Chr. 4:16

[7:45] * Heb. *Hiram;* cf. 2 Chr. 2:13, 14

[7:46] a. 2 Chr. 4:17

[7:46]

b. Gen. 33:17; Josh. 13:27

[7:46] c. Josh. 3:16

[7:47] a. 1 Chr. 22:3, 14

[7:48] a. Ex. 37:25, 26; 2 Chr. 4:8

[7:48] b. Ex. 37:10, 11

[7:48] c. Lev. 24:5–8

[7:50] * *firepans*

[7:51] a. 2 Sam. 8:11; 1 Chr. 18:11; 2 Chr. 5:1

1 Kings 8

[8:1] a. Num. 1:4; 7:2; 2 Chr. 5:2–

14

[8:1] b. 2 Sam. 6:12–17; 1 Chr. 15:25–29

[8:1] c. 2 Sam. 5:7; 6:12, 16

[8:2] a. Lev. 23:34; 1 Kin. 8:65; 2 Chr. 7:8–10

[8:2]
*
Or
Tishri,
September
or
October

[8:3]
a.
Num.
4:15;
7:9;
Deut.
31:9;
Josh.
3:3,
6

[8:4]
a.
1
Kin.
3:4;
2
Chr.
1:3

[8:4]
*
tent

[8:5]

a. 2 Sam. 6:13; 2 Chr. 1:6

[8:6] a. 2 Sam. 6:17

[8:6] b. Ex. 26:33, 34; 1 Kin. 6:19

[8:6] c. 1 Kin. 6:27

[8:8] a. Ex. 25:13–

15;
37:4,
5

[8:8]
*
heads

[8:9]
a.
Ex.
25:21;
Deut.
10:2

[8:9]
b.
Ex.
25:16;
Deut.
10:5;
Heb.
9:4

[8:9]
c.
Ex.
24:7,
8;
40:20;
Deut.
4:13

[8:9] d. Ex. 34:27, 28

[8:10] a. Ex. 40:34, 35; 2 Chr. 7:1, 2

[8:11] a. 2 Chr. 7:1, 2

[8:12] a. 2 Chr. 6:1

[8:12] b.

Lev. 16:2; Ps. 18:11; 97:2

[8:13] a. 2 Sam. 7:13

[8:13] b. (Ex. 15:17); Ps. 132:14

[8:14] a. 2 Sam. 6:18; 1 Kin. 8:55

[8:15] a. 1 Chr. 29:10,

20;
Neh.
9:5;
Luke
1:68

[8:15]
b.
2
Sam.
7:2,
12,
13,
25;
1
Chr.
22:10

[8:16]
a.
Deut.
12:5;
1
Kin.
8:29

[8:16]
b.
1
Sam.
16:1;
2
Sam.
7:8;
1

Chr. 28:4

[8:17] a. 2 Sam. 7:2, 3; 1 Chr. 17:1, 2

[8:17] * Lit. *house,* and so in vv. 18–20

[8:18] a. 2 Chr. 6:8, 9

[8:19]

a. 2 Sam. 7:5, 12, 13; 1 Kin. 5:3, 5; 6:38; 1 Chr. 17:11, 12; 22:8–10; 2 Chr. 6:2

[8:20] a. 1 Chr. 28:5, 6

[8:20] * *risen in the place of*

[8:21] a. Deut. 31:26; 1 Kin. 8:9

[8:22] a. 1 Kin. 8:54; 2 Chr. 6:12

[8:22] b. Ex. 9:33; Ezra 9:5

[8:23] a. Ex. 15:11; 2 Sam. 7:22

[8:23]

b. (Deut. 7:9; Neh. 1:5; Dan. 9:4)

[8:23] c. (Gen. 17:1; 1 Kin. 3:6); 2 Kin. 20:3

[18:25] a. 2 Sam. 7:12, 16; 1 Kin. 2:4; 9:5

[8:26] a. 2 Sam. 7:25

[8:27] a. (2 Chr. 2:6; Is. 66:1; Acts 7:49; 17:24)

[8:27] b. 2 Cor. 12:2

[8:29] a. Deut. 12:11

[8:29] b. 1 Kin. 9:3; 2 Chr. 7:15

[8:29]
c.
Dan.
6:10

[8:29]
*
Lit.
house

[8:30]
a.
Neh.
1:6

[8:31]
a.
Ex.
22:8–11

[8:32]
a.
Deut.
25:1

[8:33]
a.
Lev.
26:17;
Deut.
28:25

[8:33] b. Lev. 26:39, 40

[8:34] a. (Lev. 26:40–42; Deut. 30:1–3)

[8:35] a. Lev. 26:19; Deut. 28:23

[8:36] a. Ps. 25:4; 27:11; 94:12

[8:36] b.

1 Sam. 12:23

[8:37] a. Lev. 26:16, 25, 26; Deut. 28:21, 22, 27, 38, 42, 52

[8:37] * Lit. *gates*

[8:39] a. (1 Sam. 16:7; 1 Chr. 28:9; Jer. 17:10); Acts 1:24

[8:40] a. (Ps. 130:4)

[8:42] a. Ex. 13:3; Deut. 3:24

[8:43] a. (Ex. 9:16; 1 Sam. 17:46; 2 Kin. 19:19)1blockquote>

[8:43] b. Ps. 102:15

[8:45] * *justice*

[8:46] a. 2 Chr. 6:36; Ps. 130:3; Prov. 20:9; Eccl. 7:20; (Rom. 3:23; 1 John 1:8, 10)

[8:46] b. Lev. 26:34, 44; Deut. 28:36, 64; 2 Kin. 17:6, 18; 25:21

[8:47] a. (Lev. 26:40–

42);
Neh.
9:2

[8:47]
b.
Ezra
9:6,
7;
Neh.
1:6;
Ps.
106:6;
Dan.
9:5

[8:47]
*
Lit.
bring
back
to
their
heart

[8:48]
a.
Jer.
29:12–
14

[8:48]
b.

Dan. 6:10; Jon. 2:4

[8:49] * *justice*

[8:50] a. (2 Chr. 30:9); Ezra 7:6; Ps. 106:46; Acts 7:10

[8:51] a. Ex. 32:11, 12; Deut. 9:26–29; Neh. 1:10; (Rom. 11:28, 29)

[8:51] b. Deut. 4:20; Jer. 11:4

[8:52] a. 1 Kin. 8:29

[8:53] a. Ex. 19:5, 6

[8:54] a. 2 Chr. 7:1

[8:55] a. Num. 6:23–26; 2 Sam. 6:18;

1 Kin. 8:14

[8:56] a. 1 Chr. 22:18

[8:56] b. Deut. 12:10; Josh. 21:45; 23:14

[8:56] * *peace*

[8:57] a. Deut. 31:6; Josh. 1:5; 1 Sam. 12:22; (Rom. 8:31–

37); Heb. 13:5

[8:58] a. Ps. 119:36; Jer. 31:33

[8:60] a. Josh. 4:24; 1 Sam. 17:46; 1 Kin. 8:43; 2 Kin. 19:19

[8:60] b. Deut. 4:35, 39; 1 Kin. 18:39; (Jer. 10:10–

12)

[8:61] a. Deut. 18:13; 1 Kin. 11:4; 15:3, 14; 2 Kin. 20:3

[8:61] * Lit. *at peace with*

[8:62] a. 2 Chr. 7:4–10

[8:64] a. 2 Chr.

7:7

[8:64] b. 2 Chr. 4:1

[8:65] a. Lev. 23:34; 1 Kin. 8:2

[8:65] b. Num. 34:8; Josh. 13:5; Judg. 3:3; 2 Kin. 14:25

[8:65] c. Gen. 15:18; Ex.

23:31; Num. 34:5

[8:65] d. 2 Chr. 7:8

[8:66] a. 2 Chr. 7:9

[8:66] * *thanked*

1 Kings 9

[9:1] a. 2 Chr. 7:11

[9:1] b. 1

Kin. 7:1

[9:1] c. 2 Chr. 8:6

[9:2] a. 1 Kin. 3:5; 11:9; 2 Chr. 1:7

[9:3] a. 2 Kin. 20:5; Ps. 10:17

[9:3] b. 1 Kin. 8:29

[9:3] c. Deut. 11:12

[9:4] a. Gen. 17:1

[9:4] b. 1 Kin. 11:4, 6; 15:5

[9:4] c. 1 Kin. 8:61

[9:5] a. 2 Sam. 7:12, 16; 1

Kin.
2:4;
6:12;
8:25;
1
Chr.
22:10;
Matt.
1:6;
25:31

[9:6]
a.
2
Sam.
7:14–
16;
2
Chr.
7:19,
20;
Ps.
89:30

[9:6]
*
*turn
back*

[9:7]
a.
(Lev.
18:24–
29);
Deut.

4:26;
2
Kin.
17:23;
25:21

[9:7]
b.
(Jer.
7:4–
14)

[9:7]
c.
Deut.
28:37;
Ps.
44:14;
Jer.
24:9

[9:7]
*
destroy

[9:8]
a.
2
Chr.
7:21

[9:8]

b. (Deut. 29:24–26); Jer. 22:8, 9

[9:9] a. (Deut. 29:25–28)

[9:10] a. 1 Kin. 6:37, 38; 7:1; 2 Chr. 8:1

[9:11] a. 1 Kin. 5:1

[9:13] a. Josh. 19:27

[9:13] * Lit. *Good for Nothing*

[9:15] a. 1 Kin. 5:13

[9:15] b. 2 Sam. 5:9; 1 Kin. 9:24

[9:15] c. Josh. 11:1; 19:36

[9:15] d. Josh.

17:11

[9:15]
e.
Josh.
16:10

[9:15]
*
Lit.
The
Landfill

[9:16]
a.
Josh.
16:10;
Judg.
1:29

[9:17]
a.
Josh.
10:10;
16:3;
21:22;
2
Chr.
8:5

[9:18]
a.

Josh.
19:44;
2
Chr.
8:4

[9:19]
a.
1
Kin.
10:26;
2
Chr.
1:14

[9:19]
b.
1
Kin.
4:26

[9:19]
c.
1
Kin.
9:1

[9:20]
a.
2
Chr.
8:7

[9:21] a. Judg. 1:21–36; 3:1

[9:21] b. Josh. 15:63; 17:12, 13

[9:21] c. Judg. 1:28, 35

[9:21] d. Ezra 2:55, 58; Neh. 7:57

[9:22] a. (Lev.

25:39)

[9:23] a. 2 Chr. 8:10

[9:24] a. 1 Kin. 3:1

[9:24] b. 1 Kin. 7:8

[9:24] c. 2 Sam. 5:9; 1 Kin. 11:27; 2 Chr. 32:5

[9:24] * Lit. *he;* cf. 2 Chr. 8:11

[9:25] a. Ex. 23:14–17; Deut. 16:16; 2 Chr. 8:12, 13

[9:26] a. 2 Chr. 8:17, 18

[9:26] b. Num. 33:35; Deut. 2:8; 1

Kin. 22:48

[9:26] * Heb. *Eloth*

[9:27] a. 1 Kin. 5:6, 9; 10:11

[9:28] a. Job 22:24

1 Kings 10

[10:1] a. 2 Chr. 9:1; Matt. 12:42; Luke 11:31

[10:1]
b.
Judg.
14:12;
Ps.
49:4;
Prov.
1:6

[10:2]
*
company

[10:3]
*
too

[10:5]
a.
1
Chr.
26:16;
2
Chr.
9:4

[10:8]
a.
Prov.
8:34

[10:9] a. 1 Kin. 5:7

[10:9] b. 2 Sam. 22:20

[10:9] c. 2 Sam. 8:15; Ps. 72:2; (Prov. 8:15)

[10:10] a. Ps. 72:10, 15

[10:11] a. 1 Kin.

9:27,
28;
Job
22:24

[10:11]
*
algum,
2
Chr.
9:10,
11

[10:12]
a.
2
Chr.
9:11

[10:12]
b.
2
Chr.
9:10

[10:12]
*
Or
supports

[10:15]
a.

2 Chr. 1:16

[10:15] b. 2 Chr. 9:24; Ps. 72:10

[10:17] a. 1 Kin. 14:26

[10:17] b. 1 Kin. 7:2

[10:18] a. 1 Kin. 10:22; 2 Chr. 9:17; Ps.

45:8

[10:21] a. 2 Chr. 9:20

[10:22] a. Gen. 10:4; 2 Chr. 20:36

[10:22] b. 1 Kin. 9:26–28; 22:48; Ps. 72:10

[10:22] * Lit. *ships of Tarshish,* deep-sea vessels

[10:22] * Or *peacocks*

[10:23] a. 1 Kin. 3:12, 13; 4:30; 2 Chr. 1:12

[10:26] a. 1 Kin. 4:26; 2 Chr. 1:14; 9:25

[10:26] b. (D1eut. 17:16);

1 Kin. 9:19

[10:26] * So with LXX, Syr., Tg., Vg. (cf. 2 Chr. 9:25); MT *led*

[10:27] a. (Deut. 17:17); 2 Chr. 1:15–17

[10:28] a. (Deut. 17:16); 2 Chr. 1:16;

9:28

[10:29] a. Josh. 1:4; 2 Kin. 7:6, 7

[10:29] * Lit. *by their hands*

1 Kings 11

[11:1] a. (Neh. 13:26)

[11:1] b. (Deut. 17:17); 1 Kin. 3:1

[11:2] a. Ex. 34:16; (Deut. 7:3, 4)

[11:4] a. (Deut. 17:17; Neh. 13:26)

[11:4] b. 1 Kin. 8:61

[11:4] c. 1 Kin. 9:4

[11:4] * Lit. *at*

peace with

[11:5] a. Judg. 2:13; 1 Kin. 11:33

[11:5] b. (Lev. 20:2–5)

[11:5] c. 2 Kin. 23:13

[11:5] * Or *Molech*

[11:7] a. Num. 33:52

[11:7] b. Num. 21:29; Judg. 11:24

[11:7] c. 2 Kin. 23:13

[11:7] * A place for pagan worship

[11:9] a. 1 Kin. 3:5; 9:2

[11:10] a. 1

Kin.
6:12;
9:6,
7

[11:11]
a.
1
Kin.
11:31;
12:15,
16

[11:11]
b.
1
Kin.
11:31,
37

[11:13]
a.
2
Sam.
7:15;
1
Chr.
17:13;
Ps.
89:33

[11:13]
b.

1 Kin. 12:20

[11:13] c. 2 Sam. 7:15, 16

[11:13] d. Deut. 12:11; 1 Kin. 9:3; 14:21

[11:14] a. 1 Chr. 5:26

[11:15] a. 2 Sam. 8:14; 1 Chr.

18:12, 13

[11:15] b. Num. 24:18, 19; (Deut. 20:13)

[11:21] a. 1 Kin. 2:10, 34

[11:21] * Died and joined his ancestors

[11:21] * Lit. *Send me away*

[11:23]
a.
2
Sam.
8:3;
10:16

[11:24]
a.
2
Sam.
8:3;
10:8,
18

[11:26]
a.
1
Kin.
12:2

[11:26]
b.
1
Kin.
11:11;
2
Chr.
13:6

[11:26]

c. 2 Sam. 20:21

[11:27] a. 1 Kin. 9:15, 24

[11:27] * Lit. *closed up the breaches*

[11:28] a. (Prov. 22:29)

[11:29] a. 1 Kin. 12:15; 14:2; 2 Chr.

9:29

[11:30] a. 1 Sam. 15:27, 28; 24:5

[11:31] a. 1 Kin. 11:11, 13

[11:33] a. 1 Sam. 7:3; 1 Kin. 11:5–8

[11:33] * So with MT, Tg.;

LXX, Syr., Vg. *he has*

[11:35] a. 1 Kin. 12:16, 17

[11:36] a. (1 Kin. 15:4; 2 Kin. 8:19)

[11:38] a. Deut. 31:8; Josh. 1:5

[11:38] b. 2 Sam.

7:11,
27

[11:40]
a.
1
Kin.
11:17;
14:25;
2
Chr.
12:2â“

[11:41]
a.
2
Chr.
9:29

[11:42]
a.
2
Chr.
9:30

[11:43]
a.
1
Kin.
2:10;
2
Chr.
9:31

[11:43] b. 1 Kin. 14:21; 2 Chr. 10:1

[11:43] * Died and joined his ancestors

1 Kings 12

[12:1] a. 2 Chr. 10:1

[12:1] b. Judg. 9:6

[12:2] a. 1 Kin. 11:26

[12:2] b. 1 Kin. 11:40

[12:4] a. 1 Sam. 8:11â“8; 1 Kin. 4:7; 5:13â“5

[12:4] * *hard*

[12:7] a. 2 Chr. 10:7; (Prov. 15:1)

[12:11] * Scourges with points or barbs, lit. *scorpions*

[12:13] * *harshly*

[12:14] * Lit. *scorpions*

[12:15] a. Deut. 2:30; Judg. 14:4; 1 Kin. 12:24; 2 Chr. 10:15

[12:15] b. 1 Kin. 11:11, 29, 31

[12:16] a. 2 Sam. 20:1

[12:17] a. 1 Kin. 11:13, 36; 2 Chr. 11:14â“7

[12:18] a. 1 Kin. 4:6; 5:14

[12:19] a.

2
Kin.
17:21

[12:20]
a.
2
Kin.
17:21

[12:20]
b.
1
Kin.
11:13,
32,
36

[12:21]
a.
2
Chr.
11:1–
4

[12:21]
b.
2
Sam.
19:17

[12:22]

a. 2 Chr. 11:2; 12:5–7

[12:24] a. 1 Kin. 12:15

[12:25] a. Gen. 12:6; Judg. 9:45–49; 1 Kin. 12:1

[12:25] b. Gen. 32:30, 31; Judg. 8:8, 17

[12:25]
*
fortified

[12:27]
a.
(Deut.
12:5–
7,
14)

[12:28]
a.
2
Kin.
10:29;
17:16;
(Hos.
8:4–
7)

[12:28]
b.
Ex.
32:4,
8

[12:29]
a.
1Gen.
28:19

[12:29] b. Judg. 18:26–31

[12:30] a. 1 Kin. 13:34; 2 Kin. 17:21

[12:31] a. (Num. 3:10; 17:1–11); Judg. 17:5; 1 Kin. 13:33; 2 Kin. 17:32; 2 Chr. 11:14, 15

[12:31]

* Lit. *a house;* cf. 1 Kin. 13:32, lit. *houses*

[12:32] a. Lev. 23:33, 34; Num. 29:12; 1 Kin. 8:2, 5

[12:32] b. Amos 7:10–13

[12:32] * *instituted*

[12:33] a. Num. 15:39

[12:33] b. 1 Kin. 13:1

[12:33] * *instituted*

1 Kings 13

[13:1] a. 2 Kin. 23:17

[13:1] b. 1 Kin. 12:32, 33

[13:1]

* *at the LORD's command*

[13:2] a. 2 Kin. 23:15, 16

[13:2] b. (Lev. 26:30)

[13:2] * *at the LORD's command*

[13:3] a. Ex. 4:1–5; Judg. 6:17; Is.

7:14; 38:7; John 2:18; 1 Cor. 1:22

[13:6] a. Ex. 8:8; 9:28; 10:17; Num. 21:7; Jer. 37:3; Acts 8:24; (James 5:16)

[13:7] a. 1 Sam. 9:7; 2 Kin. 5:15

[13:8] a. Num.

22:18; 24:13; 1 Kin. 13:16, 17

[13:9] a. (1 Cor. 5:11)

[13:11] a. 1 Kin. 13:25

[13:11] * Lit. *son*

[13:12] * LXX, Syr., Tg., Vg. *showed him*

[13:16] a. 1 Kin. 13:8, 9

[13:17] a. 1 Kin. 20:35; 1 Thess. 4:15

[13:17] * Lit. *a command came to me by*

[13:22] a. 1 Kin. 13:9

[13:24]
a.
1
Kin.
20:36

[13:30]
a.
Jer.
22:18

[13:31]
a.
Ruth
1:17;
2
Kin.
23:17,
18

[13:32]
a.
1
Kin.
13:2;
2
Kin.
23:16,
19

[13:32]
b.
1

Kin. 16:24; John 4:5; Acts 8:14

[13:32] * Lit. *word*

[13:32] * Lit. *houses*

[13:33] a. 1 Kin. 12:31, 32; 2 Chr. 11:15; 13:9

[13:34] a. 1 Kin. 12:30;

2 Kin. 17:21

[13:34] b. (1 Kin. 14:10; 15:29, 30)

1 Kings 14

[14:2] a. 1 Kin. 11:29–31

[14:3] a. 1 Sam. 9:7, 8; 1 Kin. 13:7; 2 Kin. 4:42

[14:3] * Lit. *in your hand*

[14:4] a. 1 Kin. 11:29

[14:4] * Lit. *set*

[14:7] a. 2 Sam. 12:7, 8; 1 Kin. 16:2

[14:8] a. 1

Kin. 11:31

[14:8] b. 1 Kin. 111:33, 38; 15:5

[14:9] a. 1 Kin. 12:28; 2 Chr. 11:15

[14:9] b. 2 Chr. 29:6; Neh. 9:26; Ps. 50:17

[14:10] a. 1

Kin. 15:29

[14:10] b. 1 Kin. 21:21; 2 Kin. 9:8

[14:10] c. Deut. 32:36; 2 Kin. 14:26

[14:11] a. 1 Kin. 16:4; 21:24

[14:12] a. 1 Kin. 14:17

[14:13] a. 2 Chr. 12:12; 19:3

[14:13] * Be buried

[14:14] a. 1 Kin. 15:27–29

[14:14] * Or *this day and from now on*

[14:15] a.

Deut. 29:28; 2 Kin. 17:6; Ps. 52:5

[14:15] b. (Josh. 23:15, 16)

[14:15] c. 2 Kin. 15:29

[14:15] d. (Ex. 34:13, 14; Deut. 12:3)

[14:15] * The Euphrates

[14:15] * Heb. *Asherim,* Canaanite deities

[14:16] a. 1 Kin. 12:30; 13:34; 15:30, 34; 16:2

[14:17] a. 1 Kin. 15:21, 33; 16:6, 8, 15, 23; Song 6:4

[14:17] b. 1

Kin.
14:12

[14:18]
a.
1
Kin.
14:13

[14:19]
a.
1
Kin.
14:30;
2
Chr.
13:2–
20

[14:20]
a.
1
Kin.
15:25

[114:21]
a.
2
Chr.
12:13

[14:21]

b. 1 Kin. 11:32, 36

[14:21] c. 1 Kin. 14:31

[14:22] a. 2 Chr. 12:1, 14

[14:22] b. Deut. 32:21; Ps. 78:58; 1 Cor. 10:22

[14:23] a. Deut. 12:2;

Ezek. 16:24, 25

[14:23] b. (Deut. 16:22)

[14:23] c. (2 Kin. 17:9, 10)

[14:23] d. Is. 57:5; Jer. 2:20

[14:23] * Places for pagan worship

[14:24] a.

Gen. 19:5; Deut. 23:17; 1 Kin. 15:12; 22:46; 2 Kin. 23:7

[14:24] b. Deut. 20:18

[14:24] c. (Deut. 9:4, 5)

[14:24] * Heb. *qadesh,* one practicing sodomy and prostitution in religious rituals

[14:25] a. 1 Kin. 11:40; 2 Chr. 12:2

[14:26] a. 1 Kin. 15:18; 2 Chr. 12:9–11

[14:26] b. 1 Kin. 10:17

[14:27] * *entrusted*

[14:27] *

Lit. *runners*

[14:29] a. 2 Chr. 12:15, 16

[14:30] a. 1 Kin. 12:21–24; 15:6

[14:31] a. 2 Chr. 12:16

[14:31] b. 1 Kin. 14:21

[14:31] c.

2 Chr. 12:16

[14:31] * Died and joined his ancestors

[14:31] * *Abijah,* 2 Chr. 12:16

1 Kings 15

[15:1] a. 2 Chr. 13:1

[15:2] a. 2 Chr. 11:20–

22

[15:2] b. 2 Chr. 13:2

[15:2] c. 2 Chr. 11:21

[15:3] a. 1 Kin. 11:4; Ps. 119:80

[15:3] * Lit. *at peace with*

[15:4] a. 2

Sam. 21:17; 1 Kin. 11:32, 36; 2 Chr. 21:7

[15:5] a. 1 Kin. 9:4; 14:8; Luke 1:6

[15:5] b. 2 Sam. 11:3, 15–17; 12:9, 10

[15:6] a. 1 Kin. 14:30; 2

Chr. 12:15—13:20

[15:6] * So with MT, LXX, Tg., Vg.; some Heb. mss., Syr. *Abijam*

[15:7] a. 2 Chr. 13:2–22

[15:8] a. 2 Chr. 14:1

[15:8]

* Died and joined his ancestors

[15:11] a. 2 Chr. 14:2

[15:12] a. Deut. 23:17; 1 Kin. 14:24; 22:46

[15:12] * Heb. *qedeshim,* those practicing sodomy and prostitution in religious rituals

[15:13] a. 2 Chr. 15:16–18

[15:13] b. Ex. 32:20

[15:13] * A Canaanite goddess

[15:14] a. 1 Kin. 3:2; 22:43; 2 Kin. 12:3; 2 Chr. 15:17, 18

[15:14] b. (1 Sam. 16:7); 1 Kin. 8:61; 15:3

[15:14] * Places for pagan worship

[15:15] a. 1 Kin. 7:51

[15:17] a. 2 Chr. 16:1–6

[15:17] b. Josh. 18:25; 1

Kin. 15:21, 22

[15:17] c. 1 Kin. 12:26–29

[15:18] a. 2 Kin. 12:17, 18; 2 Chr. 16:2

[15:18] b. Gen. 14:15; 1 Kin. 11:23, 24

[15:20] a. 1

Kin.
20:1

[15:20]
b.
2
Kin.
15:29

[15:20]
c.
Judg.
18:29;
1
Kin.
12:29

[15:20]
d.
2
Sam.
20:14,
15

[15:21]
a.
1
Kin.
14:17;
16:15–
18

[15:22] a. 2 Chr. 16:6

[15:22] b. Josh. 21:17

[15:22] c. Josh. 18:26

[15:23] a. 2 Chr. 16:11–14

[15:24] a. 2 Chr. 17:1

[15:24] b. 1

Kin. 22:41–44; Matt. 1:8

[15:24] * Died and joined his ancestors

[15:25] a. 1 Kin. 14:20

[15:26] a. 1 Kin. 12:28–33; 14:16

[15:27] a. 1 Kin. 14:14

[15:27] b. Josh. 19:44; 21:23; 1 Kin. 16:15

[15:29] a. 1 Kin. 14:10–14

[15:30] a. 1 Kin. 14:9, 16

[15:32] a. 1 Kin. 15:16

[15:34] a.

1 Kin. 13:33; 14:16

[16:1] a. 1 Kin. 16:7; 2 Chr. 19:2; 20:34

[16:1] b. 2 Chr. 16:7–10

[16:1] c. 1 Kin. 15:27

[16:2] a. 1 Sam.

2:8; 1 Kin. 14:7

[16:2] b. 1 Kin. 12:25–33; 15:34

[16:3] a. 1 Kin. 16:11; 21:21

[16:3] b. 1 Kin. 14:10; 15:29

[16:3] * *consume*

[16:4]

a. 1 Kin. 14:11; 21:24

[16:5] a. 2 Chr. 16:11

[16:6] a. 1 Kin. 14:17; 15:21

[16:6] * Died and joined his ancestors

[16:7] a. 1 Kin. 16:1

[16:7] b. 1 Kin. 15:27, 29

[16:9] a. 2 Kin. 9:30–33

[16:9] b. Gen. 24:2; 39:4; 1 Kin. 18:3

[16:9] * Lit. *who was over the house*

[16:11] a. 1 Sam. 25:22

[16:12] a. 1 Kin. 16:3

[16:13] a. Deut. 32:21; 1 Sam. 12:21; (Is. 41:29; Jon. 2:8; 1 Cor. 8:4; 10:19)

[16:13] * Lit. *vanities*

[16:15]
a.
1
Kin.
15:27

[16:18]
*
captured

[16:18]
*
Lit.
over
him

[16:19]
a.
1
Kin.
15:26,
34

[16:19]
b.
1
Kin.
12:25–
33

[16:23]
a.

1 Kin. 15:21; 2 Kin. 15:14

[16:24] a. 1 Kin. 13:32; 2 Kin. 17:24; John 4:4

[16:24] * Heb. *Shomeron*

[16:25] a. Mic. 6:16

[16:26] a. 1 Kin. 16:19

[16:26] b. 1 Kin. 16:13

[16:26] * Lit. *vanities*

[16:31] a. Deut. 7:3

[16:31] b. Judg. 18:7; 1 Kin. 11:1–5

[16:31] c. 1 Kin. 21:25, 26;

2 Kin. 10:18; 17:16

[16:32] a. 2 Kin. 10:21, 26, 27

[16:33] a. 2 Kin. 13:6

[16:33] b. 1 Kin. 14:9; 16:29, 30; 21:25

[16:33] * Heb. *Asherah,* a

Canaanite goddess

[16:34] a. Josh. 6:26

[16:34] * At the cost of the life of

1 Kings 17

[17:1] a. Judg. 12:4

[17:1] b. 1 Kin. 18:10; 22:14; 2

Kin.
3:14;
5:20

[17:1]
c.
Deut.
10:8

[17:1]
d.
1
Kin.
18:1;
James
5:17

[17:1]
e.
Luke
4:25

[17:4]
a.
Job
38:41

[17:9]
a.
Obad.
20;
Luke

4:25, 26

[17:9] b. 2 Sam. 24:6

[17:12] a. Deut. 28:23, 24

[17:12] * Lit. *pitcher* or *water jar*

[17:17] * *severe*

[17:17] * He died.

[17:18] a. Luke 5:8

[17:21] a. 2 Kin. 4:34, 35; Acts 20:10

[17:22] a. Luke 7:14, 15; Heb. 11:35

[17:24] a. John 2:11; 3:2; 16:30

1 Kings 18

[18:1] a. 1 Kin. 17:1; Luke 4:25; James 5:17

[18:1] b. Deut. 28:12

[18:3] * Lit. *over the house*

[18:4] * Lit. *cut off*

[18:7] a. 2 Kin. 1:6–

8

[18:12] a. 2 Kin. 2:16; Ezek. 3:12, 14; Matt. 4:1; Acts 8:39

[18:17] a. 1 Kin. 21:20

[18:17] b. Josh. 7:25; Acts 16:20

[18:18] a. 1 Kin. 16:30–

33; (2 Chr. 15:2)

[18:19] a. Josh. 19:26; 2 Kin. 2:25

[18:19] b. 1 Kin. 16:33

[18:19] * A Canaanite goddess

[18:19] * Are provided for by Jezebel

[18:20] a. 1 Kin. 22:6

[18:21] a. 2 Kin. 17:41; (Matt. 6:24)

[18:21] b. Josh. 24:15

[18:22] a. 1 Kin. 19:10, 14

[18:22] b. 1 Kin. 18:19

[18:24] a. 1 Kin. 18:38; 1 Chr. 21:26

[18:24] * Lit. *The word is good*

[18:26] a. Ps. 115:5; Jer. 10:5; (1 Cor. 8:4)

[18:26] * *answer*

[18:26] * Lit. *limped about, leaped in dancing around*

[18:27] * *with a loud voice*

[18:28] a. (Lev. 19:28; Deut. 14:1)

[18:28] * *swords*

[18:29] a. Ex. 29:39, 41

[18:29] b. 1 Kin. 18:26

[18:30] a. 1 Kin. 19:10, 14; 2 Chr. 33:16

[18:31] a. Gen. 32:28; 35:10; 2 Kin. 17:34

[18:32] a. (Ex. 20:25; Col. 3:17)

[18:33] a. Gen. 22:9; Lev. 1:6–8

[18:33] b. Judg. 6:20

[18:35] a. 1 Kin. 18:32, 38

[18:36] a. Gen. 28:13; Ex. 3:6; 4:5; (Matt. 22:32)

[18:36] b. 1

Kin.
8:43;
2
Kin.
19:19

[18:36]
c.
Num.
16:28

[18:38]
a.
Gen.
15:17;
Lev.
9:24;
10:1,
2;
Judg.
6:21;
2
Kin.
1:12;
1
Chr.
21:26;
2
Chr.
7:1;
Job
1:16

[18:39]
a.

1 Kin. 18:21, 24

[18:40] a. 2 Kin. 10:25

[18:40] b. Judg. 4:7; 5:21

[18:40] c. (Deut. 13:5; 18:20)

[18:42] a. James 5:17, 18

[18:44] * Lit.

Bind or *Harness*

[18:46] a. 2 Kin. 3:15; Is. 8:11; Ezek. 3:14

[18:46] b. 2 Kin. 4:29; 9:1; Jer. 1:17; 1 Pet. 1:13

[18:46] * Tucked the skirts of his robe in his belt in preparation for quick travel

[19:1] a. 1 Kin. 18:40

[19:2] a. Ruth 1:17; 1 Kin. 20:10; 2 Kin. 6:31

[19:4] a. Num. 11:15; Jer. 20:14–18;

Jon. 4:3, 8

[19:4] * *juniper*

[19:5] * Or *Angel*

[19:6] * *hot stones*

[19:7] * Or *Angel*

[19:8] a. Ex. 24:18; 34:28; Deut. 9:9–11, 18;

Matt.
4:2

[19:8]
b.
Ex.
3:1;
4:27

[19:10]
a.
Rom.
11:3

[19:10]
b.
Num.
25:11,
13;
Ps.
69:9

[19:10]
c.
1
Kin.
18:4

[19:10]
d.
1
Kin.

18:22; Rom. 11:3

[19:11] a. Ex. 19:20; 24:12, 18

[19:11] b. Ex. 33:21, 22

[19:11] c. Ezek. 1:4; 37:7

[19:12] * *a delicate whispering voice*

[19:13] a.

Ex.
3:6;
Is.
6:2

[19:13]
b.
1
Kin.
19:9

[19:14]
a.
1
Kin.
19:10

[19:15]
a.
2
Kin.
8:8–
15

[19:16]
a.
2
Kin.
9:1–
10

[19:16]

b. 1 Kin. 19:19–21; 2 Kin. 2:9–15

[19:17] a. 2 Kin. 8:12; 13:3, 22

[19:17] b. 2 Kin. 9:14—10:28

[19:17] c. (Hos. 6:5)

[19:18] a.

Rom.
11:4

[19:18]
b.
Hos.
13:2

[19:19]
a.
1
Sam.
28:14;
2
Kin.
2:8,
13,
14

[19:20]
a.
(Matt.
8:21,
22;
Luke
9:61,
62);
Acts
20:37

[19:21]
a.
2

Sam.
24:22

1
Kings
20

[20:1]
a.
1
Kin.
115:18,
20;
2
Kin.
6:24

[20:1]
b.
1
Kin.
16:24;
2
Kin.
6:24

[20:6]
*
pleasing

[20:10]
a.
1
Kin.

19:2; 2 Kin. 6:31

[20:10] * Lit. *at my feet*

[20:11] a. Prov. 27:1; (Eccl. 7:8)

[20:12] a. 1 Kin. 20:16

[20:12] * Lit. *booths* or *shelters*

[20:13] a. 1 Kin. 20:28

[20:16] a. 1 Kin. 16:9; 20:12; (Prov. 20:1)

[20:22] a. 2 Sam. 11:1; 1 Kin. 20:26

[20:22] * Lit. *at the return*

[20:24] *

positions

[20:25] * Lit. *that fell from you*

[20:26] a. Josh. 13:4; 2 Kin. 13:17

[20:27] a. Judg. 6:3–5; 1 Sam. 13:5–8

[20:28] a. 1 Kin. 17:18

[20:28] b. 1 Kin. 20:13

[20:31] a. Gen. 37:34; 2 Sam. 3:31

[20:34] a. 1 Kin. 15:20

[20:35] a. 2 Kin. 2:3, 5, 7, 15

[20:35] b.

1 Kin. 13:17, 18

[20:36] a. 1 Kin. 13:24

[20:39] a. 2 Sam. 12:1

[20:39] b. 2 Kin. 10:24

[20:39] * Lit. *weigh*

[20:42] a. 1 Kin.

22:31–37

[1font>20
a.
1 Kin. 21:4

1 Kings 21

[21:1]
a.
Judg. 6:33;
1 Kin. 18:45, 46

[21:2]
a.
1 Sam. 8:14

[21:3]
a.
(Lev. 25:23;
Num. 36:7;

Ezek. 46:18)

[21:5] a. 1 Kin. 19:1, 2

[21:9] * Lit. *at the head*

[21:10] a. (Ex. 22:28; Lev. 24:15, 16); Acts 6:11

[21:10] b. (Lev. 24:14)

[21:12] a. Is. 58:4

[21:13] a. (Ex. 20:16; 23:1, 7)

[21:13] b. 2 Kin. 9:26; 2 Chr. 24:21; Acts 7:58, 59; Heb. 11:37

[21:17] a. (Ps. 9:12)

[21:17] b.

1 Kin. 19:1

[21:18] a. 1 Kin. 13:32; 2 Chr. 22:9

[21:19] a. 1 Kin. 22:38; 2 Kin. 9:26

[21:20] a. 1 Kin. 18:17

[21:20] b. 1 Kin. 21:25;

2
Kin.
17:17;
(Rom.
7:14)

[21:21]
a.
1
Kin.
14:10;
2
Kin.
9:8

[21:21]
b.
2
Kin.
10:10

[21:21]
c.
1
Sam.
25:22

[21:21]
d.
1
Kin.
14:10

[21:22] a. 1 Kin. 15:29

[21:22] b. 1 Kin. 16:3, 11

[21:23] a. 2 Kin. 9:10, 30–37

[21:23] * So with MT, LXX; some Heb. mss., Syr., Tg., Vg.

plot of ground instead of *wall* (cf. 2 Kin. 9:36)

[21:24] a. 1 Kin. 14:11; 16:4

[21:25] a. 1 Kin. 16:30–33; 21:20

[21:25] b. 1 Kin. 16:31

[21:25]

*
incited him

[21:26] a. Gen. 15:16; (Lev. 18:25–30); 2 Kin. 21:11

[21:27] a. Gen. 37:34; 2 Sam. 3:31; 2 Kin. 6:30

[21:29] a. (2 Kin. 22:19)

[21:29] b. 2

Kin. 9:25; 10:11, 17

[22:2] a. 1 Kin. 15:24; 2 Chr. 18:2

[22:3] a. Deut. 4:43; Josh. 21:38; 1 Kin. 4:13

[22 a. 2 Ki 3:7

[22 a.

2
Kin
3:1

[22
a.
1
Kin
18

[22
*
Th
fal
pro

[22
a.
2
Kin
3:1

[22
*
Or
hin

[22
a.
Zec
1:1
21

[22
b.
De
33

[22
a.
Nu
22
24

[22
a.
Nu
27
1
Ki
22
36
2
Ch
18
Ma
9:3
Ma
6:3

[22
a.
Is.
6:1
Ez

1:2
28
Da
7:9

[22
b.
Jol
1:6
2:1
Ps.
10
Da
7:1
Ze
1:1
(M
18
He
1:7
14

[22
a.
Ju
9:2
1
Sa
16
18
19
Jol
12
(E
14
2

Th
2:1

[22
a.
(Ez
14

[22
a.
Jer
20

[22
b.
2
Ch
18

[22
a.
1
Ki
20

[22
a.
2
Ch
16
18
27

[22
a.
Nu
16
De
18
22

[22
a.
2
Ch
35

[22
a.
1
Ki
20

[22
b.
1
Ki
20
2
Ch
18

[22
a.

2
Ch
18

[22
a.
1
Ki
21

[22
*
Tg
Sy
the
wa
his
ar

[22
a.
Ps.
45
Am
3:1

[22
a.
2
Ki
1:2
18

[22
*
Die
anc
joi
his
anc

[22
a.
2
Ch
20

[22
a.
2
Ch
17
20
33

[22
b.
1
Kin
14
15
2
Kin
12

[22
a.
2
Ch
19

[22
b.
2
Ch
18

[22
a.
2
Ch
20

[22
a.
Ge
19
De
23
1
Kin
14
15
2
Kin
23
Jud
7

[22
*
He
qa
on
pra
soc
an
pro
in
rel
rit

[22
a.
2
Sa
8:1
2
Ki
3:9
8:2

[22
a.
2
Ch
20
37

[22
b.
1
Ki
10

[22
c.
1
Ki
9:2

[22
d.
2
Ch
20

[22
e.
1
Ki
9:2

[22
*
Or
shi
of
Ta

[22
a.
2
Ch
21

[22
*
Die
and
joi
his
and

[22
a.
1
Kin
22

[22
a.
1
Kin
15
21

[22
a.
Jud
2:1

[22
b.
1
Kin
16
32

[22
*
In the sar wa tha

Th Ho Spi Wo in

2 KINGS

Introductio

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

A double share of the anointing on Elijah was given to Elisha for his prophetic ministry (2 Kin. 2). The Spirit of God used Elisha in mighty ways to perform signs and wonders and to speak God’s Word to the divided kingdoms.

All of Israel’s kings rebelled

against God, worshiped idols, and did evil in God’s sight. But some of Judah’s kings did obey God. Joash repaired the temple (2 Kin. 12). Uzziah did what was pleasing in God’s sight but did not destroy all the pagan shrines (2 Kin. 15). Hezekiah trusted God’s Spirit to such a degree that “after him was none like him among all the kings of Judah, nor who were before him. For he held fast to the LORD; he did not depart from following Him, but kept His commandm which the LORD had commande Moses” (2 Kin. 18:5–6). Josiah led Judah in a reformation back to God’s Law and ordered the greatest Passover celebration in all of Israel and Judah’s history (2 Kin. 23:21–23).

The Spirit of God left the tribes of the Northern Kingdom of Israel, and they were carried into captivity by Assyria in the eighth century B.C. Then in 586 B.C. King Nebuchadn of Babylon sacked Jerusalem, destroyed the temple, and carried Judah into exile. However, after seventy years of exile, the Jews would return to Jerusalem.

God’s Spirit sustained the nation as long as the Law was obeyed and idolatry was not permitted.

When a people rebel against God’s ways and worship idols, His Spirit no longer protects and sustains a nation.*

2 Kings 1

God Judges

---

* *Ho Spi En Bib* Int to 2 Kin 35

Ahaziah

1Moab [a]rebelled against Israel [b]after the death of Ahab.

2Now [a]Ahaziah fell through the lattice of his upper room in Samaria, and was injured; so he sent messengers and said to them, “Go, inquire of [b]Baal-Zebub,* the god of [1c]Ekron, whether I shall recover from this injury.” [3]But the [*]angel of the LORD said to Elijah the Tishbite, “Arise, go up to meet the messengers of the king of Samaria, and say to them, ‘*Is it* because *there*

is
no
God
in
Israel
that
you
are
going
to
inquire
of
Baal-
Zebub,
the
god
of
Ekron?’
[4]Now
therefore,
thus
says
the
LORD:
‘You
shall
not
come
down
from
the
bed
to
which
you
have
gone
up,
but
you

shall surely die.’ ” So Elijah departed.

[5]And when the messengers returned to *him, he said to them, “Why have you come back?”

[6]So they said to him, “A man came up to meet us, and said to us, ‘Go,

return to the king who sent you, and say to him, “Thus says the LORD: ‘*Is it* because *there is* no God in Israel *that* you are sending to inquire of Baal-Zebub, the god of Ekron? Therefore you shall not come down from the bed to which you have gone up, but you shall surely die.’ ” ’ ”

[7]Then he said to them, “What kind of man *was it* who came up to meet you and told you

these words?”

8 So they answered him, [a]“A hairy man wearing a leather belt around his waist.”

And he said, [b]“It *is* Elijah the Tishbite.”

9 Then the king sent to him a captain of fifty with his fifty men. So he

went up to him; and there he was, sitting on the top of a hill. And he spoke to him: “Man of God, the king has said, ‘Come down!’ ”

10So Elijah answered and said to the captain of fifty, “If I *am* a man of God, then [a]let fire come down from heaven and consume you and your fifty men.” And fire came down from heaven and consumed him and his fifty. 11Then he sent to him another captain of fifty with his fifty men. And he answered and said to him: “Man of God, thus has the king said, ‘Come down quickly!’ ”

[12]So Elijah answered and said to them, “If I *am* a man of God, let

fire come down from heaven and consume you and your fifty men.” And the fire of God came down from heaven and consumed him and his fifty.

[13]Again, he sent a third captain of fifty with his fifty men. And

the third captain of fifty went up, and came and *fell on his knees before Elijah, and pleaded with him, and said to him: “Man of God, please let my life and the life of these fifty servants of yours

[a]be precious in your sight. 14Look, fire has come down from heaven and burned up the first two captains of fifties with their fifties. But let my life now be precious in your sight.”

15And the *angel of the LORD

said to Elijah, “Go down with him; do not be afraid of him.” So he arose and went down with him to the king. 16Then he said to him, “Thus says the LORD: ‘Because you have sent messengers to inquire

of
Baal-
Zebub,
the
god
of
Ekron,
is
it
because
there
is
no
God
in
Israel
to
inquire
of
His
word?
Therefore
you
shall
not
come
down
from
the
bed
to
which
you
have
gone
up,
but
you
shall
surely

die.’
”

[17]So *Ahaziah* died according to the word of the LORD which Elijah had spoken. Because he had no son, [a]Jehoram* became king in his place, in the second year of Jehoram the son of Jehoshaphat, king of Judah.

[18] Now the rest of the acts of Ahaziah which he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel?

PREPARIN *for* SPIRITUAL WARFARE

CONFRON THE ENEMY'S TACTICS

The main

tactic of the enemy is deception. He is a liar and the father of lies. The Word of God exposes the tactics of the enemy. God is light, and His Word is light. The light exposes the enemy and tears away the darkness.

Multitudes of people are deceived by the enemy. There are hosts of lying and deceiving spirits that work under the authority of Satan. These spirits include delusion, deception, lying, seducing, blinding, error, and guile. Our praying can strip the power of these deceiving spirits and cause the eyes of people to be opened. David prayed against the enemy conspiracie of the wicked. The psalms are filled with references to the plans of his enemies to overthrow him. His prayers were the key in destroying these plans and bringing him deliverance David prayed for his enemies to be scattered, confused, exposed, and destroyed.

David's struggles were with natural enemies. Behind these natural enemies were spiritual ones that were opposed to the Davidic kingdom. Jesus was to come from this line and sit upon this throne. David was fighting something beyond the natural. Through the Holy Spirit he was contending with the powers of darkness that were set against the arrival of the kingdom of God.

These powers were also manifested through Herod, who attempted to kill the coming Messiah. Herod was driven by spirits of fear and murder. He was used by Satan to attempt to abort the coming kingdom. However, the Holy Spirit had already been loosed through the prayers of David, and David's throne was secure.

Jesus 1is the Son of David. He sits on the throne of David. David's prophetic prayers were weapons against the enemy’s attempt to stop the promised seed. David’s victories in prayer opened the way for his throne to continue. The throne of wickedness was unable to overcome the throne of righteousne

God taught David. He

became the warrior king. His victories caused his kingdom to be established His victory over the house of Saul came after a long war (2 Sam. 3:1). Don’t become discourage in prayer. Continue to pray. You will become stronger, and the enemy will become weaker.

David consumed his enemies (Ps. 18:37–40). He did not turn until they were destroyed. We must see our spiritual enemies completely destroyed. We must pursue the enemy. *To pursue* means “to follow in order to overtake or capture.” It means “to chase with hostile intent.” We cannot be passive when it comes to warfare.

David’s victories prepared the way for Solomon. Solomon enjoyed peace and prosperity. Solomon’s name means “peace.” *Peace* is the Hebrew word *shalom*. *Shalom* means "peace, prosperity, favor, health, and well-being." Your victories over the enemy will release *shalom*. You will experience greater levels of peace and prosperity.

2 Kings 2

Elijah Ascends to Heaven

1And it came to pass, when the LORD was about to [a]take up Elijah into heaven by a whirlwind, that Elijah went with [b]Elisha from Gilgal. 2Then Elijah said to Elisha, [a]“Stay here, please, for the LORD has sent me on to Bethel.”

But Elisha said, “*As* the LORD lives, and [b]*as* your soul lives, I will not leave you!” So they went down to Bethel.

3 Now [a]the

sons of the prophets who *were* at Bethel came out to Elisha, and said to him, “Do you know that the LORD will take away your master *from over you today?”

And he said, “Yes, I know; keep silent!”

[4]Then

Elijah said to him, “Elisha, stay here, please, for the LORD has sent 1me on to Jericho.”

But he said, “*As* the LORD lives, and *as* your soul lives, I will not leave you!” So they came to Jericho.

5Now

the sons of the prophets who *were* at Jericho came to Elisha and said to him, “Do you know that the LORD will take away your master from over you today?”

So he answered, “Yes, I know; keep silent!”

6Then

Elijah said to him, “Stay here, please, for the LORD has sent me on to the Jordan.”

But he said, “*As* the LORD lives, and *as* your soul lives, I will not leave you!” So the two of them went on. [7]And fifty men of the sons of the prophets went and stood facing *them* at a distance, while the two of them stood by the Jordan. [8]Now Elijah took his mantle, rolled *it* up, and struck the water; and

[a]it was divided this way and that, so that the two of them crossed over on dry [b]ground.

9 And so it was, when they

had crossed over, that Elijah said to Elisha, “Ask! What may I do for you, before I am taken away from you?”

Elisha said, “Please let a double portion of your spirit be upon me.”

[10]So he said, “You have

asked a hard thing. *Nevertheless,* if you see me *when I am* taken from you, it shall be so for you; but if not, it shall not be *so.*” [11]Then it happened, as they continued on and talked, that suddenly

[a]a chariot of fire *appeared* with horses of fire, and separated the two of them; and Elijah [b]went up by a whirlwind into heaven.

12 And Elisha saw *it,* and he cried out, [a]“My father, my father, the chariot of Israel

and its horsemen!” So he saw him no more. And he took hold of his own clothes and tore them into two pieces. 13He also took up the mantle of Elijah that had fallen from him, and went back and stood by the bank of the Jordan. [14]Then he took the mantle of Elijah that had fallen from him, and struck the water, and said, “Where *is* the LORD God of Elijah?” And when he also had struck the water,

[a]it [1]was divided this way and that; and Elisha crossed over.

[15]Now when the sons of the prophets who *were* [a]from[*] Jericho saw him, they said, “The spirit of Elijah rests on Elisha.” And they came to meet him, and

bowed to the ground before him. 16Then they said to him, “Look now, there are fifty strong men with your servants. Please let them go and search for your master, [a]lest perhaps the Spirit of the LORD has taken him up and cast him upon some mountain or into some valley.”

And he said, “You shall not send anyone.”

17But when they urged him till he was [a]ashamed, he said, “Send *them!*” Therefore they sent fifty men, and they searched for three days but did not find him. [18]And when they came back to him, for he had stayed in Jericho, he said to them, “Did I not say to you, ‘Do not go’?”

Elisha Performs Miracles

[19]Then the men

of the city said to Elisha, “Please notice, the situation of this city *is* pleasant, as my lord sees; but the water *is* bad, and the ground barren.”

[20]And he said, “Bring me a new bowl, and put salt in

it.” So they brought *it* to him. [21]Then he went out to the source of the water, and [a]cast in the salt there, and said, “Thus says the LORD: ‘I have [*]healed this water; from it there shall be no more death or barrenness.' "

[22]So the water remains [a]healed to this day, according to the word of Elisha which he spoke.

[23]Then he went up from there to Bethel; and as he was going up the road, some youths

came from the city and mocked him, and said to him, “Go up, you baldhead! Go up, you baldhead!”

[24]So he turned around and looked at them, and [a]pronounced a curse on them in the name of the LORD. And

two female bears came out of the woods and mauled forty-two of the youths.

25Then he went from there to [a]Mount Carmel, and from there he returned to Samaria.

2 Kings 3

Moab Rebels Against Israel

1Now [a]Jehoram

the son of Ahab became king over Israel at Samaria in the eighteenth year of Jehoshaphat king of Judah, and reigned twelve years. [2]And he did evil in the sight of the LORD, but not like his father and mother;

for he put away the *sacred* pillar of Baal [a]that his father had made. 3Nevertheless he persisted in [a]the sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin; he did not depart from them.

4Now Mesha king

of Moab was a sheepbreeder, and he [a]regularly paid the king of Israel one hundred thousand [b]lambs and the wool of one hundred thousand rams. 5But it happened, when [a]Ahab died, that the king of Moab rebelled against the king of Israel.

[6]So King Jehoram went out of Samaria at that time and mustered all Israel. [7]Then he went and sent to Jehoshaphat king of Judah, saying, “The king of Moab has rebelled against me. Will you go with me

to fight against Moab?”

And he said, “I will go up; [a]I *am* as you *are,* my people as your people, my horses as your horses.” 8Then he said, “Which way shall we go up?”

And he answered, “By way

of the Wilderness of Edom.”

[9]So the king of Israel went with the king of Judah and the king of Edom, and they marched on that roundabout route seven days; and there was no water for the army, nor for

the animals that followed them. [10]And the king of Israel said, “Alas! For the LORD has called these three kings together to deliver them into the hand of Moab.”

[11]But [a]Jehoshaphat said, “*Is there* no prophet of the LORD here,

that we may inquire of the LORD by him?”

So one of the servants of the king of Israel answered and said, “Elisha the son of Shaphat *is* here, who [b]poured* water on the hands of Elijah.”

12And Jehoshaphat said,

“The word of the LORD is with him.” So the king of Israel and Jehoshaph1at and the king of Edom [a]went down to him.

13Then Elisha said to the king of Israel, [a]“What have I to do with you? [b]Go to [c]the prophets of your father and the [d]prophets of your mother.”

But the king of Israel said to him, “No, for the LORD has called these three kings *together* to deliver them into the hand of Moab.”

14 And Elisha

said, [a]“*As* the LORD of hosts lives, before whom I stand, surely were it not that I regard the presence of Jehoshaphat king of Judah, I would not look at you, nor see you. 15But now bring me [a]a musician.”

Then it happened, when the musician [b]played, that [c]the hand of the LORD came upon him. 16And he said, “Thus says the LORD: [a]‘Make this valley full of [*]ditches.’ 17For thus says the LORD: ‘You shall not see wind, nor shall you see rain; yet that valley shall be filled with water, so that you, your cattle, and your animals may drink.’ [18]And this is a simple matter in the sight of the LORD; He will also deliver the Moabites into your hand. [19]Also you shall attack every fortified city and every choice city, and shall cut down every good tree, and stop up every spring of water, and ruin every good piece of land with stones.”

[20]Now it happened

in the morning, when [a]the grain offering was offered, that suddenly water came by way of Edom, and the land was filled with water.

21 And when all the Moabites heard that the kings had come up to fight against them,

all who were able to bear arms and older were *gathered; and they stood at the border. [22]Then they rose up early in the morning, and the sun was shining on the water; and the Moabites saw the water on the other side *as* red as blood. [23]And they said, “This is blood; the kings have surely struck swords and have killed one another; now therefore, Moab, to the spoil!”

[24]So when they came to1 the camp of Israel, Israel

rose up and attacked the Moabites, so that they fled before them; and they entered *their* land, killing the Moabites. [25] Then they destroyed the cities, and each man threw a stone on every good piece of land and filled it;

and they stopped up all the springs of water and cut down all the good trees. But they left the stones of [a]Kir Haraseth *intact.* However the slingers surrounded and attacked it.

26 And when the king of Moab saw that

the battle was too fierce for him, he took with him seven hundred men who drew swords, to break through to the king of Edom, but they could not. 27Then [a]he took his eldest son who would have reigned in his place, and offered him *as* a burnt offering upon the wall; and there was great [*]indignation against Israel. [b]So they departed from him and returned to *their own* land.

2 Kings 4

Elisha and the Widow’s Oil

[1]A

certain woman of the wives of [a]the sons of the prophets cried out to Elisha, saying, “Your servant my husband is dead, and you know that your servant feared the LORD. And the creditor is coming [b]to take my two sons to be his slaves.”

[2]So Elisha said to her, “What shall I do for you? Tell me, what do you have in the house?” And she said, “Your maidservant has nothing in the house but a jar of oil.”

[3] Then he said, “Go, borrow vessels from everywhere, from all your neighbors—empty vessels; [a] do not gather just a few. [4] And when you have come in, you shall shut the door behind you and your sons; then pour it

into all those vessels, and set aside the full ones.”

[5]So she went from him and shut the door behind her and her sons, who brought *the vessels* to her; and she poured *it* out. [6]Now it came to pass,

when the vessels were full, that she said to her son, “Bring me another vessel.” And he said to her, “*There is* not another vessel.” So the oil ceased. [7]Then she came and told the man of God. And he said, “Go, sell the oil and pay your debt; and you *and* your sons live on the rest.”

Elisha Raises the Shunammite’s Son

8 Now it happened o1ne day that Elisha went to [a]Shunem, where there *was* a *notable woman, and

she *persuaded him to eat some food. So it was, as often as he passed by, he would turn in there to eat some food. 9And she said to her husband, “Look now, I know that this *is* a holy man of God, who passes by us regularly. [10]Please, let us make *a small upper room on the wall; and let us put a bed for him there, and a table and a chair and a lampstand; so it will be, whenever he comes to us, he can turn in there.”

[11]And it happened one day that he came there, and he turned in to the upper room and lay down there. [12]Then he said to [a]Gehazi his servant, “Call

this Shunammite woman.” When he had called her, she stood before him. [13]And he said to him, “Say now to her, ‘Look, you have been concerned for us with all this care. What *can* *I* do for you? Do you want me to speak on your behalf to the king or to the commander of the army?’ ”

She answered, “I dwell among my own people.”

[14]So he said, “What then *is* to be done for her?”

And Gehazi answered,

"Actually, she has no son, and her husband is old."

[15]So he said, "Call her." When he had called her, she stood in the doorway. [16]Then he said, *"About this time next year you shall embrace a son."

And she

said, "No, my lord. Man of God, [a]do not lie to your maidservant!"

17But the woman conceived, and bore a son when the appointed time had come, of which Elisha had told her.

18And the child grew. Now it happened

one day that he went out to his father, to the reapers. [19]And he said to his father, "My head, my head!"

So he said to a servant, "Carry him to his mother." [20]When he had taken him and brought him to his mother, he sat on her knees till noon, and *then* died. [21]And she went up and laid him on the bed of the man of God, shut *the door* upon him, and went out. [22]Then she called to her husband, and said, “Please send me one of the young men and one of the donkeys, that I may run to the man of God and come back.”

[23]So he said, “Why are you going to him today?

It is neither the [a]New Moon nor the Sabbath.”

And she said, [*]“*It is* well.” [24]Then she saddled a donkey, and said to her servant, “Drive, and go forward; do not slacken the pace for me unless I tell you.”

25And so she departed, and went to the man of God [a]at Mount Carmel.

So it was, when the man of God saw her afar off, that he said to his servant Gehazi, “Look, the Shunammite woman! 26Please run now to meet her, and say to her, ‘*Is it* well with you? *Is it* well with your husband? *Is it* well with the child?’ ”

And she answered, “*It is* well.” [27]Now when she came to the man of God

at
the
hill,
she
caught
him
by
the
feet,
but
Gehazi
came
near
to
push
her
away.
But
the
man
of
God
said,
“Let
her
alone;
for
her
soul
is
in
deep
distress,
and
the
LORD
has
hidden
it
from

me, and has not told me.”

[28]So she said, “Did I ask a son of my lord? [a]Did I not say, ‘Do not deceive me’?”

[29]Then he said to Gehazi, [a]“Get* yourself ready, and take my staff in your hand,

and be on your way. If you meet anyone, [b]do not greet him; and if anyone greets you, do not answer him; but [c]lay my staff on the face of the child.”

30And the mother of the child said, [a]“*As* the LORD lives, and *as* your soul lives, [b]I will not leave you.” So he arose and followed her. 31Now Gehazi went on ahead of them, and laid the staff on the face of the child; but *there was* neither voice nor hearing. Therefore he went back to meet him, and told him, saying, “The child has [a]not awakened.”

[32]When Elisha came into the house, there was the child, lying dead on his bed. [33]He [a]went in therefore, shut the

door behind the two of them, [b]and prayed to the LORD. 34And he went up and lay on the child, and put his mouth on his mouth, his eyes on his eyes, and his hands on his hands; and [a]he stretched himself out on the child, and the flesh of the child became warm. 35He returned and walked back and forth in the house, and again went up [a]and stretched himself out on him; then [b]the child sneezed seven times,

and
the
child
opened
his
eyes.
[36]And
he
called
Gehazi
and
said,
“Call
this
Shunammite
woman.”
So
he
called
her.
And
when
she
came
in
to
him,
he
said,
“Pick
up
your
son.”
[37]So
she
went
in,
fell
at
his

feet, and bowed to the ground; then she [a]picked up her son and went out.

Elisha Purifies the Pot of Stew

[38]And Elisha returned to [a]Gilgal, and *there was* a [b]famine in the land. Now the sons of the prophets

were [c]sitting before him; and he said to his servant, “Put on the large pot, and boil stew for the sons of the prophets.” [39]So one went out into the field to gather herbs, and found a wild vine, and gathered from it a lapful of wild gourds, and came and sliced *them* into the pot of stew, though they did not know *what they were.* 40 Then they served it to the men to eat. Now it happened, as they were eating the stew, that they cried out and said, “Man of God, *there is* [a]death in the pot!” And they could not eat *it.*

41 So he said, “Then bring some flour.” And [a]he put *it* into the pot, and

said, “Serve *it* to the people, that they may eat.” And there was nothing harmful in the pot.

Elisha Feeds One Hundred Men

42Then a man came from [a]Baal Shalisha, [b]and brought the man of God bread of the firstfruits, twenty loaves of barley bread, and newly ripened grain in his knapsack. And he said, “Give *it* to the people, that they may eat.”

[43]But his servant said, [a]“What? Shall I set this before one hundred men?”

He said again,

“Give it to the people, that they may eat; for thus says the LORD: [b]‘They shall eat and have *some* left over.’ ”

[44]So he set *it* before them; and they ate [a]and had *some* left over, according to the

word of the LORD.

2 Kings 5

Naaman's Leprosy Healed

1 Now [a]Naaman, commander of the army of the king of Syria, was [b]a great and honorable man in the eyes of his master, because by him the LORD had

given victory to Syria. He was also a mighty man of valor, *but* a leper. [2]And the Syrians had gone out [a]on* raids, and had brought back captive a young girl from the land of Israel. She *waited on Naaman’s wife. [3]Then she said to her mistress, “If only my master *were* with the prophet who *is* in Samaria! For he would heal him of his leprosy.” [4]And *Naaman* went in and told his master, saying, “Thus and thus said the girl who *is* from the land of Israel.”

5 Then the king of Syria said, “Go now, and I will send a letter to the king of Israel.”

So he departed and [a]took with him ten talents of silver, six thousand *shekels* of gold, and ten changes of clothing. [6]Then he brought the letter to the king of Israel, which said,

[7]And it happened, when the king of Israel read the letter, that he tore his clothes and said, "*Am* I [a]God, to kill and make alive, that this man sends a

man to me to heal him of his leprosy? Therefore please consider, and see how he seeks a quarrel with me.”

[8]So it was, when Elisha the man of God heard that the king of Israel had torn his clothes,

that he sent to the king, saying, “Why have you torn your clothes? Please let him come to me, and he shall know that there is a prophet in Israel.”

[9]Then Naaman went with his horses and chariot, and he

stood at the door of Elisha’s house. 10And Elisha sent a messenger to him, saying, “Go and [a]wash in the Jordan seven times, and your flesh shall be restored to you, and *you shall* be clean.” 11But Naaman became fu1rious, and went away and said, “Indeed, I said to myself, ‘He will surely come out *to me,* and stand and call on the name of the LORD his God, and wave his hand over the place, and heal the leprosy.’

12*Are* not the *Abanah and the Pharpar, the rivers of Damascus, better than all the waters of Israel? Could I not wash in them and be clean?” So he turned and went away in a rage. 13And his [a]servants came near and spoke to him, and said, “My father, *if* the prophet had told you *to do* something great, would you not have done *it?* How much more then, when he says to you, ‘Wash, and be clean’?” [14]So he went down and dipped seven times in the Jordan, according to the saying of the man of God; and his [a]flesh was restored like the flesh of a little child, and [b]he was clean.

15 And he returned to the man

of God, he and all his aides, and came and stood before him; and he said, “Indeed, now I know that *there is* [a]no God in all the earth, except in Israel; now therefore, please take [b]a gift from your servant.”

16 But he said, [a]“*As* the LORD lives, before whom I stand, [b]I will receive nothing.” And he urged him to take *it,* but he refused.

17 So Naaman said, “Then, if not, please let your servant be given two mule-

loads of earth; for your servant will no longer offer either burnt offering or sacrifice to other gods, but to the LORD. [18]Yet in this thing may the LORD pardon your servant: when my master goes into the temple of

Rimmon to worship there, and [a]he leans on my hand, and I bow down in the temple of Rimmon—when I bow down in the temple of Rimmon, may the LORD please pardon your servant in this thing.”

19Then

he said to him, “Go in peace.” So he departed from him a short distance.

Gehazi’s Greed

[20] But [a]Gehazi, the servant of Elisha the man of God, said, “Look, my master has spared Naaman this Syrian, while not receiving from

his hands what he brought; but *as* the LORD lives, I will run after him and take something from him.” [21]So Gehazi pursued Naaman. When Naaman saw *him* running after him, he got down from th1e chariot to meet him, and said, “*Is* all well?”

22 And he said, “All *is* [a]well. My master has sent me, saying, ‘Indeed, just now two young men of the sons of the prophets have come to me from the mountains of Ephraim. Please give

them a talent of silver and two changes of garments.' "

[23]So Naaman said, "Please, take two talents." And he urged him, and bound two talents of silver in two bags, with two changes of garments, and handed *them* to

two of his servants; and they carried *them* on ahead of him. [24]When he came to *the citadel, he took *them* from their hand, and stored *them* away in the house; then he let the men go, and they departed.

[25] Now he went in and stood before his master. Elisha said to him, “Where *did you go,* Gehazi?”

And he said, “Your servant did not go anywhere.”

[26] Then he said to him, “Did not my heart go *with you* when

the man turned back from his chariot to meet you? *Is it* [a]time to receive money and to receive clothing, olive groves and vineyards, sheep and oxen, male and female servants? [27]Therefore the leprosy of Naaman [a]shall cling to you and your descendants forever.” And he went out from his presence [b]leprous, *as white* as snow.

---

2 Kings 6

The Floating Ax Head

[1] And [a] the sons of the prophets said to

Elisha, “See now, the place where we dwell with you is too small for us. [2]Please, let us go to the Jordan, and let every man take a beam from there, and let us make there a place where we may dwell.”

So he answered, “Go.”

[3]Then one said, [a]“Please consent to go with your servants.”

And he answered, “I will go.” [4]So he went with them. And when they came to the Jordan, they cut down trees. [5]But as one was cutting down a tree, the iron *ax head* fell into the water; and he cried out and said, "Alas, master! For it was [a]borrowed."

6 So the man of God said, "Where did it fall?" And he showed him

the place. So [a]he cut off a stick, and threw *it* in there; and he made the iron float. 7Therefore he said, “Pick *it* up for yourself.” So he reached out his hand and took it.

The Blinded Syrians Captured

8 Now the [a]king of Syria was making war against Israel; and he consulted with his servants, saying, “My camp *will be* in such and such a place.” 9 And the man of God sent to the king of Israel, saying, “Beware

that you do not pass this place, for the Syrians are coming down there.” [10]Then the king of Israel sent *someone* to the place of which the man of God had told him. Thus he warned him, and he was watchful there, not just once or twice.

[11]Therefore the heart of the king of Syria was greatly troubled by this thing; and he called his servants and said to them, “Will you not show me which of us *is* for

the king of Israel?”

[12]And one of his servants said, “None, my lord, O king; but Elisha, the prophet who *is* in Israel, tells[1] the king of Israel the words that you speak in your bedroom.”

[13]So he said, “Go

and see where he *is,* that I may send and get him."

And it was told him, saying, "Surely *he is* in [a]Dothan."

14Therefore he sent horses and chariots and a great army there, and they came by night and surrounded the city. [15]And when the servant of the man of God arose early and went out, there was an army, surrounding the city with horses and chariots. And his servant said to him, “Alas, my master! What shall we do?”

[16] So he answered, [a]“Do not fear, for [b]those who *are* with us *are* more than those who *are* with them.” [17] And Elisha prayed, and said, “LORD, I pray, open his eyes that he may see.” Then the LORD [a]opened

the eyes of the young man, and he saw. And behold, the mountain *was* full of [b]horses and chariots of fire all around Elisha. 18So when *the Syrians* came down to him, Elisha prayed to the LORD, and said, "Strike this people, I pray, with blindness.” And [a]He struck them with blindness according to the word of Elisha.

19 Now Elisha said to them, “This *is* not the way, nor *is* this the city. Follow me, and I will bring you

to the man whom you seek.” But he led them to Samaria.

[20]So it was, when they had come to Samaria, that Elisha said, “LORD, open the eyes of these *men,* that they may see.” And the LORD opened their

eyes, and they saw; and there *they were,* inside Samaria!

21Now when the king of Israel saw them, he said to Elisha, “My [a]father, shall I kill *them?* Shall I kill *them?*”

22But he answered, “You shall not kill *them.*

Would you kill those whom you have taken captive with your sword and your bow? [a]Set food and water before them, that they may eat and drink and go to their master.” 23Then he prepared a great feast for them;

and after they ate and drank, he sent them away and they went to their master. So [a]the bands of Syrian *raiders* came no more into the land of Israel.

Syria Besieges Samaria in Famine

24And it happened after this

that [a]Ben-Hadad king of Syria gathered all his army, and went up and besieged Samaria. [25]And there was a great [a]famine in Samaria; and indeed they besieged it until a donkey's head was *sold* for eighty *shekels* of silver, and one-fourth of a *kab of dove droppings for five *shekels* of silver.

[26]Then, as the king of Israel was passing by on the wall, a woman cried out to him, saying, “Help, my lord, O king!”

[27]And he

said, “If the LORD does not help you, where can I find help for you? From the threshing floor or from the winepress?” [28]Then the king said to her, “What is troubling you?”

And she answered, “This woman said to

me, ‘Give your son, that we may eat him today, and we will eat my son tomorrow.’ 29So [a]we boiled my son, and ate him. And I said to her on the next day, ‘Give your son, that we may eat him’; but she has hidden her son.”

30 Now it happened, when the king heard the words of the woman, that he [a]tore his clothes; and as he passed by on the wall, the people looked, and there underneath *he*

had sackcloth on his body. [31]Then he said, [a]“God do so to me and more also, if the head of Elisha the son of Shaphat remains on him today!”

[32]But Elisha was sitting in his house, and [a]the elders were

sitting with him. And *the king* sent a man ahead of him, but before the messenger came to him, he said to the elders, [b]“Do you see how this son of [c]a murderer has sent someone to take away my head? Look, when the messenger comes, shut the door, and hold him fast at the door. *Is* not the sound of his master's feet behind him?" [33]And while he was still talking with them, there was the messenger, coming down to him; and then *the king* said, "Surely this calamity *is* from the LORD; [a]why should I wait for the LORD any longer?"

LESSONS FROM GOD'S WARRIORS

PROFILE

ELISHA

Learn to Recognize That the Battle

Is the Lord’s

A glimpse is often all we need to make spiritual assessment Just a peek can bring fear or faith. What we see with our fleshly eyes often will produce immediate fear and dread. The things we see by faith can dismiss those fears and allow us to procure victory.

In 2 Kings 6 we have the account of Elisha being hunted by the king of Syria. You are likely familiar with the account. (Read 2

Kings 6:8–23.)

The king of Syria had sent soldiers to seize Elisha. He had discovered Elisha was likely the reason Syria could not defeat Israel. He thought, like so many, that great numbers or great wealth or an abundance of virtually anything in this world would bring the victory, so he sent a multitude of soldiers. What he failed to realize was that fire from heaven will consume fifty — or fifty thousand. The host of heaven is always sufficient — no matter the odds.

Elisha was not in a fortress; he had no guards or military presence around him. The appearanc of the situation caused great trepidation for Elisha’s servant. He was consumed by consternati and he saw no way out. However, Elisha’s faith was not diminished because he could see with spiritual eyes. The eyes of our faith are often opened through believing what God has already spoken. “Faith comes by hearing, and hearing by the word of God” (Rom. 10:17).

One of the great things I have learned in my spiritual walk is that the battle is the Lord’s. Genuine faith embraces the unseen hand of God. When the enemies’ armies surround us, there are likely fears within us. We must recall the Word of God and past victories. When the odds seem daunting and it appears that there are more who fight against us than those who are with us, “fear not.”

For in reality, those who are with us to protect us *are more than those who are against us* to destroy us. The holy angels are unspeakabl more numerous and our God infinitely more powerful.

It is interesting to

contrast the faith of Elisha and that of his servant; they both were followers of God. Elisha saw himself safe. His servant saw impending danger and surrender. One had insight to the spiritual realm by faith and by experiences of faith. The other could measure only by what he saw through his fleshly vision.

Elisha saw a guard of angels round about him. He understood by faith that the very gates of hell would not prevail against him. What he saw were “horses and chariots of fire all around” (2 Kin. 6:17). He saw angels of God. Not only are angels God’s messengers but they are also His soldiers.

Elisha knew; his servant didn’t. Those of us who know must help others to see. Calming the fears of others is perhaps the greatest kindness we can show. The fearful and fainthearte are those who still do not see with their spiritual eyes. The clearer sight that we have of the sovereignty and power of God, the better we c1an pray for them. I see the darkness of demon powers both here and in the heavenlies, but I do not focus upon them. I focus on the greatness of

God.

A magnifying glass does not change the object you are viewing, but it changes your perspective of the object. Magnify the Lord; focus on light and truth. Introduce darkness to light. The opening of our eyes by faith in what God has said will also be the silencing of our fears. The darkness can be frightening we must choose to live in the light. Calamities and threats of this earthly life will always be lessened by a clearer vision of God through His Word.

Elisha had already seen God’s hand. He had felt and known His presence. He had already heard God’s familiar words of “fear not.” It is interesting that when the disciples feared they would perish in the storm at sea, they did not fear that Jesus would perish; they knew He was Master. All they could see was the threat that the storm was to them. That's all Elisha's servant could see. The overwhelm number of enemy soldiers captivated his thinking. Elisha asked God to allow him to see in the spirit realm. He said, “Do not fear, for those who are with us are more than those who are with them” (2 Kin.

6:16).*

---

2 Kings 7

[1]Then Elisha said, “Hear the word of the LORD. Thus says the LORD: [a]‘Tomorrow about this time a *seah of fine

flour *shall be sold* for a shekel, and two seahs of barley for a shekel, at the gate of Samaria.' "

2[a]So an officer on whose hand the king leaned answered the man of God and said, "Look, [b]*if* the

LORD would make windows in heaven, could this thing be?”

And he said, “In fact, you shall see *it* with your eyes, but you shall not eat of it.”

The Syrians Flee

3Now there were four leprous men [a]at the entrance of the gate; and they said to one another, “Why are we sitting here until we die? [4]If we say, ‘We will enter the city,’ the famine *is* in the city, and we shall die there. And if we sit here, we die also. Now therefore, come, let us surrender to the [a]army of the Syrians. If they keep us alive, we shall live; and if they kill us, we shall only die.” 5And they rose at twilight to go to the camp of the Syrians; and when they had come to the outskirts of the Syrian camp, to their surprise no one *was* there. [6]For the Lord had caused the army of the Syrians [a]to hear the noise of chariots and the noise of horses—the noise of a great army; so they said to one another, “Look, the king of Israel has hired against us [b]the kings of the Hittites and the kings of the Egyptians to attack us!” [7]Therefore they [a]arose and fled at twilight, and left the camp intact—their tents, their horses, and their donkeys—and they fled for their lives. [8]And when these lepers came to the outskirts of the

camp,
they
went
into
one
tent
and
ate
and
drank,
and
carried
from
it
silver
and
gold
and
clothing,
and
went
and
hid
them;
then
they
came
back
and
entered
another
tent,
and
carried
some
from
there
also,
and
went

and hid *it.*

[9]Then they said to one another, “We are not doing right. This day *is* a day of good news, and we remain silent. If we wait until morning light, some *punishment will come upon us. Now therefore,

come,
let
us
go
and
tell
the
king's
household."
[10]So
they
went
and
called
to
the
gatekeepers
of
the
city,
and
told
them,
saying,
"We
went
to
the
Syrian
camp,
and
surprisingly
no
one
was
there,
not
a
human
sound

—only horses and donkeys tied, and the tents intact.” [11]And the gatekeepers called out, and they told *it* to the king’s household inside.

[12]So the king arose in the night and said to his servants, “Let me now tell

you what the Syrians have done to us. They know that we *are* [a]hungry; therefore they have gone out of the camp to *hide themselves in the field, saying, ‘When they come out of the city, we shall catch them alive, and get into the city.’ ”

[13]And one of his servants answered and said, “Please, let several *men* take five of the remaining horses which are left in the city. Look, they *may either become* like all the multitude

of Israel that are left in it; or indeed, *I say,* they *may become* like all the multitude of Israel left from those who are consumed; so let us send them and see.” 14Therefore they took two chariots with horses;

and the king sent them in the direction of the Syrian army, saying, “Go and see.” [15]And they went after them to the Jordan; and indeed all the road *was* full of garments and weapons which the Syrians had thrown away in their haste. So the messengers returned and told the king. [16]Then the people went out and plundered the tents of the Syrians. So a seah of fine flour was *sold* for a shekel, and two seahs of barle1y for a shekel, [a]according to the word of the LORD.

[17]Now the king had appointed the officer on whose hand he leaned to have charge of the gate. But the people trampled him in the gate, and he died, just

[a]as the man of God had said, who spoke when the king came down to him. 18So it happened just as the man of God had spoken to the king, saying, [a]“Two seahs of barley for a shekel, and a

seah of fine flour for a shekel, shall be *sold* tomorrow about this time in the gate of Samaria."

[19]Then that officer had answered the man of God, and said, "Now look, *if* the LORD would make windows in heaven,

could such a thing be?”

And he had said, “In fact, you shall see *it* with your eyes, but you shall not eat of it.” [20]And so it happened to him, for the people trampled him in the gate, and he died.

2 Kings 8

The King Restores the Shunammite's Land

1 Then Elisha spoke to the woman [a]whose son he had restored to life, saying, "Arise and go, you and your household, and stay wherever you can; for the

LORD [b]has called for a [c]famine, and furthermore, it will come upon the land for seven years.” 2So the woman arose and did according to the saying of the man of God, and she went with her household and dwelt in the land of the Philistines seven years.

[3]It came to pass, at the end of seven years, that the woman returned from the land of the Philistines; and she went to make an appeal to the king for her

house and for her land. 4Then the king talked with [a]Gehazi, the servant of the man of God, saying, “Tell me, please, all the great things Elisha has done.” 5Now it happened, as he was telling the king how he had restored the dead to life, that there was the woman whose son he had [a]restored to life, appealing to the king for her house and for her land. And Gehazi said, “My lord, O king, this *is* the woman, and this *is* her son whom Elisha restored to life.” [6]And when the king asked the woman, she told him.

So the king appointed a certain officer for her, saying, “Restore all that *was* hers, and all the proceeds of the field from the day that she left the land until now.”

Death of Ben-Hadad

[7]Then Elisha went to Damascus, and [a]Ben-Hadad king of Syria was sick; and it was told him, saying, “The man of God has

come here.” 8 And the king said to [a]Hazael, [b]“Take a present in your hand, and go to meet the man of God, and [c]inquire of the LORD by him, saying, ‘Shall I recover from this disease?’ ”

9 So [a]Hazael went

to meet him and took a present with him, of every good thing of Damascus, forty camel-loads; and he came and stood before him, and said, “Your son Ben-Hadad king of Syria has sent me to you, saying, ‘Shall I recover from this disease?’ ”

[10]And Elisha said to him, “Go, say to him, ‘You shall certainly recover.’ However the LORD has shown me that [a]he will really die.” [11]Then he [*]set his countenance in a stare until

he was ashamed; and the man of God [a]wept. 12And Hazael said, “Why is my lord weeping?”

He answered, “Because I know [a]the evil that you will do to the children of Israel: Their strongholds you will set on fire, and their young men you will kill with the sword; and you [b]will dash their children, and rip open their women with child.”

13So Hazael said, “But what [a]*is* your servant—a dog, that he should do this gross thing?”

And Elisha answered, [b]“The LORD has shown me that you *will become* king over Syria.”

14Then he departed from Elisha, and came to his master, who said to him, “What did Elisha say to you?” And he answered, “He told me you would surely recover.” [15]But it happened on the next day that he took a thick cloth and dipped *it* in water, and spread *it* over his face so that he died; and Hazael reigned in his place.

Jehoram Reigns in Judah

16Now [a]in the fifth year of Joram the son of Ahab, king of Israel, Jehoshaphat 1*having been* king of Judah, [b]Jehoram the son of Jehoshaphat began to reign as *king of Judah. 17He was [a]thirty-two years old when he became king, and he reigned eight years in Jerusalem. [18]And he walked in the way of the kings of Israel, just as the house of Ahab had done, for [a]the daughter of Ahab was his wife;

and he did evil in the sight of the LORD. [19] Yet the LORD would not destroy Judah, for the sake of His servant David, [a] as He promised him to give a lamp to him *and* his sons forever.

[20] In his

days [a]Edom revolted against Judah’s authority, [b]and made a king over themselves. [21]So *Joram went to Zair, and all his chariots with him. Then he rose by night and attacked the Edomites who had surrounded him and the captains of the chariots; and the troops fled to their tents. 22Thus Edom has been in revolt against Judah’s authority to this day. [a]And Libnah revolted at that time.

23Now the rest of the acts of Joram, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? [24]So Joram [*]rested with his fathers, and was buried with his fathers in the City of David. Then [a]Ahaziah[*] his son reigned in his place.

Ahaziah Reigns in Judah

25In the twelfth year of Joram the son of Ahab, king of Israel, Ahaziah the son of Jehoram, king of Judah, began to reign. 26Ahaziah *was* [a]twenty-two years old when he became king, and he reigned one year in Jerusalem. His mother's name *was* Athaliah the granddaughter of Omri, king of Israel. 27[a]And he walked in the way of the house of Ahab, and did evil in the sight of the LORD, like the house of Ahab, for he *was* the son-in-law of the house of Ahab.

28Now he went [a]with Joram the son of Ahab to war against Hazael king of Syria at [b]Ramoth Gilead; and the Syrians wounded Joram. 29Then [a]King

Joram went back to Jezreel to recover from the wounds which the Syrians had inflicted on him at *Ramah, when he fought against Hazael king of Syria. [b]And Ahaziah the son of Jehoram, king of Judah, went down to see

Joram the son of Ahab in Jezreel, because he was sick.

2 Kings 9

Jehu Anointed King of Israel

1 And Elisha the prophet called one of [a]the sons of the prophets, and said to him, [b]“Get* yourself ready, take

this flask of oil in your hand, [c]and go to Ramoth Gilead. [2]Now when you arrive at that place, look there for Jehu the son of Jehoshaphat, the son of Nimshi, and go in and make him rise up from among [a]his associates, and take him to an inner room. [3]Then [a]take the flask of oil, and pour *it* on his head, and say, ‘Thus says the LORD: “I have anointed you king over Israel.” ’ Then open the door and flee, and do not delay.”

[4]So the young man, the servant of the prophet, went to Ramoth Gilead. [5]And when he arrived, there *were* the captains of the army sitting; and he said, “I have a message for you,

Commander.”

Jehu said, “For which *one* of us?”

And he said, “For you, Commander.” 6Then he arose and went into the house. And he poured the oil on his head, and said to him, [a]“Thus says the LORD God of

Israel: ‘I have anointed you king over the people of the LORD, over Israel. [7]You shall strike down the house of Ahab your master, that I may [a]avenge the blood of My servants the prophets, and the blood of all the servants of the LORD, [b]at the hand of Jezebel. 8For the whole house of Ahab shall perish; and [a]I will cut off from Ahab all [b]the males in Israel, both [c]bond and free. 9So I will make the house of Ahab like the house of [a]Jeroboam the son of Nebat, and like the house of [b]Baasha the son of Ahijah. 10 [a]The dogs shall eat Jezebel on the plot *of ground* at Jezreel, and *there shall be* none to bury *her.*' " And he opened the door and fled.

[11]Then Jehu came out to the servants of his master, and *one* said to him, "*Is* all well? Why did [a]this madman come to you?"

And he said to them, "You

know the man and his babble.”

[12]And they said, “A lie! Tell us now.”

So he said, “Thus and thus he spoke to me, saying, ‘Thus says the LORD: “I have anointed you king over Israel.” ’ ”

[13]Then each

man hastened [a]to take his garment and put *it* [*]under him on the top of the steps; and they blew trumpets, saying, “Jehu is king!”

Joram of Israel Killed

14So Jehu the son of Jehoshaphat, the son of Nimshi, conspired against [a]Joram. (Now Joram had been defending Ramoth Gilead, he and all Israel, against Hazael king of Syria. 15 But [a]King [*]Joram had returned to Jezreel to recover from the wounds which the Syrians had inflicted on him when he fought with Hazael king of Syria.) And Jehu said, “If you are so minded, let no one leave *or* escape from the city to go and tell *it* in Jezreel.” [16]So Jehu rode in a chariot and went to Jezreel, for

Joram was laid up there; [a]and Ahaziah king of Judah had come down to see Joram.

17Now a watchman stood on the tower in Jezreel, and he saw the company of Jehu as he came, and said, “I see a company of men.”

And Joram said, “Get a horseman and send him to meet them, and let him say, *‘*Is it* peace?’ ”

[18]So the horseman went to meet him, and said, “Thus says the king: ‘*Is it* peace?’ ”

And Jehu said, “What have you to do with peace? *Turn around and follow me.”

So the watchman reported, saying, “The messenger went to them, but is not coming back.”

[19]Then he sent out a second horseman who came to

them, and said, “Thus says the king: ‘*Is it* peace?’ ”

And Jehu answered, “What have you to do with peace? Turn around and follow me.”

[20]So the watchman reported, saying, “He went up to them and is not coming

back; and the driving *is* like the driving of Jehu the son of Nimshi, for he drives furiously!”

[21]Then Joram said, [*]“Make ready.” And his chariot was made ready. Then [a]Joram king of Israel and Ahaziah king of Judah went

out, each in his chariot; and they went out to meet Jehu, and *met him [b]on the property of Naboth the Jezreelite.

22Now it happened, when Joram saw Jehu, that he said, “*Is it* peace, Jehu?”

So he answered, “What

peace,
as
long
as
the
harlotries
of
your
mother
Jezebel
and
her
witchcraft
are
so
many?”

23 Then
Joram
turned

around and fled, and said to Ahaziah, “Treachery, Ahaziah!” [24]Now Jehu *drew his bow with full strength and shot Jehoram between his arms; and the arrow came out at his heart, and he sank down in his chariot. [25]Then *Jehu* said to Bidkar his captain, “Pick *him* up, *and* throw him into the tract of the field of Naboth the Jezreelite; for remember, when you and I were riding together behind Ahab his father, that [a]the LORD laid this [b]burden upon him: [26]‘Surely I saw yesterday the blood of Naboth and the blood of his sons,’ says the LORD, [a]‘and I will repay you *in this plot,’ says the LORD. Now therefore, take *and* throw him on the plot *of* *ground,* according to the word of the LORD.”

Ahaziah of Judah Killed1

[27]But when Ahaziah king of Judah saw *this,* he fled by the road to *Beth Haggan. So Jehu pursued him, and said, *“Shoot him also in the chariot.”

And they shot him at the Ascent of Gur, which is by Ibleam. Then he fled to [a]Megiddo, and died there. [28]And his servants carried him in the chariot to Jerusalem, and buried him in his tomb with his fathers in the City of David. [29]In the eleventh year of Joram the son of Ahab, Ahaziah had become king over Judah.

Jezebel's Violent Death

[30]Now when Jehu had come to Jezreel, Jezebel heard *of it;* [a]and she put paint on

her eyes and adorned her head, and looked through a window. [31]Then, as Jehu entered at the gate, she said, [a]“*Is it* peace, Zimri, murderer of your master?”

[32]And he looked up at the window, and said, “Who *is* on

my side? Who?" So two *or* three eunuchs looked out at him. [33]Then he said, "Throw her down." So they threw her down, and *some* of her blood spattered on the wall and on the horses; and he trampled her underfoot. [34]And when he had gone in, he ate and drank. Then he said, “Go now, see to this accursed *woman,* and bury her, for [a]she was a king’s daughter.” [35]So they went to bury her, but they found no more of her than the skull and the feet and the palms of *her* hands. [36]Therefore they came back and told him. And he said, “This *is* the word of the LORD, which He spoke by His servant Elijah the

Tishbite, saying, [a]‘On the plot *of ground* at Jezreel dogs shall eat the flesh of Jezebel; [37]and the corpse of Jezebel shall be [a]as refuse on the surface of the field, in the plot at Jezreel, so that they shall not say, “Here *lies* Jezebel.” ’ ”

2 Kings 10

Ahab’s Seventy Sons Killed

[1]Now Ahab had seventy sons in Samaria. And Jehu wrote and sent letters to Samaria, to the rulers of *Jezreel, to the elders, and to

*tho1se who reared Ahab’s *sons,* saying:

4 But they were exceedingly afraid, and said, “Look, [a]two kings could not [*]stand up to him; how then can we stand?” 5 And

he
who
was
in
charge
of
the
house,
and
he
who
was
in
charge
of
the
city,
the
elders
also,
and
those
who
reared
the
sons,
sent
to
Jehu,
saying,
“We
are
your
servants,
we
will
do
all
you
tell

us; but we will not make anyone king. Do *what is* good in your sight.” [6]Then he wrote a second letter to them, saying:

Now the king’s sons, seventy persons, *were* with the great men of the city, *who* were rearing them. [7]So it was, when the letter came to them, that they took the king's sons and [a]slaughtered seventy persons, put their heads in baskets and sent *them* to him at Jezreel.

[8]Then a messenger came and told him, saying, "They have brought the heads of the king's

sons."

And he said, "Lay them in two heaps at the entrance of the gate until morning."

[9]So it was, in the morning, that he went out and stood, and said to all the people, "You *are* righteous. Indeed [a]I

conspired against my master and killed him; but who killed all these? 10 Know now that nothing shall [a]fall to the earth of the word of the LORD which the LORD spoke concerning the house of Ahab; for the LORD has done what He spoke [b]by His servant Elijah.” [11]So Jehu killed all who remained of the house of Ahab in Jezreel, and all his great men and his close acquaintances and his priests, until he left him none remaining.

Ahaziah’s

Forty-two Brothers Killed

[12]And he arose and departed and went to Samaria. On the way, at *Beth Eked of the Shepherds, [13][a]Jehu met with the brothers of Ahaziah king of Judah, and said, “Who *are* you?”

So they answered,

“We *are* the brothers of Ahaziah; we have come down to greet the sons of the king and the sons of the queen mother.”

[14]And he said, “Take them alive!” So they took them alive, and [a]killed them at the

well of *Beth Eked, forty-two men; and he left none of them.

The Rest of Ahab's Family Killed

15Now when he departed from there, he *met [a]Jehonadab the son of [b]Rechab, *coming* to meet him; and he greeted him and said to him, “Is your heart right, as my heart *is* toward your heart?”

And Jehonadab answered, “It is.”

Jehu said, “If it is, [c]give *me* your hand.” So he gave *him* his hand, and he took him up to him into the chariot. 16Then he said, “Come with me, and see my [a]zeal for the LORD.” So they had him ride in his chariot. 17And when he came to Samaria, [a]he killed all who remained to Ahab in

Samaria, till he had destroyed them, according to the word of the LORD [b]which He spoke to Elijah.

Worshipers of Baal Killed

18Then Jehu gathered all the people together, and said to them, [a]“Ahab served Baal a little, Jehu will serve him much. [19]Now therefore, call to me all the [a]prophets of Baal, all his servants, and all his priests. Let no one be missing, for I have a great sacrifice for Baal. Whoever is missing shall not live.” But

Jehu acted deceptively, with the intent of destroying the worshipers of Baal. [20]And Jehu said, *“Proclaim a solemn assembly for Baal.” So they proclaimed *it.* [21]Then Jehu sent throughout all Israel; and all the worshipers of Baal came, so that there was not a man left who did not come. So they came into the *1font>temple of Baal, and the [a]temple of Baal was full from one end to the other. [22]And he said to the one in charge of the wardrobe, “Bring out vestments for all the worshipers of Baal.” So he brought out vestments for them. [23]Then Jehu and Jehonadab the son of Rechab went into the temple of Baal, and said to the worshipers of Baal, “Search and see that no servants of the LORD are here with you, but only the worshipers of Baal.” [24]So they went in to offer sacrifices and burnt offerings. Now Jehu had appointed for himself eighty men on the outside, and had said, “*If* any of the men whom I have brought into your hands escapes, *whoever lets him escape, it shall be* [a]his life for the life of the other.”

[25]Now it happened, as soon as he had made an

end of offering the burnt offering, that Jehu said to the guard and to the captains, “Go in *and* kill them; let no one come out!” And they killed them with the edge of the sword; then the guards and the officers threw *them* out, and went into the *inner room of the temple of Baal. 26And they brought the [a]*sacred* pillars out of the temple of Baal and burned them. 27Then they broke down the *sacred* pillar of Baal, and tore down the *temple of Baal and [a]made it a refuse dump to this day. 28Thus Jehu destroyed Baal from Israel.

[29]However Jehu did not turn away from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin, *that is,* from

[a]the golden calves that *were* at Bethel and Dan. 30And the LORD [a]said to Jehu, “Because you have done well in doing *what is* right in My sight, *and* have done to the house of Ahab all that *was* in

My heart, [b]your sons shall sit on the throne of Israel to the fourth *generation.*”

[31]But Jehu [*]took no heed to walk in the law of the LORD God of Israel with all his heart; for he did not depart

from [a]the sins of Jeroboam, who had made Israel sin.

Death of Jehu

32 In those days the LORD began to cut off *parts* of Israel; and [a]Hazael conquered them in all the territory of Israel 33 from the Jordan eastward: all

the land of Gilead—Gad, Reuben, and Manasseh—from [a]Aroer, which *is* by the River Arnon, including [b]Gilead and Bashan.

34 Now the rest of the acts of Jehu, all that he did, and all his might, *are* they

not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? [35]So Jehu *rested with his fathers, and they buried him in Samaria. Then [a]Jehoahaz his son reigned in his place. [36]And the period that Jehu reigned over

Israel in Samaria *was* twenty-eight years.

2 Kings 11

Athaliah Reigns in Judah

[1]When [a]Athaliah [b]the mother of Ahaziah saw that her son was [c]dead, she a1rose and destroyed all the royal heirs. [2]But [*]Jehosheba, the daughter of

King Joram, sister of [a]Ahaziah, took *Joash the son of Ahaziah, and stole him away from among the king's sons *who were* being murdered; and they hid him and his nurse in the bedroom, from Athaliah, so that he was not killed. [3]So he was hidden with her in the house of the LORD for six years, while Athaliah reigned over the land.

Joash Crowned King of Judah

[4]In [a]the seventh year Jehoiada sent and brought the captains of hundreds

—of the bodyguards and the *escorts—and brought them into the house of the LORD to him. And he made a covenant with them and took an oath from them in the house of the LORD, and showed them the king's son. [5]Then he commanded them, saying, "This *is* what you shall do: one-third of you who [*]come on duty [a]on the Sabbath shall be keeping watch over the king's house, [6]one-third *shall be* at the gate of Sur, and one-third at the gate behind the escorts. You shall keep the watch of the house, lest it be broken down. 7The two *contingents of you who go off duty on the Sabbath shall keep the watch of the house of the LORD for the king. [8]But you shall surround the king on all sides, every man with his weapons in his hand; and whoever comes within range, let him be put to death. You are to be with the king as he goes out and as he comes in.”

9[a]So the captains of the hundreds did according to all that Jehoiada the priest commanded. Each of them took his men who were to be on duty on the Sabbath, with those who were going off duty on the Sabbath, and came to Jehoiada the priest. [10]And the priest gave the captains of hundreds the spears and shields which *had belonged* to King David, [a]that were in the temple of the LORD. [11]Then the escorts stood, every man with his weapons in his hand, all around the king, from the right *side of the temple to the left side of the temple, by the altar and the house. [12]And he brought out the king’s son, put the crown on him, and *gave him* the [a]Test1imony;[*] they made him king and anointed him, and they clapped their hands and said, [b]“Long live the king!”

Death of Athaliah

13[a]Now when Athaliah heard the noise of the escorts *and* the people, she came to the people *in* the temple of the LORD. 14When she looked, there was the king standing by [a]a pillar according to custom; and the leaders and the trumpeters were by the king. All the people of the land were rejoicing and blowing trumpets. So Athaliah tore her clothes and cried out, “Treason! Treason!”

[15]And Jehoiada the priest commanded the captains of the hundreds, the officers

of the army, and said to them, “Take her outside *under guard, and slay with the sword whoever follows her.” For the priest had said, “Do not let her be killed in the house of the LORD.” [16]So they seized her; and she went by way of the horses' entrance *into* the king's house, and there she was killed.

17[a]Then Jehoiada [b]made a covenant between the LORD, the king, and the people, that they should be the LORD's people, and *also* [c]between the king and the people. 18 And all the people of the land went to the [a]temple of Baal, and tore it down. They thoroughly [b]broke in pieces its altars and [*]images, and [c]killed Mattan the priest of Baal before the altars. And [d]the priest appointed [*]officers over the house of the LORD. [19]Then he took the captains of hundreds, the bodyguards, the escorts, and all the people of the land; and they brought the king down from the house of the LORD, and went by way of the gate of the escorts to the king’s house. Then he sat on the throne of the kings. [20]So all the people of the land rejoiced; and the city was quiet, for they had slain Athaliah with the sword *in* the king’s house. [21]Jehoash *was* [a]seven years old when he became king.

2 Kings 12

Jehoash Repairs the Temple

[1]In the seventh year of Jehu, [a]Jehoash[*] became king, and he

reigned forty years in Jerusalem. His mother's name *was* Zibiah of Beersheba. 2Jehoash did *what was* right in the sight of the LORD all the days in which [a]Jehoiada the priest instructed him. 3But [a]the [*]high places were not taken away; the people still sacrificed and burned incense on the high places.

4 And Jehoash said to the priests, [a]“All the money of the dedicated gifts that are brought into the house of the LORD—each man’s [b]census* money, each

man’s [c]assessment money—*and* all the money that [*]a man [d]purposes in his heart to bring into the house of the LORD, 5 let the priests take *it* themselves, each from his constituency; and let them repair the [*]damages of the temple, wherever any dilapidation is found.”

6Now it was so, by the twenty-third year of King Jehoash, [a]*that* the priests had not repaired the damages of the temple. 7[a]So King Jehoash called Jehoiada the priest and the *other* priests, and said to them, “Why have you not repaired the damages of the temple? Now therefore, do not take *more* money from your constituency, but deliver it for repairing the damages of the temple.” 8And the priests agreed that they would neither receive *more* money from the people, nor repair the damages of the temple.

9 Then Jehoiada the priest took [a]a chest, bored a hole in its lid, and set it beside the altar, on the right side as

one comes into the house of the LORD; and the priests who [*]kept the door put [b]there all the money brought into the house of the LORD. [10]So it was, whenever they saw that *there was* much money in the chest, that the king's [a]scribe* and the high priest came up and *put it in bags, and counted the money that was found in the house of the LORD. [11]Then they gave the money, which had been apportioned, into the hands of those who did the work, who had the oversight of the house of the LORD; and they *paid it out to the carpenters and builders who worked on the house of the LORD, [12]and to masons and stonecutters, and for buying timber and hewn stone, to [a]repair the damage of the house of the LORD, and for all that was paid out to repair the temple. 13 However [a]there were not made for the house of the LORD basins of silver, trimmers, sprinkling-bowls, trumpets, any articles of gold or articles of silver, from the money brought into the house of the LORD. [14]But they gave that to the workmen, and they repaired the house of the LORD with

it.
15Moreover [a]they did not require an account from the men into whose hand they delivered the money to be paid to workmen, for they dealt faithfully.
16[a]The money from the trespass offerings and the money from the sin offerings

was not brought into the house of the LORD. [b]It belonged to the priests.

Hazael Threatens Jerusalem

17 [a]Hazael king of Syria went up and fought against Gath, and took it; then [b]Hazael set his face to *go up to Jerusalem.

18 And Jehoash king of Judah [a]took all the sacred things that his fathers, Jehoshaphat and Jehoram and Ahaziah, kings of Judah, had dedicated, and his own sacred things, and all the gold found in the treasuries of the house of

the LORD and in the king’s house, and sent *them* to Hazael king of Syria. Then he went away from Jerusalem.

Death of Joash

[19]Now the rest of the acts of *Joash, and all that he did, *are* they not written in

the book of the chronicles of the kings of Judah?

[20]And [a]his servants arose and formed a conspiracy, and killed Joash in the house of *the Millo, which goes down to Silla. [21]For *Jozachar the son of Shimeath and Jehozabad the son

of [*]Shomer, his servants, struck him. So he died, and they buried him with his fathers in the City of David. Then [a]Amaziah his son reigned in his place.

2 Kings 13

Jehoahaz Reigns in Israel

[1] In the twenty-

third year of [a]Joash[*] the son of Ahaziah, king of Judah, [b]Jehoahaz the son of Jehu became king over Israel in Samaria, *and reigned* seventeen years. [2]And he did evil in the sight of the LORD, and followed the [a]sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin. He did not [*]depart from them.

[3]Then [a]the anger of the LORD was aroused against Israel, and He delivered them into the hand of [b]Hazael king of Syria, and

into the hand of [c]Ben-Hadad the son of Hazael, all *their* days. 4 So Jehoahaz [a]pleaded with the LORD, and the LORD listened to him; for [b]He saw the oppression of Israel, because the king of Syria oppressed them. 5 [a]Then the LORD gave Israel a deliverer, so that they escaped from under the hand of the Syrians; and the children of Israel dwelt in their tents as before. [6]Nevertheless they did not depart from the sins of the house of

Jeroboam, who had made Israel sin, *but* walked in them; [a]and the *wooden image also remained in Samaria. 7For He left of the army of Jehoahaz only fifty horsemen, ten chariots, and ten thousand foot soldiers; for the king of

Syria had destroyed them [a]and made them [b]like the dust at threshing.

8 Now the rest of the acts of Jehoahaz, all that he did, and his might, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings

of Israel? 9So Jehoahaz *rested with his fathers, and they buried him in Samaria. Then *Joash his son reigned in his place.

Jehoash Reigns in Israel

10In the thirty-seventh year of Joash king of Judah, *Jehoash the son of

Jehoahaz became king over Israel in Samaria, *and reigned* sixteen years. [11]And he did evil in the sight of the LORD. He did not depart from all the sins of Jeroboam the son of Nebat, who made Israel sin, *but* walked in them.

[12] [a]Now the rest of the acts of Joash, [b]all that he did, and [c]his might with which he fought against Amaziah king of Judah, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings

of Israel? 13So Joash [a]rested* with his fathers. Then Jeroboam sat on his throne. And Joash was buried in Samaria with the kings of Israel.

Death of Elisha

14Elisha had become sick with the illness of which he would die.

Then Joash the king of Israel came down to him, and wept over his face, and said, “O my father, my father, [a]the chariots of Israel and their horsemen!”

15 And Elisha said to him, “Take a bow and some arrows.”

So he took himself a bow and some arrows. [16]Then he said to the king of Israel, “Put your hand on the bow.” So he put his hand *on it,* and Elisha put his hands on the king’s hands. [17]And he said, “Open the east window”; and he opened *it.* Then Elisha said, “Shoot”; and he shot. And he said, “The arrow of the LORD’s deliverance and the arrow of deliverance from Syria; for you must strike the Syrians at

[a]Aphek till you have destroyed *them.*” [18]Then he said, “Take the arrows”; so he[1] took *them.* And he said to the king of Israel, “Strike the ground”; so he struck three times, and stopped. [19]And the man of God was

angry with him, and said, “You should have struck five or six times; then you would have struck Syria till you had destroyed *it!*

[a]But now you will strike Syria *only* three times.”

[20]Then Elisha [*]died, and they buried him. And the [a]*raiding* bands from Moab invaded the land in the spring of the year. [21]So it was, as they were burying

a man, that suddenly they spied a band *of raiders;* and they put the man in the tomb of Elisha; and when the man was let down and touched the bones of Elisha, he revived and stood on his feet.

Israel Recaptures Cities from Syria

22And [a]Hazael king of Syria oppressed Israel all the days of Jehoahaz. 23But the LORD was [a]gracious to them, had compassion on them, and [b]regarded them, [c]because of His covenant with Abraham, Isaac, and Jacob, and would not yet destroy them or cast them from His presence.

[24]Now Hazael king of Syria died. Then Ben-Hadad his son reigned in his place. [25]And *Jehoash the son of Jehoahaz recaptured from the hand of Ben-Hadad,

the son of Hazael, the cities which he had taken out of the hand of Jehoahaz his father by war. [a]Three times Joash defeated him and recaptured the cities of Israel.

2 Kings 14

Amaziah Reigns in Judah

[1]In

[a]the second year of Joash the son of Jehoahaz, king of Israel, [b]Amaziah the son of Joash, king of Judah, became king. 2He was twenty-five years old when he became king, and he reigned twenty-nine years in Jerusalem.

His mother's name was Jehoaddan of Jerusalem. 3And he did *what was* right in the sight of the LORD, yet not like his father David; he did everything [a]as his father Joash had done. 4[a]However the [*]high places were not taken away, and the people still sacrificed and burned incense on the high places.

[5]Now it happened, as soon as the kingdom was established in his hand, that he executed his servants [a]who had murdered his father the king. [6]But

the children of the murderers he did not execute, according to what is written in the Book of the Law of Moses, in which the LORD commanded, saying, [a]“Fathers shall not be put to death for their children, nor shall children be put to death for their fathers; but a person shall be put to death for his own sin.”

7[a]He killed ten thousand Edomites in [b]the Valley of Salt, and took *Sela by war, [c]and called its name Joktheel to this day.

8[a]Then Amaziah sent messengers to *Jehoash the son of Jehoahaz, the son of Jehu, king of Israel, saying, “Come, let us face one another *in battle.*” 9And Jehoash king of Israel sent to Amaziah king of Judah, saying, [a]“The thistle that *was* in Lebanon sent to the [b]cedar that *was* in Lebanon, saying, ‘Give your daughter to my son as wife’; and a wild beast that *was* in Lebanon passed by and trampled the thistle. 10 You have indeed defeated Edom, and [a]your heart has [*]lifted you up. Glory *in that,* and stay at home; for why should you meddle with trouble so that you fall—you and Judah with you?”

[11]But Amaziah would not heed. Therefore

Jehoash king of Israel went out; so he and Amaziah king of Judah faced one another at [a]Beth Shemesh, which *belongs* to Judah. 12And Judah was defeated by Israel, and every man fled to his tent. 13Then Jehoash king of

Israel captured Amaziah king of Judah, the so1n of Jehoash, the son of Ahaziah, at Beth Shemesh; and he went to Jerusalem, and broke down the wall of Jerusalem from [a]the Gate of Ephraim to [b]the Corner Gate—[*]four hundred cubits. 14And he took all [a]the gold and silver, all the articles that were found in the house of the LORD and in the treasuries of the king’s house, and hostages, and returned to Samaria.

15[a]Now the rest of

the acts of Jehoash which he did — his might, and how he fought with Amaziah king of Judah — *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? [16]So Jehoash *rested with his fathers, and was buried in Samaria with the kings of Israel. Then Jeroboam his son reigned in his place.

17[a]Amaziah the son of Joash, king of Judah, lived fifteen years after the death of Jehoash the son of Jehoahaz, king of Israel. 18Now the rest of the acts of Amaziah, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? 19And [a]they formed a conspiracy against him in Jerusalem, and he fled to [b]Lachish; but they sent after him to Lachish and killed him there. [20]Then they brought him on horses, and he was buried at Jerusalem with his fathers in the City of David.

[21]And all the people of Judah took [a]Azariah,* who *was*

sixteen years old, and made him king instead of his father Amaziah. [22]He built [a]Elath* and restored it to Judah, after *the king rested with his fathers.

Jeroboam II Reigns in Israel

[23]In the fifteenth year of Amaziah the son

of Joash, king of Judah, Jeroboam the son of Joash, king of Israel, became king in Samaria, *and reigned* forty-one years. 24And he did evil in the sight of the LORD; he did not depart from all the [a]sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin. [25]He [a]restored the *territory of Israel [b]from the entrance of Hamath to [c]the* Sea of the Arabah, according to the word of the LORD God of Israel, which He had spoken through His servant [d]Jonah the son of Amittai, the prophet who *was* from [e]Gath Hepher. 26For the LORD [a]saw *that* the affliction of Israel *was* very bitter; and whether bond or free, [b]there was no helper for Israel.

27[a]And the LORD did not say that He would blot out the name of Israel from under heaven; but He saved them by the hand of Jeroboam the son of Joash.

28Now the rest of the acts of Jeroboam, and all that he did—his might, how he made war, and how he recaptured for Israel, from [a]Damascus and Hamath, [b]*what had belonged* to Judah—*are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? [29]So Jeroboam [*]rested with his fathers, the kings of Israel. Then [a]Zechariah his son reigned in his place.

2 Kings 15

Azariah Reigns in Judah

[1]In the twenty-seventh year of Jeroboam king of Israel, [a]Azariah the

son of Amaziah, king of Judah, [b]became king. [2]He was sixteen years old when he became king, and he reigned fifty-two years in Jerusalem. His mother's name *was* Jecholiah of Jerusalem. [3]And he did *what was* right in the sight of the LORD, according to all that his father Amaziah had done, 4[a]except that the *high places were not removed; the people still sacrificed and burned incense on the high places. 5Then the LORD [a]struck the king, so that he was a leper until the day of his [b]death; so he [c]dwelt in an isolated house. And Jotham the king’s son *was* over the *royal* house, judging the people of the land.

6 Now the rest of the acts of

Azariah, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? 7So Azariah *rested with his fathers, and [a]they buried him with his fathers in the City of David. Then

Jotham his son reigned in his place.

Zechariah Reigns in Israel

[8]In the thirty-eighth year of Azariah king of Judah, [a]Zechariah the son of Jeroboam reigned over Israel in Samaria six months. [9]And he did evil in the sight

of the LORD, [a]as his fathers had done; he did not depart from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin. 10Then Shallum the son of Jabesh conspired against him, and [a]struck and killed him in front of the people; and he reigned in his place.

[11]Now the rest of the acts of Zechariah, indeed they *are* written in the book of the chronicles of the kings of Israel.

[12]This *was* the word of the

LORD which He spoke to Jehu, saying, [a]“Your sons shall sit on the throne of Israel to the fourth *generation.*” And so it was.

Shallum Reigns in Israel

13Shallum the son of Jabesh became king in the thirty-ninth year of *Uzziah king of Judah; and he reigned a full month in Samaria. 14For Menahem the son of Gadi went up from [a]Tirzah, came to Samaria, and struck Shallum the son of Jabesh in Samaria and killed him; and he reigned in his place.

[15]Now the rest of the acts of Shallum, and the conspiracy which he *led, indeed they *are* written in the book of the chronicles of the kings of Israel.

[16]Then from Tirzah, Menahem attacked [a]Tiphsah, all

who *were* there, and its territory. Because they did not surrend1er, therefore he attacked *it.* All [b]the women there who were with child he ripped open.

Menahem Reigns in Israel

[17]In the thirty-ninth year of Azariah king of Judah,

Menahem the son of Gadi became king over Israel, *and reigned* ten years in Samaria. [18]And he did evil in the sight of the LORD; he did not depart all his days from the sins of Jeroboam the son of

Nebat, who had made Israel sin. 19 [a]Pul* king of Assyria came against the land; and Menahem gave Pul a thousand talents of silver, that his *hand might be with him to [b]strengthen the kingdom under his control. 20 And Menahem [a]exacted* the money from Israel, from all the very wealthy, from each man fifty shekels of silver, to give to the king of Assyria. So the king of Assyria turned back, and did not stay there in the land.

[21]Now the

rest of the acts of Menahem, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Israel? [22]So Menahem *rested with his fathers. Then Pekahiah his son reigned in his place.

Pekahiah Reigns in Israel

[23]In the fiftieth year of Azariah king of Judah, Pekahiah the son of Menahem became king over Israel in Samaria, *and reigned* two years. [24]And he did evil in the sight of the LORD; he did

not depart from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin. [25]Then Pekah the son of Remaliah, an officer of his, conspired against him and *killed him in Samaria, in the [a]citadel of the king’s house, along with Argob and Arieh; and with him were fifty men of Gilead. He killed him and reigned in his place.

[26]Now the rest of the acts of Pekahiah, and all that he did, indeed they *are* written in

the book of the chronicles of the kings of Israel.

Pekah Reigns in Israel

27In the fifty-second year of Azariah king of Judah, [a]Pekah the son of Remaliah became king over Israel in Samaria, *and reigned* twenty years. 28An1d he did evil in the sight of the LORD; he did not depart from the sins of Jeroboam the son of Nebat, who had made Israel sin. [29]In the days of Pekah king of Israel, *Tiglath-Pileser king of Assyria

[a]came and took [b]Ijon, Abel Beth Maachah, Janoah, Kedesh, Hazor, Gilead, and Galilee, all the land of Naphtali; and he [c]carried them captive to Assyria. 30Then Hoshea the son of Elah led a conspiracy against Pekah the son of Remaliah,

and struck and killed him; so he [a]reigned in his place in the twentieth year of Jotham the son of Uzziah.

[31]Now the rest of the acts of Pekah, and all

that he did, indeed they *are* written in the book of the chronicles of the kings of Israel.

Jotham Reigns in Judah

[32]In the second year of Pekah the son of Remaliah, king of Israel, [a]Jotham the son of Uzziah,

king of Judah, began to reign. [33]He was twenty-five years old when he became king, and he reigned sixteen years in Jerusalem. His mother's name *was* *Jerusha the daughter of Zadok. [34]And he did *what was* right in the sight of the LORD; he did [a]according to all that his father Uzziah had done. 35 [a]However the [*]high places were not removed; the people still sacrificed and burned incense on the high places. [b]He built the Upper Gate of the house of the LORD.

[36]Now the rest of the acts of Jotham, and all that he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? [37]In those days the LORD began to send

[a]Rezin king of Syria and [b]Pekah the son of Remaliah against Judah. 38So Jotham [*]rested with his fathers, and was buried with his fathers in the City of David his father. Then Ahaz his son reigned in his place.

2 Kings 16

Ahaz Reigns in Judah

[1]In the seventeenth year of Pekah the son of Remaliah, Ahaz the son of Jotham, king of Judah, began to reign. [2]Ahaz *was* twenty years old when he became king, and he reigned

sixteen years in Jerusalem; and he did not do *what was* right in the sight of the LORD his God, as his father David *had done.* [3]But he walked in the way of the kings of Israel; indeed [a]he made his son pass through the fire, according to the [b]abominations of the nations whom the LORD had cast out from before the children of Israel. [4]And he sacrificed and burned incense on the [a]high places, [b]on the hills, and under every green tree.

5[a]Then Rezin king of Syria and Pekah the son of Remaliah, king of Israel, came up to Jerusalem to *make* war; and they besieged Ahaz but could not overcome *him.* 6At that time Rezin king of Syria

[a]captured [*]Elath for Syria, and drove the men of Judah from Elath. Then the [*]Edomites went to Elath, and dwell there to this day.

[7]So Ahaz sent messengers to [a]Tiglath-Pileser[*] king of Assyria, saying, “I *am* your servant and

your son. Come up and save me from the hand of the king of Syria and from the hand of the king of Israel, who rise up against me.” 8And Ahaz [a]took the silver and gold that was found in the house of the LORD, and in the treasuries of the king’s house, and sent *it as* a present to the king of Assyria. 9So the king of Assyria heeded him; for the king of Assyria went up against [a]Damascus and [b]took it, carried *its people* captive to [c]Kir, and killed Rezin.

10 Now King Ahaz went to Damascus to meet Tiglath-Pileser king of Assyria, and saw an altar that *was* at Damascus; and King Ahaz sent to Urijah the

priest the design of the altar and its pattern, according to all its workmanship. 11Then [a]Urijah the priest built an altar according to all that King Ahaz had sent from Damascus. So Urijah the priest made *it* before King Ahaz came back from Damascus. 12And when the king came back from Damascus, the king saw the altar; and [a]the king approached the altar and made offerings on it. 13So he burned his burnt offering and his grain offering; and he poured his drink offering and sprinkled the blood of his peace offerings on the altar. [14]He also brought [a]the bronze altar which *was* before the LORD, from the front of the *temple—from between the *new* altar and the house of the LORD—and put it on the north side of the *new* altar. 15Then King Ahaz commanded Urijah the priest, saying, “On the great *new* altar burn [a]the morning burnt offering, the evening grain offering, the king’s

burnt
sacrifice,
and
his
grain
offering,
with
the
burnt
offering
of
all
the
people
of
the
land,
their
grain
offering,
and
their
drink
offerings;
and
sprinkle
on
it
all
the
blood
of
the
burnt
offering
and
all
the
blood
of

the sacrifice. And the bronze altar shall be for me to inquire *by*.” [16]Thus did Urijah the priest, according to all that King Ahaz commanded.

[17][a]And King Ahaz cut off [b]the panels of the carts, and removed the lavers from

them; and he took down [c]the Sea from the bronze oxen that *were* under it, and put it on a pavement of stones. 18Also he removed the Sabbath pavilion which they had built in the temple, and he removed the king’s outer entrance from the house of the LORD, on account of the king of Assyria.

[19]Now the rest of the acts of Ahaz which he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings

of Judah? 20So Ahaz rested with his fathers, and [a]was buried with his fathers in the City of David. Then Hezekiah his son reigned in his place.

2 Kings 17

Hoshea Reigns in Israel

1In the twelfth year of

Ahaz king of Judah, [a]Hoshea the son of Elah became king of Israel in Samaria, *and he reigned* nine years. 2And he did evil in the sight of the LORD, but not as the kings of Israel who were before him. 3[a]Shalmaneser king of Assyria came up against him; and Hoshea [b]became his vassal, and paid him tribute money. 4And the king of Assyria uncovered a conspiracy by Hoshea; for he had sent messengers to So, king of Egypt, and brought no tribute to the king of Assyria, as *he had done* year by year. Therefore the king of Assyria shut him up, and bound him in prison.

Israel Carried Captive to Assyria

[5] Now [a]the king of Assyria went throughout

all the land, and went up to Samaria and besieged it for three years. 6[a]In the ninth year of Hoshea, the king of Assyria took Samaria and [b]carried Israel away to Assyria, [c]and placed them in Halah and by the

Habor, the River of Gozan, and in the cities of the Medes.

7For [a]so it was that the children of Israel had sinned against the LORD their God, who had brought them up out of the land of Egypt, from under the hand of Pharaoh king of Egypt; and they had [b]feared other gods, [8]and [a]had walked in the statutes of the nations whom the LORD had cast out from before the children of Israel, and of the kings of

Israel, which they had made. 9Also the children of Israel secretly did against the LORD their God things that *were* not right, and they built for themselves *high places in all their cities, [a]from watchtower to fortified city. 10[a]They set up for themselves *sacred* pillars and [b]wooden images*[c]on every high hill and under every green tree. 11There they burned incense on all the high places, like the nations whom the LORD had carried away before them; and they did wicked things to provoke the LORD to anger, 12for they served idols, [a]of which the LORD had said to them, [b]"You shall not do this thing."

13Yet the LORD testified against Israel and against Judah, by all of His [a]prophets, [b]every seer, saying, [c]“Turn from your evil ways, and keep My commandments *and* My statutes, according to all the law which I commanded your fathers, and which I sent to you by My servants the prophets.” 14Nevertheless they would not hear, but [a]stiffened their necks, like the necks of their fathers, who [b]did not believe in the LORD their God. 15And they [a]rejected His statutes [b]and His covenant that He had made with their fathers, and His testimonies which He had testified against them; they followed [c]idols, [d]became idolaters, and *went* after the nations who *were* all around them, *concerning* whom the LORD had charged them that they should [e]not do like them. [16]So they left all the commandments of t1he

LORD their God, [a]made for themselves a molded image *and* two calves, [b]made a wooden image and worshiped all the [c]host of heaven, [d]and served Baal. 17 [a]And they caused their sons and daughters to pass through the fire, [b]practiced witchcraft and soothsaying, and [c]sold themselves to do evil in the sight of the LORD, to provoke Him to anger. 18 Therefore the LORD was very angry with Israel, and removed them from His sight; there was none left [a]but the tribe of Judah alone.

19Also [a]Judah did not keep the commandments of the LORD their God, but walked in the statutes of Israel which they made. 20And the LORD rejected all the descendants of Israel, afflicted them, and [a]delivered them into the hand of plunderers, until He had cast them from His [b]sight. 21 For [a]He tore Israel from the house of David, and [b]they made Jeroboam the son of Nebat king. Then Jeroboam drove Israel from following the LORD, and made them commit a great sin. [22]For the children of Israel walked in all the sins of Jeroboam which he did; they did not depart from them, [23]until the LORD removed Israel out of His sight, [a]as He had said by all His servants the prophets. [b]So Israel was carried away from their own land to Assyria, *as it is* to this day.

Assyria Resettles Samaria

24 [a]Then the king of Assyria brought *people* from Babylon, Cuthah, [b]Ava, Hamath, and from Sepharvaim,

and placed *them* in the cities of Samaria instead of the children of Israel; and they took possession of Samaria and dwelt in its cities. 25And it was so, at the beginning of their dwelling there, *that* they did not fear the LORD; therefore the LORD sent lions among them, which killed *some* of them. [26]So they spoke to the king of Assyria, saying, “The nations whom you have removed and placed in the cities of Samaria do not know the rituals of the God of the land; therefore He has sent lions among them, and indeed, they are killing them because they do not know the rituals of the God of the land.” [27]Then the king of Assyria commanded, saying, “Send there one of the priests whom you brought from there; let him go and dwell there, and let him teach them the rituals of the God of the land.” [28]Then one of the priests whom they had carried away from Samaria came and dwelt in Bethel, and taught them how they should fear the LORD.

29However every nation continued to make gods of its own, and put *them* [a]in the shrines on the high places which the Samaritans had made, *every* nation in the cities where they dwelt. 30The men of [a]Babylon made Succoth Benoth, the men of Cuth made Nergal, the men of Hamath made Ashima, 31[a]and the Avites made Nibhaz and Tartak; and the Sepharvites [b]burned their children in fire to Adrammelech and Anammelech, the gods of Sepharvaim. [32]So they feared the LORD, [a]and from every class they appointed for themselves priests of the *high places, who sacrificed for them in the shrines of the high places. 33[a]They feared the LORD, yet served their own gods—according to the rituals of the nations from among whom they were carried away.

34To this day they continue practicing the former rituals; they do not fear the LORD, nor do they follow their statutes or their ordinances, or the law and commandment which the LORD had commanded the children of Jacob, [a]whom He named Israel, [35]with whom the LORD had made a covenant and charged them, saying: [a]“You shall not fear other gods, nor [b]bow down to them nor serve them nor sacrifice to them; [36]but the LORD, who [a]brought you up from the land of Egypt with great power and [b]an outstretched arm, [c]Him you shall fear, Him you shall worship, and to Him you shall offer sacrifice. [37]And the statutes, the ordinances, the law, and the commandment which He wrote for you, [a]you shall be careful to observe forever; you shall not fear other gods. [38]And the covenant that I have made with you, [a]you shall not forget, nor shall you fear other gods. 39But the LORD your God you shall fear; and He will deliver you from the hand of all your enemies.” 40However they did not obey, but they followed their former rituals. 41[a]So these nations feared the LORD, yet served their carved images; also their children and their children's children have continued doing as their fathers did, even to this day.

Kings 18

Hezekiah Reigns in Judah

1Now it came to pass in the third year of [a]Hoshea the son of Elah, king of Israel, *that* [b]Hezekiah the son of Ahaz, king of Judah, began to reign. 2He was twenty-five years old when he became king, and he reigned twenty-nine years in Jerusalem. His mother's name *was* [a]Abi* the daughter of Zechariah. 3And he did *what was* right in the sight of the LORD, according to all that his father David had done.

4[a]He removed the *high places and broke the *sacred* pillars, cut down the *wooden image and broke in pieces the [b]bronze serpent that Moses had made; for until those days the children of Israel burned incense to it, and called it [*]Nehushtan. 5 He [a]trusted in the LORD God of Israel, [b]so that after him was none like him among all the kings of Judah, nor who were before him. 6 For he [a]held fast to the LORD;

he did not depart from following Him, but kept His commandments, which the LORD had commanded Moses. 7The LORD [a]was with him; he [b]prospered wherever he went. And he [c]rebelled against the king of Assyria and did not serve him.

8[a]He [*]subdued the Philistines, as far as Gaza and its territory, [b]from watchtower to fortified city.

9Now [a]it came to pass in the fourth year of King Hezekiah, which *was* the seventh year of Hoshea the son of Elah, king of Israel, *that* Shalmaneser king of Assyria came up against Samaria and besieged it. [10]And at the end of three years they took it. In the sixth year of Hezekiah, that *is,* [a]the ninth year of Hoshea king of Israel, Samaria was taken. 11[a]Then the king of Assyria carried Israel away captive to Assyria, and put them [b]in Halah and by the Habor, the River of Gozan, and in the cities of the Medes, 12because they [a]did not obey the voice of the LORD their God, but transgressed His covenant *and* all that Moses the servant of the LORD had commanded; and they would neither hear nor do *them.*

13And [a]in the fourteenth year of King Hezekiah, Sennacherib king of

Assyria came up against all the fortified cities of Judah and took them. [14]Then Hezekiah king of Judah sent to the king of Assyria at Lachish, saying, “I have done wrong; turn away from me; whatever you impose on me

I will pay.” And the king of Assyria assessed Hezekiah king of Judah three hundred talents of silver and thirty talents of gold. 15So Hezekiah [a]gave *him* all the silver that was found in the house of the LORD and in the treasuries of the king’s house. [16]At that time Hezekiah stripped *the gold from* the doors of the temple of the LORD, and *from* the pillars which Hezekiah king of Judah had overlaid, and gave *it to the king of Assyria.

Sennacherib Boasts Against the LORD

[17]Then the king of Assyria sent [1]*the* *Tartan, *the* *Rabsaris, *and the* *Rabshakeh from Lachish, with a great army against Jerusalem, to King Hezekiah. And they went up and came to Jerusalem. When

they had come up, they went and stood by the [a]aqueduct from the upper pool, [b]which *was* on the highway to the Fuller's Field. [18]And when they had called to the king, [a]Eliakim the son of Hilkiah, who *was* over the household, Shebna the *scribe, and Joah the son of Asaph, the recorder, came out to them. 19Then *the* Rabshakeh said to them, “Say now to Hezekiah, ‘Thus says the great king, the king of Assyria: [a]“What confidence *is* this in which you trust? [20]You speak of *having* plans and power for war; but *they are* [*]mere words. And in whom do you trust, that you rebel against me? [21][a]Now look! You are trusting in the staff of this broken reed, Egypt, on which if a man leans, it will go into his hand and pierce it. So *is* Pharaoh king of Egypt to all who trust in him. [22]But if you say to me, ‘We trust in the LORD our God,' *is* it not He [a]whose [*]high places and whose altars Hezekiah has taken away, and said to Judah and Jerusalem, 'You shall worship before this altar in Jerusalem'?" '

[23]Now therefore, I urge you, give a pledge to

my master the king of Assyria, and I will give you two thousand horses—if you are able on your part to put riders on them! [24]How then will you repel one captain of the least of my master's servants, and put your trust in Egypt for chariots and horsemen? [25]Have I now come up without the LORD against this place to destroy it? The LORD said to me, ‘Go up against this land, and destroy it.’ ”

[26][a]Then

Eliakim the son of Hilkiah, Shebna, and Joah said to *the* Rabshakeh, “Please speak to your servants in [b]Aramaic, for we understand *it;* and do not speak to us in *Hebrew in the hearing of the people who *are* on the wall.”

[27]But *the* Rabshakeh said to them, “Has my master sent me to your master and to you to s1peak these words, and not to the men who sit on the wall, who will eat and drink their own

waste with you?”

[28]Then *the* Rabshakeh stood and called out with a loud voice in *Hebrew, and spoke, saying, “Hear the word of the great king, the king of Assyria! [29]Thus says the king: [a]‘Do not let Hezekiah deceive you,

for he shall not be able to deliver you from his hand; [30]nor let Hezekiah make you trust in the LORD, saying, “The LORD will surely deliver us; this city shall not be given into the hand of the king of Assyria.” ’

[31]Do not listen to Hezekiah; for thus says the king of Assyria: ‘Make *peace* with me *by a present and come out to me; and every one of you eat from his own [a]vine and every one

from his own fig tree, and every one of you drink the waters of his own cistern; 32until I come and take you away to a land like your own land, [a]a land of grain and new wine, a land of bread and vineyards, a land of olive groves and honey, that you may live and not die. But do not listen to Hezekiah, lest he persuade you, saying, “The LORD will deliver us.” 33[a]Has any of the gods of the nations at all delivered its land from the hand of the king of Assyria? [34] Where *are* the gods of [a]Hamath and Arpad? Where *are* the gods of Sepharvaim and Hena and [b]Ivah? Indeed, have they delivered Samaria from my hand? [35]Who among all the gods of the lands have delivered their countries from my hand, [a]that the LORD should deliver Jerusalem from my hand?' "

[36]But the people held their peace and answered him not a word; for the

king's commandment was, "Do not answer him." [37]Then Eliakim the son of Hilkiah, who *was* over the household, Shebna the scribe, and Joah the son of Asaph, the recorder, came to Hezekiah [a]with *their* clothes torn, and told him the words of *the* Rabshakeh.

2 Kings 19

Isaiah Assures Deliverance

[1]And [a]so i1t was, when King Hezekiah heard *it,* that he tore his clothes, covered himself with [b]sackcloth, and went into the house of the LORD. [2]Then he sent

Eliakim, who *was* over the household, Shebna the scribe, and the elders of the priests, covered with sackcloth, to Isaiah the prophet, the son of Amoz. [3]And they said to him, “Thus says Hezekiah: ‘This day *is* a day of trouble, and rebuke, and blasphemy; for the children have come to birth, but *there is* no strength to *bring them forth.

4[a]It may be that the LORD your God will hear all the words of *the* Rabshakeh, whom his master the king of Assyria has sent to [b]reproach the living God, and will [c]rebuke the words which the LORD your God has heard. Therefore lift up *your* prayer for the remnant that is left.' "

[5]So the servants of King Hezekiah came to Isaiah.

6[a]And Isaiah said to them, “Thus you shall say to your master, ‘Thus says the LORD: “Do not be [b]afraid of the words which you have heard, with which the [c]servants of the king of Assyria have blasphemed Me. 7Surely

I will send [a]a spirit upon him, and he shall hear a rumor and return to his own land; and I will cause him to fall by the sword in his own land.” ’ ”

Sennacherib’s Threat and Hezekiah’s Prayer

8 Then *the* Rabshakeh returned and found the king of Assyria warring against Libnah, for he heard that he had departed [a]from Lachish. 9 And [a]the king heard concerning Tirhakah king of Ethiopia, “Look, he has come out to make war with

you.” So he again sent messengers to Hezekiah, saying, [10]“Thus you shall speak to Hezekiah king of Judah, saying: ‘Do not let your God [a]in whom you trust deceive you, saying, “Jerusalem shall not be given into the hand of the king of Assyria.” 11Look! You have heard what the kings of Assyria have done to all lands by utterly destroying them; and shall you be delivered? 12[a]Have the gods of the nations delivered those whom my fathers have destroyed, Gozan and Haran and Rezeph, and the people of [b]Eden who *were* in Telassar? 13 [a]Where *is* the king of Hamath, the king of Arpad, and the king of the city of Sepharvaim, Hena, and Ivah?' "

14 [a]And Hezekiah received the

letter from the hand of the messengers, and read it; and Hezekiah went up to the house of the LORD, and spread it before the LORD. [15]Then Hezekiah prayed before the LORD, and said: “O LORD God of Israel, *the*

One [a]who dwells *between* the cherubim, [b]You are God, You alone, of all the kingdoms of the earth. You have made heaven and earth. 16[a]Incline Your ear, O LORD, and hear; [b]open Your eyes, O LORD, and see; and hear the words of Sennacherib, [c]which he has sent to reproach the living God. 17 Truly, LORD, the kings of Assyria have laid waste the nations and their lands, 18 and have cast their gods into the fire; for they *were* [a]not gods, but [b]the work of men’s hands—wood and stone. Therefore they destroyed them. 19Now therefore, O LORD our God, I pray, save us from his hand, [a]that all the kingdoms of the earth may [b]know that You *are* the

LORD God, You alone.”

The Word of the LORD Concerning Sennacherib

20Then Isaiah the son of Amoz sent to Hezekiah, saying, “Thus says the LORD God of Israel: [a]‘Because you have prayed to Me against Sennacherib king of Assyria, [b]I have heard.' [21]This *is* the word which the LORD has spoken concerning him:

'Th
vir
[a]th
dau
of
Zio

Ha
des
yo
lau
yo
to
sco

Th
dau
of
Jer

[b]H
sha
her
hea
bel
yo

ba

22‘
ha
yo
rep
an
bla

Ag
wh
ha
yo
rai
yo
voi

An
lift
up
yo
ey
on
hig

Ag
[a]th
Ho
On
of
Isr

23[a]
yo
me
yo
ha
rep
the
Lo

An
sai
[b]“E
the
mu
of
my
cha

I
hav
cor
up
to
the
hei
of
the
mo

To
the
lim
of
Lel

I
wi
cut
do
its
tal
cec

An
its
che
cyp
tre

I

wi
ent
the
ext
of
its
bo

To
its
fru
for

32 “There thus says the LORD concerning the king of Assyria:

Sennache Defeat and Death

[351]And [a]it came to pass on a certain night that the *angel of the LORD went out, and killed in the camp of the Assyrians

one hundred and eighty-five thousand; and when *people* arose early in the morning, there were the corpses—all dead. [36]So Sennacheri king of Assyria departed and went away, returned *home,* and remained at [a]Nineveh. [37]Now it came to pass, as he was worshiping in the temple of Nisroch his god, that his sons [a]Adrammel and Sharezer [b]struck him down with the sword; and they escaped into the land of Ararat. Then [c]Esarhaddo his son reigned in his place.

2 Kings 20

Hezekiah Life Extended

[1]In [a]those days Hezekiah was sick and near death. And Isaiah the prophet, the son of Amoz, went to him and said to him, “Thus says the LORD: ‘Set your house in order,

for you shall die, and not live.’ ”

[2]Then he turned his face toward the wall, and prayed to the LORD, saying, [3][a]“Rememb now, O LORD, I pray, how I have walked before You in truth and with a loyal

heart, and have done *what was* good in Your sight.” And Hezekiah wept bitterly.

[4]And it happened, before Isaiah had gone out into the middle court, that the word of the LORD came to him, saying, [5]“Return and tell Hezekiah

[a]the leader of My people, ‘Thus says the LORD, the God of David your father: [b]“I have heard your prayer, I have seen [c]your tears; surely I will heal you. On the third day you shall go up to the

house of the LORD. [6]And I will add to your days fifteen years. I will deliver you and this city from the hand of the king of Assyria; and [a]I will defend this city for My own sake, and for the sake of My servant David.” ’ ”

7Then [a]Isaiah said, “Take a lump of figs.” So they took and laid *it* on the boil, and he recovered.

8And Hezekiah said to Isaiah, [a]“What *is* the sign that the LORD will heal me, and that I shall go up to the house of the LORD the third day?”

9 Then Isaiah said, [a]“This is the sign to you from the LORD, that the LORD will do the thing which He has

spoken: *shall* the shadow go forward ten degrees or go backward ten degrees?”

10And Hezekiah answered, “It is an easy thing for the shadow to go down ten *degrees; no, but let the shadow go backward ten degrees.”

11So Isaiah

the prophet cried out to the LORD, and [a]He brought the shadow ten [*]degrees backward, by which it had gone down on the sundial of Ahaz.

The Babylonian Envoys

12 [a]At that time [*]Berodach-Baladan the son of Baladan, king of

Babylon, sent letters and a present to Hezekiah, for he heard that Hezekiah had been sick. 13And [a]Hezekiah was attentive to them, and showed them all the house of his treasures—the silver and gold, the spices and precious ointment, and *all *his armory—all that was found among his treasures. There was nothing in his house or in all his dominion that Hezekiah did not show them.

14 Then Isaiah the prophet went to King Hezekiah, and said

to him, “What did these men say, and from where did they come to you?”

So Hezekiah said, “They came from a far country, from Babylon.”

15And he said, “What have they seen in your house?”

So Hezekiah answered, [a]“They

have seen all that *is* in my house; there is nothing among my treasures that I have not shown them.”

[16]Then Isaiah said to Hezekiah, “Hear the word of the LORD: [17]‘Behold, the days are coming when all that *is*

in your house, and what your fathers have accumulate until this day, [a]shall be carried to Babylon; nothing shall be left,' says t1he LORD. 18 'And [a]they shall take away some of your sons who will *descend from you, whom you will beget; [b]and they shall be [c]eunuchs in the palace of the king of Babylon.' "

19So Hezekiah said to Isaiah, [a]"The word of the LORD which you have spoken *is* good!" For he said, "Will there not be peace and truth at least in my days?”

Death of Hezekiah

20[a]Now the rest of the acts of Hezekiah—all his might, and how he [b]made a [c]pool and a [*]tunnel and [d]brought water into the city—*are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? [21]So [a]Hezekiah [*]rested with his fathers. Then Manasseh his son reigned in his place.

2 Kings 21

Manasseh Reigns in Judah

[1]Manasse [a]*was* twelve years old

when he became king, and he reigned fifty-five years in Jerusalem. His mother's name *was* Hephzibah [2]And he did evil in the sight of the LORD, [a]according to the abominatio of the nations whom the LORD had cast out before the children of Israel. 3For he rebuilt the *high places [a]which Hezekiah his father had destroyed; he raised up altars for Baal, and made a *wooden image, [b]as Ahab king of Israel had done; and he [c]worshiped all *the host of heaven and served them. 4[a]He also built altars in the hou1se of the LORD, of which the LORD had said, [b]“In Jerusalem I will put My name.” 5And he built altars for all the host of heaven in the [a]two courts of the house of the LORD. 6 [a]Also he made his son pass through the fire, practiced [b]soothsayin used witchcraft, and consulted spiritists and mediums. He did much evil in the sight of the LORD, to provoke *Him* to anger. [7] He even set a carved image of *Asherah that he had made, in the *house of which the LORD had said to David and to Solomon his son, [a]“In this house and in Jerusalem, which I have chosen out of all the tribes of Israel, I will put My name forever; 8[a]and I will not make the feet of Israel wander anymore from the land which I gave their fathers—only if they are careful to do according to all that I have commande them, and according to all the law that My servant Moses commande them.” [9] But they paid no attention, and Manasseh [a]seduced them to do more evil than the nations whom the LORD had destroyed before the children of Israel.

[10]And the LORD spoke [a]by His servants the prophets, saying, [11][a]“Becaus Manasseh king of Judah has done these abominatio ([b]he has acted more wickedly than all the [c]Amorites who *were* before him, and

[d]has also made Judah sin with his idols), 12therefore thus says the LORD God of Israel: ‘Behold, *I* am bringing *such* calamity upon Jerusalem and Judah, that whoever hears of it, both [a]his ears will tingle. 13And I will stretch

over Jerusalem [a]the measuring line of Samaria and the plummet of the house of Ahab; [b]I will wipe Jerusalem as *one* wipes a dish, wiping *it* and turning *it* upside down. [14]So I will forsake the [a]remnant of My inheritance and deliver them into the hand of their enemies; and they shall become victims of plunder to all their enemies, [15]because they have done evil in My sight, and have provoked Me to anger since the day their fathers came out of Egypt, even to this day.’ ”

16[a]Moreo Manasseh shed very much innocent blood, till he had filled Jerusalem from one end to another, besides his sin by which he made Judah sin, in doing evil in the sight of the LORD.

17Now [a]the rest of the acts of [b]Manasseh—all that he did, and the sin that he committed—*are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? 18So [a]Manasseh *rested with his fathers, and was buried in the garden of his own house, in the garden of Uzza. Then his son Amon reigned in his place.

Amon's Reign and Death

19 [a]Amon *was* twenty-two years old when he became

king, and he reigned two years in Jerusalem. His mother's name *was* Meshullemeth the daughter of Haruz of Jotbah. [20]And he did evil in the sight of the LORD, [a]as his father Manasseh had done. [21]So he walked in all the ways that his father had walked; and he served the idols that his father had served, and worshiped them. [22]He [a]forsook the LORD God of his fathers, and did not walk in the way of the LORD.

[23][a]Then the

servants of Amon [b]conspired against him, and killed the king in his own house. 24 But the people of the land [a]executed all those who had conspired against King Amon. Then the people of the land made his son Josiah king in his place. [25]Now the rest of the acts of Amon which he did, *are* they not written in the book of the chronicles of the kings of Judah? [26]And he was buried in his tomb in the garden of

Uzza. Then Josiah his son reigned in his place.

2
Kin
22

J
Re
in
Jud

1
[a]*we*
eig
yea
old

wh
he
bec
kin
an
he
rei
thi
on
yea
in
Jer
1H
mo
nar
wa
Jec
the
dau
of
Ad
of
[b]Bo
[2]An
he
did
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
an
wa
in
all
the

wa of his fat Da he [a]di no tur asi to the rig har or to the lef

Fin the Boo of the La

it car to pas in the eig yea of Kin Jos *tha* the kin

ser
Sha
the
scr
the
son
of
Aza
the
son
of
Me
to
the
hou
of
the
LO
say
[4]“C
up
to
Hil
the
hig
pri
tha
he
ma
cou
the
mo
wh
has
bee
[a]br
int
the
hou
of

the
LO
wh
[b]th
do
hav
gat
fro
the
peo
5An
let
the
[a]de
it
int
the
ha
of
tho
do
the
wo
wh
are
the
ove
in
the
ho
of
the
LO
let
the
giv
it
to
tho
wh

are
in
the
ho
of
the
LO
do
the
wo
to
rep
the
da
of
the
ho
—
[6]to
ca
an
bu
an
ma
—
an
to
bu
tim
an
he
sto
to
rep
the
ho
[7]H
[a]th
ne
be

no
acc
ma
wit
the
of
the
mo
del
int
the
har
bec
the
dea
fai

8
Hil
the
hig
pri
sai
to
Sha
the
scr
[a]“I
hav
fou
the
Bo
of
the
Lav
in
the
hor
of
the
LO

An
Hil
gav
the
boo
to
Sha
and
he
rea
it.
[9]So
Sha
the
scr
we
to
the
kin
bri
the
kin
wo
say
“Yo
ser
hav
*ga
the
mo
tha
wa
fou
in
the
ho
and
hav
del
it

int the har of tho wh do the wo wh ove the ho of the LO [10]T Sha the scr sho the kin say “H the pri has giv me a boo An Sha rea it bef the kin

it
hap
wh
the
kin
hea
the
wo
of
the
Bo
of
the
Lav
tha
he
tor
his
clo
12T
the
kin
cor
Hil
the
pri
[a]Al
the
sor
of
Sha
*Ac
the
sor
of
Mi
Sha
the
scr
anc

Asa
a
ser
of
the
kin
say
13“
inq
of
the
LO
for
me
for
the
peo
and
for
all
Jud
con
the
wo
of
thi
boo
tha
has
bee
fou
for
gre
is
[a]th
wr
of
the
LO
tha

is
aro
aga
us,
bec
our
fat
hav
not
obe
the
wo
of
thi
boo
to
do
acc
to
all
tha
is
wr
con
us.

1
Hil
the
pri
Ah
Ach
Sha
and
Asa
we
to
Hu
the
pro
the

wi
of
Sha
the
son
of
[a]Ti
the
son
of
Ha
kee
of
the
wa
(Sh
dw
in
Jer
in
the
Sec
Qu
An
the
spo
wit
her
15T
she
sai
to
the
“Th
say
the
LO
Go
of
Isr

‘Te
the
ma
wh
ser
you
to
Me
16“
say
the
LO
‘Be
[a]I
wi
bri
cal
on
thi
pla
an
on
its
inh
—
all
the
wo
of
the
boo
wh
the
kin
of
Jud
has
rea
—
17[a]

the
hav
for
Me
an
bu
in
to
oth
go
tha
the
mi
pro
Me
to
an
wi
all
the
wo
of
the
ha
Th
My
wr
sha
be
ar
aga
thi
pla
an
sha
no
be
qu
”
,

[18]B
as
for
[a]th
kin
of
Ju
wh
ser
you
to
in
of
the
LO
in
thi
ma
you
sha
spe
to
hi
'Th
say
the
LO
Go
of
Isr
"*C*
the
wo
wh
you
hav
hea
—
[19]b
you

[a]he
wa
ter
an
yo
[b]hu
yo
be
the
LO
wh
yo
hea
wh
I
spo
aga
thi
pla
an
aga
its
inh
tha
the
wo
be
[c]a
de
an
[d]a
cu
an
yo
to
yo
clo
an
we
be

Me
I
als
hav
hea
you
say
the
LO
20“
the
I
wil
*ga
you
to
you
fat
and
you
[a]sh
*be
gat
to
you
gra
in
pea
and
you
eye
sha
not
see
all
the
cal
wh
I
wil

bri
on
thi
pla
’
”

So
the
bro
bac
wo
to
the
kin

2
Kin
23

J
Res
Tru
Wo

1
[a]th
kin
ser
the
to
gat
all
the
eld
of
Jud
and
Jer
to
hi1
2Th
kin

we
up
to
the
ho
of
the
LO
wi
all
the
me
of
Ju
an
wi
hir
all
the
inh
of
Jer
—
the
pri
an
the
pro
an
all
the
peo
bo
sm
an
gre
An
he
[a]re
in

the hea all the wo of the Bo of the Co [b]w had bee fou in the ho of the LO

3 the kin [a]st by a pil and ma a [b]co bef the LO to fol the LO and

to
kee
His
cor
and
His
tes
and
His
sta
wit
all
his
hea
and
all
his
sou
to
per
the
wo
of
thi
cov
tha
we
wr
in
thi
boo
An
all
the
peo
too
a
sta
for
the

cov
4An
the
kin
con
Hil
the
hig
pri
the
[a]pr
of
the
sec
orc
and
the
doo
to
bri
[b]ou
of
the
ten
of
the
LO
all
the
art
tha
we
ma
for
Baa
for
[*]As
and
for
all

*th
hos
of
hea
an
he
bu
the
ou
Jer
in
the
fie
of
Ki
an
ca
the
ash
to
Be
5Th
he
rer
the
ido
pri
wh
the
kin
of
Ju
ha
or
to
bu
in
on
the
hig

pla in the cit of Ju and in the pla all ar Je an th wh bu in to Ba to the su to the m to the *c an to [a]al the ho of he 6A he br ou

the
[a]w
im
fro
the
ho
of
the
LO
to
the
Bro
Ki
ou
Je
bu
it
at
the
Bro
Ki
an
gro
it
to
[b]as
an
thr
its
ash
on
[c]th
gra
of
the
co
pe
7Th
he
to

do
the
ritu
*bo
[a]of
the
*pe
per
tha
we
in
the
ho
of
the
LO
[b]w
the
[c]wo
wo
har
for
the
wo
im
[8]An
he
bro
all
the
pri
fro
the
citi
of
Jud
and
def
the
hig

pla wh the pri ha bu inc fro [a]Ge to Be als he bro do the hig pla at the gat wh *we* at the ent of the Ga of Jos the gov of the cit wh *we* to the

lef
of
the
city
gat
9[a]N
the
pri
of
the
hig
pla
did
not
cor
up
to
the
alt
of
the
LO
in
Jer
[b]bu
the
ate
unl
bre
am
the
bre
1
he
def
[a]To
wh
is
in
[b]th

Va
of
the
*So
of
Hi
[c]th
no
ma
mi
ma
his
so
or
his
da
[d]pa
thr
the
fir
to
Mo
[11]T
he
re
the
ho
tha
the
kin
of
Ju
ha
*de
to
the
su
at
the
en

to
the
ho
of
the
LO
by
the
cha
of
Na
Me
the
off
wh
wa
in
the
cou
an
he
bu
the
cha
of
the
su
wi
fir
12T
alt
tha
we
[a]o
the
roo
the
up
cha
of

Ah
wh
the
kin
of
Jud
had
ma
and
the
alt
wh
[b]M
had
ma
in
the
two
cou
of
the
hou
of
the
LO
the
kin
bro
do
an
pu
the
an
thr
the
du
int
the
Bro
Kid

[13]T
the
kin
def
the
*hi
pla
tha
we
eas
of
Jer
wh
we
on
the
*so
of
*th
Mo
of
Co
wh
[a]So
kin
of
Isr
had
bui
for
Ash
the
abo
of
the
Sid
for
Ch
the
abo

of
the
Mo
and
for
Mi
the
abo
of
the
peo
of
Am
[14]A
he
[a]br
in
pie
the
sac
pil
and
cut
do
the
wo
im
and
fill
the
pla
wi
the
bo
of
me

1
the
alt
tha

wa
at
Be
an
the
*hi
pla
[a]w
Je
the
so
of
Ne
wh
ma
Isr
sin
ha
ma
bo
tha
alt
an
the
hig
pla
he
bro
do
an
he
bu
the
hig
pla
an
cru
it
to
po

anc
bu
the
wo
im
16A
Jos
tur
he
sav
the
tor
tha
we
the
on
the
mo
An
he
ser
anc
too
the
bo
ou
of
the
tor
anc
bu
the
on
the
alt
anc
def
it
acc
to

the
[a]wo
of
the
LO
wh
the
ma
of
Go
pro
wh
pro
the
wo
[17]T
he
sai
“W
gra
is
thi
tha
I
see
S
the
me
of
the
cit
tol
hir
“*It*
is
[a]th
tor
of
the
ma

of
Go
wh
car
fro
Juc
anc
pro
the
thi
wh
you
hav
dor
aga
the
alt
of
Bet

1
he
sai
“Le
hir
alo
let
no
one
mo
his
bor
So
the
let
his
bor
alo
wit
the
bor

of
[a]th
pro
wh
car
fro
Sar
1
Jos
als
too
aw
all
the
*sh
of
the
*hi
pla
tha
we
[a]in
the
citi
of
Sar
wh
the
kin
of
Isra
had
ma
to
pro
*th
LO
to
ang
anc

he dic to the acc to all the dec he hac dor in Be

20[a]

[b]ex all the pri of the [*]hi pla wh *we* the on the alt anc [c]bu me bor on the anc he ret to Jer

2
the
kin
cor
all
the
pec
say
[a]“K
the
Pas
to
the
LO
you
Go
[b]as
it

is wr in thi Bo of the Co

22[a] a Pas sur had nev bee hel sin the day of the jud wh jud Isr nor in all the day of the kin of Isr and the kin of Jud

[23]B
in
the
eig
yea
of
Kin
Jos
thi
Pas
wa
hel
bef
the
LO
in
Jer
[24]M
Jos
pu
aw
tho
wh
con
me
and
spi
the
ho
goo
and
ido
all
the
abo
tha
we
see
in
the

lan
of
Jud
and
in
Jer
tha
he
mi
per
the
wo
of
[a]th
law
wh
we
wr
in
the
boo
[b]th
Hil
the
pri
fou
in
the
hou
of
the
LO
25[a]
bef
him
the
wa
no
kin
lik

hir
wh
tur
to
the
LO
wi
all
his
hea
wi
all
his
sou
and
wi
all
his
mi
acc
to
all
the
Lav
of
Mo
nor
aft
hir
did
any
ari
like
hir

I
Juc
on
Juc

2
the

LO
dic
not
tur
fro
the
fier
of
His
gre
wr
wit
wh
His
ang
wa
arc
aga
Juc
[a]be
of
all
the
pro
wit
wh
Ma
had
pro
Hir
[27]A
the
LO
sai
“I
wil
als
rer
Juc
fro

My
sig
as
[a]I
ha
ren
Isra
and
wil
cas
off
thi
city
Jer
wh
I
ha
che
and
the
ho
of
wh
I
sai
[b]‘M
nan
sha
be
the
”

J
Die
in
Ba

2
the
res
of
the

act
of
Jos
and
all
tha
he
did
are
the
not
wr
in
the
boo
of
the
chr
of
the
kin
of
Juc
29[a]
his
day
Ph
Ne
kin
of
Eg
we
*to
the
aid
of
the
kin
of
Ass

to
the
Riv
Eu
and
Kin
Jos
we
aga
hin
An
Ph
Ne
kil
hin
at
[b]M
wh
he
[c]co
hin
30[a]
his
ser
mo
his
boo
in
a
cha
fro
Me
bro
hin
to
Jer
and
bur
hin
in

his
ow
tor
An
[b]th
pe
of
the
lan
too
Jeh
the
sor
of
Jos
and
hir
and
ma
hir
kir
in
his
fat
pla

T
Re
and
Ca
of
Jeh

3
wa
two
thr
yea
old
wh
he
bec

kir
anc
he
rei
thr
mo
in
Jer
His
mo
nar
wa
[b]Ha
the
dau
of
Jer
of
Lib
32A
he
dic
evi
in
the
sig
of
the
LO
acc
to
all
tha
his
fat
hac
dor
33N
Ph
Ne

pu
hin
in
pri
[a]at
Rib
in
the
lan
of
Ha
tha
he
mi
no
rei
in
Jer
and
he
im
on
the
lan
a
trib
of
one
hu
tal
of
silv
and
a
tal
of
gol
134
[a]Ph
Ne

ma
Eli
the
sor
of
Jos
kin
in
pla
of
his
fat
Jos
anc
[b]ch
his
nar
to
[c]Je
An
Ph
too
Jel
[d]ar
we
to
Eg
anc
[*]he
die
the

J
Re
in
Juc

3
Jel
gav
[a]th
silv

an
gol
to
Ph
bu
he
tax
the
lan
to
giv
mo
acc
to
the
con
of
Ph
he
exa
the
silv
an
gol
fro
the
peo
of
the
lan
fro
eve
one
acc
to
his
ass
to
giv
it

to
Ph
Ne
[36]a
wa
tw
fiv
yea
old
wh
he
be
kin
an
he
rei
ele
yea
in
Je
His
mo
na
wa
Ze
the
da
of
Pe
of
Ru
[37]*A*
he
di
evi
in
the
sig
of
the

LO
acc
to
all
tha
his
fat
had
dor

2
Kin
24

J
Ov
by
En

1
[a]hi
day
Ne
kin
of
[b]Ba
can
up,
and
Jeh
bec
his
vas
for
thr
yea
Th
he
tur
and
reb
aga

hir
2[a]A
the
LO
ser
aga
hir
rai
[*]ba
of
Ch
bar
of
Syr
bar
of
Mo
and
bar
of
the
peo
of
Am
He
ser
the
aga
Juc
to
des
it,
[b]ac
to
the
wo
of
the
LO
wh

He
ha
spo
by
His
ser
the
pro
3 Su
at
the
co
of
the
LO
this
ca
up
Ju
to
re
the
fro
His
sig
[a] be
of
the
sin
of
Ma
acc
to
all
tha
he
ha
do
4 [a] a
als

bec
of
the
inn
blo
tha
he
hac
she
for
he
hac
fill
Jer
wit
inn
blo
wh
the
LO
wo
not
par
5
the
res
of
the
act
of
Jeh
and
all
tha
he
dic
are
the
not
wr

in
the
boo
of
the
chr
of
the
kin
of
Jud
6[a]S
Jeh
res
wit
his
fat
Th
Jeh
his
son
rei
in
his
pla
7
[a]th
kin
of
Eg
dic
no
cor
out
of
his
lar
any
for
[b]th

kin
of
Bal
had
tak
all
tha
bel
to
the
kin
of
Eg
fro
the
Bro
of
Eg
to
the
Riv
Eu

Re
and
Ca
of
Jeh

8
eig
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
in

Jer
thr
mo
His
mo
nar
wa
Ne
the
dat
of
Elr
of
Jer
[9]Ar
he
dic
evi
in
the
sig
of
the
LO
acc
to
all
tha
his
fat
hac
dor

tha
tim
the
ser
of
Ne
kin

of
Bal
car
up
aga
Jer
anc
the
cit
*wa
bes
11A
Ne
kin
of
Bal
car
aga
the
cit
as
his
ser
we
bes
it.
12[a]
Jel
kin
of
Juc
his
mo
his
ser
his
pri
anc
his
off

we
ou
to
the
kin
of
Bal
and
the
kin
of
Bal
[b]in
the
eig
yea
of
his
rei
too
hin
pri

T
Ca
of
Jer

1
he
can
ou
fro
the
all
the
tre
of
the
hot
of
the

LO
an
the
tre
of
the
kin
ho
an
he
[b]cu
in
pie
all
the
art
of
gol
wh
Sol
kin
of
Isr
ha
ma
in
the
ten
of
the
LO
[c]as
the
LO
ha
sai
14A
[a]he
ca
int

cap
all
Jer
all
the
cap
an
all
the
mi
me
of
val
[b]te
tho
cap
an
[c]al
the
cra
an
sm
No
rer
exc
[d]th
poo
peo
of
the
lan
[15]A
[a]he
car
Jel
cap
to
Bal
Th
kin

mo
the
kin
wi
his
off
and
the
mi
of
the
lan
he
car
int
cap
fro
J1
to
Ba
16a.
the
val
me
sev
tho
and
cra
and
sm
on
tho
all
wh
we
str
and
fit
for
wa

the
the
kin
of
Bal
bro
cap
to
Bal

Z
Re
in
Jud

1
[a]th
kin
of
Bal
ma
Ma
[b]*Je*
und
kin
in
his
pla
and
[c]ch
his
nar
to
Zed

1
wa
two
one
yea
old
wh
he

bec
kin
and
he
rei
ele
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
[b]H
the
dau
of
Jer
of
Lib
19[a]
als
did
evi
in
the
sig
of
the
LO
acc
to
all
tha
Jeh
had
dor
20F
bec
of

the
ang
of
the
LO
thi
hap
in
Jer
and
Jud
tha
He
fin
cas
the
out
fro
His
pre
[a]Th
Zed
reb
aga
the
kin
of
Ba

2
Kin
25

Fal
and
Ca
of
Jud

it

car
to
pas
[a]in
the
nir
yea
of
his
rei
in
the
ter
mo
on
the
ter
day
of
the
mo
tha
Ne
kir
of
Bal
anc
all
his
arr
car
aga
Jer
anc
enc
aga
it;
anc
the
bui

a sie wa aga it all aro [2]So the city wa bes unt the ele yea of Kin Zed [3]By the nin *day* of the [a]*fo* mo the fam had bee so sev in the city tha the wa no

foo
for
the
peo
of
the
lan
4
[a]th
cit
wa
wa
bro
thr
and
all
the
me
of
wa
fle
at
nig
by
wa
of
the
gat
bet
two
wa
wh
wa
by
the
kin
gar
eve
tho
the

Ch
we
stil
enc
all
arc
aga
the
city
An
[b]*th*
kin
we
by
wa
of
the
*pl
5Bu
the
arn
of
the
Ch
pu
the
kin
anc
the
ove
hin
in
the
pla
of
Jer
All
his
arn
wa

sca
fro
hir
6So
the
too
the
kir
anc
bro
hir
up
to
the
kir
of
Bal
[a]at
Rit
anc
the
pro
juc
on
hir
7Tl
the
kil
the
sor
of
Zec
bef
his
eye
[a]pu
ou
the
eye
of

Zec
bot
hin
wit
bro
fet
anc
too
hin
to
Bal

8
in
the
fift
mo
[a]on
the
sev
day
of
the
mo
(wi
wa
[b]th
nin
yea
of
Kin
Ne
kin
of
Bal
[c]Ne
the
cap
of
the
gua

a
ser
of
the
kin
of
Ba
ca
to
Je
9 [a]H
bu
the
ho
of
the
LO
[b]an
the
kin
ho
all
the
ho
of
Je
tha
is,
all
the
ho
of
the
gre
[c]he
bu
wi
fire
10 A
all

the arr of the Ch wh *wer* *wit* the cap of the gua [a]br do the wa of Jer all aro

1 Ne the cap of the gua car aw cap [a]th res of the pe *wh* rer in the

cit
an
the
de
wh
ha
de
to
the
kin
of
Ba
wi
the
res
of
the
mu
12B
the
ca
of
the
gu
[a]le
so
of
the
po
of
the
lan
as
vin
an
fa
13[a]
bro
[b]pi
tha

we
in
the
ho
of
the
LO
an
[c]th
ca
an
[d]th
bro
Se
tha
we
in
the
ho
of
the
LO
the
Ch
bro
in
pie
an
[e]ca
the
bro
to
Ba
14T
als
too
aw
[a]th
po
the

sho
the
trin
the
spo
anc
all
the
bro
ute
wit
wh
the
pri
mi
[15]T
fire
anc
the
bas
the
thi
of
sol
gol
anc
sol
silv
the
cap
of
the
gua
too
aw
[16]T
two
pil
one
Sea

an
the
ca
wh
Sol
ha
ma
for
the
ho
of
the
LO
[a]th
bro
of
all
the
art
wa
bey
me
17[a]
hei
of
on
pil
wa
*ei
cul
an
the
cap
on
it
wa
of
bro
Th
hei

of
the
cap
wa
thr
cul
anc
the
net
anc
poi
all
arc
the
cap
we
all
of
bro
Th
sec
pil
wa
the
sar
wit
a
net

1
the
cap
of
the
gua
too
[b]Se
the
chi
pri
[c]Ze

the
sec
pri
an
the
thr
doo
19H
als
too
ou
of
the
cit
an
off
wh
had
cha
of
the
me
of
wa
[a]fiv
me
of
*th
kin
clo
ass
wh
we
fou
in
the
cit
the
chi
rec

off
of
the
arr
wh
mu
the
pe
of
the
la
an
six
me
of
the
pe
of
the
la
wh
we
fou
in
the
cit
20 S
Ne
cap
of
the
gu
too
the
an
bro
the
to
the
ki

of
Ba
at
Rib
21T
the
kin
of
Ba
str
the
an
pu
the
to
dea
at
Rib
in
the
lan
of
Ha
[a]Th
Ju
wa
ca
aw
cap
fro
its
ow
lan

*C
Mo
Go
of
Ju*

2
he

ma
Ge
the
son
of
[a]Al
the
son
of
Sha
gov
ove
[b]th
pe
wh
ren
in
the
lan
of
Jud
wh
Ne
kin
of
Bal
ha
lef
23N
wh
all
the
[a]ca
of
the
arn
the
an
the
me

hea
tha
the
kir
of
Bal
had
ma
Ge
gov
the
car
to
Ge
at
Mi
—
Ish
the
sor
of
Ne
Joh
the
sor
of
Ca
Ser
the
sor
of
Tar
the
Ne
and
*Ja
the
sor
of
a

Ma
the
an
the
me
24A
Ge
too
an
oat
bef
the
an
the
me
an
sai
to
the
“D
not
be
afr
of
the
ser
of
the
Ch
Dw
in
the
lan
an
ser
the
kin
of
Ba
an

it sha be we wi you

2

[a]it hap in the sev mo tha Ish the son of Ne the son of Eli of the roy fa ca wi ten me an str an kil Ge the Jew as we

as
the
Ch
wh
we
wi
hir
at
Mi
[26]A
all
the
pe
sm
an
gre
an
the
ca
of
the
arr
arc
[a]ar
we
to
Eg
for
the
we
afr
of
the
Ch

J
Re
fro
Pri

2
it

car
to
pas
in
the
thi
sev
yea
of
the
cap
of
Jeh
kin
of
Jud
in
the
twe
mo
on
the
twe
sev
day
of
the
mo
tha
*Ev
Me
kin
of
Bab
in
the
yea
tha
he
beg

to rei [b]re Jeh kin of Jud fro pri [28]H spo kin to him and gav him a mo pro sea tha tho of the kin wh *we* wit him in Bab [29]S Jeh cha fro his pri gar and

he
[a]at
*br
reg
bef
the
kin
all
the
day
of
his
life
30A
as
for
his
*pr
the
wa
a
*re
rat
giv
hin
by
the
kin
a
po
for
eac
day
all
the
day
of
his
life

2

Ki
1

2
Ki
2

2

Kin
3

2

Ki

4

[4:
c.
Ex.
7:1
14
2
Kin
2:8
14,
Ac
19

[4:
*
Lit
Gir
up
you
loi
Th
ski

of
the
rob
wa
wr
ar
the
leg
an
tuc
in
the
bel
to
gai
fre
of
mo

[4:
a.
2
Ki
2:

[4:
b.
2
Ki
2:

[4:
a.
Jo
11

[4:
a.
2
Ki
4:4
(M
6:6
Lu
8:5

[4:
b.
1
Ki
17

[4:
a.
1
Ki
17
23
Ac
20

[4:
a.
1
Ki
17

[4:
b.
2
Kin
8:1
5

[4:
a.
1
Kin
17
(H
11

[4:
a.
2
Kin
2:1

[4:
b.
2
Kin
8:1

[4:
c.
Lu
10
Ac
22

[4:
a.
Ex
10

[4:
a.
Ex
15
2
Ki
2:2

[4:
a.
1
Sa
9:4

[4:
b.
1
Sa
9:7
(1
Co
9:1
Ga
6:6

[4:

a.
Lu
9:1
Jo
6:9

[4:
b.
Lu
9:1
Jo
6:1

[4:
a.
Ma
14
15
Jo
6:1

2
Kings
5

[5:
a.
Lu
4:2

[5:
b.
Ex
11

[5:
a.
2
Ki
6:2
13

[5:
*
Or
in
ba

[5:
*
Se
lit.
wa
bef

[5:
a.
1
Sa
9:8
2
Ki
8:8
9

[5:

a.
(Ge
30
De
32
1
Sa
2:6

[5:
a.
2
Kin
4:4
Jol
9:7

[5:
*
So
wi
Kt.
LX
Vg
Qr
Sy
Tg
Am

[5:
a.
1
Sa
28

[5:

a.

2

Ki

5:1

Jol

33

[5:

b.

Lu

4:2

5:1

[5:

a.

Da

2:4

3:2

6:2

27

[5:

b.

Ge

33

[5:

a.

2

Ki

3:1

[5:
b.
Ge
14
23
2
Ki
5:2
26
(M
10
Ac
8:1
20

[5:
a.
2
Ki
7:2
17

[5:
a.
2
Ki
4:1
8:4
5

[5:

a.
2
Kin
4:2

[5:
*
Lit
the
hill

[5:
a.
(Ec
3:1
6)

[5:
a.
(1
Tin
6:1

[5:
b.
Ex
4:6
Nu
12
2
Kin
15

2
Kings
6

[6:
a.
2
Ki
4:3

[6:
a.
2
Ki
5:2

[6:
a.
(Ex
22

[6:
a.
Ex
15
2
Ki
2:2
4:4

[6:
a.

2
Ki
8:2
29

[6:
a.
Ge
37

[6:
a.
Ex
14
1
Ki
17

[6:
b.
2
Ch
32
Ps.
55
(R
8:3

[6:
a.
Nu
22
Lu

24

[6:
b.
2
Ki
2:1
Ps.
34
68
Ze
1:
6:1
7

[6:
a.
Ge
19
Ac
13

[6:
a.
2
Ki
2:1
5:1
8:

[6:
a.
(R

12

[6:
a.
2
Ki
5:
6:
9

[6:
a.
11
Ki
20

[6:
a.
2
Ki
4:
8:

[6:
*
Ap
1
pi

[6:
a.
Le

26
29
De
28
57
La
4:1

[6:
a.
1
Ki
21

[6:
a.
Ru
1:1
1
Ki
19

[6:
a.
Ez
8:1
14
20

[6:
b.
Lu
13

[6:
c.
1
Ki
18
13
14
21
13

[6:
a.
Jo
2:9

2
Kings
7

[7:
a.
2
Ki
7:1
19

[7:
*
A
thi
of
an
ep
or

ab
8
ga

[7:
a.
2
Ki
5:1
7:1
19
20

[7:
b.
Ge
7:1
Ma
3:1

[7:
a.
(Le
13
46
Nu
5:2
4;
12
14

[7:
a.

2
Ki
6:

[7:
a.
2
Sa
5:
2
Ki
19
Jo
15

[7:
b.
1
Ki
10

[7:
a.
Ps.
48
6;
(P
28

[7:
*
Ca

[7:

a.

2

Ki

6:2

29

[7:

*

Hi

the

in

am

[7:

a.

2

Ki

7:1

[7:

a.

2

Ki

6:3

7:2

[7:

a.

2

Ki

7:1

2
Kings
8

[8:
a.
2
Ki
4:1
31
35

[8:
b.
Ps.
10
Ha
1:1

[8:
c.
2
Sa
21
1
Ki
18
2
Ki
4:3
6:2

[8:
a.
2
Kin
4:1
5:2
27

[8:
a.
2
Kin
4:3

[8:
a.
2
Kin
6:2

[8:
a.
1
Kin
19

[8:
b.
1
San
9:7
1
Kin

14
2
Kin
5:5

[8:
c.
2
Kin
1:2

[8:
a.
1
Kin
19

[8:
a.
2
Kin
8:1

[8:
a.
Luk
19

[8:
*
fix
his

gaz

[8:
a.
2
Kin
10
12
13
7;
Am
1:3
4

[8:
b.
2
Kin
15
Ho
13
Am
1:1
Na
3:1

[8:
a.
1
Sa
17
2
Sa
9:8

[8:
b.
1
Kin
19

[8:
a.
2
Kin
1:1
3:1

[8:
b.
2
Ch
21

[8:
*
Co
reg
wi
his
fat

[8:
a.
2
Ch

21
10

[8:
a.
2
Ki
8:2
27

[8:
a.
2
Sa
7:1
1
Ki
11
15
2
Ch
21

[8:
a.
Ge
27
2
Ch
21
10

[8:

b.
1
Ki
22

[8:
*
Jeh
v.
16

[8:
a.
Jos
21
2
Ki
19
2
Ch
21

[8:
a.
2
Ch
22
7

[8:
*
Di
an

joi
his
an

[8:
*
Or
Az
or
Jeh

[8:
a.
2
Ch
22

[8:
a.
2
Ch
22
4

[8:
a.
2
Ch
22

[8:
b.

1
Ki
22
29

[8:
a.
2
Ki
9:

[8:
b.
2
Ki
9:
2
Ch
22
7

[8:
*
Ra
v.
28

2 Kings 9

[9:
a.
1

Kin
20

[9:
b.
2
Kin
4:2
Jer
1:1

[9:
c.
2
Kin
8:2
29

[9:
*
Lit
Gir
up
you
loin

[9:
a.
2
Kin
9:5
11

[9:
a.
1
Ki
19

[9:
a.
1
Sa
2:7
8;
1
Ki
19
2
Ki
9:3
2
Ch
22

[9:
a.
(D
32
41

[9:
b.
1
Ki
18

21

[9:
a.
1
Ki
14
21
2
Ki
10

[9:
b.
1
Sa
25

[9:
c.
De
32
2
Ki
14

[9:
a.
1
Ki
14
15
21

[9:
b.
1
Ki
16
11

[9:
a.
1
Ki
21
2
Ki
9:3
36

[9:
a.
Je
29
Ho
9:7
Ma
3:2
Jo
10
Ac
26
(1
Co
4:1

[9:
a.
Ma
21
8;
Ma
11
8

[9:
*
Lit
un
his
fee

[9:
a.
2
Kin
8:

[9:
a.
2
Kin
8:

[9:
*
Jeh
v.
24

[9:
a.
2
Ki
8:2

[9:
*
Ar
yo
pe

[9:
*
Lit
Tu
beh
me

[9:
a.
1
Ki
19
2
Ch
22

[9:
b.
1

Kin
21
14

[9:
*
Ha
up

[9:
*
Lit
fou

[9:
*
Lit
fill
his
han

[9:
a.
1
Kin
21
24
29

[9:
b.
Is.

13

[9:
a.
1
Ki
21
19

[9:
*
on
thi
pro

[9:
a.
2
Ch
22
9

[9:
*
Lit
Th
Ga
Ho

[9:
*
Lit

[9:
a.
(Je
4:3
Ez
23

[1
a.
1
Ki
16
20
2
Ki
9:1
22

[9:
a.
(Ex
22
1
Ki
16

[9:
a.
1
Ki
21

[9:
a.
Ps.
83

2
Kings
10

[10
*
So
wi
MT
Sy
Tg
LX
Sa
Vg
cit

[10
*
the
gu
of

[10
*
mo
up

[10
a.
2
Kin
9:2
27

[10
*

Lit
sta
bef

[10
a.
Jud
9:5
1
Kin
21
2
Kin
11

[10
a.
2
Kin
9:1
24

[10
a.

1
Sa
3:1
1
Ki
8:5
Je
44

[1
b.
1
Ki
21
24
29

[1
*
Or
Th
Sh
Ho

[1
a.
2
Ch
22

[1
a.
2

Ch
22

[10
*
Or
Th
Sh
Ho

[10
a.
Jer
35

[10
b.
1
Ch
2:5

[10
c.
Ez
10
Ez
17

[10
*
Lit
fou

[10
a.
1
Kin
19

[10
a.
2
Kin
9:8
2
Ch
22

[10
b.
1
Kin
21
29

[10
a.
1
Kin
16
32

[10
a.

1
Kin
18
22

[10
*
Co

[10
a.
1
Kin
16
2
Kin
11

[10
*
Lit
hou

[10
a.
1
Kin
20

[10
*
Lit

city

[10
a.
(De
7:5
25
1
Kin
14
2
Kin
3:2

[10
a.
Ezr
6:1
Da
2:5
3:2

[10
*
Lit
hou

[10
a.
1
Kin
12
30

13
34

[1
a.
2
Ki
9:
7

[1
b.
2
Ki
13
10,
14
15
12

[1
a.
1
Ki
14

[1
*
wa
no
ca

[10
a.
1
Kin
19
2
Kin
8:1
13

[10
a.
De
2:3

[10
b.
Am
1:3
5

[10
a.
2
Kin
13

[10
*
Die
and
joi
his

an

2
Kings
11

[11
a.
2
Ch
22

[11
b.
2
Kin
8:2

[11
c.
2
Kin
9:2

[11
a.
2
Kin
8:2

[11
*
Jeh

2
Ch
22

[1
*
Or
Je

[1
a.
2
Ki
12
2
Ch
23

[1
*
gu

[1
a.
1
Ch
9:

[1
*
Lit
en

in

[11

*

cor

[11

a.

2

Ch

23

[11

a.

2

Sar

8:7

1

Ch

18

[11

*

Lit

sho

[11

a.

Ex

25

31

[11

b.

1

Sa

10

[11

*

La

Ex

25

21

De

31

[11

a.

2

Ki

8:2

2

Ch

23

[11

a.

2

Ki

23

2

Ch

34

[11
*
Lit
bet
ran

[11
a.
2
Ch
23

[11
b.
Jos
24
25,
2
Ch
15
15

[11
c.
2
Sa
5:3

2

Ki

12

2
Ki
13

2
Kin
14

2

Kin

15

2

Ki

16

2

Kin

17

2

Ki
18

2

Kin

20

2

Kin

21

2

Ki

22

2
Kin
23

2

Kin

24

2

Kin
25

1
Ch
1

Fa
of
Ad
—
Set
to
Ab

1
[a][b]S
En
2Ca
Ma
Ja
3E
Me
La
4[a]N
Sh
Ha
an
Ja

5
so
of
Ja
we
Go
Ma
Ma
Ja
Tu
Me
an
Ti
6T
so
of
Go
we

Ash
*Di
and
To
7Th
son
of
Jav
we
Eli
*Ta
Kit
and
*Ro
8
son
of
Ha
we
Cu
Mi
Pu
and
Ca
9Th
son
of
Cu
we
Seb
Ha
*Sa
*Ra
and
Sal
Th
son
of
Ra
we

Sh
an
De
10 C
[a]be
Ni
he
be
to
be
a
mi
on
on
the
ea
11 M
be
Lu
An
Le
Na
12 P
Ca
(fr
wh
ca
the
Ph
an
the
[a]Ca
13 [a]
be
Sic
his
firs
an
He
14 t

Jeb
the
Am
and
the
Gir
15tl
Hiv
the
Arl
and
the
Sin
16tl
Arv
the
Zer
and
the
Ha

1
son
of
[a]Sh
wer
Ela
Ass
[b]Ar
Luc
Ara
Uz
Hu
Ge
and
[*]M
18A
beg
Sh
and
Sh

beg
Eb
[19]T
Eb
we
bo
tw
so
the
na
of
on
wa
*Pe
fo
in
his
da
the
*ea
wa
div
an
his
br
na
wa
Jo
[20]a
beg
Al
Sh
Ha
Je
[21]H
Uz
Di
[22]*
Ab
Sh

[23]O
Ha
an
Jo
All
the
we
the
so
of
Jo

Ar
Sh
[25][a]
Pe
Re
[26]S
Na
Te
[27]a
[a]A
wh
is
Ab
[28][a]
so
of
Ab
we
[b]Is
an
[c]Is

Fa
of
Ish

are
the

ge
Th
[a]fi
of
Ish
wa
Ne
the
Ke
Ad
Mi
[30]M
Du
Ma
*H
Te
[31]J
Na
an
Ke
Th
we
the
so
of
Ish

T
Fa
of
Ke

3
[a]th
so
bo
to
Ke
Ab
co
we
Zi

Jol
Me
Mi
Ish
an
Sh
Th
so
of
Jol
we
Sh
an
De
[33]T
so
of
Mi
we
Ep
Ep
Ha
Ab
an
Elo
All
the
we
the
chi
of
Ke
T
Fa
of
Isa
3
[a]Al
beg
Isa

[b]Th
son
of
Isa
we
Esa
and
Isra
35 T
son
of
[a]Es
we
Eli
Re
Jeu
Jaa
and
Ko
36 *A*
the
son
of
Eli
we
Te
On
[*]Ze
Ga
an
Ke
and
by
[a]Ti
Am
37 T
son
of
Re
we

Na
Zer
Sha
and
Mi

T
Far
of
Sei

3
son
of
Sei
wer
Lot
Sho
Zib
An
Dis
Eze
and
Dis
[39]*A*
the
son
of
Lot
wer
Ho
and
*He
Lot
sist
wa
Tin
[40]T
son
of
Sho
wer

*Al
Ma
Eb
*Sh
an
On
Th
so
of
Zib
we
Aja
an
An
41 T
so
of
An
wa
[a]Di
Th
so
of
Dis
we
*Ha
Esh
Ith
an
Ch
42 T
so
of
Eze
we
Bil
Zaa
an
*Ja
Th

son
of
Dis
wei
Uz
and
Ara
T
Kin
of
Edo
4
the
wei
the
[a]ki
wh
rei
in
the
lan
of
Ed
bef
a
kin
rei
ove
the
chi
of
Isr
Bel
the
son
of
Bec
and
the
nar

of
his
cit
wa
Di
44A
wh
Be
die
Jo
the
so
of
Ze
of
Bo
rei
in
his
pla
45W
Jo
die
Hu
of
the
la
of
the
Te
rei
in
his
pla
46A
wh
Hu
die
Ha
the

so
of
Be
wh
*at
Mi
in
th
fie
of
Mo
rei
in
his
pla
Th
na
of
his
cit
wa
Av
47W
Ha
die
Sa
of
Ma
rei
in
his
pla
48a
wh
Sa
die
Sa
of
Re
by-

the
Riv
rei
in
his
pla
49W
Sau
die
Baa
Ha
the
son
of
Ach
rei
in
his
pla
50A
wh
Baa
Ha
die
*Ha
rei
in
his
pla
and
the
nar
of
his
city
wa
*Pa
His
wi
nar

wa
Me
the
dat
of
Ma
the
dat
of
Me
[51]H
die
als
An
the
chi
of
Ed
we
Ch
Tir
Ch
*Al
Ch
Jet
[52]C
Ah
Ch
Ela
Ch
Pin
[53]C
Ke
Ch
Te
Ch
Mi
[54]C
Ma
and

Ch
Ira
Th
we
the
chi
of
Ed

1
Ch
2

T
Fa
of
Isr

1
we
the
[a]so
of
*Is
[b]Re
Sin
Lev
Ju
Iss
Zel
[2]Da
Jos
Be
Na
Ga
an
Asl

I
Ju
to
Da

3

son
of
[a]Ju
we
Er,
On
an
Sh
Th
thr
we
bor
to
hi
by
the
da
of
[b]*Sh*
the
Ca
[c]Er
the
firs
of
Ju
wa
wi
in
the
sig
of
the
LO
so
He
kil
hi
4An
[a]Ta

his
dau
in-
law
[b]bo
hin
Per
and
Zer
All
the
son
of
Jud
we
fiv

[5]
son
of
[a]Pe
we
He
and
Ha
[6]Th
son
of
Zer
we
*Zi
[a]Et
He
Cal
and
*Da
—
fiv
of
the
in

all
7
son
of
[a]Ca
wa
*Ac
the
tro
of
Isr
wh
tra
in
the
[b]ac
thi
8
son
of
Eth
wa
Az
9
the
son
of
He
wh
we
bor
to
hin
we
Jer
*Ra
and
*Cl
10R
[a]be

Am
and
Am
beg
Na
[b]le
of
the
chi
of
Ju
[11]N
beg
*Sa
and
Sal
beg
Bo
[112]
beg
Ob
and
Ob
beg
Jes
[13a]
beg
Eli
his
firs
Ab
the
sec
*Sh
the
thi
[14]N
the
fou
Ra

the
fift
15C
the
six
an
Da
the
[a]se
1
the
sis
we
Ze
an
Ab
[a]A
the
so
of
Ze
we
Ab
Jo
an
As
—
thr
17A
bo
Am
an
the
fat
of
Am
wa
[*]Je
the
Ish

T
Fa
of
He

1
the
son
of
He
had
chi
by
Az
his
wi
and
by
Jer
No
the
we
her
son
Jes
Sh
and
Ar
[19]W
Az
die
Ca
*to
aEp
as
his
wi
wh
bor
hir
Hu

[20]A
Hu
beg
Ur
and
Ur
beg
[a]Be
[2
aft
He
we
in
to
the
da
of
[a]M
the
fat
of
Gil
wh
he
ma
wh
he
wa
six
yea
old
and
she
bor
hir
Seg
[22]S
beg
[a]Ja
wh

hac
twe
thr
citi
in
the
lan
of
Gil
23a
anc
Syr
too
fro
the
the
tow
of
Jai
wit
Ke
anc
its
tow
—
six
tow
All
the
bel
to
the
son
of
Ma
the
fat
of
Gil
24*A*

He
die
in
Cal
Epl
He
wi
Ab
bo
hin
[a]As
the
fat
of
Tel
T
Far
of
Jer
[2]
son
of
Jer
the
firs
of
He
wer
Ra
the
firs
anc
Bu
Orc
Oz
anc
Ah
[26]J
hac
anc

wi
wh
na
wa
Ata
she
wa
the
mo
of
On
[27]T
so
of
Ra
the
firs
of
Jer
we
Ma
Ja
an
Ek
[28]T
so
of
On
we
Sh
an
Jad
Th
so
of
Sh
we
Na
an
Ab

2
the
nar
of
the
wi
of
Ab
wa
Ab
an
she
bo
hir
Ah
an
Mo
[30]T
son
of
Na
we
Sel
an
Ap
Sel
die
wi
chi
[31]T
son
of
Ap
wa
Ish
the
son
of
Ish
wa

Sh
an
[a]Sh
so
wa
Ah
[32]T
so
of
Ja
the
bro
of
Sh
we
Jet
an
Jo
Jet
die
wi
chi
[33]T
so
of
Jo
we
Pel
an
Za
Th
we
the
so
of
Jer
3
Sh
ha
no

son
onl
dau
An
Sh
had
an
Egy
ser
wh
nar
wa
Jar
[35]S
gav
his
dau
to
Jar
his
ser
as
wi
and
she
bor
hin
Att
[36]A
beg
Na
and
Na
beg
[a]Za
[37]Z
beg
Ep
and
Ep

beg
[a]O
[38]O
beg
Jeh
an
Jeh
beg
Az
[39]A
beg
He
an
He
beg
Ele
[40]E
beg
Sis
an
Sis
beg
Sh
[41]S
beg
Jek
an
Jek
beg
Eli

Fa
of
Ca

des
of
Ca
the
bro

of
Jer
we
Me
his
firs
wh
wa
the
fat
of
Zip
and
the
son
of
Ma
the
fat
of
He
[43]T
son
of
He
we
Ko
Ta
Re
and
Sh
[44]S
beg
Ra
the
fat
of
Jor
and
Re

beg
Sha
[45]A
the
son
of
Sha
wa
Ma
and
Ma
wa
the
fat
of
Bet
Zu
[4
Cal
con
bo
Ha
Mo
and
Ga
and
Ha
beg
Ga
[47]A
the
son
of
Jal
we
Re
Jot
Ge
Pel
Ep

anc
Sha
4
Cal
cor
bor
She
anc
Tir
49 S
als
bor
Sha
the
fat
of
Ma
She
the
fat
of
Ma
anc
the
fat
of
Gil
An
the
dau
of
Cal
wa
[a]Ac
5
we
the
des
of
Cal

Th
son
of
[a]H
the
firs
of
*Ep
we
Sh
the
fat
of
[b]Ki
Jea
[51]S
the
fat
of
Be
an
Ha
the
fat
of
Be
Ga

5
Sh
the
fat
of
Kin
Jea
ha
des
*Ha
an
hal
of

the
**fa*
of
Ma
[53]T
far
of
Kir
Jea
we
the
Ith
the
Pu
the
Sh
an
the
Mi
Fro
the
car
the
Zo
an
the
Es

5
so
of
Sal
we
Be
the
Ne
*At
Be
Joa
hal
of

the
Ma
an
the
Zo

5
the
fan
of
the
scr
wh
dw
at
Jal
we
the
Tin
the
Shi
an
the
Su
Th
we
the
[a]Ke
wh
can
fro
Ha
the
fat
of
the
hov
of
[b]Re

1

Ch
3

T
Fa
of
Da

1
the
we
the
so
of
Da
wh
we
bo
to
hi
in
He
Th
firs
wa
[a]A
by
[b]Al
the
[c]Je
the
sec
[*]Da
by
[d]Al
the
Ca
[2]th
thi
[a]Al
the
so

of
Ma
the
dau
of
Tal
kin
of
Ge
the
fou
[b]Ad
the
son
of
Ha
3th
fift
Sh
by
Ab
the
six
Ith
by
his
wi
[a]Eg
4
six
we
bor
to
hin
in
He
[a]Th
he
rei
sev

yea
anc
six
mo
anc
[b]in
Jer
he
rei
thi
thr
yea
5[a]A
the
we
bor
to
hir
in
Jer
*Sh
Sho
Na
anc
[b]So
—
fou
by
*Ba
the
dat
of
*Ar
6Al
the
we
Ibh
*El
*El
7No

Ne
Jap
[8]El
[*]El
and
Eli
—
[a]ni
in
all.
[9]*Th*
we
all
the
son
of
Da
bes
the
son
of
the
con
and
[a]Ta
the
sis
T
Fa
of
Sol
1
son
wa
[a]Re
[*]Al
wa
his
son
Asa

his
son
Jeh
his
son
11*
his
son
*Al
his
son
*Jo
his
son
12A
his
son
*Az
his
son
Jot
his
son
13A
his
son
He
his
son
Ma
his
son
14A
his
son
an
Jos
his
son
15T

son
of
Jos
wer
Joh
the
firs
the
sec
*Je
the
thi
Zec
anc
the
fou
*Sh
[16]T
son
of
[a]Je
wer
*Je
his
son
anc
*Ze
his
son

T
Far
_of_
Jec

1
the
son
of
*Je
*_we_
Ass

Sh
[a]hi
so
[18]*a*
Ma
Pe
Sh
Je
Ho
an
Ne
[19]T
so
of
Pe
we
Ze
an
Sh
Th
so
of
Ze
we
Me
Ha
Sh
the
sis
[20]a
Ha
Oh
Be
Ha
an
Ju
He

---

fiv
in

all.
2
so
of
Ha
we
Pel
an
Jes
the
so
of
Re
the
so
of
Ar
the
so
of
Ob
an
the
so
of
Sh
22T
so
of
Sh
wa
Sh
Th
so
of
Sh
we
[a]Ha
Iga
Ba

Ne
an
Sh
—
six
in
all.
[23]T
so
of
Ne
we
Eli
He
an
Az
—
thr
in
all.
[24]T
so
of
Eli
we
Ho
Eli
Pe
Ak
Jo
De
an
An
—
sev
in
all.

Ch

4

T
Far
of
Jud

1
son
of
Jud
wer
[a]Pe
He
*Ca
Hu
and
Sho
2An
*Re
the
son
of
Sho
beg
Jah
and
Jah
beg
Ah
and
Lah
Th
wer
the
fan
of
the
Zor
3Th
wer
the

sor
of
the
fat
of
Eta
Jez
Ish
and
Idb
and
the
nar
of
the
sis
wa
Ha
[4]an
Per
wa
the
fat
of
Ge
and
Eze
wa
the
fat
of
Hu
T
wer
the
sor
of
[a]H
the
firs

of
Ep
the
fat
of
Be
[5]
[a]As
the
fat
of
Te
ha
tw
wi
He
an
Na
[6]Na
bo
hi
Ah
He
Te
an
Ha
Th
we
the
so
of
Na
[7]Th
so
of
He
we
Ze
Zo
an

Eth
[8]an
Ko
beg
An
Zol
anc
the
fan
of
Ah
the
son
of
Ha
[9]
Jal
wa
[a]m
hoi
tha
his
bro
anc
his
mo
cal
his
nar
*Ja
say
“Be
I
bor
hin
in
pai
[10]A
Jal
cal

on
the
Go
of
Isr
say
“O
tha
Yo
wo
ble
me
ind
and
enl
my
*te
tha
Yo
har
wo
be
wi
me
and
tha
Yo
wo
kee
me
fro
evi
tha
I
ma
not
cau
pai
So
Go

gra
hin
wh
he
req

1

the
bro
of
[a]Sh
beg
Me
wh
wa
the
fat
of
Esh
[12]*A*
Esh

beg
Be
Ra
Pa
an
Tel
the
fat
of
*Ir
Na
Th
we
the
me
of
Re
1
so
of
Ke
we
[a]O
an
Se
Th
so
of
Ot
we
*H
[14]a
Me
wh
beg
Op
Se
beg
Jo
the

fat
of
[a]Ge
Ha
for
the
we
cra
15 T
son
of
[a]Ca
the
son
of
Jep
we
Iru
Ela
and
Na
Th
son
of
Ela
wa
*Ke
16 T
son
of
Jel
we
Zip
Zip
Tir
and
Asa
17 T
son
of

Ezr
wer
Jet
Me
Epl
anc
Jal
An
**M*
wif
bor
Mi
Sha
anc
Ish
the
fat
of
Esh
18(
wi
Jel
bor
Jer
the
fat
of
Ge
He
the
fat
of
Soc
anc
Jel
the
fat
of
Zar
An

the
we
the
son
of
Bit
the
dau
of
Ph
wh
Me
too

1
son
of
Ho
wi
the
sis
of
Na
we
the
fat
of
Ke
the
Ga
and
of
Esh
the
[a]M
20A
the
son
of
Sh
we

Am
Rin
Ben
Ha
and
Til
An
the
son
of
Ish
we
Zol
and
Ben
Zol
2
son
of
[a]Sh
[b]th
son
of
Jud
we
Er
the
fat
of
Lec
Laa
the
fat
of
Ma
and
the
fan
of
the

ho
of
the
lin
wo
of
the
ho
of
Ash
[22]a
Jo
the
me
of
Ch
an
Jo
Sa
wh
rul
in
Mo
an
Jas
Le
No
the
*re
are
an
[23]T
we
the
po
an
tho
wh
dw
at

*N
an
*G
the
the
dw
wi
the
ki
for
his
wo

Fa
of
Sin

[a]so
of
Sin
we
*N
Jan
*Ja
*Ze
an
Sh
25S
his
so
Mi
his
so
an
Mi
his
so
26*A*
the
so

of
Mi
we
Ha
his
so
Zac
his
so
and
Sh
his
so
27S
had
six
so
and
six
dau
bu
his
bro
did
no
hav
ma
chi
[a]no
did
any
of
the
fan
mu
as
mu
as
the
chi

of
Ju
[2]
dw
at
Be
Mo
Ha
Sh
[29]*
Ez
*To
[30]B
Ho
Zik
[31]B
Ma
*Ha
Su
Be
Bi
an
at
Sh
Th
we
the
cit
un
the
rei
of
Da
[32]*A*
the
vil
we
*Et
Ai
Ri

To
an
As
—
fiv
cit
—
[33]a
all
the
vil
tha
we
ar
the
cit
as
far
as
*Ba
Th
we
the
dw
pla
an
the
ma
the
ge
[34]M
Ja
an
Jo
the
so
of
Am
[35]J
an

Jeh
the
son
of
Jos
the
son
of
Ser
the
son
of
Asi
[36]E
Jaa
Jes
Asa
Ad
Jes
and
Ber
[37]Z
the
son
of
Shi
the
son
of
All
the
son
of
Jed
the
son
of
Shi
the
son

of
Sh
—
[38]t
me
by
na
we
lea
in
the
fa
an
the
fat
ho
in
gr
3
the
we
to
the
en
of
Ge
as
fa
as
the
ea
sid
of
the
va
to
se
pa
fo
the

flo
[40]A
the
fou
ric
goo
pas
and
the
lan
wa
bro
qui
and
pea
for
son
Ha
for
live
the

4
rec
by

na
ca
in
the
da
of
He
ki
of
Ju
an
the
[a]at
the
te
an
the
Me
wh
we
fou
the
an
[b]ut
des
the
as
it
is
to
thi
da
So
the
dw
in
the
pla
bec
the

wa
pas
for
the
flo
the
[42]N
son
of
the
fiv
hu
me
of
the
son
of
Sin
we
to
Mo
Sei
hav
as
the
cap
Pel
Ne
Re
and
Uz
the
son
of
Ish
[43]A
the
*de
[a]th
res

of
the
Am
wh
hac
esc
Th
hav
dw
the
to
thi
day

1
Ch
5

T
Far
of
Re

1
the
son
of
Re
the
firs
of
Isr
—
[a]he
wa
inc
the
firs
bu
bec
he
[b]de

his
fat
bec
[c]hi
bir
wa
giv
to
the
son
of
Jos
the
son
of
Isr
so
tha
the
gen
is
not
list
acc
to
the
bir
2ye
[a]Ju
pre
ove
his
bro
and
fro
hin
car
a
[b]ru
alt

*th
bir
wa
Jos

—

3th
so
of
[a]Re
the
firs
of
Isr
we
Ha
Pal
He
an
Ca
4
so
of
Jo
we
Sh
his
so
Go
his
so
Shi
his
so
5M
his
so
Re
his
so
Ba

his
son
6an
Bee
his
son
wh
*Ti
Pil
kin
of
Ass
[a]ca
int
cap
He
wa
lea
of
the
Re
7An
his
bre
by
the
fan
[a]w
the
ger
of
the
ger
wa
reg
the
chi
Jei
and
Zec

8an
Bel
the
son
of
Az
the
son
of
Sh
the
son
of
Jo
wh
dw
in
[a]Ar
as
far
as
Ne
an
Ba
Me
9Ea
the
set
as
far
as
the
*en
of
the
wil
thi
sid
of
the

Riv
Eu
be
the
cat
had
[*]m
[a]in
the
lan
of
Gil

1
in
the
day
of
Sau
the
ma
wa
[a]w
the
Ha
wh
fell
by
the
han
and
the
dw
in
the
ten
thr
the
ent
are
eas

of
Gil

T
Far
of
Ga

1
the
[a]ch
of
Ga
dw
ne
to
the
in
the
lan
of
[b]Ba
as
far
as
[c]Sa
12J
wa
the
chi
Sha
the
ne
the
Jaa
and
Sha
in
Ba
13a
the
bre

of
the
fat
ho
Mi
Me
Sh
Jor
Jac
Zia
an
Eb
—
sev
in
all.
[14]T
we
the
chi
of
Ab
the
sor
of
Hu
the
sor
of
Jar
the
sor
of
Gil
the
sor
of
Mi
the
sor

of Jes the son of Jal the son of Bu [15]A the son of Ab the son of Gu *wa* chi of the fat ho [16]*A the Ga* dw in Gil in Bas and in its vil and in all

the
[*]co
lan
of
[a]Sh
wit
the
bor
17A
the
we
reg
by
ger
in
the
day
of
[a]Jo
kin
of
Jud
and
in
the
day
of
[b]Je
kin
of
Isr
1
son
of
Re
the
Ga
and
hal
the

tril
of
Ma
hac
for
fou
tho
sev
hu
anc
six
val
me
me
abl
to
bea
shi
anc
sw
to
sho
wi
the
bo
anc
ski
in
wa
wh
we
to
wa
19T
ma
wa
wi
the
Ha
[a]Je

Na
and
No
20A
[a]th
we
hel
aga
the
and
the
Ha
we
del
int
the
har
and
all
wh
we
wit
the
for
the
[b]cr
out
to
Go
in
the
bat
He
[*]he
the
pra
bec
the
[c]pu
the

tru
in
Hi
[21]T
the
too
aw
the
live
—
fift
tho
of
the
ca
two
hu
and
fift
tho
of
the
she
and
two
tho
of
the
do
—
als
one
hu
tho
of
the
me
[22]fo
ma
fel

dea
bec
the
wa
[a]*we*
Go
An
the
dw
in
the
pla
un
[b]th
cap

T
Far
of
Mo
(Ec

2
the
chi
of
the
hal
tril
of
Ma
dw
in
the
lar
Th
nu
inc
fro
Ba
to
Ba

He
tha
is,
to
[a]Se
or
Mo
He
24T
we
the
hea
of
the
fat
ho
Ep
Ish
Eli
Az
Jer
Ho
an
Jal
Th
we
mi
me
of
val
far
me
an
hea
of
the
fat
ho
2
the

we
un
to
the
Go
of
the
fat
an
[a]pl
the
ha
aft
the
go
of
the
pe
of
the
la
wh
Go
ha
des
bef
the
[26]S
the
Go
of
Isr
sti
up
the
spi
of
[a]Pu
kin
of

Ass
tha
is,
[b]Ti
Pil
kin
of
Ass
He
car
the
Re
the
Ga
and
the
hal
trib
of
Ma
int
cap
He
too
the
to
[c]Ha
Ha
Ha
and
the
riv
of
Go
to
thi
day

1
Ch

6

T
Fa
of
Lev

1
so
of
Lev
we
[a]Ge
Ko
an
Me
2Th
so
of
Ko
we
Am
[a]Iz
He
an
Uz
3Th
chi
of
Am
we
Aa
Mo
an
Mi
An
the
so
of
Aa
we
[a]Na

Ab
Ele
an
Ith
4El
beg
Ph
an
Ph
beg
Ab
5Al
beg
Bu
an
Bu
beg
Uz
6U
beg
Ze
an
Ze
beg
Me
7M
beg
Am
an
Am
beg
Ah
8[a]A
beg
[b]Za
an
Za
beg
Ah
9Al

beg
Az
and
Az
beg
Joh
10J
beg
Az
(it
wa
he
[a]w
mi
as
pri
in
the
[b]te
tha
Sol
bui
in
Jer
11[a]A
beg
[b]Am
and
Am
beg
Ah
12A
beg
Zad
and
Zad
beg
*Sh
13S
beg

Hil
an
Hil
beg
Az
14*A*
beg
[a]*Se*
an
Ser
beg
Jeh
15J
we
int
cap
[a]W
the
LO
car
Ju
an
Jer
int
cap
by
the
har
of
Ne
1
son
of
Lev
we
[a]Ge
Ko
an
Me
17T

are
the
nar
of
the
sor
of
Ge
Lib
anc
Shi
[18]T
sor
of
Ko
we
Am
Izh
He
anc
Uz
[19]T
sor
of
Me
we
Ma
anc
Mu
No
the
are
the
far
of
the
Lev
acc
to
the

fat
20C
Ge
we
Lib
his
sor
Jal
his
sor
[a]Zi
his
sor
21*
his
sor
*Id
his
sor
Zer
his
sor
anc
*Je
his
sor
22T
sor
of
Ko
we
*Ar
his
sor
[a]Kc
his
sor
Ass
his
sor

[23]E
his
son
Ebi
his
son
Ass
his
son
[24]T
his
son
Uri
his
son
Uz
his
son
and
Sha
his
son
[25]T
son
of
Elk
we
[a]An
and
Ah
[26]*A*
for
Elk
the
son
of
Elk
we
*Zo
his

so
*Na
his
so
27*
his
so
Jer
his
so
an
Elk
his
so
28T
so
of
Sa
we
**Jo*
the
firs
an
Ab
*th
sec
29T
so
of
Me
we
Ma
Lib
his
so
Sh
his
so
Uz
his

sor
30S
his
sor
Ha
his
sor
an
Asa
his
sor
I
in
the
Ho
of
the
LO
3
the
are
[a]th
me
wh
Da
app
ove
the
ser
of
sor
in
the
ho
of
the
LO
aft
the
[b]ar

car
to
res
[32]T
we
mi
wit
mu
bef
the
dw
pla
of
the
tab
of
me
unt
Sol
had
bui
the
hou
of
the
LO
in
Jer
and
the
ser
in
the
off
acc
to
the
ord
3
the

are
the
one
wh
*m
wit
the
son
Of
the
son
of
the
[a]Ko
we
He
the
sin
the
son
of
Joe
the
son
of
Sar
34 th
son
of
*El
the
son
of
Jer
the
son
of
Eli
the
son

of
*To
[35]t
so
of
Zu
the
so
of
Elk
the
so
of
Ma
the
so
of
Am
[36]t
so
of
Elk
the
so
of
Jo
the
so
of
Az
the
so
of
Ze
[37]t
so
of
Ta
the
so

of
Ass
the
so
of
[a]Eb
the
so
of
Ko
[38]t
so
of
Izh
the
so
of
Ko
the
so
of
Le
the
so
of
Isr
[39]A
his
bro
[a]As
wh
sto
at
his
rig
ha
wa
Asa
the
so

of
Ber
the
son
of
Shi
40 t
son
of
Mi
the
son
of
Baa
the
son
of
Ma
41 t
son
of
[a]Et
the
son
of
Zer
the
son
of
Ad
42 t
son
of
Eth
the
son
of
Zin
the
son

of
Sh
[43]t
so
of
Ja
th
so
of
Ge
th
so
of
Le
br
th
so
of
Me
on
th
lef
ha
we
*Et
th
so
of
*Ki
th
so
of
Ab
th
so
of
Ma
[45]t
so

of
Ha
the
sor
of
Am
the
sor
of
Hil
[46]tl
sor
of
Am
the
sor
of
Bar
the
sor
of
Sha
[47]tl
sor
of
Ma
the
sor
of
Mu
the
sor
of
Me
the
sor
of
Lev
4
the

bre
the
Lev
we
app
to
eve
[a]ki
of
ser
of
the
tab
of
the
ho
of
Go

T
Fa
of
Aa

4
Aa
an
his
so
off
sac
[b]on
the
alt
of
bu
off
an
[c]on
the
alt
of

inc
for
all
the
wo
of
the
Mo
Ho
Pla
and
to
ma
ato
for
Isr
acc
to
all
tha
Mo
the
ser
of
Go
had
con
50N
the
are
the
[a]so
of
Aa
Ele
his
son
Ph
his
son

Ab
his
son
[51]B
his
son
Uz
his
son
Zer
his
son
[52]M
his
son
Am
his
son
Ah
his
son
[53]Z
his
son
and
Ah
his
son

I
Pla
of
the
Lev

5
the
are
the
dw
pla
thr

the
set
in
the
ter
for
the
we
giv
by
lot
to
the
son
of
Aa
of
the
fan
of
the
Ko
55[a]
gav
the
He
in
the
lan
of
Jud
wit
its
sur
*co
lan
56[a]
the
fiel
of

the
cit
an
its
vil
the
ga
to
Ca
the
so
of
Je
[57]*A*
[a]to
the
so
of
Aa
the
ga
on
of
the
cit
of
ref
He
als
Lib
wi
its
co
lan
Jat
Es
wi
its
co
lan

58*
wi
its
co
la
De
wi
its
co
la
59*
wi
its
co
la
an
Be
Sh
wi
its
co
la
60A
fro
the
tri
of
Be
Ge
wi
its
co
la
*Al
wi
its
co
la
an
An

wit
its
cor
lan
All
the
citi
am
the
fan
we
thi
6
the
res
of
the
fan
of
the
trib
of
the
Ko
the
gav
[b]by
lot
ter
citi
fro
hal
the
trib
of
Ma
62*A*
to
the
son

of
Ge
thr
the
far
the
gaw
thi
citi
fro
the
tril
of
Iss
fro
the
tril
of
Ash
fro
the
tril
of
Na
and
fro
the
tril
of
Ma
in
Bas
63T
the
son
of
Me
thr
the
far

the
gav
[a]tw
citi
fro
the
tril
of
Re
fro
the
tril
of
Ga
and
fro
the
tril
of
Zel
64S
the
chi
of
Isr
gav
the
citi
wit
the
*co
lan
to
the
Lev
65*A*
the
gav
by
lot

fro
the
tril
of
the
chi
of
Juc
fro
the
tril
of
the
chi
of
Sin
and
fro
the
tril
of
the
chi
of
Ber
the
citi
wh
are
cal
by
the
nar

e

[a]so
of
the
far
of
the

sor
of
Ko
wei
giv
citi
as
the
ter
fro
the
tril
of
Epl
67a.
the
gav
the
one
of
the
citi
of
ref
Sh
wit
its
cor
lar
in
the
mo
of
Epl
als
Ge
wit
its
cor
lar

68a
wi
its
co
lan
Be
Ho
wi
its
co
lan
69A
wi
its
co
lan
an
Ga
Rin
wi
its
co
lan
70A
fro
the
hal
tri
of
Ma
An
wi
its
co
lan
an
Bil
wi
its
co

lan
for
the
res
of
the
fan
of
the
son
of
Ko

7
the
fan
of
the
hal
trib
of
Ma
the
son
of
Ge
we
giv
Go
in
Ba
wit
its
con
lan
and
*As
wit
its
con
lan

[72]A
fro
the
tril
of
Iss
*Ke
wi
its
co
lan
Da
wi
its
co
lan
[73]F
wi
its
co
lan
and
An
wi
its
co
lan
[74]A
fro
the
tril
of
Ash
Ma
wi
its
co
lan
Ab
wi

its
cor
lar
75H
wi
its
cor
lar
anc
Rel
wi
its
cor
lar
76A
fro
the
tril
of
Na
Ke
in
Ga
wi
its
cor
lar
Ha
wi
its
cor
lar
anc
Kir
wi
its
cor
lar

7
the

tril
of
Zel
the
res
of
the
chi
of
Me
we
giv
[*]Ri
wit
its
cor
lan
and
Tal
wit
its
cor
lan
[78]A
on
the
oth
sid
of
the
Jor
acr
fro
Jer
on
the
eas
sid
of
the

Jor
the
wer
giv
fro
the
tril
of
Re
Be
in
the
wil
wit
its
cor
lar
Jak
wit
its
cor
lar
79 K
wit
its
cor
lar
and
Me
wit
its
cor
lar
80 *A*
fro
the
tril
of
Ga
Ra

in
Gil
wit
its
cor
lan
Ma
wit
its
cor
lan
81H
wit
its
cor
lan
and
Jaz
wit
its
cor
lan

1
Ch
7

T
Fan
of
Iss

1
son
of
Iss
wer
[a]To
*Pu
*Ja
and
Shi

—
fou
in
all.
2Th
son
of
Tol
wer
Uz
Re
Jer
Jal
Jib
an
Sh
hea
of
the
fat
ho
Th
son
of
Tol
wer
mi
me
of
val
in
the
ger
[a]th
nu
in
the
day
of
Da

wa
tw
tw
th
six
hu
[3]T
so
of
Uz
wa
Izr
an
the
so
of
Izr
we
Mi
Ob
Jo
an
Ish
All
fiv
of
the
we
chi
me
[4]A
wi
the
by
the
ge
ac
to
the
fat

ho
we
thi
six
tho
tro
rea
for
wa
for
the
hac
ma
wi
anc
sor
5
the
bre
am
all
the
far
of
Iss
we
mi
me
of
val
list
by
the
ger
eig
sev
tho
in
all
7

Far
of
Ber

6
sor
of
[a]Be
we
Bel
Bec
and
Jed
—
thr
in
all.
7Th
son
of
Bel
we
Ezb
Uz
Uz
Jer
and
Iri
—
fiv
in
all.
Th
we
hea
of
the
fat
ho
and
the

we
list
by
the
ger
two
two
tho
and
thi
fou
mi
me
of
val

8
sor
of
Bec
we
Zer
Joa
Eli
Eli
On
Jer
Ab
An
and
Ale
All
the
are
the
sor
of
Bec
9Ar
the
we

rec
by
ger
acc
to
the
ger
hea
of
the
fat
hou
two
tho
two
hur
mi
me
of
val
[10]T
sor
of
Jed
wa
Bil
and
the
sor
of
Bil
wei
Jeu
Ber
Eh
Ch
Zet
Th
and
Ah

1
the
son
of
Jed
wer
hea
of
the
fat
hou
the
wer
sev
tho
two
hun
mi
me
of
val
fit
to
go
out
for
wa
and
bat
12*
and
*Hu
wer
the
son
of
*Ir,
and
Hu
wa

the
son
of
*Al

T
Far
of
Na

1
[a]so
of
Na
we
*Ja
Gu
Jez
and
*Sh
the
son
of
Bil

T
Far
of
Mo
(W

1
[a]de
of
Ma
his
Syr
cor
bor
hir
[b]M
the
fat
of

Gil
the
fat
of
As
15M
too
as
his
wi
the
sist
of
*Hu
and
*Sh
wh
nar
wa
Ma
Th
nar
of
Gil
*gr
wa
[a]Ze
bu
Zel
beg
on
da
16(
the
wi
of
Ma
bo
a
so

and
she
cal
his
nar
Per
Th
nar
of
his
bro
wa
Sh
and
his
son
we
Ula
and
Ra
17T
son
of
Ula
wa
[a]Be
Th
we
the
des
of
Gil
the
son
of
Ma
the
son
of
Ma

1
sis
Ha
bo
Ish
*Al
an
Ma

1
the
so
of
Sh
we
Ah
Sh
Lik
an
An

T
Fa
of
Ep

2
so
of
Ep
we
Sh
Be
his
so
Ta
his
so
Ela
his
so
Ta
his

son
[21]Z
his
son
Sh
his
son
an
Ez
an
Ele
Th
me
of
Ga
wh
we
bo
in
th
lan
kil
the
be
the
ca
do
to
tak
aw
the
cat
[22]T
Ep
the
fat
m
ma
da
an

his
bre
can
to
cor
hir
2
wh
he
we
in
to
his
wi
she
cor
and
bor
a
sor
and
he
cal
his
nar
*Be
bed
tra
had
cor
up
his
ho
24N
his
dat
wa
Sh
wh
bur

Lo
an
Up
[a]Be
Ho
an
Uz
Sh
25a
Re
wa
his
so
as
we
as
Re
an
Te
his
so
Ta
his
so
26L
his
so
An
his
so
[a]El
his
so
27[*]
his
so
an
[a]Jo
his
so

2
the
[a]po
and
dw
pla
we
Be
and
its
tow
to
the
eas
*Na
to
the
we
Ge
and
its
tow
and
Sh
and
its
tow
as
far
as
*Ay
and
its
tow
[29]a
by
the
bo
of
the

chi
of
[a]M
we
Be
Sh
an
its
to
Ta
an
its
to
[b]M
an
its
to
Do
an
its
to
In
the
dw
the
chi
of
Jo
the
so
of
Isr

Fa
of
As

so
of
As

we
Im
Ish
Ish
Be
an
the
sis
Se
[31]T
so
of
Be
we
He
an
Ma
wh
wa
the
fat
of
*Bi
[32]A
He
beg
Jap
*Sh
*H
an
the
sis
Sh
[33]T
so
of
Jap
we
Pa
Bi

an
As
Th
we
the
chi
of
Ja
[34]T
so
of
[a]Sh
we
Ah
Ro
Je
an
Ar
[35]A
the
so
of
his
br
He
we
Zo
Im
Sh
an
Am
[36]T
so
of
Zo
we
Su
Ha
Sh
Be

Im
[37]B
Ho
Sha
Shi
*Ji
an
Be
[38]T
so
of
Jet
we
Je
Pis
an
Ara
[39]T
so
of
Ull
we
Ara
Ha
an
Riz
4
the
we
the
chi
of
Ash
hea
of
the
fat
ho
ch
me

mi
me
of
val
chi
lea
An
the
we
rec
by
ger
am
the
arr
fit
for
bat
the
nur
wa
two
six
tho

1
Ch
8

T
Far
Tre
of
Kin
Sau
of
Ben

1
Ben
beg
[a]Be
his

firs
Ash
the
sec
*Ah
the
thi
2No
the
fou
and
Rap
the
fift
3Th
son
of
Bel
wer
*Ad
Ge
Ab
4Ab
Na
Ah
5Ge
*Sh
and
Hu
6
are
the
son
of
Eh
wh
we
the
hea
of

the
fat
hou
of
the
inh
of
[a]Ge
and
wh
for
the
to
mo
to
[b]M
7Na
Ah
and
Ge
wh
for
the
to
mo
He
beg
Uz
and
Ah
8
Sha
had
chi
in
the
cou
of
Mo
aft

he
had
ser
aw
Hu
and
Baa
his
wiv
[9]By
Ho
his
wi
he
beg
Jol
Zib
Me
Ma
[10]J
Sac
and
Mi
Th
we
his
son
hea
of
the
fat
hou

1
by
Hu
he
beg
Ab
and
Elp

[12]T
so
of
Elp
we
Eb
Mi
an
Sh
wh
bu
On
an
Lo
wi
its
to
[13]a
Be
an
[a]*Sh*
wh
we
hea
of
the
fat
ho
of
the
inh
of
Aij
wh
dr
ou
the
inh
of
Ga

14A
Sha
Je
15Z
Ar
Ed
16M
Isp
an
Jo
we
the
so
of
Be
17Z
Me
Hi
He
18I
Ji
an
Jo
we
the
so
of
El
19J
Zi
Za
20E
Zi
Eli
21A
Be
an
Sh
we
the

son
of
*Sh
[22]Is
Eb
Eli
[23]A
Zic
Ha
[24]H
Ela
An
[25]I
and
Pe
we
the
son
of
Sha
[26]S
Sh
Ath
[27]J
Eli
and
Zic
we
the
son
of
Jer
2
we
hea
of
the
fat
hou
by

the
ger
chi
me
Th
dw
in
Jer
2
*th
fat
of
Gil
wh
[a]w
nar
wa
Ma
dw
at
Gil
[30]A
his
firs
son
wa
Ab
the
Zu
Kis
Ba
Na
[31]C
Ah
*Ze
[32]a
Mi
wh
beg
*Sh

Th
als
dw
*al
the
*re
in
Jer
wi
the
bre
33a
beg
Kis
Kis
beg
Sau
and
Sau
beg
Jon
Ma
*Al
and
*Es
Baa
34T
son
of
Jon
wa
*M
Baa
and
Me
Baa
beg
[a]M
35T
son

of
Mi
we
Pit
Me
*Ta
an
Ah
[36]*A*
Ah
beg
*Je
Je
beg
Ale
Az
an
Zi
an
Zi
beg
Mo
[37]M
beg
Bi
*Ra
his
so
Ele
his
so
an
Az
his
so

ha
six
so
wh
na
we
the
Az
Bo
Ish
Sh
Ob
an
Ha
All
the
we
the

son
of
Az
[39]A
the
son
of
Esh
his
bro
we
Ula
his
firs
Jeu
the
sec
and
Eli
the
thi
4
son
of
Ula
we
mi
me
of
val
—
arc
Th
had
ma
son
and
gra
one
hu

an
fift
in
all.
Th
we
all
so
of
Be

1
Ch
9

1
[a]al
Isr
wa
[*]re
by
ge
an
in
the
we
ins
in
the
bo
of
the
ki
of
Isr
Bu
Ju
wa
ca
aw
ca

to
Bal
bec
of
the
uni
[2][a]A
the
firs
inh
wh
dw
in
the
pos
in
the
citi
wer
Isra
pri
Lev
and
[b]th
Ne

I
in
Jer

3
in
[a]Je
the
chi
of
Jud
dw
and
son
of
the

chi
of
Be
an
of
the
chi
of
Ep
an
Ma
[4]U
the
so
of
Am
the
so
of
On
the
so
of
Im
the
so
of
Ba
of
the
de
of
Pe
the
so
of
Ju
[5]O
the
Sh

Asa
the
firs
and
his
son
6On
the
son
of
Zer
Jeu
and
the
bre
—
six
hun
and
nin
7On
the
son
of
Ben
Sal
the
son
of
Me
the
son
of
Ho
the
son
of
Ha
8Ib
the

son
of
Jer
Ela
the
son
of
Uz
the
son
of
Mi
Me
the
son
of
Sh
the
son
of
Re
the
son
of
Ibn
9an
the
bre
acc
to
the
gen
—
nin
hu
and
fift
six
All
the

me
we
hea
of
a
fat
hou
in
the
fat
hou

T
Pri
at
Jer

1
the
pri
Jed
Jeh
and
Jac
11*
the
son
of
Hil
the
son
of
Me
the
son
of
Zad
the
son
of
Me
the

so
of
Ah
the
[a]of
ov
the
ho
of
Go
12A
the
so
of
Je
the
so
of
Pa
the
so
of
Ma
Ma
the
so
of
Ad
the
so
of
Ja
the
so
of
Me
the
so
of
Me

the
sor
of
Im
[13]a
the
bre
hea
of
the
fat
ho
—
on
tho
sev
hu
an
six
Th
we
*ve
abl
me
for
the
wo
of
the
ser
of
the
ho
of
Go
T
Lev
at
Jer
1

the
Lev
Sho
the
son
of
Ha
the
son
of
Azi
the
son
of
Ha
of
the
son
of
Me
15B
He
Ga
and
Ma
the
son
of
Mi
the
son
of
[a]Zi
the
son
of
Asa
16[a]
the
son

of
[b]Sh
the
so
of
Ga
the
so
of
Je
an
Be
the
so
of
As
the
so
of
Elk
wh
liv
in
the
vil
of
the
Ne

T
Lev
Ga

1
the
gat
we
Sh
Ak
Ta
Ah
an

the
bre
Sha
wa
the
chi
[18]U
the
the
ha
bee
gat
for
the
ca
of
the
chi
of
Lev
at
the
Kin
Ga
on
the
eas
1
the
so
of
Ko
the
so
of
Eb
the
so
of
Ko

an
his
bre
fro
his
fat
ho
the
Ko
we
in
cha
of
the
wo
of
the
ser
[*]ga
of
the
tab
Th
fat
ha
bee
kee
of
the
ent
to
the
car
of
the
LO
20*A*
[a]Ph
the
so

of
Ele
had
bee
the
off
ove
the
in
tim
pas
the
LO
wa
wit
hin
21[a]
the
son
of
Me
wa
*ke
of
the
doo
of
the
tab
of
me
2
tho
che
as
gat
wer
two
hun
and

two
[a]Th
we
rec
by
the
gen
in
the
vil
Da
and
Sam
[b]th
see
had
app
the
to
the
tru
off
23S
the
and
the
chi
wer
in
cha
of
the
gat
of
the
hou
of
the
LO
the

ho of the tab by ass [24]T gat we ass to the fou dir the eas we no and sou [25]A the bre in the vil *ha* to co wi the fro tim to tim [a]fo sev day [26]F in

thi
tru
off
we
fou
chi
gat
the
we
Lev
An
the
had
cha
ove
the
cha
and
tre
of
the
hou
of
Go
[27]*A*
the
loc
all
aro
the
hou
of
Go
bec
[*]th
had
the
[a]re
and
the

we
in
cha
of
op
it
eve
mo
C
Le
Re
2
so
of
the
we
in
cha
of
the
se
ve
fo
the
br
the
in
an
to
the
ou
by
co
29*S*
of
the
we
ap
ov
the

fur
an
ov
all
the
im
of
the
sa
an
ov
the
[a]fi
flo
an
the
wi
an
the
oil
an
the
in
an
the
spi
30*A*
so
of
the
so
of
the
pri
ma
[a]th
oi
of
the
spi

3
of
the
Lev
the
firs
of
Sha
the
Ko
ha
the
tru
off
[a]ov
the
thi
tha
we
bal
in
the
pa
32A
so
of
the
bre
of
the
so
of
the
Ko
[a]*w*
in
cha
of
pre
the

sho
for
eve
Sal
3
are
[a]th
sin
hea
of
the
fat
hou
of
the
Lev
wh
lod
in
the
cha
and
wei
fre
fro
oth
du
for
the
we
em
in
tha
wo
day
and
nig
34T
hea
of

the
fat
hou
of
the
Lev
wer
hea
thr
the
ger
Th
dw
at
Jer

T
Far
of
Kir
Sau

3
the
fat
of
Gil
wh
wi
nar
wa
[a]M
dw
at
Gil
36H
firs
sor
wa
Ab
the
Zu

Kis
Ba
Ne
Na
[37]C
Ah
*Ze
an
Mi
[38]A
Mi
beg
*Sh
Th
als
dw
alo
the
rel
in
Jer
wi
the
bre
[39]a
beg
Kis
Kis
beg
Sau
an
Sau
beg
Jor
Ma
Ab
an
Esh
Ba
[40]T

son
of
Jon
wa
Me
Baa
and
Me
Baa
beg
Mi
41 T
son
of
Mi
we
Pit
Me
*Ta
a
and
Ah
42 A
Ah
beg
*Ja
Jar
beg
Ale
Azr
and
Zin
and
Zin
beg
Mo
43 M
beg
Bin
*Re

his
sor
Ele
his
sor
anc
Aze
his
sor
4
Aze
hac
six
sor
wh
nar
we
the
Azi
Bo
Ish
She
Ob
anc
Ha
the
we
the
sor
of
Aze

1
Ch
10
T
En
of
Sa
an

His
So

1
[a]th
Ph
fou
aga
Isr
and
the
me
of
Isr
fle
fro
bef
the
Ph
and
fel
sla
on
Mo
Gil
2Th
the
Ph
fol
har
aft
Sa
and
his
sor
An
the
Ph
kil
Jor
*A

anc
Ma
Sa
son
[3]Tl
bat
bec
fie
aga
Sa
Th
arc
hit
hin
anc
he
wa
wo
by
the
arc
[4]Tl
Sa
sai
to
his
arr
“D
yo
sw
anc
thi
me
thi
wi
it,
les
the
unc
me

cor
and
abu
me
Bu
his
arr
wo
not
for
he
wa
gre
afr
Th
Sau
too
a
sw
and
fel
on
it.
[5]Ar
wh
his
arr
saw
tha
Sau
wa
dea
he
als
fel
on
his
sw
and
die

[6]So
Sau
an
his
thr
son
die
an
all
his
ho
die
tog
[7]An
wh
all
the
me
of
Isra
wh
we
in
the
val
sav
tha
the
ha
fle
an
tha
Sau
an
his
son
we
dea
the
for

the
citi
and
fle
the
the
Ph
car
and
dw
in
the
8
it
hap
the
nex
day
wh
the
Ph
car
to
*str
the
sla
tha
the
fou
Sau
and
his
son
fall
on
Mo
Gil
9Ar
the
str

hir
anc
toc
his
hea
anc
his
arr
anc
ser
wo
thr
the
lar
of
the
Ph
to
pro
the
nev
in
the
tem
of
the
ido
anc
am
the
pec
10 [a]
the
pu
his
arr
in
the
*te
of

the
goo
and
fas
his
hea
in
the
ten
of
Da

1
wh
all
Jab
Gil
hea
all
tha
the
Ph
had
dor
to
Sau
12a
the
[a]va
me
aro
and
too
the
boo
of
Sau
and
the
boo
of

his
son
and
the
bro
the
to
[b]Ja
and
bur
the
bon
und
the
tam
tre
at
Jab
and
fas
sev
day

1
Sau
die
for
his
unf
wh
he
had
*co
aga
the
LO
[a]be
he
dic
not
kee

the
wo
of
the
LO
an
als
bec
[b]he
co
a
me
for
gu
14B
he
di
no
inq
of
the
LO
the
He
kil
hi
an
[a]tu
the
kin
ov
to
Da
the
so
of
Jes

1
Ch
11

I
Mo
Kin
ove
All
Isr

1
[a]al
Isr
ca
tog
to

Da
at
He
say
“In
we
are
you
bo
and
you
fle
[2]Al
in
tim
pas
e1v
wh
Sau
wa
kin
you
we
the
one
wh
led
Isr
ou
and
bro
the
in;
and
the
LO
you
[a]Go
sai
to

yo
‘Y
sha
[b]sh
My
pe
Isr
an
be
ru
ov
My
pe
Isr
”

3Th
all
the
eld
of
Isr
ca
to
the
kin
at
He
an
Da
ma
a
co
wi
the
at
He
be
the
LO
An

[a]th
and
Da
kin
ov
Isr
acc
to
the
wo
of
the
LO
[*]by
[b]*Sa*

T
Cit
of
Da

4
Da
and
all
Isr
[a]w
to
Jer
wh
is
Jeb
[b]w
the
Jeb
we
the
inh
of
the
lan
5Bu

the
inh
of
Jeb
sai
to
Da
“Yo
sha
no
con
in
her
Ne
Da
too
the
stro
of
Zio
(th
is,
the
Cit
of
Da
[6]Ne
Da
sai
“W
att
the
Jeb
firs
sha
be
*ch
and
cap
An

Joa
the
son
of
Zer
we
up
firs
and
bec
chi
[7]Th
Da
dw
in
the
stro
the
the
cal
it
*th
Cit
of
Da
[8]An
he
bui
the
city
aro
it,
fro
*th
Mi
to
the
sur
are
Joa

[*]re
the
res
of
the
cit
9S
Da
[a]w
on
an
be
gre
an
the
LO
of
ho
wa
wi
[b]hi

Mi
Me
of
Da

1
[a]th
we
the
hea
of
the
mi
me
wh
Da
ha
wh
str

the wit hir in his kir wit all Isr to ma hir kir acc to [b]th wo of the LO cor Isr

1 thi *is* the nu of the mi me wh Da hac [a]Ja the sor of a Ha

[b]ch
of
[*]th
cap
he
ha
lift
up
his
sp
ag
thr
hu
kil
by
hi
at
on
tim
1
hi
wa
El
the
so
of
[a]D
the
Ah
wh
wa
on
of
the
thr
mi
me
13H
wa
wi

Da
at
*Pa
No
the
the
Ph
we
gat
for
bat
and
the
wa
a
pie
of
gro
ful
of
bar
So
the
peo
fle
fro
the
Ph
14B
the
*sta
the
in
the
mi
of
tha
fiel
def
it,

an
kil
the
Ph
So
the
LO
br
ab
a
gre
vi

1
thr
of
the
thi
chi
me
[a]w
do
to

the
roc
to
Da
int
the
cav
of
Ad
and
the
arr
of
the
Ph
end
[b]in
the
Va
of
[*]Re
[16]D
wa
the
in
the
str
and
the
gar
of
the
Ph
wa
the
in
Bet
[17]A
Da
sai

wit
lon
“O
tha
son
wo
giv
me
a
dri
of
wa
fro
the
we
of
Bet
wh
is
by
the
gat
18S
the
thr
bro
thr
the
can
of
the
Ph
dre
wa
fro
the
we
of
Bet
tha

wa by the gat and too *it* and bro *it* to Da Ne Da wo not dri it, but po it out to the LO [19]A he sai “Fa be it fro me O my Go tha I sho do

thi
Sha
I
dri
the
blo
of
the
me
wh
hav
put
the
liv
in
jeo
Fo
at
the
ris
of
the
liv
the
bro
it.’
Th
he
wo
no
dri
it.
Th
thi
we
do
by
the
thr
mi

me
2
the
bro
of
Joa
wa
chi
of
an
*th
He
had
lift
up
his
spe
aga
thr
hu
me
kil
the
and
wo
a
nar
am
the
thr
21a
the
thr
he
wa
mo
hor
tha
the
oth

tw
me
Th
he
be
the
cap
Ho
he
did
no
att
to
the
firs
thr
2
wa
the
so
of
Jeh
the
so
of
a
val
ma
fro
Kal
wh
*ha
do
ma
de
[a]H
had
kil
tw
lio

lik
her
of
Mo
He
als
ha
go
do
an
kil
a
lio
in
the
mi
of
a
pit
on
a
sn
day
[23]A
he
kil
an
Eg
a
ma
of
gre
hei
*fiv
cul
tal
In
the
Eg
ha

the
wa
a
spe
lik
a
we
bea
an
he
we
do
to
hi
wi
a
sta
wr
the
spe
ou
of
the
Eg
ha
an
kil
hi
wi
his
ow
spe
[24]T
thi
Be
the
so
of
Jeh
di

an
wo
a
na
am
thr
mi
me
[25]I
he
wa
mo
ho
tha
the
thi
bu
he
di
no
att
to
the
firs
thr
An
Da
ap
hi
ov
his
gu
2
the
mi
wa
we
[a]As
the
br

of
Joa
Elh
the
son
of
Do
of
Be
27*
the
Ha
[a]H
the
*Pe
28[a]
the
son
of
Ikk
the
Te
[b]Al
the
An
29*
the
Hu
*Ila
the
Ah
30[a]
the
Ne
*H
the
son
of
Ba
the

Ne
31*
the
son
of
Rib
of
Gil
of
the
son
of
Ben
[a]Be
the
Pin
32*
of
the
bro
of
Ga
*Al
the
Ark
33A
the
*Ba
Eli
the
Sha
34t
son
of
*Ha
the
Giz
Jon
the
son

of
Sha
the
Ha
[35]A
the
son
of
*Sa
the
Ha
*El
the
son
of
*Ur
[36]H
the
Me
Ah
the
Pel
[37]*
the
Ca
*Na
the
son
of
Ez
[38]J
the
bro
of
Na
Mi
the
son
of
Ha

[39]Z
the
Am
Na
the
*Be
(th
arr
of
Joa
the
sor
of
Zer
[40]I
the
Ith
Ga
the
Ith
[41][a]
the
Hit
*Za
the
sor
of
Ah
[42]A
the
sor
of
Shi
the
Re
(a
chi
of
the
Re

anc
thi
wit
hir
[43]H
the
son
of
Ma
Jos
the
Mi
[44]U
the
Ash
Sha
anc
Jei
the
son
of
Ho
the
Arc
[45]J
the
son
of
Shi
anc
Joh
his
bro
the
Tiz
[46]E
the
Ma
Jer
anc

Jos
the
son
of
Elr
Ith
the
Mo
[47]E
Ob
and
Jaa
the
Me

1
Ch
12

T
Gr
of
Da
Ar

1
1[a]t
wer
the
me
wh
can
to
Da
at
[b]Zi
wh
he
wa
stil
a
fug

fro
Sa
the
sor
of
Kis
anc
the
we
am
the
mi
me
hel
in
the
wa
2ar
wi
bo
usi
bo
the
rig
har
anc
[a]th
lef
in
hu
sto
anc
sho
arr
wi
the
bo
The
we
of

Be
Sa
bre
3
chi
wa
Ah
the
Jo
the
so
of
*Sh
the
Gil
Jez
an
Pe
the
so
of
Az
Be
an
Jeh
the
An
4Is
the
Gil
a
mi
ma
am
the
thi
an
ov
the
thi

Jer
Jal
Jol
anc
Joz
the
Ge
[5]El
Jer
Bea
Sho
anc
Sho
the
Ha
[6]El
Jis
Aza
Joe
anc
Jas
the
Ko
[7]an
Joe
anc
Zel
the
son
of
Jer
of
Ge
[8]
Ga
*jo
Da
at
the
stre

in
the
wi
mi
me
of
val
me
tra
for
bat
wh
cou
han
shi
an
spe
wh
fac
we
lik
the
fac
of
lio
an
we
[a]as
sw
as
gaz
on
the
mo
9Ez
the
firs
Ob
the
sec

Eli
the
thi
10M
the
fou
Jer
the
fift
11A
the
six
Eli
the
sev
12J
the
eig
Elz
the
nir
13J
the
ten
and
Ma
the
ele
14T
wei
fro
the
sor
of
Ga
cap
of
the
arr
the

lea
wa
ov
a
hu
an
the
gre
wa
ov
a
[a]th
15T
are
the
on
wh
cro
the
Jor
in
the
firs
mo
wh
it
ha
ov
all
its
[a]ba
an
the
pu
to
flig
all
tho
in
the

val
to
the
eas
an
to
the
we
1
so
of
the
so
of
Be
an
Ju
ca
to
Da
at
the
str
17A
Da
we
ou
*to
me
the
an
ans
an
sai
to
the
“If
yo
hav
co

pea
to
me
to
hel
me
my
hea
wil
be
un
wit
you
but
if
to
bet
me
to
my
en
sin
the
is
no
*wi
in
my
ha
ma
the
Go
of
ou
fat
loo
an
bri
jud
18T

the
Spi
*ca
upo
[a]An
chi
of
the
cap
and
he
sai

S
Da
rec
the
and
ma
the
cap
of
the
tro

1
son
fro
Ma
def
to
Da
[a]w
he
wa
goi
wit
the
Ph
to
bat
aga
Sau
bu
the
did
no
hel
the

for
the
lor
of
the
Ph
ser
hin
aw
by
agr
say
[b]“F
ma
def
to
his
ma
Sau
anc
enc
our
hea
20W
he
we
to
Zik
tho
of
Ma
wh
def
to
hin
we
Ad
Joz
Jed
Mi

Joz
Eli
and
Zil
cap
of
the
tho
wh
we
fro
Ma
[21]*A*
the
hel
Da
aga
[a]th
bar
of
rai
for
the
we
all
mi
me
of
val
and
the
we
cap
in
the
arr
[22]F
at
tha
tim

the
car
to
Da
day
by
day
to
hel
hir
unt
it
wa
a
gre
arr
[a]lik
the
arr
of
Go
I
Ar
at
He
2
the
we
the
nu
of
the
[*]di
tha
we
equ
for
wa
and
[a]ca

to
Da
at
[b]H
to
[c]tu
ove
the
kin
of
Sa
to
hin
[d]ac
to
the
wo
of
the
LO
24 O
the
son
of
Ju
bea
shi
and
spe
six
tho
eig
hu
*an
for
wa
25 O
the
son
of

Sin
mi
me
of
val
fit
for
wa
sev
tho
one
hu
[26]O
the
son
of
Lev
fou
tho
six
hu
[27]J
the
lea
of
the
Aa
and
wit
hin
thr
tho
sev
hu
[28]a
a
you
ma
a
val

wa
an
fro
his
fat
ho
tw
tw
cap
29O
the
so
of
Be
rel
of
Sa
thr
tho
(u
the
[a]th
gre
pa
of
the
ha
re
loy
to
the
ho
of
Sa
30O
the
so
of
Ep
tw

tho
eig
hu
mi
me
of
val
[*]fa
me
thr
the
fat
ho
31O
the
hal
tri
of
Ma
eig
tho
wh
we
des
by
na
to
co
an
ma
Da
ki
32O
the
so
of
Iss
[a]w
ha
un

of
the
tim
to
kn
wh
Isr
oug
to
do
the
chi
we
tw
hu
an
all
the
bre
we
at
the
co
[33]O
Zel
the
we
fift
tho
wh
we
ou
to
bat
exp
in
wa
wit
all
we

of
wa
[a]st
me
wh
cou
kee
ran
34O
Na
on
tho
cap
an
wi
the
thi
sev
tho
wi
shi
an
spe
35O
the
Da
wh
cou
kee
bat
for
tw
eig
tho
six
hu
36O
Ash
tho
wh

cou
go
ou
to
wa
abl
to
kee
ba
for
for
tho
37O
the
Re
an
the
Ga
an
the
hal
tril
of
Ma
fro
the
oth
sid
of
the
Jo
on
hu
an
tw
tho
arr
for
ba
wi

eve
kin
of
we
of
wa

3
the
me
of
wa
wh
cou
kee
ran
can
to
He
wit
a
loy
hea
to
ma
Da
kin
ove
all
Isr
and
all
the
res
of
Isr
we
of
[a]on
mi
to

ma
Da
kin
[39]A
the
we
the
wit
Da
thr
day
eat
and
dri
for
the
bre
had
pre
for
the
[40]M
tho
wh
we
nea
to
the
fro
as
far
aw
as
Iss
and
Zel
and
Na
we
bri

foo
on
do
anc
car
on
mu
anc
oxe
—
pro
of
flo
anc
cal
of
fig
anc
cal
of
rai
wi
anc
oil
anc
oxe
anc
she
abu
for
the
wa
joy
in
Isr

1
Ch
13

Ar Bro fro Ki Je

1 Da co wi the [a]ca of tho an hu *an* wi eve lea [2]A Da sai to all the ass of Isr “If *it see* goo to you an if it is of the

LO
ou
Go
let
us
se
ou
to
ou
br
ev
wh
ar
[a]le
in
all
th
la
of
Isr
an
wi
th
to
th
pri
an
Le
wh
ar
in
th
cit
an
th
co
la
th
th
ma

gat
tog
to
us;
3an
let
us
bri
the
ark
of
our
Go
bac
to
us,
[a]fo
we
hav
not
inq
at
it
sin
the
day
of
Sau
4Th
all
the
ass
sai
tha
the
wo
do
so,
for
the

thi
wa
rig
in
the
eye
of
all
the
peo
5
[a]Da
gat
all
Isr
tog
fro
[b]Sh
in
Eg
to
as
far
as
the
ent
of
Ha
to
bri
the
ark
of
Go
[c]fr
Kir
Jea
6Ar
Da
an

all Isr we up to [a]Ba to Ki Jea wh bel to Ju to bri up fro the the ark of Go the LO [b]w dw *bet* the che wh *His* na is pro 7So the [*]ca the ark of

Go
[a]on
a
ne
ca
[b]fr
the
ho
of
Ab
an
Uz
an
Ah
dr
the
ca
8Th
[a]Da
an
all
Isr
pla
mu
bef
Go
wi
all
the
mi
wi
[*]sin
on
ha
on
str
ins
on
tan
on

cy
an
wi
tru
9
wh
the
ca
to
*Cl
thr
flo
Uz
pu
ou
his
ha
to
ho
the
ark
for
the
ox
*st
10T
the
an
of
the
LO
wa
ar
ag
Uz
an
He
str
hi
[a]be

he
pu
his
har
to
the
ark
anc
he
[b]di
the
bef
Go
11A
Da
bec
ang
bec
of
the
LO
ou
aga
Uz
the
tha
pla
is
cal
*Pe
Uz
to
thi
day
12D
wa
afr
of
Go
tha

da
say
“H
car
I
bri
the
ark
of
Go
to
me

1
Da
wo
no
mo
the
ark
wi
hir
int
the
Cit
of
Da
bu
too
it
asi
int
the
ho
of
Ob
Ed
the
Git

14[a]
ark

of
Go
ren
wit
the
fan
of
Ob
Ed
in
his
hou
thr
mo
An
the
LO
ble
[b]th
hou
of
Ob
Ed
anc
all
tha
he
hac

1
Ch
14

I
Est
at
Jer

1
[a]H
kin
of

Ty
ser
me
to
Da
an
cec
tre
wi
ma
an
ca
to
bu
hi
a
ho
[2]S
Da
kn
tha
the
LO
ha
est
hi
as
ki
ov
Isr
for
his
ki
wa
[a]hi
exa
for
the
sal
of

His
pe
Isr
3
Da
to
mo
wi
in
Je
an
Da
be
mo
so
an
da
4A
[a]th
are
th
na
of
his
ch
wh
he
ha
in
Je
*Sh
Sh
Na
Sol
5Ib
*El
*El
6N
Ne
Ja

7El
*Be
and
Eli

Ph
Def

wh
the
Ph
hea
tha
[a]Da
had
bee
and
kin
ove
all
Isra
all
the
Ph
we
up
to
sea
for
Da
An
Da
hea
of
it
and
we
out
aga
the

[9]Th
the
Ph
we
an
ma
a
rai
[a]on
the
Va
of
*Re
[10]A
Da
[a]in
of
Go
say
“Sh
I
go
up
aga
the
Ph
Wi
Yo
del
the
int
my
han
T
LO
sai
to
hin
“G
up

for I wil del the int you ha

1 the we up to Ba Pe an Da de the the Th Da sai “G ha bro thr my en by my ha lik a bre of wa Th the cal

the
nar
of
tha
pla
*Ba
Per
[12]A
wh
the
lef
the
goo
the
Da
gav
a
con
and
the
we
bur
wit
fire

1
the
Ph
one
aga
ma
a
rai
on
the
val
[14]T
Da
inq
aga
of

Go
anc
Go
sai
to
hir
“Yo
sha
no
go
up
aft
the
cir
arc
the
[a]ar
cor
upo
the
in
fro
of
the
mu
tre
15A
it
sha
be,
wh
you
hea
a
sou
of
ma
in
the
top

of
the
mu
tre
the
you
sha
go
ou
to
ba
for
Go
ha
go
ou
be
you
to
str
the
ca
of
the
Ph
[16]S
Da
dic
as
Go
co
hi
an
the
dro
ba
the
ar
of
the

Ph
fro
*Gi
as
far
as
Ge
[17]T
[a]th
far
of
Da
we
ou
int
all
lan
and
the
LO
[b]br
the
fea
of
hir
up
all
nat

1
Ch
15

T
Ark
Bro
to
Jer

1
bu
ho

for hin in the Cit of Da an he pre a pla for the ark of Go [a]ar pit a ten for it. 2Th Da sai “N on ma car the [a]ar of Go bu the Lev for [b]th LO

has
che
the
to
car
the
ark
of
Go
an
to
mi
bef
Hi
for
3 Ar
Da
[a]ga
all
Isr
tog
at
Jer
to
bri
up
the
ark
of
the
LO
to
its
pla
wh
he
ha
pre
for
it.

[4]Th
Da
ass
the
chi
of
Aa
anc
the
Lev
[5]of
the
sor
of
Ko
Uri
the
chi
anc
one
hu
anc
two
of
his
*br
[6]of
the
sor
of
Me
As
the
chi
anc
two
hu
anc
two
of

his
bre
[7] of
the
so
of
Ge
Jo
the
chi
an
on
hu
an
thi
of
his
bre
[8] of
the
so
of
[a] El
Sh
the
chi
an
tw
hu
of
his
bre
[9] of
the
so
of
[a] H
Eli
the
chi

anc
eig
of
his
bre
10 O
the
son
of
Uz
Am
the
chi
anc
one
hu
anc
two
of
his
bre

1
Da
cal
for
[a]Za
and
[b]Al
the
pri
and
for
the
Lev
for
Uri
Asa

Joe
She
Eli
and
Am
12H
sai
to
the
“Y
are
the
hea
of
the
fat
hou
of
the
Lev
*sa
you
you
and
you
bre
tha
you
ma
bri
up
the
ark
of
the
LO
Go
of
Isr
to

the
pla
I
hav
pre
for
it.
13F
[a]be
you
did
not
do
it
the
firs
tim
[b]th
LO
our
Go
bro
out
aga
us,
bec
we
dic
not
cor
Hir
[*]ab
the
pro
orc

1
the
pri
anc
the

Lev
*sa
the
to
bri
up
the
ark
of
the
LO
Go
of
Isr
15A
the
chi
of
the
Lev
bo
the
ark
of
Go
on
the
sho
by
its
pol
as
[a]M
ha
co
acc
to
the
wo
of

the
LO
1
Da
spo
to
the
lea
of
the
Lev
to
app
the
bre
to
be
the
sin
acc
by
ins
of
mu
str
ins
har
and
cyr
by
rai
the
voi
wit
res
joy
[17]S
the
Lev
app

[a]He
the
son
of
Joe
and
of
his
bre
[b]As
the
son
of
Ber
and
of
the
bre
the
son
of
Me
[c]Et
the
son
of
Ku
18a
wit
the
the
bre
of
the
sec
rar
Zec
[*]Be
Jaa
Sh

Jeh
Un
Eli
Ber
Ma
Ma
Eli
Mi
Ob
Ed
and
Jei
the
gat
19th
sin
He
Asa
and
Eth
wer
to
sou
the
cyr
of
bro
20Z
[*]Az
Sho
Jeh
Un
Eli
Ma
and
Ber
wit
stri
acc
to

[a]Al
21M
Eli
Mi
Ob
Ed
Jei
anc
Az
to
dir
wi
har
on
the
[a]Sh
22C
lea
of
the
Lev
wa
ins
in
cha
of
the
mu
bec
he
wa
ski
23B
anc
Elk
we
doo
for
the
ark

24S
Jos
Ne
Am
Zec
Be
and
Eli
the
pri
[a]w
to
blo
the
tru
be
the
ark
of
Go
and
[b]O
Ed
and
Jel
doo
for
the
ark
2
[a]Da
the
eld
of
Isr
and
the
cap
ove
tho

we
to
bri
up
the
ark
of
the
cov
of
the
LO
fro
the
ho
of
Ob
Ed
wit
joy
[26]A
so
it
wa
wh
Go
hel
the
Lev
wh
bor
the
ark
of
the
cov
of
the
LO
tha

the
off
sev
bul
and
sev
ran
27D
wa
clo
wit
a
rob
of
fin
[a]lin
as
we
all
the
Lev
wh
bor
the
ark
the
sin
and
Ch
the
mu
ma
wit
the
sin
Da
als
wo
a
lin

ep
28[a]
all
Isr
bro
up
the
ark
of
the
cov
of
the
LO
wi
sho
an
wi
the
sou
of
the
ho
wi
tru
an
wi
cy
ma
mu
wi
str
ins
an
ha
2
it
ha
[a]*as*
the

ark
of
the
cov
of
the
LO
car
to
the
Cit
of
Da
tha
Mi
Sau
dau
loo
thr
a
wi
and
saw
Kin
Da
wh
and
pla
mu
and
she
des
hin
in
her
hea

1
Ch
11

T
Ar
Pla
in
the
Ta

1
[a]th
bro
the
ark
of
Go
an
set
it
in
the
mi
of
the
tab
tha
Da
ha
ere
for
it.
Th
the
off
bu
off
an
pea
off
bef
Go
2Ar
wh

Da had fin off the bur off anc the pea off [a]he ble the peo in the nar of the LO [3]Th he dis to eve of Isr bot ma anc wo to eve a loa of bre a pie

of
me
an
a
ca
of
rai
4
he
ap
so
of
the
Le
to
mi
be
the
ar
of
the
LO
to
[a]co
to
tha
an
to
pra
the
LO
Go
of
Isr
5As
the
chi
an
ne
to

hir
Zec
the
[a]Je
Sh
Jeh
Ma
Eli
Be
and
Ob
Ed
Jei
wit
str
ins
and
har
bu
As
ma
mu
wit
cy
6Be
and
Jal
the
pri
reg
ble
the
tru
bef
the
ark
of
the
cov
of

Go

So
of
Th

7
tha
day
[a]Da
[b]fi
del
thi
ps
int
the
ha
of
As
an
his
bre
to
tha
the
LO

An
do
My
pro
no
han

[23]a
to
the
LO
all
the
ear

Pro
the
goo
nev
of
His
sal
fro
day
to
day

[24]D
His
glo
am
the
nat

His
wo
am
all
peo

[25]F
the
LO
is
gre
and
gre

to
be
pra

He
is
als
to
be
fea
abo
all
goo

[26]F
all
the
goo
[a]of
the
peo
are
*id

Bu
the
LO
ma
the
hea

[27]H
and
ma
are
bef
Hir

Str
and
gla

are
in
His
pla

[28]C
to
the
LO
O
fan
of
the
peo

Giv
to
the
LO
glo
and
str

[29]C
to
the
LO
the
glo
du
His
nan

Bri
an
off
and
con
bef
Hin

Oh
wo
the
LO
in
the
bea
of
ho

[30]T
bef
Hi
all
the
ea

Th
wo
als
is
fir
est

It
sha
no
be
mo

[31]L
the
hea
rej
an
let
the
ea
be
gla

An
let
the
say
1ar
the
nat
“Tl
LO
rei

32L
the
sea
roa
and
all
its
ful

Let
the
fiel
rej
and
all
tha
is
in
it.

33T
the
[a]tre
of
the
wo
sha
rej
bef

the
LO

Fo
He
is
[b]co
to
jud
the
ear

34[a]
giv
tha
to
the
LO
for
He
is
goo

Fo
His
me
enc
for

35[a]
say
“Sa
us,
O
Go
of
ou
sal

Ga
us

tog
and
del
us
fro
the
Ge

To
giv
tha
to
Yo
hol
nar

To
tri
in
Yo
pra

36[a]
be
the
LO
Go
of
Isr

Fro
eve
to
eve

And
all
[b]the
people
said,
“Amen!”

and praised the LORD.

Regular Worship Maintained

37So he left [a]Asaph and his brothers there before the ark of the covenant of the LORD to minister before the ark regularly, as every day's work [b]required; 38and [a]Obed-Edom with his sixty-eight brethren, including Obed-Edom the son of Jeduthun, and Hosah, *to be* gatekeepers; [39]and Zadok the priest and his brethren the priests, [a]before the tabernacle of the LORD [b]at the [*]high place that *was* at Gibeon, [40]to offer burnt offerings to the LORD on the altar of burnt offering regularly [a]morning and evening, and *to do* according to all that is written in the Law of the LORD which He commanded Israel; 41and with them Heman and Jeduthun and the rest who were chosen, who were designated by name, to give thanks to the LORD, [a]because His mercy *endures* forever; 42and with them Heman and Jeduthun, to sound aloud with trumpets and cymbals and the musical instruments of

God. Now the sons of Jeduthun *were* gatekeepers.

43[a]Then all the people departed, every man to his house; and David returned to bless his house.

1 Chronicles 17

God's Covenant with David

1Now [a]it came to pass, when David

was dwelling in his house, that David said to Nathan the prophet, “See now, I dwell in a house of cedar, but the ark of the covenant of the LORD *is* under tent curtains.”

[2]Then Nathan said to David, “Do

all that *is* in your heart, for God *is* with you.”

[3]But it happened that night that the word of God came to Nathan, saying, [4]“Go and tell My servant David, ‘Thus says the LORD: “You shall [a]not build Me

a house to dwell in. [5]For I have not dwelt in a house since the time that I brought up Israel, even to this day, but have gone from tent to tent, and from *one* tabernacle *to another.* [6]Wherever I have moved about with all Israel, have I ever spoken a word to any of the judges of Israel, whom I commanded to shepherd My people, saying, ‘Why have you not built Me a house of cedar–’ ” ’

[7] Now

therefore, thus shall you say to My servant David, ‘Thus says the LORD of hosts: “I took you [a]from the sheepfold, from following the sheep, to be *ruler over My people Israel. [8]And I have been with you wherever you have gone, and have cut off all your enemies from before you, and have *made you a name like the name of the great men who *are* on the earth. [9]Moreover I will appoint1 a place for My people Israel, and will [a]plant them, that they may dwell in a place of their own and move no more; nor shall the sons of wickedness oppress them anymore, as previously, [10]since the time that I commanded judges *to be* over My people Israel. Also I will subdue all your enemies. Furthermore I tell you that the LORD will build you a [*]house. [11] And it shall be, when your days are [a]fulfilled, when you must [*]go *to be* with your fathers, that

I will set up your [b]seed after you, who will be of your sons; and I will establish his kingdom. 12 [a]He shall build Me a house, and I will establish his throne forever. 13 [a]I will be his Father, and he shall be My son; and I will not take My mercy away from him, [b]as I took *it* from *him* who was before you. 14And [a]I will establish him in My house and in My kingdom forever; and his throne shall be established forever.” ’ ”

15According to all these words and according to all this vision, so Nathan spoke to David.

16[a]Then King David went in and sat before the LORD; and he said: “Who *am* I, O LORD

God? And what is my house, that You have brought me this far? [17]And *yet* this was a small thing in Your sight, O God; and You have *also* spoken of Your servant's house for a great while to come, and have regarded me according to the rank of a man of high degree, O LORD God. [18]What more can David *say* to You for the honor of Your servant? For You know Your servant. [19]O LORD, for Your servant's

sake,
and
according
to
Your
own
heart,
You
have
done
all
this
greatness,
in
making
known
all
these
great
things.
[20]O
LORD,
there
is
none
like
You,
nor
is
there
any
God
besides
You,
according
to
all
that
we
have

heard with our ears. 21[a]And who *is* like Your people Israel, the one nation on the earth whom God went to redeem for Himself *as* a people—to make for Yourself a name by great and awesome deeds, by driving out nations from before Your people whom You redeemed from Egypt? [22]For You have made Your people Israel Your very ow1n people forever; and You, LORD, have become their God.

[23]“And now, O LORD, the word which You have

spoken concerning Your servant and concerning his house, *let it* be established forever, and do as You have said. [24]So let it be established, that Your name may be magnified forever, saying, ‘The LORD of hosts, the God of Israel, *is* Israel's God.' And let the house of Your servant David be established before You. 25For You, O my God, *have revealed to Your servant that You will build him a house. Therefore Your servant has found it *in his* *heart* to pray before You. [26]And now, LORD, *You are God, and have promised this goodness to Your servant. [27]Now You have been pleased to bless the house of Your servant, that it may continue before You forever; for You have blessed it, O LORD, and *it shall be* blessed forever.”

1 Chronicles 18

David’s Further Conquests

1 After this [a]it came to pass that David *attacked the Philistines, subdued them, and took Gath and its towns from the hand

of the Philistines. [2]Then he *defeated [a]Moab, and the Moabites became David’s [b]servants, *and* brought tribute.

[3]And [a]David *defeated *Hadadezer king of Zobah *as far as* Hamath, as he went to establish his power by the River Euphrates. [4]David took

from him one thousand chariots, *seven thousand horsemen, and twenty thousand foot soldiers. Also David *hamstrung all the chariot *horses,* except that he spared enough of them for one hundred chariots.

[5]When the [a]Syrians of Damascus came to help Hadadezer

king of Zobah, David killed twenty-two thousand of the Syrians. [6]Then David put *garrisons* in Syria of Damascus; and the Syrians became David’s servants, *and* brought tribute. So the LORD preserved David wherever he went. [7]And David took the shields of gold that were on the servants of Hadadezer, and brought them to Jerusalem. 8Also from *Tibhath and from *Chun, cities of *Hadadezer, David brought a large amount of [a]bronze, with which [b]Solomon made the bronze *Sea, the pillars, and the articles of bronze.

[9]Now when *Tou king of Hamath heard that David had *defeated all the army of Hadadezer king of Zobah, [10]he sent *Hadoram his son to King David, to greet him and bless him, because he

had fought against Hadadezer and *defeated him (for Hadadezer had been at war with Tou); and *Hadoram brought with him* all kinds of [a]articles of gold, silver, and bronze. 11King David also dedicated these to the LORD, along with the silver and gold that he had brought from all *these* nations—from Edom, from Moab, from the [a]people of Ammon, from the [b]Philistines, and from [c]Amalek.

12 Moreover [a]Abishai the son of Zeruiah killed [b]eighteen thousand [*]Edomites in the Valley

of Salt. 13[a]He also put garrisons in Edom, and all the Edomites became David's servants. And the LORD preserved David wherever he went.

David's Administration

14So David reigned over all Israel, and administered judgment and justice to all his people.

15 Joab the son of Zeruiah *was* over the army; Jehoshaphat the son of Ahilud *was* recorder; 16 Zadok the son of Ahitub and *Abimelech the son of Abiathar *were* the priests; *Shavsha *was* the scribe; 17 [a]Benaiah the son of Jehoiada *was*

over the Cherethites and the Pelethites; and David’s sons *were* *chief ministers at the king’s side.

1 Chronicles 19

The Ammonites and Syrians Defeated

1It [a] happened after this that Nahash the king of the people of Ammon died,

and
his
son
reigned
in
his
place.
2Then
David
said,
“I
will
show
kindness
to
Hanun
the
son
of
Nahash,
because
his
father
showed
kindness
to
me.”
So
David
sent
messengers
to
comfort
him
concerning
his
father.
And
David’s
servants

came to Hanun in the land of the people of Ammon to comfort him.

[3]And the princes of the people of Ammon said to Hanun, *“Do you think that David really honors your father because he has sent comforters to

you? Did his servants not come to you to search and to overthrow and to spy out the land?”

[4]Therefore Hanun took David’s servants, shaved them, and cut off their garments [*]in the middle, at their [a]buttocks, and sent them

away. [5]Then *some* went and told David about the men; and he sent to meet them, because the men were greatly ashamed. And the king said, “Wait at Jericho until your beards have grown, and *then* return.”

[6]When the people

of Ammon saw that they had made themselves repulsive to David, Hanun and the people of Ammon sent a thousand talents of silver to hire for themselves chariots and horsemen from *Mesopotamia, from Syrian Maacah,[a] and from *Zobah. 7So they hired for themselves thirty-two thousand chariots, with the king of Maacah and his people, who came and encamped before Medeba. Also the people of Ammon gathered together from their cities, and came to battle.

[8]Now when David heard *of*

it, he sent Joab and all the army of the mighty men. [9]Then the people of Ammon came out and put themselves in battle array before the gate of the city, and the kings who had come *were* by themselves in the field.

[10]When Joab saw that the battle line was against him before and behind, he chose some of Israel’s best and put *them* in battle array against the Syrians. [11]And the rest of the people he put under

the command of Abishai his brother, and they set *them1selves* in battle array against the people of Ammon. 12Then he said, “If the Syrians are too strong for me, then you shall help me; but if the people of Ammon are too strong for you, then I will help you. [13]Be of good courage, and let us be strong for our people and for the cities of our God. And may the LORD do *what is* good in His sight.”

[14]So Joab and the people who *were* with him drew near for the battle against the Syrians, and they fled before him. [15]When the people of Ammon saw that the Syrians were fleeing, they also fled before Abishai his brother,

and entered the city. So Joab went to Jerusalem.

16Now when the Syrians saw that they had been defeated by Israel, they sent messengers and brought the Syrians who were beyond *the River, and *Shophach the commander of Hadadezer's army *went* before them. [17]When it was told David, he gathered all Israel, crossed over the Jordan and came upon them, and set up in *battle* array against them. So when David had set up in battle array against the Syrians, they fought with him. [18]Then the Syrians fled before Israel; and David killed *seven thousand charioteers and forty thousand *foot soldiers of the Syrians, and killed Shophach the commander of the army. [19]And when the servants of Hadadezer saw that they were defeated by Israel, they made peace with David and became his servants. So the Syrians were not willing to help the people of Ammon anymore.

1 Chronicles 20

Rabbah Is Conquered

[1] It [a] happened *in the spring

of the year, at the time kings go out *to battle,* that Joab led out the armed forces and ravaged the country of the people of Ammon, and came and besieged Rabbah. But [b]David stayed at Jerusalem. And [c]Joab defeated

Rabbah and overthrew it. [2] Then David [a]took their king’s crown from his head, and found it to weigh a talent of gold, and *there were* precious stones in it. And it was set on David’s head. Also he brought out the *spoil of the city in great abundance. [3]And he brought out the people who *were* in it, and *put *them*1 to work with saws, with iron picks, and with axes. So David did to all the cities of the people of Ammon. Then David and all the people returned *to* Jerusalem.

Philistine Giants Destroyed

4Now it happened afterward [a]that war broke out at *Gezer with the Philistines, at which time [b]Sibbechai the Hushathite killed *Sippai, *who was one* of the sons of *the giant. And they were subdued.

[5]Again there was war with the Philistines, and Elhanan the son of *Jair killed Lahmi the brother of Goliath the Gittite, the shaft of whose spear *was* like a weaver's [a]beam.

6Yet again [a]there was war at Gath, where there was a man of *great* stature, with twenty-four fingers and toes, six *on each hand* and six *on each foot;* and he also was born to [*]the giant. 7So when he defied Israel, Jonathan the son of *Shimea, David’s brother, killed him.

8These were born to the giant in Gath, and they fell by the hand of David and by the hand of his servants.

1 Chronicles 21

The

Census of Israel and Judah

1Now [a]Satan stood up against Israel, and moved David to [*]number Israel. 2So David said to Joab and to the leaders of the people, “Go, number Israel from Beersheba to Dan, [a]and bring the number of them to me that I may know *it.*”

[3]And Joab answered, “May the LORD make His people a hundred times more than they are. But, my lord the king, *are* they not all my lord’s servants? Why then does

my lord require this thing? Why should he be a cause of guilt in Israel?”

[4]Nevertheless the king’s word prevailed against Joab. Therefore Joab departed and went throughout all Israel and came to Jerusalem. [5]Then Joab gave the sum o1f

the number of the people to David. All Israel *had* one million one hundred thousand men who drew the sword, and Judah *had* four hundred and seventy thousand men who drew the sword. 6[a]But he did not count Levi and

Benjamin among them, for the king's [*]word was abominable to Joab.

7And [*]God was displeased with this thing; therefore He struck Israel. 8So David said to God, [a]"I have sinned greatly, because I have done this thing; [b]but now, I pray, take away the iniquity of Your servant, for I have done very foolishly.”

9Then the LORD spoke to Gad, David’s [a]seer, saying, 10“Go and tell David, [a]saying, ‘Thus says the LORD: “I offer you three *things;* choose one of them for yourself, that I may do *it* to you.” ’ ”

[11]So Gad came to David and said to him, “Thus says the LORD: ‘Choose for yourself, [12][a]either *three years of famine, or three months to be defeated by

your foes with the sword of your enemies overtaking *you,* or else for three days the sword of the LORD — the plague in the land, with the *angel of the LORD destroying throughout all the territory of Israel.’ Now consider what answer I should take back to Him who sent me.”

13And David said to Gad, “I am in great distress. Please let me fall into the hand of the LORD, for His [a]mercies *are* very great; but do not let me fall into the hand of man.”

14So the LORD

sent a [a]plague upon Israel, and seventy thousand men of Israel fell. [15]And God sent [*]an [a]angel to Jerusalem to destroy it. As [*]he was destroying, the LORD looked and [b]relented of the disaster, and said to the angel who was destroying, “It is enough; now restrain [*]your hand.” And the angel of the LORD stood by the [c]threshing floor of [*]Ornan the Jebusite.

16 Then David lifted his eyes and [a]saw the angel of the LORD standing between earth and

heaven, having in his hand a drawn sword stretched out over Jerusalem. So David and the elders, clothed in sackcloth, fell on their faces. [17]And David said to God, “Was it not I who commande the people to be numbered?

I am the one who has sinned and done evil indeed; but these [a]sheep, what have they done? Let Your hand, I pray, O LORD my God, be against me and my father's house, but not against Your people that they should be plagued.”

18Therefo the [a]angel of the LORD commande Gad to say to David that David should go and erect an altar to the LORD on the threshing floor of Ornan the Jebusite. 19So David went up at the word of Gad, which he had spoken in the name of the LORD. [20]Now Ornan turned and saw the angel; and his four sons *who were* with him hid themselves but Ornan continued threshing wheat. [21]So David came to

Ornan, and Ornan looked and saw David. And he went out from the threshing floor, and bowed before David with *his* face to the ground. [22]Then David said to Ornan, *“Grant me the place of *this* threshing floor, that I may build an altar on it to the LORD. You shall grant it to me at the full price, that the plague may be withdrawn from the people.”

[23]But Ornan said to David, “Take *it* to yourself, and let my

lord the king do *what is* good in his eyes. Look, I *also* give *you* the oxen for burnt offerings, the threshing implement for wood, and the wheat for the grain offering; I give *it* all.”

[24]Then King David said

to Ornan, “No, but I will surely buy *it* for the full price, for I will not take what is yours for the LORD, nor offer burnt offerings with *that which* costs *me* nothing.” 25 So [a]David gave Ornan six hundred shekels of gold by weight for the place. [26]And David built there an altar to the LORD, and offered burnt offerings and peace offerings, and called on the LORD; and [a]He answered him from heaven by fire on the altar of burnt offering.

[27]So the LORD commande the angel, and he returned his sword to its sheath.

[28]At that time, when David saw that the LORD had answered him on the threshing floor of Ornan the Jebusite, he sacrificed there.

29[a]For the tabernacle of the LORD and the altar of the burnt offering, which Moses had made in the wilderness, *were* at that time at the high place in [b]Gibeon. 30But David could not go before it to inquire of

God, for he was afraid of the sword of the angel of the LORD.

1 Chronicles 22

David Prepares to Build the Temple

[1]Then David said, [a]“This *is* the house of the LORD God, and this *is* the altar

of burnt offering for Israel.” 2 So David commande to gather the [a]aliens who *were* in the land of Israel; and he appointed masons to [b]cut hewn stones to build the house of God. 3 And David prepared iron in abundance for the nails of the doors of the gates and for the joints, and bronze in abundance [a]beyond measure, 4and cedar trees in abundance for the [a]Sidonians and those from Tyre brought much cedar wood to David.

5Now David said, [a]“Solomon

my son *is* young and inexperienc and the house to be built for the LORD *must be* exceedingl magnificen famous and glorious throughou all countries. I will now make preparatio for it.” So David made abundant preparatio before his death.

6Then he called for his son Solomon, and *charged him to build a house for the LORD God of Israel. 7And David said to Solomon: “My son, as for me, [a]it was in my mind to build a house [b]to the name of the LORD my God; 8but the word of the LORD came to me, saying, [a]‘You have shed much blood and have made great wars; you shall not build a house for My name, because you have shed much blood on the earth in My sight. 9[a]Behold, a son shall be born to you, who shall be a man of rest; and I will give him [b]rest from all his enemies all around. His name shall be *Solomon, for I will give peace and quietness to Israel in his days. 10 [a]He shall build a house for My name, and [b]he shall be My son, and I *will be* his Father; and I will establish the throne of his kingdom over Israel forever.’ 11Now, my son, may [a]the LORD be with you; and may you prosper, and build the house of the LORD your God, as He has said to you. 12Only may the LORD [a]give you wisdom and understand and give you charge concerning Israel, that you may keep the law of the LORD your God. 13[a]Then you will prosper, if you take care to fulfill the statutes and judgments with which the LORD *charged Moses concerning Israel.

[b]Be strong and of good courage; do not fear nor be dismayed. [14]Indeed I have taken much trouble to prepare for the house of the LORD one hundred thousand talents of gold and one million talents of silver, and bronze

and iron [a]beyond measure, for it is so abundant. I have prepared timber and stone also, and you may add to them. 15 Moreover *there are* workmen with you in abundance woodsmen and stonecutter and all types of skillful men for every kind of work. 16Of gold and silver and bronze and iron *there is* no limit. Arise and begin working, and [a]the LORD be with you.”

17David also commande all the [a]leaders of Israel to help Solomon his son, *saying,* 18“*Is* not the LORD your God with you? [a]And has He *not* given you rest on every side? For He has given the inhabitants of the land into my hand, and the land is subdued before the LORD and before

His people. [19]Now set your heart and your soul to seek the LORD your God. Therefore arise and build the sanctuary of the LORD God, to [a]bring the ark of the covenant of the LORD and the holy articles of

God into the house that is to be built [b]for the name of the LORD.”

1 Chronicles 23

The Divisions of the Levites

[1]So when David was old and full of days, he made his son [a]Solomon king over

Israel. [2]And he gathered together all the leaders of Israel, with the priests and the Levites. [3]Now the Levites were numbered from the age of [a]thirty years and above; and the number of individual males was thirty-eight thousand. [4]Of these, twenty-four thousand *were* to [a]look after the work of the house of the LORD, six thousand *were* [b]officers and judges, [5]four thousand *were* gatekeeper and four thousand [a]praised the LORD with *musical* instrument [b]“which I made,” *said Davi1d,* “for giving praise.”

[6]Also [a]David separated them into [*]divisions among the sons of Levi: Gershon, Kohath, and Merari.

[7]Of the [a]Gershonite [*]Laadan and Shimei. [8]The sons of Laadan: the first Jehiel, then Zetham and Joel—three *in all.* [9]The

sons of Shimei: Shelomith, Haziel, and Haran—three *in all.* These were the heads of the fathers’ *houses* of Laadan. 10And the sons of Shimei: Jahath, *Zina, Jeush, and Beriah. These *were* the four sons of Shimei. 11Jahath was the first and Zizah the second. But Jeush and Beriah did not have many sons; therefore they were assigned as one father's house.

12[a]The sons of Kohath: Amram, Izhar, Hebron, and Uzziel—four *in all.* 13The sons of [a]Amram:

Aaron and Moses; and [b]Aaron was set apart, he and his sons forever, that he should [*]sanctify the most holy things, [c]to burn incense before the LORD, [d]to minister to Him, and [e]to give the blessing in His name forever.

14 Now [a]the sons of Moses the man of God were reckoned to the tribe of Levi. 15 [a]The sons of Moses *were* [*]Gershon and Eliezer. 16 Of the sons of Gershon, [a]Shebuel[*]*w* the first. 17 Of the descendant of Eliezer, [a]Rehabiah was the

first. And Eliezer had no other sons, but the sons of Rehabiah were very many. 18 Of the sons of Izhar, [a]Shelomith *was* the first. 19 [a]Of the sons of Hebron, Jeriah *was* the first, Amariah the second, Jahaziel the third, and

Jekameam the fourth. 20Of the sons of Uzziel, Michah *was* the first and Jesshiah the second.

21[a]The sons of Merari *were* Mahli and Mushi. The sons of Mahli *were* Eleazar and [b]Kish. 22And Eleazar died, and [a]had no sons, but only daughters; and their *brethren, the sons of Kish, [b]took them *as wives.* 23[a]The sons of Mushi *were* Mahli, Eder, and Jeremoth—three *in all.*

24These *were* the sons of [a]Levi by their fathers' houses—the heads of the fathers' *houses* as they were counted individuall by the number of their names, who did the work for the service of the house of the LORD, from the age of [b]twenty years and above.

25 For David said, "The LORD

God of Israel [a]has given rest to His people, that they may dwell in Jerusalem forever”; 26and also to the Levites, “They shall no longer [a]carry the tabernacle, or any of the articles for its service.” 27For by the [a]last words of David the Levites *were* numbered from twenty years old and above; [28]because their duty *was* to help the sons of Aaron in the service of the house of the LORD, in the courts and in the chambers, in the purifying of all holy things and the work of the service of the house of God, [29]both with [a]the showbread and [b]the fine flour for the grain offering, with [c]the unleavened cakes and [d]*what is baked in* the pan, with what is mixed and with all kinds of [e]measures and sizes; 30 to stand every morning to thank and praise the LORD, and likewise at evening; 31 and at every1 presentatio of a burnt offering to the LORD [a]on the Sabbaths and on the New Moons and on the [b]set[*] feasts, by number according to the ordinance governing them, regularly before the LORD; [32]and that they should [a]attend to the [b]needs of the tabernacle of meeting, the needs of the holy *place,* and the [c]needs of the sons of Aaron their brethren in the work of the house of the LORD.

1 Chronicles 24

The Divisions of the Priests

1 Now *these are* the divisions of the sons of Aaron. [a]The

sons of Aaron *were* Nadab, Abihu, Eleazar, and Ithamar. [2]And [a]Nadab and Abihu died before their father, and had no children; therefore Eleazar and Ithamar ministered as priests. [3]Then David with Zadok of the sons of Eleazar, and [a]Ahimelech of the sons of Ithamar, divided them according to the schedule of their service.

[4]There were more leaders found of the sons of Eleazar than of the sons of Ithamar, and *thus* they were divided. Among the sons of Eleazar *were*

sixteen heads of *their* fathers' houses, and eight heads of their fathers' houses among the sons of Ithamar. [5]Thus they were divided by lot, one group as another, for there were officials of the sanctuary and officials *of the house* of God, from the sons of Eleazar and from the sons of Ithamar. [6]And the scribe, Shemaiah the son of Nethanel, *one of* the Levites, wrote them down before the king, the leaders, Zadok the priest, Ahimelech the son of

Abiathar, and the heads of the fathers’ *houses* of the priests and Levites, one father’s house taken for Eleazar and *one* for Ithamar.

[7]Now the first lot fell to Jehoiarib, the second to Jedaiah, [8]the third to Harim, the fourth

to Seorim, 9the fifth to Malchijah, the sixth to Mijamin, 10the seventh to Hakkoz, the eighth to [a]Abijah, 11the ninth to Jeshua, the tenth to Shecaniah, 12the eleventh to Eliashib, the twelfth to Jakim, 13the thirteenth to Huppah, the fourteenth to Jeshebeab, [14]the fifteenth to Bilgah, the sixteenth to Immer, [15]the seventeent to Hezir, the eighteenth to *Happizzez [16]the nineteenth to Pethahiah, the twentieth to *Jehezekel, [17]the twenty-first to Jachin, the twenty-second to Gamul, [18]the twenty-third to

Delaiah, the twenty-fourth to Maaziah.

[19]This *was* the schedule of their service [a]for coming into the house of the LORD according to their ordinance by the hand of Aaron their father, as the LORD God of Israel had commande

him.

Other Levites

20And the rest of the sons of Levi: of the sons of Amram, [*]Shubael; of the sons of Shubael, Jehdeiah. 21Concerni [a]Rehabiah, of the sons of Rehabiah, the first *was* Isshiah. 22Of the Izharites, [*]Shelomoth of the sons of Shelomoth, Jahath. 23 Of the sons [*]*of* [a]*Hebron,* Jeriah *was the first,* Amariah the second, Jahaziel the third, *and* Jekameam the fourth. 24 *Of* the sons of Uzziel, Michah; of the sons of Michah, Shamir. 25 The brother of Michah, Isshiah;

of the sons of Isshiah, Zechariah. 26[a]The sons of Merari *were* Mahli and Mushi; the son of Jaaziah, Beno. 27The sons of Merari by Jaaziah *were* Beno, Shoham, Zaccur, and Ibri. 28Of Mahli: Eleazar, [a]who had no sons. 29Of Kish:

the son of Kish, Jerahmeel.

30Also [a]the sons of Mushi *were* Mahli, Eder, and Jerimoth. These *were* the sons of the Levites according to their fathers’ houses.

31These also cast lots just as their brothers the sons of Aaron did, in the presence of King David, Zadok, Ahim1elec and the heads of the fathers’ *houses* of the priests and Levites. The chief fathers *did* just as their younger brethren.

1 Chronicles 25

The Musicians

[1]Moreov David and the captains

of the army separated for the service *some* of the sons of [a]Asaph, of Heman, and of Jeduthun, who *should* prophesy with harps, stringed instrument and cymbals. And the number of the skilled men performing their service was: 2 Of the sons of Asaph: Zaccur, Joseph, Nethaniah, and *Asharelah the sons of Asaph *were* *under the direction of Asaph, who prophesied according to the order of the king. [3] Of [a]Jeduthun, the sons of Jeduthun: Gedaliah, *Zeri, Jeshaiah, **Shimei*, Hashabiah, and Mattithiah, *six, under the direction of their father Jeduthun, who prophesied with a harp to give thanks and to praise the LORD. [4]Of Heman, the sons of Heman: Bukkiah, Mattaniah, *Uzziel, *Shebuel, *Jerimoth, Hananiah, Hanani, Eliathah, Giddalti, Romamti-Ezer, Joshbekash Mallothi, Hothir, *and* Mahazioth. [5]All these *were* the sons of Heman the king’s seer in the words of God, to *exalt his [a]horn. For God gave Heman fourteen sons and three daughters.

[6]All these *were* under the direction of their father

for the music *in* the house of the LORD, with cymbals, stringed instrument and [a]harps, for the service of the house of God. Asaph, Jeduthun, and Heman *were* [b]under the authority of the king. [7]So the [a]number of them, with their brethren who were instructed in the songs of the LORD, all who were skillful, *was* two hundred and eighty-eight.

[8]And they cast lots for their duty, the small as well as the great, [a]the teacher with the student.

[9]Now the first lot for Asaph came out for Joseph; the second for Gedaliah, him with his brethren and sons, twelve; [10]the third for Zaccur, his sons and his brethren, twelve; [11]the fourth for *Jizri, his sons and his brethren,

twelve; [12] the fifth for Nethaniah, his sons and his brethren, twelve; [13] the sixth for Bukkiah, his sons and his brethren, twelve; [14] the seventh for *Jesharelah his sons and his brethren, twelve; [15] the eighth for Jeshaiah, his sons and his brethren, twelve; [16]the ninth for Mattaniah, his sons and his brethren, twelve; [17]the tenth for Shimei, his sons and his brethren, twelve; [18]the eleventh for *Azarel, his sons and his brethren, twelve; [19]the twelfth for Hashabiah, his sons and his brethren, twelve; [20]the thirteenth for *Shubael, his sons and his brethren, twelve; [21]the fourteenth for Mattithiah, his sons and his brethren, twelve; [22]the fifteenth for *Jeremoth, his sons and his brethren, twelve; [23]the sixteenth for Hananiah, his sons and his brethren, twelve; [24]the seventeenth for Joshbekash his sons and his brethren, twelve; [25]the eighteenth for Hanani, his sons and his brethren, twelve; [26]the nineteenth for Mallothi, his sons and his brethren, twelve; [27]the twentieth for Eliathah, his sons and his brethren, twelve; [28]the twenty-first for Hothir, his sons and his brethren, twelve; [29]the twenty-second for Giddalti, his sons and his brethren, twelve; [30]the twenty-third for Mahazioth, his sons and his brethren, twelve; [31]the twenty-fourth for Romamti-Ezer, his sons and his brethren, twelve.

1 Chronicles 26

The Gatekeepers

[1] Concern the divisions of the gatekeeper of the Korahites, *Meshelem the son of [a]Kore, of the sons of *Asaph. [2] And the sons of Meshelemi *were* [a]Zechariah the firstborn,

Jediael the second, Zebadiah the third, Jathniel the fourth, [3]Elam the fifth, Jehohanan the sixth, Eliehoenai the seventh.

[4]Moreove the sons of [a]Obed-Edom *were* Shemaiah the firstborn, Jehozabad the second, Joah the third, Sacar the fourth, Nethanel the fifth,

5Ammiel the sixth, Issachar the seventh, Peulthai the eighth; for God blessed him.

6Also to Shemaiah his son were sons born who governed their fathers' houses, because they *were* men of great ability. 7The sons of Shemaiah *were* Othni, Rephael, Obed, and Elzabad, whose brothers Elihu and Semachiah *were* able men.

---

[8] All these *were* of the sons of Obed-Edom, they and their sons and their brethren, [a]able men with strength for

the work: sixty-two of Obed-Edom.

9 And Meshelemi had sons and brethren, eighteen able men.

10 Also [a]Hosah, of the children of Merari, had sons: Shimri the first (for *though* he was not the [1]firstborn, his father made him the

first), [11]Hilkiah the second, Tebaliah the third, Zechariah the fourth; all the sons and brethren of Hosah *were* thirteen.

[12]Among these *were* the divisions of the gatekeeper among the chief men, *having* duties just like their brethren, to serve in

the house of the LORD. [13]And they [a]cast lots for each gate, the small as well as the great, according to their father’s house. [14]The lot for the East *Gate* fell to [*]Shelemiah Then they cast lots *for* his son

Zechariah, a wise counselor, and his lot came out for the North Gate; [15]to Obed-Edom the South Gate, and to his sons the *storehouse [16]To Shuppim and Hosah *the lot came out* for the West Gate, with the Shallecheth

Gate on the [a]ascending highway—watchman opposite watchman. [17]On the east *were* six Levites, on the north four each day, on the south four each day, and for the *storehouse two by two. [18]As for the *Parbar on the west, *there were* four on the highway *and* two at the Parbar. [19]These were the divisions of the gatekeeper among the sons of Korah and among the sons of Merari.

The Treasuries and Other Duties

[20]Of the Levites, Ahijah *was*

[a]over the treasuries of the house of God and over the treasuries of the [b]dedicated things. 21 The sons of [*]Laadan, the descendant of the Gershonite of Laadan, heads of their fathers’ *houses,* of Laadan the Gershonite [*]Jehieli. 22 The sons of

Jehieli, Zetham and Joel his brother, *were* over the treasuries of the house of the LORD. [23]Of the [a]Amramite the Izharites, the Hebronites and the Uzzielites: [24][a]Shebuel the son of Gershom, the son of Moses, *was* overseer of the treasuries.

[25]And hi1s brethren by Eliezer *were* Rehabiah his son, Jeshaiah his son, Joram his son, Zichri his son, and [a]Shelomith his son.

[26]This Shelomith and his brethren *were* over all the treasuries of the dedicated things [a]which King David and

the heads of fathers’ *houses,* the captains over thousands and hundreds, and the captains of the army, had dedicated. 27Some of the [*]spoils won in battles they dedicated to maintain the house of the LORD. 28And all that Samuel [a]the seer, Saul the son of Kish, Abner the son of Ner, and Joab the son of Zeruiah had dedicated, every dedicated *thing,* was under the hand of Shelomith and his brethren.

29Of the Izharites, Chenaniah and his sons [a]*performed* duties as [b]officials and judges over Israel outside Jerusalem.

[30]Of the Hebronites [a]Hashabiah and his brethren, one thousand seven hundred able men, had the oversight of Israel on the west side of the Jordan for all the business of the LORD,

and in the service of the king. 31 Among the Hebronites [a]Jerijah *was* head of the Hebronites according to his genealogy of the fathers. In the fortieth year of the reign of David they were sought, and there were found among them capable men [b]at Jazer of Gilead. 32And his brethren *were* two thousand seven hundred able men, heads of fathers' *houses,* whom King David made officials over the Reubenites the Gadites, and the half-tribe of Manasseh, for every matter pertaining to God and the [a]affairs of the king.

1 Chronicles 27

The Military Divisions

[1]And the children of Israel, according to their number, the heads of fathers' *houses,* the captains of thousands and hundreds and their officers, served

the king in every matter of the *military* divisions. *These divisions* came in and went out month by month throughout all the months of the year, each division *having* twenty-four thousand.

[2] Over the first division for the first month

was [a]Jashobeam the son of Zabdiel, and in[1] his division *were* twenty-four thousand; [3]*he was* of the children of Perez, and the chief of all the captains of the army for the first month. [4]Over the division of the second month *was* [*]Dodai an Ahohite, and of his division Mikloth also *was* the leader; in his division *were* twenty-four thousand. 5The third captain of the army for the third month *was* [a]Benaiah, the son of Jehoiada the priest, who was chief; in his division *were* twenty-four thousand. 6This was the Benaiah *who was* [a]mighty *among* the thirty, and was over the thirty; in his division *was* Ammizaba his son. 7The fourth *captain* for the fourth month *was*

[a]Asahel the brother of Joab, and Zebadiah his son after him; in his division *were* twenty-four thousand. 8The fifth captain for the fifth month *was* [*]Shamhuth the Izrahite; in his division were twenty-four thousand. 9The sixth *captain* for

the sixth month *was* [a]Ira the son of Ikkesh the Tekoite; in his division *were* twenty-four thousand. 10The seventh *captain* for the seventh month *was* [a]Helez the Pelonite, of the children of Ephraim; in his division *were* twenty-four thousand. [11]The eighth *captain* for the eighth month *was* [a]Sibbechai the Hushathite of the Zarhites; in his division *were* twenty-four thousand. [12]The ninth *captain* for the ninth month *was* [a]Abiezer the Anathothit of the Benjamites in his division *were* twenty-four thousand. [13]The tenth *captain* for the tenth month *was* [a]Maharai the Netophathi of the Zarhites; in his division *were* twenty-four thousand. [14]The eleventh *captain* for the eleventh month *was* [a]Benaiah the Pirathonite of the children of Ephraim;

in his division *were* twenty-four thousand. [15]The twelfth *captain* for the twelfth month *was* *Heldai the Netophathi of Othniel; in his division *were* twenty-four thousand.

Leaders of Tribes

[16]Further over the tribes of Israel: the officer over the

Reubenites *was* Eliezer the son of Zichri; over the Simeonites Shephatiah the son of Maachah; [17] *over* the Levites, [a]Hashabiah the son of Kemuel; over the Aaronites, Zadok; [18] *over* Judah, [a]Elihu, *one* of David’s brothers; *over* Issachar, Omri the son of

Michael; [19]*over* Zebulun, Ishmaiah the son of Obadiah; *over* Naphtali, Jerimoth the son of Azriel; [20]*over* the children of Ephraim, Hoshea the son of Azaziah; *over* the half-tribe of Manasseh, Joel the son of Pedaiah; [21]*over* the half–*tribe* of Manasseh in Gilead, Iddo the son of Zechariah; *over* Benjamin, Jaasiel the son of Abner; [22]*over* Dan, Azarel the son of Jeroham. These *were* the leaders of the tribes of Israel.

[23]But David did not take the number of

those twenty years old and under, because [a]the LORD had said He would multiply Israel like the [b]stars of the heavens. 24 Joab the son of Zeruiah began a census, but he did not finish, for [a]wrath came upon Israel because of this census; nor was the number recorded in the account of the chronicles of King David.

Other State Officials

[25]And Azmaveth the son of Adiel *was* over the king's treasuries; and Jehonathan the son of Uzziah was over the

storehouses in the field, in the cities, in the villages, and in the fortresses. [26]Ezri the son of Chelub was over those who did the work of the field for tilling the ground. [27]And Shimei the Ramathite *was* over the vineyards, and Zabdi the Shiphmite was over the produce of the vineyards for the supply of wine. [28]Baal-Hanan the Gederite was over the olive trees and the sycamore trees that *were* in the lowlands, and Joash *was* over the store of oil. [29]And Shitrai the Sharonite *was* over the herds that fed in Sharon, and Shaphat the son of Adlai was over the herds *that were* in the valleys. [30]Obil the Ishmaelite *was* over the camels, Jehdeiah the Meronothit *was* over the donkeys, [31]and Jaziz the [a]Hagrite *was* over the flocks. All these *were* the officials over King David’s property.

[32]Also Jehonathan, David’s uncle, *was* a counselor, a wise man, and a *scribe; and Jehiel the *son of Hachmoni *was* with the king’s

sons. [33] [a]Ahithophel *was* the king's counselor, and [b]Hushai the Archite *was* the king's companion. [34] After Ahithophel *was* Jehoiada the son of Benaiah, then [a]Abiathar. And the general of the king's army *was* [b]Joab.

1 Chronicles 28

Solomon Instructed to Build the Temple

[1] Now David

assembled at Jerusalem all [a]the leaders of Israel: the officers of the tribes and [b]the captains of the divisions who served the king, the captains over thousands and captains over hundreds, and [c]the stewards over all the substance and [*]possession of the king and of his sons, with the officials, the valiant men, and all [d]the mighty men of valor.

2Then King David rose to his feet and said, “Hear me, my brethren and my people: [a]I *had* it in my heart to build a house of rest for the ark of the covenant of the LORD, and for [b]the footstool of our God, and had made preparation to build it. [3]But God said to me, [a]‘You shall not build a house for My name, because you *have been* a man of war and have shed [b]blood.’ 4However the LORD God of Israel [a]chose me above all the house of my father to be king over Israel forever, for He has chosen [b]Judah *to be* the ruler. And of the house of Judah, [c]the house of my father, and [d]among the sons of my father, He was pleased with me to make *me* king over all Israel. 5 [a]And of all my sons (for the LORD has given me many sons) [b]He has chosen my son Solomon to sit on the throne of the kingdom of the LORD over Israel. 6Now He said to me, ‘It is [a]your son Solomon *who* shall build My house and My courts; for I have chosen him *to be* My son, and I will be his Father. [7]Moreover I will establish his kingdom forever, [a]if he is steadfast to observe My commandm and My judgments, as it is this day.’ [8] Now therefore, in the sight of all Israel, the assembly of the LORD, and in the hearing of our God, be careful to seek out all the commandm of the LORD your God, that you may possess this good land, and leave *it* as an inheritance for your children after you forever.

9“As for you, my son Solomon, [a]know the God of your father, and serve Him [b]with a loyal heart and with a willing mind; for [c]the LORD searches all hearts and understand all the intent of the thoughts. [d]If you seek Him, He will be found by you; but if you forsake Him, He will [e]cast you off forever. [10]Consider now, [a]for the

LORD has chosen you to build a house for the sanctuary; be strong, and do it.”

11Then David gave his son Solomon [a]the plans for the vestibule, its houses, its treasuries, its upper chambers, its inner chambers, and the place of the mercy seat; 12and the [a]plans for all that he had by the Spirit, of the courts of the house of the LORD, of all the chambers all around, [b]of the treasuries of the house of God, and of the treasuries for the dedicated things; 13also for the division of the priests and the [a]Levites, for all the work of the service of the house of the LORD, and for all the articles of service in the house of the LORD. [14]*He gave* gold by weight for *things* of gold, for all articles used in every kind of service; also *silver* for all articles of silver by weight, for all articles used in every kind of service; [15]the weight for the [a]lampstand of gold, and their lamps of gold, by weight for each lampstand and its lamps; for the lampstands of silver by we1ight, for the lampstand and its lamps, according to the use of each lampstand. 16 And by weight *he gave* gold for the tables of the showbread for each [a]table, and silver for the tables of silver; 17also pure gold for the forks, the basins, the pitchers of pure gold, and the golden bowls—*he gave* *gold* by weight for every bowl; and for the silver bowls, *silver* by weight for every bowl; 18 and refined gold by weight for the [a]altar of incense, and for the constructio of the chariot, that is, the gold [b]cherubim that spread *their wings* and overshadow the ark of the covenant of the LORD. [19]“All *this,” said David,* [a]“the LORD made me understand in writing, by *His* hand upon me, all the [*]works of these plans.”

[20]And David said to his

son Solomon, [a]“Be strong and of good courage, and do *it;* do not fear nor be dismayed, for the LORD God—my God—*will be* with you. [b]He will not leave you nor forsake you, until you have finished all the work for the service of the house of the LORD. [21]*Here are* [a]the divisions of the priests and the Levites for all the service of the house of God; and [b]every willing craftsman *will be* with you for all manner of workmansh for every kind of service; also the leaders and all the people *will be* completely at your command.’

1 Chronicles 29

Offerings for Building the Temple

[1]Further King David said to all the assembly:

“My son Solomon, whom alone God has [a]chosen, *is* [b]young and inexperienc and the work *is* great, because the [*]temple *is* not for man but for the LORD God. [2]Now for the house of my God I have prepared with

all
my
might:
gold
for
things
to
be
made
of
gold,
silver
for
things
of
silver,
bronze
for
things
of
bronze,
iron
for
things
of
iron,
wood
for
things
of
wood,
[a]onyx
stones,
stones
to
be
set,
glistening
stones
of

various colors, all kinds of precious sto1nes, and marble slabs in abundance [3]Moreover, because I have set my affection on the house of my God, I have given to the house of my God, over and above all that I have prepared for the holy house, my own special treasure of gold and silver: 4three thousand talents of gold, of the gold of [a]Ophir, and seven thousand talents of refined silver, to overlay the walls of the houses; 5the gold for *things of* gold and the silver for *things of* silver, and for all kinds of work *to be done* by the hands of craftsmen. Who *then* is [a]willing to [*]consecrate himself this day to the LORD?”

6 Then [a]the leaders

of the fathers’ *houses,* leaders of the tribes of Israel, the captains of thousands and of hundreds, with [b]the officers over the king’s work, [c]offered willingly. [7]They gave for the work of the house of God five thousand talents and ten thousand darics of gold, ten thousand talents of silver, eighteen thousand talents of bronze, and one hundred thousand talents of iron. [8]And whoever had *precious* stones gave *them* to the treasury of the house of the LORD, into the hand of [a]Jehiel[*] the Gershonite [9]Then the people rejoiced, for they had offered willingly, because with a loyal heart they had [a]offered willingly to the LORD; and King David also rejoiced greatly.

David's Praise to God

[10]Therefo David blessed the

LORD
before
all
the
assembly;
and
David
said:

16“O

LORD our God, all this abundance that we have prepared to build You a house for Your holy name is from Your hand, and *is* all Your own. [17]I know also, my God, that You [a]test the heart and [b]have pleasure in uprightness As for me, in the uprightness of my heart I have willingly offered all these *things;* and now with joy I have seen Your people, who are present here to offer willingly to You. [18]O LORD God of Abraham, Isaac, and Is1rael, our fathers, keep this forever in the intent of the thoughts of the heart of Your people, and fix their heart toward You. [19]And [a]give my son Solomon a loyal heart to keep Your commandm and Your testimonies and Your statutes, to do all *these things,* and to build the [*]temple for which [b]I have made provision.”

[20]Then David said to all the assembly, “Now bless the LORD your God.” So all the assembly blessed

the LORD God of their fathers, and bowed their heads and prostrated themselves before the LORD and the king.

Solomon Anointed King

[21]And they made sacrifices to the LORD and offered burnt offerings to the LORD on the next day:

a thousand bulls, a thousand rams, a thousand lambs, with their drink offerings, and [a]sacrifices in abundance for all Israel. 22So they ate and drank before the LORD with great gladness on that day. And they made Solomon the son of David king the second time, and [a]anointed *him* before the LORD *to be* the leader, and Zadok *to be* priest. 23Then Solomon sat on the throne of the LORD as king instead of David his father, and prospered; and all Israel obeyed him. [24]All the leaders and the mighty men, and also all the sons of King David, [a]submitted themselves to King Solomon. [25]So the LORD exalted Solomon exceedingly in the sight of all Israel, and [a]bestowed on him *such* royal majesty as had not been on any king before him in Israel.

The Close of David’s Reign

[26]Thus David the son of Jesse reigned over all Israel. [27][a]And the period that he reigned over Israel *was* forty years;

[b]seven years he reigned in Hebron, and thirty-three *years* he reigned in Jerusalem. 28So he [a]died in a good old age, [b]full of days and riches and honor; and Solomon his son reigned in his place. 29Now the acts

of King David, first and last, indeed they *are* written in the [*]book of Samuel the seer, in the book of Nathan the prophet, and in the book of Gad the seer, [30]with all his reign and his might, [a]and the events that happened to him, to Israel, and to all the kingdoms of the lands.

1 Chronicles 1

[1:
a.
Ge
1:2
2:7
5:1
2,
5

[1:
b.
Ge
4:2
26
5:3
9

[1:
a.
Ge
5:2
—
10

[1:
*
So
wi
MT
Vg
LX
ad
the
sor
of
No

[1:
a.
Ge
10
4

[1:
*
Rip
Ge
10

[1:
*
Ta
Ge
10

[1:
*
Do
Ge
10

[1:
a.
Ge
10

[1:
*
Sal
Ge
10

[1:
*
Ra
Ge
10

[1:
a.
Ge
10
10,
13

[1:
a.

De
2:2

[1:
a.
Ge
9:1
25-
27,
10

[1:
a.
Ge
10
29,
11

[1:
b.
Lu
3:3

[1:
*
Mc
Ge
10

[1:
*
Lit

Div
Ge
10

[1:
*
Or
lan

[1:
a.
Ge
10

[1:
*
Ob
Ge
10

[1:
a.
Ge
11
26,
Lul
3:3
36

[1:
a.
Ge

11

[1:
a.
Ge
17

[1:
a.
Ge
21
3

[1:
b.
Ge
21

[1:
c.
Ge
16
15

[1:
a.
Ge
25
16

[1:
*
Ha
Ge
25

[1:
a.
Ge
25
4

[1:
a.
Ge
21

[1:
b.
Ge
25
25
26
29
32

[1:
a.
Ge
36
19

[1:
a.
Ge
36

[1:
*
Ze
Ge
36

[1:
a.
Ge
36
28

[1:
*
He
or
He
1G
36

[1:
*
Alv
Ge
36

[1:

*

Sh
Ge
36

[1:
a.
Ge
36

[1:
*

He
Ge
36

[1:
*

Ak
Ge
36

[1:
a.
Ge
36
43

[1:
*

Lit
str

[1:
a.
Ge
36

[1:
*
Ha
Ge
36

[1:
*
Pa
Ge
36

[1:
*
Alv
Ge
36

1
Chronicles
2

[2:
a.
Ge
29
35

35
26
46
27

[2
b.
Ge
29
35

[2
*
Ja
Ge
32

[2
a.
Ge
38
5;
46
Nu
26

[2
b.
Ge
38

[2

c.
Ge
38

[2:
a.
Ge
38

[2:
b.
Ma
1:3

[2:
a.
Ge
46
Ru
4:1

[2:
a.
1
Ki
4:3

[2:
*
Za
Jo
7:1

[2:
*
Da
1
Ki
4:3

[2:
a.
1
Ch
4:1

[2:
b.
Jo
6:1

[2:
*
Ac
Jo
7:1

[2:
*
ba
or
de

[2:
*
Ar
Ma
1:3
4

[2:
*
Ca
vv.
18
42

[2:
a.
Ru
4:1
22
Ma
1:4

[2:
b.
Nu
1:7
2:3

[2:
*
Sal
Ru
4:2

Lu
3:3

[2:
a.
1
Sa
16

[2:
*
Sh
1
Sa
16

[2:
a.
1
Sa
16
11
17

[2:
a.
2
Sa
2:1

[2:
*

Jit
the
Isr
2
Sa
17

[2:
a.
1
Ch
2:5

[2:
*
Lit
too
to
hin

[2:
*
Or
Epi

[2:
a.
Ex
31
38

[2:

a.
Nu
27
Ju
5:1
1
Ch
7:1

[2:
a.
Ju
10

[2:
*
Re
to
Ma
thr
the
da
of
Ma
Nu
32
De
3:1
25
6;
1
Kin
4:1
1
Ch
7:1

[2:
a.
Nu
32
De
3:1
Jos
13

[2:
a.
1
Ch
4:5

[2:
a.
1
Ch
2:3
35

[2:
a.
1
Ch
11

[2:
a.
2

Ch
23

[2:
a.
Jos
15

[2:
*
Or
Ac

[2:
a.
1
Ch
4:4

[2:
b.
Jos
9:1
18

[2:
*
Ep
v.
19

[2:
*
Re
1
Ch
4:2

[2:
*
Or
Mo
sar
as
Mo
v.
54

[2:
*
Or
Ata
of
the
hou
of
Joa

[2:
a.
Jud
1:1

[2:

b.
2
Kin
10
Jer
35

1
Chronicles
3

[3:
a.
2
Sa
3:2
5

[3:
b.
1
Sa
25

[3:
c.
Jos
15

[3:
d.
1
Sa
25

42

[3:
*
Ch
2
Sa
3:

[3:
a.
2
Sa
13
15

[3:
b.
1
Ki
1:

[3:
a.
2
Sa
3:

[3:
a.
2
Sa

2:1

[3:
b.
2
Sa
5:5

[3:
a.
1
Ch
14
7

[3:
b.
2
Sa
12
25

[3:
*
Sh
1
Ch
14
2
Sa
5:1

[3:
*
Ba
2
Sa
11

[3:
*
Eli
2
Sa
11

[3:
*
Eli
1
Ch
14
2
Sa
5:1

[3:
*
Elp
1
Ch
14

[3:
a.

2
Sa
5:1
16

[3:
*
Be
1
Ch
14

[3:
a.
2
Sa
13

[3:
a.
1
Ki
11
Ma
1:7
10

[3:
*
Ab
1
Ki
15

[3:

*

Jeh

2

Ki

1:1

8:1

[3:

*

Or

Az

or

Jeh

[3:

*

Jeh

2

Ki

12

[3:

*

Uz

Is.

6:1

[3:

*

Eli

2
Kin
23

[3:
*
Jeh
2
Kin
23

[3:
a.
Ma
1:1

[3:
*
Jeh
2
Kin
24
or
Co
Jer
22

[3:
*
Mo
2
Kin
24

[3:
a.
Ma
1:1

[3:
*
Jeh
2
Kin
24
or
Co
Jer
22

[3:
*
Or
the
cap
we
Sh

[3:
a.
Ezr
8:2

1
Chronicles
4

[4:
a.
Ge
38
46

[4:
*
Ch
1
Ch
2:9
or
Ca
1
Ch
2:1

[4:
*
Ha
1
Ch
2:5

[4:
a.
Ex
31
1
Ch
2:5

[4:
a.
1
Ch
2:2

[4:
a.
Ge
34

[4:
*
Lit
He
Wi
Ca
Pa

[4:
*
bo

[4:
a.
Jo
8:1

[4:
*
Lit
Cit

of
Na

[4:
a.
Jos
15
Jud
3:9
11

[4:
*
LX
Vg
add
and
Me

[4:
a.
Ne
11

[4:
*
Lit
Va
of
Cr

[4:

a.
Jos
14
14
15
17
1
Ch
6:5

[4:
*
Or
Uk

[4:
*
Lit
she

[4:
*
Or
His
Juc
wif

[4:
a.
2
Kin
25

[4:
a.
Ge
38
14

[4:
b.
Ge
38
5;
46

[4:
*
Lit
wo

[4:
*
Lit
Pla

[4:
*
Lit
He

[4:
a.

Nu
26
14

[4:
*
Jer
Ge
46
Ex
6:1
Nu
26

[4:
*
Jac
Ge
46
Nu
26

[4:
*
Zol
Ge
46
Ex
6:1

[4:
a.
Nu

2:9

[4:
*
Ba
Jos
19

[4:
*
Elt
Jos
19

[4:
*
Ha
Sus
Jos
19

[4:
*
Eth
Jos
19

[4:
*
Ba
Bee
Jos

19

[4:
a.
2
Ki
18

[4:
b.
2
Ki
19

[4:
*
Lit
str

[4:
a.
Ex
17
1
Sa
15
30

[4:
*
Lit
str

1
Chronicles
5

[5:
a.
Ge
29
49

[5:
b.
Ge
35
49

[5:
c.
Ge
48
22

[5:
a.
Ge
49
10
Ps.
60
10

[5:

b.
Mi
5:2
Ma
2:6

[5:
*
*the
rig
of
the
firs*

[5:
a.
Ge
46
Ex
6:1
Nu
26

[5:
a.
2
Kin
18

[5:
*
He
Til

Pili

[5:
a.
1
Ch
5:1

[5:
a.
Nu
32
Jos
12
13
16

[5:
a.
Jos
22
9

[5:
*
beg

[5:
*
inc

[5:
a.
Ge
25

[5:
a.
Nu
26
18

[5:
b.
Jos
13
24
28

[5:
c.
De
3:1

[5:
a.
1
Ch
27
So
2:1
Is.
35
65

[5:
*
ope
lan

[5:
a.
2
Kin
15
32

[5:
b.
2
Kin
14
28

[5:
a.
Ge
25
1
Ch
1:3

[5:
a.
(1
Ch

5:2

[5:
b.
2
Ch
14
13

[5:
c.
Ps.
9:1
20
8;
22
5

[5:
*
Lit
wa
ent
for
the

[5:
a.
(Jo
23
2
Ch
32

Ro
8:3

[5:
b.
2
Ki
15
17

[5:
a.
De
3:9

[5:
a.
2
Ki
17

[5:
a.
2
Ki
15

[5:
b.
2
Ki
15

[5:
c.
2
Kin
17
18

[5:
*
He
Til
Pil

1
Chronicles
6

[6:
a.
Ge
46
Ex
6:1
Nu
26
1
Ch
23

[6:
*
Or
Ge

v.
16

[6:
a.
1
Ch
6:1
22

[6:
a.
Le
10
2

[6:
a.
2
Sa
8:1

[6:
b.
2
Sa
15

[6:
a.
2
Ch

26
18

[6:
b.
1
Ki
6:1
2
Ch
3:1

[6:
*
Lit
hou

[6:
a.
Ez
7:3

[6:
b.
2
Ch
19

[6:
*
Me
1

Ch
9:1

[6:
a.
2
Ki
25
21
Ne
11

[6:
a.
2
Ki
25

[6:
a.
Ge
46
Ex
6:1

[6:
*
He
Ge
an
alt
spe
for

Ge
vv.
1,
17
20
43
62
71

[6:
a.
1
Ch
6:

[6:
*
Et
v.
42

[6:
*
Ad
v.
41

[6:
*
Et
v.
41

[6:

a.

Nu

16

[6:

*

Izh

vv.

2,

18

[6:

a.

1

Ch

6:3

36

[6:

*

Zu

v.

35

1

Sa

1:1

[6:

*

To

v.
34

[6:
*
Eli
v.
34

[6:
*
So
wi
LX
Sy
Ar
cf.
v.
33
an
1
Sa
8:

[6:
*
He
Va

[6:
a.
1
Ch

15
22
27
16
6

[6:
b.
2
Sa
6:1
1
Ki
8:
1
Ch
15
—
16

[6:
a.
Nu
26

[6:
*
Lit
sto
wit

[6:
*

Eli
1
Sa
1:1

[6:
*
To
1
Sa
1:1

[6:
a.
Ex
6:2

[6:
a.
2
Ch
5:1

[6:
a.
1
Ch
6:2

[6:
*
Jec

1
Ch
9:1
25
3,
6;
2
Ch
35
Ps.
62

[6:
*
Or
Ku

[6:
a.
1
Ch
9:1
34

[6:
a.
Ex.
28
(N
18
8)

[6:

b.
Le
1:8
9

[6:
c.
Ex
30

[6:
a.
1
Ch
6:4
8;
Ez
7:5

[6:
a.
Jo
21

[6:
a.
Jo
14
21
12

[6:

*

ope
lan

[6:
a.
Jos
14
15

[6:
a.
Jos
21
19

[6:
*

Ho
Jos
21

[6:
*

Ai
Jos
21

[6:
*

Alr
Jos

21

[6:
a.
1
Ch
6:6
70

[6:
b.
Jos
21

[6:
a.
Jos
21
34
40

[6:
*
ope
lan

[6:
a.
1
Ch
6:6

[6:
a.
Jos
21

[6:
a.
Jos
21

[6:
*
Bec
Jos
21

[6:
*
Kis
Jos
21

[6:
*
He
Rin
an
alt
spe
of
Rin

1
Ch
4:3

1
Chronicles
7

[7:
a.
Nu
26
25

[7:
*
Pu
Ge
46

[7:
*
Jol
Ge
46

[7:
a.
2
Sa
24
9;
1
Ch

27

[7:
a.
Ge
46
Nu
26
41,
1
Ch
8:1

[7:
*
Sh
Nu
26

[7:
*
Hu
Nu
26

[7:
*
Iri,
v.
7

[7:
*

Ah
Nu
26

[7:
a.
Nu
26
50

[7:
*
Jal
Ge
46

[7:
*
Sh
Ge
46

[7:
a.
Nu
26
34

[7:
b.
1
Ch

2:2

[7:
a.
Nu
26
33
27

[7:
*
Hu
v.
12
Nu
26

[7:
*
Sh
v.
12
Nu
26

[7:
*
Lit
the
sec

[7:

a.
1
Sa
12

[7:
*
Jee
Nu
26

[7:
a.
Nu
26
37

[7:
*
Lit
In
Tr

[7:
a.
Jos
16
5;
2
Ch
8:5

[7:
a.
Nu
10

[7:
a.
Ex
17
14
24
33

[7:
*

He
No

[7:
a.
Jos
16
10

[7:
*

Na
Jos
16

[7:
*

Ma
He
ms
Bg
LX
Tg
Vg
Ga

[7:
a.
Ge
41
Jos
17

[7:
b.
Jos
17

[7:
a.
Ge
46
Nu
26
47

[7:
*
Or
Bir

or
Bir

[7:
*
Sh
1
Ch
7:3

[7:
*
He
1
Ch
7:3

[7:
a.
1
Ch
7:3

[7:
*
Jet
v.
38

[8:
a.
Ge
46
Nu
26
1
Ch
7:6

[8:
*
Ah
Nu
26

[8:
*
Ar
Nu
26

[8:
*
Sh
Nu
26
or
Sh
1
Ch
7:1

[8:
a.
1
Ch
6:6

[8:
b.
1
Ch
2:5

[8:
a.
1
Ch
8:2

[8:
*
Sh
1
Ch
7:1

[8:
a.
1
Ch
9:3
38

[8:
*
Jei
1
Ch
9:3

[8:
*
Zec
1
Ch
9:3

[8:
*
Shi
1
Ch
9:3

[8:
*
Lit
opp

[8:
*
bre

1
Ch
9

1
Ch
10

Ch
11

1
Ch
12

Ch
13

1
Ch
14

1
Ch
15

1
Ch
16

1

Ch

17

1

1
Ch
18

Ch
19

1
Ch
20

1
Ch
21

1
Ch
22

1
Ch
23

1
Ch
24

1
Ch
25

1
Ch
26

Ch
27

1
Ch
28

Ch
29

2
Ch
1

S
Rea
Wi

1
[a]So
the
son
of
Da
wa
str
in
his
kin
and
[b]th
LO
his
Go

wa
wi
hir
and
c ex
hir
exc

2
Sol
spo
to
all
Isr
to
[a]th
cap
of
tho
and
of

hun
to
the
jud
and
to
eve
lea
in
all
Isra
the
hea
of
the
fat
hou
[3]Th
Sol
and
all
the
ass
wit
him
we
to
*th
hig
pla
tha
wa
at
[a]Gi
for
the
tab
of
me
wit

Go wa the wh Mo the ser of the LO hac [b]m in the wi

4[a]B Da hac bro up the ark of Go fro Kir Jea to *the pla* Da hac pre for it, for he hac pit a

ter
for
it
at
Jer
5N
[a]th
bro
alt
tha
[b]Be
the
son
of
Uri
the
son
of
Hu
had
ma
[*]he
pu
bef
the
tab
of
the
LO
Sol
and
the
ass
sou
Hin
the
6An
Sol
we
up

the
to
the
bro
alt
bef
the
LO
wh
wa
at
the
tab
of
me
and
[a]of
a
tho
bur
off
on
it.

7
tha
nig
Go
app
to
Sol
and
sai
to
him
“A
Wh
sha
I
giv
you

[8]
Sol
sai
to
Go
“Yo
hav
sho
gre
[a]m
to
Da
my
fat
and
hav
ma
me
[b]ki
in
his
pla
[9]N
O
LO
Go
let
Yo
pro
to
Da
my
fat
be
est
[a]fo
Yo
hav
ma
me

kin
ove
a
pe
lik
the
[b]du
of
the
ear
in
mu
10[a]
giv
me
wis
an
kn
tha
I
ma
[b]g
ou
an
co
in
bef
thi
pe
for
wh
ca
juc
thi
gre
pe
of
Yo

1
Go

sai
to
Sol
“B
thi
wa
in
yo
hea
an
yo
ha
no
ask
ric
or
we
or
ho
or
the
life
of
yo
en
no
ha
yo
ask
lon
life
—
bu
ha
ask
wis
an
kn
for
yo

tha
yo
ma
jud
My
pe
ov
wh
I
hav
ma
yo
kin
—
[12]W
an
kn
are
gra
to
yo
an
I
wi
giv
yo
ric
an
we
an
ho
suc
as
[a]no
of
the
kin
hav
had
wh

we
bef
you
no
sha
any
aft
you
hav
the
lik

S
Mi
an
Ec
Po

1
Sol
car
to
Jer
fro
*th
hig
pla
tha
wa
at
Gil
fro
bef
the
tab
of
me
and
rei
ove
Isr
14a

Sol
gat
cha
and
hor
he
had
one
tho
fou
hur
cha
and
two
tho
hor
wh
he
sta
in
the
cha
citi
and
wit
the
kin
in
Jer
15[a]
the
kin
ma
silv
and
gol
as
con
in
Jer

as
sto
an
he
ma
ce
as
ab
as
the
sy
wh
are
in
the
low
16a.
Sol
ha
ho
im
fro
Eg
an
Ke
the
ki
me
bo
the
in
Ke
at
the
cu
pri
17T
als
ac
an

im
fro
Eg
a
cha
for
six
hu
she
of
silv
and
a
hor
for
one
hu
and
fift
thu
*th
the
age
the
exp
the
to
all
the
kin
of
the
Hit
and
the
kin
of
Syr

2
Ch
2

S
Pre
to
Bu
the
Ter

1
Sol
[a]de
to
bu
a
ter
for
the
na

of
the
LO
anc
a
roy
ho
for
hir

2[a]S
sele
sev
tho
mer
to
bea
bur
eig
tho
to
qua
stor
in
the
mo
anc
thr
tho
six
hur
to
ove
the

3
Sol
ser
to
*Hi
kir
of
Tyr
say

1
Hir
kin
of
Tyr
ans
in
wr
wh
he
ser
to
Sol

1
als
sai

[1]
Sol
nu
all
the
ali
wh
we
in
the
lan
of
Isr
aft
the
cen
in
wh
[b]Da
his
fat
had

nu
the
an
the
we
fou
to
be
on
hu
an
fift
thr
tho
six
hu
18A
he
ma
[a]se
tho
of
the
bea
of
bu
eig
tho
sto
in
the
mo
an
thr
tho
six
hu
ove
to
ma

the
pe
wo

2
Ch
3

S
Bu
the
Te

1
[a]So
beg
to
bu
the
ho
of
the
LO
at
[b]Je
on
Mo
Mo
wh
[*]*th*
LO
ha
ap
to
his
fat
Da
at
the
pla
tha
Da

hac
pre
on
the
thr
flo
of
[c]Or
the
Jel
[2]Ar
he
beg
to
bu
on
the
sec
day
of
the
sec
mo
in
the
fou
yea
of
his
rei
[3]
is
the
fou
[a]w
Sol
lai
for
bu
the

ho
of
Go
Th
len
wa
six
cul
(by
cul
acc
to
the
for
me
and
the
wi
two
cul
4Ar
the
[a]ve
tha
wa
in
fro
of
[*]th
sar
wa
two
cul
lon
acr
the
wi
of
the
ho

an
the
hei
wa
*or
hu
an
tw
He
ov
the
ins
wi
pu
go
5[a]T
lar
*ro
he
[b]pa
wi
cy
wh
he
ov
wi
fin
go
an
he
ca
pa
tre
an
ch
on
it.
6Ar
he
de

the
ho
wi
pre
sto
for
bea
an
the
go
wa
go
fro
Pa
[7]H
als
ov
the
ho
—
the
bea
an
do
its
wa
an
do
—
wi
go
an
he
ca
ch
on
the
wa
he

ma
the
[a]M
Ho
Pla
Its
len
wa
acc
to
the
wi
of
the
ho
tw
cul
an
its
wi
tw
cul
He
ov
it
wi
six
hu
tal
of
fin
gol
9Th
we
of
the
na
wa
fift
she

of
gol
and
he
ove
the
up
[a]ar
wi
gol
10[a]
the
Mo
Ho
Pla
he
ma
two
che
fas
by
car
and
ove
the
wi
gol
11T
wi
of
the
che
we
two
cul
in
ove
len
one
wi

of
the
onc
che
wa
fiv
cul
tou
the
wa
of
the
roo
anc
the
oth
wir
wa
fiv
cul
tou
the
wir
of
the
oth
che
12*o*
wir
of
the
oth
che
wa
fiv
cul
tou
the
wa
of

the
roo
an
the
oth
wi
als
wa
fiv
cul
tou
the
wi
of
the
oth
ch
[13]T
wi
of
the
ch
spa
tw
cul
ov
Th
sto
on
the
fee
an
the
fac
inv
[14]A
he
ma
the
[a]ve

of
blu
pu
cri
an
fin
lin
an
wo
ch
int
it.

1
he
ma
in
fro
of
the
*te
atw
pil
*th
fiv
cul
*hi
an
the
ca
tha
wa
on
the
top
of
ea
of
the
wa
fiv

cul
16H
ma
wr
of
cha
as
in
the
inn
sa
an
pu
the
on
to
of
the
pil
an
he
ma
[a]on
hu
po
an
pu
the
on
the
wr
of
cha
17T
he
[a]se
up
the
pil
bef

the
ter
one
on
the
rig
har
and
the
oth
on
the
lef
he
cal
the
nar
of
the
one
on
the
rig
har
*Ja
and
the
nar
of
the
one
on
the
lef
*Bo

2
Ch
4

I

of
the
Te

1
he
ma
[a]a
bro
alt
two
cul
wa
its
len
two
cul
its
wid
and
ten
cul
its
hei

2
he
ma
the
*Se
of
cas
bro
ten
cul
fro
one
bri
to
the
oth
it

wa
cor
rou
Its
hei
wa
fiv
cul
an
a
lin
of
thi
cul
me
its
cir
3[a]A
un
it
wa
the
lik
of
oxe
en
it
all
ar
ten
to
a
cul
all
the
wa
ar
the
Sea
Th

oxe
wer
cas
in
two
row
wh
it
wa
cas
4It
sto
on
two
[a]ox
thr
loo
tow
the
nor
thr
loo
tow
the
we
thr
loo
tow
the
sou
and
thr
loo
tow
the
eas
the
Sea
wa
set

up
the
an
all
the
ba
pa
poi
inv
[5]It
wa
a
ha
thi
an
its
bri
wa
sha
lik
the
bri
of
a
cu
lik
a
lily
blo
It
co
*th
tho
ba

e
als
ma
[a] te
lav
anc
pu
fiv
on
the
rig
sid
anc
fiv
on

the
lef
to
wa
in
the
suc
thi
as
the
off
for
the
bur
off
the
wo
wa
in
the
bu
the
*Se
wa
for
the
[b]pr
to
wa
in.
7[a]A
he
ma
ten
lan
of
gol
[b]ac
to
the

des
and
set
the
in
the
ten
fiv
on
the
rig
sid
and
fiv
on
the
lef
8[a]H
als
ma
ten
tab
and
pla
the
in
the
ten
fiv
on
the
rig
sid
and
fiv
on
the
lef
An
he

ma
on
hu
[b]bo
of
gol
9
[a]he
ma
the
co
of
the
pri
an
the
[b]gr
co
an
do
for
the
co
an
he
ov
the
do
wi
bro
10[a]
set
the
Sea
on
the
rig
sid
tow
the

sou

1
[a]H
ma
the
po
and
the
sho
and
the
bo
So
Hu
fin
do
the
wo
tha
he
wa
to
do
for
Kin
Sol
for
the
ho
of
Go
12t
tw
pil
and
[a]th
bo
sha
cap
tha

we on top of the tw pil the tw net cov the tw bo sha cap wh *we* on top of the pil

13a hu po for the tw net (tw row of po for eac net to cov the

tw
bo
sha
cap
tha
we
on
the
pil
[14]h
als
ma
[a]ca
an
the
lav
on
the
car
[15]O
Se
an
tw
ox
un
it;
[16]a
the
po
the
sho
the
for
—
an
all
the
art
[a]H
his

*m
cra
ma
of
bu
bro
for
Kin
Sol
for
the
ho
of
the
LO

1
the
pla
of
Jor
the
kin
had
the
cas
in
cla
mo
bet
Suc
and
*Ze

18a.
Sol
had
all
the
art
ma
in

suc
gre
abu
tha
the
we
of
the
bro
wa
no
det

1

[a]So
had
all
the
fur
ma
for
the
ho
of
Go
the
alt
of
gol
and
the
tab
on
wh
wa
[b]th
sho
20t
lan
wi
the

lan
of
pu
gol
to
bu
[a]in
the
pre
ma
in
fro
of
the
inn
san
21 w
[a]th
flo
an
the
lan
an
the
wi
tri
of
gol
of
pu
gol
22 t
tri
the
bo
the
lad
an
the
cen

of
pu
gol
As
fo
the
ent
of
the
[*]sa
its
inn
do
to
the
Mo
Ho
Pla
an
the
do
of
the
ma
hal
of
the
ter
we
gol

2
Ch
5

1
[a]al
the
wo
tha
Sol

hac
dor
for
the
hot
of
the
LO
wa
fin
anc
Sol
brc
in
the
thi
wh
his
fat
Da
hac
dec
the
silv
anc
the
gol
anc
all
the
fur
An
he
pu
the
in
the
tre
of
the

ho
of
Go

T
Ar
Br
int
the
Te

2
Sol
ass
the
eld
of
Isr
an
all
the
he
of
the
tri
the
chi
fat
of
the
chi
of
Isr
in
Jer
tha
the
mi
bri
the
ark
of

the
cov
of
the
LO
up
[b]fr
the
Cit
of
Da
wh
is
Zio
3 [a]T
all
the
me
of
Isr
ass
wi
the
kin
[b]at
the
fea
wh
wa
in
the
sev
mo
4 So
all
the
eld
of
Isr
can

an
the
[a]Le
too
up
the
ark
5Th
the
bro
up
the
ark
the
tab
of
me
an
all
the
hol
fur
tha
we
in
the
tab
Th
pri
an
the
Lev
bro
the
up
6Al
Kir
Sol
an
all

the
cor
of
Isr
wh
we
ass
wit
hir
bef
the
ark
we
sac
she
anc
oxe
tha
cou
not
be
cou
or
nur
for
mu
[7]Th
the
pri
bro
in
the
ark
of
the
cov
of
the
LO
to

its
pla
int
the
[a]in
san
of
the
*te
to
the
Mo
Ho
Pla
un
the
wi
of
the
che
8Fo
the
che
spr
the
wi
ove
the
pla
of
the
ark
an
the
che
ove
the
ark
an
its

pol
9Th
pol
ext
so
tha
the
enc
of
the
[a]po
of
the
ark
cou
be
see
fro
the
hol
pla
in
fro
of
the
inn
san
but
the
cou
not
be
see
fro
out
An
*th
are
the
to

thi
day
10N
wa
in
the
ark
exc
the
tw
tab
wh
Mo
[a]pu
the
at
Ho
[*]w
the
LO
ma
a
co
wi
the
chi
of
Isr
wh
the
ha
co
ou
of
Eg
1
it
ca
to
pa

wh
the
pri
car
ou
of
the
Mo
Ho
Pla
(fo
all
the
pri
wh
we
pre
hac
[*]sa
the
wi
kee
to
the
[a]di
12[a]
the
Lev
wh
we
the
sin
all
tho
of
Asa
anc
He
anc
Jec

wit
the
son
and
the
bre
sto
at
the
eas
end
of
the
alt
clo
in
wh
lin
hav
cyr
stri
ins
and
han
b an
wit
the
one
hur
and
two
pri
sou
wit
tru
—
13i
it
can
to

pas
wh
the
tru
an
sin
we
as
on
to
ma
on
sou
to
be
hea
in
pra
an
tha
the
LO
an
wh
the
lift
up
the
voi
wit
the
tru
an
cy
an
ins
of
mu
an
pra

the
LO
say

t
the
ho
the
ho
of
the
LO
wa
fill
wi
a
clo
[14]s
tha
the
pri
cou
no
*co
mi
bee
of
the
clo

[a]fo
the
glo
of
the
LO
fill
the
ho
of
Go

2
Ch
6

1
[a]Sc
spo

S
Spe
upo
Co
of
the
Wo

3
the
kin
tur
aro
anc
[a]bl
the
wh
ass
of
Isr
wh
all
the
ass
of
Isr
wa
sta
4Ar
he
sai
“Bl

be
the
LO
Go
of
Isr
wh
has
ful
wi
His
han
wh
He
spo
wi
His
mo
to
my
fat
Da
[a]sa
5‘S
the
day
tha
I
bro
My
peo
ou
of
the
lan
of
Eg
I
hav
cho

no cit fro an tri of Isr *in wh* to bu a ho tha My na mi be the no di I ch an ma to be a rul ov My pe Isr 6[a]Y I ha ch Je tha My

nar
ma
be
the
anc
I
[b]ha
che
Da
to
be
ove
My
peo
Isra
7 No
[a]it
wa
in
the
hea
of
my
fat
Da
to
bui
a
*te
for
the
nar
of
the
LO
Go
of
Isra
8 Bu
the

LO
sai
to
my
fat
Da
‘W
it
wa
in
you
hea
to
bui
a
ten
for
My
nar
you
dic
we
in
tha
it
wa
in
you
hea
[9]N
you
sha
not
bui
the
ten
bu
you
son
wh

wi
co
fro
yo
bo
he
sha
bu
the
te
for
My
[a]na
10S
the
LO
has
ful
His
wo
wh
He
spo
an
I
ha
fill
the
po
of
my
fat
Da
an
[a]sit
on
the
thr
of
Isr

as the LO pro an I ha bu the te for the na of the LO Go of Isr [11]A the I ha pu the ark [a]in wh *is* the co of the LO wh He ma wi the chi

of
Isr

S
Pro
of
Dea

1
**So*
sto
bef
the
alt
of
the
LO
in
the
pre
of
all
the
ass
of
Isr
and
spr
out
his
han
13(
Sol
had
ma
a
bro
pla
fiv
cul
lon
fiv

cul
wi
an
thr
cul
hig
an
ha
set
it
in
the
mi
of
the
cou
an
he
sto
on
it,
kn
do
on
his
kn
bef
all
the
ass
of
Isr
an
spr
ou
his
ha
tow
hea
14a

he
sai
“L
Go
of
Isr
[a]*th*
is
no
Go
in
hea
or
on
ear
lik
Yo
wh
kee
Yo
[b]co
an
me
wi
Yo
ser
wh
wa
bef
Yo
wi
all
the
hea
15[a]
hav
kep
wh
Yo
pro

Yo
ser
Da
my
fat
Yo
hav
bot
spo
wit
Yo
mo
and
ful
it
wit
Yo
han
as
it
is
thi
day
16T
LO
Go
of
Isra
not
kee
wh
Yo
pro
Yo
ser
Da
my
fat
say
[a]‘Y

sha
no
fai
to
ha
a
ma
sit
bef
Me
on
the
thr
of
Isr
[b]o
if
yo
so
tak
he
to
the
wa
tha
the
wa
in
My
la
as
yo
ha
wa
bef
Me
[17]A
no
O
LO

Go
of
Isr
let
Yo
wo
co
tru
wh
Yo
ha
sp
to
Yo
se
Da

1
wi
Go
in
dw
wi
me
on
th
ea
[a]Be
he
an
th
he
of
he
ca
co
Yo
Ho
mu
les
thi

*te wh I hav bur [19]Y reg the pra of Yo ser and his sup O LO my Go and list to the cry and the pra wh Yo ser is pra bef Yo [20]t Yo eye ma be [a]op

tow
thi
ter
day
and
nig
tow
the
pla
wh
Yo
sai
Yo
wo
pu
Yo
nar
tha
Yo
ma
hea
the
pra
wh
Yo
ser
ma
[b]to
thi
pla
[21]A
ma
Yo
hea
the
sup
of
Yo
ser
and

of
Yo
pe
Isr
wh
the
pra
tow
thi
pla
He
fro
hea
Yo
dw
pla
an
wh
Yo
hea
[a]fo
2
any
sin
aga
his
nei
an
is
for
to
tak
an
[a]oa
an
co
an
tak
an
oat

bef
Yo
alt
in
thi
ten
[23]th
hea
fro
hea
and
act
and
jud
Yo
ser
bri
ret
on
the
wic
by
bri
his
wa
on
his
ow
hea
and
jus
the
rig
by
giv
hin
acc
to
his
[a]rig

[2]
if
Yo
pe
Isr
are
de
be
an
[a]en
be
the
ha
sin
aga
Yo
an
ret
an
co
Yo
na
an
pra
an
ma
sup
be
Yo
in
thi
ter
[25]t
hea
fro
hea
an
for
the
sin

of
Yo
pe
Isr
an
bri
the
ba
to
the
lan
wh
Yo
gav
to
the
an
the
fat

2
the
[a]he
are
shu
up
an
the
is
no
rai
be
the
ha
sin
aga
Yo
wh
the
pra
tow

thi
pla
an
co
Yo
na
an
tu
fro
the
sin
be
Yo
aff
the
[27]t
hea
in
hea
an
for
the
sin
of
Yo
se
Yo
pe
Isr
tha
Yo
ma
tea
the
the
go
wa
in
wh
the

sho
wa
anc
ser
rai
on
Yo
lar
wh
Yo
hav
giv
to
Yo
pec
as
an
inh
2
the
[a]is
far
in
the
lar
pes
or
bli
or
mi
loc
or
gra
wh
the
enc
bes
the
in
the

lan
of
the
citi
wh
pla
or
wh
[b]si
the
is;
29w
pra
wh
sup
is
ma
by
any
or
by
all
Yo
peo
Isra
wh
eac
one
kno
his
ow
bu
an
his
ow
gri
an
spr
ou
his

har
to
thi
ten
[30]t
hea
fro
hea
Yo
dw
pla
an
for
an
giv
to
eve
acc
to
all
his
wa
wh
hea
Yo
kn
(fo
Yo
alo
[a]kn
the
[b]he
of
the
son
of
me
[31]t
the
ma

fea
Yo
to
wa
in
Yo
wa
as
lon
as
the
liv
in
the
lan
wh
Yo
gav
to
our
fat
3
con
a
for
[a]wh
is
not
of
Yo
peo
Isra
but
has
con
fro
a
far
cou
for

the
sak
of
Yo
gre
nar
anc
Yo
mi
har
anc
Yo
ou
arr
wh
the
cor
anc
pra
in
thi
ten
[33]t
hea
fro
hea
Yo
dw
pla
anc
do
acc
to
all
for
wh
the
for
cal
to

Yo
tha
all
pe
of
the
ear
ma
kn
Yo
na
an
fea
Yo
as
do
Yo
pe
Isr
an
tha
the
ma
kn
tha
*th
ter
wh
I
hav
bu
is
cal
by
Yo
na
3
Yo
pe
go

ou
to
ba
ag
th
en
wh
Yo
se
th
an
wh
th
pr
to
Yo
to
thi
cit
wh
Yo
ha
ch
an
th
te
wh
I
ha
bu
fo
Yo
na
35t
he
fro
he
th
pr
an

the
sup
and
ma
the
cau

3
the
sin
aga
Yo
(fo
the
is
[a]no
one
wh
doe
not
sin
and
Yo
bec
ang
wit
the
and
del
the
to
the
end
and
the
tak
the
[b]ca
to
a
lan

far
or
nea
37*y*
wh
the
*co
to
the
in
the
lan
wh
the
we
can
cap
and
rep
and
ma
sup
to
Yo
in
the
lan
of
the
cap
say
‘W
hav
sin
we
hav
don
wr
and
hav

cor
wic
38a
wh
the
ret
to
Yo
wi
all
the
hea
and
wi
all
the
sou
in
the
lan
of
the
cap
wh
the
hav
bee
car
cap
and
pra
tow
the
lan
wh
Yo
gav
to
the
fat

the
[a]ci
wh
Yo
ha
ch
an
tow
the
ten
wh
I
ha
bu
for
Yo
na
39t
hea
fro
hea
Yo
dw
pla
the
pra
an
the
sup
an
ma
the
ca
an
for
Yo
pe
wh
ha
sin

aga
Yo
[40]N
my
Go
I
pra
let
Yo
eye
be
[a]op
anc
let
Yo
ear
be
att
to
the
pra
ma
in
thi
pla

2
Ch
7

S
Dec
the
Ter

1
[a]*So*
had
fin
pra
[b]fir
car
dov
fro
hea
and
con
the
bur
off
and
the
sac
and
[c]th
glo
of
the
LO
fill
the

*te
2[a]A
the
pri
cou
not
ent
the
hou
of
the
LO
bec
the
glo
of
the
LO
had
fill
the
LO
hou
3W
all
the
chi
of
Isra
saw
hov
the
fire
can
dov
and
the
glo
of
the

LO
on
the
ter
the
bo
the
fac
to
the
gro
on
the
pa
and
wo
and
pra
the
LO
say

the
kir
and
all
the
pe

off
sac
bef
the
LO
[5]Ki
Sol
off
a
sac
of
tw
tw
tho
bul
and
one
hu
and
tw
tho
she
So
the
kin
and
all
the
peo
dec
the
ho
of
Go
[6][a]A
the
pri
att
to
the

ser
the
Lev
als
wit
ins
of
the
mu
of
the
LO
wh
Kin
Da
hac
ma
to
pra
the
LO
say
“Fo
His
me
enc
for
wh
Da
off
pra
by
the
[*]m
[b]Th
pri
sou
tru
op
the

wh
all
I1s
sto

7
[a]So
co
the
mi
of
the
co
tha
wa
in
fro
of
the
ho
of
the
LO
for
the
he
off
bu
off
an
the
fat
of
the
pea
off
bec
the
bro
alt
wh

Sol
had
ma
wa
not
abl
to
rec
the
bur
off
the
gra
off
and
the
fat

8
tha
tim
Sol
kep
the
fea
sev
day
and
all
Isr
wit
him
a
ver
gre
ass
[b]fro
the
ent
of
Ha

to
[c]th
Bro
of
Eg
9Ar
on
the
eig
day
the
hel
a
[a]sa
ass
for
the
obs
the
dec
of
the
alt
sev
day
and
the
fea
sev
day
10[a]
the
two
thi
day
of
the
sev
mo
he

ser
the
peo
aw
to
the
ten
joy
and
gla
of
hea
for
the
goo
tha
the
LO
had
do
for
Da
for
Sol
and
for
His
peo
Isra
[11]T
[a]So
fin
the
ho
of
the
LO
and
the
kin

ho
an
Sol
su
ac
all
tha
ca
int
his
hea
to
ma
in
the
ho
of
the
LO
an
in
his
ow
ho

Sec
Ap
to
Sol

the
LO
[a]ap
to
Sol
by
nig
an
sai
to

hi “I hav hea you pra [b]an hav ch thi [c]pl for My as a ho of sa 13[a] I sh up hea an the is no rai or co the lo to dev the la or ser pe am

My
pe
[14]i
My
pe
wh
are
[a]ca
by
My
na
wi
[b]hu
the
an
pra
an
see
My
fac
an
tu
fro
the
wi
wa
[c]th
I
wi
hea
fro
hea
an
wi
for
the
sin
an
hea
the

lan
15N
[a]M
eye
wil
be
ope
and
My
ear
att
to
pra
ma
in
thi
pla
16F
nor
[a]I
hav
chl
and
*sa
thi
hov
tha
My
nar
ma
be
the
for
and
*M
eye
and
*M
hea
wil

be
the
pe
17[a]
fo
yo
if
yo
wa
be
Me
as
yo
fat
Da
wa
an
do
ac
to
all
tha
I
ha
co
yo
an
if
yo
ke
My
sta
an
My
ju
18t
I
wi
est
the

thr of you kin as I cov wit Da you fat say [a]‘Y sha not fai *to hav* a ma as rul in Isr

1 if you tur aw and for My sta and My con wh I hav set

bef
you
and
go
and
ser
oth
goo
and
wo
the

20a
I
wil
upr
the
fro
My
lan
wh
I
hav
giv
the
and
thi
hou
wh
I
hav
*sa
for
My
nan
I
wil
cas
out
of
My

sig
an
wil
ma
it
a
pro
an
a
[b]by
am
all
pe
2
as
for
[a]th
[*]ho
wh
[*]is
exa
eve
wh
pas
by
it
wil
be
[b]as
an
say
[c]‘W
has
the
LO
do
thu
to
thi
lan

an
thi
ho
[22]T
the
wi
ans
‘Be
the
for
the
LO
Go
of
the
fat
wh
bro
the
ou
of
the
lan
of
Eg
an
em
oth
go
an
wo
the
an
ser
the
the
He
has
bro
all

thi
cal
on
the
”

2
Ch
8

S
Ad
Ac

1
[a]ca
to
pas
at
the
enc
of
[b]tw
yea
wh
Sol
had
bui
the
hou
of
the
LO
and
his
ow
hou
2th
the
citi
wh
[*]Hi

hac
giv
to
Sol
Sol
bu
the
anc
he
set
the
chi
of
Isr
the
[3]Ar
Sol
we
to
Ha
Zol
anc
sei
it.
[4][a]H
als
bu
Tac
in
the
wi
anc
all
the
sto
cit
wh
he
bu
in

[b]Ha
[5]He
bu
Up
Be
Ho
an
[a]Lo
Be
Ho
for
cit
wit
wa
ga
an
ba
[6]al
Ba
an
all
the
sto
cit
tha
Sol
ha
an
all
the
cha
cit
an
the
cit
of
the
cav
an
all

tha
Sol
[a]de
to
bu
in
Jer
in
Leb
and
in
all
the
lan
of
his
do

7
the
peo
wh
we
lef
of
the
Hit
Am
Per
Hiv
and
Jeb
wh
we
no
of
Isr
—
[8]th
is,
the

des wh we lef in the lan aft the wh the chi of Isra did not des — fro the Sol rai for lab as it is to thi day [9]Bu Sol did not ma the chi of Isra *se

for
his
wo
Son
we
me
of
wa
cap
of
his
off
cap
of
his
cha
an
his
cav
10*A*
oth
we
chi
of
the
off
of
Kin
Sol
[a]tw
hu
an
fift
wh
rul
ove
the
pe
1
Sol

[a]br
the
da
of
Ph
up
fro
the
Cit
of
Da
to
the
ho
he
ha
bu
for
her
for
he
sai
“M
wi
sha
no
dw
in
the
ho
of
Da
kin
of
Isr
bec
the
pla
to
wh

the ark of the LO has con are hol

1 Sol off bur off to the LO on the alt of the LO wh he had bur bef the ves 13a to the [a]da rat off acc to the con

of
Mo
for
the
Sal
the
Ne
Mo
an
the
[b]th
ap
yea
[c]fe
—
the
Fea
of
Un
Bre
the
Fea
of
We
an
the
Fea
of
Tal
14A
ac
to
the
[*]or
of
Da
his
fat
he
ap

the [a]di of the pri for the ser [b]th Lev for the du (to pra an ser bef the pri as the du of eac day req an the [c]ga by the div at eac gat for so Da the

ma
of
Go
had
co
15T
dic
no
de
fro
the
co
of
the
kin
to
the
pri
and
Lev
co
any
ma
or
co
the
[a]tr

1
all
the
wo
of
Sol
wa
we
ord
[*]fr
the
day
of

the
fou
of
the
ho
of
the
LO
un
it
wa
fin
So
the
ho
of
the
LO
wa
co

1
Sol
we
to
[a]Ez
Ge
an
*El
on
the
sea
in
the
lan
of
Ed

18[a].
Hi
ser
hi

shi
by
the
han
of
his
ser
and
ser
wh
kno
the
sea
Th
we
wit
the
ser
of
Sol
to
[b]O
and
acc
fou
hun
and
fift
tal
of
gol
fro
the
and
bro
it
to
Kin
Sol

2
Ch
9

T
Qu
of
Sh
Pr
of
Sol

1
[a]wh
the
qu
of
Sh
hea
of
the
fan
of
Sol
she
car
to
Jer
to
tes
Sol
wit
har
que
hav
a
ver
gre
ret
car
tha
bor

spi
gol
in
abu
anc
pre
sto
anc
wh
she
car
to
Sol
she
spo
wit
hir
abo
all
tha
wa
in
her
hea
[2]So
Sol
ans
all
her
que
the
wa
not
so
dif
for
Sol
tha
he
cou

no
exp
it
to
her
[3]Ar
wh
the
que
of
She
had
see
the
wis
of
Sol
the
ho
tha
he
had
bu
[4]th
foo
on
his
tab
the
sea
of
his
ser
the
ser
of
his
wa
and
the

app
his
[a]cu
anc
the
app
anc
his
ent
by
wh
he
we
up
to
the
ho
of
the
LO
the
wa
no
mo
spi
in
her
5
she
sai
to
the
kin
“*It*
wa
a
tru
rep
wh
I

hea
in
my
ow
lan
abo
you
wo
and
you
wis
[6]H
I
did
no
bel
the
wo
unt
I
can
and
saw
wit
my
ow
eye
and
ind
the
hal
of
the
gre
of
you
wis
wa
no
tol

me
Yo
exc
the
fan
of
wh
I
hea
7H
are
you
me
and
hap
are
the
you
ser
wh
sta
con
bef
you
and
hea
you
wis
8Bl
be
the
LO
you
Go
wh
del
in
you
set
you

on
His
thr
to
be
kin
for
the
LO
you
Go
Bec
you
Go
has
[1][a]l
Isr
to
est
the
for
the
He
ma
you
kin
ov
the
to
do
jus
an
rig
9
she
gav
the
kin
on
hu

anc
two
tal
of
gol
spi
in
gre
abu
anc
pre
sto
the
nev
we
any
spi
suc
as
tho
the
que
of
Sh
gav
to
Kin
Sol

1
the
ser
of
Hir
anc
the
ser
of
Sol
[a]wi
bro

gol
fro
Op
bro
*al
wo
an
pre
sto
11A
the
kin
ma
wa
of
the
*al
wo
for
the
ho
of
the
LO
an
for
the
kin
ho
als
har
an
stri
ins
for
sin
an
the
we
no

suc
as
the
see
bef
in
the
lan
of
Juc

1
Kin
Sol
gav
to
the
que
of
She
all
she
des
wh
she
ask
mu
mo
tha
she
hac
bro
to
the
kin
So
she
tur
anc
we
to

her
ow
cou
she
and
her
ser

S
Gr
We

1
we
of
gol
tha
car
to
Sol
yea
wa
six
hu
and
six
six
tal
of
gol
14b
wh
the
tra
me
and
tra
bro
An
all
the
kin

of
Ara
an
gov
of
the
cou
bro
gol
an
silv
to
Sol
[15]*A*
Kin
Sol
ma
two
hu
lar
shi
of
har
gol
six
hu
she
of
har
gol
we
int
eac
shi
[16]*H*
als
ma
thr
hu
shi

of
har
gol
[*]th
hu
she
of
gol
we
int
eac
shi
Th
kin
pu
the
in
the
[a]H
of
the
Fo
of
Le

1
the
kin
ma
a
gre
thr
of
ivo
an
ove
it
wi
pu
gol
18T

thr
had
six
ste
wit
a
foo
of
gol
wh
we
fas
to
the
thr
the
we
*ar
on
eit
sid
of
the
pla
of
the
sea
and
two
lio
sto
bes
the
arn
19T
lio
sto
the
one
on

eac
sid
of
the
six
ste
no
lik
thi
ha
be
ma
for
any
oth
kin

2
Kin
Sol
dri
ves
we
gol
an
all
the
ves
of
the
Ho
of
the
For
of
Leb
we
pu
gol
No
one

wa
silv
for
thi
wa
acc
as
no
in
the
day
of
Sol
21F
the
kin
shi
we
to
[a]Ta
wit
the
ser
of
*Hi
On
eve
thr
yea
the
*m
shi
car
bri
gol
silv
ivo
ap
and
*m

2
Kin
Sol
sur
all
the
kin
of
the
ear
in
ric
and
wis
[23]A
all
the
kin
of
the
ear
sou
the
pre
of
Sol
to
hea
his
wis
wh
Go
had
pu
in
his
hea
[24]E
ma
bro

his
pre
art
of
silv
anc
gol
gar
[a]ar
spi
hoi
anc
mu
at
a
set
rat
yea
by
yea

2
[a]ha
fou
tho
sta
for
hoi
anc
cha
anc
twc
tho
hoi
wh
he
sta
in
the
cha
citi

an
wi
the
kin
at
Jer

2
he
rei
ov
all
the
kin
[b]fr
*th
Riv
to
the
lan
of
the
Ph
as
far
as
the
bo
of
Eg
27[a]
kin
ma
silv
as
co
in
Jer
as
sto
an

he
ma
ce
tre
[b]as
ab
as
the
sy
wh
ar
in
the
lo
28[a]
the
br
ho
to
So
fro
Eg
an
fro
all
la

of
So

the
res
of
the
act
of
So
firs
an
las

are
the
not
wr
in
the
boo
of
Na
the
pro
in
the
pro
of
[b]Al
the
Shi
and
in
the
vis
of
[c]Id
the
see
con
Jer
the
son
of
Ne
30[a]
rei
in
Jer
ove
all
Isr
for

yea
[31]T
Sol
*re
wit
his
fat
anc
wa
bu
in
the
Cit
of
Da
his
fat
An
Rel
his
son
rei
in
his
pla

2
Ch
10

T
Re
Ag
Rel

[1]
[a]Re
we
to
Sh
for
all

Isra
had
gon
to
Sh
to
ma
hin
kin
[2]So
it
hap
wh
Jer
the
son
of
Ne
hea
it
(he
wa
in
Eg
[a]W
he
had
fle
fro
the
pre
of
Kin
Sol
tha
Jer
ret
fro
Eg
[3]Th

the
ser
for
hir
anc
cal
hir
An
Jer
anc
all
Isra
car
anc
spo
to
Rel
say
[4]“Y
fat
ma
our
yol
hea
nov
the
ligl
the
bur
ser
of
you
fat
anc
his
hea
yol
wh
he
pu

on
us,
anc
we
wil
ser
you

5
he
sai
to
the
“C
bac
to
me
aft
thr
day
An
the
pec
dej

6
Kin
Rel
con
the
eld
wh
sto
bef
his
fat
Sol
wh
he
stil
live
say

“H
do
yo
adv
me
to
ans
the
pe

7
the
spo
to
hin
say
“If
yo
are
kin
to
the
pe
an
ple
the
an
spe
go
wo
to
the
the
wi
be
yo
ser
for

8
he
rej

the
adv
wh
the
eld
ha
giv
hi
an
co
the
yo
me
wh
ha
gro
up
wi
hi
wh
sto
be
hi
[9]A
he
sai
to
the
“W
adv
do
yo
giv
Ho
sho
we
ans
thi
pe
wh

hav
spo
to
me
say
‘Lig
the
yol
wh
you
fat
pu
on
us’

1
the
you
me
wh
had
gro
up
wi
hir
spo
to
hir
say
“Tl
you
sho
spe
to
the
peo
wh
hav
spo
to
you

say
'Yo
fat
ma
ou
yol
hea
bu
yo
ma
it
lig
on
us'
thu
yo
sha
say
to
the
'M
litt
fin
sha
be
thi
tha
my
fat
wa
11A
no
wh
my
fat
pu
a
hea
yol
on

yo
I
wil
ad
to
yo
yo
my
fat
ch
yo
wit
wh
bu
I
wil
ch
yo
wit
*sc
”

1
[a]Je
an
all
the
pe
ca
to
Re
on
the
thi
da
as
the
kin
ha
dir
sa
“C
ba
to
me
the
thi
da
[13]T
the

kin
ans
the
rou
Kin
Rel
rej
the
adv
of
the
eld
[14]a
he
spo
to
the
acc
to
the
adv
of
the
you
me
say
*“M
fat
ma
you
yol
hea
bu
I
wi
ad
to
it;
my
fat

cha
you
wit
wh
bu
I
wil
cha
you
wit
[*]sc
15S
the
kin
dic
no
list
to
the
peo
[a]fo
the
tur
of
eve
wa
fro
Go
tha
the
LO
mi
ful
His
[b]w
wh
He
hac
spo
by

the
ha
of
Ah
the
Sh
to
Je
the
so
of
Ne

1
wh
all
Isr
sa
tha
the
ki
di
no
lis
to
the
the
pe
an
the
ki
say

S
all
Isr
dep
to
the
ter
17B
Rel
rei
ov
the
chi
of

Isr wh dw in the cit of Ju

1 Kin Re ser Ha wh *wa* in cha of rev bu the chi of Isr sto hin wi sto an he die Th Kin Re mo *his* cha in ha to

fle
to
Jer
19[a]
Isr
has
bee
in
reb
aga
the
ho
of
Da
to
thi
day

2
Ch
11

1
[a]W
Re
ca
to
Jer
he
ass
fro
the
ho
of
Ju
an
Be
on
hu
an
eig

tho
che
me
wh
we
wa
to
fig
aga
Isra
tha
he
mi
res
the
kin
to
Rel

2
the
wo
of
the
LO
can
[a]to
She
the
ma
of
Go
say
3“S
to
Rel
the
son
of
Sol
kin
of
Jud
and
to
all
Isr
in
Jud
and
Ben
say
4‘T
say
the
LO
“Yo
sha
not

go
up
or
fig
aga
you
bre
Let
eve
ma
ret
to
his
ho
for
thi
thi
is
fro
Me
’
”

Th
the
obe
the
wo
of
the
LO
and
tur
bac
fro
att
Jer

I
For
the
Cit

5
Rel
dw
in
Jer
and
bu
cit
for
def
in
Ju
[6]Ar
he
bu
Bet
Eta
Tel
[7]Be
Zu
Soc
Ad
[8]Ga
Ma
Zip
[9]Ad
Lac
Az
[10]Z
Aij
and
He
wh
are
in
Ju
and
Be
for
cit

[11]A
he
for
the
str
an
pu
ca
in
the
an
sto
of
foo
oil
an
wi
[12]A
in
eve
cit
he
pu
shi
an
spe
an
ma
the
ver
str
ha
Ju
an
Be
on
his
sid

I
and
Lev
Mo
to
Jud

1
fro
all
the
ter
the
pri
and
the
Lev
wh
we
in
all
Isr
too

the
sta
wi
hir
14F
the
Lev
lef
[a]th
co
lan
and
the
pos
and
can
to
Jud
and
Jer
for
[b]Je
and
his
son
had
rej
the
fro
ser
as
pri
to
the
LO
15[a]
he
app
for
hir

pri
for
the
*hi
pla
for
[b]th
de
an
[c]th
cal
ido
wh
he
ha
ma
16[a]
*af
the
Lev
left
tho
fro
all
the
tril
of
Isr
suc
as
set
the
hea
to
see
the
LO
Go
of
Isr

[b]ca
to
Je
to
sa
to
th
LO
Go
of
th
fat
17S
th
[a]st
th
ki
of
Ju
an
ma
Re
th
so
of
So
str
for
th
ye
be
th
wa
in
th
wa
of
Da
an
So

for
thr
yea

T
Fa
of
Re

1
Re
too
for
hi
as
wi
Ma
the
da
of
Jer
the
so
of
Da
an
of
Ab
the
da
of
[a]El
the
so
of
Jes
19A
she
bo
hi
chi
Jeu

Sha
and
Zal
20A
her
he
too
[a]M
the
*gr
of
[b]Al
and
she
bor
him
[c]Al
Att
Ziz
and
She
21N
Rel
low
Ma
the
gra
of
Ab
mo
tha
all
his
[a]w
and
his
cor
for
he
too

eig
wi
an
six
co
an
beg
tw
eig
so
an
six
da
22A
Re
[a]ap
[b]A
the
so
of
Ma
as
chi
to
be
lea
am
his
br
for
he
int
to
ma
hi
ki
23H
de
wi
an

*di
sor
of
his
sor
thr
all
the
ter
of
Juc
anc
Ber
to
eve
[a]fo
city
anc
he
gav
the
pro
in
abu
He
als
sou
ma
wit
for
the

2
Ch
12

I
Att
Juc

1
[a]it

car
to
pas
wh
Rel
had
est
the
kin
and
had
str
hin
tha
[b]he
for
the
law
of
the
LO
and
all
Isr
alo
wit
hin
2[a]A
it
hap
in
the
fift
yea
of
Kin
Rel
tha
Shi
kin

of
Eg
ca
up
ag
Je
be
th
ha
tra
ag
th
LO
3 w
tw
hu
ch
six
th
ho
an
pe
wi
nu
wh
ca
wi
hi
ou
of
Eg

---

[a] th
Lu
an
th
Su
an
th
Et

[4]Ar
he
toc
the
for
citi
of
Juc
anc
car
to
Jer
[5]
[a]Sh
the
pro
car
to
Rel
anc
the
lea
of
Juc
wh
we
gat
tog
in
Jer
bec
of
Shi
anc
sai
to
the
“Tl
say
the

LO
‘Yo
hav
for
Me
and
the
I
als
hav
lef
you
in
the
han
of
Shi
”

6
the
lea
of
Isr
and
the
kin
[a]hu
the
and
the
sai
[b]“T
LO
is
rig

7
wh
the
LO
sav

tha
the
hu
the
[a]th
wo
of
the
LO
ca
to
Sh
say
“T
hav
hu
the
the
I
wi
no
des
the
bu
I
wi
gra
the
so
del
My
wr
sha
no
be
po
ou
on
Jer
by

the
han
of
Shi
8No
[a]th
wi
be
his
ser
tha
the
ma
dis
[b]M
ser
fro
the
ser
of
the
kin
of
the
nat
9
Shi
kin
of
Eg
car
up
aga
Jer
and
too
aw
the
tre
of

the
ho
of
the
LO
an
the
tre
of
the
kin
ho
he
too
eve
He
als
car
aw
the
gol
shi
wh
Sol
ha
[b]m
10T
Kin
Rel
ma
bro
shi
in
the
pla
an
cor
the
[a]to
the

han
of
the
cap
of
the
gua
wh
gua
the
doo
of
the
kin
hou
[11]A
wh
the
kin
ent
the
hou
of
the
LO
the
gua
wo
go
and
bri
the
out
the
the
wo
tak
the
bac
int

the
gu
[12]W
he
hu
hi
the
wr
of
the
LO
tu
fro
hi
so
as
no
to
de
hi
co
an
thi
als
we
we
in
Ju

T

En
of
Re
Re

1

Ki
Re
str
hi
in
Je

an
rei
No
[a]Re
wa
for
on
yea
ol
wh
he
be
kin
an
he
rei
sev
yea
in
Jer
[b]th
cit
wh
the
LO
ha
ch
ou
of
all
the
tri
of
Isr
to
pu
His
na
the
His

mo
nar
wa
Na
an
[c]Ar
14A
he
did
evi
bec
he
did
not
pre
his
hea
to
see
the
LO

1
act
of
Rel
firs
and
las
are
the
not
wr
in
the
boo
of
Sh
the
pro
[a]ar

of
Ido
the
see
cor
ger
[b]Ar
the
wer
wa
bet
Rel
anc
Jer
all
the
day
16S
Rel
*re
wit
his
fat
anc
wa
bur
in
the
Cit
of
Da
Th
[a]Al
his
sor
rei
in
his
pla

2
Ch
13

A
Re
in
Juc

1
[a]th
eig
yea
of
Kin
Jer
Ab
bec
kin
ove
[b]Ju
2He
rei
thr
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
[*]M
the
dat
of
Ur
of
Gil

A
the
wa
wa

bet
Ab
anc
Jer
[3]Ab
set
the
bat
in
orc
wit
an
arr
of
val
wa
fou
hur
tho
che
me
Jer
als
dre
up
in
bat
for
aga
hir
wit
eig
hur
tho
che
me
mi
me
of
val

4
Ab
sto
on
Mo
[a]Ze
1w
is
in
the
mo
of
Ep
and
sai
“H
me
Jer
and
all
Isr
5Sh
you
no
kn
tha
the
LO
Go
of
Isr
[a]ga
the
do
ove
Isr
to
Da
for
to

hir
anc
his
sor
[b]by
a
cov
of
sal
[6]Ye
Jer
the
sor
of
Ne
the
ser
of
Sol
the
sor
of
Da
ros
up
anc
[a]re
aga
his
lor
[7]Tl
[a]wo
rog
gat
to
hir
anc
stre
the
aga

Rel
the
son
of
Sol
wh
Rel
wa
[b]yo
and
ine
and
cou
not
wit
the
8An
not
you
thi
to
wit
the
kin
of
the
LO
wh
is
in
the
han
of
the
son
of
Da
and
you
are

a
gre
mu
anc
wi
you
are
the
gol
cal
wh
Jer
[a]m
for
you
as
goc
9[a]H
you
not
cas
out
the
pri
of
the
LO
the
sor
of
Aa
anc
the
Lev
anc
ma
for
you
pri
like

the
pe
of
oth
lar
[b]so
tha
wh
co
to
co
hir
wi
a
yo
bu
an
sev
ra
ma
be
a
pri
of
[c]*th*
tha
are
no
go
10B
as
for
us,
the
LO
is
ou
[a]G
an
we

hav
not
for
Hir
and
the
pri
wh
mi
to
the
LO
are
the
sor
of
Aa
and
the
Lev
att
to
the
du
11[a]
the
bu
to
the
LO
eve
mo
and
eve
eve
bu
sac
and
sw
inc

the
als
set
the
[b]sh
in
ord
on
the
pu
gol
tab
and
the
lam
of
gol
wit
its
lam
[c]to
bu
eve
eve
for
we
kee
the
com
of
the
LO
ou
Go
bu
you
hav
for
Hi
12N

loo
Go
Hi
is
wi
us
as
ou
[a]he
[b]an
His
pri
wi
sou
tru
to
sou
the
ala
aga
you
O
chi
of
Isra
do
no
fig
aga
the
LO
Go
of
you
fat
for
you
sha
no
pro

1
Jer
cau
an
am
to
go
arc
bel
the
so
the
we
in
fro
of
Juc
anc
the
am
wa
bel
the
114
wh
Juc
loc
arc
to
the
sur
the
bat
lin
wa
at
bot
fro
anc
rea

and
the
[a]cr
out
to
the
LO
and
the
pri
sou
the
tru
15T
the
me
of
Jud
gav
a
sho
and
as
the
me
of
Jud
sho
it
hap
tha
Go
[a]str
Jer
and
all
Isr
bef
Ab
and

Juc
16A
the
chi
of
Isr
flec
bef
Juc
anc
Go
del
the
int
the
har
17T
Ab
anc
his
pec
str
the
wit
a
gre
sla
so
fiv
hu
tho
che
me
of
Isr
fell
sla
18T
the
chi

of
Isr
we
sul
at
tha
tim
an
the
chi
of
Ju
pre
[a]be
the
rel
on
the
LO
Go
of
the
fat

1
Ab
pu
Jer
an
too
cit
fro
hir
Be
wit
its
vil
Jes
wit
its
vil

an
[a]Ep
wi
its
vil
20S
Je
di
no
re
str
ag
in
th
da
of
Ab
an
th
LO
[a]st
hi
an
[b]he
die
2
Ab
gr
mi
ma
fou
wi
an
beg
tw
tw
so
an
six
da

22N
the
res
of
the
act
of
Ab
his
wa
an
his
say
are
wr
in
[a]th
*ar
of
the
pro
Ido

2
Ch
14

1
Ab
res
wi
his
fat
an
the
bu
hir
in
the
Cit
of

Da
Th
[a]As
his
son
rei
in
his
pla
In
his
day
the
lan
wa
qui
for
ten
yea

A
Re
in
Jud

2
did
wh
wa
goo
and
rig
in
the
eye
of
the
LO
his
Go
3fo
he

rer
the
alt
of
the
for
goo
and
[a]th
[*]hi
pla
and
[b]br
do
the
sac
pil
[c]an
cut
do
the
wo
im
4 H
cor
Jud
to
[a]se
the
LO
Go
of
the
fat
and
to
obs
the
law
and

the
co
[5] H
als
re
the
*hi
pla
an
the
in
alt
fro
all
the
cit
of
Ju
an
the
ki
wa
qu
un
hi
[6] A
he
bu
fo
cit
in
Ju
fo
the
la
ha
res
he
ha
no

wa
in
tho
yea
bee
the
LO
had
giv
hin
[a]re
[7]Th
he
sai
to
Jud
“Le
us
bu
the
citi
and
ma
wa
aro
the
and
tow
gat
and
bar
wh
the
lan
is
yet
bef
us,
bee
we

hav
sou
the
LO
ou
Go
we
hav
sou
Hi
an
He
ha
giv
us
res
on
eve
sid
So
the
bu
an
pro
[8]A
As
ha
an
ar
of
thr
hu
tho
fro
Ju
wh
ca
*sh
an
spe

an
fro
Be
tw
hu
an
eig
tho
me
wh
ca
shi
an
dre
[a]bo
all
the
we
mi
me
of
[b]va

Ze
the
Eth
ca
ou
aga
the
wi
an
arr
of
a
mi
me
an
thr
hu

cha
anc
he
car
to
[b]M
10S
Asa
we
out
aga
hin
anc
the
set
the
tro
in
bat
arr
in
the
Va
of
Zep
at
Ma
11A
Asa
[a]cr
out
to
the
LO
his
Go
anc
sai
“LC
it

is
[b]no
for
Yo
to
hel
wh
wi
ma
or
wi
tho
wh
hav
no
po
hel
us,
O
LO
ou
Go
for
we
res
on
Yo
an
[c]in
Yo
na
we
go
aga
thi
mu
O
LO
Yo
are

ou
Go
do
no
let
ma
pre
aga
Yo
1
the
LO
[a]st
the
Eth
bef
Asa
and
Jud
and
the
Eth
fle
13A
Asa
and
the
peo
wh
we
wi
hin
pu
the
to
[a]Ge
So
the
Eth
we

ove
and
the
cou
not
rec
for
the
we
bro
bef
the
LO
and
His
arn
An
the
car
aw
ver
mu
*sp
14T
the
def
all
the
citi
arc
Ge
for
[a]th
fea
of
the
LO
car
upo
the

an
the
plu
all
the
cit
for
the
wa
exc
mu
*sp
in
the
[15]T
als
*at
the
liv
enc
an
car
off
she
an
car
in
abu
an
ret
to
Jer

2
Ch
15

*Rej
of
As*

1
[a]th
Spi
of
Go
ca
up
Az
the
so
of
Od
[2]A
he
we
ou
*to
me
As
an
sai
to
hi
“H
me
As
an
all
Ju
an
Be
[a]Th
LO
is
wi
yo
wh
yo
are
wi

Hi
[b]If
yo
see
Hi
He
wil
be
fou
by
yo
bu
if
[c]yo
for
Hi
He
wil
for
yo
3[a]F
a
lon
tim
Isr
has
bee
wit
the
tru
Go
wit
a
[b]te
pri
an
wit
[c]la
4bu
[a]wi

in the tro the tur to the LO Go of Isr and sou Hir He wa fou by the [5]Ar in tho tim *the wa* no pea to the one wh we out nor to the one wh car in,

bu
gre
tur
wa
on
all
the
inh
of
the
lar
6[a]*S*
nat
wa
*de
by
nat
anc
cit
by
cit
for
Go
tro
the
wi
eve
adv
7Bu
you
be
str
anc
do
no
let
you
ha
be
we

for
you
wo
sha
be
rew
8
wh
Asa
hea
the
wo
an
the
pro
of
*Oc
the
pro
he
too
cou
an
ren
the
abo
ido
fro
all
the
lan
of
Ju
an
Be
an
fro
the
citi
[a]wh

he
had
tak
in
the
mo
of
Ep
and
he
res
the
alt
of
the
LO
tha
wa
bef
the
ves
of
the
LO
9Th
he
gat
all
Jud
and
Be
and
[a]th
wh
dw
wit
the
fro
Ep
Ma

anc
Sin
for
the
car
ove
t1c
hin
in
gre
nu
fro
Isr
wh
the
sav
tha
the
LO
his
Go
wa
wi
hin
1
the
gat
tog
at
Jer
in
the
thi
mo
in
the
fift
yea
of
the

rei
of
Asa
11[a]
the
off
to
the
LO
*at
tha
tim
sev
hu
bu
an
sev
tho
she
fro
the
*sp
the
ha
bro
12T
the
[a]en
int
a
cov
to
see
the
LO
Go
of
the
fat
wi

all
the
hea
and
wi
all
the
sou
13[a]
wh
wo
no
see
the
LO
Go
of
Isr
[b]w
to
be
pu
to
dea
wh
sm
or
gre
wh
ma
or
wo
14T
the
too
an
oa
bef
the
LO

wi
a
lou
voi
wi
sho
and
tru
and
ran
hor
15A
all
Jud
rej
at
the
oat
for
the
had
sw
wi
all
the
hea
and
[a]so
Hin
wi
all
the
sou
and
He
wa
fou
by
the
and

the
LO
gav
the
[b]re
all
arc

1
he
rer
[a]M

the
*m
of
Asa
the
kin
fro
bei
que
mo
bec
she
had
ma
an
obs
im
of
*As
and
Asa
cut
dov
her
obs
im
the
cru
and
bur
it
by
the
Bro
Kid
17B
[a]th
*hi
pla
we

no
re
fro
Isr
Ne
the
hea
of
Asa
wa
loy
all
his
day
1
als
bro
int
the
ho
of
Go
the
thi
tha
his
fat
ha
de
an
tha
he
hi
ha
de
sil
an
gol
an
ute

[19]A
the
wa
no
wa
unt
the
thi
fift
yea
of
the
rei
of
Asa

2
Ch
16

A
Tre
wit
Syr

1
the
thi
six
yea
of
the
rei
of
Asa
[a]Ba
kir
of
Isra
car
up
aga
Juc
anc
bui
Ra
[b]th
he
mi
let
nor
go
out
or
cor
in
to

Asa kin of Jud 2Th Asa bro silv and gol fro the tre of the hou of the LO and of the kin hou and sen to Ben Ha kin of Syr wh dw in Da say 3âc the be

a
tre
bet
you
and
me
as
the
wa
bet
my
fat
and
you
fat
See
I
hav
sen
you
silv
and
gol
con
bre
you
tre
wit
Baa
kin
of
Isra
so
tha
he
wil
wit
fro
me
p >

4
Be
Ha
hec
Kin
Asa
and
ser
the
cap
of
his
arm
aga
the
citi
of
Isra
Th
att
Ijo
Da
Ab
Ma
and
all
the
sto
citi
of
Na
[5]No
it
hap
wh
Ba
hea
it,
tha
he

sto
bu
Ra
an
cea
his
wo
[6]Th
Kin
Asa
too
all
Ju
an
the
car
aw
the
sto
an
tim
of
Ra
wh
Baa
ha
use
for
bu
an
wit
the
he
bu
Ge
an
Mi

Me
to

As

7
at
tha
tim
[a]Ha
the
see
can
to
Asa
kin
of
Jud
and
sai
to
him
[b]“E
you
hav
rel
on
the
kin
of
Syr
and
hav
not
rel
on
the
LO
you
Go
the
the
arm
of

the
kin
of
Syr
has
esc
fro
you
han
8W
[a]th
Eth
and
[b]th
Lul
not
a
hu
arr
wit
ver
ma
cha
and
hor
Yet
bec
you
rel
on
the
LO
He
del
the
int
you
[c]ha
9[a]F
the

eye
of
the
LO
rur
to
and
fro
thr
the
wh
ear
to
sho
Hir
str
on
bel
of
tho
wh
hea
is
loy
to
Hir
In
thi
[b]yo
hav
dor
foo
the
fro
nor
on
[c]yo
sha
hav
wa

10T
Asa
wa
ang
wit
the
see
and
[a]pu
hir
in
pri
for
he
wa
enr
at
hir
bec
of
thi
An
Asa
op
sor
of
the
pec
at
tha
tim

I
and
Dea
of
Asa

1
tha
the
act

of
Asa
firs
an
las
are
in
wr
in
the
bo
of
the
ki
of
Ju
an
Isra
[12]A
in
the
thi
ni
yea
of
his
rei
Asa
be
dis
in
his
fee
an
his
ma
wa
sev
yet
in

his
dis
he
[a]di
no
see
the
LO
bu
the
ph
1
Asa
*re
wi
his
fat
he
die
in
the
for
firs
yea
of
his
rei
14T
bu
hin
in
his
ow
ton
wh
he
had
*m
for
hin

in the Cit of Da an the lai hir in the bec wh wa fill [a]w spi anc var ing pre in a mi of oir Th ma [b]a ver gre bu for hir

2 Ch 17

J Ret

in Juc

1

[a]Je his sor rei in his pla anc stre hin aga Isr [2]Ar he pla tro in all the for citi of Juc anc set gar in the lan of [a]Ju anc in the citi of Epl

[b]w
As
his
fat
ha
tak
[3]N
the
LO
wa
wit
Je
be
he
wa
in
the
for
wa
of
his
fat
Da
he
di
no
see
the
Ba
[4]bu
sou
*th
Go
of
his
fat
an
wa
in
His

cor
an
no
acc
to
[a]th
act
of
Isra
[5]Th
the
LO
est
the
kin
in
his
han
an
all
Ju
[a]ga
pre
to
Jeh
[b]an
he
ha
ric
an
ho
in
abu
[6]An
his
hea
too
del
in
the

wa
of
the
LO
mo
[a]he
re
the
*hi
pla
an
wo
im
fro
Ju

7
in
the
thi
yea
of
his
rei
he
se
his
lea
Be
Ha
Ob
Ze
Ne
an
Mi
[a]to
tea
in
the
cit
of

Juc
[8]An
wit
the
he
sen
Lev
Sho
Ne
Zel
Asa
Sho
Jeh
Ad
Tol
anc
Tol
—
the
Lev
anc
wit
the
Eli
anc
Jeh
the
pri
[9][a]S
the
tau
in
Juc
anc
had
the
Bo
of
the
Lav

of
the
LO
wi
the
the
we
thr
all
the
citi
of
Jud
and
tau
the
peo

1
[a]th
fea
of
the
LO
fell
on
all
the
kin
of
the
lan
tha
wer
aro
Jud
so
tha
the
did
not

ma
wa
aga
Jeh
[11]A
son
of
the
Ph
[a]br
Jeh
pre
and
silv
as
trib
and
the
Ara
bro
him
flo
sev
tho
sev
hun
ram
and
sev
tho
sev
hun
ma
goa

1
Jeh
bec
inc
pow
and

he
bu
for
an
sto
cit
in
Ju
[13]H
ha
mu
pro
in
the
cit
of
Ju
an
the
me
of
wa
mi
me
of
val
we
in
Je
[14]T
are
the
nu
acc
to
the
fat
ho
Of
Ju

the
cap
of
tho
Ad
the
cap
an
wi
hi
thr
hu
tho
mi
me
of
val
[15] a
ne
to
hi
wa
Je
the
cap
an
wi
hi
tw
hu
an
eig
tho
[16] a
ne
to
hi
wa
Am
the

sor
of
Zic
[a]w
wi
off
hir
to
the
LO
and
wi
hir
tw
hu
tho
mi
me
of
va
17C
Be
Eli
a
mi
ma
of
va
and
wi
hir
tw
hu
tho
me
arr
wi
bo
and
shi

[18]a
nex
to
hir
wa
Jel
anc
wi
hir
one
hu
anc
eig
tho
pre
for
wa
[19]T
ser
the
kir
bes
[a]th
the
kir
pu
in
the
for
citi
thr
all
Juc

2
Ch
18

I
Wo
Ah

1

[a]ha
ric
an
ho
in
ab
an
by
ma
he
[b]al
hi
wi
[c]Al
2[a]A
so
ye
he
we
do
to
vis
Ah
in
Sa
an
Ah
kil
sh
an
ox
in
ab
fo
hi
an
th
pe
wh
we

wi
hir
anc
per
hir
to
go
up
wit
hin
to
Ra
Gil
[3]So
Ah
kir
of
Isra
sai
to
Jeh
kir
of
Juc
“W
you
go
wi
me
aga
Ra
Gil

A
he
ans
hir
“I
am
as
you

are
anc
my
pec
as
you
pec
we
wil
be
wit
you
in
the
wa
4
Jeh
sai
to
the
kin
of
Isra
[a]“P
ing
for
the
wo
of
the
LO
too
5
the
kin
of
Isra
gat
the
pro

tog
fou
hu
me
an
sai
to
the
“Sl
we
go
to
wa
aga
Ra
Gil
or
sha
I
ref

S
the
sai
“G
up
for
Go
wi
del
it
int
the
kin
ha

6
Jeh
sai
“*Is*
the
no

stil
a
pro
of
the
LO
her
tha
we
ma
ing
of
[a]Hi

7
the
kin
of
Isr
sai
to
Jel
“*Th*
is
stil
one
ma
by
wh
we
ma
inc
of
the
LO
bu
I
hat
hin
bec
he

ne
pro
go
co
me
bu
alw
evi
He
is
Mi
the
so
of
Im

A
Jel
sai
“Le
no
the
kin
say
suc
thi

8
the
kin
of
Isr
cal
on
of
his
off
an
sai
“B
Mi
the

so
of
Im
qu

kin
of
Isr
an
Jeh
kin
of
Ju
clo
in
the
rob
sat
eac
on
his
thr
an
the
sat
at
a
thr
flo
at
the
ent
of
the
gat
of
Sa
an
all
the

pro
pro
bef
the
10N
Zed
the
son
of
Ch
had
ma
[a]ho
of
iro
for
hin
and
he
sai
“Th
say
the
LO
‘W
the
you
sha
gor
the
Syr
unt
the
are
des
”

1
all
the
pro

pro
so,
say
“G
up
to
Ra
Gil
an
pro
for
the
LO
wi
del
it
int
the
kir
har

1
the
me
wh
ha
gor
to
cal
Mi
spo
to
hir
say
“N
list
the
wo
of
the
pro

wi
on
acc
en
the
kin
Th
ple
let
yo
wo
be
lik
the
wo
of
on
of
the
an
spe
en

1

Mi
sai
“*A*
the
LO
liv
[a]wh
my
Go
say
tha
I
wil
spe

1

he
can

to
the
kin
and
the
kin
sai
to
hin
“M
sha
we
go
to
wa
aga
Ra
Gil
or
sha
I
ref

A
he
sai
“G
and
pro
and
the
sha
be
del
int
you
han

1
the
kin
sai

to
hin
“H
ma
tim
sha
I
ma
you
sw
tha
you
tel
me
no
bu
the
tru
in
the
nai
of
the
LO

1
he
sai
“I
sav
all
Isr
[a]sc
on
the
mo
as
she
tha
hav
no

[b]sh
An
the
LO
sai
‘Th
hav
no
ma
Let
eac
ret
to
his
hou
in
pea
”

1
the
kin
of
Isra
sai
to
Jeh
“D
I
not
tell
you
he
wo
not
pro
goo
con
me
but
evi

1
Mi
sai
“Tl
hea
the
wo
of
the
LO
I
sav
the
LO
sitt
on
His
[a]th
anc
all
the
hos
of
hea
sta
on
His
rig
har
anc
His
lef
[19]A
the
LO
sai
‘W
wil
per
Ah

kin
of
Isra
to
go
up,
tha
he
ma
fal
at
Ra
Gil
So
on
spo
in
thi
m1
an
an
spo
in
tha
ma
20T
a
[a]sp
ca
fo
an
sto
bef
the
LO
an
sai
‘I
wi
pe

hi
Th
LO
sai
to
hi
‘In
wh
wa
[21]S
he
sai
‘I
wi
go
ou
an
be
a
lyi
spi
in
the
mo
of
all
his
pro
An
the
LO
sai
‘Yo
sha
per
hi
an
als
pre
go

ou
an
do
so.
22T
loo
[a]Th
LO
ha
pu
a
lyi
spi
in
the
mo
of
the
pro
of
yo
an
the
LO
ha
de
dis
aga
yo
2
Ze
the
so
of
Ch
we
nea
an
[a]st
Mi

on
the
che
and
sai
“W
wa
did
the
spi
fro
the
LO
go
fro
me
to
spe
to
you
2
Mi
sai
“In
you
sha
see
on
tha
day
wh
you
go
int
an
inn
cha
to
hid
2

the
kin
of
Isra
sai
“Ta
Mi
and
ret
hin
to
Am
the
gov
of
the
city
and
to
Joa
the
kin
son
[26]a
say
‘Th
say
the
kin
[a]“P
thi
fell
in
pri
and
fee
hin
wit
bre
of

aff
and
wa
of
aff
un
I
ret
in
pea
’
”

2
Mi
sai
“If
you
eve
ret
in
pea
the
LO
has
not
spo
by
[a]m
An
he
sai
“Ta
hee
all
you
peo

A
Die
in
Ba

2
the
kin
of
Isr
and
Jeh
the
kin
of
Ju
we
up
to
Ra
Gil
29A
the
kin
of
Isr
sai
to
Jeh
“I
wil
[a]di
my
and
go
int
bat
bu
you
pu
on
you
rob
So
the

kin
of
Isr
dis
hin
and
the
we
int
bat

3
the
kin
of
Syr
had
con
the
cap
of
the
cha
wh
we
wit
hin
say
“Fi
wit
no
one
sm
or
gre
but
onl
wit
the
kin
of

Isr
3
it
wa
wh
the
cap
of
the
cha
sav
Jeh
tha
the
sai
“It
is
the
kin
of
Isr
Th
the
sur
hin
to
att
bu
Jeh
[a]cr
ou
an
the
LO
hel
hin
an
Go
div
the

fro hir [32]F so it wa wh the cap of the cha sav tha it wa no the kir of Isr tha the tur bac fro pu hir [33]N a cer ma dre a bo at rar anc str the

kin
of
Isra
bet
the
*jo
of
his
arn
So
he
sai
to
the
dri
of
his
cha
“Tu
arc
anc
tak
me
ou
of
the
bat
for
I
am
wo
[34]T
bat
inc
tha
day
anc
the
kin
of

Isr
pro
hin
up
in
his
cha
fac
the
Syr
unt
eve
and
abo
the
tim
of
sur
he
die

2
Ch
19

[1]
Jeh
the
kin
of
Jud
ret
saf
to
his
hou
in
Jer
[2]Ar
Jeh
the
son

of
Ha
[a]th
see
we
ou
to
me
hi
an
sai
to
Ki
Jeh
“Sh
you
hel
the
wi
an
[b]lo
tho
wh
hat
the
LO
Th
the
[c]w
of
the
LO
is
up
you
3N
[a]g
thi
are
fou

in
yo
in
tha
yo
ha
ren
the
[*]we
im
fro
the
lan
an
ha
[b]pr
yo
hea
to
see
Go

7

Ref
of
Jeh

4

Jeh
dw
at
Jer
an
he
we
ou
aga
am
the
pe
fro
Be

to
the
mo
of
Ep
an
bro
the
ba
to
the
LO
Go
of
the
[a]fa
[5]Th
he
se
[a]ju
in
the
lan
thr
all
the
for
cit
of
Ju
cit
by
cit
[6]an
sai
to
the
ju
“Ta
he

to
wh
you
are
do
for
[a]yo
do
no
jud
for
ma
but
for
the
LO
[b]w
is
wit
you
[*]in
the
jud
7N
the
let
the
fea
of
the
LO
be
up
you
tak
car
and
do
it,
for

[a]*th*
is
no
ini
wi
the
LO
ou
Go
no
[b]pa
no
tak
of
bri
8
in
Jer
for
the
juc
of
the
LO
anc
for
cor
Jel
[a]ap
sor
of
the
Lev
anc
pri
anc
sor
of
the
chi

fat of Isr *wh the ret to Jer 9Ar he con the say “Th you sha act [a]in the fea of the LO fai and wi a loy hea 10[a] cas con to you fro you bre wh dw in

the
cit
wh
of
blo
or
off
aga
law
or
cor
aga
sta
or
orc
you
sha
wa
the
les
the
tre
aga
the
LO
and
[b]w
cor
upo
[c]yo
and
you
bre
Do
thi
and
you
wi
not
be

gu
11A
tak
no
[a]Ar
the
chi
pri
is
ov
you
[b]in
all
ma
of
the
LO
an
Ze
the
so
of
Ish
the
rul
of
the
ho
of
Ju
for
all
the
kin
ma
als
the
Le
wil
be

off
bef
you
Bel
cou
and
the
LO
wi
be
[c]wi
the
goo

2
Ch
20

A
Mo
and
Mo
Sei
Dej

1
hap
aft
thi
tha
the
peo
of
[a]M
wi
the
peo
of
[b]Ar
and
oth
wi
the

bes
the
[c]An
car
to
bat
aga
Jel
2Th
sor
car
anc
tol
Jel
say
“A
gre
mu
is
cor
aga
you
fro
bey
the
sea
fro
[*]Sy
anc
the
are
[a]in
Ha
Ta
(w
is
[b]En
Ge
3An
Jel

fea
an
set
[*]hi
to
[a]se
the
LO
an
[b]pr
a
fas
thr
all
Ju
4So
Ju
ga
tog
to
ask
[a]*he*
fro
the
LO
an
fro
all
the
cit
of
Ju
the
ca
to
see
the
LO
5
Jeh

sto
in
the
ass
of
Ju
an
Je
in
the
ho
of
the
LO
be
the
ne
co
6an
sai
“O
LO
Go
of
ou
fat
are
Yo
no
[a]G
in
he
an
[b]d
Yo
no
rul
ov
all
the

kin
of
the
nat
and
[c]in
Yo
han
is
the
not
po
and
mi
so
tha
no
on
is
abl
to
wi
Yo
7*A*
Yo
no
[a]ou
Go
wh
[b]dr
ou
the
inh
of
thi
lan
bef
Yo
pe
Isr

anc gav it to the des of Ab [c]Yo frie for [8]An the dw in it, anc hav bui Yo a san in it for Yo nar say [9][a]‘I dis cor upo us — sw juc pes or fan —

we
wi
sta
bef
thi
ten
anc
in
Yo
pre
(fo
Yo
[b]na
is
in
thi
ten
anc
cry
ou
to
Yo
in
ou
aff
anc
Yo
wi
hea
anc
sav
10A
no
her
are
the
pec
of
Am
Mc

an
Mo
Sei
—
wh
Yo
[a]w
no
let
Isr
inv
wh
the
ca
ou
of
the
lan
of
Eg
bu
[b]th
tu
fro
the
an
di
no
de
the
—
[11]h
the
are
rew
us
[a]by
co
to
thr

us
ou
of
Yo
po
wh
Yo
ha
giv
us
to
inh
[12]O
ou
Go
wi
Yo
no
[a]ju
the
Fo
we
ha
no
po
aga
thi
gre
mu
tha
is
co
aga
us;
no
do
we
kn
wh
to

do
bu
[b]ou
ey
ar
up
Yo
1
all
Ju
wi
th
litt
on
th
wi
an
th
chi
sto
be
th
LO
1
[a]th
Sp
of
th
LO
ca
up
Ja
th
so
of
Ze
th
so
of
Be

the
sor
of
Jei
the
sor
of
Ma
a
Lev
of
the
sor
of
Asa
in
the
mi
of
the
ass
[15]A
he
sai
“Li
all
you
of
Juc
anc
you
inh
of
Jer
anc
you
Kir
Jeh
Th
say

the
LO
to
yo
[a]‘D
no
be
afr
no
dis
bec
of
thi
gre
mu
[b]fo
the
bat
is
no
yo
bu
Go
16 T
go
do
aga
the
Th
wil
sur
co
up
by
the
Asc
of
Ziz
and
yo

wi fin the at the en of the *br bef the Wi of Jer 17a wi no *nee* to fig in thi *bat* Po yo sta stil an see the sal of the LO wh is wi yo O Ju

anc
Jer
Do
not
fea
or
be
dis
tor
go
out
aga
the
[b]fo
the
LO
is
wit
you
1
Jeh
[a]bo
his
hea
wit
his
fac
to
the
gro
anc
all
Juc
anc
the
inh
of
Jer
bov
bef

the
LO
wo
the
LO
19T
the
Lev
of
the
chi
of
the
Ko
an
of
the
chi
of
the
Ko
sto
up
to
pra
the
LO
Go
of
Isra
wit
voi
lou
an
hig
2
the
ros
ear
in

the
mo
and
we
ou
int
the
Wi
of
Tel
and
as
the
we
ou
Jeh
sto
and
sai
“H
me
O
Jud
and
you
inh
of
Jer
[a]Be
in
the
LO
you
Go
and
you
sha
be
est
bel

His
pro
and
you
sha
pro
[21]A
wh
he
had
con
wit
the
peo
he
app
tho
wh
sho
sin
to
the
LO
[a]ar
wh
sho
pra
the
bea
of
hol
as
the
we
out
bef
the
arr
and
we

say

2
wh
the
beg
to
sin
and
to
pra
[a]th
LO
set
am
aga
the
peo
of
Am
Mo
and
Mo
Sei
wh
had
con
aga
Jud
and

the
we
def
23F
the
pe
of
Am
an
Mo
sto
up
ag
the
inh
of
Mo
Sei
to
utt
kil
an
des
the
An
wh
the
[*]ha
ma
an
en
of
the
inh
of
Sei
[a]th
hel
to
des

one
and

1
wh
Jud
car
to
a
pla
ove
the
wil
the
loo
tow
the
mu
and
the
we

the
dea
boo
fal
on
the
ear
No
one
had
esc

2
Jeh
and
his
peo
car
to
tak
aw
the
spo
the
fou
am
the
an
abu
of
val
on
the
*de
boo
and
pre
jew
wh
the
str

off
for
the
mo
tha
the
cou
car
aw
and
the
we
thr
day
gat
the
spo
bee
the
wa
so
mu
[26]A
on
the
fou
day
the
ass
in
the
Va
of
*Be
for
the
the
ble
the
LO

the
the
nar
of
tha
pla
wa
cal
Th
Va
of
Be
un
thi
day
[27]T
the
ret
eve
ma
of
Jud
and
Jer
wit
Jeh
in
fro
of
the
to
go
bac
to
Jer
wit
joy
for
the
LO

ha
[a]m
the
rej
ove
the
en
[28]S
the
ca
to
Je
wi
str
ins
an
ha
an
tru
to
the
ho
of
the
LO
[29]*A*
[a]th
fea
of
Go
wa
on
all
the
ki
of
th
co
wh
the

hea
tha
the
LO
hac
fou
aga
the
enc
of
Isra
[30]T
the
rea
of
Jeh
wa
qui
for
his
[a]Go
gav
hin
res
all
aro

T
En
of
Jeh
Re
3
Jeh
wa
kin
ove
Ju
He
wa
thi
fiv
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
two
fiv
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa

Az
the
dau
of
Shi
[32]A
he
wa
in
the
wa
of
his
fat
[a]As
anc
dic
not
tur
asi
fro
it,
dor
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
[33]N
[a]th
[*]hi
pla
we
not
tak
aw

for
as
yet
the
pe
ha
no
[b]di
the
he
to
the
Go
of
the
fat
3
the
res
of
the
act
of
Je
firs
an
las
in
the
ar
wr
in
the
bo
of
Je
the
so
of
Ha

[a]w
is
me
in
the
boo
of
the
kin
of
Isr
3
thi
[a]Je
kin
of
Jud
all
hin
wit
Ah
kin
of
Isr
[b]w
act
ver
[c]w
36A
he
all
hin
wit
hin
[a]to
ma
shi
to
go
to

Ta
an
the
ma
the
shi
in
Ezi
Ge
[37]B
Eli
the
so
of
Do
of
Ma
pr
ag
Jeh
say
“B
you
hav
all
you
wit
Ah
the
LO
has
des
you
wo
[a]Th
the
shi
we
wr
so

tha
the
we
no
ab
to
go
b to
Ta

2
Ch
21

*J
Re
in
Jud*

1
[a]Je
*re
wi
his
fat
an
wa
bu
wi
his
fat
in
the
Cit
of
Da
Th
Jeh
his
son

rei
in
his
pla
[2]He
had
bro
the
son
of
Jeh
Aza
Jeh
Zec
Aza
Mi
and
She
all
the
wer
the
son
of
Jeh
kin
of
Isr
[3]Th
fat
gav
the
gre
gif
of
silv
and
gol
and
pre

thi
wi
for
cit
in
Ju
bu
he
gav
the
kin
to
Jeh
bec
he
wa
the
firs
4
wh
Jeh
*wa
est
ove
the
kin
of
his
fat
he
str
hin
and
kil
all
his
bro
wit
the
sw

anc
als
oth
of
the
pri
of
Isr

[5]
wa
thi
two
yea
olc
wh
he
bec
kin
anc
he
rei
eig
yea
in
Jer
[6]Ar
he
wa
in
the
wa
of
the
kin
of
Isr
jus
as
the
hou

of
Ah
ha
do
for
he
ha
the
da
of
[a]A
as
a
wi
an
he
di
evi
in
the
sig
of
the
LO
[7]Ye
the
LO
wo
no
de
the
ho
of
Da
be
of
the
[a]co
tha
He

ha
ma
wi
Da
an
sin
He
ha
pro
to
giv
a
lan
to
hi
an
to
his
[b]so
fo
8
his
da
Ed
rev
aga
Ju
au
an
ma
a
kin
ov
the
9So
Jeh
we
ou
wi
his

off
an
all
his
cha
wi
hi
An
he
ros
by
nig
an
att
the
Ed
wh
ha
su
hi
an
the
ca
of
the
cha
[10]T
Ed
ha
be
in
rev
aga
Ju
au
to
thi
da
At
tha

tim
Lib
rev
aga
his
rul
bec
he
hac
for
the
LO
Go
of
his
fat
11M
he
ma
*hi
pla
in
the
mo
of
Juc
anc
cau
the
inh
of
Jer
to
[a]co
har
anc
led
Juc
ast
1

a
lett
car
to
hir
fro
Elij
the
pro
say

1
the
[a]LC
[b]st
up
aga
Jeh
the
spi
of
the
Ph
and
the
[c]Ar
wh
we
nea
the
Eth
17*A*
the

ca
up
int
Ju
an
inv
it,
an
ca
aw
all
the
po
tha
we
fou
in
the
kin
ho
an
als
[a]hi
so
an
his
wi
so
tha
the
wa
no
a
so
lef
to
hi
ex
*Je
the

you
of
his
so
1
all
thi
the
LO
str
hi
[a]in
his
int
wi
an
in
dis
19T
it
hap
in
the
co
of
tim
aft
the
en
of
tw
yea
tha
his
int
ca
ou
be
of
his

sic
so
he
die
in
sev
pai
An
his
peo
ma
no
*bu
for
hin
like
[a]th
bur
for
his
fat
2
wa
thi
two
yea
old
wh
he
bec
kin
He
rei
in
Jer
eig
yea
and
to
no

on
so
de
Ho
the
bu
hi
in
the
Ci
of
Da
bu
no
in
the
to
of
the
ki

2
Ch
22

A
Re
in
Ju

1
the
in
of
Je
ma
[a]A
his
yo
so
ki
in
his

pla
for
the
rai
wh
car
wit
the
[b]Ar
int
the
car
hac
kil
all
the
[c]ol
sor
So
Ah
the
sor
of
Jel
kir
of
Juc
rei
2Al
wa
[*]fo
twc
yea
olc
wh
he
bec
kir
anc
he

rei
one
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
[a]At
the
*gr
of
On
3H
als
wa
in
the
wa
of
the
ho
of
Ah
for
his
mo
adv
hir
to
do
wic
4Th
he
dic
evi
in
the
sig

of the LO lik the ho of Ah for the we his co aft the dea of his fat to his des [5]H als fol the adv an we wi *Je the so of Ah kin of Isr to wa

aga
Ha
ki
of
Sy
at
Ra
Gil
an
the
Sy
wo
Jo
6[a]T
he
ret
to
Jez
to
re
fro
the
wo
wh
he
ha
re
at
Ra
wh
he
fou
aga
Ha
ki
of
Sy
An
*Az
the

so of Jeh kin of Ju we do to see Jeh the so of Ah in Jez be he wa sic

7 go to Jo [a]w Go oc fo Ah *d fo wh he ar [b]he we ou wi *Je

aga
Jeh
the
son
of
Nin
[c]wh
the
LO
had
and
to
[*]cu
off
the
hou
of
Ah
8 An
it
hap
wh
Jeh
wa
[a]ex
jud
on
the
hou
of
Ah
and
[b]fo
the
pri
of
Jud
and
the
son

of
Ah
bro
wh
ser
Ah
tha
he
kil
the
9[a]T
he
sea
for
Ah
an
the
cau
hi
(he
wa
hi
in
Sa
an
bro
hi
to
Jeh
Wh
the
ha
kil
hi
the
bu
hi
“be
the
sai

“he
is
the
so
of
[b]Je
wh
[c]so
the
LO
wi
all
his
hea

S
the
ho
of
Ah
ha
no
on
to
ass
po
ov
the
kin

A
Re
in
Jud

1
wh
Ath
the
mo
of
Ah
sav

tha
her
sor
wa
dea
she
arc
anc
des
all
the
roy
hei
of
the
hov
of
Juc
11E
*Je
the
dat
of
the
kir
toc
[a]Jc
the
sor
of
Ah
anc
sto
hir
aw
fro
am
the
kir
sor

wh
we
bei
mu
an
pu
hi
an
his
nu
in
a
be
So
Jeh
the
da
of
Ki
Jeh
the
wi
of
Jeh
the
pri
(fo
she
wa
the
sis
of
Ah
hi
hi
fro
Ath
so
tha
she

did
not
kil
hin
[12]A
he
wa
hic
wit
the
in
the
ho
of
Go
for
six
yea
wh
Atl
rei
ove
the
lan

2
Ch
23

J
Cro
Kin
of
Juc

1
[a]th
sev
yea
[b]Je
str
hin
anc

ma
a
cov
wit
the
cap
of
hun
Az
the
son
of
Jer
Ish
the
son
of
Jeh
Az
the
son
of
[c]Ob
Ma
the
son
of
Ad
and
Eli
the
son
of
Zic
[2]An
the
we
thr
Jud
and

gat the Lev fro all the citi of Jud and the [a]ch fat of Isra and the can to Jer

3 all the ass ma a cov wit the kin in the hou of Go An he sai to the

“Be
the
kin
son
sha
rei
as
the
LO
has
[a]sa
of
the
son
of
Da
[4]Th
is
wh
you
sha
do
On
thi
of
you
[a]en
on
the
Sab
of
the
pri
an
the
Lev
sho
be
kee
wa

ove
the
doo
5on
thi
sho
be
at
the
kin
hou
and
one
thi
at
the
Ga
of
the
Fou
All
the
peo
sho
be
in
the
cou
of
the
hou
of
the
LO
6Bu
let
no
one
con
int

the
ho
of
the
LO
exc
the
pri
and
[a]th
of
the
Lev
wh
ser
Th
ma
go
in,
for
the
are
hol
bu
all
the
peo
sha
kee
the
wa
of
the
LO
7An
the
Lev
sha
sur
the

kin
on
all
sid
eve
ma
wit
his
we
in
his
har
and
wh
con
int
the
hot
let
him
be
put
to
dea
You
are
to
be
wit
the
kin
wh
he
con
in
and
wh
he
goo
out

8
the
Lev
and
all
Jud
did
acc
to
all
tha
Jeh
the
pri
con
An
eac
ma
too
his
me
wh
we
to
be
on
du
on
the
Sal
wi
tho
wh
we
goi
off
du
on
the
Sal

for
Jeh
the
pri
had
not
dis
[a]th
div
[9]An
Jeh
the
pri
gav
to
the
cap
of
hun
the
spe
and
the
lar
and
sm
[a]sh
wh
had
bel
to
Kin
Da
tha
wer
in
the
ten
of
Go

10T
he
set
all
the
pe
eve
ma
wi
his
we
in
his
ha
fro
the
rig
sid
of
the
ter
to
the
lef
sid
of
the
ter
alo
by
the
alt
an
by
the
ter
all
ar
the
kin

[11]A
the
bro
ou
the
kin
so
pu
the
cro
on
hin
[a]*ga*
hin
the
[*]Te
and
ma
hin
kin
Th
Jeł
and
his
sor
and
hin
and
sai
“*Lo*
live
the
kin
I
of
Ath
1
wh
[a]At
hea

the
no
of
the
pe
ru
an
pra
the
kin
she
ca
to
the
pe
in
the
te
of
the
LO
[13]*W*
she
lo
the
wa
the
kin
sta
by
his
pil
at
the
ent
an
the
lea
an
the

tru
we
by
the
kin
All
the
peo
of
the
lan
we
rej
and
blo
tru
als
the
sin
wi
mu
ins
and
[a]th
wh
led
in
pra
So
Atl
tor
her
clo
and
sai
[b]“T
Tre

1
Jel
the

pri
bro
ou
the
cap
of
hu
wh
we
set
ove
the
arr
and
sai
to
the
“Ta
her
ou
un
gua
and
sla
wi
the
sw
wh
fol
her
Fo
the
pri
had
sai
“D
no
kil
her
in

the
ho
of
the
LO

1
the
sei
her
an
she
we
by
wa
of
the
ent
[a]of
the
Ho
Ga
int
the
kin
ho
an
the
kil
her
the

1
Jeh
ma
a
[a]co
bet
hi
the
pe
an

the
kin
tha
the
sho
be
the
LO
pe
17A
all
the
pe
we
to
the
*te
of
Ba
an
tor
it
do
Th
br
in
pie
its
alt
an
im
an
[a]ki
Ma
the
pri
of
Ba
bef
the

alt
[18]A
Jeh
app
the
ove
of
the
hou
of
the
LO
to
the
han
of
the
pri
the
Lev
wh
Da
had
[a]as
in
the
hou
of
the
LO
to
off
the
bu
off
of
the
LO
as
it

is
wr
in
the
[b]La
of
Mo
wi
rej
an
wi
sin
as
it
wa
est
by
Da
19*A*
he
set
the
[a]ga
at
the
gat
of
the
ho
of
the
LO
so
tha
no
on
wh
wa
in
an

wa
un
sho
ent
2
he
too
the
cap
of
hu
the
no
the
gov
of
the
peo
an
all
the
peo
of
the
lan
an
bro
the
kin
dow
fro
the
ho
of
the
LO
an
the
we
thr

the
Up
Ga
to
the
kin
ho
and
set
the
kin
on
the
thr
of
the
kin
21S
all
the
peo
of
the
lan
rej
and
the
city
wa
qu
for
the
had
sla
Ath
wi
the
sw

2
Ch

24

J
Rep
the
Ter

[1]
[a]*we*
sev
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
for
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
Zib
of
Bee
[2]Jo
[a]di
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
all

the
day
of
Jeh
the
pri
[3]An
Jeh
too
two
wiv
for
hin
and
he
had
son
and
dau
[4]
it
hap
aft
thi
tha
Joa
set
his
hea
on
rep
the
hou
of
the
LO
[5]Th
he
gat
the

pri
and
the
Lev
and
sai
to
the
“G
out
to
the
citi
of
Jud
and
[a]ga
fro
all
Isra
mo
to
rep
the
hou
of
you
Go
fro
yea
to
yea
and
see
tha
you
do
it
qui
I

the Lev did not do it qui

6[a]*S* the kin cal Jeh the chi *pri* and sai to him “W hav you not req the Lev to bri in fro Jud and fro Jer the col *acc to the com*

of
[b]M
the
ser
of
the
LO
and
of
the
ass
of
Isr
for
the
[c]ta
of
wi
7Fo
[a]th
sor
of
Atl
tha
wi
wo
had
bro
int
the
ho
of
Go
and
had
als
pre
all
the
[b]de

thi
of
the
hou
of
the
LO
to
the
Baa

[8]
at
the
kin
com
[a]th
ma
a
che
and
set
it
out
at
the
gat
of
the
hou
of
the
LO
[9]An
the
ma
a
pro
thr
Jud
and

Jer
to
bri
to
the
LO
[a]th
col
tha
Mo
the
ser
of
Go
hac
imp
on
Isr
in
the
wi
10T
all
the
lea
anc
all
the
pec
rej
bro
the
cor
anc
pu
the
int
the
chc
un

all
ha
giv
[11]S
it
wa
at
tha
tim
wh
the
che
wa
bro
to
the
ki
off
by
the
ha
of
the
Le
an
[a]W
the
sa
tha
the
wa
mu
mo
tha
the
ki
scr
an
the
hig

pri
off
car
and
em
the
che
and
too
it
and
ret
it
to
its
pla
Th
the
did
day
by
day
and
gat
mo
in
abu

1
kin
and
Jeh
gav
it
to
tho
wh
did
the
wo
of

the
ser
of
the
ho
of
the
LO
an
the
hir
ma
an
car
to
[a]re
the
ho
of
the
LO
an
als
tho
wh
wo
in
iro
an
bro
to
res
the
ho
of
the
LO
13S
the
wo

lab
an
the
wo
wa
co
by
the
the
res
the
ho
of
Go
to
its
ori
co
an
rei
it.
14W
the
ha
fin
the
bro
the
res
of
the
mo
bef
the
kin
an
Jeh
[a]th
ma
fro

it
art
for
the
ho
of
the
LO
art
for
ser
and
off
spo
and
ves
of
gol
and
silv
An
the
off
bu
off
in
the
ho
of
the
LO
co
all
the
da
of
Jeh

A
of
Jo

1
Jeh
gre
old
an
wa
ful
of
da
an
he
die
he
wa
on
h1
an
thi
yea
old
wh
he
die
16A
the
bu
hi
in
the
Cit
of
Da
am
the
kin
be
he
ha
do
go

in
Isra
bo
tow
Go
anc
His
ho

[1]

aft
the
dea
of
Jeh
the
lea
of
Juc
car
anc
bo
do
to
the
kin
An
the
kin
list
to
the
[18]T
the
lef
the
ho
of
the
LO
Go

of
the
fat
an
ser
[a]w
im
an
ido
an
[b]w
ca
up
Ju
an
Je
be
of
the
tre
19Y
He
[a]se
pro
to
the
to
bri
the
ba
to
the
LO
an
the
tes
aga
the
bu
the

wo
no
list

2
the
Sp
of
Go
*ca
up
[a]Ze
the
so
of
Jel
the
pri
wh
sto
ab
the
pe
an
sai
to
the
“Th
say
Go
[b]‘W
do
you
tra
the
co
of
the
LO
so
tha

yo
ca
pro
[c]Be
yo
hav
for
the
LO
He
als
has
for
yo
”

[21]S
the
co
aga
hi
an
at
the
co
of
the
ki
the
[a]st
hi
wi
sto
in
the
co
of
the
ho
of
the

LO
22T
Joa
the
kin
dic
not
ren
the
kin
wh
Jeh
his
*fa
hac
doi
to
hin
but
kil
his
son
anc
as
he
die
he
sai
“Tl
LO
loo
on
it,
anc
[a]re

I
of
Joa

2
it

hap
in
the
spr
of
the
yea
tha
[a]th
arr
of
Syr
car
up
aga
hir
anc
the
car
to
Juc
anc
Jer
anc
des
all
the
lea
of
the
pec
fro
am
the
pec
anc
ser
all
the
*sp

to the kin of Da [24]F the arr of the Syr [a]ca wit a sm cor of me bu the LO [b]de a ver gre arr int the har bec the hac for the LO Go of the fat So

the
[c]ex
jud
aga
Joa
[25]A
wh
the
ha
wi
fro
hir
(fo
the
lef
hir
sev
wo
[a]hi
ow
ser
cor
aga
hir
bec
of
the
blo
of
the
[*]so
of
Jeh
the
pri
an
kil
hir
on
his

bec
So
he
die
An
the
bu
hin
in
the
Cit
of
Da
bu
the
dic
no
bu
hin
in
the
ton
of
the
kin
2
are
the
on
wh
con
aga
hin
*Za
the
son
of
Shi
the
Am

anc
Jeh
the
son
of
*Sh
the
Mo
27N
con
his
son
anc
[a]th
ma
ora
abo
hin
anc
the
rep
of
the
hou
of
Go
ind
the
are
wr
in
the
*an
of
the
boo
of
the
kin
[b]Th

Am
his
so
rei
in
his
pla

Ch
25

Re
in
Ju

[a]*w*
tw
fiv
yea
old
wh
he
be
kir
an
he
rei
tw
nir
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
Jeh
of
Jer
[2]A

he
dic
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
[a]bu
no
wi
a
loy
hea
3
it
ha
as
soo
as
the
kin
wa
est
for
hin
tha
he
exe
his
ser
wh
hac
mu
his
fat
the

kir [4]He he dic no exe the chi bu *dic* as *it* *is* wr in the Lav in the Bo of Mo wh the LO cor say [a]“T fat sha no be pu to dea for the chi no sha

the
chi
be
pu
to
dea
for
the
fat
bu
a
pe
sha
die
for
his
ow
sin

T
Wo
Ag
Ed

5
Am
gat
Ju
tog
and
set
ove
the
cap
of
tho
and
cap
of
hu
acc
to

the
fat
ho
thr
all
Ju
an
Be
an
he
nu
the
[a]fr
tw
yea
old
an
ab
an
fou
the
to
be
thr
hu
tho
ch
me
abl
to
go
to
wa
wh
cou
ha
spe
an
shi
6H

als
hir
one
hu
tho
mi
me
of
va
fro
Isr
for
one
hu
tal
of
silv
7Bu
a
a1fo
of
Go
car
to
hir
say
“O
kir
do
no
let
the
arr
of
Isr
go
wi
yo
for
the

LO *is* no wi Isr — *no* *wi* an of the chi of Ep [8]Bu if yo go, be go Be str in ba *Ev* *so,* Go sh ma yo fal be the en fo Go ha [a]po to hel

an
to
ov

9
Am
sai
to
the
ma
of
Go
“B
wh
sh
we
do
ab
the
hu
tal
wh
I
ha
giv
to
the
tro
of
Isr

the
ma
of
Go
ans
[a]“T
LO
is
abl
to

giv
you
mu
mo
tha
thi
[10]S
Am
dis
the
tro
tha
hac
con
to
hir
fro
Epl
to
go
bac
hor
Th
the
ang
wa
gre
arc
aga
Juc
anc
the
ret
hor
in
gre
ang

1
Am
str

hi an lea his pe he we to [a]th Va of Sa an kil te th of the pe of Sei [12]A the chi of Ju to ca te th ali br the to the top of the ro an

cas
the
do
fro
the
to
of
the
ro
so
tha
the
all
we
da
in
pie

1
as
for
the
sol
of
the
arr
wh
Am
ha
dis
so
tha
the
wo
no
go
wi
hi
to
ba
the

rai
the
citi
of
Juc
fro
Sar
to
Bet
Ho
kil
thr
tho
in
the
anc
too
mu
*sp

1
it
wa
so,
aft
Am
car
fro
the
sla
of
the
Ed
tha
[a]he
bro
the
goc
of
the
pec

of
Sei
set
the
up
to
be
[b]hi
go
an
bo
do
bef
the
an
bu
in
to
the
15T
the
an
of
the
LO
wa
ar
ag
Am
an
He
ser
hir
a
pr
wh
sai
to
hir
“W

hav
you
sou
[a]th
goo
of
the
peo
wh
[b]co
not
res
the
ow
peo
fro
you
han

1
it
wa
as
he
tal
wit
hin
tha
the
kin
sai
to
hin
“H
we
ma
you
the
kin
cou
Cea

Wh
sho
you
be
kil

T
the
pro
cea
and
sai
“I
kno
tha
Go
has
[a]de
to
des
you
bee
you
hav
don
thi
and
hav
not
hee
my
adv

I
Def
Jud

1
[a]Ar
kin
of
Jud
ask

adv
and
ser
to
*Jo
the
son
of
Jeh
the
son
of
Jeh
kin
of
Isra
say
“Co
let
us
fac
one
and
in
bat

1
Joa
kin
of
Isra
ser
to
Am
kin
of
Jud
say
“Th
thi
tha

wa
in
Lel
ser
to
the
cec
tha
wa
in
Lel
say
‘Gi
yo
da
to
my
son
as
wi
anc
a
wi
bea
tha
wa
in
Lel
pas
by
anc
tra
the
thi
19I
yo
say
tha
yo
hav

def
the
Ed
and
you
hea
is
lift
up
to
[a]bo
Sta
at
hon
nov
wh
sho
you
me
wit
tro
tha
you
sho
fall
—
you
and
Jud
wit
you
2
Am
wo
not
hee
for
[a]it
car
fro

Go
tha
He
mi
giv
the
int
the
ha
of
the
ene
be
the
[b]so
the
go
of
Ed
21S
Jo
kin
of
Isr
we
ou
an
he
an
Am
kin
of
Ju
fac
on
an
at
[a]Be
Sh
wh

bel
to
Jud
[22]A
Jud
wa
def
by
Isr
and
eve
ma
fled
to
his
ten
[23]T
Joa
the
kin
of
Isr
cap
Am
kin
of
Jud
the
son
of
Joa
the
son
of
[a]Je
at
Bet
She
and
he

bro
hir
to
Jer
and
bro
do
the
wa
of
Jer
fro
the
Ga
of
Ep
to
the
Co
Ga
—
fou
hu
cul
[24]A
he
too
all
the
gol
and
silv
all
the
art
tha
we
fou
in
the

ho
of
Go
wi
[a]O
Ed
the
tre
of
the
ki
ho
an
ho
an
ret
to
Sa

of
Am

2
the
so
of
Jo
ki
of
Ju
liv
fift
yea
aft
the
dea
of
Jo
the
so
of

Jeh
kin
of
Isra
[26]N
the
res
of
the
act
of
Am
fro
firs
to
las
ind
are
the
not
wr
in
the
boo
of
the
kin
of
Jud
and
Isra
[27]A
the
tim
tha
Am
tur
aw
fro
fol

the
LO
the
ma
a
cor
aga
hir
in
Jer
and
he
fle
to
Lac
bu
the
ser
aft
hir
to
Lac
and
kil
hir
the
28T
the
bro
hir
on
hor
and
bu
hir
wi
his
fat
in
*th

Cit
of
Ju

2
Ch
26

Re
in
Ju

1
all
the
pe
of
Ju
too
*Uz
wh
wa
six
yea
old
an
ma
hir
kir
ins
of
his
fat
Am
2H
bu
*El
an
res
it
to
Ju

aft
the
kin
res
wit
his
fat

3
wa
six
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
fift
two
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
Jed
of
Jer
4Ar
he
did
wh
wa
[a]rig
in
the
sig

of
the
LO
acc
to
all
tha
his
fat
Am
had
do
5[a]H
sou
Go
in
the
day
of
Zec
wh
[b]ha
und
in
the
[*]vi
of
Go
and
as
lon
as
he
sou
the
LO
Go
ma
hin
[c]pr

6
he
we
ou
an
[a]m
wa
aga
the
Ph
an
bro
do
the
wa
of
Ga
the
wa
of
Jal
an
the
wa
of
As
an
he
bu
cit
ar
As
an
am
the
Ph
7G
hel
hin
aga

[a]th
Ph
aga
the
Ara
wh
live
in
Gu
Baa
and
aga
the
Me
8Al
the
Am
[a]br
trib
to
Uz
His
far
spr
as
far
as
the
ent
of
Egy
for
he
bec
exc
stre
9
Uz
bu
tow

in Jer at the [a]Co Ga at the Va Ga anc at the cor bu of the wa the he for the [10]A he bu tow in the des He du ma we for he hac mu live bot in

the
low
and
in
the
pla
he
als
had
far
and
vir
in
the
mo
and
in
*Ca
for
he
low
the
soi

1
Uz
had
an
arr
of
figh
me
wh
we
out
to
wa
by
cor
acc
to

the
nu
on
the
rol
as
pre
by
Jei
the
scr
an
Ma
the
off
un
the
ha
of
Ha
on
of
the
kin
cap
12T
tot
nu
of
*ch
off
of
the
mi
me
of
val
wa
tw
tho

six
hu
[13]A
un
the
au
wa
an
ar
of
thr
hu
an
sev
tho
fiv
hu
tha
ma
wa
wi
mi
po
to
hel
the
kin
aga
the
en
[14]T
Uz
pre
for
the
for
the
en
ar
shi

spe
hel
boo
arm
bow
and
slin
to
cas
sto
15A
he
ma
dev
in
Jer
inv
by
[a]sk
me
to
be
on
the
tow
and
the
con
to
sho
arm
and
lar
sto
So
his
fam
spr
fam
and

wi
for
he
wa
ma
hel
till
he
bec
str

T
Per
for
Uz
Pri

1
[a]wh
he
wa
str
his
hea
wa
[b]lif
up,
to
his
des
for
he
tra
aga
the
LO
his
Go
[c]by
ent
the
ter

of
the
LO
to
bu
inc
on
the
alt
of
inc
17S
[a]Az
the
pri
we
in
aft
hin
and
wit
hin
we
eig
pri
of
the
LO
—
val
me
18A
the
wit
Kin
Uz
and
sai
to
hin

“*It*
[a]*is*
no
for
you
Uz
to
bu
inc
to
the
LO
bu
for
the
[b]pr
the
so
of
Aa
wh
are
co
to
bu
inc
Ge
ou
of
the
sa
for
you
ha
tre
Yo
sh
ha
no
ho

fro
the
LO
Go

1
Uz
bec
fur
anc
he
had
a
cer
in
his
har
to
bur
inc
An
wh
he
wa
ang
wit
the
pri
[a]le
bro
ou
on
his
for
bef
the
pri
in
the
ho
of

the
LO
bes
the
inc
alt
20A
Az
the
chi
pri
anc
all
the
pri
loo
at
hir
anc
the
on
his
for
he
wa
lep
so
the
thr
hir
ou
of
tha
pla
Inc
he
als
[a]hu
to
get

ou
bec
the
LO
had
str
hin
2
Uz
wa
a
lep
unt
the
day
of
his
dea
He
dw
in
an
[b]isc
ho
bec
he
wa
a
lep
for
he
wa
cut
off
fro
the
ho
of
the
LO

Th
Jot
his
son
wa
ove
the
kin
hot
jud
the
pe
of
the
lan
2
the
res
of
the
act
of
Uz
fro
firs
to
las
[a]th
pro
Isa
the
son
of
Am
wr
23[a]
Uz
*re
wit
his

fat and the bur him wit his fat in the fiel of bur wh *bel* to the kin for the sai “H is a lep Th Jot his son rei in his pla

2 Ch 27

J Rei in Jud

1
[a]*we*
tw
fiv
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
six
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
*Je
the
dat
of
Zad
2Ar
he
did
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
acc
to

all
tha
his
fat
Uz
ha
do
(al
he
di
no
en
the
te
of
the
LO
Bu
stil
[a]th
pe
act
co

3
bu
the
Up
Ga
of
the
ho
of
the
LO
an
he
bu
ext
on
the

wa
of
[a]Op
[4]M
he
bu
cit
in
the
mo
of
Ju
an
in
the
for
he
bu
for
an
tow
[5]H
als
fou
wi
the
kin
of
the
[a]Ar
an
def
the
An
the
pe
of
Am
gav
hin

in
tha
yea
one
hu
tal
of
silv
ten
tho
ko
of
wh
and
ten
tho
of
ba
Th
pe
of
Am
pai
thi
to
hir
in
the
sec
and
thi
yea
als
6So
Jot
bec
mi
[a]be
he
pre

his
wa
bef
the
LO
his
Go
7
the
res
of
the
act
of
Jot
and
all
his
wa
and
his
wa
ind
the
are
wr
in
the
boo
of
the
kin
of
Isr
and
Jud
[8]H
wa
two
fiv

yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
six
yea
in
Jer
9[a]S
Jot
*re
wit
his
fat
and
the
bur
him
in
the
Cit
of
Da
Th
[b]Ah
his
son
rei
in
his
pla

2
Ch
28

A

Rei
in
Jud

[1]
[a]*w*
tw
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
six
yea
1in
Jer
and
he
did
no
do
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
as
his
fat
Da
had
don
[2]Fo

he
wa
in
the
wa
of
the
kin
of
Isra
and
ma
[a]m
im
for
[b]th
Baa
[3]He
bur
inc
in
[a]th
Va
of
the
Son
of
Hin
and
bur
[b]hi
chi
in
the
[c]fir
acc
to
the
abo
of

the
nat
wh
the
LO
had
[d]ca
ou
bef
the
chi
of
Isr
[4]An
he
sac
and
bu
inc
on
the
[*]hi
pla
on
the
hil
and
und
eve
gre
tre

S
and
Isra
Def
Jud

5
[a]th
LO
his

Go
del
hir
int
the
har
of
the
kir
of
Syr
Th
[b]de
hir
and
car
aw
a
gre
mu
of
the
as
cap
and
bro
the
to
Da
Th
he
wa
als
del
int
the
har
of
the
kir

of Isr wh def hir wit a gre sla [6]Fo [a]Pe the son of Re kil one hu and two tho in Ju in one day all val me [b]be the had for the the LO Go of the fat [7]Zi

a
mi
ma
of
Epl
kil
Ma
the
kir
sor
Az
the
off
ove
the
ho
anc
Elk
wh
wa
sec
to
the
kir
[8]Ar
the
chi
of
Isr
car
aw
cap
of
the
[a]br
two
hu
tho
wo
sor

an
da
an
the
als
too
aw
mu
[*]sp
fro
the
an
bro
the
spo
to
Sa

I
Re
the
Ca

9
a
[a]pr
of
the
LO
wa
the
wh
na
wa
Od
an
he
we
ou
bef
the
arr

tha
ca
to
Sa
an
sai
to
the
“Lo
[b]be
the
LO
Go
of
you
fat
wa
ang
wit
Ju
He
has
del
the
int
you
ha
but
you
hav
kil
the
in
a
rag
tha
[c]re
up
to
hea

[10]A
no
you
pro
to
for
the
ch
of
Ju
and
Jer
to
be
you
[a]m
and
fer
sla
but
are
you
no
als
gu
bef
the
LO
you
Go
[11]N
hea
me
the
and
ret
the
cap
wh
you

hav
tak
cap
fro
you
bre
[a]fo
the
fie
wr
of
the
LO
is
up
you
1
son
of
the
hea
of
the
chi
of
Ep
Az
the
son
of
Jo
Be
the
son
of
Me
Jeh
the
son
of

Sha
an
Am
the
so
of
Ha
sto
up
aga
tho
wh
ca
fro
the
wa
[13]a
sai
to
the
“Yo
sha
no
bri
the
cap
he
fo
we
alr
hav
off
the
LO
Yo
int
to
ad
to
ou

sin
an
to
ou
gu
for
ou
gu
is
gre
an
the
is
fie
wr
aga
Isr
[14]S
the
arr
me
lef
the
cap
an
the
*sp
bef
the
lea
an
all
the
ass
[15]T
the
me
[a]W
we
des

by
na
ros
up
an
to
the
cap
an
fro
the
[*]sp
the
clo
all
wh
we
na
am
the
dre
the
an
ga
the
sa
[b]ga
the
foo
an
dri
an
an
the
an
the
let
all
the
fee

one
rid
on
do
So
the
bro
the
to
the
bre
at
Jer
[c]th
cit
of
pal
tre
Th
the
ret
to
Sa

*A
Rej
to
He
Jud*

1
the
sa
tim
Ki
Ah
se
to
the
*ki
of
Ass

to
hel
hir
17F
aga
the
[a]Ec
had
cor
att
Juc
anc
car
aw
cap
18[a]
Ph
als
had
inv
the
citi
of
the
low
anc
of
the
Sou
of
Juc
anc
had
tak
Bet
She
Aij
Ge
Soc
wit

its
vil
Tin
wit
its
vil
an
Gin
wit
its
vil
an
the
dw
the
19F
the
LO
[*]br
Ju
low
be
of
Ah
kin
of
[a]Is
for
he
ha
[b]en
mo
de
in
Ju
an
ha
be
co
un

to
the
LO
20A
[a]Ti
Pil
ki
of
As
ca
to
hi
an
dis
hi
an
di
no
ass
hi
21F
Ah
to
pa
of
the
tre
fro
the
ho
of
the
LO
fro
the
ho
of
the
ki
an

fro
the
lea
an
he
ga
it
to
the
ki
of
As
bu
he
di
no
hel
hi

A
an
De
of
Ah

2
in
the
tim
of
his
dis
Ki
Ah
be
in
un
to
the
LO
Th
is

tha
Kin
Ah
[23]F
[a]he
sac
to
the
goo
of
Da
wh
hac
def
hin
say
“Bo
the
goo
of
the
kin
of
Syr
hel
the
I
wil
sac
to
the
[b]th
the
ma
hel
me
Bu
the
we
the

rui
of
hir
an
of
all
Isr
24 S
Ah
ga
the
art
of
the
ho
of
Go
cut
in
pie
the
art
of
the
ho
of
Go
[a]sh
up
the
do
of
the
ho
of
the
LO
an
ma
for

hin
alt
in
eve
con
of
Jer
[25]A
in
eve
sin
cit
of
Juc
he
ma
*hi
pla
to
bur
inc
to
oth
goc
anc
pro
to
ang
the
LO
Go
of
his
fat
2
the
res
of
his
act

and
all
his
wa
fro
firs
to
las
ind
the
are
wr
in
the
boo
of
the
kin
of
Jud
and
Isr
[27]S
Ah
[*]re
wit
his
fat
and
the
bur
him
in
the
city
in
Jer
bu
the
[a]di

no
bri
hir
int
the
tor
of
the
kir
of
Isr
Th
He
his
sor
rei
in
his
pla

2
Ch
29

I
Re
in
Jud

1
[a]be
kir
wh
he
wa
tw
fiv
yea
old
and
he
rei
tw

nin
yea
in
Jer
His
mo
nar
wa
*Al
the
dau
of
Zec
2An
he
dic
wh
wa
rig
in
the
sig
of
the
LO
acc
to
all
tha
his
fat
Da
hac
dor

I
Cle
the
Ter

3
the

firs
yea
of
his
rei
in
the
firs
mo
he
[a]op
the
do
of
the
ho
of1
the
LO
an
rep
the
4T
he
bro
in
the
pri
an
the
Lev
an
gat
the
in
the
Eas
Sq
5an
sai

to
the
“H
me
Lev
No
[*]*sa*
you
[a]sa
the
ho
of
the
LO
Go
of
you
fat
and
ca
ou
the
ru
fro
the
ho
pla
6Fo
ou
fat
hav
tre
and
do
evi
in
the
eye
of
the

LO
our
Go
the
hav
for
Hi
hav
[a]tu
the
fac
aw
fro
the
*dw
pla
of
the
LO
and
tur
the
bac
on
Hi
7[a]T
hav
als
shu
up
the
doo
of
the
ves
pu
ou
the
lan
and

hav
not
bur
inc
or
off
bur
off
in
the
hol
pla
to
the
Go
of
Isra
8Th
the
[a]w
of
the
LO
fell
upo
Jud
and
Jer
and
He
has
[b]gi
the
up
to
tro
to
des
and
to

[c]jec
as
you
see
wit
you
[d]ey
9Fo
ind
bec
of
thi
[a]ou
fat
hav
fal
by
the
sw
and
our
son
our
dat
and
our
wiv
are
in
cap
1
it
is
in
my
hea
to
ma
[a]a
cov

wit
the
LO
Go
of
Isr
tha
His
fie
wr
ma
tur
aw
fro
us.
[11]M
so
do
no
be
ne
no
for
the
LO
has
[a]ch
yo
to
sta
bef
Hi
to
ser
Hi
an
tha
yo
sh
mi

to Hi an bu inc

1 the Lev arc [a]M the so of Am an Joe the so of Az of the so of the [b]K of the so of Me Kis the so of Ab an Az the so

of
Jeh
of
the
Ge
Jo
the
so
of
Zi
an
Ed
the
so
of
Jo
13O
the
so
of
Eli
Sh
an
Jei
of
the
so
of
As
Ze
an
Ma
14O
the
so
of
He
Jel
an
Sh

anc
of
the
son
of
Jed
She
anc
Uz
1
the
gat
the
bre
[a]san
the
anc
wer
acc
to
the
con
of
the
kin
at
the
wor
of
the
LOI
[b]to
clea
the
hou
of
the
LOI
16T
the
pric
wer
into
the
inn

par of the hou of the LOR to clea *it,* and bro out all the deb tha the fou in the tem of the LOR to the cou of the hou of the LOR And the Lev too *it* out and car *it* to the Bro [a]Kid

1

the
beg
to
*sa
on
the
firs
da
of
the
firs
mo
an
on
the
eig
da
of
the
mo
the
ca
to
the
ves
of
the
LO
So
the
sa
the
ho
of
the
LO
in
eig
da
an

on
the
six
day
of
the
firs
mo
the
fin

1
the
we
in
to
Kin
He
and
sai
“W
hav
cle
all
the
hou
of
the
LO
the
alt
of
bur
off
wit
all
its
art
and
the
tab

of
the
sho
wit
all
its
art
19M
all
the
art
wh
Kin
Ah
in
his
rei
had
[a]ca
asi
in
his
tra
we
hav
pre
and
*sa
and
the
the
are
bef
the
alt
of
the
LO

I
Res

Ter
Wo
2
Kir
He
ros
ear
gat
the
rul
of
the
cit
and
we
up
to
the
ho
of
the
LO
21A
the
bro
sev
bul
sev
ran
sev
lan
and
sev
ma
goa
for
a
[a]sir
off
for

the
ki
for
the
sa
an
for
Ju
Th
he
co
the
pri
the
so
of
Aa
to
off
the
on
the
alt
of
the
LO
22S
the
kil
the
bu
an
the
pri
rec
the
blo
an
[a]sp
it

on
the
alt
Lik
the
kil
the
ran
and
spr
the
blo
on
the
alt
Th
als
kil
the
lan
and
spr
the
blo
on
the
alt
[23]T
the
bro
ou
the
ma
goa
for
the
sin
off
bef
the

kin
and
the
ass
and
the
lai
the
[a]ha
on
the
[24]A
the
pri
kil
the
and
the
pre
the
blo
on
the
alt
as
a
sin
off
[a]to
ma
an
ato
for
all
Isra
for
the
kin
con
tha

the
bu
off
and
the
sin
off
be
ma
for
all
Isr
2
he
sta
the
Lev
in
the
ho
of
the
LO
wit
cy
wit
str
ins
and
wit
ha
[b]ac
to
the
con
of
Da
of
[c]Ga
the

kin
see
and
of
Na
the
pro
[d]fo
thu
wa
the
con
of
the
LO
by
His
pro
[26]T
Lev
sto
wit
the
ins
[a]of
Da
and
the
pri
wit
[b]th
tru
[27]T
He
con
the
to
off
the
bu

off
on
the
alt
An
wh
the
bur
off
beg
[a]th
sor
of
the
LO
als
beg
wi
the
tru
and
wi
the
ins
of
Da
kin
of
Isr
28S
all
the
ass
wo
the
sin
sar
and
the
tru

sou
all
thi
cor
un
the
bu
off
wa
fin
[29]A
wh
the
ha
fin
off
[a]th
kin
an
all
wh
we
pre
wi
hin
bo
an
wo
[30]M
Kin
He
an
the
lea
con
the
Lev
to
sin
pra

to
the
LO
wit
the
wo
of
Da
and
of
Asa
the
see
So
the
sar
pra
wit
gla
and
the
bov
the
hea
and
wo
3
He
ans
and
sai
“N
tha
you
hav
cor
you
to
the
LO

co
ne
an
bri
sa
an
[a]th
off
int
the
ho
of
the
LO
So
the
ass
bro
in
sa
an
tha
off
an
as
ma
as
we
of
a
[b]w
hea
bro
bu
off
32*A*
the
nu
of
the

bu
off
wh
the
ass
bro
wa
sev
bu
one
hu
ran
anc
two
hu
lan
all
the
we
for
a
bu
off
to
the
LO
[33]T
co
thi
we
six
hu
bu
anc
thr
tho
she
[34]B
the
pri

we
too
few
so
tha
the
cou
no
ski
all
the
bu
off
the
[a]th
bre
the
Lev
hel
the
un
the
wo
wa
en
an
un
the
oth
pri
ha
[*]sa
the
[b]fo
the
Lev
we
[c]m
dil
in

[d]*sa*
the
tha
the
pri
35*A*
the
bu
off
we
in
abu
wi
[a]th
fat
of
the
pea
off
an
wit
[b]th
dri
off
for
eve
bu
off
S
the
ser
of
the
ho
of
the
LO
wa
set
in

orc
[36]T
He
anc
all
the
pec
rej
tha
Go
hac
pre
the
pec
sin
the
eve
toc
pla
so
suc

2
Ch
30

I
Kee
the
Pas

[1]
He
ser
to
all
Isr
anc
Juc
anc
als
wr
lett

to
Epl
anc
Ma
tha
the
sho
cor
to
the
hov
of
the
LO
at
Jer
to
kee
the
Pas
to
the
LO
Go
of
Isra
[2]Fo
the
kir
anc
his
lea
anc
all
the
ass
in
Jer
hac
agr

to
kee
the
Pa
in
the
sec
[a]m
[3]Fo
the
cou
no
kee
it
[a]at
[*]th
reg
tim
[b]be
a
suf
nu
of
pri
ha
no
co
the
no
ha
the
pe
gat
tog
at
Jer
[4]A
the
ma
ple

the
kin
and
all
the
ass
[5]So
the
*re
to
ma
a
pro
thr
all
Isr
fro
Bee
to
Da
tha
the
sho
con
to
kee
the
Pas
to
the
LO
Go
of
Isr
at
Jer
sin
the
hac
no

do *it* for a lon *tim* in the *pre* ma

6 the [a]ru we thr all Isr an Ju wit the lett fro the kin an his lea an spo acc to the cor of the kin “Cl of Isr

[b]re
to
the
LO
Go
of
Ab
Isa
an
Isr
the
He
wil
ret
to
the
rer
of
yo
wh
hav
esc
fro
the
har
of
[c]th
kin
of
[d]As
7Ar
do
no
be
[a]lik
yo
fat
an
yo
bre

wh
tre
aga
the
LO
Go
of
the
fat
so
tha
He
[b]ga
the
up
to
[c]de
as
you
see
8N
do
no
be
[a]st
ne
as
you
fat
we
but
yie
you
to
the
LO
an
ent
His
sar

wh
He
has
sar
for
anc
ser
the
LO
you
Go
[b]th
the
fie
of
His
wr
ma
tur
aw
fro
you
9Fo
if
you
ret
to
the
LO
you
bre
anc
you
chi
wil
be
tre
wit
[a]co
by

tho
wh
lea
the
cap
so
tha
the
ma
con
bac
to
thi
lan
for
the
LO
you
Go
is
[b]gr
and
me
and
wil
not
tur
His
fac
fro
you
if
you
[c]re
to
Hin

1
the
run
pas

fro
cit
to
cit
thr
the
cou
of
Ep
an
Ma
as
far
as
Ze
bu
[a]th
lau
at
the
an
mo
the
[11]N
[a]so
fro
As
Ma
an
Ze
hu
the
an
ca
to
Je
[12]A
[a]th
ha
of

Go
wa
on
Ju
to
giv
the
sin
of
hea
to
ob
the
co
of
the
ki
an
the
lea
[b]at
the
wo
of
the
LO

1
ma
pe
a
ver
gre
ass
gat
at
Jer
to
kee
the
Fea

of
[a]Ur
Bre
in
the
sec
mo
14T
aro
and
too
aw
the
[a]al
tha
we
in
Jer
and
the
too
aw
all
the
inc
alt
and
cas
the
int
the
Bro
[b]Ki
15T
the
sla
the
Pas
lam
on

the
fou
day
of
the
sec
mo
Th
pri
and
the
Lev
[*]we
[a]as
and
[*]sa
the
and
bro
the
bu
off
to
the
ho
of
the
LO
16T
sto
in
the
[a]pl
[*]ac
to
the
cus
acc
to
the

Lav
of
Mo
the
ma
of
Go
the
pri
spr
the
blo
rec
fro
the
har
of
the
Lev
17F
the
we
ma
in
the
ass
wh
hac
no
*sa
the
[a]th
the
Lev
hac
cha
of
the
sla
of

the
Pas
lan
for
eve
wh
wa
no
cle
to
sar
the
to
the
LO
[18]F
a
mu
of
the
pe
[a]m
fro
Ep
Ma
Iss
an
Ze
ha
no
cle
the
[b]ye
the
ate
the
Pa
co
to
wh

wa
wr
Bu
He
pra
for
the
say
“M
the
goo
LO
pro
ato
for
eve
[19]*w*
[a]pr
his
hea
to
see
Go
the
LO
Go
of
his
fat
tho
he
is
no
cle
acc
to
the
pur
of
the

sa
20A
the
LO
list
to
He
an
hea
the
pe
2
the
chi
of
Isr
wh
we
pre
at
Jer
ke
[a]th
Fea
of
Un
Br
sev
day
wi
gre
gla
an
the
Lev
an
the
pri
pra
the

LO
da
by
da
sin
to
the
LO
acc
by
lou
ins
[22]A
He
gav
enc
to
all
the
Lev
[a]w
tau
the
goo
kno
of
the
LO
and
the
ate
thr
the
fea
sev
day
off
pea
off
and

[b]m
co
to
the
LO
Go
of
the
fat
2
the
wh
ass
agr
to
kee
the
fea
[a]an
sev
day
and
the
kep
it
and
sev
day
wit
gla
24F
He
kin
of
Jud
[a]ga
to
the
ass
a

tho
bul
anc
sev
tho
she
anc
the
lea
gav
to
the
ass
a
tho
bul
anc
ten
tho
she
anc
a
gre
nu
of
pri
[b]sa
the
25T
wh
ass
of
Juc
rej
als
the
pri
anc
Lev
all

the
ass
tha
car
fro
Isr
the
soj
[a]w
car
fro
the
lan
of
Isr
an
tho
wh
dw
in
Ju
26S
the
wa
gre
joy
in
Jer
for
sin
the
tim
of
[a]S
the
son
of
Da
kin
of

Isr
the
hac
bec
not
lik
thi
in
Jer
[27]T
the
pri
the
Lev
arc
and
[a]bl
the
pec
and
the
voi
wa
hea
and
the
pra
car
up
to
[b]H
hol
dw
pla
to
hea

2
Ch
31

Re
of
He

1
wh
all
thi
wa
fin
all
Isr
wh
we
pre
we
ou
to
the
cit
of
Ju
an
[a]br
the
sa
pil
in
pie
cu
do
the
wo
im
an
thr
do
the
*hi
pla
an

the
alt
—
fro
all
Ju
Be
Ep
an
Ma
—
un
the
ha
utt
de
the
all
Th
all
the
chi
of
Isr
ret
to
the
ow
cit
eve
ma
to
his
po

2
He
ap
[a]th
div
of
the
pri
an
the
Lev
acc
to
the

div eac ma acc to his ser the pri and Lev [b]fo bur off and pea off to ser to giv tha and to pra in the gat of the *ca of the LO

3Th kin als _app_ a *po

of
his
[a]po
for
the
bu
off
for
the
mo
an
eve
bu
off
the
bu
off
for
the
Sal
an
the
Ne
Mo
an
the
set
fea
as
it
is
wr
in
the
[b]La
of
the
LO
4
he

con
the
peo
wh
dw
in
Jer
to
con
[a]su
for
the
pri
an
the
Lev
tha
the
mi
dev
the
to
[b]th
Law
of
the
LO
5
soo
as
the
con
wa
cir
the
chi
of
Isr
bro
in

abu
[a]th
firs
of
gra
an
wi
oil
an
ho
an
of
all
the
pro
of
the
fie
an
the
bro
in
abu
the
[b]tit
of
eve
[6]An
the
chi
of
Isr
an
Ju
wh
dw
in
the
citi
of

Jud
bro
the
titl
of
oxe
and
she
als
the
[a]tit
of
hol
thi
wh
we
con
to
the
LO
the
Go
the
laid
in
hea

7
the
thi
mo
the
beg
lay
the
in
hea
and
the
fin
in

the
sev
mo
[8]Ar
wh
He
an
the
lea
ca
an
sa
the
he
the
ble
the
LO
an
Hi
pe
Isr
[9]Th
He
qu
the
pri
an
the
Le
co
the
he
[10]A
Az
the
chi
pri
fro
the

[a]ho
of
Za
ans
hi
an
sai
[b]“S
the
pe
beg
to
bri
the
off
int
the
ho
of
the
LO
we
ha
ha
en
to
eat
an
ha
ple
lef
for
the
LO
has
ble
His
pe
an
wh

is
lef
is
thi
gre
[c]ab
1
He
cor
the
to
[a]pr
roo
in
the
ho
of
the
LO
anc
the
pre
the
12T
the
fai
bro
in
the
off
the
titl
anc
the
dec
thi
[a]Co
the
Lev
hac

ch
of
the
an
Sh
his
br
wa
the
ne
[13]J
Az
Na
As
Je
Jo
Eli
Is
Ma
an
Be
we
ov
un
the
ha
of
Co
an
Sh
his
br
at
the
co
of
He
the
ki
an

Az
the
[a]ru
of
the
ho
of
Go
14K
the
so
of
Im
the
Lev
the
kee
of
the
Ea
Ga
wa
ove
the
[a]fr
off
to
Go
to
dis
the
off
of
the
LO
an
the
mo
hol
thi

[15]A
un
hi
we
[a]E
Mi
Jes
Sh
Am
an
Sh
his
fai
ass
in
[b]th
cit
of
the
pri
to
dis
[c]al
to
the
bre
by
div
to
the
gre
as
we
as
the
sm

1
tho
ma
fro

thr
yea
old
and
up
wh
we
wr
in
the
ger
the
dis
to
eve
wh
ent
the
ho
of
the
LO
his
dai
poi
for
the
wo
of
his
ser
by
his
div
17a
to
the
pri
wh
we

wr
in
the
ger
acc
to
the
fat
ho
and
to
the
Lev
[a]fro
two
yea
old
and
up
acc
to
the
wo
by
the
div
18a
to
all
wh
we
wr
in
the
ger
—
the
litt
one
and

the
wi
the
so
and
da
the
wh
co
of
the
—
fo
in
the
fai
the
[*]sa
the
in
ho

1
fo
the
so
of
Aa
the
pri
wh
we
in
[a]th
fie
of
the
co
la
of
the

citi
in
eve
sin
city
the
wer
me
wh
we
[b]de
by
nar
to
dis
po
to
all
the
ma
am
the
pri
and
to
all
wh
we
list
by
ger
am
the
Lev

2
He
dic
thr
all
Juc

an
he
[a]di
wh
wa
go
an
rig
an
tru
bef
the
LO
his
Go
[21]A
in
eve
wo
tha
he
beg
in
the
ser
of
the
ho
of
Go
in
the
law
an
in
the
co
to
see
his

Go
he
dic
it
wi
all
his
hea
So
he
[a]pr

2
Ch
32

S
Bo
Ag
the
LO

1
[a]th
dec
of
fai
Ser
kin
of
Ass
car
and
ent
Jud
he
end
aga
the
for
citi
thi
to

wi
the
ov
to
hi
[2]A
wh
He
sa
tha
Se
ha
co
an
tha
his
pu
wa
to
ma
wa
ag
Je
[3]he
co
wi
his
lea
an
*co
to
sto
the
wa
fro
the
sp
wh
we
ou

the
cit
anc
the
hel
hin
4Tl
ma
pe
gat
tog
wh
sto
all
the
[a]sp
anc
the
bro
tha
ran
thr
the
lan
say
“W
sho
the
*ki
of
Ass
con
anc
fin
mu
wa
5Ar
[a]he
str
hin

[b]bu
up
all
the
wa
tha
wa
bro
rai
it
up
to
the
tow
an
bui
an
wa
ou
als
he
rep
[*]th
[c]M
in
the
Cit
of
Da
an
ma
[*]w
an
shi
in
abu
6 Th
he
set
mi

cap
ove
the
peo
gat
the
tog
to
hi
in
the
ope
squ
of
the
cit
gat
an
[a]ga
the
enc
say
7[a]“
stre
an
cou
[b]do
no
be
afr
no
dis
bef
the
kin
of
Ass
no
bef
all

the mu tha *is* wi hir for [c]*th* *are* mo wi us tha wi hir [8]W hir *is* an [a]ar of fle bu [b]w us *is* the LO ou Go to hel us an to fig ou bat An the

pe
we
str
by
the
wo
of
He
kin
of
Ju

9
thi
Se
kin
of
As
se
his
se
to
Je
(b
he
an
all
the
fo
wi
hi
lai
sie
ag
La
to
He
ki
of
Ju
an

to
all
Ju
wh
we
in
Je
say
[10][a]
say
Se
kin
of
As
‘In
wh
do
yo
tru
tha
yo
re
un
sie
in
Je
[11]D
no
He
pe
yo
to
giv
yo
ov
to
die
by
fa
an

by
thi
say
[a]“T
LO
ou
Go
wi
del
us
fro
the
ha
of
the
kin
of
Ass
12[a]
no
the
san
He
tak
aw
His
hig
pla
1a
His
alt
and
co
Ju
an
Je
say
“Y
sha
wo

bef
one
alt
and
bui
inc
on
[b]it’
13 D
you
not
kno
wh
I
and
my
fat
hav
don
to
all
the
peo
of
oth
lan
[a]W
the
god
of
the
nat
of
tho
lan
in
any
wa
abl
to

del
the
lan
ou
of
my
ha
[14]W
wa
the
am
all
the
goo
of
tho
nat
tha
my
fat
utt
des
tha
cou
del
his
peo
fro
my
ha
tha
you
Go
sho
be
abl
to
del
you
fro

my
[a]ha
15N
the
[a]do
no
let
He
dec
you
or
per
you
lik
thi
and
do
no
bel
hin
for
no
goo
of
any
nat
or
kin
wa
abl
to
del
his
peo
fro
my
han
or
the
han

of
my
fat
Ho
mu
les
wi
you
Go
del
you
fro
my
ha
”

1
his
ser
spo
aga
the
LO
Go
and
aga
His
ser
He

1
als
wr
let
to
rev
the
LO
Go
of
Isr
and

to
spe
aga
Hi
say
[a]“*A*
the
go
of
the
na
of
oth
la
ha
no
del
the
pe
fro
my
ha
so
the
Go
of
He
wi
no
del
His
pe
fro
my
[b]ha
18[a]
the
cal
ou
wi

a lou voi in *H to the peo of Jer wh *we* on the wa to frig the and tro the tha the mi tak the city [19]A the spo aga the Go of Jer as aga the goo of

the
peo
of
the
ear
—
[a]th
wo
of
me
har
S
Def
and
Dea
2
bec
of
thi
Kin
He
and
[b]th
pro
Isa
the
son
of
Am
pra
and
cri
out
to
hea
21[a]
the
LO
ser
an

ang
wh
cut
do
eve
mi
ma
of
val
lea
an
cap
in
the
ca
of
the
ki
of
Ass
So
he
ret
[b]sh
to
his
ow
la
An
wh
he
ha
go
int
the
te
of
his
go
so

of
his
ow
off
str
hir
do
wi
the
sw
the
2
the
LO
sav
He
and
the
inh
of
Jer
fro
the
har
of
Ser
the
kin
of
Ass
and
fro
the
har
of
all
oth
and
*gu
the

on
eve
sid
[23]A
ma
bro
gif
to
the
LO
at
Jer
and
[a]pr
to
He
kin
of
Jud
so
tha
he
wa
[b]ex
in
the
sig
of
all
nat
the

I
Hu
Hin

2
tho
day
He
wa
sic

an
nea
dea
an
he
pra
to
the
LO
an
He
spo
to
hi
an
ga
hi
a
sig
25B
He
[a]di
no
rep
acc
to
the
fav
sho
hi
for
[b]hi
hea
wa
lift
up,
[c]th
wr
wa
loo

ove
hir
anc
ove
Juc
anc
Jer
26[a]
He
hur
hir
for
the
pri
of
his
hea
he
anc
the
inh
of
Jer
so
tha
the
wr
of
the
LO
dic
no
con
upo
the
[b]in
the
day
of
He

I
We
and
Ho

2
had
ver
gre
ric
and
ho
An
he
ma
hin
tre
for
silv
for
gol
for
pre
sto
for
spi
for
shi
and
for
all
kin
of
des
iter
28s
for
the
har
of
gra

wi
an
oil
an
sta
for
all
ki
of
liv
an
[*]fo
for
flo
29M
he
pro
cit
for
hi
an
pos
of
flo
an
her
in
abu
for
[a]G
ha
giv
hi
ver
mu
pro
30[a]
sa
He
als

sto
the
wa
ou
of
Up
Gil
and
[*]br
the
wa
by
tur
to
the
we
sid
of
the
Cit
of
Da
He
[b]pr
in
all
his
wo

3
reg
the
am
of
the
pri
of
Bal
wh
the
[a]se

to
hir
to
ing
abo
the
wo
tha
wa
do
in
the
lar
Go
wi
fro
hir
in
ord
to
[b]te
hir
tha
He
mi
kn
all
tha
wa
in
his
hea
1
of
He
3
the
res
of
the

act
of
He
an
his
go
in
the
ar
wr
in
[a]th
vis
of
Isa
the
pr
the
so
of
Am
an
in
the
[b]b
of
the
ki
of
Ju
an
Isr
33[a]
He
*re
wi
his
fat
an
the

bu hin in the upp ton of the son of Da and all Jud and the inh of Jer [b]ho hin at his dea Th Ma his son rei in his pla.

2 Ch 33

I Re in Jud

1

[a]*w*
tw
yea
old
wh
he
bec
kin
an
he
rei
fift
fiv
yea
in
Jer
[2]Bu
he
did
evi
in
the
sig
of
the
LO
acc
to
the
[a]ab
of
the
nat
wh
the
LO
had
cas
ou
bef

the
chi
of
Isra
3Fo
he
reb
the
*hi
pla
wh
He
his
fat
had
[a]br
dov
he
rai
up
alt
for
the
Baa
and
[b]m
wo
im
and
he
wo
[c]all
*th
hos
of
hea
and
ser
the
4He

als
bu
alt
in
the
ho
of
the
LO
of
wh
the
LO
ha
sai
[a]“I
Je
sha
My
na
be
for
5A
he
bu
alt
for
all
the
ho
of
hea
[a]in
the
tw
co
of
the
ho
of

the
LO
[6][a]A
he
cau
his
son
to
pas
thr
the
fire
in
the
Va
of
the
Son
of
Hin
he
pra
[b]so
use
wit
and
son
and
[c]co
me
and
spi
He
did
mu
evi
in
the
sig
of

the
LO
to
pro
Hir
to
ang
7[a]H
eve
set
a
car
im
the
ido
wh
he
had
ma
in
the
*ho
of
Go
of
wh
Go
had
sai
to
Da
and
to
Sol
his
son
[b]“I
thi
hou
and

in
Jer
wh
I
hav
che
ou
of
all
the
tril
of
Isr
I
wi
pu
My
nar
for
8[a]a
I
wi
no
aga
rer
the
foo
of
Isr
fro
the
lar
wh
I
hav
app
for
you
fat
—

onl
if
the
are
car
to
do
all
tha
I
hav
cor
the
acc
to
the
wh
law
anc
the
sta
anc
the
orc
by
the
har
of
Mc
[9]Sc
Ma
sec
Juc
anc
the
inh
of
Jer
to
do

mo
evi
tha
the
nat
wh
the
LO
had
des
bef
the
chi
of
Isr

I
Res
Aft
Rep

1
the
LO
spo
to
Ma
and
his
peo
but
the
wo
not
*lis
11a
the
LO
bro
upo
the
the

cap
of
the
arm
of
the
kin
of
Ass
wh
too
Ma
wit
*ho
[b]bo
hin
wit
*br
fet
and
car
hin
off
to
Bal
12N
wh
he
wa
in
aff
he
imp
the
LO
his
Go
and
[a]hu
hin

gre
bef
the
Go
of
his
fat
[13]a
pra
to
Hi
and
He
[a]re
his
ent
hea
his
sup
and
bro
hir
bac
to
Jer
int
his
kin
Th
Ma
[b]kn
tha
the
LO
wa
Go

1
thi
he
bu

a wa ou the Cit of Da on the we sid of [a]Gi in the val as far as the ent of the Fis Ga and *it* [b]en Op and he rai it to a ver gre hei Th he pu mi cap in all the for cit of Juc 15H toc aw [a]th for goo anc the ido fro the hou of the LO anc all the alt tha he hac bui in the mo of the hou of

the
LO
an
in
Jer
an
he
cas
the
ou
of
the
cit
16H
als
rep
the
alt
of
the
LO
sac
pea
off
an
[a]th
off
on
it,
an
co
Ju
to
ser
the
LO
Go
of
Isr
17[a]

the
peo
stil
sac
on
the
*hi
pla
but
onl
to
the
LO
the
Go

I
of
Mo

1
the
res
of
the
act
of
Ma
his
pra
to
his
Go
and
the
wo
of
[a]th
see
wh
spo
to

hir
in
the
nar
of
the
LO
Go
of
Isra
ind
the
are
wr
in
the
*bo
of
the
kin
of
Isra
[19]*A*
his
pra
and
how
Go
rec
his
ent
and
all
his
sin
and
tre
and
the
site

wh
he
bu
*hi
pla
and
set
up
wo
im
and
car
im
bef
he
wa
hu
ind
the
are
wr
am
the
say
of
*H
20a
Ma
res
wi
his
fat
and
the
bu
hi
in
his
ow
ho

Th
his
sor
Am
rei
in
his
pla

A
Re
and
Dea

2
wa
two
two
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
two
yea
in
Jer
[22]B
he
did
evi
in
the
sig
of
the
LO
as

his fat Ma ha do for Am sa to all the ca im wh his fat Ma ha ma an se the [23]A he did not hu hi bef the LO [a]as his fat Ma ha hu hi bu Am

tre
mo
an
mo
2
his
ser
co
aga
hi
an
[b]ki
hi
in
his
ow
ho
25B
the
pe
of
the
la
exe
all
tho
wh
ha
co
aga
Ki
Am
Th
the
pe
of
the
la
ma
his

sor
Jos
kin
in
his
pla

2
Ch
34

J
Rei
in
Jud

1
[a]*we*
eig
yea
old
wh
he
bec
kin
and
he
rei
thi
one
yea
in
Jer
[2]An
he
did
wh
wa
rig
in
the
sig
of

the LO and wa in the wa of his fat Da *he* did *no* tur asi to the rig han or to the lef

3 in the eig yea of his rei wh he wa stil [a]yo he beg to

[b]se
the
Go
of
his
fat
Da
an
in
the
tw
yea
he
beg
[c]to
pu
Ju
an
Jer
[d]of
the
[*]hi
pla
the
wo
im
the
ca
im
an
the
mo
im
4[a]T
bro
do
the
alt
of
the

Baa
in
his
pre
and
the
inc
alt
wh
we
abo
the
he
cut
dov
and
the
wo
im
the
car
im
and
the
mo
im
he
bro
in
pie
and
ma
du
of
the
[b]an
sca
it
on
the

gra of tho wh had sac to the

5He als [a]bu the bon of the pri on the [b]al and cle Jud and Jer

6An *so he did* in the citi of Ma Ep and Sim as far as Na

an
all
ar
wit
[*]ax
7W
he
ha
bro
do
the
alt
an
the
wo
im
ha
[a]be
the
ca
im
int
po
an
cut
do
all
the
in
alt
thr
all
the
la
of
Isr
he
ret
to
Je

Fin
the
Bo
of
the
La

the
eig
yea
of
his
rei
wh
he
ha
pu
the
la
an
the
*te
he
se

[b]Sh
the
son
of
Az
Ma
the
[c]go
of
the
city
and
Joa
the
son
of
Joa
the
rec
to
rep
the
ho
of
the
LO
his
Go
9W
the
can
to
Hil
the
hig
pri
the
del
[a]th
mo

tha
wa
bro
int
the
ho
of
Go
wh
the
Lev
wh
kep
the
doo
ha
gat
fro
the
ha
of
Ma
an
Ep
fro
all
the
[b]re
of
Isra
fro
all
Ju
an
Be
an
wh
the
ha
bro

bac to Jer [10]T the pu *it* in the han of the for wh had the ove of the ho of the LO and the gav it to the wo wh wo in the ho of the LO to rep

and
res
the
hou
[11]T
gav
it
to
the
cra
and
bui
to
buy
hev
sto
and
tim
for
bea
and
to
flo
the
hou
wh
the
kin
of
Jud
had
des
[12]A
the
me
did
the
wo
fai
Th

ove
we
Jal
anc
Ob
the
Lev
of
the
sor
of
Me
anc
Zec
anc
Me
of
the
sor
of
the
Ko
to
sup
Oth
of
the
Lev
all
of
wh
we
ski
wit
ins
of
mu
13*w*
[a]ov
the

bu
be
an
we
ov
of
all
wh
di
wo
in
an
ki
of
se
[b]A
so
of
th
Le
we
sc
of
an
ga
1
wh
th
br
ou
th
m
th
wa
br
in
th
ho
of
th

LO
Hil
the
pri
[a]fo
the
Bo
of
the
Lav
of
the
LO
giv
by
Mo
15T
Hil
ans
anc
sai
to
Sha
the
scr
“I
hav
fou
the
Bo
of
the
Lav
in
the
hou
of
the
LO
An

Hil
gav
the
[a]bo
to
Sha
16S
Sha
car
the
boo
to
the
kin
bri
the
kin
wo
say
“A
tha
wa
cor
to
you
ser
the
are
doi
17A
the
hav
*ga
the
mo
tha
wa
fou
in
the

ho of the LO an hav del it int the han of the ove an the wo

18T Sha the scr tol the kin say “H the pri has giv me a boo An Sha rea it bef the kin

1
it
hap
wh
the
kin
hea
the
wo
of
the
Lav
tha
he
tor
his
clo
20T
the
kin
cor
Hil
[a]Al
the
son
of
Sha
[*]Al
the
son
of
Mi
Sha
the
scr
and
Asa
a
ser
of

the
kin
say
[21]“
ing
of
the
LO
for
me
and
for
tho
wh
are
lef
in
Isr
and
Jud
con
the
wo
of
the
boo
tha
is
fou
for
gre
is
the
wr
of
the
LO
tha
is
po

ou
on
us,
bec
ou
fat
hav
no
[a]ke
the
wo
of
the
LO
to
do
acc
to
all
tha
is
wr
in
thi
boo
2
Hil
an
tho
the
kin
ha
app
we
to
Hu
the
pro
the
wi

of
Sha
the
sor
of
*To
the
sor
of
*Ha
kee
of
the
wa
(Sh
dw
in
Jer
in
the
Sec
Qu
An
the
spo
to
her
to
tha
eff

2
she
ans
the
“Tl
say
the
LO
Go
of

Isr
‘Te
the
ma
wh
ser
yo
to
Me
24 “
say
the
LO
‘Be
I
wi
[a]br
cal
on
thi
pla
an
on
its
inh
all
the
cu
tha
are
wr
in
the
[b]bo
wh
the
ha
rea
be
the

kin
of
Juc
[25]b
the
hav
for
Me
anc
bu
inc
to
oth
goo
tha
the
mi
pro
Me
to
ang
wi
all
the
wo
of
the
hai
Th
My
wr
wi
be
po
ou
on
thi
pla
anc
no

be
qu
”
’

[26]B
as
for
the
kin
of
Ju
wh
ser
you
to
inq
of
the
LO
in
thi
ma
you
sha
spe
to
hin
‘Th
say
the
LO
Go
of
Isr
“*C*
the
wo
wh
you
hav

hea
—
[27]b
yo
hea
wa
ter
an
yo
hu
yo
bef
Go
wh
yo
hea
His
wo
aga
thi
pla
an
aga
its
inh
an
yo
hu
yo
bef
Me
an
yo
tor
yo
clo
an
we
bef
Me

I als hav hea *you* say the [a]LO

28“ I wi gat you to you fat and you sha be gat to you gra in pea and you eye sha not see all the cal wh I wi bri on

thi
pla
anc
its
inh
’
”

So
the
bro
bac
wo
to
the
kin

Res
Tru

Wo
2
the
kin
ser
an
gat
all
the
eld
of
Ju
an
Jer
[30]T
kin
we
up
to
the
ho
of
the
LO
wi
all
the
me
of
Ju
an
the
inh
of
Jer
—
the
pri
an
the

Lev
an
all
the
pe
gre
an
sm
An
he
[a]re
in
the
hea
all
the
wo
of
the
Bo
of
the
Co
wh
ha
be
fou
in
the
ho
of
the
LO
[31]T
the
kin
[a]st
in
[b]hi
pla

and
ma
a
[c]co
bef
the
LO
to
fol
the
LO
and
to
kee
His
cor
and
His
tes
and
His
sta
wit
all
his
hea
and
all
his
sou
to
per
the
wo
of
the
cov
tha
we
wr

in
thi
boo
[32]A
he
ma
all
wh
we
pre
in
Jer
and
Ber
tak
a
sta
So
the
inh
of
Jer
did
acc
to
the
cov
of
Go
the
Go
of
the
fat
[33]T
Jos
ren
all
the
[a]ab

fro
all
the
cou
tha
bel
to
the
chi
of
Isr
and
ma
all
wh
we
pre
in
Isr
[*]di
ser
the
LO
the
Go
[b]Al
his
day
the
did
not
dep
fro
fol
the
LO
Go
of
the
fat

2
Ch
35

J
Ke
the
Pas

1
[a]Jo
kep
a
Pas
to
the
LO
in
Jer
and
the
sla
the
Pas
lam
on
the
[b]fo
day
of
the
firs
mo
2An
he
set
the
pri
in
the
[a]du
and

[b]en
the
for
the
ser
of
the
ho
of
the
LO
3Th
he
sai
to
the
Lev
[a]wh
tau
all
Isra
wh
we
hol
to
the
LO
[b]“P
the
hol
ark
[c]in
the
ho
wh
Sol
the
son
of
Da

kin
of
Isr
bur
[d]*It*
sho
no
lon
be
a
bur
on
you
sho
No
ser
the
LO
you
Go
and
His
peo
Isr
4Pr
you
[a]ac
to
you
fat
*ho
acc
to
you
div
fol
the
[b]w
ins
of

Da
kin
of
Isra
and
the
[c]wi
ins
of
Sol
his
son
5An
[a]sta
in
the
hol
pla
acc
to
the
div
of
the
fat
hou
of
you
bre
the
lay
peo
and
acc
to
the
div
of
the
fat

ho
of
the
Lev
[6]So
sla
the
Pas
off
[a]co
you
an
pre
the
for
you
bre
tha
the
ma
do
acc
to
the
wo
of
the
LO
by
the
ha
of
Mo
[7]
Jos
[a]ga
the
lay
pe
lan

anc
you
goa
fro
the
flo
all
for
Pas
off
for
all
wh
we
pre
to
the
nu
of
thi
tho
as
we
as
thr
tho
cat
the
we
fro
the
kir
[b]po
8Ar
his
[a]le
gav
wi
to
the

pe
to
the
pri
an
to
the
Le
Hi
Ze
an
Je
ru
of
the
ho
of
Go
ga
to
the
pri
fo
the
Pa
off
tw
tho
six
hu
fro
the
flo
an
thr
hu
cat
[9]Al
[a]Co
his

bro
Sh
and
Ne
and
Ha
and
Jei
and
Jo
chi
of
the
Lev
gav
to
the
Lev
for
Pas
off
fiv
tho
fro
the
floo
and
fiv
hu
cat

1
the
ser
wa
pre
and
the
pri
[a]st
in

the
pla
an
the
[b]Le
in
the
div
acc
to
the
kin
co
[11]A
the
sla
the
Pa
off
an
the
pri
[a]sp
the
blo
wi
the
ha
wh
the
Lev
[b]sk
the
an
[12]T
the
re
the
bu
off

tha
the
mi
giv
the
to
the
div
of
the
fat
ho
of
the
lay
pe
to
off
to
the
LO
as
it
is
wr
[a]in
the
Bo
of
Mo
An
so
the
did
wi
the
cat
13 A
the
[a]ro

the
Pas
off
wit
fire
acc
to
the
orc
bu
the
oth
hol
off
the
[b]bo
in
po
in
cal
an
in
pa
an
div
the
qu
am
all
the
lay
pe
14T
aft
the
pre
po
for
the
an

for
the
pri
be
the
pri
the
so
of
Aa
we
bu
in
off
bu
off
an
fat
un
nig
the
the
Le
pre
po
for
the
an
for
the
pri
the
so
of
Aa
15A
the
sin
the
so

of Asa *we* in the pla acc to the [a]co of Da Asa He and Jed the kin see Als the gat [b]w at eac gat the dic not hav to lea the pos bec the bre the Lev pre

po
for
the
1
all
the
ser
of
the
LO
wa
pre
the
sar
day
to
kee
the
Pas
anc
to
off
bu
off
on
the
alt
of
the
LO
acc
to
the
cor
of
Kin
Jos
[17]A
the
chi

of
Isr
wh
we
pre
kep
the
Pas
at
tha
tim
an
the
Fea
of
[a]U
Bre
for
sev
day
18[a]
ha
bee
no
Pas
kep
in
Isr
lik
tha
sin
the
day
of
Sa
the
pro
an
no
of

the
kin
of
Isr
ha
kep
suc
a
Pas
as
Jos
kep
wit
the
pri
an
the
Lev
all
Ju
an
Isr
wh
we
pre
an
the
inh
of
Jer
19I
the
eig
yea
of
the
rei
of
Jos
thi

Pas
wa
kep

J
Die
in
Ba

[2]
all
thi
wh
Jos
ha
pre
the
te
Ne
kin
of
Eg
ca
up
to
fig
aga
[b]Ca
by
the
Eu
and
Jos
we
ou
aga
hin
[21]B
he
se
me
to

hir
say
“W
hav
I
to
do
wit
you
kir
of
Juc
I
hav
no
cor
aga
you
thi
day
bu
aga
the
ho
wi
wh
I
hav
wa
for
Go
cor
me
to
ma
has
Re
fro
me
wit

Go
wh
is
wi
me
les
He
de
yo
[22]N
Jos
wo
no
tu
his
fac
fro
hi
bu
[a]di
hi
so
tha
he
mi
fig
wi
hi
an
di
no
he
the
wo
of
Ne
fro
the
mo
of

Go
So
he
car
to
figl
in
the
Va
of
Me

2
the
arc
sho
Kir
Jos
and
the
kin
sai
to
his
ser
“Ta
me
aw
for
I
am
sev
wo
24a
ser
the
too
hir
out
of
tha

cha
an
pu
hi
in
the
se
cha
tha
he
ha
an
the
bro
hi
to
Je
So
he
die
an
wa
bu
in
on
of
the
to
of
his
fat
An
[b]al
Ju
an
Je
mo
for
Jo
2

als
[a]la
for
[b]Jo
An
to
thi
day
[c]al
the
sin
me
an
the
sin
wo
spe
of
Jos
in
the
lan
[d]Th
ma
it
a
cus
in
Isr
an
ind
the
are
wr
in
the
Lan

2
the
res

of the act of Jos and his goo acc to *wh* *wa* wr in the Lav of the LO [271] his dec fro firs to las inc the *are* wr in the boo of the kin of Isr and Jud

2
Ch
36

T
Re
and
Ca
of
Jeh

1
[a]th
pe
of
the
lan
too
Jeh
the
son
of
Jos
and
ma
him
kin
in
his
fat
pla
in
Jer
2* J
wa
tw
thr
yea
old
wh
he
bec

kir
anc
he
rei
thr
mo
in
Jer
[3]N
the
kir
of
Eg
dep
hir
at
Jer
anc
he
imp
on
the
lar
a
tril
of
one
hur
tal
of
silv
anc
a
tal
of
gol
[4]Th
the
kir
of

Eg
ma
**Je*
bro
Eli
kin
ove
Jud
and
Jer
and
cha
his
nar
to
Jeh
An
Ne
too
*Je
his
bro
and
car
hin
off
to
Eg

Re
and
Ca
of
Jeh

5
wa
two
fiv
yea
old

wh
he
bec
kir
anc
he
rei
ele
yea
in
Jer
An
he
dic
[b]ev
in
the
sig
of
the
LO
his
Go
6[a]N
kir
of
Bal
car
up
aga
hir
anc
bot
hir
in
*br
fett
to
[b]ca
hir

off
to
Ba
7[a]N
als
ca
off
so
of
the
art
fro
the
ho
of
the
LO
to
Ba
an
pu
the
in
his
te
at
Ba
8N
the
res
of
the
act
of
Jel
the
ab
wh
he
di

an
wh
wa
fou
ag
hir
inc
the
are
wr
in
the
boo
of
the
kir
of
Isr
an
Ju
Th
*Je
his
son
rei
in
his
pla

Re
an
Ca
of
Jeh

wa
*ei
yea
old
wh

he
bec
kin
and
he
rei
in
Jer
thr
mo
and
ten
day
An
he
dic
evi
in
the
sig
of
the
LO
10A
the
tur
of
the
yea
[a]Ki
Ne
sur
hin
and
too
hin
to
Bal
[b]w
the

cos
art
fro
the
ho
of
the
LO
an
ma
[c]Ze
bro
kin
ov
Ju
an
Jer

Z
Re
in
Ju

1
wa
tw
on
yea
old
wh
he
be
kin
an
he
rei
ele
yea
in
Jer
[12]H
did

evi
in
the
sig
of
the
LO
his
Go
an
[a]di
no
hu
hir
bef
Jer
the
pro
wh
spo
fro
the
mo
of
the
LO
[13]*A*
he
als
[a]re
aga
Kin
Ne
wh
had
ma
hir
sw
an
oat

by
Go
bu
he
[b]st
his
ne
an
ha
his
he
ag
tu
to
th
LO
Go
of
Isr
14
all
th
lea
of
th
pri
an
th
pe
tra
mo
an
mo
ac
to
all
th
ab
of
th

nat
anc
def
the
ho
of
the
LO
wh
He
had
cor
in
Jer
T
Fal
of
Jer
1
the
LO
Go
of
the
fat
ser
wa
to
the
by
His
me
ris
up
ear
anc
ser
the
bec
He

had
con
on
His
peo
and
on
His
dw
pla
16B
[a]th
mo
the
me
of
Go
[b]de
His
wo
and
[c]sc
at
His
pro
un
the
[d]w
of
the
LO
aro
aga
His
peo
till
the
wa
no
ren

1
He
bro
aga
the
the
kin
of
the
Ch
wh
bki
the
yo
me
wi
the
sw
in
the
ho
of
the
sa
an
ha
no
co
on
yo
ma
or
vir
on
the
ag
or
the
we
He

gav
the
all
int
his
har
18[a]
all
the
art
fro
the
ho
of
Go
gre
anc
sm
the
tre
of
the
ho
of
the
LO
anc
the
tre
of
t1h
kir
anc
of
his
lea
all
the
he
too

to
Bal
19[a]
the
bu
the
ho
of
Go
bro
do
the
wa
of
Jer
bu
all
its
pal
wi
fir
an
des
all
its
pre
pos
20A
[a]th
wh
esc
fro
the
sw
he
ca
aw
to
Bal
[b]w

the
bee
ser
to
hin
and
his
son
un
the
rul
of
the
kin
of
Per
21 t
ful
the
wo
of
the
LO
by
the
mo
of
[a] Je
un
the
lan
[b] ha
enj
her
Sal
As
lon
as
she
lay

des
[c]sh
kep
Sal
to
ful
sev
yea

T
Pro
of
Cy

2
in
the
firs
yea
of
Cy
kin
of
Per
tha
the
wo
of
the
LO
by
the
mo
of
[b]Je
mi
be
ful
the
LO
sti
up

the
spi
of
[c]Cy
kin
of
Per
so
tha
he
ma
a
pro
thr
all
his
kin
and
als
put
it
in
wr
say

2

Ch

1

2
Ch
2

My
prayer
is…

I
declare…

____

____

____

____

____

____

____

How do you struggle in this area?

- Convicted
- Hopeful

Obediently
In
His
timing
Wisely

Miracles
Salvations

4
the
wh
cro
wh
ca
tog
to
tha
sig
see
wh
ha
bee
do
bea
the
bre
an
ret
49a
all

His
acc
and
the
wo
wh
fol
Hi
fro
Ga
sto
at
a
dis
wa
the
thi

J
Bu
in
Jos
To

5
bel
the
wa
a
ma
na
Jos
a
cou
me
a
goo
and
jus
ma
[51]H
had
not

con
to
the
dec
and
dec
He
wa
fro
Ari
a
cit
of
the
Jew
[a]w
hir
wa
als
wa
for
the
kin
of
Go
52T
ma
we
to
Pil
and
ask
for
the
boo
of
Jes
53[a]
he
too
it

do
wr
it
in
lin
an
lai
it
in
a
tor
tha
wa
hev
ou
of
the
roc
wh
no
on
ha
eve
lai
bef
[54]T
day
wa
[a]th
Pre
an
the
Sal
dre
nea

5
the
wo
[a]w
ha
co

wi
Hi
fro
Ga
fol
aft
an
[b]th
ob
the
to
an
ho
His
bo
wa
lai
[56]T
the
ret
an
[a]pr
spi
an
fra
oil
An
the
res
on
the
Sal
[b]ac
to
the
co

24

Is

Ris

1
[a]on
the
firs
day
of
the
we
ver
ear
in
the
mo
the
[*]an
cer
oth
wo
wit
the
car
to
the
tor
[b]br
the
spi
wh
the
had
pre
2[a]B
the
fou
the
sto
rol
aw
fro
the

tor
3[a]T
the
we
in
anc
dic
not
fin
the
boc
of
the
Lor
Jes
4Ar
it
hap
as1
the
we
*gr
per
abc
thi
tha
[a]be
two
me
sto
by
the
in
shi
gar
5Th
as
the
we
afr
anc

bo
the
fac
to
the
ear
the
sai
to
the
“W
do
you
see
the
livi
am
the
dea
6H
is
no
her
bu
is
ris
[a]Re
ho
He
spo
to
you
wh
He
wa
stil
in
Ga
7sa
‘Th
Son

of
Ma
mu
be
[a]de
int
the
har
of
sin
me
anc
be
cru
anc
the
thi
day
rise
aga
”

8
[a]th
rer
His
wo
9[a]T
the
ret
fro
the
ton
anc
tol
all
the
thi
to
the
ele
anc

to
all
the
res
10I
wa
Ma
Ma
[a]Jo
Ma
the
mo
of
Ja
an
the
oth
wo
wi
the
wh
tol
the
thi
to
the
ap
11[a]
the
wo
see
to
the
lik
[*]id
tal
an
the
di
no
be

the
12a
Pet
arc
and
ran
to
the
ton
and
sto
do
he
sav
the
lin
clo
*ly
by
the
and
he
de
ma
to
hir
at
wh
had
hap

T
Ro
to
Em

1
bel
two
of
the
we
tra

tha
sar
day
to
a
vil
cal
Em
wh
wa
*se
mi
fro
Jer
[14]A
the
tal
tog
of
all
the
thi
wh
had
hap
[15]S
it
wa
wh
the
cor
and
rea
tha
[a]Je
Hir
dre
nea
and
we
wit

the
16B
[a]th
ey
we
res
so
tha
the
di
no
kn
Hi
1
He
sai
to
the
“W
ki
of
co
is
thi
tha
yo
ha
wi
on
an
as
yo
*w
an
are
sa
1
the
on
[a]w
na

wa
Cle
ans
an
sai
to
Hi
“A
Yo
the
on
str
in
Je
an
ha
Yo
no
kn
the
thi
wh
ha
the
in
the
da
1
He
sai
to
the
“W
thi
S
the
sai
to
Hi
“T
thi

co
Jes
of
Na
[a]w
wa
a
Pro
[b]m
in
de
an
wo
bef
Go
an
all
the
pe
20[a]
ho
the
chi
pri
an
ou
rul
del
Hi
to
be
co
to
de
an
cru
Hi
21B
we
we
ho

[a]th
it
wa
He
wh
wa
goi
to
rec
Isr
Inc
bes
all
thi
too
is
the
thi
day
sin
the
thi
hap
22Y
and
[a]ce
wo
of
ou
co
wh
arr
at
the
to
ea
ast
us.
23W
the
did

no
fin
His
boo
the
car
say
tha
the
hac
als
see
a
vis
of
ang
wh
sai
He
wa
ali
[24]A
[a]ce
of
tho
wh
we
wit
us
we
to
the
tor
anc
fou
it
jus
as
the
wo
hac

sai
bu
Hi
the
dic
no
see
2
He
sai
to
the
“O
foo
on
an
slo
of
hea
to
bel
in
all
tha
the
pro
hav
spo
26a
no
the
Ch
to
hav
suf
the
thi
an
to
ent
int

His
[b]gl
27*A*
beg
at
[a]M
and
[b]al
the
Pro
He
[*]ex
to
the
in
all
the
Scr
the
thi
con
Hin
T
Dis
Eye
Op
2
the
dre
nea
to
the
vil
wh
the
we
goi
and
[a]He
[*]in
tha

He
wo
hav
go
far
29B
[a]th
co
Hi
say
[b]“A
wi
us,
for
it
is
tow
eve
an
the
day
is
far
spe
An
He
we
in
to
sta
wi
the

3
it
ca
to
pas
as
[a]H
sat
at

the
tab
wit
the
tha
He
too
bre
ble
and
bro
it,
and
gav
it
to
the
[31]T
the
eye
we
ope
and
the
kno
Hir
and
He
var
fro
the
sig
[3
the
sai
to
one
and
“D
no
ou

hea
bu
wi
us
wh
He
tal
wi
us
on
the
roa
an
wh
He
op
the
Sc
to
us?
[33]S
the
ros
up
tha
ver
ho
an
ret
to
Je
an
fou
the
ele
an
tho
wh
we
wi
the

gat
tog
[34]S
“Th
Lor
is
ris
ind
and
[a]ha
app
to
Sin
[35]A
the
tol
abo
the
thi
tha
had
hap
on
the
roa
and
ho
He
wa
*kn
to
the
in
the
bre
of
bre

J
Ap
to
His

Dis

3
as
the
sai
the
thi
Jes
Hi
sto
in
the
mi
of
the
an
sai
to
the
“P
to
you
[37]B
the
we
ter
an
frig
an
sup
the
ha
see
[a]a
spi
[38]A
He
sai
to
the
“W

are
yo
tro
An
wh
do
do
ari
in
yo
hea
39B
My
ha
an
My
fee
tha
it
is
I
My
[a]Ha
Me
an
see
for
a
[b]sp
do
no
hav
fle
an
bo
as
yo
see
I
hav
4

He
hac
sai
thi
He
sho
the
His
har
anc
His
fee
41 B
wh
the
stil
dic
no
bel
[a]fo
joy
anc
ma
He
sai
to
the
[b]“H
you
any
foo
her
42 S
the
gav
Hir
a
pie
of
a
bro

fisl
*ar
sor
hor
43a.
He
toc
it
anc
ate
in
the
pre

T
Scr
Op

4
He
sai
to
the
a“T
are
the
wo
wh
I
spo
to
you
wh
I
wa
stil
wit
y1
tha
all
thi
mu
be

ful
wh
we
wr
in
the
Lav
of
Mo
anc
the
Pro
anc
the
Psa
cor
Me
45A
[a]He
ope
the
unc
tha
the
mi
cor
the
Scr
4
He
sai
to
the
[a]“T
it
is
wr
[*]ar
thu
it
wa

ne
for
the
Ch
to
suf
an
to
ris
fro
the
de
the
thi
da
[47]a
th
rep
an
[a]re
of
sin
sh
be
pr
in
Hi
na
[b]to
all
na
be
at
Je
[48]A
[a]y
are
wi
of
the
thi

49[a]
I
ser
the
Pro
of
My
Fat
upo
you
but
tar
in
the
city
[*]of
Jer
unt
you
are
end
wit
pow
fro
on
hig

Asc

5
He
led
the
out
[a]as
far
as
Bet
and
He
lift
up

His
har
anc
ble
the
51[a]
it
car
to
pas
wh
He
ble
the
tha
He
wa
par
fro
the
anc
car
up
int
hea
52[a]
the
wo
Hir
anc
ret
to
Jer
wit
gre
joy
53a
we
cor
[a]in
the

ter
*pr
an
ble
Go
*Ar

1

2

3

4

5

6

7

8

9

I
10

I
11

[11
a.
Ma
23

[11
b.
Ge
6:5
Tit
1:1

[11
*
Lit
eag
gra
or
rob

[11
a.
Ge
1:2
27

[11
a.
Is.
58
Da
4:2

(Lu
12
16

[1
*
Or
wh
is
ins

[1
a.
Ma
23

[1
b.
(M
6:7
8)

[1
c.
Jol
5:4

[1
a.
Ma
23
Ma

12
39
Lu
14
20

[11
*

Or
pl
of
ho

[11
a.
Ma
23

[11
b.
Ps.
5:9

[11
*

NU
om
sc
an
Ph
hy

[11
a.
Ma
23

[11
a.
Ma
23
Ac
7:5

[11
a.
Pro
1:2
Ma
23

[11
a.
Ge
4:8
2
Ch
36

[11
b.
2
Ch
24
21

[11
a.
Ma
23

[11
*
NU
An
wh
He
left
the

[11
a.
Ma
12

[11
*
NU
om
and
see

[11
*
NU
om
tha
the
mig
acc

Hi

Luke
12

[1
a.
Ma
16
Ma
8:1

[1
b.
Ma
16
Lu
11

[1
*
ye

[1
a.
Ma
10
Ma
4:2
Lu
8:1
(1
Co
4:5

[12
a.
Is.
51
8,
12
13
Jer
1:8
Ma
10

[12
b.
(Jo
15
15

[12
a.
Ps.
11

[12
a.
Ma
6:2

[12
*
Gr.
ass

a
coi
wo
abo
1/
of
a
de

[12
a.
1
Sa
2:3
Ma
10
(M
8:3
Ro
10
2
Ti
2:1
1
Jo
2:2

[12
b.
Ps.
11

[12
a.
Ma

10
(M
8:3
2
Tin
2:1

[12
a.
(M
12
32
Ma
3:2
1
Jol
5:1

[12
a.
Ma
6:2
10
Ma
13

[12
a.
(Jo
14

[12
a.
(Jo

18

[12
a.
(1
Ti
6:6
10)

[12
*
NU
all
co

[12
a.
Ec
11
1
Co
15
Ja
5:5

[12
b.
(Ec
2:2
3:1
5:1
8:1

[12
a.
Jol
27
Ps.
52
(Ja
4:1

[12
b.
Ps.
39
Jer
17

[12
a.
(M
6:2
Lul
12
1
Tin
6:1
19,
Jan
2:5
5:1
5)

[12
a.
Ma
6:2

33

[12
a.
Jo
38
Ps.
14

[12
*
do
yo
wo

[12
a.
1
Ki
10
7;
2
Ch
9:3
6

[12
*
clo

[12
a.

Ma
6:3
8:2
14
16

[12
a.
Ma
6:3
32

[12
a.
Ma
6:3

[12
*

NU
His
kin
an
the
thi

[12
a.
(Da
7:1
27
Ze
13
(M

11
26,
Lu
22
30)

[12
a.
Ma
19
Ac
2:4
4:3

[12
b.
Lu
11

[12
c.
Ma
6:2
Lu
16
(1
Ti
6:1

[12
a.
(E
6:1
1

Pet
1:1

[12
b.
(M
25
13

[12
a.
Ma
24

[12
a.
Ma
24
1
Th
5:2
(2
Pet
3:1
Re
3:3
16

[12
*
NU
not
hav
all

[12
a.
Ma
24
25
Ma
13
(Lu
21
36)
1
Th
5:6
(2
Pe
3:1

[12
a.
Ma
24
46)
25
(1
Co
4:2

[12
*
at
the
rig
tim

[12
a.
Ma
24
25
(Re
3:2

[12
a.
Ma
24
2
Pet
3:3
4

[12
a.
1
Th
5:3

[12
a.
Nu
15
De
25
(Jo
9:4
15
Ac
17

[12
b.
(Ja
4:1

[12
a.
(Le
5:1
Nu
15
(1
Ti
1:1

[12
a.
Lu
12

[12
a.
Ma
20
22,
23,
Ma
10

[12
b.
Jo
12
19

[12
a.
Ma
10
36

[12
b.
Mi
7:6
Jo
7:4
9:1
10
Ac
14

[12
a.
Ma
10
Ma
13

[12
a.
Ma
10
36

[12
a.

Ma
16
3

[12
a.
Jol
37

[12
a.
Lul
19
44

[12
a.
Pro
25
Ma
5:2
26

[12
b.
(Ps
32
Is.
55

[13
*
mi

[13
a.
Is.
5:2
Ma
21

[13
*
wa

[13
a.
(Jo
15

[13
*
NU
An
if
it
bec
fru
aft
tha
we
Bu
if
not

yo
ca

[1
*
str
up

[1
a.
Lu
7:
8:

[1
a.
Ma
16
Ac
9:

[1
a.
(Lu
6:
11
14
6);
Jo
5:

[1

b.
Ex
20
23

[13
c.
Ma
12
Ma
3:2
Lu
6:7
14

[13
a.
(M
7:5
23
Lu
14

[13
*
NU
M
Hy

[13
a.
Lu
19

[13
a.
Ma
5:1
20

[13
a.
Ma
13
32
Ma
4:3
32

[13
*
NU
om
lar

[13
a.
Ma
13

[13
*
yea

[13
*
Gr
sat
san
as
He
sea
app
2
pec
in
all

[13
a.
Ma
9:3
Ma
6:6

[13
a.
(M
7:1
20

[13
a.
(M
7:1

[13
b.

(Jo
7:3
8:2
13
Ro
9:3

[13
a.
(Ps
32
Is.
55

[13
b.
Ma
25
Re
22

[13
c.
Lu
6:4

[13
d.
Ma
7:2
25

[13
a.
(M
7:2
25

[13
b.
Ps.
6:8
(M
25
Tit
1:1

[13
a.
Ma
8:1
13
24

[13
b.
Ma
8:1

[13
a.
(M
19
20
Ma
10

[13
*
NU
In
tha
ver
hou

[13
a.
Lu
24
Ac
10
1
Co
15
(H
2:1
5:9
7:2

[13
*
Re

[13
a.
Ma
23
39
2
Ch
24

21

36

16

[1

a.

Le

26

32

Ps.

69

Is.

1:7

Je

22

Da

9:2

Mi

3:1

[1

b.

Ps.

11

Ma

21

Ma

11

Lu

19

Jo

12

[1

*

NU
M
om
ass

Luke
14

[14
a.
Ma
12

[14
*
NU
ad
or
no

[14
a.
(Ex
23
De
22
Lu
13

[14
*
NU
M
sor

[14
a.
Pro
25
7

[14
a.
Jo
22
Ps.
18
Pro
29
Ma
23
Lu
18
Ja
4:6
(1
Pe
5:5

[14
*
pu
do

[14
a.
Ne
8:1
12

[14
*
cri

[14
a.
(M
25
40

[14
a.
Re
19

[14
*
M
din

[14
a.
Ma
22
14

[14
a.
Pro
9:2

5

[14
*
crij

[14
a.
(M
21
22
Ac
13

[14
a.
De
13
33
Ma
10

[14
b.
Ro
9:1

[14
c.
Re
12

[14
a.
Ma
16
Ma
8:3
Lu
9:2
(2
Ti
3:1

[14
a.
Pr
24

[14
a.
Ma
19

[14
a.
Ma
5:1
(M
9:5

[14
*
rub

hea

Luke
15

[15
a.
(M
9:1
13

[15
a.
Ac
11
Ga
2:1

[15
*
we

[15
a.
Ma
18
14
1
Pet
2:2

[15
a.

(Ro
12

[15
b.
(Lu
19
1
Pet
2:1
25

[15
a.
(Lu
5:3

[15
b.
(M
2:1

[15
*
upr

[15
*
Gr
dro
a
val

coi
oft
wo
in
a
ter
pie
gar
by
ma
wo

[15
a.
Ma
12

[15
*
wa

[15
*
car
poc

[15
a.
Ex
9:2
10
Nu
22
Jos

7:2
1
Sa
15
30
26
2
Sa
12
24
17
Ps.
51
Ma
27

[15
a.
(Je
3:1
Ma
9:3
(Ac
2:3
Ep
2:1
17

[15
a.
Ps.
51

[15
*

NU
Qu
bri

[15
a.
Ma
8:2
Lu
9:6
15
Ro
11
(E
2:1
5;
5:1
Co
2:1
1
Ti
5:6

[15
a.
Lu
15

Luke
16

[16
*
squ

[16
a.
(Ro
14
2
Co
5:1
1
Pe
4:5
6)

[16
*
Gr.
bat
sa
as
He
bat
8
or
9
gal
eac

[16
*
Gr.
kor
sa
as
He
kor
10
or
12

bu
ea

[16
a.
(Jo
12
Ep
5:8
1
Th
5:5

[16
a.
Da
4:2
(M
6:1
19
Lu
11
(1
Ti
6:1
19

[16
*
Lit
in
Ar
we

[16
*
NU
it
fai

[16
a.
Ma
25
Lu
19

[16
a.
(1
Pe
1:3
4)

[16
a.
Ma
6:2
Ga
1:1

[16
a.
Ma
23

[16
*
Lit
tur
up
the
nos
at

[16
a.
Lu
10

[16
b.
(M
6:2
5,
16

[16
c.
1
Ch
28
2
Ch
6:3
Ps.
7:9
Pro
15
Jer
17

[16
d.
1
Sa
16
Ps.
10
Pr
6:1
19
16

[16
a.
Ma
3:1
12
4:1
11
13
Lu
7:2

[16
a.
Ps.
10
27
Is.
40
51
Ma
5:1
1
Pe

1:2

[16
*
Th
sm
str
in
a
He
let

[16
a.
Ma
5:3
19
Ma
10
1
Co
7:1
11

[16
*
live
in
lux

[16
*
NU
wh

fell

[16
a.
Ma
8:1

[16
a.
Zec
14

[16
b.
(Is
66
Ma
9:4
48

[16
a.
Jol
21
Lul
6:2
Jar
5:5

[16
a.
Is.

8:2
34
(Jo
5:3
45
Ac
15
17
(2
Ti
3:1

[16
a.
(Jo
5:4

[16
b.
Jo
12
11

Luke
17

[17
a.
(1
Co
11

[17
b.
Ma

18
7;
26
Ma
9:4
(2
Th
1:6
Ju
11

[17
*
stu
blo

[17
*
ca
on
of
the
litt
on
to
stu

[17
a.
(M
18
21

[17

b.
Lev
19
(Pr
17
Ga
6:1
Ja
5:1
20

[17
*
NU
om
ago
you

[17
*
M
om
to
you

[17
a.
Ma
17
21
(M
9:2
11
Lu
13

[17
a.
(Lu
12

[17
*
NU
om
the
res
of
v.
9;
M
om
hin

[17
a.
Jo
22
35
Ps.
16
Ma
25
Ro
3:1
11
(1
Co
9:1
17)
Ph

11

[17

a.

Lul

9:5

52

Joh

4:4

[17

a.

Lev

13

Nu

5:2

[17

a.

Lev

13

59

14

32

Ma

8:4

Lul

5:1

[17

a.

Lul

5:2

18

[17
a.
2
Ki
17
Lu
9:5
53
Jo
4:9

[17
a.
Ma
9:2
Ma
5:3
10
Lu
7:5
8:4
18

[17
a.
Lu
17

[17
b.
(Ro
14

[17
*
NU
rev
her
an
the

[17
*
in
you
mi

[17
a.
Ma
9:1
Ma
2:2
Lu
5:3
(Jo
17

[17
a.
Ma
24
Ma
13
(Lu
21

[17
*
NU
rev
her
an
the

[17
a.
Ma
24

[17
a.
Ma
26
27
31
Ma
8:3
9:3
10

[17
b.
Lu
9:2

[17
a.
Ma
24
39

[17
b.
(Ge
6:5
7)

[17
c.
(Ge
6:8
13

[17
d.
1
Pet
3:2

[17
a.
Ge
7:1
16

[17
b.
Ge
7:1
23

[17
a.

Ge
19

[17
a.
Ge
19
24
29
2
Pe
2:6
7

[17
a.
(M
16
1
Co
1:7
(Co
3:4
2
Th
1:7
1
Pe
1:7
4:1
1
Jo
2:2

[17

a.
Ma
24
18
Ma
13

[17
*
pos

[17
a.
Ge
19

[17
a.
Ma
10
16
Ma
8:3
Lu
9:2
Jo
12

[17
a.
Ma
24
41
(1

Th
4:1

[17
*
Or
pe

[17
a.
Ma
24
41

[17
*
NU
M
om
v.
36

[17
a.
Jo
39
Ma
24

Luke
18

[18

a.
Lu
11
10
Ro
12
(Ep
6:1
Co
4:2
1
Th
5:1

[1
*
res

[1
*
Av
me
on

[1
a.
Lu
11

[1
*
vin

[18
a.
Re
6:1

[18
a.
He
10
(2
Pe
3:8
9)

[18
a.
Pro
30
Lu
10
16

[18
a.
Ps.
13

[18
b.
Is.
1:1
58
Re
3:1

[18
a.
Jol
22
Ma
23
Lul
14
(Ja
4:6
1
Pe
5:5

[18
*
put
dov

[18
a.
Ma
19
15,
Ma
10
16

[18
a.
Ma
18
1
Co

14
1
Pet
2:2

[18
a.
Ma
18
19
Ma
10

[18
a.
Ma
19
29
Ma
10
30

[18
a.
Ps.
86
11

[18
a.
Ex.
20
16
De

5:1
20,
Ma
10
Ro
13

[18
b.
Ep
6:2
Co
3:2

[18
a.
Ph
3:6

[18
a.
Ma
6:1
20,
19
(1
Tin
6:1

[18
a.
Pro
11
Ma

19
Ma
10

[18
a.
Jol
42
Jer
32
Zec
8:6
Ma
19
Lul
1:3

[18
a.
Ma
19

[18
*
NU
our
ow

[18
a.
De
33

[18
a.
Jo
42

[18
a.
Ma
16
17
20
Ma
10
Lu
9:5

[18
b.
Ps.
22
(Is
53

[18
*
ful

[18
a.
Ma
26
27
29
41

Ma
14
15
19,
20,
31,
Lu
23
Jo
18
Ac
3:1

[18
a.
Ma
9:3
Lu
2:5
9:4
(Jo
10
12

[18
a.
Ma
20
34,
Ma
10
52

[18
a.

Ma
9:2

[18
a.
Lu
17

[18
a.
Lu
5:2
Ac
4:2
11

Luke
19

[19
a.
Jos
6:2
1
Ki
16

[19
a.
Jol
12

[19

*

NU
om
an
sav
hin

[1

*

hur

[1

*

hur

[1

a.
Ma
9:1
Lu
5:3
15

[1

*

gru

[1

a.
(Ps
41

[19
b.
Lul
3:1

[19
c.
Ex
22
Lev
6:5
Nu
5:7
1
Sar
12
2
Sar
12

[19
a.
Lul
3:8
13
(Ro
4:1
Ga
3:7

[19
b.
(Lu
13

[19
a.
Ma
18
(Lu
5:3
Ro
5:8

[19
a.
Ac
1:6

[19
a.
Ma
25
30,
Ma
13

[19
*
Gr.
mn
sar
as
He
mi
eac
wo
abo
thr

mo
sal

[19
a.
(Jo
1:1

[19
a.
Ma
25
23

[19
b.
Lu
16

[19
a.
Ma
25

[19
*
a
sev

[19

a.
2
Sa
1:1
Jo
15
(M
12

[19
b.
Ma
25

[19
a.
Ma
13
25
Ma
4:2
Lu
8:1

[19
a.
Ma
10

[19
a.
Ma
21
Ma

11

[1
b.
Ma
26
Jo
12

[1
c.
Jo
8:1
Ac
1:1

[1
*
M
Be

[1
a.
Lu
22

[1
a.
2
Ki
9:1
Ma

21
Ma
11

[19
a.
Lu
13
18

[19
a.
Ps.
11
Lu
13

[19
b.
Lu
2:1
(E
2:1

[19
a.
Ha
2:1

[19
a.
Is.

53
Jo
11

[19
a.
Ps.
95
8;
He
3:1

[19
b.
(Lu
1:7
79
Ac
10

[19
c.
(Ro
5:1

[19
a.
Is.
29
4;
Jer
6:3
6;
Lu

21

[19
a.
1
Ki
9:7
8;
Mi
3:1

[19
b.
Ma
24
Ma
13
Lu
21

[19
c.
(Da
9:2
Lu
1:6
78,
1
Pe
2:1

[19
a.
Ma

3:1
Ma
21
13
Ma
11
15-
17
Jol
2:1
16

[19
*
NU
we
sel
say

[19
a.
Is.
56

[19
b.
Jer
7:1

[19
*
NU
sho
be

[1

a.

Lu

21

22

[1

b.

Ma

11

Lu

20

Jo

7:1

8:3

[1

a.

Lu

21

Luke
20

[2

a.

Ma

21

27

Ma

11

33

[20
a.
Ac
4:7
7:2

[20
a.
Jo
1:2
31

[20
*
NU
M
om
the

[20
a.
Ma
14
21
Ma
6:2
Lu
7:2
30

[20
a.
Ps.
80

Ma
21
46,
Ma
12
12

[20
*
tem
far

[20
a.
2
Kin
17
14,
2
Ch
36
16,
(Ac
7:5
1
Th
2:1

[20
*
Lit
the
sea

[20
a.
(He
1:1
3)

[20
b.
Ma
27
23

[20
c.
Jol
11
48

[20
a.
Lul
23
Ac
2:2
23
3:1

[20
a.
(Jo
1:1
13
Ro
11

11
1
Co
6:1
Ga
2:1
3:2
6:1

[20
a.
Ps.
11
Ma
21
1
Pe
2:7
8

[20
a.
Is.
8:1
15

[20
b.
(Da
2:3
35
44
45
Ma
21

[20
*
M
we
afr
—
for

[20
a.
Ma
22

[20
a.
Ma
22
Ma
12

[20
*
NU
om
Wh
do
you
tes
Me

[20
a.

Ma
17
27
Ro
13
(1
Pe
2:1
17

[20
*
Pa

[20
a.
Ma
22
33
Ma
12
27

[20
b.
Ac
23
8

[20
*
NU
om
the

res
of
v.
30

[20
*
NU
M
als
left
no
chi

[20
a.
Ph
3:1

[20
a.
(1
Co
15
49
52
1
Jol
3:2

[20
b.
Ro
8:2

[20
a.
Ex.
3:1
6,
15,
Ac
7:3
32

[20
a.
(Ro
6:1
11,
14
9;
He
11

[20
a.
Ma
22
46,
Ma
12
37

[20
a.
Ps.
11
Ac

2:3
35

[2
a.
Ac
13
23
Ro
1:3
9:4
5

[2
a.
Ma
23
7;
Ma
12
40

[2
a.
Ma
23

[2
b.
Lu
11
14

[20
a.
Ma
23

[20
b.
(M
6:5
6)

Luke
21

[21
a.
Ma
12
44

[21
a.
(2
Co
6:1

[21
b.
Ma
12

[21
*

Gr
lep
ver
sm
cop
coi

[2
a.
(2
Co
8:1

[2
a.
(2
Co
8:1

[2
*
NU
om
for
Go

[2
a.
Ma
24
Ma
13

[21
*
dec

[21
a.
Is.
64
11
La
2:6
9;
Mi
3:1
Lu
19
44

[21
a.
Ma
24
Ma
13
Ep
5:6
2
Th
2:3
(1
Jo
4:1

[21
*

NU
om
Th

[21
*
fol

[21
a.
Re
6:4

[21
a.
Ma
24

[21
a.
Re
6:1

[21
a.
Ma
13
Jo
16
(Re
2:1

[21
b.
Ac
4:3
5:1
12
16

[21
c.
Ac
25

[21
d.
1
Pe
2:1

[21
a.
(Ph
1:1
14
28
2
Th
1:5

[21
a.
Ma

10
Ma
13
Lu
12

[21
*
say
in
def

[21
a.
Ac
6:1

[21
*
wit

[21
a.
Mi
7:6
Ma
13

[21
b.
Ac
7:5

12

[21
a.
Ma
10

[21
a.
Ma
10
Lu
12

[21
a.
Ma
24
Ma
13

[21
a.
Is.
63
(Da
9:2
27
Ho
9:7
(Ze
11

[21
a.
Ma
24

[21
a.
(Da
9:2
12

[21:25]
a.
Is.
13:9,
10,
13;
Matt.
24:29;
Mark
13:24;
(2
Pet.
3:10–
12)

[21:26]
a.
Matt.
24:29

[21:27]
a.
Dan.
7:13;
(Matt.

16:27;
24:30;
26:64);
Mark
13:26;
Rev.
1:7;
14:14

[21:28]
a.
(Rom.
8:19,
23)

[21:29]
a.
Matt.
24:32;
Mark
13:28

[21:33]
a.
Is.
51:6;
Matt.
24:35;
Heb.
1:10,
11;
(2
Pet.
3:7,
10,

12)

[21:33]
b.
Is.
40:8;
Luke
16:17;
1
Pet.
1:24,
25

[21:34]
a.
Matt.
24:42–
44;
Mark
4:19;1
Luke
12:40,
45;
Rom.
13:13;
1
Thess.
5:6;
1
Pet.
4:7

[21:34]
b.
Luke

8:14

[21:34] * *dissipation*

[21:35] a. 1 Thess. 5:2; (2 Pet. 3:10); Rev. 3:3; 16:15

[21:36] a. Matt. 24:42; 25:13; Mark 13:33; Luke 12:40

[21:36] b. Luke 18:1; (Eph. 6:18);

Col. 4:2; 1 Thess. 5:17

[21:36] c. Luke 20:35

[21:36] d. Ps. 1:5; (Eph. 6:13)

[21:36] * NU *have strength to*

[21:37] a. John 8:1, 2

[21:37]

b. Luke 22:39

Luke 22

[22:1] a. Matt. 26:2–5; Mark 14:1, 2

[22:2] a. Ps. 2:2; John 11:47; Acts 4:27

[22:3] a. Matt. 26:14–16; Mark 14:10, 11; John 13:2, 27

[22:3]
b.
Matt. 10:2–4

[22:5]
a.
Zech. 11:12

[22:6]
a.
Ps. 41:9

[22:7]
a.
Matt. 26:17–19; Mark 14:12–16

[22:7]
*
Sacrificed

[22:13]

a. Luke 19:32

[22:14] a. Matt. 26:20; Mark 14:17

[22:14] * NU omits *twelve*

[22:16] a. Luke 14:15; (Acts 10:41; Rev. 19:9)

[22:18] a. Matt. 26:29; Mark 14:25

[22:18] * NU adds *from now on*

[22:19] a. Matt. 26:26; Mark 14:22

[22:19] b. (1 Pet. 2:24)

[22:19] c. 1 Cor. 11:23–26

[22:20] a. 1 Cor. 10:16

[22:21] a. Ps. 41:9; Matt. 26:21, 23; Mark 14:18; Luke 22:48; John 13:21, 26, 27

[22:22] a. Matt. 26:24

[22:22] b. John 17:12; Acts 2:23

[22:23] a. Matt. 26:22; John 13:22,

25

[22:24]
a.
Mark
9:34;
Luke
9:46–
48

[22
a.
(M
20
28
Ma
10
45

[22
a.
Ma
20
(1
Pe
5:3

[22
b.
Lu
9:4

[22
a.

(Lu
12

[22
b.
Ma
20
Jo
13
14
Ph
2:7

[22
a.
(H
2:1
4:1

[22
a.
Ma
24

[22
a.
(M
8:1
Re
19

[22

b.
Ps.
49
(M
19
1
Co
6:2
Re
3:2

[22
a.
1
Pe
5:8

[22
b.
Am
9:9

[22
*
NU
om
An
the
Lo
sai

[22
a.
(Jo

17
11
15

[22
b.
Jo
21
17
Ac
1:1
2:1
2
Pe
1:1
15

[22
a.
Ma
26
35
Ma
14
31
Lu
22
Jo
13
38

[22
a.
Ma
10

Ma
6:8
Lu
9:3
10

[22
a.
Is.
53
Ma
27
Ma
15
Lu
22

[22
*
ful

[22
a.
Ma
26
Jo
18

[22
b.
Lu
21

[22
a.
Ma
26
46,
Ma
14
42

[22
a.
Ma
26
Ma
14
(Lu
18
14

[22
a.
Is.
50
Jol
4:3
5:3
6:3
8:2

[22
a.
Ma
4:1

[22

*

NU

bra

vv.

43

an

44

as

no

in

the

ori

tex

[22

a.

Jol

12

(H

5:7

[22

a.

Lu

9:3

[22

b.

1

Ch

16

Lu

22

(E

6:1
1
Th
5:1

[22
a.
Ma
26
56,
Ma
14
50,
Jo
18
11

[22
b.
Ps.
41
Ma
20
Lu
9:4
22
Ac
1:1
17

[22
a.
(1
27

[22
a.
Ma
26

[22
a.
Ma
26

[22
b.
Lu
23

[22
a.
Lu
19
48

[22
b.
(Jo
12

[22
a.
Is.
53
8;
Ma

26
Ma
14
Lu
9:4
Ac
8:3

[22
b.
Ma
26
Ma
14
Jo
18

[22
a.
Ma
26
75
Ma
14
72
Jo
18
17
18

[22
*
NU
it

[22
a.
Ma
26
Ma
14
Jol
18

[22
a.
Ma
26
Ma
14
Jol
18

[22
b.
Ac
1:1
2:7

[22
*
NU
M
a
roo

[22
a.
Ma

26
Ma
14

[22
b.
Ma
26
75
Ma
14
Lu
22
Jo
13

[22
*
NU
ad
to

[22
a.
Ps.
69
4,
7–
9;
Ma
26
68
Ma
14
Jo

18

[22
b.
Jo
16
Is.
50
La
3:3

[22
a.
Ze
13

[22
*

NU
An
ha
bli
Hi
the
ask
Hi

[22
a.
Ma
27
Ma
11

[22
b.
Ps.
2:2
Ac
4:2

[22
a.
Ma
26
66,
Ma
14
63,
Lu
22
71,
Jo
18
21

[22
b.
Lu
20
7

[22
*
NU
om
als

[22
*
NU
om
the
res
of
v.
68

[22
a.
(Ps
11
Ma
26
Ma
14
16
Ac
2:3
7:5
Ep
1:2
Co
3:1
He
1:3
8:1

[22
a.
Ma
26
27

Ma
14
Lu
1:3

[22
a.
Ma
26
Ma
14
Jo
19

Luke
23

[23
a.
Ma
27
Ma
15
Lu
18
Jo
18

[23
b.
Lu
3:1
13

[23

a.
Ac
24

[23
b.
Ac
17

[23
c.
Ma
17
Ma
12

[23
d.
Jol
19

[23
*
NU
our

[23
a.
Ma
27
1
Tir

6:1

[2

a.

Ma

27

(1

Pe

2:2

[2

a.

Jo

7:4

[2

*

NU

om

of

Ga

[2

a.

Ma

14

Ma

6:1

Lu

3:1

9:7

13

[23
a.
Lu
9:9

[23
b.
Ma
14
Ma
6:1

[23
a.
Is.
53
Ma
27
14
Ma
15
Jo
19

[23
a.
Is.
53

[23
*
tro

[23

a.

Ac

4:2

27

[23

a.

Ma

27

Ma

15

Joh

18

[23

a.

Lul

23

2

[23

b.

Lul

23

[23

*

NU

he

sen

Hin

bac

to

us

[23
a.
Ma
27
Ma
15
Lu
23
Jo
19
Ac
16

[23
a.
Ma
27
Ma
15
Jo
18

[23
*
NU
om
v.
17

[23
a.
Is.

53
Ac
3:1
15

[23
*
NU
om
an
of
the
chi
pri

[23
a.
Ma
27
Ma
15
Jo
19

[23
a.
Is.
53

[23
*
NU
M
om

to
the

[23
a.
Ma
27
Ma
15
Jo
19

[23
a.
Ma
24
Lu
21

[23
a.
Is.
2:1
Ho
10
Re
6:1
17
9:6

[23
a.
(Pr
11

Je
25
Ez
20
21
4;
1
Pe
4:1

[1
a.
Is.
53
12
Ma
27
Ma
15
Jo
19

[2
a.
Ps.
22
18
Ma
27
44
Ma
15
32
Jo
19
24

[23
a.
Ps.
10
(M
5:4
Ac
7:6
1
Co
4:1

[23
b.
Ac
3:1

[23
c.
Ps.
22
Ma
27
Ma
15
Jol
19

[23
*
NU
bra
the
firs

ser
as
a
lat
ad

[2
a.
Ps.
22
(Z
12

[2
b.
Ps.
22
Ma
27
Ma
15

[2
a.
Ps.
69

[2
a.
Ma
27
Ma
15
Jo

I
24

2
the
rev
hi
an
sai
“Y
are
His
dis
bu
we
are
Mo
dis
[29]W
kn
tha
Go
[a]sp
to
[b]M
as
for
thi
fell

[c]we do not kno wh He is fro

3 ma ans and sai to the [a]“W thi is a ma thi tha you do not kno wh He is fro yet He has ope my eye [31]N we kno tha [a]Go

doe
not
hea
sin
bu
if
any
is
a
wo
of
Go
and
doe
His
wil
He
hea
hin
[32]S
the
wo
beg
it
has
bee
unl
of
tha
any
ope
the
eye
of
one
wh
wa
bor
bli
[33][a]
thi

Ma
we
no
fro
Go
He
co
do
no
3
an
an
sai
to
hi
[a]“Y
we
co
bo
in
sin
an
ar
yo
tea
us
An
the
*ca
hi
ou
T
Vis
an
Tr
Bli
3
hea
tha
the
ha

cas hi ou an wh He ha [a]fo hi He sai to hi “D yo [b]be in [c]th So of *G

3 an an sai “W is He Lo tha I ma bel in Hi

3 Jes sai to hi “Y

hav
bo
see
Hi
an
[a]it
is
He
wh
is
tal
wi
you
3
he
sai
“Lo
I
bel
An
he
[a]w
Hi
3
Jes
sai
[a]“F
jud
I
hav
co
int
thi
wo
[b]th
tho
wh
do
no
see
ma

see
and
tha
tho
wh
see
ma
be
ma
bli

4
son
of
the
Ph
wh
we
wi
Hi
hea
the
wo
[a]an
sai
to
Hi
“A
we
bli
als

4
sai
to
the
[a]“I
yo
we
bli
yo
wo
ha

no
sin
bu
no
yo
say
‘W
see
Th
yo
sin
ren

J
10

J
the
Tru
Sho

1
ass
I
say
to
you
he
wh
doo
no
ent
the
she
by
the
doo
bu
clin
up
son
oth
wa

the
sa
is
a
thi
an
a
rob
[2]Bu
he
wh
ent
by
the
do
is
the
she
of
the
she
[3]To
hi
the
do
op
an
the
she
he
his
voi
an
he
cal
his
ow
she
by
[a]na
an

lea
the
ou
[4]A
wh
he
bri
ou
his
ow
she
he
goo
bef
the
an
the
she
fol
hi
for
the
kn
his
voi
[5]Ye
the
wil
by
no
me
fol
a
[a]st
bu
wil
fle
fro
hi
for
the

do no kn the voi of str [6]Je use thi illu bu the dic no un the thi wh He spo to the

J the Go Sh

[7] Jes sai to the aga “M ass I say to you I am

the
doo
of
the
she
8Al
wh
eve
car
[*]be
Me
are
thi
and
rob
bu
the
she
did
not
hea
the
9[a]I
am
the
doo
If
any
ent
by
Me
he
wil
be
sav
and
wil
go
in
and
ou

an
fin
pa
[10]T
thi
do
no
co
e1
to
ste
an
to
kil
an
to
de
I
ha
co
tha
the
ma
ha
lif
an
tha
the
ma
ha
it
mo
ab

1
am
the
go
she
Th
go
she

giv
His
life
for
the
she
12B
a
*hi
he
wh
is
no
the
she
on
wh
do
no
ow
the
she
see
the
wo
co
an
[a]le
the
she
an
fle
an
the
wo
cat
the
she
an
sca
the

[13]T
hir
fle
be
he
is
a
hir
an
do
no
ca
ab
the
she
[14]I
am
the
go
she
an
[a]I
kn
My
she
an
[b]ar
kn
by
My
ow
[15][a]
the
Fat
kn
Me
eve
so
I
kn
the

Fat
[b]an
I
lay
do
My
life
for
the
she
16A
[a]ot
she
I
hav
wh
are
no
of
thi
fol
the
als
I
mu
bri
an
the
wi
hea
My
voi
[b]an
the
wi
be
on
flo
an
on
she

1
My
Fat
[a]lo
Me
[b]be
I
lay
do
My
life
tha
I
ma
tak
it
aga
18N
one
tak
it
fro
Me
bu
I
lay
it
do
of
My
I
[a]ha
po
to
lay
it
do
and
I
hav
po

to
tak
it
aga
[b]Th
cor
I
hav
rec
fro
My
Fat
1
[a]th
wa
a
div
aga
am
the
Jev
bec
of
the
say
20A
ma
of
the
sai
[a]“H
has
a
der
anc
is
*m
Wh
do
you
list

to
Hi

2
sai
“T
are
no
the
wo
of
on
wh
has
a
de
[a]Ca
a
de
[b]op
the
eye
of
the
bli

Sh
Kn
His
Sh

2
it
wa
the
Fea
of
De
in
Je
an
it
wa

wi
[23]A
Jes
wa
in
the
ter
[a]in
Sol
po
[24]T
the
Jev
sur
Hir
and
sai
to
Hir
“H
lon
do
Yo
kee
us
in
*do
If
Yo
are
the
Ch
tel
us
pla
2
ans
the
“I
tol
you

and
you
do
not
bel
[a]Th
wo
tha
I
do
in
My
Fat
nam
the
[b]be
wit
of
Me
[26]B
[a]yo
do
not
bel
bec
you
are
not
of
My
she
*as
I
sai
to
you
[27][a]
she
hea
My
voi

and
I
kno
the
and
the
fol
Me
[28]A
I
giv
the
ete
life
and
the
sha
nev
per
nei
sha
any
sna
the
out
of
My
han
[29][a]
Fat
[b]W
has
giv
the
to
Me
is
gre
tha
all
and

no
on
is
ab
to
sn
the
ou
of
My
Fa
ha
30[a]
an
My
Fa
ar
on

I
Eff
to
Sto
Jes

3
[a]th
Jew
too
up
sto
aga
to
sto
Hi
32J
ans
the
“M
goo
wo
I
ha

sho
you
fro
My
Fat
For
wh
of
tho
wo
do
you
sto
Me

3
Jew
ans
Hi
say
“Fo
a
goo
wo
we
do
no
sto
Yo
bu
for
[a]bl
and
bec
Yo
bei
a
Ma
[b]m
Yo
Go

3

ans the “Is it not wr in you law [a]‘I sai “Yo are god ’? 35In He cal the god [a]to wh the wo of God can (an the Scr [b]ca be bro 36d you say of Him [a]wh the Fat

sar
and
[b]se
int
the
wo
'Yo
are
bla
[c]be
I
sai
'I
am
[d]th
Sor
of
Go
37[a]
I
do
no
do
the
wo
of
My
Fat
do
no
bel
Me
38b
if
I
do,
tho
you
do
no
bel

Me
[a]be
the
wo
tha
yo
ma
kn
an
*be
[b]th
the
Fat
is
in
Me
an
I
in
Hi
39[a]
the
sou
aga
to
sei
Hi
bu
He
esc
ou
of
the
ha

T
Bel
Bey
Jor
4
He
we
aw
aga
bey
the
Jor
to
the
pla
[a]wl
Jol
wa

ba
at
firs
an
the
He
sta
[41]T
ma
ca
to
Hi
an
sai
“Jo
pe
no
sig
[a]bu
all
the
thi
tha
Jo
sp
ab
thi
Ma
we
tru
[42]A
ma
bel
in
Hi
the

11

De

of
Laz

1
a
cen
ma
wa
sic
Laz
of
Bet
the
tow
of
[a]M
and
her
sis
Ma
2[a]It
wa
tha
Ma
wh
and
the
Lor
wit
fra
oil
and
wip
His
fee
wit
her
hai
wh
bro
Laz
wa

sic
[3]Th
the
sis
ser
to
Hi
say
“Lo
bel
he
wh
Yo
lov
is
sic

[4]

Jes
hea
tha
He
sai
“Tl
sic
is
no
un
dea
bu
for
the
glo
of
Go
tha
the
Sor
of
Go
ma
be

glo
thr
it.'

[5]
Jes
lov
Ma
an
her
sis
an
Laz
[6]So
wh
He
hea
tha
he
wa
sic
[a]H
sta
tw
mo
day
in
the
pla
wh
He
wa
[7]T
aft
thi
He
sai
to
the
dis
"Le
us

go
to
Ju
aga

dis
sai
to
Hi
“R
lat
the
Jev
sou
to
[a]st
Yo
an
are
Yo
goi
the
aga

ans
“A
the
no
tw
ho
in
the
da
[a]If
an
wa
in
the
da
he
do

no
stu
be
he
se
the
[b]li
of
thi
wo
10B
[a]if
on
wa
in
the
nig
he
stu
be
the
lig
is
no
in
hi
11T
thi
He
sai
an
aft
tha
He
sai
to
the
“O
frie
La
[a]sl

bu
I
go
tha
I
ma
wa
hi
up

1
His
dis
sai
“Lo
if
he
sle
he
wi
get
we
13H
Jes
spo
of
his
dea
bu
the
tho
tha
He
wa
spe
abo
tak
res
in
sle

1
Jes

sai
to
the
pla
“La
is
dea
[15]A
I
am
gla
for
you
sak
tha
I
wa
no
the
tha
you
ma
bel
Ne
let
us
go
to
hin

1
[a]Th
wh
is
cal
the
Tw
sai
to
his
fel
dis

“Le
us
als
go,
tha
we
ma
die
wi
Hi

I
Am
the
Res
and
the
Lif

1
wh
Jes
car
He
fou
tha
he
had
alr
bee
in
the
ton
fou
day
18N
Bet
wa
nea
Jer
abo
*tw
mi

aw
[19]A
ma
of
the
Jew
had
joi
the
wo
aro
Ma
and
Ma
to
co
the
co
the
bro
2
Ma
as
soo
as
she
hea
tha
Jes
wa
co
we
and
me
Hi
but
Ma
wa
sitt
in
the

ho
[21]M
Ma
sai
to
Jes
“Lo
if
Yo
had
bee
her
my
bro
wo
not
hav
die
22H
eve
not
I
kn
tha
[a]w
Yo
ask
of
Go
Go
wil
giv
Yo
2
sai
to
her
“Y
bro
wil
ris

aga
2
sai
to
Hi
[a]“I
kn
tha
he
wi
ris
aga
in
the
res
at
the
las
day
2
sai
to
he
“I
am
[a]th
res
an
the
life
[b]H
wh
bel
in
Me
tho
he
ma
[c]di
he
sha

liv
[26]A
wh
liv
an
bel
in
Me
sha
nev
die
Do
yo
bel
thi

2
sai
to
Hi
“Y
Lo
[a]I
bel
tha
Yo
are
the
Ch
the
So
of
Go
wh
is
to
co
int
the
wo

an

Dea
the
Las
Enc

2
wh
she
had
sai
the
thi
she
we
her
wa
and
sec
cal
Ma
her
sist
say
“Th
Tea
has
cor
and
is
cal
for
you
[29]*A*
soo
as
she
hea
tha
she
aro
qui
and

car
to
Hir
30N
Jes
had
not
yet
cor
int
the
tow
but
*wa
in
the
pla
wh
Ma
me
Hir
31[a]
the
Jew
wh
we
wit
her
in
the
hor
and
cor
her
wh
the
saw
tha
Ma
ros
up

qui
and
we
ou
fol
her
*sa
“Sh
is
goi
to
the
tor
to
we
the
3
wh
Ma
ca
wh
Jes
wa
and
sav
Hir
she
[a]fe
dov
at
His
fee
say
to
Hir
[b]“I
if
Yo
had
bee
her

my
bro
wo
no
hav
die
3
wh
Jes
sav
her
we
and
the
Jew
wh
car
wi
her
we
He
gro
in
the
spi
and
wa
tro
34A
He
sai
“W
hav
you
lai
hin
T
sai
to
Hin
“Lo

co
an
see
3
we
36T
the
Jew
sai
“Se
ho
He
lo
hi
1”
3
so
of
the
sai
“C
no
thi
Ma
[a]w
op
the
ey
of
the
bli
als
ha
ke
thi
ma
fro
dy
I
Ra
fro

the
Dea

3
Jes
aga
gro
in
Hin
can
to
the
tom
It
wa
a
cav
and
a
[a]sto
lay
aga
it.
39J
sai
“Ta
aw
the
sto

I
the
sis
of
hin
wh
wa
dea
sai
to
Hin
“Lo
by

thi
tim
the
is
a
ste
for
he
has
bee
dea
fou
day
4
sai
to
her
“D
I
not
say
to
you
tha
if
you
wo
bel
you
wo
[a]se
the
glo
of
Go
41T
the
too
aw
the
sto

**fr*
the
pla
wh
the
dea
ma
wa
lyi
An
Jes
lift
up
His
eye
and
sai
“Fa
I
tha
Yo
tha
Yo
hav
hea
Me
[42]A
I
kn
tha
Yo
alw
hea
Me
bu
[a]be
of
the
peo
wh
are

sta
by
I
sai
thi
tha
the
ma
bel
tha
Yo
ser
Me
[43] N
wh
He
ha
sai
the
thi
He
cri
wi
a
lou
voi
“La
co
for
[44] A
he
wh
ha
die
ca
ou
bo
ha
an
foo
wi

[a]gr
and
[b]hi
fac
wa
wr
wit
a
clo
Jes
sai
to
the
“Lo
hir
and
let
hir
go.

T
Plo
to
Kil
Jes

4
ma
of
the
Jew
wh
had
cor
to
Ma
[a]ar
had
see
the
thi
Jes
dic

bel
in
Hi
46B
so
of
th
we
aw
to
th
Ph
an
[a]to
th
th
thi
Je
di
47[a]
th
ch
pri
an
th
Ph
ga
a
co
an
sai
[b]“W
sh
we
do
Fo
thi
M
wo
ma
sig

[48]I
we
let
Hi
alo
lik
thi
eve
wi
bel
in
Hi
an
the
Ro
wi
co
an
tak
aw
bo
ou
pla
an
na
4
on
of
the
[a]Ca
bei
hig
pri
tha
yea
sai
to
1th
“Y
kn
no

at
all,
[50]a
do
you
con
tha
it
is
exp
for
*us
tha
one
ma
sho
die
for
the
peo
and
not
tha
the
wh
nat
sho
per
[51]N
thi
he
did
not
say
on
his
ow
au
bu
bei
hig

pri
tha
yea
he
pro
tha
Jes
wo
die
for
the
nat
[52]a
[a]no
for
tha
nat
onl
but
[b]al
tha
He
wo
gat
tog
in
one
the
chi
of
Go
wh
we
sca
abr
5
fro
tha
day
on
the

plo
to
[a]pu
Hi
to
dea
54[a]
Jes
no
lo
wa
op
am
the
Jew
bu
we
fro
the
int
the
cou
nea
the
wi
to
a
cit
cal
[b]Ep
an
the
re
wit
His
dis

5
the
Pa
of
the

Jev
wa
nea
and
ma
we
fro
the
cou
up
to
Jer
bef
the
Pas
to
[b]pu
the
56[a]
the
sou
Jes
and
spo
am
the
as
the
sto
in
the
ter
“W
do
you
thi
—
tha
He
wi
no

cor
to
the
fea
57N
bot
the
chi
pri
and
the
Ph
had
giv
a
cor
tha
if
any
kno
wh
He
wa
he
sho
rep
it,
tha
the
mi
[a]se
Hin

J
12

T
An
at
Bet

1
six

day
bef
the
Pas
Jes
car
to
Bet
[a]wl
Laz
wa
*wl
had
bee
dea
wh
He
had
rai
fro
the
dea

2[a]T
the
ma
Hir
a
sup
and
Ma
ser
bu
Laz
wa
one
of
tho
wh
sat
at
the

tab
wi
Hi
[3]Th
[a]M
too
a
po
of
ve
cos
oil
of
[b]sp
an
the
fee
of
Jes
an
wi
His
fee
wi
he
ha
An
the
ho
wa
fill
wi
the
fra
of
the
oil
[4]
on
of
His

dis
[a]Ju
Isc
Sir
sor
wh
wo
bet
Hir
sai
5“W
wa
thi
fra
oil
no
sol
for
*th
hu
der
and
giv
to
the
poo
6Th
he
sai
no
tha
he
car
for
the
poo
bu
bec
he
wa
a

thi
and
[a]ha
the
mo
bo
and
he
use
to
tak
wh
wa
pu
in
it.

7
Jes
sai
“Le
her
alo
[*]sh
has
kep
thi
for
the
day
of
My
bu
8Fo
[a]th
poo
you
hav
wi
you
alw
bu

Me
yo
do
no
ha
al

Pl
to
Ki
La

a
gr
ma
of
th
Je
kn
th
He
wa
th
an
th
ca
no
fo
Je
sa
on
bu
th
th
mi
al
se
La
[a]w
He
ha

rai
fro
the
dea
10a
the
chi
pri
plo
to
pu
La
to
dea
als
11a
on
acc
of
hi
ma
of
the
Je
we
aw
an
bel
in
Jes

T
Tri
En

1
nex
day
a
gre
mu
tha
had

co
to
the
fea
wh
the
hea
tha
Jes
wa
co
to
Jer
[13]t
bra
of
pal
tre
an
we
ou
to
me
Hi
an
cri
ou

[1]
Jes
wh
He
hac
fou
a
you
doı
sat
on
it;
as
it
is
wr

1
dis
dic
no
un
the
thi
at
firs
[b]bu
wh
Jes
wa
glo
[c]th
the
ren
tha
the
thi
we
wr
abo
Hin
and
tha
the
had
do
the
thi
to
Hin

1
the
pec
wh
we
wi
Hin
wh

He
cal
Laz
ou
of
his
to
an
rai
hi
fro
the
dea
bo
wi
[18][a]
thi
rea
the
pe
als
me
Hi
be
the
hea
tha
He
ha
do
thi
sig
[19]T
Ph
the
sai
am
the
[a]“Y
see
tha

yo
are
acc
no
Lo
the
wo
has
go
aft
Hi
T
Fru
Gr
of
Wh
2
the
[a]w
cer
Gr
am
tho
[b]w
ca
up
to
wo
at
the
fea
21T
the
ca
to
Ph
[a]w
wa
fro
Be
of

Ga
and
ask
hir
say
“Si
we
wis
to
see
Jes
2
car
and
tol
An
and
in
tur
An
and
Ph
tol
Jes
2
Jes
ans
the
say
[a]“T
ho
has
cor
tha
the
Son
of
Ma
sho
be
glo

24M
ass
I
say
to
you
[a]un
a
gra
of
wh
fal
int
the
gro
and
die
it
rer
alo
bu
if
it
die
it
pro
mu
*gr
25[a]
wh
lov
his
life
wil
los
it,
and
he
wh
hat
his

life
in
thi
wo
wil
kee
it
for
ete
life
[26]I
any
ser
Me
let
hin
[a]fo
Me
anc
[b]w
I
am
the
My
ser
wil
be
als
If
any
ser
Me
hin
My
Fat
wil
hon

J
Pre
His
Dea

on
the
Cro
2
My
sou
is
tro
and
wh
sha
I
say
‘Fa
sav
Me
fro
thi
ho
[b]Bu
for
thi
pu
I
can
to
thi
ho
28F
glo
Yo
nam
[a]
a
voi
can
fro
hea
say
“I
hav

bo
glo
it
an
wi
glo
it
aga

2
the
pe
wh
sto
by
an
hea
it
sai
tha
it
ha
thu
Ot
sai
“A
an
has

spo
to
Hi
3
ans
and
sai
[a]“T
voi
did
no
co
bec
of
Me
bu
for
you
sak
31N
is
the
jud
of
thi
wo
no
[a]th
rul
of
thi
wo
wi
be
cas
ou
32A
I,
[a]if
I
am

[*]lif
up
fro
the
ea
wi
dra
[b]al
pe
to
My
33[a]
He
sai
sig
by
wh
de
He
wo
die

pe
an
Hi
[a]“
ha
he
fro
the
law
tha
the
Ch
re
for
an
ho
ca
Yo
say

‘Th
Sor
of
Ma
mu
be
lift
up
Wh
is
thi
Sor
of
Ma

3
Jes
sai
to
the
“A
litt
wh
lor
[a]th
lig
is
wit
you
[b]W
wh
you
hav
the
lig
les
dar
ov
you
[c]he
wh
wa

in
dar
doe
not
kno
wh
he
is
goi
[36]W
you
hav
the
ligh
bel
in
the
ligh
tha
you
ma
bec
[a]so
of
ligh
Th
thi
Jes
spo
and
dep
and
[b]w
hid
fro
the

W
Ha
Bel
Ou
Rep

3
alt
He
ha
do
so
ma
[a]si
be
the
the
di
no
be
in
Hi
[38]t
the
wo
of
Isa
the
pr
mi
be
ful
wh
he
sp

3
the
cou
no
bel
bec
Isa
sai
aga

4
thi
Isa
sai
*wl
he
saw
His
glo
and
spo
of
Hin

W
in
the
Lig

4
eve
am
the
rul
ma
bel
in
Hin
but
[a]be

of
the
Ph
the
did
not
cor
Hin
les
the
sho
be
pu
ou
of
the
syn
43[a]
the
low
the
pra
of
me
mo
tha
the
pra
of
Go

4
Jes
cri
ou
and
sai
[a]“H
wh
bel
in
Me

[b]be
no
in
Me
[c]bu
in
Hi
wh
ser
Me
45A
[a]he
wh
see
Me
see
Hi
wh
ser
Me
46[a]
hav
co
as
a
lig
int
the
wo
tha
wh
bel
in
Me
sho
no
abi
in
da
47A
if

an
hea
My
wo
an
do
no
*be
[a]I
do
no
jud
hir
for
[b]I
did
no
co
to
jud
the
wo
bu
to
sav
the
wo
48[a]
wh
rej
Me
an
do
no
rec
My
wo
has
tha
wh
ju

hir
—
[b]th
wo
tha
I
hav
spo
wi
jud
hir
in
the
las
day
49F
[a]I
hav
no
spo
on
My
ow
au
bu
the
Fat
wh
ser
Me
gav
Me
a
cor
[b]w
I
sho
say
and
wh
I

sho
spe
[50]*A*
I
kno
tha
His
cor
is
eve
life
Th
wh
I
spe
jus
as
the
Fat
has
tol
Me
so
I
[a]sp

13

Wo
the
Dis
Fee

[1]
[a]be
the
Fea
of
the
Pas
wh

Jes
kn
tha
[b]H
ho
ha
co
tha
He
sh
de
fro
thi
wo
to
the
Fa
ha
lo
His
ow
wh
we
in
the
wo
He
[c]lo
the
to
the
en
2
[*]su
bei
en
[a]th
de
ha
alr
pu

it
int
the
hea
of
Ju
Isc
Si
so
to
bet
Hi
3Je
kn
[a]th
the
Fa
ha
giv
all
thi
int
His
ha
an
tha
He
[b]ha
co
fro
Go
an
[c]w
go
to
Go
4[a]r
fro
sup
an
lai

asi
His
gar
too
a
tow
an
gir
Hi
[5]Af
tha
He
pot
wa
int
a
bas
an
beg
to
wa
the
dis
fee
an
to
wip
the
wit
the
tow
wit
wh
He
wa
gir
[6]Th
He
car
to
Sir

Pet
An
Pet
sai
to
Hir
[a]“L
are
Yo
wa
my
fee

7
ans
and
sai
to
hir
“W
I
am
doi
you
[a]do
no
und
no
[b]bu
you
wil
kno
aft
thi

8
sai
to
Hir
“Yo
sha
nev
wa

my
fee

J
ans
hir
[a]“I
I
do
no
wa
yo
yo
ha
no
pa
wi
Me

9
Pe
sai
to
Hi
“Lo
no
my
fee
onl
bu
als
my
ha
an
my
hea

1
sai
to
hi
“H
wh
is

bat
nee
onl
to
wa
his
fee
bu
is
co
cle
an
[a]yo
are
cle
bu
no
all
of
you
[11]F
[a]H
kn
wh
wo
bet
Hi
the
He
sai
“Y
are
no
all
cle

1
wh
He
ha
wa
the

fee
tak
His
gar
and
sat
dov
aga
He
sai
to
the
“D
you
*kn
wh
I
hav
dor
to
you
13[a]
cal
Me
Tea
and
Lor
and
you
say
we
for
so
I
am
14[a]
I
the
you
Lor
and

Tea
hav
wa
you
fee
[b]yo
als
oug
to
wa
one
and
fee
15F
[a]I
hav
giv
you
an
exa
tha
you
sho
do
as
I
hav
don
to
you
16[a]
ass
I
say
to
you
a
ser
is
not
gre

tha
his
ma
no
is
he
wh
is
ser
gre
tha
he
wh
ser
hir
17a
yo
kn
the
thi
ble
are
yo
if
yo
do
the

J
Ide
His
Bet

1
do
no
spe
co
all
of
yo
I
kn

wh
I
ha
ch
bu
tha
the
[a]Sc
ma
be
ful
[b]‘H
wh
eat
[*]br
wi
Me
has
lift
up
his
he
aga
Me
19[a]
I
tel
you
bef
it
co
tha
wh
it
do
co
to
pas
you
ma
bel

tha
I
am
He
20[a]
ass
I
say
to
you
he
wh
rec
wh
I
ser
rec
Me
and
he
wh
rec
Me
rec
Hin
wh
ser
Me
2
Jes
had
sai
the
thi
[b]He
wa
tro
in
spi
and
tes

anc
sai
“M
ass
I
say
to
you
[c]on
of
you
wil
bet
Me
22T
the
dis
loo
at
one
anc
per
abo
wh
He
spo
2
[a]th
wa
*le
on
Jes
bos
one
of
His
dis
wh
Jes
lov
24S

Pet the mo to hi to ask wh it wa of wh He spo

2 lea *ba on Jes bre he sai to Hi "Lo wh is it?

2 ans "It is he to wh I sha giv a pie of

bre wh I hav dip *it.*” An hav dip the bre He gav *it* to [a]Ju Isc *the* *sor* of Sir 27[a] aft the pie of bre Sat ent hir Th Jes sai to hir “W you do, do qui 28B

no
on
at
the
tab
kn
for
wh
rea
He
sai
thi
to
hin
29F
son
tho
bec
[a]Ju
hac
the
mo
bo
tha
Jes
hac
sai
to
hin
“Bu
tho
thi
we
nee
for
the
fea
or
tha
he
sho

giv
son
to
the
poo

3
rec
the
pie
of
bre
he
the
we
out
im
An
it
wa
nig

Ne
Co

3
wh
he
had
gon
out
Jes
sai
[a]“N
the
Son
of
Ma
is
glo
and
[b]Go
is

glo in Hi [32]I Go is glo in Hi Go wi als glo Hi in Hi an [a]gl Hi im [33]L chi I sha be wi you a [a]lit wh lon Yo wi see Me [b]an as I sai to the

Jev
‘W
I
am
goi
yo
ca
co
so
no
I
say
to
yo
34[a]
nev
co
I
giv
to
yo
tha
yo
lov
on
an
as
I
hav
lov
yo
tha
yo
als
lov
on
an
35[a]
thi
all
wi

kno
tha
you
are
My
dis
if
you
hav
lov
for
one
and

J
Pre
Pet
Den

3
Pet
sai
to
Hin
“Lo
wh
are
Yo
goi

J
ans
hin
“W
I
[a]an
goi
you
can
fol
Me
not
bu
[b]yo

sha
fol
Me
aft

3
sai
to
Hi
“L
wh
ca
I
no
fol
Yo
no
I
wi
[a]la
do
my
life
for
Yo
sak

3
ans
hi
“W
you
lay
do
you
life
for
My
sak
Mo
ass
I
say

to
you
the
roo
sha
not
[a]cr
till
you
hav
der
Me
thr
tim

J
14

T
Wo
the
Tru
and
the
Lif

1
[a]no
you
hea
be
tro
you
bel
in
Go
bel
als
in
Me
2In
My
Fat

ho ar ma *m if *it we* no *so,* *I wo ha tol yo [a]I go to pre a pla for yo 3A if I go an pre a pla for yo [a]I wi co ag an re yo to My

tha
[b]w
I
am
the
yo
ma
be
als
[4]Ar
wh
I
go
yo
kn
an
the
wa
yo
kn
[5]
sai
to
Hi
“Lo
we
do
no
kn
wh
Yo
are
go
an
ho
ca
we
kn
the
wa
[6]

sai
to
hir
“I
am
[a]th
wa
[b]th
tru
anc
[c]th
life
[d]N
one
cor
to
the
Fat
[e]ex
thr
Me

T
Fat
Rev

7
you
hac
kno
Me
you
wo
hav
kno
My
Fat
als
anc
fro
nov
on
you

k1
Hi
an
ha
see
Hi
8
sai
to
Hi
“L
sh
us
the
Fa
an
it
is
su
fo
us.
9
sai
to
hi
“H
I
be
wi
yo
so
lo
an
ye
yo
ha
no
kn
Me
Ph
[a]H

wh
has
see
Me
has
see
the
Fat
so
ho
car
you
say
‘Sh
us
the
Fat
10D
you
not
bel
tha
[a]I
am
in
the
Fat
and
the
Fat
in
Me
Th
wo
tha
I
spe
to
you
[b]I
do

no
spe
on
My
ow
au
bu
the
Fa
wh
dw
in
Me
do
the
wo
11 B
Me
tha
I
am
in
the
Fa
an
the
Fa
in
Me
[a]or
els
bel
Me
for
the
sak
of
the
wo
the

An
Pro

1
ass
I
say
to
yo
he
wh
bel
in
Me
the
wo
tha
I
do
he
wi
do
als
an
gre
wo
tha
the
he
wi
do
be
I
go
to
My
Fat

13[a]
wh
yo
ask
in

My
na
tha
I
wi
do,
tha
the
Fa
ma
be
[b]gl
in
the
So
14I
yo
[*]as
an
in
My
na
I
wi
do
it.

J
Pro
An
He

1
yo
lov
Me
[*]ke
My
co
16*A*
I
wi
pra

the
Fat
and
[a]He
wi
giv
you
and
*He
tha
He
ma
abi
wi
you
for
—
17[a]
Spi
of
tru
[b]w
the
wo
can
rec
bec
it
nei
see
Hin
nor
kno
Hin
but
you
kno
Hin
for
He
dw

wi
yo
[c]an
wi
be
in
yo
18[a]
wi
no
lea
yo
orp
[b]I
wi
co
to
yo

I
of
the
Fa
an
the
So

1
litt
wh
lon
an
the
wo
wi
see
Me
no
mo
bu
[a]yo
wi
see

Me [b]Be I liv yo wi liv als 20A tha day yo wi kn tha [a]I *am* in My Fat an yo in Me an I in yo 21[a] wh has My co an kee the it is he wh lov

Me
An
he
wh
lov
Me
wil
be
lov
by
My
Fat
and
I
wil
lov
hin
and
*m
My
to
hin

2
(no
Isc
sai
to
Hi
“Lo
ho
is
it
tha
Yo
wi
ma
Yo
to
us,
an
no

to
the
wo
2
ans
an
sai
to
hi
“If
an
lo
Me
he
wi
kee
My
wo
an
My
Fa
wi
lo
hi
[a]a
We
wi
co
to
hi
an
ma
Ou
ho
wi
hi
24H
wh
do
no
lo

Me
do
no
ke
My
wo
an
[a]th
wo
wh
yo
he
is
no
Mi
bu
th
Fa
wh
se
Me

T
Gi
of
Hi
Pe

2
thi
I
ha
sp
to
yo
wh
be
pr
wi
yo
26B
[a]th
[*]H

the Ho Spi wh the Fat wi [b]se in My na [c]He wi tea you all thi and bri to you [d]re all thi tha I sai to you

27[a] I lea wit you My pea I giv to you no as the wo giv do I giv to yo Let no yo hea be tro nei let it be afr [28]Y hav hea Me [a]sa to yo ‘I am goi aw an co *bac* to yo If yo lov Me yo

wo
rej
bec
[*]I
sai
[b]‘I
am
goi
to
the
Fat
for
[c]M
Fat
is
gre
tha
I.
2
[a]no
I
hav
tol
you
bef
it
con
tha
wh
it
doe
con
to
pas
you
ma
bel
30I
wi
no
lon

tal
mu
wi
you
[a]fo
the
rul
of
thi
wo
is
co
and
he
has
[b]no
in
Me
[31]B
tha
the
wo
ma
kno
tha
I
lov
the
Fat
and
[a]as
the
Fat
gav
Me
co
so
I
do
Ari
let

us
go
fro
her

J
15

T
Tru
Vir

[1]
am
the
tru
vir
and
My
Fat
is
the
vir
[2][a]E
bra
in
Me
tha
doe
not
bea
fru
He
*ta
aw
and
eve
bra
tha
bea
fru
He
pru

tha it ma bea [b]m fru 3[a]Y are alr cle bec of the wo wh I hav spo to you 4[a]A in Me and I in you As the bra can bea fru of itse unl it abi in the vin

nei
car
you
unl
you
abi
in
Me

5
am
the
vin
you
are
the
bra
He
wh
abi
in
Me
anc
I
in
hin
bea
mu
[a]fr
for
wit
Me
you
car
do
[b]nc
6If
any
doe
not
abi
in

Me
[a]he
is
cas
ou
as
a
bra
an
is
wi
an
the
ga
the
an
thr
the
int
the
fire
an
the
are
bu
7 If
you
abi
in
Me
an
My
wo
[a]ab
in
you
[b]yo
wi
ask
wh
you

des and it sha be do for you 8[a]B thi My Fat is glo tha you bea mu fru [b]so you wil be My dis

I and Joy Per

9 the Fat [a]lo Me I als hav lov you abi in

My
lov
10a
you
kee
My
cor
you
wi
abi
in
My
lov
jus
as
I
hav
kep
My
Fat
cor
and
abi
in
His
lov
1
thi
I
hav
spo
to
you
tha
My
joy
ma
rer
in
you
and

[a]*th*
yo
joy
ma
be
ful
12[a]
is
My
[b]co
tha
yo
lov
on
an
as
I
ha
lov
yo
13[a]
lov
ha
no
on
tha
thi
tha
to
lay
do
on
lif
for
his
frie
14[a]
are
My
frie
if

yo
do
wh
I
co
yo
15N
lo
do
I
cal
yo
se
fo
a
se
do
no
kn
wh
his
ma
is
do
bu
I
ha
cal
yo
fri
[a]fo
all
thi
tha
I
hea
fro
My
Fa
I
ha

ma
kn
to
yo
16[a]
di
no
ch
Me
bu
I
ch
yo
an
[b]ap
yo
tha
yo
sh
go
an
be
fru
an
tha
yo
fru
sh
rer
tha
wh
yo
ask
the
Fa
[c]in
My
nar
He
ma
giv

yo
[17]T
thi
I
co
yo
tha
yo
lov
on
an

Wo
Ha

the
wo
ha
yo
yo
kn
tha
it
ha
Me
bef
it
ha
yo
[19]a
yo
we
of
the
wo
the
wo
wo
lov
its
ow

Yet
[b]be
you
are
not
of
the
wo
but
I
che
you
out
of
the
wo
the
the
wo
hat
you
20R
the
wo
tha
I
sai
to
you
[a]‘A
ser
is
not
gre
tha
his
ma
If
the
per
Me

the
wi
als
pe
yo
[b]If
the
ke
My
wo
the
wi
kee
yo
als
21B
[a]al
the
thi
the
wi
do
to
yo
for
My
na
sak
bec
the
do
no
kn
Hi
wh
se
Me
22[a]
I
had
no

co
an
sp
to
the
the
wo
ha
no
sin
[b]bu
no
the
ha
no
ex
fo
the
sin
23[a]
wh
ha
Me
ha
My
Fa
als
24I
I
ha
no
do
am
the
[a]th
wo
wh
no
on
els
di

the
wo
hav
no
sin
bu
no
the
hav
[b]se
and
als
ha
bo
Me
and
My
Fa
25B
this
hap
tha
the
wo
mi
be
ful
wh
is
wr
in
the
lav
[a]‘T
ha
Me
wi
a
cau
T
Co

Re
2
wh
the
[*]H
co
wh
I
sha
se
to
yo
fro
the
Fat
the
Sp
of
tru
wh
pro
fro
the
Fat
[b]H
wi
tes
of
Me
[27]A
[a]yo
als
wi
bea
wit
be
[b]yo
hav
be
wit
Me

fro
the
beg

J
16

1
thi
I
hav
spo
to
you
tha
you
[a]sh
no
be
ma
to
stu
2[a]T
wil
pu
you
ou
of
the
syn
yes

the
tim
is
co
[b]th
wh
kil
yo
wi
thi
tha
he
off
Go
se
[3]A
[a]th
thi
the
wi
do
*to
yo
be
the
ha
no
kn
the
Fa
no
Me
[4]Bu
the
thi
I
ha
tol
yo
tha
wh

*th
tim
cor
you
ma
ren
tha
I
tol
you
of
the

A
the
thi
I
did
not
say
to
you
at
the
beg
bec
I
wa
wit
you

T
Wo
of
the
Ho
Spi

5
not
I
[a]gc
aw
to

Hir
wh
ser
Me
anc
no
of
you
ask
Me
‘W
are
Yo
goi
6Bu
bec
I
hav
sai
the
thi
to
you
[a]so
has
fill
you
hea
7No
I
tell
you
the
tru
It
is
to
you
adv
tha
I

go aw for if I do no go aw the He wi no co to yo bu [a]if I de I wi se Hi to yo [8]Ar wh He ha [a]co He wi co the wo of sin an of rig

anc
of
jud
9[a]O
sin
bec
the
do
not
bel
in
Me
10[a]
rig
[b]be
I
go
to
My
Fat
anc
you
see
Me
no
mo
11[a]
jud
bec
[b]th
rul
of
thi
wo
is
jud

1
stil
hav
ma
thi

to
say
to
you
[a]bu
you
car
bea
the
not
[13]H
wh
He
[a]th
Spi
of
tru
has
con
[b]H
wi
gu
1yo
int
all
tru
for
He
wi
not
spe
on
His
ow
au
bu
wh
He
hea
He
wi

spe
an
He
wi
tel
yo
thi
to
co
14a
wi
gl
Me
fo
He
wi
ta
of
wh
is
Mi
an
de
it
to
yo
15a
thi
tha
the
Fa
ha
ar
Mi
Th
I
sai
tha
He
*w
ta

of
Mi
and
dec
it
to
you

S
Wi
Tu
to
Joy

1
[a]lit
wh
and
you
wil
not
see
Me
and
aga
a
litt
wh
and
you
wil
see
Me
[b]be
I
go
to
the
Fat

1
son
of
His

dis
sai
am
the
“W
is
thi
tha
He
say
to
us,
‘A
litt
wh
an
yo
wi
no
see
Me
an
aga
a
litt
wh
an
yo
wi
see
Me
an
‘be
I
go
to
the
Fat
[18]T
sai
the

“W
is
thi
tha
He
say
‘A
litt
wh
We
do
no
*kn
wh
He
is
say

1
Jes
kn
tha
the
des
to
ask
Hi
an
He
sai
to
the
“A
you
in
am
you
ab
wh
I
sai
‘A

litt
wh
and
you
wil
not
see
Me
and
aga
a
litt
wh
and
you
wil
see
Me
20M
ass
I
say
to
you
tha
you
wil
we
and
[a]la
bu
the
wo
wil
rej
and
you
wil
be
sor
bu

yo
so
wi
be
tu
int
[b]jo
21[a]
wo
wh
she
is
in
lab
has
so
bec
her
ho
has
co
bu
as
soo
as
she
has
giv
bir
to
the
chi
she
no
lon
rer
the
an
for
joy
tha

a hu bei has bee bo int the wo [22]T yo no hav so bu I wil see yo aga an [a]yo hea wil rej an yo joy no on wil tak fro yo

2 in tha day yo wil ask

Me
no
[a]M
ass
I
say
to
you
wh
you
ask
the
Fat
in
My
na
He
wil
giv
you
24U
no
you
hav
ask
no
in
My
na
Ask
an
you
wil
rec
[a]th
you
joy
ma
be
[b]fu

Ch
Ha
Ov
the
Wo

2
thi
I
hav
spo
to
you
in
fig
lan
bu
the
tim
is
com
wh
I
wi
no
lon
spe
to
you
in
fig
lan
bu
I
wi
tel
you
[a]pl
abo
the
Fat
26I

tha day you wil ask in My nar and I do not say to you tha I sha pra the Fat for you 27[a] the Fat Hin lov you bec you hav lov Me and [b]ha bel tha I car for

fro
Go
28a
car
for
fro
the
Fat
and
hav
con
int
the
wo
Ag
I
lea
the
wo
and
go
to
the
Fat

2
dis
sai
to
Hin
"Se
nov
Yo
are
spe
pla
and
usi
no
fig
of
spe

[30]N
we
are
sur
tha
[a]Yo
kn
all
thi
an
hav
no
nee
tha
any
sho
que
Yo
By
thi
[b]w
bel
tha
Yo
can
for
fro
Go
3
ans
the
“D
you
no
bel
[32][a]
the
ho
is
con
yes

has
not
com
tha
you
wi
be
sca
[b]ea
to
his
[*]ow
and
wi
lea
Me
alo
An
[c]ye
I
am
no
alo
bec
the
Fat
is
wit
Me
[33]T
thi
I
hav
spo
to
you
tha
[a]in
Me
you
ma

ha
pea
[b]In
the
wo
yo
[*]wi
ha
tril
bu
be
of
go
ch
[c]I
ha
ov
the
wo

17

Pro
for
Hi

spo
the
wo
lift
up
His
eye
to
hea
an
sai
“Fa
[a]th
ho

has
co
Gl
Yo
So
tha
Yo
So
als
ma
glo
Yo
2[a]a
Yo
ha
giv
Hi
au
ov
all
fle
tha
He
*sh
giv
ete
life
to
as
ma
[b]as
Yo
ha
giv
Hi
3A
[a]th
is
ete
life
tha

the
ma
kn
Yo
[b]th
onl
tru
Go
an
Jes
Ch
[c]w
Yo
ha
ser
4[a]I
ha
glo
Yo
on
the
ear
[b]I
ha
fin
the
wo
[c]w
Yo
ha
giv
Me
to
do
5An
no
O
Fat
glo
Me
tog

*wi
Yo
wit
the
glo
[a]wi
I
had
wit
Yo
bef
the
wo
wa

J
Pro
for
His
Dis

6
hav
*m
Yo
nar
to
the
me
[b]w
Yo
hav
giv
Me
ou
of
the
wo
[c]Th
we
Yo
Yo
gav

the
to
Me
and
the
hav
kep
Yo
wo
[7]N
the
hav
kno
tha
all
thi
wh
Yo
hav
giv
Me
are
fro
Yo
[8]Fo
I
hav
giv
to
the
the
wo
[a]w
Yo
hav
giv
Me
and
the
hav
rec

the
[b]an
hav
kno
sur
tha
I
can
for
fro
Yo
and
the
hav
bel
tha
[c]Yo
ser
Me

9
pra
for
the
[a]I
do
not
pra
for
the
wo
but
for
tho
wh
Yo
hav
giv
Me
for
the
are

Yo
[10]A
all
Mi
are
Yo
an
[a]Yo
are
Mi
an
I
am
glo
in
the
[11][a]
I
am
no
lon
in
the
wo
bu
the
are
in
the
wo
an
I
co
to
Yo
Ho
Fat
[b]ke
thr
Yo
na

tho
wh
Yo
hav
giv
Me
tha
the
ma
be
on
[c]as
We
are
12W
I
wa
wi
the
*in
the
wo
[a]I
ke
the
in
*Yo
na
Th
wh
Yo
ga
Me
I
ha
ke
an
[b]no
of
the
is

*lo
[c]ex
the
son
of
*pe
[d]th
the
Scr
mi
be
ful
13 B
nov
I
con
to
Yo
and
the
thi
I
spe
in
the
wo
tha
the
ma
hav
My
joy
ful
in
the
14 I
hav
giv
the
Yo
wo

[a]an the wo has hat the bec the are not of the wo [b]ju as I am not of the wo 15 I do not pra tha Yo sho tak the out of the wo but [a]th Yo sho kee the fro

the
evi
one
[16]T
are
no
of
the
wo
jus
as
I
am
no
of
the
wo
[17][a]
the
by
Yo
tru
[b]Yo
wo
is
tru
[18][a]
Yo
ser
Me
int
the
wo
I
als
hav
ser
the
int
the
wo

19A
[a]fo
the
sak
I
sar
My
tha
the
als
ma
be
sar
by
the
tru

Jesus Prays for All Believers

[20]"I do not pray for these alone, but also for those who [*]will believe in Me through their word; [21][a]that they all may be one, as [b]You, Father, *are* in Me, and I in You; that

they also may be one in Us, that the world may believe that You sent Me. [22]And the [a]glory which You gave Me I have given them, [b]that they may be one just as We are one: [23]I in them, and

You in Me; [a]that they may be made perfect in one, and that the world may know that You have sent Me, and have loved them as You have loved Me.

[24][a]“Fathe I desire that they also whom You gave Me

may be with Me where I am, that they may behold My glory which You have given Me; [b]for You loved Me before the foundation of the world. 25 O righteous Father! [a]The world has not known You, but [b]I have known

You; and [c]these have known that You sent Me. 26 [a]And I have declared to them Your name, and will declare *it,* that the love [b]with which You loved Me may be in them, and I in them.”

LE
FR

GO
WA

PR

JE AN TH WO AT TH W

Key to Be a Pro of Go

Th sto of the wo at the we of Sa is one of the gre mi of co eve rec

In
so
ov
an
ho
ou
Lo
aw
a
tot
str
fro
suc
cha
acc
to
ful
an
glo
rec
of
Hi
as
mo
tha
the
ex
Me
all
wi
ov
her
fre
wi
an
stu
of
hea

I
am

co
tha
thi
wo
wa
no
a
wi
wo
at
all
bu
ins
wa
a
pro
of
the
Lo
See
wh
yo
thi
as
we
pro
Jes
ha
de
to
pas
thr
rat
tha
go
aro
Sa
He
ha
wa
so

tw
to
thi
mi
ho
ma
ho
or
da
it
to
we
ar
no
tol
Th
dis
ha
go
ah
int
th
cit
to
bu
fo
Jes
wa
al
ho
tir
an
thi
He
wa
de
on
wh
mi
ha
to

cor to the we to dra wa

A pro is dep upo oth Pro mu lea to liv by the Lor peo Jes had no rea nee of the San wo He cou hav cor the wa and it wo

hav
flo
to
His
lip
Ne
He
bol
cor
“G
Me
a
dri
(Jo
4:7

No
if
a
ma
spo
to
a
wo
in
pul
in
tha
cou
the
wo
wo
hav
cor
her
sha
or
she
wo
eit
say

no
or
ru
to
the
me
in
he
fa
wh
co
be
co
on
to
de
ap
of
the
off
On
tw
ki
of
wo
wo
an
ba
to
Jes
—
a
ha
or
a
pr
He
res
sh
tha
she

is the lat (v. 9). For the mo she had dis tha He has not ask but con She is not yet rea to rec Him as a pro

18

an
Ar
in
Ge

Jes
ha
spo
the
wo
[a]H
we
ou
wi
His
dis
ov
[b]th
Br
Ki
wh
the
wa
a
ga
wh
He
an
His
dis
en
[2]A
Ju
wh
be
Hi
als
kn

the
pla
[a]fo
Jes
oft
me
the
wi
His
dis
3[a]T
Ju
hav
rec
a
det
of
tro
an
off
fro
the
chi
pri
an
Ph
ca
the
wi
lan
tor
an
we
4Je
the
[a]kn
all
thi
tha
wo
co

up
Hi
we
for
an
sai
to
the
“W
are
you
see

ans
Hi
[a]“J
*of
Na

sai
to
the
“I
am
He
An
Ju
wh
[b]be
Hi
als
sto
wi
the
[6]N
wh
He
sai
to
the
“I

am
He
the
dre
bac
an
fel
to
the
gro

7
He
ask
the
aga
“W
are
you
see

A
the
sai
“Je
of
Na

8
ans
“I
hav
tol
you
tha
I
am
He
Th
if
you
see
Me
let

the
go
the
wa
[9]th
the
say
mi
be
ful
wh
He
spo
[a]“O
tho
wh
Yo
gav
Me
I
hav
los
nor
1
Sin
Pet
hav
a
sw
dre
it
and
str
the
hig
pri
ser
and
cut
off
his

rig
ear
Th
ser
nar
wa
Ma
1
Jes
sai
to
Pet
“Pu
you
sw
int
the
she
Sha
I
not
dri
[a]th
cup
wh
My
Fat
has
giv
Me
I
the
Hig
Pri
1
the
det
of
tro
and
the

cap
an
the
off
of
the
Jew
arr
Jes
an
bo
Hi
13A
[a]th
led
Hi
aw
to
[b]A
firs
for
he
wa
the
fat
in
law
of
[c]Ca
wh
wa
hig
pri
tha
yea
14[a]
it
wa
Ca
wh
adv

the
Jew
tha
it
wa
*ex
tha
one
ma
sho
die
for
the
peo

I
Den
Jes

1
Sin
Pet
fol
Jes
and
so
did
[b]an
dis
No
tha
dis
wa
kno
to
the
hig
pri
and
we
wit
Jes
int

the
cou
of
the
hig
pri
16a
Pet
sto
at
the
doo
ou
Th
the
oth
dis
wh
wa
kno
to
the
hig
pri
we
ou
an
spo
to
her
wh
kep
the
doo
an
bro
Pet
in.
17T
the
ser

gir
wh
kep
the
doo
sai
to
Pet
“Y
are
not
als
on
of
thi
Ma
dis
are
you

I
sai
“I
am
[a]no

1
the
ser
and
off
wh
had
ma
a
fire
of
coa
sto
the
for
it
wa

col
and
the
wa
the
An
Pet
sto
wit
the
and
wa
hin

J
Qu
by
the
Hig
Pri

1
hig
pri
the
ask
Jes
abo
His
dis
and
His
doo

2
ans
hin
[a]“I
spo
ope
to
the
wo
I

alw
tau
[b]in
syn
anc
[c]in
the
ten
wh
*th
Jew
alw
me
anc
in
sec
I
hav
sai
no
21W
do
yo
ask
Me
Ask
[a]th
wh
hav
hea
Me
wh
I
sai
to
the
Inc
the
kn
wh
I

sai
2
wh
He
hac
sai
the
thi
one
of
the
off
wh
sto
by
[a]str
Jes
wit
the
pal
of
his
han
say
“D
Yo
ans
the
hig
pri
like
tha
2
ans
him
“If
I
hav
spo
evi
bea

wit
of
the
evi
bu
if
we
wh
do
you
str
Me

2
Ann
sen
Hin
bou
to
[b]Ca
the
hig
prie

De
Tw
Mo

2
Sin
Pet
sto
and
wa
hin
[a]Th
the
sai
to
hin
“Yo
are
no
als

on
of
His
dis
are
yo
I
de
it
an
sai
“I
am
no
2
of
the
ser
of
the
hig
pri
a
rel
of
hin
wh
ea
Pe
cu
off
sai
“D
I
no
see
yo
in
the
ga
wi

Hi
27P
the
de
aga
an
[a]im
a
roo
cro

Pil
Co

the
led
Jes
fro
Ca
to
the
Pra
an
it
wa
ea
mo
[b]Bu
the
the
di
no
go
int
the
*Pr
les
the
sh
be
de

bu
tha
the
mi
eat
the
Pas
29a
the
we
ou
to
the
an
sai
“W
acc
do
you
bri
aga
thi
Ma
3
ans
an
sai
to
hi
“If
He
we
no
*an
evi
we
wo
no
ha
del
Hi

up
to
yo

3
Pil
sai
to
the
“Y
tak
Hi
an
jud
Hi
acc
to
yo
lav

T
the
Jev
sai
to
hi
“It
is
no
lav
for
us
to
pu
any
to
dea

32a
the
say
of
Jes
mi

be
ful
wh
He
spo
[b]sig
by
wh
dea
He
wo
die

3
Pil
ent
the
*Pr
aga
cal
Jes
and
sai
to
Hir
“A
Yo
the
Kir
of
the
Jew

3
ans
hir
“A
you
spe
for
you
abo
thi

or
did
oth
tel
you
thi
cor
Me
3
ans
“A
I
a
Jew
Yo
ow
nat
and
the
chi
pri
hav
del
Yo
to
me
Wh
hav
Yo
dor
3
ans
[b]“M
kin
is
not
of
thi
wo
If
My

kin we of thi wo My ser wo fig so tha I sho no be del to the Jew bu no My kin is no fro her

3 the sai to Hi “A Yo a kin the

J ans “Y say

rig
tha
I
am
a
kin
For
thi
cau
I
wa
bor
and
for
thi
cau
I
hav
con
int
the
wo
[a]th
I
sho
bea
[b]w
to
the
tru
Eve
wh
[c]is
of
the
tru
[d]he
My
voi

3
sai

to
Hi
“W
is
tru
An
wh
he
had
sai
thi
he
we
ou
aga
to
the
Jew
and
sai
to
the
[a]“I
fin
no
fau
in
Hi
at
all.

T
the
Pla
of
Ba

3
you
hav
a
cus
tha

I sho rel son to you at the Pas Do you the wa me to rel to you the Kin of the Jew

4 the all cri aga say “N thi Ma but Bar [b]N Bar wa a rob

19

T
Sol
Mo
Jes

1
the
[a]Pi
too
Jes
and
sco
Hi
2Ar
the
sol
twi
a
cro
of
tho
and
pu
it
on
His
hea
and
the
pu
on
Hi
a
pu
rob
3[*]T
the
sai
“H
Kin
of

the
Jew
An
the
[a]str
Hi
wi
the
ha
4
the
we
ou
aga
an
sai
to
the
“Be
I
am
bri
Hi
ou
to
yo
[a]th
yo
ma
kn
tha
I
fin
no
fau
in
Hi

I
Dea

5
Jes

car
out
we
the
cro
of
tho
and
the
pu
rob
An
Pil
sai
to
the
“Bo
th1
Ma

6
wh
the
chi
pri
and
off
sav
Hi
the
cri
out
say
“Cr
Hin
cru
Hin

I
sai
to
the
“Yo

tak
Hi
and
cru
Hi
for
I
fin
no
fau
in
Hi

7
Jew
ans
hi
[a]“W
hav
a
law
and
acc
to
[*]ou
law
He
oug
to
die
bec
[b]He
ma
Hi
the
Son
of
Go

8
wh
Pil
hea

tha
say
he
wa
the
mo
afr
9ar
we
aga
int
the
Pra
and
sai
to
Jes
“W
are
Yo
fro
[a]Bu
Jes
gav
hin
no
ans

1
Pil
sai
to
Hin
“A
Yo
no
spe
to
me
Do
Yo
no

kn
tha
I
ha
*po
to
cru
Yo
an
po
to
rel
Yo

1
ans
[a]“Y
co
ha
no
po
at
all
ag
Me
un
it
ha
be
giv
yo
fro
ab
Th
[b]th
on
wh
de
Me
to
yo
ha

the
gre
sin
1
the
on
Pil
sou
to
rel
Hi
bu
the
Jew
cri
ou
say
“If
you
let
thi
Ma
go,
you
are
no
Ca
frie
[a]W
ma
hi
a
ki
spe
aga
Ca
1
Pil
the
hea
tha

say
he
bro
Jes
ou
an
sat
do
in
the
jud
sea
in
a
pla
tha
is
cal
Th
Pa
bu
in
He
Ga
[14]N
[a]it
wa
the
Pre
Da
of
the
Pas
an
abo
the
six
ho
An
he
sai

to
the
Jew
“Be
you
Kin

1
the
cri
out
“A
wit
Hin
aw
wit
Hin
Cru
Hin

I
sai
to
the
“Sh
I
cru
you
Kin

T
chi
pri
ans
[a]“V
hav
no
kin
bu
Ca

1
he
del
Hin

to
the
to
be
cru
So
the
too
Jes
*an
led
Hi
aw

T
Ki
on
a
Cro

1
He
bea
His
cro
[b]w
out
to
a
pla
cal
the
Pla
of
a
Sku
wh
is
cal
in
He
Go
18W

the
cru
Hi
an
[a]tw
oth
wi
Hi
on
on
eit
sid
an
Jes
in
the
cer
19[a]
Pil
wr
a
titl
an
pu
it
on
the
cro
An
the
wr
wa
J
OF
NA
TH
KI
OF
TH
JE
2

ma
of
the
Jew
rea
thi
titl
for
the
pla
wh
Jes
wa
cru
wa
nea
the
city
and
it
wa
wr
in
He
Gre
and
Lat
2
the
chi
pri
of
the
Jew
sai
to
Pil
“D
not
wr
‘Th

Kin
of
the
Jew
but
‘He
sai
“I
am
the
Kin
of
the
Jew
’
”

2
ans
“W
I
hav
wr
I
hav
wr

2
the
sol
wh
the
had
cru
Jes
too
His
gar
and
ma
fou
par
to

eac
sol
a
par
anc
als
the
tur
No
the
tur
wa
wit
sea
wo
fro
the
top
in
one
pie
[24]T
sai
the
am
the
“Le
us
not
tea
it,
but
cas
lot
for
it,
wh
it
sha
be,
tha

the
Scr
mi
be
ful
wh
say

T
the
sol
dic
the
thi

I
Yo
Mo

2
the
sto
by
the
cro
of
Jes
His

mo
and
His
mo
sist
Ma
the
wif
of
[b]Cl
and
Ma
Ma
[26]W
Jes
the
saw
His
mo
and
[a]th
dis
wh
He
low
sta
by,
He
sai
to
His
mo
[b]“W
bel
you
son
[27]T
He
sai
to
the

dis
“Be
you
mo
An
fro
tha
ho
tha
dis
too
her
[a]to
his
ow
hor
I
Is
Fin
2
thi
Jes
[*]kn
tha
all
thi
we
no
acc
[a]th
the
Scr
mi
be
ful
sai
“I
thi
29N
a
ves

ful of sou wi wa sitt the an [a]th fill a spo wi sou wi pu *it* on hys an pu *it* to His mo [30]S wh Jes ha rec the sou wi He sai [a]“I is fin An bo His

hea
He
gav
up
His
spi

J
Sid
Is
Pie

3
bec
it
wa
the
Pre
Da
[b]th
the
boc
sho
not
ren
on
the
cro
on
the
Sal
(fo
tha
Sal
wa
a
[c]hi
day
the
Jew
ask
Pil
tha

the
leg
mi
be
bro
an
tha
the
mi
be
tak
aw
[32]T
the
sol
ca
an
bro
the
leg
of
the
firs
an
of
the
oth
wh
wa
cru
wi
Hi
[33]B
wh
the
ca
to
Jes
an
sa
tha

He
wa
alr
dea
the
dic
no
bre
His
leg
[34]B
one
of
the
sol
pie
His
sid
wit
a
spe
anc
im
[a]bl
anc
wa
car
ou
[35]A
he
wh
has
see
has
tes
anc
his
tes
is
[a]tr
anc

he
kn
tha
he
is
tel
the
tru
so
tha
yo
ma
[b]be
[36]F
the
thi
we
do
tha
the
Scr
sho
be
ful
[a]“N
on
of
His
bo
sha
be
bro
[37]A
aga
an
Scr
say
[a]“T
sha
loo
on

Hi
wh
the
pie

J
Bu
in
Jos
To

3
thi
Jos
of
Ari
bei
a
dis
of
Jes
bu
sec
[b]fo
fea
of
the
Jew
ask
Pil
tha
he
mi
tak
aw
the
boo
of
Jes
and
Pil
gav
him

pe
So
he
ca
an
to
the
bo
of
Jes
39A
[a]Ni
wh
at
firs
ca
to
Jes
by
nig
als
ca
bri
a
mi
of
[b]m
an
al
ab
a
hu
po
40T
the
to
the
bo
of
Jes
an

[a]bo it in str of lin wi the spi as the cus of the Jew is to bu [41]N in the pla wh He wa cru the wa a ga an in the ga a ne to in wh no on

hac
yet
bec
laic
42S
[a]th
the
laic
Jes
[b]be
of
the
Jev
Pre
Da
for
the
tor
wa
nea

20

Em
To

on
the
[a]fir
day
of
the
we
Ma
Ma

we
to
the
tor
ear
wh
it
wa
stil
dar
and
saw
tha
the
[b]st
had
bee
tak
aw
fro
the
tor
2Th
she
ran
and
car
to
Sir
Pet
and
to
the
[a]ot
dis
[b]w
Jes
lov
and
sai
to

the
“Th
hav
tak
aw
the
Lor
ou
of
the
tor
an
we
do
no
kn
wh
the
hav
lai
Hi
3
the
we
ou
an
the
oth
dis
an
we
goi
to
the
tor
4S
the
bo
ran
tog
an

the
oth
dis
ou
Pe
an
ca
to
the
to
firs
5A
he,
sto
do
an
loo
in,
sa
[a]th
lin
clo
lyi
the
yet
he
did
no
go
in.
6T
Si
Pe
ca
fol
hi
an
we
int
the
to

an
he
sa
the
lin
clo
lyi
the
[7]an
[a]th
[*]ha
tha
ha
be
ar
Hi
hea
no
lyi
wi
the
lin
clo
bu
fol
tog
in
a
pla
by
its
[8]T
the
[a]ot
dis
wh
ca
to
the
to
firs

we
in
als
and
he
saw
and
bel
[9]Fo
as
yet
the
did
not
*kn
the
[a]Sc
tha
He
mu
ris
aga
fro
the
dea
[10]T
the
dis
we
aw
aga
to
the
ow
hor

I
Mo
See
the
Ris
Lor

1
Ma
sto
ou
by
the
tor
we
an
as
she
we
she
sto
do
an
loo
int
the
tor
[12]*A*
she
sa
tw
an
in
wh
sit
on
at
the
hea
an
the
oth
at
the
fee
wh
the
bo

of
Jes
ha
lai
13T
the
sai
to
he
“W
wh
are
yo
we
S
sai
to
the
“B
the
ha
tak
aw
my
Lo
an
I
do
no
kn
wh
the
ha
lai
Hi
1
wh
she
ha
sai
thi

she
tur
aro
and
saw
Jes
sta
the
and
[b]di
not
kno
tha
it
wa
Jes
15J
sai
to
her
“W
wh
are
you
we
Wh
are
you
see

S
sup
Hin
to
be
the
gar
sai
to
Hin
“Si
if

Yo
ha
ca
Hi
aw
tel
me
wh
Yo
ha
lai
Hi
an
I
wi
tak
Hi
aw
1
sai
to
he
[a]“M
S
tur
an
sai
to
*H
“R
(w
is
to
say
Te
1
sai
to
he
“D
no

cli
to
Me
for
I
ha
no
ye
[a]as
to
My
Fa
bu
go
to
[b]M
bre
an
sa
to
the
[c]‘I
am
as
to
My
Fa
an
yo
Fa
an
to
[d]M
Go
an
yo
Go
”

Ma
ca

anc
tol
the
*di
tha
she
hac
see
the
Lor
anc
tha
He
hac
spo
the
thi
to
her

T
Ap
Co

1
the
sar
day
at
eve
bei
the
firs
day
of
the
we
wh
the
doo
we
shu
wh

the
dis
we
[*]as
for
[b]fe
of
the
Jew
Jes
ca
an
sto
in
the
mi
an
sai
to
the
[c]“P
be
wi
you
20W
He
ha
sai
thi
He
[a]sh
the
His
ha
an
His
sid
[b]Th
the
dis
we

gla
wh
the
saw
the
Lor
2
Jes
sai
to
the
aga
“Pe
to
you
[a]As
the
Fat
has
ser
Me
I
als
ser
you
22A
wh
He
had
sai
thi
He
bre
on
the
and
sai
to
the
“Re
the

Ho
Spi
23[a]
yo
for
the
sin
of
any
the
are
for
the
if
yo
ret
the
sin
of
any
the
are
ret

S
an
Bel

2
Th
[a]ca
the
Tw
on
of
the
tw
wa
no
wi
the
wh
Jes

car
25T
oth
dis
the
sai
to
hin
"W
hav
see
the
Lor

S
he
sai
to
the
"U
I
see
in
His
han
the
pri
of
the
nai
and
pu
my
fin
int
the
pri
of
the
nai
and
pu

my
har
int
His
sid
I
wil
no
bel

2
aft
eig
day
His
dis
we
aga
ins
and
Th
wit
the
Jes
car
the
doo
bei
shu
and
sto
in
the
mi
and
sai
“Pe
to
you
[27]T
He
sai

to
Th
“R
yo
fin
her
an
loo
at
My
har
an
[a]re
yo
har
her
an
pu
it
int
My
sid
Do
no
be
[b]un
bu
bel
2
Th
ans
an
sai
to
Hi
“M
Lor
an
my
Go
2

sai
to
hin
*“T
bec
you
hav
see
Me
you
hav
bel
[a]Bl
are
tho
wh
hav
no
see
and
yet
hav
bel

T
Yo
Mo
Bel

3
[a]tr
Jes
dic
ma
oth
sig
in
the
pre
of
His
dis
wh

are
no
wr
in
thi
boo
31[a]
the
are
wr
tha
[b]yo
ma
bel
tha
Jes
[c]is
the
Ch
the
Son
of
Go
[d]an
tha
bel
you
ma
hav
life
in
His
nan

J
21

*I
by
the
Sec*

1

the
thi
Jes
sho
Hi
aga
to
the
dis
at
the
[a]*Se*
of
Tib
and
in
thi
wa
He
sho
Hi
2Si
Pet
[a]Th
cal
the
Tw
[b]Na
of
[c]Ca
in
Ga
[d]th
sor
of
Zel
and
two
oth
of
His

dis
we
tog
[3]Si
Pet
sai
to
the
“I
am
goi
fish

T
sai
to
hir
“W
are
goi
wit
you
als
Th
we
out
and
*im
got
int
the
boa
and
tha
nig
the
cau
not
[4]Bu
wh
the
mo

hac
not
cor
Jes
sto
on
the
sho
yet
the
dis
[a]di
not
kno
tha
it
wa
Jes
[5]Tl
[a]Je
sai
to
the
“Cl
hav
you
any
foo

T
ans
Hir
“N

6
He
sai
to
the
[a]“C
the
net
on

the
rig
sid
of
the
boa
an
you
wi
fin
so
So
the
cas
an
no
the
we
no
ab
to
dra
it
in
be
of
the
mu
of
fis

7
[a]th
dis
wh
Jes
lov
sai
to
Pe
“It
is

the
Lor
No
wh
Sin
Pet
hea
tha
it
wa
the
Lor
he
pu
on
his
ou
gar
(fo
he
had
ren
it),
and
plu
int
the
sea
8Bu
the
oth
dis
car
in
the
litt
boa
(fo
the
we
not

far
fro
lan
bu
abo
two
hu
cul
dra
the
net
wit
fis
9Th
as
soo
as
the
had
con
to
lan
the
sav
a
fire
of
coa
the
and
fis
laid
on
it,
and
bre
10J
sai
to
the
“Br

sor
of
the
fisl
wh
yot
hav
jus
cau
1
Pet
we
up
anc
dra
the
net
to
lar
ful
of
lar
fisl
one
hur
anc
fift
thr
anc
alt
the
we
so
ma
the
net
wa
not
bro
[12]J
sai

to
the
[a]“C
an
eat
bre
Ye
no
of
the
dis
da
ask
Hi
“W
are
Yo
kn
tha
it
wa
the
Lo
13J
the
ca
an
to
the
bre
an
ga
it
to
the
an
lik
the
fis
1
is

no
[a]th
thi
tim
Jes
sho
Hi
to
His
dis
aft
He
wa
rai
fro
the
dea

J
Res
Pet

1
wh
the
had
eat
bre
Jes
sai
to
Si
Pet
“Si
*so
of
Jo
do
you
lo
Me
mo
tha

the
I
sai
to
Hi
“Y
Lo
Yo
kn
tha
I
*lo
Yo
I
sai
to
hi
[a]“F
My
la
1
sai
to
hi
aga
a
sec
tim
“Si
so
of
*Jo
do
yo
lov
Me
I
sai
to
Hi
“Y

Lo
Yo
kn
tha
I
*lo
Yo

[a]
sai
to
hir
“T
My
[b]sh

1
sai
to
hir
the
thi
tim
“Si
sor
of
*Jo
do
yo
*[1]l
Me
Pe
wa
gri
bec
He
sai
to
hir
the
thi
tim
“D

yo
lov
Me

A
he
sai
to
Hi
“Lo
[a]Yo
kn
all
thi
Yo
kn
tha
I
lov
Yo

J
sai
to
hi
“F
My
sh
18[a]
ass
I
say
to
yo
wh
yo
we
yo
yo
gir
yo
an
wa

wh
you
wis
bu
wh
you
are
old
you
wil
str
ou
you
ha
an
an
wil
gir
you
an
ca
you
wh
you
do
no
wis
19T
He
spo
sig
[a]by
wh
dea
he
wo
glo
Go
An
wh
He

hac
spo
thi
He
sai
to
hin
[b]“F
Me

T
Bel
Dis
and
His
Boo

2
Pet
tur
arc
sav
the
dis
[a]wl
Jes
lov
fol
[b]wl
als
hac
lea
on
His
bre
at
the
sup
and
sai
“Lo
wh
is

the
one
wh
bet
Yo
[21]P
see
hir
sai
to
Jes
“B
Lo
wh
abo
thi
ma
2
sai
to
hir
“If
I
[*]w
tha
he
rer
[a]til
I
co
wh
is
tha
to
yo
Yo
fol
Me
2
thi
say

we
ou
am
the
bre
tha
thi
dis
wo
no
die
Ye
Jes
did
no
say
to
hir
tha
he
wo
no
die
bu
“If
I
wi
tha
he
ren
till
I
co
wh
is
tha
to
you
2
is
the

dis
wh
[a]te
of
the
thi
anc
wr
the
thi
anc
we
knc
tha
his
tes
is
tru
2
the
are
als
ma
oth
thi
tha
Jes
dic
wh
if
the
we
wr
one
by
one
[b]I
sup
tha
eve
the

wo
itse
cou
no
co
the
boo
tha
wo
be
wr
Am

1

2

3

4

[4:
a.
Jer
44
(1
Pe
1:1

[4:
a.
Jo
4:2

[4:
a.
Lu
4:3
(Jo
6:6

[4:
a.
Jo
17
1
Jo
4:1

[4:
*
NU
om
the
Ch

[4:
a.
Ma
13
Ma
6:4
Lu
4:2

[4:
a.
Jo
2:1
23
3:2

[4:
b.
De
16

[4:
a.
Jo
2:1

11

[4:

*

roy

off

[4:

a.

Joh

6:3

Ro

15

1

Co

1:2

2

Co

12

(2

Th

2:9

He

2:4

John 5

[5:

a.

Lev

23

De

16

[5:
b.
Jol
2:1

[5:
a.
Ne
3:1
32;
12

[5:
*
NU
Bet

[5:
*
wit

[5:
*
NU
om
the
res
of
v.
3
and
all
of
v.

4.

[5:
a.
Ma
9:6
Ma
2:1
Lu
5:2

[5:
a.
Jo
9:1

[5:
a.
Ex
20
Ne
13
Je
17
22,
Ma
12
Ma
2:2
Lu
6:2

[5:
a.

Lu
13
22

[5:
a.
Ma
12
(M
2:5
Jo
8:1

[5:
a.
Lu
4:2
Jo
8:3
10

[5:
*
NU
om
an
sou
to
kil
Hi

[5:
a.
(Jo

9:4
17

[5:
a.
Jol
7:1
19

[5:
b.
Jol
10
Ph
2:6

[5:
a.
Ma
26
Jol
5:3
6:3
8:2
12
14

[5:
a.
Ma
3:1
Jol
3:3
2

Pet
1:1

[5:
b.
(M
11

[5:
a.
Lu
7:1
8:5
(Jo
11

[5:
a.
Ma
11
28
(Jo
3:3
17
Ac
17
1
Pet
4:5

[5:
a.
Lu
10

1
Jol
2:2

[5:
a.
Jol
3:1
18
6:4

[5:
b.
(1
Jol
3:1

[5:
a.
(E
2:1
5;
Co
2:1

[5:
a.
Ps.
36

[5:
b.

(Jo
1:4
14
1
Co
15

[5:
a.
Jo
9:3
(Ac
10
17

[5:
b.
Da
7:1

[5:
a.
(1
Th
4:1
17)

[5:
a.
Is.
26
(1
Co
15

[5:
b.
Da
12
Ma
25
Ac
24

[5:
a.
Jol
5:1

[5:
b.
Ma
26
Jol
4:3
6:3

[5:
a.
Jol
8:1
Re
3:1

[5:
*
val

as
tes

[5:
a.
(M
3:1
Jo
8:1
1
Jo
5:6

[5:
a.
(Jo
1:1
19
27
32

[5:
a.
2
Sa
21
2
Pe
1:1

[5:
b.
Ma
13

Ma
6:2

[5:
a.
1
Jo
5:9

[5:
b.
Jo
3:2
10
17

[5:
c.
Jo
9:1
10

[5:
a.
Ma
3:1
Jo
6:2
8:1

[5:
b.

De
4:1
Jol
1:1
1
Tin
1:1
1
Jol
4:1

[5:
a.
Is.
8:2
34
Lul
16
Ac
17

[5:
b.
De
18
18
Lul
24

[5:
a.
(Jo
1:1
3:1

[5:
a.
Jol
5:4
7:1
1
Th
2:6

[5:
a.
Jol
12

[5:
b.
(Ro
2:2

[5:
a.
Ro
2:1

[5:
a.
(Ge
3:1
De
18
18
Jol
1:4
Ac

26

[5:
a.
Lu
16
31

John
6

[6:
a.
Ma
14
Ma
6:3
Lu
9:1
12

[6:
b.
Jo
6:2
21

[6:
a.
Ma
4:2
8:1
9:3
14
15

19

[6:
*
sic

[6:
a.
Le
23
7;
De
16
Jo
2:1

[6:
a.
Ma
14
Ma
6:3
Lu
9:1

[6:
b.
Jo
1:4

[6:
a.

Nu
11
22

[6:
a.
Jol
1:4

[6:
a.
2
Kin
4:4

[6:
*
NU
om
to
the
dis
an
the
dis

[6:
a.
Ge
49
De
18
18
Jol

1:2
7:4
Ac
3:2
7:3

[6:
a.
(Jo
18

[6:
a.
Ma
14
Ma
6:4

[6:
a.
Ma
17

[6:
*
Lit
25
or
30
sta

[6:

a.
Is.
43
2

[6:
*
NU
om
tha

[6:
*
NU
om
wh
His
dis
had
ent

[6:
a.
Ma
1:3
Lu
4:4

[6:
a.
Ma
6:1

[6:
b.
Jol
4:1
(Ep
2:8
9)

[6:
c.
Ps.
2:7
Is.
42
Ma
3:1
17
Ma
1:1
9:7
Lu
3:2
9:3
Jol
5:3
Ac
2:2
2
Pe
1:1

[6:
a.
1
Th
1:3
Jar

2:2
(1
Jo
3:2
Re
2:2

[6:
a.
Ma
12
16
Ma
8:1
1
Co
1:2

[6:
a.
Ex
16
Nu
11
1
Co
10

[6:
b.
Ex
16
15
Ne
9:1

Ps.
78

[6:
a.
Jol
3:1
16

[6:
a.
Jol
4:1

[6:
a.
Jol
6:4
58

[6:
b.
Jol
4:1
7:3
Re
7:1

[6:
c.
Is.
55

2

[6:
a.
Jol
6:2
64
15

[6:
b.
Jol
10

[6:
a.
Jol
6:4

[6:
b.
(M
24
Jol
10
29
2
Tir
2:1
1
Jol
2:1

[6:
*
cer
not

[6:
a.
Ma
26
Jo
5:3

[6:
b.
Jo
4:3

[6:
a.
Jo
10
17
18

[6:
a.
Jo
3:1
16
4:1
6:2
47
54

[6:
*
gru

[6:
a.
Ma
13
Ma
6:3
Lu
4:2

[6:
*
Sto
gru

[6:
a.
So
1:4

[6:
b.
(Ep
2:8
9;
Ph
1:2
2:1
13

[6:
a.
Is.
54
Jer
31
Mi
4:2
(H
8:1

[6:
b.
Jol
6:3

[6:
*

M
hea
an
has
lea

[6:
a.
Jol
1:1

[6:
b.
Ma

11
(Lu
10
Jol
7:2

[6:
a.
(Jo
3:1
18

[6:
*
NU
om
in
Me

[6:
a.
Jol
6:3
35
(Ga
2:2
Co
3:3
4)

[6:
a.
Jol
6:3

58

[6:
a.
Jol
6:5
58

[6:
a.
Jol
3:1

[6:
b.
He
10

[6:
a.
Jol
7:4
9:1
10

[6:
a.
Ma
26

[6:

a.

Jol

4:1

6:2

40

[6:

*

NU

tru

foc

[6:

*

NU

tru

dri

[6:

a.

(1

Jol

3:2

4:1

16

[6:

a.

Jol

6:4

51

[6:
b.
Ex
16
35

[6:
a.
Ma
11
Jo
6:6

[6:
*
dif

[6:
*
gru

[6:
*
ma
yo
stu

[6:
a.
Ma
16
Jo

3:1
Ac
1:9
2:3
33
Ep
4:8

[6:
a.
Ge
2:7
2
Co
3:6

[6:
b.
Jo
3:6

[6:
c.
(Jo
6:6
14

[6:
a.
Jo
6:3

[6:
b.
Jo
12
25
13

[6:
a.
Jo
6:3
44
45

[6:
a.
Lu
9:6
Jo
6:6

[6:
*
Or
aw
lit.
to
the
bac

[6:
a.
Ac
5:2

[6:
a.
Ma
16
Ma
8:2
Lu
9:2
Jo
1:4
11

[6:
*
NU
Ho
On
of
Go

[6:
a.
Lu
6:1

[6:
b.
(Jo
13

[6:
a.

Jol
12
13
26

[6:
b.
Ma
26
16

John
7

[7:
a.
Ma
21
26
Jol
5:1
7:1
25
8:3
40

[7:
*
Th
rul
au

[7:
a.
Lev

23
De
16
15
Ne
8:1
18
Ze
14
19

[7:
a.
Ma
12
Ma
3:2
Jol
7:5
10
Ac
1:1

[7:
a.
Ps.
69
Mi
7:6

[7:
b.
Ma
12
13

Ma
3:2
Jol
7:3
10

[7:
a.
Jol
2:4
8:2

[7:
a.
(Jo
15

[7:
b.
Jol
3:1

[7:
a.
Jol
8:2

[7:
*
NU
om
yet

[7:
a.
Jol
11

[7:
a.
Jol
9:1
10

[7:
b.
Ma
21
Lul
7:1
Jol
6:1
7:4

[7:
a.
(Jo
9:2
12
19

[7:
a.
Ps.
22

Ma
4:2
5:2
7:2
Ma
6:3
Lu
4:1
5:3
Jo
8:2

[7:
a.
Ma
13
Ma
6:2
(Lu
4:2
Ac
2:7

[7:
a.
De
18
18
19
Jo
3:1

[7:
*
NU

M
So
Jes

[7:
a.
Ps.
25
14
Pro
3:3
Da
12
Jol
3:2
8:4

[7:
a.
Jol
5:4

[7:
b.
Jol
8:5

[7:
c.
Jol
8:4
(2
Co
5:2

He
4:1
7:2
1
Pe
1:1
2:2

[7:
a.
Ex
24
De
33
Ac
7:3

[7:
b.
Ma
12

[7:
a.
Jo
8:4
52

[7:
a.
Le
12

[7:

b.

Ge

17

14

Ac

7:8

[7:

a.

Jol

5:8

9,

16

[7:

a.

De

1:1

Pro

24

Jol

8:1

Jar

2:1

[7:

a.

Ma

21

26

Lul

22

Jol

5:1

8:3
40

[7:
a.
Jo
7:4

[7:
*
NU
om
tru

[7:
a.
Ma
13
Ma
6:3
Lu
4:2

[7:
a.
Jo
8:1

[7:
b.
Jo
5:4

[7:
c.
Ro
3:4

[7:
d.
Jol
1:1
8:5

[7:
a.
Ma
11
Jol
8:5
17

[7:
*
NU
M
om
Bu

[7:
a.
Ma
11

[7:
b.
Ma
21
Jo
7:3
44
8:2
10

[7:
a.
Ma
12

[7:
a.
Jo
13

[7:
b.
(M
16
Lu
24
Ac
1:9
He
9:2
1
Pe
3:2

[7:
*
NU
M
om
to
the

[7:
a.
Ho
5:6

[7:
b.
(M
5:2
1
Co
6:9
15
Re
21

[7:
a.
Ps.
14
(Is
11
56
Ze
3:1
Ja
1:1

1
Pe
1:1

[7:
a.
Lev
23
Nu
29
Ne
8:1

[7:
b.
(Is
55

[7:
a.
De
18

[7:
b.
Is.
12
43
44
55
(Jo
6:3
Re
21

22

[7:

a.

Is.

44

(Jo

2:2

Jol

1:3

[7:

b.

Jol

12

13

17

[7:

*

NU

wh

bel

[7:

*

NU

om

Ho

[7:

a.

De
18
18

[7:
*
NU
so

[7:
a.
Jo
4:4
6:6

[7:
a.
Ps.
13
Je
23
Mi
5:2
Ma
2:5
(Lu
2:4

[7:
b.
1
Sa
16
4

[7:
a.
Jo
7:1

[7:
a.
Jo
7:3

[7:
a.
Ma
13
56
Lu
4:2

[7:
a.
Jo
3:1
2;
19

[7:
*
Lit
Hi

[7:
*
NU
bef

[7:
a.
De
1:1
17
19

[7:
a.
(Is
9:1
2);
Ma
4:1

[7:
*
NU
is
to
ris

[7:
*
NU
bra
7:5
thr
8:1

as
no
in
the
ori
tex
Th
are
pre
in
ove
90
ms
of
Jol

John 8

[8:
a.
Jol
8:2
18

[8:
*
M
ver
ear

[8:
a.
Ex
20
(M

5:2
19
Ro
7:3

[8:
*
M
we
fou
thi
wo

[8:
a.
Lev
20
De
22
24

[8:
*
M
in
our
law
Mo
con

[8:
*
NU
M

to
sto
suc

[8:
*
M
ad
abo
her

[8:
a.
Ma
22

[8:
*
NU
M
om
as
tho
He
did
not
hea

[8:
a.
De
17
(R
2:1

[8:
*
M
He
loo
up

[8:
a.
Ro
2:2

[8:
*
NU
M
om
bei
co
by
the
co

[8:
*
NU
om
an
sa
no
on
but
the
wo

M
He
sa
her
an
sai

[8:
*
NU
M
om
of
yo

[8:
a.
(Lu
9:5
12
Jo
3:1

[8:
b.
(Jo
5:1

[8:
*
NU
M
ad
fro
no
on

[8:
a.
Is.
9:2
Ma
4:2
Jol
1:4
9:5
12
(2
Tir
1:1

[8:
b.
1
Th
5:5

[8:
a.
Jol
5:3

[8:
*
val
as
tes

[8:

a.
Jo
7:2
9:2

[8:
a.
1
Sa
16
Jo
7:2

[8:
b.
(Jo
3:1
12
18

[8:
a.
Jo
16

[8:
a.
De
17
19
Ma
18
2
Co

13
He
10

[8:
a.
Jol
5:3
1
Jol
5:9

[8:
a.
Jol
16

[8:
b.
Jol
14

[8:
a.
Ma
12
43
Lul
21

[8:
b.

Jol
2:4
7:3

[8:
c.
Jol
7:8

[8:
a.
Jol
7:3
13

[8:
b.
Jol
8:2

[8:
a.
Jol
3:3

[8:
b.
Jol
15
17
1
Jol

4:5

[8:

a.

Jol

8:2

[8:

b.

(M

16

[8:

a.

Jol

4:2

[8:

a.

Jol

7:2

[8:

b.

Jol

3:3

15

[8:

a.

Ma
27
Ma
15
Lu
23
Jo
3:1
12
19

[8:
b.
(Ro
1:

[8:
c.
Jo
5:1
30

[8:
d.
De
18
18,
19,
Jo
3:1

[8:
*
Cru

[8:
a.
Jol
14

[8:
b.
Jol
8:1
16

[8:
c.
Jol
4:3
5:3
6:3

[8:
a.
Jol
7:3
10
11

[8:
a.
(Jo
14
23

[8:
a.
(Jo
1:1
17,
14

[8:
b.
(Ro
6:1
18,
22,
Jar
1:2
2:1

[8:
a.
Lev
25
(M
3:9
Lul
3:8

[8:
a.
Pro
5:2
Ro
6:1
2
Pe
2:1

[8:

a.

Ge

21

Ga

4:3

[8:

a.

(R

8:2

2

Co

3:1

Ga

5:1

[8:

a.

Jo

7:1

[8:

a.

(Jo

3:3

5:1

30

14

24

[8:

*

NU
hed
fro

[8:
a.
Ma
3:9
Jol
8:3

[8:
b.
(Re
2:2
Ga
3:7
29

[8:
a.
Jol
8:3

[8:
b.
Jol
8:2

[8:
a.

De
32
Is.
63
Ma
1:6

[8:
a.
1
Jol
5:1

[8:
b.
Jol
16
17
25

[8:
c.
Jol
5:4
Ga
4:4

[8:
a.
(Jo
7:1

[8:
a.
Ma
13
1
Jo
3:8

[8:
b.
1
Jo
2:1
17

[8:
c.
(1
Jo
3:8
10
15

[8:
d.
(Ju
6)

[8:
a.
Lu
8:1
Jo
10

1
Jol
4:6

[8:
a.
Jol
7:2
10

[8:
a.
Jol
5:4

[8:
a.
Jol
5:4
7:1
(Pl
2:6
8)

[8:
a.
Jol
5:2
11

[8:
a.

Jol
7:2
10

[8:
b.
Zec
1:5
He
11

[8:
a.
Jol
10
19

[8:
a.
Jol
5:3
32

[8:
b.
Jol
5:4
Act
3:1

[8:
*

NU
M
ou

[8:
a.
Jo
7:2
29

[8:
b.
(Jo
15

[8:
a.
Lu
10

[8:
b.
Ma
13
He
11

[8:
a.
Mi
5:2
Jo

17
He
7:3
Re
22

[8:
b.
Ex
3:1
Is.
43
Jo
17
24
Co
1:1
Re
1:8

[8:
a.
Jo
10
11

[8:
b.
Lu
4:3
Jo
10

[8:
*
NU

om
the
res
of
v.
59

John
9

[9:
a.
Lu
13
Jo
9:3
Ac
28

[9:
a.
Jo
11

[9:
a.
(Jo
4:3
5:1
36
17

[9:
b.
Jo

11
10
12
Ga
6:1

[9:
*
NU
We

[9:
a.
(Jo
1:5
9;
3:1
8:1
12
46

[9:
a.
Ma
7:3
8:2

[9:
a.
Ne
3:1
Is.
8:6
Lu

13
Jol
9:1

[9:
b.
2
Kin
5:1

[9:
*
NU
a
beg

[9:
*
NU
“N
but
he
is
like
him

[9:
a.
Jol
9:6
7

[9:
*
NU
om
the
poo
of

[9:
a.
Jo
3:2
9:3

[9:
b.
Jo
7:1
43
10

[9:
*
obs

[9:
a.
(Jo
4:1
6:1

[9:

a.
Jo
7:1
12
19
Ac
5:1

[9:
b.
Jo
16

[9:
a.
Jo
7:1
1
Sa
6:5
Ez
10
Re
11

[9:
b.
Jo
9:1

[9:
a.
Ex
19

20

33

34

Nu

12

8

[9:

b.

(Jo

5:4

47

[9:

c.

Jol

7:2

28

8:1

[9:

a.

Jol

3:1

[9:

a.

Jol

27

35

Ps.

18

Pro

1:2

15
28
Is.
1:1
Jer
11
14
Eze
8:1
Mi
3:4
Zec
7:1
(Ja
5:1

[9:
a.
Jol
3:2
9:1

[9:
a.
Ps.
51
Jol
9:2

[9:
*
Exe
hir

[9:
a.
Jol
5:1

[9:
b.
Jol
1:7
16

[9:
c.
1fo
14
16
Ma
1:1
Jol
10
1
Jol
5:1

[9:
*
NU
Mo

[9:
a.
Jol
4:2

[9:
a.
Ma
8:2

[9:
a.
(Jo
3:1
5:2
27
12

[9:
b.
Ma
13
15

[9:
a.
(Ro
2:1

[9:
a.
Joh
15
24

[10
a.
Jol
20

[10
a.
(2
Co
11
15

[10
*
M
om
bef
Me

[10
a.
(Jo
14
Ep
2:1

[10
a.
Ge
49
Is.
40
Eze
34

(He
13
1
Pe
2:2
5:4
Re
7:1

[1
a.
Ze
11
17

[1
*
hi
m

[1
a.
Is.
40
Na
1:7
Ze
13
Jo
6:6
2
Ti
2:1

[1
b.
2
Ti
1:

[1
a.
Ma
11

[1
b.
Ma
27
Ma
15
Lu
23
(Jo
15
19
1
Jo
3:

[1
a.
Is.
42
56
Ac
10
11
13

[10
b.
Ez
37
Jo
11
17
Ep
2:1
18,
1
Pe
2:2

[10
a.
Jo
5:2

[10
b.
(Is
53
8,
12,
He
2:9

[10
a.
Ma
26
(Jo
2:1

5:

[1
b.
(J
6:
14
17
Ac
2:
32

[1
a.
Jo
7:
9:

[1
a.
Jo
7:

[1
*
ins

[1
a.
(E
4:

[1
b.
Jol
9:6
7,
32
33

[1
a.
Ac
3:1
5:1

[1
*
Su

[1
a.
Jol
5:3
10

[1
b.
Ma
11
Jol
2:1
20

[10
a.
(Jo
8:4

[10
*
NU
om
as
I
sai
to
you

[10
a.
Jol
10
14

[10
a.
Jol
14

[10
b.
(Jo
17
6,
12
24

[10
a.
Jol
17
21-
24

[10
a.
Jol
8:5

[10
a.
Ma
9:3

[10
b.
Jol
5:1

[10
a.
Ps.
82

[10
a.
Ma

5:1
18

[1
b.
1
Pe
1:2

[1
a.
Jol
6:2

[1
b.
Jol
3:1

[1
c.
Jol
5:1
18

[1
d.
Lu
1:3

[10
a.
Jo
10
15

[10
a.
Jo
5:3

[10
b.
Jo
14
11

[10
*
NU
un

[10
a.
Jo
7:3
44

[10
a.
Jo
1:2

[10
a.
(Jo
1:2
36
3:2
36
5:3

John
11

[11
a.
Lu
10
39
Jo
11
19

[11
a.
Ma
26

[11
a.
Jo
10

[11
a.

Jol
8:5
10

[11
a.
Lul
13
Jol
9:4
12

[11
b.
Is.
9:2

[11
a.
Jol
12

[11
a.
De
31
(Da
12
Ma
9:2
Ac
7:6
(1
Co

15
51

[11
a.
Ma
10
Ma
3:1
Lu
6:1
Jo
14
20
28
Ac
1:1

[11
*
Lit
15
sta

[11
a.
(Jo
9:3
11

[11
a.
(Lu
14

Joh
5:2

[11
a.
Joh
5:2
6:3
40
44
(Re
1:1

[11
b.
Joh
3:1
36
1
Joh
5:1

[11
c.
1
Co
15
(He
9:2

[11
a.
Ma
16

Lu
2:1
Jo
4:4
6:1
69

[11
*

NU
wa
stil

[11
a.
Jo
11
33

[11
*

NU
sup
tha
she
wa
goi

[11
a.
Ma
5:2
7:2
Re

1:1

[11
b.
Jol
11

[11
a.
Lul
19

[11
a.
Jol
9:6
7

[11
a.
Ma
27
66,
Ma
15
Lul
24
Jol
20

[11
a.

(Jo
11
23

[1
*
NU
om
fro
the
pla
wh
the
dea
ma
wa
lyi

[1
a.
Jol
12
17

[1
a.
Jol
19

[1
b.
Jol
20

[11
a.
Jol
2:2
10
12
18

[11
a.
Jol
5:1

[11
a.
Ps.
2:2
Ma
26
Ma
14
Lul
22

[11
b.
Jol
12
Ac
4:1

[11

a.
Ma
26
Lu
3:2
Jo
18
Ac
4:6

[11
a.
Jo
18

[11
*
NU
you

[11
a.
Is.
49
Ac
10
11
13
(1
Jo
2:2

[11
b.

Ps.
22
Jol
10
(Ep
2:1
17)

[11
a.
Ma
26
Lul
6:1
19
22
Jol
5:1

[11
a.
Jol
4:1
3;
7:1

[11
b.
2
Ch
13

[11
a.

Ma
26
Ma
14
Lu
22
Jo
2:1
5:1
6:4

[11
b.
Nu
9:1
13
31
20
2
Ch
30
Lu
2:2

[11
a.
Jo
7:1

[11
a.
Ma
26
16

[12
a.
Ma
21
Jol
11
43

[12
*

NU
om
wh
hac
bee
dec

[12
a.
Ma
26
Ma
14
Lul
10
41

[12
a.
Lul
10
39,
Jol

11

[12
b.
So
1:1

[12
a.
Jol
13

[12
*
Ab
on
yea
wa
for
a
wo

[12
a.
Jol
13

[12
*
NU
tha
she

ma
kee

[12
a.
De
15
Ma
26
Ma
14
Jol
17

[12
a.
Jol
11
44

[12
a.
Lul
16

[12
a.
Jol
11
12

[12

a.
Ma
21
9;
Ma
11
10
Lu
19
38

[12
a.
Ps.
11
26

[12
a.
Ma
21

[12
a.
Is.
40
Ze
9:9

[12
a.
Lu
18

[12

b.

Jol

7:3

12

[12

c.

(Jo

14

[12

a.

Jol

12

[12

a.

Jol

11

48

[12

a.

Ma

7:2

Ac

17

[12

b.
1
Ki
8:4
42,
Ac
8:2

[12
a.
Jo
1:4
44,
14
11

[12
a.
Ma
26
45,
Jo
13
Ac
3:1

[12
a.
(Ro
14
1
Co
15

[12
*
Lit
fru

[12
a.
Ma
10
Ma
8:3
Lu
9:2

[12
a.
(M
16

[12
b.
Jo
14
17
(1
Th
4:1

[12
a.
(M
26
39)
Ma
14
Lu

12
Jo
11

[12
b.
Lu
22
Jo
18

[12
a.
Ma
3:1
17
Ma
1:1
9:7
Lu
3:2
9:3

[12
a.
Jo
11

[12
a.
Ma
12
Lu
10

(Ac
26
2
Co
4:4

[12
a.
Jol
3:1
8:2

[12
b.
(Ro
5:1
He
2:9

[12
*
Cru

[12
a.
Jol
18
21

[12
a.
Ps.

89
37
Is.
9:6
7;
Mi
4:7

[12
a.
(Jo
1:9
7:3
8:1

[12
b.
Jer
13
(Ga
6:1
Ep
5:8

[12
c.
Jol
11
(1
Jol
2:9
11

[12

a.
Lu
16
Jo
8:1

[1
b.
Jo
8:5

[1
a.
Jo
11

[1
a.
Is.
53
Ro
10

[1
a.
Is.
6:9
10

[1
b.
Ma

13

[12
a.
Is.
6:1

[12
*
NU
bec

[12
a.
Jo
7:1
9:2

[12
a.
Jo
5:4
44

[12
a.
Ma
9:3

[12

b.
(Jo
3:1
18
36
11
26

[12
c.
(Jo
5:2

[12
a.
(Jo
14

[12
a.
Jol
1:4
5;
8:1
12
36

[12
a.
Jol
5:4

[12
b.
Jol
3:1

[12
*
NU
kee
the

[12
a.
(Lu
10

[12
b.
De
18
19
(Jo
5:4
8:4

[12
a.
Jol
8:3

[12
b.

De
18

[12
a.
Jol
5:1
8:2

John
13

[13
a.
Ma
26

[13
b.
Jol
12
17

[13
c.
Jol
15

[13
a.
Lul
22

[13
*

NU
du
sup

[13
a.
Ma
11
(Jo
5:2
23
17
Ac
2:3
1
Co
15
(He
2:8

[13
b.
Joh
8:4
16

[13
c.
Joh
17
20

[13
a.
(Lu
22
Ph
2:7
8)

[13
a.
Ma
3:1

[13
a.
Jo
12
16

[13
b.
Jo
13

[13
a.
(Ps
51
7;
Ez
36
Ac

22
1
Co
6:1
Ep
5:2
Tit
3:5
He
10

[13
a.
(Jo
15
Ep
5:2

[13
a.
Jo
6:6
18

[13
*
und

[13
a.
Ma
23
10
Lu

6:4
(1
Co
8:6
12
Ep
6:9
(Ph
2:1

[13
a.
Lu
22

[13
b.
(Ro
12
Ga
6:1
2;
1
Pe
5:5

[13
a.
Ma
11
Ph
2:5
(1
Pe
2:2

24
1
Jo
2:6

[13
a.
Ma
10
(Lu
6:4
Jo
15

[13
a.
Ma
7:2
Lu
11
(Ja
1:2

[13
a.
Jo
15
17

[13
b.
Ps.
41
Ma

26

[13
*
NU
My
bre
has

[13
a.
Jo
14
16

[13
a.
Ma
10
Ma
9:3
Lu
9:4
10
Ga
4:1

[13
a.
Ma
26
Ma
14
Lu

22

[13
b.
Jol
12

[13
c.
Ps.
41
Ma
26
Ma
14
Lul
22
Jol
6:6
18
Ac
1:1
1
Jol
2:1

[13
a.
Jol
19
20
21
20

[13
*
rec

[13
*
NU
M
ad
thu

[13
a.
Ma
10
Jo
6:7
71
12
Ac
1:1

[13
a.
Lu
22

[13
a.
Jo
12

[13
a.
Jo
12
Ac
3:1

[13
b.
(Jo
14
17
1
Pet
4:1

[13
a.
Jo
12

[13
a.
Jo
12
14
16
19

[13
b.
Ma
16
(Jo

7:3
8:2
Ac
1:9

[13
a.
Le
19
Ep
5:2
1
Th
4:9
Ja
2:8
1
Pe
1:2
1
Jo
2:7

[13
a.
1
Jo
2:5

[13
a.
Jo
13
14
16

[13
b.
Jo
21
2
Pe
1:1

[13
a.
Ma
26
35
Ma
14
31
Lu
22
34

[13
a.
Ma
26
Ma
14
Lu
22
Jo
18
27

John
14

[14
a.
(Jo
14
16
24

[14
a.
Ma
25
Jol
13
36
He
11

[14
*
Lit
dw

[14
*
NU
wo
I
hav
tol
you
tha
I
go
or
I

wo
hav
tol
you
for
I
go

[14
a.
(Ac
1:1

[14
b.
(Jo
12
1
Th
4:1

[14
a.
Ma
10
Jo
11
20
29
21

[14
a.
(Jo

10
Ro
5:2
Ep
2:1
He
9:8
10
20

[14
b.
(Jo
1:1
17
8:3
18

[14
c.
(Jo
11

[14
d.
1
Ti
2:5

[14
e.
(Jo
10
9;

Ac
4:1

[14
a.
Jo
8:1

[14
a.
Jo
12
Co
1:1
He
1:3

[14
a.
Jo
10
14
20

[14
b.
De
18
Jo
5:1
14

[14
a.
Jol
5:3
10

[14
a.
Ma
21
Ma
16
Lul
10

[14
a.
Ma
7:7
(M
11
Lul
11
Jol
15
16
24
(Ja
1:5
7;
1
Jol
3:2

[14

b.
Jo
13

[1
*
NU
as
Me

[1
a.
1
Jo
5:

[1
*
NU
yo
wi
ke

[1
a.
(Jo
15
20
Ac
2:
33
Ro
8:

[14
*
Co
Gr
Pa

[14
a.
(Jo
15
16
1
Jo
4:6
5:7

[14
b.
(1
Co
2:1

[14
c.
(1
Jo
2:2

[14
a.
(M
28

[14
b.
(Jo
14
28

[14
a.
Jo
16
22

[14
b.
(Ro
5:1
1
Co
15
2
Co
4:1

[14
a.
Jo
10
14

[14
a.
1

Jol
2:5

[14
*
rev

[14
a.
Lul
6:1
Ac
1:1

[14
a.
2
Co
6:1
Ep
3:1
(1
Jol
2:2
Re
3:2
21

[14
a.
Jol
5:1

[14
a.
Lu
24

[14
b.
Jo
15

[14
c.
1
Co
2:1

[14
d.
Jo
2:2
12
1
Jo
2:2

[14
*
Co
Gr
Pa

[14

a.
Lu
1:7
(Jo
16
20
Ph
4:7
Co
3:1

[1
a.
Jo
14
18

[1
b.
Jo
16

[1
c.
(Jo
5:1
Ph
2:6

[1
*
NU
om
I

sai

[14
a.
Jo
13

[14
a.
(Jo
12

[14
b.
(Jo
8:4
2
Co
5:2
He
4:1
1
Pe
1:1
2:2

[14
a.
Is.
50
Jo
10
Ph
2:8

[15
a.
Ma
15

[15
b.
(M
13

[15
*
Or
lift
up

[15
a.
(Jo
13
17
Ep
5:2

[15
a.
Jo
17
Ep
3:1

(Co
1:2

[15
a.
Ho
14
(Ga
5:2
23)

[15
b.
2
Co
3:5

[15
a.
Ma
3:1

[15
a.
1
Jo
2:1

[15
b.
Jo
14

16

[15
*
NU
om
you
wil

[15
a.
Ps.
22
(M
5:1
Joh
13
17
(Ph
1:1
1
Pet
4:1

[15
b.
Joh
8:3

[15
a.
Joh
5:2
17

[15
a.
Jol
14

[15
a.
(Jo
16
1
Jol
1:4

[15
a.
Jol
13
1
Jol
3:1

[15
b.
Ro
12

[15
a.
Ep
5:2
1
Jol

3:1

[15
a.
(M
12
28
Jol
14
21,
Ac
10
1
Jol
3:2
24

[15
a.
Ge
18

[15
a.
Jol
6:7
13
15
1
Jol
4:1

[15
b.

(M
28
Ma
16
Co
1:6

[15
c.
Jol
14
16
24

[15
a.
Jol
7:7
1
Jol
3:1

[15
a.
1
Jol
4:5

[15
b.
Jol
17

[15
a.
Ma
10
Jo
13

[15
b.
Ez
3:7

[15
a.
Ma
10
24
(1
Pe
4:1
Re
2:3

[15
a.
Jo
9:4
15

[15
b.
(Ro
1:2
Ja

4:1

[15
a.
1
Jol
2:2

[15
a.
Jol
3:2

[15
b.
Jol
14

[15
a.
Ps.
35
69
10
5

[1
a.
Lu
24
(Jo
14

Ac
2:4
33

[15
b.
1
Jol
5:6

[15
*
Co
Gr.
Pa

[15
a.
Lul
24
1
Pet
5:1
2
Pet
1:1

[15
b.
Ma
3:1
Lul
1:2
1

Jol
1:1

John
16

[16
a.
Ma
11

[16
a.
Jol
9:2

[16
b.
Ac
8:1

[16
a.
Jol
8:1
15
Ac
13
Ro
10

[16
*

NU
M
om
to
you

[16
*
NU
the

[16
a.
Jo
7:3
13
14
17

[16
a.
Ma
17
(Jo
16
22

[16
a.
Ac
2:3

[16
a.
Ac
1:8
2:1
4,
37

[16
a.
Ac
2:2

[16
a.
Ac
2:3

[16
b.
Jol
5:3

[16
a.
Ac
26

[16
b.
(Lu
10

[16
a.
Ma
4:3

[16
a.
(Jo
14

[16
b.
Jo
14
Ac
11
Re
1:1

[16
a.
Jo
15

[16
a.
1M
11
Jo
3:3

[16
*
NU
M
tak
of
Mi
an
wil
de

[16
a.
Jo
7:3
12
13
14
19
42
20

[16
b.
Jo
13

[16
*
un

[16
a.
Ma

16
Lu
23
24

[16
b.
Lu
24
41

[16
a.
Ge
3:1
Is.
13
26
42
1
Th
5:3

[16
a.
Lu
24
Jo
14
27
20
Ac
2:4
13
1

Pe
1:8

[16
a.
Ma
7:7
(Jo
14
15

[16
a.
Jol
17

[16
b.
Jol
15

[16
a.
Jol
7:1

[16
a.
(Jo
14
23)

[16

b.

Jo

3:1

[16

a.

Jo

13

3;

16

10

17

[16

a.

Jo

21

[16

b.

Jo

17

[16

a.

Ze

13

Ma

26

56

Ma

14
50
Ac
8:1

[16
b.
Jo
20

[16
c.
Jo
8:2

[16
*
ow
thi
or
pla

[16
a.
(Is
9:6
Ro
5:1
Ep
2:1

[16

b.
2
Tin
3:1

[16
c.
Ro
8:3
(1
Joh
4:4

[16
*
NU
M
om
wil

John
17

[17
a.
Joh
12

[17
a.
Da
7:1
Ma
11
Joh

3:3
(Ph
2:1
He
2:8

[17
b.
Jol
6:3
39
17
9,
24

[17
*
M
sho

[17
a.
(Is
53
Jer
9:2
24

[17
b.
1
Co
8:4
1

Th
1:9

[17
c.
Joh
3:3

[17
a.
Joh
13

[17
b.
(Da
9:2
Joh
4:3
19

[17
c.
Is.
49
50
Joh
14

[17
a.
Pro

8:2
30,
Jol
1:1
2;
Ph
2:6
Co
1:1
He
1:3

[17
*
Lit
alo

[17
a.
Ps.
22

[17
b.
Jol
6:3

[17
c.
Ez
18
Ro
14

[17
*
rev

[17
a.
Jol
8:2

[17
b.
Jol
8:4
16
30

[17
c.
De
18
18

[17
a.
(1
Jol
5:1

[17
a.

Jol
16

[17
a.
(M
16
Lul
24
Jol
13
(Ac
1:9
He
4:1
9:2
1
Pet
3:2

[17
b.
(1
Pet
1:5
Juc
1

[17
c.
Jol
10

[17

*
NU
M
kee
the
thr
Yo
nan
wh
Yo
hav
giv
Me

[17
a.
He
2:1

[17
b.
(Jo
6:3
18
1
Jol
2:1

[17
c.
Ma
27
5;
Jol
6:7

Ac
1:1
20

[17
d.
Ps.
41
10
Jo
13
Ac
1:2

[17
*
NU
om
in
the
wo

[17
*
NU
Yo
na
wh
Yo
ga
Me
An
I
gu
the

(or
it;)

[17
*
des

[17
*
des

[17
a.
Ma
24
Lu
6:2
21
Jo
15
1
Jo
3:1

[17
b.
Jo
8:2

[17
a.
Ma

6:1
Ga
1:4
2
Th
3:3
(2
Ti
4:1
2
Pe
2:9
1
Jo
5:1

[1
a.
(A
15
Ep
5:2
1
Pe
1:2

[1
b.
Ps.
11
14
15

[1
*
Se
the

apo

[17
a.
Joh
4:3
20

[17
a.
1
Co
1:2
1
Th
4:7
(H
10

[17
*
NU
M
om
wil

[17
a.
(Jo
10
Ro
12
Ga
3:2

Ep
4:4
6

[17
b.
Jo
10
17
23

[17
a.
Jo
14
1
Jo
1:3

[17
b.
(2
Co
3:1

[17
a.
(C
3:1

[17
a.

(Jo
12
14
1
Th
4:1

[17
b.
Ma
25
Jol
17

[17
a.
Jol
15

[17
b.
Jol
7:2
8:5
10

[17
c.
Jol
3:1
17
8,
18
21

23

[1
a.
Ex
34
7;
Jo
17

[1
b.
Jo
15
(E
3:1
19

John 18

[1
a.
Ma
26
36
Ma
14
32
Lu
22

[1
b.
2

Sa
15
1
Ki
2:3
15
2
Ki
23
6,
12,
2
Ch
15
29
30
Je
31

[1
a.
Lu
21
22

[1
a.
Ma
26
56,
Ma
14
50,
Lu
22
53,
Ac

1:1

[18
a.
Jol
6:6
13
3;
19

[18
a.
Ma
21
Ma
1:2
14
16
Lul
18
24

[18
b.
Ps.
41
Ma
20
26
Jol
13

[18
*

Lit
the
Na

[18
a.
(Jo
6:3
17

[18
a.
Ma
26
Ma
14
Lu
22
50

[18
a.
Ma
20
26
Ma
14
Lu
22

[18
a.
Ma
26

[18
b.
Lu
3:2
Jo
18
Ac
4:6

[18
c.
Ma
26
Jo
11
51

[18
a.
Jo
11

[18
*
ad

[18
a.
Ma
26
Ma
14

Lu
22

[18
b.
Jo
20
5

[18
*
M
the
oth

[18
a.
Ma
26
Ma
14
68
Lu
22
57

[18
a.
Ma
26

[18

a.
Ma
26
Lu
4:1
Jo
8:2

[18
b.
Jo
6:5

[18
c.
Ma
14
Jo
7:1
28

[18
*

NU
1*a*
the
Jew
me

[18
a.
Ma
12

[18
a.
Jol
16
Is.
50
Jer
20
Lar
3:3
Act
23

[18
*
Lit
gav
Jes
a
sla

[18
a.
Ma
26
Lul
3:2
Act
4:6

[18
b.
Jol
11

[18
a.
Ma
26
75
Ma
14
72
Lu
22
62

[18
a.
Ma
26
Ma
14
Lu
22
Jo
13

[18
a.
Ma
27
Ma
15
Lu
23
Ac
3:1

[18
b.
Joh
11
Ac
10
11

[18
*
Th
gov
hea

[18:29]
a.
Matt.
27:11–
14;
Mark
15:2–
5;
Luke
23:2,
3

[18:30]
*
a
criminal

[18:32]
a.
Matt.
20:17–
19;

26:2; Mark 10:33; Luke 18:32

[18:32] b. John 3:14; 8:28; 12:32, 33

[18:33] a. Matt. 27:11

[18:33] * The governor's headquarte

[18:36] a. 1 Tim. 6:13

[18:36] b. (Dan.

2:44;
7:14);
Luke
12:14;
John
6:15;
8:15

[18:37]
a.
(Matt.
5:17;
20:28;
Luke
4:43;
12:49;
19:10;
John
3:17;
9:39;
10:10;
12:47)

[18:37]
b.
Is.
55:4;
Rev.
1:5

[18:37]
c.
(John
14:6)

[18:37] d. John 8:47; 10:27; (1 John 3:19; 4:6)

[18:38] a. Is. 53:9; Matt. 27:24; Luke 23:4; John 19:4, 6; 1 Pet. 2:22–24

[18:39] a. Matt. 27:15–26; Mark 15:6–15; Luke 23:17–25

[18:40]
a.
Is.
53:3;
Acts
3:14

[18:40]
b.
Luke
23:19

John
19

[19:1]
a.
Matt.
20:19;
27:26;
Mark
15:15;
Luke
18:33

[19:3]
a.
Is.
50:6

[19:3]
*
NU

And they came up to Him and said

[19:4] a. Is. 53:9; John 18:33, 38; 1 Pet. 2:22–24

[19:6] a. Acts 3:13

[19:7] a. Lev. 24:16

[19:7] b. Matt.

26:63–66; John 5:18; 10:33

[19:7] * NU *the law*

[19:9] a. Is. 53:7; Matt. 27:12, 14; Luke 23:9

[19:10] * *authority*

[19:11] a. (Luke 22:53); John 7:30

[19:11] b. John 3:27; Rom. 13:1

[19:12] a. Luke 23:2; John 18:33; Acts 17:7

[19:13] a. Deut. 1:17; 1 Sam. 15:24; Prov. 29:25; Is. 51:12; Acts 4:19

[19:14] a. Matt. 27:62; John

19:31, 42

[19:15] a. (Gen. 49:10)

[19:16] a. Matt. 27:26, 31; Mark 15:15; Luke 23:24

[19:16] * NU omits *and led Him away*

[19:17] a. Matt. 27:31, 33; Mark 15:21,

22; Luke 23:26, 33

[19:17] b. Num. 15:36; Heb. 13:12

[19:18] a. Ps. 22:16–18; Is. 53:12; Matt. 20:19; 26:2

[19:19] a. Matt. 27:37; Mark 15:26; Luke 23:38

[19:23] a.

Matt. 27:35; Mark 15:24; Luke 23:34

[19:24] a. Ps. 22:18

[19:25] a. Matt. 27:55; Mark 15:40; Luke 2:35; 23:49

[19:25] b. Luke 24:18

[19:26] a. John 13:23; 20:2; 21:7, 20,

24

[19:26]
b.
John
2:4

[19:27]
a.
Luke
18:28;
John
1:11;
16:32;
Acts
21:6

[19:28]
a.
Ps.
22:15

[19:28]
*
M
seeing

[19:29]
a.
Ps.
69:21;
Matt.

27:48, 50; Mark 15:36; Luke 23:36

[19:30] a. Dan. 9:26; Zech. 11:10, 11; John 17:4

[19:31] a. Matt. 27:62; Mark 15:42; Luke 23:54

[19:31] b. Deut. 21:23; Josh. 8:29; 10:26

[19:31] c. Ex. 12:16; Lev. 23:6, 7

[19:34] a. (1 John 5:6, 8)

[19:35] a. John 21:24

[19:35] b. (John 20:31)

[19:36] a. (Ex. 12:46; Num. 9:12); Ps. 34:20

[19:37] a. Ps. 22:16, 17; Zech. 12:10; 13:6; Rev. 1:7

[19:38] a. Matt. 27:57–61; Mark 15:42–47; Luke 23:50–56

[19:38] b. (John 7:13; 9:22; 12:42)

[19:39] a. John 3:1,

2;
7:50

[19:39]
b.
Ps.
45:8;
Prov.
7:17;
Song
4:14;
Matt.
2:11

[19:40]
a.
Luke
24:12;
John
20:5,
7;
Acts
5:6

[19:42]
a.
Is.
53:9;
Matt.
26:12;
Mark
14:8

[19:42]

b. John 19:14, 31

John 20

[20:1] a. Matt. 28:1–8; Mark 16:1–8; Luke 24:1–10; Acts 20:7; 1 Cor. 16:2

[20:1] b. Matt. 27:60, 66; 28:2; Mark 15:46; 16:4; Luke 24:2; John 11:38

[20:2] a. John 21:23, 24

[20:2] b. John 13:23; 19:26; 21:7, 20, 24

[20:3] a. Luke 24:12

[20:5] a. John 19:40

[20:7] a. John 11:44

[20:7]
*
face cloth

[20:8]
a.
John 21:23, 24

[20:9]
a.
Ps. 16:10; Acts 2:25, 31; 13:34, 35

[20:9]
*
understand

[20:11]
a.
Mark 16:5

[20:14]
a.

Matt. 28:9; Mark 16:9

[20:14] b. (Luke 24:16, 31); John 21:4

[20:16] a. John 10:3

[20:16] * NU adds *in Hebrew*

[20:17] a. Mark 16:19; Luke 24:5; Acts 1:9; 2:34–

36; Eph. 4:8–10; Heb. 4:14

[20:17] b. Ps. 22:22; Matt. 18:10; Rom. 8:29; Heb. 2:11

[20:17] c. John 16:28; 17:11

[20:17] d. Eph. 1:17

[20:18] a. Matt. 28:10; Luke

24:10, 23

[20:18] * NU *disciples, "I have seen the Lord,"*

[20:19] a. Mark 16:14; Luke 24:36; John 14:27; 1 Cor. 15:5

[20:19] b. John 9:22; 19:38

[20:19] c. John

14:27;
16:33;
Eph.
2:17

[20:19]
*
NU
omits
assembled

[20:20]
a.
Acts
1:3

[20:20]
b.
John
16:20,
22

[20:21]
a.
(Matt.
28:18–
20);
John
17:18,
19;
(2
Tim.
2:2);
Heb.

3:1

[20:23] a. Matt. 16:19; 18:18

[20:24] a. John 11:16

[20:27] a. Ps. 22:16; Zech. 12:10; 13:6; 1 John 1:1

[20:27] b. Mark 16:14

[20:29] a. 2

Cor. 5:7; 1 Pet. 1:8

[20:29] * NU, M omit *Thomas*

[20:30] a. John 21:25

[20:31] a. Luke 1:4

[20:31] b. John 19:35; 1 John 5:13

[20:31]

c. Luke 2:11; 1 John 5:1

[20:31] d. John 3:15, 16; 5:24; (1 Pet. 1:8, 9)

John 21

[21:1] a. Matt. 26:32; Mark 14:28; John 6:1

[21:2] a. John 20:24

[21:2] b. John 1:45–51

[21:2] c. John 2:1

[21:2] d. Matt. 4:21; Mark 1:19; Luke 5:10

[21:3] * NU omits *immediately*

[21:4] a. Luke 24:16; John 20:14

[21:5]
a.
Luke
24:41

[21:6]
a.
Luke
5:4,
6,
7

[21:7]
a.
John
13:23;
20:2

[21:12]
a.
Acts
10:41

[21:14]
a.
John
20:19,
26

[21:15]
a.
Acts

20:28; 1 Tim. 4:6; 1 Pet. 5:2

[21:15] * NU *John*

[21:15] * *have affection for*

[21:16] a. Matt. 2:6; Acts 20:28; Heb. 13:20; 1 Pet. 2:25; 5:2, 4

[21:16]

b. Ps. 79:13; Matt. 10:16; 15:24; 25:33; 26:31

[21:16] * NU *John*

[21:16] * *have affection for*

[21:17] a. John 2:24, 25; 16:30

[21:17] * NU *John*

[21:17] * *have affection for*

[21:18] a. John 13:36; Acts 12:3, 4

[21:19] a. 2 Pet. 1:13, 14

[21:19] b. (Matt. 4:19; 16:24); John 21:22

[21:20] a. John 13:23; 20:2

[21:20] b. John 13:25

[21:22] a. (Matt. 16:27, 28; 25:31; 1 Cor. 4:5; 11:26; Rev. 2:25; 3:11; 22:7, 20)

[21:22] * *desire*

[21:24] a. John 19:35; 3 John 12

[21:25] a. John 20:30

[21:25] b. Amos 7:10

The Holy Spirit’s Work in

ACTS

Introductio

The Holy Spirit Prepares and Empowers Us for Spiritual Warfare

The Book of Acts might well be

named, "The Holy Spirit's Acts." At His ascension Jesus promises to baptize His disciples with power to take the gospel to the nations (Acts 1). At Pentecost the church is birthed in the baptism of Holy Spirit fire, and thousands are saved (Acts 2).

Miracles, signs, and wonders through the power of the Holy Spirit confirm the truth of the gospel, which is preached with boldness by the disciples (Acts 2–7). The church's great persecutor, Saul, dramaticall encounters Christ on the road to Damascus, repents from persecuting Christians, accepts Christ, and is filled with the Spirit (Acts 9).

Throughou the missionary journeys of the apostles the Holy Spirit directs them to accept Gentiles, resolve differences lay hands on leaders, and take the gospel throughout the world. As believers receive the Holy Spirit, they speak in other languages, witness boldly, perform signs and wonders, and pray with power, turning the world upside down.

When the Holy Spirit baptizes believers, God’s power comes upon them to witness boldly and to do mighty miracles, signs, and wonders in the name of Jesus. The power of Pentecost was meant for the entire church age.*

---

* *Ho Spi En Bib* Int to Ac 10

Acts

1

Prologue

1 The former account I made, O [a]Theophilus, of all that Jesus began both to do and teach, 2 [a]until the day in which *He was taken up, after He through the Holy Spirit [b]had given commandments

to the apostles whom He had chosen, [3][a]to whom He also presented Himself alive after His suffering by many *infallible proofs, being seen by them during forty days and speaking of the things pertaining to the kingdom of God.

The Holy

Spirit Promised

4[a]And being assembled together with *them,* He commanded them not to depart from Jerusalem, but to wait for the Promise of the Father, "which," *He said,* "you have [b]heard from Me; 5[a]for John truly baptized with water, [b]but you shall be baptized with the Holy Spirit not many days from now.” [6]Therefore, when they had come together, they asked Him, saying, “Lord, will You at this time restore the kingdom to Israel?” [7]And He said to them, [a]“It is not for you to [b]know times or seasons which the Father has put in His own authority. 8 [a]But you shall receive power [b]when the Holy Spirit has come upon you; and [c]you shall be [*]witnesses to Me in Jerusalem, and in all

Judea and [d]Samaria, and to the [e]end of the earth.”

Jesus Ascends to Heaven

9 [a]Now when He had spoken these things, while they watched, [b]He was taken up, and a cloud received Him out of their sight. 10 And while they looked

steadfastly toward heaven as He went up, behold, two men stood by them [a]in white apparel, [11]who also said, “Men of Galilee, why do you stand gazing up into heaven? This *same* Jesus, who was taken up from you into heaven,

[a]will so come in like manner as you saw Him go into heaven.”

The Upper Room Prayer Meeting

12[a]Then they returned to Jerusalem from the mount called Ol1ivet, which is near Jerusalem, a Sabbath day’s journey. 13And when they had entered, they went up [a]into the upper room where they were staying: [b]Peter, James, John, and Andrew; Philip and Thomas; Bartholomew and Matthew; James *the son* of Alphaeus and [c]Simon the Zealot; and [d]Judas *the son* of James. 14[a]These all continued with one [*]accord in prayer [*]and supplication, with [b]the women and Mary the mother of Jesus, and with [c]His brothers.

Matthias Chosen

[15]And in those days Peter stood up in the midst of the [*]disciples (altogether the number [a]of names was about

a hundred and twenty), and said, 16“Men *and* brethren, this Scripture had to be fulfilled, [a]which the Holy Spirit spoke before by the mouth of David concerning Judas, [b]who became a guide to those who arrested Jesus; 17for [a]he was numbered with us and obtained a part in [b]this ministry.”

18[a](Now this man purchased a field with [b]the *wages of iniquity; and falling headlong, he burst open in the middle and all his *entrails gushed out. 19And it became known to all those dwelling in Jerusalem; so that field is called in their own language, Akel Dama, that is, Field of Blood.)

[20]“For it is written in the Book of Psalms:

[a]‘L
his
dw
pla
be
*de

An
let
no
on

liv
in
it’;

and,

[b]‘L
an
tak
his
[*]of

[21]“Therefore, of these men who have accompanied us all the time that the Lord Jesus went in and out among us, [22]beginning from the baptism of John to that

day when [a]He was taken up from us, one of these must [b]become a witness with us of His resurrection.”

[23]And they proposed two: Joseph called [a]Barsabas, who was surnamed Justus, and Matthias. [24]And they prayed and said, “You, O Lord,

[a]who know the hearts of all, show which of these two You have chosen 25[a]to take part in this ministry and apostleship from which Judas by transgression fell, that he might go to his own place.” 26And they cast their lots,

and the lot fell on Matthias. And he was numbered with the eleven apostles.

Acts 2

Coming of the Holy Spirit

1When [a]the Day of Pentecost had fully come, [b]they were all *with one accord in one place. 2And suddenly there came a sound from heaven, as of a rushing mighty wind, and it [a]filled the whole house where they were sitting. [3]Then there appeared to them [*]divided tongues, as of fire, and *one* sat upon each of them. [4]And [a]they were all filled with the Holy Spirit and began [b]to speak with other tongues, as the Spirit gave them utterance.

The Crowd's Response

5And there were dwelling in Jerusalem Jews, [a]devout men, from every nation under heaven. 6And when this sound occurred, the [a]multitude came together, and were confused, because everyone heard them speak in his own language. 7Then they were all amazed and marveled, saying to one another, “Look, are not all these who speak [a]Galileans? 8And how *is it that* we hear, each in our own *language in which we were born? 9Parthians and Medes and Elamites, those dwelling in Mesopotamia, Judea and [a]Cappadocia, Pontus and Asia, 10 Phrygia and Pamphylia, Egypt and the parts of Libya adjoining Cyrene, visitors from Rome, both Jews and proselytes, 11 Cretans and *Arabs—we hear them speaking in our own tongues the wonderful works of God.” [12]So they were all amazed and perplexed, saying to one another, “Whatever could this mean?”

[13]Others mocking said, “They are full of new wine.”

Peter’s Sermon

[14]But Peter, standing up with the eleven, raised his voice and said

to them, “Men of Judea and all who dwell in Jerusalem, let this be known to you, and heed my words. 15For these are not drunk, as you suppose, [a]since it is *only* *the third hour of the day. 16But this is what was spoken by the prophet Joel:

[17]‘
[a]
it
sha
cor
to
pas
in
the
las
day
say
Go

[b]Tl
I
wil
pot
out
of
My
Spi
on
all
fles

Yo
son
and
[c]yo
dat
sha

pro

Yo
you
me
sha
see
vis

Yo
old
me
sha
dre
dre

18A
on
My
me
and
on
My
ma

I
wi
po
ou
My
Sp
in
tho
day

[a]An
the
sha
pro

19[a]

wi
sho
wo
in
hea
abo

An
sig
in
the
ear
ber

Blo
and
fire
and
vap
of
sm

20a
sur
sha
be
tur
int
dar

An
the
mo
int
blo

Ber
the
cor
of
the

gre
and
aw
day
of
the
LO

[21]A
it
sha
con
to
pas

Th
[a]wh
cal
on
the
nan
of
the
LO

Sha
be
sav

[22]“Men of Israel, hear these words: Jesus of Nazareth, a Man attested

by God to you [a]by miracles, wonders, and signs which God did through Him in your midst, as you yourselves also know—

23 Him, [a]being delivered by the determined purpose and foreknowledge of God, [b]you *have taken by lawless hands, have

crucified, and put to death; 24[a]whom God raised up, having *loosed the *pains of death, because it was not possible that He should be held by it. 25For David says concerning Him:

[a]'I for the LO alw bef my fac

For
He
is
at
my
rig
han
tha
I
ma
no
be
sha

[26]T
my
hea
rej
and
my
ton
wa
gla

Mo
my
fle
als
wil
res
in
ho

[27]F
Yo
wil
no
lea
my
sou
in

Ha

No
wi
Yo
all
Yo
Ho
On
to
see
[a]co

[28]Y
hav
ma
kn
to
me
the
wa
of
life

Yo
wi
ma
me
ful
of
joy
in
Yo
pre

[29]“Men
and
brethren,
let
me
speak

freely to you [a]of the patriarch David, that he is both dead and buried, and his tomb is with us to this day. 30Therefore, being a prophet, [a]and knowing that God had sworn with an oath to him that of the fruit of his body, *according to the flesh, He would raise up the Christ to sit on his throne, 31 he, foreseeing this, spoke concerning the resurrection of the Christ, [a]that His soul was not left in Hades, nor did His flesh see corruption. 32 [a]This Jesus God has raised up, [b]of which we are all witnesses. 33 Therefore [a]being exalted [*]to [b]the right hand of God, and [c]having received from the Father the promise of the Holy Spirit, He [d]poured out this which you now see and hear.

34“For David did not ascend into the heavens, but he says himself:

[a]‘T
LO
sai
to
my
Lor

“Si
at
My
rig
han

35T
I
ma
Yo
en
Yo
foo
’

36“Therefore let

all the house of Israel know assuredly that God has made this Jesus, whom you crucified, both Lord and Christ.”

37Now when they heard *this,* [a]they were cut to the heart, and said to Peter and the rest of the apostles, "Men *and* brethren, what shall we do?"

[38]Then Peter said to them, [a]"Repent, and let every one of you be baptized in the name of Jesus Christ for the *remission of sins; and you shall receive the gift of the Holy

Spirit. [39]For the promise is to you and [a]to your children, and [b]to all who are afar off, as many as the Lord our God will call.”

A Vital Church Grows

[40]And with many other words he testified and exhorted them,

saying, “Be saved from this *perverse generation.” 41 Then those who *gladly received his word were baptized; and that day about three thousand souls were added *to them.* 42 [a]And they continued steadfastly in the apostles’ *doctrine and fellowship, in the breaking of bread, and in prayers. 43 Then fear came upon every soul, and [a]many wonders and signs were done through the apostles. 44 Now all who believed were together, and [a]had all things in common, 45 and *sold their possessions and goods, and [a]divided* them among all, as anyone had need.

46 [a]So continuing daily with one accord [b]in the temple, and [c]breaking bread from house to house, they ate their food with gladness and simplicity of heart, 47 praising God and having favor with all the people.

And [a]the Lord added [*]to the church daily those who were being saved.

PREPARIN *for* SPIRITUAL WARFARE

THE FOUNDATI OF THE FULLNESS AND POWER OF THE HOLY SPIRIT

The Lord on the earth today is the third

Person of the Godhead, the blessed Holy Spirit. The Holy Spirit indwells every believer. He may, however, be ignored, insulted, grieved, and quenched. He longs to fill, gift, and bring forth fruit in every believer.

The Holy Spirit alone turns

the
Word
of
God
into
the
sword
of
the
Spirit.

The

**Holy
Spirit
alone
makes
effective
praying
possible.**

Th
Ho
Sp
alo
giv
un
of
the
Wo
of
Go

Th
scr
spe
of
the
gif
of
rev
kno
and
und
by
the
Ho
Spi
Go
Spi
ma
it
pos
to
und
and
app
spi

tru

Th
Ho
Sp
str
ou
inn
ma

Th
Ho
Sp
de
to
fill
eve
Ch

Epl 5:1 say “Bo fill wi the Spi Th ful is no les tha tot cor of the ind Th is the lor of Ch act in the life of a Ch A Spi fill bel car be def by Sat

an
his
der
for
Wh
we
are
fill
wit
the
Spi
we
live
in
a
co
sta
of
tri

Acts 3

A Lame

Man Healed

[1]Now Peter and John went up together [a]to the temple at the hour of prayer, [b]the ninth *hour.* [2]And [a]a certain man lame from his mother's womb was carried, whom they laid daily at the gate of the temple

which is called Beautiful, [b]to [*]ask alms from those who entered the temple; [3]who, seeing Peter and John about to go into the temple, asked for alms. [4]And fixing his eyes on him, with John, Peter said, “Look at us.” [5]So he gave them his attention, expecting to receive something from them. 6Then Peter said, “Silver and gold I do not have, but what I do have I give you: [a]In the name of Jesus Christ of Nazareth, rise up and walk.”

[7]And he took him by the right hand and lifted *him* up, and immediatel his feet and ankle bones received strength. [8]So he, [a]leaping up, stood and walked and entered the temple with them—walking, leaping, and praising God. [9][a]And

all the people saw him walking and praising God. 10Then they knew that it was he who [a]sat begging alms at the Beautiful Gate of the temple; and they were filled with wonder and amazement at what had happened to him.

Preaching in Solomon’s Portico

[11]Now as the lame man who was healed held on to Peter and John, all the people ran together to them in the porch [a]which is called Solomon’s, greatly amazed. [12]So when Peter saw *it,* he responded

to the people: “Men of Israel, why do you marvel at this? Or why look so intently at us, as though by our own power or godliness we had made this man walk? [13][a]The God of Abraham, Isaac, and Jacob, the

God of our fathers, [b]glorified His Servant Jesus, whom you [c]delivered up and [d]denied in the presence of Pilate, when he was determined to let *Him* go. [14]But you denied [a]the Holy One [b]and the Just, and [c]asked for a murderer to be granted to you, 15 and killed the [*]Prince of life, [a]whom God raised from the dead, [b]of which we are witnesses. [1]16 [a]And His name, through faith in His name, has made this man strong, whom you see and know. Yes, the faith which *comes* through Him has given him this perfect soundness in the presence of you all.

[17]“Yet now, brethren, I know that [a]you did *it* in ignorance, as *did* also your rulers. [18]But [a]those things which God foretold [b]by

the mouth of all His prophets, that the Christ would suffer, He has thus fulfilled. 19[a]Repent therefore and be converted, that your sins may be blotted out, so that times of refreshing may come from the presence of the Lord, 20and that He may send [*]Jesus Christ, who was [*]preached to you before, 21 [a]whom heaven must receive until the times of [b]restoration of all things, [c]which God has spoken by the mouth of all His holy prophets since [*]the world began. 22 For

Moses truly said to the fathers, [a]‘The LORD your God will raise up for you a Prophet like me from your brethren. Him you shall hear in all things, whatever He says to you. [23]And it shall be *that* every soul who will not hear that Prophet shall be utterly destroyed from among the people.’ 24 Yes, and [a]all the prophets, from Samuel and those who follow, as many as have spoken, have also *foretold these days. 25 [a]You are sons of the prophets, and of the covenant which God made with our fathers, saying to Abraham, [b]‘And in your seed all the families of the earth shall be blessed.’ 26To you [a]first, God, having raised up His Servant Jesus, sent Him to bless you,

[b]in turning away every one *of you* from your iniquities.”

Acts 4

Peter and John Arrested

[1]Now as they spoke to the people, the priests, the captain of the temple, and the [a]Sadducees came upon them, [2]being greatly disturbed that

they taught the people and preached in Jesus the resurrection from the dead. [3]And they laid hands on them, and put *them* in custody until the next day, for it was already evening. [4]However, many of those who heard the word believed; and the number of the men came to be about five thousand.

Addressin the Sanhedrin

[5]And it came to pass, on the next day, that their rulers, elders, and scribes, [6]as well as [a]Annas the high priest, Caiaphas, John, and

Alexander, and as many as were of the family of the high priest, were gathered together at Jerusalem. 7And when they had set them in the midst, they asked, [a]“By what power or by what name have you done this?”

8[a]Then

Peter, filled with the Holy Spirit, said to them, “Rulers of the people and elders of Israel: [9]If we this day are judged for a good deed *done* to a helpless man, by what means he has been made well, [10]let it be known to you all, and to all the people of Israel, [a]that by the name of Jesus Christ of Nazareth, whom you crucified, [b]whom God raised from the dead, by Him this man stands here before you whole. [11]This is the [a]‘stone which was rejected by you builders, which has become the chief cornerstone 12 [a]Nor is there salvation in any other, for there is no other name under heaven given among men by which we must be saved.”

The Name

of Jesus Forbidden

13Now when they saw the boldness of Peter and John, [a]and perceived that they were uneducated and untrained men, they marveled. And they realized that they had been with Jesus. 14And seeing the man who had been healed

[a]standing with them, they could say no1thing against it. [15]But when they had commande them to go aside out of the council, they conferred among themselves [16]saying, [a]“What shall we do to these men? For, indeed, that a *notable miracle has

been done through them *is* [b]evident[*] to all who dwell in Jerusalem, and we cannot deny *it.* [17]But so that it spreads no further among the people, let us severely threaten them, that from now on they speak to no man in this name.”

[18][a]So they called them and commande them not to speak at all nor teach in the name of Jesus. [19]But Peter and John answered and said to them, [a]“Whether it is right in the sight of God to

listen to you more than to God, you judge. [20][a]For we cannot but speak the things which [b]we have seen and heard.” [21]So when they had further threatened them, they let them go, finding no way of punishing them, [a]because of the people, since they all [b]glorified God for [c]what had been done. 22For the man was over forty years old on whom this miracle of healing had been performed.

Prayer for Boldness

23And being let go, [a]they went to their own *companions* and reported all that the chief priests and elders had said to them. 24So when they heard that, they raised their voice to God with one accord and said: “Lord, [a]You *are* God, who made heaven and earth and the sea, and all that is in them, [25]who *by the mouth of Your servant David have said:

An

the
rul
we
gat
tog

Ag
the
LO
an
aga
His
Ch

[27]“For [a]truly against [b]Your holy Servant Jesus, [c]whom You anointed, both Herod and Pontius Pilate, with the Gentiles and the people of Israel, were gathered together [28][a]to

do whatever Your hand and Your purpose determined before to be done. 29Now, Lord, look on their threats, and grant to Your servants [a]that with all boldness they may speak Your word, 30by stretching out Your hand to heal, [a]and that signs and wonders may be done [b]through the name of [c]Your holy Servant Jesus.”

31 And when they had prayed, [a]the place where they were assembled together was shaken; and they were all filled with the Holy Spirit, [b]and they spoke the

word of God with boldness.

Sharing in All Things

[32]Now the multitude of those who believed [a]were of one heart and one soul; [b]neither did anyone say that any of the things he possessed was his own, but they had all

things in common. 33 And with [a]great power the apostles gave [b]witness to the resurrection of the Lord Jesus. And [c]great grace was upon them all. 34 Nor was there anyone among them who lacked; [a]for all who were possessors of lands or houses sold them, and brought the proceeds of the things that were sold, [35][a]and laid *them* at the apostles' feet; [b]and they distributed to each as anyone had need.

[36]And [*]Joses, who was [1]also named Barnabas by the apostles (which is

translated Son of *Encouragement), a Levite of the country of Cyprus, 37[a]having land, sold *it,* and brought the money and laid *it* at the apostles’ feet.

Acts 5

Lying to the Holy Spirit

1But a certain man named Ananias, with

Sapphira his wife, sold a possession. 2And he kept back *part* of the proceeds, his wife also being aware *of it,* and brought a certain part and laid *it* at the apostles' feet. 3[a]But Peter said, "Ananias, why has [b]Satan filled

your
heart
to
lie
to
the
Holy
Spirit
and
keep
back
part
of
the
price
of
the
land
for
yourself?
[4]While
it
remained,
was
it
not
your
own?
And
after
it
was
sold,
was
it
not
in
your
own
control?
Why

have you conceived this thing in your heart? You have not lied to men but to God.”

[5]Then Ananias, hearing these words, [a]fell down and breathed his last. So great fear came upon all those who heard these things. [6]And the

young men arose and [a]wrapped him up, carried *him* out, and buried *him.*

[7]Now it was about three hours later when his wife came in, not knowing what had happened. [8]And Peter answered her, “Tell me whether you sold the land

for so much?”

She said, “Yes, for so much.”

[9]Then Peter said to her, “How is it that you have agreed together [a]to test the Spirit of the Lord? Look, the feet of those who have buried your husband *are* at

the door, and they will carry you out.” 10[a]Then immediately she fell down at his feet and breathed her last. And the young men came in and found her dead, and carrying *her* out, buried *her* by her husband. 11[a]So great fear came upon all the church and upon all who heard these things.

Continuing Power in the Church

12And [a]through the hands of the apostles many signs and wonders were done among the people. [b]And they were all with one accord in Solomon’s Porch. 13Yet [a]none of the rest dared join them, [b]but the people esteemed them highly. 14And believers were increasingly added to the Lord, multitudes of both men and women, [15]so that they brought the sick out into the streets and laid *them* on beds and couches, [a]that at least the shadow of Peter passing by might fall on some of them. [16]Also a multitude gathered from the surrounding cities to Jerusalem, bringing [a]sick people and those who were tormented by unclean spirits, and they were all healed.

Imprisoned Apostles Freed

17 [a]Then the high priest rose up, and all those who *were* with him (which is the sect

of the Sadducees), and they were filled with *indignation, 18[a]and laid their hands on the apostles and put them in the common prison. 19But at night [a]an angel of the Lord opened the prison doors and brought them out, and said, 20“Go, stand in the temple and speak to the people [a]all the words of this life.”

21And when they heard *that,* they entered the temple early in the morning and taught. [a]But the high priest and those with him came and called the *council together, with all the *elders of the children of Israel, and sent to the prison to have them brought.

Apostles on Trial Again

22But when the officers came and did not find them in the prison, they returned and reported, [23]saying, “Indeed we found the prison shut sec1urely, and the guards standing [*]outside before the doors; but when we opened them, we found no one inside!” [24]Now when [*]the high priest, [a]the captain of the temple, and the chief priests heard these things, they wondered what the outcome would be. [25]So one came and told them, *saying, “Look, the men whom you put in prison are standing in the temple and teaching the people!”

[26]Then the captain went with the

officers and brought them without violence, [a]for they feared the people, lest they should be stoned. 27And when they had brought them, they set *them* before the council. And the high priest asked them, 28saying, [a]“Did we not strictly command you not to teach in this name? And look, you have filled Jerusalem with your doctrine, [b]and intend to bring this Man’s [c]blood on us!”

29But Peter and the *other* apostles answered and said: [a]“We ought to obey God rather than men.

30 [a]The God of our fathers raised up Jesus whom you murdered by [b]hanging on a tree. 31 [a]Him God has exalted to His right hand *to be* [b]Prince and [c]Savior, [d]to give repentance to Israel and forgiveness of sins. 32 And [a]we are

His witnesses to these things, and *so* also *is* the Holy Spirit [b]whom God has given to those who obey Him.”

Gamaliel’s Advice

[33]When they heard *this,* they were [a]furious* and plotted to kill them. [34]Then one in the council stood

up, a Pharisee named [a]Gamaliel, a teacher o1f the law held in respect by all the people, and commanded them to put the apostles outside for a little while. [35]And he said to them: “Men of Israel, *take heed to yourselves what you intend to do regarding these men. [36]For some time ago Theudas rose up, claiming to be somebody. A number of men, about four hundred, *joined him. He was slain, and all who obeyed him were scattered and came to nothing. [37]After this man, Judas of Galilee rose up in the days of the census, and drew away many people after him. He also perished, and all who obeyed him were dispersed. [38]And now I say to you, keep away from these men and let them alone; for if this plan or this work is of men, it will come to nothing; 39[a]but if it is of God, you cannot overthrow it—lest you even be found [b]to fight against God.”

40And they agreed with him, and when they had [a]called for the apostles [b]and beaten *them,* they commanded that they should not speak in the name of Jesus, and let them go. 41So they departed from the presence of the council,

[a]rejoicing that they were counted worthy to suffer shame for [*]His name. 42And daily [a]in the temple, and in every house, [b]they did not cease teaching and preaching Jesus *as* the Christ.

Acts 6

Seven Chosen to Serve

1Now in

those days, [a]when *the number of* the disciples was multiplying, there arose a complaint against the Hebrews by the [b]Hellenists,[*] because their widows were neglected [c]in the daily distribution. [2]Then the twelve summoned the multitude of the disciples and said, [a]“It is not desirable that we should leave the word of God and serve tables. 3 Therefore, brethren, [a]seek out from among you seven men of *good* reputation, full of the Holy Spirit and wisdom, whom we may appoint over this [b]business; 4 but we [a]will give ourselves continually to prayer and to the ministry of the word.”

5 And the saying pleased the whole multitude. And they chose Stephen, [a]a man full of faith and the Holy Spirit, and [b]Philip, Prochorus, Nicanor, Timon, Parmenas, and

[c]Nicolas, a proselyte from Antioch, 6 whom they set before the apostles; and [a]when they had prayed, [b]they laid hands on them.

7 Then [a]the word of God spread, and the

number of the disciples multiplied greatly in Jerusalem, and a great many [b]of the priests were obedient to the faith.

Stephen Accused of Blasphemy

8And Stephen, full of [*]faith and power, did great [a]wonders and signs among the people. 9Then there arose some from what is called the Synagogue of the Freedmen (Cyrenians, Alexandrians, and those from Cilicia and Asia), disputing with Stephen. 10And [a]they were not able to resist the wisdom and the Spirit by which he spoke. 11[a]Then they secretly induced men to say, “We have heard him speak blasphemous words against Moses and God.” [12]And they stirred up the people, the elders, and the scribes; and they came upon *him,* seized him, and brought *him* to the council. [13]They also set up false witnesses who said, “This man does not cease to speak *blasphemous words against this holy place and the law; 14[a]for1 we have heard him say that this Jesus of Nazareth will destroy this place and change the customs which Moses delivered to us.” [15]And all who sat in the council, looking steadfastly at him, saw his face as the face of an angel.

Acts 7

Stephen’s Address: The Call of Abraham

[1]Then the high priest said, “Are these

things so?”

2And he said, [a]“Brethren and fathers, listen: The [b]God of glory appeared to our father Abraham when he was in Mesopotamia, before he dwelt in [c]Haran, 3and said to him, [a]‘Get out of your country and from your relatives, and come to a land that I will show you.’ 4Then [a]he came out of the land of the Chaldeans and dwelt in Haran. And from there, when his father was [b]dead, He moved him to this land in which you now dwell. 5And *God* gave him no inheritance in it, not even *enough* to set his foot on. But even when *Abraham* had no child, [a]He promised to give it to him for a possession, and to his descendants after him.

6But God spoke in this way: [a]that his descendants would dwell in a foreign land, and that they would bring them into [b]bondage and oppress *them* four hundred years. 7[a]‘And the nation to whom they will be in bondage I will

[b]judge,’ said God, [c]‘and after that they shall come out and serve Me in this place.’ 8[a]Then He gave him the covenant of circumcision; [b]and so *Abraham* begot Isaac and circumcised him on the eighth day; [c]and Isaac *begot* Jacob, and

[d]Jacob *begot* the twelve patriarchs.

The Patriarchs in Egypt

9 [a]"And the patriarchs, becoming envious, [b]sold Joseph into Egypt. [c]But God was with him 10 and delivered him out of all his troubles, [a]and gave him favor and wisdom in the presence of

Pharaoh, king of Egypt; and he made him governor over Egypt and all his house. 11[a]Now a famine and great *trouble came over all the land of Egypt and Canaan, and our fathers found no sustenance. 12[a]But when Jacob heard that there was grain in Egypt, he sent out our fathers first. 13And the [a]second *time* Joseph was made known to his brothers, and Joseph's family became known to the Pharaoh. 14[a]Then Joseph sent and called his father Jacob and [b]all his relatives to *him,* [*]seventy-five people. 15 [a]So Jacob went down to Egypt; [b]and he died, he and our fathers. 16 And [a]they were carried back to Shechem and laid in [b]the tomb that Abraham bought for a sum of money from the sons of Hamor, *the father* of Shechem.

God Delivers Israel by Moses

[17]“But when [a]the time of the promise drew near which God had sworn to Abraham, [b]the people grew and multiplied in Egypt [18]till another king [a]arose who did not

know Joseph. 19This man dealt treacherously with our people, and oppressed our forefathers, [a]making them expose their babies, so that they might not live. 20[a]At this time Moses was born, and [b]was well pleasing to God; and he was brought up in his father's house for three months. [21]But [a]when he was set out, [b]Pharaoh's daughter took him away and brought him up as her own son. [22]And Moses was learned in all the wisdom of the Egyptians, and was [a]mighty in words and deeds.

23[a]“Now when he was forty years old, it came into his heart to visit his brethren, the children of Israel. 24And seeing one of *them* suffer wrong, he defended and avenged him who was oppressed, and struck down the Egyptian. [25]For he supposed that his brethren would have understood that God would deliver them by his hand, but they did not understand. [26]And the next day he appeared to *two of* them as they were fighting, and *tried to* reconcile them, saying, ‘Men, you are brethren; why do you wrong one another?’ [27]But he who did his neighbor wrong pushed him away, saying, [a]‘Who made you a ruler and a judge over us? [28]Do you want to kill me as you did the Egyptian yesterday?’ 29[a]Then, at this saying, Moses fled and became a dweller in the land of Midian, where he [b]had two sons.

30[a]“And when forty years had passed, an Angel [*]of the Lord appeared to him in a flame of fire in a bush, in the wilderness of Mount Sinai. [31]When Moses saw *it,* he marveled at the sight; and as he drew near to observe, the voice of the Lord came to him, [32]*saying,* [a]‘I *am* the God of your fathers—the God of Abraham, the God of Isaac, and the God of Jacob.' And Moses trembled and dared not look. 33[a]'Then the LORD said to him, "Take your sandals off your feet, for the place where you stand is holy ground. [34]I have surely [a]seen the oppression of My people who are in Egypt; I have heard their groaning and have come down to deliver them. And now come, I will [b]send you to Egypt.”’

[35]“This Mose1s

whom they rejected, saying, [a]‘Who made you a ruler and a judge?’ is the one God sent *to be* a ruler and a deliverer [b]by the hand of the Angel who appeared to him in the bush. [36][a]He brought them out, after he had [b]shown wonders and signs in the land of Egypt, [c]and in the Red Sea, [d]and in the wilderness forty years.

Israel Rebels Against God

[37]“This is that Moses who said to the children of Israel, [a]‘The LORD your

God will raise up for you a Prophet like me from your brethren. [b]Him* you shall hear.’

38 [a]“This is he who was in the *congregation in the wilderness with [b]the Angel who spoke to him on Mount Sinai, and *with* our

fathers, [c]the one who received the living [d]oracles* to give to us, [39]whom our fathers [a]would not obey, but rejected. And in their hearts they turned back to Egypt, [40][a]saying to Aaron, ‘Make us gods to go before us; *as for* this Moses who brought us out of the land of Egypt, we do not know what has become of him.’ 41 [a]And they made a calf in those days, offered sacrifices to the idol, and [b]rejoiced in the works of their own hands. 42Then [a]God turned and gave them up to worship [b]the host of heaven, as it is written in the book of the Prophets:

> [c]‘D
> yo
> off
> Me
> sla
> ani
> an
> sac
> *du*
> for
> yea
> in
> the
> wi
>
> O

ho
of
Isr

43Y
als
too
up
the
tab
of
Mo

An
the
sta
of
yo
go
Re

Im
wh
yo
ma
to
wo

An
[a]I
wi
ca
yo
aw
be
Ba

God's True Tabernacle

44"Our

fathers had the tabernacle of witness in the wilderness, as He appointed, instructing Moses [a]to make it according to the pattern that he had seen,
45 [a]which our fathers, having received it in turn, also brought with Joshua into the land possessed

by the Gentiles, [b]whom God drove out before the face of our fathers until the [c]days of David, 46 [a]who found favor before God and [b]asked to find a dwelling for the God of Jacob. 47 [a]But Solomon built Him a house.

48 “However,

[a]the Most High does not dwell in temples made with hands, as the prophet says:

49‘
[a]*is*
My
thr

An
ear
is
My
foo

Wh
ho
wil
you
bu
for
Me
say
the
LO

Or
wh
is

the
pla
of
My
res

50H
My
ha
no
[a]m
all
the
thi

Israel Resists the Holy Spirit

51“*You* [a]stiff-necked[*] and [b]uncircumcised in heart and ears! You always resist the Holy Spirit; as your fathers *did,* so *do* you. 52[a]Which of the prophets did your fathers not persecute? And they killed those who foretold the coming of [b]the Just One, of whom you now have become the betrayers and murderers, 53[a]who have received the law by the direction of angels and have not kept *it.*”

Stephen the Martyr

54[a]When they heard these things they were *cut to the heart, and they gnashed at him with *their* teeth. 55But he, [a]being full of the Holy Spirit, gazed into heaven and saw the [b]glory of God, and Jesus standing at the right hand of God, 56and said, “Look! [a]I see the heavens opened and the [b]Son of Man standing at the right hand of God!”

57Then they cried out with a loud voice, stopped their ears, and ran at him with one accord; 58and they cast *him* out of the city and stoned *him.* And [a]the witnesses laid down their clothes at the feet of a young man named Saul. 59And they stoned Stephen as he was calling on *God* and saying, “Lord Jesus, [a]receive my spirit.” 60Then he knelt down and cried out with a loud voice, [a]“Lord, do not charge them with this sin.” And when he had said this, he fell asleep.

LESSONS FROM GOD’S WARRIORS

PROFILE

PAUL AND SILAS

Praise God IN the Problem, Not Just When You Get Out of It

If you are in the midst of a problem, bring God into the problem with you by repentance and genuine praise. That is, get right with God, and praise Him in the problem. It matters not why you are1 in the problem. If Satan has turned up the heat in your life, it is with

God's permission. He must have permission to touch God's property. It is possible, as in the case of Paul, that God has sent a messenger of Satan to buffet you. Perhaps He is pruning, breaking, shaping, molding, and remaking you into the image of His dear Son. Regardless of the reason, what Satan means for evil, God intends for good in the life of His children. Praise Him in the problem.

The idea is not to get out of the problem but to get God in the problem with you and see that He receives maximum glory. Now, here is a critical key for you if you are in a trial. Praise Him *in* the problem—not when you get out.

Circumstan may say to you that it’s over. Satan will tell you in many different ways that it is over. *It ain’t over!*

When Paul and Silas where imprisoned in Philippi, they had done nothing wrong. They engaged in spiritual war, and Satan got upset. They exposed the kingdom of darkness and cast a demon from a young lady. All hell broke loose… literally. The demons so stirred up the people that the two preachers were beaten openly and cast into the inner prison.

In the darkness and stench of the prison, feet in stocks, hands no doubt in chains, back bleeding, and somewhat humiliated they did not question God. They did not ask God, “Where are You? Why have You allowed this?” They knew the entire jail would be listening to the conversatio of these two who claimed to know God through His Son, Jesus Christ. You must always be aware that others are watching you demonstrat your faith when you are in the midst of the darkness. God is attracted to praise.

Instead of complainin and questioning while still in their pain, they *praised Him*! God is attracted to praise. He will come right where you are when you praise

Him. Not only will He come, but also Satan's demons will leave when you praise Him. At about midnight I can hear the two weary, bleeding saints begin to cry out, "There is power, power, wonder-working power, in the blood of the Lamb!” The demons began to tremble; they tucked their tail between their legs and ran like cowards. The earth began to tremble also. Prison doors fell to the ground, every man’s shackles dropped to the floor, and instantly every prisoner was free from the bondage that held them. But they did not leave. There was a way out; had God not opened the door as a way of escape? No, *He was coming in!* He came in so that they would be able to bear it, so He may receive maximum glory. He came in so that every man would know the power and love of Jesus Christ. Stay in the problem until the jailer comes to his knees.

Satan

is the jailer if you are in bondage. He is the one that holds you captive. If you will allow God to come into the problem with you, you will be able to bear it, and you will beat it! You can stay until the jailer says, “Uncle!” Stay until you are free and the demonic stronghold in your life is broken by the power of God. Don’t even think about quitting or yielding. Stay in until the jailer comes to his knees. Don’t look for the easy way out. Why go out if God is on the inside?

Don’t settle for second best. Stay until God is fully glorified. Proclaim to yourself, to your associates, to your enemies, to God, and to all of hell, “*It ain’t over!*” God is bigger than over. No matter what the circumstan if you are a child of God, get right with God. Get God in the problem with you, and you will be victorious! Don’t focus on the circumstan

Satan will use circumstan to lie to you. His 1only power over a believer is deception. He will lie because he is a liar. He will rob you of peace because he is a robber. He

will
steal
your
joy
because
he
is
a
thief.
He
will
kill
your
hope
because
he
is
a
murderer.
You
must
not
focus
on
circumstan
they
will
eat
you
up.
Focus
on
the
God
who
can
eat
up
the
circumstan
Believe

God regardless! The Word of God is where you must find strength.*

Acts 8

Saul Persecutes the Church

[1]Now Saul was consenting to his death. At

that time a great persecution arose against the church which was at Jerusalem; and [a]they were all scattered throughout the regions of Judea and Samaria, except the apostles. [2]And devout men carried Stephen *to his burial,* and [a]made great lamentation over

him.

[3]As for Saul, [a]he made havoc of the church, entering every house, and dragging off men and women, committing *them* to prison.

Christ Is Preached in Samaria

[4]Therefore [a]those who were scattered went everywhere preaching the word. [5]Then [a]Philip went

down to [*]the city of Samaria and preached Christ to them. [6]And the multitudes with one accord heeded the things spoken by Philip, hearing and seeing the miracles which he did. [7]For [a]unclean spirits, crying with a loud voice, came out of many who were possessed; and many who were paralyzed and lame were healed. [8]And there was great joy in that city.

The Sorcerer's Profession of Faith

[9]But there was a certain man called Simon, who previously [a]practiced *sorcery in the

city and [b]astonished the [*]people of Samaria, claiming that he was someone great, [10]to whom they all gave heed, from the least to the greatest, saying, “This man is the great power of God.” [11]And they heeded him because he had astonished them with his *sorceries for a long time. 12 But when they believed Philip as he preached the things [a]concerning the kingdom of God and the name of Jesus Christ, both men and women were baptized. 13 Then Simon himself also believed;

and when he was baptized he continued with Philip, and was amazed, seeing the miracles and signs which were done.

The Sorcerer's Sin

[14]Now when the [a]apostles who were at Jerusalem heard that Samaria had received the word of God, they

sent Peter and John to them, 15who, when they had come down, prayed for them [a]that they might receive the Holy Spirit. 16For [a]as yet He had fallen upon none of them. [b]They had only been baptized in [c]the name of the Lord Jesus. 17 Then [a] they laid hands on them, and they received the Holy Spirit.

Th
ma
tri
to
co
a
go
de
or
spi
to
wo
fo
hi
He
fol
a

pat
of
occ
pra
to
ber
psy
for
to
his
wil
Ma
and
son
are
not
me
sup
rat
the
hav
a
rea
bel
the
Th
mu
be
res
and
ove
thr
the
pov
of
the
Ho
Spi
in
the
nar

of
Jes
Ch

[18]And when Simon saw that through the laying on of the apostles’ hands the Holy Spirit was given, he offered them money,

[19] saying, "Give me this power also, that anyone on whom I lay hands may receive the Holy Spirit."

[20] But Peter said to him, "Your money perish with you, because [a] you thought that [b] the gift of God could be purchased with money!

[21]You have neither part nor portion in this matter, for your [a]heart is not right in the sight of God. [22]Repent therefore of this your wickedness, and pray God [a]if perhaps the thought of your heart may be forgiven you. [23]For

I see that you are [a]poisoned by bitterness and bound by iniquity.”

24Then Simon answered and said, [a]“Pray to the Lord for me, that none of the things which you have spoken may come upon me.”

25So when they had testified

and preached the word of the Lord, they returned to Jerusalem, preaching the gospel in many villages of the Samaritans.

Christ Is Preached to an Ethiopian

[26] Now an angel of the Lord spoke to [a]Philip, saying, “Arise and go toward the

south along the road which goes down from Jerusalem to Gaza.” This is [*]desert. 27So he arose and went. And behold, [a]a man of Ethiopia, a eunuch of great authority under Candace the queen of the Ethiopians, who had charge of all her treasury, and [b]had come to Jerus1alem to worship, [28]was returning. And sitting in his chariot, he was reading Isaiah the prophet. [29]Then the Spirit said to Philip, “Go near and overtake this chariot.”

[30]So Philip ran to him, and

heard him reading the prophet Isaiah, and said, “Do you understand what you are reading?”

[31]And he said, “How can I, unless someone guides me?” And he asked Philip to come up and sit with him. [32]The place in the Scripture

which he read was this:

[a]“He was led as a sheep to the slaughter;

And as a lamb before its shearer *is* silent,

[b]So He opened not His mouth.

33 In His humiliatio His [a]justice was taken away,

And who will declare His generation?

For His life is [b]taken from the earth.”

[34]So the eunuch answered Philip and said, “I ask you, of whom does the prophet say this, of himself or of some other man?” [35]Then

Philip opened his mouth, [a]and beginning at this Scripture, preached Jesus to him. 36Now as they went down the road, they came to some water. And the eunuch said, “See, *here is* water. [a]What hinders me from being baptized?”

37[*]Then Philip

said, [a]“If you believe with all your heart, you may.” And he answered and said, [b]“I believe that Jesus Christ is the Son of God.”

[38]So he commanded the chariot to stand still. And both Philip and the eunuch went down

into the water, and he baptized him. [39]Now when they came up out of the water, [a]the Spirit of the Lord caught Philip away, so that the eunuch saw him no more; and he went on his way rejoicing. [40]But Philip was found a1t [*]Azotus. And passing through, he preached in all the cities till he came to [a]Caesarea.

Acts 9

The Damascus Road: Saul Converted

1 Then [a]Saul, still breathing threats and murder against the disciples of the Lord, went to

the high priest 2and asked [a]letters from him to the synagogues of Damascus, so that if he found any who were of the Way, whether men or women, he might bring them bound to Jerusalem.

3[a]As he journeyed he came near

Damascus, and suddenly a light shone around him from heaven. 4Then he fell to the ground, and heard a voice saying to him, “Saul, Saul, [a]why are you persecuting Me?”

5And he said, “Who are You, Lord?”

Then the Lord said,

“I am Jesus, whom you are persecuting. *It *is* hard for you to kick against the goads.”

[6]So he, trembling and astonished, said, “Lord, what do You want me to do?”

Then the Lord *said* to him, “Arise and go into the city, and you will be told what you must do.”

7And [a]the men who journeyed with him stood speechless, hearing a voice but seeing no one. 8Then Saul arose from the ground, and when his eyes were opened he saw no one. But they led him by the hand and brought *him* into Damascus. [9]And he was three days without sight, and neither ate nor drank.

Ananias Baptizes Saul

[10]Now there was a certain disciple at Damascus [a]named Ananias; and to

him the Lord said in a vision, “Ananias.”

And he said, “Here I am, Lord.”

[11] So the Lord *said* to him, “Arise and go to the street called Straight, and inquire at the house of Judas for *one* called Saul [a] of

Tarsus, for behold, he is praying. [12]And in a vision he has seen a man named Ananias coming in and putting *his* hand on him, so that he might receive his sight.”

[13]Then Ananias answered, “Lord, I have heard from many about this man, [a]how

much *harm he has done to Your saints in Jerusalem. [14]And here he has authority from the chief priests to bind all [a]who call on Your name.”

[15]But the Lord said to him, “Go, for [a]he is a chosen vessel of

Mine to bear My name before [b]Gentiles, [c]kings, and the [d]children[*] of Israel. 16For [a]I will show him how many things he must suffer for My [b]name's sake."

17[a]And Ananias went his way and entered the house; and [b]laying his hands on him he said, “Brother Saul, the Lord [*]Jesus, who appeared to you on the road as you came, has sent me that you may receive your sight and [c]be filled with the Holy Spirit.” [18]Immediately there fell from his eyes *something* like scales, and he received his sight at once; and he arose and was baptized.

19So when he had received food, he was strengthened. [a]Then Saul spent some days with the disciples at Damascus.

Saul Preaches Christ

20Immediately he preached

[*]the Christ in the synagogues, that He is the Son of God.

[21]Then all who heard were amazed, and said, [a]“Is this not he who destroyed those who called on this name in Jerusalem, and has come here for that purpose,

so that he might bring them bound to the chief priests?”

[22]But Saul increased all the more in strength, [a]and confounded the Jews who dwelt in Damascus, proving [1]that this *Jesus* is the Christ.

Saul Escapes Death

[23]Now after many days

were past, [a]the Jews plotted to kill him. 24[a]But their plot became known to Saul. And they watched the gates day and night, to kill him. 25Then the disciples took him by night and [a]let *him* down through the wall in a large basket.

Saul at Jerusalem

26And [a]when Saul had come to Jerusalem, he tried to join the disciples; but they were all afraid of him, and did not believe that he was a disciple. 27[a]But Barnabas took him and brought *him* to the apostles. And he declared to them how he had seen the Lord on the road, and that He had spoken to him, [b]and how he had preached boldly at Damascus in the name of Jesus. [28]So [a]he was with them at Jerusalem, coming in and going out. 29And he spoke boldly in the name of the Lord Jesus and disputed against the [a]Hellenists,[*b]but they attempted to kill him. 30When the brethren found out, they brought him down to Caesarea and sent him out to Tarsus.

The Church Prospers

31[a]Then the *churches throughout all Judea, Galilee, and Samaria had peace and were [b]edified.* And walking in the [c]fear of the Lord and in the [d]comfort of the Holy Spirit, they were

[e]multiplied.

Aeneas Healed

[32]Now it came to pass, as Peter went [a]through all *parts of the country,* that he also came down to the saints who dwelt in Lydda. [33]There he found a certain man named Aeneas, who had been bedridden

eight years and was paralyzed. [34] And Peter said to him, “Aeneas, [a]Jesus the Christ heals you. Arise and make your bed.” Then he arose immediately. [35] So all who dwelt at Lydda and [a]Sharon saw him and [b]turned to the Lord.

Dorcas

Restored to Life

[36]At Joppa there was a certain disciple named *Tabitha, which is translated *Dorcas. This woman was full [a]of good works and charitable deeds which she did. [37]But it happened in those days that she became sick and died.

When they had washed her, they laid *her* in [a]an upper room. [38]And since Lydda was near Joppa, and the disciples had heard that Peter was there, they sent two men to him, imploring *him* not to delay in coming to them. [39]Then Peter arose and went with them. When he had come, they brought *him* to the upper room. And all the widows stood by him weeping, showing the tunics and garments which Dorcas had made while she was with them.

[40]But Peter [a]put them all out, and [b]knelt down and prayed. And turning to the body he [c]said, “Tabitha, arise.” And she opened her eyes, and when she saw Peter she sat up. [41]Then he gave her *his* hand and lifted

her up; and when he had called the saints and widows, he presented her alive. 42And it became known throughout all Joppa, [a]and many believed on the Lord. 43So it was that he stayed many days in Joppa with [a]Simon, a tanner.

Ac
9:2

Le
me
in
in
str
an
co
th
ad

Ac
9:3

Je
Ch
ma
me
wh

LESSONS
FROM
GOD’S
WARRIORS

PROFILE

CORNELIUS

Learn
to
Diligently
Seek
God

Imagine living just doors away from where Jesus lived much of His earthly ministry and never getting swept up into His message or miracles. Cornelius is such a man. He must have been a rather busy man because he completely missed the move of God. Luke tells his story in the Book of Acts. He begins, “There was a certain man in Caesarea called Cornelius, a centurion of what was called the Italian Regiment, a devout man and one who feared God with all his household, who gave alms generously to the people, and prayed to God always” (Acts 10:1–2).

So we know that this generous, probably kind-hearted Italian man had been around the Jewish faith enough to begin to believe in their God and to pray to Him, but as yet, the gospel of salvation through the blood of Jesus was a message that had only come to the Jews, not to the Gentiles. Still, Cornelius was diligent—and his diligence is why those of us who are not of Jewish descent are able to call upon the name of the Lord and be saved today.

The Bible tells us that around the ninth hour of the day, an angel appeared to Cornelius and told him to send for Peter in Joppa and listen to what Peter would tell him. So he faithfully sent his most trusted men to Joppa to bring Peter back with them. Now, stop here and think a moment. Here’s a man who is not born again but is devoted to God. Was he just at his house watching a game on TV when this angel appeared to him? Not hardly.

When Peter arrived at his

house, Cornelius said, “Four days ago I was fasting until this hour; and at the ninth hour I prayed in my house, and behold, a man stood before me in bright clothing, and said, ‘Cornelius, your prayer has been heard, and your alms are remembered in the sight of God’” (Acts 10:30–31).

Cornelius was fasting and praying. He was diligently seeking God when that angel came to tell him that his diligence was about to be greatly rewarded. Peter preached the gospel to them, and “while Peter was still speaking these words, the Holy Spirit fell upon all those who heard the word. And those of the circumcision who believed were astonished, as many as came with Peter, because the gift of the Holy Spirit had been poured out on the Gentiles also. For they heard them speak with tongues and magnify God” (vv. 44–46).*

Are you diligently seeking God in all ways? Have you learned the power of fasting and praying? God is a rewarder of those who diligently seek Him. If you seek Him, you will find Him.

Acts 10

Cornelius Sends a Delegation

[1] There was a

certain man in [a]Caesarea called Cornelius, a centurion of what was called the Italian [*]Regiment, 2[a]a devout *man* and one who [b]feared God with all his household, who gave [*]alms generously to the people, and prayed to God always. 3About [*]the ninth hour of the day [a]he saw clearly in a vision an angel of God coming in and saying to him, “Cornelius!”

4 And when he observed him, he was afraid, and said, “What is it, lord?”

So he said to him,

“Your prayers and your alms have come up for a memorial before God. 5 Now [a]send men to Joppa, and send for Simon whose surname is Peter. 6 He is lodging with [a]Simon, a tanner, whose house is by the sea. [b]He* will tell you what you must do.” [7]And when the angel who spoke to him had departed, Cornelius called two of his household servants and a devout soldier from among those who waited on him continually. [8]So when he had explained all *these* things to them, he sent them to Joppa.

Peter’s Vision

[9]The next day, as they went on their journey and drew near the city, [a]Peter went up on the housetop to pray, about [*]the sixth hour. [10]Then he became very

hungry and wanted to eat; but while they made ready, he fell into a trance [11]and [a]saw heaven opened and an object like a great sheet bound at the four corners, descending to him and let down to the earth. [12]In it were all kinds of four-footed animals of the earth, wild beasts, creeping things, and birds of the air. [13]And a voice came to him, “Rise, Peter; kill and eat.”

[14]But Peter said, “Not so, Lord! [a]For I have never

eaten anything common or unclean.”

15And a voice *spoke* to him again the second time, [a]“What God has [*]cleansed you must not call common.” 16This was done three times. And the object was taken up into heaven again.

Summoned to Caesarea

[17]Now while Peter *wondered within himself what this vision which he had seen meant, behold, the men who had been sent from Cornelius had made inquiry for Simon’s house, and stood before the gate. [18]And they called and asked whether Simon,

whose surname was Peter, was lodging there.

19While Peter thought about the vision, [a]the Spirit said to him, “Behold, three men are seeking you. 20[a]Arise therefore, go down and go with them, doubting nothing; for I have sent them.”

21Then Peter

went down to the men *who had been sent to him from Cornelius, and said, “Yes, I am he whom you seek. For what reason have you come?”

[22]And they said, “Cornelius *the* centurion, a just man, one who fears God

and [a]has a good reputation among all the nation of the Jews, was divinely instructed by a holy angel to summon you to his house, and to hear words from you.” [23]Then he invited them in and lodged *them.*

On the

next day Peter went away with them, [a]and some brethren from Joppa accompanied him.

Peter Meets Cornelius

24And the following day they entered Caesarea. Now Cornelius was waiting for them, and had called together his relatives and close friends. 25As Peter was coming in, Cornelius met him and fell down at his feet and worshiped *him.* [26]But Peter lifted him up,[1] saying, [a]“Stand up; I myself am also a man.” [27]And as he talked with him, he went in and found many who had come together. 28 Then he said to them, “You know how [a]unlawful it is for a Jewish man to keep company with or go to one of another nation. But [b]God has shown me that I should not call any man common or unclean. [29]Therefore I came without objection as soon as I was sent for. I ask, then, for what reason have you sent for me?”

[30]So Cornelius said, *“Four days ago I was fasting until this hour; and at

the ninth hour I prayed in my house, and behold, [a]a man stood before me [b]in bright clothing, [31]and said, ‘Cornelius, [a]your prayer has been heard, and [b]your [*]alms are remembered in the sight of God. [32]Send therefore to Joppa and call Simon here, whose surname is Peter. He is lodging in the house of Simon, a tanner, by the sea. *When he comes, he will speak to you.’ [33]So I sent to you immediately, and you have done well to come.

Now therefore, we are all present before God, to hear all the things commanded you by God.”

Preaching to Cornelius’ Household

[34]Then Peter opened *his* mouth and said: [a]“In truth I perceive that God shows no partiality. [35]But [a]in every nation

whoever fears Him and works righteousness is [b]accepted by Him. 36 The word which *God* sent to the *children of Israel, [a]preaching peace through Jesus Christ—[b]He is Lord of all—37 that word you know, which was proclaimed throughout all

Judea, and [a]began from Galilee after the baptism which John preached: [38]how [a]God anointed Jesus of Nazareth with the H1oly Spirit and with power, who [b]went about doing good and healing all who were oppressed by the devil, [c]for God was with Him. [39]And we are [a]witnesses of all things which He did both in the land of the Jews and in Jerusalem, whom [*]they [b]killed by hanging on a tree. [40]Him [a]God raised up on the third day, and showed Him openly, 41 [a]not to all the people, but to witnesses chosen before by God, *even* to us [b]who ate and drank with Him after He arose from the dead. 42 And [a]He commanded us to preach to the people, and to testify [b]that it is He who was ordained by God *to be* Judge [c]of the living and the dead. 43 [a]To Him all the prophets witness that, through His name, [b]whoever believes in Him will receive [c]remission[*] of sins.”

The Holy Spirit Falls on

the Gentiles

[44]While Peter was still speaking these words, [a]the Holy Spirit fell upon all those who heard the word. [45][a]And [*]those of the circumcision who believed were astonished, as many as came with Peter, [b]because the gift of the Holy

Spirit had been poured out on the Gentiles also. 46For they heard them speak with tongues and magnify God.

Then Peter answered, 47“Can anyone forbid water, that these should not be baptized who have received the Holy Spirit [a]just as we

have?”
48[a]And he commanded them to be baptized [b]in the name of the Lord. Then they asked him to stay a few da1ys.

SHARPENING *your* SWORD

DREAMS AND VISIONS

Read Acts 3

Pentecost fulfilled Joel’s prophecy,

“And it shall come to pass afterward that I will pour out My Spirit on all flesh; your sons and your daughters shall prophesy, your old men shall dream dreams, your young men shall see visions” (Joel 2:28; see also

Acts 2:17). God’s Spirit graphically inserts on the screen of our conscious or unconscious minds a picture of what He is doing or will do.

God alone interprets dreams and visions. No man can tell you the spiritual meaning of a dream based on human or natural understanding. What we think a dream or vision means is irrelevant. The Holy Spirit both gives dreams or visions and interprets them. Joseph succinctly reveals, “Do not interpretations belong to God?” (Gen. 40:8). However, not all dreams or visions are from God. Only those from Him and interpreted by Him are truth.

* * *

Discover for yourself the purpose for Spirit-inspired dreams and visions. Read about Cornelius and Peter's visions in Acts 10:1–11:18 and answer these questions:

Both men obeyed their visions from God. Each vision bore the fruit that God had promised.

Describe a Spirit-inspired dream or vision that you have had and how the Holy Spirit made it happen.

* * *

When the Holy Spirit pours out on your life, He will inspire dreams and visions, which will picture your present and future in Him.

Dreams and visions always conform to biblical truth. Ask the Holy Spirit to inspire His dreams and visions in you and to interpret them so that you may walk in His ways with faith and hope.*

Acts 11

Peter Defends God's Grace

[1]Now the apostles and brethren who were in Judea

heard that the Gentiles had also received the word of God. [2]And when Peter came up to Jerusalem, [a]those of the circumcision contended with him, [3]saying, [a]“You went in to uncircumcised men [b]and ate with them!”

[4]But Peter explained *it* to

them [a]in order from the beginning, saying: 5 [a]“I was in the city of Joppa praying; and in a trance I saw a vision, an object descending like a great sheet, let down from heaven by four corners; and it came to me. [6]When I observed it intently and considered, I saw four-footed animals of the earth, wild beasts, creeping things, and birds of the air. [7]And I heard a voice saying to me, ‘Rise, Peter; kill and eat.’ [8]But I said, ‘Not so, Lord! For nothing common or unclean has at any time entered my mouth.’ [9]But the voice answered me again from heaven, ‘What God has cleansed you must not call common.’ [10]Now this was done three times, and all were drawn up again into heaven. [11]At that very moment, three men stood before the house where I was, having been sent to me from Caesarea. [12]Then [a]the Spirit told me to go with them, doubting nothing. Moreover [b]these six brethren accompanied me, and we entered the man’s house. 13[a]And he told us how he had seen an angel standing in his house, who said to him, ‘Send men to Joppa, and call for Simon whose surname is Peter, 14who will tell you words by which you and all your household will be saved.’ 15And as I began to speak, the Holy Spirit fell upon them, [a]as upon us at the beginning. 16Then I remembered the word of the Lord, how He said, [a]‘John indeed baptized with water, but [b]you shall be baptized with the Holy Spirit.’ 17[a]If therefore God gave them the same gift as *He gave* us when we believed on the Lord Jesus Christ, [b]who was I that I could withstand God?”

18When they heard these things they became silent; and they glorified God, saying, [a]“Then God has also granted to the Gentiles repentance to life.”

Barnabas and Saul at Antioch

19[a]Now those who were scattered after the persecution that arose over Stephen traveled as far as Phoenicia, Cyprus, and Antioch, preaching the word to no one but the Jews only. 20But some of them were men from Cyprus and Cyrene, who, when they had come to Antioch, spoke to [a]the Hellenists, preaching the

Lord Jesus. 21And [a]the hand of the Lord was with them, and a great number believed and [b]turned to the Lord.

22Then news of these things came to the ears of the church in Jerusalem, and they sent out [a]Barnabas to go as far as Antioch. 23 When he came and had seen the grace of God, he was glad, and [a]encouraged them all that with purpose of heart they should continue with the Lord. 24 For he was a good man, [a]full of the Holy Spirit and of faith. [b]And a great many people were added to the Lord.

25Then Barnabas departed for [a]Tarsus to seek Saul. 26And when he had found him, he brought him to Antioch. So it was that for a whole year they assembled with the church and taught a great many people. And the disciples were first called Christians in Antioch.

Relief to Judea

[27]And in these days [a]prophets came from Jerusalem to Antioch. [28]Then one of them, named [a]Agabus,

stood up and showed by the Spirit that there was going to be a great famine throughout all the world, which also happened in the days of [b]Claudius Caesar. [29]Then the disciples, each according to his ability, determined to send [a]relief to the brethren dwelling in Judea. 30[a]This they also did, and sent it to the elders by the hands of Barnabas and Saul.

Acts 12

Herod's Violence to the Church

1Now about that time Herod the king stretched out *his* hand to harass some from the church. [2]Then he killed James [a]the brother of John with the sword. [3]And because he saw that it [1]pleased the Jews, he proceeded further to seize Peter also. Now it was *during* [a]the Days of

Unleavened Bread. [4]So [a]when he had arrested him, he put *him* in prison, and delivered *him* to four [*]squads of soldiers to keep him, intending to bring him before the people after Passover.

Peter Freed from Prison

[5]Peter was therefore kept

in prison, but *constant prayer was offered to God for him by the church. 6And when Herod was about to bring him out, that night Peter was sleeping, bound with two chains between two soldiers; and the guards before the door were *keeping the prison. [7]Now behold, [a]an angel of the Lord stood by *him,* and a light shone in the prison; and he struck Peter on the side and raised him up, saying, “Arise quickly!” And his chains fell off *his* hands. 8 Then the angel said to him, “Gird yourself and tie on your sandals”; and so he did. And he said to him, “Put on your garment and follow me.” 9 So he went out and followed him, and [a]did not know that what was done by the angel was real, but thought [b]he was seeing a vision. 10When they were past the first and the second guard posts, they came to the iron gate that leads to the city, [a]which opened to them of its own accord; and they went out and went down one street, and immediately the angel departed from him.

[11]And when Peter had come to himself, he said, “Now I know for certain that [a]the Lord has sent His

angel, and [b]has delivered me from the hand of Herod and *from* all the expectation of the Jewish people.”

12So, when he had considered *this,* [a]he came to the house of Mary, the mother of [b]John whose surname was Mark, where many were gathered together [c]praying. [13]And as Peter knocked at the door of the gate, a girl named Rhoda came to answer. [14]When she recognized Peter’s voice, because of *her* gladness she did not open the gate, but ran in and announced that Peter stood b1efore the gate. [15]But they said to her, “You are beside yourself!” Yet she kept insisting that it was so. So they said, [a]“It is his angel.”

[16]Now Peter continued knocking; and when they opened *the door*

and saw him, they were astonished. [17]But [a]motioning to them with his hand to keep silent, he declared to them how the Lord had brought him out of the prison. And he said, “Go, tell these things to James and to the brethren.” And he departed and went to another place.

[18]Then, as soon as it was day, there was no small *stir among the soldiers about what had become of Peter. [19]But when Herod had searched for him and not found

him, he examined the guards and commanded that *they* should be put to death.

And he went down from Judea to Caesarea, and stayed *there*.

SP WA BA

Th Ho Sp Sh the Wo to Vi

Fel

wit
the
Ho
Spi
ma
it
pos
for
us
to
liv
our
dai
liv
in
a
wa
tha
ple
Go
If
in
the
mo
we
ser
His
fre
in
our
hea
we
can
gai
the
str
we
nee
to
go
thr

the
cha
of
tha
day
kn
tha
in
eve
sit
we
wi
be
co
vic
Pe
ma
ha
dis
as
I
ha
tha
we
are
no
sm
en
to
sol
the
co
pro
we
co
fac
As
we
de
a
pe

cor
wit
the
Ho
Spi
we
car
pra
“H
Spi
ple
lea
me
and
tea
me
abo
thi
pro
I
am
hav
Giv
me
Yo
ans
fro
the
mi
of
Go
Th
wit
ass
we
car
aw
the
ans
of
the

Ho Spi wh is fai to ans an sho us the wa to vic

Herod’s Violent Death

[20]Now Herod had been very angry with the people of [a]Tyre

and Sidon; but they came to him with one accord, and having made Blastus *the king’s personal aide their friend, they asked for peace, because [b]their country was *supplied with food by the king’s *cou1ntry*.

[21]So on a set day Herod,

arrayed in royal apparel, sat on his throne and gave an oration to them. 22And the people kept shouting, “The voice of a god and not of a man!” 23Then immediately an angel of the Lord [a]struck him, because [b]he did not give glory to God. And he was eaten by worms and [*]died.

24But [a]the word of God grew and multiplied.

Barnabas and Saul Appointed

25And [a]Barnabas and Saul returned [*]from Jerusalem when they had [b]fulfilled *their* ministry, and they also

[c]took with them [d]John whose surname was Mark.

Acts 13

1 Now [a]in the church that was at Antioch there were certain prophets and teachers: [b]Barnabas, Simeon who was called Niger, [c]Lucius of Cyrene, Manaen who had been brought up with

Herod the tetrarch, and Saul. 2As they ministered to the Lord and fasted, the Holy Spirit said, [a]“Now separate to Me Barnabas and Saul for the work [b]to which I have called them.” 3Then, [a]having fasted and prayed, and laid hands on them, they sent *them* away.

Preaching in Cyprus

4So, being sent out by the Holy Spirit, they went down to Seleucia, and from there they sailed to [a]Cyprus. 5And when they arrived in Salamis, [a]they preached the word of God in the synagogues of the Jews. They also had [b]John as *their* assistant.

[6]Now when they had gone through *the island to Paphos, they found [a]a certain sorcerer, a false prophet, a Jew whose name *was* Bar-Jesus, [7]who was with

the proconsul, Sergius Paulus, an intelligent man. This man called for Barnabas and Saul and sought to hear the word of God. [8]But [a]Elymas the sorcerer (for so his name is translated) [*]withstood them, seeking to turn the proconsul away from the faith. 9Then Saul, who also *is called* Paul, [a]filled with the Holy Spirit, looked intently at him 10and said, “O full of all deceit and all fraud, [a]*you* son of the devil, *you* enemy of all righteousness, will you not cease perverting the straight ways of the Lord? 11And now, indeed, [a]the hand of the Lord *is* upon you, and you shall be blind, not seeing the sun for a time."

And immediately a dark mist fell on him, and he went around seeking someone to lead him by the hand. [12]Then the proconsul believed, when he saw what had been done, being astonished at the teaching of the Lord.

At Antioch in Pisidia

[13]Now when Paul and his party set sail

from Paphos, they came to Perga in Pamphylia; and [a]John, departing from them, returned to Jerusalem. 14But when they departed from Perga, they came to Antioch in Pisidia, and [a]went into the synagogue on the Sabbath day and sat down. 15And

[a]after the reading of the Law and the Prophets, the rulers of the synagogue sent to them, saying, “Men *and* brethren, if you have [b]any word of [*]exhortation for the people, say on.”

16 Then Paul stood up, and motioning with *his*

hand said, “Men of Israel, and [a]you who fear God, listen: [17]The God of this people *Israel [a]chose our fathers, and exalted the people [b1]when they dwelt as strangers in the land of Egypt, and with *an uplifted arm He [c]brought them out of it. [18] Now [a]for a time of about forty years He put up with their ways in the wilderness. [19] And when He had destroyed [a]seven nations in the land of Canaan, [b]He distributed their land to them by allotment.

20“After that [a]He gave *them* judges for about four hundred and fifty years, [b]until Samuel the prophet. 21[a]And afterward they asked for a king; so God gave them [b]Saul the son of Kish, a man of the tribe of Benjamin, for forty years. 22And [a]when He had removed him, [b]He raised up for them David as king, to whom also He gave testimony and said, [c]‘I have found David the *son* of Jesse, [d]a man after My *own* heart, who will do all My will.’ 23[a]From this man’s seed, according [b]to *the* promise, God raised up for Israel [c]a[*] Savior—Jesus—24[a]after John had first preached, before His coming, the baptism of repentance to all the people of Israel. 25And as

John was finishing his course, he said, [a]‘Who do you think I am? I am not *He.* But behold, [b]there comes One after me, the sandals of whose feet I am not worthy to loose.’

26“Men *and* brethren, sons of the

[*]family of Abraham, and [a]those among you who fear God, [b]to you the [*]word of this salvation has been sent. 27For those who dwell in Jerusalem, and their rulers, [a]because they did not know Him, nor even the voices of the

Prophets which are read every Sabbath, have fulfilled *them* in condemning *Him.* 28[a]And though they found no cause for death *in Him,* they asked Pilate that He should be put to death. 29[a]Now when they had fulfilled all that was written concerning Him, [b]they took *Him* down from the tree and laid *Him* in a tomb. 30 [a]But God raised Him from the dead. 31 [a]He was seen for many days by those who came up with Him from Galilee to Jerusalem, who are

His witnesses to the people. [32]And we declare to you glad tidings—[a]that promise which was made to the fathers. [33]God has fulfilled this for us their children, in that He has raised up Jesus. As it is also written in the second Psalm:

> [a]'You are My Son,
>
> Today I have begotten You.'

[34]And that He raised Him from the dead, no more to return to *corruption, He has spoken thus:

> [a]'I will give you the sure

[*]mercies of David.’

35Therefore He also says in another *Psalm:*

[a]‘You will not allow Your Holy One to see corruption.

36“For David, after he had served [*]his own generation by the will of God, [a]fell asleep, was buried with his fathers, and *saw corruption; [37]but He whom God raised up *saw no corruption. [38]Therefore let it be known to you, brethren, that [a]through this Man is preached to you the forgiveness of sins; [39]and [a]by Him everyone who believes is justified from all things from which you could not be justified by the law of Moses. [40]Beware therefore, lest what has been spoken in the prophets come upon you:

[41]‘Behold, [a] you despisers,

Marvel and perish!

For

I work a work in your days,

A work which you will by no means believe,

Though one were to declare it to you.’ ”

Blessing and Conflict at Antioch

[42]*So when the Jews went out of the

synagogue, the Gentiles begged that these words might be preached to them the next Sabbath. 43Now when the congregation had broken up, many of the Jews and devout proselytes followed Paul and Barnabas, who, speaking to them, [a]persuaded them to continue in [b]the grace of God.

[44]On the next Sabbath almost the whole city came together to hear the word of God. [45]But when the Jews saw the multitudes, they were filled with envy; and contradicting and blaspheming, they [a]opposed the things

spoken by Paul. 46Then Paul and Barnabas grew bold and said, [a]“It was necessary that the word of God should be spoken to you first; but [b]since you reject it, and judge yourselves unworthy of everlasting life, behold, [c]we turn to the Gentiles. [47]For so the Lord has commanded us:

> [a]'I have set you as a light to the Gentiles,
>
> That you should be for salvation to the ends of the earth.' "

[48]Now when the Gentiles heard this,

they were glad and glorified the word of the Lord. [a]And as many as had been appointed to eternal life believed.

49And the word of the Lord was being spread throughout all the region. 50But the Jews stirred up the devout and prominent women and the chief men of the city, [a]raised up persecution against Paul and Barnabas, and expelled them from their region. [51][a]But they shook off the dust from their feet against them, and came to Iconium. [52]And the disciples

[a]were filled with joy and [b]with the Holy Spirit.

Acts 14

At Iconium

[1]Now it happened in Iconium that they went together to the synagogue of the Jews, and so spoke that a great multitude both of the Jews and

of the [a]Greeks believed. 2But the unbelieving Jews stirred up the Gentiles and *poisoned their *minds against the brethren. 3Therefore they stayed there a long time, speaking boldly in the Lord, [a]who was bearing witness to the word of His grace, granting signs and [b]wonders to be done by their hands.

[4]But the multitude of the city was [a]divided: part sided with the Jews, and part with the [b]apostles. [5]And when a violent attempt was made by both the Gentiles and Jews,

with their rulers, [a]to abuse and stone them, 6they became aware of it and [a]fled to Lystra and Derbe, cities of Lycaonia, and to the surrounding region. 7And they were preaching the gospel there.

Idolatry at Lystra

8[a]And in Lystra a

certain man without strength in his feet was sitting, a cripple from his mother's womb, who had never walked. [9]*This* man heard Paul speaking. *Paul, observing him intently and seeing that he had faith to be healed, [10]said with a loud voice, [a]“Stand up straight on your feet!” And he leaped and walked. 11Now when the people saw what Paul had done, they raised their voices, saying in the Lycaonian *language,* [a]“The gods have come down to us in the likeness of men!” [12]And Barnabas they called *Zeus, and Paul, *Hermes, because he was the chief speaker. [13]Then the priest of Zeus, whose temple was in front of their city, brought oxen and garlands to the gates, [a]intending to sacrifice with the multitudes.

14But when the apostles Barnabas and Paul heard this, [a]they tore their clothes and ran in among the multitude, crying out 15and saying, “Men, [a]why are you doing these things? [b]We also are men with the same nature as you, and preach to you that you should turn from [c]these useless things [d]to the living God, [e]who made the heaven, the earth, the sea, and all things that are in them, 16 [a]who in bygone generations allowed all nations to walk in their own ways. 17[a]Nevertheless He did not leave Himself without witness, in that He did good, [b]gave us rain from heaven and fruitful seasons, filling our hearts with [c]food and gladness.” 18And with these sayings they could scarcely restrain the multitudes from sacrificing to them.

Stoning, Escape to Derbe

19[a]Then Jews from Antioch and Iconium came there; and having persuaded the multitudes, [b]they stoned Paul *and* dragged *him* out of the city, supposing him to be [c]dead. 20However, when the disciples gathered around him, he rose up and went into the city. A1nd the next day he departed with Barnabas to Derbe.

Strengthening the Converts

[21]And when they had preached the gospel to that city [a]and made many disciples, they returned to Lystra, Iconium,

and Antioch, [22]strengthening the souls of the disciples, [a]exhorting *them* to continue in the faith, and *saying,* [b]“We must through many tribulations enter the kingdom of God.” [23]So when they had [a]appointed elders in every church, and prayed with fasting, they commended them to the Lord in whom they had believed. [24]And after they had passed through Pisidia, they came to Pamphylia. [25]Now when they had preached the word in Perga, they went down to Attalia. [26]From there they sailed to Antioch, where they had been commended to the grace of God for the work which they had completed.

27 Now when they had come and gathered the church together, [a]they reported all that God had done with them, and that He had [b]opened

the door of faith to the Gentiles. 28So they stayed there a long time with the disciples.

Acts 15

Conflict over Circumcision

1And [a]certain *men* came down from Judea and taught the brethren, [b]“Unless you are circumcised according to the custom of Moses, you cannot be saved.” 2Therefore, when Paul and Barnabas had no small dissension and dispute with them, they determined that [a]Paul and Barnabas and certain others of them should go up to Jerusalem, to the apostles and elders, about this question. [3]So, [a]being sent on their way by the church, they passed through Phoenicia and Samaria, [b]describing the conversion of the Gentiles; and they caused great joy to all the brethren. [4]And when they had come to Jerusalem, they were received by the church and the apostles and the elders; and they reported all things that God had[1] done with them. [5]But some of the sect of the Pharisees who believed rose up, saying, “It is necessary to circumcise them, and to command *them* to keep the law of Moses.”

The Jerusalem Council

[6]Now the apostles and elders came together to consider this matter. [7]And when there had been much dispute, Peter rose up *and* said to them: [a]“Men *and* brethren,

you know that a good while ago God chose among us, that by my mouth the Gentiles should hear the word of the gospel and believe. 8So God, [a]who knows the heart, [*]acknowledged them by [b]giving them the Holy Spirit, just as *He did* to us, [9][a]and made no distinction between us and them, [b]purifying their hearts by faith. [10]Now therefore, why do you test God [a]by putting a yoke on the neck of the disciples which neither our fathers nor we were able to bear? 11But [a]we believe that through the grace of the Lord Jesus *Christ we shall be saved in the same manner as they.”

12Then all the multitude kept silent and listened to Barnabas and Paul declaring how many miracles and wonders God had [a]worked through them among the Gentiles. 13 And after they had [*]become silent, [a]James answered, saying, “Men *and* brethren, listen to me: 14 [a]Simon has declared how God at the first visited the Gentiles to take out of them a people for His name. [15]And with this the words of the prophets agree, just as it is written:

> [16]‘After [a] this I will return
>
> And will rebuild the tabernacle of David, which has fallen down;
>
> I

will rebuild its ruins,

And I will set it up;

[17]S tha the res of ma ma see the LO

Eve all the Ge wh are cal by My nar

Say the *LO wh doe all the

thi

[18][*]“Known to God from eternity are all His works. [19]Therefore [a]I judge that we should not trouble those from among the Gentiles who [b]are turning to God, [20]but that we [a]write to them to abstain [b]from things polluted by

idols, [c]*from* [*]sexual immorality, [d]*from* things strangled, and *from* blood. [21]For Moses has had throughout many generations those who preach him in every city, [a]being read in the synagogues every Sabbath.”

The Jerusalem Decree

[22]Then it pleased the apostles and elders, with the whole church, to send chosen men of their own company to Antioch with Paul and Barnabas, *namely,* Judas who was also named [a]Barsabas,* and

Silas, leading men among the brethren.

[23]They wrote this *letter* by them:

Continuing Ministry in Syria

[30]So when they were sent off, they came to Antioch; and when they had gathered the multitude together, they delivered

the letter. 31 When they had read it, they rejoiced over its encouragement. 32 Now Judas and Silas, themselves being [a]prophets also, [b]exhorted and strengthened the brethren with many words. 33 And after they had stayed *there* for a time, they were [a]sent back with greetings from the brethren to *the apostles.

34*However, it seemed good to Silas to remain there. 35[a]Paul and Barnabas also remained in Antioch, teaching and preaching the word of the Lord, with many others also.

Division over John Mark

36Then

after some days Paul said to Barnabas, “Let us now go back and visit our brethren in every city where we have preached the word of the Lord, *and see* how they are doing.” [37]Now Barnabas *was determined to take with them [a]John called Mark. [38]But Paul insisted that they should not take with them [a]the one who had departed from them in Pamphylia, and had not gone with them to the work. [39]Then the contention became so sharp that they parted from one another. And so Barnabas took Mark and sailed to [a]Cyprus; 40 but Paul chose Silas and departed, [a]being [*]commended by the brethren to the grace of God. 41 And he went through Syria and Cilicia, [a]strengthening the churches.

Acts 16

Timothy Joins Paul and Silas

1 Then he came to [a]Derbe and Lystra. And behold, a certain disciple was there, [b]named Timothy, [c]*the* son of a certain Jewish woman who believed, but his father *was* Greek. 2 He was well spoken of by

the brethren who were at Lystra and Iconium. 3Paul wanted to have him go on with him. And he [a]took *him* and circumcised him because of the Jews who were in that region, for they all knew that his father was

Greek. 4And as they went through the cities, they delivered to them the [a]decrees to keep, [b]which were determined by the apostles and elders at Jerusalem. 5[a]So the churches were strengthened in the faith, and increased in number daily.

The Macedonian

Call

6Now when they had gone through Phrygia and the region of [a]Galatia, they were forbidden by the Holy Spirit to preach the word in *Asia. 7After they had come to Mysia, they tried to go into Bithynia, but the *Spirit did not permit them. 8So passing by Mysia, they [a]came down to Troas. 9And a vision appeared to Paul in the night. A [a]man of Macedonia stood and pleaded with him, saying, “Come over to Macedonia and help us.” 10Now after he had seen the vision, immediately we sought to go [a]to Macedonia, concluding that the Lord had called us to preach the gospel to them.

Lydia Baptized at Philippi

[11]Therefore, sailing from Troas, we ran a straight course to Samothrace, and

the next *day* came to Neapolis, [12]and from there to [a]Philippi, which is the *foremost city of that part of Macedonia, a colony. And we were staying in that city for some days. [13]And on the Sabbath day we went out of the city to the riverside, where prayer was customarily made; and we sat down and spoke to the women who met *there.* [14]Now a certain woman named Lydia heard *us.* She was a seller of purple from the city of

[a]Thyatira, who worshiped God. [b]The Lord opened her heart to heed the things spoken by Paul. 15And when she and her household were baptized, she begged *us,* saying, “If you have judged me to be faithful to the Lord, come to

my house and stay." So [a]she persuaded us.

Paul and Silas Imprisoned

16 Now it happened, as we went to prayer, that a certain slave girl [a]possessed with a spirit of divination met us, who brought her masters [b]much profit by fortune-

telling. [17]This girl followed Paul and us, and cried out, saying, “These men are the servants of the Most High God, who proclaim to us the way of salvation.” [18]And this she did for many days.

But Paul, [a]greatly *annoyed, turned

and said to the spirit, “I command you in the name of Jesus Christ to come out of her.” [b]And he came out that very hour. [19]But [a]when her masters saw that their hope of profit was gone, they seized Paul and Silas and [b]dragged *them* into the marketplace to the authorities. 20And they brought them to the magistrates, and said, “These men, being Jews, [a]exceedingly trouble our city; 21and they teach customs which are not lawful for us, being Romans, to receive or observe.” [22]Then the multitude rose up together against them; and the magistrates tore off their clothes [a]and commanded *them* to be beaten with rods. [23]And when they had laid many stripes on them, they threw *them* into prison, commanding the jailer to keep them securely. [24]Having received such a charge, he put them into the inner prison and fastened their feet in the stocks.

The Philippian Jailer Saved

[25]But at midnight Paul and Silas were praying and singing hymns to

God, and the prisoners were listening to them. 26[a]Suddenly there was a great earthquake, so that the foundations of the prison were shaken; and immediately [b]all the doors were opened and everyone’s chains were loosed. 27And the keeper of the prison, awaking from sleep and seeing the prison doors open, supposing the prisoners had fled, drew his sword and was about to kill himself. [28]But Paul called with a loud voice, saying, “Do yourself no harm, for we are all here.”

[29]Then

he called for a light, ran in, and fell down trembling before Paul and Silas. 30And he brought them out and said, [a]“Sirs, what must I do to be saved?”

31So they said, [a]“Believe on the Lord Jesus Christ, and you

will
be
saved,
you
and
your
household.”
[32]Then
they
spoke
the
word
of
the
Lord
to
him
and
to
all
who
were
in
his
house.
[33]And
he
took
them
the
same
hour
of
the
night
and
washed
their
stripes.
And
immediately

he and all his *family* were baptized. [34]Now when he had brought them into his house, [a]he set food before them; and he rejoiced, having believed in God with all his household.

Paul Refuses to Depart Secretly

[35]And when it was

day,[1] the magistrates sent the *officers, saying, “Let those men go.”

[36] So the keeper of the prison reported these words to Paul, saying, “The magistrates have sent to let you go. Now therefore depart, and go in peace.”

[37] But Paul said

to them, “They have beaten us openly, uncondemned [a]Romans, *and* have thrown *us* into prison. And now do they put us out secretly? No indeed! Let them come themselves and get us out.”

[38]And the officers told these words to the

magistrates, and they were afraid when they heard that they were Romans. [39]Then they came and pleaded with them and brought *them* out, and [a]asked *them* to depart from the city. [40]So they went out of the prison [a]and entered *the* *house of* Lydia; and when they had seen the brethren, they encouraged them and departed.

Acts 17

Preaching Christ at Thessalonica

[1]Now when they had passed through Amphipolis and Apollonia, they came to [a]Thessalonica, where there was a synagogue of

the Jews. 2Then Paul, as his custom was, [a]went in to them, and for three Sabbaths [b]reasoned with them from the Scriptures, 3explaining and demonstrating [a]that the Christ had to suffer and rise again from the dead, and *saying,* “This Jesus whom I preach to you is the Christ.” 4[a]And some of them were persuaded; and a great multitude of the devout Greeks, and not a few of the leading women, joined Paul and [b]Silas.

Assault on Jason’s House

5But the Jews

*who were not persuaded, *becoming [a]envious, took some of the evil men from the marketplace, and gathering a mob, set all the city in an uproar and attacked the house of [b]Jason, and sought to bring them ou1t to the people.

[6]But when they did not find them, they dragged Jason and some brethren to the rulers of the city, crying out, [a]“These who have turned the world upside down have come here too. [7]Jason has *harbored them, and these are all

acting contrary to the decrees of Caesar, [a]saying there is another king—Jesus.” 8And they troubled the crowd and the rulers of the city when they heard these things. 9So when they had taken security from Jason and the rest, they let them go.

Ministering at Berea

[10]Then [a]the brethren immediately sent Paul and Silas away by night to Berea. When they arrived, they went into the synagogue of the Jews. [11]These were more *fair-minded than those in Thessalonica, in

that they received the word with all readiness, and [a]searched the Scriptures daily *to find out* whether these things were so. 12Therefore many of them believed, and also not a few of the Greeks, prominent women as well as men. 13But when the Jews from Thessalonica learned that the word of God was preached by Paul at Berea, they came there also and stirred up the crowds. 14[a]Then immediately the brethren sent Paul away, to go to the sea; but both Silas and Timothy remained there. [15]So those who conducted Paul brought him to Athens; and [a]receiving a command for Silas and Timothy to come to him with all speed, they departed.

The Philosophers at Athens

[16]Now while Paul waited for them at

Athens, [a]his spirit was provoked within him when he saw that the city was *given over to idols. [17]Therefore he reasoned in the synagogue with the Jews and with the *Gentile* worshipers, and in the marketplace daily with those who happened to be there. 18*Then certain Epicurean and Stoic philosophers encountered him. And some said, “What does this *babbler want to say?”

Others said, “He seems to be a proclaimer of[1] foreign gods,” because he preached to them [a]Jesus and the resurrection.

[19]And they took him and brought him to the *Areopagus, saying, “May we know what this new doctrine *is* of which you speak? [20]For you are bringing some strange things to our ears. Therefore we want to know what these things

mean.” [21]For all the Athenians and the foreigners who were there spent their time in nothing else but either to tell or to hear some new thing.

Addressing the Areopagus

[22]Then Paul stood in the midst of the *Areopagus and said,

“Men of Athens, I perceive that in all things you are very religious; [23]for as I was passing through and considering the objects of your worship, I even found an altar with this inscription: TO THE UNKNOWN GOD.

Therefore, the One whom you worship without knowing, Him I proclaim to you: 24[a]“God, who made the world and everything in it, since

He is [b]Lord of heaven and earth, [c]does not dwell in temples made with hands. 25Nor is He worshiped with men’s hands, as though He needed anything, since He [a]gives to all life, breath, and all things. 26And He has made from one [*]blood every nation of men to dwell on all the face of the earth, and has determined their preappointed times and [a]the boundaries of their dwellings, 27 [a]so that they should seek the Lord, in the hope that they might grope for Him and find Him, [b]though

He is not far from each one of us; [28]for [a]in Him we live and move and have our being, [b]as also some of your own poets have said, ‘For we are also His offspring.’ [29]Therefore, since we are the offspring of God, [a]we ought not to think that the Divine Nature is like gold or silver or stone, something shaped by art and man’s devising. [30]Truly, [a]these times of ignorance God overlooked, but [b]now commands all men everywhere to repent, [31]because He has appointed a day on which [a]He will judge the world in righteousness by the Man whom He has ordained. He has given assurance of this to all by [b]raising Him from the dead.”

[32]And when they heard of the resurrection of the dead, some mocked, while others said, “We will hear you again on this *matter.*”

[33]So Paul departed from among them. [34]However, some men joined him and believed, among them Dionysius the Areopagite, a woman named Damaris, and others with them.

Acts 18

Ministering at Corinth

[1]After these things Paul departed from Athens and went

to Corinth. [2]And he found a certain Jew named [a]Aquila, born in Pontus, who had recently come from Italy with his wife Priscilla (because Claudius had commanded all the Jews to depart from Rome); and he came to them. [3]So, because he was of the same trade, he stayed with them [a]and worked; for by occupation they were tentmakers. 4 [a]And he reasoned in the synagogue every Sabbath, and persuaded both Jews and Greeks.

51font>[a]When Silas and Timothy had come from Macedonia, Paul was [b]compelled [*]by the Spirit, and testified to the Jews *that* Jesus *is* the Christ. 6But [a]when they opposed him and blasphemed, [b]he shook *his* garments and said to them, [c]“Your blood *be* upon your *own* heads; [d]I *am* clean. [e]From now on I will go to the Gentiles.” [7]And he departed from there and entered the house of a certain *man* named *Justus, *one* who worshiped God, whose house was next door to the synagogue. [8][a]Then Crispus, the ruler of the synagogue, believed on the Lord with all his household. And many of the Corinthians, hearing, believed and were baptized.

9Now [a]the Lord spoke to Paul in the night by a vision, “Do not be afraid, but speak, and do not keep silent; 10[a]for I am with you, and no one will attack you to hurt you; for I have many people in this city.” 11And he continued *there* a year and six months, teaching the word of God among them.

12When Gallio

was proconsul of Achaia, the Jews with one accord rose up against Paul and brought him to the *judgment seat, [13]saying, “This *fellow* persuades men to worship God contrary to the law.”

[14]And when Paul was about to open *his* mouth,

Gallio said to the Jews, “If it were a matter of wrongdoing or wicked crimes, O Jews, there would be reason why I should bear with you. 15But if it is a [a]question of words and names and your own law, look *to it* yourselves; for I do not want to be a judge of such *matters.*” [16]And he drove them from the judgment seat. [17]Then [*]all the Greeks took [a]Sosthenes, the ruler of the synagogue, and beat *him* before the judgment seat. But Gallio took no notice of thes1e things.

Paul Returns to Antioch

18 So Paul still remained [*]a good while. Then he took leave of the brethren and sailed for Syria, and Priscilla and Aquila *were* with him. [a]He had *his*

hair cut off at [b]Cenchrea, for he had taken a vow. 19And he came to Ephesus, and left them there; but he himself entered the synagogue and reasoned with the Jews. 20When they asked *him* to stay a longer time with them, he did not consent, [21]but took leave of them, saying, [a]“I* must by all means keep this coming feast in Jerusalem; but I will return again to you, [b]God willing.” And he sailed from Ephesus.

[22]And when he had landed

at [a]Caesarea, and [*]gone up and greeted the church, he went down to Antioch. 23 After he had spent some time *there,* he departed and went over the region of [a]Galatia and Phrygia [*]in order, [b]strengthening all the disciples.

Ministry of Apollos

24[a]Now a certain Jew named Apollos, born at Alexandria, an eloquent man *and* mighty in the Scriptures, came to Ephesus. 25This man had been instructed in the way of the Lord; and being [a]fervent in spirit, he spoke and taught accurately the things of the Lord, [b]though he knew only the baptism of John. 26So he began to speak boldly in the synagogue. When Aquila and Priscilla heard him, they took him aside and explained to him the way of God more accurately. [27]And when he desired to cross to Achaia, the brethren wrote, exhorting the disciples to receive him; and when he arrived, [a]he greatly helped those who had believed through grace; [28]for he vigorously refuted the Jews publicly, [a]showing from the

Scriptures that Jesus is the Christ. 1

Acts 19

Paul at Ephesus

1 And it happened, while [a]Apollos was at Corinth, that Paul, having passed through [b]the upper regions, came to Ephesus. And finding some disciples 2 he said to them, “Did you

receive the Holy Spirit when you believed?”

So they said to him, [a]“We have not so much as heard whether there is a Holy Spirit.”

[3]And he said to them, “Into what then were you baptized?”

So they said, [a]“Into John’s

baptism.”

4 Then Paul said, [a]“John indeed baptized with a baptism of repentance, saying to the people that they should believe on Him who would come after him, that is, on Christ Jesus.”

5 When they heard *this,* they were baptized [a]in the

name of the Lord Jesus. [6]And when Paul had [a]laid hands on them, the Holy Spirit came upon them, and [b]they spoke with tongues and prophesied. [7]Now the men were about twelve in all.

[8][a]And he went into the synagogue and

spoke boldly for three months, reasoning and persuading [b]concerning the things of the kingdom of God. [9]But [a]when some were hardened and did not believe, but spoke evil [b]of the Way before the multitude, he departed from them and withdrew the disciples, reasoning daily in the school of Tyrannus. 10And [a]this continued for two years, so that all who dwelt in Asia heard the word of the Lord Jesus, both Jews and Greeks.

Miracles Glorify Christ

11Now [a]God worked unusual miracles by

the hands of Paul, 112[a]so that even handkerchiefs or aprons were brought from his body to the sick, and the diseases left them and the evil spirits went out of them. 13[a]Then some of the itinerant Jewish exorcists [b]took it upon themselves to call the name of the Lord Jesus over those who had evil spirits, saying, *“We *exorcise you by the Jesus whom Paul [c]preaches.” [14]Also there were seven sons of Sceva, a Jewish chief priest, who did so.

[15]And the

evil spirit answered and said, “Jesus I know, and Paul I know; but who are you?”

16 Then the man in whom the evil spirit was leaped on them, *overpowered them, and prevailed against *them, so that they fled out of that

house naked and wounded. 17This became known both to all Jews and Greeks dwelling in Ephesus; and [a]fear fell on them all, and the name of the Lord Jesus was magnified. 18And many who had believed came [a]confessing and telling their deeds. [19]Also, many of those who had practiced magic brought their books together and burned *them* in the sight of all. And they counted up the value of them, and *it* totaled fifty thousand *pieces* of silver. [20][a]So the word of the Lord grew mightily and prevailed.

The Riot at Ephesus

21 [a]When these things were accomplished, Paul [b]purposed in the Spirit, when he had passed through [c]Macedonia and Achaia, to go to Jerusalem, saying, “After I have been there, [d]I must also

see Rome.” 22So he sent into Macedonia two of those who ministered to him, [a]Timothy and [b]Erastus, but he himself stayed in Asia for a time.

23And [a]about that time there arose a great commotion about [b]the Way. 24For a certain man named

Demetrius, a silversmith, who made silver shrines of [*]Diana, brought [a]no small profit to the craftsmen. [25]He called them together with the workers of similar occupation, and said: “Men, you know that we have our prosperity by this trade. [26]Moreover you see and hear that not only at

Ephesus, but throughout almost all Asia, this Paul has persuaded and turned away many people, saying that [a]they are not gods which are made with hands. 27So not only is this trade of ours in danger of falling into disrepute, but also the temple of the great goddess

Diana may be despised and *her magnificence destroyed, whom all Asia and the world worship.”

[28]Now when they heard *this,* they were full of wrath and cried out, saying, “Great *is* Diana of the Ephesians!” [29]So the whole city was filled with confusion,

and rushed into the theater with one accord, having seized [a]Gaius and [b]Aristarchus, Macedonians, Paul's travel companions. [30]And when Paul wanted to go in to the people, the disciples would not allow him. [31]Then some of the *officials of Asia, who were his friends, sent to him pleading that he would not venture into the theater. [32]Some therefore cried one thing and some another, for the assembly was confused, and most of them did not know why they had come together. [33]And they drew Alexander out of the multitude, the Jews putting him forward. And [a]Alexander [b]motioned with his hand, and wanted to make his defense to the people. 34But when they found out that he was a Jew, all with one voice cried out for about two hours, “Great *is* Diana of the Ephesians!”

[35]And when the city clerk had quieted the crowd, he said: “Men of Ephesus, what man is there who does not know that the city of the Ephesians is

temple guardian of the great goddess *Diana, and of the *image* which fell down from *Zeus? [36]Therefore, since these things cannot be denied, you ought to be quiet and do no1thing rashly. [37]For you have brought these men here who are neither robbers of temples nor blasphemers of *your goddess. [38]Therefore, if Demetrius and his fellow craftsmen have a *case against anyone, the courts are open and there are proconsuls. Let them bring charges against one another. [39]But if you have any other inquiry to make, it shall be determined in the lawful assembly. [40]For we are in danger of being *called in question for today’s uproar, there being no reason which we may give to account for this disorderly gathering.” [41]And when he had said these things, he dismissed the assembly.

Acts 20

Journeys in Greece

[1] After the uproar had ceased, Paul called the disciples to *himself,* embraced *them,* and [a]departed to go to Macedonia. [2] Now when he had gone over that

region and encouraged them with many words, he came to [a]Greece [3]and stayed three months. And [a]when the Jews plotted against him as he was about to sail to Syria, he decided to return through Macedonia. [4]And Sopater of Berea accompanied him to Asia—also [a]Aristarchus and Secundus of the Thessalonians, and [b]Gaius of Derbe, and [c]Timothy, and [d]Tychicus and [e]Trophimus of Asia. 5These men, going ahead, waited for us at [a]Troas. 6But we sailed away from Philippi after [a]the Days of Unleavened Bread, and in five days joined them [b]at Troas, where we stayed seven days.

Ministering at Troas

7 Now on [a]the first *day* of the week, when the disciples came together [b]to break br1ead, Paul, ready to depart the next

day, spoke to them and continued his message until midnight. 8 There were many lamps [a]in the upper room where *they were gathered together. 9 And in a window sat a certain young man named Eutychus, who was sinking into a deep sleep.

He was overcome by sleep; and as Paul continued speaking, he fell down from the third story and was taken up dead. [10]But Paul went down, [a]fell on him, and embracing *him* said, [b]“Do not trouble yourselves, for his life is in him.” [11] Now when he had come up, had broken bread and eaten, and talked a long while, even till daybreak, he departed. [12] And they brought the young man in alive, and they were not a little comforted.

From Troas to

Miletus

[13]Then we went ahead to the ship and sailed to Assos, there intending to take Paul on board; for so he had *given orders, intending himself to go on foot. [14]And when he met us at Assos, we took him

on board and came to Mitylene. [15]We sailed from there, and the next *day* came opposite Chios. The following *day* we arrived at Samos and stayed at Trogyllium. The next *day* we came to Miletus. [16]For Paul had decided to sail past Ephesus, so that he would not have to spend time in Asia; for [a]he was hurrying [b]to be at Jerusalem, if possible, on [c]the Day of Pentecost.

The Ephesian Elders Exhorted

17 From Miletus he sent to Ephesus and called for

the elders of the church. [18]And when they had come to him, he said to them: “You know, [a]from the first day that I came to Asia, in what manner I always lived among you, [19]serving the Lord with all humility, with many tears and trials which happened to me [a]by the plotting of the Jews; 20 how [a]I kept back nothing that was helpful, but proclaimed it to you, and taught you publicly and from house to house, 21 [a]testifying to Jews, and also to Greeks, [b]repentance toward God and faith toward our Lord Jesus Christ. [22]And see, now [a]I go bound in the spirit to Jerusalem, not knowing the things that will happen to me there, [23]except that [a]the Holy Spirit testifies in every city, saying that chains and tribulations await me. 24*But [a]none of these things move me; nor do I count my life dear to myself, [b]so that I may finish my *race with joy, [c]and the ministry [d]which I received from the Lord Jesus, to testify to the gospel of the grace of God.

25“And indeed, now I know that you all, among whom I have gone preaching the kingdom of God, will see my face no more. 26Therefore I testify to you this day that I *am* [a]innocent[*] of the blood of all *men.* 27For I have not [*]shunned to declare to you [a]the whole counsel of God. 28[a]Therefore take heed to yourselves and to all the flock, among which the Holy

Spirit [b]has made you overseers, to shepherd the church [*]of God [c]which He purchased [d]with His own blood. 29 For I know this, that after my departure [a]savage wolves will come in among you, not sparing the flock. 30 Also [a]from among yourselves men will rise up, speaking [*]perverse things, to draw away the disciples after themselves. [31]Therefore watch, and remember that [a]for three years I did not cease to warn everyone night and day with tears.

[32]“So now, brethre1n, I commend you to

God and [a]to the word of His grace, which is able [b]to build you up and give you [c]an inheritance among all those who are sanctified. 33 I have coveted no one’s silver or gold or apparel. 34 *Yes, you yourselves know [a]that these hands have provided for my necessities, and for those who were with me. [35]I have shown you in every way, [a]by laboring like this, that you must support the weak. And remember the words of the Lord Jesus, that He said, 'It is more blessed to give than to receive.' "

[36]And when he had said these things, he knelt down and prayed with them all. [37]Then they all [a]wept *freely, and [b]fell on Paul's neck and kissed him, [38]sorrowing most

of all for the words which he spoke, that they would see his face no more. And they accompanied him to the ship.

Acts 21

Warnings on the Journey to Jerusalem

[1]Now it came to pass, that when we had

departed from them and set sail, running a straight course we came to Cos, the following *day* to Rhodes, and from there to Patara. [2]And finding a ship sailing over to Phoenicia, we went aboard and set sail. [3]When we had sighted Cyprus, we passed it on the left, sailed to Syria, and landed at Tyre; for there the ship was to unload her cargo. 4And finding *disciples, we stayed there seven days. [a]They told Paul through the Spirit not to go up to Jerusalem. [5]When we had come to the end of those days, we departed and went on our way; and they all accompanied us, with wives and children, till *we were* out of the city. And [a]we knelt down on the shore and prayed. [6]When we had taken our leave of one another, we boarded the ship, and they returned [a]home.

[7]And when we had finished *our* voyage from Tyre, we came to Ptolemai1s, greeted the brethren, and stayed with them

one day. 8On the next *day* we [*]who were Paul’s companions departed and came to [a]Caesarea, and entered the house of Philip [b]the evangelist, [c]who was *one* of the seven, and stayed with him. 9Now this man had four virgin daughters

[a]who prophesied. 10And as we stayed many days, a certain prophet named [a]Agabus came down from Judea. 11When he had come to us, he took Paul’s belt, bound his *own* hands and feet, and said, “Thus says the Holy Spirit, [a]‘So

shall the Jews at Jerusalem bind the man who owns this belt, and deliver *him* into the hands of the Gentiles.' "

[12]Now when we heard these things, both we and those from that place pleaded with him not to go

up to Jerusalem. 13Then Paul answered, [a]“What do you mean by weeping and breaking my heart? For I am ready not only to be bound, but also to die at Jerusalem for the name of the Lord Jesus.”

14So when he

would not be persuaded, we ceased, saying, [a]“The will of the Lord be done.”

Paul Urged to Make Peace

15And after those days we [*]packed and went up to Jerusalem. 16Also some of the disciples from Caesarea went with us and brought with them a certain Mnason of Cyprus, an early disciple, with whom we were to lodge.

17[a]And when we had come to Jerusalem, the brethren received us gladly. 18On the following *day* Paul went in with us to [a]James, and all the elders were present. 19When he had greeted them, [a]he told in detail those things which God had done among the Gentiles [b]through his ministry. 20And when they heard *it,* they glorified the Lord. And they said to him, “You see, brother, how many myria1ds of Jews there are who have believed, and they are all [a]zealous for the law; 21 but they have been informed about you that you teach all the Jews who are among the Gentiles to forsake Moses, saying that they ought not to circumcise *their* children nor to walk according to the customs. [22]*What then? The assembly must certainly meet, for they will hear that you have come. [23]Therefore do what we tell you: We have four men who have taken a vow. [24]Take them and be purified with them, and pay their expenses so that they may [a]shave *their* heads, and that all may know that those things of which they were informed concerning you are nothing, but *that* you yourself also walk orderly and keep the law. 25But concerning the Gentiles who believe, [a]we have written *and* decided *that they should observe no such thing, except that they should keep themselves from *things* offered to idols, from blood, from things strangled, and from *sexual immorality.”

Arrested in the Temple

26Then Paul took the men, and the next day, having been purified with them, [a]entered the temple [b]to announce the *expiration of the days of purification, at which time an offering should be made for each one of them.

[27]Now when the seven days were almost ended, [a]the Jews from Asia, seeing him in the temple, stirred up the whole crowd and [b]laid hands on him, [28]crying out, “Men of Israel,

help! This is the man [a]who teaches all *men* everywhere against the people, the law, and this place; and furthermore he also brought Greeks into the temple and has defiled this holy place.” 29(For they had *previously seen [a]Trophimus the Ephesian with him in the city, whom they supposed that Paul had brought into the temple.) 30And [a]all the city was disturbed; and the people ran together, seized Paul, and dragged him out of the temple; and immediately the doors were shut.

1 [31]Now as they were [a]seeking to kill him, news came to the commander of the [*]garrison that all Jerusalem was in an uproar. [32][a]He immediately took soldiers and centurions, and ran down to them. And when they saw the commander and

the soldiers, they stopped beating Paul. 33Then the [a]commander came near and took him, and [b]commanded *him* to be bound with two chains; and he asked who he was and what he had done. 34And some among the multitude cried one thing and some another.

So when he could not ascertain the truth because of the tumult, he commanded him to be taken into the barracks. [35]When he reached the stairs, he had to be carried by the soldiers because of the violence of the mob. [36]For the multitude of the people followed after, crying out, [a]“Away with him!”

Addressing the Jerusalem Mob

[37]Then as Paul was about to be led into the barracks, he said to the commander, “May I speak to

you?”

He replied, “Can you speak Greek? 38[a]Are you not the Egyptian who some time ago stirred up a rebellion and led the four thousand assassins out into the wilderness?”

39But Paul said, [a]“I am a Jew from Tarsus, in Cilicia, a citizen of no [*]mean city; and I implore you, permit me to speak to the people.”

[40]So when he had given him permission, Paul stood on the stairs and [a]motioned with his hand to the people. And when there was

a great silence, he spoke to *them* in the [b]Hebrew language, saying,

Acts 22

[1]“Brethren [a] and fathers, hear my defense before you now.” [2]And when they heard that he spoke to them in the [a]Hebrew language, they kept all

the more silent. Then he said:

3 [a]“I am indeed a Jew, born in Tarsus of Cilicia, but brought up in this city [b]at the feet of [c]Gamaliel, taught [d]according to the strictness of our fathers’ law, and [e]was zealous toward God

[f]as you all are today. 4[a]I persecuted this Way to the death, binding and delivering into prisons both men and women, 5as also the high priest bears me witness, and [a]all the council of the elders, [b]from whom I also received

letters to the brethren, and went to Damascus [c]to bring in chains even those who were there to Jerusalem to be punished.

[6]“Now [a]it happened, as I journeyed and came near Damascus at about noon, suddenly a great light from heaven

shone around me. [7]And I fell to the ground and heard a voice saying to me, ‘Saul, Saul, why are you persecuting Me?’ [8]So I answered, ‘Who are You, Lord?’ And He said to me, ‘I am Jesus of Nazareth, whom you are persecuting.’

9“And [a]those who were with me indeed saw the light *and were afraid, but they did not hear the voice of Him who spoke to me. 10So I said, ‘What shall I do, Lord?’ And the Lord said to me, ‘Arise and go into Damascus, and there you will be told all things which are appointed for you to do.’ [11]And since I could not see for the glory of that light, being led by the hand of those who were with me, I came into Damascus.

12“Then [a]a certain Ananias, a devout man according to the law, [b]having a good testimony with all the [c]Jews who dwelt *there,* 13came to me; and he stood and said to me, ‘Brother

Saul, receive your sight.’ And at that same hour I looked up at him. 14Then he said, [a]‘The God of our fathers [b]has chosen [1]you that you should [c]know His will, and [d]see the Just One, [e]and hear the voice of

His mouth. 15[a]For you will be His witness to all men of [b]what you have seen and heard. 16And now why are you waiting? Arise and be baptized, [a]and wash away your sins, [b]calling on the name of the Lord.’

17“Now

[a]it happened, when I returned to Jerusalem and was praying in the temple, that I was in a trance 18and [a]saw Him saying to me, [b]‘Make haste and get out of Jerusalem quickly, for they will not receive your testimony concerning

Me.’ [19]So I said, ‘Lord, [a]they know that in every synagogue I imprisoned and [b]beat those who believe on You. [20][a]And when the blood of Your martyr Stephen was shed, I also was standing by [b]consenting [*]to his death, and guarding the clothes of those who were killing him.’ [21]Then He said to me, ‘Depart, [a]for I will send you far from here to the Gentiles.’ ”

Paul’s Roman Citizenship

[22]And they listened to him until this word, and *then* they raised

their voices and said, [a]“Away with such a *fellow* from the earth, for [b]he is not fit to live!” [23]Then, as they cried out and [*]tore off *their* clothes and threw dust into the air, [24]the commander ordered him to be brought into the barracks, and said that he should be examined under scourging, so that he might know why they shouted so against him. [25]And as they bound him with thongs, Paul said to the centurion who stood by, [a]“Is [1]it lawful for you to scourge a man who is a Roman, and uncondemned?”

[26]When the centurion heard *that,* he went and told the commander, saying, “Take care what you do, for this man is a Roman.”

[27]Then the commander came and

said to him, “Tell me, are you a Roman?”

He said, “Yes.”

[28]The commander answered, “With a large sum I obtained this citizenship.”

And Paul said, “But I was born *a citizen.*”

[29]Then immediately those who were about to examine him

withdrew from him; and the commander was also afraid after he found out that he was a Roman, and because he had bound him.

The Sanhedrin Divided

[30]The next day, because he wanted to know for certain why he was accused

by the Jews, he released him from *his* bonds, and commanded the chief priests and all their council to appear, and brought Paul down and set him before them.

Acts 23

[1]Then Paul, looking earnestly at the council, said, “Men

and brethren, [a]I have lived in all good conscience before God until this day.” 2And the high priest Ananias commanded those who stood by him [a]to strike him on the mouth. 3Then Paul said to him, “God will strike you, *you*

whitewashed
wall!
For
you
sit
to
judge
me
according
to
the
law,
and
[a]do
you
command
me
to
be
struck
contrary
to
the
law?”

4And those who stood by said, “Do you revile God’s high priest?”

5Then Paul said, [a]“I did not know, brethren, that he was the high priest; for it is written, [b]‘You shall not speak evil of a ruler of your people.' ”

6 But when Paul perceived that one part were Sadducees and the other Pharisees, he cried out in the council, “Men *and* brethren, [a]I am a Pharisee, the son of a

Pharisee; [b]concerning the hope and resurrection of the dead I am being judged!”

7 And when he had said this, a dissension arose between the Pharisees and the Sadducees; and the assembly was divided. 8 [a]For Sadducees say that there is no resurrection

—and no angel or spirit; but the Pharisees confess both. 9Then there arose a loud outcry. And the scribes of the Pharisees' party arose and protested, saying, [a]"We find no evil in this man; *but [b]if a spirit or an angel has spoken to him, [c]let us not fight against God.”

10Now when there arose a great dissension, the commander, fearing lest Paul might be pulled to pieces by them, commanded the soldiers to go down and take him by force from among them, and bring *him* into the barracks.

The Plot Against Paul

[11]But [a]the following night the Lord stood by him and said, [*]“Be of good cheer, Paul; for as you have testified for Me in [b]Jerusalem, so you must

also bear witness at [c]Rome.”

[12]And when it was day, [a]some of the Jews banded together and bound themselves under an oath, saying that they would neither eat nor drink till they had [b1]killed Paul. [13]Now there were more than forty

who had formed this conspiracy. [14]They came to the chief priests and [a]elders, and said, “We have bound ourselves under a great oath that we will eat nothing until we have killed Paul. [15]Now you, therefore, together with the council, suggest to the commander that he be brought down to you *tomorrow, as though you were going to make further inquiries concerning him; but we are ready to kill him before he comes near.”

[16]So when Paul’s sister’s son heard of their

ambush, he went and entered the barracks and told Paul. [17]Then Paul called one of the centurions to *him* and said, “Take this young man to the commander, for he has something to tell him.” [18]So he took him and brought *him* to the commander and said, “Paul the prisoner called me to *him* and asked *me* to bring this young man to you. He has something to say to you.”

[19]Then the commander took him by the hand, went aside, and

asked privately, “What is it that you have to tell me?” [20]And he said, [a]“The Jews have agreed to ask that you bring Paul down to the council tomorrow, as though they were going to inquire more fully about him. [21]But

do
not
yield
to
them,
for
more
than
forty
of
them
lie
in
wait
for
him,
men
who
have
bound
themselves
by
an
oath
that
they
will
neither
eat
nor
drink
till
they
have
killed
him;
and
now
they
are
ready,

waiting for the promise from you.”

[22]So the commander let the young man depart, and commanded *him,* “Tell no one that you have revealed these things to me.”

Sent to Felix

[23]And he called for two centurions, saying, “Prepare two hundred

soldiers, seventy horsemen, and two hundred spearmen to go to [a]Caesarea at the third hour of the night; [24]and provide mounts to set Paul on, and bring *him* safely to Felix the governor.” [25]He wrote a letter in the following manner:

[31]Then the soldiers,

as they were commanded, took Paul and brought *him* by night to Antipatris. 32The next day they left the horsemen to go on with him, and returned to the barracks. 33When they came to [a]Caesarea and had delivered the [b]letter to the governor, they also presented Paul to him. [34]And when the governor had read *it,* he asked what province he was from. And when he understood that *he was* from [a]Cilicia, [35]he said, [a]“I will hear you when your accusers also have come." And he commanded him to be kept in [b]Herod's [*]Praetorium.

Acts 24

Accused of Sedition

[1] Now after [a]five days [b]Ananias the high priest came down with the elders and a certain orator *named* Tertullus. These gave evidence to

the governor against Paul.

[2]And when he was called upon, Tertullus began his accusation, saying: “Seeing that through you we enjoy great peace, and *prosperity is being brought to this nation by your foresight, [3]we accept *it* always and in al1l

places, most noble Felix, with all thankfulness. [4]Nevertheless, not to be tedious to you any further, I beg you to hear, by your [*]courtesy, a few words from us. [5][a]For we have found this man a plague, a creator of dissension among all the Jews throughout the world, and a ringleader of the sect of the Nazarenes. 6[a]He even tried to profane the temple, and we seized him, *and wanted [b]to judge him according to our law. 7[a]But the commander Lysias came by and with great violence took *him* out of our hands, 8[a]commanding his accusers to come to you. By examining him yourself you may ascertain all these things of which we accuse him.” 9And the Jews also *assented, maintaining that these things were so.

The Defense Before Felix

[10]Then Paul, after the governor had nodded to him to speak, answered: “Inasmuch as I know that you have been for many years a judge of this nation, I do the more cheerfully answer

for myself, 11because you may ascertain that it is no more than twelve days since I went up to Jerusalem [a]to worship. 12[a]And they neither found me in the temple disputing with anyone nor inciting the crowd, either in the synagogues or in the city. 13Nor can they prove the things of which they now accuse me. 14But this I confess to you, that according to [a]the Way which they call a sect, so I worship the [b]God of my fathers, believing all things which are written in [c]the Law and in the Prophets. 15[a]I have hope in God, which they themselves also accept, [b]that there will be a resurrection [*]of *the* dead, both of *the* just and *the* unjust. 16[a]This *being* so, I myself always strive to have a conscience without offense toward God and men.

17“Now after many years [a]I came to bring alms and offerings to my nation, 18[a]in the midst of which some Jews from Asia found me [b]purified in the temple, neither with a mob nor with tumult. 19[a]They ought to have been here before you to object if they had anything against me. 20Or else let those who are *here* themselves say [*]if they found any wrongdoing in me while I stood before the council, [21]unless *it is* for this one statement which I cried out, standing among them, [a]‘Concerning the resurrection of the dead I am being judged by you this day.’ ”

Felix Procrastinates

[22]But when Felix heard

these things, having more accurate knowledge of *the* [a]Way, he adjourned the proceedings and said, “When [b]Lysias the commander comes down, I will make a decision on your case.” [23]So he commanded the centurion to keep Paul and to let *him* have liberty, and [a]told him not to forbid any of his friends to provide for or visit him.

24And after some days, when Felix came with his wife Drusilla, who was Jewish, he sent for Paul and heard him concerning the

[a]faith in Christ. 25Now as he reasoned about righteousness, self-control, and the judgment to come, Felix was afraid and answered, “Go away for now; when I have a convenient time I will call for you.” 26Meanwhile he also hoped that

[a]money would be given him by Paul, [*]that he might release him. Therefore he sent for him more often and conversed with him.

[27]But after two years Porcius Festus succeeded Felix; and Felix, [a]wanting to do the Jews a favor, left

Paul bound.

Acts 25

Paul Appeals to Caesar

[1]Now when Festus had come to the province, after three days he went up from [a]Caesarea to Jerusalem. [2][a]Then the [*]high priest and the chief men of the Jews informed him against

Paul; and they petitioned him, 3asking a favor against him, that he would summon him to Jerusalem—[a]while *they* lay in ambush along the road to kill him. 4But Festus answered that Paul should be kept at Caesarea, and that he himself was going *there* shortly. [5]“Therefore,” he said, “let those who have authority among you go down with *me* and accuse this man, to see [a]if there is any fault in him.”

[6]And when he had remained among them more

than ten days, he went down to Caesarea. And the next day, sitting on the judgment seat, he commanded Paul to be brought. [7]When he had come, the Jews who had come down from Jerusalem stood about [a]and laid many serious complaints against Paul, which they could not prove, [8]while he answered for himself, [a]“Neither against the law of the Jews, nor against the temple, nor against Caesar have I offended in anything at all.”

[9]But Festus, [a]wanting to do the Jews

a favor, answered Paul and said, [b]“Are you willing to go up to Jerusalem and there be judged before me concerning these things?”

10 So Paul said, “I stand at Caesar’s judgment seat, where I ought to be judged. To the Jews

I have done no wrong, as you very well know. 11[a]For if I am an offender, or have committed anything deserving of death, I do not object to dying; but if there is nothing in these things of which these men accuse me, no one can deliver me to them. [b]I appeal to Caesar.”

[12]Then Festus, when he had conferred with the council, answered, “You have appealed to Caesar? To Caesar you shall go!”

Paul Before Agrippa

[13]And [1]after some days King

Agrippa and Bernice came to Caesarea to greet Festus. 14When they had been there many days, Festus laid Paul’s case before the king, saying: [a]“There is a certain man left a prisoner by Felix, 15[a]about whom the chief priests and the elders of the Jews informed *me,* when I was in Jerusalem, asking for a judgment against him. 16[a]To them I answered, ‘It is not the custom of the Romans to deliver any man *to destruction before the accused meets the accusers face to face, and has opportunity to answer for himself concerning the charge against him.’ 17Therefore when they had come together, [a]without any delay, the next day I sat on the judgment seat and commanded the man to be brought in.

18 When the accusers stood up, they brought no accusation against him of such things as I *supposed, 19 [a]but had some questions against him about their own religion and about a certain Jesus, who had died, whom Paul affirmed to be alive.

20And because I was uncertain of such questions, I asked whether he was willing to go to Jerusalem and there be judged concerning these matters. 21But when Paul [a]appealed to be reserved for the decision of Augustus, I commanded him to be kept till I could send him to Caesar.”

[22]Then [a]Agrippa said to Festus, “I also would like to hear the man myself.”

“Tomorrow,” he said, “you shall hear him.”

[23]So the next day, when Agrippa and Bernice had come with

great *pomp, and had entered the auditorium with the commanders and the prominent men of the city, at Festus' command [a]Paul was brought in. 24And Festus said: "King Agrippa and all the men who are here present with us, you see this man about whom [a]the whole assembly of the Jews petitioned me, both at Jerusalem and here, crying out that he was [b]not fit to live any longer. [25]But when I found that [a]he had committed nothing deserving [1]of death, [b]and that he himself had appealed to Augustus, I decided to send him. [26]I have nothing certain to write to my lord concerning him. Therefore I have brought him out before you, and especially before you, King Agrippa, so that after the examination has taken place I may have something to write. [27]For it seems to me unreasonable to send a prisoner and not to specify the charges against him.”

Acts 26

Paul’s Early Life

[1]Then Agrippa said to Paul, “You are

permitted to speak for yourself."

So Paul stretched out his hand and answered for himself: [2]"I think myself [a]happy, King Agrippa, because today I shall answer [b]for myself before you concerning all the things of which I am [c]accused by the

Jews, [3]especially because you are expert in all customs and questions which have to do with the Jews. Therefore I beg you to hear me patiently.

[4]“My manner of life from my youth, which was spent from the beginning among my

own nation at Jerusalem, all the Jews know. 5They knew me from the first, if they were willing to testify, that according to [a]the strictest sect of our religion I lived a Pharisee. 6[a]And now I stand and am judged for the hope of [b]the promise made by God to our fathers. [7]To this *promise* [a]our twelve tribes, earnestly serving *God* [b]night and day, [c]hope to attain. For this hope's sake, King Agrippa, I am accused by the Jews. [8]Why should it be thought incredible by you that God raises the dead?

9[a]“Indeed, I myself thought I must do many things *contrary to the name of [b]Jesus of Nazareth. 10[a]This I also did in Jerusalem, and many of the saints I shut up in prison, ha1ving received authority [b]from the chief priests; and when they were put to death, I cast my vote against *them.* 11[a]And I punished them often in every synagogue and compelled *them* to blaspheme; and being exceedingly enraged against them, I persecuted *them* even to foreign cities.

Paul Recounts His Conversion

12[a]“While thus occupied, as I journeyed to Damascus with authority and commission from the chief priests, 13at midday, O king, along the road I saw a light from heaven, brighter than the sun, shining around me and those who journeyed with me. [14]And when we all had fallen to the ground, I heard a voice speaking to me and saying in the Hebrew language, ‘Saul, Saul, why are you persecuting Me?

It is hard for you to kick against the goads.’ [15]So I said, ‘Who are You, Lord?’ And He said, ‘I am Jesus, whom you are persecuting. [16]But rise and stand on your feet; for I have appeared to you for this purpose, [a]to make you a minister and a witness both of the things which you have seen and of the things which I will yet reveal to you. 17I will *deliver you from the *Jewish* people, as well as *from* the Gentiles, [a]to whom I [*]now send you, 18 [a]to open their eyes, *in order* [b]to turn *them* from darkness to light, and *from* the power of Satan to God, [c]that they may receive forgiveness of sins and [d]an inheritance among those who are [e]sanctified[*] by faith in Me.’

Paul’s Post-Conversion Life

[19]“Therefore, King Agrippa, I was not disobedient to the heavenly vision, [20]but [a]declared first to those in Damascus and in Jerusalem, and throughout all the region of Judea, and *then*

to the Gentiles, that they should repent, turn to God, and do [b]works befitting repentance. [21]For these reasons th1e Jews seized me in the temple and tried to kill *me.* [22]Therefore, having obtained help from God, to this day I stand, witnessing both to small and great, saying no other things than those [a]which the prophets and [b]Moses said would come—23[a]that the Christ would suffer, [b]that He would be the first to rise from the dead, and [c]would proclaim light to the *Jewish* people and to the Gentiles."

Agrippa Parries Paul's Challenge

[24]Now as he thus made his defense, Festus said with a loud voice, "Paul, [a]you are beside yourself! Much learning is driving you mad!"

[25]But he said, "I am

not *mad, most noble Festus, but speak the words of truth and reason. [26]For the king, before whom I also speak freely, [a]knows these things; for I am convinced that none of these things escapes his attention, since this thing was not done in a corner. [27]King Agrippa, do you believe the prophets? I know that you do believe.”

[28]Then Agrippa said to Paul, “You almost persuade me to become a Christian.”

[29]And Paul said, [a]“I would to God that not only

you, but also all who hear me today, might become both almost and altogether such as I am, except for these chains.”

[30]When he had said these things, the king stood up, as well as the governor and Bernice and those

who sat with them; [31]and when they had gone aside, they talked among themselves, saying, [a]“This man is doing nothing deserving of death or chains.”

[32]Then Agrippa said to Festus, “This man might have been set [a]free [b]if he had not

appealed to Caesar.”

Acts 27

The Voyage to Rome Begins

[1]And when [a]it was decided that we should sail to Italy, they delivered Paul and some other prisoners to *one* named Julius, a centurion of the Augustan Regiment. [2]So, entering

a ship of Adramyttium, we put to sea, meaning to sail along the coasts of Asia. [a]Aristarchus, a Macedonian of Thessalonica, was with us. [3]And the next *day* we landed at Sidon. And Julius [a]treated Paul kindly and gave *him* liberty to go to his friends and receive care. [4]When we had put to sea from there, we sailed under *the shelter of* Cyprus, because the winds were contrary. [5]And when we had sailed over the sea which is off Cilicia and

Pamphylia, we came to Myra, *a city* of Lycia. 6There the centurion found [a]an Alexandrian ship sailing to Italy, and he put us on board.

[7]When we had sailed slowly many days, and arrived with difficulty off Cnidus, the wind not permitting us to proceed, we sailed under *the shelter of* [a]Crete off Salmone. [8]Passing it with difficulty, we came to a place called Fair Havens,

near the city *of* Lasea.

Paul's Warning Ignored

[9] Now when much time had been spent, and sailing was now dangerous [a]because [*]the Fast was already over, Paul advised them, [10] saying, “Men, I perceive that this voyage will end with disaster and

much loss, not only of the cargo and ship, but also our lives.” [11]Nevertheless the centurion was more persuaded by the helmsman and the owner of the ship than by the things spoken by Paul. [12]And because the harbor was not suitable to winter in, the majority advised to set sail from there also, if by any means they could reach Phoenix, a harbor of Crete opening toward the southwest and northwest, *and* winter *there.*

In the Tempest

13 When the south wind

blew softly, supposing that they had obtained *their* desire, putting out to sea, they sailed close by Crete. [14]But not long after, a tempestuous head wind arose, called *Euroclydon. [15]So when the ship was caught, and could not head into the wind, we let *her* *drive. [16]And running under *the shelter of* an island called *Clauda, we secured the skiff with difficulty. [17]When they had taken it on board, they used cables to undergird the ship; and fearing lest they should run aground on the [*]Syrtis *Sands,* they struck sail and so were driven. 18And because we were exceedingly tempest-tossed, the next *day* they lightened the ship. 19On the third *day* [a]we threw the ship’s tackle overboard with our own hands. 20Now when neither sun nor stars appeared for many days, and no small tempest beat on *us,* all hope that we would be saved was finally given up.

[21]But after long abstinence from food, then Paul stood in the midst of them

and said, “Men, you should have listened to me, and not have sailed from Crete and incurred this disaster and loss. [22]And now I urge you to take *heart, for there will be no loss of life among you, but only of the ship. 23[a]For there stood by me this night an angel of the God to whom I belong and [b]whom I serve, 24saying, ‘Do not be afraid, Paul; you must be brought before Caesar; and indeed God has granted you all those who sail with you.’ 25Therefore take heart, men, [a]for I believe God that it will be just as it was told me. 26However, [a]we must run aground on a certain island.”

27Now when the fourteenth night had come, as we were driven up and down in the Adriatic *Sea,* about midnight the sailors sensed that they were drawing near some land. 28And they took soundings and found *it* to be twenty fathoms; and when they had gone a little farther, they took soundings again and found *it* to be fifteen fathoms. [29]Then, fearing lest we should run aground on the rocks, they dropped four anchors from the stern, and *prayed for day to come. [30]And as the sailors were seeking to escape from the ship, when they had let down the skiff into the sea,1 under pretense of putting out anchors from the prow, [31]Paul said to the centurion and the soldiers, “Unless these men stay in the ship, you cannot be saved.” [32]Then the soldiers cut away the ropes of the skiff and let it fall off.

[33]And as day was about to dawn, Paul implored *them* all to take food, saying, “Today is the fourteenth day you have waited and continued

without food, and eaten nothing. 34Therefore I urge you to take nourishment, for this is for your survival, [a]since not a hair will fall from the head of any of you.” 35And when he had said these things, he took bread and [a]gave thanks to God in the presence of them all; and when he had broken *it* he began to eat. [36]Then they were all encouraged, and also took food themselves. [37]And in all we were two hundred and seventy-six

[a]persons on the ship. [38]So when they had eaten enough, they lightened the ship and threw out the wheat into the sea.

Shipwrecked on Malta

[39]When it was day, they did not recognize the land; but they observed a bay with

a beach, onto which they planned to run the ship if possible. [40]And they *let go the anchors and left *them* in the sea, meanwhile loosing the rudder ropes; and they hoisted the mainsail to the wind and made for shore.

41But striking *a place where two seas met, [a]they ran the ship aground; and the prow stuck fast and remained immovable, but the stern was being broken up by the violence of the waves.

42And the soldiers’ plan was to kill

the prisoners, lest any of them should swim away and escape. [43]But the centurion, wanting to save Paul, kept them from *their* purpose, and commanded that those who could swim should jump *overboard* first and get to land, [44]and the rest, some on boards and some on *parts* of the ship. And so it was [a]that they all escaped safely to land.

Acts 28

Paul’s Ministry on Malta

1 Now when they had escaped, they the1n found out that [a]the island was

called Malta. 2And the [a]natives* showed us unusual kindness; for they kindled a fire and made us all welcome, because of the rain that was falling and because of the cold. 3But when Paul had gathered a bundle of sticks and laid *them* on the fire, a viper came out because of the heat, and fastened on his hand. [4]So when the natives saw the creature hanging from his hand, they said to one another, “No doubt this man is a murderer, whom, though he has escaped the sea, yet justice does not allow to live.” 5But he shook off the creature into the fire and [a]suffered no harm. 6However, they were expecting that he would swell up or suddenly fall down dead.

But after they had looked for a long time and saw no harm come to him, they changed their minds and [a]said that he was a god.

[7]In that region there was an estate of the *leading citizen of the

island, whose name was Publius, who received us and entertained us courteously for three days. [8]And it happened t1hat the father of Publius lay sick of a fever and dysentery. Paul went in to him and [a]prayed, and [b]he laid his hands on him and healed him. 9So when this was done, the rest of those on the island who had diseases also came and were healed. 10They also honored us in many [a]ways; and when we departed, they provided such things as were [b]necessary.

Arrival at Rome

11After three months we sailed in [a]an Alexandrian ship whose figurehead was the [*]Twin Brothers, which had wintered at the island. 12And landing at Syracuse, we stayed three days. 13From there we circled round and reached Rhegium. And after one day the south wind blew; and the next day we came to Puteoli, 14where we found [a]brethren, and were invited to stay with them seven days. And so we went toward Rome. 15And from there, when the brethren heard about us, they came to meet us as far as Appii Forum and Three Inns. When Paul saw them, he thanked God and took courage.

16 Now when we came to Rome, the centurion delivered the prisoners to the

captain of the guard; but [a]Paul was permitted to dwell by himself with the soldier who guarded him.

Paul's Ministry at Rome

17 And it came to pass after three days that Paul called the leaders of the Jews together. So when

they had come together, he said to them: “Men *and* brethren, [a]though I have done nothing against our people or the customs of our fathers, yet [b]I was delivered as a prisoner from Jerusalem into the hands of the Romans, [18]who,

[a]when they had examined me, wanted to let *me* go, because there was no cause for putting me to death. [19]But when the *Jews spoke against *it,* [a]I was compelled to appeal to Caesar, not that I had anything of which

to accuse my nation. [20]For this reason therefore I have called for you, to see *you* and speak with *you,* because [a1]for the hope of Israel I am bound with [b]this chain.”

[21]Then they said to him, “We neither received letters

from Judea concerning you, nor have any of the brethren who came reported or spoken any evil of you. [22]But we desire to hear from you what you think; for concerning this sect, we know that [a]it is spoken against everywhere.”

[23]So when they had appointed him a day, many came to him at *his* lodging, [a]to whom he explained and solemnly testified of the kingdom of God, persuading them concerning Jesus [b]from both the Law of Moses and the Prophets, from

morning till evening. [24]And [a]some were persuaded by the things which were spoken, and some disbelieved. [25]So when they did not agree among themselves, they departed after Paul had said one word: “The Holy Spirit spoke rightly through Isaiah the prophet

to
*our
fathers,
26saying,

[a]‘G
to
thi
pe
an
say

“H
yo
wi
he
an
sha
no
un

An
see
yo
wi
see
an
no
pe

27F
the
hea
of
thi
pe
ha
gro
du

Th

ear
are
har
of
hea

An
the
eye
the
hav
clo

Les
the
sho
see
wit
the
eye
anc
hea
wit
the
ear

Les
the
sho
unc
wit
the
hea
anc
tur

So
tha
I
sho
hea

the
’

[28]“Therefore let it be known to you that the salvation of God has been sent [a]to the Gentiles, and they will hear it!” [29][*]And when he had said these words, the Jews departed and had a great dispute

among themselves.

30Then Paul dwelt two whole years in his own rented house, and received all who came to him, 31[a]preaching the kingdom of God and teaching the things which concern the Lord Jesus Christ with all confidence, no one forbidding

him.

Acts 1

[1:1] a. Luke 1:3

[1:2] a. Mark 16:19; Acts 1:9, 11, 22

[1:2] b. Matt. 28:19; Mark 16:15; John 20:21; Acts 10:42

[1:2] * He ascended into

heaven.

[1:3] a. Matt. 28:17; Mark 16:12, 14; Luke 24:34, 36; John 20:19, 26; 21:1, 14; 1 Cor. 15:5–7

[1:3] * *unmistakab*

[1:4] a. Luke 24:49

[1:4] b. (John

14:16,
17,
26;
15:26);
Acts
2:33

[1:5]
a.
Matt.
3:11;
Mark
1:8;
Luke
3:16;
John
1:33;
Acts
11:16

[1:5]
b.
(Joel
2:28)

[1:7]
a.
1
Thess.
5:1

[1:7]
b.
Matt.

24:36; Mark 13:32

[1:8] a. (Acts 2:1, 4)

[1:8] b. Luke 24:49

[1:8] c. Luke 24:48; John 15:27

[1:8] d. Acts 8:1, 5, 14

[1:8] e. Matt.

28:19; Mark 16:15; Rom. 10:18; Col. 1:23; (Rev. 14:6)

[1:8] * NU *My witnesses*

[1:9] a. Luke 24:50, 51

[1:9] b. Ps. 68:18; 110:1; Mark 16:19; Luke 23:43; John 20:17; Acts 1:2; (Heb. 4:14;

9:24; 1 Pet. 3:22)

[1:10] a. Matt. 28:3; Mark 16:5; Luke 24:4; John 20:12; Acts 10:3, 30

[1:11] a. Dan. 7:13; Mark 13:26; Luke 21:27; (John 14:3); 2 Thess. 1:10; Rev. 1:7

[1:12] a. Luke 24:52

[1:13] a. Mark 14:15; Luke 22:12; Acts 9:37, 39; 20:8

[1:13] b. Matt. 10:2–4

[1:13] c. Luke 6:15

[1:13] d. Jude 1

[1:14] a. Acts 2:1, 46

[1:14] b. Luke 23:49, 55

[1:14] c. Matt. 13:55

[1:14] * *purpose* or *mind*

[1:14] * NU omits *and supplication*

[1:15] a.

Luke 22:32; Rev. 3:4

[1:15] * NU *brethren*

[1:16] a. Ps. 41:9

[1:16] b. Matt. 26:47; Mark 14:43; Luke 22:47; John 18:3

[1:17] a. Matt. 10:4

[1:17]

b. Acts 1:25

[1:18] a. Matt. 27:3–10

[1:18] b. Matt. 18:7; 26:14, 15, 24; 1Mark 14:21; Luke 22:22; John 17:12

[1:18] * *reward of unrighteous*

[1:18] * *intestines*

[1:20] a. Ps. 69:25

[1:20] b. Ps. 109:8

[1:20] * *deserted*

[1:20] * Gr. *episkopen,* position of overseer

[1:22] a. Acts 1:9

[1:22] b. Acts

1:8; 2:32

[1:23] a. Acts 15:22

[1:24] a. 1 Sam. 16:7; Jer. 17:10; Acts 1:2

[1:25] a. Acts 1:17

Acts 2

[2:1] a. Lev. 23:15; Deut. 16:9; Acts 20:16; 1

Cor. 16:8

[2:1] b. Acts 1:14

[2:1] * NU *together*

[2:2] a. Acts 4:31

[2:3] * Or *tongues as of fire, distributed and resting on each*

[2:4]

a. Matt. 3:11; 5:6; 10:20; Luke 3:16; John 14:16; 16:7–15; Acts 1:5

[2:4] b. Mark 16:17; Acts 10:46; 19:6; (1 Cor. 12:10, 28, 30; 13:1)

[2:5] a. Luke 2:25; Acts 8:2

[2:6]
a.
Acts
4:32

[2:7]
a.
Matt.
26:73;
Acts
1:11

[2:8]
*
dialect

[2:9]
a.
1
Pet.
1:1

[2:11]
1*
Arabians

[2:15]
a.
1
Thess.
5:7

[2:15] * 9 a.m.

[2:17] a. Is. 44:3; Ezek. 11:19; Joel 2:28–32; (Zech. 12:10; John 7:38)

[2:17] b. Acts 10:45

[2:17] c. Acts 21:9

[2:18] a. Acts

21:4,
9;
1
Cor.
12:10

[2:19]
a.
Joel
2:30

[2:20]
a.
Is.
13:10;
Ezek.
32:7;
Matt.
24:29;
Mark
13:24,
25;
Luke
21:25;
Rev.
6:12

[2:21]
a.
Rom.
10:13

[2:22]
a.

Is.
50:5;
John
3:2;
5:6;
Acts
10:38

[2:23]
a.
Matt.
26:4;
Luke
22:22;
Acts
3:18;
4:28;
(1
Pet.
1:20)

[2:23]
b.
Acts
5:30

[2:23]
*
NU
omits
have
taken

[2:24]

a. (Rom. 8:11; 1 Cor. 6:14; 2 Cor. 4:14; Eph. 1:20; Col. 2:12); 1 Thess. 1:10; Heb. 13:20

[2:24] * *destroyed* or *abolished*

[2:24] * Lit. *birth pangs*

[2:25] a. Ps. 16:8–

11

[2:27] a. Acts 13:30–37

[2:29] a. Acts 13:36

[2:30] a. 2 Sam. 7:12; Ps. 132:11; Luke 1:32; Rom. 1:3; 2 Tim. 2:8

[2:30] * NU *He would seat*

one on his throne,

1 [2:31] a. Ps. 16:10; Is. 50:8; 53:10

[2:32] a. Acts 2:24

[2:32] b. Acts 1:8; 3:15

[2:33] a. Ps. 68:18; (Acts 5:31); Phil. 2:9

[2:33] b. Ps. 110:1; Mark 16:19; (Heb. 10:12)

[2:33] c. Luke 24:49; (John 14:26)

[2:33] d. Matt. 3:11; 5:6; Luke 3:16; 22:69; John 14:16; 16:7–15; Acts 2:1–11, 17; 10:45; Eph. 4:8

[2:33] * Possibly *by*

[2:34] a. Ps. 68:18; 110:1; Matt. 22:44; Luke 23:43; John 20:17; 1 Cor. 15:25; Eph. 1:20; Heb. 1:13

[2:37] a. (Zech. 12:10); Luke 3:10, 12, 14; John 16:8

[2:38] a. Luke 24:47

[2:38] * *forgiveness*

[2:39] a. Joel 2:28, 32

[2:39] b. Acts 11:15, 18; Eph. 2:13

[2:40] * *crooked*

[2:41] * NU omits *gladly*

[2:42] a. Acts 1:14; Rom. 12:12; Eph. 6:18; Col. 4:2; Heb. 10:25

[2:42] * *teaching*

[2:43] a. Mark 16:17; Acts 2:22

[2:44] a. Acts 4:32, 34, 37; 5:2

[2:45]
a.
Is.
58:7

[2:45]
*
would
sell

[2:45]
*
distributed

[2:46]
a.
Acts
1:14

[2:46]
b.
Luke
24:53

[2:46]
c.
Luke
24:30;
Acts
2:42;
20:7;
(1

Cor. 10:16)

[2:47] a. Acts 5:14

[2:47] * NU omits *to the church*

Acts 3

[3:1] a. Acts 2:46

[3:1] b. Ps. 55:17; Matt. 27:45; Acts 10:30

[3:2] a. Acts 14:8

[3:2] b. John 9:8; Acts 3:10

[3:2] * Beg

[3:6] a. Acts 4:10

[3:8] a. Is. 35:6

[3:9] a. Acts 4:16, 21

[3:10] a. John 9:8; Acts 3:2

[3:11] a. John 10:23; Acts 5:12

[3:13] a. John 5:30

[3:13] b. Is. 49:3; John 7:39; 12:23; 13:31

[3:13] c. Matt. 27:2

[3:13] d. Matt. 27:20; Mark 15:11; Luke 23:18; John 18:40; Acts 13:28

[3:14] a. Ps. 16:10; Mark 1:24; Luke 1:35

[3:14] b. Acts 7:52; 2 Cor. 5:21

[3:14] c. John 18:40

[3:15] a. Acts 2:24

[3:15] b. Acts 2:32

[3:15] * Or *Originator*

[3:16] a. Matt. 9:22; Acts 4:10; 14:9

[3:17] a. Luke 23:34; John 16:3; (Acts 13:27; 17:30);

1
Cor.
2:8;
1
Tim.
1:13

[3:18]
a.
Luke
24:44;
Acts
26:22

[3:18]
b.
Ps.
22;
Is.
50:6;
53:5;
Dan.
9:26;
Hos.
6:1;
Zech.
13:6;
1
Pet.
1:10

[3:19]
a.
(Acts
2:38;

26:20)

[3:20] * NU, M *Christ Jesus*

[3:20] * NU, M *ordained for you before*

[3:21] a. Acts 1:11

[3:21] b. Matt. 17:11; (Rom. 8:21)

[3:21] c.

Luke
1:70

[3:21]
*
Or
time

[3:22]
a.
Deut.
18:15,
18,
19;
Acts
7:37

[3:24]
a.
2
Sam.
7:12;
Luke
24:25

[3:24]
*
NU,
M
proclaimed

[3:25]

a. Acts 2:39; (Rom. 9:4, 8; Gal. 3:26)

[3:25] b. Gen. 12:3; 18:18; 22:18; 26:4; 28:14

[3:26] a. Matt. 15:24; John 4:22; Acts 13:46; (Rom. 1:16; 2:9)

[3:26] b. Is. 42:1; Matt.

1:21

Acts 4

[4:1] a. Matt. 22:23

[4:6] a. Luke 3:2; John 11:49; 18:13

[4:7] a. Ex. 2:14; Matt. 21:23; Acts 7:27

[4:8] a. Luke 12:11, 12

[4:10]
a.
Acts
2:22;
3:6,
16

[4:10]
b.
Acts
2:24

[4:11]
a.
Ps.
118:22;
Is.
28:16;
Matt.
21:42

[4:12]
a.
Is.
42:1,
6,
7;
53:11;
Dan.
9:24;
(Matt.
1:21;
John
14:6;
Acts

10:43; 1 Tim. 2:5, 6)

[4:13] a. Matt. 11:25; (1 Cor. 1:27)

[4:14] a. Acts 3:11

[4:16] a. John 11:47

[4:16] b. Acts 3:7–10

[4:16] *

remarkable sign

[4:16] * *well known*

[4:18] a. Acts 5:28, 40

[4:19] a. Acts 5:29

[4:20] a. Acts 1:8; 2:32

[4:20] b. Acts 22:15; (1 John 1:1,

3)

[4:21] a. Matt. 21:26; Luke 20:6, 19; 22:2; Acts 5:26

[4:21] b. Matt. 15:31

[4:21] c. Acts 3:7, 8

[4:23] a. Acts 2:44–46; 12:12

[4:24]

a. Ex. 20:11; 2 Kin. 19:15; Neh. 9:6; Ps. 146:6

[4:25] a. Ps. 2:1, 2

[4:25] * NU *through the Holy Spirit, by the mouth of our father, Your servant David,*

[4:27]

a.
Matt.
26:3;
Luke
22:2;
23:1,
8

[4:27]
b.
(Luke
1:35)

[4:27]
c.
Luke
4:18;
John
10:36

[4:28]
a.
Acts
2:23;
3:18

[4:29]
a.
Acts
4:13,
31;
9:27;
13:46;
14:3;

19:8;
26:26;
Eph.
6:19

[4:30]
a.
Acts
2:43;
5:12

[4:30]
b.
Acts
3:6,
16

[4:30]
c.
Acts
4:27

[4:31]
a.
Matt.
5:6;
Acts
2:2,
4;
16:26

[4:31]

b. Acts 4:29

[4:32] a. Acts 5:12; Rom. 15:5, 6; 2 Cor. 13:11; Phil. 1:27; 2:2; 1 Pet. 3:8

[4:32] b. Acts 2:44

[4:33] a. (Acts 1:8)

[4:33] b. Acts

1:22

[4:33] c. Rom. 6:15

[4:34] a. (Matt. 19:21); Acts 2:45

[4:35] a. Acts 4:37; 5:2

[4:35] b. Acts 2:45; 6:1

[4:36] * NU *Joseph*

[4:36]
*
Or
Consolation

[4:37]
a.
Acts
4:34,
35;
5:1,
2

Acts
5

[5:3]
a.
Num.
30:2;
Deut.
23:21;
Eccl.
5:4

[5:3]
b.
Matt.
4:10;
Luke
22:3;
John
13:2,
27

[5:5]
a.
Ezek.
11:13;
Acts
5:10,
11

[5:6]
a.
John
19:40

[5:9]
a.
Matt.
4:7;
Acts
5:3,
4

[5:10]
a.
Ezek.
11:13;
Acts
5:5

[5:11]
a.
Acts
2:43;
5:5;
19:17

[5:12] a. Acts 2:43; 4:30; 6:8; 14:3; 15:12; (Rom. 15:19); 2 Cor. 12:12; Heb. 2:4

[5:12] b. Acts 3:11; 4:32

[5:13] a. John 9:22

[5:13] b. Acts 2:47; 4:21

[5:15] a. Matt. 9:21; 14:36; Acts 19:12

[5:16] a. Mark 16:17, 18; (John 14:12)

[5:17] a. Matt. 3:7; Acts 4:1, 2, 6

[5:17] * *jealousy*

[5:18] a. Luke 21:12; Acts

4:3; 16:37

[5:19] a. Matt. 1:20, 24; 2:13, 19; 28:2; Luke 1:11; 2:9; Acts 12:7; 16:26

[5:20] a. (John 6:63, 68; 17:3; 1 John 5:11)

[5:21] a. Acts 4:5, 6

[5:21] * Sanhedrin

[5:21] * *council of elders* or *senate*

[5:23] * NU, M omit *outside*

[5:24] a. Luke 22:4; Acts 4:1; 5:26

[5:24] * NU omits *the high priest*

[5:25] * NU, M omit *saying*

[5:26] a. Matt. 21:26

[5:28] a. Acts 4:17, 18

[5:28] b. Acts 2:23, 36

[5:28] c. Matt. 23:35

[5:29]

a. Acts 4:19

[5:30] a. Acts 3:13, 15

[5:30] b. Acts 10:39; 13:29; (Gal. 3:13; 1 Pet. 2:24)

[5:31] a. Mark 16:19; (Acts 2:33, 36; Phil. 2:9–11)

[5:31] b.

Acts
3:15;
Rev.
1:5

[5:31]
c.
Matt.
1:21

[5:31]
d.
Luke
24:47;
(Eph.
1:7;
Col.
1:14)

[5:32]
a.
John
15:26,
27;
Acts
15:28;
Rom.
8:16;
Heb.
2:4

[5:32]
b.
Acts

2:41; 10:44

[5:33] a. Acts 2:37; 7:54

[5:33] * *cut to the quick*

[5:34] a. Acts 22:3

[5:35] * *be careful*

[5:36] * *followed*

[5:39] a. Luke 21:15; 1 Cor. 1:25

[5:39] b. Acts 7:51; 9:5

[5:40] a. Acts 4:18

[5:40] b. Matt. 10:17; Mark 13:9; Acts 16:22, 23; 21:32; 2 Cor. 11:25

[5:41]

a. Matt. 5:10–12; Rom. 5:3; 2 Cor. 12:10; Heb. 10:34; (James 1:2; 1 Pet. 4:13–16)

[5:41] * NU *the name;* M *the name of Jesus*1font

[5:42] a. Acts 2:46

[5:42]

b.
Acts
4:20,
29

Acts
6

[6:1]
a.
Acts
2:41;
4:4

[6:1]
b.
Acts
9:29;
11:20

[6:1]
c.
Acts
4:35;
11:29

[6:1]
*
Greek-speaking
Jews

[6:2]

a. Ex. 18:17

[6:3] a. Deut. 1:13; 1 Tim. 3:7

[6:3] b. Phil. 1:1; 1 Tim. 3:8–13

[6:4] a. Acts 2:42

[6:5] a. Acts 6:3; 11:24

[6:5] b. Acts 8:5, 26; 21:8

[16:5] c. Rev. 2:6, 15

[6:6] a. Acts 1:24

[6:6] b. Num. 8:10; 27:18; Deut. 34:9; (Mark 5:23; Acts 8:17; 9:17; 13:3; 19:6; 1 Tim. 4:14;

2
Tim.
1:6);
Heb.
6:2

[6:7]
a.
Acts
12:24;
Col.
1:6

[6:7]
b.
John
12:42

[6:8]
a.
Acts
2:43;
5:12;
8:15;
14:3

[6:8]
*
NU
grace

[6:10]

a. Ex. 4:12; Is. 54:17; Luke 21:15

[6:11] a. 1 Kin. 21:10, 13; Matt. 26:59, 60

[6:13] * NU omits *blasphemou*

[6:14] a. Acts 10:38; 25:8

Acts 7

[7:2] a.

Acts 22:1

[7:2] b. Ps. 29:3; 1 Cor. 2:8

[7:2] c. Gen. 11:31, 32

[7:3] a. Gen. 12:1

[7:4] a. Gen. 11:31; 15:7; Heb. 11:8–10

[7:4] b. Gen.

11:32

[7:5]
a.
Gen.
12:7;
13:15;
15:3,
18;
17:8;
26:3

[7:6]
a.
Gen.
15:13,
14,
16;
47:11,
12

[7:6]
b.
Ex.
1:8–
14;
12:40,
41;
Gal.
3:17

[7:7]
a.
Gen.

15:14

[7:7] b. Ex. 14:13–31

[7:7] c. Ex. 3:12; Josh. 3:1–17

[7:8] a. Gen. 17:9–14

[7:8] b. Gen. 21:1–5

[7:8] c. Gen. 25:21–

26

[7:8] d. Gen. 29:31—30:24; 35:18, 22–26

[7:9] a. Gen. 37:4, 11, 28; Ps. 105:17

[7:9] b. Gen. 37:28

[7:9] c. Gen. 39:2, 21, 23

[7:10] a. Gen. 41:38–44

[7:11] a. Gen. 41:54; 42:5

[7:11] * *affliction*

[7:12] a. Gen. 42:1, 2

[7:13] a. Gen. 45:4, 16

[7:14] a. Gen. 45:9,

27

[7:14] b. Gen. 46:26, 27; Deut. 10:22

[7:14] * Or *seventy,* Ex. 1:5

[7:15] a. Gen. 46:1–7

[7:15] b. Gen. 49:33; Ex. 1:6

[7:16] a.

Gen. 50:13; Ex. 13:19; Josh. 24:32

[7:16] b. Gen. 23:16

[7:17] a. Gen. 15:13; Ex. 2:23–25; Acts 7:6, 7

[7:17] b. Ex. 1:7–9; Ps. 105:24, 25

[7:18] a.

Ex. 1:8

[7:19] a. Ex. 1:22

[7:20] a. Ex. 2:1, 2

[7:20] b. Heb. 11:23

[7:21] a. Ex. 2:3, 4

[7:21] b. Ex. 2:5–10

[7:22] a. Luke 24:19

[7:23] a. Ex. 2:11, 12; Heb. 11:24–26

[7:27] a. Ex. 2:14; Luke 12:14; Acts 7:35

[7:29] a. Heb. 11:27

[7:29] b. Ex. 2:15, 21, 22;

4:20; 18:3

[7:30] a. Ex. 3:1–10; Is. 63:9

[7:30] * NU omits *of the Lord*

[7:32] a. Ex. 3:6, 15; (Matt. 22:32); Heb. 11:16

[7:33] a. Ex. 3:5, 7,

8,
10

[7:34]
a.
Ex.
2:24,
25

[7:34]
b.
Ps.
105:26

[7:35]
a.
Ex.
2:14;
Acts
7:27

[7:35]
b.
Ex.
14:21

[7:36]
a.
Ex.
12:41;
33:1;
Deut.

6:21,
23;
Heb.
8:9

[7:36]
b.
Ex.
7:8,
9;
Deut.
6:22;
Ps.
105:27;
John
4:48

[7:36]
c.
Ex.
14:21

[7:36]
d.
Ex.
16:1,
35;
Num.
14:33;
Ps.
95:8–
10;
Acts
7:42;
13:18;

Heb. 3:8

[7:37] a. Deut. 18:15, 18, 19; Acts 3:22

[7:37] b. Matt. 17:5

[7:37] * NU, M omit *Him you shall hear*

[7:38] a. Ex. 19:3

[7:38] b. Is. 63:9; Gal. 3:19; Heb. 2:2

[7:38] c. Ex. 21:1; Deut. 5:27; John 1:17

[7:38] d. Rom. 3:2; Heb. 5:12; 1 Pet. 4:11

[7:38] * Gr. *ekklesia, assembly* or *church*

[7:38] * *sayings*

[7:39] a. Ps. 95:8–11

[7:40] a. Ex. 32:1, 23

[7:41] a. Ex. 32:2–4; Deut. 9:16; Ps. 106:19

[7:41] b. Ex. 32:6, 18, 19

[7:42] a. Ps. 81:12; (2 Thess. 2:11)

[7:42] b. Deut. 4:19; 2 Kin. 21:3

[7:42] c. Amos 5:25–27

[7:43] a. 2 Chr. 36:11–21; Jer. 25:9–12

[7:44] a. Ex. 25:40; (Heb. 8:5)

[7:45] a. Deut. 32:49; Josh. 3:14; 18:1; 23:9

[7:45] b. Neh. 9:24; Ps. 44:2

[7:45] c. 2 Sam. 6:2–15

[7:46] a. 2 Sam.

7:1–13; 1 Kin. 8:17

[7:46] b. 1 Chr. 22:7; Ps. 132:4, 5

[7:47] a. 1 Kin. 6:1–38; 8:20, 21; 2 Chr. 3:1–17

[7:48] a. 1 Kin. 8:27; 2 Chr.

2:6;
Acts
17:24

[7:49]
a.
Is.
66:1,
2;
Matt.
5:34

[7:50]
a.
Ps.
102:25

[7:51]
a.
Ex.
32:9;
Is.
6:10

[7:51]
b.
Lev.
26:41

[7:51]
*
stubborn

[7:52] a. 2 Chr. 36:16; Matt. 21:35; 23:35; 1 Thess. 2:15

[7:52] b. Acts 3:14; 22:14; 1 John 2:1

[7:53] a. Ex. 20:1; Deut. 33:2; Acts 7:38; Gal. 3:19; Heb. 2:2

[7:54]
a.
Acts
5:33

[7:54]
*
furious

[7:55]
a.
Matt.
5:8;
16:28;
Mark
9:1;
Luke
9:27;
Acts
6:5

[7:55]
b.
(Ex.
24:17)

[7:56]
a.
Matt.
3:16

[7:56]

b.
Dan.
7:13

[7:58]
a.
Acts
22:20

[7:59]
a.
Ps.
31:5

[7:60]
a.
Matt.
5:44;
Luke
23:34

Acts 8

[8:1]
a.
John
16:2;
Acts
8:4;
11:19

[8:2]

a.
Gen.
23:2

[8:3]
a.
Acts
7:58;
1
Cor.
15:9;
Gal.
1:13;
Phil.
3:6;
1
Tim.
1:13

[8:4]
a.
Matt.
10:23

[8:5]
a.
Acts
6:5;
8:26,
30

[8:5]
*
Or

a

[8:7]
a.
Mark
16:17

[8:9]
a.
Acts
8:11;
13:6

[8:9]
b.
Acts
5:36

[8:9]
*
magic

[8:9]
*
Or
nation

[8:11]
*
magic

arts

[8:12] a. Acts 1:3; 8:4

[8:14] a. Acts 5:12, 29, 40

[8:15] a. Acts 2:38; 19:2

[8:16] a. Acts 19:2

[8:16] b. Matt. 28:19; Acts 2:38

[8:16] c. Acts 10:48; 19:5

[8:17] a. Acts 6:6; 19:6; Heb. 6:2

[8:20] a. 2 Kin. 5:16; Is. 55:1; Dan. 5:17; (Matt. 10:8)

[8:20] b. (Acts 2:38; 10:45; 11:17)

[8:21] a. Jer. 17:9

[8:22] a. Dan. 4:27; 2 Tim. 2:25

[8:23] a. Heb. 12:15

[8:24] a. Gen. 20:7, 17; Ex. 8:8; Num. 21:7; 1 Kin. 13:6; Job 42:8; James 5:16

[8:26] a. Acts 6:5

[8:26] * Or *a deserted place*

[8:27] a. Ps. 68:31; 87:4; Is. 56:3; Zeph. 3:10

[8:27] b. 1 Kin. 8:41, 42; John 12:20

[8:32] a. Is.

53:7, 8

[8:32] b. Matt. 26:62, 63; 27:12, 14; John 19:9

[8:33] a. Luke 23:1–25

[8:33] b. Luke 23:33–46

[8:35] a. Luke 24:27; Acts 17:2; 18:28; 28:23

[8:36] a. Acts 10:47; 16:33

[8:37] a. Matt. 28:19; (Mark 16:16; Rom. 10:9, 10)

[8:37] b. Matt. 16:16; John 6:69; 9:35, 38; 11:27

[8:37] * NU, M omit v. 37. It

is found in Western texts, including the Latin tradition.

[8:39] a. 1 Kin. 18:12; 2 Kin. 2:16; Ezek. 3:12, 14; 2 Cor. 12:2

[8:40] a. Acts 21:8

[8:40] * Same as Heb.

Acts 9

[9:1] a. Acts 7:57; 8:1, 3; 26:10, 11; Gal. 1:13; 1 Tim. 1:13

[9:2] a. Acts 22:5

[9:3] a. Acts 22:6; 26:12, 13; 1 Cor. 15:8

[9:4]

a. (Matt. 25:40)

[9:5] * NU, M omit the rest of v. 5 and begin v. 6 with *But arise and go*

[9:7] a. Dan. 10:7; John 12:29; (Acts 22:9; 26:13)

[9:10]

a.
Acts
22:12

[9:11]
a.
Acts
21:39;
22:3

[9:13]
a.
Acts
9:1

[9:13]
*
bad
things

[9:14]
a.
Acts
7:59;
9:2,
21;
1
Cor.
1:2;
2
Tim.
2:22

[9:15]

a. Acts 13:2; 22:21; Rom. 1:1; 1 Cor. 15:10; Gal. 1:15; Eph. 3:7, 8; 1 Tim. 2:7; 2 Tim. 1:11

[9:15] b. Rom. 1:5; 11:13; Gal. 2:7, 8

[9:15] c. Acts 25:22, 23; 26:1

[9:15] d. Acts 21:40; Rom. 1:16; 9:1–5

[9:15] * Lit. *sons*

[9:16] a. Acts 20:23; 2 Cor. 11:23–28; 12:7–10; Gal. 6:17; Phil. 1:29, 30

[9:16] b. 2 Cor.

4:11

[9:17] a. Acts 22:12, 13

[9:17] b. Acts 8:17

[9:17] c. Acts 2:4; 4:31; 8:17; 13:52

[9:17] * M omits *Jesus*

[9:19] a. Acts 26:20

[9:20]
*
NU
Jesus

[9:21]
a.
Acts
8:3;
9:13;
Gal.
1:13,
23

[9:22]
a.
Acts
18:28

[9:23]
a.
Acts
23:12;
2
Cor.
11:26

[9:24]
a.
2
Cor.
11:32

[9:25] a. Josh. 2:15; 1 Sam. 19:12

[9:26] a. Acts 22:17–20; 26:20; Gal. 1:17, 18

[9:27] a. Acts 4:36; 13:2

[9:27] b. Acts 9:20, 22

[9:28] a.

Gal.
1:18

[9:29]
a.
Acts
6:1;
11:20

[9:29]
b.
Acts
9:23;
2
Cor.
11:26

[9:29]
*
Greek-speaking
Jews

1

[9:31]
a.
Acts
5:11;
8:1;
16:5

[9:31]
b.

(Eph.
4:16,
29)

[9:31]
c.
Ps.
34:9

[9:31]
d.
John
14:16

[9:31]
e.
Acts
16:5

[9:31]
*
NU
church.
.
.
was

[9:31]
*
built
up

[9:32] a. Acts 8:14

[9:34] a. (Acts 3:6, 16; 4:10)

[9:35] a. 1 Chr. 5:16; 27:29; Is. 33:9; 35:2; 65:10

[9:35] b. Acts 11:21; 15:19

[9:36] a. 1

Tim. 2:10; Titus 3:8

[9:36] * Lit., in Aram., *Gazelle*

[9:36] * Lit., in Gr., *Gazelle*

[9:37] a. Acts 1:13; 9:39

[9:40] a. Matt. 9:25

[9:40] b.

Luke 22:41; Acts 7:60

[9:40] c. Mark 5:41, 42; John 11:43

[9:42] a. John 11:45

[9:43] a. Acts 10:6

Acts 10

[10:1] a. Acts 8:40; 23:23

[10:1]

*
Cohort

[10:2]
a.
Acts
8:2;
9:22;
22:12

[10:2]
b.
(Acts
10:22,
35;
13:16,
26)

[10:2]
*
charitable gifts

[10:3]
a.
Acts
10:30;
11:13

[10:3]
*
3

p.m.

[10:5] a. Acts 11:13, 14

[10:6] a. Acts 9:43

[10:6] b. Acts 11:14

[10:6] * NU, M omit the rest of v. 6.

[10:9] a. Acts

10:9–32; 11:5–14

[10:9] * Noon

[10:11] a. Ezek. 1:1; Matt. 3:16; Acts 7:56; Rev. 4:1; 19:11

[10:14] a. Lev. 11:4; 20:25; Deut. 14:3, 7; Ezek. 4:14

[10:15] a.

(Matt. 15:11; Mark 7:19); Acts 10:28; (Rom. 14:14); 1 Cor. 10:25; (1 Tim. 4:4; Titus 1:15)

[10:15] * Declared clean

[10:17] * *was perplexed*

[10:19] a. Acts 11:12

[10:20] a.

Acts 15:7–9

[10:21] * NU, M omit *who had been sent to him from Cornelius*

[10:22] a. Acts 22:12

[10:23] a. Acts 10:45; 11:12

[10:26] a. Acts 14:14, 15;

Rev.
19:10;
22:8

[10:28]
a.
John
4:9;
18:28;
Acts
11:3;
Gal.
2:12

[10:28]
b.
(Acts
10:14,
35;
15:8,
9)

[10:30]
a.
Acts
1:10

[10
b.
Ma
28
Ma
16

[10
*
NU
Fou
day
ago
to
thi
hou
at
the
nin
hou

[10
a.
Da
10

[10
b.
He
6:1

[10
*
cho
gift

[10
*
NU
om
the

res
of
v.
32

[1
a.
De
10
2
Ch
19
Ro
2:1
Ga
2:6
Ep
6:9

[1
a.
Ac
15
(1
Co
12
13
Ep
2:1

[1
b.
Ps.
15
2

[10
a.
Is.
57
Ep
2:1
(Co
1:2

[10
b.
Ma
28
Ac
2:3
Ro
10
1
Co
15

[10
*
Lit
sor

[10
a.
Lu
4:1

[10

a.
Is.
61
3;
Lu
4:1

[1
b.
Ma
4:2

[1
c.
Jo
3:2
8:2

[1
a.
Ac
1:8

[1
b.
Ac
2:2

[1
*
NU
M

the
als

[10
a.
Ho
6:2
Ma
12
40,
16
20,
Jol
2:1
21,
Act
2:2

[10
a.
(Jo
14
19,
22,
15

[10
b.
Lul
24
41-
43

[10

a.
Ma
28

[1
b.
Jo
5:
27
Ac
17

[1
c.
Ro
14
2
Ti
4:
1
Pe
4:

[1
a.
(Is
42
53
61
Je
31
Da
9:
Ho
6:

3;
Mi
7:1
Ze
13
Ma
4:2

[10
b.
(Jo
3:1
18
Ac
26
Ro
10
Ga
3:2

[10
c.
Ac
13
39

[10
*
for

[10
a.
Ac
4:3

[1
a.
Ac
10

[1
b.
Is.
42
6;
49
Lu
2:3
Jo
11
Ac
11

[1
*
Th
Je

[1
a.
Ac
2:4
10
11
15

[1

a.
1
Co
1:1
17

[1(
b.
Ac
2:3
8:1
19

Acts
11

[11
a.
Ac
10

[11
a.
Ma
9:1
Ac
10

[11
b.
Ga
2:1

[11
a.
Lu
1:3

[11
a.
Ac
10

[11
a.
(Jo
16
Ac
10
15

[11
b.
Ac
10

[11
a.
Ac
10

[11
a.
Ac
2:1

4;
15
9

[11
a.
Ma
3:1
Ma
1:8
Jol
1:2
33
Ac
1:5
19

[11
b.
Is.
44

[11
a.
(Ac
15
9)

[11
b.
Ac
10

[11
a.
Is.
42
6;
49
Lu
2:3
Jo
11
Ro
10
13
15
16

[11
a.
Ac
8:1
4

[11
a.
Ac
6:1
9:2

[11
a.
Lu
1:6
Ac
2:4

[1
b.
Ac
9:
14

[1
a.
Ac
4:
9:

[1
a.
Ac
13
14

[1
a.
Ac
6:

[1
b.
Ac
5:
11

[1
a.
Ac

9:1
30

[11
a.
Ac
2:1
13
15
21
1
Co
12
Ep
4:1

[11
a.
Jo
16
Ac
21

[11
b.
Ac
18

[11
a.
Ro
15
1
Co

16
2
Co
9:1

[11
a.
Ac
12

Acts
12

[12
a.
Ma
4:2
20

[12
a.
Ex
12
23
Ac
20

[12
a.
Jo
21

[12

*
Gr.
tet
squ
of
fou

[12
*
NU
con
or
ear

[12
*
gua

[12
a.
Ac
5:1

[12
a.
Ps.
12

[12
b.
Act
10

17

11

[12

a.

Ac

5:1

16

[12

a.

(Ps

34

Da

3:2

6:2

(H

1:1

[12

b.

Jo

5:1

(Ps

33

19

34

41

2

Co

1:1

(2

Pe

2:9

[12
a.
Ac
4:2

[12
b.
Ac
13
13
15
2
Ti
4:1
Ph
24
1
Pe
5:1

[12
c.
Ac
12

[12
a.
Ge
48
(M
18

[12
a.

Ac
13
19
21

[12
*
dis

[12
a.
Ma
11

[12
b.
1
Kin
5:1
Ezr
3:7
Eze
27

[12
*
wh
wa
in
cho
of
the
kin
bec

[12
*
Lit
nou

[12
a.
1
Sa
25
2
Sa
24
17
2
Ki
19
Ac
5:1

[12
b.
Ps.
11

[12
*
bre
his
las

[12

a.
Is.
55
Ac
6:7
19

[12
a.
Ac
11

[12
b.
Ac
11

[12
c.
Ac
13
13

[12
d.
Ac
12
15

[12
*
NU

M
to

Acts
13

[13
a.
Ac
14

[13
b.
Ac
11

[13
c.
Ro
16

[13
a.
Nu
8:1
Ac
9:1
22
Ro
1:1
Ga
1:1
2:9

[13
b.
Ma
9:3
Ac
14
Ro
10
Ep
3:7
8;
1
Ti
2:7
2
Ti
1:1
He
5:4

[13
a.
Ma
9:1
Ma
2:2
Lu
5:3
Ac
6:6

[13
a.
Ac
4:3

[13
a.
(Ac
13

[13
b.
Ac
12
15

[13
a.
Ac
8:9

[13
*
NU
the
wh
isl

[13
a.
Ex
7:1
2
Ti
3:8

[13

*

opp

[13

a.

Ac

2:4

4:8

[13

a.

Ma

13

Jol

8:4

(1

Jol

3:8

[13

a.

Ex

9:3

1

Sa

5:6

Jol

19

Ps.

32

He

10

[13

a.
Ac
15

[13
a.
Ac
16

[13
a.
Lu
4:1

[13
b.
He
13

[13
*
enc

[13
a.
Ac
10

[13
a.

Ex
6:1
6;
13
16
De
7:6
8

[13
b.
Ac
7:1

[13
c.
Ex
14

[13
*
M
om
Isr

[13
*
Mi
po

[13
a.

Ex
16
Nu
14
Ac
7:3

[13
a.
De
7:1

[13
b.
Jos
14
2;
19
Ps.
78

[13
a.
Ju
2:1
1
Sa
4:1
7:1

[13
b.
1
Sa

3:2
Ac
3:2

[13
a.
1
Sa
8:5

[13
b.
1
Sa
10
24

[13
a.
1
Sa
15
26
28

[13
b.
1
Sa
16
12
13

[13
c.
Ps.
89

[13
d.
1
Sa
13

[13
a.
Is.
11

[13
b.
Ps.
13

[13
c.
(M
1:2

[13
*
M
sal
aft

[13
a.
Ma
3:1
(Lu
3:3

[13
a.
Ma
3:1
Ma
1:7
Lu
3:1

[13
b.
Jo
1:2
27

[13
a.
Ps.
66

[13
b.
Ma
10

[13
*
sto

[13
*
me

[13
a.
Lu
23

[13
a.
Ma
27
23
Ma
15
14
Lu
23
23
Jo
19
Ac
3:1
(2
Co
5:2
He
4:1
1

Pe
2:2

[13
a.
Lu
18

[13
b.
Ma
27
61
Ma
15
47
Lu
23
56
Jo
19
42

[13
a.
Ps.
16
11
Ho
6:2
Ma
12
40
28

[13
a.
Ma
28
Ac
1:3
11
1
Co
15
8

[13
a.
(G
3:1

[13
a.
Ps.
2:7
He
1:5

[13
a.
Is.
55

[13
*
the
sta
of

dec

[13
*
ble

[13
a.
Ps.
16
Ac
2:2

[13
a.
Ac
2:2

[13
*
in
his

[13
*
unc
dec

[13
*

und
no
dec

[13
a.
Jer
31

[13
a.
(Is
53
Joh
3:1

[13
a.
Ha
1:5

[13
*
Or
An
wh
the
we
out
of
the
syr
of
the

Jew
NU
An
wh
the
we
out
of
the
syn
the
beg

[13
a.
Ac
11

[13
b.
Tit
2:1
He
12
1
Pe
5:1

[13
a.
Ac
18
1
Pe
4:4

Ju

10

[1

a.

Ma

10

Ac

3:

Ro

1:

[1

b.

Ex

32

De

32

Is.

55

Ma

21

Ro

10

[1

c.

Ac

18

[1

a.

Is.

42

49
Lu
2:3

[13
a.
(Ac
2:4

[13
a.
Ac
7:5
2
Tin
3:1

[13
a.
Ma
10
Ma
6:1
(Lu
9:5

[13
a.
Ma
5:1
Joh
16

[13
b.
Ac
2:4
4:8
31
13

Acts
14

[14
a.
Jo
7:3
Ac
18
Ro
1:1
16
1
Co
1:2

[14
*
em

[14
*
Lit
sou

[14
a.

Ma
16
Ac
4:2
20
He
2:4

[14
b.
Ac
5:1

[14
a.
Lu
12

[14
b.
Ac
13
3

[14
a.
2
Tir
3:1

[14
a.

Ma
10

[14
a.
Ac
3:2

[14
*

Lit
Wh

[14
a.
(Is
35

[14
a.
Ac
8:1
28

[14
*

Jup

[14
*

Me

[14
a.
Da
2:4

[14
a.
Nu
14
Ma
26
Ma
14

[14
a.
Ac
10

[14
b.
Jar
5:1

[14
c.
1
Sar
12
Jer

8:1
14
Am
2:4
1
Co
8:4

[14
d.
1
Th
1:9

[14
e.
Ge
1:1
Ex
20
Ps.
14
Ac
4:2
17
Re
14

[14
a.
Ps.
81
Mi
4:5
1

Pe
4:3

[1
a.
Ac
17
27
Ro
1:1
20

[1
b.
Le
26
De
11
(M
5:

[1
c.
Ps.
14

[1
a.
Ac
13
50
14
5;
1

Th
2:1

[14
b.
Ac
14
2
Co
11
2
Ti
3:1

[14
c.
(2
Co
12
4)

[14
a.
Ma
28

[14
a.
Ac
11

[14

b.
Ma
10
Lu
22
(R
8:1
2
Ti
2:1
3:1

[1
a.
Ma
9:1
Ma
2:2
Lu
5:
2
Co
8:1
Tit
1:

[1
a.
Ac
15
12

[1
b.
1

Co
16
2
Co
2:1
Co
4:3
Re
3:8

Acts
15

[15
a.
Ga
2:1

[15
b.
Jo
7:2
Ac
15
Ga
5:2
Ph
3:2
(C
2:8
11
16

[15
a.
Ga

2:1

[15
a.
Ac
20
21
Ro
15
1
Co
16
11
2
Co
1:1
Tit
3:1
3
Jol
6

[15
b.
Ac
14
15
12

[15
a.
Ac
10

[15
a.
1
Ch
28
Ac
1:2

[15
b.
Ac
2:4
10
47

[15
*
bo
wi
to

[15
a.
Ro
10

[15
b.
Ac
10
28

[15
a.
Ma
23
Ga
5:1

[15
a.
Ro
3:4
5:1
2
Co
13
(Ep
2:5
8;
Tit
2:1

[15
*
NU
M
om
Ch

[15
a.
Ac
14
15
4

[15
a.
Ac
12

[15
*
sto
spe

[15
a.
Ac
15
2
Pe
1:1

[15
a.
Am
9:1
12

[15
*
NU
LO
wh
ma
the
thi

[15
*
NU
(co
v.
17
kn
fro
ete
(of
old

[15
a.
Ac
15
21

[15
b.
1
Th
1:9

[15
a.
Ac
21

[15
b.
Ge
35
Ex

20
23
Ez
20
(1
Co
8:1
10
28
Re
2:1

[15
c.
(1
Co
6:9
Ga
5:1
Ep
5:3
Co
3:5
1
Th
4:3
1
Pe
4:3

[15
d.
Ge
9:4
Le
3:1
De

12
1
Sa
14

[15
*

Or
for

[15
a.
Ac
13
27
2
Co
3:1

[15
a.
Ac
1:2

[15
*

NU
M
Ba

[15
a.

Ac
15
Ga
2:4
5:1
Tit
1:1
11

[15
b.
Ga
1:7
5:1

[15
*
NU
om
say
“Y
mu
be
cir
an
kee
the
law

[15
*
pu
or
mi

[15
a.
Ac
13
14
1
Co
15
2
Co
11
26

[15
a.
Ac
15
21
Re
2:1
20

[15
b.
Le
17

[15
c.
1
Co
5:1
6:1
7:2
Co

3:5
1
Th
4:3

[15
*
Or
for

[15
a.
Ac
11
1
Co
12
Ep
4:1
Re
18

[15
b.
Ac
14
18

[15
a.
Ma
5:3
Ac
16

1
Co
16
He
11

[15
*

NU
tho
wh
ha
sen
the

[15
*
NU
M
om
v.
34

[15
a.
Ac
13

[15
a.
Ac
12
25
Co

4:1
2
Tir
4:1
Ph
24

[15
*
res

[15
a.
Ac
13

[15
a.
Ac
4:3
13

[15
a.
Ac
11
14

[15
*
cor

[15

a.

Ac

16

Acts 16

[16

a.

Ac

14

[16

b.

Ac

19

Ro

16

1

Co

4:1

16

Ph

1:1

2:1

1

Th

3:2

2

Tir

1:2

[16

c.

2
Tir
1:5
3:1

[16
a.
(1
Co
9:2
Ga
2:3
5:2

[16
a.
Ac
15
21

[16
b.
Ac
15
29

[16
a.
Ac
2:4
15

[16
a.
Ac
18
Ga
1:1
2

[16
*
Th
Ro
pro
of
Asi

[16
*
NU
ad
of
Jes

[16
a.
Ac
16
20
2
Co
2:1
2
Tim
4:1

[16
a.
Ac
10

[16
a.
2
Co
2:1

[16
a.
Ac
20
Ph
1:1
1
Th
2:2

[16
*
Lit
firs

[16
a.
Re
1:1
2:1
24

[16
b.
Lu
24

[16
a.
Ge
19
33
Ju
19
Lu
24
(H
13

[16
a.
Le
19
20
27
De
18
1
Sa
28
7;
2
Ki
21
1
Ch
10
Is.
8:1

[16
b.
Ac
19

[16
a.
Ma
1:2
34

[16
b.
Ma
16

[16
*
dis

[16
a.
Ac
16
19
26

[16
b.
Ma

10

[16
a.
1
Ki
18
Ac
17

[16
a.
2
Co
6:5
11
25
1
Th
2:2

[16
a.
Ac
4:3

[16
b.
Ac
5:1
12
10

[16
a.
Lu
3:1
Ac
2:3
9:6
22

[16
a.
(Jo
3:1
36
6:4
Ac
13
39
Ro
10
11
1
Jo
5:1

[16
a.
Ma
5:4
Lu
5:2
19

1a>

[16
*

lict
lit.
roc
bec

[16
a.
Ac
22
29

[16
a.
Ma
8:3

[16
a.
Ac
16

Acts
17

[17
a.
Ac
17
13
20
27
Ph
4:1
1
Th

1:1
2
Th
1:1
2
Ti
4:1

[17
a.
Lu
4:1
Ac
9:2
13
14
14
16
19

[17
b.
1
Th
2:1
16

[17
a.
Lu
24
46
Ac
18
28

Ga
3:1

[17
a.
Ac
28

[17
b.
Ac
15
27
32
40

[17
a.
Ac
13

[17
b.
Ac
17
7,
9;
Ro
16

[17
*

NU
om
wh
we
no
pe

[17
*
M
om
be
en

[17
a.
(Ac
16

[17
a.
Lu
23
Jo
19
1
Pe
2:1

[17
*
we

[17
a.
Ac
9:2
17

[17
a.
Is.
34
Lul
16
Jol
5:3

[17
*
Lit
nol

[17
a.
Ma
10

[17
a.
Ac
18

[17
a.

2
Pe
2:8

[17
*
ful
of
ido

[17
a.
1
Co
15

[17
*
NU
M
ad
als

[17
*
Lit
see
pic
an
idl
wh
ma
a
liv

pic
up
scr

[17
*
Lit
Hil
of
Ar
or
Mo
Hil

[17
*
Lit
Hil
of
Ar
or
Mo
Hil

[17
a.
Is.
42
Ac
14

[17
b.
De

10
Ps.
11
Ma
11

[17
c.
1
Kin
8:2
Ac
7:4
50

[17
a.
Ge
2:7
Is.
42
Da
5:2

[17
a.
De
32
Jol
12
Da
4:3

[17

*

NU
om
blo

[17
a.
(Ro
1:2

[17
b.
De
4:7
Ps.
13
10
Jer
23
24
(Ac
14

[17
a.
(Co
1:1
He
1:3

[17
b.
Tit
1:1

[1
a.
Ps.
11
7;
Is.
40
19
Ro
1:

[1
a.
Ac
14
(R
3:

[1
b.
Lu
24
Ac
26
(Ti
2:
12
1
Pe
1:
4:

[1
a.

Ps.
9:8
96
98
Jol
5:2
27
Ac
10
Ro
2:1

[17
b.
Ac
2:2

Acts
18

[18
a.
Ro
16
1
Co
16
2
Tin
4:1

[18
a.
Ac
20
1

Co
4:1
9:1
2
Co
11
12
1
Th
2:9
4:1
2
Th
3:8

[18
a.
Ac
17

[18
a.
Ac
17
15

[18
b.
Ac
18

[18
*
Or

in
his
spi
or
in
the
Spi

[18
a.
Ac
13

[18
b.
Ne
5:1
Ma
10
Ac
13

[18
c.
Lev
20
11
12
2
Sa
1:1
1
Kin
2:3
Ez

18
33
6,
8;
Ma
27
Ac
20

[18
d.
(Ez
3:1
19

[18
e.
Ac
13
48
28

[18
*
NU
Tit
Jus

[18
a.
1
Co
1:1

[18
a.
Ac
23

[18
a.
Je
1:1
19

[18
*
Gr
be

[18
a.
Ac
23
25

[18
a.
1
Co
1:1

[18
*

NU
the
all

[18
a.
Nu
6:2
5,
9,
18
Ac
21

1

[18
b.
Ro
16

[18
*

Lit
ma
day

[18
a.
Ac
19
20

[18

b.
1
Co
4:1
He
6:3
Ja
4:1

[18
*
NU
om
I
mu
by
all
me
kee
this
con
fea
in
Jer

[18
a.
Ac
8:4

[18
*
To
Jer

[18
a.
Ga
1:2

[18
b.
Ac
14
15
41

[18
*
suc

[18
a.
Ac
19
1
Co
1:1
3:4
16
Tit
3:1

[18
a.
Ro
12

[18
b.
(M
3:1
11
Ma
1:7
8;
Lu
3:1
17
7:2
Jo
1:2
33
Ac
19

[18
a.
1
Co
3:6

[18
a.
Ac
9:2
17
18

Acts 19

[19
a.

1
Co
1:1
3:5
6;
Tit
3:1

[19
b.
Ac
18

[19
a.
1
Sa
3:7
Ac
8:1

[19
a.
Lu
7:2
Ac
18

[19
a.
Ma
3:1
Ma
1:4

7,
8;
Lu
3:1
(Jo
1:1
26
27
Ac
13

[19
a.
Ma
28
Ac
8:1
16
10

[19
a.
Ac
6:6
8:1

[19
b.
Ma
16
Ac
2:4
10

[19
a.
Ac
17
18

[19
b.
Ac
1:3
28

[19
a.
2
Tir
1:1
2
Pe
2:2
Ju
10

[19
b.
Ac
9:2
19
22
24

[19
a.
Ac

19
20

[19
a.
Ma
16
Ac
14

[19
a.
2
Ki
4:2
Ac
5:1

[19
a.
Ma
12
Lu
11

[19
b.
Ma
9:3
Lu
9:4

[19
c.
1
Co
1:2
2:2

[19
*
NU
I

[19
*
adj
sol
cor

[19
*
M
and
the
ove
the

[19
*
NU
bot
of
the

[19

a.

Lu

1:6

7:1

Ac

2:4

5:5

11

[19

a.

Ma

3:6

[19

a.

Ac

6:7

12

[19

a.

Ro

15

Ga

2:1

[19

b.

Ac

20

2

Co

1:1

[19
c.
Ac
20
1
Co
16

[19
d.
Ac
18
23
Ro
1:1
15
29

[19
a.
1
Ti
1:2

[19
b.
Ro
16
2
Ti
4:2

[19
a.
2
Co
1:8

[19
b.
Ac
9:2

[19
a.
Ac
16
19

[19
*
Gr
Ar

[19
a.
De
4:2
Ps.
11
Is.
44
20
Je

10
Ac
17
1
Co
8:4
10
Re
9:2

[19
*

NU
she
be
dep
fro
her
ma

[19
a.
Ac
20
Ro
16
1
Co
1:1
3
Jol
1

[19
b.

Ac
20
12
Co
4:1
Ph
24

[19
*

As
rul
of
As
the
pro

[19
a.
1
Tin
1:2
2
Tin
4:1

[19
b.
Ac
12

[19
*

Gr

Ar

[19
*
hea

[19
*
NU
ou

[19
*
Lit
ma

[19
*
Or
cha
wit
reb
con
tod

Acts
20

[20
a.
1
Co
16

1
Ti
1:

[2
a.
Ac
17
18

[2
a.
Ac
9:
23
25
2
Co
11

[2
a.
Ac
19
Co
4:

[2
b.
Ac
19

[20
c.
Ac
16

[20
d.
Ep
6:2
Co
4:7
2
Ti
4:1
Tit
3:1

[20
e.
Ac
21
2
Ti
4:2

[20
a.
2
Co
2:1
2
Ti
4:1

[20
a.
Ex
12
15

[20
b.
Ac
16
2
Co
2:1
2
Tin
4:1

[20
a.
1
Co
16
Re
1:1

[20
b.
Ac
2:4
46
20
1
Co
10

[20
a.
Ac
1:1

[20
*
NU
M
we

[20
a.
1
Kin
17
2
Kin
4:3

[20
b.
Ma
9:2
24
Ma
5:3

[20
*
arr
it

[20
a.
Ac
18
19
21

[20
b.
Ac
24

[20
c.
Ac
2:1
1
Co
16

[20
a.
Ac
18
19
10
20
16

[20
a.
Ac
20

[20
a.
Ac
20

[20
a.
Ac
18
19

[20
b.
Ma
1:1

[20
a.
Ac
19

[20
a.
Ac
21
11

[20
a.
Ac

21

[20
b.
Ac
13
2
Ti
4:7

[20
c.
Ac
1:1

[20
d.
Ga
1:1

[20
*
NU
Bu
I
do
no
cou
my
life
of
any
val
or

dec
to
my

[20
*
cou

[20
a.
Act
18
2
Co
7:2

[20
*
Lit
cle

[20
a.
Lul
7:3
Jol
15
Ep
1:1

[20
*

av
de

[2
a.
Lu
12
Jo
21
17
Ac
20
(1
Ti
4:1
1
Pe
5:2

[2
b.
1
Co
12

[2
c.
Ep
1:7
14
Co
1:1
Ti
2:1
He

9:1
(1
Pe
1:1
Re
5:9

[2
d.
He
9:1

[2
*
M
of
the
Lo
an
Go

[2
a.
Ez
22
Ma
7:1

[2
a.
1
Ti
1:2
2

Tin
1:1

[20
*
mis

[20
a.
Ac
19
10,
24

[20
a.
He
13

[20
b.
Ac
9:3

[20
c.
Ac
26
Ep
1:1
18,
5:5

Co
1:1
3:2
(H
9:1
1
Pe
1:

[2
a.
Ac
18
1
Co
4:1
1
Th
2:
2
Th
3:

[2
*
NU
M
om
Ye

[2
a.
Ro
15
1

Co
9:1
2
Co
11
12
Ep
4:2
1
Th
4:1
2
Th
3:8

[20
a.
Ac
21

[20
b.
Ge
45

[20
*
Lit
mu

Acts
21

[21
a.

(Ac
20
21

[21
*
NU
the
dis

[21
a.
Lu
22
Ac
9:4
20

[21
a.
Jo
1:1

[21
a.
Ac
8:4
21

[21
b.
Ac

8:5
26
40
Ep
4:1
2
Ti
4:5

[2
c.
Ac
6:5

[2
*
NU
om
wh
we
Pa
co

[2
a.
Jo
2:2
Ac
2:1

[2
a.
Ac
11

[21
a.
Ac
20
21
22

[21
a.
Ac
20
37

[21
a.
Ma
6:1
26
Lu
11
22

[21
*
ma
pre

[21
a.
Ac
15

[21
a.
Ac
15
Ga
1:1
2:9

[21
a.
Ac
15
12
Ro
15
19

[21
b.
Ac
1:1
20
1
Ti
2:7

[21
a.
Ac
15
22
(R
10
Ga

1:1

[21
*
NU
Wh
the
is
to
be
don
The
wil
cer
hea

[21
a.
Nu
6:2
13,
18,
Ac
18

[21
a.
Ac
15
20,
29

[21
*

NU
om
tha
the
sho
obs
no
suc
thi
exc

[21
*
for

[21
a.
Jol
11
Ac
21
24

[21
b.
Nu
6:1
Ac
24

[21
*
cor

[21

a.

Ac

20

24

[21

b.

Ac

26

[21

a.

(M

24

Ac

6:1

24

[21

a.

Ac

20

[21

*

M

om

pre

[21
a.
2
Ki
11
Ac
16
26

[21
a.
2
Co
11

[21
*
co

[21
a.
Ac
23
24

[21
a.
Ac
24

[21
b.

Ac
20
21
Ep
6:2
2
Ti
1:1
2:9

[21
a.
Lu
23
Jo
19
Ac
22

[21
a.
Ac
5:3

[21
a.
Ac
9:1
22
2
Co
11
Ph
3:4
6

[21
*
ins

[21
a.
Ac
12

[21
b.
Jol
5:2
Ac
22

Acts
22

[22
a.
Ac
7:2

[22
a.
Ac
21

[22
a.

Ac
21
2
Co
11

[22
b.
De
33

[22
c.
Ac
5:3

[22
d.
Ac
23
26
Ph
3:6

[22
e.
Ac
21
Ga
1:1

[22

f.
(Ro
10

[22
a.
Ac
8:3
26
11
Ph
3:6
1
Tin
1:1

[22
a.
Ac
23
24
25

[22
b.
Lul
22
Ac
4:5
1
Tin
4:1

[22

c.
Ac
9:2

[22
a.
Ac
9:3
26
13

[22
a.
Da
10
Ac
9:7

[22
*
NU
om
an
we
afr

[22
a.
Ac
9:1

[22

b.
Ac
10

[22
c.
1
Tir
3:7

[22
a.
Ac
3:1
5:3

[22
b.
Ac
9:1
26
Ga
1:1

[22
c.
Ac
3:1
7:5

[22
d.

Ac
9:1
26
1
Co
9:1
15

[22
e.
1
Co
11
Ga
1:1

[22
a.
Ac
23

[22
b.
Ac
4:2
26

[22
a.
Ac
2:3
1
Co
6:1
(Ep
5:2

He
10

[22
b.
Ac
9:1
Ro
10

[22
a.
Ac
9:2
26
2
Co
12

[22
a.
Ac
22

[22
b.
Ma
10

[22
a.
Ac

8:3
22

[22
b.
Ma
10
Ac
26

[22
a.
Ac
7:5
—
8:1

[22
b.
Lu
11

[22
*
NU
om
to
his
de

[22
a.

Ac
9:1
Ro
1:5
11
Ga
2:7
8;
Ep
3:7
8;
1
Ti
2:7
2
Ti
1:1

[22
a.
Ac
21
1
Th
2:1

[22
b.
Ac
25

[22
*
Lit
thr

[22
a.
Ac
16

Acts
23

[23
a.
Ac
24
1
Co
4:4
2
Co
1:1
4:2
2
Tir
1:3
He
13

[23
a.
1
Kir
22
Jer
20
Jol
18

[23
a.
Lev
19
De
25
2;
Jol
7:5

[23
a.
Lev
5:1
18

[23
b.
Ex
22
Ecc
10
2
Pet
2:1

[23
a.
Ac
26
Ph
3:5

[23

b.
Ac
24
21
26
28

[23
a.
Ma
22
Ma
12
Lu
20

[23
a.
Ac
25
26

[23
b.
Jo
12
Ac
22
7,
17
18

[23
c.

Ac
5:3

[23
*
NU
wh
if
a
spi
or
an
ang
has
spo
to
hin
om
the
las
cla

[23
a.
Ac
18
27
24

[23
b.
Ac
21
19
22

21

[23
c.
Ac
28
17,
23

[23
*
Tal
cou

[23
a.
Ac
23
30,
25

[23
b.
Ac
9:2
24,
25
26
27
1
Th
2:1

[23
a.
Ac
4:5
23
6:1
22
24
25

[23
*

NU
om
ton

[23
a.
Ac
23

A

24

A
25

26

A
27

A
28

Your Response	Definition of Gift
	The ability to impart godly wisdom, rooted in God’s Word
	The gift of special knowledge that empowers us for warfare and ministry
	Special faith to trust God for what others may

believe
to
be
impossible
The
power
to
heal
the
sick
The
power
to
perform
miracles
that
point
others
to
Jesus
The
ability
to
speak
God’s
Word
prophetically
to
encourage,
build
up,
exhort,
and
caution
The
ability
to
understand
how
and
in

what
manifestation
Satan
is
working
Unknown
languages,
which
the
Spirit
prays
through
us
The
gift
of
interpreting
unknown
tongues

2
[a]th
fru
of
the
Spi
is
[b]lo
joy
pea
lon
kin
[c]go
[d]fa
23[*]
sel
con
[a]Ag
suc
the
is
no
law
24A
tho
wh
are
Ch
[a]ha
cru
the
fle
wi
its
pa
an
de
25[a]
we

liv
in
the
Spi
let
us
als
wa
in
the
Spi
26a
us
no
bec
cor
pro
on
an
env
on
an

6

and
Sho
the
Bu

1
if
a
ma
is
[*]ov
in
any
tre
you
wh
are
spi
res
suc
a
one
in
a
spi
of
[a]ge
con
you
les
you
als
be
ter
2[a]B
one
anc
bur
anc
so
ful
[b]th

la
of
Ch
[3]Fo
[a]if
an
thi
hi
to
be
so
wh
[b]he
is
no
he
de
hi
[4]Bu
[a]le
ea
on
ex
his
ow
wo
an
the
he
wi
ha
rej
in
hi
alo
an
[b]no
in
an
[5]Fo
[a]ea

one
sha
bea
his
ow
loa

I
Ge
an
Do
Go

6
hir
wh
is
tau
the
wo
sha
in
all
goo
thi
wi
hir
wh
tea

7
no
be
dec
Go
is
no
mo
for
[a]wh
a
ma
sov
tha

he
wi
als
rea
[8]Fo
he
wh
sow
to
his
fle
wi
of
the
fle
rea
cor
bu
he
wh
sow
to
the
Spi
wi
of
the
Spi
rea
[a]ev
life
[9]An
[a]le
us
no
gro
we
wh
do
goo
for

in
du
sea
we
sha
rea
[b]if
we
do
no
los
hea
10[a]
as
we
hav
op
[b]le
us
do
goo
to
all,
[c]es
to
tho
wh
are
of
the
ho
of
fai

On
in
the
Cr

wi
wh

lar
let
I
hav
wr
to
you
wit
my
ow
han
12 A
ma
as
des
to
ma
a
goo
sho
in
the
fle
the
wo
con
you
to
be
cir
[a]on
tha
the
ma
no
suf
per
for
the
cro
of

Ch
[13]F
not
eve
tho
wh
are
cir
kee
the
law
but
the
des
to
hav
you
cir
tha
the
ma
boa
in
you
fle
[14]B
Go
for
tha
I
sho
boa
exc
in
the
[a]cr
of
our
Lor
Jes
Ch

by
[*]wh
the
wo
has
bee
cru
to
me
and
[b]I
to
the
wo
15F
[a]in
Ch
Jes
nei
cir
no
und
ava
any
bu
a
nev
cre

I
and
a
Ple

1
as
ma
as
wa
acc
to
thi
rul

pea
an
me
be
up
the
an
up
the
Isr
of
Go
1
no
on
let
no
on
tro
me
for
I
bea
in
my
bo
the
ma
of
the
Lo
Jes
1
the
gra
of
ou
Lo
Jes
Ch
be

wi
yo
spi
Am

C

1

2

3

4

5

6

1

an
ap
of
Jes

Ch
by
the
wi
of
Go

T
the
sai
wh
are
in
Ep
an
fai
in
Ch
Jes

2
to
you
an
pea
fro
Go
ou
Fat
an
the
Lo
Jes
Ch

I
in
Ch

3
be
the
Go
an
Fat

of
ou
Lo
Jes
Ch
wh
has
ble
us
wi
eve
spi
ble
in
the
hea
pla
in
Ch
[4]ju
as
[a]H
ch
us
in
Hi
[b]be
the
fou
of
the
wo
tha
we
sho
[c]be
ho
an
wi
bla
be

Hi
in
lov
5[a]h
pre
us
to
[b]ac
as
so
by
Jes
Ch
to
Hi
[c]ac
to
the
goo
ple
of
His
wi
6to
the
pra
of
the
glo
of
His
gra
[a]by
wh
He
*m
us
acc
in
[b]th
Bel

7
Hi
we
ha
rec
thr
His
blo
the
for
of
sin
acc
to
[b]th
ric
of
His
gra
8 W
He
ma
to

abo
tow
us
in
all
wis
and
[*]pr
9[a]h
ma
kno
to
us
the
my
of
His
wil
acc
to
His
goo
ple
[b]w
He
pur
in
Hir
10th
in
the
dis
of
[a]th
ful
of
the
tim
[b]H
mi
gat

tog
in
one
[c]al
thi
in
Ch
*bo
wh
are
in
hea
and
wh
are
on
ear
—
in
Hi
11 [a]
Hi
als
we
hav
ob
an
inh
bei
pre
acc
to
[b]th
pu
of
Hi
wh
wo
all
thi
acc

to
the
cou
of
His
wi
[12][a]
we
[b]w
firs
tru
in
Ch
sho
be
to
the
pra
of
His
glo
1
Hi
you
als
tru
aft
you
hea
[a]th
wo
of
tru
the
gos
of
you
sal
in
wh
als

hav
bel
[b]yo
we
sea
wit
the
Ho
Spi
of
pro
14[a]
is
the
[*]gu
of
our
inh
[b]un
the
red
of
[c]th
pur
pos
[d]to
the
pra
of
His
glo

I
for
Spi
Wi

1
I
als
[a]af
I
hea

of you fai in the Lor Jes and you lov for all the sai 16[a] not cea to giv tha for you ma me of you in my pra 17t [a]th Go of our Lor Jes Ch the Fat of glo

[b]m
giv
to
you
the
spi
of
wis
and
rev
in
the
kno
of
Hin
18[a]
eye
of
you
*un
bei
enl
tha
you
ma
kno
wh
is
[b]th
ho
of
His
cal
wh
are
the
ric
of
the
glo
of

His
inh
in
the
sai
19a
wh
is
the
exc
gre
of
His
pov
tow
us
wh
bel
[a]ac
to
the
wo
of
His
mi
pov
20W
He
wo
in
Ch
wh
[a]He
rai
Hin
fro
the
dea
anc
[b]se
Hin

at
His
rig
han
in
the
hea
pla
21[a]
abo
all
[b]pr
and
*po
and
*m
and
do
and
eve
na
tha
is
na
no
onl
in
thi
age
bu
als
in
tha
wh
is
to
co

2
[a]H
pu
all
thi
un
His
fee
an
ga
Hi
[b]*to*
be
hea
ov
all
thi
to
the
chu
23[a]
is
His

boo
[b]th
ful
of
Hi
[c]w
fill
all
in
all

2

Gr
Th
Fa

[a]yo
He
ma
ali
[b]w
we
de
in
tre
an
sin
2[a]i
wh
you
on
wa
acc
to
the
*co
of
thi
wo

acc to [b]th pri of the po of the air the spi wh no wo in [c]th son of dis 3[a]a wh als we all one co ou in [b]th lus of ou fles ful the des of the fles an

of
the
mi
and
[c]we
by
nat
chi
of
wr
jus
as
the
oth

4
Go
[a]w
is
ric
in
me
bec
of
His
[b]gr
lov
wi
wh
He
lov
us,
5[a]e
wh
we
we
dea
in
tre
[b]m
us
ali

tog
wi
Ch
(by
gra
yo
ha
bee
sav
6an
rai
us
up
tog
an
ma
us
sit
tog
[a]in
the
hea
pla
in
Ch
Jes
7th
in
the
age
to
co
He
mi
sho
the
exc
ric
of
His
gra

in
[a]*Hi*
kin
tow
us
in
Ch
Jes
8 [a]F
by
gra
yo
hav
bee
sav
[b]th
fai
an
tha
no
of
yo
[c]*it*
is
the
gif
of
Go
9 no
of
[a]w
les
any
sho
[b]bo
10 F
we
are
[a]Hi
wo
cre

in
Ch
Jes
for
goo
wo
wh
Go
pre
bef
tha
we
sho
wa
in
the

I
Ne
by
His
Blo

1
rem
tha
you
one
Ge
in
the
fle
—
wh
are
cal
Un
by
wh
is
cal
[a]th
Cir
ma
in
the
fle
by
han
—
12t
at
tha
tim
you
we
wit
Ch
bei
ali
fro
the
con
of

I1s
and
stra
fro
the
cov
of
pro
hav
no
hoj
and
wit
Go
in
the
wo
[13]B
nov
in
Ch
Jes
you
wh
one
we
far
off
hav
bee
bro
nea
by
the
blo
of
Ch

C
Ou
Pe

1

He Hir is our pea wh has ma bot one anc has bro dov the mi wa of sep 15h abo in His fles the enr *tha is,* the law of cor *com* in ord so as to cre in Hir

one
[a]ne
ma
fro
the
two
thu
ma
pea
[16]a
tha
He
mi
[a]re
the
bot
to
Go
in
one
bod
thr
the
cro
the
[b]pu
to
dea
the
enr
[17]A
He
car
and
pre
pea
to
you
wh
we
afa

off
and
to
tho
wh
we
nea
18F
[a]th
Hi
we
bo
hav
acc
[b]by
one
Spi
to
the
Fat

O
Ou
Co

1
the
you
are
no
lon
str
and
for
bu
fel
cit
wi
the
sai
and
me
of

the
ho
of
Go
20h
bee
[a]bu
[b]on
the
fou
of
the
[c]ap
anc
pro
Jes
Ch
Hir
bei
[d]th
chi
cor
21in
wh
the
wh
bui
bei
fitt
tog
gro
int
[a]a
hol
ten
in
the
Lor
22[a]
wh
you

als
are
bei
bui
tog
for
a
[b]dw
pla
of
Go
in
the
Spi

I
3

T
My
Re

[1]
thi
rea
I,
Pa
the
pri
of
Ch
Jes
for
you
Ge
—
[2]if
ind
you
hav
hea
of
the

*di of the gra of Go [a]wl wa giv to me for yo 3[a]h tha by rev [b]H ma kn to me the my (as I hav bri wr alr 4by wh wh yo rea yo ma un my kn in

the
my
of
Ch
5w
in
oth
age
wa
no
ma
kn
to
the
so
of
me
as
it
has
no
bee
rev
by
the
Spi
to
His
hol
ap
an
pro
6th
the
Ge
[a]sh
be
fel
hei
of
the

sar boo anc par of His pro in Ch thr the gos 7[a]o wh I bee a mi [b]ac to the gif of the gra of Go giv to me by [c]th eff wo of His pow

I of the My

8
me
[a]wh
am
les
tha
the
lea
of
all
the
sai
thi
gra
wa
giv
tha
I
sho
pre
am
the
Ge
[b]th
un
ric
of
Ch
9ar
to
ma
all
see
wh
is
the
[*]fe
of
the
my
wh

fro
the
beg
of
the
age
has
bee
hid
in
Go
wh
[a]cr
all
thi
[*]th
Jes
Ch
10[a]
the
int
tha
no
[b]th
[*]m
wis
of
Go
mi
be
ma
kn
by
the
chu
[c]to
the
[*]pr
an
po
in

the
hea
pla
[11][a]
to
the
ete
pu
wh
He
acc
in
Ch
Jes
ou
Lo
[12]i
wh
we
hav
bol
and
acc
[a]w
co
thr
fai
in
Hi
[13][a]
I
ask
tha
you
do
no
los
hea
at
my
tri

for
you
[b]w
is
you
glo

A
of
the
My

1
thi
rea
I
bov
my
kno
to
the
[a]Fa
*of
our
Lor
Jes
Ch
15fi
wh
the
wh
fan
in
hea
and
ear
is
nar
16t
He
wo
gra
you

[a]ac to the ric of His glo [b]to be str wit mi thr His Spi in [c]th inn ma 17[a] Ch ma dw in you hea thr fai tha you [b]be roo an gro in lov 18[a] be abl to con

wi
all
the
sai
[b]w
is
the
wi
an
len
an
de
an
hei
—
19t
kn
the
lov
of
Ch
wh
pa
kn
tha
yo
ma
be
fill
[a]w
all
the
ful
of
Go

2
[a]to
Hi
wh
is
abl
to
do
exc
abu
[b]ab
all
tha
we
ask
or
thi
[c]ac
to
the
po
tha
wo
in
us,
21[a]
Hi
be
glo
in

the
chu
by
Ch
Jes
to
all
ger
for
anc
eve
Am

My addictions

•

My hidden sins

My habits

•

My motives

•

My attitudes

My
inn
tho

•

My
em

•M
pre

4

in
Un

1
the
the
pri
*of
the
Lo
*be
you
to
[a]w
wo
of
the
cal
wi
wh
you
we
cal
2w
all
lov
an
ger
wi

lon
bea
wit
on
an
in
lov
3er
to
kee
the
un
of
the
Spi
[a]in
the
bo
of
pea
4[a]*T*
is
on
bo
an
on
Spi
jus
as
yo
we
cal
in
on
ho
of
yo
cal
5[a]o
Lo
[b]o

fai
[c]or
bap
6[a]o
Go
anc
Fat
of
all,
wh
is
abo
all,
anc
[b]th
all,
anc
in
*yo
all.

S
Gif

7
[a]to
eac
one
of
us
gra
wa
giv
acc
to
the
me
of
Ch
gif
8Th
He
say

[9]
thi
“H
asc
wh
do
it
me
bu
tha
He
als
*fir
des
int
the
low
pa
of
the
ea
[10]H
wh
des

is
als
the
On
[a]w
asc
far
abo
all
the
hea
[b]th
He
mi
fill
all
thi
1
He
Hi
gav
son
to
be
apo
son
pro
son
eva
and
son
pas
and
tea
12fo
the
equ
of
the
sai
for

the
wo
of
mi
[a]fo
the
[*]ed
of
[b]th
boo
of
Ch
13t
we
all
co
to
the
un
of
the
fai
[a]a
of
the
kno
of
the
So
of
Go
to
[b]a
pe
ma
to
the
me
of
the
sta

of
the
ful
of
Ch
14t
we
sho
no
lon
be
[a]ch
tos
to
an
fro
an
car
abo
wi
eve
wi
of
doo
by
the
trie
of
me
in
the
cu
cra
of
[b]de
plo
15b
spe
the
tru
in

lov
ma
gro
up
in
all
thi
int
Hi
wh
is
the
[a]he
—
Ch
—
16[a]
wh
the
wh
boo
joi
and
kn
tog
by
wh
eve
joi
sup
acc
to
the
eff
wo
by
wh
eve
pa
doe
its

sha
cau
gro
of
the
boo
for
the
edi
of
its
in
lov

T
Ne
Mo

1
I
say
the
and
tes
in
the
Lor
tha
you
sho
[a]no
lon
wa
as
*th
res
of
the
Ge
wa
in
the
fut

of
the
mi
18h
the
un
dar
bei
ali
fro
the
life
of
Go
bec
of
the
ign
tha
is
in
the
bec
of
the
[a]bl
of
the
hea
19[a]
bei
pas
fee
[b]ha
giv
the
ove
to
lew
to
wo

all
un
wi
gre
2
yo
ha
no
so
lea
Ch
[21]i
ind
yo
ha
hea
Hi
an
ha
be
tau
by
Hi
as
the
tru
is
in
Jes
[22]t
yo
[a]pu
off
co
yo
for
co
the
old
ma
wh

gro
cor
acc
to
the
dec
lus
[23]a
[a]be
ren
in
the
spi
of
you
mi
[24]a
tha
you
[a]pu
on
the
nev
ma
wh
wa
cre
acc
to
Go
in
tru
rig
and
hol

No
Gr
the
Spi

2

pu
aw
lyi
[a]“*L*
eac
one
of
you
spe
tru
wit
his
nei
for
[b]w
are
me
of
one
an
26[a]
ang
an
do
no
sin
do
no
let
the
su
go
do
on
yo
wr
27[a]
giv
*pl
to
the

dev
[28]L
hir
wh
sto
ste
no
lon
bu
rat
[a]le
hir
lab
wo
wi
his
ha
wh
is
go
tha
he
ma
hav
son
[b]to
giv
hir
wh
has
nee
[29][a]
no
con
wo
pro
ou
of
you
mo
bu

[b]w
is
goo
for
nee
[*]ed
[c]th
it
ma
im
gra
to
the
hea
30A
[a]do
no
gri
the
Ho
Spi
of
Go
by
wh
you
we
sea
for
the
day
of
rec
31[a]
all
bit
wr
ang
[*]cla
and
[b]ev

spe
be
pu
aw
fro
yo
[c]w
all
ma
32A
[a]be
kin
to
on
an
ter
[b]fo
on
an
eve
as
Go
in
Ch
for
yo

5

in
Lo

[a]
be
im
of
Go
as
de
[b]ch

2An
[a]wa
in
lov
[b]as
Ch
als
has
lov
us
and
giv
Hin
for
us,
an
off
and
a
sac
to
Go
[c]fo
a
sw
sm
aro
3
for
and
all
[a]un
or
[b]co
let
it
not
eve
be
nar
am

you
as
is
fitt
for
sai
4[a]n
filt
no
[b]fo
tal
no
coa
jes
[c]wh
are
no
fitt
bu
rat
[d]gi
of
tha
5Fo
[*]th
you
kn
tha
no
for
un
pe
no
cov
ma
wh
is
an
ido
has
any

[a]in
in
the
kin
of
Ch
and
Go
6Le
no
one
dec
you
wit
em
wo
for
bec
of
the
thi
the
wr
of
Go
co
up
the
so
of
dis
7Th
do
no
be
[a]pa
wit
the

W
in
Lig

[8]
yo
we
on
da
bu
no
yo
are
[a]lig
in
the
Lo
Wa
as
chi
of
lig
[9](f
[a]th
fru
of
the
*Sp
is
in
all
goo
rig
an
tru
[10][a]
ou
wh
is
acc
to
the
Lo
[11]*A*
hav

[a]nc fel wi the un wo of dar bu rat [*]ex *the*

12[a] it is sha eve to spe of tho thi wh are do by the in sec

13B [a]al thi tha are [*]ex are ma ma by the lig

for
wh
ma
ma
is
lig
14T
He
say

W
in
Wi

1
the
tha
yo
wa
*ci
no
as
foo
bu
as

wis
16[a]
the
tim
[b]be
the
day
are
evi
1
do
no
be
un
bu
[b]un
[c]w
the
wi
of
the
Lo
is.
18*A*
[a]do
no
be
dru
wi
wi
in
wh
is
dis
bu
be
fill
wi
the
Spi
19S

to
one
anc
[a]in
psa
anc
hy
anc
spi
sor
sin
anc
ma
[b]m
in
you
hea
to
the
Lor
20[a]
tha
alw
for
all
thi
to
Go
the
Fat
[b]in
the
nar
of
oui
Lor
Jes
Ch
21[a]
to
one

an
in
the
fea
of
[*]G

I

—

Ch
an
the
Ch

2
[a]su
to
you
ow
hu
as
to
the
Lo
23F
[a]th
hu
is
hea
of
the
wi
as
als
[b]C
is
hea
of
the
chu
an
He
is

the
Sav
of
the
boo
[24]T
jus
as1
the
chu
is
sub
to
Ch
so
let
the
wiv
be
to
the
ow
hu
[a]in
eve
2
lov
you
wiv
jus
as
Ch
als
lov
the
chu
and
[b]ga
Hin
for
her

[26]t
He
mi
[*]sa
an
cle
he
[a]w
the
wa
of
wa
[b]by
the
wo
[27][a]
He
mi
pre
he
to
Hi
a
glo
chu
[b]no
hav
spo
or
wr
or
any
suc
thi
bu
tha
she
sho
be
hol
an

wit
ble
[28]S
hu
oug
to
lov
the
ow
wiv
as
the
ow
boo
he
wh
lov
his
wi
lov
hir
[29]F
no
one
eve
hat
his
ow
fle
bu
no
and
che
it,
jus
as
the
Lo
doe
the
chu

[30]F
[a]w
are
me
of
His
bo
[*]of
His
fle
an
of
His
bo
[31][a]
thi
rea
a
ma
sha
lea
his
fat
an
mo
an
be
joi
to
his
wi
an
the
[b]tw
sha
be
on
fle
[32]T
is
a

gre
my
bu
I
spe
co
Ch
an
the
chu
[33]N
[a]le
eac
one
of
you
in
pa
so
lov
his
ow
wi
as
hi
an
let
the
wi
see
tha
she
[b]re
her
hu

6

an
Pa

[a]ob
yo
pa
in

the
Lor
for
thi
is
rig
[2][a]“
you
fat
anc
mo
wh
is
the
firs
cor
wit
pro
[3]“t
it
ma
be
we
wit
you
anc
you
ma
live
lon
on
the
ear

4
[a]yo
fat
do
not
pro
you
chi

to
wr
bu
[b]br
the
up
in
the
tra
and
adr
of
the
Lor

I
and
Mc

5
be
obe
to
tho
wh
are
you
ma
acc
to
the
fle
[b]w
fea
and
tre
[c]in
sin
of
hea
as
to
Ch

6[a]n
wi
ey
as
me
ple
bu
as
bo
of
Ch
do
th
wi
of
Go
fro
th
hea
7w
go
do
se
as
to
th
Lo
an
no
to
me
8[a]k
tha
wh
go
an
do
he
wi
rec
th

sar
fro
the
Lor
wh
he
is
a
sla
or
fre

9
you
ma
do
the
sar
thi
to
the
giv
up
thr
kno
tha
*yo
ow
[a]M
als
is
in
hea
and
[b]th
is
no
par
wit
Hir

*T
Wh*

Ar
of
Go

1
my
bre
be
str
in
the
Lor
an
in
the
po
of
His
mi
11a
on
the
wh
arr
of
Go
tha
you
ma
be
abl
to
sta
aga
the
*wi
of
the
dev
12F
we
do

no
wr
aga
fle
an
blo
bu
aga
[a]pr
aga
po
aga
[b]th
rul
of
*th
da
of
thi
age
aga
spi
ho
of
wi
in
the
hea
pla
13[a]
tak
up
the
wh
ar
of
Go
tha
yo
ma
be

abl
to
wi
[b]in
the
evi
day
and
hav
do
all
to
sta

1
the
[a]ha
gir
you
wa
wi
tru
[b]ha
pu
on
the
bre
of
rig
15[a]
hav
sho
you
fee
wi
the
pre
of
the
gos
of
pea

[16]a
all,
tak
[a]th
shi
of
fai
wi
wh
yo
wi
be
abl
to
qu
all
the
fie
da
of
the
wi
on
[17]A
[a]ta
the
hel
of
sal
an
[b]th
sw
of
the
Spi
wh
is
the
wo
of
Go

18[a]
alw
wi
all
pra
an
su
in
the
Sp
[b]be
wa
to
thi
en
wi
all
pe
an
[c]su
fo
all
the
sai
—
19a
fo
me
tha
utt
ma
be
giv
to
me
[a]th
I
ma
op
my
mo

bol
to
ma
kno
the
my
of
the
gos
20fo
wh
[a]I
am
an
am
in
cha
tha
in
it
I
ma
spe
bol
as
I
oug
to
spe

A
Gr
Gr
2
tha
you
als
ma
kn
my
aff
an
ho
I
am
do
[a]Ty
a
bel
bro
an
[b]fa
mi
in
the
Lo
wi
ma
all
thi
kn
to

yo
22[a]
I
hav
ser
to
yo
for
thi
ver
pu
tha
yo
ma
kn
ou
aff
an
tha
he
ma
[b]co
yo
hea
2
to
the
bre
an
lov
wi
fai
fro
Go
the
Fat
an
the
Lo
Jes
Ch

[24]C
be
wi
all
tho
wh
lov
our
Lor
Jes
Ch
in
sin
Am

1

2

4

5

6

1

an
Ti
bo
of
Je
Ch

all
th
sa
in
Ch
Je
wh
a1
in
Ph
wi
th
*bi
an
[a]de

to

you
and
pea
fro
Go
our
Fat
and
the
Lor
Jes
Ch

T
and
Pro

3
tha
my
Go
upo
eve
rer
of
you
[4]al
in
[a]ev
pra
of
mi
ma
req
for
you
all
wit
joy
[5][a]f
you
fell
in

the
gos
fro
the
firs
day
unt
now
[6]be
con
of
thi
ver
thi
tha
He
wh
has
beg
[a]a
goo
wo
in
you
wil
con
it
unt
the
day
of
Jes
Ch
[7]ju
as
it
is
rig
for
me
to

thi
thi
of
yo
all,
bec
I
ha
yo
in
my
hea
ina
as
bo
in
my
cha
an
in
the
de
an
co
of
the
gos
yo
all
are
pa
wi
me
of
gra
[8]Fo
Go
is
my
wi
ho

gre
I
lon
for
you
all
wit
the
aff
of
Jes
Ch

[9]
thi
I
pra
tha
you
lov
ma
abo
stil
mo
and
mo
in
kno
and
all
dis
[10]t
you
ma
app
the
thi
tha
are
exc
tha
you

ma
be
sin
and
wi
off
till
the
day
of
Ch
11b
fill
wi
the
fru
of
rig
[a]wi
are
by
Jes
Ch
[b]to
the
glo
and
pra
of
Go

C
Is
Pre

1
I
wa
you
to
kn
bre
tha
the
thi
wh
hap
to
me
hav
act
tur
ou
for
the
fur
of
the
gos
13s
tha
it
has
bee
evi

[a]to
the
wh
[*]pa
gua
an
to
all
the
res
tha
my
cha
are
in
Ch
14a
mo
of
the
bre
in
the
Lor
hav
bee
co
by
my
cha
are
mu
mo
bol
to
spe
the
wo
wit
fea
1

ind
pre
Ch
eve
fro
env
and
stri
and
son
als
fro
goo
16*
for
pre
Ch
fro
sel
am
not
sin
sup
to
add
aff
to
my
cha
17b
the
lat
out
of
low
kno
tha
I
am
app
for

the
def
of
the
gos
18W
the
On
tha
in
eve
wa
wh
in
pre
or
in
tru
Ch
is
pre
anc
in
thi
I
rej
yes
anc
wi
rej

T
Liv
Is
Ch

1
I
kn
tha
[a]th
wi
tur

ou
for
my
del
thr
you
pra
and
the
sup
of
the
Spi
of
Jes
Ch
[20]a
to
my
ear
exp
and
ho
tha
in
no
I
sha
be
ash
bu
[a]wi
all
bo
as
alw
so
no
als
Ch
wi

be ma in my boo wh by life [b]on by dea [21]F to me to live *is* Ch and to die *is* gai [22]B if *I* live on in the fle thi *wil* *me* fru fro *my* lab yet wh I

sha
che
I
*ca
tel
23*
I
am
har
pre
bet
the
two
hav
a
[a]de
to
dep
and
be
wit
Ch
wh
is
[b]fa
bet
24N
to
ren
in
the
fle
is
mo
nee
for
you
25A
bei
con
of

thi
I
kn
tha
I
sha
rer
anc
cor
wit
you
all
for
you
pro
anc
joy
of
fai
26 tl
[a]yo
rej
for
me
ma
be
mo
abu
in
Jes
Ch
by
my
cor
to
you
aga

S
anc
Suj
for

Ch
2
[a]le
yo
co
be
wo
of
the
gos
of
Ch
so
tha
wh
I
co
an
see
yo
or
am
abs
I
ma
hea
of
yo
aff
tha
yo
sta
fas
in
on
spi
[b]w
on
mi
[c]str
tog

for the fai of the gos [28]a no in any wa ter by you adv wh is to the a pro of per bu [*]to you of sal anc tha fro Go [29]F to you [a]it has bee gra on bel

of
Ch
[b]no
onl
to
bel
in
Hi
bu
als
to
[c]su
for
His
sak
30[a]
the
sa
co
[b]w
you
sav
in
me
an
no
hea
is
in
me

2

Thi
Hu

if
the
is
any

*co
in
Ch
if
an
co
of
lo
if
an
fel
of
the
Sp
if
an
[a]af
an
me
2[a]f
my
joy
[b]by
be
lik
mi
ha
the
sa
lo
be
of
[c]o
ac
of
on
mi
3[a]*L*
no
be
do

thr
sel
am
or
cor
bu
[b]in
low
of
mi
let
eac
est
oth
bet
tha
hin
4[a]L
eac
of
you
loo
ou
no
onl
for
his
ow
int
bu
als
for
the
int
of
[b]ot

T
Hu
and
Exc
Ch

5
thi
mi
be
in
yo
wh
wa
als
in
Ch
Jes
6W
[a]be
in
the
for
of
Go
di
no
co
it
*ro
to
be
equ
wi
Go
7[a]b
*m
Hi
of
no
rep
tak
the
for
[b]of
a
bo

an
[c]co
in
the
lik
of
me
8 Ar
bei
fou
in
app
as
a
ma
He
hu
Hi
an
[a]be
[b]ob
to
the
poi
of
dea
eve
the
dea
of
the
cro
9 [a]T
Go
als
[b]ha
hig
exa
Hi
an
[c]gi

Hi
the
na
wh
is
ab
eve
na
[10][a]
at
the
na
of
Jes
eve
kn
sh
bo
of
th
in
he
an
of
th
on
ea
an
of
th
un
the
ea
[11]a
[a]*th*
eve
to
sh
co
tha
Jes

Ch
is
Lor
to
the
glo
of
Go
the
Fat

I
Bec

1
my
bel
[a]as
you
hav
alw
obe
not
as
in
my
pre
onl
but
not
mu
mo
in
my
abs
[b]w
our
you
ow
sal
wit
[c]fe
anc

tre [13]fo [a]it is Go wh wo in you bot to wi anc to do [b]fo *His* goo ple

1 all thi [a]wi [*]co anc [b]di you ma bee bla anc [*]ha chi of Go wi fau in the mi of

a cro and per gen am wh you shi as [a]lig in the wo 16h fas the wo of life so tha [a]I ma rej in the day of Ch tha [b]I hav not run in vai or lab in [c]va

1
and
if
[a]I
am
bei
po
ou
*as
a
dri
off*
on
the
sac
[b]an
ser
of
you
fai
[c]I
am
gla
and
rej
wit
you
all.

18F
the
sam
rea
you
als
be
gla
and
rej
wit
me

T

Co

1
I
tru
in
the
Lor
Jes
to
ser
[a]Ti
to
yo
sho
tha
I
als
ma
be
en
wh
I
kn
yo
*sta
20F
I
ha
no
on
[a]lik
mi
wh
wil
sin
ca
for
yo
sta
21F
all

see
the
ow
no
the
thi
wh
are
of
Ch
Jes
22B
you
kn
his
pro
cha
[a]th
as
a
so
wi
his
fat
he
ser
wi
me
in
the
gos
23T
I
ho
to
ser
hi
at
on
as
soo

as
I
see
ho
it
go
wi
me
[24]B
I
tru
in
the
Lo
tha
I
my
sha
als
co
sho

Pro

I
co
it
nee
to
se
to
you
[a]Ep
my
bro
fell
wo
and
[b]fe
sol
[c]bu

you
me
and
[d]th
one
wh
mi
to
my
nee
26[a]
he
wa
lon
for
you
all,
and
wa
dis
bec
you
had
hea
tha
he
wa
sic
27F
ind
he
wa
sic
alm
unt
dea
but
Go
had
me
on

hir
anc
no
onl
on
hir
bu
on
me
als
les
I
sho
hav
sor
upo
sor
28T
I
ser
hir
the
mo
eag
tha
wh
you
see
hir
aga
you
ma
rej
anc
I
ma
be
les
sor
29F
hir

the
in
the
Lor
wit
all
gla
and
hol
suc
me
in
est
[30]b
for
the
wo
of
Ch
he
car
clo
to
dea
*no
reg
his
life
[a]to
sup
wh
wa
lac
in
you
ser
tow
me

I
3

A
for
Ch

[1]
my
bre
[a]re
in
the
Lor
For
me
to
wr
the
sar
thi
to
you
is
not
tec
bu
for
you
it
is
saf

[2]
of
dog
bev
of
[b]ev
wo
[c]be
of
the
mu
[3]Fo
we

are
[a]th
cir
[b]w
wo
[*]G
in
the
Sp
rej
in
Ch
Jes
an
ha
no
co
in
the
fle
4th
[a]I
als
mi
ha
co
in
the
fle
If
an
els
thi
he
ma
ha
co
in
the
fle
I

[b]m
so:
5ci
the
eig
day
of
the
sto
of
Isr
[a]*of*
the
trib
of
Ben
[b]a
He
of
the
He
con
the
law
[c]a
Ph
6co
zea
[a]pe
the
chu
con
the
rig
wh
is
in
the
law
bla

7
[a]w
thi
we
gai
to
me
the
I

hav
cou
los
for
Ch
[8]Ye
ind
I
als
cou
all
thi
los
[a]fo
the
exc
of
the
kno
of
Ch
Jes
my
Lor
for
wh
I
hav
suf
the
los
of
all
thi
and
cou
the
as
rub
tha
I

ma
gai
Ch
[9]an
be
fou
in
Hi
no
ha
[a]m
ow
rig
wh
is
fro
the
la
bu
[b]th
wh
is
thr
fai
in
Ch
the
rig
wh
is
fro
Go
by
fai
[10]t
I
ma
kn
Hi
an
the

[a]po
of
His
res
and
[b]th
fel
of
His
suf
bei
con
to
His
dea
11i
by
any
me
I
ma
[a]at
to
the
res
fro
the
dea

P
To
the
Go

1
tha
I
hav
alr
[a]at
or
am
alr

[b]pe
bu
I
pre
on,
tha
I
ma
lay
hol
of
tha
for
wh
Ch
Jes
has
als
lai
hol
of
me
13B
I
do
no
cou
my
to
hav
*ap
bu
on
thi
I
do,
[a]fo
tho
thi
wh
are

bel
anc
[b]re
for
to
tho
thi
wh
are
ahe
14[a]
pre
tow
the
goa
for
the
pri
of
[b]th
up
cal
of
Go
in
Ch
Jes
1
let
us,
as
ma
as
are
[a]m
[b]ha
thi
mi
anc
if
in

any
you
thi
oth
[c]Go
wi
rev
eve
thi
to
you
16N
to
the
deg
tha
we
hav
alr
*at
[a]le
us
wa
[b]by
the
sar
*ru
let
us
be
of
the
sar
mi

C
Cit
in
He

1
[a]jo
in

fol
my
exa
and
not
tho
wh
so
wa
as
[b]yo
hav
us
for
a
pat
[18]F
ma
wa
of
wh
I
hav
tol
you
oft
and
not
tell
you
eve
we
tha
the
are
[a]th
end
of
the
cro
of

Ch
19[a]
enc
is
des
[b]w
goc
is
the
bel
anc
[c]*wl*
glo
is
in
the
sha
—
[d]w
set
the
mi
on
ear
thi
20F
[a]ou
citi
is
in
hea
[b]fr
wh
we
als
[c]ea
wa
for
the
Sav
the

Lor
Jes
Ch
21[a]
wi
tra
ou
lo
bo
tha
it
ma
be
[b]co
to
His
glo
bo
[c]ac
to
the
wo
by
wh
He
is
ab
eve
to
[d]su
all
thi
to
Hi

4

my
bel
an

[a]lo
for
bre
[b]m
joy
an
cro
so
[c]sta
fas
in
the
Lor
bel

Un
Joy
an
in
Pro

2
im
Eu
an
I
im
Sy
[a]to
be
of
the
sa
mi
in
the
Lo
3 [*]A
I
urg
you
als

tru
con
hel
the
wo
wh
[a]la
wit
me
in
the
gos
wit
Cle
als
and
the
res
of
my
fell
wo
wh
nar
are
in
[b]th
Bo
of
Lif
4
in
the
Lor
alw
Ag
I
wil
say
rej
5

yo
*ge
be
kn
to
all
me
[a]Th
Lo
is
at
ha

6
anx
for
not
but
in
eve
by
pra
and
sup
wit
[b]th
let
you
req
be
ma
kno
to
Go
7an
[a]th
pea
of
Go
wh

sur
all
und
wil
gua
you
hea
and
mi
thr
Ch
Jes

I
on
Th
Thi

8
bre
wh
thi
are
[a]tr
wh
thi
are
[b]no
wh
thi
are
[c]ju
[d]w
thi
are
pu
wh
thi
are
[e]lo
wh
thi
are

of
goo
rep
if
the
is
any
vir
and
if
the
is
any
pra
—
me
on
the
thi
9Th
thi
wh
you
lea
and
rec
and
hea
and
saw
in
me
the
do,
and
[a]th
Go
of
pea
wil
be

wit
you

Ge

1
I
rej
in
the
Lo
gre
tha
nov
at
las
[a]yo
ca
for
me
has
flo
aga
tho
you
sur
did
ca
bu
you
lac
op
11N
tha
I
spe
in
reg
to
ne
for
I

ha
lea
in
wh
sta
I
am
[a]to
be
co
12[a]
kn
ho
to
*be
aba
an
I
kn
ho
to
*ab
Ev
an
in
all
thi
I
ha
lea
bo
to
be
ful
an
to
be
hu
bo
to
ab

anc
to
suf
nee
[13]I
car
do
all
thi
[a]th
*Cl
wh
stre
me

1
you
hav
dor
we
tha
[a]yo
sha
in
my
dis
[15]N
you
Ph
kno
als
tha
in
the
beg
of
the
gos
wh
I
dep
fro

Ma
[a]no
chu
sha
wit
me
con
giv
and
rec
but
you
onl
16F
eve
in
Th
you
ser
aid
one
and
aga
for
my
nee
17N
tha
I
see
the
gif
but
I
see
[a]th
fru
tha
abo
to
you

acc
18I
I
*ha
all
and
abo
I
am
ful
hav
rec
fro
[a]Ep
the
thi
sen
fro
you
[b]a
sw
sm
aro
[c]an
acc
sac
we
ple
to
Go
19A
my
Go
[a]sh
sup
all
you
nee
acc
to
His

ric
in
glo
by
Ch
Jes
[20]a
to
ou
Go
an
Fat
be
glo
for
an
eve
Am

C
an
Ble

2
eve
sai
in
Ch
Jes
Th

bre
[a]wh
are
wi
me
gre
you
[22]A
the
sai
gre
you
bu
esp
tho
wh
are
of
Ca
ho

2
gra
of
ou
Lo
Jes
Ch
be
wi
[*]yo
all.
Am

1

2

4

1

1
[a]an
apo
of
Jes
Ch
by
the
wi
of
Go
an
Tin
ou
bro
2
the
sai
[a]an
fai
bre
in
Ch
wh
are
in
Co
[b]
to
you
an
pea
fro
Go
ou
Fat
*an
the
Lor
Jes
Ch

T
Fai
in
Ch

3
giv
tha
to
the
Go
and
Fat
of
our
Lor
Jes
Ch
pra
alw
for
you
4[a]s
we
hea
of
you
fai
in
Ch
Jes
and
of
[b]yo
lov
for
all
the
sai
5be
of
the

ho [a]w is lai up for yo in hea of wh yo hea bef in the wo of the tru of the gos [6]w has co to yo [a]as *it* *has* als in all the wo an [b]is bri for [*]fr as *it is* als am you sin the day you hea and kno [c]th gra of Go in tru [7]as you als lea fro [a]Ep our dea fell ser wh is [b]a fai mi of Ch on you bel [8]w als

dec
to
us
you
[a]lo
in
the
Spi

I
of
Ch

9
thi
rea
we
als
sin
the
day
we
hea
it,
do
no
cea
to
pra
for
you
and
to
ask
[b]th
you
ma
be
fill
wit
[c]th
kno
of

His
wi
[d]in
all
wis
an
spi
un
10[a]
yo
ma
wa
wo
of
the
Lo
[b]fu
ple
Hi
[c]be
fru
in
ev
go
wo
an
in
in
the
[d]kn
of
Go
11[a]
wi
all
mi
ac
to
His
glo
po

[b]fo
all
pat
and
lon
[c]wi
joy
12[a]
tha
to
the
Fat
wh
has
qua
us
to
be
par
of
[b]th
inh
of
the
sai
in
the
lig
13H
has
del
us
fro
[a]th
pow
of
dar
[b]an
[*]co
us
int

the
kin
of
the
Son
of
His
lov
14a
wh
we
hav
rec
*th
His
blo
the
for
of
sin

1
is
[a]th
im
of
the
inv
Go
[b]th
firs
ove
all
cre
[16]F
[a]by
Hir
all
thi
we
cre
tha
are
in
hea
and
tha

are
on
ear
vis
an
inv
wh
thr
or
[b]do
or
[*]pr
or
[*]po
All
thi
we
cre
[c]th
Hi
an
for
Hi
17[a]
He
is
bef
all
thi
an
in
Hi
[b]al
thi
co
18A
[a]H
is
the
hea
of

the
boo
the
chu
wh
is
the
beg
[b]th
firs
fro
the
dea
tha
in
all
thi
He
ma
hav
the
pre

I
in
Ch

1
it
ple
the
Fat
tha
[a]in
Hin
all
the
ful
sho
dw
20a
[a]by
Hin

to
rec
[b]al
thi
to
Hi
by
Hi
wh
thi
on
ea
or
thi
in
hea
[c]ha
ma
pea
thr
the
blo
of
His
cro

2
you

[a]w
on
we
ali
an
en
in
yo
mi
[b]by
wi
wo
yet
no
He
has
[c]re
22[a]
the
bo
of
His
fle
thr
de
[b]to
pre
yo
ho
an
bla
an
ab
rep
in
His
sig
—
23i
in
yo

cor
[a]in
the
fai
gro
anc
ste
anc
are
[b]nc
mo
aw
fro
the
hoj
of
the
gos
wh
you
hea
[c]wl
wa
pre
to
eve
cre
unc
hea
[d]of
wh
I,
Pa
bec
a
mi

S
Ser
for
Ch

2

no
rej
in
my
suf
[b]fo
you
and
fill
up
in
my
fle
[c]w
is
lac
in
the
aff
of
Ch
for
[d]th
sak
of
His
bod
wh
is
the
chu
25O
wh
I
bec
a
mi
acc
to
[a]th
[*]st

fro
Go
wh
wa
giv
to
me
for
yo
to
ful
the
wo
of
Go
26[a]
[*]m
wh
has
bee
hid
fro
age
and
fro
ger
[b]bu
no
has
bee
rev
to
His
sai
27[a]
the
Go
wil
to
ma
kno

wh
are
[b]th
ric
of
the
glo
of
thi
my
am
the
Ge
*w
is
[c]Ch
in
you
[d]th
ho
of
glo
28H
we
pre
[a]w
eve
ma
and
tea
eve
ma
in
all
wis
[b]th
we
ma
pre
eve
ma

per
in
Ch
Jes
29T
thi
enc
I
als
lab
str
acc
to
His
wo
wh
wo
in
me
[a]m

C
2

I
Phi
but
Ch

1
I
wa
you
to
kno
wh
a
gre
[a]co
I
hav
for
you

an
tho
in
La
an
for
as
ma
as
ha
no
see
my
fac
in
the
fle
[2]th
the
hea
ma
be
en
bei
kn
tog
in
lov
an
att
to
all
ric
of
the
ful
ass
of
un
to
the

kn
of
the
my
of
Go
[*]bo
of
the
Fat
an
of
Ch
3[a]i
wh
are
hi
all
the
tre
of
wis
an
kn
4
thi
I
say
[a]le
any
sho
de
you
wit
pe
wo
5Fo
[a]th
I
am
abs

in
the
fle
yet
I
am
wi
you
in
spi
rej
[*]to
see
[b]yo
go
or
an
the
[c]st
of
you
fai
in
Ch
6
you
the
ha
rec
Ch
Jes
the
Lo
so
wa
in
Hi
7[a]r
an
bu
up

in
Hir
anc
est
in
the
fai
as
you
hav
bee
tau
abo
*in
it
wi
tha
8
les
any
*ch
you
thr
phi
anc
em
dec
acc
to
[a]th
tra
of
me
acc
to
the
[b]ba
pri
of
the
wo

an
no
acc
to
Ch
9Fo
[a]in
Hi
dw
all
the
ful
of
the
Go
*bo
10a
yo
are
co
in
Hi
wh
is
the
[a]he
of
all
*pr
an
po

Leg
but
Ch

1
Hi
yo
we
als
[a]ci

wi
the
cir
ma
wi
ha
by
[b]pu
off
the
bo
[*]of
the
sin
of
the
fle
by
the
cir
of
Ch
12[a]
wi
Hi
in
ba
in
wh
yo
als
we
rai
wi
Hi
thr
[b]fa
in
the
wo
of

Go
[c]wh
rai
Hir
fro
the
dea
13 A
yo
bei
dea
in
yo
tre
anc
the
unc
of
yo
fle
He
has
ma
ali
tog
wit
Hir
hav
for
yo
all
tre
14 [a]
wij
ou
the
*ha
of
rec
tha
wa

aga us, wh wa con to us. An He has tak it ou of the wa hav nai it to the cro 15[a] dis [b]pr and pov He ma a pul spe of the trit ove the in it.

1 let

no
one
[a]ju
you
in
foo
or
in
dri
or
reg
a
[*]fe
or
a
nev
mo
or
sab
17[a]
are
a
sha
of
thi
to
cor
bu
the
[*]su
is
of
Ch
18L
no
one
che
you
of
you
rew

tak
del
in
fal
hu
an
wo
of
an
int
int
th
thi
wh
he
ha
[*]no
see
va
pu
up
by
his
fle
mi
19a
no
ho
fas
to
[a]th
He
fro
wh
all
the
bo
no
an
kn
tog

by
joi
anc
lig
[b]gr
wi
the
inc
tha
is
fro
Go

2
if
you
[a]di
wi
Ch
fro
the
bas
pri
of
the
wo
[b]w
as
tho
livi
in
the
wo
do
you
sub
you
to
reg

21[a]
not

to1
do
no
tas
do
no
ha
22w
all
co
thi
wh
pe
wi
the
usi
—
[a]ac
to
the
co
an
do
of
me
23[a]
thi
in
ha
an
ap
of
wi
in
se
im
rel
fal
hu
an
*ne

of
the
boo
but
are
of
no
val
aga
the
ind
of
the
fles

3

Ca

but

Ch

the

yo
we
[a]ra
wi
Ch
see
tho
thi
wh
are
abo
[b]w
Ch
is,
sitt
at
the
rig
har
of
Go
2Se
yo
mi
on
thi
abo
no
on
thi
on
the
[a]ea
3[a]F
yo
die
[b]ar
yo
life
is
hic

wi
Ch
in
Go
4[a]W
Ch
wh
is
[b]ou
life
app
the
you
als
wi
app
wi
Hi
in
[c]gl

5
pu
to
dea
[b]yo
me
wh

are
on
the
ear
[c]fo
un
pas
evi
des
an
cov
[d]w
is
ido
6[a]B
of
the
thi
the
wr
of
Go
is
cor
upo
[b]th
son
of
dis
7[a]i
wh
you
you
one
wa
wh
you
live
in
the
8

no
yo
yo
are
to
pu
off
all
the
an
wr
ma
bla
filt
lar
ou
of
yo
mo
[9]D
no
lie
to
on
an
sin
yo
ha
pu
off
the
old
ma
wi
his
de
[10]a
ha
pu
on
the

nev
ma
wh
[a]is
ren
in
kn
[b]ac
to
the
im
of
Hi
wh
[c]cr
hin
11W
the
is
nei
[a]Gr
no
Jew
cir
no
un
bar
Scy
sla
no
fre
[b]bu
Ch
is
all
an
in
all.

C
of
the

Ne
M

1

[a]as
the
ele
of
Go
ho
an
be
[b]pu
on
te
me
ki
hu
me
lo
13[a]
wi
on
an
an
fo
on
an
if
an
ha
a
co
ag
an
ev
as
Ch
fo
yo
so
yo

als
mu
do.
[14][a]
abo
all
the
thi
[b]pu
on
lov
wh
is
the
[c]bo
of
per
[15]A
let
[a]th
pea
of
Go
rul
in
you
hea
[b]to
wh
als
you
we
cal
[c]in
one
boo
and
[d]be
tha
[16]L
the

wo
of
Ch
dw
in
yo
ric
in
all
wi
tea
an
adr
on
an
[a]in
psa
an
hy
an
spi
so
sin
wi
gra
in
yo
hea
to
the
Lo
[17]*A*
[a]w
yo
do
in
wo
or
de
do
all

in
the
nar
of
the
Lor
Jes
giv
tha
to
Go
the
Fat
thr
Hir

T
Ch
Ho

1
sub
to
you
ow
hu
[b]as
is
fitt
in
the
Lor

1
low
you
wit
anc
do
not
be
[b]bi
tow
the

2
obe
you
par
[b]in
all
thi
for
thi
is
we
ple
to
the
Lor

2
do
no
pro
you
chi
les
the
bec
dis

2
obe
in
all
thi
you
ma
acc
to
the
fle
no
wit
eye
as
me

ple
bu
in
sin
of
hea
fea
Go
23a
wh
you
do,
do
it
hea
as
to
the
Lor
and
not
to
me
24a
tha
fro
the
Lor
you
wil
rec
the
rew
of
the
inh
bfo
you
ser
the
Lor

Ch
25B
he
wh
do
wr
wi
be
rep
for
wh
he
ha
do
an
[a]th
is
no
pa

4

a
giv
yo
bo
wh
is
jus
an
fai
kn
tha
yo
als
ha
a
Ma
in
hea

Gr
2
ear
in
pra
bei
vig
in
it
[b]w
tha
3[a]n
pra
als
for
us,
tha
Go
wo
[b]op
to
us
a
doo
for
the
wo
to
spe
[c]th
[*]m
of
Ch
[d]fo
wh
I
am
als
in
cha
4th

I
ma
ma
it
ma
as
I
oug
to
spe
[5]
in
[b]w
tow
tho
wh
are
ou
[c]re
the
tim
[6]*Le*
you
spe
alw
be
[a]w
gra
[b]se
wit
sal
[c]th
you
ma
kn
hov
you
oug
to
ans
eac

on

Gr

7
a
bel
bro
fai
mi
and
fel
ser
in
the
Lo
wi
tel
yo
all
the
ne
ab
me
8[a]I
am
ser
hir
to
yo
for
thi
ver
pu
tha
*he
ma
kn
yo
cir
an
co

yo
hea
9w
[a]O
a
fai
an
bel
bro
wh
is
on
of
yo
Th
wil
ma
kn
to
yo
all
thi
wh
are
ha
her
1
my
fell
pri
gre
yo
wi
[b]M
the
cou
of
Ba
(ab
wh
yo

rec
ins
if
he
con
to
you
we
hin
[11]a
Jes
wh
is
cal
Jus
Th
are
my
onl
fell
wo
for
the
kin
of
Go
wh
are
of
the
cir
the
hav
pro
to
be
a
con
to
me
1

wh is *on* of yo a bo of Ch gre yo alw [b]la fer for yo in pra tha yo ma sta [c]pe an [*]co in all the wi of Go [13]F I bea hi wi tha he ha a gre

*ze
for
you
and
tho
wh
are
in
Lac
and
tho
in
Hie
14[a]
the
bel
phy
and
[b]De
gre
you
15C
the
bre
wh
are
in
Lac
and
*Ny
and
[a]th
chu
tha
is
in
*hi
hou

Ext
and

Ble

1
wh
[a]th
epi
is
rea
am
you
see
tha
it
is
rea
als
in
the
chu
of
the
Lac
and
tha
you
like
rea
the
epi
fro
Lac
[17]*A*
say
to
[a]Ar
“Ta
hee
to
[b]th
mi
wh
you

hav
rec
in
the
Lor
tha
you
ma
ful
it.’

[1]
sal
by
my
ow
har
—
Pat
[b]Re
my
cha
Gra
be
wi
you
Am

C
1

2

3

4

Th
1

[a]Si
an
Ti

the
ch
of
the
[b]Th
in
Go
the
Fat

an
the
Lor
Jes
Ch
C
to
yo
an
pea
*fr
Go
ou
Fat
an
the
Lor
Jes
Ch
T
Go
Exc
2
giv
tha
to
Go
alw
for
yo
all,
ma
me
of
yo
in
ou
pra
3re
wi
cea

[a]y
w
of
fai
[b]la
of
lo
an
pa
of
ho
in
ou
Lo
Jes
Ch
in
the
sig
of
ou
Go
an
Fa
4 k
bel
bre
[a]y
ele
by
Go
5 F
[a]ou
gos
di
no
co
to
yo
in
w

onl
bu
als
in
po
[b]ar
in
the
Ho
Sp
[c]ar
in
mu
ass
as
yo
kn
wh
kir
of
me
we
we
am
yo
for
yo
sak
6
[a]yo
bee
fol
of
us
and
of
the
Lor
ha
rec
the

wo
in
mu
aff
[b]w
joy
of
the
Ho
Spi
[7]so
tha
you
bec
exa
to
all
in
Ma
and
Ach
wh
bel
[8]Fo
fro
you
the
wo
of
the
Lor
[a]ha
sou
for
not
onl
in
Ma
and
Ach
bu

als
[b]in
eve
pla
Yo
fai
tow
Go
has
go
ou
so
tha
we
do
no
ne
to
say
an
9Fo
the
the
de
co
us
[a]w
ma
of
en
we
ha
to
yo
[b]a
ho
yo
tu
to
Go
fro

ido
to
ser
the
liv
an
tru
Go
10 a
[a]to
wa
for
His
So
fro
hea
wh
He
rai
fro
the
dea
eve
Jes
wh
del
us
[b]fr
the
wr
to
co

Pra
the
fiv
fai
pri
an
yo
pos
del
pro
wi
be
mi
an

you
pro
ste
Re
tha
Go
wi
no
aba
you
and
do
no
be
dis
by
any
fai
Th
the
Fat
for
ser
Jes
Ch
and
and
Hi
wit
the
Ho
Spi
to
bri
us
ou
of
the
kir
of
dar

int
the
kin
of
lig

1 Thessaloni 2

Paul’s Conduct

[1]For you yourselves know, brethren, that our coming to you was not in vain.

2 But [*]even after we had suffered before and were spitefully treated at [a]Philippi, as you know, we were [b]bold in our God to speak to you the gospel of God in much conflict. 3 [a]For our exhortation *did* not *come* from error

or uncleannes nor *was it* in deceit.

[4]But as [a]we have been approved by God [b]to be entrusted with the gospel, even so we speak, [c]not as pleasing men, but God [d]who tests our hearts. [5]For [a]neither at any time did

we use flattering words, as you know, nor a [*]cloak for covetousne—[b]God *is* witness. 6 [a]Nor did we seek glory from men, either from you or from others, when [b]we might have [c]made demands [d]as apostles of Christ. 7 But [a]we were gentle among you, just as a nursing *mother* cherishes her own children. 8So, affectionate longing for you, we were well pleased [a]to impart to you not only the gospel of God, but also [b]our own lives, because you had become dear to us. 9For you remember, brethren, our [a]labor and toil; for laboring night and day, [b]that we might not be a burden to any of you, we preached to you the gospel of God.

10[a]You *are* witnesses, and God *also,*

[b]how devoutly and justly and blamelessly we behaved ourselves among you who believe; 11 as you know how we exhorted, and comforted, and [*]charged every one of you, as a father *does* his own children, 12 [a]that you would walk worthy of God

[b]who calls you into His own kingdom and glory.

Their Conversion

13For this reason we also thank God [a]without ceasing, because when you [b]received the word of God which you heard from us, you welcomed *it* [c]not *as* the word of men, but as it is in truth, the word of God, which also effectively [d]works in you who believe. 14For you, brethren, became imitators [a]of the churches of God which are in Judea in Christ Jesus. For [b]you also suffered the same things from your own countryme just as they *did* from the Judeans, 15 [a]who killed both the Lord Jesus and [b]their own prophets, and have persecuted us; and they do not please God [c]and are *contrary to all men, 16 [a]forbiddi us to speak to the Gentiles that they may be saved, so as always [b]to fill up *the measure of* their sins; [c]but wrath has come upon them to the uttermost.

Longing to See Them

[17]But we, brethren, having been taken away

from you for a short time [a]in presence, not in heart, endeavored more eagerly to see your face with great desire. 18Therefore we wanted to come to you—even I, Paul, time and again—but [a]Satan hindered us. 19For

[a]what *is* our hope, or joy, or [b]crown of rejoicing? *Is it* not even you in the [c]presence of our Lord Jesus Christ [d]at His coming? [20]For you are our glory and joy.

1 Thessaloni 3

Concern for Their Faith

[1]Therefo when we could no longer endure it, we thought it good to be left in Athens alone, [2]and sent [a]Timothy, our brother and minister of God, and our fellow laborer in the gospel of Christ, to establish you and encourage

you concerning your faith, [3][a]that no one should be shaken by these afflictions; for you yourselves know that [b]we are appointed to this. [4][a]For, in fact, we told you before when we were with you that we would suffer tribulation, just as it happened, and you know. [5]For this reason, when I could no longer endure it, I sent to know your faith, [a]lest by some means the tempter had tempted you, and [b]our labor might be in vain.

Encourag by Timothy

6[a]But now that Timothy has come to us from you, and brought us good news of your faith and love, and that you always have good remembran of us, greatly desiring to see us,[1] [b]as we also *to see* you—

[7]therefore, brethren, in all our affliction and distress [a]we were comforted concerning you by your faith. [8]For now we live, if you [a]stand fast in the Lord.

[9]For what thanks can we render to God for you, for all the joy

with which we rejoice for your sake before our God, [10]night and day praying exceedingly that we may see your face [a]and perfect what is lacking in your faith?

Prayer for the Church

[11]Now may our God and Father Himself, and

our Lord Jesus Christ, [a]direct our way to you. 12And may the Lord make you increase and [a]abound in love to one another and to all, just as we *do* to you, 13so that He may establish [a]your hearts blameless in holiness before our God and Father at the coming of our Lord Jesus Christ with all His saints.

1 Thessalonia 4

Plea for Purity

[1]Finally then,

brethren, we urge and exhort in the Lord Jesus [a]that you should abound more and more, [b]just as you received from us how you ought to walk and to please God; [2]for you know what commandn we gave you through the

Lord Jesus.

[3]For this is [a]the will of God, [b]your sanctificati [c]that you should abstain from sexual immorality [4][a]that each of you should know how to possess his own vessel in sanctificati and honor, [5][a]not in passion of lust, [b]like the

Gentiles [c]who do not know God; 6 that no one should take advantage of and defraud his brother in this matter, because the Lord [a]*is* the avenger of all such, as we also forewarned you and testified. 7 For God did not call us to uncleannes [a]but in holiness. 8[a]Therefore he who rejects *this* does not reject man, but God, [b]who[*] has also given us His Holy Spirit.

A Brotherly and Orderly Life

9But concerning brotherly love you have no need that I should write to you, for [a]you yourselves are taught by God [b]to love one another; [10]and indeed you do so toward all the brethren who are in all Macedonia But we urge you, brethren, [a]that you increase more and more; [11]that you also aspire to lead a quiet life, [a]to mind your own business, and [b]to work with your own hands, as we commande you, 12 [a]that you may walk properly toward those who are outside, and *that* you may lack nothing.

The Comfort

of Christ’s Coming

[13]But I do not want you to be ignorant, brethren, concerning those who have fallen [*]asleep, lest you sorrow [a]as others [b]who have no hope. [14]For [a]if we believe that Jesus died and rose again, even so God

will bring with Him [b]those who [*]sleep in Jesus.

[15]For this we say to you [a]by the word of the Lord, that [b]1small>we who are alive *and* remain until the coming of the Lord will by no means precede those who

are [*]asleep. 16For [a]the Lord Himself will descend from heaven with a shout, with the voice of an archangel, and with [b]the trumpet of God. [c]And the dead in Christ will rise first. 17[a]Then we who are alive *and* remain shall be caught up together with them [b]in the clouds to meet the Lord in the air. And thus [c]we shall always be with the Lord. 18 [a]Therefor comfort one another with these words.

PR
for
SP
WA

SA
YC

TH
FA

We
des
to
be
in
the
wi
of
Go
an
to
wa
acc
to
His
pla
San
is
the
key
to
bei
in
Go
wi
As
Pa
sai
“Fo
thi
is
the
wi
of
Go
you
san
(1

Th
4:3

Th
is
no
ne
to
try
to
fin
so
my
“w
of
Go
ou
the
Yo
ca
fol
Go
lea
un
yo
sta
wh
Pa
sai
sta

Fas
wi
hel
yo
ide
are
of
hic
sin
in
yo
life
Fas
is
an
ess
me
of
sar
yo
pu
yo

aw
fro
the
wo
an
get
clo
to
Go
Fas
allo
yo
to
filt
yo
life
an
to
set
yo
apa
to
see
the
Lo

W
Ab
Yo

Wh
if
yo
set
yo
to
dil
see
the
Lo
sa

you
wit
a
fas
an
jou
ba
to
the
sp
wh
it
all
beg
—
wh
He
sa
you
set
you
fre
fill
you
wit
His
Spi
an
cal
you
ou
I
act
phy
tra
to
tha
sp
bu
if
you

ca
do
tha
yo
ca
go
ba
me
Yo
ca
re
the
an
la
tha
sa
sin
inn
an
de
wi
wh
yo
firs
res
to
His
voi

Go
wa
yo
to
ask
Hi
for
—
bel
Hi
for
—

thi
tha
are
big
tha
you
I
am
no
ov
for
yea
old
bu
I
ca
jus
flo
thr
life
I
ca
ki
ba
an
wa
for
ret
I
ha
to
mu
pr
I
wa
to
rea
the
ha
Th
chi

of
Isra
had
ma
it
thr
the
wi
Th
had
sto
eat
ma
and
had
beg
to
eat
the
goo
fru
of
the
lan
Th
live
alo
a
riv
and
the
cou
hav
eas
set
up
tra
wit
tho
fro
the

big
cit
of
Jer
bu
tha
wa
no
the
des

Fa
wi
bri
yo
int
des
Fa
wi
bri
yo
int
ali
wi
Go
pla
for
yo
life
Jus
as
Jos
cal
the
chi
of
pro
to
sar
the
—

I bel tha lik you “to is jus aro the cor Go is goi to do wo in you life lea you pla you hav nev bee bef No is the tim to fas to see Go dil to sar you to dis Go pri an to wa in His pro *Go for it!* *

---

1 Thessaloni 5

The Day of the Lord

[1]But concerning [a]the times and

the seasons, brethren, you have no need that I should write to you. [2] For you yourselves know perfectly that [a]the day of the Lord so comes as a thief in the night. [3] For when they say, “Peace and safety!” then [a]sudden destruction comes upon them, [b]as labor pains upon a pregnant woman. And they shall not escape. 4 [a]But you, brethren, are not in darkness, so that this Day should overtake you as a thief. 5 You are all [a]sons of light and sons of the day. We are not of the night nor of darkness. 6 [a]Therefore let us not sleep, as others *do,* but [b]let us watch and be [*]sober. 7 For [a]those who sleep, sleep at night, and those who get drunk [b]are drunk at night. [8]But let us who are of the day be sober, [a]putting on the breastplate of faith and love, and *as* a helmet the hope of salvation. [9]For [a]God did not appoint us to wrath, [b]but to obtain salvation through our Lord Jesus Christ, [10][a]who died for us, that whether we wake or sleep, we should live together with Him.

[11]Therefo *comfort each other and *edify one another, just as you also are doing.

Various Exhortation

[12]And we urge you, brethren,

[a]to recognize those who labor among you, and are over you in the Lord and [*]admonish you, [13]and to esteem them very highly in love for their work’s sake. [a]Be at peace among yourselves.

[14]Now we [*]exhort you, brethren, [a]warn those

who are [*]unruly, [b]comfort the fainthearte [c]uphold the weak, [d]be patient with all. 15 [a]See that no one renders evil for evil to anyone, but always [b]pursue what is good both for yourselves and for all.

16 [a]Rejoic always, 17 [a]pray without ceasing, 18 in

everything give thanks; for this is the will of God in Christ Jesus for you.

19[a]Do not quench the Spirit. 20[a]1sup>Do not despise prophecies. 21[a]Test all things; [b]hold fast what is good. 22Abstain from every form of evil.

Blessing and Admonition

23Now may

[a]the God of peace Himself [b]sanctify[*] you completely; and may your whole spirit, soul, and body [c]be preserved blameless at the coming of our Lord Jesus Christ. 24He who calls you *is* [a]faithful, who also will [b]do *it.*

[25]Brethre pray for us.

[26]Greet all the brethren with a holy kiss.

[27]I charge you by the Lord that this *epistle

be read to all the *holy brethren.

[28]The grace of our Lord Jesus Christ *be* with you. Amen.

1 Thessaloni
1

[1:
a.
1
Pe
5:1

[1:
b.
Ac
17
9

[1:

*
NU
om
fro
Go
ou
Fa
an
the
Lo
Jes
Ch

[1:
a.
Ro
1:8
2
Th
1:3

[1:
a.
Jo
6:2

[1:
b.
Ro
16

[1:
a.
Co

3:1

[1:
a.
Ma
16

[1:
b.
2
Co
6:6

Th
2

1

Th

3

1
Th
4

Th
5

______What
I
watch
______Whom
I
associate
with

______What
I
listen
to

My
Response
is
to…

____

____

____

____

____

____

____

-

- Through prayer

•

Through signs and wonders

2
fai
[a]M
wh
he
bec
of
age
ref
to
be
cal
the
son
of

Ph
da
[25]c
rat
to
suf
aff
wi
the
pe
of
Go
tha
to
enj
the
*pa
ple
of
sin
[26]e
[a]th
*re
of
Ch
gre
ric
tha
the
tre
*in
Eg
for
he
loo
to
the
[b]re
2
fai
[a]he

for
Eg
no
fea
the
wr
of
the
kin
for
he
en
as
see
Hi
wh
is
inv
28B
fai
[a]he
ke
the
Pa
an
the
spr
of
blo
les
he
wh
des
the
firs
sho
tou
the
2
fai
[a]th

pas
thr
the
Re
Sea
as
by
dry
lan
wh
the
Eg
att
to
do
so,
we
dro

I
Fai
Th
Ov

[3]
fai
[a]th
wa
of
Jer
fel
do
aft
the
we
enc
for
sev
day
[31]B
fai
[a]th
har

Ra
dic
no
per
wi
tho
wh
*di
no
bel
wh
[b]sh
hac
rec
the
spi
wi
pea
3
wh
mo
sha
I
say
Fo
the
tim
wo
fai
me
to
tel
of
[a]Gi
anc
[b]Ba
anc
[c]Sa
anc
[d]Je
als

of
[e]Da
and
[f]Sa
and
the
pro
33w
thr
fai
sub
kin
wo
rig
obt
pro
[a]sto
the
mo
of
lio
34[a]
the
vio
of
fire
esc
the
edg
of
the
sw
out
of
we
we
ma
str
bec
val
in

ba
tu
to
fli
the
arr
of
the
ali
35[a]
re
the
de
rai
to
life
ag

we
[b]to
no
ac
de
tha
the
mi
ob
a
be
res
36S
oth
ha
tri
of
mo
an
sc
ye
an
[a]of

cha
and
im
37[a]
we
sto
the
we
sav
in
two
[*]w
ten
we
sla
wit
the
sw
[b]Th
wa
abo
[c]in
she
and
goa
bei
des
aff
tor
—
38C
wh
the
wo
wa
no
wo
Th
wa
in
des

an
mo
[a]*in*
de
an
ca
of
the
ea
3
all
the
[a]ha
ob
a
go
tes
thr
fai
dic
no
rec
the
pro
40C
hav
pro
son
bet
for
us,
tha
the
sho
no
be
[a]m
pe
apa
fro
us.

12

Ra

of

Fa
1
we
als
sin
we
are
sur
by
so
gre
a
clo
of
wi
[a]le
us
lay
asi
eve
we
an
the
sin
wh
so
eas
ens
us,
an
[b]le
us
rur
[c]wi
en
the
rac
tha
is
set
bef

us,
2lo
un
Jes
the
*au
and
*fi
of
ou
fai
[a]w
for
the
joy
tha
wa
set
bef
Hi
[b]en
the
cro
des
the
sha
and
[c]ha
sat
do
at
the
rig
ha
of
the
thr
of
Go
Dis

of
Go
3
cor
Hir
wh
enc
suc
ho
fro
sin
aga
Hir
[b]le
you
bec
we
anc
dis
in
you
sou
4[a]Y
hav
not
yet
res
to
blo
stri
aga
sin
5Ar
you
hav
for
the
exh
wh
spe
to

yo
as
to
so

7
yo
en
cha
Go
dea
wi
yo
as
wi
so
for
wh
[b]so
is
the
wh
a
fat
do
no
cha
8Bu
if
yo
are
wi
cha
[a]of
wh
all
ha
be
pa
the
yo
are
ille
an
no
so

[9]Fu
we
hav
had
hu
fat
wh
co
us,
and
we
pai
the
res
Sha
we
no
mu
mo
rea
be
in
sub
to
[a]th
Fat
of
spi
and
live
1[10]
the
ind
for
a
few
day
cha
us
as
see

bes
to
the
bu
He
for
ou
pro
[a]th
we
ma
be
pa
of
His
ho
[11]N
no
[*]ch
see
to
be
joy
for
the
pre
bu
pai
nev
aft
it
yie
[a]th
pea
fru
of
rig
to
tho
wh
ha

bec
tra
by
it.

I
Yo
Spi
Vit

1
[a]str
the
har
wh
har
dov
and
the
fee
kno
13a
ma
stra
pat
for
you
fee
so
tha
wh
is
lan
ma
not
be
dis
bu
rat
be
hea

1
pea

wit
all
pe
an
hol
[b]w
wh
no
on
wi
see
the
Lo
[15]l
ca
les
any
[a]fa
sh
of
the
gra
of
Go
les
any
[b]ro
of
bit
spr
up
cau
tro
an
by
thi
ma
be
def
[16]l
the

be
any
[a]fo
or
[*]pr
pe
lik
Esa
[b]w
for
on
mo
of
foo
sol
his
bir
17F
you
kn
tha
aft
wh
he
wa
to
inh
the
ble
he
wa
[a]re
for
he
fou
no
pla
for
rep
tho
he

sou
it
dil
wi
tea

T
Glo
Co

1
you
hav
not
cor
*to
[a]th
mo
tha
ma
be
tou
anc
tha
bur
wit
fire
anc
to
bla
anc
*da
anc
ten
19a
the
sou
of
a
tru
anc
the
voi
of
wo
so
tha
tho
wh
hea
it

[a]be
tha
the
wo
sho
no
be
spo
to
the
any
20(
the
cou
no
eno
wh
wa
co
[a]“A
if
so
mu
as
a
bea
tou
the
mo
it
sha
be
sto
*on
sho
wi
an
arr
21A
so
ter

wa
the
sig
tha
Mo
sai
[a]“I
am
exc
afr
and
tre
2
you
hav
con
to
Mo
Zio
and
to
the
cit
of
the
livi
Go
the
hea
Jer
to
an
inn
con
of
ang
23to
the
*ge
ass
and

chu
of
[a]th
firs
[b]*wh*
are
reg
in
hea
to
Go
[c]th
Juc
of
all,
to
the
spi
of
jus
me
[d]m
per
24 t
Jes
[a]th
Me
of
the
nev
cov
and
to
[b]th
blo
of
spr
tha
spe
bet
thi

[c]th
tha
of
Ab

I
the
He
Vo

2
tha
you
do
no
ref
Hi
wh
spe
Fo
[a]if
the
dic
no
esc
wh
ref
Hi
wh
spo
on
ear
mu
mo
sho
we
no
esc
if
we
tur
aw
fro

Hi
wh
spe
fro
hea
26 W
voi
the
sho
the
ear
bu
no
He
ha
pro
say
[a]“Y
on
mo
I
*sh
no
on
the
ear
bu
als
hea
27 N
thi
“Y
on
mo
ind
the
[a]re
of
tho
thi
tha

are
bei
sha
as
of
thi
tha
are
ma
tha
the
thi
wh
car
be
sha
ma
ren

2
sin
we
are
rec
a
kin
wh
car
be
sha
let
us
hav
gra
by
wh
we
*m
[a]se
Go
acc
wi

rev
and
goo
fea
[29]F
[a]ou
Go
is
a
con
fire

I
13
C
Mo
Dir

[1]
[a]br
lov
con
[2][a]D
not
for
to
ent
stra
for
by
so
doi
[b]so
hav
unt
ent
ang
[3][a]R
the
pri
as
if

cha
wi
the
—
tho
wh
are
mi
—
sin
you
you
are
in
the
bo
als

4
is
ho
am
all,
and
the
be
un
[b]bu
for
and
adu
Go
wi
jud

5
you
co
be
wi
cov
be
co

wi
suc
thi
as
yo
ha
Fo
He
Hi
has
sai
[a]“I
wi
ne
lea
yo
no
for
yo
6So
we
ma
bo
say

C
Rel
Dir

7
tho
wh
*ru
ove
you
wh
hav
spo
the
wo
of
Go
to
you
wh
fai
fol
con
the
out
of
the
con
[8]Je
Ch
is
[a]th
san
yes
too
and
for
[9]Do
not
be
car
*ab

wi
va
and
str
doc
For
it
is
goo
tha
the
hea
be
est
by
gra
no
wi
foo
wh
hav
no
pro
tho
wh
hav
bee
occ
wi
the

1
hav
an
alt
fro
wh
tho
wh
ser
the
tab

hav
no
rig
to
eat
[11]F
the
boo
of
tho
ani
wh
blo
is
bro
int
the
sar
by
the
hig
pri
for
sin
are
bur
ou
the
car
[12]T
Jes
als
tha
He
mi
*sa
the
peo
wit
His
ow

blo
suf
ou
the
gat
13T
let
us
go
for
to
Hi
ou
the
ca
bea
[a]Hi
rep
14F
he
we
ha
no
co
cit
bu
we
see
the
on
to
co
15[a]
by
Hi
let
us
co
off
[b]th
sac

of
pra
to
Go
tha
is,
[c]th
fru
of
ou
lip
[*]gi
tha
to
His
na
16[a]
do
no
for
to
do
go
an
to
sha
for
[b]w
suc
sac
Go
is
we
ple
1
tho
wh
[*]ru
ov
yo
an

be
sub
for
[b]th
wa
ou
for
you
sou
as
tho
wh
mu
giv
acc
Let
the
do
so
wi
joy
an
no
wi
gri
for
tha
wo
be
un
for
you

I

Re

1
for
us;
for
we
are
co

tha
we
hav
[b]a
goo
con
in
all
thi
des
to
liv
hon
19B
I
esp
urg
you
to
do
thi
tha
I
ma
be
res
to
you
the
soo

I
Fin
Ex
Far

2
ma
[a]th
Go
of
pea
[b]w

bro
up
our
Lor
Jes
fro
the
dea
[c]th
gre
Sh
of
the
she
[d]th
the
blo
of
the
eve
cov
21m
you
*co
in
eve
goo
wo
to
do
His
wi
[a]w
in
*yo
wh
is
we
ple
in
His

sig
thr
Jes
Ch
to
wh
be
glo
for
and
eve
Am

2
I
app
to
you
bre
bea
wit
the
wo
of

exh
for
I
hav
wr
to
you
in
few
wo
[23]K
tha
our
bro
Tin
has
bee
set
fre
wit
wh
I
sha
see
you
if
he
co
sho
2
all
tho
wh
*ru
ove
you
and
all
the
sai
Th

fro
Ita
gre
you

2
be
wi
you
all.
Am

I
1

[2:
a.
De
33
Ac
7:5
Ga
3:1

[2:
b.
Nu
15

[2:
*
ret
or
per

[2:
a.
He
10

[2:
b.
Ma
4:1

[2:
c.
Ma
16
Lu
1:2
1
Jo
1:1

[2:
a.
Ma
16

[2:
b.
Ac
2:2
43
2
Co
12

[2:
c.
1

Co
12
7,
11
Ep
4:7

[2:
d.
Ep
1:5
9

[2:
*
dis

[2:
a.
(2
Pe
3:1

[2:
a.
Jol
7:1
Ps.
8:4
6

[2:

*

Or
for
a
litt
wh

[2:
*
NU
M
om
the
res
of
v.
7.

[2:
a.
Ma
28

[2:
b.
Ps.
8:6
1
Co
15
27

[2:
a.

Ph
2:7
9;
He
1:9

[2:
b.
Ac
2:3
3:1
1
Pe
1:2

[2:
c.
Is.
53
(Jo
3:1

[2:
*
Or
for
a
litt
wh

[2:
a.
Co
1:1

[2:
b.
He
5:8
9;
7:2

[2:
a.
He
10

[2:
b.
Ac
17

3

4

5

6

7

8

9

I
10

I
11

I
12

I
13

1

to
the
Tw
Tri

[a]a
bo

of
Go
an
of
the
Lo
Jes
Ch
T
the
tw
tri
wh
are
sca
ab
C
I
fro
Tri
2
bre
[a]co
it
all
joy
[b]w
you
fal
int
va
tria
3[a]k
tha
the
tes
of
you
fai
pro
[*]pa

[4]Bu
let
pat
hav
its
per
wo
tha
you
ma
be
[*]pe
an
co
lac
no
[5][a]I
any
of
you
lac
wis
[b]le
hir
ask
of
Go
wh
giv
to
all
lib
an
wit
rep
an
[c]it
wil
be
giv
to

hir
6[a]B
let
hir
ask
in
fai
wi
no
do
for
he
wh
do
is
lik
a
wa
of
the
sea
dri
and
tos
by
the
wi
7Fo
let
no
tha
ma
sup
tha
he
wi
rec
any
fro
the
Lor

8*he*
is
[a]a
do
mi
ma
un
in
all
his
wa

T
Per
of
Ric
an
Po

9
the
low
bro
glo
in
his
exa
10b
the
ric
in
his
hu
bec
[a]as
a
flo
of
the
fie
he
wi
pas
aw
11F
no
soo
has
the
su
ris
wit
a
bu
hea
tha
it
wit
the
gra

its
flo
fal
and
its
bea
app
per
So
the
ric
ma
als
wi
fac
aw
in
his
pu
I
Go
Un
Tri
1
is
the
ma
wh
end
ter
for
wh
he
has
bee
app
he
wi
rec
bth
cro

of
life
[c]wh
the
Lor
has
pro
to
tho
wh
lov
Hir
[13]L
no
one
say
wh
he
is
ten
“I
am
ten
by
Go
for
Go
can
be
ten
by
evi
nor
doe
He
Hir
ten
any
[14]E
eac
one

is ter wh he is dra aw by his ow des an ent [15]T [a]w des has co it giv bir to sin an sin wh it is ful gro [b]br for dea

1 no be dec my bel bre [17][a]

goo
gif
anc
eve
per
gif
is
fro
abo
anc
cor
dov
fro
the
Fat
of
ligl
[b]w
wh
the
is
no
var
or
sha
of
tur
18[a]
His
ow
wil
He
bro
us
for
by
the
[b]w
of
tru
[c]th

we
mi
be
a
kin
of
firs
of
His
cre

C
Ne
in
Tri

1
the
my
bel
bre
let
eve
ma
be
sw
to
hea
[a]sl
to
spe
[b]sl
to
wr
20f
the
wr
of
ma
doc
no
pro
the

rig
of
Go

Doers — Not Hearers Only

[21]Therefo [a]lay aside all filthiness and *overflow of wickedness

and receive with meekness the implanted word, [b]which is able to save your souls.

22But [a]be doers of the word, and not hearers only, deceiving yourselves. 23For [a]if anyone is a hearer of the word and not a doer, he is like a man observing his natural face in a mirror; [24]for he observes himself, goes away, and immediatel forgets what kind of man he was. [25]But [a]he who looks into the perfect law of liberty and continues *in it,* and is not a forgetful hearer but a doer of the work, [b]this one will be blessed in what he does.

[26]If anyone *among you thinks he is religious, and [a]does not bridle his tongue but deceives his own heart,1 this one's religion

is useless. 27 [a]Pure and undefiled religion before God and the Father is this: [b]to visit orphans and widows in their trouble, [c]*and* to keep oneself unspotted from the world.

James 2

Beware of Personal Favoritism

1 My brethren, do not hold

the faith of our Lord Jesus Christ, [a]*the Lord* of glory, with [b]partiality. [2]For if there should come into your assembly a man with gold rings, in *fine apparel, and there should also come in a poor man in *filthy clothes,

[3]and you *pay attention to the one wearing the fine clothes and say to him, “You sit here in a good place,” and say to the poor man, “You stand there,” or, “Sit here at my footstool,” [4]have you not *shown

partiality among yourselves, and become judges with evil thoughts?

5Listen, my beloved brethren: [a]Has God not chosen the poor of this world *to be* [b]rich in faith and heirs of the kingdom [c]which He promised to those who love Him? 6But

[a]you have dishonored the poor man. Do not the rich oppress you [b]and drag you into the courts? [7]Do they not blaspheme that noble name by which you are [a]called?

[8]If you really fulfill *the* royal law according to the Scripture,

[a]"You shall love your neighbor as yourself," you do well; 9 but if you [*]show partiality, you commit sin, and are convicted by the law as [a]transgress 10 For whoever shall keep the whole l1aw, and yet [a]stumble in one *point,* [b]he is

guilty of all. [11]For He who said, [a]“Do not commit adultery,” also said, [b]“Do not murder.” Now if you do not commit adultery, but you do murder, you have become a transgresso of the law. [12]So speak and so do as those who will be judged by [a]the law of liberty. 13For [a]judgment is without mercy to the one who has shown [b]no [c]mercy. [d]Mercy triumphs over judgment.

Faith Without Works Is Dead

14[a]What *does it* profit, my brethren, if someone says he has faith but does not have works? Can faith save him? 15[a]If a brother or sister is naked and destitute of daily food, 16and [a]one of you says to them, “Depart in peace, be warmed and filled,” but you do not give them the things which are needed for the body, what *does it* profit? [17]Thus also faith by itself, if it does not have works, is dead.

[18]But someone will say, "You have faith, and I have works." [a]Show me

your faith without *your works, [b]and I will show you my faith by *my works. [19]You believe that there is one God. You do well. Even the demons believe—and tremble! [20]But do you want to know, O foolish man, that faith without works is [*]dead? [21]Was not Abraham our father justified by works [a]when he offered Isaac his son on the altar? [22]Do you see [a]that faith was working together with his works, and by [b]works faith was made [*]perfect?

[23]And the Scripture was fulfilled which says, [a]“Abraham believed God, and it was [*]accounted to him for righteousn And he was called [b]the friend of God. [24]You see then that a man is justified by works, and not by faith only.

25Likewis [a]was not Rahab the harlot also justified by works when she received the messengers and sent *them* out another way?

26For as the body without the spirit is dead, so faith without works is dead also.

James 3

The

Untamable Tongue

[1]My brethren, [a]let not many of you become teachers, [b]knowing that we shall receive a stricter judgment. [2]For [a]we all stumble in many things. [b]If anyone does not stumble in word, [c]he *is* a [*]perfect man, able also to

bridle the whole body. 3[*]Indeed, [a]we put bits in horses’ mouths that they may obey us, and we turn their whole body. 4Look also at ships: although they are so large and are driven by fierce winds, they are turned by a very small rudder wherever the pilot desires. 5Even so [a]the tongue is a little member and [b]boasts great things.

See how great a forest a little fire kindles! 6And [a]the tongue *is* a fire, a world of [*]iniquity. The tongue is so set among our members that it [b]defiles the whole body, and sets on fire the course of [*]nature; and it is set on fire by [*]hell. [7]For every kind of beast and bird, of reptile and creature of the sea, is tamed and has been tamed by mankind. [8]But no man can tame the tongue. *It is* an unruly evil, [a]full of deadly poison. [9]With it we bless our God and Father, and with it we curse men, who have been made [a]in the [*]similitude of God. [10]Out of the same mouth proceed blessing and cursing. My brethren, these things ought not to be so. [11]Does a spring send forth fresh *water* and bitter from the same opening? [12]Can a [a]fig tree, my brethren, bear olives, or a grapevine bear figs? *Thus no spring yields both salt water and fresh.

Heavenly Versus Demonic Wisdom

13[a]Who *is* wise and understand among you? Let him show by good conduct *that* his works *are done* in the meekness of wisdom. 14But if you have [a]bitter envy and *self-seeking in your hearts, [b]do not boast and lie against the truth. 15[a]This wisdom does not descend from above, but *is* earthly, sensual, demonic. 16For [a]where envy and self-seeking *exist,* confusion and every evil thing *are* there. 17But [a]the wisdom that is from above is first pure, then peaceable, gentle, willing to yield, full of mercy and good fruits, [b]without partiality [c]and without hypocrisy. 18 [a]Now the fruit of righteousne is sown in peace by those who make peace.

James 4

Pride Promotes Strife

1 Where do *wars and fights *come* from among you? Do *they* not *come* from your *desires for* pleasure [a]that war in your members? 2 You lust and do

not have. You murder and covet and cannot obtain. You fight and *war. *Yet you do not have because you do not ask. 3 [a]You ask and do not receive, [b]because you ask amiss, that you may spend *it* on your pleasures.

[4][*]Adulterer and adulteresse Do you not know that [a]friendship with the world is enmity with God? [b]Whoever therefore wants to be a friend of the world makes himself an enemy of God. [5]Or do you think that the Scripture says in

vain, [a]“The Spirit who dwells in us yearns jealously”?

[6]But He gives more grace. Therefore He says:

Humility Cures Worldliness

[7]Therefo submit to God. [a]Resist the devil and

he will flee from you. [8][a]Draw near to God and He will draw near to you. [b]Cleanse *your* hands, *you* sinners; and [c]purify *your* hearts, *you* double-minded. [9][a]Lament and mourn and weep! Let your laughter be turned to mourning and *your* joy to gloom. 10[a]Humble yourselves in the sight of the Lord, and He will lift you up.

Do Not Judge a Brother

11[a]Do not speak evil of one another, brethren. He who speaks evil of a brother [b]and judges his brother, speaks evil of the law and judges the law. But if you judge the law, you are not a doer of the law but a judge. 12 There is one *Lawgiver, [a]who is able to save and to destroy. [b]Who* are you to judge *another?

Do Not Boast About Tomorrow

13Come now, you who say, “Today or tomorrow *we will go to such and such a city, spend a year there, buy and sell, and make a profit”; 14whereas you do not know what *will happen* tomorrow. For what *is* your life? [a]It is even a vapor that appears for a little time and then vanishes away. 15Instead you *ought* to say, [a]“If the Lord wills, we shall live and do this or that.” [16]But now you boast in your arrogance. [a]All such boasting is evil.

[17]Therefo [a]to him who knows to do good and does not do *it,* to him it is sin.

James 5

Rich Oppressors Will Be Judged

[1]Come now,

you [a]rich, weep and howl for your miseries that are coming upon *you!*

[2]Your [a]riches [*]are corrupted, and [b]your garments are moth-eaten. [3]Your gold and silver are corroded, and their corrosion will be a witness against you and will

eat your flesh like fire. [a]You have heaped up treasure in the last days. [4]Indeed [a]the wages of the laborers who mowed your fields, which you kept back by fraud, cr1y out; and [b]the cries of the reapers have reached the ears of the Lord of *Sabaoth. 5 You have lived on the earth in pleasure and *luxury; you have *fattened your hearts *as in a day of slaughter. 6 You have condemned you have murdered the just; he does not resist you.

Be

Patient and Persevering

[7]Therefo be patient, brethren, until the coming of the Lord. See *how* the farmer waits for the precious fruit of the earth, waiting patiently for it until it receives the early and latter rain. [8]You also be patient.

Establish your hearts, for the coming of the Lord *is at hand.

[9]Do not *grumble against one another, brethren, lest you be *condemne Behold, the Judge is standing at the door! [10][a]My brethren, take the prophets, who spoke in the name

of the Lord, as an example of suffering and [b]patience. [11]Indeed [a]we count them blessed who [b]endure. You have heard of [c]the perseveran of Job and seen [d]the end *intended by* the Lord — that [e]the Lord is very compassion and merciful.

[12]But above all, my brethren, [a]do not swear, either by heaven or by earth or with any other oath. But let your "Yes" be "Yes," and *your* "No," "No," lest you fall into *judgment.

Meeting Specific Needs

[13]Is anyone among

you suffering? Let him [a]pray. Is anyone cheerful? [b]Let him sing psalms. [14]Is anyone among you sick? Let him call for the elders of the church, and let them pray over him, [a]anointing him with oil in the name of the

Lord. 15And the prayer of faith will save the sick, and the Lord will raise him up. [a]And if he has committed sins, he will be forgiven. 16[*]Confess *your* trespasses to one another, and pray for one another, that you may be healed. [a]The effective, [*]fervent prayer of a righteous man avails much. [17]Elijah was a man [a]with a nature like ours, and [b]he prayed earnestly that it would not rain; and it did not rain on the land for three years and six months. [18]And he prayed [a]again, and the heaven gave rain, and the earth produced its fruit.

Bring Back the Erring One

[19]Brethre if anyone among you wanders from the truth, and someone [a]turns him back, [20]let him know that

he who turns a sinner from the error of his way [a]will save [*]a soul from death and [b]cover a multitude of sins.

PR
for
SP
WA

EF
FE
PR

Jar
5:1
tea
eff
fer
pra
of

a
rig
ma
ava
mu
Th
is
a
pla
we
mu
be
to
rel
pra
tha
pro
res
It
is
cal
rig
sta
wit
Go
I
hav
do
a
wo
stu
on
thi
pas
Let
loo
at
the
def

Ba
on
the
def
abo
we
car
sur
up
Jar
5:1
by
say
tha
our
pra
mu
rel
pov
tha

has
inf
ben
and
adv
to
pro
res
Th
op
of
rel
eff
pra
is
pra
am
So
we
tak
pra
am
lig
It
is
a
ser
sin
in
the
eye
of
Go
Th
wo
am
is
kal
in
the
Gr

an
it
lit
me
to
pra
evi
pra

Oh
ho
we
ha
mi
thi
scr
in
the

chu
Ma
wo
say
tha
thi
scr
me
tha
we
do
no
hav
wh
we
nee
bee
we
hav
no
ask
for
it.
No
so!
Th
ver
act
me
tha
we
hav
bee
ask
bu
we
are
ask
out
of
the

wil of Go Th Bib doe say tha the Lor wil giv us the des of our hea but Go gav me a spe rev abo thi (Se Psa 37

Wh I wa firs sav I had an exp wit

the
Lo
co
thi
Go
wa
ans
my
pra
so
qu
tha
I
wa
act
co
I
ap
His
lov
an
all
He
di
fo
me
bu
I
di
no
kn
any
els
fo
wh
He
wa
mo
as
He
wa

mo
for
me
On
day
I
ask
Go
wh
He
wa
mo
on
my
bel
as
He
wa

Go
tol
me
tha
He
app
ho
I
had
giv
up
eve
for
Hi
Th
wa
no
a
per
pla
or
thi

tha
I
wo
not
hav
giv
up
for
Go
I
me
Jes
an
it
flip
eve
scr
in
my
life
I
wis
tha
I
cou
bot
wh
I
felt
an
giv
it
aw
Pe
di
not
un
an
gue
wh
—

it di no ma Go we on to tel me tha wh I ha giv up eve He too the des of tho thi aw fro me an rep the wit His des He sai to me “Y see wh I

ans
yo
pra
I
am
onl
ans
My
wi
for
yo

Th
rev
has
nev
lef
my
hea
I
hav
sin
the
pra
tha
Go
wo
rer
any
des
fro
my
hea
tha
do
no
lin
up
wi
His
wi

for my life I car to gri wi the fac tha Go kn wh is bes for me Wh the Wo say tha He giv us the des of our hea it has a dec me to me Go doe no jus ans the pra tha are alr in my hea He ren any tha is no His wi for me anc lite *giv me the des* of my hea It is as tho Go is ans His ow pra for me

Th
is
per
pra
—
the
per
wil
of
Go

Pra
am
has
no
to
do
wit
a
lac
of
pra
it
is
abo
wr
pra
Th
Gr
wo
kal
als
me
to
pra
pra
tha
are
dis
gri
and

sic
in
the
eye
of
Go
In
wa
pra
and
int
we
car
pra
hap
“Ar
wa
the
wi
blo
is
coo
wit
me
pra
are
no
coo
wit
Go
Th
wil
ser
the
wr
bre
ou
wa

Go
is

bri
res
to
int
pra
in
the
las
da
esp
in
Am
Ou
of
thi
int
pra
mo
pra
wa
wi
be
bi
Be
pe
be
int
the
mu
firs
de
a
hea
rel
wi
Go
Th
wi
pro
pra
liv

tha
wi
no
be
sic
an
dis
in
the
ey
of
Go
Pe
mu
sp
en
tim
wi
Go
to
be
ab
to
kn
wh
He
lik
an
dis
Af
thi
the
ca
be
pra
wa
an
be
rel
to
the

fro
lin
Ge
sp
pr
wa
mu
be
se
dis
an
ma
10
co
the
is
al
the
ex
to
the
rul
in
Go
He
ca
rai
a
pr
wa
fro
the
dir
Th
is
all
we
are
an

SH
yo
SW

SH
YO
SW
TO
PR
FO
HE

Re
Ja
5

Th
Ho
Sp
giv
the
gif
of
hea
to
the
chu
for

mi
Go
po
to
hea
the
sic
(1
Co
12
Th
gif
of
hea
ref
to
ma
kin
of
hea
—
phy
em
me
an
spi
Jan
ins
us
to
hav
the
eld
pra
for
the
sic
an
the
wit
oil

(Ja 5:1 Th Scr anc wit oil rep the out of the Ho Spi upo a per life

Th is a pov anc to hea in the nar of Jes Wh the lan ma wa hea in Act 3, Pet

sai
“H
na
thr
fai
in
His
na
has
ma
thi
ma
str
wh
you
see
and
kn
Yes
the
fai
wh
co
thr
Hi
has
giv
hi
thi
pe
sou
in
the
pre
of
you
all
(v.
16
Wh
ad

the
rel
lea
in
Ac
4:1
Pet
aga
em
the
po
of
Jes
nar
to
hea

Lis
the
sic
pe
wh
yo
ne
to
pra
in
the
Sp
for
an
wh
ne
the
eld
to

an
the
wi
oil
Wr
a
bri
pra
ne
to
ea
na
for
he

Prayer	Name of sick person
____________	1. ____________
____________	2. ____________
____________	3. ____________

Th Ho Spi wi pro yo bo to pra for the sic and to see ou the gif of hea He wi als giv yo the gif of hea if yo hav fai to bel tha He can

Wh a

sic per enc the Ho Spi he or she wil be led by the Spi to the eld for pra and and in oil Suc pra in Jes nar stir up fai bot in the chu and in the sic to

tru
the
Ho
Sp
to
he
Wh
yo
ar
sic
do
yo
as
fo
pr
an
se
the
he
po
of
the
Ho
Sp
to
to
yo
Ar
yo
ac
bu
yo
fai
to
be
th
Go
wi
an
yo
wi

His
gif
of
hea
*

James
1

[1:
a.
Ac
12

[1:
a.
Ac
5:4

[1:
b.
1
Pe

1:6

[1:
a.
Ro
5:3
5

[1:
*
enc
or
per

[1:
*
ma

[1:
a.
1
Kin
3:9
Jan
3:1

[1:
b.
Pro
2:3
6;
Ma

7:7

[1:
c.
Jer
29

[1:
a.
(M
11
24
Ac
10

[1:
a.
Jan
4:8

[1:
a.
Jol
14

[1:
a.
Jol
5:1
Lul
6:2
He

10
Ja
5:1
(1
Pe
3:1
4:1

[1:
b.
(1
Co
9:2

[1:
c.
Ma
10

[1:
a.
Jo
15
Ps.
7:1
Is.
59

[1:
b.
(R
5:1
6:2

[1:
a.
Jol
3:2

[1:
b.
Nu
23

[1:
a.
Jol
1:1

[1:
b.
2
Co
6:7
1
Th
2:1
2
Tir
2:1
(1
Pet
1:3
23)

[1:

c.
(E
1:1
13
He
12
Re
14

[1:
a.
Pr
10
17

[1:
b.
Pr
14
16
Ec
7:9

[1:
*
NU
Kn
thi
or
Th
yo
kn

[1:

a.
Co
3:8

[1:
b.
Ac
13

[1:
*
abu

[1:
a.
Ma
7:2
28
Lu
6:4
49
(Ro
2:1
Ja
1:2
25
2:1
20

[1:
a.
Lu
6:4

[1:
a.
(Jo
8:3
Ro
8:2
2
Co
3:1
Ga
2:4
6:2
Ja
2:1
1
Pe
2:1

[1:
b.
Jo
13

[1:
a.
Ps.
34

[1:
*
NU
om
am
you

[1:
a.
Ma
25
36

[1:
b.
Is.
1:1

[1:
c.
(Ro
12

James
2

[2:
a.
Ac
7:2
1
Co
2:8

[2:
b.
Lev
19

[2:
*
bri

[2:
*
vile

[2:
*
Lit
loo
upo

[2:
*
dif

[2:
a.
Jo
34
Jo
7:4
1
Co
1:2

[2:
b.
Lu
12

1
Ti
6:1
Re
2:9

[2:
c.
Ex
20

[2:
a.
1
Co
11

[2:
b.
Ac
13

[2:
a.
Ac
11
1
Pe
4:1

[2:
a.

Lev
19

[2:
a.
Lev
19
De
1:1

[2:
*
Lit
rec
the
fac

[2:
a.
Ga
3:1

[2:
b.
De
27

[2:
a.
Ex
20
De
5:1

[2:
b.
Ex
20
De
5:1

[2:
a.
Ja
1:2

[2:
a.
Jo
22

[2:
b.
Pr
21
Ma
18
35
(Lu
6:3

[2:
c.
Mi
7:1
(M

5:7

[2:

d.

Ro

12

[2:

a.

Ma

7:2

23

26

21

32

[2:

a.

Ma

25

Lu

3:1

[2:

a.

(1

Jo

3:1

18

[2:

a.

Co
1:6
1
Th
1:3
He
6:1

[2:
b.
(Ga
5:6
Jar
3:1

[2:
*
NU
om
you

[2:
*
NU
om
my

[2:
*
NU
use

[2:
a.
Ge
22
10
12
16
18

[2:
a.
(Jo
6:2
He
11

[2:
b.
Jo
8:3

[2:
*
co

[2:
a.
Ge
15
Ro
4:3

[2:
b.
2
Ch
20
Is.
41

[2:
*
cre

[2:
a.
He
11

James
3

[3:
a.
(M
23
Ro
2:2
1
Tir
1:7

[3:
b.
Lul
6:3

[3:
a.
1
Ki
8:4

[3:
b.
Ps.
34

[3:
c.
(M
12
37
Ja
3:2
12

[3:
*
ma

[3:
a.
Ps.
32

[3:

*
NU
No
if

[3:
a.
Pro
12
15
Ja
1:2

[3:
b.
Ps.
12
73

[3:
a.
Ps.
12
3;
Pro
16

[3:
b.
(M
12
15
18)

[3:
*
un

[3:
*
exi

[3:
*
Gr.
Ge

[3:
a.
Ps.
14
Ec
10
Ro
3:1

[3:
a.
Ge
1:
5:1
9:
1
Co
11

[3:
*
like

[3:
a.
Ma
7:1
20

[3:
*
NU
Ne
car
a
sal
spr
pro
fre
wa

[3:
a.
Ga
6:4

[3:
a.
Ro
13

[3:
b.
Ro
2:1

[3:
*
self
am

[3:
a.
Ph
3:1

[3:
a.
1
Co
3:3

[3:
a.
1
Co
2:6
7

[3:
b.

Ja
2:1

[3:
c.
Ro
12
2
Co
6:6
1
Pe
1:2

[3:
a.
Pr
11
Is.
32
Ho
10
Am
6:1
(G
6:8
Ph
1:1

James
4

[4:
a.
Ro
7:2

(Ga
5:1
1
Pe
2:1

[4:
*
bat

[4:
*
bat

[4:
*
NU
M
om
Ye

[4:
a.
Jol
27
9

[4:
b.
(Ps
66

[4:
a.
Ro
8:7
1
Jol
2:1

[4:
b.
Ga
1:4

[4:
*
NU
om
Ad
an

[4:
a.
Ge
6:5

[4:
a.
Jol
22
Ps.
13
Pro
3:3
Ma

23
1
Pe
5:5

[4:
a.
(E
4:2
6:1
1
Pe
5:8

[4:
a.
2
Ch
15
Ze
1:3
Ma
3:7
He
7:1

[4:
b.
Jo
17
Is.
1:1
1
Ti
2:8

[4:
c.
Jer
4:1
Jar
3:1
1
Pet
1:2
1
Jol
3:3

[4:
a.
Ma
5:4

[4:
a.
Jol
22
Lul
14
18
1
Pet
5:6

[4:
a.
2
Co
12

Ep
4:3
Ja
5:9
1
Pe
2:1
3

[4:
b.
(M
7:1
5);
Ro
14

[4:
a.
(M
10

[4:
b.
Ro
14

[4:
*
NU
ad
an
Ju

[4:
*
NU
M
Bu
wh

[4:
*
NU
a
nei

[4:
*
M
let
us

[4:
a.
Jol
7:7
Ps.
10
1
Pet
1:2

[4:
a.
Ac

18
1
Co
4:1

[4:
a.
1
Co
5:6

[4:
a.
(Lu
12
Jo
9:4
2
Pe
2:2

James 5

[5:
a.
Pr
11
(Lu
6:2
1
Ti
6:9

[5:

a.
Jer
17
Ma
6:1

[5:
b.
Jol
13

[5:
*
hav
rot

[5:
a.
Ro
2:5

[5:
a.
Lev
19
Jol
24
Jer
22
Ma
3:5

[5:
b.
Ex
2:2
De
24
Jo
31

[5:
*
Lit
in
He
Ho

[5:
*
ind

[5:
*
Lit
no

[5:
*
NU
om
as

[5:

*
has
dra
nea

[5:
*
Lit
gro

[5:
*
NU
M
jud

[5:
a.
Ma
5:1

[5:
b.
He
10

[5:
a.
(Ps
94
Ma
5:1

Jan
1:2

[5:
b.
(Ja
1:1

[5:
c.
Jol
1:2
22,
2:1

[5:
d.
Jol
42

[5:
e.
Nu
14

[5:
a.
Ma
5:3
37

[5:
*
M
hyp

[5:
a.
Ps.
50
15

[5:
b.
Ep
5:1

[5:
a.
Ma
6:1
16

[5:
a.
Is.
33

[5:
a.
Nu
11

[5:
*

NU
Th
co
yo
sin

[5:
*
su

[5:
a.
Ac
14

[5:
b.
1
Ki
17
18

[5:
a.
1
Ki
18
42

[5:
a.
Ma
18
Ga
6:1

[5:
a.
Ro
11
1
Co
1:2
Jar
1:2

[5:
b.
Pro
10
(1
Pet
4:8

[5:
*
NU
his
sou

The
Ho
Spi

Wo
in

1
&
2
PE

Int

Th
Ho
Sp
Pre
and
Em
Us
for
Sp
Wa

Pe
let
ins
tha
the
go
has
be
pre
in
the
po
of
the
Ho
Sp
wi
an
lo
on

to
all
tha
we
do
wi
wo
He
fur
ass
tha
Ch
Hi
wa
rai
fro
the
dea
by
the
po
of
the
Ho
Spi
(1
Pe
3:1

Th
sa
po
Spi
co
an
co
ov
us
wh
we
suf

for
the
sak
of
the
gos
(1
Pet
4:1
Bel
sho
rej
and
be
hap
wh
the
suf
for
Ch
sak
Th
Ch
wo
suf
for
us
and
tha
we
wo
als
suf
for
His
sak
wa
kno
by
the
pro

of
old
(1
Pet
1:1
2
Pet
1:2

Th
Ho
Spi
str
His
pe
in
the
mi
of
suf
for
Ch
sak
fill
the
wi
the
joy
of
suf
wi
Hi

1 Peter

1 Peter 1

Greeting to the Elect Pilgrims

1 Peter, an apostle of Jesus Christ,

To the [*]pilgrims [a]of the Dispersion in Pontus, Galatia, Cappadocia Asia, and Bithynia, 2 [a]elect [b]according to the foreknowle o1f God the Father, [c]in sanctificati of the Spirit, for [d]obedience and [e]sprinkling of the blood of Jesus Christ:

[f]Grace to you and peace be multiplied.

A Heavenly Inheritance

3 [a]Blessed *be* the God and Father of our Lord Jesus

Christ, who [b]according to His abundant mercy [c]has begotten us again to a living hope [d]through the resurrectio of Jesus Christ from the dead, 4 to an inheritance [*]incorrupti and undefiled and that does not fade away, [a]reserved in heaven for you, 5[a]who are kept by the power of God through faith for salvation ready to be revealed in the last time.

6[a]In this you greatly rejoice, though now [b]for a little while, if need be, [c]you have been [*]grieved by various trials,

[7]that [a]the genuinenes of your faith, *being* much more precious than gold that perishes, though [b]it is tested by fire, [c]may be found to praise, honor, and glory at the revelation of Jesus Christ, [8][a]whom having not [*]seen you love. [b]Though

now you do not see *Him,* yet believing, you rejoice with joy inexpressib and full of glory, [9]receiving the end of your faith — the salvation of *your* souls.

[10]Of this salvation the prophets have inquired and searched carefully, who prophesied

of the grace *that would come* to you, [11]searching what, or what manner of time, [a]the Spirit of Christ who was in them was indicating when He testified bef1orehan the sufferings of Christ and the glories that would follow. [12]To them it was revealed that, not to themselves but to *us they were ministering the things which now have been reported to you through those who have preached the gospel to you by the Holy Spirit sent from heaven — things which

[a]angels desire to look into.

Living Before God Our Father

[13]Therefo gird up the loins of your mind, be sober, and rest *your* hope fully upon the grace that is to be brought to you at the revelation of Jesus Christ;

14 as obedient children, not [a]conformin yourselves to the former lusts, *as* in your ignorance; 15 [a]but as He who called you *is* holy, you also be holy in all *your* conduct, 16 because it is written, [a]“Be holy, for I am holy.”

17 And

if you call on the Father, who [a]without partiality judges according to each one’s work, conduct yourselves throughout the time of your *stay *here* in fear; [18]knowing that you were not redeemed with *corruptible things, *like* silver or gold, from your aimless conduct *received* by tradition from your fathers, [19]but [a]with the precious blood of Christ, [b]as of a lamb without blemish and without spot. [20][a]He indeed was foreordaine before the foundation of the world, but was [*]manifest [b]in these last times for you [21]who through Him believe in God, [a]who raised Him from the dead and [b]gave Him glory, so that your faith and hope are in God.

The Enduring Word

[22]Since you [a]have

purified your souls in obeying the truth *through the Spirit in *sincere [b]love of the brethren, love one another fervently with a pure heart, 23 [a]having been born again, not of *corruptibl seed but *incorrupti [b]through the word of God which lives

and
abides
*forever,
24 because

[b]Now this is the word which by the gospel was preached to you.

1 Peter 2

[1]Therefo [a]laying aside all malice, all deceit, hypocrisy, envy, and all evil speaking, [2][a]as newborn babes, desire the pure [b]milk of the

word, that you may grow [*]thereby, [3]if indeed you have [a]tasted that the Lord *is* gracious.

The Chosen Stone and His Chosen People

[4]Coming to Him *as to* a living stone, [a]rejected indeed by men, but chosen by God *and* precious,

[5]you also, as living stones, are being built up a spiritual house, a holy priesthood, to offer up spiritual sacrifices acceptable to God through Jesus Christ. [6]Therefore it is also contained in the Scripture,

[7]Therefo to you who believe, *He is* precious; but to those who *are disobedien

[8]and

[b]They stumble, being disobedien to th1e word, [c]to which they also were appointed.

[9]But you *are* a chosen generation a

royal priesthood, a holy nation, His own special people, that you may proclaim the praises of Him who called you out of [a]darkness into His marvelous light; 10 [a]who once *were* not a people but *are* now the people of God, who had not obtained mercy but now have obtained mercy.

Living Before the World

[11]Belove I beg *you* as sojourners and pilgrims, abstain from fleshly lusts [a]which war against the soul, [12][a]having your conduct honorable among the Gentiles, that when they speak

against you as evildoers, [b]they may, by *your* good works which they observe, glorify God in the day of visitation.

Submissio to Government

13 [a]Theref submit yourselves to every *ordinance of man for the Lord’s sake, whether to the king as supreme,

[14]or to governors, as to those who are sent by him for the punishmen of evildoers and *for the* praise of those who do good. [15]For this is the will of God, that by doing good you may put to silence

the ignorance of foolish men—

16[a]as free, yet not [b]using liberty as a cloak for [*]vice, but as bondservan of God. 17Honor all *people.* Love the brotherhoo Fear [a]God. Honor the king.

Submissio to Masters

18[a]Servan *be* submissive to *your*

masters with all fear, not only to the good and gentle, but also to the harsh. [19]For this *is* [a]commenda if because of conscience toward God one endures grief, suffering wrongfully [20]For [a]what credit *is it* if, when you are beaten for your faults, you take it patiently? But when you do good and suffer, if you take it patiently, this *is* commendabl before God. [21] For [a]to this you were called, because Christ also suffered for [*]us, [b]leaving [*]us an example, that you should follow His steps:

23[a]who, when He was reviled, did not revile in return; when He suffered, He did not threaten, but [b]committed *Himself* to Him who judges righteously

24[a]who Himself bore our sins

in His own body on the tree, [b]that we, having died to sins, might live for righteousne — [c]by whose *stripes you were healed. 25For [a]you were like sheep going astray, but have now returned [b]to the Shepherd and *Overseer of

your
souls.

PR
for
SP
WA

TH
RE
OF
YO
EN

Wh
you
wa
to
cal
hin
—
Sat
Luc
the
big
red
fell
or
jus
the
pla
old
dew
—
un
thi
fac
He
is
rea

He no a litt rec car cha wit poi ear a poi tai and a pit He is far mo sin and dia tha tha Sat is ali and we and he see to des you Fir Pet 5:8 say “Yo

adv
the
dev
wa
abo
like
a
roa
lio
see
wh
he
ma
dev

Eve
wit
Ch
cir
ma
too
are
che
to
ign
hir
and
act
as
if
he
doe
exi
and
you
kno
wh
Th
exa
wh
he

des He kn the mo cov he is, the mo eff he ca be.

On of the gre tra of ou day is tha mu of the ch is fill wi pe wh on wa to bel the po of

the
Bib
tha
ma
the
cor
Th
wh
sco
at
the
exi
of
a
lite
dev
sur
tha
to
bel
in
suc
a
bei
is
illo
and
un
Bu
the
que
mu
be
ask
Ho
els
car
we
exp
the
mo

an
spi
aby
tha
ou
soc
ha
plu
int
Ho
ca
we
jus
the
hu
of
mi
of
liv
tha
ha
bec
wr
rol
an
rui
by
wa
an
far
Wh
abo
the
Ho
or
the
bo
of
the
Wo
Tra

Cer
Ev
tim
a
chi
is
abu
a
wo
rap
or
so
pe
be
of
the
co
of
the
ski
it
fu
rei
the
rea
of
an
exi
de

Sa
an
his
de
are
co
wi
inf
an
aff
the

ind
live
of
eve
peo
Th
lon
I've
live
the
mo
I've
con
to
rea
tha
the
dev
has
a
sch
but
Go
has
a
pla
Sat
wil
and
is
don
eve
he
can
do
to
thw
the
pla
of
Go

for
yo
life
Sat
do
jus
ha
the
wo
he
ha
yo
Th
ha
the
de
op
in
is
so
vo
an
int
tha
it
rea
de
log
It’s
ha
to
im
tha
the
is
su
a
bei
tha
ha
abs

no rec qua wh Sat is pu evi He exi an is sup de to his un cau

I wa to say thi wi gre co an cla Sat is yo adv He is mo tha jus an en of

Go
the
chu
or
the
pas
Sat
is
you
per
adv
and
you
wi
nev
hav
a
gre
foe
tha
the
dev
Pet
cal
hi
“Y
adv
the
dev
Yo
des
in
thi
life
and
you
ete
pos
in
the
life

to
cor
gre
hin
on
yo
un
of
the
dev
As
yo
gai
ins
int
Sat
sch
yo
wo
be
fill
wi
fea
an
dre
yo
wi
be
fill
wi
fai
an
vic
Th
is
no
ne
for
yo
to
fea

the
dev
Th
mo
yo
un
hi
the
les
yo
wi
fea
hi
In
fac
Sat
gre
fea
is
tha
he
wi
be
fou
ou
to
be
the
los
he
rea
is.

Wh
Go
ha
Sat
lo
an
any
an

any
Go
lov
Sat
hat
Sat
un
the
pre
of
Go
an
kn
firs
the
po
of
wo
He
wa
gra
ac
to
the
glo
of
Go
bas
on
wo
An
he
kn
tha
ou
tic
int
Go
glo
pre
is

wo
as
we
Sat
cor
tha
the
is
inc
po
ma
ava
to
wo
Ha
you
eve
no
ho
mu
fri
car
cor
int
a
chu
ove
wo
Th
dev
sov
inc
div
and
cor
as
sty
and
ger
of
mu

are
oft
hea
del
wit
Ch
cir
Th
fac
is,
if
pe
are
qu
an
fre
ov
mu
sty
the
are
no
wo
Wh
pe
are
no
wo
the
are
de
ac
to
Go
pre
Sa
kn
tha
rea
ch
an

tot
vic
are
fou
onl
in
the
pre
of
the
Lor
He
und
wh
he
kee
us
fro
wo
he
der
us
our
vic

1
Peter
3

Submissio

to Husbands

[1]Wives, likewise, *be* [a]submissive to your own husbands, that even if some do not obey the word, [b]t1hey, without a word, may [c]be won by the conduct of their wives, [2][a]when they observe your chaste conduct *accompanie* by fear.

[3][a]Do not let your adornment be *merely* outward—arranging the hair, wearing gold, or putting on *fine* apparel—[4]rather *let it be* [a]the hidden person of the heart, with the [*]incorrupti *beauty* of a gentle and quiet spirit, which

is very precious in the sight of God. [5]For in this manner, in former times, the holy women who trusted in God also adorned themselves being submissive to their own husbands, [6]as Sarah obeyed Abraham, [a]calling him lord, whose daughters you are if you do good and are not afraid with any terror.

A Word to Husbands

7 [a]Husbar likewise, dwell with *them* with understand giving honor to the wife, [b]as to the weaker vessel, and as *being* heirs together of the grace

of life, [c]that your prayers may not be hindered.

Called to Blessing

[8]Finally, all *of you be* of one mind, having compassio for one another; love as brothers, *be* tenderhear *be* [*]courteous; [9][a]not returning evil for evil or reviling for reviling,

but on the contrary [b]blessing, knowing that you were called to this, [c]that you may inherit a blessing. 10For

Suffering for Right and Wrong

13[a]And who *is* he who will harm you if you become followers of what is good? 14[a]But even if you should suffer for righteousne sake, *you are* blessed. [b]“And do not be afraid of their threats, nor be troubled.” 15 But [*]sanctify [*]the Lord God in your hearts, and always [a]*be* ready to *give* a defense to everyone who asks you a reason for the [b]hope that is in you, with meekness and fear; 16 [a]having a good conscience, that when they defame you as evildoers, those who revile your good conduct in Christ may be ashamed. 17 For *it is* better, if it is the will of God, to suffer for doing good than for doing evil.

Christ's Suffering and Ours

[18]For Christ also suffered once for sins, the just for the unjust, that He might bring *us to God, being put to death in the flesh but made

alive by the Spirit, [19]by whom also He went and preached to the spirits in prison, [20]who formerly were disobedien *when once the Divine longsufferi waited in the days of Noah, while *the* ark was being prepared, in which a few, that is, eight souls, were saved through water. [21][a]There is also an antitype which now saves us — baptism [b](not the removal of the filth of the flesh, [c]but the answer of a good conscience toward God), through the resurrectio of

Jesus Christ, [22]who has gone into heaven and [a]is at the right hand of God, [b]angels and authorities and powers having been made subject to Him.

1 Peter 4

[1]Therefo since Christ suffered [*]for us in the flesh, arm yourselves

also with the same mind, for he who has suffered in the flesh has ceased from sin, [2]that he no longer should live the rest of *his* time in the flesh for the lusts of men, [a]but for the will of

God. [3]For we *have spent* enough of our past *lifetime in doing the will of the Gentiles—when we walked in lewdness, lusts, drunkennes revelries, drinking parties, and abominable idolatries. [4]In regard to these, they think it strange that you do not run with *them* in the same flood of dissipation speaking evil of *you.* 5They will give an account to Him who is ready [a]to judge the living and the dead. 6For this reason [a]the gospel was preached also to those who are dead, that they might be judged according to men in the flesh, but [b]live according to God in the spirit.

Serving for God's Glory

7But [a]the end of all things is at hand; therefore be serious and watchful in your prayers. [8]And above all things have fervent love for one another, for [a]“love will cover a multitude of sins.” [9][a]*Be* hospitable to one another [b]without grumbling. [10][a]As each one has received a gift, minister it to one another, [b]as good stewards of [c]the manifold grace of Go1d. [11][a]If anyone speaks, *let him speak* as the [*]oracles of God. If anyone ministers, *let him do it* as with the ability which God supplies, that [b]in all things God may be glorified through Jesus Christ, to whom belong the glory and the *dominion forever and ever. Amen.

Suffering for God’s Glory

[12]Belove do not think it strange concernin the fiery trial which is to try you, as though some strange thing happened to

you; 13 but rejoice [a]to the extent that you partake of Christ’s sufferings, that [b]when His glory is revealed, you may also be glad with exceeding joy. 14 If you are [*]reproache for the name of Christ, [a]blessed *are you,* for the Spirit of glory and of God rests upon you. [*]On their part He is blaspheme [b]but on your part He is glorified. [15]But let none of you suffer as a murderer, a thief, an evildoer, or as a [*]busybody in other people's matters. [16]Yet if *anyone suffers* as a Christian, let him not be ashamed, but let him glorify God in this *matter.

17For the time *has come* [a]for judgment to begin at the house of God; and if *it begins* with us first, [b]what will *be* the end of those who do not obey the gospel of God? [18]Now

[19]Therefo let those who suffer according to the will of God [a]commit their souls *to Him* in doing good, as

to a faithful Creator.

1 Peter 5

Shepherd the Flock

[1]The elders who are among you I exhort, I who am a fellow elder and a [a]witness of the sufferings of Christ, and also a partaker of the [b]glory that

will be revealed: 2[a]Shepherd the flock of God which is among you, serving as overseers, [b]not by compulsion but [*]willingly, [c]not for dishonest gain but eagerly; 3nor as [a]being [*]lords over [b]those entrusted to you, but [c]being examples to the flock;

[4]and when [a]the Chief Shepherd appears, you will receive [b]the crown of glory that does not fade away.

Submit to God, Resist the Devil

[5]Likewise you younger people, submit yourselves to *your* elders. Yes, [a]all of *you* be submissive to one

another, and be clothed with humility, for

[6]Therefo humble yourselves under the mighty hand of God,

that He may exalt you in due time, [7]casting all your care upon Him, for He cares for you.

[8]Be *sober, be *vigilant; *because your adversary the

devil walks about like a roaring lion, seeking whom he may devour. [9]Resist him, steadfast in the faith, knowing that the same sufferings are experience by your brotherhoo in the world. [10]But [*]may the God of all grace, [a]who called [*]us to His eternal glory by Christ Jesus, after you have suffered a while, *perfect, establish, strengthen, and settle *you.* 11 [a]To Him *be* the glory and the dominion forever and ever. Amen.

Farewell and Peace

12 By [a]Silvanus, our faithful brother as I consider him, I have written to you briefly, exhorting and testifying [b]that this is the true grace of God in which you stand.

13 She

who is in Babylon, elect together with *you,* greets you; and *so does* [a]Mark my son. [14]Greet one another with a kiss of love.

Peace to you all who are in Christ Jesus. Amen.

1 Peter 1

[1:

a.
Jo
7:3
Ja
1:1

[1:
*
soj
te
res

[1:
a.
Ep
1:4

[1:
b.
(R
8:2
1
Pe
1:2

[1:
c.
2
Th
2:1

[1:

d.
Ro
1:5

[1:
e.
Is.
52
He
10
12

[1:
f.
Ro
1:7

[1:
a.
Ep
1:3

[1:
b.
Ga
6:1
Tit
3:5

[1:
c.
(Jo

3:3
5)

[1:
d.
1
Co
15
1
Pe
3:2

[1:
a.
Co
1:5

[1:
*
im

[1:
a.
Jo
10
(P
4:7

[1:
a.
Ma
5:1

[1:
b.
2
Co
4:1

[1:
c.
Jan
1:2
1
Pe
4:1

[1:
*
dis

[1:
a.
Jan
1:3

[1:
b.
Joh
23

[1:
c.
(Ro
2:7

[1:
a.
1
Jo
4:2

[1:
b.
Jo
20

[1:
*
M
kn

[1:
a.
2
Pe
1:2

[1:
a.
Ep
3:1

[1:
*
NU

M
you

[1:
a.
(Ro
12
1
Pet
4:2

[1:
a.
(2
Co
7:1

[1:
a.
Le
11
45
19
20

[1:
a.
Ac
10

[1:
*

soj
dw
as
res
ali

[1:
*
per

[1:
a.
Ac
20
1
Pet
1:2

[1:
b.
Ex
12
Is.
53

[1:
a.
Ro
3:2

[1:
b.

Ga
4:4

[1:
*
rev

[1:
a.
Ac
2:2

[1:
b.
Ac
2:3

[1:
a.
Ac
15

[1:
b.
Jo
13
Ro
12
He
13
1
Pe

2:1
3:8

[1:
*
NU
om
thr
the
Spi

[1:
*
Lit
unl

[1:
a.
Jol
1:1

[1:
b.
1
Th
2:1
Jar
1:1

[1:
*
per

[1:
*
imp

[1:
*
NU
om
for

[1:
a.
Is.
40
8;
Jar
1:1

[1:
*
NU
its
glo
as

[1:
a.
Is.
40

[1:
b.

(Jo
1:1

[1:
*
spo
wo

1
Peter
2

[2:
a.
He
12

[2:
a.
(M
18
19
Ma
10
Lu
18
1
Co
14

[2:
b.
1
Co
3:2

[2:
*
NU
add
up
to
sal

[2:
a.
Ps.
34
Tit
3:4
He
6:5

[2:
a.
Ps.
11

[2:
a.
Is.
28
Ro
9:3
33
10
1
Pet
2:8

[2:
a.
Ps.
11
Ma
21
Lu
2:3

[2:
*
NU
dis

[2:
a.
Is.
8:1

[2:
b.
1
Co
1:2
Ga
5:1

[2:
c.
Ro
9:2

[2:
a.
Is.
9:2
42
(A
26
2
Co
4:

[2:
a.
Ho
1:
10
2:2
Ro
9:2
10

[2:
a.
(R
8:1
Ga
5:1
Ja
4:1

[2:
a.
2
Co

8:2
Ph
2:1
Tit
2:8
1
Pe
2:1
3:1

[2:
b.
Ma
5:1
9:8
Jo
13
1
Pe
4:1
16

[2:
a.
Ma
22

[2:
*
ins

[2:
a.
Ro

6:1
20
22
1
Co
7:2
(Ga
5:1

[2:
b.
Ga
5:1

[2:
*
wi

[2:
a.
Pro
24

[2:
a.
Ep
6:5
8

[2:
a.
Ma

5:1

[2:
a.
Lu
6:3
34

[2:
a.
Ma
16
1
Th
3:3
4

[2:
b.
(1
Jo
2:6

[2:
*
NU
yo

[2:
*
NU
M

yo

[2:
a.
Is.
53
2
Co
5:

[2:
a.
Is.
53
He
12
1
Pe
3:

[2:
b.
Lu
23

[2:
a.
Is.
53
11
1
Co
15
(1

9:2

[2:
b.
Ro
7:6

[2:
c.
Is.
53

[2:
*
wo

[2:
a.
Is.
53
6

[2:
b.
Is.
40
(Ez
34
Ze
13

[2:
*
Gr.
Ep

1
Peter
3

[3:
a.
Ge
3:1
1
Co
14
Ep
5:2
Co
3:1

[3:
b.
1
Co
7:1

[3:
c.
Ma
18

[3:
a.
1

Pet
2:1
3:6

[3:
a.
Is.
3:1
1
Ti
2:9

[3:
a.
Ro
2:2

[3:
*
im

[3:
a.
Ge
18

[3:
a.
1
Co
7:3
(E

5:2
Co
3:1

[3:
b.
1
Co
12

[3:
c.
Jo
42

[3:
*
NU
hu

[3:
a.
(Pr
17

[3:
b.
Ma
5:4

[3:
c.
Ma
25

[3:
a.
Ps.
34
16

[3:
b.
Jar
1:2

[3:
*
res

[3:
a.
Ps.
37

[3:
b.
Ro
12

[3:
a.
Jo
9:3

[3:
a.
Pro
16

[3:
a.
Ja
1:1

[3:
b.
Is.
8:1

[3:
a.
Ps.
11

[3:
b.
(Ti
3:7

[3:
*
set
apo

[3:
*
NU
Ch
as
Lo

[3:
a.
1
Ti
1:5
He
13
1
Pet
3:2

[3:
*
NU
M
you

[3:
*
NU
M
wh

the
lon
of
Go
wa
pat

[3:
a.
Ac
16
Ep
5:2

[3:
b.
(Ti
3:5

[3:
c.
(Ro
10

[3:
a.
Ps.
11

[3:
b.
Ro

8:3
He
1:6

1
Peter
4

[4:
*
NU
om
for
us

[4:
a.
Jol
1:1

[4:
*
NU
tim

[4:
a.
Ac
10
Ro
14
2
Tir
4:1

[4:
a.
1
Pe
1:1
3:1

[4:
b.
(R
8:9
13
Ga
5:2

[4:
a.
Ro
13
He
9:2
Ja
5:8
9;
1
Jo
2:1

[4:
a.
(P
10
1
Co

13
Ja
5:

[4:
a.
1
Ti
3:
He
13

[4:
b.
2
Co
9:

[4:
a.
Ro
12
8

[4:
b.
Ma
24
1
Co
4:
2

[4:
c.
(1
Co
12

[4:
a.
Ep
4:

[4:
b.
(1
Co
10
Ep
5:

[4:
*
utt

[4:
*
so

[4:
a.
Ja
1:

[4:
b.
2
Ti
2:1

[4:
a.
Ma
5:1
Lu
6:2
Ac
5:4

[4:
b.
Ma
5:1

[4:
*
ins
or
rev

[4:
*
NU
om
the
res

of
v.
14

[4:
*
me

[4:
*
NU
na

[4:
a.
Is.
10

[4:
b.
Lu
10

[4:
a.
Pr
11

[4:
a.

Ps.
37
7;
2
Tin
1:1

[5:
a.
Ma
26

[5:
b.
Ro
8:1
18

[5:
a.
Jol
21
Ac
20

[5:
b.
1
Co
9:1

[5:
c.
1
Ti
3:3

[5:
*
NU
ad
ac
to
Go

[5:
a.
Ez
34
Ma
20

[5:
b.
Ps.
33

[5:
c.
Jo
13
Ph
3:1

1
Th
1:7
2
Th
3:9
1
Tir
4:1
Tit
2:7

[5:
*
ma

[5:
a.
Is.
40
Zec
13
He
13
1
Pet
2:2

[5:
b.
2
Tir
4:8

[5:
a.
Ro
12
Ep
5:

[5:
b.
Pro
3:
Ja
4:

[5:
c.
Is.
57

[5:
*
sel
co

[5:
*
wa

[5:
*
NU
M

om
bec

[5:
a.
1
Co
1:9
1
Th
2:1

[5:
*
NU
the
Go
of
all
gra

[5:
*
NU
M
you

[5:
*
NU
wil
per

[5:
a.
Re
1:6

[5:
a.
2
Co
1:1
1
Th
1:1
2
Th
1:1

[5:
b.
Ac
20

[5:
a.
Ac
12
25
15
39
Co
4:1
Ph
24

Peter

2 Peter 1

Greeting the Faithful

[1]Simon Peter, a bondservan and [a]apostle of Jesus Christ,

To those who have *obtained [b]like* precious faith with us by the righteousn of our God and Savior Jesus Christ:

[2][a]Grace and peace be multiplied

to you in the knowledge of God and of Jesus our Lord, 3 as His [a]divine power has given to us all things that *pertain* to life and godliness, through the knowledge of Him [b]who called us by glory and virtue, 4 [a]by which have been given to us exceedingl great and precious promises, that through these you may be [b]partakers of the divine nature, having escaped the *corruptio *that is* in the world through lust.

Fruitful Growth in the Faith

5 But also for this very reason, [a]giving all diligence, add to your faith virtue, to virtue [b]knowledge 6 to knowledge self-control, to

self-control *perseveran to perseveran godliness, [7]to godliness brotherly kindness, and [a]to brotherly kindness love. [8]For if these things are yours and abound, *you* will be neither *barren [a]nor unfruitful in the knowledge of our Lord Jesus Christ. [9]For he who lacks these things is [a]shortsighte even to blindness, and has forgotten that he was cleansed from his old sins.

[10]Therefo brethren, be even more diligent [a]to make your call and election sure, for if you do these things you will never

stumble; [11]for so an entrance will be supplied to you abundantly into the everlasting kingdom of our Lord and Savior Jesus Christ.

Peter’s Approachin Death

[12]For this reason [a]I will not be negligent to remind you always of these things, [b]though

you know and are established in the present truth. [13]Yes, I think it is right, [a]as long as I am in this [*]tent, [b]to stir you up by reminding *you*, [14][a]knowing that shortly I *must* [*]put off my tent, just as

[b]our Lord Jesus Christ showed me. 15Moreover I will be careful to ensure that you always have a reminder of these things after my [*]decease.

The Trustworthy Prophetic Word

16For we did not follow [a]cunningly devised fables when we made known to you the [b]power and [c]coming of our Lord Jesus Christ, but were [d]eyewitnes of His majesty. [17]For He received from God the Father honor and glory when such a voice came to Him from the Excellent Glory: [a]“This is My beloved Son, in whom I am well pleased.” 18And we heard this voice which came from heaven when we were with Him on [a]the holy mountain.

19[*]And so we have the prophetic word confirmed, which you do well to heed as a [a]light that shines in a dark place, [b]until [c]the day dawns and the morning star rises in your [d]hearts; [20]knowing this first, that [a]no prophecy of Scripture is of any private [*]interpretat [21]for [a]prophecy never came by the will of man, [b]but [*]holy men of God spoke *as they were* moved by the Holy Spirit.

2 Peter 2

Destructi Doctrines

[1]But there were also false prophets among the people, even as there will be [a]false teachers among you, who will

secretly bring in destructive heresies, even denying the Lord who bought them, *and* bring on themselves swift destruction [2]And many will follow their destructive ways, because of whom the way of truth will be blasphemed [3]By covetousne they will exploit you with deceptive words; for a long time their judgment has not been idle, and their destruction *does not slumber.

Doom of False Teachers

[4]For if God did not spare the angels who sinned, but cast *them* down [1]to *hell and delivered

them into chains of darkness, to be reserved for judgment; [5]and did not spare the ancient world, but saved Noah, *one of* eight *people,* a preacher of righteousne bringing in the flood on the world of the ungodly; [6]and turning the cities of [a]Sodom and Gomorrah into ashes, condemned *them* to destruction making *them* an example to those who afterward would live ungodly; 7and [a]delivered righteous Lot, *who was* oppressed by the filthy conduct of the wicked 8(for that righteous man, dwelling among them, [a]tormented *his* righteous soul from day to day by seeing and hearing *their* lawless deeds)—[9]*then* [a]the Lord knows how to deliver the godly out of temptation and to reserve the unjust under punishmen for the day of judgment, 10 and especially [a]those who walk according to the flesh in the lust of uncleannes and despise authority. [b]*They are* presumptuo self-willed. They are not afraid to speak evil of [*]dignitaries 11 whereas [a]angels, who are greater in power and might, do not bring a reviling accusation against them before the Lord.

Depravity of False Teachers

[12]But these, [a]like natural brute

beasts made to be caught and destroyed, speak evil of the things they do not understand and will utterly perish in their own corruption, 13[a]*and* will receive the wages of unrighteou as those who count it pleasure [b]to [*]carouse in the daytime. [c]*They are* spots and blemishes, [*]carousing in their own deceptions while [d]they feast with you, 14having eyes full of [*]adultery and that cannot cease from sin, enticing unstable souls. [a]They have a heart trained in covetous practices, *and are* accursed children. [15]They have forsaken the right way and gone astray, following the way of [a]Balaam the *son* of Beor, who loved the wages of unrighteou [16]but he was rebuked for his iniquity: a dumb donkey speaking with a man’s voice restrained the madness of the prophet.

[17][a]These are wells without water, *clouds carried by a tempest, for whom is reserved the blackness of darkness *forever.

Deception of False Teachers

[18]For when they speak great swelling *words* of emptiness, they allure through the

lusts of the flesh, through lewdness, the ones who *have actually escaped from those who live in error. [19] While they promise them liberty, they themselves are slaves of *corruption; [a]for by whom a person is overcome, by him also he is brought into [*]bondage. 20For if, after they [a]have escaped the pollutions of the world through the knowledge of the Lord and Savior Jesus Christ, they are [b]again entangled in them and overcome, the latter end is worse for them than the beginning. [21]For [a]it would have been better for them not to have known the way of righteousne than having known *it,* to turn from the holy commandm delivered to them. [22]But it has happened to them according to the true proverb:

[a]“A dog returns to his own vomit,” and, “a sow, having washed, to her wallowing in the mire.”

PR
for
SP
WA

TH
SC
OF
SA
AC

In
2
Pe
2,
the
ap
Pe
wa
the
pe

abo
fal
pro

Th
pre
of
a
fal
pro
is
on
wa
tha
sat
act
is
tak
pla
in
ou
wo
to
Th
sco
of
de
act
is
bot
bro
an
div
Am
the
are

2 Peter 3

God’s Promise Is Not Slack

[1]Beloved I now write to you this second epistle (in *both of* which [a]I stir up your pure minds by

way of reminder), [2]that you may be mindful of the words [a]which were spoken before by the holy prophets, [b]and of the commandm of [*]us, the apostles of the Lord and Savior, [3]knowing this first: that scoffers will come in the last days, [a]walking according to their own lusts, [4]and saying, “Where is the promise of His coming? For since the fathers fell asleep, all things continue as *they were* from the beginning of [a]creation.” [5]For this they willfully forget: that [a]by the word of God the heavens were of old, and the earth [b]standing out of water and in the water, 6 [a]by which the world *that* then existed perished, being flooded with water. 7 But [a]the heavens and the earth *which* are now preserved by the same word, are reserved for [b]fire until the day of judgment and *perdition of ungodly men.

8 But, beloved, do not forget this one thing, that with the Lord one day *is* as a thousand years, and [a]a thousand

years as one day. 9[a]The Lord is not slack concerning *His* promise, as some count slackness, but [b]is longsufferi toward [*]us, [c]not willing that any should perish but [d]that all should come to repentance

The Day of the Lord

10But [a]the

day of the Lord will come as a thief in the night, in which [b]the heavens will pass away with a great noise, and the elements will melt with fervent heat; both the earth and the works that are in it will be [*]burned up. 11Therefore since all these things will be dissolved, what manner *of persons* ought you to be [a]in holy conduct and godliness, 12[a]looking for and hastening the coming of the day of God, because of which the heavens will [b]be dissolved, being on fire, and the elements will [c]melt with fervent heat? 13 Neverthe we, according to His promise, look for [a]new heavens and a [b]new earth in which righteousne dwells.

Be Steadfast

14 Therefo beloved, looking forward to these things,

be diligent [a]to be found by Him in peace, without spot and blameless; 15and consider *that* [a]the longsufferi of our Lord *is* salvation — as also our beloved brother Paul, according to the wisdom given to him, has written to you,

[16]as also in all his [a]epistles, speaking in them of these things, in which are some things hard to understand which untaught and unstable *people* twist to their own destruction as *they do* also the [b]rest of the Scriptures.

[17]You therefore,

beloved, [a]since you know *this* beforehand, [b]beware lest you also fall from your own steadfastne being led away with the error of the wicked; 18 [a]but grow in the grace and knowledge of our Lord and Savior Jesus Christ.

[b]To Him *be*

the glory both now and forever. Amen.

2 Peter 1

[1:

a.

Ga

2:8

[1:

b.

Ep

4:5

[1:

*

rec

[1:

*

fai

of

the

sar

val

[1:
a.
Da
4:1

[1:
a.
1
Pe
1:5

[1:
b.
1
Th
2:1
2
Th
2:1
1
Pe
5:1

[1:
a.
2
Co
1:2
7:1

[1:
b.
(2
Co

3:1

[1:
*
dep

[1:
a.
2
Pe
3:1

[1:
b.
2
Pe
1:2

[1:
*
pat

[1:
a.
Ga
6:1

[1:
a.
(Jo

15

[1:
*
use

[1:
a.
1
Jol
2:9
11

[1:
a.
2
Co
13
1
Jol
3:1

[1:
a.
Ph
3:1
1
Jol
2:2
Ju
5

[1:
b.
1
Pe
5:1

[1:
a.
(2
Co
5:1
4);
2
Pe
1:1

[1:
b.
2
Pe
3:1

[1:
*
Bo

[1:
a.
(2
Co
5:1
2
Ti
4:6

[1:
b.
Jol
13
21
19

[1:
*
Die
and
lea
thi
boo

[1:
*
Lit
exc
dep

[1:
a.
1
Co
1:1

[1:
b.
(M
28
Ep

1:1
22]

[1:
c.
(1
Pe
5:4

[1:
d.
Ma
17
5;
Lu
1:2

[1:
a.
Ps.
2:7
Is.
42
Ma
17
Ma
9:7
Lu
1:3
9:3

[1:
a.
Ma

17

[1:
a.
(Jo
1:4
5,
9)

[1:
b.
Pro
4:1

[1:
c.
Re
2:2
22

[1:
d.
1(2
Co
4:5
7)

[1:
*
Or
We
als
hav
the

mo
sur
pro
wo

[1:
a.
(Ro
12

[1:
*
Or
ori

[1:
a.
Jer
23
(2
Tin
3:1

[1:
b.
2
Sar
23
Luk
1:7
Act
1:1
3:1
1

Pe
1:1

[1:
*
NU
me
spo
fro
Go

2
Peter
2

[2:
a.
Ma
24
24
1
Tin
4:1
2

[2:
*
M
wil
not

[2:
*
Lit
Ta

[2:
a.
Ge
19
26,
Ju
7

[2:
a.
Ge
19
29

[2:
1a.
Ps.
11

[2:
a.
Ps.
34
19,
1
Co
10
Re
3:1

[2:
a.

Ju
4,
7,
8

[2:
b.
Ex
22
Ju
8

[2:
*
glo
on
lit.
glo

[2:
a.
Ju
9

[2:
a.
Ju
10

[2:
a.
Ph

3:1

[2:
b.
Ro
13

[2:
c.
Ju
12

[2:
d.
1
Co
11
21

[2:
*
rev

[2:
*
rev

[2:
a.
Ju

11

[2:
*
Lit
an
ad

[2:
a.
Nu
22
7;
De
23
Ne
13
Ju
11,
Re
2:1

[2:
a.
Ju
12,
13

[2:
*
NU
an
mis

[2:
*
NU
om
for

[2:
*
NU
are
bar
esc

[2:
a.
Jo
8:3
Ro
6:1

[2:
*
dep

[2:
*
sla

[2:
a.

Ma
12

[2:
b.
Lu
11
(H
6:4
6)

[2:
a.
Lu
12

[2:
a.
Pro
26

2
Peter
3

[3:
a.
2
Pe
1:1

[3:
a.

2
Pe
1:2

[3:
b.
Ju
17

[3:
*
NU
M
the
ap
of
you
Lo
an
Sa
or
you
ap
of
the
Lo
an
Sa

[3:
a.
2
Pe
2:1

[3:
a.
Ge
6:1
7

[3:
a.
Ge
1:6
9;
He
11

[3:
b.
Ps.
24
13

[3:
a.
Ge
7:1
12,
21-
23,
Ma
24
39,
Lu
17
27,
2
Pet

2:5

[3:
a.
2
Pet
3:1
12

[3:
b.
Ma
25
(2
Th
1:8

[3:
*
des

[3:8]
a.
Ps.
90:4

[3:9]
a.
Hab.
2:3;
Rom.
13:11;
Heb.
10:37

[3:9] b. Ps. 86:15; Is. 30:18

[3:9] c. Ezek. 33:11

[3:9] d. Matt. 20:28; (Rom. 2:4)

[3:9] * NU *you*

[3:10] a. Matt. 24:42, 43; Luke 12:39; 1

Thess. 5:2; Rev. 3:3; 16:15

[3:10] b. Gen. 1:6–8; Ps. 102:25, 26; Is. 51:6; Rev. 20:11

[3:10] * NU *laid bare,* lit. *found*

[3:11] a. 1 Pet. 1:15

[3:12]

a. 1 Cor. 1:7, 8; Titus 2:13–15

[3:12] b. Ps. 50:3

[3:12] c. Is. 24:19; 34:4; Mic. 1:4

[3:13] a. Is. 65:17; 66:22

[3:13] b. (Rom. 8:21); Rev. 21:1

[3:14] a. 1 Cor. 1:8; 15:58; (1 Thess. 3:12, 13; 5:23)

[3:15] a. Ps. 86:15; Rom. 2:4; 1 Pet. 3:20

[3:16] a. Rom. 8:19; 1 Cor. 15:24; 1 Thess. 4:15; 2 Thess. 1:10

[3:16]
b.
2
Tim.
3:16

[3:17]
a.
Mark
13:23

[3:17]
b.
Eph.
4:14

[3:18]
a.
Eph.
4:15

[3:
b.
Ro
11
2
Tir
4:1
Re
1:6

Th

Ho
Spi
Wo
in

1,
2,
&
3
JO

Int

Th
Ho
Spi
Pre
anc
Em
Us
for
Spi
Wa

Jol
cor
in
his
let
tha
the
Ho
Spi
tea
tru
anc
hel
us
to
dis
tru

fro fal spi (1 Joh 2:2 4:1 3). Ho do we kno wh a per is spe the tru Joh wr “By thi you kno the Spi of Go Eve spi tha con tha Jes Ch has con in the fle is of Go (1 Jo 4:2

Th pro tha we liv in Go an He liv in us is giv by the Ho Spi (1 Jo 4:1 An the tru tha Jes is the So of Go is co by

thr
wi
—
wa
blo
an
the
Ho
Sp
(1
Jo
5:
8).

Be
of
the
att
of
the
An
an
the
ho
ris
of
her
at
the
en
of
tim
tha
Jo
wr
ab
in
his
las
tw
let

Go
pe
ne
the
in
Spi
of
tru
to
hel
the
dis
the
pre
of
His
Spi
fro
the
lyi
spi
of
fal
tea

Th
Spi
of
tru
giv
us
dis
bet
the
tru
of
Ch
an
the
de
of

1 John

1 John 1

What Was Heard, Seen, and Touched

[1] That [a] which was from the beginning, which we have heard,

which we have [b]seen with our eyes, [c]which we have looked upon, and [d]our hands have handled, concerning the [e]Word of life — 2 [a]the life [b]was manifested and we have seen, [c]and bear witness, and declare to you that eternal life which was [d]with the Father and was manifested to us—[3]that which we have seen and heard we declare to you, that you also may have fellowship with us; and truly our fellowship *is* [a]with the Father and with His

Son Jesus Christ. 4And these things we write to you [a]that [*]your joy may be full.

Fellowshi with Him and One Another

5[a]This is the message which we have heard from Him and declare to you, that [b]God is light and in Him is no darkness at all. [6][a]If we say that we have fellowship with Him, and walk in darkness, we lie and do not practice the truth. [7]But if we [a]walk in the light as He is in the light, we have fellowship with one another, and [b]the blood of Jesus Christ His Son cleanses us from all sin.

[8]If we say that we have no sin, we deceive ourselves, and the truth is not in us. [9]If we [a]confess our sins, He is [b]faithful and just to forgive us *our* sins and to

[c]cleanse us from all unrighteou [10]If we say that we have not sinned, we [a]make Him a liar, and His word is not in us.

1 John 2

[1]My little children, these things I write to you, so that you

may not sin. And if anyone sins, [a]we have an Advocate with the Fath1er, Jesus Christ the righteous. 2And [a]He Himself is the propitiation for our sins, and not for ours only but [b]also for the whole world.

The Test of

Knowing Him

[3]Now by this we know that we know Him, if we keep His commandn [4]He who says, “I know Him,” and does not keep His commandn is a [a]liar, and the truth is not in him. [5]But [a]whoever keeps

His word, truly the love of God [*]is perfected [b]in him. By this we know that we are in Him. 6 [a]He who says he abides in Him [b]ought himself also to walk just as He walked.

7 [*]Brethre I write no new

commandn to you, but an old commandn which you have had [a]from the beginning. The old commandn is the word which you heard [*]from the beginning. 8Again, [a]a new commandn I write to you, which thing is true in Him and in you, [b]because the darkness is passing away, and [c]the true light is already shining.

9 [a]He who says he is in the light, and hates his brother, is in darkness until now. 10 [a]He who loves his brother abides in the light,

and [b]there is no cause for stumbling in him. [11]But he who [a]hates his brother is in darkness and [b]walks in darkness, and does not know where he is going, because the darkness has blinded his eyes.

Their Spiritual State

Do Not Love the World

15[a]Do not love the world or the things in the world. [b]If anyone loves the world, the love of the Father is not in him. [16]For all that *is* in the world—the lust of the flesh, [a]the lust of the eyes, and the pride of life—

is not of the Father but is of the world. 17And [a]the world is passing away, and the lust of it; but he who does the will of God abides forever.

Deception of the Last Hour

18[a]Little children, [b]it is the

last hour; and as you have heard that [c]the[*] Antichrist is coming, [d]even now many antichrists have come, by which we know [e]that it is the last hour. 19 [a]They went out from us, but they were not of us; for [b]if they had been of us, they would have continued with us; but *they went out* [c]that they might be made manifest, that none of them were of us.

[20]But [a]you have an anointing [b]from the Holy One, and [c]you* know all

things. 21 I have not written to you because you do not know the truth, but because you know it, and that no lie is of the truth.

22 [a]Who is a liar but he who denies that [b]Jesus is the Christ? He

is antichrist who denies the Father and the Son. 23[a]Whoever denies the Son does not have the [b]Father either; [c]he who acknowled the Son has the Father also.

Let Truth Abide in You

24Therefo let that abide in you [a]which you heard from the beginning. If what you heard from the beginning abides in you, [b]you also will abide in the Son and in the Father. 25[a]And this is the promise that He has promised us—eternal life.

26These things I

have written to you concerning those who *try to* [*]deceive you. 27 But the [a]anointing which you have received from Him abides in you, and [b]you do not need that anyone teach you; but as the same anointing [c]teaches you concerning all things, and is true, and is not a lie, and just as it has taught you, you [*]will abide in Him.

The Children of God

28And now, litt1le children, abide in Him, that [*]when He appears, we may have [a]confidenc and not be ashamed before Him at His coming. 29[a]If you know that He is righteous, you know that [b]everyone who practices righteousn is born of Him.

PR
for
SP
WA

DE
TH
EN
FO

Jes
car
to

des
the
wo
of
the
dev
wh
kin
cor
of
pri
po
rul
of
the
dar
of
thi
wo
and
spi
wi
in
hig
pla
Th
are
dif
kin
of
der
and
dif
lev
of
wi
We
car
des
the
wi

ear
(Ps
10
We
car
des
the
tha
hat
us
(Ps
18

Sat
is
rer
hel
wh
his
for
are
des
We
hav
aut
to
bir
the
stro
and
stri
hir
of
his
arr
Isr
wa
ser
int
Ca
to

des
dif
nat
wh
are
pic
of
kin
tha
pos
the
lan
Eac
kin
rep
a
dif
typ
of
stre
Go
wa
His
peo
to
des

We
mu
alw
ren
tha
the
are
mo
wit
us
tha
aga
us.
Th

for
of
lig
are
far
sup
to
the
for
of
dar
Jes
is
the
Lor
of
the
arr
Th
arr
of
hea
are
fig
wit
the
arr
of
ear
Rel
the
ang
arr
of
hea
is
an
im
str
in
wa

We
car
des
and
rou
the
for
of
dar
in
the
hea
the
ear
the
sea
and
und
the
ear
Th
for
car
ope
thr
pec
gov
eco
sys
edu
sys
and
dif
str
set
up
by
me
Th
for
car

ope
fro
dif
loc
anc
in
dif
ter

Th
ido
tha
me
wo
are
ma
in
the
im
of
me
fou
foo
bea
bir
anc
cre
thi
Bel
the
ido
are
der
anc
evi
spi
tha
ma
in
the
nat

Th
goo
(id
are
als
ma
and
fer
Th
nat
wo
goo
and
goo
Jez
is
an
exa
of
a
fer
pri

Th
Bib
use
str
wo
tha
per
to
wa
inc

Th
Bib
con
ma
wo
tha
spe
of
wa
Th
Bib
is
fill
wit
wa
Th
his
of
ma
has
bee
det
by
wa
Joh
saw
wa
in
hea
bet
Mi
and
his
ang
and
Sat
and
his
ang

(Re
12
Wa
re
wa
Wa
mu
ha
the
ter
to
ov
the
en
Re
Go
tra
ou
ha
to
wa
an
ou
fin
to
fig
(Ps
14

1 John 3

[1]Behold [a]what manner of love the Father has bestowed on us, that [b]we should be called children of [*]God! Therefore the world does not know [*]us, [c]because it did not know Him. [2]Beloved, [a]now we are children

of God; and [b]it has not yet been revealed what we shall be, but we know that when He is revealed, [c]we shall be like Him, for [d]we shall see Him as He is. 3 [a]And everyone who has this hope in

Him purifies himself, just as He is pure.

Sin and the Child of God

[4]Whoeve commits sin also commits lawlessnes and [a]sin is lawlessnes [5]And you know [a]that He was manifested [b]to take away our sins, and [c]in Him there is

no sin. [6]Whoever abides in Him does not sin. Whoever sins has neither seen Him nor known Him.

[7]Little children, let no one deceive you. He who practices righteousne is righteous, just as He is righteous. [8][a]He who sins is of

the devil, for the devil has sinned from the beginning. For this purpose the Son of God was manifested [b]that He might destroy the works of the devil. 9Whoever has been [a]born of God does not sin, for [b]His seed remains in him; and he cannot sin, because he has been born of God.

Imp of Lo

thi the chi of Go an the

chi of the dev are ma Wh doe not pra rig is not of Go nor *is* he wh doe not lov his bro [11]F thi is the me tha you hea fro the beg [a]th we sho lov one and

[12]n
as
[a]Ca
wh
wa
of
the
wi
on
an
mu
his
bro
An
wh
did
he
mu
hi
Be
his
wo
we
evi
an
his
bro
rig
1
no
ma
my
bre
if
[a]th
wo
ha
you
[14]W
kn
tha

we hav pas fro dea to life be we lov the bre He wh doe not lov [*]*hi* bro abi in dea 15[a] hat his bro is a mu an you kno tha [b]no mu has ete life abi in hi

T
Ou
of
Lov

1
thi
we
kn
lov
[b]be
He
lai
do
His
life
for
us.
An
we
als
oug
to
lay
do
our
liv
for
the
bre
17B
[a]w
has
thi
wo
goo
and
see
his
bro
in
nee

an
shu
up
his
hea
fro
hi
ho
do
the
lo
of
Go
ab
in
hi
[1]
litt
chi
[a]le
us
no
lo
in
wo
or
in
to
bu
in
de
an
in
tru
[19]A
by
thi
we
[*]kn
[a]th
we

are
of
the
tru
and
sha
*as
our
hea
bef
Hi
20[a]
if
our
hea
cor
us,
Go
is
gre
tha
our
hea
and
kn
all
thi
21B
if
our
hea
doe
not
cor
us,
[a]w
hav
cor
tow
Go
22A

[a]w
we
ask
we
rec
fro
Hi
bec
we
kee
His
co
[b]an
do
tho
thi
tha
are
ple
in
His
sig
23A
thi
is
His
co
tha
we
sho
bel
on
the
na
of
His
So
Jes
Ch
[a]an
lov

on
an
as
He
ga
[*]us
co
T
Sp
of
Tr
an
th
Sp
of
Er
2
[a]he
wh
kee
Hi
co
[b]ab
in
Hi
an
He
in
hi
An
[c]by
thi
we
kn
tha
He
ab
in
us,
by
the

Spi
wh
He
has
giv
us.

1
Joh
4

1
do
no
bel
eve
spi
bu
[a]te
the
spi
wh
the
are
of
Go
bec
[b]m
fal
pro
hav
gon
ou
int
the
wo
2By
thi
yo
kno
the
Spi

of
Go
[a]Ev
spi
tha
cor
tha
Jes
Ch
has
cor
in
the
fle
is
of
Go
3ar
eve
spi
tha
do
no
cor
*th
Jes
*Cl
has
cor
in
the
fle
is
no
of
Go
An
thi
is
the
spi

of
the
An
wh
yo
ha
he
wa
co
an
is
no
alr
in
the
wo
4
are
of
Go
litt
chi
an
ha
ove
the
bec
He
wh
is
in
yo
is
gre
tha
[a]he
wh
is
in
the
wo

5[a]T are of the wo Th the spe *as* of the wo and [b]th wo hea the 6W are of Go He wh kno Go hea us; he wh is not of Go doe not hea us. [a]By thi we kno

the
spi
of
tru
and
the
spi
of
err

I
Go
Thi
Lov

7
let
us

lov one and for lov is of Go and eve wh [b]lo is bor of Go and kno Go 8H wh doe not lov doe not kno Go for Go is lov 9[a]In thi the lov of Go wa ma tow

us,
tha
Go
has
ser
His
onl
beg
[b]So
int
the
wo
tha
we
mi
liv
thr
Hi
[10]I
thi
is
lov
[a]no
tha
we
lov
Go
but
tha
He
lov
us
and
ser
His
Son
[b]*to*
be
the
pro
for

ou
sin
11B
[a]if
Go
so
lov
us,
we
als
ou
to
lov
on
an

Go
Th
Lo

on
ha
see
Go
at
an
tim
If
we
lov
on
an
Go
abi
in
us,
an
His
lov
ha
be

per
in
us.
[13][a]
thi
we
kno
tha
we
abi
in
Hi
an
He
in
us,
bec
He
has
giv
us
of
His
Spi
[14]A
[a]w
hav
see
an
tes
tha
[b]th
Fat
has
ser
the
So
as
Sav
of
the

wo
15[a]
co
tha
Jes
is
the
So
of
Go
Go
abi
in
hi
an
he
in
Go
16A
we
ha
kn
an
bel
the
lov
tha
Go
has
for
us.
Go
is
lov
an
[a]he
wh
abi
in
lov
abi

in
Go
an
Go
[b]in
hi

T
Co
of
Lo

1
ha
bee
pe
am
us
in
thi
tha
[a]w
ma
ha
bo
in
the
day
of
jud
bee
as
He
is,
so
are
we
in
thi
wo
18T
is
no

fea
in
lov
bu
per
lov
cas
ou
fea
bec
fea
inv
tor
Bu
he
wh
fea
has
no
bec
ma
per
in
lov
19a
lov
*Hi
bec
He
firs
lov
us.

C
by
Fai

2
son
say
"I
lov
Go

an
ha
his
bro
he
is
a
lia
for
he
wh
do
no
lov
his
bro
wh
he
has
see
[*]ho
can
he
lov
Go
[b]w
he
has
no
see
21A
[a]th
co
we
hav
fro
Hi
tha
he
wh
lov

Go
mu
lov
his
bro
als

__________ Ma
16
28

__________ Ma
26
56

__________ Ma
14
62

__________ Lu
1:
38

__________ Jo
1:
18

__________ Jo
8:
59

__________ Jo
10
38

__________ Jo
14

__________ Ac
2:
40

__________ Ro
10
13

1
Jol
5

1
bel
tha
[a]Je
is

the Ch is [b]bo of Go an eve wh lov Hi wh beg als lov hi wh is beg of Hi [2]By thi we kn tha we lov the chi of Go wh we lov Go an [a]ke His co [3][a]F thi is the lov of Go tha we kee His cor An [b]Hi cor are no bu 4Fo [a]wh is bo of Go ove the wo An thi is the vic tha [b]ha ove the wo — [*]ou fai 5W is

he
wh
ov
the
wo
bu
[a]he
wh
bel
tha
Jes
is
the
Son
of
Go

T
Cer
of
Go
Wi

6
is
He
wh
can
[a]by
wa
and
blo
—
Jes
Ch
not
onl
by
wa
bu
by
wa
and

blo
[b]An
it
is
the
Spi
wh
bea
wit
bec
the
Spi
is
tru
7 Fo
the
are
thr
tha
bea
wit
[*]in
hea
the
Fat
[a]th
Wo
and
the
Ho
Spi
[b]an
the
thr
are
one
8 An
the
are
thr
tha

bea
wit
on
ear
[a]th
Spi
the
wa
an
the
blo
an
the
thr
agr
as
on
9
we
rec
[a]th
wit
of
me
the
wit
of
Go
is
gre
[b]fo
thi
is
the
wit
of
*Go
wh
He
has
tes

of
His
Son
10H
wh
bel
in
the
Son
of
Go
[a]ha
the
wit
in
him
he
wh
doe
not
bel
Go
[b]ha
ma
Him
a
liar
bec
he
has
not
bel
the
tes
tha
Go
has
giv
of
His
Son

11A thi is the tes tha Go has giv us ete life and thi life is in His Son 12a wh has the Son has *lif he wh doe not hav the Son of Go doe not hav life 13T thi

I hav wr to you wh bel in the nar of the Son of Go tha you ma kno tha you hav ete life *ar tha you ma *cor to* bel in the nar of the Son of Go

C ane

Co
in
Pr

[1]
thi
is
the
co
tha
we
ha
in
Hi
tha
[a]if
we
ask
an
ac
to
His
wi
He
hea
us.
15A
if
we
kn
tha
He
hea
us,
wh
we
ask
we
kn
tha
we
ha

the
pet
tha
we
hav
ask
of
Hir

1
any
see
his
bro
sin
a
sin
wh
doe
no
lea
to
dea
he
wil
ask
and
[a]He
wil
giv
hir
life
for
tho
wh
cor
sin
no
lea
to
dea
[b]Th

is sin *lea* to dea [c]I do no say tha he sho pra abo tha 17[a]. un is sin and the is sin no *lea* to dea

I the Tru — Rej the Fal

1 kno tha [a]W is bor of

Go
do
no
sin
bu
he
wh
has
be
bo
of
Go
[b]ke
an
the
wi
on
do
no
tou
hi
1
kn
tha
we
are
of
Go
an
[a]th
wh
wo
lie
un
the
sw
of
the
wi
on
2

we
kno
tha
the
[a]So
of
Go
has
con
and
[b]ha
giv
us
an
und
[c]th
we
ma
kno
Hin
wh
is
tru
and
we
are
in
Hin
wh
is
tru
in
His
Son
Jes
Ch
[d]Th
is
the
tru
Go

[e]an
ete
life
2
chi
kee
you
fro
ido
Am

1
Jol
1

1
Jol
2

1
Jol
3

1
Jol
4

1
Jol

2
Jol
2
Jol
1

C
the
Ele
Lac

1
Elo

T
the
*el
lad
and
her
chi
wh
I
lov
in
tru
and
no
onl
I,
bu
als
all
tho
wh
hav
kn

[a]th
tru
[2]be
of
the
tru
wh
abi
in
us
an
wi
be
wit
us
for

[3]
me
an
pea
wi
be
wit
*yo
fro
Go
the
Fat
an
fro
the
Lo
Jes
Ch
the
So
of
the
Fat
in
tru

anc
lov
V
in
Ch
Co
4
[a]re
gre
tha
I
ha
fou
so
of
yo
chi
wa
in
tru
as
we
rec
co
fro
the
Fat
5Ar
no
I
ple
wi
yo
lac
no
as
tho
I
wr
a
ne

co
to
yo
bu
tha
wh
we
ha
ha
fro
the
be
[a]th
we
lo
on
an
6[a]T
is
lo
tha
we
wa
ac
to
Hi
co
Th
is
the
co
tha
[b]as
yo
ha
he
fro
the
be
yo
sh

wa
in
it.

of
An
De

7
[a]m
dec
hav
gon
out
int
the
wo
[b]w
do
no
con
Jes
Ch
as
con
in
the
fles
[c]Th
is
a
dec
and
an
ant
8[a]L
to
you
[b]th
[*]w
do
no

los
tho
thi
we
wo
for
bu
tha
we
ma
rec
a
ful
rev
9
*tra
and
doe
not
abi
in
the
doc
of
Ch
doe
not
hav
Go
He
wh
abi
in
the
doc
of
Ch
has
bot
the
Fat

and
the
Son
[10]I
any
con
to
you
and
[a]do
not
bri
thi
doc
do
not
rec
him
int
you
hou
nor
gre
him
[11]fo
he
wh
gre
him
sha
in
his
evi
dee

J
Far
Gr

1
ma
thi
to

wr
to
yo
I
dic
no
wis
to
do
so
wit
pap
and
ink
bu
I
hop
to
com
to
you
and
spe
fac
to
fac
[b]th
our
joy
ma
be
ful

1
chi
of
you
ele
sis
gre
you
Am

2

Jol

1

3
Jol
3
Jol
1
C

to
Ga

1
Elo

T
the
bel
Ga
[a]w
I
lov
in
tru

2

I
pra
tha
you
ma
pro
in

all thi and be in hea jus as you sou pro [3]Fo I [a]re gre wh bre can and tes of the tru *tha is* in you jus as you wa in the tru [4]I hav no gre [a]jo tha to

hea
tha
[b]m
chi
wa
in
*tr

C
Co
for
Ge
5
you
do
fai
wh
you
do
for
the
bre
*ar
for

stra
[6]w
hav
bor
wit
of
you
lov
bef
the
chu
If
you
ser
the
for
on
the
jou
in
a
ma
wo
of
Go
you
wil
do
we
[7]be
the
we
for
for
His
nan
sak
[a]ta
not
fro
the

Ge
8 W
the
oug
to
[a]re
suc
tha
we
ma
bec
fell
wo
for
the
tru

I
and
De

9
wr
to
the
chu
bu
Dic
wh
lov
to
hav
the
pre
am
the
doe
not
rec
us.
10 T
if
I

cor
I
wi
cal
to
mi
his
dec
wh
he
doe
[a]pr
aga
us
wit
ma
wo
An
no
cor
wit
tha
he
hir
doe
no
rec
the
bre
and
for
tho
wh
wis
to,
pu
the
ou
of
the
chu

1

[a]do no im wh is evi bu wh is goo [b]He wh doe goo is of Go [*]bu he wh doe evi has no see [c]Go

1

[a]ha a *goo* tes fro all, and fro the tru itse An we

als
1[*]b
wit
[b]an
you
kno
tha
our
tes
is
tru

I

Gr

1
had
ma
thi
to
wr
bu
I
do
no
wis
to
wr
to
you
wit
pe
and
ink
14b
I
ho
to
see
you
sho
and
we

sha
spe
fac
to
fac
I
to
you
Ou
frie
gre
you
Gre
the
frie
by
nar

3

Jol

1

1

to
the
Ca

a
bo
of
Jes
Ch
an
[a]br
of
Ja

tho

wh
are
[b]ca
*sa
by
Go
the
Fat
and
[c]pr
in
Jes
Ch

[2]Mercy, [a]peace, and love be multiplied to you.

Contend for the Faith

[3]Beloved while I was very diligent to write to you [a]concerning our common salvation, I found it necessary to write to you exhorting [b]you

to contend earnestly for the faith which was once for all delivered to the saints. [4]For certain men have crept in unnoticed, who long ago were marked out for this condemnat ungodly men, who turn the grace of our God into lewdness and deny the only Lord [*]God and our Lord Jesus Christ.

Old and New Apostates

[5]But I want to remind you, though you once knew this, that [a]the Lord, having saved the people out of the land of Egypt,1 afterward

destroyed those who did not believe. [6]And the angels who did not keep their [*]proper domain, but left their own abode, He has reserved in everlasting chains under darkness for the judgment of the great day; [7]as [a]Sodom and Gomorrah, and the cities around them in a similar manner to these, having given themselves over to sexual immorality and gone after strange flesh, are set forth as an example, suffering the *vengeance of eternal fire.

8 [a]Likewis also these dreamers defile the flesh,

reject authority, and [b]speak evil of *dignitaries [9]Yet Michael the archangel, in *contending with the devil, when he disputed about the body of Moses, dared not bring against him a reviling accusation, but said, [a]“The Lord rebuke you!” [10][a]But these speak evil of whatever they do not know; and whatever they know naturally, like brute beasts, in these things they corrupt themselves 11Woe to them! For they have gone in the way [a]of Cain, [b]have run greedily in the error of Balaam for profit, and perished [c]in the rebellion of Korah.

Apostates Depraved and Doomed

12 These are *spots in your love feasts, while they feast with you without fear, serving only themselves They are clouds without water, carried *about by the winds; late

autumn trees without fruit, twice dead, pulled up by the roots; 13 [a]raging waves of the sea, [b]foaming up their own shame; wandering stars [c]for whom is reserved the blackness of darkness forever.

14 Now Enoch, the seventh from Adam, prophesied about these

men also, saying, “Behold, the Lord comes with ten thousands of His saints, [15]to execute judgment on all, to convict all who are ungodly among them of all their ungodly deeds which they have committed in an ungodly way, and of

1all the [a]harsh things which ungodly sinners have spoken against Him.”

Apostates Predicted

16These are grumblers, complainer walking according to their own lusts; and they [a]mouth great swelling words, [b]flattering people to gain advantage. 17[a]But you, beloved, remember the words which were spoken before by the apostles of our Lord Jesus Christ: [18]how they told you that [a]there would be mockers in the last time who would walk according to their own ungodly lusts. [19]These are *sensual persons, who cause divisions, not

having
the
Spirit.

Maintain Your Life with God

20But you, beloved, [a]building yourselves up on your most holy faith, [b]praying in the Holy Spirit, [21]keep yourselves in [1]the love of God, [a]looking for the mercy of our Lord Jesus Christ unto eternal life.

[22]And on some have compassion, [*]making a distinction; [23]but [a]others save [*]with

fear, [b]pulling them out of the *fire, hating even [c]the garment defiled by the flesh.

Glory to God

PR
for
SP
WA

TA
AC

As
yo
ha
spe
tim
stu
thi
Spi
W
Bib
the
Spi
of
the
Lor
ma
ha
re
yo
of
rel
in
the
pa
or
pre
in
wh
yo
hel
so
ag
oth
In
thi
mo
pra
a
sin
pra
of

rel

Bu
bef
pra
ask
the
Ho
Spi
to
wa
wi
yo
thr
yo
pas
bri
bef
yo
any
pe
aga
wh
yo
ha
hel
so
Sta
qu
bef
Hi
as
He
sho
yo
wh
the
are
Yo
do
no

ne
to
hu
for
so
tha
is
no
the
He
wi
cle
bri
the
up
to
wh
yo
wi
no
do
it.
As
He
do
yo
ma
re
the
pa
yo
ex
Do
be
afr
He
wi
be
rig
the
at

you
sid
cor
you

As
you
rel
the
pe
fro
bla
for
wh
the
hav
1d
to
you
pic
eac
of
the
ind
For
eac
one
per
Ca
the
del
the
ow
you
Th
pra
thi
pra
bu
do
be

lim
to
the
wo
Us
the
as
a
gu
an
be
led
by
the
Spi
of
Go

No
wr
the
nar
of
the
pe
you
hav
rel
in
a
jou

anc
rec
tha
on
thi
dat
you
ma
a
dec
to
for
the

Yo
ma
hav
to
exe
to
sta
fre
fro
off
Ma
a
cor
to
pra
for
the
as
you
wo
pra
for
you
Th
jou
wil
hel

yo
re
If
th
co
to
bo
yo
mi
ca
th
do
wi
th
W
of
Go
an
de
yo
de
to
fo
Yo
ha
as
fo
Go
gr
to
fo
an
un
is
no
as
po
as
Hi
gr
Be

bol
anc
fig
the
goo
fig
of
fai

Wh
you
kno
you
hea
is
stre
anc
set
go
to
the
Rei
tha
you
are
goi
for
the
pu
of
rec
for
the
ber
not
you
ow
By
doi
thi
you

wi
sea
the
vic
Yo
wi
wi
a
bro
(Se
Ma
18
Th
is
we
ple
in
the
sig
of
Go

Jude
1

[1:

a.
Ac
1:1

[1:
b.
Ro
1:7

[1:
c.
Jol
17
12

[1:
*
NU
bel

[1:
a.
1
Pe
1:2
2
Pe
1:2

[1:
a.
Tit

1:4

[1:
b.
Ph
1:2

[1:
*
NU
om
Go

[1:
a.
Ex
12
1
Co
10
10
He
3:1

[1:
*
ow

[1:
a.
Ge
19

2
Pe
2:6

[1:
*
pu

[1:
a.
2
Pe
2:1

[1:
b.
Ex
22

[1:
*
glo
on
lit.
glo

[1:
a.
Ze
3:2

[1:
*
arg

[1:
a.
2
Pe
2:1

The
church
I
attend
has…
Remained
in
love…
Fallen

Remained
pure…
Tolerated
sin

Remained
true…
Compromised

Remained
righteous…
Allowed
evil

Remained
obedient…
Rebelled

Remained
hot…
Became
lukewarm

FINANC
PATTERNS

GREED

GRIEF

INFIRMI
DISEASE

MENTAL ILLNESS

OCCULT

- Au wr
- Bla ma
- Cla
- Ca a spe or he
- Ch
- Cry bal
- Div
- Dis der
- ES

- Ma 8 Bal
- Fra
- Fo tel
- Ha ana
- Fre
- Hy
- Ho
- Me tel
- Lev
- Ma a blo oat or vov
- Ma

a
blo
pac

- Ow
  hea
  me
  mu
- Ne
- Ne
  Ag
- Ow
  occ
  jew
- Ou
  boa
- No
  Ch
  exc
- Pas
  life
  rea
- Pal
  rea
- Psy

hea

- Pe

- Sci
fa

- Re
oc
wi
bo

- Se
an
sci
fa

- Se
an
ho
mo

- Sé

- So

- Sp
gu

- So

- Ta

ca

- Sp

- Tr
  me

- Te
  lea

- Vis
  Inc
  bu
  gro

- Vis
  pag
  ten

- Wa
  wi

- Vo

- Wi

- Wh
  ma

- Yo

SEXUAL

SINS

- De sex
- Ex
- Fo
- Fri
- Ho
- Inc
- Les
- Lus fan
- Lus ma
- Po
- Pre sex
- Pro han

- Ra
- Sec
- Sex
  ab

SHAME

- Co
- Em
- Gu
- Sel
  acc
- Sel
  dis
  rep

PRIDE

- Ar
- Sel
  im
- Va

REBELLI

REJECTI

RELIGIO

STRIFE

SURGER

TRAUMA

UNBELIE

UNWORT

VIOLENC

DEMONI
SPIRITS
IDENTIFIE
IN
SCRIPTUR

OLD

TESTAMEN

NEW
TESTAMEN

SIXTY SYMPTOM OF DEMONIC ATTACK

Note: A few symptoms may not indicate demonic oppression, but these are very common symptoms for those under demonic attack.

BIBLICA PROOF THAT A BELIEVER SHOULD ENLIST IN SPIRITUAL WARFARE

*

Do
Dic
Wh
Pig

Mc
In,
21
22

APPEND D

FREEDO PRINCIPLE FOR DAILY USE

The following steps are suggested for daily use to help you as you grow in Christ and continue in your spiritual authority to walk in freedom and exercise power over the enemy.

1. **CONFESS SIN IMMEDIAT MEMORIZ 1 JOHN 1:9, AND KEEP THIS VERSE ALIVE IN YOUR SPIRIT.**

“If we confess our sins, He is faithful and just to forgive us our sins and to cleanse us from all unrighteou Apply this to your life. Don’t allow sin to linger. It must be forgiven, and you must be cleansed immediatel Deliveranc is only as good as our obedience!

2. WHEN NEGATIVE THOUGHT COME, YOU MUST REBUKE THEM AND REPLACE THEM

WITH POSITIVE THOUGHT

Here is a verse for you to apply: “Finally, brethren, whatever things are true, whatever things are noble, whatever things are just, whatever things are pure, whatever things are lovely, whatever things are of good report, if there is any virtue and if there is anything praisewort — meditate on these things” (Phil. 4:8).

Make sure the thoughts that enter your mind fall in this category.

3. PREMEDIT SIN WILL INVITE DEMONS. KEEP YOUR PLANS HOLY AND PLEASING TO

GOD.

“For this is the love of God, that we keep His commandn And His commandn are not burdensom (1 John 5:3). There is an awesome promise that goes with keeping His commandn and doing those things that please Him. “And whatever we ask we receive from Him, because we keep His commandm and do those things that are pleasing in His sight” (1 John 3:22). Focus on pleasing Him.

4. ANTICIPAT INCREASE FREEDOM AS YOU WALK IN OBEDIENC

You must learn

to dismiss immediatel painful memories of your past and live in anticipatio of life without bondage. “Brethren, I do not count myself to have apprehende but one thing I do, forgetting those things which are behind and reaching forward to those things which are ahead, I press toward the goal for the prize of the upward call of God in Christ Jesus” (Phil. 3:13–14).

5. NEVER FORGET THAT SATAN AND ALL OF HIS DEMONS ARE LIARS. LEARN TO RECOGNIZ THE LIE.

“When he speaks a lie, he speaks from his own resources, for he is a liar and the father of it” (John 8:44). One of the favorite ploys of demons is to try to convince you that what took p1lace was only emotional and that you are still in the enemy’s grip. “Therefore submit to God. Resist the devil and he will flee from you. Draw near to God and He will draw near to you. Cleanse your hands, you sinners; and purify your hearts, you double-minded” (James 4:7–8).

6. TRUST GOD DAILY TO HELP YOU MAKE CORRECT CHOICES, AND HE WILL!

“Having begun in the Spirit, are you now being made perfect by the flesh?” (Gal. 3:3).

7. USE THE

NAME OF JESUS, THE BLOOD OF THE LAMB, AND YOUR CONFESSI OF FAITH AGAINST ALL SATAN’S TEMPTATI AND CONDEMN

All condemnat comes from Satan. Never believe him. You have been cleansed by the blood and through the name of Jesus Christ;

you are blood protected! “And they overcame him by the blood of the Lamb and by the word of their testimony, and they did not love their lives to the death” (Rev. 12:11). “There is therefore now no condemnat to those who are in Christ Jesus, who do not walk according to the flesh, but according to the Spirit” (Rom. 8:1).

8. ALLOW THE HOLY SPIRIT TO CONTROL YOUR LIFE—ALL OF YOU, ALL THE TIME.

Make a conscious choice to

make Jesus Lord of every day and every situation. “I beseech you therefore, brethren, by the mercies of God, that you present your bodies a living sacrifice, holy, acceptable to God, which is your reasonable service. And do not be conformed to this world, but be transforme by the renewing of your mind, that you may prove what is that good and acceptable and perfect will of God” (Rom. 12:1–2). “And do not be drunk with wine, in which is dissipation but be filled with the Spirit” (Eph. 5:18). “Therefore He who supplies the Spirit to you and works miracles among you, does He do it by the works of the law, or by the hearing of faith?” (Gal. 3:5).

9. GOD’S

HOLY WORD MUST HAVE A PREDOMI PLACE IN YOUR LIFE.

This may mean not doing something that would take you away from it. Take time or make time to read, learn, and meditate on God’s Word every day. If time is limited, carry Scripture verse cards with you for your free times. Get CDs of the Bible and play it in your car or office. “This Book of the Law shall not depart from your mouth, but you shall meditate in it day and night, that you may observe to do according to all that is written in it. For then you will make your way prosperous and then you will have good success” (Josh. 1:8). “Let the word of Christ dwell in you richly in all wisdom, teaching and admonishin one another in psalms and hymns and spiritual songs, singing with grace in your hearts to the Lord” (Col. 3:16).

10. LEARN ABOUT YOUR BATTLE GEAR. IT HAS THE PROMISE OF PROTECTI AND

VICTORY
FROM
THE
WORD
OF
GOD.

Make
this
so
that
it
soon
becomes

effortless and is part of your lifestyle.

11. YOU MUST SEVERE TIES WITH OLD UNHEALT FRIENDSH THIS IS A MUST!

“Do you not know that friendship with the world is enmity with God? Whoever therefore wants to be a friend of the world makes himself an enemy of God" (James 4:4). You can count on the enemy to try to use whatever worked before to get access to your life again. You must avoid old patterns as well and break former habits that led to sin.

12. BE SERIOUS IN YOUR EFFORTS TO GLORIFY THE LORD J1b>ESUS

“If then you were raised with Christ, seek those things which are above, where Christ is, sitting at the right hand of God. Set your mind on things above, not on things on the earth. For you died, and your life is hidden with Christ in God” (Col. 3:1–3).

13. THIS BATTLE IS ONE OF DEPENDE BE CAREFUL TO NOT GET CONFIDEN IN THE FLESH.

Admittin

you can’t do it all by yourself is not weakness; it is strength. Do things with His help. The lie of Satan is to tell you that you can do it without God. “I am the vine, you are the branches.

He who abides in Me, and I in him, bears much fruit; for without Me you can do nothing” (John 15:5). “Let your conduct be without covetousne be content with such things as you have. For He Himself has said, ‘I will never leave you nor forsake you’” (Heb. 13:5).

14. REMEMBE THE WILES AND THE SNEAKY TRAPS OF THE DEVIL.

Act in your God-given authority. It will always be honored by the Father, who gave it to Jesus to give to you. “Therefore submit to God. Resist the devil and he will flee from you. Draw near to God and He will draw near to you. Cleanse your hands, you sinners; and purify your hearts, you double-minded” (James 4:7–8).

15. PRAISE INVITES GOD’S PRESENC AND CAUSES THE ENEMY TO RUN.

Praise Him because He deserves it. Give thanks to God for His continuous goodness. Psalm 103:6 says, “The LORD executes righteousn and justice for all who are oppressed.

16. BE

READY TO RECEIVE YOUR INHERITA THAT IS GIVEN LIBERALL BY THE SPIRIT OF GOD.

Your inheritance was given through the glory of Jesus Christ, who is seated at the right hand of *His* Father, who is also *your* Father. Remind the demons that you are an heir of God and a joint-heir with Jesus Christ. You are! “But the fruit of the Spirit is love, joy, peace, longsufferi kindness, goodness, faithfulnes gentleness, self-control. Against such there is no law” (Gal.

5:22–23). “So Jesus said to them again, ‘Peace to you! As the Father has sent Me, I also send you’” (John 20:21).

17. REMEMBE THAT THERE ARE CERTAIN THINGS THAT REQUIRE DILIGENT WARFARE

Criticism negativity, grieving over the past, oversensiti doubt, 1selfishnes putting feelings before faith, and lack of genuine prayer are all on the list. Be an outgoing person and help others. Helping others will bring blessings. You cannot allow self-pity a place in your life.*

*

Do
Di
Wh
Pig
Mo
In,
19
20

APPEND E

COMBAT SCRIPTURE TO DEFEAT OUR ENEMY

This appendix will list declaration with Scriptures references that show how we should pray in order to deal with Satan, our hard-core antagonist who is operating against us in the spirit. Remember, “the weapons of our warfare are not carnal but mighty in God for pulling down strongholds (2 Cor. 10:4). We war not against flesh and blood but against spirit forces that are assigned to hold us down. As you study the scriptures and pray these prayers, get your mind off the natural realm, and get a revelation about who your enemies really are.

A
F
I
IN
TR
HO

I
ca
yo
ma
a
ble
lif
Ta
the
eig
sin
ste
an

dis
ho
the
ha
lif
is
the
an
to
de
1
DO
SO
I
so
to
do
Sta
ser
Go
Jo
13
say
“If
yo
kn
the
thi
ble
are
yo
if
yo
do
the
Per
it
co
be
the
sin

tas
suc
as
kee
the
nu
In
tha
act
of
ser
you
wi
be
ha
Mo
int
act
for
G1
anc
joy
wi
me
you
alo
the
roa

2
QU
CO
AB
GO
CO

J
5:1
sta
“Be
hap
is
the

ma
wh
Go
co
the
do
no
des
the
cha
of
the
Al
So
dif
tim
do
co
fro
the
dev
At
tim
Go
is
usi
tho
cir
to
fir
co
us.
He
12
tel
us,
“W
the
LO
lov
He

cha He is no a so pa lik so of us wh let ou kid get aw wi any He is a lo pa wh cal His chi ba int lin no be He do wa us to enj life bu

bec
He
see
the
wh
pic
and
wa
tru
hap
for
us.

**3
LE
TO
AB
IN
GO
SA**

33
say
“H
are
you
O
Isr
Wh
is
lik
you
a
peo
sav
by
the
LO
the
shi
of
you

hel
anc
the
sw
of
you
ma
Yo
enc
sha
sub
to
you
anc
you
sha
tre
dov
the
hig
pla
Ch
is
you
shi
He
is
the
sw
of
you
ma
He
wil
pu
you
enc
unc
you
fee
I'll

tel
you
you
car
liv
a
life
fre
of
de
if
you
dis
you
pos
in
Jes
Ch

LO
IN
TH
BO

a
Bib
rea
Pro
3:1
sta
“H
is
the
ma
wh
fin
wis
and
the
ma
wh

gai
un
Go
Wo
isn
the
boo
of
the
mo
it
is
the
Bo
of
the
Ag
Th
is
Go
bes
sel
Wi
it
the
are
mo
tha
thr
tho
pro
and
all
of
the
are
you
Sec
Co
1:2
tel

us,
“Al
the
pro
of
Go
in
Hi
are
Yes
an
in
Hi
Am
Th
me
the
bel
to
yo
Ha
are
yo
wh
yo
fin
the
tre
Ne
eve
de
pe
I’v
eve
co
has
los
the
dev
life
an

is no sat the life wit Go pro If you do kno wh to sta beg wit the Bo of Psa

5 GE YO PR IN OR

I 12 6 tel us, “Bl is eve wh fea the LO wh wa

in
His
wa
Wh
yo
eat
the
lab
of
yo
ha
yo
sha
be
hap
…
Yo
wi
sha
be
lik
a
fru
vi
in
the
ve
hea
of
yo
ho
yo
chi
lik
oli
pla
all
arc
yo
tab
Bel

thu
sha
the
ma
be
ble
wh
fea
the
LO
Th
LO
ble
you
ou
of
Zio
and
ma
you
see
the
goo
of
Jer
all
the
day
of
you
life
Yea
ma
you
see
you
chi
chi
Tal
inv
of

yo
pri
an
nai
the
to
the
do
or
pla
the
on
the
cen
bul
bo
of
yo
ho

ST
DO
QU
A

ma
Ch
wo
wh
the
are
de
—
aft
the
spe
ho
wa
soa
op
“H

Bo
Off
an
oth
qu
tel
off
If
thi
is
an
iss
for
yo
un
the
ca
if
yo
ha
to!
Ge
so
sel
co
int
yo
lif
Qu
rea
the
wr
thi
Sa
yo
wi
the
Bi

I
yo
ar

say “I do rea bel tha so of the thi are wr for me to do or wa I mu arg — if it is ma you mi it is wr Ro 14 say “H is he wh do no co

hir
in
wh
he
app
He
is
wh
thi
ver
is
say
“H
is
the
ma
wh
doe
wa
in
cor
bec
of
the
stu
he
is
allo
in
his
life
If
you
fee
gui
abo
it,
qui
it,
reg
of

wh
oth
agr
or
not
If
it
is
son
in
you
life
tha
sho
be
the
ren
it.
Ge
rid
of
the
hor
Th
off
any
tal
you
are
we
aro
you
nee
tha
hor
the
dev
Ge
rid
of
any

kin
of
mu
tha
glo
the
fle
and
the
end

I
to
get
yo
life
in
ord
Beg
to
sov
int
yo
life
thi
tha
ove
wit
joy
If
yo
are
stil
not
sur
if
son
is
rig
or
wr
ask

yo
the
qu
“Ca
I
do
thi
act
wi
hu
a
fel
Ch
Ca
I
ma
my
wi
to
the
los
Ca
I
do
it
an
no
liv
un
co

7
LE
TO
RO
WI
TH
PU

5:1
say
“In

we cou the ble wh enc I ma hav bat wo nov and the but I’m her to tel you tha the blo of Jes is on you sid It is tim for Ch to fin son bac to be tho

wh
wi
no
ru
eve
tim
the
dev
rai
his
ugl
hea
and
his
“H
are
you
Jam
sai
“w
you
can
end
the
tria
tha
are
con
you
wa

8

FIN
RE
WI
IS
IN
CH

I
out
Psa
14

anc
har
it
sor
wh
yo
wi
see
it
eve
mo
wh
yo
get
up
It
say
“H
are
the
pe
wh
are
in
su
a
sta
ha
are
the
pe
wh
Go
is
the
LO
Yo
Go
is
in
cha

He
is
Lor
ove
all.
No
on
thi
cou
hap
to
top
Hi
fro
His
thr
We
hav
be
giv
the
las
cha
of
the
bo
an
Re
22
rev
tha
wh
the
wh
thi
is
ove
He
is
stil
pro

to be Kin of kin an Lor of lor Th has nev bee a kin He is no Kin ove Yo cir ma be too big for you bu the are no too big for Hi

C

T
Co
inc
pro
nar
anc
sig
top
def
by
phi
anc
scr
ref
Oc
a
key
app
to
mo
tha
one
Bib
per
pla
or
top
Th
is

the
cas
wi
“Al
for
wh
the
Co
list
fou
dif
per
by
tha
nan
Th
sec
thi
and
fol
occ
are
dis
by
the
das
(“–

A
I
C
I
I
I
C
I
I
J
I
I

C
C
S
T
U
V
V
Z

A
A
A
A
A
A
NE
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
(or
Ab
A
A
A
A

A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
S
AB
A
A
A
A
A
A
A
GR
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A

A
(on
Ac
A
A
VA
OF
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
(on
Ad
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A

DA

A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A

A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
(or
Or
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
S
M
A
A
A
A
A
A
A

A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
(or
Ass

A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A
A

I
I
(or
Ba
I
PE
(or
Ba
of
Pe

I
PE
I
ZE
I
I
I
I
I
I
I
I
TO
OF
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

I
I
I
I
I
I
I
I
JES
(or
Ely
I
JO
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

LA
RC

I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
AM
I
HA
I
ON
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
BA
S
ME
BA
I
I
I
I
I
I
HO
I
PE
I
SH

(or
Be
Sh
  I
SH
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I
  I

(o
Ch

LY

SE

M

BE

I
I
I
I
I
I
I
HE
I
GE
I
HA
I
RC
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

S
CU
M
M

GE
S
EL

MI

HE

OF
BL

I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

C
C
C
C
C
C
C
(or
Ge
C
C
C
C
C
C
C
C
SE
OF
C
C
C
C
C
C
C
C
C

M
GE
(or
Ge

VA

OF
TH
SO
OF
TO
SIN

I
I
I
I
I
I
I

J
J
J
GI
J
J
J
J
J
WI
J
J
J
J
J
AN
JA
J
J
J
J
J
J
J
J
J
J
S
JE
J
J
J

SA

S

JO

(or

Jor

(or

Jos

(or

Jel

(o
Je

RIV

JES

(o
Ju

BA

HA

AR

JE

RC

JU

I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
MI
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
AM
I
RU
I
I
I
I

W

CL

S

CL

LY

(or

Ma

S

MA

I
SH
HA
BA
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
(Jo
I

AN
M
M

SE

(or

No

BA

BA

(o
Mi

CA

EB

GE

GI

GI

I
HC
I
HC
I
OF
OL
S
OL
MC
OF
I
SIN
I
TA
I
ZIC
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

NI

ED

C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
MC
OF
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C
C

AR

(o

Pa

SE

HA

[illegible]

PO

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

FE

(or
Pri

TE

I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
GI
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I
I

SE

S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
SE
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
(or
Sa
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S

PA

JA

S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
(or
Sil
S
S
S
S
S
S
S
S
S
Pe

see
PE
ZIC

SK

NE

HE

S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
S
PH

T
T
T
T
T
S
DC
T
T
T
T
T
(or
Tel
T
T

PI

S

HI
VA
OF
TH
SO
OF

CA

U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
U
OF
TH
CH
U
U
U
U

V
V
V
V
V
V
V
V
BE
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V
V

AB

AB

AB

ABLE

ABNER

ABODE

ABOLISHE

ABOMINA

ABOMINAT

AB

AB

AB

AB

AB

1a

AD
(or
Ad

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AD

AF

AF

AF

AF

AF

AF

AF

AF

AF

AF

AFTERWA

AGAG

AGAIN

AGAINST

AGE

AGED

AGES

AGONY

AGREE

AGREED

AG

AH

AH

AH

AH

AH

AH

AH

AHIMELEC

AHINOAM

AHITHOPH

AI

AIDE

AIJALON

AIR

AKEL
DAMA

ALARM

ALEXANDE

ALEXANDR

ALIEN

AL

AL

AL

AL

AL

AL

AL

AL

AL

ALMOND

ALMOST

ALMS

ALOES

ALPHA

ALTAR

ALTARS

AL

AL

AM

AP

AP

AP

AP

AP

AP

AP

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BO

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BRIER

BRIERS

BRIGHTER

BRIGHTNE

BRIMSTON

BRING

BROAD

BROKE

BR

BR

BR

BR

BR

BR

BR

CA
PH

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CALMED

CALVARY

CAMEL

CAMP

CAN

CANA

CANAAN

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CA

CARCASS

CARED

CAREFULL

CARELESS

CARES

CARMEL

CARNAL

CARNALLY

CAROUSE

CAROUSIN

CARPENTE

CARRIED

CARRYING

CASE

CASSIA

CAST

CASTING

CASTS

CATCH

CATCHES

CATERPILL

CATTLE

CAUGHT

CAUSE

CAVES

CEASE

CEASED

CEASES

CEASING

CEDAR

CEDARS

CELESTIAL

CENCHREA

CENSER

CEPHAS

CERTAINT

CERTIFICA

CERTIFIED

CHAFF

CHAIN

CHAINED

CHAINS

CHALDEA

CHALDEAN

CHAMBERS

CHAMPION

CHANGE

CHANGED

CHANGES

CHANNELS

CHARACTE

CHARGED

CHARIOT

CHARIOTS

CHARITAB

CHARM

CHARMER

CHARMS

CHASE

CHASTE

CHASTEN

CHASTENE

CHASTENI

CHASTENS

CHASTISE

CHASTISEM

CHATTER

CHEAT

CHEATED

CHEBAR

CHEDORLA

CHEEK

CHEEKBON

CHEEKS

CHEER

CHEERFUL

CHEERFUL

CHEESE

CHEMOSH

Th
goo
of
the
Mo
Nu

21

Ch
sac
to,
2
Kin
3:2
27

Sol
bu
alt
to,
1
Kin
11

Jos
des
alt
of,
2
Kin
23

CHERISHES

bu
no
and
c
Ep
5:2

as
a
nu
mo
c

1
Th
2:7

CHERUB

He
ro
up
a
c
2
Sa
22

CHERUBIM

an
He
pla
c
Ge
3:2

dw
be
the
c
Ps
80

fire
fro
am
the
c
Ez
10

ab
it
we
the
c
He
9:5

CHIEF

is
wh
an
ru
c
So
5:1

of
wh
I
am
c
1
Ti
1:1

Zi
a
c
co
1
Pe
2:6

ha
be
the
c

1
Pe
2:7

C
Sh
ap
1
Pe
5:4

CHILD

Lik
a
we
c
Ps
13

c
is
kn
by
his
Pr
20

Tr
up
a
c
in
the
Pr
22

Fo
un
us

a
C
Is
9:6

c
sha
lea
the
Is
11

Wh
Isr
wa
a
c
Ho
11

vir
sha
be
wit
c
Ma
1:2

He
too
a
litt
c
Ma
9:3

of
Go
as
a
litt

c
Ma
10

kin
of
c
wi
thi
be
Lu
1:6

So
the
c
gre
an
Lu
1:8

Wh
I
wa
a
c
1
Co
13

Sh
bo
a
ma
C
Re
12

CHILDBEARING

she
wi
be
sav
in
c
1
Tin
2:1

CHILDBIRTH

pai
as
a
wo
in
c
Is
13

CHILDHOOD

fro
yo
fle
for
c
Ecc
11

An
he
sai
“F
c
Ma
9:2

c
you
hav
kno
2
Tim
3:1

CHILDLESS

giv
me
see
I
go
c
Ge
15

thi
ma
do
as
c
Jer
22

CHILDREN

she
bo
Jac
no
c
Ge
30

an

all
of
yo
are
c
Ps
82

c
are
a
he
Ps
12

He
ha
ble
yo
c
Ps
14

let
the
c
of
Zio
be
Ps
14

c
are
ble
aft
Pro
20

c
ris

up
anc
cal
her
Pro
31

c
are
the
op
Is
3:1

c
wh
the
LO
has
Is
8:1

be
the
pea
of
you
c
Is
54

the
are
My
peo
c
Is
63

the
hea

of
the
c
Ma
4:6

c
wi
ris
up
aga
Ma
10

an
be
as
litt
c
Ma
18

c
we
bro
to
Hi
Ma
19

“Le
the
litt
c
Ma
19

the
rig
to
be

c
Jo
1:1

yo
we
Ab
c
Jo
8:3

spi
tha
we
are
c
Ro
8:1

bu
as
my
bel
c
1
Co
4:1

Bre
do
no
be
c
1
Co
14

c
ou
no
to

lay
up
2
Co
12

an
we
by
nat
c
Ep
2:3

sh
no
lo
be
c
Ep
4:1

Wa
as
c
of
lig
Ep
5:8

an
ha
c
Ph
2:1

no
we
are
c
of

Go
1
Jol
3:2

tha
we
lov
the
c
1
Jol
5:2

to
hea
tha
my
c
3
Jol
4

CHILION

Eli
sor
Ru
1:2

Or
dec
hu
Ru
1:4
5

Bo
rec
his

est
Ru
4:9

CHINNERETH (or Chinneroth)

Fo
cit
in
Na
De
3:1

A
reg
bo
the
Sea
of
Ga
1
Ki
15

San
as
the
pla
of
Ge
Ma
14

Th
OT
na

for
the
Sea
of
Ga
Nu
34

Als
cal
Lal
of
Ge
Lul
5:1

CHOICE

rat
tha
c
gol
Pro
8:1

CHOOSE

the
c
life
De
30

c
noi
of
his
wa

Pro
3:3

evi
and
c
the
goo
Is
7:1

wi
stil
c
Isra
Is
14

wi
aga
c
J1e
Zec
1:1

Yo
dic
not
c
Joh
15

yet
wh
I
sha
c
Ph
1:2

CHOOSES

in
the
wa
He
c
Ps
25

CHOSE

a
goo
wh
age
Go
c
Ac
15

jus
as
He
c
us
in
Hi
Ep
1:4

fro
the
beg
c
2
Th
2:1

of
Jac
His
c
1
Ch
16

pe
He
has
c
Ps
33

a
cov
wi
My
c
Ps
89

c
the
wa
of
tru
Ps
11

ser
wh
I
hav
c
Is
43

c
tha
go
pa
Lu
10

I
kn
wh
I
ha
c
Jo
13

c
yo
tha
yo
sh
Ac
22

c
the
fo
thi
1
Co
1:

Ha
Go
no
c
the
po
Ja
2:

Bu
yo
are
a
c
1
Pe
2:9

CHRIST

ge
of
Jes
C
Ma
1:1

Jes
wh
is
cal
C
Ma
1:1

“Y
are
the
C
Ma
16

if
Yo
are
the
C
Ma

26

a
Sav
wh
is
C
Lu
2:1

tha
He
Hi
is
C
Lu
23

the
law
tha
the
C
Jo
12

he
pre
the
C
Ac
9:2

hav
the
Spi
of
C
Ro
8:9

It is *C* wh die Ro 8:3

C dic no ple Ro 15

Is *C* div 1 Co 1:1

Hi yo are in *C* Jes 1 Co 1:3

to be jus by *C* Ga 2:1

bec

cru
wi
C
Ga
2:2

bu
C
liv
in
me
Ga
2:2

yo
Se
wh
is
C
Ga
3:1

be
by
Go
in
C
Ga
3:1

C
ma
dw
in
yo
Ep
3:1

C
wi
giv

yo
Ep
5:1

C
is
hea
of
the
Ep
5:2

to
me
to
liv
is
C
Ph
1:2

co
tha
Jes
C
Ph
2:1

C
wh
str
Ph
4:1

wh
is
C
in1
yo
Co
1:2

C
wh
is
ou
Co
3:4

C
is
all
an
in
all
Co
3:1

an
me
the
Ma
C
1
Ti
2:5

Jes
C
is
the
sa
He
13

C
His
So
cle
us
1
Jo
1:7

tha
Jes
is
the
C
1
Joh
5:1

of
His
C
hav
con
Rev
12

and
rei
wit
C
Rev
20

CHRISTIAN

me
to
bec
a
C
Ac
26

any
suf
as
a
C

1
Pe
4:1

CHRISTIANS

we
firs
cal
C
Ac
11

CHRISTS

Fo
fal
c
an
Ma
24

CHURCH

roc
I
wi
bu
My
c
Ma
16

the
tel
it

to
the
c
Ma
18

c
dai
tho
wh
we
Ac
2:4

eld
in
eve
c
Ac
14

do
you
des
the
c
1
Co
11

be
ma
kn
by
the
c
Ep
3:1

als
lov

the
c
Ep
5:2

Hi
a
glo
c
Ep
5:2

as
the
Lo
do
the
c
Ep
5:2

bo
wh
is
the
c
Co
1:2

an
do
no
let
the
c
1
Ti
5:1

ge
ass

an
c
He
12

To
the
an
of
the
c
Re
2:1

CHURCHES

str
the
c
Ac
15

Th
c
of
Ch
gre
Ro
16

im
of
the
c
1
Th
2:1

Jo
to

the
sev
c
Re
1:4

ang
of
the
sev
c
Re
1:2

the
thi
in
the
c
Re
22

CHURNING

Fo
as
the
c
of
mi
Pro
30

CHURNS

My
hea
c

wi
Me
Ho
11

CILICIA

Pa
ho
Ac
21

Stu
fro
arg
wi
Ste
Ac
6:9

Pa
lab
in,
Ga
1:2

CIRCLE

He
wa
ab
the
c
Jo
22

wh
He

dre
a
c
Pro
8:2

wh
sits
abo
the
c
Is
40

CIRCUIT

of
hea
and
its
c
Ps
19

com
aga
on
its
c
Ecc
1:6

CIRCUMCISE

c
the
for
of

yo
De
10

LO
yo
Go
wi
c
De
30

C
yo
to
the
Je
4:

is
ne
to
c
the
Ac
15

CIRCUMCISED

am
yo
sh
be
c
Ge
17

wh
wi
jus

the
c
Ro
3:3

Wh
he
wa
c
Ro
4:1

the
gos
for
the
c
Ga
2:7

if
yo
be
c
Ga
5:2

c
the
eig
day
Ph
3:5

In
Hi
yo
we
als
c
Co

2:1

CIRCUMCISION

hir
the
cov
of
c
Ac
7:8

c
tha
wh
is
ou
Ro
2:2

c
is
tha
of
the
hea
Ro
2:2

a
ser
to
the
c
Ro
15

C
is
no

anc
1
Co
7:1

Ch
Jes
nei
c
Ga
5:6

Fo
we
are
the
c
Ph
3:3

cir
wi
the
c
Co
2:1

tho
of
the
c
Tit
1:1

CIRCUMSPECTLY

the
tha
yo
wa

c
Ep
5:1

CISTERN

wa
of
his
ow
c
2
Ki
18

fro
yo
ow
c
Pr
5:1

CITIES

He
ov
tho
c
Ge
19

rep
the
rui
c
Is
61

c
are
a
wi
Is
64

c
wi
be
lai
wa
Je
4:7

thr
pa
an
the
c
Re
16

CITIZEN

Bu
I
wa
bo
a
c
Ac
22

CITIZENS

Bu
his

c
hat
hin
Lul
19

bu
fel
c
wi
the
Epl
2:1

CITIZENSHIP

sur
I
ob
thi
c
Ac
22

For
our
c
is
in
hea
Ph
3:2

CITY

An
he
bu

a
c
Ge
4:1

sha
ma
gla
the
c
Ps
46

c
sha
flo
Ps
72

Th
fou
no
c
Ps
10

c
tha
is
co
Ps
12

the
LO
gu
the
c
Ps
12

at the ent of the *c* Pro 8:3

c has bee a har Is 1:2

upo Zio the *c* Is 33

aft the hol *c* Is 48

Ho lon sits the *c* Lan 1:1

Nin tha

gre
c
Jon
4:1

c
tha
dw
sec
Zep
2:1

to
the
op
c
Zep
3:1

c
cal
Na
Ma
2:2

c
tha
is
set
on
a
Ma
5:1

He
has
pre
a
c
He
11

Zio
and
to
the
c
He
12

hav
no
cor
c
He
13

wil
tre
the
hol
c
Re
11

fall
tha
gre
c
Re
14

and
the
bel
c
Re
20

Joh
saw
the
hol

c
Re
21

c
wa
pu
gol
Re
21

c
ha
no
ne
of
the
Re
21

the
gat
int
the
c
Re
22

CLAP

c
the
ha
at
hi
Jo
27

Oh
c

yo
ha
Ps
47

let
the
riv
c
Ps
98

of
the
fie
sha
c
Is
55

CLAUDIUS LYSIAS

Ro
co
wh
pro
Pa
Ac
24
24
26

CLAY

dw
in
ho

of
c
Jol
4:1

hav
ma
me
lik
c
Jol
10

are
def
of
c
Jol
13

bec
for
out
of
c
Jol
33

tak
on
for
lik
c
Jol
38

pit
out
of
the
mi

c
Ps
40

be
est
as
the
c
Is
29

Sh
the
c
say
to
hir
Is
45

We
are
the
c
Is
64

“L
as
the
c
Jer
18

iro
an
par
of
c
Da

2:3

bli
ma
wi
the
c
Jol
9:6

ha
po
ov
the
c
Ro
9:2

CLEAN

sev
ea
of
eve
c
Ge
7:2

be
un
an
c
Le
10

wa
in
the
an
be

c
2
Kin
5:1

Wh
car
bri
a
c
Joh
14

He
wh
has
c
har
and
Ps
24

ma
you
c
Is
1:1

Th
I
wil
spr
c
Eze
36

c
our
His
thr
Ma

3:1

Yo
ca
ma
me
c
Ma
8:2

all
thi
are
c
Lu
11

bu
is
co
c
Jo
13

“Y
are
no
all
c
Jo
13

Yo
are
alr
c
Jo
15

in
fin

lin
c
Re
19

CLEANSE

Yo
sha
c
the
alt
Ex
29

C
me
fro
sec
Ps
19

an
c
me
fro
my
sin
Ps
51

Ho
can
a
yo
ma
c
Ps
11

I
wi
c
yo
fro
all
Ez
36

c
the
lep
rai
Ma
10

mi
sa
an
c
Ep
5:2

c
yo
co
He
9:1

C
yo
ha
Ja
4:8

us
ou
sin
an
to
c

1
Jol
1:9

CLEANSED

Su
I
hav
c
Ps
73

an
yo
we
no
c
Ez
24

the
lep
are
c
Ma
11

“W
the
no
ten
c
Lu
17

CLEANSES

Th
if
an
c
2
Tir
2:2

Jes
Ch
His
So
c
1
Jol
1:7

CLEAR

c
shi
aft
rai
2
Sa
23

fai
as
the
mo
c
So
6:1

yo
to
be
c

2
Co
7:1

lik
a
jas
sto
c
Re
21

of
lif
c
as
cry
Re
22

CLEFTS

to
go
int
the
c
Is
2:2

val
an
in
the
c
Is
7:1

you
wh

dw
in
the
c
Jer
49

CLERK

c
had
qu
the
Ac
19

CLIFF

sec
pla
of
the
c
So
2:1

CLIMB

go
int
thi
and
c
Jer
4:2

mi
me
the
c
Jo
2:7

tho
the
c
up
to
Am
9:2

CLIMBS

c
up
so
oth
wa
Jo
10

CLING

an
tha
yo
ma
c
De
30

to
he
“D

no
c
Jo
20

C
to
wh
is
go
Ro
12

CLINGS

an
My
to
c
Ps
22

My
so
c
to
the
du
Ps
11

CLOAK

c
Yo
wi
ch
the

Ps
10

let
hir
hav
yo
c
Ma
5:4

c
Yo
wi
fol
the
He
1:1

usi
lib
as
a
c
1
Pe
2:1

CLOSE

c
fri
abl
me
Jol
19

of
Ch
he

car
c
Ph
2:3

CLOSED

an
has
c
yo
eye
Is
29

for
the
wo
are
c
Da
12

the
de
c
ar
me
Jo
2:5

CLOTH

a
pie
of
un
c

Ma
9:1

in
a
cle
lin
c
Ma
27

CLOTHE

c
the
wi
tur
Ex
40

c
me
wi
ski
and
Jol
10

c
her
pri
wi
Ps
13

His
ene
I
wi
c

Ps
13

Th
yo
c
yo
Je
4:

He
no
mu
mo
c
Ma
6:

CLOTHED

of
ski
an
c
the
Ge
3:

Ha
yo
c
his
ne
Jol
39

off
my
sac
an

c
Ps
30

Th
pas
are
c
Ps
65

the
LO
is
c
Ps
93

Yo
are
c
wi
ho
Ps
10

c
hi
wi
cu
Ps
10

Let
Yo
pri
be
c
Ps
13

all
her
ho
is
c
Pr
31

c
yo
wi
fin
lin
Ez
16

A
ma
c
in
sof
Ma
11

I
wa
na
an
yo
c
Ma
25

leg
sit
an
c
Ma
5:1

An

the
c
Hi
wi
Ma
15

ric
ma
wh
wa
c
Lu
16

de
to
be
c
2
Co
5:

tha
yo
ma
be
c
Re
3:

a
wo
c
wi
the
su
Re
12

He

wa
c
wit
a
rob
Re
19

CLOTHES

c
wil
abl
me
Joh
9:3

c
bec
shi
Ma
9:3

ma
spr
the
c
Lul
19

laid
dov
the
c
Ac
7:5

and
tor
off

the
c
Ac
22

a
po
ma
in
filt
c
Ja
2:2

CLOTHING

c
the
cas
lot
Ps
22

c
is
wo
wi
go
Ps
45

wi
pr
yo
c
Pr
27

an
ho

are
her
c
Pro
31

of
ver
for
c
Is
59

the
boo
mo
tha
c
Ma
6:2

do
you
wo
abo
c
Ma
6:2

to
you
in
she
c
Ma
7:1

tho
wh
we
sof

c
Ma
11

c
as
wh
as
sno
Ma
28

c
the
cas
lot
Joh
19

bef
me
in
bri
c
Ac
10

CLOTHS

wr
in
sw
c
Luk
2:1

in,
saw
the
lin

c
Jol
20

CLOUD

My
rai
in
the
c
Ge
9:1

day
in
a
pil
of
c
Ex
13

c
cov
the
mo
Ex
24

c
des
and
sto
Ex
33

car
as
lon

as
the
c
Nu
9:1

c
did
no
de
Ne
9:1

He
led
the
wi
the
c
Ps
78

his
fav
is
lik
a
c
Pr
16

the
wh
fly
lik
a
c
Is
60

lik

a
mo
c
Ho
6:4

bel
a
bri
c
Ma
17

of
Ma
con
in
a
c
Lu
21

c
rec
Hin
out
of
Ac
1:9

we
un
the
c
1
Co
10

by
so
gre

a
c
He
12

CLOUDS

a
mo
wi
c
2
Sa
23

c
po
ou
wa
Ps
77

an
ha
sn
an
c
Ps
14

c
dr
do
the
de
Pr
3:2

he
wh

reg
the
c
Ecc
11

of
Ma
con
on
the
c
Ma
24

wi
the
in
the
c
1
Th
4:1

are
c
wi
wa
Jud
12

He
is
con
wi
c
Re
1:7

CLOUDY

the
by
day
wi
a
c
Ne
9:1

spo
to
the
in
the
c
Ps
99

CLOVEN

the
ho
ha
c
Le
11

ch
the
cu
or
ha
c
De
14

CLUSTER

bel
is
to
me
a
c
So
1:1

wi
is
fou
in
the
c
Is
65

COAL

in
his
ha
a
liv
c
Is
6:6

it
sha
no
be
a
c
Is
47

wi
He
wi
rai
c
Ps
11

c
we
kin
by
it
Ps
18

let
bu
c
fal
Ps
14

Ca
on
wa
on
ho
c
Pr
6:

so
yo
wi
hea
c

Pro
25

do
yo
wi
hea
c
Ro
12

COBRA

it
bec
c
ver
Jol
20

c
tha
sto
its
ear
Ps
58

the
lio
and
the
c
Ps
91

COBRA’S

sha
pla
by
the
c
Is
11

COFFIN

and
he
wa
pu
in
a
c
Ge
50

Da
fol
the
c
2
Sa
3:3

tou
the
op
c
Lu
7:1

COIN

sol

for
a
cop
c
Ma
10

if
she
los
one
c
Lul
15

COLD

and
har
C
and
Ge
8:2

car
sta
bef
His
c
Ps
14

Lik
the
c
of
sno
in
Pro

25

c
wa
to
a
we
Pr
25

c
wa
in
the
na
of
Ma
10

of
ma
wi
gro
c
Ma
24

tha
yo
are
nei
c
Re
3:1

COLLECTED

co
I
mi

ha
c
Lu
19

COLLECTION

fro
Je
the
c
2
Ch
24

co
the
c
1
Co
16

COLOSSE

A
cit
in
As
Mi
Co
1:

Ev
by
Ep
Co
1:

No
vis
by
Pa
Co
2:1

Pa
wr
aga
err
of,
Co
2:1
23

COLT

an
his
do
c
Ge
49

on
a
do
a
c
Ze
9:9

on
a
do
a
c
Ma

21

ow
clo
on
the
c
Lu
19

COME

the
do
wi
c
Jo
28

of
glo
sha
c
Ps
24

COMELINE

COMES

COMFORT

COMFORT

COMFORT

COMFORTS

COMING

C

CC

CO

CO

CO

CO

CO

CO

CO

CO

CO

C

CO

C

CO

CO

CO

CO

CC

CO

CO

CO

CC

CC

CO

CO

CO

CO

C

CO

CO

CO

C

CO

CO

CO

CO

CO

CO

CO

CC

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DERANGE

DERBE

DERISION

DESCEND

DESCENDA

DESCENDE

DESCENDI

DESERT

DESERTED

DESERTS

DESERVE

DESIGN

DESIRABLE

DESIRE

DESIRED

DESIRES

DESOLATE

DESOLATIO

DESOLATIO

DESPAIRE

DESPERAT

DESPISE

DESPISED

DESPISES

DESPISING

DESTINY

DESTITUTE

DESTROY

DESTROYE

DESTROYE

DESTRUCT

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DE

DI

DI

DI

DI

DI

DI

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DC

DOORKEE

DOORPOST

DOORS

DORCAS

DOUBLE

DOUBLE-MINDED

DOUBT

DOUBTING

DOUBTS

DOVE

DOVES

DOWNCAS

DRAGNET

DRAINED

DRANK

DRAW

DRAWN

DRAWS

DREAD

DREADFUL

DREAM

DREAMERS

DREAMS

DREGS

DRIED

DRIFT

hir
cor
to
Me
anc
d
Jol
7:3

d
wir
nor
do
any
Ro
14

do,
as
oft
as
yot
d
1
Co

11

all
be
ma
to
d
1
Co
12

No
lon
d
on
wa
1
Ti
5:2

ha
ma
all
na
d
Re
14

DRINKS

to
he
“W
d
Jo
4:1

d
My
blo

ha
Jo
6:5

Fo
he
wh
ea
an
d
1
Co
11

Fo
the
ea
wh
d
He
6:7

DRIPPING

wi
are
a
co
d
Pr
19

Hi
lip
are
lili
d
So
5:1

DRIVE

of
the
wic
d
Ps
36

Th
sha
d
you
fro
Da
4:2

ten
anc
beg
to
d
Ma
11

DRIVEN

Th
we
d
ou
fro
Jol
30

Let
the
be

d
bac
Ps
40

sai
and
so
we
d
Ac
27

a
wa
of
the
sea
d
Jar
1:6

DROP

Th
d
on
the
pas
Ps
65

the
nat
are
as
a
d
Is

40

DROSS

of
the
ear
lik
d
Ps
11

Ta
aw
the
d
Pr
25

pu
aw
yo
d
Is
1:

of
Isr
ha
be
d
Ez
22

DROUGHT

thr
a

lan
of
d
Jer
2:6

in
the
yea
of
d
Jer
17

For
I
cal
for
a
d
Ha
1:1

DROVE

So
He
d
out
the
ma
Ge
3:2

ten
of
Go
and
d

Ma
21

a
wh
of
co
He
d
Jo
2:1

DROWN

no
ca
the
flo
d
So
8:7

ha
lus
wh
d
1
Ti
6:9

DROWSINESS

d
wi
clo
a
Pro
23

DRUNK

of
the
wi
an
wa
d
Ge
9:2

d
my
wi
wi
my
mi
So
5:1

yo
aff
an
d
Is
51

My
an
ma
the
d
Is
63

be
sat
an
ma

d
Jer
46

the
gu
ha
we
d
Jo
2:1

Fo
the
are
no
d
Ac
2:1

an
an
is
d
1
Co
11

An
do
no
be
d
Ep
5:1

an
tho
wh
ge
d

1
Th
5:7

the
ear
we
ma
d
Re
17

I
sav
the
wo
d
Re
17

DRUNKARD

d
cou
be
inc
De
29

d
is
a
pro
in
the
Pro
26

to
an

fro
lik
a
d
Is
24

or
a
rev
or
a
d
1
Co
5:1

DRUNKEN

I
am
lik
a
d
ma
Jer
23

DRUNKENNESS

wil
be
fill
wit
d
Eze
23

Jer
a
cup
of
d
Zec
12

wit
can
d
Luk
21

not
in
rev
and
d
Ro
13

env
mu
d
Ga
5:2

lus
d
1
Pet
4:3

DRY

pla
and
let
the

d
Ge
1:9

ma
the
sea
int
d
Ex
14

It
wa
d
on
the
fle
Ju
6:4

I
wi
d
up
he
sea
Je
51

d
tre
flo
Ez
17

wi
ma
the
riv
d

Ez
30

wi
be
do
in
the
d
Lu
23

DUE

be
it
is
yo
d
Le
10

the
fo
in
d
se
Ps
10

pa
all
th
wa
d
Ma
18

d
tim

Ch
die
Ro
5:6

to
wh
tax
are
d
Ro
13

d
sea
we
sha
Ga
6:9

exa
you
in
d
tim
1
Pet
5:6

DULL

hea
of
thi
peo
d
Is
6:1

peo

ha
gro
d
Ma
13

you
ha
bec
d
He
5:1

DUMB

the
ton
of
the
d
Is
35

“D
an
d
spi
Ma
9:2

DUNGHILL

the
lan
no
for
the
d

Lu
14

DUST

for
ma
of
the
d
Ge
2:7

d
you
sha
ret
Ge
3:1

des
as
the
d
Ge
13

no
I
wh
am
bu
d
Ge
18

“W
ca
cou
the

d
Nu
23

lay
you
gol
in
the
d
Jol
22

anc
rep
in
d
Jol
42

Wi
the
d
pra
Yo
Ps
30

like
the
wh
d
Ps
83

sho
fav
to
her
d
Ps

10

tha
we
are
d
Ps
10

or
the
pri
d
Pro
8:2

all
are
fro
the
d
Ec
3:2

co
as
the
sm
d
Is
40

Th
sha
lic
the
d
Mi
7:1

cit

sha
off
the
d
Ma
10

im
of
the
ma
of
d
1
Co
15

DUTY

do
wh
wa
ou
d
Lu
17

DWELL

O
LO
ma
me
d
Ps
4:8

Wh

ma
d
in
Yo
hol
Ps
15

He
hir
sha
d
Ps
25

d
in
the
lan
Ps
37

the
LO
Go
mi
d
Ps
68

of
my
Go
tha
d
Ps
84

Hi
tha
glo

ma
d
Ps
85

Wo
is
me
tha
I
d
Ps
12

he
wi
d
on
hig
Is
33

int
Eg
to
d
the
Is
52

“I
d
in
the
hig
an
Is
57

“T
sha

no
lon
d
Lam
4:1

the
ent
and
d
the
Ma
12

of
Jud
and
all
wh
d
Ac
2:1

“I
wi
d
in
the
2
Co
6:1

tha
Ch
ma
d
Ep
3:1

the
ful

sho
d
Co
1:1

the
wo
of
Ch
d
Co
3:1

me
an
He
wi
d
Re
21

DWELLER

fle
an
be
a
d
Ac
7:2

DWELLING

A
pe
d
alo
Nu

23

is
the
wa
to
1th
d
Jol
38

bu
tog
for
a
d
Epl
2:2

a
for
cou
d
He
11

DWELLS

He
wh
d
in
the
sec
Ps
91

bu
the
Fat

wh
d
Jol
14

do
it,
bu
sin
tha
d
Ro
7:1

the
Spi
of
Go
d
Ro
8:9

fro
the
dea
d
Ro
8:1

the
Spi
of
Go
d
1
Co
3:1

d
all
the

ful
Co
2:9

wh
rig
d
2
Pe
3:1

yo
wh
Sa
d
Re
2:1

DWELT

Eg
an
Ja
d
Ps
10

be
fle
an
d
Jo
1:1

By
fai
he
d
in
the

He
11

DYING

I
do
no
obj
to
d
Ac
25

in
the
bo
the
d
2
Co
4:1

Ja
wh
he
wa
d
He
11

EAGLE

As
an
e
sti
up

its
De
32

e
sw
on
its
pre
Jol
9:2

fly
aw
lik
an
e
Pro
23

Th
wa
of
an
e
Pro
30

nes
as
hig
as
the
e
Jer
49

had
the
fac
of

an
e
Ez
1:1

lik
a
fly
e
Re
4:7

tw
wi
of
a
gre
e
Re
12

EAGLES

up
wi
wi
lik
e
Is
40

are
sw
tha
e
Jer
4:1

e
wi

be
gat
Ma
24

EA

ho
I
bo
yo
on
e
Ex
19

EAR

sh
pie
his
e
Ex
21

Do
no
the
e
tes
Jo
12

Bo
do
Yo
e
Ps
31

An
the
e
of
the
wis
Pro
18

He
aw
My
e
Is
50

e
is
unc

Jer
6:1

wh
you
hea
in
the
e
Ma
10

cut
off
his
rig
e
Joh
18

no
see

no
e
he
1
Co
2:9

if
the
e
sh
say
1
Co
12

He who has an *e* Rev 2:7

EARLY

Very *e* in the morning Mark 16:2

arrived at the tomb *e*

Luke 24:22

EARNEST

must give the more *e* Heb 2:1

EARNESTLY

if you *e* obey My Deut 11:13

He prayed more *e* Luke 22:44

in this we groan, *e* 2 Cor 5:2

e that it would not James 5:17

you to contend *e* Jude 3

EARS

both his *e* will tingle 2 Kin 21:12

Whoever shuts his *e* Prov 21:13

And hear with their *e* Is

6:10

He
who
has
e
Matt
11:15

e
are
hard
of
hearing
Matt
13:15

they
have
itching
e
2
Tim
4:3

e
are
open
to
their
1
Pet
3:12

EARTH

e
which
is
under

you
Deut
28:23

e
are
the
LORD’s
1
Sam
2:8

coming
to
judge
the
e
1
Chr
16:33

ser
for
ma
on
e
Jol
7:1

He
han
the
e
on
Jol
26

fou
of
the
e

Jol
38

e
is
the
LO
Ps
24

the
shi
of
the
e
Ps
47

Yo
vis
the
e
Ps
65

Yo
had
for
the
e
Ps
90

let
the
e
be
mo
Ps
99

glo
is
abo
the
e
Ps
14

wis
fou
the
e
Pro
3:1

the
wa
eve
an
e
Pro
8:2

For
thr
thi
the
e
Pro
30

e
abi
for
Ecc
1:4

for
the
me
of

the
e
Is
11

e
is
My
foo
Is
66

and
the
e
sho
wi
Eze
43

I
wi
da
the
e
Am
8:9

e
wi
be
fill
Ha
2:1

sha
inh
the
e
Ma
5:5

hea
and
e
pas
aw
Ma
5:1

e
as
it
is
in
hea
Ma
6:1

tre
on
e
Ma
6:1

the
sho
the
e
He
12

“D
no
har
the
e
Re
7:3

fro
wh
fac

the
e
Re
20

ne
he
an
a
ne
e
Re
21

EARTHLY

If
I
ha
tol
yo
e
Jo
3:1

th
if
ou
e
ho
2
Co
5:1

the
mi
on
e
thi

Ph
3:1

fro
abo
bu
is
e
Ja
3:1

EARTHQUAKE

aft
the
wi
an
e
1
Ki
19

as
yo
fle
fro
the
e
Ze
14

the
wa
a
gre
e
Ma
28

the

wa
a
gre
e
Re
6:1

EARTHQUAKES

An
the
wi
be
e
Ma
13

EASE

I
wa
at
e
Jo
16

yo
wo
wh
are
at
e
Is
32

to
yo
wh

are
at
e
Am
6:1

tak
you
e
Lul
12

EASIER

Wh
is
e,
to
say
Ma
2:9

It
is
e
for
a
car
Ma
10

EAST

EAT

EA

EA

EB

EB

EB

ED

ED

ED

ED

ED

ED

ED

EF

EG

EG

EH

EI

EK

EL

EL

ELATH

EL BETHEL

ELDER

ELDERS

ELDERSHIP

ELEAZAR

ELECT

ELECTION

ELEMENTS

ELEVEN

ELI

ELIAB

ELIAKIM

ELIASHIB

ELIHU

ELIJAH

1

ELIMELEC

ELIPHAZ

ELISHA

ELIZABETH

ELIZAPHA

EL

EL

EL

EL

EM

EM

EM

EM

EM

EM
HE

EN
GE

EN
HA

EN
RC

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

1

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

EN

ER

ES

ES

ES

ESCAPED

ESHCOL

ESTABLISH

ESTABLISH

ESTABLISH

ESTEEM

ESTEEMED

ESTEEMS

ESTHER

ESTRANGE

ETAM

ETERNAL

ET

ET

See
CU

ET

EUNICE

EUNUCH

EUNUCHS

EUPHRATE

EUTYCHUS

EVANGELIS

EVANGELIS

EVEN

e
den
the
Lor
wh
2
Pet
2:1

EVENING

At
e
the
ret
Ps
59

e
it
is
cut
do
and
Ps
90

of
my
han
as
the
e
Ps

14

e
do
no
wi
yo
Ec
11

an
mo
fie
tha
e
Ha
1:

EVERLASTING

Go
of
Isr
fro
e
1
Ch
16

of
the
LO
is
fro
e
Ps
10

rig
is

an
e
Ps
11

Yo
kin
is
an
e
Ps
14

in
YA
the
LO
is
e
Is
26

wi
be
to
yo
an
e
Is
60

fro
E
is
Yo
na
Is
63

aw
so

to
e
life
Da
12

no
per
bu
hav
e
Jo
3:1

Hi
wh
ser
Me
has
e
Jo
5:2

en
to
e
life
Jo
6:2

in
Hi
ma
hav
e
Jo
6:4

bel
in
Me

has
e
Joh
6:4

un
of
e
life
Ac
13

of
the
Spi
rea
e
Ga
6:8

e
des
fro
the
2
Th
1:9

EVERYONE

sai
'Re
no
e
Jer
25

e
wh
is

bo
of
the
Jo
3:8

E
wh
is
of
the
tru
Jo
18

EVIDENCE

e
of
thi
no
see
He
11

EVIDENT

the
sig
of
Go
is
e
Ga
3:1

of
so

are
cle
e
1
Tin
5:2

e
tha
our
Lor
arc
He
7:1

EVIL

of
goo
and
e
Ge
2:9

kno
goo
and
e
Ge
3:5

his
hea
wa
onl
e
Ge
6:5

e

ha
be
the
Ge
47

reb
and
e
cit
Ez
4:1

e
sha
tou
yo
Jo
5:1

I
loo
for
go
e
Jo
30

no
sha
e
dw
Ps
5:4

I
wi
fea
no
e
Ps

23

E
sha
sla
the
Ps
34

he
do
no
ab
e
Ps
36

e
mo
tha
go
Ps
52

e
sha
be
yo
Ps
91

To
do
e
is
lik
sp
Pr
10

sha

be
fill
wi
e
Pro
12

e
wi
bo
be
the
Pro
14

Ke
wa
on
the
e
Pro
15

Wh
rev
e
Pro
17

E
wi
no
dep
Pro
17

e
all
the
day
of

her
Pro
31

Th
is
a
sev
e
Ecc
5:1

of
me
are
ful
of
e
Ecc
9:3

to
tho
wh
cal
e
Is
5:2

is
tak
aw
fro
e
Is
57

of
pea
and
no

of
e
Jer
29

con
thi
gre
e
Jer
44

See
goo
and
not
e
Am
5:1

del
us
fro
the
e
Ma
6:1

If
you
the
bei
e
Ma
7:1

“W
do
you
thi
e

Ma
9:4

e
tre
bri
Ma
12

eve
pra
e
Jol
3:2

bea
wit
of
the
e
Jol
18

e
I
wil
not
to
do
Ro
7:1

the
a
law
tha
e
Ro
7:2

dor

any
goo
or
e
Ro
9:1

Ab
wh
is
e
Ro
12

Re
no
on
e
for
Ro
12

no
be
ov
by
e
Ro
12

sin
co
e
Ro
16

pr
thi
no
e
1

Co
13

fro
eve
for
of
e
1
Th
5:2

EVIL-MERODACH

Ba
kir
(56
56
B.C
2
Kir
25
30

EVIL-MINDEDNESS

str
dec
e
Ro
1:2

EVILDOER

“If
He
we
no
an
e
Jo
18

su
tro
as
an
e
2
Ti
2:

a
th
an
e
1
Pe
4:

EVILDOERS

e
sh
be
cu
off
Ps
37

De
fro
me

yo
e
Ps
11

ini
a
bro
of
e
Is
1:4

e
sha
nev
be
Is
14

aga
yo
as
e
1
Pe
2:1

EVILS

e
ha
su
me
Ps
40

ha
co
tw

e
Je
2:1

EXALT

Go
an
I
wi
e
Ex
15

e
the
ho
of
His
1
Sa
2:1

e
His
na
tog
Ps
34

E
the
LO
ou
Go
Ps
99

are
my

Go
I
wi
e
Ps
11

if
I
do
no
e
Ps
13

int
hea
I
wi
e
Is
14

E
the
hu
Ez
21

an
he
sh
e
hi
Da
8:2

EXALTATION

e

cor
nei
fro
Ps
75

wh
rej
in
My
e
Is
13

bro
glo
in
his
e
Jar
1:9

EXALTED

Let
Go
be
e
2
Sar
22

bu
Yo
an
e
2
Ch
6:2

nar
wh
is
e
Ne
9:5

wh
vil
is
e
Ps
12

I
wi
be
e
am
the
Ps
46

rig
sha
be
e
Ps
75

fav
our
ho
is
e
Ps
89

Yo
are
e

far
abo
Ps
97

His
na
alo
is
e
Ps
14

up
the
cit
is
e
Pro
11

LO
alo
sha
be
e
Is
2:1

val
sha
be
e
Is
40

Hi
Go
has
e
Act

5:3

An
les
I
sho
be
e
2
Co
12

als
has
hig
e
Ph
2:9

EXALTS

Rig
e
Pro
14

hig
thi
tha
e
2
Co
10

e
hir
abo
all
2
Th

2:4

EXAMINE

E
me
O
LO
Ps
26

Bu
let
a
ma
e
1
Co
11

Bu
let
eac
one
e
Ga
6:4

EXAMPLE

to
ma
her
a
pu
e
Ma
1:1

I
hav
giv
you
an
e
Joh
13

in
fol
my
e
Ph
3:1

to
ma
our
an
e
2
Th
3:9

you
but
be
an
e
1
Tin
4:1

us,
lea
us
an
e
1
Pet

2:2

ma
the
an
e
2
Pe
2:6

are
set
for
as
an
e
Ju
7

EXAMPLES

ha
to
the
as
e
1
Co
10

so
tha
yo
be
e
1
Th
1:7

to

yo
bu
bei
e
1
Pe
5:3

EXCEEDING

He
mi
sho
the
e
Ep
2:7

EXCEEDINGLY

for
the
LO
mu
be
e
1
Ch
22

Yo
ha
ma
hir
e
Ps
21

is
far
off
and
e
dec
Ecc
7:2

e
hig
mo
Ma
4:8

Re
and
be
e
Ma
5:1

EXCEEDS

you
rig
e
Ma
5:2

EXCEL

you
His
ang
wh
e
Ps

10

bu
yo
e
the
all
Pro
31

tha
yo
see
to
e
1
Co
14

EXCELLENCE

e
Yo
ha
ov
Ex
15

di
no
co
wi
e
1
Co
2:1

EXCELLENT

He
is
e
in
po
Jo
37

It
sha
be
as
e
Ps
14

wi
spe
of
e
thi
Pr
8:6

lik
Le
e
So
5:1

for
He
has
do
e
Is
12

in
co
an

e
Is
28

Ina
as
an
e
Da
5:1

the
thi
tha
are
e
Ro
2:1

the
thi
tha
are
e
Ph
1:1

e
sac
tha
Ca
He
11

car
to
Hi
fro
the
E
2

Pe
1:1

EXCELS

Do
you
see
a
ma
wh
e
Pro
22

I
sav
tha
wis
e
Ecc
2:1

of
the
glo
tha
e
2
Co
3:1

EXCHANGE

ma
giv
in
e

for
his
sou
Ma
16

EXCHANGED

No
car
it
be
e
Jol
28

e
the
tru
of
Go
for
Ro
1:2

Fo
eve
the
wo
e
Ro
1:2

EXCLUDE

you
and
wh

the
e
Lu
6:2

the
wa
to
e
yo
Ga
4:1

EXCUSE

Go
be
an
at
yo
e
Ec
5:6

bu
no
the
ha
no
e
Jo
15

the
are
wi
e
Ro
1:2

do
yo
thi
tha
we
e
2
Co
12

EXCUSES

beg
to
ma
e
Lu
14

EXECUTE

e
ver
on
the
Ps
14

if
yo
tho
e
Jer
7:5

e
the
fie

Ho
11

e
jud
als
Joh
5:2

e
wr
on
hin
wh
Ro
13

EXECUTES

by
the
jud
He
e
Ps
9:1

e
rig
Ps
10

e
jus
for
the
Ps
14

e

jus
for
me
Mi
7:9

EXERCISE

tho
wh
are
gre
e
Ma
20

e
yo
tov
1
Ti
4:7

e
pro
a
litt
1
Ti
4:8

EXERCISED

hav
the
ser
e
He

5:1

EXHORT

we
co
an
e
2
Th
3:1

e
hi
as
a
fat
1
Ti
5:1

an
e
the
thi
1
Ti
6:2

do
bo
to
e
Tit
1:9

Sp
the
thi
e

Tit
2:1

e
one
anc
He
3:1

EXHORTATION

you
hav
any
wo
of
e
Ac
13

he
wh
exh
in
e
Ro
12

to
rea
to
e
1
Tin
4:1

wit
the
wo
of

e
He
13

EXHORTED

For
I
ear
e
Jer
11

e
and
str
Ac
15

as
you
kno
how
we
e
1
Th
2:1

EXILE

and
als
an
e
fro
2
Sa

15

Th
cap
e
has
Is
51

EXIST

thi
wh
do
no
e
Ro
4:1

by
Yo
wi
the
e
Re
4:1

EXPECT

an
ho
you
do
no
e
Lu
12

EXPECTATION

Th
e
of
the
poo
Ps
9:1

Go
alo
for
my
e
Ps
62

the
peo
we
in
e
Lu
3:1

a
cer
fea
e
He
10

EXPERT

an
the
e

en
Is
3:3

th
of
an
e
wa
Je
50

be
yo
ar
e
Ac
26

EXPLAIN

wa
no
on
wh
co
e
Ge
41

da
th
co
no
e
Ju
14

“*E*
th

par
to
us
Ma
15

to
say
and
har
to
e
He
5:1

EXPLAINED

He
e
all
thi
to
His
Ma
4:3

EXPLOIT

e
all
you
Is
58

aga
tho
wh
e

Ma
3:5

the
wi
e
yo
wi
2
Pe
2:3

EXPOSED

his
de
sh
be
e
Jo
3:2

a1
thi
tha
are
e
Ep
5:1

EXPOUNDED

He
e
to
the
in
all

Lu
24

EXPRESS

ma
ca
e
it
Ec
1:8

of
His
glo
an
the
e
He
1:3

EXPRESSLY

of
the
LO
ca
e
Ez
1:3

No
the
Sp
e
1
Ti
4:1

EXTEND

no
to
e
me
to
hi
Ps
10

“B
I
wi
e
Is
66

di
no
e
to
yo
2
Co
10

EXTINGUISHED

br
my
da
are
e
Jo
17

Th

are
e
Is
43

EXTOL

I
wi
e
Yo
Ps
30

e
Hi
wh
rid
Ps
68

EXTOLLED

sha
be
exa
an
e
Is
52

EXTORTION

e
gat
it

for
hin
Pro
28

you
nei
by
e
Eze
22

the
are
ful
of
e
Ma
23

EXTORTIO

EXULT

EYELIDS

EYES

EY

EY

EZ

EZ
GE

See
EL

EZ

JO

JO

JO
(or
Jeh

JO

JONATHAN

JOPPA

JORAM

JORDAN
RIVER

JOSEPH

JOSES

JOSHUA

See JESHUA

JOSIAH

JOT

JOTHAM

JOURNEY

JOY

JOYFUL

JOYFUL

JOZACHAR

JUBAL

JUBILEE

JUDAH

JUDAISM

JUDAS

JUDE
(or
Judas)

JUDEA

JUDGES

JUDGMENT

JUDGMENT

JULIUS

JUST

JUSTICE

JUSTIFICA

JUSTIFIED

JUSTIFIER

JUSTIFIES

JUSTIFY

JUSTLY

JUSTUS

KADESH

KADESH
BARNEA

KEEP

k
you
pu
1
Tir
5:2

k
His
cor
1
Jol
2:3

k
you
in
the
Ju
21

k
you
fro
stu
Ju
24

k
tho
thi
Rev
1:3

KEEPER

An
I
my
bro
k
Ge
4:9

Th
LO
is
you
k
Ps
12

KEEPERS

in
the
day
wh
the
k
Ecc
12

KEEPS

the
fai
Go
wh
k
De
7:9

k
tru
for
Ps
14

k
his
wa
pre
Pro
16

k
the
co
Pro
19

Wh
k
the
law
is
a
Pro
28

no
of
you
k
the

law
Joh
7:1

bo
of
Go
k
hir
1
Joh
5:1

and
k
his
ga
Re
16

KEILAH

To
of
Ju
res
fro
Ph
by
Da
1
Sa
23
5

Pre
to
bet
Da

he
esc
1
Sa
23
13

KENITES

Ca
tri
wh
la
is
pro
t1c
Ab
see
Ge
15

Su
of
Ba
pro
Nu
24
22

Se
wi
Ju
Ju
1:1

Sp
by
Sa
in

wa
wi
An
1
Sa
15

KEPT

Fo
I
ha
k
the
wa
2
Sa
22

vi
I
ha
no
k
So
1:6

the
thi
I
ha
k
Ma
19

all
the
thi
I

hav
k
Ma
10

k
all
the
thi
Lu
2:1

lov
jus
as
I
hav
k
Jol
15

k
bac
par
of
the
Ac
5:2

I
hav
k
the
fai
2
Tir
4:7

wh
are
k

by
the
pov
1
Pet
1:5

wh
not
exi
are
k
2
Pet
3:7

KETURAH

Ab
sec
wi
Ge
25

Sor
of:

Lis
Ge
25
2

Giv
gif
and
ser
aw
Ge
25

KEY

Th
k
of
the
ho
of
Is
22

ha
tak
aw
the
k
Lu
11

“H
wh
ha
the
k
Re
3:7

he
ha
the
k
Re
20

KEYS

I
wi

giv
you
the
k
Ma
16

An
I
hav
the
k
Re
1:1

KIBROTH HATTAAVAH

Bu
site
of
Isr
sla
by
Go
Nu
11
35

KICK

is
har
for
you
to
k
Ac

9:5

KIDNAPPERS

for
soc
for
k
1
Tin
1:1

KIDNAPS

“H
wh
k
a
ma
and
Ex
21

KIDRON

Va
nea
Jer
cro
by
Da
and
Ch
2
Sar
15

Jol
18

Idc
du
the
2
Ch
29

KILL

wh
fin
me
wi
k
Ge
4:1

k
the
Pa
Ex
12

I
k
an
I
ma
ali
De
32

“A
I
Go
to
k

2
Kin
5:7

a
tim
to
k
Ecc
3:3

to
sav
life
or
to
k
Ma
3:4

of
the
the
wil
k
Luk
11

afr
of
tho
wh
k
Luk
12

Wh
do
you
see
to

k
Jol
7:1

“Ri
Pet
k
anc
eat
Ac
10

KILLED

Ab
his
bro
anc
k
Ge
4:8

For
I
hav
k
a
ma
for
Ge
4:2

LO
k
all
the
Ex
13

Yo

ser
has
k
1
Sa
17

fo
Yo
sa
we
are
k
Ps
44

an
scr
an
be
k
Ma
16

Sil
fel
an
k
the
Lu
13

k
the
Pri
of
life
Ac
3:1

me

an
by
it
k
Ro
7:1

“Fo
Yo
sak
we
are
k
Ro
8:3

wh
k
bo
the
Lo
1
Th
2:1

ma
wh
wa
k
Re
2:1

KILLS

“Th
LO
k
an
1

Sa
2:6

the
on
wh
k
the
Ma
23

fo
the
let
k
2
Co
3:6

KIND

an
aft
the
k
Ge
6:2

k
ca
co
ou
by
Ma
9:2

Fo
He
is
k

to
1th
Lu
6:3

su
lo
an
is
k
1
Co
13

An
be
k
to
on
Ep
4:3

KINDLED

Wh
Hi
wr
is
k
Ps
2:1

I,
the
LO
ha
k
Ez
20

wi
it
we
alr
k
Lu
12

KINDLY

Th
LO
de
k
Ru
1:

Ju
tre
Pa
k
Ac
27

k
aff
to
on
Ro
12

KINDNESS

ma
the
LO
sh
k

2
Sa
2:6

an
ab
in
k
Ne
9:1

me
Hi
ma
k
Ps
31

Fo
Hi
me
k
Ps
11

to
is
the
la
of
k
Pr
31

k
sh
no
de
Is
54

I
rem
you
the
k
Jer
2:2

by
lon
by
k
2
Co
6:6

lon
k
Ga
5:2

Bu
wh
the
k
and
the
Tit
3:4

and
to
bro
k
2
Pet
1:7

KING

Th
Me
k
Ge
14

da
the
wa
no
k
Ju
17

sai
“G
us
a
k
1
Sa
8:6

“L
liv
the
k
1
Sa
10

the
an
Da
k
2
Sa
2:4

Ye
I

ha
set
My
K
Ps
2:

Th
LO
is
K
fo
Ps
10

K
an
us
wh
we
Ps
20

An
the
K
of
glo
Ps
24

k
is
sav
by
the
Ps
33

k
Yo

jud
Ps
72

Fo
Go
is
my
K
Ps
74

do
wh
suc
the
k
Ecc
2:1

ou
of
pri
to
be
k
Ecc
4:1

wh
you
k
is
a
chi
Ecc
10

In
the
yea

tha
K
Is
6:1

k
wi
rei
in
Is
32

the
LO
is
ou
K
Is
33

Is
no
he
K
in
he
Je
8:1

an
the
ev
K
Je
10

k
of
Ba
k
Ez

26

I
ga
yo
a
k
in
My
Ho
13

KINGDOM

“Re
for
the
k
Ma
3:2

for
Yo
is
the
k
Ma
6:1

Bu
see
firs
the
k
Ma

6:3

the
my
of
the
k
Ma
13

are
the
son
of
the
k
Ma
13

of
suc
is
the
k
Ma
19

up
to
hal
of
my
k
Ma
6:2

are
not
far
fro
the

k
Ma
12

ba
is
fit
fo
the
k
Lu
9:6

ag
na
an
k
Lu
21

he
ca
see
the
k
Jo
3:3

he
ca
en
the
k
Jo
3:5

If
My
k
we
of

thi
Joh
18

for
the
k
of
Go
is
Ro
14

wh
He
del
the
k
1
Co
15

wi
no
inh
the
k
Ga
5:2

the
sce
of
Yo
k
He
1:8

we
are
rec

a
k
He
12

int
the
eve
k
2
Pet
1:1

KINGDOMS

the
k
we
mo
Ps
46

tre
wh
sho
k
Is
14

sho
Hi
all
the
*k*1
Ma
4:8

hav
bee
the

k
Re
11

KINGS

Th
k
of
the
ear
set
Ps
2:2

k
sha
fal
do
Ps
72

He
is
aw
to
the
k
Ps
76

By
me
k
rei
Pro
8:1

He
wi

sta
bef
k
Pro
22

k
is
una
Pro
25

tha
wh
des
k
Pro
31

it
is
not
for
k
Pro
31

K
sha
be
you
fos
Is
49

“Th
set
up
k
Ho
8:4

bef
gov
and
k
Ma
10

k
hav
des
to
see
Luk
10

You
hav
rei
as
k
1
Co
4:8

and
has
ma
us
k
Rev
1:6

tha
the
wa
of
the
k
Rev
16

ma
eat
the
fle
of
k
Re
19

KIRJATH ARBA

An
nai
of
He
Ge
23

Po
by
Ju
Ju
1:1

KIRJATH JEARIM

Gil
tov
Jos
9:1

KISH

KISHON

KISS

KISSED

KNEE

KNEES

KNEW

KNIT

KNOCK

KNOW

KN

KN

KN

KOHATH

KOHATH

KOHATHIT

KORAH

LABAN

LABOR

LABORED

LABORERS

LABORING

LABORS

LACHISH

LACK

LACKED

LACKING

LADDER

LA

LA

LA

LA

LA
RC

LA

LA

LA